तफ़सीर इब्ने कसीर

जिल्द (5)

(पारा 21 से 25 तक)

तफ़सीर

अबुल-फ़िदा इमादुद्दीन इस्माईल बिन उमर बिन कसीर
"अ़ल्लामा इब्ने कसीर" रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

हिन्दी अनुवादक

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी (एम.ए. अलीग.)

http://salfibooks.blogspot.com

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०

इस्लामी दुनिया की निहायत मोतबर क़ुरआनी तफ़सीर। मुस्लिम उलेमा इस पर एकमत हैं कि इसके बाद की तमाम क़ुरआनी तफ़सीरों में इससे मदद ली गयी है।

Maktab E Ashraf

तफ़सीर इब्ने कसीर

जिल्द (5)

(पारा 21 से 25 तक)

तफ़सीर

अबुल-फ़िदा इमादुद्दीन इस्माईल बिन उमर बिन कसीर

"अ़ल्लामा इब्ने कसीर" रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

हिन्दी अनुवादक

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी (एम. ए. अलीग.)

रीडर अ़ल्लामा इक़बाल यूनानी मेडिकल कॉलेज, मुज़फ़्फ़र नगर (उ.प्र.)

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा० लि०)

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित हैं।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि अथवा अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

Maktaba E Ashraf

तफ़सीर इब्ने कसीर - जिल्द (5)

(पारा 21 से 25 तक)

हिन्दी अनुवाद
मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी एम.ए. (अलीग.)

ISBN 81-7231-985-1

प्रथम संस्करण - 2011

पुनः प्रकाशन - 2015

प्रकाशक :

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा० लि०)

1511-12, पटौदी हाउस, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002 (भारत)

फोन : +91-11-23244556, 23253514, 23269050, 23286551

e-mail: info@ibsbookstore.com

Website: www.ibsbookstore.com

OUR ASSOCIATES

- Angel Book House FZE, Sharjah (U.A.E.)
- Azhar Academy Ltd., London (United Kingdom)
- Lautan Lestari (Lestari Books), Jakarata (Indonesia)
- Husami Book Depot, Hyderabad (India)

Printed in India

Maktab E Ashraf

समर्पित

❁ अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला के कलाम क़ुरआन मजीद के प्रथम व्याख्यापक, हादी-ए-आ़लम, आख़िरी पैग़म्बर, तमाम नबियों में अफ़ज़ल **हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम** के नाम, जिनका एक-एक क़ौल व अ़मल कलामे रब्बानी और मन्शा-ए-इलाही की अ़मली तफ़सीर था।

❁ **दारुल-उलूम देवबन्द** के नाम, जो क़ुरआन मजीद और उसकी तफ़सीर (हदीसे पाक) की अ़ज़ीमुश्शान ख़िदमत और दीनी रहनुमाई के सबब पूरी इस्लामी दुनिया में एक मिसाली संस्था है। जिसके इल्मी फ़ैज़ से मुस्तफ़ीद (लाभान्वित) होने के सबब इस नाचीज़ को इल्मी समझ और क़ुरआन मजीद की इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ नसीब हुई।

❁ वालिदे मोहतरम **जनाब मुहम्मद दीन त्यागी मरहूम** के नाम, जिनकी जिद्दोजहद, मेहनत भरी ज़िन्दगी और बहाया हुआ पसीना मेरी रग व जाँ में ख़ून के क़तरे बनकर दौड़ रहा है, जो मेरी जिस्मानी और इल्मी ऊर्जा का ज़ाहिरी सबब है।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktaba Ashraf

दिल की गहराईयों से शुक्रिया

❁ मोहतरम **जनाब अ़ब्दुस्समी** साहिब (मालिक समी पब्लिकेशंस/इस्लामिक बुक सर्विस नई दिल्ली) का, जिनकी मुहब्बतों, इनायतों, क़द्रदानियों और मुझे अपने इदारे से जोड़े रखने के सबब क़ुरआन मजीद की यह अहम ख़िदमत अन्जाम पा सकी।

❁ मोहरतम **जनाब हाजी मुहम्मद शाहिद अख़्लाक़ साहिब** (पूर्व मेयर/सांसद लोक सभा, मेरठ शहर) का, जिनकी नवाज़िशों, मुहब्बत व इनायत, ख़ास तवज्जोह, हौसला-अफ़ज़ाई, दुआ़ओं, उलेमा नवाज़ी और हर तरह की मदद ने शौक़ व जज़्बात में नई उमंगें पैदा कीं, जिससे इस काम के पूरा करने में बड़ी मदद मिली।

❁ **जनाब मौलाना मुफ़्ती निसार अहमद शम्सुल-हुसैनी साहिब** का, जिन्होंने मेरी इस कोशिश को आंशिक रूप से मुलाहिज़ा फ़रमाकर मेरी और इसका प्रकाशन करने वाले इदारे की सराहना की।

अल्लाह तआ़ला इन सब हज़रात और इनके अ़लावा मेरे दूसरे सहयोगियों, सलाह मश्विरा देने वालों, शुभ-चिन्तकों और हौसला बढ़ाने वाले हज़रात को भी अपनी तरफ़ से ख़ास जज़ा और बदला इनायत फ़रमाये जो क़दम-क़दम पर मेरी हिम्मत बढ़ाते और मेरी मामूली कोशिशों को सराहते हैं। आमीन या रब्बल्-अ़लमीन।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktab E Ashraf

प्रकाशक की ओर से

अल्लाह रब्बुल-आलमीन का बेहद करम व एहसान है कि उसने मुझे और मेरे इदारे (समी पब्लिकेशंस/ इस्लामिक बुक सर्विस नई दिल्ली) को इस्लामी किताबों के प्रकाशन के ज़रिये अपने दीन की अदना ख़िदमत की तौफ़ीक़ से नवाज़ा।

माशा-अल्लाह हमारे इदारे से क़ुरआन पाक, हदीस मुबारक और दीनी विषयों पर अनेक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। बल्कि मुझे कहना चाहिये कि ख़िदमत का एक मैदान ऐसा है जिसको पूरा करने में इस्लामिक बुक सर्विस के हिस्से में जो दीनी ख़िदमत आई है देहली की दूसरी प्रकाशन-संस्थाओं को वह मक़ाम नहीं मिल सका। मेरी मुराद अंग्रेज़ी भाषा में इस्लामिक किताबों का मेयारी प्रकाशन और अमेरिकी व यूरोपीय देशों में इस्लामी तालीमात से वाक़फ़ियत तलब करने वालों तक इस्लामिक लिट्रेचर का पहुँचाना है। अल्लाह का करम व फ़ज़्ल है कि इस्लामिक बुक सर्विस के द्वारा प्रकाशित क़ुरआन पाक के अ़रबी और इंग्लिश तर्जुमे पूरी दुनिया में फैले हुए और मक़बूल हैं।

सन् 2003 में हमने हिन्दी भाषा में अनुवादित क़ुरआन करीम प्रकाशित किया। यह **हकीमुल-उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी** रह. के तर्जुमे (यानी 81 नम्बर क़ुरआन पाक) का हिन्दी संस्करण था। जिसको इस्लामिक बुक सर्विस की दरख़्वास्त पर एक मुआ़हदे के तहत **जनाब मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी साहिब** ने हिन्दी ज़बान में तर्जुमा किया था। अल्लाह का शुक्र है कि इस तर्जुमे को उर्दू की तरह हिन्दी भाषा में भी बहुत ज़्यादा मक़बूलियत हासिल हुई और हिन्दी में क़ुरआन पाक का तर्जुमा पढ़ने वालों ने इसे हाथों-हाथ लिया।

बहुत दिनों से मेरे दिल में यह बात खटकती थी कि हिन्दी भाषा में क़ुरआन पाक की कोई ऐसी तफ़सीर नहीं है जो हर तब्क़े के लिये क़ाबिले क़बूल हो। मैंने इसका ज़िक्र **मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी** से किया। उन्होंने बताया कि मेरा इरादा "तफ़सीर इब्ने कसीर" पर काम करने का है, और इस बारे में वह काम का एक ख़ाका भी तैयार कर चुके हैं। मैंने कहा सुब्हानल्लाह! यह तो बहुत ही अच्छी बात है। और उनसे समी पब्लिकेशंस नई दिल्ली के लिये इस तफ़सीर को हिन्दी में तैयार करने का आग्रह किया। उन्होंने इसको मन्ज़ूर कर लिया और इस तरह मौजूदा ज़माने की एक अहम ज़रूरत की तकमील का सामान मुहैया हो गया।

Maktaba E Ashraf

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी की हिन्दी और उर्दू में दर्जनों किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। वह लेखक भी हैं और अनुवादक भी। उनकी लिखी और अनुवाद की हुई पचास से ज़ायद किताबें मार्केट में मौजूद हैं। वह अपने तर्जुमे में न तो अ़रबी और फ़ारसी के अलफ़ाज़ को ज्यों का त्यों बाक़ी रहने देते हैं और न ही मुश्किल और कठिन हिन्दी शब्दों को इस्तेमाल करते हैं। एक आ़म हिन्दुस्तानी ज़बान, जो ख़ास तौर पर मुस्लिमों में बोली और समझी जाती है, उसका इस्तेमाल करते हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह क़ुरआनी ख़िदमत की हिन्दी ज़बान में यह अहम कड़ी आपके सामने है। उम्मीद है कि आपको पसन्द आयेगी और क़ुरआन पाक के पैग़ाम को समझने और उसको आ़म करने में एक अहम रोल अदा करेगी।

हमने इस तफ़सीर को पाँच-पाँच पारों पर तक़सीम किया है। इस तरह मुकम्मल तफ़सीर छह जिल्दों में है। जो चार हज़ार से ज़्यादा पृष्ठों पर मुश्तमिल है।

मैं अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ होने पर सरे नियाज़ झुकाता हूँ और उस पाक ज़ात का बेहद शुक्र अदा करता हूँ। अल्लाह तआ़ला क़ुरआन पाक की इस ख़िदमत को आक़ा-ए-नामदार नबी-ए-रहमत, हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये, आपकी आले पाक और अहले-बैत के लिये, आपके सहाबा किराम के लिये, तमाम बुज़ुर्गाने दीन और उलेमा-ए-किराम के लिये, मेरे और मेरे माँ-बाप, अहले ख़ानदान, अहल व अ़याल और मेरे इदारे से जुड़े तमाम हज़रात के लिये मग़फ़िरत व रहमत और ख़ैर व बरकत का ज़रिया बनाये। आमीन

अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार
अ़ब्दुस्समी
चेयरमैन
समी पब्लिकेशंस/ इस्लामिक बुक सर्विस, नई दिल्ली

Maktab E Ashraf

फ़ेहरिस्ते उनवानात

पारा नम्बर 21-25

उनवान	पेज
समर्पित	3
दिल की गहराईयों से शुक्रिया	4
प्रकाशक की ओर से	5
पारा नम्बर इक्कीस	
क़ुरआन की तालीम, नमाज़ का क़ायम करना, नमाज़ की ख़ुसूसियतें, अल्लाह का ज़िक्र और अल्लाह तआ़ला	15
बहस और गुफ़्तगू	16
क़ुरआन पाक का नुज़ूल	19
हठधर्मी और इनकार के तौर पर मोजिज़ों का मुतालबा	22
अल्लाह के अ़ज़ाब की तलब एक अहमक़ाना सवाल	24
हर जानदार को मौत का ज़ायक़ा चखना है	25
एक वास्तविकता	28
एक खेल	29
अल्लाह तआ़ला के इनामात पर नज़र डालो	30
सूरः रूम	
एक भविष्यवाणी	31
अल्लाह की बनाई हुई चीज़ों में ग़ौर व फ़िक्र करो	39
क़ियामत के दिन का कुछ हाल	40
अल्लाह की पाकी और तस्बीह	41
अल्लाह की क़ुदरत की कुछ और निशानियाँ	42
ज़मीन व आसमान	44
कोंदती बिजलियाँ	45
अल्लाह के सामने सब आ़जिज़ व बेबस हैं	46
एक मिसाल	47
हक़ रास्ते और सही दीन की पैरवी करो	49
इनसान की एक अ़जीब आ़दत	52
कामयाबी हासिल करने वाले ये हैं	53
दुनिया फ़साद और तबाही के दहाने पर	54
सही और मज़बूत दीन	55
ठंडी हवायें	56
आसमान में तैरते हुए बादल	57
हिदायत व गुमराही	59
इनसानी ज़िन्दगी के ये मर्हले	60
क़ियामत की कठिन घड़ी	61
मिसालों के पर्दे	61
सूरः लुक़मान	
नेक काम करने वालों की जमाअ़त	63
बेहक़ीक़त दास्तान	64
ईमान और नेक आमाल	65
बिना सतून के रुका हुआ यह आसमान	66
हज़रत लुक़मान अ़लैहिस्सलाम की दानिशमन्दी	66

Maktaba Ashraf

उनवान	पेज
● बेहतरीन और दिल को छूने वाली नसीहतें	69
● और ये काम की बातें	72
● तवाज़ो और इन्किसारी (विनम्रता) का बयान	74
● अच्छे अख़्लाक़ का बयान	76
● तकब्बुर की बुराई और निन्दा का बयान	77
● तकब्बुर व घमण्ड की बुराई का बयान	78
● अल्लाह का इनाम व इकराम और फिर बद-आमालियाँ?	79
● एक मज़बूत परवाना	79
● ज़मीन व आसमानों का पैदा करने वाला	80
● अल्लाह के कलिमात बेशुमार हैं	81
● रात-दिन का यह आना-जाना	82
● ये समुद्र और तैरते हुए जहाज़	84
● बदले के दिन से डरो	85
● ये ग़ैब की बातें हैं	85
सूरः सज्दा	
● यह किताब अल्लाह की तरफ़ से उतरी है	88
● छह दिन	89
● अल्लाह की बनाई हुई हर चीज़ में ख़ूबी है	90
● एक बेहूदा ख़्याल	90
● क़ियामत के दिन का मन्ज़र	92
● ईमान वाले अल्लाह के सामने सज्दे में गिर पड़ते हैं	93
● ये लोग एक दूसरे के बराबर तो नहीं हो सकते	97
● फ़ैसले का दिन	99
● स्पष्ट और खुली निशानियाँ	100
● फ़तह का दिन	102
सूरः अहज़ाब	
● अल्लाह तआ़ला पर भरोसा	104
● इनसान के सीने में दो दिल नहीं	105
● रहमत व शफ़क़त वाले पैग़म्बर	108
● एक अ़हद व इक़रार	110
● एक हादसा और उस पर अल्लाह की तरफ़ से इमदाद का आना	112
● एक सख़्त परेशानी का वक़्त	117
● बहादुरी से भरी ज़िन्दगी या बुज़दिली का प्रदर्शन	118
● ज़ाहिर में ख़ाली बातें और अन्दर ही अन्दर फ़रेब व साज़िशें	119
● यह कायरता	120
● उम्दा नमूना	121
● अ़हद का पूरा करना	122
● अल्लाह की तरफ़ से मदद व ताईद	124
● मुसलमानों की धाक और ग़लबा	126
● दुनियावी ज़िन्दगी का ऐश व आराम	130
● जिनके रुतबे बुलन्द हैं उनकी मुश्किलात भी बड़ी होती हैं	132
पारा नम्बर बाईस	
● अहले बैत से एक वायदा	134
● कुछ ख़ास अहकाम	135
● ये नेक ख़स्लत वाली बीबियाँ	141
● अब कोई इख़्तियार नहीं	144
● एक वाक़िआ, ईमान व कुफ़्र का मेयार मोमिनों की आज़माईश, नेकबख़्ती व बदबख़्ती के फ़ैसले	146
● इसमें कोई हर्ज नहीं	149

Maktaba E Ashraf

उनवान	पेज
रसूलुल्लाह और ख़ातमुन्नबिय्यीन	149
अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र	152
चमकदार और रोशन सूरज	155
निकाह व तलाक़ के कुछ मसाईल	157
निकाह वग़ैरह के कुछ और अहकाम	159
एक ख़ास और विशेष हुक्म	163
इसका भी ध्यान रहे	164
पर्दे का हुक्म	166
इसमें कोई हर्ज नहीं	170
उन पर लाखों सलाम	171
ये लोग लानत के हक़दार हैं	182
शरई पर्दे का हुक्म	184
क़ियामत का धमाका	185
हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर एक तोहमत	187
बड़ी कामयाबी यह है	188
यह मुहब्बत का ख़िताब है	189
सूरः सबा	
अल्लाह माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है	193
एक-एक ज़र्रे की निगरानी रखने वाला	194
अ़क्ल का धोखा	196
हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की फ़ज़ीलतें	197
हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का उड़न-खटोला	199
सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात और शैतानों की बेबसी	201
क़ौमे सबा का ज़िक्र	203
भूली हुई और ज़ेहन से ओझल बात	206
शैतान का धोखा	209

उनवान	पेज
अल्लाह एक है	210
रिज़्क़ देने वाला अल्लाह है	213
ख़ुशख़बरी देने और डराने वाला	214
एक हसरत भरी गुफ़्तगू	216
एक धोखा	217
हश्र का दिन	221
झुठलाना और रद्द करना	222
आप मजनूँ नहीं हैं	223
मुश्रिक लोगों से साफ़-साफ़ बातें	225
वह वक़्त भी देखने के क़ाबिल होगा	226
सूरः फ़ातिर	
पहले पहल	230
उसी का चाहा होता है	231
अल्लाह की नेमतों को याद करो	232
दुनिया का फ़रेब	232
ज़बरदस्त अ़ज़ाब या करम व मग़फ़िरत	233
कि जंगल का जंगल हरा हो गया	235
मीठे चश्मे और खारा पानी	238
रात दिन का यह उलट-फेर	238
नफ़्स की पाकीज़गी	240
ये सब बराबर नहीं	241
अल्लाह की इन निशानियों को भी देखो	243
क़ुरआन की तिलावत, नमाज़ को क़ायम करना और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना	244
क़ुरआन मजीद	245
विभिन्न कोशिशें	245
यह इनाम व इकराम	249
कितने ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब	250
ग़ैब का जानने वाला	252

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
● शिर्क बाक़ी नहीं रह सकता	253
● एक इरादा जो पूरा न हो सका	255
● दुनिया में चल-फिरकर अल्लाह की निशानियों को देखो	256
सूरः यासीन	
● आप अल्लाह तआ़ला के चुने हुए और मक़बूल पैग़म्बर हैं	258
● सामने खड़ी दीवारें	259
● एक बस्ती का वाक़िआ़	262
● दुश्मनी और मुख़ालफ़त की इन्तिहा	264
● शहर के उस किनारे से एक मुसलमान का आना	265
पारा नम्बर तेईस	
● हक़ का ऐलान	266
● मोमिन शख़्स का जन्नत में दाख़िला	267
● आह यह कैसा चलन और तरीक़ा है!	270
● बन्जर ज़मीन, लहलहाते हुए खेत	271
● अंधेरी रात और फिर सुबह की रोशनी	272
● समुद्री जहाज़	276
● चन्द हिदायतें	277
● एक ख़ौफ़नाक चीख़	278
● सूर की पित्ता पानी कर देने वाली आवाज़	279
● जन्नती ख़ुश और प्रसन्न होंगे	280
● मुजरिम लोगों का मामला	281
● एक हैरत-अंगेज़ मामला	283
● नुबुव्वत कोई शायरी नहीं	285
● क्या वे हमारी इन निशानियों पर ग़ौर नहीं करते	289
● फिर यह शिर्क	289

उनवान	पेज
● इनसान अपनी हक़ीक़त पर ग़ौर करे	290
● एक सवाल	292
सूरः सॉफ़्फ़ात	
● पूरब व पश्चिम का रब	294
● आसमान पर चमकते सितारों को देखो	296
● इनसे मालूम कीजिये	297
● हाय अफ़सोस!	298
● एक दूसरे को लानत करेंगे	300
● दो जमाअ़तें, एक बदबख़्ती के शिकंजे में और दूसरी इनाम व इकराम से सम्मानित	302
● एक अ़जीब मन्ज़र	304
● ज़क़्क़ूम का पेड़	307
● गुमराही का इतिहास बहुत पुराना है	309
● हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की पुकार	310
● हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम	311
● हक़ को तलाश करने वाली निगाह	312
● एक ख़्वाब	315
● एक बड़े ग़म से निजात	322
● हज़रत इलियास अ़लैहिस्सलाम	323
● हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम	324
● हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम	325
● इनसे ज़रा पूछिये	328
● एक निर्धारित और तयशुदा मुक़ाम	329
● एक फ़ैसला	331
● बड़ी इज़्ज़त वाला	332
सूरः सॉद	
● यह क़ुरआन सरासर नसीहत है	333
● काफ़िरों के कुछ बेहूदा ख़्यालात	335

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
पहली उम्मतों की नाफ़रमानी और उन पर आफ़तों की बारिश	338
दुनिया का एक बड़ा ताक़तवर इनसान	339
दाऊद अ़लैहिस्सलाम की अ़दालत में एक मुक़द्दमा	342
हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की तब्लीग़	344
यह सब कुछ खेल नहीं	345
सुलैमान अ़लैहिस्सलाम और घोड़ों का वाक़िआ़	346
एक आज़माईश	348
हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम का सब्र	355
हज़राते अम्बिया-ए-किराम सभी मुन्तख़ब बन्दे थे	357
राहत व आराम की जगह	358
बुरा ठिकाना	359
एक अ़ज़ीमुश्शान ख़बर	361
आदम अ़लैहिस्सलाम और इब्लीस का क़िस्सा	363
एक ऐलान	365
सूरः ज़ुमर	
बुतों के पुजारियों का भ्रम और ख़ाम-ख़्यालियाँ	366
क़ुदरत के दलाईल और निशानियाँ	369
कुफ़्र सख़्त नापसन्दीदा है	370
भला ये लोग बराबर कैसे हो सकते हैं?	371
अल्लाह की ज़मीन बहुत बड़ी और फैली हुई है	372
बड़ा दिन	373
जो अपने आपको बचाकर रखे	374

उनवान	पेज
वे लोग बद-क़िस्मत हैं	375
आसमानी बारिश	376
एक बहुत ही अच्छी बात	377
अचानक आ पड़ने वाला अ़ज़ाब	379
इन मज़ामीन में लोगों के लिये नसीहत है	380
पारा नम्बर चौबीस	
इनसे बड़ा ज़ालिम कौन होगा	383
अल्लाह तआ़ला ही सबके काम बनाने वाला है	385
यह किताब ख़ुदा की तरफ़ से उतरी हुई है	386
अपनी तरफ़ से बनाये हुए ख़ुदा	388
कायनात का पैदा करने वाला अल्लाह है	389
अपने आपको पहचानो नफ़्स के धोखे में न आओ	391
अल्लाह की रहमत व मग़फ़िरत के दरवाज़े खुले हैं	393
उन हदीसों का बयान जिनमें नाउम्मीदी और मायूसी की मनाही है	396
काले चेहरों वाले	398
एक बेवक़ूफ़ी भरी माँग	399
यह सारी कायनात उसी की बनाई हुई है	400
हज़रत इस्राफ़ील का सूर फूँकना	402
घमंडी लोगों का बुरा ठिकाना है	405
जन्नत वालों के हालात का कुछ ज़िक्र	407
जन्नत के दरवाज़ों की कुशादगी का बयान	408

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
जन्नतियों का अल्लाह की तस्बीह बयान करना	411
सूरः मोमिन	
ये आला दर्जे की सिफ़ात	413
क़ुरआन पर एतिराज़ करने वाले बद-क़िस्मत	416
अ़र्श को उठाने वाले और ख़ास फ़रिश्ते	417
क़ियामत के दिन काफ़िरों का हाल	420
आज किसकी हुकूमत है?	422
यह मुसीबत भरा दिन	424
दुनिया में घूम-फिरकर उसकी निशानियाँ देखो	426
मूसा अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़	427
एक मोमिन शख़्स की हक़-गोई	429
मोमिन का क़ियामत के दिन से डराना	432
फ़िरऔ़न की शरारत व घमंड	434
सही रास्ते की तरफ़ रहनुमाई	435
दावत का फ़र्क़	436
दोज़ख़ियों के ख़ुराफ़ाती झगड़े	440
अल्लाह की मदद ईमान वालों के साथ है	442
ज़मीन व आसमान का बनाना इनसान के बनाने से बड़ी बात है	445
ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है	445
अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल वाला है	447
झूठे माबूदों से लौ लगाना एक बड़ा जुर्म है	449
काफ़िरों के लिये तौक़ और ज़न्जीरें हैं	451
अल्लाह का वायदा सच्चा है, आप ज़रा सब्र कीजिये	452
जानवर तुम्हारे फ़ायदे के लिये हैं	453
दुनिया में घूम-फिरकर देख लो	454

उनवान	पेज
सूरः हा-मीम सज्दा	
यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल-शुदा है	456
मैं भी एक इनसान हूँ	460
अल्लाह के बनाये हुए ज़मीन व आसमान को देखो	462
क़ौमे आ़द व समूद की आश्चर्य जनक दास्तान के कुछ हिस्से	466
मुजरिमों के ख़िलाफ़ ख़ुद उनके बदन के हिस्से गवाही देंगे	468
कुछ फ़रेब कुछ धोखे	471
अल्लाह पर ईमान, उस पर जमाव और रहमत के फ़रिश्ते	473
अल्लाह की तरफ़ बुलाना और नेक आमाल	476
यह सितारे और चाँद-सूरज अल्लाह की निशानियाँ हैं	478
टेढ़ी चाल चलने वाले हमसे छुपे नहीं	479
क़ुरआन पाक और उसके न मानने वालों का ज़िक्र	480
जो जैसा करेगा वैसा पायेगा	482
पारा नम्बर पच्चीस	
क़ियामत का इल्म	483
इनसानी फ़ितरत एक जगह नहीं ठहरती	485
यह दुनिया इबरत की जगह है	486
सूरः शूरा	
आप सल्ल. पैग़म्बर हैं, किसी पर वकील नहीं	488

Maktaba Ashraf

उनवान	पेज
कायनात के सरदार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम	491
अल्लाह तआ़ला ही हाकिम है	493
एक ही तरीक़ा	495
हर एक अपने अ़मल का खुद जवाबदेह है	496
बेकार की और बिना दलील की बहसें	498
दुनिया और आख़िरत	499
हक़ व बातिल का अन्जाम	502
रिज़्क़ की अधिकता और इनसान की बग़ावत	507
अल्लाह तआ़ला की बड़ाई	509
समुद्र की सतह पर लाखों टन के वज़नी जहाज़	511
फ़रमाँबरदार बन्दे	512
बुराई का बदला बुराई	514
फ़रार होने और बचने का रास्ता	517
एक न टलने वाली घड़ी	518
कायनात का मालिक	519
क़ुदरत का एक आम क़ानून	520
सूरः ज़ुख़रुफ़	
क़ुरआन हिक्मत से भरी किताब है	522
एक सवाल और उसका वास्तविक जवाब	524
एक कितना बड़ा बोहतान	527
बाप-दादा के मज़हब की पैरवी	529
हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का नारा-ए-हक़	531
अल्लाह के ज़िक्र से ग़फ़लत	534
फ़िरऔ़न मलऊन की सरकशी और घमंड	537
चन्द बेतुकी बातें	538

उनवान	पेज
हज़रत ईसा इब्ने मरियम अ़लैहिस्सलाम	540
एक ग़ैर-अपेक्षित आ़दत	544
बदबख़्तों और बुरे लोगों के हालात	547
खुले लफ़्ज़ों में एक ऐलान	549
सूरः दुख़ान	
एक बरकत वाली रात में क़ुरआन का नुज़ूल	553
एक अंधेरा धुआँ	554
फ़िरऔ़न की क़ौम आज़माईश के शिकन्जे में	559
एक बेवक़ूफ़ी वाली बात	563
एक ऐसा दिन	566
ज़क़्क़ूम का पेड़	567
जन्नत वह जगह है जहाँ कोई तकलीफ़ व परेशानी नहीं	568
सूरः जासिया	
दलीलों और निशानियों का दफ़्तर	571
घमंडियों और हक़ से मुँह फेरने वालों का अन्जाम बुरा है	572
ये जोश मारते दरिया और समुद्र	573
बनी इस्राईल और अल्लाह तआ़ला के इनामात	575
ये ग़लत-फ़हमियाँ	576
कितना बेकार और बेहूदा दावा	577
दुनिया की तमाम उम्मतें और क़ौमें	580
खुली और स्पष्ट कामयाबी	582

Maktab E Ashraf

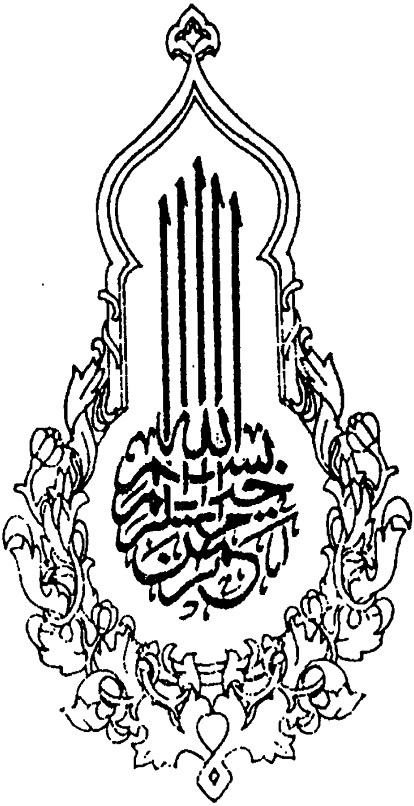

Mahtab E Ashraf

पारा नम्बर इक्कीस

اُتْلُ مَآ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ۝	जो किताब आप पर 'वही' की गई है आप उसको पढ़ा कीजिए। और नमाज़ की पाबन्दी रखिए। बेशक नमाज़ (अपनी शक्ल और ज़ाहिरी हालात के एतिबार से) बेहयाई और नामाक़ूल कामों से रोक-टोक करती रहती है, और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है। और अल्लाह तुम्हारे सब कामों को जानता है। (45)

क़ुरआन की तालीम, नमाज़ का क़ायम करना, नमाज़ की ख़ुसूसियतें, अल्लाह का ज़िक्र और अल्लाह तआ़ला

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने रसूल सल्ल. और ईमान वाले बन्दों को हुक्म दे रहा है कि वे क़ुरआने करीम की तिलावत करते रहें और इसे औरों को भी सुनायें और नमाज़ पाबन्दी से पढ़ते रहा करें। नमाज़ इनसान को बुरे और नामुनासिब कामों और नालायक़ हरकतों से बाज़ रखती है (अगर नमाज़ को उसके तक़ाज़ों और शर्तों के मुताबिक़ अदा किया जाये)।

नबी करीम सल्ल. का फ़रमान है कि जिस नमाज़ी की नमाज़ ने उसे गुनाहों और बुरे कामों से बाज़ न रखा वह अल्लाह से बहुत दूर हो जाता है। इब्ने अबी हातिम में है कि जब रसूलुल्लाह सल्ल. से इस आयत की तफ़सीर मालूम की गई तो आपने फ़रमाया जिसे उसकी नमाज़ बेजा और बुरे कामों से न रोके समझ लो कि उसकी नमाज़ ख़ुदा के यहाँ मक़बूल नहीं हुई। एक और रिवायत में है कि वह ख़ुदा से दूर ही होता चला जायेगा। एक मौक़ूफ़ रिवायत में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि जो नमाज़ी भले कामों के करने वाला और बुरे कामों से बचने वाला न हो समझ लो कि उसकी नमाज़ उसे ख़ुदा से और दूर करती जा रही है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो नमाज़ की बात न माने उसकी नमाज़ नहीं, नमाज़ बेहयाई, बुरे कामों और गुनाहों से रोक रही है, उसकी इताअ़त यह है कि इन बेकार और बुरे कामों से नमाज़ी रुक जाये।

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम से जब उनकी क़ौम ने कहा कि ऐ शुऐब! क्या तुम्हें तुम्हारी नमाज़ हुक्म करती है? तो हज़रत सुफ़ियान ने इसकी तफ़सीर में फ़रमाया हाँ ख़ुदा की क़सम! नमाज़ हुक्म भी करती है और मना भी करती है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से किसी ने कहा फ़ुलाँ शख़्स बहुत लम्बी नमाज़ पढ़ता है। आपने फ़रमाया नमाज़ उसे नफ़ा देती है जो उसका कहा माने। मेरी तहक़ीक़ में ऊपर जो मरफ़ूअ़ रिवायत बयान हुई उसका भी मौक़ूफ़ होना ही ज़्यादा सही है, वल्लाहु आलम। बज़्ज़ार में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. से किसी ने कहा हुज़ूर! फ़ुलाँ शख़्स नमाज़ पढ़ता है लेकिन चोरी नहीं छोड़ता। आपने फ़रमाया जल्द ही उसकी नमाज़ उससे यह बुराई छुड़ा देगी।

Maktab-E-Ashraf

चूँकि नमाज़ अल्लाह के ज़िक्र का नाम है, इसी लिये इसके बाद ही फ़रमाया यादे ख़ुदा बड़ी चीज़ है। अल्लाह तआ़ला तुम्हारी तमाम बातों से और तुम्हारे तमाम कामों से बाख़बर है। हज़रत अबुल-आ़लिया रह. फ़रमाते हैं कि नमाज़ में तीन चीज़ें हैं अगर ये न हों तो नमाज़ नमाज़ नहीं- इख़्लास, ख़ौफ़े ख़ुदा और ज़िक्रुल्लाह। 'इख़्लास' (यानी नेक-नीयती, ख़ालिस अल्लाह के लिये कोई अ़मल करना) से तो इनसान नेक हो जाता है, और ख़ौफ़े ख़ुदा से इनसान गुनाहों को छोड़ देता है, और ज़िक्रुल्लाह यानी क़ुरआन उसे भलाई बुराई बता देता है। वह हुक्म भी करता है और मना भी करता है। इब्ने औ़न अन्सारी रह. फ़रमाते हैं कि जब तू नमाज़ में हो तो नेकी में है और नमाज़ तुझे बुरे और नामुनासिब कामों और बातों से बचाये हुए है। और उसमें जो कुछ तू ज़िक्रे ख़ुदा कर रहा है वह तेरे लिये बड़े ही फ़ायदे की चीज़ है। हम्माद रह. का क़ौल है कि अगर कुछ नहीं तो इतना तो ज़रूर है कि नमाज़ से तू बुराईयों से बचा रहेगा। जो बन्दा यादे ख़ुदा करता है ख़ुदा तआ़ला उसे याद करता है। उसने कहा हमारे यहाँ जो साहिब हैं, वह तो कहते हैं कि मतलब इसका यह है कि जब ख़ुदा का ज़िक्र करोगे तो वह तुम्हारी याद करेगा और यह बहुत बड़ी चीज़ है। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ.

तुम मेरी याद करो मैं तुम्हारी याद करूँगा।

इसे सुनकर आपने फ़रमाया उसने सच कहा, यानी दोनों मतलब दुरुस्त हैं, यह भी और वह भी, और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी यह तफ़सीर मन्क़ूल है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बन रबीआ़ रह. से एक मर्तबा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. ने पूछा कि इस जुमले का मतलब जानते हो? उन्होंने कहा हाँ इससे मुराद नमाज़ में सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर वग़ैरह कहना है। आपने फ़रमाया तूने अ़जीब बात कही, यह यूँ नहीं है बल्कि मक़सूद यह है कि हुक्म के और मना के वक़्त ख़ुदा का तुम्हें याद करना तुम्हारे ज़िक्रुल्लाह से बहुत बड़ा और बहुत अहम है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अबूज़र, हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. वग़ैरह से भी यही मन्क़ूल है और इसी को इमाम इब्ने जरीर रह. पसन्द फ़रमाते हैं।

وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰـهُنَا وَاِلٰـهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ○

और तुम अहले किताब के साथ सिवाय मुहज़्ज़ब (अच्छे और सभ्य) तरीक़े के बहस मत करो। हाँ! जो उनमें ज़्यादती करें। और यूँ कहो कि हम उस किताब पर भी ईमान रखते हैं जो हम पर नाज़िल हुई और उन किताबों पर भी जो तुम पर नाज़िल हुईं। और (यह तुम भी मानते हो) कि हमारा और तुम्हारा माबूद एक है, और हम तो उसकी इताअ़त करते हैं। (46)

बहस और गुफ़्तगू

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत जिहाद के हुक्म की आयत के साथ मन्सूख़ है। अब तो यही है कि या तो इस्लाम क़बूल करें या जिज़या अदा करें, या लड़ाई लड़ें। लेकिन कुछ दूसरे बुज़ुर्ग

Maktab E Ashraf

मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह मोहकम (मज़बूत, अपनी जगह क़ायम) और बाक़ी है। जो यहूदी या ईसाई दीनी बातों और मामलात को समझना चाहे उसे मुहज़्ज़ब (अच्छे अन्दाज़ और) तरीक़े पर सुलझे हुए ढंग से समझा देना चाहिये। हो सकता है कि वह सही रास्ता (यानी इस्लाम) इख़्तियार कर ले, जैसा कि एक दूसरी आयत में आम हुक्म मौजूद है:

اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ. الخ

अपने रब की राह की दावत हिक्मत (समझ, अच्छे ढंग) और बेहतरीन नसीहत के साथ लोगों को दो।

हज़रत मूसा और हज़रत हारून अ़लैहिमस्सलाम को जब फ़िरऔ़न की तरफ़ भेजा जाता है तो फ़रमान होता है:

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّیِّنًا لَّعَلَّهٗ یَتَذَكَّرُ اَوْ یَخْشٰی.

यानी उससे नर्मी से गुफ़्तगू करना, हो सकता है कि वह नसीहत (इस्लाम की दावत) क़बूल कर ले और उसका दिल पिघल जाये।

यही क़ौल हज़रत इमाम इब्ने जरीर रह. का पसन्दीदा है और हज़रत इब्ने ज़ैद से भी यही मन्क़ूल है। हाँ उनमें से जो ज़ुल्म पर इसरार करें और ज़िद और तास्सुब बरतें, हक़ को क़बूल करने से इनकार कर दें तो फिर मुनाज़रे, मुबाहसे मौजूद हैं। फिर तो टकराव और जंग का हुक्म है। जैसे एक दूसरी जगह पर अल्लाह पाक का इरशाद है:

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَیِّنٰتِ. الخ

कि हमने रसूलों को वाज़ेह (स्पष्ट) दलीलों के साथ भेजा और उनके साथ किताब नाज़िल फ़रमाई ताकि लोगों में अ़दल व इन्साफ़ क़ायम हो सके। और हमने लोहा भी नाज़िल फ़रमाया है जिसमें सख़्त लड़ाई है........।

पस अल्लाह तआ़ला का हुक्म यह है कि भलाई और नर्मी से जो न माने उस पर सख़्ती की जाये, जो लड़े उससे लड़ा जाये, हाँ यह और बात है कि मातहती और ताबेदारी में रहकर जिज़्या अदा करे।

फिर फ़रमाता है कि जिसके खरे-खोटे होने का तुम्हें यक़ीनी इल्म न हो तो उसको झुठलाने की तरफ़ क़दम न बढ़ाओ और न बिना सोचे समझे और जाने तस्दीक़ कर दिया करो। मुम्किन है कि इस तरह तुम किसी हक़ बात को झुठला दो, और मुम्किन है कि किसी बातिल (ग़लत बात और नाहक़) की तस्दीक़ करो। यानी कह दो कि हमारा ख़ुदा की हर बात पर ईमान है, अगर तुम्हारी पेश की हुई चीज़ें ख़ुदा की नाज़िल की हुई हैं तो हम इसे तस्लीम करते हैं और अगर तुमने रद्दोबदल कर दी है तो हम इसे नहीं मानते। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि अहले किताब तौरात को इबरानी ज़बान (भाषा) में पढ़ते और हमारे सामने अ़रबी में उसका तर्जुमा करते, इस पर नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया- न तुम उन्हें सच्चा कहो न झूठा बल्कि तुम-

اٰمَنَّا بِالَّذِیْٓ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَاُنْزِلَ اِلَیْكُمْ وَاِلٰـهُنَا وَاِلٰـهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ.

पढ़ दिया करो। कि हम उस किताब पर भी ईमान रखते हैं जो हम पर नाज़िल हुई और उन किताबों पर भी जो तुम पर नाज़िल हुईं, और हमारा और तुम्हारा माबूद एक है और हम तो उसकी इताअ़त करते

हैं। (यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर चल रही है)।

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. के पास एक यहूदी आया और कहने लगा- क्या ये मुर्दे बोलते हैं? आपने फ़रमाया अल्लाह ही को इल्म है। उसने कहा मैं जानता हूँ ये यक़ीनन बोलते हैं। इस पर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया ये अहले किताब जब तुमसे कोई बात बयान करें तो तुम इनकी न तस्दीक़ करो और न तक्ज़ीब (यानी न इनकी एक दम से पुष्टि करो और न इनको झुठलाओ) बल्कि कह दो कि हमारा ख़ुदा पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान है। यह इसलिये कि कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी झूठ को तस्लीम करो या किसी सच को झूठ बतला दो, हालाँकि यह सख़्त बुरा काम है। यहाँ यह भी ख़्याल रहे कि अहले किताब की ज़्यादातर बातें तो ग़लत और झूठ ही होती हैं। उमूमन ग़लत बातें बयान करते और बोहतान बाँधते हैं। उनमें तहरीफ़ व तब्दील (यानी अल्लाह के कलाम में रद्दोबदल करना), व तावील (उसके ख़िलाफ़े मक़सद मायने बयान करना) रिवाज पा चुकी है, और सच्चाई और हक़ीक़त ऐसी रह गई है कि गोया कुछ भी नहीं। फिर एक बात और भी है कि फ़र्ज़ करो सच भी हो तो हमें क्या फ़ायदा! हमारे पास तो ख़ुदा की कामिल किताब मौजूद है। चुनाँचे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि अहले किताब से तुम कुछ भी न पूछो, जब वे ख़ुद गुमराह हैं तो तुम्हारी रहबरी क्या करेंगे? हाँ यह हो सकता है कि उनकी किसी सच्ची बात को तुम झुठला दो, या उनकी किसी झूठी बात को तुम तस्लीम कर लो। याद रखो हर अहले किताब के दिल में अपने दीन का एक हिस्सा तास्सुब है, जैसे कि माल की ख़्वाहिश होती है। (इब्ने जरीर)

सही बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि तुम अहले किताब से सवालात क्यों करते हो? तुम पर तो ख़ुदा की तरफ़ से अभी-अभी किताब नाज़िल हुई है जो बिल्कुल ख़ालिस है, जिसमें बातिल (ग़ैर-हक़) की कोई मिलावट नहीं और न हो सके। तुम से तो ख़ुद ख़ुदा तआ़ला ने फ़रमा दिया कि अहले किताब ने ख़ुदा के दीन को बदल डाला। ख़ुदा की किताब में तग़य्युर कर दिया और अपने हाथों लिखी हुई किताबों को ख़ुदा की किताब कहने लगे और दुनिया का नफ़ा (फ़ायदा और लाभ) हासिल करने लगे। क्यों भला तुम्हारे पास जो इल्मे ख़ुदा है, क्या वह तुम्हें काफ़ी नहीं? कि तुम उनसे दरियाफ़्त करो। देखो तो किस क़द्र सितम है कि उनमें से एक भी तुम से कुछ नहीं पूछता और तुम उनसे दरियाफ़्त करते फिरो?

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि एक मर्तबा हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ि. ने मदीने में क़ुरैश की एक जमाअ़त के सामने फ़रमाया कि देखो उन तमाम अहले किताब में और उनकी बातें बयान करने वालों में सबसे अच्छे और सच्चे हज़रत कअ़बे अहबार हैं, लेकिन बावजूद इसके उनकी बातों में भी हम झूठ पाते हैं, बल्कि जिन किताबों पर उन्हें एतिमाद है वह ख़ुद गीली-सूखी (सही-ग़लत) सब जमा कर लेते हैं। उनमें ख़ुद सच-झूठ सही-ग़लत भरा पड़ा है। उनमें मज़बूत इल्म वाले हाफ़िज़ों की जमाअ़त थी ही नहीं। यह तो इसी उम्मत (यानी उम्मते मुहम्मदिया) पर ख़ुदा का फ़ज़्ल है कि इसमें बेहतरीन दिल व दिमाग़ वाले, आला समझ व फ़हम वाले और उम्दा हिफ़्ज़ व इल्मी मज़बूती वाले लोग ख़ुदा ने पैदा कर दिये। लेकिन फिर भी आप देखिये कि किस क़द्र मौज़ूआ़त (नाक़ाबिले एतिबार और ग़लत बातों) का ज़ख़ीरा जमा हो गया है, और किस तरह लोगों ने बातें गढ़ ली हैं, अगरचे मुहद्दिसीन ने उस बातिल (ग़लत बातों के ज़ख़ीरे और ग़ैर-हक़)

को हक़ से अलग कर दिया।

और इसी तरह हमने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई। सो जिन लोगों को हमने किताब (की नफ़ा देने वाली समझ) दी है, वे इस (आप वाली) किताब पर ईमान ले आते हैं, और इन (अ़रब के मुशिरक) लोगों में भी बाज़े ऐसे (इन्साफ़ पसन्द) हैं कि इस किताब पर ईमान ले आते हैं। और हमारी आयतों से सिवाय (ज़िद्दी) काफ़िरों के और कोई मुन्किर नहीं होता। (47) और आप इस किताब से पहले न कोई किताब पढ़े हुए थे और न कोई किताब अपने हाथ से लिख सकते थे, कि ऐसी हालत में यह हक़ न पहचानने वाले लोग कुछ शुब्हा निकालते। (48) बल्कि यह किताब ख़ुद बहुत-सी वाज़ेह दलीलें हैं उन लोगों के ज़ेहन में जिनको इल्म अ़ता हुआ है, और हमारी आयतों से बस ज़िद्दी लोग इनकार किए जाते हैं। (49)	وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰـهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَاۗءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ٥ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ٥ بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ٥

क़ुरआन पाक का नुज़ूल

फ़रमान है कि जैसे हमने पहले अम्बिया पर अपनी किताबें नाज़िल फ़रमाई थीं इसी तरह यह किताब यानी क़ुरआन शरीफ़ हमने ऐ हमारे आख़िरी रसूल! तुम पर नाज़िल फ़रमाया है। पस अहले किताब में से जिन लोगों ने हमारी किताब की क़द्र की और इसकी तिलावत का हक़ अदा किया वे जहाँ अपनी किताबों पर ईमान लाये इस किताब को भी मानते हैं। जैसे हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. वग़ैरह, और उन लोगों यानी क़ुरैश वग़ैरह में से भी जो लोग इस पर ईमान लाते हैं। हाँ जो लोग बातिल से हक़ को छुपाने वाले और सूरज की रोशनी से आँखें बन्द करने वाले हैं वे तो इसके भी मुन्किर (इनकारी) हैं।

फिर फ़रमाता है ऐ नबी! तुम इन में इतनी लम्बी मुद्दत रह चुके हो, इस क़ुरआन के नाज़िल होने से पहले अपनी उम्र का एक बड़ा हिस्सा इनमें गुज़ारा, इन्हें ख़ूब मालूम है कि आप पढ़े लिखे नहीं हैं, सारी क़ौम जानती है कि आप बिल्कुल उम्मी हैं, न लिखना जानते हैं न पढ़ना। फिर आज जो आप एक अनोखी, फ़सीह व बलीग़ और हिक्मत से भरी किताब पढ़ते हैं, ज़ाहिर है कि वह ख़ुदा की तरफ़ से है। आप इस हालत में कि एक हर्फ़ पढ़े हुए नहीं ख़ुद कोई किताब तैयार और मुरत्तब नहीं कर सकते। हुज़ूर सल्ल. की यही सिफ़त पहली आसमानी किताबों में भी थी, जैसा कि क़ुरआन के अन्दर बयान किया गया है:

اَلَّذِيْنَ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ............... الخ

यानी जो लोग पैरवी करते हैं इस रसूले उम्मी की जिसकी सिफ़ात वे अपनी किताब तौरात व इन्जील में लिखी हुई पाते हैं, जो उन्हें नेकियों का हुक्म करता है और बुराईयों से रोकता है।

Maktab E Ashraf

लुत्फ़ की बात यह है कि अल्लाह के मासूम नबी सल्ल. हमेशा लिखने से दूर ही रखे गये। एक सतर के क्या मायने एक हर्फ़ भी लिखना आपको न आता था। आपने कातिब (लिखने वाले) मुक़र्रर कर लिये थे जो अल्लाह की 'वही' (अल्लाह के तरफ़ से उतरे पैग़ाम) को लिख लेते थे और ज़रूरत के वक़्त बादशाहों से ख़त व किताबत (पत्राचार) भी वही करते थे। पिछले फ़ुक़हा में से क़ाज़ी अबुल-वलीद बाजी वग़ैरह ने कहा है कि हुदैबिया वाले दिन ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने हाथ से यह जुमला सुलह-नामे में लिखा थाः

هٰذَامَا قَاضٰى عَلَيْهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِاللّٰهِ.

यानी ये वे शर्तें हैं जिन पर मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने फ़ैसला किया।

यह क़ौल दुरुस्त नहीं। यह वहम क़ाज़ी साहिब को बुख़ारी शरीफ़ की उस रिवायत से हुआ है जिसमें ये अलफ़ाज़ हैं:

ثم اخذ فكتب.

यानी फिर हुज़ूर ने लेकर लिखा।

लेकिन इसका मतलब यह है कि आपने लिखने का हुक्म दिया, जैसा कि एक दूसरी रिवायत में साफ़ मौजूद है:

ثم امر فكُتِبَ.

यानी फिर आपने हुक्म दिया और लिखा गया।

पूरब व पश्चिम (यानी सारी दुनिया) के तमाम उलेमा का यही मज़हब है, बल्कि बाजी वग़ैरह पर उन्होंने इस क़ौल का बहुत सख़्त रद्द किया और इससे बेज़ारी ज़ाहिर की है। और इस क़ौल की तरदीद अपने अश्आ़र और ख़ुतबों (बयानात) में भी की है। लेकिन यह भी ख़्याल रहे कि क़ाज़ी साहिब वग़ैरह का यह ख़्याल हरगिज़ नहीं कि आप लिखना जानते थे बल्कि वह कहते हैं कि आपका यह जुमला सुलह-नामे पर लिख लेना आपका एक मोजिज़ा था जैसे हुज़ूरे पाक सल्ल. का फ़रमान है कि दज्जाल की दोनों आँखों के बीच 'काफ़िर' लिखा हुआ होगा, और एक रिवायत में है कि 'क-फ़-र' लिखा हुआ होगा। जिसे हर मोमिन पढ़ लेगा। यानी वह अगरचे अनपढ़ हो तब भी उसे पढ़ लेगा। यह मोमिन की एक करामत होगी। इसी तरह यह जुमला लिख लेना अल्लाह के नबी का एक मोजिज़ा था। इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि आप लिखना जानते थे, या आपने सीखा था। बाज़ लोग एक रिवायत पेश करते हैं जिसमें है कि नबी करीम सल्ल. का इन्तिक़ाल न हुआ जब तक कि आपने लिखना न सीख लिया, यह रिवायत बिल्कुल ज़ईफ़ (कमज़ोर) बल्कि बिल्कुल बेबुनियाद है। क़ुरआने करीम की इस आयत को देखिये किस क़द्र ताकीद के साथ नबी करीम सल्ल. के पढ़ा हुआ होने का इनकार करती है और कितनी सख़्ती के साथ ज़ोरदार अलफ़ाज़ में इसका भी इनकार करती है कि आप लिखना जानते हों।

यह जो फ़रमाया कि दाहिने हाथ से, तो एक आ़म आ़दत के एतिबार कह दिया है कि लिखा तो दाहिने हाथ से ही जाता है, इसी की तरह आयत "व ला ताईरिंय्यतीरु बि-जनाहैहि......" में है, क्योंकि हर परिन्दा अपने परों से ही उड़ता है। पस हुज़ूर सल्ल. का अनपढ़ होना बयान फ़रमाकर इरशाद होता है कि अगर आप पढ़े लिखे होते तो यह बातिल-परस्त आपके बारे में शक करने की गुन्जाईश पाते भी, कि शायद आप

पहले अम्बिया की किताबों से पढ़-लिखकर नक़ल कर लेते हैं, लेकिन यहाँ तो ऐसा नहीं। ताज्जुब है कि बावजूद ऐसा होने के फिर भी ये लोग रसूलुल्लाह सल्ल. पर इल्ज़ाम लगाते हैं और कहते हैं कि ये तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं जिन्हें इन्होंने लिख ली हैं, वही उनके सामने सुबह-शाम पढ़ी जाती हैं, इसके बावजूद कि ये ख़ूब जानते हैं कि हमारे रसूल पढ़े लिखे नहीं।

उनके इस क़ौल के जवाब में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- उन्हें जवाब दो कि इसे उस ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाया है जो ज़मीन व आसमान की छुपी चीज़ों को जानता है। यहाँ फ़रमाया बल्कि ये रोशन आयतें हैं जो इल्म रखने वालों के सीनों में हैं। ख़ुद आयतें वाज़ेह, साफ़ और सुलझे हुए अलफ़ाज़ में, फिर उलेमा पर उनका समझना याद करना पहुँचाना सब आसान। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ.

यानी हमने इस क़ुरआन को नसीहत के लिये बिल्कुल आसान कर दिया है। पस क्या कोई है जो इससे नसीहत हासिल करे?

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर नबी को ऐसी चीज़ दी गई जिसके सबब लोग उन पर ईमान लाये। मुझे ऐसी चीज़ 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम यानी क़ुरआन) दी गई है जो ख़ुदा ने मेरी तरफ़ नाज़िल फ़रमाई है, तो मुझे ज़ाते ख़ुदावन्दी से उम्मीद है कि तमाम नबियों के ताबेदारों (मानने वालों) से ज़्यादा हमारे ताबेदार होंगे। सही मुस्लिम की हदीस में, अल्लाह का फ़रमान है कि ऐ नबी! मैं तुम्हें आज़माऊँगा और तुम्हारी वजह से लोगों की भी आज़माईश कर लूँगा। मैं तुम पर ऐसी किताब नाज़िल फ़रमाऊँगा जिसे पानी धो न सके, तू उसे सोते जागते पढ़ता रहेगा। मतलब यह है कि चाहे उसके हुरूफ़ पानी से धो दिये जायें लेकिन वह ज़ाया होने से महफ़ूज़ है। जैसा कि एक और हदीस में है कि अगर क़ुरआन किसी चमड़े में हो तो उसे आग नहीं जलायेगी, इसलिये कि वह सीनों में महफ़ूज़ है, ज़बानों पर आसान है, दिलों में मौजूद है और अपने लफ़्ज़ और मायने के एतिबार से एक जीता-जागता मोजिज़ा है। यही वजह है कि अगली (पहली आसमानी) किताबों में इस उम्मत की एक सिफ़त यह भी ज़िक्र की गयी है:

اَنَاجِيْلُهُمْ فِىْ صُدُوْرِهِمْ.

कि उनकी किताब उनके सीनों में होगी।

इमाम इब्ने जरीर रह. इसे पसन्द फ़रमाते हैं कि मायने ये हैं कि उनको इस बात का अच्छी तरह इल्म है कि तू इस किताब से पहले कोई किताब नहीं पढ़ता था और न अपने हाथ से कुछ लिखता था। यह स्पष्ट और खुली आयतें अहले किताब के इल्म रखने वाले लोगों के सीनों में मौजूद हैं। क़तादा रह. और इब्ने जुरैज से भी यही मन्क़ूल है और पहला क़ौल हसन बसरी रह. का है और यही औफ़ी रह. की रिवायत से हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है, और यही इमाम ज़ह्हाक ने कहा है और यही ज़्यादा मुनासिब मालूम होता है। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाता है कि हमारी आयतों का झुठलाना क़बूल न करना, यह हद से गुज़र जाने वालों और ज़िद्दी लोगों का ही काम है, जो न हक़ को समझते हैं और न उसकी तरफ़ माईल होते हैं। जैसे फ़रमान है कि जिन पर तेरे रब की बात साबित हो चुकी है वे हरगिज़ ईमान न लायेंगे अगरचे उनके पास सब निशानियाँ आ जायें, यहाँ तक कि वे दर्दनाक अ़ज़ाबों को अपनी आँखों से न देख लें (और जब आँख से

Maktab E Ashraf

देख लेंगे तो उस वक़्त का ईमान लाना कुछ फ़ायदा न देगा)।

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ
اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ
مُّبِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ
الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ ع٥
لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ
كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ
مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝

और ये लोग यूँ कहते हैं कि उन पर उनके रब के पास से निशानियाँ क्यों नहीं नाज़िल हुईं? आप कह दीजिए कि वे निशानियाँ तो ख़ुदा के क़ब्ज़े में हैं और मैं तो सिर्फ़ एक साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। (50) क्या उन लोगों को यह बात काफ़ी नहीं हुई कि हमने आप पर यह किताब नाज़िल फ़रमाई जो उनको सुनाई जाती रहती है, बेशक इस किताब में ईमान लाने वाले लोगों के लिए बड़ी रहमत और नसीहत है। (51)

आप यह कह दीजिए कि अल्लाह तआला मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह काफ़ी है। उसको सब चीज़ की ख़बर है जो आसमानों में है और ज़मीन में है, और जो लोग झूठी बातों पर यक़ीन रखते हैं और अल्लाह तआला के मुन्किर (इनकारी) हैं तो वे लोग बड़े घाटा उठाने वाले हैं। (52)

हठधर्मी और इनकार के तौर पर मोजिज़ों का मुतालबा

काफ़िरों की ज़िद, तकब्बुर और हठधर्मी बयान हो रही है कि उन्होंने अल्लाह तआला के रसूल सल्ल. से ऐसी ही निशानी तलब की जैसी कि हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम से उनकी क़ौम ने माँगी थी। फिर अपने नबी को हुक्म देता है कि इन्हें जवाब दीजिये कि आयतें, मोजिज़े और निशानियाँ दिखाना मेरे बस की बात नहीं, यह ख़ुदा के हाथ में है। अगर उसने तुम्हारी नेक नीयतें मालूम कर लीं तो वह मोजिज़ा दिखायेगा और अगर तुम अपनी ज़िद और इनकार से बढ़-बढ़कर बातें ही बना रहे हो तो वह ख़ुदा तुम से मग़्लूब हुआ नहीं कि उसकी मन्शा तुम्हारी मन्शा के ताबे हो जाये। जो तुम माँगो वह ख़्वाह-मख़्वाह ही कर दिखाये। जैसे एक और आयत में है कि आयतें भेजने से हमें कोई रोक नहीं सिवाय इसके कि पहले गुज़रे लोग भी बराबर इनकार ही करते रहे। समूद वालों को देखो हमारी निशानी ऊँटनी जो उनके पास आई उन्होंने उस पर ज़ुल्म ढाया, कह दो कि मैं तो सिर्फ़ एक मुबल्लिग़ (अल्लाह के पैग़ाम को पहुँचाने वाला) हूँ पैग़म्बर हूँ क़ासिद हूँ मेरा काम तुम्हारे कानों तक अल्लाह की आवाज़ को पहुँचा देना है। मैंने तो तुम्हें तुम्हारा बुरा भला समझा दिया, अब तुम जानो तुम्हारा काम। हिदायत व गुमराही ख़ुदा की तरफ़ से है। वह अगर किसी को गुमराह कर दे तो उसकी रहबरी कोई नहीं कर सकता।

चुनाँचे एक दूसरी जगह है कि तुझ पर इनकी हिदायत का ज़िम्मा नहीं, यह ख़ुदा का काम है और उसकी मन्शा पर मौक़ूफ़ है। भला इसमें इस फ़ुज़ूल की बकवास को तो देखो कि किताबे अ़ज़ीज़ इनके पास आ चुकी, जिसके पास किसी तरफ़ से भी बातिल नहीं फटक सकता, और इन्हें अब तक निशानी की तलब

है? हालाँकि यह तो तमाम मोजिज़ों से बढ़कर मोजिज़ा है। तमाम दुनिया के फ़सीह व बलीग़ (अरबी भाषा के माहिर व क़ाबिल) इसके जैसा पेश करने से और इस कलाम के मुक़ाबले का बनाने से आजिज़ आ गये। पूरे क़ुरआन का मुक़ाबला तो क्या करते दस सूरतों का बल्कि एक सूरत भी इसके जैसी बनाना और पेश करना भी बावजूद चुनौती के न कर सके। तो क्या इतना भारी मोजिज़ा इन्हें काफ़ी नहीं जो और मोजिज़े तलब करने पहुँचे हैं? यह तो वह पाक किताब है जिसमें पहली गुज़री तमाम बातों की ख़बर है और होने वाली बातों की पेशगोई है, और झगड़ों का फ़ैसला है, और यह उसकी ज़बान से पढ़ी जाती है जो महज़ उम्मी है, जिसने किसी से एक लफ़्ज़ नहीं पढ़ा और जो एक हर्फ़ लिखना नहीं जानता, बल्कि जो पढ़े-लिखे लोगों की सोहबत में कभी नहीं बैठा, और वह किताब पढ़ता है जिससे पहली आसमानी किताबों का भी सही और ग़ैर-सही होना मालूम होता है, जिसके अलफ़ाज़ में मिठास, जिसके बयान और अन्दाज़ में आला दर्जे की भाषाई और मज़मूनी ख़ूबियाँ और कमालात हैं। जिसका बयान, मज़मून और अन्दाज़े बयान इस क़द्र आला दर्जे का है कि जिसकी मिसाल किसी और कलाम में नहीं पाई जाती। ख़ुद बनी इस्राईल के उलेमा भी इसकी तस्दीक़ पर मजबूर, पहली आसमानी किताबें जिस पर गवाह, भले लोग जिसके प्रशंसक और क़ायल, इसके अहकाम के वाहक, इस इतने बड़े मोजिज़े की मौजूदगी में किसी और मोजिज़े की तलब ख़ालिस बद-दियानती और बद-नीयती है।

फिर फ़रमाता है कि इसमें ईमान वालों के लिये रहमत व नसीहत है। यह क़ुरआन हक़ को ज़ाहिर करने वाला, बातिल को बरबाद करने वाला, अगलों के वाक़िआत तुम्हारे सामने रखकर तुम्हें नसीहत व इबरत के मौक़े देता है, गुनाहगारों के अन्जाम दिखाकर तुम्हें गुनाहों से रोकता है। कह दो कि मेरे और तुम्हारे बीच ख़ुदा गवाह है और उसकी गवाही काफ़ी है। वह तुम्हारे मुझको झुठलाने व सरकशी को और मेरी सच्चाई और ख़ैरख़्वाही को अच्छी तरह जानता है। अगर मैं उस पर झूठ बाँधता तो वह ज़रूर मुझसे इन्तिक़ाम ले लेता। वह ऐसे लोगों को बे-इन्तिक़ाम (बिना बदला लिये) नहीं छोड़ता, जैसा कि ख़ुद उसका फ़रमान है कि अगर यह रसूल मुझ पर एक बात गढ़ लेता तो मैं इसका दाहिना हाथ पकड़कर इसकी मुख्य रग काट देता और कोई न होता जो इसे मेरे हाथ से छुड़ा सके।

चूँकि उस पर मेरी सच्चाई रोशन है, मैं उसका भेजा हुआ हूँ और उसका नाम लेकर उसकी कही हुई तुम से कहता हूँ इसलिये वह मेरी ताईद करता है और मुझे दिन-ब-दिन ग़लबा देता जाता है। और मुझसे मोजिज़े पर मोजिज़े ज़ाहिर कराता जाता है। वह ज़मीन व आसमान के ग़ैब (छुपे) का जानने वाला है, उस पर एक ज़र्रा भी पोशीदा नहीं। बातिल को मानने वाले और ख़ुदा को न मानने वाले ही नुक़सान उठाने वाले और ज़लील हैं। क़ियामत के दिन उन्हें उनकी बद-आमाली का नतीजा भुगतना पड़ेगा और जो सरकशियाँ यहाँ की हैं सब का मज़ा चखाना पड़ेगा। भला ख़ुदा को न मानना और बुतों को मानना इससे बढ़कर और ज़ुल्म क्या होगा? व अ़लीम व हकीम ख़ुदा इसका बदला दिये बग़ैर हरगिज़ न रहेगा।

और ये लोग आप से अ़ज़ाब का तक़ाज़ा करते हैं। और अगर (अल्लाह तआ़ला के इल्म में अज़ाब आने की) मियाद मुक़र्रर न होती तो उन पर अज़ाब आ चुका होता, और वह अज़ाब उन पर एकदम से आ पहुँचेगा, और उनको	وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاۗءَهُمُ الْعَذَابُ ۭ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ

बِالْعَذَابِؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ۝ يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ۝	ख़बर भी न होगी। (53) ये लोग आप से अज़ाब का तकाज़ा करते हैं और इसमें कुछ शक नहीं कि जहन्नम उन काफ़िरों को घेर लेगी। (54) जिस दिन कि उन पर अज़ाब उनके ऊपर से और उनके नीचे से घेर लेगा और हक़ तआ़ला फ़रमायेगा कि जो कुछ तुम करते रहे हो (अब उसका मज़ा) चखो। (55)

अल्लाह के अ़ज़ाब की तलब एक अहमक़ाना सवाल

मुश्रिकों का अपनी जहालत से अ़ज़ाबे ख़ुदा का तलब करना बयान हो रहा है। ये अल्लाह के नबी सल्ल. से भी यही कहते थे और ख़ुद ख़ुदा तआ़ला से भी यही दुआ़यें करते थे कि ऐ अल्लाह! अगर यह तेरी तरफ़ से हक़ है तो तू हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हमें और कोई दर्दनाक अ़ज़ाब दे। यहाँ उन्हें जवाब मिलता है कि रब्बुल-आ़लमीन यह बात मुक़र्रर कर चुका है कि इन कुफ़्फ़ार को क़ियामत के दिन अ़ज़ाब होंगे, अगर यह न होता तो इनके माँगते ही अ़ज़ाब के डरावने बादल इन पर बरस पड़ते। अब भी ये यक़ीन मानें कि ये अ़ज़ाब आयेंगे और ज़रूर आयेंगे, बल्कि इनकी बेख़बरी में अचानक और एक दम से आ पड़ेंगे। ये अ़ज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं और जहन्नम भी इन्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है, यानी यक़ीनन इन्हें अ़ज़ाब होगा।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि वह जहन्नम यही "बहरे अख़्ज़र" है, सितारे इसी में झड़ेंगे और सूरज चाँद इसी में बेनूर करके डाल दिये जायेंगे। फिर यह भड़क उठेगा और जहन्नम बन जायेगा। मुस्नद अहमद में मरफ़ूअ़ हदीस है कि समुद्र ही जहन्नम है। हदीस के रावी यअ़ला से लोगों ने कहा कि क्या आप नहीं देखते कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:

نَارًا اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا.

यानी वह आग जिसे क़नातें घेरे हुए हैं।

तो फ़रमाया क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े में यअ़ला की जान है कि मैं उसमें हरगिज़ दाख़िल न हूँगा जब तक कि अल्लाह तआ़ला के सामने पेश न किया जाऊँ। और मुझे उसका एक क़तरा भी न पहुँचेगा यहाँ तक कि मैं अल्लाह के सामने पेश न किया जाऊँ। यह तफ़सीर भी बहुत ग़रीब है और हदीस भी बहुत ही ग़रीब है। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाता है कि उस दिन इन्हें नीचे ऊपर से आग ढाँक लेगी। जैसे एक और आयत में है:

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ.

इनके लिये जहन्नम ही ओढ़ना बिछौना है। एक और आयत में है:

لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ.

यानी इनके ऊपर नीचे आग ही का फ़र्श व सायबान होगा। एक और मक़ाम पर इरशाद है:

Maktab E Ashraf

لَوْيَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَوَلَاعَنْ ظُهُوْرِهِمْ...... الخ

यानी काश कि काफ़िर उस वक़्त को जान लें जबकि न ये अपने आगे से आग हटा सकेंगे न पीछे से।

इन आयतों से मालूम हो गया कि हर तरफ़ से इन कुफ़्फ़ार को आग खा रही होगी। आगे से, पीछे से, ऊपर से, नीचे से, दायें से, बायें से, और ऊपर से ख़ुदा तआ़ला की डाँट-डपट और मुसीबत होगी। उधर से हर वक़्त कहा जायेगा लो अब अ़ज़ाब के मज़े चखो। पस एक तो वह ज़ाहिरी जिस्मानी अ़ज़ाब दूसरा बातिनी व रूहानी अ़ज़ाब। इसी का ज़िक्र इस आयत में है:

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ........ الخ

इसी तरह एक और आयत में यह मज़मून है:

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا........... الخ

यानी जबकि जहन्नम में औंधे मुँह घसीटे जायेंगे और कहा जायेगा कि लो अब आग के अ़ज़ाब चखो। जिस दिन इन्हें धक्के दे-देकर जहन्नम में डाला जायेगा और कहा जायेगा यह वह जहन्नम है जिसे तुम झुठलाते रहे। अब बताओ कि यह जादू है या तुम अन्धे हो? जाओ अब जहन्नम में चले जाओ, अब तुम्हारा सब्र करना न करना बराबर है। तुम्हें तुम्हारे आमाल का बदला भुगतना ज़रूरी है।

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ○ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ قف ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ○ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ○ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ○ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ق اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ز وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ○	ऐ मेरे ईमान वाले बन्दो! मेरी ज़मीन फ़राख़ "यानी खुली हुई और बहुत बड़ी" है सो ख़ालिस मेरी ही इबादत करो। (56) हर शख़्स को मौत का मज़ा चखना है, फिर तुम सबको हमारे पास आना है। (57) और जो लोग ईमान लाए और अच्छे अ़मल किए हम उनको जन्नत के बालाख़ानों में जगह देंगे, जिनके नीचे से नहरें चलती होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (नेक) काम करने वालों का क्या अच्छा अज्र है। (58) जिन्होंने सब्र किया, और वे अपने रब पर भरोसा किया करते थे। (59) और बहुत-से जानवर ऐसे हैं कि जो अपनी गिज़ा उठाकर नहीं रखते अल्लाह ही उनको (उनके लिए लिखी गई) रोज़ी पहुँचाता है और तुमको भी, और वह सब कुछ सुनता, सब कुछ जानता है। (60)

हर जानदार को मौत का ज़ायक़ा चखना है

अल्लाह तबारक व तआ़ला इस आयत में ईमान वालों को हिजरत का हुक्म देता है कि जहाँ वे दीन को क़ायम न रख सकते हों वहाँ से उस जगह चले जायें जहाँ उनके दीन में उन्हें आज़ादी है। ख़ुदा की

ज़मीन बहुत कुशादा (बड़ी और फैली हुई) है, जहाँ वे फ़रमाने ख़ुदावन्दी के मातहत ख़ुदा की इबादत व तौहीद बजा ला सकें, वहाँ चले जायें। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि तमाम दुनिया ख़ुदा की दुनिया है और तमाम बन्दे अल्लाह के ग़ुलाम हैं, जहाँ तू भलाई पा सकता हो वहीं क़ियाम (रहना) कर। चुनाँचे सहाबा किराम पर जबकि मक्का शरीफ़ की रिहाईश मुश्किल हो गई तो वे हिजरत करके हब्शा चले गये ताकि अमन व अमान के साथ ख़ुदा के दीन पर क़ायम रह सकें। वहाँ के समझदार दीनदार बादशाह अस्हमा नजाशी रह. ने उनकी पूरी ताईद व मदद की और वहाँ वे बहुत इज़्ज़त और ख़ुशी से रहे सहे। फिर उसके बाद अल्लाह की इजाज़त से दूसरे सहाबा ने और ख़ुद नबी करीम सल्ल. ने मदीना मुनव्वरा की तरफ़ हिजरत की।

उसके बाद फ़रमाता है कि तुम में से हर एक मरने वाला और मेरे सामने हाज़िर होने वाला है, तुम चाहे कहीं हो मौत से निजात नहीं पा सकते। पस तुम्हें ज़िन्दगी भर ख़ुदा की इताअ़त में और उसके राज़ी करने में रहना चाहिये ताकि मरने के बाद ख़ुदा के यहाँ जाकर बुरे अन्जाम का शिकार न होओ। ईमान वाले नेक-आमाल लोगों को अल्लाह तआ़ला जन्नते-अ़दन की बुलन्द व बाला मन्ज़िलों में पहुँचायेगा। जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। कहीं साफ़-सुथरे पानी की कहीं शराबे-तहूर की कहीं शहद की कहीं दूध की। ये चश्मे ख़ुद-बख़ुद जहाँ जन्नती चाहें पीने लगेंगे। ये वहाँ हमेशा रहेंगे, न वहाँ से निकाले जायेंगे न हटाये जायेंगे, न वे नेमतें ख़त्म होंगी न उनमें कमी पैदा होगी। मोमिनों के नेक आमाल पर जन्नत के बालाख़ाने उन्हें मुबारक हों जिन्होंने अपने सच्चे दीन पर सब्र किया और ख़ुदा की तरफ़ हिजरत की। उसके दुश्मनों को छोड़ दिया, अपने अ़ज़ीज़ों रिश्तेदारों और घर वालों को राहे ख़ुदा में छोड़ा, उसकी नेमतों और उसके इनामात की उम्मीद पर दुनिया की ऐश व आराम पर लात मार दी।

इब्ने अबी हातिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत में ऐसे बालाख़ाने (चौबारे) हैं जिनके ऊपर के (यानी बाहरी) हिस्से से अन्दर का हिस्सा नज़र आता है, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें उनके लिये बनाया है जो खाना खिलायें, अच्छे अन्दाज़ से और नर्मी के साथ बात करने वाले हों, रोज़े नमाज़ के पाबन्द हों और रातों को जबकि लोग सोते हुए हों ये नमाज़ें पढ़ते हों और अपने रब पर कामिल भरोसा रखते हों, अपने तमाम हालात में दीनी हों या दुनियावी।

फिर फ़रमाया कि रिज़्क़ किसी जगह के साथ मख़्सूस नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला का तक़सीम किया हुआ रिज़्क़ आ़म है और हर जगह है, जो यहाँ हो से वहीं पहुँच जाता है। मुहाजिरीन के रिज़्क़ में हिजरत के बाद ख़ुदा ने वे बरकतें दीं कि यह दुनिया के मालिक हो गये, तो फ़रमाया कि बहुत से जानवर हैं जो न अपने रिज़्क़ के जमा (मुहैया) करने की ताक़त रखते हैं न उसे हासिल करने की, न वे कल के लिये कोई चीज़ उठा रखते हैं, अल्लाह के ज़िम्मे उनकी रोज़ियाँ हैं, परवर्दिगार उन्हें उनके रिज़्क़ पहुँचा देता है। तुम्हारा रिज़्क़ भी वही है। वह किसी मख़्लूक़ को किसी हालत में किसी वक़्त नहीं भूलता। चींवटियों को उनके सुराख़ों में परिन्दों को आसमान व ज़मीन के बीच ख़ला (ख़ाली जगह) में, मछलियों को पानी में वही रिज़्क़ पहुँचाता है। जैसे फ़रमायाः

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ................الخ

यानी कोई जानवर रू-ए-ज़मीन पर ऐसा नहीं कि उसकी रोज़ी अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे न हो, वही उनके ठहरने और रहने-सहने की जगह को अच्छी तरह जानता है। यह सब उसकी रोशन किताब में मौजूद है।

इब्ने अबी हातिम में है, इब्ने उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ चला, मदीने के

Maktab E Ashraf

बाग़ात में से एक बाग़ में आप गये और गिरी-पड़ी रद्दी खजूरें साफ़ करके खाने लगे। मुझसे भी खाने को फ़रमाया, मैंने कहा हुज़ूर! मुझसे तो ये रद्दी खजूरें नहीं खाई जायेंगी। आपने फ़रमाया लेकिन मुझे तो यह बहुत अच्छी मालूम होती हैं, इसलिये कि चौथे दिन की सुबह है कि मैंने खाना नहीं खाया बल्कि इस अ़रसे (समय) में खाना मिला ही नहीं। सुनो अगर मैं चाहता तो ख़ुदा से दुआ़ करता और अल्लाह तआ़ला मुझे क़ैसर व किसरा (रोम और ईरान के बादशाहों) का मुल्क दे देता। ऐ इब्ने उमर! तेरा क्या हाल होगा जबकि तू ऐसे लोगों में होगा जो साल भर के ग़ल्ले वग़ैरह जमा कर लिया करेंगे और उनका यक़ीन और तवक्कुल बिल्कुल कमज़ोर हो जायेगा। हम अभी वहीं उसी हालत में थे कि यह आयतः

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ............الخ

नाज़िल हुई (यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)। पस रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने मुझे दुनिया के ख़ज़ाने जमा करने का और ख़्वाहिशों के पीछे लग जाने का हुक्म नहीं किया, जो शख़्स दुनिया के ख़ज़ाने जमा करे और उसे बाद की ज़िन्दगी चाहे वह समझ ले कि आख़िरत की ज़िन्दगी तो ख़ुदा के हाथ है। देखो मैं तो न दीनार व दिर्हम (सोने चाँदी के सिक्के) जमा करूँ न कल के लिये आज रोज़ी का ज़ख़ीरा जमा करके रखूँ। यह हदीस ग़रीब है और इसका रावी अबुल-अ़तूफ़ जज़री ज़ईफ़ है। यह मशहूर है कि कौए के बच्चे जब निकलते हैं तो उनके बाल व पर सफ़ेद होते हैं, यह देखकर कौआ उनसे नफ़रत करके भाग जाता है, कुछ दिनों के बाद उन परों की रंगत सियाह पड़ जाती है तब उनके माँ-बाप आते हैं और दाना वग़ैरह उनके मुँह में डालते हैं। शुरू के दिनों में जबकि माँ-बाप उन छोटे बच्चों से नफ़रत और घृणा करके भाग जाते हैं और उनके पास भी नहीं आते उस वक़्त अल्लाह तआ़ला छोटे-छोटे मच्छर उनके पास भेज देता है, वही उनकी ग़िज़ा बन जाते हैं। अ़रब के शायरों ने इसे नज़्म भी किया है। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि सफ़र करो ताकि सेहत और रोज़ी पाओ। एक और रिवायत में है कि सफ़र करो ताकि सेहत व ग़नीमत (माल) मिले। एक दूसरी हदीस में है सफ़र करो नफ़ा उठाओगे, रोज़े रखो तन्दुरुस्त रहोगे, जिहाद करो ग़नीमत (माल) मिलेगी। एक और रिवायत में है कि मेहनत करने वालों और आसानी वालों के साथ सफ़र करो। फिर फ़रमाया अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की बातें सुनने वाला और उनकी हर हरकत व गतिविधि को जानने वाला है।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ○ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ○ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً

और अगर आप उनसे पूछें कि वह कौन है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया? और जिसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, तो वे लोग यही कहेंगे कि वह अल्लाह तआ़ला है, फिर किधर उल्टे चले जा रहे हैं। (61) अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहे रोज़ी फ़राख़ "खोल देता और ज़्यादा" कर देता है, और जिसके लिए चाहे तंग कर देता है। बेशक अल्लाह ही हर चीज़ के हाल से वाक़िफ़ है। (62) और अगर आप उनसे पूछें

Mahtab E Ashraf

فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۟	कि वह कौन है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे ज़मीन को इसके बाद कि वह ख़ुश्क पड़ी थी तरोताज़ा कर दिया। तो वे लोग यही कहेंगे कि वह भी अल्लाह है, आप कहिए कि अल्हम्दु लिल्लाहि, बल्कि उनमें अक्सर समझते नहीं। (63)

एक वास्तविकता

अल्लाह तआ़ला साबित करता है कि माबूदे बर्हक़ सिर्फ़ वही है। ख़ुद मुश्रिक लोग भी इस बात के क़ायल हैं कि आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला, सूरज चाँद को अपने काम और ड्यूटी पर लगाने वाला, दिन रात को एक के बाद एक यानी एक दूसरे के पीछे लाने वाला, ख़ालिक़, राज़िक़, मौत व हयात पर क़ादिर सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है। वह ख़ूब जानता है कि ग़िना (मालदारी) के लायक़ कौन है और फ़क़्र (ग़ुर्बत और तंगदस्ती) के लायक़ कौन है। अपने बन्दों की मस्लेहतें उसी को पूरी तरह मालूम हैं। पस जबकि मुश्रिक लोग ख़ुद मानते हैं कि तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला है, सब पर क़ाबिज़ सिर्फ़ वही है, फिर उसके सिवा दूसरों की इबादत क्यों करते हो? और उसके सिवा दूसरों पर तवक्कुल (भरोसा और यक़ीन) क्यों करते हो? जबकि मुल्क का मालिक वह तन्हा है तो इबादतों के लायक़ भी वह अकेला है। जब उसको अकेला और तन्हा रब (हर चीज़ का पालने वाला) मान लिया तो फिर उसके तन्हा माबूद (इबादत का हक़दार) होने को मानने से इनकार और मुँह फेरना कैसा? यह तो अ़जीब चीज़ है। क़ुरआने करीम में अल्लाह के अकेला रब होने को बयान करने के साथ ही उसके अकेला माबूद होने का ज़िक्र बहुत ज़्यादा है। इसलिये कि अल्लाह के अकेला रब और हर चीज़ का मालिक व मुख़्तार होने के क़ायल तो मक्का के मुश्रिक लोग भी थे तो उन्हें क़ायल-माक़ूल करके फिर अल्लाह के अकेला माबूद और इबादत का हक़दार होने की दावत दी जाती है। मुश्रिक लोग हज व उमरे में लब्बैक पुकारते हुए भी ख़ुदा के शरीक न होने का इक़रार करते थे। कहते थेः

لَبَّيْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ اِلَّاشَرِيْكًا هُوَلَكَ تَمْلِكُهٗ وَمَامَلَكَ.

यानी ख़ुदाया हम हाज़िर हुए तेरा कोई शरीक नहीं मगर ऐसे शरीक कि जिनका मालिक और जिनकी मिल्क (यानी जो कुछ उनके क़ब्ज़े और इख़्तियार में है) का मालिक भी तू ही है।

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا	और यह दुनियावी ज़िन्दगी (अपने आप में) सिवाय खेल-तमाशे के और कुछ भी नहीं, और असल ज़िन्दगी आ़लमे आख़िरत है। अगर उन को इसका इल्म होता तो ऐसा न करते। (64) फिर जब ये लोग कश्ती में सवार होते हैं तो ख़ालिस एतिक़ाद करके अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं। फिर जब उनको निजात देकर ख़ुश्की

Maktaba Ashraf

نَجّٰهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ۝ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝	की तरफ़ ले आता है, तो वे फ़ौरन ही शिर्क करने लगते हैं। (65) जिसका हासिल यह है कि हमने जो नेमत उनको दी है उसकी नाक़द्री करते हैं, और ये लोग थोड़ा और फ़ायदा हासिल कर लें, फिर जल्द ही उनको सब ख़बर हुई जाती है। (66)

एक खेल

दुनिया की हिक़ारत व ज़िल्लत (यानी इसका बेहक़ीक़त और क़ालिबे क़द्र न होना) और इसके ज़वाल व फ़ना का ज़िक्र हो रहा है कि इसे कोई दवाम (हमेशगी) नहीं, कोई ठहराव नहीं। यह तो सिर्फ़ एक खेल-तमाशा है। हाँ आख़िरत की ज़िन्दगी दवाम व बक़ा की ज़िन्दगी है, वह ज़वाल व फ़ना से दूर है। अगर उन्हें इल्म होता तो उस बक़ा वाली चीज़ पर फ़ानी चीज़ को तरजीह न देते। फिर फ़रमाया कि मुश्रिक लोग बेकसी और बेबसी के वक़्त तो अल्लाह को ही पुकारने लगते हैं जिसका कोई शरीक नहीं, फिर मुसीबत के हट जाने और मुश्किल के टल जाने के बाद उसके साथ दूसरों का नाम क्यों लेते हैं? जैसे एक जगह है:

وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الْبَحْرِ......... الخ

यानी जब समुद्र में मुश्किल में फंसते हैं उस वक़्त अल्लाह तआ़ला के सिवा सब को भूल जाते हैं और जब वहाँ से निजात पाकर ख़ुश्की में आ जाते हैं तो फ़ौरन ही मुँह फेर लेते हैं।

सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि जब रसूलुल्लाह सल्ल. ने मक्का फ़तह किया तो इक्रिमा बिन अबी-जहल यहाँ से भाग निकला और हब्शा जाने के इरादे से कश्ती में बैठ गया। इत्तिफ़ाक़न सख़्त तूफ़ान आया और कश्ती इधर-उधर होने लगी। जितने मुश्रिक लोग कश्ती में थे सब कहने लगे यह मौक़ा सिर्फ़ अल्लाह को पुकारने का है, उठो और ख़ुलूस (दिल की सच्ची और ख़ालिस नीयत) के साथ ख़ुदा तआ़ला से दुआयें करो, इस वक़्त निजात उसी के हाथ में है। यह सुनते ही इक्रिमा ने कहा सुनो ख़ुदा की क़सम अगर समुद्र की इस बला से सिवाय ख़ुदा के कोई और निजात नहीं दे सकता तो ख़ुश्की की मुसीबतों को टालने वाला भी वही है। ख़ुदाया मैं तुझसे अ़हद करता हूँ कि अगर यहाँ से बच गया तो सीधा जाकर मुहम्मद के हाथ में हाथ रख दूँगा और कलिमा-ए-इस्लाम पढ़ लूँगा। मुझे यक़ीन है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. मेरी ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमायेंगे और मुझ पर रहम व करम फ़रमायेंगे। चुनाँचे यही हुआ भी।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۚ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ	क्या उन लोगों ने इस बात पर नज़र नहीं की कि हमने अमन वाला हरम बनाया है, और उनके आस-पास में लोगों को निकाला जा रहा है, फिर क्या ये लोग झूठे माबूदों पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री करते हैं। (67) और उस शख़्स से ज़्यादा कौन नाइन्साफ़ होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े और

بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ○ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ○	जब सच्ची बात उसके पास पहुँचे वह उसको झुठलाए, क्या ऐसे काफ़िरों का जहन्नम में ठिकाना न होगा। (68) और जो लोग हमारी राह में मशक़्क़तें बरदाश्त करते हैं, हम उनको अपने (क़ुर्ब और सवाब यानी जन्नत के) रास्ते ज़रूर दिखा देंगे, और बेशक अल्लाह (की रज़ा व रहमत) ऐसे ख़ुलूस वालों के साथ है। (69)

Maktab-e-Ashraf

अल्लाह तआ़ला के इनामात पर नज़र डालो

अल्लाह तआ़ला क़ुरैश वालों को अपना एहसान जताता है कि उसने अपने हरम में उन्हें जगह दी है जिसमें जो शख़्स आ जाये अमन में पहुँच जाता है। उसके आस-पास लड़ाई-झगड़ा, क़त्ल व ख़ून और लूट-मार होती है और यहाँ अमन व अमान से अपने दिन गुज़ारते हैं, जैसा कि सूरः क़ुरैश में बयान फ़रमाया। तो क्या इतनी बड़ी नेमत का शुक्रिया यही है कि ये ख़ुदा के साथ दूसरों की भी इबादत करें! बजाय ईमान लाने के कुफ़्र करें और ख़ुद तबाह होकर दूसरों को भी उसी हलाकत की राह पर ले चलें? इन्हें तो यह चाहिये था कि ख़ुदा-ए-वाहिद की इबादत में सबसे बढ़े हुए रहें। नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ सल्ल. के पूरे और सच्चे तरफ़दार रहें। लेकिन इन्होंने इसके उलट ख़ुदा के साथ शिर्क व कुफ़्र करना और नबी सल्ल. को झुठलाना और तकलीफ़ें पहुँचाना शुरू कर रखा है। अपनी सरकशी में यहाँ तक बढ़ गये कि ख़ुदा के पैग़म्बर को मक्का से निकाल दिया। आख़िरकार ख़ुदा की नेमतें उनसे छिननी शुरू हो गईं। बदर के दिन इनके बड़े बड़े सरदार बुरी तरह क़त्ल हुए। फिर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. के हाथों मक्के को फ़तह किया और उन्हें ज़लील व पस्त किया। उनसे बढ़कर ज़ालिम कोई नहीं जो अल्लाह पर झूठ बाँधे। 'वही' आती न हो और कह दे कि मेरी तरफ़ 'वही' की जाती (अल्लाह का पैग़ाम भेजा जाता) है। और उससे बढ़कर ज़ालिम कोई नहीं जो अल्लाह की सच्ची 'वही' और हक़ को झुठलाये, और हक़ के पहुँचने के बावजूद अपने झूठ और झुठलाने पर कमर बाँधे रहे। ऐसे झूठे लोग काफ़िर हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है।

अल्लाह के रास्ते में मशक़्क़त उठाने वालों से मुराद रसूलुल्लाह सल्ल., आपके सहाबा, आपके मानने वाले और हुक्म पर चलने वाले लोग हैं जो क़ियामत तक होंगे। फ़रमाता है कि हम उनकी कोशिश और जुस्तजू करने वालों की रहनुमाई करेंगे और दीन में उन्हें रास्ता दिखाते रहेंगे। हज़रत अबू अहमद अ़ब्बास हमदानी रह. फ़रमाते हैं- मुराद यह है कि जो लोग अपने इल्म पर अ़मल करते हैं अल्लाह उन्हें उन बातों में हिदायत देता है जो उनके इल्म में नहीं होतीं। अबू सुलैमान दारानी रह. से जब यह ज़िक्र किया जाता है तो आप फ़रमाते हैं कि जिसके दिल में कोई बात पैदा हो अगरचे वह भली बात हो फिर भी उसे उस पर अ़मल न करना चाहिये जब तक कि क़ुरआन व हदीस से वह बात साबित न हो। जब साबित हो अ़मल करे और अल्लाह की हम्द (तारीफ़ बयान) करे कि जो उसके दिल में आया था वही क़ुरआन व हदीस से निकला। अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ी लोगों के साथ है। हज़रत ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि एहसान इसका नाम है कि जो तेरे साथ बुरा सुलूक करे तू उसके साथ नेक सुलूक करे। एहसान करने वाले साथ एहसान करने का नाम नहीं। वल्लाहु आलम।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि सूरः अन्कबूत की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः रूम

सूरः रूम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 60 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

الٓمّٓ○ غُلِبَتِ الرُّوْمُ○ فِیْٓ اَدْنَی الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ○ فِیْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۬ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ○ بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ○ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ○ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚۖ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ○	अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) रूम वाले एक क़रीब के मौक़े में मग़लूब हो गए। (2) और वे अपने मग़लूब होने के बाद जल्द ही तीन साल से लेकर नौ साल के अन्दर-अन्दर ग़ालिब आ जाएँगे। (3) पहले भी इख़्तियार अल्लाह तआ़ला ही को था और बाद में भी, और उस दिन मुसलमान अल्लाह तआ़ला की उस इमदाद पर ख़ुश होंगे। (4) वह जिसको चाहे ग़ालिब कर देता है और वह ज़बरदस्त है (और) रहीम है। (5) अल्लाह तआ़ला ने इसका वायदा फ़रमाया है, अल्लाह तआ़ला अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं फ़रमाता, और लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (6) ये लोग सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी के ज़ाहिर को जानते हैं और ये लोग आख़िरत से बेख़बर हैं। (7)

एक भविष्यवाणी

ये आयतें उस वक़्त नाज़िल हुईं जबकि नेशापुर का बादशाह फ़ारस, शाम के इलाक़ों और जज़ीरे के आस-पास के शहरों पर ग़ालिब आ गया और रोम का बादशाह हिरक़्ल तंग आकर क़ुस्तुन्तुनिया में घिर गया। मुद्दतों घेराव रहा आख़िर पाँसा पलटा और हिरक़्ल की फ़तह हो गई। इसका तफ़सीली बयान आगे आ रहा है। मुस्नद अहमद में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इस आयत के बारे में मन्क़ूल है कि रोमियों को शिकस्त पर शिकस्त हुई और मुश्रिक लोगों ने इस पर बेहद ख़ुशियाँ मनाईं। इसलिये कि जैसे ये बुत-परस्त थे ऐसे ही अहले-फ़ारस (ईरानी) भी इनसे मिलते-जुलते थे। और मुसलमानों की तमन्ना थी कि रोम वाले ग़ालिब आयें क्योंकि और कुछ नहीं कम से कम वे अहले-किताब तो थे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने जब यह ज़िक्र रसूले ख़ुदा सल्ल. से किया तो आपने फ़रमाया रोम वाले जल्द ही ग़ालिब आयेंगे। सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने मुश्रिकों को जब यह ख़बर पहुँचाई तो उन्होंने कहा आओ कुछ शर्त कर लो और मुद्दत

मुक़र्रर कर लो, अगर रोम वाले उस मुद्दत में ग़ालिब न आयें तो तुम हमें इतना इतना देना और तुम सच्चे निकले तो हम तुम्हें इतना इतना देंगे। पाँच साल की मुद्दत मुक़र्रर हुई, वह मुद्दत पूरी हो गई और रोम वाले ग़ालिब न आये तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने ख़िदमते नबवी में यह ख़बर पहुँचाई। आपने फ़रमाया तुमने दस साल की मुद्दत क्यों न मुक़र्रर की।

सईद बिन जुबैर कहते हैं कि क़ुरआन में मुद्दत के लिये "बिज़्अुन्" का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है और दस से कम पर इसका हुक्म लगाया जाता है। चुनाँचे यही हुआ भी कि दस साल के अन्दर-अन्दर रोम वाले ग़ालिब आ गये। इसी का बयान इस आयत में है। इमाम तिर्मिज़ी रह. ने इस हदीस को ग़रीब कहा है। हज़रत सुफ़ियान रह. फ़रमाते हैं कि बदर की लड़ाई के बाद रोमी भी फ़ारसियों पर ग़ालिब आ गये।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. का फ़रमान है कि पाँच चीज़ें गुज़र चुकी हैं। 'दुख़ान' 'लिज़ाम' 'बतशा' 'शक़्क़े क़मर' का मोजिज़ा और 'रोमियों का ग़ालिब आना'। एक और रिवायत में है कि हज़रत अबू बक्र रज़ि. की शर्त सात साल की थी। हुज़ूर सल्ल. ने उनसे पूछा कि "बिज़्अुन्" के क्या मायने तुम में मशहूर हैं? जवाब दिया कि दस से कम। फ़रमाया जाओ मुद्दत में दो साल बढ़ा दो। चुनाँचे उसी मुद्दत के अन्दर-अन्दर रोमियों के ग़ालिब आने की ख़बरें अ़रब में पहुँच गईं और मुसलमान ख़ुशियाँ मनाने लगे, इसी का बयान इन आयतों में है। एक और रिवायत में है कि मुश्रिकों ने हज़रत सिद्दीक़ रज़ि. से यह आयत सुनकर कहा कि क्या तुम इसमें भी अपने नबी को सच्चा मानते हो? आपने फ़रमाया हाँ। इस पर शर्त ठहरी और मुद्दत गुज़र चुकी और रोमी ग़ालिब आये। हुज़ूर सल्ल. को जब इस शर्त का इल्म हुआ तो आप रन्जीदा हुए और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. से फ़रमाया तुम ने ऐसा क्यों किया? जवाब मिला कि रसूल की सच्चाई पर भरोसा करके। आपने फ़रमाया फिर जाओ और मुद्दत दस साल मुक़र्रर कर लो, चाहे चीज़ भी बढ़ानी पड़े। आप गये, मुश्रिकों ने दोबारा भी मुद्दत बढ़ाकर शर्त मन्ज़ूर कर ली। अभी दस साल पूरे नहीं हुए थे कि रोमी ग़ालिब आ गये और मदाईन में उसके लश्कर पहुँच गये और उन्होंने रोमिया की बुनियाद डाल दी।

हज़रत सिद्दीक़ रज़ि. ने क़ुरैश से शर्त का माल लिया और हुज़ूरे पाक के पास आये। आपने फ़रमाया इसे सदक़ा कर दो। एक और रिवायत में है कि यह वाक़िआ ऐसी शर्त लगाने के हराम होने से पहले का है। उसमें है कि मुद्दत छह साल मुक़र्रर हुई थी, उसमें यह भी है कि जब यह भविष्यवाणी पूरी हुई और रोमी ग़ालिब हुए तो बहुत से मुश्रिक लोग ईमान ले आये। (तिर्मिज़ी)

एक बहुत अ़जीब व ग़रीब क़िस्सा इमाम सनीद इब्ने दाऊद ने अपनी तफ़सीर में ज़िक्र किया है कि इक्रिमा रज़ि. फ़रमाते हैं- फ़ारस (अखण्ड ईरान) में एक औरत थी जिसके बच्चे ज़बरदस्त पहलवान और बादशाह होते थे। किसरा (ईरान के बादशाह) ने एक मर्तबा उसे बुलवाया और उससे कहा कि मैं रोमियों पर एक लश्कर भेजना चाहता हूँ और तेरी औलाद में से किसी को लश्कर का सरदार बनाना चाहता हूँ। अब तुम मश्विरा दो कि किसे सरदार बनाऊँ? उसने कहा सुनो! मेरा फ़ुलाँ लड़का तो लोमड़ी से ज़्यादा मक्कार और शकरे से ज़्यादा होशियार है। दूसरा लड़का फ़रख़ान तीर जैसा है। तीसरा लड़का शहर-यराज़ सबसे ज़्यादा बुर्दबार तबीयत का है। अब तुम जिसे चाहो सरदारी दो। बादशाह ने कुछ सोच-समझकर शहर-यराज़ को सरदार बनाया। यह लश्करों को लेकर चला, रोमियों से लड़ा-भिड़ा और उन पर ग़ालिब आया। उनके लश्कर काट डाले, उनके शहर उजाड़ दिये, उनके बाग़ात बरबाद कर दिये, उस सरसब्ज़ व शादाब (हरे-भरे और ख़ुशहाल) मुल्क को वीरान व तबाह कर दिया। अज़्रआ़त और बसरा में जो अ़रब की सीमाओं से मिलते हैं एक ज़बरदस्त लड़ाई और मुक़ाबला हुआ और वहाँ ईरानी रोमियों पर ग़ालिब आ गये,

जिससे क़ुरैश खुशियाँ मनाने लगे और मुसलमान रन्जीदा हुए। क़ुरैश के काफ़िर मुसलमानों को ताना देने लगे कि देखो तुम और ईसाई अहले किताब हो और फ़ारसी अनपढ़ हैं, हमारे वाले तुम्हारे वालों पर ग़ालिब आ गये। इसी तरह हम भी तुम पर ग़ालिब आयेंगे और अगर लड़ाई हुई तो हम बतला देंगे कि तुम उन अहले किताब की तरह हमारे हाथों शिकस्त उठाओगे। इस पर क़ुरआन की ये आयतें उतरीं।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि. इन आयतों को सुनकर मुश्रिकों के पास आये और फ़रमाने लगे अपनी इस फ़तह पर न इतराओ, यह जल्द ही शिकस्त से बदल जायेगी और हमारे भाई अहले किताब तुम्हारे भाईयों पर ग़ालिब आयेंगे। इस बात का यक़ीन कर लो इसलिये कि यह मेरी बात नहीं बल्कि हमारे नबी सल्ल. की यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) है। यह सुनकर उबई बिन ख़लफ़ खड़ा होकर कहने लगा ऐ अबू फ़ज़्ल! तुम झूठ कहते हो। आपने फ़रमाया ऐ दुश्मने ख़ुदा! तू झूठा है। उसने कहा अच्छा मैं दस-दस ऊँटनियों की शर्त लगाता हूँ अगर तीन साल तक रोमी फ़ारसियों पर ग़ालिब आ गये तो मैं तुम्हें दस ऊँटनियाँ दूँगा वरना तुम मुझे देना। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने यह शर्त क़बूल कर ली, फिर रसूले ख़ुदा सल्ल. से इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़रमाया- मैंने तुमसे तीन साल का नहीं कहा था 'बिज़्अुन्' का लफ़्ज़ क़ुरआन में है जो तीन से नौ तक के लिये बोला जाता है। जाओ ऊँटनियाँ भी बढ़ा दो और मुद्दत भी।

हज़रत अबू बक्र चले, जब उबई के पास पहुँचे तो कहने लगा शायद तुम्हें पछतावा हुआ? आपने फ़रमाया सुनो मैं तो पहले से भी ज़्यादा तैयार होकर आया हूँ आओ मुद्दत भी बढ़ा लो और शर्त का माल भी ज़्यादा कर लो। चुनाँचे एक सौ ऊँट मुक़र्रर हुए और नौ साल की मुद्दत तय हो गई। इस मुद्दत में रोम वाले फ़ारसी लोगों पर ग़ालिब आ गये और मुसलमान क़ुरैश पर छा गये।

रोमियों के ग़लबे का वाक़िआ यूँ हुआ कि जब फ़ारसी ग़ालिब आ गये तो शहर-यराज़ का भाई फरख़ान शराब पीते हुए कहने लगा- मैंने देखा है कि गोया मैं किसरा के तख़्त पर आ गया हूँ और फ़ारस का बादशाह बन गया हूँ। यह ख़बर किसरा को भी पहुँच गई, किसरा ने शहर-यराज़ को लिखा कि यह मेरा ख़त पाते ही अपने भाई को क़त्ल करके उसका सर मेरे पास भेज दो। शहर-यराज़ ने जवाब लिखा कि ऐ बादशाह! तुम इतनी जल्दी न करो, फ़रख़ान जैसा बहादुर शेर व जुर्रत के साथ दुश्मनों के जमघटे में घुसने वाला किसी को न पाओगे। बादशाह ने फिर लिखा कि उससे बहुत ज़्यादा बेहतर और शेर-दिल पहलवान मेरे दरबार में एक से एक बेहतर मौजूद हैं, तुम उसका ग़म न करो और मेरे हुक्म की फ़ौरन तामील करो। शहर-यराज़ ने फिर इसका जवाब लिखा और दोबारा किसरा बादशाह को समझाया, इस पर बादशाह आग बगूला हो गया, उसने ऐलान कर दिया कि शहर-यराज़ से मैंने सरदारी छीन ली और उसकी जगह उसके भाई फ़रख़ान को अपने लश्कर का कमांडर मुक़र्रर कर दिया। इसी मज़मून का एक ख़त लिखकर क़ासिद के हाथ शहर-यराज़ को भेज दिया कि तुम आज से सस्पैंड हो और तुम अपना पद फ़रख़ान को दे दो। साथ ही क़ासिद को एक पोशीदा ख़त और दिया कि शहर-यराज़ जब अपने पद और ओहदे से उतर जाये और फ़रख़ान उस ओहदे पर आ जाये तो तुम उसे मेरा फ़रमान दे देना।

क़ासिद जब वहाँ पहुँचा तो शहर-यराज़ ने ख़त पढ़ते ही कहा कि मुझे बादशाही हुक्म मन्ज़ूर है, मैं ख़ुशी से अपना ओहदा फ़रख़ान को दे रहा हूँ। चुनाँचे वह तख़्त से उतर गया और फ़रख़ान को क़ब्ज़ा दे दिया। फ़रख़ान जब शाही तख़्त पर बैठ गया और लश्कर ने उसकी इताअत क़बूल कर ली तो क़ासिद ने वह दूसरा ख़त फ़रख़ान के सामने पेश किया, जिसमें शहर-यराज़ के क़त्ल का और उसका सर दरबारे शाही में भेजने का फ़रमान था। फ़रख़ान ने उसे पढ़कर शहर-यराज़ को बुलाया और उसकी गर्दन मारने का हुक्म

दे दिया। शहर-यराज़ ने कहा ऐ बादशाह! जल्दी न कर, मुझे वसीयत तो लिखने दे, उसने इसे मन्ज़ूर कर लिया। शहर-यराज़ ने अपना दफ़्तर मंगवाया और उसी में से वे काग़ज़ात जो शाहे किसरा ने फ़रख़ान के क़त्ल के लिये उसे लिखे थे वे सब निकाले और फरख़ान के सामने पेश कर दिये और कहा देख इतने सवाल व जवाब मेरे और बादशाह के दरमियान तेरे बारे में हुए, लेकिन मैंने अपनी अ़क़्लमन्दी से काम लिया और जल्दबाज़ी न की, तू एक ख़त देखते ही मेरे क़त्ल पर तैयार हो गया? ज़रा सोच ले।

उन ख़तों को देखकर फ़रख़ान की आँखें खुल गईं। वह फ़ौरन तख़्त से नीचे उतर गया और अपने भाई शहर-यराज़ को फिर से मालिके कुल बना दिया। शहर-यराज़ ने उसी वक़्त शाहे रोम हिरक़्ल को ख़त लिखा कि मुझे तुम से ख़ुफ़िया मुलाक़ात करनी है और एक ज़रूरी मामले में मश्विरा करना है। इसे मैं न तो किसी क़ासिद के द्वारा आपको कहलवा सकता हूँ न ख़त लिख सकता हूँ। बल्कि मैं डायरेक्ट ख़ुद ही उसको पेश कर दूँगा। पचास आदमी अपने साथ लेकर ख़ुद आ जाईये और पचास ही मेरे साथ होंगे।

क़ैसर को जब यह पैग़ाम मिला तो वह उससे मुलाक़ात के लिये चल दिया। लेकिन एहतियात के तौर पर अपने साथ पाँच हज़ार सवार ले लिये और आगे-आगे जासूसों को भेज दिया कि अगर कोई चालाकी और फ़रेब हो तो मालूम हो जाये। जासूसों ने आकर ख़बर दी कि कोई बात नहीं है और शहर-यराज़ तन्हा अपने साथ सिर्फ़ पचास सवारों को लेकर आया है। उसके साथ कोई और नहीं। चुनाँचे क़ैसर (रोम के बादशाह) ने भी मुत्मईन होकर अपने सवारों को लौटा दिया और अपने साथ सिर्फ़ पचास आदमी रख लिये। जो जगह मुलाक़ात की मुक़र्रर हुई थी वहाँ पहुँच गये, वहाँ एक रेशमी क़ुब्बा (गुंबद) था, उसमें जाकर दोनों तन्हा बैठ गये। पचास आदमी अलग छोड़ दिये गये। दोनों वहाँ बिना हथियार के थे, सिर्फ़ छुरियाँ पास थीं और दोनों की तरफ़ से एक तर्जुमान (अनुवादक) साथ था।

ख़ेमे में पहुँचकर शहर-यराज़ ने कहा ऐ शाहे रोम! बात यह है कि तुम्हारे मुल्क को वीरान करने वाले और तुम्हारे लश्करों को शिकस्त देने वाले हम दोनों भाई हैं। हमने अपनी चालाकियों से यह मुल्क अपने क़ब्ज़े में कर लिया है। लेकिन हमारा बादशाह किसरा हम से हसद करता (जलता) है और हमारा मुख़ालिफ़ बन बैठा है, मुझे उसने मेरे भाई को क़त्ल करने का फ़रमान भेजा, मैंने फ़रमान न माना तो उसने चालाकी करके मेरे भाई को मेरे क़त्ल का हुक्म भेजा। इसलिये हम दोनों ने अब तय कर लिया है कि हम आपके लश्कर में आ जायें और किसरा के लश्करों से आपके साथ होकर लड़ें। क़ैसर ने यह बात बड़ी ख़ुशी से मन्ज़ूर कर ली। फिर उन दोनों में आपस में इशारों किनायों में बातें हुईं जिनका मतलब यह था कि ये दोनों तर्जुमान (अनुवादक) क़त्ल कर दिये जायें। ऐसा न हो कि इनकी वजह से राज़ खुल जाये। क्योंकि जहाँ दो के सिवा तीसरे के कान में कोई बात पहुँची तो वह फैल जाती है। दोनों इस पर इत्तिफ़ाक़ करके खड़े हो गये और हर एक ने अपनी छुरी से अपने तर्जुमान का काम तमाम कर दिया। फिर अल्लाह तआ़ला ने किसरा (ईरान के बादशाह) को हलाक किया और हुदैबिया वाले दिन इसकी ख़बर रसूलुल्लाह सल्ल. को मिली। आपके सहाबा इससे बहुत ख़ुश हुए। लेकिन यह रिवायत क़ाबिले क़बूल नहीं।

अब आयत के अलफ़ाज़ के मुताल्लिक़ सुनिये! हुरूफ़े मुक़त्तआ़त जो सूरतों के शुरू में होते हैं इनकी बहस तो हम कर ही चुके हैं। सूरः ब-क़रह की तफ़सीर का शुरू देख लीजिये। रोमी सब के सब ईस बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से हैं। बनी इस्राईल के यह चचाज़ाद भाई हैं। रोमियों को बनू असफ़र भी कहते हैं, ये यूनानियों के मज़हब पर थे। यूनानी याफ़िस बिन नूह की औलाद में से हैं। तुर्कों के चचाज़ाद भाई होते हैं। ये सितारा-परस्त (सितारों को पूजने वाले) थे। सातों सितारों को मानते और पूजते

Maktab E Ashraf

थे। इन्हें मुतहय्यिरा भी कहा जाता है। ये क़ुतबे-शुमाली को क़िब्ला मानते थे। दमिश्क़ की बिना (बुनियाद) इन्हीं के हाथों से पड़ी है, वहीं इन्होंने अपनी इबादत-गाह (पूजा घर) बनाई जिसके मेहराब शुमाल (उत्तर) की तरफ़ हैं। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की नुबुव्वत के बाद भी तीन सौ साल तक रोमी अपने पुराने ख़्यालात पर ही रहे। उनमें से जो कोई शाम (सीरिया) का और जज़ीरे का बादशाह हो जाता उसे क़ैसर कहा जाता था। सबसे पहले रोमियों के बादशाह क़ुस्तुन्तीन पुत्र क़ुस्तुन्तीन ने ईसाई मज़हब क़बूल किया। उसकी माँ का नाम मरियम था। हैलानिया शदक़ानिया थी, हर्रान की रहने वाली। पहले उसी ने ईसाईयत क़बूल की थी फिर उसके कहने सुनने से उसके बेटे ने भी यही मज़हब इख़्तियार कर लिया। यह बड़ा फ़ल्सफ़ी, अ़क्लमन्द और मक्कार आदमी था। यह भी मशहूर है कि इसने दिल से इस मज़हब को नहीं माना था। इसके ज़माने में ईसाई यहाँ जमा हो गये। उनमें आपस में मज़हबी छेड़-छाड़, मतभेद और मुनाज़रे छिड़ गये। अ़ब्दुल्लाह बिन अरीवस से बड़े-बड़े मुनाज़रे हुए और इस क़द्र विवाद हुआ, झगड़ा फैला और अफ़रा-तफ़री मची कि बयान से बाहर है। तीन सौ अट्ठारह पादरियों ने मिलकर एक किताब लिखी जो बादशाह को दी गई और वही किताब शाही अ़क़ायद का मजमूआ़ तस्लीम की गई। उसको "अमानते कुबरा" कहा जाता है जो दर हक़ीक़त "ख़ियानते हक़ीरा" है। यही फ़िक़्ही किताबें उसी ज़माने में लिखी गईं उनमें हलाल हराम के मसाईल बयान किये गये और उनके उलेमा ने दिल खोलकर जो चाहा उनमें लिखा। जिस क़द्र जी में आई कमी ज़्यादती असल ईसाई दीन में की और असल मज़हब को बदल डाला और वह अपनी असली हालत पर बाक़ी नहीं रहा। पूरब की जानिब नमाज़ें पढ़ने लगे, बजाय शनिवार के इतवार के दिन को बड़ा दिन बनाया। सलीब (क्रॉस के निशान) की पूजा शुरू हो गई। ख़िन्ज़ीर (सुअर) का गोश्त हलाल कर लिया गया और बहुत से त्यौहार ईजाद कर लिये। जैसे ईदे सलीब, ईदे क़ुदूस, ईद ग़ितास वग़ैरह वग़ैरह।

फिर उन उलेमा के सिलसिले क़ायम किये गये तो एक बड़ा पादरी होता था फिर उसके नीचे दर्जा-ब-दर्जा और महकमे होते थे। रहबानियत और दुनिया से ताल्लुक़ ख़त्म करने की बिद्अ़त भी ईजाद कर ली और गिरजे बहुत सारे बना लिये। क़ुस्तुन्तुनिया शहर की बुनियाद रखी गई और इस बड़े शहर को उसी बादशाह के नाम पर नामित किया गया। उस बादशाह ने बारह हज़ार गिरजे बना दिये, तीन मेहराबों से बैतुल-लहम बनाया। उसकी माँ ने भी क़ुमाक़ुमा बनाया। उन लोगों को मलीका कहते हैं इसलिये कि ये लोग अपने बादशाह के दीन पर थे। इनके बाद याक़ूबिया फिर नस्तूरिया, ये सब नस्तूर के मुक़ल्लिद (पैरवी करने वाले) थे। फिर इनके बहुत से गिरोह थे। जैसे हदीस में है कि इनके बहत्तर फ़िर्क़े हो गये। इनकी हुकूमत बराबर चली आती थी, एक के बाद एक क़ैसर होता, यहाँ तक कि आख़िर में क़ैसर हिरक़्ल हुआ। यह तमाम बादशाहों से ज़्यादा अ़क्लमन्द था, बहुत बड़ा आ़लिम था, दानाई, समझदारी, दूर-अन्देशी और दूर दर्शिता में अपना जोड़ नहीं रखता था। इसने अपनी हुकूमत का दायरा बहुत फैला लिया और बहुत सारे इलाक़े उसमें शामिल कर लिये थे। इसके मुक़ाबले में फ़ारस का बादशाह किसरा खड़ा हुआ और छोटी छोटी सल्तनतों (राज्यों) ने भी उसका साथ दिया। उसकी हुकूमत क़ैसर से भी ज़्यादा बड़ी थी, ये मजूसी लोग थे, आग को पूजते थे।

उपर्युक्त रिवायत में तो है कि इसका सिपहसालार मुक़ाबले पर गया, लेकिन मशहूर बात यह है कि ख़ुद किसरा अपने आप उसके मुक़ाबले में गया। क़ैसर को शिकस्त हुई, यहाँ तक कि वह क़ुस्तुन्तुनिया में घिर गया। ईसाई उसकी बहुत इज़्ज़त व ताज़ीम करते थे। अगरचे किसरा लम्बी मुद्दत तक घेरा डाले पड़ा रहा लेकिन राजधानी को फ़तह न कर सका। एक वजह यह भी थी कि उस शहर का आधा हिस्सा समुद्र

की तरफ़ था और आधा हिस्सा खुश्की से मिला हुआ था। तो बादशाह क़ैसर की मदद के लिये फ़ौजी टुकड़ी और दूसरा सामान पानी के रास्ते से बराबर पहुँचता रहा। आख़िर में क़ैसर ने एक चाल चली। उसने किसरा को कहलवा भेजा कि आप जो चाहें मुझसे ले लीजिये और जिन शर्तों पर चाहें मुझसे सुलह कर लीजिये। किसरा इस पर खुश हो गया और इतना माल तलब किया कि वह और ये मिलकर जमा करना चाहें तो जमा होना नामुम्किन था। क़ैसर ने इसे भी क़बूल कर लिया। क्योंकि उसने इससे किसरा की बेवक़ूफ़ी का पता चला लिया, कि यह वह चीज़ माँगता है जिसका जमा करना दुनिया के इख़्तियार से बाहर है, बल्कि सारी दुनिया मिलकर उसका दसवाँ हिस्सा भी जमा नहीं कर सकती।

क़ैसर ने किसरा से कहलवा भेजा कि मुझे इजाज़त मिलनी चाहिये कि मैं अपने मुल्क में चल-फिरकर यह दौलत जमा करूँ और आपको सौंप दूँ। उसने यह दरख़्वास्त मन्ज़ूर कर ली। अब रोम के बादशाह ने अपने लश्कर को जमा किया और उनसे कहा कि मैं एक ज़रूरी और अहम काम के लिये अपने मख़्सूस दोस्तों के साथ जा रहा हूँ अगर एक साल के अन्दर अन्दर आ जाऊँ तो यह मेरा मुल्क है वरना तुम्हें इख़्तियार है जिसे चाहो अपना बादशाह तस्लीम कर लेना। उन्होंने जवाब दिया कि हमारे बादशाह तो आप ही हैं चाहे दस साल तक आप वापस न लौटें तो क्या हुआ। यहाँ से जाँबाज़ों की एक छोटी सी जमाअत लेकर चुप-चाप चल खड़ा हुआ, ख़ुफ़िया रास्तों से बहुत ही होशियारी, एहतियात और चालाकी से बहुत जल्द फ़ारस के शहरों तक पहुँच गया और अचानक हमला कर दिया। चूँकि यहाँ की फ़ौजें तो रोम पहुँच चुकी थीं, अवाम कहाँ तक मुक़ाबला करते, उसने क़त्ले आम शुरू कर दिया। जो सामने पड़ता तलवार के काम आया। यूँ ही बढ़ता चला गया, यहाँ तक कि मदाईन पहुँच गया जो किसरा की राजधानी का केन्द्र था। वहाँ की रक्षा-फ़ौज पर भी ग़ालिब आया, उन्हें भी क़त्ल कर दिया और हर तरफ़ से माल जमा किया, उनकी तमाम औरतों को क़ैद कर लिया और तमाम लड़ाकों को क़त्ल कर डाला। किसरा के लड़के को ज़िन्दा गिरफ़्तार किया, उसकी महल-सराये की औरतों को ज़िन्दा गिरफ़्तार किया, उसके दरबार में रहने वाली औरतें वग़ैरह भी पकड़ ली गईं। उसके लड़के का सर मुंडाकर गधे पर बैठाकर औरतों समेत किसरा की तरफ़ भेजा कि लीजिये जो माल, औरतें और ग़ुलाम आपने माँगे थे वे हाज़िर हैं।

जब यह क़ाफ़िला किसरा के पास पहुँचा तो किसरा को सख़्त सदमा हुआ। यह अभी तक क़ुस्तुन्तुनिया का घेराव किये हुए था और क़ैसर की वापसी का इन्तिज़ार कर रहा था कि उसके पास उसका तमाम ख़ानदान और महल की तमाम औरतें और रहने वाले इस ज़िल्लत की हालत में पहुँचे। यह सख़्त गुस्से में आ गया और शहर पर बड़ा सख़्त हमला कर दिया, लेकिन उसमें कोई कामयाबी न हुई। अब यह नहर जीहून की तरफ़ चला ताकि क़ैसर को वहाँ रोक ले, क्योंकि फ़ारस से क़ुस्तुन्तुनिया आने का रास्ता यही था। क़ैसर को मालूम हो गया उसने पहले से भी ज़बरदस्त चाल चली यानी अपने लश्कर को तो दरिया के इस दहाने के पास छोड़ा और ख़ुद थोड़े से आदमी लेकर सवार होकर पानी के बहाव की तरफ़ चल दिया, कोई एक दिन रात का रास्ता चलने के बाद अपने साथ जो कुट्टी चारा लीद गोबर वग़ैरह ले गया था उसे पानी में बहा दिया। ये चीज़ें पानी में बहती हुई किसरा के लश्कर के पास से गुज़रीं तो वे समझे गये कि क़ैसर यहाँ से गुज़र गया। ये उस लश्कर के जानवरों के आसार हैं। अब क़ैसर वापस अपने लश्कर में पहुँच गया।

उधर किसरा इस तलाश में आगे को चल दिया। क़ैसर अपने लश्करों समेत जीहून का दहाना पार करके रास्ता बदल कर क़ुस्तुन्तुनिया पहुँच गया। जिस दिन यह अपनी राजधानी में पहुँचा ईसाईयों में बड़ी ख़ुशियाँ मनाई गईं। किसरा को जब यह इत्तिला हुई तो उसका अजब हाल हुआ, क्या करे उसकी कुछ

Maktab E Ashraf

समझ में न आया, इधर जाये या उधर का रुख़ करे कहाँ जाये। न तो रोम ही फ़तह हुआ न फ़ारस ही रहा। हैरत में रह गया और रोमी ग़ालिब आ गये। फ़ारस की औरतें और वहाँ के माल उनके क़ब्ज़े में आये, यह तमाम मामलात नौ साल में हुए, रोमियों ने अपनी खोई हुकूमत फ़ारसियों से दोबारा ले ली और मग़लूब होकर ग़ालिब आ गये। अज़रत और बसरा के मुक़ाबले में फ़ारस वाले ग़ालिब आ गये थे और यह मुल्क शाम का वह हिस्सा था जो हिजाज़ (सऊदी इलाक़े) से मिलता था। यह भी क़ौल है कि यह शिकस्त जज़ीरे में हुई थी जो रोमियों की सर्हद का मक़ाम है और फ़ारस से मिलता है। वल्लाहु आलम।

फिर नौ साल के अन्दर-अन्दर रोमी फ़ारसियों पर ग़ालिब आ गये। क़ुरआने करीम में लफ़्ज़ 'बिज़उन्' है और इसका हुक्म भी नौ तक होता है और यही तफ़सीर इस लफ़्ज़ की तिर्मिज़ी और इब्ने जरीर वाली हदीस में है, कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. से फ़रमाया कि तुम्हें एहतियात के तौर पर दस साल रखने चाहियें थे, क्योंकि 'बिज़उन्' के लफ़्ज़ का इतलाक़ तीन से लेकर नौ तक होता है।

उस दिन जबकि रोम फ़ारस पर ग़ालिब आ जायेगा मुसलमान ख़ुशियाँ मनायेंगे। अक्सर उलेमा का इत्तिफ़ाक़ (इस पर सहमति) है कि बदर की लड़ाई वाले दिन रोमी फ़ारसियों पर ग़ालिब आ गये। इब्ने अ़ब्बास रज़ि., सुद्दी रह., सुफ़ियान सौरी रह. और अबू सईद यही फ़रमाते हैं। एक गिरोह का ख़्याल है कि यह ग़लबा हुदैबिया वाले साल हुआ था। हज़रत इक्रिमा, इमाम ज़ोहरी और क़तादा रह. वग़ैरह का भी यही क़ौल है। बाज़ों ने इसका यह मतलब बयान किया है कि रोम के बादशाह क़ैसर ने नज़्र (मन्नत) मानी थी कि अगर अल्लाह तआ़ला ने उसे फ़ारस पर ग़ालिब कर दिया तो वह उसके शुक्रिये में पैदल चलकर बैतुल-मुक़द्दस जायेगा। चुनाँचे उसने नज़्र (मन्नत) पूरी की और बैतुल-मुक़द्दस पहुँचा। यह यहीं था कि इसके पास रसूलुल्लाह सल्ल. का नामा-ए-मुबारक (पत्र) पहुँचा, जो आपने हज़रत दिहया कलबी रज़ि. की मारिफ़त बसरा के गवर्नर को भेजा था और उसने हिरक़्ल को पहुँचाया था। हिरक़्ल ने हुज़ूर सल्ल. के ख़त मुबारक को पाते ही शाम (सीरिया) में जो हिजाज के रहने वाले अ़रब लोग थे उन्हें अपने पास बुलवाया। उनमें अबू सुफ़ियान सख़र बिन हरब उमवी भी था और क़ुरैश के दूसरे बड़े-बड़े सम्मानित लोग थे। उसने उन सब को अपने सामने बैठाकर पूछा कि तुम में से उसका क़रीबी रिश्तेदार कौन है जिसने नुबुव्वत का दावा किया है? अबू सुफ़ियान ने कहा मैं हूँ। बादशाह ने उन्हें आगे बैठा लिया और उनके साथियों को उनके पीछे बैठा दिया और उनसे कहा देखो मैं इस शख़्स से चन्द सवालात करूँगा, अगर यह किसी बात का ग़लत जवाब दे तो तुम इसे झुठला देना। अबू सुफ़ियान का क़ौल है कि अगर मुझे इस बात का डर न होता कि अगर मैं झूठ बोलूँगा तो ये लोग उसे ज़ाहिर कर देंगे और फिर उस झूठ की मेरी तरफ़ निस्बत करेंगे तो मैं यक़ीनन झूठ बोलता।

अब हिरक़्ल ने बहुत से सवालात किये, जैसे हुज़ूर सल्ल. के हसब-नसब (ख़ानदान) के बारे में, आपकी सिफ़तों व आ़दात के मुताल्लिक़ वग़ैरह वग़ैरह। उन्हीं में से एक सवाल यह भी था कि क्या वह ग़द्दारी करता है? अबू सुफ़ियान ने कहा कि आज तक तो कभी बद-अ़हदी वायदा-ख़िलाफ़ी और ग़द्दारी नहीं की, इस वक़्त हमारे और उसके बीच एक समझौता है, न जाने उसमें वह क्या करे? अबू सुफ़ियान के इस क़ौल से मुराद सुलह-हुदैबिया है, जिसमें हुज़ूर सल्ल. और क़ुरैश में यह बात तय पाई थी कि दस साल तक कोई लड़ाई आपस में न होगी। यह वाक़िआ़ इस क़ौल की पूरी दलील बन सकता है कि रोम वाले फ़ारस पर हुदैबिया वाले साल ग़ालिब आये थे, इसलिये कि क़ैसर ने अपनी नज़्र (मन्नत) हुदैबिया के बाद पूरी की थी। वल्लाहु आलम। लेकिन इसका जवाब वे लोग जो कहते हैं कि रोम का फ़ारस पर ग़लबा और क़ब्ज़ा बदर

वाले साल हुआ था, यह दे सकते हैं कि चूँकि मुल्क की आर्थिक और माली हालत ख़राब हो चुकी थी, वीरानी, ग़ैर-आबादी व तंगहाली बहुत बढ़ चुकी थी इसलिये चार साल तक हिरक़्ल ने अपने पूरी तवज्जोह मुल्क की ख़ुशहाली और उसके दोबारा आबाद करने पर रखी, उसके बाद इस तरफ़ से इत्मीनान हासिल करके अपनी मन्नत को पूरी करने के लिये रवाना हुआ। वल्लाहु आलम।

यह इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कोई ऐसी अहम बात नहीं, हाँ मुसलमान रोमियों के ग़लबे से ख़ुश हुए इसलिये कि चाहे वे कैसे ही हों फिर भी थे तो अहले किताब, और उनके मुक़ाबिल मजूसियों की जमाअ़त थी जिन्हें किताब से दूर का भी ताल्लुक़ भी न था। तो लाज़िमी बात थी कि मुसलमान उनके ग़लबे से नाख़ुश हों और रोमियों के ग़लबे से ख़ुश हों। ख़ुद क़ुरआन में मौजूद है कि ईमान वालों के सब से ज़्यादा दुश्मन यहूद और मुश्रिक हैं, और उनसे दोस्तियाँ रखने में सब से ज़्यादा क़रीब वे लोग हैं जो अपने आप को नसारा (यानी ईसाई) कहते हैं। इसलिये कि उनमें उलेमा और दुर्वेश (नेक और बुज़ुर्ग) लोग हैं, और ये घमंडी नहीं। क़ुरआन सुनकर ये रो देते हैं, क्योंकि हक़ को जान लेते हैं, फिर इक़रार करते हैं कि ख़ुदाया हम ईमान लाये, तू हमें भी अपने मानने वालों में कर ले। पस यहाँ भी फ़रमाया कि मुसलमान उस दिन ख़ुश होंगे जिस दिन अल्लाह तआ़ला रोमियों की मदद करेगा। वह जिसकी चाहता है उसकी मदद करता है। वह बड़ा ग़ालिब और बहुत बड़ा मेहरबान है।

हज़रत ज़ुबैर कलाई रह. फ़रमाते हैं कि मैंने फ़ारसियों का रोमियों पर ग़ालिब आना फिर रोमियों का फ़ारसियों पर ग़ालिब आना, फिर रोम और फ़ारस दोनों पर मुसलमानों का ग़ालिब आ जाना ख़ुद अपनी आँखों से पन्द्रह साल के अन्दर-अन्दर देख लिया। आयत के आख़िर में फ़रमाया- ख़ुदा तआ़ला अपने दुश्मनों से बदला और इन्तिक़ाम लेने पर क़ादिर और अपने दोस्तों की ख़ताओं और ग़लतियों से दरगुज़र फ़रमाने वाला है। जो ख़बर तुम्हें दी है कि रोम वाले जल्द फ़ारस वालों पर ग़ालिब आ जायेंगे, यह ख़ुदा की ख़बर है, रब का वायदा है, यह परवर्दिगार का फ़ैसला है, नामुम्किन है कि ग़लत निकले, टल जाये या ख़िलाफ़ हो जाये। जो हक़ के क़रीब हुआ उसे भी रब हक़ से बहुत दूर वालों पर ग़ालिब रखता है। हाँ ख़ुदा की हिक्मतों को कम-इल्म जान नहीं सकते। अक्सर लोग दुनिया का तो इल्म ख़ूब रखते हैं, इसकी गुत्थियाँ मिनटों में सुलझा देते हैं, इसमें ख़ूब दिमाग़ दौड़ाते हैं, इसके बुरे-भले नफ़े-नुक़सान को पहचान लेते हैं, एक ही नज़र में इसकी ऊँच-नीच देख लेते हैं। दुनिया कमाने, पैसे जोड़ने का ख़ूब सलीक़ा रखते हैं, लेकिन दीनी मामलात, आख़िरत के कामों में बिल्कुल जाहिल, नासमझ और कम-दिमाग़ होते हैं। यहाँ तो न अ़क़्ल काम करे न समझ पहुँच सके, न सोच-विचार की आ़दत। हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि बहुत से आदमी ऐसे भी हैं कि नमाज़ तक तो ठीक पढ़ नहीं सकते लेकिन दिर्हम चुटकी में लेते ही वज़न बता दिया करते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि दुनिया की आबादी और रौनक़ की तो बीसियों सूरतें उनका ज़ेहन गढ़ लेता है लेकिन दीन में बिल्कुल जाहिल, आख़िरत से बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं।

क्या उन्होंने अपने दिलों में यह ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान में हैं, किसी हिक्मत ही से और एक मुक़र्ररा मियाद के लिए पैदा किया है, और बहुत-से आदमी अपने	اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ

Maktab E Ashraf

النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ٥ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط كَانُوْآ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَ عَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ط فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْآ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ٥ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْآٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ٥ ع

रब के मिलने के मुन्किर हैं, (8) क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं जिसमें देखते-भालते कि जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उनका अन्जाम क्या हुआ, वे इनसे क़ुव्वत में भी बढ़े हुए थे, और उन्होंने ज़मीन को बोया-जोता था। और जितना इन्होंने इसको आबाद कर रखा है इससे ज़्यादा उन्होंने इसको आबाद किया था, और उनके पास भी उनके पैग़म्बर मोजिज़े लेकर आए थे, सो अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता और लेकिन वे तो ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे। (9) फिर ऐसे लोगों का अन्जाम जिन्होंने बुरा काम किया था बुरा ही हुआ, इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला की आयतों को झुठलाया था और उनकी हंसी उड़ाते थे। (10)

अल्लाह की बनाई हुई चीज़ों में ग़ौर व फ़िक्र करो

चूँकि कायनात का ज़र्रा-ज़र्रा हक़ तआ़ला की क़ुदरत का निशान है और उसकी तौहीद (एक होने) और रबूबियत (रब और पालने वाला होने) पर दलालत करने वाला है, इसलिये इरशाद होता है कि कायनात में मौजूद चीज़ों में ग़ौर व फ़िक्र (सोच-विचार और चिंतन व मंथन) किया करो और अल्लाह की क़ुदरत की इन निशानियों से उस मालिक को पहचानो, और उसकी क़द्र व एहतिराम करो। कभी ऊपर की दुनिया (यानी आसमान और उसकी चीज़ों) को देखो, कभी नीचे की दुनिया (यानी ज़मीनी चीज़ों) पर नज़र डालो। कभी मख़्लूक़ात की पैदाईश के बारे में सोचो और समझो कि ये चीज़ें बेकार और ख़्वाह-मख़्वाह पैदा नहीं की गईं, बल्कि रब ने इन्हें कारामद और अपनी क़ुदरत का निशान बनाया है। हर एक का एक वक़्त मुक़र्रर है, यानी क़ियामत का दिन, जिसे अक्सर लोग मानते ही नहीं।

इसके बाद नबियों की सच्चाई को इस तरह ज़ाहिर फ़रमाता है कि देख लो उनके मुख़ालिफ़ों और विरोधियों का किस क़द्र इबरत-नाक अन्जाम हुआ, और उनके मानने वालों को किस तरह दोनों जहान की इज़्ज़त मिली। तुम चल-फिरकर अगले (यानी पहले गुज़रे) वाक़िआत मालूम करो कि पहले गुज़री उम्मतें जो तुम से ज़्यादा ज़ोरावर थीं, तुम से ज़्यादा माल व ज़र वाली थीं, तुम से ज़्यादा कुनबे क़बीले और बेटे पोते वाली थीं। तुम तो उनके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचते। वे तुम से ज़्यादा उम्र वाले थे, तुम से ज़्यादा आबादियाँ उन्होंने कीं, तुम से ज़्यादा खेतियाँ और बाग़ात उनके थे, इसके बावजूद जब उनके पास ज़माने के रसूल आये, उन्होंने दलीलें और मोजिज़े दिखाये और फिर भी उस ज़माने के उन बदनसीबों ने उनकी न

मानी, अपने ख़्यालात में डूबे रहे और अपने बुरे आमाल में मशग़ूल रहे तो आख़िरकार अल्लाह के अ़ज़ाब उन पर बरस पड़े। उस वक़्त कोई न था जो उन्हें बचा सके या किसी अ़ज़ाब को उन पर से हटा सके। अल्लाह की ज़ात इससे पाक है कि वह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करे। यह अ़ज़ाब तो उनके अपने करतूत का वबाल था। ख़ुदा की आयतों को ये झुठलाते थे, रब की बातों का मज़ाक़ उड़ाते थे। जैसे एक दूसरी आयत में है कि उनकी बेईमानी की वजह से हमने उनके दिलों को उनकी निगाहों से फेर दिया, और उन्हें उनकी सरकशी (नाफ़रमानी) में हैरान छोड़ दिया है।

एक और आयत में है कि उनकी कजी (टेढ़ी चाल) की वजह से अल्लाह ने उनके दिल भी टेढ़े कर दिये। एक और आयत में है कि अगर अब भी मुँह मोड़ें तो समझ लें कि ख़ुदा तआ़ला उनके बाज़ गुनाहों पर उनकी पकड़ करने का इरादा कर चुका है। मतलब यह कि उनके बुरे आमाल के सबब उनका अन्जाम बुरा हुआ। इसलिये कि वे अल्लाह की आयतों और निशानियों के झुठलाने वाले और उनका मज़ाक़ उड़ाने वाले थे। इस आयत के यही मायने इमाम इब्ने जरीर ने लिये हैं और इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और क़तादा रह. से भी यही नक़ल है। इमाम ज़ह्हाक भी यही फ़रमाते हैं और ज़ाहिर भी यही है क्योंकि इसके बाद यह है कि वे अल्लाह की आयतों को झुठलाते और उनकी हंसी उड़ाते थे।

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝	अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ को पहली बार भी पैदा करता है, फिर वही दोबारा भी उसको पैदा करेगा, फिर उसके पास लाए जाओगे। (11) और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी उस दिन मुजरिम लोग हैरान रह जाएँगे। (12) और उनके शरीकों में से उनका कोई सिफ़ारिशी न होगा, और ये लोग अपने शरीकों से मुन्किर हो जाएँगे। (13) और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी उस दिन सब आदमी अलग-अलग हो जाएँगे। (14) यानी जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने अच्छे काम किए थे, वे तो बाग़ में ख़ुश "और प्रसन्न" होंगे। (15) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया था और हमारी आयतों को और आख़िरत के पेश आने को झुठलाया था वे लोग अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होंगे। (16)

क़ियामत के दिन का कुछ हाल

इरशाद है कि मख़्लूक़ात को उसी ख़ुदा ने पैदा फ़रमाया है, और जिस तरह वह इसके पैदा करने पर उस वक़्त क़ादिर था अब फ़ना करके फिर से पैदा करने पर वैसा ही बल्कि उससे भी ज़्यादा क़ादिर है। तुम सब क़ियामत के दिन उसी के सामने हाज़िर किये जाने वाले हो। वहाँ वह हर एक को उसके आमाल का

Mehtab E Ashraf

बदला देगा। क़ियामत के दिन गुनाहगार ना-उम्मीद, रुस्वा और ख़ामोश हो जायेंगे। ख़ुदा के सिवा जिन-जिनकी दुनिया में इबादत करते रहे थे उनमें से एक भी उनकी सिफ़ारिश के लिये खड़ा न होगा, और जबकि ये उनके पूरी तरह मोहताज होंगे वे इनसे बिल्कुल आँखें फेर लेंगे और ख़ुद इनके झूठे माबूद भी इनसे एक किनारे और बेताल्लुक़ हो जायेंगे और साफ़ कह देंगे कि हमारे और इनके बीच कोई ताल्लुक़ नहीं। क़ियामत क़ायम होते ही इस तरह अलग-अलग हो जायेंगे जिसके बाद मिलाप है ही नहीं। नेक लोग 'इल्लिय्यीन' में पहुँचा दिये जायेंगे और बुरे लोग 'सिज्जीन' में दाख़िल कर दिये जायेंगे। वे सबसे आला बुलन्दी पर होंगे, ये सबसे ज़्यादा पस्ती में होंगे। फिर इसी आयत की तफ़सील होती है कि नेक लोग तो जन्नतों में हंसी-ख़ुशी से होंगे और कुफ़्फ़ार जहन्नम में जलते-भुनते होंगे।

सो तुम अल्लाह की तस्बीह किया करो शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त। (17) और तमाम आसमान व ज़मीन में उसी की तारीफ़ होती है, और सूरज ढलने के बाद ज़ोहर के वक़्त। (18) वह जानदार को बेजान से बाहर लाता है और बेजान को जानदार से बाहर लाता है, और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है, और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे। (19)	فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۝ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝ ع ٢ ٥

अल्लाह की पाकी और तस्बीह

उस रब तबारक व तआ़ला की कमाले क़ुदरत और बेमिसाल बादशाहत पर दलालत उसकी तस्बीह और उसकी तारीफ़ से है। जिसकी तरफ़ अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की रहबरी करता है और अपना पाक होना, तारीफ़ के क़ाबिल होना भी बयान फ़रमा रहा है। शाम के वक़्त जबकि रात अपनी अंधेरियों को लेकर आती है और सुबह के वक़्त जबकि दिन अपनी रोशनियों को लेकर आता है, इतना बयान फ़रमाकर इसके बाद का जुमला बयान फ़रमाने से पहले यह भी ज़ाहिर कर दिया कि ज़मीन व आसमान में क़ाबिले तारीफ़ व प्रशंसा वही है, इनकी पैदाईश ख़ुद उसकी बुज़ुर्गी (बड़ाई और बुलन्द शान) पर दलील है। फिर सुबह शाम के वक़्तों की तस्बीह का बयान जो पहले गुज़र चुका था उसके साथ रात और ज़ोहर का वक़्त मिला लिया जो पूरी अंधेरी और कामिल उजाले का वक़्त होता है। बेशक पूरी की पूरी पाकीज़गी उसी को सज़ावार (भाती और शोभा देती) है। जो रात की अंधेरियों और दिन के उजालों को पैदा करने वाला है। सुबह को ज़ाहिर करने वाला, रात को सुकून वाली बनाने वाला है। इस जैसी आयतें और भी बहुत सी हैं:

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا. وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا.

और (क़सम है) दिन की जब वह उस (सूरज) को ख़ूब रोशन कर दे। और (क़सम है) रात की जब वह उस (सूरज) को छुपा ले। एक और जगह है:

Maktab E Ashraf

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى. وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلّٰى.

क़सम है रात की जब वह (सूरज और दिन को) छुपा ले। एक और जगह इरशाद हैः

وَالضُّحٰى. وَاللَّيْلِ إِذَا سَجٰى.

क़सम है दिन की रोशनी की, और रात की जब वह क़रार पकड़े। वग़ैरह।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया मैं तुम्हें बताऊँ कि ख़ुदा तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का नाम ख़लील वफ़ादार क्यों रखा? इसलिये कि वह सुबह शाम इन कलिमात को पढ़ा करते थे। फिर आपने 'फ़-सुब्हानल्लाहि ही-न तुमसू-न व ही-न बिहा तुस्बिहून। व लहुल-हम्दु फ़िस्समावाति वल्-अर्ज़ि व अ़शिय्यंव्-व ही-न तुज़्हिरून' तक की दोनों आयतें तिलावत फ़रमाईं।

तबरानी की हदीस में इन दोनों आयतों के बारे में है कि जिसने सुबह शाम ये पढ़ लीं उसने दिन रात में जो उससे फ़ौत हुआ (यानी छूटा और रह गया हो) उसे पा लिया। फिर बयान फ़रमाया कि मौत व ज़िन्दगी का ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला), मुर्दों को ज़िन्दों से ज़िन्दों से मुर्दों को निकालने वाला वही है। हर चीज़ पर और उसके उलट व विपरीत पर वह क़ादिर है। दाने से दरख़्त और दरख़्त से दाने, मुर्ग़ी से अंडा और अंडे से मुर्ग़ी, नुत्फ़े से इनसान और इनसान से नुत्फ़ा, मोमिन से काफ़िर और काफ़िर से मोमिन, ग़र्ज़ कि हर चीज़ और उसके मुक़ाबले की चीज़ पर उसे क़ुदरत हासिल है। ख़ुश्क ज़मीन को वही हरी-भरी कर देता है। बंजर ज़मीन से वही खेती पैदा कर देता है, जैसे सूरः यासीन में फ़रमाया कि ख़ुश्क ज़मीन का तरोताज़ा होकर तरह-तरह के अनाज व फल पैदा करना भी मेरी क़ुदरत का एक कामिल निशान है। एक और आयत में है कि तुम्हारे देखते हुए उस ज़मीन को जिसमें से धुआँ उठता हो दो बूँद से तर करके मैं लहलहा (हरी-भरी कर) देता हूँ और हर क़िस्म की पैदावार से उसे सरसब्ज़ कर देता हूँ। और भी बहुत सी आयतों में इस मज़मून को कहीं विस्तार से और कहीं संक्षिप्त रूप से बयान फ़रमाया है। यहाँ फ़रमाया कि इसी तरह तुम सब भी मरने के बाद क़ब्रों में से ज़िन्दा करके खड़े कर दिये जाओगे।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝	और उसी की निशानियों में से एक यह है कि तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर थोड़े ही दिनों बाद तुम आदमी बनकर फैले हुए फिरते हो। (20) और उसी की निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी जिन्स की "यानी तुम्हारी ज़ात से और तुम्हारी ही शक्ल व सूरत वाली" बीवियाँ बनाईं ताकि तुमको उनके पास आराम मिले और तुम मियाँ-बीवी में मुहब्बत और हमदर्दी पैदा की। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो फ़िक्र से काम लेते हैं। (21)

अल्लाह की क़ुदरत की कुछ और निशानियाँ

फ़रमाता है कि ख़ुदा तआ़ला की क़ुदरत की बेशुमार निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि उसने

तुम्हारे बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को मिट्टी से पैदा किया। तुम सब को उसने हक़ीर (मामूली और बेहक़ीक़त) पानी के क़तरे से पैदा किया, फिर तुम्हारी बहुत अच्छी सूरतें बनाईं। नुत्फ़े (वीर्य) से जमे हुए ख़ून की शक्ल में, फिर गोश्त के लोथड़े की सूरत में करके फिर हड्डियाँ बनाईं और हड्डियों को गोश्त पहनाया। फिर रूह फूँकी, आँख कान नाक पैदा किये। माँ के पेट से सलामती से निकाला। फिर कमज़ोरी को क़ुव्वत से बदला, दिन-ब-दिन यह ताक़तवर और मज़बूत क़द्दावर और ज़ोरावर किया। उम्र दी, हरकत व सुकून की ताक़त दी, संसाधन और और उपकरण दिये, मख़्लूक़ का सरदार बनाया, इधर से उधर पहुँचने के ज़रिये (साधन यानी सवारियाँ) दिये। समुद्रों की ज़मीन की विभिन्न और अनेक सवारियाँ अ़ता फ़रमाईं। अ़क्ल, इल्म, सोच-समझ, तदबीर, ग़ौर के दिल व दिमाग़ अ़ता फ़रमाये। दुनियावी काम समझाये, रिज़्क़ इज़्ज़त हासिल करने के तरीक़े खोल दिये, साथ ही आख़िरत को संवारने का इल्म और अ़मल भी सिखाया। पाक है वह ख़ुदा जो हर चीज़ का सही अन्दाज़ा करता है, हर एक को उसके मर्तबे पर रखता है। शक्ल व सूरत में, बोल-चाल में, अमीरी-फ़क़ीरी में, अ़क्ल व हुनर में, भलाई बुराई में, नेकबख़्ती और बदबख़्ती में हर एक को अलग-अलग और एक दूसरे से भिन्न कर दिया ताकि हर शख़्स रब की बहुत सी निशानियाँ अपने में और दूसरे में देख ले।

मुस्नद इमाम अहमद में हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने तमाम ज़मीन से एक मुट्ठी मिट्टी लेकर उससे हज़रत आदम को पैदा किया। पस ज़मीन के विभिन्न हिस्सों की तरह इनसानों की विभिन्न रंगतें हुईं। कोई सफ़ेद, कोई सुर्ख़, कोई काला। कोई ख़बीस, कोई नेक-सिफ़त, कोई अच्छे अख़्लाक़ वाला कोई बद-अख़्लाक़ वग़ैरह।

फिर फ़रमाता है कि ख़ुदा तआ़ला की क़ुदरत की एक निशानी यह भी है कि उसने तुम्हारी ही जिन्स (क़िस्म) से तुम्हारे जोड़े बनाये कि वे तुम्हारी बीवियाँ हैं और तुम उनके शौहर हो। यह इसलिये कि तुम्हें उनसे सुकून व राहत, आराम व लुत्फ़ हासिल हो। जैसे एक और आयत में है कि अल्लाह तआ़ला नें तुम्हें एक ही नफ़्स से पैदा किया, और उसी से उसकी बीवी पैदा की ताकि वह उसकी तरफ़ राहत हासिल करे। हज़रत हव्वा हज़रत आदम की बायीं पसली से जो सब से ज़्यादा छोटी है पैदा हुई हैं। पस अगर इनसान का जोड़ा इनसान से न मिलता और किसी और जिन्स से इसका जोड़ बंधता तो मौजूदा ताल्लुक़, दिली लगाव और एक दूसरे की तरफ़ मैलान व मुहब्बत उसमें न हो सकती (क्योंकि हर चीज़ अपनी जिन्स से सुकून और दिली लगाव महसूस करती है। कबूतर कबूतर के साथ और कौआ कौए से एक फ़ितरी लगाव रखता है)। यह प्यार यह इख़्लास जिन्स के एक होने की वजह से है। इनमें आपस में मुहब्बत व ताल्लुक़, एक दूसरे के लिये मुहब्बत व मेहरबानी, प्यार व इख़्लास और रहम व हमदर्दी डाल दी। पस मर्द या तो मुहब्बत की वजह से औ़रत की ख़बरगीरी करता है या रहम खाकर उसका ख़्याल रखता है, इसलिये कि उससे औलाद हो चुकी है। औलाद की परवरिश इन दोनों के मेल-मिलाप पर मौक़ूफ़ (निर्भर) है। ग़र्ज़ कि बहुत से कारण रब्बुल-आ़लमीन ने रख दिये हैं जिनके सबब इनसान आराम से अपने जोड़े के साथ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता है। यह भी रब की मेहरबानी और उसकी कामिल क़ुदरत की एक ज़बरदस्त निशानी है। मामूली से चिंतन और सोच-विचार से इनसान का ज़ेहन इस तक पहुँच जाता है।

Maktaba E Ashraf

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ○ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ○	और उसी की निशानियों में से आसमान और ज़मीन का बनाना है। और तुम्हारे बातचीत करने के अन्दाज़ और रंगतों का अलग-अलग होना है। इसमें समझदारों के लिए निशानियाँ हैं। (22) और उसी की निशानियों में से तुम्हारा सोना-लेटना है रात में और दिन में, और उसकी रोज़ी को तुम्हारा तलाश करना है। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं। (23)

ज़मीन व आसमान

रब्बुल-आ़लमीन अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत की एक निशानी और बयान फ़रमाता है कि इस क़द्र बुलन्द, खुले हुए और बड़े आसमान की पैदाईश, उसमें सितारों का जड़ाव, उनकी चमक-दमक, उनमें बाज़ का चलता फिरता होना, बाज़ का एक जगह ठहरा हुआ रहना। ज़मीन को एक ठोस शक्ल में बनाना, इसे गाढ़ा और भारी पैदा करना, इसमें पहाड़, मैदान, जंगल, दरिया, समुद्र, टीले, पत्थर, पेड़-पौधे वग़ैरह जमा देना। खुद तुम्हारी भाषाओं में, रंगतों में भिन्नता रखना, अ़रब की भाषा और, तातारियों की और, कुर्दों की और, रोमियों की और, अंग्रेज़ों की और, तकरूनियों की और, बरबर की और, हिन्दियों की और, ईरानियों की और, अरमीनियों की और, जज़रियों की और, खुदा जाने कितनी-कितनी ज़बानें (भाषायें) ज़मीन पर इनसानों में बोली जाती हैं। इनसानी भाषाओं के इख़्तिलाफ़ (अलग-अलग होने) के साथ रंगतों का इख़्तिलाफ़ (अलग-अलग होना) भी अल्लाह की शान का प्रतीक है।

ख़्याल तो फ़रमाईये कि लाखों आदमी जमा हो जायें। एक कुनबे क़बीले के, एक मुल्क एक ज़बान के हों लेकिन नामुम्किन है कि हर एक में कोई न कोई इख़्तिलाफ़ (भिन्नता और एक दूसरे से अलग बात) न हो। हालाँकि बदन के हिस्सों के एतिबार से सब एक जैसे हैं, सब की दो आँखें दो पलकें एक नाक दो कान एक पेशानी एक मुँह दो होंठ दो गाल वग़ैरह, लेकिन एक से एक अलग है। कोई न कोई अन्दाज़ व हालत, आ़दत ख़स्लत, कलाम बातचीत, गुफ़्तगू का अन्दाज़ ऐसा ज़रूर होगा जिसमें एक का दूसरे से फ़र्क़ और पहचान हो जाये, चाहे वह बाज़ मर्तबा हल्की सी चीज़ ही हो। चाहे ख़ूबसूरती और बदसूरती में कई एक बराबर नज़र आयें लेकिन जब ग़ौर किया जाये तो हर एक को दूसरे से मुम्ताज़ (अलग और नुमायाँ) करने वाला कोई न कोई वस्फ़ ज़रूर नज़र आ जायेगा।

हर जानने वाला इतनी बड़ी ताक़तों और क़ुव्वतों के मालिक को पहचान सकता है और इस कारीगरी और कमाल से इसके कारीगर और बनाने वाले को जान सकता है। नींद भी क़ुदरत की एक निशानी है जिससे थकान दूर हो जाती है, राहत व सुकून हासिल होता है। इसलिये क़ुदरत ने रात बना दी है, काम-काज के लिये, दुनिया हासिल करने के लिये, कमाई धंधे के लिये, रोज़ी की तलाश के लिये, उस खुदा ने दिन को पैदा कर दिया जो रात से बिल्कुल अलग और विपरीत है। यक़ीनन सुनने समझने वालों के लिये

Maktab E Ashraf

ये चीज़ें शाने क़ुदरत हैं। तबरानी में हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि. से मन्क़ूल है कि रातों को मेरी नींद उचाट हो जाया करती थी तो मैंने नबी करीम सल्ल. से इस चीज़ की शिकायत की, आपने फ़रमाया यह दुआ पढ़ा करोः

اَللّٰهُمَّ غَارَتِ النُّجُوْمُ وَهَدَاتِ الْعُيُوْنُ وَاَنْتَ حَيٌّ قَيُّوْمٌ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ اَنِمْ عَيْنِيْ وَاَهْدِ لَيْلِيْ.

अल्लाहुम्-म ग़ारतिन्नुजूमु व हदातिल-उयूनु व अन्-त हय्युन् क़य्यूमुन् या हय्यु या क़य्यूमु अनिम् अ़ैनी व अह्दि लैली।

मैंने जब इस दुआ़ को पढ़ा तो नींद न आने की बीमारी अल्लाह के फ़ज़्ल से दूर हो गई।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ○ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۗ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ○	और उसी की निशानियों में से यह है कि वह तुमको बिजली दिखाता है जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी होती है, और वही आसमान से पानी बरसाता है फिर उसी से ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर देता है। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अक़्ल रखते हैं। (24) और उसी की निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं। फिर जब तुमको पुकारकर ज़मीन में से बुलाएगा तो तुम एक दम से निकल पड़ोगे। (25)

कोंदती बिजलियाँ

अल्लाह तआ़ला की बड़ाई और शान पर दलालत करने वाली एक और निशानी बयान की जा रही है कि आसमानों पर उसके हुक्म से बिजली कोंदती है, जिसे देखकर तुम्हें दहशत होने लगती है कि कहीं ऐसा न हो कि कड़ाका किसी को हलाक कर दे, कहीं बिजली गिरे वग़ैरह। और कभी तुम्हें उम्मीद बंधती है कि अच्छा हुआ अब बारिश बरसेगी, पानी की रेलपेल होगी, हरियाली हो जायेगी वग़ैरह। वही है जो आसमान से पानी उतारता है और उस ज़मीन को जो ख़ुश्क पड़ी हुई थी जिस पर नाम व निशान को कोई हरियाली न थी, बेकार थी, उस बारिश से उसको ज़िन्दा कर देता है, वह लहलहाने लगती है, हरी-भरी हो जाती है और तरह-तरह की पैदावार उगा देती है। अक़्लमन्दों के लिये अल्लाह की बड़ाई की यह एक जीती-जागती तस्वीर है। वे इस निशान को देखकर यक़ीन कर लेते हैं कि इस ज़मीन को ज़िन्दा करने वाला ख़ुदा हमारी मौत के बाद भी नये सिरे से ज़िन्दा कर देने पर क़ादिर है।

उसकी एक निशानी यह भी है कि ज़मीन व आसमान उसी के हुक्म से क़ायम हैं। वह आसमान को ज़मीन पर गिरने नहीं देता, वह आसमान व ज़मीन को थामे हुए है और इन्हें ज़वाल (तबाही और पतन) से बचाये हुए है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. जब कोई ताकीदी क़सम खाना चाहते तो फ़रमाते- उस ख़ुदा

की क़सम जिसके हुक्म से ज़मीन व आसमान ठहरे हुए हैं। फिर क़ियामत के दिन वह ज़मीन व आसमान को बदल देगा। मुर्दे अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा करके निकाले जायेंगे। ख़ुद ख़ुदा उन्हें आवाज़ देगा और ये सिर्फ़ एक आवाज़ पर अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा होकर निकल खड़े होंगे। जैसे एक दूसरी आयत में है कि जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तुम उसकी तारीफ़ बयान करते हुए उसे जवाब दोगे और यक़ीन कर लोगे कि तुम बहुत ही कम रहे। एक और आयत में है:

فَاِنَّمَاهِیَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ. فَاِذَاهُمْ بِالسَّاهِرَةِ.

कि सिर्फ़ एक ही आवाज़ से सारी मख़्लूक़ मैदाने मेहशर में जमा हो जायेगी। एक और आयत में है:

اِنْ كَانَتْ اِلَّاصَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَاهُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَامُحْضَرُوْنَ.

यानी वह तो सिर्फ़ एक ही आवाज़ होगी जिसे सुनते ही सब के सब हमारे सामने हाज़िर हो जायेंगे।

और जितने आसमान और ज़मीन में मौजूद हैं, सब उसी के ताबे हैं। (26) और वही है जो पहली बार पैदा करता है, फिर वही दोबारा पैदा करेगा और यह उसके नज़दीक ज़्यादा आसान है और आसमान व ज़मीन में उसी की शान आला है, और वह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (27)	وَلَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ○ وَهُوَالَّذِیْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَاَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○

अल्लाह के सामने सब आजिज़ व बेबस हैं

फ़रमाता है कि तमाम आसमानों की और सारी ज़मीनों की मख़्लूक़ अल्लाह की ही है, सब उसके ग़ुलाम हैं, सब उसकी मिल्कियत में हैं। हर एक उसके सामने आजिज़ व लाचार, मजबूर व बेबस है। एक हदीस में है कि क़ुरआने करीम में जहाँ कहीं 'क़नूत' का ज़िक्र है वहाँ मुराद इताअ़त व फ़रमाँबरदारी है। पैदाईश भी उसी ने की और वही दौबारा लौटायेगा भी। और किसी चीज़ का दौबारा पैदा करना और बनाना उसके पहली बार बनाने से ज़्यादा आसान और हल्का होता है (क्योंकि पहली बार जब बनाया जाता है उस वक़्त तो कोई नमूना भी सामने नहीं होता, दूसरी बार में तो एक नमूना सामने रहता है)।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है- मुझे इब्ने आदम (यानी इनसान) झुठलाता है हालाँकि उसे ऐसा नहीं करना चाहिये। वह मुझे बुरा कहता है और यह भी उसे लायक़ न था। उसका झुठलाना तो यह है, कहता है कि जिस तरह उसने मुझे पैदा किया उस तरह दोबारा पैदा नहीं कर सकता, हालाँकि दूसरी बार का पैदा करना पहली बार के पैदा करने से बिल्कुल ही आसान हुआ करता है। उसका मुझे बुरा कहना यह है, वह कहता है कि ख़ुदा की औलाद है, हालाँकि मैं अकेला और सबसे बेनियाज़ हूँ। जिसकी न औलाद न माँ न बाप, और जिसका कोई हमसर (बराबरी का) नहीं। ग़र्ज़ यह कि दोनों पैदाईशें उस मालिक की क़ुदरत में हैं, न उस पर कोई काम भारी न बोझल।

Maktaba Ashraf

बाज़ अहले-ज़ौक़ ने कहा है कि जब साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी का सुथरा पाक-साफ़ हौज़ ठहरा हुआ हो और सुबह की सुहानी हवा के थपेड़े उसे हिलाते जुलाते न हों, उस वक़्त उसमें आसमान साफ़ नज़र आता है, सूरज और चाँद सितारे बिल्कुल अच्छी तरह दिखाई देते हैं। इसी तरह बुज़ुर्गों के दिल हैं जिनमें वे ख़ुदा तआ़ला की बड़ाई व जलाल को हमेशा देखते रहते हैं। वह ग़ालिब है जिस पर किसी का बस नहीं, न उसके सामने किसी की कुछ चल सके। हर चीज़ उसकी मातहती में और उसके सामने पस्त व लाचार, आ़जिज़ व बेबस है। उसकी क़ुदरत व क़ब्ज़ा और हुकूमत व बादशाहत हर चीज़ को घेरे हुए है। वह हकीम है, अपने अक़वाल, अफ़आ़ल (बातों और कामों) और शरीअ़त में, तक़दीर में, ग़र्ज़ कि हर-हर बात और मामले में।

हज़रत मुहम्मद बिन मुन्कदिर रह. फ़रमाते हैं 'मस्ले आला' से मुराद "ला इला-ह इल्लल्लाहु" है।

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّامَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِىْ مَارَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِىْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَالَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝	अल्लाह तआ़ला तुम से एक अ़जीब मज़मून तुम्हारे ही हालात में से बयान फ़रमाते हैं। क्या तुम्हारे ग़ुलामों में कोई शख़्स तुम्हारा उस माल में जो हमने तुमको दिया है शरीक है? कि तुम और वह उसमें बराबर हों जिनका तुम ऐसा ख़्याल करते हो जैसा अपने आपस का ख़्याल किया करते हो। हम इसी तरह समझदारों के लिए साफ़-साफ़ दलीलें बयान करते रहते हैं। (28) बल्कि उन ज़ालिमों ने बिना दलील अपने ख़्यालात का इत्तिबा कर रखा है, सो जिसको ख़ुदा गुमराह करे उसको कौन राह पर लाए, और उनका कोई हिमायती न होगा। (29)

एक मिसाल

मक्का के मुश्रिक लोग अपने बुज़ुर्गों को अल्लाह का शरीक जानते थे लेकिन साथ ही यह भी मानते थे कि ये सब ख़ुदा के ग़ुलाम और उसके मातहत हैं। चुनाँचे वे हज व उमरे के मौक़े पर लब्बैक पुकारते हुए कहते थे:

لَبَّيْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ اِلَّاشَرِيْكًاهُوَلَكَ تَمْلِكُهٗ وَمَامَلَكَ.

यानी हम तेरे दरबार में हाज़िर हैं, तेरा कोई शरीक नहीं मगर वह जो कि ख़ुद और जिसका वह मालिक है सब तेरी मिल्कियत में है। यानी हमारे शरीकों का और उनकी मिल्कियत का तू ही असल मालिक है। पस यहाँ उन्हें एक ऐसी मिसाल से समझाया जा रहा है जो ख़ुद ये अपने नफ़्स ही में पायें और बहुत अच्छी तरह सोच-विचार कर सकें। तो फ़रमाता है कि क्या तुम में से कोई भी इस बात पर रज़ामन्द होगा कि उसके तमाम माल वग़ैरह में उसके ग़ुलाम उसके बराबर के शरीक हों और हर वक़्त उसे यह आशंका और ख़तरा रहता हो कि कहीं वह तक़सीम करके मेरी जायदाद और मिल्कियत आधों-आध बाँट न ले

जाये? पस जिस तरह तुम यह बात अपने लिये पसन्द नहीं करते ख़ुदा के लिये भी यह न चाहो। जिस तरह गुलाम आक़ा की बराबरी नहीं कर सकता इसी तरह ख़ुदा का कोई बन्दा ख़ुदा का शरीक नहीं हो सकता। यह अ़जीब ना-इन्साफ़ी है कि अपने लिये जिस बात से चिढ़ें और नफ़रत करें ख़ुदा के लिये वही बात साबित करने बैठ जायें! ख़ुद बेटियों से इतने चिढ़ते और नफ़रत करते थे, इतना सुनते ही कि तेरे यहाँ लड़की हुई मुँह काले पड़ जाते थे और ख़ुदा के मुक़र्रब (क़रीबी और ख़ास) फ़रिश्तों को ख़ुदा की लड़कियाँ कहते थे। इसी तरह ख़ुद इस बात के भी रवादार नहीं होंगे कि अपने ग़ुलामों को अपना बराबर का शरीक व हिस्सेदार समझें लेकिन ख़ुदा के ग़ुलामों को ख़ुदा का शरीक समझ रहे हैं। किस क़द्र इन्साफ़ का ख़ून है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि मुश्रिक जो लब्बैक पुकारते थे उसमें ख़ुदा की ला-शरीकी (यानी किसी का उसका शरीक न होने) का इक़रार करके फिर उसकी ग़ुलामी के तहत दूसरों को मानकर फिर उन्हें उसका शरीक ठहराते थे, इस पर यह आयत उतरी और इसमें बयान है कि जब तुम अपने ग़ुलामों को अपने बराबर का शरीक ठहराने से आ़र (शर्म और अपनी तौहीन का सबब) रखते हो तो ख़ुदा के ग़ुलामों को ख़ुदा का शरीक क्यों ठहरा रहे हो?

यह साफ़ बात बयान फ़रमाकर इरशाद फ़रमाता है कि हम इसी तरह ग़ाफ़िलों के सामने दलीलें रख देते हैं। फिर फ़रमाता और बतलाता है कि मुश्रिकों के शिर्क की कोई सनद अ़क़्ली नक़ली कोई दलील नहीं, सिर्फ़ जहालत और अपनी इच्छा की पैरवी का परिणाम है, जबकि ये सही रास्ते से हट गये तो फिर इन्हें सिवाय ख़ुदा के और कोई सही रास्ते पर नहीं ला सकता। ये अगरचे दूसरों को अपना कारसाज़ और मददगार मानते हों लेकिन हक़ीक़त यह है कि अल्लाह के दुश्मनों का कोई दोस्त नहीं। कौन है जो उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ लब हिला सके? कौन है जो उस पर मेहरबानी करे जिस पर ख़ुदा नामेहरबान हो? उसका चाहा हुआ होता है और जिसे वह न चाहे हो नहीं सकता।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۭ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۭ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڎ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ۭ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝	सो तुम यक्सू होकर अपना रुख़ उस दीन की तरफ़ रखो। अल्लाह की दी हुई क़ाबलियत का इत्तिबा करो जिस पर अल्लाह तआ़ला ने लोगों को पैदा किया है, अल्लाह तआ़ला की उस पैदा की हुई चीज़ को न बदलना चाहिए जिस पर उसने तमाम आदमियों को पैदा किया है। पस सीधा दीन यही है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (30) तुम ख़ुदा की तरफ़ रुजू होकर अल्लाह तआ़ला के क़ानून का इत्तिबा करो, और उससे डरो और नमाज़ की पाबन्दी करो और शिर्क करने वालों में से मत रहो। (31) जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर लिया और बहुत-से गिरोह हो गए। हर गिरोह अपने उस तरीक़े पर ख़ुश है जो उनके पास है। (32)

Maktaba Ashraf

Maktab-E-Ashraf

हक़ रास्ते और सही दीन की पैरवी करो

हज़रत इब्राहीम के तरीक़े और सही रास्ते पर जम जाओ, जिस दीन को अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिये मुक़र्रर कर दिया है और जिसे ऐ नबी! आपके हाथ पर ख़ुदा ने कमाल को पहुँचाया है। रब की सही फ़ितरत पर वही क़ायम है जो इस दीने इस्लाम का पाबन्द है। इसी पर यानी तौहीद पर रब ने तमाम इनसानों को बनाया है। रोज़े अज़ल में इसी का सब से इक़रार लिया गया था कि क्या मैं तुम सब का रब नहीं हूँ? तो सब ने इक़रार किया कि बेशक तू ही हमारा रब है। वे हदीसें जल्द ही इन्शा-अल्लाह तआ़ला बयान होंगी जिनसे साबित है कि ख़ुदा तआ़ला ने अपनी समस्त मख़्लूक़ को अपने सच्चे दीन पर पैदा किया है अगरचे उसके बाद लोग यहूदियत व ईसाईयत वग़ैरह पर चले गये। लोगो! ख़ुदा की इस फ़ितरत को न बदलो, लोगों को इस सही रास्ते से न हटाओ। तो यह ख़बर देना हुक्म देने के मायने में होगा, जैसे "फ़-मन् द-ख़-लहू का-न आमिना" में। यह मायने बहुत ही उम्दा और सही हैं। दूसरे मायने यह भी हैं कि अल्लाह तआ़ला ने तमाम मख़्लूक़ को फ़ितरते सलीमा यानी दीने इस्लाम पर पैदा किया। रब के इस दीन में कोई तब्दीली नहीं। इमाम बुख़ारी रह. ने यही मायने किये हैं कि यहाँ "ख़ल्क़ुल्लाह" (अल्लाह की मख़्लूक़) से मुराद दीन और फ़ितरते इस्लाम है। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की रिवायत से हुज़ूरे पाक सल्ल. का इरशाद है कि हर बच्चा इस्लामी फ़ितरत पर पैदा होता है, फिर उसके माँ-बाप उसे यहूदी, ईसाई और मजूसी (आग-परस्त) बना लेते हैं। जैसे बकरी का सही सालिम बच्चा होता है जिसके कान लोग कुतर देते हैं, फिर आपने यह आयत तिलावत कीः

فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِیْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ذَالِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ.

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)

मुस्नद अहमद में है, हज़रत अस्वद बिन सरीअ़ रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आया, आपके साथ मिलकर कुफ़्फ़ार से जिहाद किया। वहाँ हम अल्लाह के फ़ज़्ल से ग़ालिब आ गये। उस दिन लोगों ने बहुत से काफ़िरों को क़त्ल किया। यहाँ तक कि छोटे बच्चों पर भी हाथ साफ़ किया। हुज़ूर सल्ल. को जब इसका पता चला तो आप बहुत नाराज़ हुए और फ़रमाने लगे- यह क्या बात है कि लोग हद से आगे निकल जाते हैं। आज बच्चों को भी क़त्ल कर दिया है? किसी ने कहा या रसूलल्लाह! आख़िर वे भी तो मुश्रिकों की ही औलाद थे। आपने फ़रमाया- नहीं नहीं! याद रखो तुम में से भी बेहतरीन लोग वही हैं जो मुश्रिकों की औलाद हैं (यानी तुम्हारे माँ-बाप भी तो मुश्रिक थे हो सकता है कि तुम्हारी तरह उन मुश्रिकों के बच्चे भी इस्लाम ले आयें)। ख़बरदार बच्चों को कभी क़त्ल न करना, नाबालिग़ों के क़त्ल से रुक जाना, हर बच्चा फ़ितरते इस्लाम पर पैदा होता है, यहाँ तक कि वह अपनी ज़बान से कुछ कहे (यानी बोलना सीखे), फिर उसके माँ-बाप उसे यहूदी ईसाई बना लेते हैं।

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह की रिवायत से मुस्नद शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है यहाँ तक कि उसे ज़बान (यानी बोलना) आ जाये। अब या तो शाकिर बनता है या काफ़िर। मुस्नद में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की रिवायत से मन्क़ूल है कि हुज़ूर सल्ल. से मुश्रिकों की औलाद के बारे में सवाल किया गया तो आपने फ़रमाया- जब उन्हें अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया तो वह ख़ूब जानता है कि वे क्या आमाल करने वाले हैं। आपसे मन्क़ूल है कि एक ज़माने में मैं कहता था कि

मुसलमानों की औलाद मुसलमानों के साथ है और मुश्रिकों की औलाद मुश्रिकों के साथ है, यहाँ तक कि फ़ुलाँ शख़्स ने फ़ुलाँ से रिवायत करके मुझे सुनाया कि जब नबी करीम सल्ल. से मुश्रिकों के बच्चों के बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया- अल्लाह ख़ूब जानता है उस चीज़ को जो वे करते। इस हदीस को सुनकर मैंने अपना फ़तवा छोड़ दिया।

हज़रत अ़याज़ बिन हिमार रज़ि. से मुस्नद अहमद वग़ैरह में हदीस है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक ख़ुतबे में फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि जो उसने मुझे आज सिखाया है और उससे तुम जाहिल हो वह मैं तुम्हें सिखा दूँ। फ़रमाया है कि जो मैंने अपने बन्दों को दिया है मैंने उनके लिये हलाल किया है मैंने सब बन्दों को एक तरफ़ा ख़ालिस दीन वाला बनाया है। उनके पास शैतान पहुँचता है, उन्हें दीन से गुमराह करता है, हलाल को उन पर हराम करता है और उन्हें मेरे साथ शरीक करने को कहता है, जिसकी कोई दलील नहीं। अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन वालों की तरफ़ निगाह डाली और अ़रब व अ़जम सब को नापसन्द फ़रमाया सिवाय चन्द अहले किताब के बक़ाया के। वह फ़रमाता है कि मैंने तुझे सिर्फ़ आज़माईश के लिये भेजा है, तेरी अपनी भी आज़माईश होगी और तेरी वजह से और सब की भी। मैं तुझ पर वह किताब उतारूँगा जिसे पानी धो न सके, तू उसे सोते जागते पढ़ता रहेगा।

फिर मुझसे अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि मैं क़ुरैश को होशियार कर दूँ। मैंने अपना अन्देशा ज़ाहिर किया कि कहीं वे मेरा सर कुचल कर रोटी जैसा न बना दें? तो फ़रमाया सुन ये तुझे निकालेंगे, मैं इन्हें निकालूँगा। तू इनसे जिहाद कर मैं तेरा साथ दूँगा। तू ख़र्च कर तुझ पर ख़र्च किया जायेगा। तू लश्कर भेज मैं उससे पाँच हिस्से ज़्यादा लश्कर भेजूँगा। फ़रमाँबरदारों के लेकर अपने नाफ़रमानों पर चढ़ाई कर दे। जन्नत वाले तीन क़िस्म के हैं:

1. आ़दिल (इन्साफ़ करने वाला) बादशाह, अच्छी तौफ़ीक़ वाला।
2. नर्म-दिल, हर मुसलमान के साथ सुलूक व एहसान करने वाला।
3. पाकदामन, सवाल से और हराम से बचने वाला बाल-बच्चों वाला आदमी।

जहन्नम वाले पाँच क़िस्म के लोग हैं:

1. वे बेवक़्अ़त कमीने लोग जो बेज़र और बेघर (यानी ग़रीब) हैं, जो तुम्हारे दामनों में लिपटे रहते हैं।
2. वे ख़ाईन (ख़ियानत और चोरी करने वाले) जो मामूली-मामूली और हक़ीर चीज़ों में भी ख़ियानत किये बग़ैर नहीं रहते।
3. वे लोग जो हर वक़्त लोगों को उनकी जान माल, औलाद, बाल-बच्चों और घर वालों में धोखे देते रहते हैं। सुबह शाम चालबाज़ियों और मक्र व फ़रेब में लगे रहते हैं।
4. फिर आपने बख़ील (कन्जूस) या कज़्ज़ाब (बहुत झूठ बोलने वाले) का ज़िक्र किया और फ़रमाया पाँचवीं क़िस्म के लोग बद-ज़बान और बदगो हैं। (मुस्लिम वग़ैरह)

यही फ़ितरते सलीमा यही शरीअ़त को मज़बूती के साथ थामना यही सच्चा और सीधा दीन है। लेकिन अक्सर लोग बेइल्म हैं और अपनी इसी जहालत (कम-इल्मी और अज्ञानता) की वजह से ख़ुदा के ऐसे पाक दीन से दूर बल्कि महरूम रह जाते हैं। जैसे एक दूसरी आयत में है कि चाहे तेरी तमन्ना हो लेकिन उनमें से अक्सर लोग बिना ईमान वाले ही रहेंगे। एक और आयत में है अगर तू अक्सरियत की इताअ़त करेगा तो वे तुझे राहे ख़ुदा से बहका देंगे। तुम सब अल्लाह की तरफ़ राग़िब रहो, तुम मुश्रिक न बनो बल्कि ख़ालिस तौहीद वाले (यानी मोमिन) बन जाओ। उसके सिवा किसी और से कोई मुराद वाबस्ता न रखो।

हज़रत मुआज़ रज़ि. से हज़रत उमर रज़ि. ने इस आयत का मतलब पूछा तो आपने फ़रमाया ये तीन चीज़ें हैं और वही निजात की जड़ हैं। अव्वल इख़्लास जो फ़ितरत है, जिस पर अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को पैदा किया है। दूसरे नमाज़ जो दर असल दीन है। तीसरे इताअ़त जो बचाव और सुरक्षा है। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया- आपने सच कहा। तुम्हें मुश्रिकों में न मिलना चाहिये, तुम्हें उनका साथ न देना चाहिये और न उन जैसा काम करना चाहिये जिन्होंने दीने ख़ुदा को बदल दिया। बाज़ बातों को मान लिया, बाज़ से इनकार कर गये। 'फ़र्रक़ू' की दूसरी क़िराअत 'फ़ारक़ू' है, यानी उन्होंने अपने दीन को छोड़ दिया। जैसे यहूद व ईसाई और मजूस व बुत-परस्त और बाक़ी दूसरे बातिल मज़हब वाले। जैसे इरशाद है कि जिन लोगों ने अपने दीन में तफ़रीक़ की और गिरोहबन्दी कर ली तो उनमें से ही उनका आख़िर (यानी उनका मामला) अल्लाह के सुपुर्द है। तुम से पहले वाले लोग गिरोह-गिरोह में बट गये और सब के सब बातिल (यानी ग़ैर-हक़) पर जम गये और हर फ़िर्क़ा यही दावा करता रहा कि वह कुछ है और दर असल हक़्क़ानियत से वे सब हट गये थे। इस उम्मत में भी फूट पड़ी लेकिन इनमें एक हक़ पर है बाक़ी सब गुमराह हैं। यह हक़ वाली जमाअ़त अहले सुन्नत वल-जमाअ़त है जो किताबुल्लाह और रसूलुल्लाह सल्ल. की सुन्नत और तरीक़े को मज़बूत थामने वाली है। जिस पर अगले ज़माने के सहाबा व ताबिईन और इमाम हज़रात थे। गुज़रे ज़माने में भी और अब भी। जैसे मुस्तद्रक हाकिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. से मालूम किया गया कि उन सब में निजात पाने वाला फ़िर्क़ा कौनसा है? आपने फ़रमायाः

مَنْ كَانَ عَلٰى مَآاَنَا عَلَيْهِ الْيَوْمَ وَاَصْحَابِىْ.

यानी वे लोग जो उस पर हों जिस पर आज मैं और मेरे सहाबा हैं।

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۣ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ۝ وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ۭ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

और जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुँचती है, अपने रब को उसी की तरफ़ रुजू होकर पुकारने लगते हैं, फिर जब अल्लाह तआ़ला उनको अपनी तरफ़ से कुछ इनायतों का मज़ा चखा देता है तो बस उनमें से बाज़े लोग अपने रब के साथ शिर्क करने लगते हैं। (33) जिसका हासिल यह है कि हमने जो उनको दिया है उसकी नाशुक्री करते हैं, सो चन्द रोज़ और फ़ायदा उठा लो फिर जल्दी ही तुम मालूम कर लोगे। (34) क्या हमने उन पर कोई सनद नाज़िल की है कि वह उनको अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क करने को कह रही है। (35) और हम जब लोगों को कुछ इनायत का मज़ा चखा देते हैं तो वे उससे ख़ुश होते हैं। और अगर उनके आमाल के बदले में जो पहले अपने हाथों कर चुके हैं, उन पर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो बस वे लोग नाउम्मीद हो जाते हैं। (36)

Maktab-E-Ashraf

क्या उनको यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहे कम देता है, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (37)	يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

इनसान की एक अ़जीब आ़दत

अल्लाह तआ़ला लोगों की हालत बयान फ़रमा रहा है कि दुख, दर्द, मुसीबत व तकलीफ़ के वक़्त तो वह एक अल्लाह जिसका कोई शरीक नहीं उसको बड़ी आ़जिज़ी, गिड़गिड़ाकर, तवज्जोह और पूरी दिलसोज़ी के साथ पुकारते हैं और जब उसकी नेमतें उन पर बरसने लगती हैं तो ये फिर ख़ुदा तआ़ला के साथ शिर्क करने लगते हैं।

'लियक्फ़ुरू' में जो 'लाम' है बाज़ कहते हैं कि यह लाम 'आ़क़िबत' (अन्जाम बयान करने के लिये) है, बाज़ कहते हैं कि यह 'लामे तालील' (यानी इल्लत और सबब बयान करने के लिये) है। लेकिन इसका 'लामे तालील' होना इस वजह से मुनासिब मालूम होता है कि अल्लाह ने उनके लिये यह मुक़र्रर किया, फिर उन्हें धमकाया कि तुम्हें अभी मालूम हो जायेगा। बाज़ बुज़ुर्गों का फ़रमान है कि कोतवाल या सिपाही किसी को डराये धमकाये तो वह काँप उठता है, ताज्जुब है कि उसके धमकाने से हम दहशत में न आयें जिसके क़ब्ज़े में हर चीज़ है, और जिसका सिर्फ़ यह कह देना हर मामले के लिये काफ़ी है कि "हो जा"।

फिर मुश्रिकों का महज़ बेदलील होना बयान फ़रमाया जा रहा है कि हमने उनके शिर्क की कोई दलील नहीं उतारी। फिर इनसान की एक बेहूदा ख़स्लत बतौर इनकार बयान हो रहा है कि सिवाय चन्द हस्तियों के उमूमन हालत यह है कि राहतों के वक़्त भूल जाते हैं और सख़्तियों के वक़्त मायूस हो जाते हैं। गोया अब कोई बेहतरी मिलने ही की नहीं। हाँ मोमिन सख़्तियों में सब्र और नर्मियों में नेकियाँ करते हैं। सही हदीस में है कि मोमिन पर ताज्जुब है उसके लिये ख़ुदा की हर क़ज़ा (फ़ैसला और तक़दीर) बेहतर ही होती है। राहत पर शुक्र करता है तो यह भी उसके लिये बेहतर होता है, और मुसीबत पर सब्र करता है तो यह भी उसके लिये बेहतर होता है। अल्लाह तआ़ला ही हर चीज़ पर क़ाबिज़, बा-इख़्तियार और मालिक है। वह अपनी हिक्मत के मुताबिक़ निज़ाम क़ायम किये हुए है, किसी को कम देता है किसी को ज़्यादा, कोई तंगी और ग़ुर्बत में है कोई वुस्अ़त और फ़राख़ी में। इसमें मोमिनों के लिये निशान हैं।

फिर रिश्तेदार को उसका हक़ दिया करो और मिस्कीन और मुसाफ़िर को भी। यह उन लोगों के लिए बेहतर है जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा के तालिब हैं। और ऐसे ही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (38) और जो चीज़ तुम इस ग़र्ज़ से दोगे कि वह लोगों के माल में पहुँचकर ज़्यादा हो जाए तो यह ख़ुदा के नज़दीक नहीं बढ़ता, और जो ज़कात दोगे जिससे अल्लाह	فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ

Maktab E Ashraf

مِنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝	तआ़ला की रज़ा तलब करते होगे, तो ऐसे लोग ख़ुदा तआ़ला के पास बढ़ाते रहेंगे। (39) अल्लाह ही वह है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुमको रिज़्क़ दिया, फिर तुमको मौत देता है, फिर तुमको ज़िन्दा करेगा। क्या तुम्हारे शरीकों में भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ भी कर सके। वह उनके शिर्क से पाक और बरतर है। (40)

कामयाबी हासिल करने वाले ये हैं

क़राबत-दारों (अ़ज़ीज़ों और रिश्तेदारों) के साथ नेकी, सुलूक और सिला-रहमी करने का हुक्म हो रहा है। मिस्कीन उसे कहते हैं जिसके पास कुछ न हो, या कुछ हो लेकिन काफ़ी न हो। उसके साथ भी सुलूक व एहसान करने का हुक्म हो रहा है। मुसाफ़िर जिसका ख़र्च हो गया हो उसके साथ भी भलाई करने का इरशाद होता है। यह उनके लिये बेहतर है जो चाहते हैं कि क़ियामत के दिन दीदारे ख़ुदा करें। हक़ीक़त में इनसान के लिये इससे बड़ी नेमत कोई नहीं दुनिया और आख़िरत में, निजात ऐसे ही लोगों को मिलेगी। इस दूसरी आयत की तफ़सीर में तो इब्ने अ़ब्बास रज़ि., मुजाहिद रह., ज़ह्हाक रह., क़तादा रह., इक्रिमा रह., मुहम्मद बिन कअ़ब रह. और शअ़बी रह. से यह मन्क़ूल है कि जो शख़्स कोई अ़तीया इस इरादे से दे कि लोग उसे उससे ज़्यादा दें तो अगरचे इस इरादे से हदिया देना है तो मुबाह, लेकिन सवाब से ख़ाली है, ख़ुदा के यहाँ उसका बदला कुछ नहीं। मगर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. को इससे भी रोक दिया। इस मायने में यह हुक्म आपके लिये मख़्सूस होगा। इस आयत के मायने भी ऐसे ही हैं:

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ.

यानी ज़्यादती और बदले की नीयत से किसी के साथ एहसान न किया करो।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि सूद (यानी नफ़े) की दो सूरतें हैं एक तो व्यापार तिजारत में ब्याज, यह बिल्कुल हराम है। दूसरा सूद यानी ज़्यादती जिसमें कोई हर्ज नहीं वह किसी को इस इरादे से हदिया तोहफ़ा देना है कि यह मुझे इससे ज़्यादा दे, फिर आपने यह आयत पढ़कर फ़रमाया कि ख़ुदा के पास सवाब तो ज़कात के अदा करने का है। ज़कात देने वालों को बहुत बरकतें हासिल होती हैं। सही हदीस में है कि जो शख़्स एक खजूर भी सदक़े में दे लेकिन हो हलाल तरीक़े से हासिल की हुई तो उसे अल्लाह तआ़ला रहमान व रहीम अपने दायें हाथ में लेता है और उसी तरह पालता और बढ़ाता है जिस तरह तुममें से कोई अपने घोड़े या ऊँट के बच्चे की परवरिश करता है, यहाँ तक कि वही एक खजूर उहुद पहाड़ से भी बड़ी हो जाती है। अल्लाह ही ख़ालिक़ व राज़िक़ है। इनसान अपनी माँ के पेट से नंगा बेइल्म बेकान बेआँख बेताक़त निकलता है, फिर ख़ुदा तआ़ला उसे सब चीज़ें अ़ता फ़रमाता है। माल भी, मिल्कियत भी, कमाई भी, तिजारत भी ग़र्ज़ बेशुमार नेमतें अ़ता फ़रमाता है।

दो सहाबियों का बयान है कि हम हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए उस वक़्त आप किसी काम

Maktaba E Ashraf

में मशग़ूल थे। हमने भी आपका हाथ बटाया। आपने फ़रमाया देखो सर हिलने लगे तब भी रोज़ी से कोई मेहरूम नहीं रहता, इनसान नंगा भूखा दुनिया में आता है एक छिलका भी उसके बदन पर नहीं होता, फिर रब ही उसे रोज़ी देता है। वह इस ज़िन्दगी के बाद तुम्हें मार डालेगा फिर क़ियामत के दिन ज़िन्दा कर देगा। खुदा के सिवा तुम जिन-जिनकी इबादत कर रहे हो उनमें से एक भी इन बातों में से किसी एक पर क़ाबू नहीं रखता। इन कामों में से एक भी कोई नहीं कर सकता। अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ही तन्हा ख़ालिक़ व राज़िक़ और मौत व ज़िन्दगी का मालिक है, वही क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ को जिला देगा। उसकी मुक़द्दस, पाकीज़ा, बड़ाई, इज़्ज़त और जलाल वाली ज़ात इससे पाक है कि कोई उसका शरीक हो, उस जैसा हो, उसके बराबर हो, या उसकी औलाद हो या माँ-बाप हों। वह वाहिद (अकेला) है, समद (सबसे बेनियाज़) है, तन्हा है, माँ-बाप से औलाद से पाक है। उसके बराबर का कोई नहीं।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِى النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِىْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ۝	ख़ुश्की और तरी में लोगों के आमाल के सबब बलाएँ फैल रही हैं, ताकि अल्लाह तआ़ला उनके बाज़ आमाल का मज़ा उनको चखा दे, ताकि वे बाज़ आ जाएँ। (41) आप फ़रमा दीजिए कि मुल्क में चलो-फिरो, फिर देखो कि जो लोग पहले गुज़र चुके हैं उनका अन्जाम कैसा हुआ, उनमें अक्सर मुश्रिक ही थे। (42)

दुनिया फ़साद और तबाही के दहाने पर

मुम्किन है बर्र (यानी ख़ुश्की) से मुराद मैदान और जंगल हों और बह्र (यानी तरी) से मुराद शहर और देहात हों। वरना ज़ाहिर है कि बर्र कहते हैं ख़ुश्की को और बह्र कहते हैं तरी (पानी) को। ख़ुश्की के फ़साद से मुराद बारिश का न होना, पैदावार का न होना, क़हत-साली (सूखे) का आना। तरी के फ़साद से मुराद बारिश का रुक जाना, जिनसे पानी के जानवर अन्धे हो जाते हैं। इनसान का क़त्ल और कश्तियों का ज़बरदस्ती छीन-झपट लेना, यह ख़ुश्की तरी का फ़साद है। 'बह्र' से मुराद जज़ीरे (टापू और द्वीप) और 'बर्र' से मुराद शहर और बस्तियाँ हैं। लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा ज़ाहिर है और इसी की ताईद मुहम्मद बिन इस्हाक़ की इस रिवायत से होती है कि हुज़ूर सल्ल. ने ऐला के बादशाह से सुलह की और उसका बह्र (यानी शहर) उसी के नाम कर दिया। फलों के अनाज का नुक़सान (यानी कमी) दर असल इनसान के गुनाहों की वजह से है। ख़ुदा के नाफ़रमान लोग ज़मीन के बिगाड़ने वाले हैं। आसमान व ज़मीन की इस्लाह (सुधार) ख़ुदा की इबादत व इताअ़त से है।

अबू दाऊद में हदीस है कि ज़मीन पर एक हद (इस्लामी सज़ा) क़ायम होना ज़मीन वालों के हक़ में चालीस दिन की बारिश से बेहतर है। यह इसलिये कि हद के क़ायम होने से मुजरिम गुनाहों से बाज़ रहेंगे, और जब गुनाह न होंगे तो आसमानी और ज़मीनी बरकतें लोगों को हासिल होंगी। चुनाँचे आख़िर ज़माने में

जब हज़रत ईसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम उतरेंगे और इस पाक शरीअ़त के मुताबिक़ फ़ैसले करेंगे जैसे-ख़िन्ज़ीर (सुअर) का क़त्ल, सलीब (ईसाईयों के क्रॉस के निशान) की शिकस्त, जिज़्ये का छोड़ना यानी इस्लाम की क़बूलियत या जंग, फिर जब आपके ज़माने में दज्जाल और उसके मुरीद हलाक हो जायेंगे, याजूज माजूज तबाह हो जायेंगे तो ज़मीन से कहा जायेगा कि अपनी बरकतें लौटा दे। उस दिन एक अनार लोगों की एक बड़ी जमाअ़त को काफ़ी होगा, वह इतना बड़ा होगा कि उसके छिलके के नीचे ये सब साया हासिल कर लें। एक ऊँटनी का दूध एक पूरे क़बीले को किफ़ायत करेगा। ये सारी बरकतें सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्ल. की शरीअ़त के जारी होने की वजह से होंगी। जैसे-जैसे अ़दल व इन्साफ़ शरीअ़ते मुबारक के मुताबिक़ बढ़ेगा वैसे-वैसे ख़ैर व बरकत बढ़ती चली जायेंगी। इसके विपरीत फ़ाजिर (बदकार व गुनाहगार) शख़्स के बारे में हदीस शरीफ़ में है कि उसके मरने पर बन्दे, शहर, दरख़्त और जानवर सब राहत पा लेते हैं। मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल में है कि ज़ियाद के ज़माने में एक थैली पाई गई जिसमें खजूर की बड़ी गुठली जैसे गेहूँ के दाने थे, उसमें लिखा हुआ था कि ये उस ज़माने में उगते थे जिसमें अ़दल व इन्साफ़ को काम में लाया जाता था। ज़ैद बिन असलम रह. से मन्क़ूल है कि मुराद फ़साद से शिर्क है, लेकिन यह क़ौल ग़ौर-तलब है। फिर फ़रमाता है कि माल और पैदावार की और फल अनाज की कमी बतौर आज़माईश के और बतौर उनके बाज़ आमाल के बदले के है। जैसे एक दूसरी जगह है:

وَبَلَوْنٰـهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ.

कि हमने उन्हें भलाईयों और बुराईयों में मुब्तला किया ताकि वे लौट जायें। तुम ज़मीन में चल-फिरकर ख़ुद ही देख लो कि तुम से पहले जो मुश्रिक थे उनके नतीजे और अन्जाम क्या हुए। रसूलों के न मानने और ख़ुदा के साथ कुफ़्र करने का क्या कुछ वबाल उन पर आया। यह देखो और इबरत हासिल करो।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ۝ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ۝ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝

सो तुम अपना रुख़ इस सच्चे दीन की तरफ़ रखो, इससे पहले कि ऐसा दिन आ जाए जिसके वास्ते फिर ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से हटना न होगा। उस दिन सब लोग अलग-अलग हो जाएँगे। (43) जो शख़्स कुफ़्र कर रहा है उस पर तो उसका कुफ़्र पड़ेगा, और जो नेक अ़मल कर रहा है सो ये लोग अपने लिए सामान कर रहे हैं। (44) जिसका हासिल यह होगा कि अल्लाह तआ़ला उन लोगों को अपने फ़ज़्ल से जज़ा देगा जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अ़मल किए। वाक़ई अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को पसन्द नहीं करता है। (45)

सही और मज़बूत दीन

अल्लाह तआ़ला बन्दों को दीन पर जम जाने और मज़बूती से ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी करने की हिदायत करता है, और फ़रमाता है कि मज़बूत दीन की तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जह हो जाओ, इससे पहले कि

क़ियामत का दिन आ जाये। जब उसके आने का ख़ुदाई हुक्म हो चुकेगा फिर उस हुक्म को या उस आने वाली साअ़त (घड़ी) को कोई लौटा नहीं सकता। उस दिन नेक व बद अलग-अलग हो जायेंगे। एक जमाअ़त जन्नत में एक जमाअ़त भड़कती हुई आग में। काफ़िर अपने कुफ़्र के बोझ तले दब रहे होंगे और नेक आमाल वाले लोग अपने किये हुए बेहतरीन आरामदेह ज़ख़ीरे पर ख़ुश व ख़ुर्रम होंगे। रब तआ़ला उन्हें उनकी नेकियों का अज्र (बदला) बहुत कुछ बढ़ा-चढ़ाकर कई-कई गुना करके दे रहा होगा। एक-एक नेकी दस-दस बल्कि सात-सात सौ बल्कि इससे भी ज़्यादा करके उन्हें मिलेगी। कुफ़्फ़ार को ख़ुदा तआ़ला दोस्त नहीं रखता, लेकिन फिर भी उन पर भी ज़ुल्म न होगा।

Maktab-E-Ashraf

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ
وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ
بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ○ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ
رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ
حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ○

और अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से एक यह है कि वह हवाओं को भेजता है कि वे ख़ुशख़बरी देती हैं, और ताकि तुमको अपनी रहमत का मज़ा चखा दे, और ताकि कश्तियाँ उसके हुक्म से चलें और ताकि तुम उसकी रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो। (46) और हमने आपसे पहले बहुत-से पैग़म्बर उनकी क़ौमों के पास भेजे, और वे उनके पास दलीलें लेकर आए। सो हमने उन लोगों से इन्तिक़ाम लिया जिन्होंने जुर्म किए थे, और ईमान वालों को ग़ालिब करना हमारे ज़िम्मे था। (47)

ठंडी हवायें

बारिश आने से पहले भीनी-भीनी हवाओं का चलना और लोगों को बारिश की उम्मीद दिलाना, उसके बाद मींह बरसाना ताकि बस्तियाँ आबाद रहें, जानदार ज़िन्दा रहें, समुद्रों में दरियाओं में जहाज़ और कश्तियाँ चलें। क्योंकि कश्तियों का चलना भी हवा पर मौक़ूफ़ (निर्भर) है। अब तुम अपनी तिजारत और कमाई धन्धे के लिये इधर से उधर जा सको। पस तुम्हें चाहिये कि ख़ुदा तआ़ला की इन बेशुमार और अनगिनत नेमतों पर उसका शुक्र अदा करो। फिर अपने नबी सल्ल. को तस्कीन और तसल्ली देने के लिये फ़रमाता है कि अगर आपको लोग झुठलाते हैं तो आप इसे कोई अनोखी बात न समझें, आपसे पहले के रसूलों को भी उनकी उम्मतों ने बेहूदा-गोई (यानी बकवास बाज़ी और झूठे इल्ज़ामात) से काम लेकर परेशान किया है। वे भी साफ़ रोशन और वाज़ेह दलीलें मोजिज़े और अहकाम लाये थे। आख़िरकार झुठलाने वाले अ़ज़ाब के शिकन्जे में कस दिये गये और मोमिनों को उस वक़्त हर क़िस्म की बुराई से निजात मिली। अपने फ़ज़्ल व करम से ख़ुदा तआ़ला जल्ल शानुहू ने अपनी पाक ज़ात पर यह बात लाज़िम कर ली है कि वह अपने ईमान वाले बन्दों को मदद देगा। जैसे फ़रमान है:

كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ.

Maktab E Ashraf

अल्लाह ने अपनी ज़ात पर रहमत को लाज़िम कर लिया है।

इब्ने अबी हातिम में हदीस है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जो मुसलमान अपने मुसलमान भाई की आबरू बचा ले अल्लाह पर हक़ है कि वह उससे जहन्नम की आग को हटा ले। फिर आपने पढ़ा

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ.

यानी ईमान वालों का ग़ालिब करना और उनकी मदद हमारे ज़िम्मे है।

اَللّٰهُ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ فَتُثِیْرُ سَحَابًا فَیَبْسُطُهٗ فِی السَّمَآءِ کَیْفَ یَشَآءُ وَیَجْعَلُهٗ کِسَفًا فَتَرَی الْوَدْقَ یَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ یَسْتَبْشِرُوْنَ ○ وَاِنْ کَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ یُّنَزَّلَ عَلَیْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِیْنَ ○ فَانْظُرْ اِلٰۤی اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ کَیْفَ یُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ اِنَّ ذٰلِکَ لَمُحْیِ الْمَوْتٰی ۚ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ○ وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِیْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ یَکْفُرُوْنَ ○

अल्लाह तआ़ला ऐसा है कि वह हवाएँ भेजता है, फिर वे बादलों को उठाती हैं, फिर अल्लाह तआ़ला उसको जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है, और उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता है। फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके अन्दर से निकलती है। फिर जब वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे पहुँचा देता है तो बस वे ख़ुशियाँ मनाने लगते हैं। (48) और वे लोग इससे पहले कि उनके ख़ुश होने से पहले उन पर बरसे, नाउम्मीद थे। (49) सो अल्लाह की रहमत के आसार देखो कि अल्लाह तआ़ला ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद किस तरह ज़िन्दा करता है। कुछ शक नहीं कि वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (50) और अगर हम उन पर और हवा चलाएँ, फिर ये लोग खेती को पीली हुई देखें तो ये उसके बाद नाशुक्री करने लगें। (51)

आसमान में तैरते हुए बादल

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि वह हवायें भेजता है जो बादलों को उठाती हैं, या तो समुद्रों पर से या जिस तरह और जहाँ से ख़ुदा का हुक्म हो। फिर रब्बुल-आ़लमीन बादल को आसमान पर फैला देता है, उसे बढ़ा देता है, थोड़े को ज़्यादा कर देता है। तुमने अक्सर देखा होगा कि बालिश्त दो बालिश्त का बादल उठा, फिर जो वह फैला तो आसमान के किनारे ढाँप लिये। और कभी यह भी देखा होगा कि समुद्रों से पानी के भरे बादल उठते हैं। इसी मज़मून को इस आयत में बयान फ़रमाया है:

وَهُوَ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیَاحَ........ الخ

कि वही हवाओं को भेजता है जो ख़ुशख़बरियाँ देती हैं उसके रब की रहमत यानी बारिश की......।

Maktaba Ashraf

फिर उसे टुकड़े-टुकड़े और तह-ब-तह कर देता है। वह पानी से भर जाते हैं। ज़मीन के क़रीब हो जाते हैं फिर बारिश उन बादलों के दरमियान से बरसने लगती है, जहाँ बरसी वहीं के लोग ख़ुश हो गये। फिर फ़रमाता है कि यही लोग बारिश से नाउम्मीद हो चुके थे और पूरी नाउम्मीदी के वक़्त बल्कि नाउम्मीदी के बाद इन पर बारिशें बरसीं और जल-थल हो गये।

बारिश होने से पहले यह उसके मोहताज थे और वह हाजत पूरी हो इससे पहले वक़्त ख़त्म हो जाने के क़रीब बारिश न होने की वजह से मायूस हो चुके थे। फिर उस नाउम्मीदी के बाद अचानक बादल उठता है और बरस जाता है। रेल-पेल कर देता है और उनकी ख़ुश्क ज़मीन तर हो जाती है। क़हत-साली (सूखा) तर-साली से बदल जाती है। या तो ज़मीन साफ़ चटियल मैदान थी या हर तरफ़ हरियाली दिखाई देने लगती है। देख लो कि परवर्दिगारे आ़लम बारिश से किस तरह मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देता है। याद रखो कि जिस रब की यह क़ुदरत तुम देख रहे हो वह एक दिन मुर्दों को उनकी क़ब्रों से भी निकालने वाला है। जबकि उनके जिस्म सड़-गल गये होंगे। समझ लो कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है।

फिर फ़रमाता है कि अगर हम तेज़ हवायें चला दें, अगर आँधियाँ आ जायें और उनकी लहलहाती हुई खेतियाँ ज़र्द हो जायें (यानी पक जायें) तो वे फिर से कुफ़्र करने लग जाते हैं। चुनाँचे सूरः वाक़िआ़ में भी यही बयान हुआ है:

اَفَرَاَيْتُمْ مَّاتَحْرُثُوْنَ. ....مَحْرُوْمُوْنَ الخ

अच्छा फिर यह बतलाओ कि तुम जो कुछ बीज वग़ैरह बोते हो उसको तुम उगाते हो या हम उगाने वाले हैं। अगर हम चाहें तो उस पैदावार को चूरा-चूरा कर दें फिर तो तुम हैरान होकर रह जाओगे कि अब की बार तो हम पर तावान ही पड़ गया बल्कि हम बिल्कुल ही मेहरूम रह गये।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. फ़रमाते हैं कि हवायें आठ क़िस्म की हैं, चार रहमत की चार ज़हमत की। नाशिरात, मुबश्शिरात, मुर्सलात और ज़ारियात तो रहमत की हैं और अ़क़ीम, सर्सर, आ़सिफ़ और क़ासिफ़ अ़ज़ाब की। इनमें पहली दो ख़ुश्कियों की हैं और आख़िरी दो तरी की। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि हवायें दूसरी से मुसख़्ख़र हैं, यानी दूसरी ज़मीन से ताबे हैं। जब अल्लाह तआ़ला ने क़ौमे आ़द वालों की हलाकत का इरादा किया तो हवाओं पर मुसल्लत फ़रिश्ते को यह हुक्म दिया, उसने दरियाफ़्त किया मैं हवाओं के ख़ज़ाने में इतना सुराख़ कर दूँ जितना बैल का नथुना होता है? तो फ़रमाने ख़ुदा हुआ कि नहीं! अगर ऐसा हुआ तो तमाम ज़मीन और ज़मीन की तमाम चीज़ें उलट-पुलट हो जायेंगी। इतना नहीं बल्कि इतना सुराख़ करो जितना अंगूठी में होता है। अब सिर्फ़ इतने से सुराख़ से वह हवा चली जो ज़हाँ पहुँची वहाँ भुस उड़ा दिया, जिस चीज़ पर गुज़री उसे बेनिशान कर दिया। यह हदीस ग़रीब है और इसका मरफ़ूअ़ होना मुन्कर है। ज़्यादा ज़ाहिर यही है कि यह ख़ुद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. का क़ौल है।

सो आप मुर्दों को नहीं सुना सकते, और बहरों को आवाज़ नहीं सुना सकते जबकि वे पीठ फेरकर चल दें। (52) और आप अन्धों को उनकी बेराही से राह पर नहीं ला सकते। आप तो बस उनको सुना सकते हैं जो हमारी आयतों का यक़ीन रखते हैं, फिर वे मानते हैं। (53)	فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ○ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ○

ع ٥ ٨

Maktab E Ashraf

हिदायत व गुमराही

बारी तआला फ़रमाता है कि जिस तरह यह तेरी क़ुदरत से ख़ारिज है कि मुर्दों को जो क़ब्रों में हों तू अपनी आवाज़ सुना सके, और जिस तरह यह नामुम्किन है कि बहरे शख़्स को जबकि वह पीठ फेरे मुँह मोड़े जा रहा हो तू अपनी आवाज़ या बात सुना सके, इसी तरह जो हक़ से अन्धे हों तू उनकी रहबरी हिदायत की तरफ़ नहीं कर सकता। हाँ ख़ुदा तो हर चीज़ पर क़ादिर है, वह जब चाहे मुर्दों को ज़िन्दों की आवाज़ भी सुना सकता है, हिदायत व गुमराही उसी की तरफ़ से है। तू सिर्फ़ उन्हें सुना सकता है जो ईमान वाले हों और ख़ुदा के सामने झुकने वाले हों, उसके फ़रमाँबरदार हों, ये लोग हक़ को सुनते हैं और मानते भी हैं। यह तो हुई हालत मुसलमान की, और इससे पहले जो हालत बयान हुई वह काफ़िर की है। जैसे एक दूसरी आयत में है:

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ......... الخ

तेरी पुकार वही क़बूल करेंगे जो कान धर के (यानी ध्यान से और क़बूल करने की नीयत से) सुनेंगे। मुर्दों को ख़ुदा तआला उठा बैठायेगा। फिर सब उसकी तरफ़ लौटाये जायेंगे।

एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्ल. ने उन मुश्रिकों से जो जंगे बदर में मुसलमानों के हाथों क़त्ल किये गये थे और बदर की खाईयों में उनकी लाशें फेंक दी गई थीं, उनकी मौत के तीन दिन बाद उनसे ख़िताब करके उन्हें डाँटा और ग़ैरत दिलाई। हज़रत उमर रज़ि. ने यह देखकर अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह! आप उनसे ख़िताब करते हैं जो मुर्दा हो गये? आपने फ़रमाया उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम भी मेरी इस बात को जो मैं कह रहा हूँ इतना नहीं सुनते जितना ये सुन रहे हैं। हाँ वे जवाब नहीं दे सकते। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इस वाक़िए को हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. की ज़बानी सुनकर फ़रमाया कि आप सल्ल. ने यूँ फ़रमाया है कि वे अब अच्छी तरह जानते हैं कि जो मैं उनसे कहता था वह हक़ है, फिर आपने मुर्दों के न सुन सकने पर इसी आयत से इस्तिदलाल किया:

اِنَّكَ لَاتُسْمِعُ الْمَوْتٰى.......... الخ

कि आप मुर्दों को नहीं सुना सकते..........।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने उन्हें ज़िन्दा कर दिया था यहाँ तक कि नबी करीम सल्ल. की यह बात उन्होंने सुन ली ताकि उन्हें पूरी नदामत और काफ़ी शर्मसारी हो। लेकिन उलेमा के नज़दीक हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. की रिवायत बिल्कुल सही है, क्योंकि इसकी बहुत सी दलीलें और सुबूत हैं। इब्ने अब्दुल-बर्र ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. से मरफ़ूअ़ एक रिवायत नक़ल की है कि जो शख़्स अपने किसी भाई की क़ब्र के पास से गुज़रता है जिसे यह दुनिया में पहचानता था और सलाम करता है तो अल्लाह तआला उसकी रूह को लौटा देता है, यहाँ तक कि वह जवाब दे।

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ○	अल्लाह ऐसा है जिसने तुमको कमज़ोरी की हालत में बनाया, फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त अ़ता की फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा किया। वह जो चाहता है पैदा करता है, और वह जानने वाला क़ुव्वत रखने वाला है। (54)

Maktab E Ashraf

इनसानी ज़िन्दगी के ये मर्हले

इनसान की तरक़्क़ी व गिरावट पर नज़र डालो, उसकी असल तो मिट्टी से है, फिर नुत्फ़े से, फिर जमे हुए ख़ून से, फिर गोश्त के लोथड़े से, फिर उसे हड्डियाँ पहनाई जाती हैं। फिर हड्डियों पर गोश्त पोस्त पहनाया जाता है। फिर रूह फूँकी जाती है। फिर माँ के पेट से कमज़ोर व नहीफ़ होकर निकलता है। फिर थोड़ा-थोड़ा बढ़ता जाता और मज़बूत होता जाता है। फिर बचपन के ज़माने की बहारें देखता है, फिर जवानी के क़रीब पहुँचता है, फिर जवान होता है। आख़िर ऐसा वक़्त आता है बढ़ोतरी रुक जाती है। अब क़ुवा (इनसानी बदन की क़ुव्वतें, ताक़तें और बदन के हिस्से) फिर कमज़ोर होने शुरू हो जाते हैं। ताक़तें घटने लगती हैं, अधेड़ उम्र को पहुँचता है, फिर बूढ़ा होता है, फिर बिल्कुल बूढ़ा हो जाता है, ताक़त के बाद की यह ना-ताक़ती क़ाबिले इबरत बन जाती है। हिम्मत पस्त है, देखना, सुनना, चलना, फिरना, उठना, बैठना, उचकना, पकड़ना ग़र्ज़ कि हर ताक़त घट जाती है। धीरे-धीरे ताक़तें बिल्कुल जवाब दे जाती हैं और सारी सिफ़तें और हालतें बदल जाती हैं।

बदन पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, गाल पिचक जाते हैं, दाँत टूट जाते हैं, बाल सफ़ेद हो जाते हैं। यह है क़ुव्वत के बाद की ज़ईफ़ी (कमज़ोरी) और बुढ़ापा। वह जो चाहता है करता है। बनाना बिगाड़ना उसकी क़ुदरत के करिश्मे हैं। सारी मख़्लूक़ उसकी ग़ुलाम है और वह सब का मालिक, वह आ़लिम, वह क़ादिर, न उस जैसा किसी का इल्म न उस जैसी किसी की क़ुदरत।

हज़रत अ़तीया औ़फ़ी कहते हैं कि मैंने इस आयत को 'ज़ुअ़्फ़न्' तक हज़रत इब्ने उमर रज़ि. के सामने पढ़ा तो आपने भी इसकी तिलावत की और फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. के सामने इस आयत को इतना ही पढ़ा था कि आप पढ़ने लगे, जिस तरह मैंने तुम्हारी क़िराअत पर क़िराअत (पढ़ना) शुरू कर दी।

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, मुस्नद अहमद)

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ۭ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ○ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۡ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ○ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ○	और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी मुजरिम लोग क़सम खा बैठेंगे कि वे लोग (यानी हम बर्ज़ख़ के मक़ाम में) एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे, इसी तरह ये लोग उल्टे चला करते थे। (55) और जिन लोगों को इल्म और ईमान अ़ता हुआ है, वे कहेंगे कि तुम तो अल्लाह के लिखे हुए के मुवाफ़िक़ क़ियामत के दिन तक रहे हो, सो क़ियामत का दिन यही है, और लेकिन तुम यक़ीन न करते थे। (56) ग़र्ज़ उस दिन ज़ालिमों को उनका उज़्र करना नफ़ा न देगा, और न उनसे ख़ुदा की नाराज़गी की तलाफ़ी चाही जाएगी। (57)

Maktab E Ashraf

क़ियामत की कठिन घड़ी

अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि काफ़िर लोग दुनिया और आख़िरत के कामों से बिल्कुल जाहिल हैं। दुनिया से इनकी जहालत तो यह है कि ख़ुदा के साथ औरों को शरीक करते रहे और आख़िरत में यह जहालत करेंगे कि क़समें खाकर कहेंगे कि हम दुनिया में सिर्फ़ एक साअ़त (घड़ी) ही रहे। इससे मक़सूद इनका यह होगा कि इतनी थोड़ी सी मुद्दत में हम पर कोई हुज्जत क़ायम नहीं हुई, हमें माज़ूर समझा जाये। इसी लिये फ़रमाया कि ये जैसे यहाँ बहकी-बहकी बातें कर रहे हैं, दुनिया में भी ये बहके हुए ही रहे। फ़रमाता है कि इनके इस कहने पर उलेमा-ए-किराम जैसे दुनिया में इन्हें दलीलों से क़ायल करते रहे आख़िरत में भी इनसे कहेंगे कि तुम झूठी क़समें खा रहे हो, तुम किताबुल्लाह यानी आमाल वाली किताब में अपनी पैदाईश से लेकर हश्र व नश्र (यानी क़ियामत) तक ठहरे रहे, लेकिन तुम बेइल्म और जाहिल हो। पस क़ियामत के दिन ज़ालिमों का माज़िरत करना बिल्कुल बेफ़ायदा रहेगा और वे दुनिया की तरफ़ न लौटाये जायेंगे। जैसे फ़रमान है:

وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَاهُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ.

यानी अगर वे दुनिया की तरफ़ लौटना चाहें तो लौट नहीं सकते।

और हमने लोगों के वास्ते इस क़ुरआन में हर तरह के उम्दा मज़ामीन बयान किए हैं। और अगर आप उनके पास कोई निशानी ले आएँ तब भी ये लोग जो काफ़िर हैं यही कहेंगे कि तुम सब ख़ालिस झूठे और अहले बातिल हो। (58) जो लोग यक़ीन नहीं करते अल्लाह तआ़ला उनके दिलों पर यूँ ही मोहर कर दिया करता है। (59) सो आप सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह का वायदा सच्चा है, और ये बद्-यक़ीन लोग आपको बे-बरदाश्त न करने पाएँ। (60)	وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ○ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ○ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ○ ع ۶ ۹

मिसालों के पर्दे

हक़ को हमने इस कलामे पाक में पूरी तरह वाज़ेह कर दिया है और मिसालें देकर समझा दिया है ताकि लोगों पर हक़ खुल जाये और उसकी पैरवी में लग जायें। इनके पास तो कोई भी मोजिज़ा आ जाये, कैसे ही हक़ के निशान को देख लें लेकिन ये तो बिना सोचे और बिना उसकी गहराई को समझे कह देंगे कि यह जादू है, बातिल है, यह झूठ है। देखिये चाँद को दो टुकड़े होते हुए देखते हैं और ईमान नहीं लाते। ख़ुद क़ुरआने करीम की आयत-

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ........ الخ

Maktab E Ashraf

(सूरः यूनुस आयत 96-97)

मैं है कि जिन पर तेरे रब की बात साबित हो चुकी है वे ईमान नहीं लायेंगे। उनके पास तमाम निशानियाँ आ जायें, यहाँ तक कि वे दर्दनाक अ़ज़ाब को अपनी आँखों से देख लें।

पस यहाँ भी फ़रमाता है कि बेइल्म लोगों के दिलों पर इसी तरह अल्लाह की मोहर लग जाती है, ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! आप सब्र कीजिये। उनकी मुख़ालफ़त और दुश्मनी पर सब्र किये चले जाईये। अल्लाह का वायदा सच्चा है, वह ज़रूर तुम्हें एक दिन उन पर ग़ालिब करेगा और तुम्हारी इमदाद करेगा, और दुनिया व आख़िरत में तुम्हें और तुम्हारे ताबेदारों को मुख़ालिफ़ों पर ग़लबा देगा। तुम्हें चाहिये कि अपने काम पर लगे रहो, हक़ पर जम जाओ, उससे एक इंच इधर-उधर न हटो, उसी में सारी हिदायत है बाक़ी सब बातिल के ढेर हैं। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ली रज़ि. एक मर्तबा सुबह की नमाज़ में थे कि एक ख़ारजी ने आपका नाम लेकर ज़ोर से इस आयत की तिलावत कीः

وَلَقَدْ اُوْحِیَ اِلَیْكَ وَاِلَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَیَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ.

(सूरः जुमर आयत 65)

आपने ख़ामोशी से इस आयत को सुना, समझा और नमाज़ ही में इसके जवाब में यह आयत पढ़ीः

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا یَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِیْنَ لَا یُوْقِنُوْنَ.

यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है। (इब्ने जरीर इब्ने अबी हातिम)

वह हदीस जिससे इस मुबारक सूरत की फ़ज़ीलत और इसकी क़िराअत का सुबह की नमाज़ में मुस्तहब होना साबित होता है यह है, एक सहाबी रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने एक दिन सुबह की नमाज़ पढ़ाते हुए इसी सूरत की क़िराअत की। क़िराअत (क़ुरआन पढ़ने) के दौरान में आपको शुब्हा हो गया, फ़ारिग़ होकर फ़रमाने लगे तुम में बाज़ ऐसे लोग भी हैं जो हमारे साथ नमाज़ में शामिल हो जाते हैं लेकिन बाक़ायदा (यानी अच्छी तरह एहतियात से) वुज़ू नहीं करते। तुममें से जो भी हमारे साथ नमाज़ में शामिल हो उसे अच्छी तरह वुज़ू करना चाहिये। (मुस्नद अहमद)

इसकी सनद हसन है, मतन भी हसन है और इसमें अ़जीब भेद और बहुत बड़ी ख़बर है, और वह यह कि आपके मुक़्तदियों के वुज़ू बिल्कुल दुरुस्त न होने का असर आप पर भी पड़ा। पस साबित हुआ कि मुक़्तदियों की नमाज़ मुअ़ल्लक़ (लटकी हुई) है इमाम की नमाज़ के साथ।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि सूरः रोम की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः लुक़मान

सूरः लुक़मान मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 34 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

الٓمّٓ ○ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ○ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ○ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ○ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○	अलिफ़्-लाम्-मीम्। (1) ये आयतें एक हिक्मत से भरी किताब की हैं। (2) जो कि हिदायत और रहमत है नेक काम करने वालों के लिए। (3) जो नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, और वे लोग आख़िरत का पूरा यक़ीन रखते हैं। (4) ये लोग अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं, और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (5)

नेक काम करने वालों की जमाअ़त

सूरः ब-क़रह की तफ़सीर के शुरू में हुरूफ़े मुक़त्तआ़त के मायने और मतलब की वज़ाहत कर दी गई है। यह क़ुरआन हिदायत, शिफ़ा और रहमत है, उन नेक काम करने वालों के लिये जो शरीअ़त के पूरे पाबन्द हैं। नमाज़ें अदा करते हैं, नमाज़ के अरकान और उसके वक़्तों वग़ैरह की हिफ़ाज़त के साथ-साथ ही नवाफ़िल सुन्नत वग़ैरह भी नहीं छोड़ते। फ़र्ज़ ज़कात अदा करते हैं। सिला-रहमी, सुलूक व एहसान, सख़ावत और दान-पुन करते रहते हैं। आख़िरत की जज़ा (बदले) का उन्हें पूरा यक़ीन है, इसलिये ख़ुदा की तरफ़ पूरी रग़बत (तवज्जोह और दिलचस्पी) करते हैं। सवाब के काम करते हैं और ख़ुदा तआ़ला के अज्र पर नज़र रखते हैं। न रियाकारी करते हैं न लोगों से दाद चाहते हैं। इन सिफ़तों वाले सही राह पाने वाले हैं, राहे ख़ुदा पर लगा दिये गये हैं और यही वे लोग हैं जो दीन व दुनिया में फ़लाह, निजात और कामयाबी हासिल करेंगे।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِىْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ	और बाज़ा आदमी ऐसा (भी) है जो उन बातों का ख़रीदार बनता है जो (अल्लाह से) ग़ाफ़िल करने वाली हैं, ताकि अल्लाह की राह से बेसमझे-बूझे गुमराह कर ले और उसकी हंसी उड़ाए, ऐसे लोगों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब

है। (6) और जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह शख़्स तकब्बुर करता हुआ मुँह मोड़ लेता है, जैसे उसने सुना ही नहीं। जैसे उसके कानों में भारीपन "यानी डाट" है, सो उसको एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दीजिए। (7)	مُّهِيْنٌ ٥ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ٥

Mahtab E Ashraf

बेहक़ीक़त दास्तान

ऊपर नेकबख़्तों का बयान हुआ था जो किताबुल्लाह से हिदायत पाते थे और इसे सुनकर नफ़ा उठाते थे। यहाँ बयान हो रहा है उन बदबख़्तों का जो कलामुल्लाह को सुनकर नफ़ा हासिल करने से मेहरूम रहते हैं और बजाय इसके गाने-बजाने बाजे-गाजे ढोल-तमाशे सुनते हैं। चुनाँचे इस आयत की तफ़सीर में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं- क़सम ख़ुदा की इससे मुराद गाने और राग है। एक और आयत में है कि आपसे इस आयत का मतलब पूछा गया तो आपने तीन दफ़ा क़सम खाकर फ़रमाया कि इससे मक़सद गाना और राग-रागनियाँ हैं। यही क़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि., हज़रत जाबिर, हज़रत इक्रिमा, सईद बिन जुबैर, मुजाहिद, मिक्होल, अ़मर बिन शुऐब, अ़ली बिन बुज़ैमा रह. का है। इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत गाने-बजाने बाजों-गाजों के बारे में उतरी है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद सिर्फ़ वही नहीं जो इस खेल-तमाशे में पैसे ख़र्च करते हैं, यहाँ मुराद ख़रीदने से महबूब रखना और पसन्द करना है। इनसान को यही गुमराही काफ़ी है कि वह बातिल की बात को पसन्द करे और नुक़सान की चीज़ को नफ़े की बात पर आगे रखे। एक क़ौल यह भी है कि बेहूदा और बेकार चीज़ें ख़रीदने से मुराद गाने वाली बाँदि की ख़रीदारी है। चुनाँचे इब्ने अबी हातिम वग़ैरह में रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि गाने वालियों की ख़रीद व फ़रोख़्त हलाल नहीं, और उनकी क़ीमत खाना हराम है। उन्हीं के बारे में यह आयत उतरी है।

इमाम तिर्मिज़ी रह. भी इस हदीस को लाये हैं और इसे ग़रीब कहा है। इसके एक रावी अ़ली बिन यज़ीद को ज़ईफ़ कहा है। मैं कहता हूँ कि ख़ुद अ़ली, उनके उस्ताद और उनके तमाम शागिर्द ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं। वल्लाहु आलम।

इमाम ज़स्हाक रह. का क़ौल है कि इससे मुराद शिर्क है। इमाम इब्ने जरीर रह. का फ़ैसला यह है कि हर वह कलाम जो कलामुल्लाह से और शरीअ़त की पैरवी से रोके वह इस आयत के हुक्म में दाख़िल है। इससे उसकी ग़र्ज़ इस्लाम और मुसलमानों की मुख़ालफ़त होती है। ऐसे लोग ख़ुदा की राह को हंसी बना लेते हैं, अल्लाह की आयतों को भी मज़ाक़ में उड़ाते हैं।

अब उनका अन्जाम भी सुन लो कि जिस तरह उन्होंने राहे ख़ुदा की, अल्लाह की किताब की तौहीन व अपमान किया क़ियामत के दिन उनकी तौहीन होगी और ख़तरनाक अ़ज़ाब में ज़लील व रुस्वा होंगे। फिर बयान हो रहा है कि यह बदनसीब जो खेल-तमाशों बाजों-गाजों पर राग-रागनियों पर रीझा हुआ है, यह क़ुरआन की आयतों से भागता है, उनसे कान बेहरे कर लेता है, ये इसे अच्छी मालूम नहीं होतीं, सुन भी लेता है तो अनसुनी कर देता है, बल्कि उनका सुनना इसे नागवार गुज़रता है, कोई मज़ा नहीं आता। वह

फ़ुज़ूल काम करार देता है, चूँकि उसकी कोई अहमियत और इज़्ज़त इसके दिल में नहीं, इसलिये वह उनसे कोई नफ़ा हासिल नहीं कर सकता। वह तो उनसे बिल्कुल बेपरवाह है। ख़ैर यहाँ ख़ुदा की आयतों से उकताता है तो क़ियामत के दिन अ़ज़ाब भी ऐसे होंगे कि उकता उठेगा, यहाँ क़ुरआन की आयतें सुनकर इसे दुख होता है तो वहाँ दुख देने वाले अ़ज़ाब इसे भुगतने पड़ेंगे।

Maktaba Ashraf

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ لَهُمْ جَنَّٰتُ النَّعِيمِ ۝ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝	लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनके लिए ऐश की जन्नतें हैं। (8) जिनमें वे हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह ने सच्चा वायदा फ़रमाया है और वह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (9)

ईमान और नेक आमाल

नेक लोगों का अन्जाम बयान हो रहा है कि जो ख़ुदा पर ईमान लाये, रसूल को मानते रहे, शरीअ़त की मातहती में काम करते रहे, उनके लिये जन्नतें हैं, जिनमें तरह-तरह की नेमतें, मज़ेदार ग़िज़ायें, बेहतरीन पोशाक, उम्दा-उम्दा सवारियाँ, पाकीज़ा नूरानी चेहरे वाली बीवियाँ हैं। वहाँ उन्हें और उनकी नेमतों को हमेशगी है, कभी ज़वाल (ख़ात्मा) नहीं। न तो ये मरेंगे न इनकी नेमतें फ़ना होंगी, न कम होंगी न ख़राब होंगी। यह निश्चित और यक़ीनी तौर पर होने वाला है, क्योंकि ख़ुदा फ़रमा चुका है, और रब की बातें बदलती नहीं, उसके वायदे टलते नहीं। वह करीम है, इनाम व एहसान करने वाला और नेमतें देने वाला है, जो चाहे कर सकता है, हर चीज़ पर क़ादिर है। अ़ज़ीज़ (ग़ालिब) है, सब कुछ उसके क़ब्ज़े में है। हकीम है कोई काम कोई बात कोई फ़ैसला हिक्मत से ख़ाली नहीं। उसने क़ुरआने करीम को मोमिनों के लिये हादी (सही रास्ते की तरफ़ रहनुमा) और शाफ़ी (शिफ़ा देने वाला) बनाया है। हाँ बेईमानों के कानों में बोझ हैं और आँखों में अंधापन है। एक और आयत में है:

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ.

यानी जो क़ुरआन हमने नाज़िल फ़रमाया है वह मोमिनों के लिये शिफ़ा और रहमत है, और ज़ालिम तो नुक़सान में ही बढ़ते हैं।

خَلَقَ السَّمَٰوَٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَٰسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَآبَّةٍ ۚ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَنۢبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ هَٰذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي	अल्लाह तआ़ला ने आसमानों को बिना सुतून के बनाया, तुम उनको देख रहे हो। और ज़मीन में पहाड़ डाल रखे हैं कि वह तुमको लेकर डावाँ-डोल न होने लगे, और उसमें हर क़िस्म के जानवर फैला रखे हैं। और हमने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस ज़मीन में हर तरह की उम्दा क़िस्में उगाईं। (10) ये तो अल्लाह की बनाई हुई चीज़ें हैं, अब तुम मुझको

Maktab E Ashraf

مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝	दिखाओ कि उसके सिवा जो हैं उन्होंने क्या-क्या चीज़ें पैदा कीं, बल्कि ये ज़ालिम लोग खुली गुमराही में हैं। (11)

ع ۱۰

बिना सुतून के रुका हुआ यह आसमान

अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला अपनी क़ुदरते कामिला का बयान फ़रमाता है कि ज़मीन व आसमान और सारी मख़्लूक़ का ख़ालिक़ सिर्फ़ वही है, आसमान को उसने बिना सुतून के ऊँचा कर रखा है। वास्तव में कोई सुतून है ही नहीं। अगरचे मुजाहिद रह. का यह क़ौल भी है कि सुतून हमें नज़र नहीं आते, इस मसले का पूरा फ़ैसला सूरः रअ़द की तफ़सीर में लिख चुका हूँ इसलिये यहाँ दोहराने की कोई ज़रूरत नहीं। ज़मीन को मज़बूत करने के लिये और हिलने-जुलने से बचाने के लिये उसने पहाड़ों की मेख़ें (कीलें) गाड़ दीं ताकि वह तुम्हें ज़लज़ले और जुंबिश से बचा ले। इस क़द्र क़िस्म-क़िस्म के तरह-तरह के जानदार उस ख़ालिक़े हक़ीक़ी ने पैदा किये कि आज तक उनको कोई अपने इल्मी इहाते (यानी ज्ञान) में नहीं ला सका।

अपना ख़ालिक़ और ख़ल्लाक़ (यानी पैदा करने और बनाने वाला) होना बयान फ़रमाकर अब राज़िक़ और रज़्ज़ाक़ (रोज़ी देने वाला) होना बयान फ़रमा रहा है कि आसमान से बारिश उतार कर ज़मीन में से तरह-तरह की पैदावार उगा दी, जो देखने में भली, खाने में बे-ज़रर, नफ़े में बहुत-बहुत हैं। इमाम शअ़बी रह. का क़ौल है कि इनसान भी ज़मीन की पैदावार है। जन्नती करीम (इज़्ज़त वाले और सम्मानित) हैं और दोज़ख़ी बदबख़्त हैं। अल्लाह की ये सारी मख़्लूक़ तो तुम्हारे सामने है, अब जिन्हें तुम उसके सिवा पूजते हो ज़रा बताओ तो उनकी मख़्लूक़ (पैदा की हुई चीज़ें और कायनात) कहाँ है? जब नहीं तो वे ख़ालिक़ (यानी किसी चीज़ के बनाने और पैदा करने वाले) नहीं, और जब ख़ालिक़ नहीं तो माबूद नहीं। फिर उनकी इबादत ज़ुल्म और सख़्त नाइन्साफ़ी है। वास्तव में ख़ुदा के साथ शिर्क करने वालों से ज़्यादा अन्धा बेहरा बेअ़क़्ल बेइल्म बेसमझ बेवक़ूफ़ और कौन होता है?

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝	**और हमने लुक़मान को दानिशमन्दी "यानी ख़ुसूसी अ़क्ल व समझ" अ़ता फ़रमाई, कि अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करते रहो और जो शख़्स शुक्र करेगा वह अपने ज़ाती नफ़े के लिए शुक्र करता है, और जो नाशुक्री करेगा तो अल्लाह बेनियाज़, ख़ूबियों वाला है। (12)**

हज़रत लुक़मान अ़लैहिस्सलाम की दानिशमन्दी

पहले उलेमा और बुज़ुर्गों का इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि हज़रत लुक़मान नबी थे या न थे? अक्सर हज़रात फ़रमाते हैं कि आप नबी न थे बल्कि ख़ुदा के एक नेक बन्दे और वली तथा ख़ुदा के बुज़ुर्ग बन्दे थे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से नक़ल है कि आप हब्शी गुलाम और बढ़ई थे। हज़रत जाबिर रज़ि. से जब सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया हज़रत लुक़मान छोटे क़द के ऊँची नाक वाले मोटे होंठ वाले नोबी थे (नोबा

एक स्थान था मिस्र में)। सईद बिन मुसैयब रह. फ़रमाते हैं कि आप मिस्र के रहने वाले हब्शी थे। हिक्मत (समझ व ज्ञान) आपको अ़ता हुई थी लेकिन नुबुव्वत नहीं मिली थी। आपने एक काले रंग के ग़ुलाम हब्शी से फ़रमाया कि अपनी रंगत की वजह से अपने आपको हक़ीर (घटिया और मामूली) न समझ, तीन शख़्स जो तमाम लोगों से अच्छे थे तीनों काले रंग के थे। हज़रत बिलाल रज़ि. जो हुज़ूरे पाक सल्ल. के ग़ुलाम थे। हज़रत महजा जो हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. के ग़ुलाम थे और हज़रत लुक़मान हकीम जो हब्शा के नाबिया थे। हज़रत ख़ालिद रबई़ रह. का क़ौल है कि हज़रत लुक़मान जो हब्शी बढ़ई थे उनसे एक रोज़ उनके मालिक ने कहा कि बकरी ज़िबह करो और उसके दो बेहतरीन और नफ़ीस टुकड़े गोश्त के मेरे पास लाओ। वह दिल और ज़बान ले गये, कुछ दिनों बाद फिर उनके आक़ा ने यही हुक्म दिया और कहा कि आज उसके सारे गोश्त में से जो बदतरीन (ख़राब और बुरे) टुकड़े हों वे लाओ। आप आज भी यही दो चीज़ें ले गये। मालिक ने पूछा इसकी क्या वजह है कि बेहतरीन टुकड़े तुझसे माँगे तो तू यही लाया और बदतरीन टुकड़े माँगे तो तूने यही ला दिये। यह क्या बात है? आपने फ़रमाया ये अच्छे रहें तो इनसे बेहतर जिस्म का कोई हिस्सा नहीं, और जब ये बुरे बन जायें तो फिर सबसे बुरे भी यही हैं।

हज़रत मुजाहिद रह. का क़ौल है कि हज़रत लुक़मान नबी न थे, नेक बन्दे थे, सियाह-फ़ाम (काले रंग के) ग़ुलाम थे, मोटे होंठों वाले और भरे क़दमों वाले। एक और बुज़ुर्ग से यह भी मन्क़ूल है कि बनी इस्राईल के क़ाज़ी थे, और यह भी क़ौल है कि आप हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में थे। एक मर्तबा आप किसी मज्लिस में वअ़ज़ (दीनी बयान और नसीहत की बातें) फ़रमा रहे थे कि एक चरवाहे ने आपको देखकर कहा- क्या तू वही नहीं है जो मेरे साथ फ़ुलाँ-फ़ुलाँ जगह बकरियाँ चराया करता था? आपने फ़रमाया हाँ मैं वही हूँ। उसने कहा फिर तुझे यह मर्तबा कैसे हासिल हुआ? फ़रमाया सच बोलने और बेकार कलाम न करने की वजह से। एक और रिवायत में है कि आपने अपनी बुलन्दी (ऊँचे रुतबे पर पहुँचने) की वजह यह बयान की कि अल्लाह का फ़ज़्ल और अमानत की अदायेगी और कलाम की सच्चाई और बेफ़ायदा कामों को छोड़ देना। ग़र्ज़ यह कि ऐसे ही अक़्वाल और रिवायतें साफ़ हैं कि आप नबी न थे लेकिन उनमें भी आपका ग़ुलाम होना बयान किया गया है जो सुबूत है इस बात का कि आप नबी न थे, क्योंकि ग़ुलामी नुबुव्वत के ख़िलाफ़ है। अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ऊँचे नसब व ख़ानदान वाले हुआ करते थे, इसलिये जमहूर उलेमा का क़ौल है कि हज़रत लुक़मान नबी न थे। हज़रत इक्रिमा रह. से नक़ल है कि आप नबी थे मगर यह भी जबकि सनद से साबित हो जाये, लेकिन इसकी सनद में जाबिर बिन यज़ीद जोअ़फ़ी हैं जो ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं। वल्लाहु आलम।

कहते हैं कि हज़रत लुक़मान हकीम से एक शख़्स ने कहा क्या तू बनी हस्हास का ग़ुलाम नहीं? आपने फ़रमाया हाँ हूँ। उसने कहा क्या तू बकरियों का चरवाहा नहीं? आपने फ़रमाया हाँ हूँ। कहा क्या तू सियाह रंग का (यानी हब्शी) नहीं? आपने फ़रमाया ज़ाहिर है सियाह रंग का हूँ। तुम यह बतलाओ कि तुम क्या पूछना चाहते हो? उसने कहा यही कि फिर क्या वजह है कि तेरी मज्लिस भरी रहती है, लोग तेरे दरवाज़े पर आते रहते हैं और तेरी बातें बड़े शौक़ से सुनते हैं? आपने फ़रमाया सुनो भाई! जो तुम्हें कहता हूँ उन पर अ़मल कर लो तुम भी मेरे जैसे हो जाओगे। आँखें हराम चीज़ों से बन्द कर लो, ज़बान बेहूदा बातों से रोक लो, माल हलाल खाया करो, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करो, ज़बान से सच बात बोला करो, वायदे को पूरा किया करो, जहान की इज़्ज़त करो, पड़ोसी का ख़्याल रखो, बेफ़ायदा कामों को छोड़ दो। इन्हीं बातों की वजह से मेरी बुज़ुर्गी हुई (यानी यह रुतबा और सम्मान मुझे मिला) है।

Maktab E Ashraf

हज़रत अबू दर्दा रज़ि. फ़रमाते हैं- हज़रत लुक़मान हकीम किसी बड़े घराने के अमीर और बहुत ज़्यादा कुनबे वाले न थे, हाँ उनमें बहुत सी भली आदतें थीं। वह अच्छे अख़्लाक़ वाले, ख़ामोश रहने वाले, ग़ौर व फ़िक्र करने वाले, गहरी नज़र वाले, दिन को न सोने वाले थे। लोगों के सामने थूकते न थे, न पाख़ाना पेशाब और ग़ुस्ल करते थे। बेहूदा और बेकार कामों से दूर रहते थे, हंसते न थे। जो कलाम करते थे हिक्मत (समझ व दानिश) से ख़ाली न होता था। जिस वक़्त उनकी औलाद फ़ौत हुई (यानी इन्तिक़ाल हुआ) यह बिल्कुल न रोये। वह बादशाहों अमीरों के पास इसलिये जाते थे कि ग़ौर व फ़िक्र और इबरत व नसीहत हासिल करें, इसी वजह से उन्हें बुज़ुर्गी मिली।

हज़रत क़तादा रह. से एक अजीब बात नक़ल की गयी है कि हज़रत लुक़मान को हिक्मत (समझ व दानिशमन्दी) और नुबुव्वत के क़बूल करने में इख़्तियार दिया गया तो आपने हिक्मत क़बूल फ़रमाई। रातों रात उन पर हिक्मत बरसा दी गई और उनके अन्दर हिक्मत भर दी गई। सुबह को उनकी बातें और उनकी आदतें सब हकीमाना हो गईं। आपसे सवाल हुआ कि आपने नुबुव्वत के मुक़ाबले में हिक्मत कैसे इख़्तियार की? जवाब दिया कि अगर ख़ुदा मुझे नबी बना देता तो और बात थी, मुम्किन था कि नुबुव्वत का ओहदा और ज़िम्मेदारी निभा जाता। लेकिन जब मुझे इख़्तियार दिया गया तो मुझे डर लगा कि कहीं ऐसा न हो कि मैं नुबुव्वत का बोझ बरदाश्त न कर सकूँ इसलिये मैंने हिक्मत ही को पसन्द किया। इस रिवायत के एक रावी सईद बिन बशीर हैं जिनमें कमज़ोरी है। वल्लाहु आलम।

हज़रत क़तादा रह. इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि हिक्मत से मुराद इस्लाम की समझ है। हज़रत लुक़मान नबी न थे, न उन पर 'वही' आती थी। पस समझ और इबरत मुराद है। हमने उन्हें अपना शुक्र बजा लाने का हुक्म फ़रमाया था कि मैंने तुझे जो इल्म व अक़्ल दी है और दूसरों पर जो बुज़ुर्गी अता फ़रमाई है उस पर तू मेरी शुक्रगुज़ारी कर। शुक्रगुज़ार कुछ मुझ पर एहसान नहीं करता वह अपना ही भला करता है। जैसे एक दूसरी आयत में है:

وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ.

नेकी वाले अपने लिये ही भलाई तैयार करते हैं।

यहाँ फ़रमान है कि अगर कोई नाशुक्री करे तो ख़ुदा को उसकी नाशुक्री कोई ज़रर (नुक़सान) नहीं पहुँचाती, वह अपने बन्दों से बेपरवाह है, सब उसके मोहताज हैं, वह सब से बेनियाज़ है। सारी ज़मीन वाले भी अगर काफ़िर हो जायें तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। वह सब से ग़नी (बेपरवाह) है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, हम उसके सिवा किसी और की इबादत नहीं करते।

और जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि बेटा ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न ठहराना, बेशक शिर्क करना बड़ा भारी ज़ुल्म है। (13) और हमने इनसान को उसके माँ-बाप के बारे में ताकीद की है। उसकी माँ ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी उठाकर उसको पेट में रखा और दो साल में उसका दूध	وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ○ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ

Maktaba-e-Ashraf

اشْكُرْ لِىْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَىَّ الْمَصِيْرُ ○
وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِىْ مَا لَيْسَ
لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا
فِى الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ز وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ
اَنَابَ اِلَىَّ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○

छूटता है, कि तू मेरी और अपने माँ-बाप की शुक्रगुज़ारी किया कर, मेरी ही तरफ़ लौटकर आना है। (14) और अगर तुझ पर वे दोनों इस बात का ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज़ को शरीक ठहराए जिसकी तेरे पास कोई दलील न हो, तो तू उनका कहना न मानना, और दुनिया में उनके साथ अच्छाई से बसर करना, और उसी की राह पर चलना जो मेरी तरफ़ रुजू हो। फिर तुम सबको मेरे पास आना है, फिर मैं तुमको जतला दूँगा जो कुछ तुम करते थे। (15)

बेहतरीन और दिल को छूने वाली नसीहतें

हज़रत लुक़मान रह. ने अपने बेटे को जो नसीहत व वसीयत की थी उसका बयान हो रहा है। यह लुक़मान बिन उनक़ा बिन सदून थे, उनके लड़के का नाम सुहैली के बयान के मुताबिक़ सारान है। अल्लाह तआ़ला ने उनका ज़िक्र अच्छाई से किया है और यह फ़रमाया है कि उन्हें हिक्मत अ़ता फ़रमाई गई थी। उन्होंने जो बेहतरीन वअ़ज़ (नसीहत की बातें) अपने लड़के को सुनाया था और मुफ़ीद ज़रूरी और उम्दा नसीहतें उन्हें की थीं उनका ज़िक्र हो रहा है। ज़ाहिर है कि औलाद से ज़्यादा अ़ज़ीज़ (प्यारी) चीज़ इनसान को और कोई नहीं होती, और इनसान अपनी बेहतरीन और अनमोल चीज़ औलाद को अ़ता कर देना चाहता है, तो सबसे पहले यह नसीहत की कि सिर्फ़ ख़ुदा की इबादत करना, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराना। याद रखो कि इससे बड़ी बेहयाई, इससे ज़्यादा बुरा काम और कोई नहीं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से सही बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत है कि जब आयतः

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ......... الخ

जो लोग ईमान रखते हैं और अपने ईमान को शिर्क के साथ नहीं मिलाते ऐसों ही के लिये अमन है और वही राह पर (चल रहे) हैं। (सूरः अन्आ़म आयत 82)

उतरी तो रसूले पाक के सहाबा पर बड़ी मुश्किल आ पड़ी और उन्होंने हुज़ूर सल्ल. से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! हममें से वह कौन है जिसने कोई गुनाह किया ही न हो? एक दूसरी आयत में है कि ईमान को जिन्होंने ज़ुल्म से नहीं मिलाया वही अमन वाले और सही राह वाले हैं। तो आपने फ़रमाया ज़ुल्म से मुराद आ़म गुनाह नहीं बल्कि ज़ुल्म से मुराद वह ज़ुल्म है जो हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए फ़रमाया था कि बेटा ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न ठहराना, यह बड़ा भारी ज़ुल्म है।

इस पहली वसीयत के बाद हज़रत लुक़मान रह. दूसरी वसीयत करते हैं और वह भी दर्जे और ताकीद के लिहाज़ से वाक़ई ऐसी ही है कि इस पहली वसीयत से मिलाई जाये। यानी माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक व एहसान करना। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا........ الخ

Maktaba Ashraf

यानी तेरा रब यह फ़ैसला फ़रमा चुका है कि सिवाय उसके किसी और की तुम इबादत न करो, और माँ-बाप के साथ सुलूक व एहसान करते रहो। उमूमन क़ुरआने करीम में इन दोनों चीज़ों का बयान एक साथ है, यहाँ भी इस तरह है। 'वह्नुन' के मायने मशक़्क़त, तकलीफ़, कमज़ोरी वग़ैरह के हैं। एक तकलीफ़ तो हमल (गर्भ) की होती है जिसे माँ बरदाश्त करती है। गर्भ की हालत के दुख-दर्द की हालत सब को मालूम है। फिर दो साल तक उसे दूध पिलाती रहती और उसकी परवरिश में लगी रहती है। चुनाँचे एक दूसरी आयत में है:

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ...... الخ

यानी जो लोग अपनी औलाद को पूरा-पूरा दूध पिलाना चाहें उनके लिये आख़िरी, इन्तिहाई मियाद यह है कि पूरे दो साल तक उन बच्चों को उनकी माँयें अपना दूध पिलाती रहें। चूँकि एक और आयत में फ़रमाया गया है:

وَحَمْلُهٗ وَفِصَالُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا.

यानी गर्भ की मुद्दत और दूध चटाई कुल तीस माह है। इसलिये हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और दूसरे बड़े-बड़े इमामों ने इस्तिदलाल किया है कि हमल (गर्भ) की कम से कम मुद्दत छह महीने है। माँ की इस तकलीफ़ को औलाद के सामने इसलिये ज़ाहिर किया जाता है कि औलाद अपनी माँ की इन मेहरबानियों को याद करके शुक्रगुज़ारी, इताअ़त और एहसान करे। जैसे एक और आयत में अल्लाह का फ़रमान है:

وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا.

हमसे दुआ करो और कहो कि ऐ मेरे सच्चे परवर्दिगार! मेरे माँ-बाप पर इस तरह रहम व करम फ़रमा जिस तरह मेरे बचपन में वे मुझ पर रहम व करम किया करते थे।

यहाँ फ़रमाया ताकि तू मेरा और अपने माँ-बाप का एहसान मानने वाला हो। सुन ले आख़िरी लौटना मेरी ही तरफ़ है। अगर मेरी इस बात को मान लिया तो भरपूर जज़ा (बदला और अज्र) दूँगा। इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. को रसूलुल्लाह सल्ल. ने अमीर (हाकिम) बनाकर भेजा तो आपने वहाँ पहुँचकर सबसे पहले खड़े होकर ख़ुतबा पढ़ा जिसमें अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ व सना के बाद फ़रमाया- मैं तुम्हारी तरफ़ रसूलुल्लाह सल्ल. का भेजा हुआ आया हूँ। यह पैग़ाम लेकर कि तुम एक अल्लाह ही की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न करो, मेरी बातें मानते रहो, मैं तुम्हारी ख़ैरख़्वाही (हमदर्दी और भला चाहने) में कोताही नहीं करूँगा। सब को लौटकर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ जाना है। फिर या तो जन्नत मकान बनेगी या जहन्नम ठिकाना होगा। फिर वहाँ से न निकल सकोगे न मौत आयेगी (मतलब यह कि किसी भी तरह अ़ज़ाब से छुटकारा न होगा)।

फिर फ़रमाता है कि अगर तुम्हारे माँ-बाप तुम्हें इस्लाम के सिवा कोई और दीन क़बूल करने को कहें तो चाहे वे पूरी की पूरी ताक़त ख़र्च कर डालें ख़बरदार! तुम उनकी मान कर मेरे साथ हरगिज़ शिर्क न करना। लेकिन इससे यह मतलब नहीं कि तुम उनके साथ सुलूक व एहसान करना भी छोड़ दो, नहीं! दुनियावी हुक़ूक़ जो तुम्हारे ज़िम्मे उनके हैं उनको अदा करते रहो। ऐसी बातें उनकी न मानो बल्कि उनकी ताबेदारी करो जो मेरी तरफ़ रुजू हो चुके हैं। सुन लो तुम सब लौटकर एक दिन मेरे सामने आने वाले हो, उस दिन मैं तुम्हें तुम्हारे आमाल की ख़बर दूँगा।

इमाम तबरानी रह. की किताब 'अल-अ़शरा' में है, हज़रत सअ़द बिन मालिक रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह

आयत मेरे बारे में नाज़िल हुई है। मैं अपनी माँ की बहुत ख़िदमत किया करता था और उनका पूरा इताअ़त-गुज़ार (आज्ञाकारी) था। जब मुझे ख़ुदा ने इस्लाम की तरफ़ हिदायत की तो मेरी वालिदा मुझ पर बहुत बिगड़ीं और कहने लगीं बेटा! यह नया दीन तू कहाँ से निकाल लाया? सुनो मैं तुम्हें हुक्म देती हूँ कि इस दीन से अलग हो जाओ वरना मैं न खाऊँगी न पियूँगी और यूँ ही भूखी मर जाऊँगी। मैंने इस्लाम को न छोड़ा, मेरी माँ ने खाना-पीना छोड़ दिया और हर तरफ़ से मुझ पर लोगों के ताने बरसने लगे कि यह अपनी माँ का क़ातिल है। मैं बहुत ही तंगदिल और परेशान हुआ, अपनी वालिदा की ख़िदमत में बार-बार अ़र्ज़ किया, ख़ुशामदें कीं, समझाया कि ख़ुदा के लिये अपनी ज़िद से बाज़ आ आजो, यह तो नामुम्किन है कि मैं इस सच्चे दीन को छोड़ दूँ। इसी कश्मकश (दुविधा और असमंजस की हालत) में मेरी वालिदा पर तीन दिन का फ़ाक़ा गुज़र गया और उनकी हालत बहुत ही ख़राब हो गई तो मैं उनके पास गया और कहा अम्माँ जान! सुनो तुम मुझे मेरी जान से ज़्यादा प्यारी हो लेकिन मेरे दीन से ज़्यादा प्यारी नहीं हो। वल्लाह एक नहीं तुम्हारी एक सौ जानें हों और इसी भूख-प्यास में एक-एक करके सब निकल जायें तो भी मैं आख़िरी लम्हे तक अपने सच्चे दीन इस्लाम को नहीं छोडूँगा हरगिज़ न छोडूँगा। अब मेरी माँ मायूस हो गईं और खाना-पीना शुरू कर दिया।

يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْفِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۝ وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۭ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ۝ ع ٨ ٢ ١١

बेटा! अगर कोई अ़मल राई के दाने के बराबर हो, फिर वह किसी पत्थर के अन्दर हो या वह आसमान के अन्दर हो या वह ज़मीन के अन्दर हो, तब भी उसको अल्लाह हाज़िर कर देगा, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बारीक-बीन, बाख़बर है। (16) बेटा! नमाज़ पढ़ा कर और अच्छे कामों की नसीहत किया कर और बुरे कामों से मना किया कर, और तुझ पर जो मुसीबत आए उस पर सब्र किया कर, यह हिम्मत के कामों में से है। (17) और लोगों से अपना रुख़ मत फेर, और ज़मीन पर इतराकर मत चल, बेशक अल्लाह तआ़ला किसी तकब्बुर करने वाले, फ़ख़्र करने वाले को पसन्द नहीं करते। (18) और अपनी रफ़्तार में दरमियानापन इख़्तियार कर, और अपनी आवाज़ को पस्त कर, बेशक आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ है। (19)

Maktab E Ashraf

और ये काम की बातें

हज़रत लुक़मान रह. की ये और वसीयतें हैं, और चूँकि ये सब हिक्मतों से भरी हैं। क़ुरआन इन्हें बयान फ़रमा रहा है ताकि लोग इन पर अ़मल करें। फ़रमाते हैं कि बुराई, ख़ता ज़ुल्म अगरचे राई के दाने के बराबर हो फिर वह चाहे कितना ही ढका छुपा क्यों न हो, क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उसे पेश करेगा (यानी सामने लायेगा)। मीज़ान (तराज़ू) में रखा जायेगा और बदला दिया जायेगा। नेक काम पर जज़ा (अच्छा बदला) और बुरे काम पर सज़ा (अ़ज़ाब)। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ.........الخ

यानी क़ियामत के दिन हम अ़दल (इन्साफ़) की तराज़ू रखकर हर एक को बदला देंगे, कोई ज़ुल्म न किया जायेगा।

एक दूसरी आयत में है कि ज़र्रा बराबर नेकी और ज़र्रा बराबर बुराई हर एक को देख लेगा, चाहे नेकी बदी किसी मकान में महल में क़िले में पत्थर के सुराख़ में आसमानों के कोनों में ज़मीन की तह में कहीं भी हो, अल्लाह तआ़ला से छुपी हुई नहीं। वह उसे लाकर पेश करेगा। वह बड़े बारीक इल्म वाला है, छोटी से छोटी चीज़ भी उस पर ज़ाहिर है। अंधेरी रात में जो चींवटी चल रही हो उसके पाँव की आहट का भी वह इल्म रखता है।

बाज़ कहते हैं कि सख़रा से मुराद वह पत्थर है जो सातवीं ज़मीन के नीचे है। इसकी बाज़ सनदें भी सुद्दी रह. ने ज़िक्र की हैं, अगर सही साबित हो जायें, बाज़ सहाबा वग़ैरह से मन्क़ूल तो है वल्लाहु आलम। बहुत मुम्किन है कि यह भी बनी इस्राईल से मन्क़ूल हो लेकिन उनकी किताबों की किसी बात को हम न सच्ची मान सकते हैं न झुठला सकते हैं। बज़ाहिर मालूम होता है कि राई के दाने के बराबर कोई अ़मल हक़ीर (छोटा और मामूली) हो और ऐसा छुपा हुआ हो कि किसी पत्थर के अन्दर हो। जैसे मुस्नद अहमद की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अगर तुम में से कोई शख़्स किसी पत्थर के सुराख़ के अन्दर कोई अ़मल करे जिसका न कोई दरवाज़ा हो न खिड़की हो, न सुराख़ हो, फिर भी अल्लाह तआ़ला उसे लोगों पर ज़ाहिर कर देगा चाहे कैसा ही अ़मल हो, नेक हो या बद।

फिर फ़रमाते हैं कि नमाज़ का ख़्याल रखना। उसके फ़राईज़, उसके वाजिबात, अरकान, वक़्तों वग़ैरह की पूरी हिफ़ाज़त करना। अपनी ताक़त के मुताबिक़ पूरी कोशिश के साथ अल्लाह तआ़ला की बातों की तब्लीग़ करते रहना, भली बातों के करने को बुरी बातों से बचने को हर एक से कहना। और चूँकि नेकी का हुक्म और बुराई से रोकना वह चीज़ है जो उमूमन लोगों को कड़वी लगती है और हक़ कहने वाले शख़्स से लोग दुश्मनी रखते हैं, इसलिये साथ ही फ़रमाया कि लोगों से जो तकलीफ़ और मुसीबत पहुँचे उस पर सब्र करना। दर हक़ीक़त ख़ुदा की राह में नंगी तलवार रहना और हक़ पर मुसीबतें झेलते हुए सुस्त न पड़ना, यह बड़ा भारी और बहादुरी व हिम्मत का काम है।

फिर फ़रमाते हैं कि अपना मुँह लोगों से न मोड़ना, उन्हें हक़ीर (बेवक़्अ़त) समझकर या अपने आपको बड़ा समझ कर लोगों से तकब्बुर न करना, बल्कि नर्मी बरतना, अच्छे अख़्लाक़ से पेश आना। ख़ुशी और हंसते चेहरे से बात करना। हदीस शरीफ़ में है कि किसी मुसलमान भाई से तू खुली पेशानी से हंसमुख होकर मिल ले यह भी तेरी बड़ी नेकी है। तहबन्द और पाजामे को टख़्ने से नीचा न कर, यह तकब्बुर व

गुरूर है, और तकब्बुर व ग़ुरूर ख़ुदा को नापसन्द है।

हज़रत लुक़मान रह. भी अपने बच्चे को तकब्बुर न करने की वसीयत करते हैं कि ऐसा न हो कि ख़ुदा के बन्दों को हक़ीर समझ कर तू उनसे मुँह मोड़ ले और मिस्कीनों से बात करने में भी शर्माये। मुँह मोड़े (यानी बेतवज्जोही बरतते) हुए बातें करना भी गुरूर में दाख़िल है और हुकूमत के साथ घमंड भरे अलफ़ाज़ से बातचीत करना मना है।

'सअ़र' एक बीमारी है जो ऊँटों की गर्दन या सर में ज़ाहिर होती है और उससे गर्दन टेढ़ी हो जाती है। पस घमंडी शख़्स को उसी टेढे मुँह वाले शख़्स से मिला दिया गया है। अ़रब के लोग उमूमन तकब्बुर के मौक़े पर 'सअ़र' का इस्तेमाल करते हैं और यह इस्तेमाल उनके शे'रों में भी मौजूद है। ज़मीन पर ऐंठ अकड़ कर इतराकर ग़ुरूर व तकब्बुर से न चलो, यह चाल ख़ुदा को नापसन्द है। अल्लाह तआ़ला उन लोगों को नापसन्द रखता है जो ख़ुद को अच्छा समझने वाले, घमंडी, सरकश और फ़ख़्र व ग़ुरूर करने वाले हों। एक और आयत में है:

وَلَاتَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا.

यानी अकड़ कर ज़मीन पर न चलो, न तुम ज़मीन को ढहा सकते हो न पहाड़ों की लम्बाई को पहुँच सकते हो।

इस आयत की तफ़सीर भी उसकी जगह गुज़र चुकी है। हुज़ूर सल्ल. के सामने एक मर्तबा तकब्बुर का ज़िक्र आ गया तो आपने उसकी बड़ी मज़म्मत (निंदा और बुराई बयान) फ़रमाई और फ़रमाया कि ऐसे घमंडी और मग़रूर लोगों से ख़ुदा ग़ुस्सा होता है। इस पर एक सहाबी ने कहा या रसूलल्लाह! मैं जब कपड़े धोता हूँ और ख़ूब सफ़ेद हो जाते हैं तो मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। मैं उनसे ख़ुश होता हूँ। इसी तरह जूते में अच्छा तस्मा भला लगता है, कोड़े का ख़ूबसूरत ग़िलाफ़ अच्छा मालूम होता है। आपने फ़रमाया यह तकब्बुर नहीं है, तकब्बुर इसका नाम है कि तू हक़ को हक़ीर (ज़लील और घटिया) समझे और लोगों को ज़लील ख़्याल करे। यह रिवायत दूसरी सनद से बहुत लम्बी नक़ल की गयी है, और उसमें हज़रत साबित के इन्तिक़ाल और उनकी वसीयत का ज़िक्र भी है।

और दरमियानी चाल चला कर, न बहुत आहिस्ता टहलते हुए न बहुत जल्दी लम्बे डिग भरभर के। कलाम में मुबालग़ा (यानी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बयान) न कर, बेफ़ायदा चीख़ चिल्ला नहीं। बदतरीन आवाज़ गधे की आवाज़ है जो पूरी ताक़त लगाकर बेफ़ायदा चिल्लाता है। इसके बावजूद ख़ुदा के सामने अपनी आ़जिज़ी ज़ाहिर करता है।

पस यह बुरी मिसाल देकर समझा दिया कि बिना वजह चीख़ना, डाँट-डपट करना हराम है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि बुरी मिसालों के लायक़ हम नहीं, अपनी दी हुई चीज़ को वापस लेने वाला ऐसा है जैसे कुत्ता, जो क़ै करके चाट लेता है। नसाई शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जब मुर्ग़ की आवाज़ सुनो तो अल्लाह तआ़ला से उसका फ़ज़्ल तलब करो, इसलिये कि वह शैतान को देखता है। एक रिवायत में है कि रात को (यानी रात को अगर ऐसा हो)। वल्लाहु आलम।

ये वसीयतें हज़रत लुक़मान हकीम की बहुत ही नफ़ा देने वाली (लाभदायक) हैं। क़ुरआने हकीम ने इसी लिये बयान फ़रमाई हैं। आप से और भी बहुत से हकीमाना क़ौल और वअ़ज़ व नसीहत के कलिमात नक़ल किये गये हैं, बतौर नमूने और दस्तूर के हम भी थोड़े से बयान करते हैं।

मुस्नद अहमद में रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़बान मुबारक से हज़रत लुक़मान हकीम का एक क़ौल यह भी नक़ल है कि ख़ुदा को जब कोई चीज़ सौंप दी जाये तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उसकी हिफ़ाज़त करता है। एक और हदीस में आपका यह क़ौल भी है कि बनावट से बच, यह रात के वक़्त डरावनी चीज़ है और दिन को मज़म्मत (निंदा) व बुराई वाली चीज़ है। आपने अपने बेटे से यह भी फ़रमाया था कि हिक्मत (अ़क़्ल व समझ) से मिस्कीन लोग बादशाह बन जाते हैं। आपका फ़रमान है कि जब किसी मज्लिस में पहुँचो तो पहले इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ सलाम करो फिर मज्लिस के एक तरफ़ बैठ जाओ। दूसरे न बोलें तो तुम भी ख़ामोश रहो। अगर वे लोग ज़िक्रुल्लाह करें तो तुम उनसे ज़्यादा हिस्सा लेने की कोशिश करो, और अगर गपशप शुरू कर दें तो तुम उस मज्लिस को छोड़ दो। नक़ल है कि आप अपने बच्चे को नसीहत करने के लिये जब बैठते तो राई की भरी हुई एक थैली अपने पास रख ली थी और हर-हर नसीहत के बाद एक दाना उसमें से निकाल लेते, यहाँ तक कि थैली ख़ाली हो गई तो आपने फ़रमाया बच्चे अगर इतनी नसीहत मैं किसी पहाड़ को करता तो वह भी टुकड़े-टुकड़े हो जाता। चुनाँचे आपके साहिबज़ादे का भी यही हाल हुआ। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हब्शियों को रखा कर (यानी उनसे ताल्लुक़ रख) उनमें से तीन शख़्स जन्नतियों के सरदार हैं- हज़रत लुक़मान हकीम रह., नजाशी बादशाह और हज़रत बिलाल मुअज़्ज़िन रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

तवाज़ो और इन्किसारी (विनम्रता) का बयान

हज़रत लुक़मान ने अपने बच्चे को इसकी वसीयत की थी और इब्ने अबिद्दुनिया ने इस विषय पर एक मुस्तक़िल किताब लिखी है, हम उसमें से अहम बातें यहाँ ज़िक्र कर देते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि बहुत से बिखरे हुए बालों वाले और मैले कुचैले कपड़ों वाले जो किसी बड़े घर तक नहीं पहुँच सकते, ख़ुदा के यहाँ इतने बड़े मर्तबे वाले हैं कि अगर वे ख़ुदा के नाम पर कोई क़सम खा बैठें तो अल्लाह तआ़ला उसे भी पूरी फ़रमा दे। एक और हदीस में है कि हज़रत बरा बिन मालिक ऐसे ही लोगों में से हैं। रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

एक बार हज़रत उमर रज़ि. ने हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. को रसूले करीम की क़ब्र मुबारक के पास रोते देखकर मालूम किया तो जवाब मिला कि क़ब्र वाले (हुज़ूर सल्ल.) से एक हदीस मैंने सुनी है जिसे याद करके मैं रो रहा हूँ। मैंने आप से सुना फ़रमाते थे कि थोड़ी सी रियाकारी भी शिर्क है। अल्लाह तआ़ला उन्हें दोस्त रखता है जो मुत्तक़ी (परहेज़गार) हैं, जो लोगों में छुपे छुपाये हैं, जो किसी गिनती में नहीं आते। अगर वे किसी मजमे में हों तो कोई उनका हाल पूछने वाला नहीं, अगर आ जायें तो कोई आव-भगत नहीं, लेकिन उनके दिल हिदायत के चिराग़ हैं, वे हर एक ग़ुबार से भरे अन्धेरे से बचकर नूर हासिल कर लेते हैं। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि ये मैले-कुचैले कपड़ों वाले जो ज़लील (यानी समाजी तौर पर मामूली) गिने जाते हैं अल्लाह के यहाँ ऐसे मुक़र्रब हैं कि अगर ख़ुदा पर क़सम खा बैठें तो अल्लाह तआ़ला पूरी कर दे, इनको अगरचे अल्लाह ने दुनिया नहीं दी लेकिन अगर इनकी ज़बान से पूरी जन्नत का सवाल भी निकल जाये तो अल्लाह तआ़ला पूरा कर देता है। आप फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत में ऐसे लोग भी हैं कि अगर तुम में से किसी के दरवाज़े पर आकर वे लोग एक दीनार (अशरफ़ी) एक दिर्हम (रुपया) बल्कि एक फ़ुलुस (पैसा) भी माँगें तो तुम न दो लेकिन ख़ुदा के वे प्यारे ऐसे हैं कि अगर अल्लाह से जन्नत की जन्नत माँगें तो परवर्दिगार दे दे। हाँ दुनिया न तो इन्हें देता है न रोकता है, इसलिये कि यह कोई क़द्र के क़ाबिल चीज़

नहीं। ये मैली-कुचैली दो चादरों में रहते हैं, अगर किसी मौक़े पर क़सम खा बैठें तो जो क़सम इन्होंने खाई हो ख़ुदा पूरी करता है।

हुज़ूरे अकरम सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत के बादशाह वे लोग हैं जो परागन्दा और बिखरे हुए बालों वाले हैं, ग़ुबार से भरे और गर्द से अटे हुए हैं। वे अमीरों के घर जाना चाहें तो उन्हें इजाज़त नहीं मिलती। वे अगर किसी बड़े घराने में मंगनी डालें तो वहाँ की बेटी उन्हें नहीं मिलती। उन मिस्कीनों से इन्साफ़ के बर्ताव नहीं बरते जाते। उनकी हाजतें, उनकी उमंगें और मुरादें पूरी होने से पहले ही वे ख़ुद ही फ़ौत हो जाते हैं और आरज़ूएँ दिल की दिल में ही रह जाती हैं। उन्हें क़ियामत के दिन इस क़द्र नूर मिलेगा कि अगर वह तक़सीम किया जाये तो तमाम दुनिया को काफ़ी हो जाये।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक के दो शे'रों में है कि बहुत से वे लोग जो दुनिया में हक़ीर व ज़लील (बेहैसियत और कम-दर्जे के) समझे जाते हैं, कल क़ियामत के दिन तख़्त व ताज वाले मुल्क व मनाल वाले इज़्ज़त व जलाल वाले होंगे। बाग़ात में नहरों में नेमतों में राहतों में मश्ग़ूल होंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि सबसे ज़्यादा मेरा पसन्दीदा वली वह है जो मोमिन हो, कम माल वाला, कम जानों वाला (यानी उसके ज़िम्मे आल-औलाद और रिश्तेदारों का बोझ कम हो), नमाज़ी, इबादत व इताअ़त-गुज़ार, ज़ाहिर व बातिन में फ़रमाँबरदार हो, लोगों में उसको शोहरत व मक़ाम हासिल न हो, यानी गुमनाम और सादा ज़िन्दगी हो, उसकी जानिब उंगलियाँ न उठती हों और वह इस पर जमा हुआ हो। फिर हुज़ूर सल्ल. ने अपने हाथ झाड़कर फ़रमाया उसकी मौत आ जाती है, उसकी मीरास बहुत कम होती है, उस पर रोने वालियाँ थोड़ी होती हैं। फ़रमाते हैं कि अल्लाह के सब से ज़्यादा महबूब बन्दे ग़रीब लोग हैं जो अपने दीन के लिये फिरते हैं, जहाँ दीन के कमज़ोर होने का ख़तरा होता है वहाँ से निकल खड़े होते हैं, ये क़ियामत के दिन हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के साथ जमा होंगे।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ रह. का क़ौल है कि मुझे यह बात पहुँची है कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन अपने बन्दे से फ़रमायेगा- क्या मैंने तुझ पर इनाम व इकराम नहीं फ़रमाया? क्या मैंने तुझे दिया नहीं? क्या मैंने तेरा जिस्म नहीं ढाँपा? क्या मैंने यह नहीं किया? क्या यह नहीं किया? क्या लोगों में मैंने तुझे इज़्ज़त नहीं दी थी? वग़ैरह। तो अगर हो सके तो जहाँ तक इन सवालों का मौक़ा कम मिले अच्छा है। क्या फ़ायदा कि लोग ख़ूबियाँ बयान करें, और अगर वे मज़म्मत (बुराई) भी करें तो हमारा क्या बिगड़ेगा? हमारे नज़दीक तो वह शख़्स ज़्यादा अच्छा है जिसे लोग बुरा कहते हों और वह ख़ुदा के नज़दीक अच्छा हो। इब्ने मुहैरीज़ रह. तो दुआ़ करते थे कि ख़ुदाया मेरी शोहरत न हो। ख़लील बिन अहमद अपनी दुआ़ में कहते थे कि ख़ुदाया मुझे अपनी बारगाह में तू बुलन्दी अ़ता फ़रमा और ख़ुद मेरी नज़र में मुझे हक़ीर (ज़लील और पस्त) कर दे, और लोगों की निगाह में मुझे दरमियाने दर्जे का रख। फिर शोहरत का बाब क़ायम करके इमाम साहिब इस हदीस को लाये हैं। इनसान को यही बुराई काफ़ी है कि लोग उसकी दीनदारी या दुनियादारी को शोहरत देने लगें और उसकी तरफ़ उनकी उंगलियाँ उठने लगें, इशारे होने लगें। बस इसी में आकर बहुत से लोग हलाक हो जाते हैं, मगर जिन्हें अल्लाह तआ़ला बचा ले। सुनो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता बल्कि वह दिलों और आमाल को देखता है। हज़रत हसन रज़ि. से भी यही रिवायत मुर्सल तौर पर नक़ल की गयी है। जब आपने यह रिवायत बयान की तो किसी ने कहा आपकी तरफ़ भी तो उंगलियाँ उठती हैं। आपने फ़रमाया तुम समझे नहीं, उंगलियाँ उठने से दीनी बिद्अ़त (यानी दीन में कोई नयी बात निकालना) या दुनियावी बुराई और गुनाहों में मुलव्वस होना है। हज़रत अ़ली

रज़ि. का फ़रमान है कि शोहरत न चाहो। अपने आपको ऊँचा न करो कि लोगों में तज़किरे होने लगें। इल्म हासिल करो लेकिन छुपाओ, चुप रहो ताकि सलामत रहो, नेकों को ख़ुश रखो, बदकारों से नफ़रत करो।

हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह. फ़रमाते हैं कि शोहरत का चाहने वाला ख़ुदा का वली नहीं होता। हज़रत अय्यूब रज़ि. का फ़रमान है कि जिसे ख़ुदा दोस्त बना लेता है वह तो लोगों से अपना दर्जा छुपाता फिरता है। मुहम्मद बिन अुला रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा के दोस्त लोग ख़ुद को ज़ाहिर नहीं किया करते। सिमाक बिन सलमा रह. का क़ौल है कि आ़म लोगों के मेल-जोल से और दोस्तों की अधिकता से परहेज़ करो। हज़रत अबान बिन उस्मान रह. फ़रमाते हैं कि अगर अपने दीन को सालिम रखना चाहते हो तो लोगों से कम जान-पहचान रखो। हज़रत अबुल-आ़लिया रह. का क़ायदा था, जब देखते कि उनकी मज्लिस में तीन से ज़्यादा लोग जमा हो गये तो उन्हें छोड़कर ख़ुद चल देते। हज़रत तल्हा ने जब अपने साथ भीड़ देखी तो फ़रमाने लगे लालच की मक्खियाँ और आग के परवाने।

हज़रत हन्ज़ला को लोग घेरे खड़े थे तो हज़रत उमर रज़ि. ने कोड़ा ताना और फ़रमाया इसमें ताबे (पैरवी करने वाले) की ज़िल्लत और मतबू (जिसकी पैरवी की जाये) के लिये फ़ितना (आज़माईश और इम्तिहान) है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. के साथ जब लोग चलने लगे तो आपने फ़रमाया अगर मेरे ऐब और कमियाँ तुम पर खुल जायें तो तुम में से दो भी शायद मेरे पीछे चलना पसन्द न करें। हम्माद बिन ज़ैद रह. कहते हैं कि जब हम किसी मज्लिस के पास से गुज़रते और हमारे साथ अय्यूब होते तो सलाम करते और वह सख़्ती से जवाब देते। पस यह एक नेमत थी। आप लम्बी क़मीज़ पहनते।

एक मर्तबा आपने अपनी जूतियाँ मस्नून रंग की रंगवाईं, कुछ दिनों पहनकर उतार दीं और फ़रमाया मैंने देखा कि आ़लिम लोग इन्हें नहीं पहनते। हज़रत इब्राहीम नख़ई रह. का क़ौल है कि न तो ऐसा क़ीमती लिबास पहनो कि लोगों की उंगलियाँ उठें न इतना घटिया पहनो कि लोग हिक़ारत (अपमान की और घटिया नज़रों) से देखें। इमाम सुफ़ियान सौरी रह. फ़रमाते हैं कि आ़म बुज़ुर्गों का यही मामूल था कि न बहुत बढ़िया कपड़ा पहनते थे न बिल्कुल घटिया। अबू क़लाबा रह. के पास एक शख़्स बहुत ही बेहतरीन लिबास पहने हुए आया तो आपने फ़रमाया- इस आवाज़ देने वाले गधे से बचो।

हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं कि बाज़ लोगों ने दिलों में तो तकब्बुर भर रखा है और ज़ाहिरी लिबास में तवाज़ो (आ़जिज़ी) कर रखी है, गोया चादर एक भारी हथोड़ा है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का क़ौल है कि आपने बनी इस्राईल से फ़रमाया- मेरे सामने तो दुर्वेशों (नेक लोगों) की पोशाक में आये हो हालाँकि तुम्हारे दिल भेड़ियों जैसे हैं। सुनो! लिबास चाहे बादशाहों जैसा पहनो मगर दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से नर्म रखो।

अच्छे अख़्लाक़ का बयान

हुज़ूर सल्ल. सबसे बेहतर अख़्लाक़ वाले थे, आप से सवाल हुआ कि कौनसा मोमिन बेहतर है? फ़रमाया सबसे अच्छे अख़्लाक़ वाला। आपका फ़रमान है कि बावजूद कम आमाल के सिर्फ़ अच्छे अख़्लाक़ की वजह से इनसान बड़े-बड़े दर्जे और जन्नत की आला मन्ज़िल हासिल कर लेता है, और बावजूद बहुत सारी नेकियों के सिर्फ़ अख़्लाक़ की बुराई की वजह से जहन्नम के नीचे के तब्क़े में चला जाता है। फ़रमाते हैं कि अच्छे अख़्लाक़ ही में दुनिया व आख़िरत की भलाई है। फ़रमाते हैं कि इनसान अपने अच्छे अख़्लाक़ के सबब रातों को क़ियाम करने (यानी नफ़्लि नमाज़ें पढ़ने) वाले और दिनों को रोज़े रखने वालों के दर्जो को हासिल कर लेता है। हुज़ूर सल्ल. से सवाल हुआ कि जन्नत में दाख़िल होने का ज़रिया आ़म तौर से

क्या है? फ़रमाया खुदा का डर और अख़्लाक़ की अच्छाई। पूछा गया कि आम तौर से जहन्नम में कौनसी चीज़ ले जाती है? फ़रमाया दो सुराख़ दार चीज़ें, यानी मुँह और शर्मगाह।

एक बार चन्द देहातियों के इस सवाल पर कि इनसान को सबसे बेहतर अतीया (वरदान) क्या मिला है? फ़रमाया अच्छे अख़लाक़। फ़रमाते हैं कि नेकी की तराज़ू में अच्छे अख़्लाक़ से ज़्यादा वज़नी चीज़ और कोई नहीं। फ़रमाते हैं कि तुम में सबसे ज़्यादा बेहतर वह है जो सबसे ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ वाला है। फ़रमाते हैं जिस तरह मुजाहिद को जो राहे खुदा में जिहाद करता है सुबह शाम अज्र मिलता है इसी तरह अच्छे अख़्लाक़ पर भी सवाब अता फ़रमाया जाता है। इरशाद है कि तुम में सबसे ज़्यादा महबूब और सबसे ज़्यादा क़रीब मुझसे वह है जो सबसे अच्छे अख़्लाक़ वाला हो। मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा बुग़ज़ व नफ़रत के क़ाबिल और सबसे दूर मुझसे जन्नत की मन्ज़िल में वह है जो बद-अख़्लाक़, बदगो, बद-ज़ुबान हो। फ़रमाते हैं पूरे ईमान वाले अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं, जो हर एक से अच्छे सुलूक व मुहब्बत से मिलें-जुलें।

इरशाद है कि जिसकी पैदाईश और अख़्लाक़ अच्छे हैं उसे अल्लाह तआला जहन्नम का लुक़मा नहीं बनायेगा। इरशाद है कि दो ख़स्लतें मोमिन में जमा नहीं होतीं- बुख़्ल (कन्जूसी) और बद-अख़्लाक़ी। फ़रमाते हैं कि बद-अख़्लाक़ी से ज़्यादा बड़ा कोई गुनाह नहीं। इसलिये कि बद-अख़्लाक़ एक से एक बड़े गुनाह में मुब्तला हो जाता है। हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि अल्लाह के नज़दीक बद-अख़्लाक़ी से बड़ा कोई गुनाह नहीं, अच्छे अख़्लाक़ से गुनाह माफ़ हो जाते हैं। बद-अख़्लाक़ी नेक आमाल को ग़ारत कर देती है, जैसे शहद को सिरका ख़राब कर देता है।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि ग़ुलाम ख़रीदने से ग़ुलाम नहीं बढ़ते, लेकिन अच्छे अख़्लाक़ से बहुत लोग तुम्हारे चाहने वाले और तुम पर फ़िदा होने वाले बन सकते हैं। इमाम मुहम्मद बिन सीरीन रह. का क़ौल है कि अच्छा-अख़्लाक़ दीन की मदद है।

तकब्बुर की बुराई और निन्दा का बयान

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि वह जन्नत में नहीं जायेगा जिसके दिल में राई के बराबर तकब्बुर हो (यानी अगर ईमान वाला है तो शुरू ही में जन्नत में दाख़िल न होगा, और अपने घमंड की वजह से ईमान ही न लाये तो फिर तो कभी भी दाख़िल न होगा)। और वह जहन्नमी नहीं जिसके दिल में राई के दाने के बराबर ईमान हो। फ़रमाते हैं कि जिसके दिल में एक ज़र्रे के बराबर तकब्बुर है वह औंधे मुँह जहन्नम में जायेगा। इरशाद है कि इनसान अपने ग़ुरूर और ख़ुद-पसन्दी में बढ़ते-बढ़ते ख़ुदा के यहाँ जब्बारों में लिख दिया जाता है, फिर अपनी नाफ़रमानी के अज़ाब में फंस जाता है। इमाम मालिक बिन दीनार रह. फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत सुलैमान बिन दाऊद अलैहिस्सलाम अपने तख़्त पर बैठे थे, आपके दरबार में उस वक़्त दो लाख इनसान और दो लाख जिन्न थे, आपको आसमान तक पहुँचाया गया, यहाँ तक कि फ़रिश्तों की तस्बीह की आवाज़ कान में आने लगी और फिर ज़मीन तक लाया गया यहाँ तक कि समुद्र के पानी से आपके क़दम भीग गये। फिर ग़ैब से किसी आवाज़ देने वाले ने आवाज़ दी कि अगर इसके दिल में एक दाने के बराबर भी तकब्बुर होता तो जितना ऊँचा किया गया था उससे ज़्यादा नीचे धंसा दिया जाता।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने अपने ख़ुतबे में इनसान की पैदाईश का बयान फ़रमाते हुए फ़रमाया कि यह दो शख़्सों की पेशाबगाह से निकलता है। इस-तरह इसे बयान फ़रमाया कि सुनने वाले घिन करने लगे। इमाम शअ़बी रह. का क़ौल है कि जिसने दो शख़्सों को क़त्ल कर दिया वह बड़ा ही सरकश और

जब्बार है (क़त्ल तो बहुत बड़ी चीज़ है किसी को सताना ही अपनी जगह एक बहुत बड़ा जुर्म है, यह मिसाल तो एक लतीफ़े के तौर पर है), फिर आपने यह आयत पढ़ीः

اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِىْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْاَمْسِ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِى الْاَرْضِ

क्या तू मुझे भी क़त्ल करना चाहता है? जैसे कि तूने कल एक शख़्स को क़त्ल किया है। तेरा इरादा तो दुनिया में सरकश और जब्बार बनकर रहने का मालूम होता है।

हज़रत हसन रह. का मक़ूला है कि वह इनसान जो हर दिन में दो मर्तबा अपना पाख़ाना अपने हाथ से धोता है, वह किस बिना पर तकब्बुर करता है और उसका वस्फ़ अपने में पैदा करना चाहता है जिसने आसमानों को पैदा किया है और अपने क़ब्ज़े में रखा है। इमाम ज़ह्हाक बिन सुफ़ियान से दुनिया की मिसाल इस चीज़ से भी देना नक़ल किया गया है जो इनसान से निकलती है (यानी पीछे के रास्ते से हवा)।

इमाम मुहम्मद बिन हुसैन बिन अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं जिस दिल में जितना तकब्बुर और घमण्ड होता है उतनी ही अ़क़्ल उसकी कम हो जाती है। युनूस बिन उबैद रह. फ़रमाते हैं कि सज्दा करने के साथ तकब्बुर और तौहीद के साथ निफ़ाक़ जमा नहीं हुआ करता। बनी उमैया मार-मारकर अपनी औलाद को अकड़ कर चलना सिखाते थे। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. को आपकी ख़िलाफ़त से पहले एक मर्तबा इठलाती हुई चाल चलते देखकर हज़रत ताऊस रह. ने उनके पहलू में एक चोका मारा और फ़रमाया यह चाल उसकी जिसके पेट में पाख़ाना भरा हुआ है? हज़रत उमर रह. बहुत शर्मिन्दा हुए और कहने लगे माफ़ फ़रमाईये, हमें मार-मारकर इस चाल की आ़दत डलवाई गई है।

तकब्बुर व घमण्ड की बुराई का बयान

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स फ़ख़्र व गुरूर से अपना कपड़ा नीचे खिसका कर घसीटेगा अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी तरफ़ रहमत की नज़र से न देखेगा। फ़रमाते हैं कि उसकी तरफ़ अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन नज़र न डालेगा जो अपना तहबन्द लटकाये। एक शख़्स दो उम्दा चादरें ओढ़े दिल में गुरूर लिये हुए अकड़ता हुआ जा रहा था कि ख़ुदा तआ़ला ने उसे ज़मीन में धंसा दिया। क़ियामत तक वह धंसता हुआ चला जायेगा।

क्या तुम लोगों को यह बात मालूम नहीं हुई कि अल्लाह तआ़ला ने तमाम चीज़ों को तुम्हारे काम में लगा रखा है, जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं। और उसने तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेमतें पूरी कर रखी हैं। और बाज़े आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला के बारे में बिना जानकारी और बिना दलील और बिना किसी रोशन किताब के झगड़ा करते हैं। (20) और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ का इत्तिबा करो जो अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई है, तो कहते	اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ۭ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا

Maktab-e-Ashraf

وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝	अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाई है, तो कहते हैं कि नहीं! हम उसी का इत्तिबा करेंगे जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया है। क्या अगर शैतान उनके बड़ों को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता रहा हो तब भी? (21)

अल्लाह का इनाम व इकराम और फिर बद-आमालियाँ?

अल्लाह तबारक व तआला अपनी नेमतों का इज़हार फ़रमा रहा है कि देखो आसमान के सितारे तुम्हारे काम में मशग़ूल हैं, चमक-चमक कर तुम्हें रोशनी पहुँचा रहे हैं। बादल, बारिश, ओले, ख़ुश्की सब तुम्हारे नफ़े की चीज़ें हैं। ख़ुद आसमान तुम्हारे लिये महफ़ूज़ और मज़बूत छत है, ज़मीन की नहरें चश्मे, दरिया, समुद्र, खेती, फल-फूल ये सब नेमतें भी उसी ने दे रखी हैं। रसूलों का भेजना, किताबों का नाज़िल फ़रमाना, शक व शुब्हे वग़ैरह दिलों से दूर करना वग़ैरह, इतनी सारी नेमतें जिसने दे रखी हैं, हक़ यह था कि उसकी ज़ात पर सब के सब ईमान लाते, लेकिन अफ़सोस कि बहुत से लोग अब तक ख़ुदा के बारे में ही उलझ रहे हैं और महज़ जहालत से गुमराही से बग़ैर किसी सनद और दलील के अड़े हुए हैं। जब उनसे कहा जाता है कि ख़ुदा की 'वही' की पैरवी करो तो बेहयाई का जवाब देते हैं कि हम तो अपने अगलों की तक़लीद (अनुसरण) करेंगे। चाहे उनके बाप-दादे महज़ बेअक़्ल और बेराह थे? शैतान के फन्दे में फंसे हुए थे और उसने उन्हें दोज़ख़ की राह पर डाल दिया था, ये थे उनके अगले और ये हैं उनके बाद के (यानी औलाद)।

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝	और जो शख़्स अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ झुका दे और वह मुख़्लिस भी हो, तो उसने बड़ा मज़बूत हल्क़ा थाम लिया, और अख़ीर सब कामों का अल्लाह ही की तरफ़ पहुँचेगा। (22) और जो शख़्स कुफ़्र करे सो आपके लिए उसका कुफ़्र ग़म का सबब न होना चाहिए, उन सबको हमारे ही पास लौटना है, सो हम उन सबको जतला देंगे, जो-जो कुछ वे किया करते थे। अल्लाह तआला को दिलों की बातें ख़ूब मालूम हैं। (23) हम उनको चन्द दिन की ऐश दिए हुए हैं, फिर उनको ज़बरदस्ती खींचते-खींचते एक सख़्त अज़ाब की तरफ़ ले आएँगे। (24)

एक मज़बूत परवाना

फ़रमाता है कि जो अपने अमल पर इख़्लास पैदा करे, जो ख़ुदा का सच्चा फ़रमाँबरदार बन जाये, जो शरीअत का ताबेदार हो जाये, ख़ुदा के हुक्मों पर अमल करे, ख़ुदा के मना किये हुए कामों से बाज़ आ जाये, उसने मज़बूत दस्तावेज़ ले लिया। गोया ख़ुदा का वायदा ले लिया कि वह अज़ाबों से निजात पाने

Maktab E Ashraf

वाला है। कामों का अन्जाम ख़ुदा के हाथ में है। ऐ प्यारे पैग़म्बर! काफ़िरों के कुफ़्र से आप ग़मगीन न हों। अल्लाह की तक़दीर (यानी फ़ैसला) यूँ ही हो चुकी है, सब का लौटना ख़ुदा की तरफ़ है। उस वक़्त आमाल के बदले मिलेंगे, उस ख़ुदा पर कोई बात छुपी नहीं। दुनिया में मज़े कर लें फिर तो उन अ़ज़ाबों को बेहिसी से बरदाश्त करना पड़ेगा जो बहुत सख़्त और बहुत ही घबराहट वाले हैं। जैसे एक दूसरी आयत में है:

اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ.

ख़ुदा पर झूठ बाँधने और तोहमतें लगाने वाले फ़लाह से मेहरूम रह जाते हैं। फ़ायदा देना तो ख़ैर अलग चीज़ है, हमारे यहाँ आ चुकने के बाद तो अपने कुफ़्र की सख़्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

और अगर आप उनसे पूछें कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है तो ज़रूर यही जवाब देंगे कि अल्लाह तआ़ला ने। आप कहिए कि अल्हम्दु लिल्लाहि! बल्कि उनमें अक्सर नहीं जानते। (25) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद है सब अल्लाह ही का है, और बेशक अल्लाह तआ़ला बेनियाज़, सब ख़ूबियों वाला है। (26)	وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ○ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ○

ज़मीन व आसमानों का पैदा करने वाला

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि ये मुश्रिक इस बात को मानते हैं कि सब का ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) अकेला अल्लाह ही है, फिर भी दूसरों की इबादत करते हैं। हालाँकि उनके बारे में ख़ुद जानते हैं कि ये ख़ुदा के पैदा किये हुए और उसके क़ब्ज़े में हैं। उनसे अगर पूछा जाये कि ख़ालिक़ कौन है? तो उनका जवाब बिल्कुल सच्चा होता है कि अल्लाह। तू कह कि ख़ुदा का शुक्र है इतना तो तुम्हें इक़रार है। बात यह है कि अक्सर मुश्रिक बेइल्म होते हैं। ज़मीन व आसमान की हर छोटी-बड़ी छुपी-खुली चीज़ ख़ुदा की पैदा की हुई और उसी की मिल्कियत है। वह सब से बेनियाज़ है और सब उसके मोहताज हैं। वही तारीफ़ के लायक़ है, वही ख़ूबियों वाला है। पैदा करने में भी, अहकाम मुक़र्रर करने में भी, वह क़ाबिले तारीफ़ है।

और जितने पेड़ ज़मीन भर में हैं, अगर वे सब क़लम बन जाएँ और यह जो समुद्र है उसके अ़लावा सात समुद्र इसमें और शामिल हो जाएँ तो अल्लाह की बातें ख़त्म न हों, बेशक ख़ुदा तआ़ला ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (27) तुम सब का पैदा करना और ज़िन्दा करना बस ऐसा ही है	وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ○ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا

Maktab E Ashraf

كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ ۢ بَصِيْرٌ ○	जैसा कि एक शख़्स का। बेशक अल्लाह तआ़ला सब कुछ सुनता, सब कुछ देखता है। (28)

अल्लाह के कलिमात बेशुमार हैं

अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन अपनी इ़ज़्ज़त व बड़ाई, बुज़ुर्गी और शान, अपनी पाक सिफ़तें, अपने बुलन्द तरीन नाम और अपने बेशुमार कलिमात का ज़िक्र फ़रमा रहा है। जिन्हें न कोई गिन सके न शुमार कर सके, न उन पर किसी का इहाता (घेराव) हो, न उनकी हक़ीक़त को कोई पा सके। सैयदुल-बशर ख़ातिमुल् अम्बिया सल्ल. फ़रमाया करते थेः

لَآ اُحْصِيْ ثَنَآءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَآ اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ.

ख़ुदाया मैं तेरी नेमतों को इतना शुमार भी नहीं कर सकता जितनी सना (तारीफ़ व प्रशंसा) तूने अपनी ख़ुद बयान फ़रमाई है।

पस यहाँ अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि अगर रू-ए-ज़मीन के तमाम पेड़ क़लमें बन जायें और तमाम समुद्रों का पानी सियाही (रोशनाई) बन जाये और उनके साथ ही सात समुद्र और भी मिलाये जायें और अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत (बड़ाई व शान) व सिफ़ात और बुज़ुर्गी के कलिमात (बातें) लिखने शुरू किये जायें तो ये तमाम क़लम घिस जायेंगे, ख़त्म हो जायेंगे, सारी रोशनाईयाँ ख़त्म हो जायेंगी लेकिन ख़ुदा तआ़ला वह्दहू ला शरी-क लहू की तारीफ़ ख़त्म न होगी। यह न समझा जाये कि सात समुद्र से ज़्यादा हों तो फिर ख़ुदा के कलिमात लिखने के लिये काफ़ी हो जायेंगे, नहीं! यह गिनती तो ज़्यादती बताने के लिये है (यानी एक मुहावरे के तौर पर है, वरना चाहे जितने समुद्र हों अल्लाह की सिफ़ात और कलिमात का बयान उनसे पूरा नहीं हो सकेगा) और यह भी न समझा जाये कि सात समुद्र मौजूद हैं और वह दुनिया को घेरे हुए हैं। अलबत्ता बनी इस्राईल की इन सात समुद्रों के बारे में ऐसी रिवायतें हैं लेकिन न तो उन्हें सच कहा जा सकता है और न झुठलाया जा सकता है। हाँ जो तफ़सीर हमने की है इसकी ताईद क़ुरआने पाक की इस आयत से भी होती हैः

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ........ الخ

यानी अगर समुद्र रोशनाई बन जायें और रब के कलिमात लिखना शुरू हो तो अल्लाह के कलिमात ख़त्म होने से पहले ही समुद्र ख़त्म हो जायें, अगरचे ऐसा ही एक और समुद्र उसकी मदद में लायें।

पस यहाँ भी मुराद सिर्फ़ उसी जैसा एक ही समुद्र लाना नहीं बल्कि वैसा एक, फिर एक और भी वैसा ही फिर वैसा ही फिर वैसा ही, ग़र्ज़ यह कि चाहे कितने ही आ जायें लेकिन ख़ुदा की बातें ख़त्म नहीं हो सकतीं। इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि अगर तमाम पेड़ों के क़लम और तमाम समुद्रों की रोशनाई बन जाये और अल्लाह तआ़ला लिखवाना शुरू करे कि मेरा यह अम्र (बात और हुक्म) और यह अम्र, तो तमाम क़लमें टूट जायेंगी और तमाम समुद्रों के पानी ख़त्म हो जायेंगे।

मुश्रिक लोग कहते थे कि यह कलाम अब ख़त्म हो जायेगा जिसका रद्द इस आयत में हो रहा है कि न रब के अ़जायबात (अ़क़्लों को हैरान कर देने वाली चीज़ें) ख़त्म हों न उसकी हिक्मत की इन्तिहा, न उसकी सिफ़त और उसके इल्म की कोई इन्तिहा और अंत है। तमाम बन्दों के इल्म ख़ुदा के मुक़ाबले में ऐसे हैं

Maktab-E-Ashraf

जैसे समुद्र के मुक़ाबले में एक क़तरा। अल्लाह की बातें फ़ना नहीं होतीं न कोई उस तक रसाई पा सकता है, हम जो कुछ उसकी तारीफ़ करें वह उनसे भी बुलन्द व बाला है। यहूद के उलेमा ने मदीने में रसूलुल्लाह सल्ल. से कहा था कि यह जो आप क़ुरआन में पढ़ते हैं:

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا.

यानी तुम्हें बहुत ही कम इल्म दिया गया है।

इससे क्या मुराद है? हम या आपकी क़ौम? आपने फ़रमाया सब। उन्होंने कहा फिर आप कलामुल्लाह शरीफ़ की उस आयत के बारे में क्या कहेंगे? जहाँ फ़रमान है कि तौरात में हर चीज़ का बयान है। आपने फ़रमाया सुनो वह और तुम्हारे पास जो कुछ भी है वह सब अल्लाह के कलिमात के मुक़ाबले में बहुत कम है, तुम्हारे लिये काफ़ी हो बस इतना ही अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमा दिया है। इस पर यह आयत उतरी। लेकिन इससे मालूम होता है कि यह आयत मदनी होनी चाहिये हालाँकि मशहूर यह है कि यह आयत मक्की है। वल्लाहु आलम।

अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर ग़ालिब है, तमाम चीज़ें उसके सामने पस्त व आ़जिज़ हैं, कोई उसके इरादे के ख़िलाफ़ नहीं जा सकता। वह अपने अफ़आ़ल (कामों) शरीअ़त (क़ानून) हिक्मत और तमाम सिफ़तों में सबसे आला और सब पर ग़ालिब व छाया हुआ है। फिर फ़रमाता है कि तमाम लोगों का पैदा करना और उन्हें मार डालने के बाद जिला देना मुझ पर ऐसा ही आसान है जैसे एक शख़्स का, उसका तो किसी बात का हुक्म फ़रमा देना काफ़ी है। एक आँख झपकने के बराबर भी देर नहीं लगती। न दोबारा कहना पड़े, न असबाब और माद्दे की ज़रूरत। एक फ़रमान में क़ियामत क़ायम हो जायेगी, एक ही आवाज़ के साथ सब ज़िन्दा हो उठेंगे। अल्लाह तआ़ला तमाम बातों का सुनने वाला है, सब के कामों का जानने वाला है, एक शख़्स की बातें और उसके काम जैसे उस पर छुपे नहीं इसी तरह तमाम जहान के भी हैं।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ز كُلٌّ يَّجْرِىْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ لا وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ ۝	(ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल कर देता है, और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, कि हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक चलता रहेगा, और यह कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर रखता है। (29) यह इस सबब से है कि अल्लाह ही हस्ती में कामिल है और जिन चीज़ों की अल्लाह के सिवा ये लोग इबादत कर रहे हैं, बिल्कुल ही लचर हैं। और अल्लाह ही आलीशान (और) बड़ा है। (30)

ع ١٢

रात-दिन का यह आना-जाना

रात को कुछ घटाकर दिन को कुछ बढ़ाने वाला और दिन को कुछ घटाकर रात को कुछ बढ़ाने वाला

Maktab E Ashraf

अल्लाह तआ़ला ही है। जाड़ों के दिन छोटे और रातें बड़ी, गर्मियों के दिन बड़े और रातें छोटी उसी की क़ुदरत का ज़हूर है। सूरज, चाँद उसी के फ़रमान के ताबे हैं। जो जगह मुक़र्रर है वहीं चलते हैं, क़ियामत तक बराबर इसी चाल से चलते रहेंगे, अपनी जगह से इधर-उधर नहीं हो सकते। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अबूज़र रज़ि. से मालूम किया- जानते हो यह सूरज कहाँ जाता है? जवाब दिया कि अल्लाह और उसके रसूल ख़ूब जानते हैं। आपने फ़रमाया यह जाकर ख़ुदा के अ़र्श के नीचे सज्दे में गिर पड़ता है और अपने रब से इजाज़त चाहता है। क़रीब है कि एक दिन इससे कहा जाये जहाँ से आया है वहीं को लौट जा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि सूरज साक़िया (एक नदी की तरह जो मुस्तक़िल अपने सफ़र पर रहती है) के जैसा है, दिन को अपने दौरान (चलने और घूमने की जगह) में जारी रहता है, गुरूब होकर रात को फिर ज़मीन के नीचे गर्दिश में रहता है, यहाँ तक कि अपने निकलने की जगह से ही निकलता है। इसी तरह चाँद भी। अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आमाल से ख़बरदार है। जैसे फ़रमान है- क्या तू नहीं जानता कि ज़मीन व आसमान में जो कुछ है सब का इल्म अल्लाह तआ़ला को है। सब का ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाला), सब का आ़लिम (जानने वाला) अल्लाह ही है। जैसे इरशाद है- अल्लाह ने सात आसमान पैदा किये और उन्हीं के मिस्ल (जैसी) ज़मीनें बनाईं.......। ये निशानियाँ परवर्दिगारे आ़लम इसलिये ज़ाहिर फ़रमाता है ताकि तुम इनसे ख़ुदा के हक़ (वजूद और उसके हर चीज़ का ख़ालिक़ व मालिक) होने पर ईमान लाओ और उसके सिवा सब को बातिल मानो, वह सबसे बेनियाज़ और बेपरवाह है। सब के सब उसके मोहताज और उसके फ़क़ीर हैं। सब उसकी मख़्लूक़ (बनाये और पैदा किये हुए) और उसके ग़ुलाम हैं। किसी को एक ज़र्रे के हरकत में लाने की क़ुदरत नहीं। अगर सारी मख़्लूक़ मिलकर इरादा कर ले कि एक मक्खी पैदा करें तो सब आ़जिज़ आ जायेंगे और हरगिज़ इतनी क़ुदरत भी न पायेंगे। वह सबसे बुलन्द है, जिसके ऊपर कोई चीज़ नहीं। वह सबसे बड़ा है जिसके सामने किसी को कोई बड़ाई नहीं। हर चीज़ उसके सामने हक़ीर और पस्त है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۝

(ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको (तौहीद की) यह (दलील) मालूम नहीं कि अल्लाह ही के फ़ज़्ल से दरिया में कश्ती चलती है, ताकि तुमको अपनी निशानियाँ दिखलाए, उसमें हर ऐसे शख़्स के लिए निशानियाँ हैं जो साबिर व शाकिर हो। (31) और जब उन लोगों को मौजें सायबानों "यानी साया करने वाले जैसे छप्पर वग़ैरह" की तरह घेर लेती हैं तो वे ख़ालिस एतिक़ाद करके अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं, फिर जब उनको निजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ ले आता है सो बाज़े तो उनमें एतिदाल पर रहते हैं, और हमारी आयतों के बस वही लोग मुन्किर होते हैं जो बद्-अ़हद और नाशुक्रे हैं। (32)

Muntaha E Ashraf

ये समुद्र और तैरते हुए जहाज़

अल्लाह के हुक्म से समुद्रों में जहाज़ों को चलाया जा रहा है, अगर वह पानी कश्ती को थामने की और कश्ती में पानी को काटने की क़ुव्वत न रखता तो पानी में कश्तियाँ कैसे चलतीं? वह तो तुम्हें अपनी क़ुदरत की निशानियाँ दिखला रहा है। मुसीबत में सब्र और राहत में शुक्र करने वाले इनसे कुछ इबरतें हासिल कर सकते हैं। जब इन काफ़िरों को समुद्रों में मौजें घेर लेती हैं, इनकी कश्ती डगमगाने लगती है और मौजें पहाड़ों की तरह इधर से उधर और उधर से इधर कश्तियों के साथ अठखेलियाँ करने लगती हैं तो अपना शिर्क व कुफ़्र सब भूल जाते हैं और रोने-गिड़गिड़ाने के साथ एक ख़ुदा को पुकारने लगते हैं। जैसे एक दूसरी जगह इरशाद फ़रमायाः

وَاِذَامَسَّكُمُ الضُّرُّفِى الْبَحْرِ.......... الخ

कि दरिया में जब तुम्हें ज़रर (परेशानी और नुक़सान) पहुँचता है तो सिवाय ख़ुदा के सब को खो बैठते हो। एक और आयत में है:

فَاِذَارَكِبُوْا فِى الْفُلْكِ.......... الخ

कि जब ये लोग कश्ती में सवार होते हैं तो ख़ालिस एतिक़ाद के साथ अल्लाह की को पुकारने लगते हैं। (सूरः अन्कबूत आयत 65)

उनकी उस वक़्त की हालत पर अगर हमें रहम आ गया और उन्हें समुद्र से पार कर दिया तो थोड़े से काफ़िर हो जाते हैं। मुजाहिद रह. ने यही तफ़सीर की है जैसे फ़रमान है:

فَاِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ.

(तो फिर वे शिर्क करने लगते हैं) लफ़्ज़ी मायने यह हैं कि उनमें बाज़ दरमियानी दर्जे के होते हैं। इब्ने ज़ायद यही कहते हैं, जैसे फ़रमान है:

فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ........... الخ

कि उनमें से बाज़ ज़ालिम हैं, बाज़ दरमियानी चाल चलने वाले हैं........।

और यह भी हो सकता है कि दोनों ही मुराद हों, तो मतलब यह होगा कि जिसने ऐसी हालत देखी हो, जो इस मुसीबत से निकला हो उसे चाहिये कि नेकियों में पूरी तरह कोशिश करे, लेकिन फिर भी ये बीच में ही रह जाते हैं और कुछ तो फिर कुफ़्र पर चले जाते हैं। 'ख़त्तार' कहते हैं ग़द्दार को जो अ़हद को तोड़ने वाला हो। 'ख़तर' के मायने पूरी तरह अ़हद तोड़ने के हैं। 'कफ़ूर' कहते हैं मुन्किर (इनकार करने वाले) को, जो नेमतों से मुन्किर हो जाये तो शुक्र तो एक तरफ़ भूल जाये और ज़िक्र भी न करे।

يٰۤاَيُّهَاالنَّاسُ اتَّقُوْارَبَّكُمْ وَاخْشَوْايَوْمًا لَّا يَجْزِىْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَامَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍعَنْ وَّالِدِهٖ شَيْئًا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ	**ऐ लोगो! अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जिसमें न कोई बाप अपने बेटे की तरफ़ से कुछ मुतालबा अदा कर सकेगा, और न कोई बेटा ही है कि वह अपने बाप की तरफ़ से ज़रा भी मुतालबा अदा कर दे। यक़ीनन अल्लाह का**

Maktab E Ashraf

فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ○	वायदा सच्चा है। सो तुमको दुनियावी ज़िन्दगानी धोखे में न डाले, और न वह धोखेबाज़ (शैतान) अल्लाह से धोखे में डाले। (33)

बदले के दिन से डरो

अल्लाह तआ़ला लोगों को क़ियामत के दिन से डरा रहा है और तक़्वे (परहेज़गारी) का हुक्म फ़रमा रहा है। इरशाद है कि उस दिन बाप अपने बच्चे को या बच्चा अपने बाप को कुछ काम न आयेगा। एक दूसरे का फ़िदया (छुटकारे का बदला और मुआ़वज़ा) न हो सकेगा। तुम दुनिया पर भरोसा न कर लो, आख़िरत के जहान को मत भूल जाओ, शैतान के फ़रेब में न आ जाओ, वह तो सिर्फ़ टट्टी (पर्दे और बाँस के छप्पर) की आड़ में शिकार खेलना जानता है।

इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम ने जब अपनी क़ौम की तकलीफ़ को देखा और ग़म व रंज बहुत बढ़ गया, नींद उचाट हो गई तो अपने रब की तरफ़ झुक पड़े। फ़रमाते हैं कि मैंने ख़ूब रो-रोकर और गिड़गिड़ाकर नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, दुआयें माँगीं। एक मर्तबा रो-रोकर फ़रियाद कर रहा था कि मेरे सामने एक फ़रिश्ता आ गया, मैंने उससे पूछा क्या नेक लोग बुरों की शफ़ाअ़त करेंगे? या बाप बेटों के काम आयेंगे? उसने फ़रमाया क़ियामत का दिन झगड़ों के फ़ैसलों का दिन है, उस दिन अल्लाह तआ़ला ख़ुद सामने होगा, कोई बग़ैर उसकी इजाज़त के लब न हिला सकेगा। किसी को दूसरे के बारे में न पकड़ा जायेगा, न बाप बेटे के बदले न बेटा बाप के बदले, न भाई भाई के बदले न ग़ुलाम आक़ा के बदले, न कोई किसी का ग़म व रंज करेगा न किसी की तरफ़ से किसी को ख़्याल होगा, न कोई किसी पर रहम करेगा न किसी को किसी से हमदर्दी व मुहब्बत होगी। न एक दूसरे की तरफ़ से पकड़ा जायेगा, हर शख़्स अपनी ही फ़िक्र में होगा। हर एक को अपना रोना पड़ा होगा, हर एक अपना बोझ उठाये हुए होगा, न कि किसी और का।

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۗ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۗ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ○	बेशक अल्लाह तआ़ला ही को क़ियामत की ख़बर है, और वही बारिश बरसाता है, और वही जानता है जो कुछ रहम "यानी माँ के पेट" में है, और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह कल क्या अ़मल करेगा, और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा। बेशक अल्लाह तआ़ला सब बातों का जानने वाला, ख़बर रखने वाला है। (34)

ع ۱۳

ये ग़ैब की बातें हैं

ये ग़ैब की वे कुन्जियाँ हैं जिनका इल्म सिवाय ख़ुदा तआ़ला के किसी और को नहीं, मगर यह कि

किसी को अल्लाह तआ़ला मालूम कराये। क़ियामत के आने का सही वक़्त न तो अल्लाह का भेजा हुआ कोई नबी व रसूल जानता है न कोई मुक़र्रब (बुलन्द रुतबे वाला और अल्लाह की निकटता-प्राप्त) फ़रिश्ता। उसका वक़्त सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है।

इसी तरह बारिश कब कहाँ और कितनी बरसेगी इसका इल्म भी किसी को नहीं, हाँ जब उन फ़रिश्तों को हुक्म होता है जो इस पर मुक़र्रर हैं तब वे जानते हैं और जिसे ख़ुदा मालूम कराये।

इसी तरह हामिला (गर्भवती) के पेट में क्या है? इसे भी सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला ही जानता है। हाँ जब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से फ़रिश्तों को हुक्म होता है जो इसी काम पर मुक़र्रर हैं तब उन्हें पता चलता है कि नर होगा या मादा, लड़का होगा या लड़की, नेक होगा या बद? इसी तरह किसी को यह भी मालूम नहीं कि कल वह क्या करेगा? न किसी को यह इल्म है कि वह कहाँ मरेगा। एक और जगह दूसरी आयत में है:

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ.

यानी ग़ैब की कुन्जियाँ ख़ुदा ही के पास हैं, जिन्हें सिवाय उसके और कोई नहीं जानता। एक हदीस में है कि ग़ैब की कुन्जियाँ यही पाँच चीज़ें हैं जिनका बयान इस आयत (जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) में है। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- पाँच बातें हैं जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। बुख़ारी की हदीस के अलफ़ाज़ तो ये हैं कि ये पाँच कुन्जियाँ हैं जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता.......।

मुस्नद अहमद में हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि मुझे हर चीज़ की कुन्जियाँ दी गईं मगर पाँच। फिर यही आयत आपने पढ़ी। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. हमारी मज्लिस में बैठे हुए थे कि एक साहिब तशरीफ़ लाये, पूछने लगे या रसूलल्लाह! ईमान क्या चीज़ है? आपने फ़रमाया अल्लाह को फ़रिश्तों को, किताबों को, रसूलों को, आख़िरत को, मरने के बाद जी उठने को मान लेना। उसने पूछा इस्लाम क्या है? आपने फ़रमाया एक अल्लाह की इबादत करना, उसके साथ किसी को शरीक न करना, नमाज़ें पढ़ना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना। उसने मालूम किया एहसान क्या है? फ़रमाया तेरा इस तरह ख़ुदा की इबादत करना गोया तू उसे देख रहा है, और अगर तू नहीं देखता तो वह तुझे देख रहा है। उसने कहा हुज़ूर! क़ियामत कब है? फ़रमाया इसका इल्म न मुझे न तुझे, हाँ मैं उसकी निशानियाँ बतलाता हूँ। जब लौंडी (बाँदी) अपने आक़ा को जने (या यह कि औलाद नाफ़रमान बन जाये) और जब नंगे पैरों और नंगे बदनों वाले (सामाजिक तौर पर बेहैसियत और मामूली आदमी) लोगों के सरदार बन जायें। क़ियामत का इल्म उन पाँच चीज़ों में से है जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, फिर आपने इसी आयत की तिलावत की। वह शख़्स चला गया, आपने फ़रमाया जाओ उसे बुला लाओ। लोग दौड़ पड़े लेकिन वह कहीं भी नज़र न आया। आपने फ़रमाया यह जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम थे, लोगों को दीन सिखाने आये थे। (बुख़ारी शरीफ़)

हमने इस हदीस का मतलब बुख़ारी की हदीस की शरह में ख़ूब बयान कर दिया है। मुस्नद में है कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने अपनी हथेलियाँ हुज़ूर सल्ल. के घुटनों पर रखकर ये सवालात किये थे कि इस्लाम क्या है? आपने फ़रमाया यह कि तू अपना चेहरा ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जह कर दे और ख़ुदा के वाहिद व ला शरीक (यानी अकेला और बिना किसी शरीक वाला) होने की गवाही दे, और मुहम्मद के अल्लाह का बन्दा और रसूल होने की तस्दीक़ करे। जब तू यह कर ले तो तू मुसलमान हो गया। पूछा ईमान किसका नाम है? फ़रमाया अल्लाह पर, आख़िरत के दिन पर, फ़रिश्तों पर, आसमानी किताबों पर,

नबियों पर अक़ीदा रखना, मौत और मौत के बाद की ज़िन्दगी को मानना, जन्नत दोज़ख़, हिसाब, मीज़ान और तक़दीर की भलाई बुराई पर ईमान रखना। पूछा जब मैं ऐसा कर लूँ तो क्या मैं मोमिन हो जाऊँगा? आपने फ़रमाया हाँ।

फिर एहसान के बारे में पूछा और वह जवाब पाया जो ऊपर बयान हुआ। फिर क़ियामत का पूछा आपने फ़रमाया सुब्हानल्लाह! यह उन पाँच चीज़ों में से है जिन्हें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही जानता है। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। फिर क़ियामत की निशानियों में यह भी ज़िक्र है कि लोग लम्बी चौड़ी इमारतें बनाने लगेंगे। सही सनद के साथ एक हदीस मुस्नद अहमद में है कि बनू आ़मिर क़बीले का एक शख़्स नबी करीम सल्ल. के पास आया, कहने लगा मैं आऊँ? आपने ख़ादिम को भेजा कि जाकर इन्हें अदब सिखाओ, यह इजाज़त माँगना नहीं जानते। इनसे कहो कि पहले सलाम करो, फिर दरियाफ़्त करो कि क्या मैं आ सकता हूँ? उन्होंने सुन लिया और इसी तरह सलाम किया और इजाज़त चाही। यह गये और जाकर कहा कि आप हमारे लिये क्या लेकर आये हैं? आपने फ़रमाया भलाई ही भलाई। सुनो तुम एक अल्लाह की इबादत करो, 'लात' और 'उज़्ज़ा' (बुतों) को छोड़ दो, दिन रात में पाँच नमाज़ें पढ़ा करो, साल भर में एक महीने के रोज़े रखो, अपने मालदारों से ज़कात वसूल करके अपने फ़क़ीरों पर तक़सीम करो। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह! क्या इल्म में से कुछ ऐसा बाक़ी है जिसे आप न जानते हों? आपने फ़रमाया हाँ ऐसा इल्म भी है जिसे सिवाय अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं जानता। फिर आपने यही आयत पढ़ी।

फ़रमाते हैं कि एक गाँव के रहने वाले शख़्स ने आकर हुज़ूर सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि मेरी औ़रत हमल (गर्भ) से है, बतलाईये क्या होगा? हमारे शहर में क़हत (अकाल और सूखा पड़ा) है, फ़रमाईये बारिश कब होगी? यह तो मैं जानता हूँ कि मैं कब पैदा हुआ अब आप यह बता दीजिये कि मैं कब मरूँगा? इसके जवाब में यह आयत उतरी कि तुझे इन चीज़ों का बिल्कुल भी इल्म नहीं। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यही ग़ैब की कुन्जियाँ हैं जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि ग़ैब की कुन्जियाँ अल्लाह ही के पास हैं। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जो तुम से कहे कि रसूलुल्लाह सल्ल. कल की बात जानते थे तो समझ लेना कि वह बड़ा झूठा है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- कोई नहीं जानता कि कल क्या करेगा? क़तादा रह. का क़ौल है कि बहुत सी चीज़ें हैं जिनका इल्म अल्लाह ने किसी को नहीं कराया। न नबी को, न फ़रिश्ते को। अल्लाह ही के पास क़ियामत का इल्म है, कोई नहीं जानता कि किस साल किस महीने किस दिन या किस रात में वह आयेगी। इसी तरह बारिश का इल्म भी उसके सिवा किसी को नहीं कि कब आये। और कोई नहीं जानता कि हामिला के पेट का बच्चा नर होगा या मादा, सुर्ख़ होगा या सियाह, और कोई नहीं जानता कि कल वह नेकी करेगा या बदी, मरेगा या जियेगा। बहुत मुम्किन है कि कल मौत या आफ़त आ जाये, न किसी को यह ख़बर है कि किस ज़मीन में वह दफ़न किया जायेगा या समुद्र में बहा दिया जायेगा, या जंगल में मरेगा या नर्म या सख़्त ज़मीन में जायेगा।

हदीस शरीफ़ में है कि जब किसी की मौत दूसरी ज़मीन में (यानी अपने वतन के अ़लावा कहीं और) होती है तो उसका वहीं का कोई काम निकल आता है और वहीं मौत आ जाती है। एक और रिवायत में है कि यह फ़रमाकर रसूले करीम सल्ल. ने यही आयत पढ़ी। आअ़शा हमदान के शे'र हैं, जिनमें इस मज़मून को बहुत ही ख़ूबसूरती से अदा किया है। एक रिवायत में है कि क़ियामत के दिन ज़मीन अल्लाह तआ़ला से कहेगी कि ये हैं तेरी अमानतें जो तूने मुझे सौंप रखी थीं। तबरानी वग़ैरह में भी यह हदीस है।

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः लुक़मान की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः सज्दा

सूरः सज्दा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 30 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) यह नाज़िल की हुई किताब है इसमें कुछ शुब्हा नहीं, यह रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से है। (2) क्या ये लोग यूँ कहते हैं कि पैग़म्बर ने यह अपने दिल से बना लिया है, बल्कि यह सच्ची किताब है आपके रब की तरफ़ से, ताकि आप ऐसे लोगों को डराएँ जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वे लोग राह पर आ जाएँ। (3)	الٓمّٓ○ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ○ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ○

यह किताब अल्लाह की तरफ़ से उतरी है

सूरतों के शुरू में जो हुरूफ़े मुक़त्तआ़त हैं उनकी पूरी बहस हम सूरः ब-क़रह की तफ़सीर के शुरू में कर चुके हैं। यहाँ दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं। यह किताब क़ुरआने हकीम बिना किसी शक व शुब्हे के अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से नाज़िल हुई है। मुश्रिक लोगों का यह क़ौल ग़लत है कि हुज़ूर सल्ल. ने ख़ुद इसे गढ़ लिया है, ऐसा हरगिज़ नहीं, बल्कि यह तो यक़ीनन ख़ुदा का कलाम है। इसलिये नाज़िल हुआ है कि हुज़ूर सल्ल. उस क़ौम को आगाह कर दें जिनके पास आपसे पहले कोई और पैग़म्बर नहीं आया ताकि वे हक़ की इत्तिबा (पैरवी) करके निजात हासिल कर लें।

अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को और उस मख़्लूक़ को जो इन दोनों के दरमियान है, छह दिन में पैदा किया, फिर अ़र्श पर क़ायम हुआ। उसके अ़लावा न तुम्हारा कोई मददगार है और न कोई सिफ़ारिश करने वाला। सो क्या तुम समझते नहीं हो? (4) वह आसमान से लेकर ज़मीन तक हर मामले की तदबीर करता है, फिर हर मामला उसी के हुज़ूर में पहुँच जाएगा, एक ऐसे दिन में जिसकी मिक़्दार	اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ○ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ

يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝	"यानी मात्रा" तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार साल की होगी। (5) वही पोशीदा "छुपी" और ज़ाहिर चीज़ों का जानने वाला है। ज़बरदस्त, रहमत वाला है। (6)

Maktab E Ashraf

छह दिन

तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) अल्लाह है। उसने छह दिन में ज़मीन व आसमान बनाये, फिर अ़र्श पर क़रार पकड़ा। इसकी तफ़सीर गुज़र चुकी है। मालिक ख़ालिक़ वही है, हर चीज़ उसी के हाथ में है। तदबीरें सब कामों की वही करता है, हर चीज़ पर वही ग़ालिब है। उसके सिवा मख़्लूक़ का न कोई वाली न उसकी इजाज़त के बग़ैर कोई सिफ़ारिशी। ऐ वे लोगो! जो उसके सिवा दूसरों की इबादत करते हो, दूसरों पर भरोसा करते हो, क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझ सकते कि ऐसी बड़ी क़ुदरत वाला क्यों किसी को अपने कामों में शरीक बनाने लगा? वह नज़ीर से, वज़ीर व सलाहकार से, शरीक व साथी से पाक और बरी है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, न उसके अ़लावा कोई पालनहार है।

नसाई शरीफ़ में है, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि मेरा हाथ थामकर रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन व आसमान और इनके दरमियान की तमाम चीज़ें छह दिन में पैदा करके सातवें दिन अ़र्श पर क़ियाम किया। मिट्टी हफ़्ते के दिन बनी, पहाड़ इतवार के दिन, दरख़्त पीर के दिन, बुराईयाँ मंगल के दिन, नूर बुध के दिन, जानवर जुमेरात के दिन, आदम जुमे के दिन में अ़सर के बाद दिन की आख़िरी घड़ी में, उसे तमाम रू-ए-ज़मीन की मिट्टी से पैदा किया जिसमें सुर्ख़, स्याह, अच्छी, बुरी हर तरह की थी। यही वजह है कि आदम की औलाद (यानी इनसान) अपने अन्दर विभिन्न ख़ुसूसियतें और विशेषतायें रखती है। इमाम बुख़ारी रह. इस हदीस को सही नहीं समझते, वह फ़रमाते हैं कि एक दूसरी सनद से रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने कअ़बे अहबार के वास्ते से यह बयान किया है और हज़राते मुहद्दिसीन रह. ने भी इसे नाक़ाबिले एतिबार बताया है। वल्लाहु आलम।

उसका हुक्म सातों आसमानों के ऊपर से उतरता है और सातवीं ज़मीन के नीचे तक पहुँचता है। जैसे एक दूसरी आयत में है:

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ.

अल्लाह तआ़ला ने सात आसमान बनाये और उन्हीं की तरह ज़मीनें (हो सकता है इससे मुराद यह हो कि सात ज़मीनें, और हो सकता है यह मुराद हो कि आसमानों की तरह एक के ऊपर एक)। उसका हुक्म इस सब के दरमियान उतरता है। आमाल अपने दीवान की तरफ़ उठाये और चढ़ाये जाते हैं, जो दुनिया वाले आसमान के ऊपर है। ज़मीन से पहले आसमान तक पाँच सौ साल का फ़ासला है और इतनी ही उसकी जसामत (साईज़ और मोटाई) है। इतना उतरना चढ़ना ख़ुदा की क़ुदरत से फ़रिश्ता एक आँख झपकने में कर लेता है। इसी लिये फ़रमाया कि एक दिन में जिसकी मिक़्दार (मात्रा) तुम्हारी गिनती के एतिबार से एक हज़ार साल की है। इन मामलात पर तदबीर व व्यवस्था करने वाला ख़ुदा है। वह अपने बन्दों के आमाल से

Maktab E Ashraf

बाख़बर है। सब छोटे बड़े अमल उसकी तरफ़ चढ़ते हैं, वह ग़ालिब है जिसने हर चीज़ को अपने मातहत कर रखा है। तमाम बन्दे और सब की गर्दनें उसके सामने झुकी हुई हैं (यानी उसके सामने सब बेबस हैं और चाहते न चाहते हुए उसके सामने झुकने पर मजबूर हैं)। वह अपने मोमिन बन्दों पर बहुत ही मेहरबान है, वह ग़ालिब है अपनी रहमत में और रहीम है अपनी इज़्ज़त में।

الَّذِیْٓ اَحْسَنَ کُلَّ شَیْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِیْنٍ ۝ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِیْنٍ ۝ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَکُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْکُرُوْنَ ۝

जिसने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई, और इनसान की पैदाईश मिट्टी से शुरू की। (7) फिर उसकी नस्ल को ख़ुलासा-ए-अख़्लात यानी एक बेक़द्र पानी से बनाया। (8) फिर उसके आज़ा "यानी अंग और हिस्से" दुरुस्त किए और उसमें अपनी रूह फूँकी, और तुमको कान और आँखें और दिल दिए, तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो, (यानी नहीं करते)। (9)

अल्लाह की बनाई हुई हर चीज़ में ख़ूबी है

फ़रमाता है कि ख़ुदा तबारक व तआ़ला ने हर चीज़ को क़रीने (बेहतरीन अन्दाज़) से बेहतर तरकीब पर ख़ूबसूरत बनाया है। हर चीज़ की पैदाईश कितनी उम्दा कैसी स्थिर और मज़बूत है। आसमान व ज़मीन की पैदाईश, साथ ही ख़ुद इनसान की पैदाईश पर ग़ौर करो। इसका शुरू देखो कि मिट्टी से पैदा हुआ है। इनसानों के बाप हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम मिट्टी से पैदा हुए। फिर उनकी नस्ल नुत्फ़े (वीर्य के क़तरे) से जारी रखी, जो मर्द की पीठ और औ़रत के सीने से निकलता है। फिर उसे यानी आदम को मिट्टी से पैदा करने के बाद ठीक-ठाक और दुरुस्त किया और उसमें अपने पास से रूह फूँकी। तुम्हें कान, आँख, समझ अ़ता फ़रमाई। अफ़सोस लेकिन यह अ़जीब बात है कि फिर भी तुम शुक्र नहीं करते, नेक अन्जाम वाला और कामयाब वह शख़्स है जो ख़ुदा की दी हुई ताक़तों को उसी की राह में ख़र्च करता है। अल्लाह की शान बड़ी और उसकी ज़ात पाक है।

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِی الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِیْ خَلْقٍ جَدِیْدٍ ؕ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ کٰفِرُوْنَ ۝ قُلْ یَتَوَفّٰىکُمْ مَّلَکُ الْمَوْتِ الَّذِیْ وُکِّلَ بِکُمْ ثُمَّ اِلٰی رَبِّکُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝ ع

और ये लोग कहते हैं कि जब हम ज़मीन में नेस्त-नाबूद हो गए तो क्या हम फिर नए जन्म में आएँगे? बल्कि वे लोग अपने रब से मिलने के इनकारी ही हैं। (10) आप फ़रमा दीजिए कि तुम्हारी जान मौत का फ़रिश्ता क़ब्ज़ करता है जो तुम पर मुतैयन है। फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाकर लाए जाओगे। (11)

एक बेहूदा ख़्याल

काफ़िरों का अ़क़ीदा बयान हो रहा है कि वे मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने के क़ायल नहीं और इसे

Maktab E Ashraf

वे मुहाल (नामुम्किन) जानते हैं। चुनाँचे कहते हैं कि जब हमारे रेज़े-रेज़े (टुकड़े-टुकड़े) हो जायेंगे और हम मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो जायेंगे फिर क्या हम नये सिरे से बनाये जा सकते हैं? अफ़सोस कि ये लोग अपने ऊपर ख़ुदा को भी क़ियास करते हैं और अपनी सीमित क़ुदरत पर ख़ुदा की ग़ैर-महदूद (असीमित) क़ुदरत का अन्दाज़ा करते हैं। मानते हैं, जानते हैं कि ख़ुदा ने पहली बार में पैदा किया है, ताज्जुब है कि फिर दोबारा पैदा करने पर उसे क़ादिर क्यों नहीं मानते? हालाँकि उसका तो सिर्फ़ फ़रमान चलता है। जहाँ कहा यूँ हो जा, वैसा ही हो गया। इसी लिये फ़रमा दिया गया कि इन्हें अपने परवर्दिगार की मुलाक़ात से इनकार है। इसके बाद की आयत में फ़रमाया कि 'मलकुल-मौत' जो तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर हैं वह तुम्हें फ़ौत कर देंगे। इस आयत से बज़ाहिर तो यही मालूम होता है कि 'मलकुल-मौत' (मौत का फ़रिश्ता) एक फ़रिश्ते का लक़ब है। हज़रत बरा की हदीस जिसका बयान सूरः इब्राहीम में गुज़र चुका है उससे भी पहली बात यही समझ में आती है और बाज़ क़ौल और रिवायतों में उनका नाम इज़्राईल भी है, और यही मशहूर है। हाँ उनके साथी और उनके साथ काम करने वाले और फ़रिश्ते भी हैं जो जिस्म से रूह को निकालते हैं और नरख़रे तक पहुँच जाने के बाद मलकुल-मौत उसे ले लेते हैं। उनके लिये ज़मीन समेट दी गई है और ऐसी है जैसी हमारे सामने कोई सेनी (थाली और परात) रखी हुई हो कि जो चाहा उठा लिया। एक मुर्सल हदीस भी इस मज़मून की है और इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल भी है।

इब्ने अबी हातिम में है कि एक अन्सारी शख़्स के सिरहाने 'मलकुल-मौत' को देखकर रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मलकुल-मौत मेरे सहाबी के साथ आसानी कीजिये। आपने जवाब दिया कि ऐ अल्लाह के नबी! इत्मीनान रखिये और दिल ख़ुश कीजिये वल्लाह मैं ख़ुद ईमान वालों के साथ बहुत ही नर्मी करने वाला हूँ। सुनिये! या रसूलल्लाह क़सम है उस ख़ुदा की, तमाम दुनिया के हर कच्चे पक्के घर में चाहे वह ख़ुश्की में हो या तरी में, हर दिन में मेरे पाँच फेरे होते हैं। हर छोटे बड़े को मैं उससे भी ज़्यादा जानता हूँ जितना वह ख़ुद अपने आपको जानते हों। या रसूलल्लाह! यक़ीन मानिये ख़ुदा की क़सम मैं तो एक मच्छर की जान क़ब्ज़ करने की भी क़ुदरत नहीं रखता जब तक कि मुझे ख़ुदा का हुक्म न हो जाये। हज़रत जाफ़र का बयान है कि मलकुल-मौत का दिन में पाँच वक़्त एक-एक शख़्स की देखभाल करना यही है कि आप पाँचों नमाज़ों के वक़्त देख लिया करते हैं कि अगर वह नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाला है तो फ़रिश्ते उसके क़रीब रहते हैं, शैतान उससे दूर रहता है और उसके आख़िरी वक़्त में फ़रिश्ता उसे 'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह' की तलक़ीन करता है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि हर दिन हर घर पर मलकुल-मौत दो दफ़ा आते हैं। कअ़बे अहबार इसके साथ यह भी फ़रमाते हैं कि हर दरवाज़े पर ठहर कर दिन भर में सात मर्तबा नज़र मारते हैं कि इसमें कोई वह तो नहीं जिसकी रूह निकालने का हुक्म हो चुका हो। फिर क़ियामत के दिन सब का लौटना अल्लाह की तरफ़ है। क़ब्रों से निकल कर मैदाने मेहशर में ख़ुदा के सामने हाज़िर होकर अपनी-अपनी करनी का फल पायेंगे।

और अगर आप देखें तो अ़जीब हाल देखें, जबकि ये मुजरिम अपने रब के पास सर झुकाए होंगे, कि ऐ हमारे परवर्दिगार! बस हमारी आँखें और कान खुल गए। सो हमको फिर भेज	وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا

Maktab E Ashraf

مُوْقِنُوْنَo وَلَوْشِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ o فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَo

दीजिए, हम नेक काम करेंगे हमको पूरा यक़ीन आ गया। (12) और अगर हमको मन्ज़ूर होता तो हम हर शख़्स को उसका रास्ता अ़ता फ़रमाते और लेकिन मेरी यह बात तय हो चुकी है कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इनसान दोनों से ज़रूर भरूँगा। (13) तो अब इसका मज़ा चखो कि तुम इस दिन के आने को भूले रहे। हमने तुमको भुला दिया, और अपने आमाल की बदौलत हमेशा के अ़ज़ाब का मज़ा चखो। (14)

क़ियामत के दिन का मन्ज़र

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जब ये गुनाहगार अपना दोबारा जीना खुद अपनी आँखों से देख लेंगे और बहुत ही ज़िल्लत व अपमान के साथ शर्मिन्दा होकर गर्दनें झुकाये खुदा के सामने खड़े होंगे, उस वक़्त कहेंगे कि खुदाया हमारी आँखें बीना (देखने वाली) हो गईं, कान खुल गये, अब हम तेरे अहकाम के पालन के लिये हर तरह तैयार हैं। उस दिन ख़ूब सोच-समझ वाले, दाना बीना हो जायेंगे। अन्धापन और बेहरापन जाता रहेगा, खुद अपने आपको मलामत करने लगेंगे और जहन्नम में जाते हुए कहेंगे कि अगर कानों और आँखों से दुनिया में काम लेते तो आज जहन्नमी न बनते। अब अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ करेंगे कि हमें फिर दुनिया में भेज दे तो हम नेक आमाल कर आयें, हमें अब यक़ीन आ गया कि तेरी मुलाक़ात (यानी तेरे सामने अपने आमाल का हिसाब देने के लिये हाज़िर होना) यक़ीनी है, तेरा कलाम हक़ है। लेकिन खुदा को मालूम है कि ये लोग अगर दोबारा भी भेजे जायें तो यही लच्छन करेंगे, फिर खुदा की आयतों को झुठलायेंगे, दोबारा नबियों को सतायेंगे। जैसा कि खुद क़ुरआने करीम की इस आयत में हैः

وَلَوْتَرٰٓى اِذْوُقِفُوْا عَلَى النَّارِ........الخ

(सूरः अन्आ़म आयत 27-29)

इसी लिये यहाँ फ़रमाता है कि अगर हम चाहते तो हर शख़्स को हिदायत देते। जैसे फ़रमान है कि अगर तेरा रब चाहता तो ज़मीन का एक-एक रहने वाला मोमिन बन जाता (लेकिन यह ज़बरदस्ती का ईमान होता, अपनी पसन्द और इख़्तियार का न होता, और इख़्तियारी ईमान की क़ीमत है) लेकिन खुदा का फ़ैसला हो चुका है कि इनसान और जिन्नात से जहन्नम भरी जानी है (यानी जब ईमान लाने और अल्लाह की तरफ़ से दिये हुए इख़्तियार को सही इस्तेमाल नहीं करेंगे तो जहन्नम को भरेंगे), यह अटल बात है। अल्लाह की ज़ात से और उसके पूरे-पूरे कलिमात से हम उसके तमाम अ़ज़ाबों से पनाह चाहते हैं।

जहन्नमियों से बतौर डाँट-डपट के कहा जायेगा कि इस दिन की मुलाक़ात को भुला बैठने का मज़ा चखो और इसके झुठलाने का ख़मियाज़ा भुगतो। इसे मुहाल समझ कर तुमने वह मामला किया कि जो एक भूलने वाला करता है। अब हम भी तुम्हारे साथ यही सुलूक करेंगे। खुदा की ज़ात वास्तविक भूल से पाक

Maktab E Ashraf

है, यह तो सिर्फ़ बदले के तौर पर फ़रमाया गया है। चुनाँचे एक और आयत में हैः

اَلْيَوْمَ نَنْسٰكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا...... الخ

कि आज हम तुम्हें भूल जाते हैं जैसे तुम इस दिन की मुलाक़ात को भूले बैठे थे। अपने कुफ़्र व तकज़ीब (इनकार और झुठलाने) की वजह से अब हमेशा के अ़ज़ाब का मज़ा चखो। जैसे एक और जगह दूसरी आयत में हैः

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا......... الخ

वहाँ ठंडक और पानी न रहेगा, सिवाय गर्म पानी और लहू व पीप के और कुछ न होगा.......।

اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ (السجدة) تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ز وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ج جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

बस हमारी आयतों पर तो वे लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको वे आयतें याद दिलाई जाती हैं तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं, और अपने रब की पाकी और तारीफ़ बयान करने लगते हैं और वे लोग तकब्बुर नहीं करते। (15) ❁ (सज्दा) उनके पहलू सोने की जगहों "यानी बिस्तर व पलंग वग़ैरह" से अलग होते हैं, इस तौर पर कि वे लोग अपने रब को उम्मीद से और ख़ौफ़ से पुकारते हैं, और हमारी दी हुई चीज़ों में से ख़र्च करते हैं। (16) सो किसी शख़्स को ख़बर नहीं, जो-जो आँखों की ठंडक का सामान ऐसे लोगों के लिए ग़ैब के ख़ज़ाने में मौजूद है। यह उनको उनके आमाल का सिला मिला है। (17)

السجدة ٩

❁ सज्दा नम्बर - 9

ईमान वाले अल्लाह के सामने सज्दे में गिर पड़ते हैं

सच्चे ईमान वालों की निशानी यह है कि वे दिल के कानों से हमारी आवाज़ों को सुनते हैं और उन पर अ़मल करते हैं। ज़बानी हक़ मानते हैं और दिल से भी उसको बर्हक़ जानते हैं। सज्दा करते हैं और अपने रब की तस्बीह (पाकी) और हम्द (तारीफ़) बयान करते हैं, और हक़ की पैरवी से जी नहीं चुराते, न अकड़ते ऐंठते हैं। ये हरकतें तो काफ़िरों की हैं। जैसे फ़रमायाः

اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دَاخِرِيْنَ.

यानी मेरी इबादत से तकब्बुर करने (अकड़ने और घमण्ड करने) वाले ज़लील व ख़्वार होकर जहन्नम में जायेंगे।

उन सच्चे ईमान वालों की एक अ़लामत (निशानी) यह भी है कि वे रातों को नींद छोड़कर अपने बिस्तरों से अलग होकर नमाज़ें अदा करते हैं। तहज्जुद पढ़ते हैं, मग़रिब इशा के बीच (यानी अव्वाबीन) की नमाज़ भी बाज़ों ने मुराद ली है। कोई कहता है कि इससे मुराद इशा की नमाज़ का इन्तिज़ार है, और एक क़ौल यह भी है कि इससे इशा और सुबह की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ना मुराद है। वे ख़ुदा से दुआ़यें

करते हैं उसके अ़ज़ाब से निजात पाने के लिये और उसकी नेमतें हासिल करने के लिये, साथ ही सदक़ा ख़ैरात भी करते रहते हैं। अपनी हैसियत के मुताबिक़ अल्लाह की राह में देते रहते हैं। वे नेकियाँ भी करते हैं जिनका ताल्लुक़ उन्हीं की ज़ात से है और वे नेकियाँ भी हाथ से जाने नहीं देते जिनका ताल्लुक़ दूसरों से है। इन बेहतरीन नेकियों में सबसे बढ़े हुए वे हैं जो दर्जों में भी सबसे आगे हैं। यानी तमाम इनसानों और रसूलों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जैसा कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि. के शे'रों में है:

وَفِينَا رَسُوْلُ اللّٰهِ يَتْلُوْا كِتَابَهٗ   اِذَا انْشَقَّ مَشْرُوْقٌ مِنَ الصُّبْحِ سَاطِعُ

يَبِيْتُ يُجَافِيْ جَنْبَهٗ عَنْ فِرَاشِهٖ   اِذَا اسْتَثْقَلَتْ بِالْمُشْرِكِيْنَ الْمَضَاجِعُ

यानी हम में अल्लाह के रसूल सल्ल. हैं जो सुबह होते ही ख़ुदा की पाक किताब की तिलावत किया करते हैं। रातों को जबकि मुश्रिक लोग गहरी नींद में सोते हैं हुज़ूर सल्ल. की करवट आपके बिस्तर से अलग होती है।

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला दो शख़्सों से बहुत ही ख़ुश होता है, एक तो वह जो रात को मीठी नींद सोया हुआ है लेकिन अचानक अपने रब की नेमतें और उसकी सज़ायें याद करके उठ बैठता है, अपने नर्म व गर्म बिस्तरे को छोड़कर मेरे सामने खड़ा होकर नमाज़ शुरू कर देता है। दूसरा वह शख़्स जो एक ग़ज़वे (दीन के लिये लड़ाई) में है, काफ़िरों से लड़ते-लड़ते मुसलमानों का पाँसा कमज़ोर पड़ जाता है लेकिन यह शख़्स यह समझ कर कि भागने में ख़ुदा की नाराज़गी है और आगे बढ़ने में रब की रज़ामन्दी है, मैदान की तरफ़ लौटता है और काफ़िरों से जिहाद करता है। यहाँ तक कि अपना सर उसके नाम पर क़ुरबान कर देता है। अल्लाह तआ़ला फ़ख़्र से अपने फ़रिश्तों को उसे दिखाता है और उनके सामने उसके अ़मल की तारीफ़ करता है।

मुस्नद अहमद में है, हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं नबी सल्ल. के साथ एक सफ़र में था, सुबह के वक़्त मैं आपके क़रीब ही चल रहा था। मैंने पूछा ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! मुझे कोई ऐसा अ़मल बताईये जो मुझे जन्नत में पहुँचा दे और जहन्नम से दूर कर दे। आपने फ़रमाया तूने सवाल तो बड़े काम का किया लेकिन अल्लाह जिस पर आसान कर दे उस पर बहुत आसान है। सुन तू अल्लाह की इबादत करता रह, उसके साथ किसी को शरीक न कर, नमाज़ों की पाबन्दी कर, रमज़ान के रोज़े रख, बैतुल्लाह का हज कर, ज़कात अदा करता रह। अब मैं तुझे भलाईयों के दरवाज़े बतलाऊँ- रोज़ा ढाल है, सदक़ा गुनाहों को माफ़ करा देता है और इनसान की आधी रात की नमाज़। फिर आपने यह आयत "ततजाफ़ा जुनूबुहुम.......... तअ़मलून" (जिसकी तफ़सीर चल रही है, दो आयतें) तिलावत फ़रमाई। फिर फ़रमाया आ अब मैं तुझे इस बात के सर, इसके सुतून और इसके कोहान की बुलन्दी बतलाऊँ। इस तमाम काम का सर तो इस्लाम है, इसका सुतून नमाज़ है, इसके कोहान की बुलन्दी अल्लाह की राह का जिहाद है। फिर फ़रमाया अब मैं तुझे इन तमाम कामों के सरदार की ख़बर दूँ? फिर आपने ज़बान पकड़ कर फ़रमाया इसे रोके रख। मैंने कहा क्या हम अपनी बातचीत पर भी पकड़े जायेंगे? आपने फ़रमाया ऐ मुआ़ज़! अफ़सोस तुझे यह मालूम ही नहीं कि इनसान को औंधे मुँह जहन्नम में डालने वाली चीज़ तो उसकी ज़बान के किनारे ही हैं (यानी ज़बान का ग़लत इस्तेमाल है)। यही हदीस कई सनदों से नक़ल की गयी है। एक सनद में यह भी है कि इस 'ततजाफ़ा' को पढ़कर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- इससे मुराद बन्दे

Maktab E Ashraf

का रात की नमाज़ पढ़ना है। एक दूसरी रिवायत में हुज़ूर सल्ल. का यह फ़रमान है कि इनसान का आधी रात को क़ियाम करना (यानी तहज्जुद की नमाज़ पढ़ना)। फिर हुज़ूर सल्ल. का इसी आयत को तिलावत करना नक़ल किया गया है।

एक हदीस में है कि क़ियामत का दिन जबकि पहले व बाद के सब लोग मैदाने मेहशर में जमा होंगे तो एक मुनादी फ़रिश्ता बुलन्द आवाज़ से निदा करेगा जिसे तमाम मख़्लूक़ सुनेगी। वह कहेगा कि आज सब को मालूम हो जायेगा कि ख़ुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला कौन है। फिर लौटकर आवाज़ लगायेगा तो तहज्जुद-गुज़ार लोग उठ खड़े होंगे और गिनती में बहुत कम होंगे। हज़रत बिलाल रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब यह आयत उतरी हम लोग मज्लिस में बैठे थे और बाज़ सहाबा मग़रिब के बाद से लेकर इशा तक नमाज़ में मशग़ूल रहते थे। पस यह आयत नाज़िल हुई। इस हदीस की यही एक सनद है।

फिर फ़रमाता है कि उनके लिये जन्नत में क्या-क्या नेमतें और लज़्ज़तें छुपा-छुपाकर बना रखी हैं। उसका किसी को इल्म नहीं, चूँकि ये लोग भी छुपे तौर पर इबादत करते थे इसी तरह हमने भी पोशीदा तौर पर इनकी आँखों की ठंडक और इनके दिल का सुख तैयार कर रखा है, जो न किसी आँख ने देखा न किसी के दिल में गुज़रा। बुख़ारी की हदीसे क़ुदसी में है कि मैंने अपने बन्दों के लिये वे रहमतें और नेमतें मुहैया कर रखी हैं जो न किसी आँख के देखने में आईं न किसी कान के सुनने में, न किसी के दिल के सोचने में। इस हदीस को बयान फ़रमाकर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. (इस हदीस के रावी) ने कहा कि क़ुरआन की इस आयत को पढ़ लोः

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ.........الخ

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)

एक और रिवायत में फ़रमाने रसूलुल्लाह सल्ल. है कि जन्नत की नेमतें जिसे मिलीं वह कभी भी बेनेमत नहीं होगा। उनके कपड़े पुराने न होंगे, उनकी जवानी ढलेगी नहीं, उनके लिये जन्नत में वह है जो न किसी आँख ने देखा न किसी कान ने सुना, न किसी इनसान के दिल पर उसका वहम व गुमान और ख़्याल भी गुज़रा। (मुस्लिम)

एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने जन्नत का वस्फ़ (ख़ूबी और विशेषता) बयान करते हुए आख़िर में यही फ़रमाया और फिर यह आयत 'ततजाफ़ा जुनूबुहुम................यअ़लमून' तक तिलावत फ़रमाई। हदीसे क़ुदसी में है कि मैंने अपने बन्दों के लिये ऐसी नेमतें तैयार की हैं जो न आँखों ने देखी हैं न कानों न सुनी हैं, बल्कि तुम उनका अन्दाज़ा भी नहीं कर सकते। सही मुस्लिम शरीफ़ में है, हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन से अ़र्ज़ किया कि ऐ बारी तआ़ला! अदना जन्नती का क्या दर्जा है? जवाब मिला कि अदना जन्नती वह शख़्स है जो तमाम जन्नतियों के जन्नत में चले जाने के बाद आयेगा, उससे कहा जायेगा कि जन्नत में दाख़िल हो जा, वह कहेगा ख़ुदाया कहाँ जाऊँ? हर एक ने अपनी जगह पर क़ब्ज़ा कर लिया और अपनी चीज़ें संभाल ली हैं। उससे कहा जायेगा कि क्या तू इस पर ख़ुश है कि तेरे लिये इतना हो जितना दुनिया के किसी बहुत बड़े बादशाह के पास था? वह कहेगा परवर्दिगार मैं इस पर ख़ुश हूँ। अल्लाह फ़रमायेगा तेरे लिये इतना है और इतना ही और इतना ही और इतना ही और इतना ही और, पाँच गुना। यह कहेगा बस-बस ऐ रब! मैं राज़ी हो गया। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ये सब हमने तुझे दिया और इसका दस गुना और भी दिया और जिस चीज़ को तेरा दिल चाहे

Maktab E Ashraf

और जिससे तेरी आँखें ठंडी रहें। यह कहेगा मेरे परवर्दिगार! मेरी तो बाँछें खिल गईं, जी ख़ुश हो गया। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा ख़ुदाया! फिर आला दर्जे के जन्नती की क्या कैफ़ियत है? फ़रमाया ये वे लोग हैं जिनकी करामत (बड़ाई और रुतबा) मैंने अपने हाथ से बोई और उस पर अपनी मोहर लगा दी। फिर न तो किसी के देखने में आई, न किसी के सुनने में, न किसी के ख़्याल में उसके जैसी चीज़ का भी ख़्याल आया। यही मज़मून अल्लाह की किताब की इस आयत में है:

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ......... الخ

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)

हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल-वाहिद फ़रमाते हैं कि मुझे यह बात पहुँची है कि एक जन्नती अपनी हूर के साथ मुहब्बत व प्यार में सत्तर साल तक मशग़ूल रहेगा, किसी दूसरी चीज़ की तरफ़ उसका ध्यान ही नहीं जायेगा। फिर जो दूसरी की तरफ़ ध्यान करेगा तो देखेगा कि पहले से बहुत ज़्यादा ख़ूबसूरत और नूरानी शक्ल की एक और हूर है। वह उसे अपनी तरफ़ मुतवज्जह देखकर ख़ुश होकर कहेगी कि अब मेरी मुराद भी पूरी होगी। यह कहेगा तू कौन है? वह जवाब देगी मैं मज़ीद में से हूँ। अब यह पूरी तरह उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जायेगा। फिर सत्तर साल तक दूसरी तरफ़ देखेगा भी नहीं। इतनी मुद्दत के बाद फिर जो उसका ध्यान एक दूसरी तरफ़ होगा तो देखेगा कि उससे भी अच्छी एक और हूर है, वह कहेगी अब वक़्त आ गया है कि आप में मेरा हिस्सा भी हो। यह पूछेगा तुम कौन हो? वह जवाब देगी मैं उनमें से हूँ जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है- कोई नहीं जानता कि उनके लिये ख़ुदा तआ़ला ने उनकी आँखों की क्या-क्या ठंडक छुपा रखी हैं।

हज़रत सईद बिन जुबैर फ़रमाते हैं कि फ़रिश्ते बाज़ जन्नतियों के पास दुनिया के दिन के अन्दाज़े से हर दिन में तीन-तीन बार जन्नते अ़दन के ख़ुदाई तोहफ़े लेकर जायेंगे, जो उनकी जन्नत में नहीं होंगे। उसी का बयान इस आयत में है। वे फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि ख़ुदा तआ़ला तुम से ख़ुश है। हज़रत अबू यमान फ़ज़ारी या किसी और से नक़ल है कि जन्नत के सौ दर्जे हैं, पहला दर्जा चाँदी का है, उसकी ज़मीन भी चाँदी की, उसके महल भी चाँदी के, उसकी मिट्टी मुश्क है। दूसरा दर्जा सोने का है, ज़मीन भी सोने की, मकानात भी सोने के, बरतन भी सोने के, मिट्टी मुश्क है। तीसरी मोती की, ज़मीन भी मोती की, घर भी मोती के और मिट्टी मुश्क की। और बाक़ी सत्तानवे तो वे हैं जो न किसी आँख ने देखीं और न किसी कान ने सुनीं और न किसी इनसान के दिल में उनका ख़्याल भी गुज़रा। फिर इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। इब्ने जरीर में है, नबी करीम सल्ल. हज़रत रूहुल-अमीन (जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत करते हैं कि इनसान की नेकियाँ बुराईयाँ लाई जायेंगी। कुछ को कुछ से कम किया जायेगा, फिर एक नेकी भी बाक़ी बच गई तो अल्लाह तआ़ला उसे बढ़ा देगा और जन्नत में कुशादगी अ़ता फ़रमायेगा। रावी ने यज़दाद से पूछा कि नेकियाँ कहाँ चली गईं? तो उन्होंने इस आयत की तिलावत की:

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ مِنْهُمْ اَحْسَنَ مَاعَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ....... الخ

यानी ये वे लोग हैं जिनके अच्छे आमाल हमने कबूल फ़रमा लिये और इनकी बुराईयों से हमने दरगुज़र फ़रमा लिया (यानी माफ़ कर दिया)। रावी ने कहा फिर इस आयत के क्या मायने हैं?

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ............ الخ

Maktaba Ashraf

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर चल रही है)

फ़रमाया बन्दा जब कोई नेकी लोगों से छुपाकर करता है तो अल्लाह तआ़ला भी क़ियामत के दिन उसके आराम की चीज़ें जो उसके लिये छुपाकर रख छोड़ी थीं, अ़ता फ़रमायेगा।

اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ؕ لَا
يَسْتَوٗنَ ○ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۫ نُزُلًاۢ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا
فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ
يَّخْرُجُوْا مِنْهَآ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَقِيْلَ لَهُمْ
ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ
تُكَذِّبُوْنَ ○ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ
الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُوْنَ ○ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ
رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ
مُنْتَقِمُوْنَ ○ ع ٢ ١١ ١٥

तो जो शख़्स मोमिन हो क्या वह उस शख़्स जैसा हो जाएगा जो बेहुक्म 'यानी नाफ़रमान' हो, वे आपस में बराबर नहीं हो सकते। (18) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए सो उनके लिए हमेशा का ठिकाना जन्नतें हैं जो उनके आमाल के बदले में बतौर उनकी मेहमानी के हैं। (19) और जो लोग बेहुक्म थे सो उनका ठिकाना दोज़ख़ है, वे लोग जब उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए जाएँगे और उनको कहा जाएगा कि दोज़ख़ का वह अज़ाब चखो जिसको तुम झुठलाया करते थे। (20) और हम उनको क़रीब का (यानी दुनिया में आने वाला) अ़ज़ाब भी उस बड़े अ़ज़ाब से पहले चखा देंगे, ताकि ये लोग बाज़ आएँ। (21) और उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जिसको उसके रब की आयतें याद दिलाई जाएँ, फिर वह उनसे मुँह मोड़े, हम ऐसे मुजरिमों से बदला लेंगे। (22)

ये लोग एक दूसरे के बराबर तो नहीं हो सकते

अल्लाह तआ़ला के इन्साफ़ व करम का बयान इन आयतों में है कि उसके नज़दीक नेक काम करने वाले और बदकार बराबर नहीं। जैसे फ़रमान है:

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ....... الخ

यानी क्या इन लोगों ने जो बुराईयाँ कर रहे हैं यह समझ रखा है कि हम इन्हें ईमान वालों और नेक अ़मल वालों के जैसा कर देंगे? इनकी मौत और ज़िन्दगी बराबर होगी? ये कैसे बड़े मन्सूबे गाँठ रहे (यानी ख़्याली पुलाव पका रहे) हैं। एक और आयत में है:

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ..... الخ

Maktab E Ashraf

यानी ईमान वाले और नेक अ़मल करने वाले लोगों को क्या हम ज़मीन के फ़सादियों के बराबर कर दें? परहेज़गारों को गुनाहगारों के बराबर कर दें? एक और आयत में है:

لَايَسْتَوِىْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ........ الخ

कि दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं।

यहाँ भी फ़रमाया कि मोमिन और काफ़िर क़ियामत के दिन एक मर्तबे के नहीं। कहते हैं कि यह आयत उक़्बा बिन अबी मुईत के बारे में नाज़िल हुई है। फिर इन दोनों क़िस्मों का तफ़सीली बयान फ़रमाया कि जिसने अपने दिल से कलामे ख़ुदा की तस्दीक़ की और उसके मुताबिक़ अ़मल भी किया हो तो उन्हें वे जन्नतें मिलेंगी जिनमें मकानात हैं, ऊँचे बालाख़ाने हैं और रिहाईशी आराम के तमाम सामान हैं। यह उनके अच्छे आमाल के बदले में उनकी मेहमानदारी होगी। और जिन लोगों ने इताअ़त छोड़ दी उनकी जगह जहन्नम में होगी, जिसमें से वे निकल न सकेंगे। जैसे एक और आयत में है:

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا.

यानी जब कभी वहाँ के ग़म से छुटकारा चाहेंगे दोबारा वहीं झोंक दिये जायेंगे।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ रह. फ़रमाते हैं कि वल्लाह उनके हाथ-पाँव बंधे हुए होंगे। आग के शोले उन्हें ऊपर नीचे लेकर जा रहे होंगे। फ़रिश्ते उन्हें सज़ायें दे रहे होंगे और झिड़क कर फ़रमाते होंगे कि इस जहन्नम के अ़ज़ाब का लुत्फ़ उठाओ जिसे तुम झूठा जानते थे। 'अ़ज़ाबे अदना' (क़रीब के अ़ज़ाब) से मुराद दुनियावी मुसीबतें आफ़तें दुख दर्द और बीमारियाँ हैं। ये इसलिये होती हैं कि इनसान होशियार हो जाये, ख़ुदा की तरफ़ झुक जाये और बड़े अ़ज़ाबों से निजात हासिल कर ले। एक क़ौल यह भी है कि इससे मुराद और गुनाहों की वह मुक़र्रर की हुई सज़ायें हैं जो दुनिया में दी जाती हैं, जिन्हें शरई इस्तिलाह (परिभाषा) में हुदूद कहते हैं। और यह भी है कि इससे मुराद अ़ज़ाबे क़ब्र है। नसाई में है कि इससे मुराद क़हत-सालियाँ (सूखा और अकाल) हैं। हज़रत उबई फ़रमाते हैं कि चाँद का फट जाना, धुएँ का आना और पकड़ और बरबाद करने वाले अ़ज़ाब मुराद हैं, और बदर वाले दिन उन कुफ़्फ़ार का क़ैद होना और क़त्ल किया जाना। क्योंकि बदर की उस शिकस्त ने मक्के के घर-घर को मातम-कदा (मातम का स्थल) बना दिया था। उन अ़ज़ाबों की तरफ़ इस आयत में इशारा है।

फिर फ़रमाता है कि जो ख़ुदा की आयतें सुनकर उनकी वज़ाहत (तफ़सीली बयान) को पाकर फिर उनसे मुँह मोड़े बल्कि उनका इनकार कर जाये उससे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा? हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह के ज़िक्र से मुँह न मोड़ो, ऐसा करने वाले बेइज़्ज़त, बेवक़्अ़त और बड़े गुनाहगार हैं। यहाँ भी फ़रमान होता है कि ऐसे गुनाहगारों से हम ज़रूर इन्तिक़ाम लेंगे। जनाबे रसूले ख़ुदा सल्ल. का फ़रमान है कि तीन काम जिसने किये वह मुजरिम हो गया। जिसने बेवजह कोई झुंड बाँधा, जिसने माँ बाप की नाफ़रमानी की, जिसने ज़ालिम के ज़ुल्म में उसका साथ दिया। ये लोग मुजरिम हैं और ख़ुदा का फ़रमान है कि हम मुजरिमों से पूछगछ करेंगे और उनसे पूरा बदला लेंगे। (इब्ने अबी हातिम)

और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को किताब दी थी, सो आप उसके मिलने में कुछ शक न	وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِىْ

Maktab E Ashraf

مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيٓ
اِسْرَآءِيْلَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ
بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ۗ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا
يُوْقِنُوْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝

कीजिए। और हमने उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत का ज़रिया बनाया था। (23) और हमने उनमें बहुत-से पेशवा "यानी रहनुमा" बना दिए थे जो हमारे हुक्म से हिदायत करते थे, जबकि वे लोग सब्र किए रहे और वे लोग हमारी आयतों का यक़ीन रखते थे। (24) आप का रब क़ियामत के दिन उन सबके दरमियान उन मामलों में फ़ैसला कर देगा जिनमें ये आपस में इख़्तिलाफ़ करते थे। (25)

फ़ैसले का दिन

इरशाद फ़रमाता है कि हमने मूसा को तौरात दी, तू उसकी मुलाक़ात के बारे में शक व शुब्हे में न रह। क़तादा रह. फ़रमाते हैं यानी मेराज वाली रात में। हदीस में है कि मैंने मेराज वाली रात हज़रत मूसा बिन इमरान अ़लैहिस्सलाम को देखा कि वह गन्दुमी रंग के, लम्बे क़द के, घुंघरियाले बालों वाले थे। ऐसे जैसे क़बीला-ए-शनवा के आदमी होते हैं। उसी रात मैंने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को भी देखा, वह दरमियानी क़द के, सुर्ख़ व सफ़ेद थे, सीधे बाल थे। मैंने उसी रात हज़रत मालिक को देखा जो जहन्नम के दारोग़ा हैं, और दज्जाल को देखा। ये सब निशानियों में से हैं जो ख़ुदा तआ़ला ने आपको दिखायीं, पस तू उनकी मुलाक़ात में शक व शुब्हा न कर। आपने यक़ीनन मूसा को देखा और उनसे मिले जिस रात आपको मेराज कराई गई। मूसा को हमने बनी इस्राईल का हादी बनाया और यह भी हो सकता है कि इस किताब को हमने इस्राईलियों की हिदायत बनाई। जैसे सूरः बनी इस्राईल में है:

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيٓ اِسْرَآئِيْلَ ....الخ

यानी हमने मूसा को किताब दी और उस किताब को बनी इस्राईल के लिये हादी (रहनुमाई करने वाली) बनाया, कि तुम मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न समझो।

फिर फ़रमाता है कि चूँकि वह अल्लाह तआ़ला के अहकाम की तामील, उसकी नाफ़रमानियों के छोड़ने और उसकी बातों की तस्दीक़ और उसके रसूलों की इत्तिबा पर सब्र से जमे रहे, हमने उनमें से हिदायत के पेशवा बना दिये जो अल्लाह के अहकाम लोगों को पहुँचाते हैं, भलाई की तरफ़ बुलाते हैं, बुराईयों से रोकते हैं। लेकिन जब उनकी हालत बदल गई, उन्होंने अल्लाह के कलाम में तब्दील व उलट-फेर शुरू कर दी तो अल्लाह ने भी उनसे यह मन्सब (पद और सम्मान) छीन लिया और उनके दिल सख़्त कर दिये। नेक अ़मल और सही अ़क़ीदे से वे मेहरूम हो गये। पहले तो ये दुनिया से बचे हुए थे। हज़रत सुफ़ियान रह. फ़रमाते हैं ये लोग ऐसे ही थे, इनसान को लायक़ है कि उसका कोई पेशवा हो, जिसकी यह पैरवी करके दुनिया से बचा हुआ रहे। आप फ़रमाते हैं कि दीन के लिये इल्म ज़रूरी है जैसे जिस्म के लिये गिज़ा ज़रूरी है।

हज़रत सुफ़ियान रह. से हज़रत अ़ली रज़ि. के इस क़ौल के बारे में सवाल हुआ कि सब्र का दर्जा ईमान में कैसा है? फ़रमाया ऐसा है जैसा सर का जिस्म में। क्या तूने ख़ुदा के इस फ़रमान को नहीं सुना कि हमने उनके सब्र की वजह से ऐसा पेशवा बना दिया कि वे हमारे हुक्म की हिदायत करते थे। आपने

फ़रमाया मतलब यह है कि चूँकि उन्होंने तमाम कामों के सर को ले लिया, अल्लाह ने भी उन्हें पेशवा (बड़ा और रहनुमा) बना दिया। चुनाँचे फ़रमान है कि हमने बनी इस्राईल को किताब, हिक्मत और नुबुव्वत दी और हलाल रोज़ियाँ इनायत फ़रमाई और जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी......। यहाँ भी आयत के आख़िर में फ़रमाया कि जिन अक़ीदों व आमाल में इनका इख़्तिलाफ़ (मतभेद और विवाद) है उनका फ़ैसला क़ियामत के दिन ख़ुद बारी तआ़ला कर देगा।

Maktab E Ashraf

क्या उनको इस बात से रहनुमाई नहीं हुई कि हम उनसे पहले कितनी उम्मतें हलाक कर चुके हैं जिनके रहने की जगहों में ये लोग आते-जाते हैं, इसमें साफ़ निशानियाँ हैं, क्या ये लोग सुनते नहीं हैं? (26) क्या उन्होंने इस बात पर नज़र नहीं की कि हम सूखी पड़ी ज़मीन की तरफ़ पानी पहुँचाते हैं। फिर उसके ज़रिये से खेती पैदा करते हैं, जिससे उनके मवेशी और वे ख़ुद भी खाते हैं, तो क्या वे देखते नहीं? (27)	اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ۭ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ○ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ۭ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ○

स्पष्ट और खुली निशानियाँ

क्या ये इस बात के मालूम होने और समझने के बाद भी सही रास्ते पर नहीं चलते कि इनसे पहले भी गुमराहों को हमने नेस्त-नाबूद कर दिया है। आज उनके निशानात तक मिट गये। उन्होंने भी रसूलों को झुठलाया, ख़ुदा की बातों से बेपरवाही की। अब न झुठलाने वाले भी उन्हीं के मकानों में रहते-सहते हैं, उनकी वीरानी उनके अगले मालिकों की हलाकत व तबाही इनके सामने है लेकिन फिर भी ये इबरत (सबक़) हासिल नहीं करते। इसी बात को क़ुरआने हकीम ने कई जगह बयान फ़रमाया है कि यह ग़ैर-आबाद (वीरान पड़े) खंडर यह उजड़े हुए महल तो तुम्हारी आँखों को और तुम्हारे कानों को खोलने के लिये अपने अन्दर बहुत सी निशानियाँ रखते हैं। देख लो कि ख़ुदा की बातें न मानने का, रसूलों को कमतर समझने और उनका अपमान करने का कितना बुरा अन्जाम हुआ। क्या तुम्हारे कान उनकी ख़बरों से ना-अशना हैं? फिर अल्लाह तआ़ला अपने लुत्फ़ व करम और एहसान व इनाम को बयान फ़रमा रहा है कि वह आसमान से पानी उतारता है, पहाड़ों से ऊँची जगह से सिमट कर नालों के नदियों के दरियाओं के ज़रिये वह इधर-उधर फैल जाता है। बंजर ग़ैर-आबाद ज़मीन उससे हरियाली वाली हो जाती है। अगरचे मुफ़स्सिरीन का क़ौल यह भी है कि 'जुरुज़' (ख़ुश्क पड़ी ज़मीन) मिस्र की ज़मीन है, लेकिन यह ठीक नहीं, हाँ मिस्र में भी ऐसी ज़मीन हो तो हो आयत में मुराद तमाम वह हिस्से हैं जो सूख गये हों, जो पानी के मोहताज हों, मख़्त हो गये हों, ज़मीन अपने सूखेपन की वजह से फटने लगी हो। बेशक मिस्र की ज़मीन भी गर्मी है, दरिया-ए-नील से वह सेराब की जाती है, हब्शा की बारिशों का पानी अपने साथ सुर्ख़ रंग की मिट्टी को भी घसीटता जाता है और मिस्र की ज़मीन जो नमकीली और रेतीली है वह उस पानी और उस

Maktab E Ashraf

मिट्टी से खेती के क़ाबिल बन जाती है, और हर साल हर फ़स्ल का ग़ल्ला ताज़ा पानी से उन्हें मयस्सर आता है, जो इधर-उधर का होता है। उस हकीम व करीम, मन्नान व रहीम की ये सब मेहरबानियाँ हैं। उसी की ज़ात क़ाबिले तारीफ़ है।

रिवायत है कि जब मिस्र फ़तह हुआ तो मिस्र वाले बुऊना महीने में हज़रत अ़मर बिन आ़स रज़ि. के पास आये और कहने लगे हमारी पहले से चली आती (यानी पारम्परिक) आ़दत है कि इस महीने में दरिया-ए-नील की भेंट चढ़ाते हैं और अगर न चढ़ायें तो दरिया में पानी नहीं आता। हम ऐसा करते हैं कि इस महीने की बारहवीं तारीख़ को एक कुँवारी लड़की को लेते हैं जो अपने माँ-बाप की इकलौती हो, उसके वालिदैन को दे-दिलाकर रज़ामन्द कर लेते हैं और उसे बहुत उम्दा कपड़े और बहुत क़ीमती ज़ेवर पहनाकर बना-संवारकर इस नील में डाल देते हैं तो इसका बहाव चढ़ता है। मिस्र के फ़ातेह सिपह-सालार हज़रत अ़मर बिन आ़स रज़ि. ने जवाब दिया कि यह एक जाहिलाना और अहमक़ाना रस्म है। इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता, इस्लाम तो ऐसी आ़दतों को मिटाने के लिये आया है, तुम अब ऐसा नहीं कर सकते। वे अपनी इस रस्म से रुक गये लेकिन दरिया-ए-नील का पानी नहीं चढ़ा। एक माह पूरा निकल गया लेकिन दरिया ख़ुश्क पड़ा हुआ है, लोग तंग आकर इरादा करने लगे कि मिस्र को छोड़ दें, यहाँ की रिहाईश छोड़ दें। अब हज़रत अ़मर बिन आ़स को चिंता हुई और दरबारे ख़िलाफ़त को इससे अवगत कराया। उसी वक़्त ख़लीफ़तुल-मुस्लिमीन अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. की तरफ़ से जवाब मिला कि आपने जो किया अच्छा किया, अब मैं अपने ख़त में एक पर्चा दरिया-ए-नील के नाम भेज रहा हूँ तुम उसे लेकर दरिया-ए-नील में डाल दो।

हज़रत अ़मर बिन आ़स रज़ि. ने उस पर्चे को निकाल कर पढ़ा तो उसमें लिखा था- यह ख़त ख़ुदा के बन्दे अमीरुल-मोमिनीन उमर की तरफ़ से मिस्र वालों के दरिया-ए-नील की तरफ़ है। अल्लाह की तारीफ़ और रसूले करीम पर दुरूद व सलाम के बाद तहरीर यह है कि अगर तू अपनी तरफ़ से और अपनी मर्ज़ी से चल रहा है तो ख़ैर न चल, और अगर अल्लाह तआ़ला वाहिद व क़हहार तुझे जारी रखता है तो हम अल्लाह से दुआ़ माँगते हैं कि वह तुझे जारी कर दे। यह पर्चा लेकर हज़रत अ़मर बिन आ़स ने दरिया-ए-नील में डाल दिया। अभी एक रात भी न गुज़रने पाई थी कि दरिया-ए-नील में सोलह हाथ गहरा पानी चलने लगा और उसी वक़्त मिस्र की ख़ुश्क-साली तर-साली से, महंगाई सस्ते भाव और मन्दी से बदल गई। ख़त के साथ ही पूरा का पूरा इलाक़ा सरसब्ज़ (हरा-भरा) हो गया और दरिया पूरी रवानी से बहता रहा, उसके बाद हर साल जो जान (यानी बली) चढ़ाई जाती थी वह बच गई और मिस्र से इस नापाक रस्म का हमेशा के लिये ख़ात्मा हुआ। (किताबे सुन्नत- हाफ़िज़ अबू क़ासिम लालकाई)

इसी आयत के जैसे मज़मून की आयत यह भी है:

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ......... الخ

यानी इनसान अपनी ग़िज़ा (खाने की चीज़ों) को देखे कि हमने बारिश की और ज़मीन फाड़कर अनाज और फल पैदा किये। इसी तरह यहाँ भी बयान फ़रमाया- क्या ये लोग इसे नहीं देखते? हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि 'जुरुज़' वह ज़मीन है जिस पर बारिश नाकाफ़ी बरसती है, फिर नालों और नहरों के पानी से वह सैराब होती है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यह ज़मीन यमन में है। हसन रह. फ़रमाते हैं कि ऐसी बस्तियाँ यमन और शाम में हैं। इब्ने ज़ैद रह. वग़ैरह का क़ौल है यह वह ज़मीन है जिसमें पैदावार न

Maktab E Ashraf

हो और गुबार-आलूद (धूल भरी) हो। इसी को इस आयत में बयान फ़रमाया है:

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ........ الخ

कि उनके लिये मुर्दा ज़मीन भी एक निशानी है जिसको हम ज़िन्दा कर देते हैं.........।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ۝ ع ۳ ۸ ۱۶

और ये लोग कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह फ़ैसला कब होगा? (28) आप फ़रमा दीजिए कि उस फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उनका ईमान लाना नफ़ा न देगा, और उनको मोहलत भी न मिलेगी। (29) सो उनकी बातों का ख़्याल न कीजिए और आप इन्तिज़ार कीजिए, ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं। (30)

फ़तह का दिन

काफ़िर लोग एतिराज़ और ताने के तौर पर कहा करते थे कि ऐ नबी! तुम जो कहा करते हो और अपने साथियों को भी मुत्मईन कर दिया है कि तुम हम पर फ़तह पाओगे और हमसे बदला लोगे, वह वक़्त कब आयेगा? हम तो मुद्दतों से तुम्हें मग़लूब, पस्त और बेवक़्अत (बेहैसियत) देख रहे हैं। छुप रहे हो, डर रहे हो, अगर सच्चे हो तो अपने ग़लबे और अपनी फ़तह का वक़्त तो बतलाओ। अल्लाह फ़रमाता है कि जब अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाता है और जब उसका ग़ुस्सा और ग़ज़ब उतरता है चाहे दुनिया में हो चाहे आख़िरत में, उस वक़्त का न ईमान नफ़ा देता है न मोहलत मिलती है। जैसे फ़रमान है:

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ........ الخ

यानी जब इनके पास ख़ुदा के पैग़म्बर दलीलें लेकर आये तो ये अपने हर इल्म पर इतराने लगे........।

इससे मक्का की फ़तह मुराद नहीं, फ़त्हे-मक्का वाले दिन तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने काफ़िरों का इस्लाम लाना क़ुबूल फ़रमाया था और तक़रीबन दो हज़ार आदमी उस दिन मुसलमान हुए थे। अगर इस आयत में यही फ़त्हे-मक्का मुराद होती तो चाहिये था कि ख़ुदा के पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम उनका इस्लाम क़ुबूल न फ़रमाते, जैसे इस आयत में है कि उस दिन काफ़िरों का इस्लाम लाना ग़ैर-मक़बूल (ग़ैर-मोतबर और अस्वीकारीय) होगा, बल्कि यहाँ मुराद फ़तह से फ़ैसला है। जैसे क़ुरआन में एक दूसरी जगह है:

فَافْتَحْ بَيْنِىْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا.

हमारे बीच तू फ़तह कर, यानी फ़ैसला कर। और जैसे एक और मक़ाम पर है:

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ.

यानी अल्लाह तआ़ला हमें जमा करेगा, फिर हमारे आपस के फ़ैसले फ़रमायेगा। एक और आयत में है:

اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ.

कि अगर तुम फ़ैसले के इच्छुक हो तो लो फ़तह आ गई।

Muftah E Ashraf

फिर फरमाता है कि आप इन मुश्रिकों से बेपरवाह हो जाईये, जो रब ने उतारा है उसे पहुँचाते रहिये। जैसे एक दूसरी आयत में है कि अपने रब की 'वही' की इत्तिबा करो, उसके सिवा कोई और माबूद नहीं....। फिर फ़रमाया कि तुम अपने रब के वायदों को सच्चा मान लो, उसकी बातें अटल हैं। उसके फ़रमान सच्चे हैं, वह जल्द ही तुझे तेरे मुख़ालिफ़ों पर ग़ालिब कर देगा, वह वायदा-ख़िलाफ़ी से पाक है। यह भी इन्तिज़ार (प्रतीक्षा) कर रहे हैं, चाहते हैं कि आप पर कोई आफ़त आये, लेकिन इनकी ये तमन्नायें बेसूद हैं। अल्लाह तआ़ला अपने मुख़्लिस बन्दों को भूलता नहीं, न उन्हें छोड़ता है। भला जो रब के अहकाम पर जमे रहें, ख़ुदा की बातें दूसरों को पहुँचायें वे अल्लाह की ताईद और मदद से कैसे मेहरूम कर दिये जायेंगे। ये जो कुछ तुम पर देखना चाहते हैं वह इन पर उतरेगा। यही अल्लाह की फटकार में, हाय-वाय, वावेले में गिरफ़्तार किये जायेंगे। ख़ुदा-ए-क़ह्हार के अ़ज़ाब के शिकार होंगे। कह दो कि ख़ुदा हमें काफ़ी है और वही बेहतरीन कारसाज़ है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और लुत्फ़ व मेहरबानी से सूरः सज्दा की तफ़सीर संपन्न हुई।

सूरः अहज़ाब

सूरः अहज़ाब मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 73 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. ने पूछा कि सूरः अहज़ाब की कितनी आयतें हैं? आपने फ़रमाया तिहत्तर। हज़रत उबई बिन कअ़ब ने फ़रमाया नहीं नहीं! मैंने तो देखा है कि यह सूरत सूरः ब-क़रह के क़रीब-क़रीब थी। यह आयत भी इसी में पढ़ी जाती थीः

اَلشَّيْخُ وَالشَّيْخُوْخَةُ اِذَا زَنَيَا فَارْجُمُوْهَا الْبَتَّةَ نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ.

यानी जब बूढ़ा मर्द और बूढ़ी औ़रत बदकारी करें तो उन्हें ज़रूर संगसार करो, यह सज़ा ख़ुदा की तरफ़ से है, अल्लाह बड़ा ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (मुस्नद अहमद) इससे मालूम होता है कि इस सूरत की कुछ आयतें अल्लाह तआ़ला के हुक्म से मन्सूख़ कर दी (निरस्त कर दी और उठा ली) गयीं। वल्लाहु आलम।

يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ○ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ	ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! अल्लाह से डरते रहिए और काफ़िरों का और मुनाफ़िक़ों का कहना न मानिए, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा इल्म वाला, बड़ी हिक्मत वाला है। (1) और आपके परवर्दिगार की तरफ़ से जो

Maktab E Ashraf

رَبِّكَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ
وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
وَكِيْلًا ۝

हुक्म आप पर 'वही' किया जाता है उस पर चलिए, बेशक तुम लोगों के सब आमाल की अल्लाह तआला पूरी ख़बर रखता है। (2) और आप अल्लाह पर भरोसा रखिए और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है। (3)

अल्लाह तआ़ला पर भरोसा

तंबीह की एक प्रभावी और असरदार सूरत यह भी है कि बड़े को कहा जाये ताकि छोटा चौकन्ना हो जाये। जब अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कोई बात ताकीद से कहे तो ज़ाहिर है कि औरों पर वह ताकीद और भी ज़्यादा लागू होती है। तक़्वा इसे कहते हैं कि ख़ुदा तआ़ला की हिदायत के मुताबिक़ सवाब की तलब की नीयत से अल्लाह तआ़ला की इताअ़त की जाये और फ़रमाने बारी के मुताबिक़ उसके अ़ज़ाब से बचने के लिये उसकी नाफ़रमानियाँ छोड़ दी जायें। काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बातें न मानना, न उनके मश्विरों पर कारबन्द होना, न उनकी बातें क़बूलियत के इरादे से सुनना, इल्म व हिक्मत से उसकी कोई बात कोई फ़ेल हकीमाना नहीं होता, तू उसी की इताअ़त करता रह ताकि बुरे अन्जाम और बिगाड़ से बचा रहे। जो क़ुरआन व सुन्नत तेरी तरफ़ 'वही' हो रहा है उसकी पैरवी कर, अल्लाह पर किसी का कोई फ़ेल छुपा नहीं। अपने तमाम मामलात और हालात में अल्लाह तआ़ला की ज़ात पर ही भरोसा रख। अपने पर भरोसा करने वालों को वह काफ़ी है, क्योंकि तमाम कारसाज़ी पर वह क़ादिर है, उसकी तरफ़ झुकने वाला कामयाब ही कामयाब है।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ
وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰۗـىِٕيْ تُظٰهِرُوْنَ
مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَاۗءَكُمْ
اَبْنَاۗءَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ۭ
وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝
اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَاۗىِٕهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ
فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَاۗءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي
الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ۭ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ

अल्लाह तआ़ला ने किसी शख़्स के सीने में दो दिल नहीं बनाए, और तुम्हारी उन बीवियों को जिनसे तुम ज़िहार कर लेते हो तुम्हारी माँ नहीं बना दिया। और तुम्हारे मुँह-बोले बेटों को तुम्हारा (सचमुच का) बेटा नहीं बना दिया, यह सिर्फ़ तुम्हारे मुँह से कहने की बात है। और अल्लाह हक़ बात फ़रमाता है और वही सीधा रास्ता बतलाता है। (4) तुम उनको उनके बापों की तरफ़ मन्सूब किया करो, यह अल्लाह के नज़दीक रास्ती की बात है। और अगर तुम उनके बापों को न जानते हो तो वे तुम्हारे दीन के भाई हैं और तुम्हारे दोस्त हैं। और तुमको इसमें जो भूल-चूक हो जाए तो उससे तो तुम

Maktab_E_Ashraf

فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ○	पर कुछ गुनाह न होगा। लेकिन हाँ जो दिल से इरादा करके करो, और अल्लाह मग़फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (5)

इनसान के सीने में दो दिल नहीं

मक़सूद बयान करने से पहले बतौर मुक़द्दमे और सुबूत के मिसाल के तौर पर एक वह बात बयान फ़रमाई जिसे सब महसूस करते हैं और फिर उसकी तरफ़ से ज़ेहन हटाकर अपने मक़सूद की तरफ़ ले गये। बयान फ़रमाया कि यह तो ज़ाहिर है कि किसी इनसान के दिल दो नहीं होते, इसी तरह तुम समझ लो कि अपनी जिस बीवी को तुम माँ कह दो वह वाक़ई माँ नहीं हो जाती। ठीक इसी तरह दूसरे की औलाद को अपना बेटा बना लेने से वह बेटा नहीं हो जाता, अपनी बीवी से अगर किसी ने ग़ुस्से और नाराज़गी की हालत में कह दिया कि तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी माँ की पीठ, तो इस कहने से वह माँ नहीं बन जाती। जैसे फ़रमायाः

مَا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔىْ وَلَدْنَهُمْ...... الخ

यानी ऐसा कह देने से वे माँयें नहीं बन जातीं। माँयें तो वे हैं जिनके पेट से ये पैदा हुए हैं।

इन दोनों बातों के बयान के बाद असल मक़सूद को बयान फ़रमाया कि तुम्हारे लेपालक (गोद लिये हुए) लड़के भी दर हक़ीक़त तुम्हारी औलाद नहीं। यह आयत हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि. के बारे में उतरी है जो हुज़ूर सल्ल. के आज़ाद किये हुए थे। उन्हें हुज़ूर सल्ल. ने नुबुव्वत से पहले अपना लेपालक (गोद लिया बेटा) बना रखा था। उन्हें ज़ैद बिन मुहम्मद कहा जाता था। इस आयत से इस निस्बत और इस संबन्ध को तोड़ देना मन्ज़ूर है, जैसा कि इसी सूरत में आगे आ रहा हैः

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ....... الخ

तुम में से किसी मर्द के बाप मुहम्मद नहीं हैं, बल्कि वह ख़ुदा के रसूल और नबियों के ख़त्म करने वाले हैं, और अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ का इल्म है।

नोटः यहाँ हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में जो यह फ़रमाया कि आप तुम में से किसी के बाप नहीं, इससे मुराद नस्ल और सुल्ब की नफ़ी मुराद है। वरना एक नबी अपनी पूरी उम्मत का रूहानी बाप होता है जैसे कि हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा था कि ये मेरी बेटियाँ (यानी तुम्हारी बीवियाँ) मौजूद हैं तुम इनसे अपनी जिन्सी इच्छा पूरी करो और इस बुरे काम को छोड़ दो। आप सल्ल. भी अपनी उम्मत के रूहानी बाप हैं, इसी लिये आपकी पाक बीवियों को "उम्महातुल-मोमिनीन (यानी तमाम मोमिनों की माँयें) कहा जाता है। बड़े-बड़े ताबिईन के हालात में आप देखेंगे कि वे हज़रत आ़यशा रज़ि. से जब कुछ मालूम करने आते तो "अम्माँ जी" ही से आपको मुख़ातब किया करते थे। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

यहाँ फ़रमाया कि यह तो सिर्फ़ तुम्हारी एक ज़बानी बात है जो तुम किसी के लड़के को किसी का लड़का कहो, इससे हक़ीक़त बदल नहीं सकती। वास्तव में उसका बाप वह है जिसकी पीठ से यह निकला। यह नामुम्किन है कि एक लड़के के दो बाप हों, जैसे यह नामुम्किन है कि एक सीने में दो दिल हों। अल्लाह तआ़ला हक़ फ़रमाने वाला और सीधी राह दिखाने वाला है।

Maktab E Ashraf

बाज़ लोग कहते हैं कि यह आयत एक क़ुरैशी के बारे में उतरी है, जिसने मशहूर कर रखा था कि उसके दो दिल हैं और दोनों अ़क्ल व समझ से पुर हैं। अल्लाह तआ़ला ने इस बात की तरदीद कर दी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि हुज़ूर सल्ल. नमाज़ में थे, आपको कुछ ख़तरा (बात और ख़्याल) गुज़रा इस पर जो मुनाफ़िक़ नमाज़ में शामिल थे वह कहने लगे देखो इसके दो दिल हैं, एक तुम्हारे साथ एक उनके साथ। इस पर यह आयत उतरी कि ख़ुदा तआ़ला ने किसी शख़्स के सीने में दो दिल नहीं बनाये। इमाम ज़ोहरी रह. फ़रमाते हैं यह तो सिर्फ़ बतौर मिसाल के फ़रमाया गया है, यानी जिस तरह किसी शख़्स के दो दिल नहीं होते इसी तरह किसी बेटे के दो बाप नहीं होते। इसी के मुताबिक़ हमने इस आयत की तफ़सीर की है। बाक़ी पूरा इल्म तो अल्लाह तआ़ला ही को है।

पहले तो रुख़्सत (छूट और रियायत) थी कि लेपालक (गोद लिये हुए) लड़के को पालने वाले की तरफ़ निस्बत करके उसका बेटा कहकर पुकारा जाये, लेकिन अब इस्लाम इसको मन्सूख़ कर रहा है और फ़रमा रहा है कि जो हक़ीक़ी (असली और वास्तविक) बाप हैं उनकी तरफ़ मन्सूब करके उन्हें पुकारो। इन्साफ़ का तक़ाज़ा, इनसान की नेकी और सच्चाई का रास्ता यही है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस आयत के उतरने से पहले हम हज़रत ज़ैद को ज़ैद बिन मुहम्मद कहा करते थे। लेकिन इसके नाज़िल होने के बाद हमने यह कहना छोड़ दिया, बल्कि पहले तो ऐसे लेपालक के वे तमाम हुक़ूक़ होते थे जो असली औलाद के होते हैं। चुनाँचे इस आयत के उतरने के बाद हज़रत सहला बिन्ते सुहैल रज़ियल्लाहु अ़न्हा हुज़ूरे अकरम सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ करती हैं कि या रसूलल्लाह! हमने सालिम को मुँह-बोला बेटा बना रखा था, अब क़ुरआन ने इनके बारे में फ़ैसला कर दिया, मैं उससे अब तक पर्दा नहीं करती वह आते जाते हैं, लेकिन मेरा ख़्याल है कि मेरे शौहर हज़रत हुज़ैफ़ा उनके इस तरह आने से कुछ बेज़ार हैं (यानी यह हुक्म आने के बाद अब उन्हें यह अच्छा नहीं लगता)। आपने फ़रमाया फिर क्या है, जाओ सालिम को अपना दूध पिला दो (यानी छाती से निकाल कर किसी बरतन से), इस तरह तुम उस पर हराम हो जाओगी........।

ग़र्ज़ यह हुक्म मन्सूख़ हो गया, अब साफ़ लफ़्ज़ों में ऐसे लड़कों की बीवियों से निकाह करना हलाल होना बयान फ़रमा दिया जिनको मुँह-बोला बेटा बना लिया हो। और जब हज़रत ज़ैद रज़ि. ने अपनी बीवी साहिबा हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अ़न्हा को तलाक़ दी तो आपने ख़ुद अपना निकाह उनसे कर लिया और मुसलमान इस एक मुश्किल से भी छूट गये। यानी उनकी उलझन दूर हो गयी। इसी का लिहाज़ रखते हुए जहाँ हराम औ़रतों का ज़िक्र किया है वहाँ फ़रमायाः

وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ.

यानी तुम्हारी अपनी सुल्ब (पीठ) से जो लड़के हों उनकी बीवियाँ तुम पर हराम हैं। हाँ रज़ाई (दूध के रिश्ते वाला) लड़का नसबी लड़के के हुक्म में है। जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ में है कि रज़ाअ़त (दूध पिलाने) से वे तमाम रिश्ते हराम हो जाते हैं जो नसब से हराम होते हैं। यह भी ख़्याल रहे कि प्यार से किसी को बेटा कह देना यह और चीज़ है, यह मना नहीं।

मुस्नद अहमद वग़ैरह में है, इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम सब ख़ानदाने अ़ब्दुल-मुत्तलिब के छोटे बच्चों को मुज़्दलिफ़ा से रसूले ख़ुदा सल्ल. ने रात ही को जमरात (उन स्थानों की तरफ़ जहाँ शैतानों को कंकरियाँ मारी जाती हैं) की तरफ़ रुख़्सत कर दिया और हमारी रानें थपकते हुए हुज़ूर सल्ल. ने

फ़रमाया- मेरे बेटो! सूरज निकलने से पहले जमरात पर कंकरियाँ न मारना। यह वाक़िआ सन् 10 हिजरी माह ज़िलहिज्जा का है, और इसकी दलालत ज़ाहिर है। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि. जिनके बारे में यह हुक्म उतरा यह सन् 8 हिजरी में जंगे मूता में शहीद हुए। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि हज़रत अनस रज़ि. को रसूले ख़ुदा सल्ल. ने अपना बेटा कहकर बुलाया।

इसे बयान फ़रमाकर कि लेपालक (गोद लिये हुए) लड़कों को उनके बाप की तरफ़ मन्सूब करके पुकारो, पालने वालों की तरफ़ नहीं, फिर फ़रमाता है कि अगर तुम्हें उनके बाप का इल्म न हो तो वे तुम्हारे अपने भाई और इस्लामी दोस्त हैं। हुज़ूर सल्ल. जब उमरे की क़ज़ा वाले साल मक्का शरीफ़ से वापस लौटे तो हज़रत हमज़ा रज़ि. की बेटी चचा चचा कहती हुई आपके पीछे दौड़ीं। हज़रत अ़ली रज़ि. ने उन्हें लेकर हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ि. को दे दिया और फ़रमाया- यह तुम्हारी चचाज़ाद बहन हैं, इन्हें अच्छी तरह रखो। हज़रत ज़ैद और हज़रत जाफ़र रज़ि. फ़रमाने लगे- इस बच्ची के हक़दार हम हैं, हम इसे पालेंगे। हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते थे कि नहीं यह मेरे यहाँ रहेंगी। हज़रत अ़ली रज़ि. ने तो यह दलील दी कि मेरे चचा की लड़की हैं, हज़रत ज़ैद रज़ि. फ़रमाते हैं कि मेरे भाई की लड़की हैं। जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि. कहने लगे कि मेरे चचा की लड़की हैं और इनकी चची मेरे घर में हैं। यानी हज़रत अस्मा बिन्ते अ़मीस रज़ि.। आख़िर हुज़ूर सल्ल. ने यह फ़ैसला करके कि लड़की अपनी ख़ाला के पास रहे क्योंकि ख़ाला माँ के क़ायम-मक़ाम (बराबर) है, हज़रत अ़ली रज़ि. से फ़रमाया तू मेरा है और मैं तेरा हूँ। हज़रत जाफ़र रज़ि. से फ़रमाया तू सूरत सीरत में मेरे जैसा है, हज़रत ज़ैद रज़ि. से फ़रमाया तू हमारा भाई और हमारा मौला (आज़ाद किया हुआ यानी दोस्त) है।

इस हदीस में बहुत से अहकाम हैं। सबसे बेहतर तो यह है कि हुज़ूर सल्ल. ने हक़ का हुक्म सुनाकर दूसरे दावेदारों को भी नाराज़ न होने दिया और आपने इसी आयत पर अ़मल करते हुए हज़रत ज़ैद रज़ि. से फ़रमाया तुम हमारे भाई और हमारे दोस्त हो। हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने फ़रमाया इसी आयत के एतिबार से मैं तुम्हारा भाई हूँ। हज़रत उबई फ़रमाते हैं कि वल्लाह अगर यह भी मालूम होता कि उनके वालिद कोई ऐसे वैसे ही थे तो भी यह उनकी तरफ़ मन्सूब होते। हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स जान-बूझकर अपनी निस्बत अपने बाप की तरफ़ से दूसरे की तरफ़ करे उसने कुफ़्र किया। इसकी सख़्त वईद है और साबित होता है कि सही नसब से अपने का हटाना बहुत बड़ा कबीरा गुनाह है। फिर फ़रमाता है कि जब तुमने अपने तौर पर जितनी ताक़त तुममें है तहक़ीक़ (पता लगाकर और खोज) करके किसी को किसी की तरफ़ मन्सूब किया और असलियत में वह निस्बत ग़लत है तो इस ख़ता (ग़लती और चूक) पर तुम्हारी पकड़ नहीं। चुनाँचे ख़ुद परवर्दिगार ने हमें दुआ़ तालीम की कि हम उसकी बारगाह में यूँ कहें:

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا.

'ख़ुदाया हमारी भूल-चूक और ग़लती न पकड़।'

सही मुस्लिम की हदीस में है कि जब मुसलमानों ने यह दुआ़ पढ़ी तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- मैंने यह दुआ़ क़बूल फ़रमाई। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि जब हाकिम अपनी कोशिश में कामयाब हो जाये, अपने राय और फ़ैसले में सही फ़ैसले को पहुँच जाये तो उसे दोहरा अज्र मिलता है, और अगर ख़ता (ग़लती कर जाये और कोशिश के बावजूद चूक) कर जाये तो उसे एक अज्र मिलता है। एक और हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत को उनकी ख़तायें भूल-चूक और जो काम उनसे ज़बरदस्ती कराये जायें माफ़

Maktaba Ashraf

फ़रमा दिया है। यहाँ भी यह फ़रमाकर इरशाद फ़रमाया कि हाँ जो काम तुम दिल के इरादे से जान-बूझकर करो वो बेशक पकड़ के क़ाबिल हैं। क़समों के बारे में भी यही हुक्म है। ऊपर जो हदीस बयान हुई कि नसब बदलने वाला कुफ़्र का मुर्तकिब (जुर्म करने वाला) है वहाँ भी ये लफ़्ज़ हैं कि बावजूद जानने के।

क़ुरआन की एक आयत जो अब तिलावत के एतिबार से मन्सूख़ (अल्लाह ने उसको उठा लिया) है, उसमें थाः

فَاِنَّ كُفْرًا بِكُمْ اَنْ تَرْغَبُوْا عَنْ اٰبَآئِكُمْ.

यानी तुम्हारा अपने बाप की तरफ़ से निस्बत हटाना कुफ़्र है।

हज़रत उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम हुज़ूर सल्ल. को हक़ के साथ भेजा, आपके साथ किताब नाज़िल फ़रमाई, उसमें रजम (संगसार करने) की भी आयत थी। हुज़ूर सल्ल. ने ख़ुद भी रजम किया। (यानी शादीशुदा ज़ानियों को संगसार किया) और हमने आपके बाद रजम किया। हमने क़ुरआन में यह आयत भी पढ़ी है कि अपने बाप से अपना नसब का सिलसिला ख़त्म न करो क्योंकि यह कुफ़्र है। हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि मुझे तुम मेरी तारीफ़ों में इसी तरह बढ़ा-चढ़ा न देना जैसे ईसा बिन मरियम के साथ हुआ, मैं तो सिर्फ़ बन्दा-ए-ख़ुदा हूँ तो तुम मुझे ख़ुदा का बन्दा और उसका रसूल कहना। एक रिवायत में सिर्फ़ इब्ने मरियम है। एक और हदीस में है कि तीन ख़स्लतें लोगों में हैं जो कुफ़्र हैं- नसब (ख़ानदान व नस्ल) में ताना देना, मय्यित पर बयान करके रोना, सितारों से बारिश चाहना।

اَلنَّبِىُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ○	नबी मोमिनों के साथ ख़ुद उनके नफ़्स से भी ज़्यादा ताल्लुक़ रखते हैं, और आपकी बीवियाँ उनकी माएँ हैं। और रिश्तेदार अल्लाह की किताब में एक-दूसरे से दूसरे मोमिनों और मुहाजिरों के मुक़ाबले में ज़्यादा ताल्लुक़ रखते हैं, मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से कुछ सुलूक करना चाहो तो वह जायज़ है, यह बात लौहे-महफ़ूज़ में लिखी जा चुकी थी। (6)

रहमत व शफ़क़त वाले पैग़म्बर

चूँकि अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त को इल्म है कि हुज़ूर सल्ल. अपनी उम्मत पर ख़ुद उनकी जानों से भी ज़्यादा मेहरबान हैं, इसलिये आपको उनकी अपनी जानों से भी उनका ज़्यादा इख़्तियार दिया। यह ख़ुद अपने लिये कोई तजवीज़ न करें बल्कि हर हुक्मे रसूल को दिल व जान से क़बूल करते जायें। जैसा कि फ़रमायाः

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ.......... الخ

तेरे रब की क़सम ये मोमिन न होंगे जब तक अपने आपस के तमाम इख़्तिलाफ़ात (मतभेदों और विवादों) में तुझे हकम (फ़ैसला करने वाला) न मान लें, और तेरे तमाम अहकाम और फ़ैसलों को दिल व

जान से दिल की ख़ुशी से क़बूल न कर लें।

सही हदीस शरीफ़ में है कि उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम में से कोई ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे उसकी जान से, उसके माल से, उसकी औलाद से और दुनिया के तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब (प्यारा) न हो जाऊँ। एक और हदीस में है, हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया- या रसूलल्लाह! आप मुझे तमाम जहान से ज़्यादा महबूब हैं लेकिन हाँ ख़ुद मेरे अपने नफ़्स से नहीं। आपने फ़रमाया नहीं नहीं! ऐ उमर जब तक कि मैं तुझे ख़ुद तेरे नफ़्स (जान) से भी ज़्यादा महबूब न बन जाऊँ। यह सुनकर जनाब फ़ारूक़े आज़म रज़ि. फ़रमाने लगे- क़सम ख़ुदा की या रसूलल्लाह! आप अब मुझे हर चीज़ से यहाँ तक कि मेरी जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ (प्यारे) हैं। आपने फ़रमाया अब ठीक है। बुख़ारी शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि तमाम मोमिनों का दुनिया और आख़िरत में ख़ुद उनकी अपनी जानों से भी मैं ज़्यादा हक़दार हूँ। अगर तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लोः

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ

(यानी यही आयत जिसकी यह तफ़सीर बयान हो रही है)

सुनो जो मुसलमान माल छोड़कर मरे तो उसका माल तो उसके वारिसों का हिस्सा है और अगर कोई मर जाये और उसके ज़िम्मे क़र्ज़ हो या उसके छोटे-छोटे बच्चे हों तो उसके क़र्ज़ की अदायेगी का मैं ज़िम्मेदार हूँ और उन बच्चों की परवरिश मेरे ज़िम्मे है।

फिर फ़रमाता है कि हुज़ूर सल्ल. की पाक बीवियाँ सम्मान व एहतिराम में, इज़्ज़त व इकराम में, बुज़ुर्गी और अज़्मत में तमाम मुसलमानों में ऐसी हैं जैसी ख़ुद उनकी अपनी माँयें। हाँ माँ के दूसरे अहकाम जैसे तन्हाई में उनसे मिलना या उनकी लड़कियों और बहनों से निकाह की हुर्मत (हराम होना) यह यहाँ साबित नहीं, अगरचे बाज़ उलेमा ने उनकी बेटियों को भी मुसलमानों की बहनें लिखा है जैसे कि हज़रत इमाम शाफ़ई रह. ने मुख़्तसर में इसको एक लाज़िमी हुक्म के तौर पर बयान फ़रमाया है, लेकिन यह इबारत को मुतलक़ बयान करना है न कि हुक्म को साबित करना।

हज़रत मुआविया रज़ि. वग़ैरह को जो किसी न किसी उम्मुल-मोमिनीन के भाई थे मामूँ कहा जा सकता है या नहीं? इसमें इख़्तिलाफ़ है। इमाम शाफ़ई रह. ने तो कहा है कि कह सकते हैं, रही यह बात कि हुज़ूर सल्ल. को मोमिनों का बाप भी कह सकते हैं या नहीं? यह ख़्याल रहे कि मोमिनों का बाप कहने में मुसलमान औरतें भी आ जायेंगी, उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का फ़रमान है कि नहीं कह सकते। इमाम शाफ़ई रह. के दो क़ौलों में भी ज़्यादा सही क़ौल यही है। उबई बिन कअ़ब और इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की क़िराअत में 'उम्महातुहुम' के बाद ये लफ़्ज़ हैं:

وَهُوَ اَبٌ لَّهُمْ

यानी आप सल्ल. उनके वालिद (बाप) हैं।

मज़हबे शाफ़ई में भी एक क़ौल यही है और कुछ ताईद इस हदीस से भी होती है कि आपने फ़रमाया- मैं तुम्हारे लिये क़ायम-मक़ाम बाप के हूँ मैं तुम्हें तालीम दे रहा हूँ (यानी जैसे बाप अपनी औलाद को हर चीज़ और मामूली से मामूली बात की तालीम देता है)। सुनो तुम में से जब कोई पाख़ाने में जाये तो न क़िब्ले की तरफ़ मुँह करे न पीठ। न अपने दाहिने हाथ से ढेले ले, न दाहिने हाथ से इस्तिन्जा करे। आप तीन ढेले लेने का हुक्म देते थे और गोबर और हड्डी से इस्तिन्जा करने से मना फ़रमाते थे। (नसाई

Maktab E Ashraf

वग़ैरह)। दूसरा क़ौल यह है कि हुज़ूर सल्ल. को बाप न कहा जाये क्योंकि क़ुरआन मजीद में है:

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ.

मुहम्मद (हुज़ूर सल्ल.) तुममें से किसी के बाप नहीं।

फिर फ़रमाता है कि यह निस्बत आ़म मोमिनों मुहाजिरीन और अन्सार में जो भाईचारा कराया गया था उसी के एतिबार से ये आपस में एक दूसरे के वारिस होते थे और क़समें खाकर एक-दूसरों के हलीफ़ (साथी) बने हुए थे, वे भी आपस में मीरास बाँट लिया करते थे। उसको इस आयत ने मन्सूख़ (ख़त्म और निरस्त) कर दिया। पहले अगर अन्सारी मर गया तो उसके वारिस उसकी क़राबत (रिश्ते) के लोग नहीं होते थे बल्कि मुहाजिर होते थे, जिनके दरमियान अल्लाह के नबी सल्ल. ने भाईचारा करा दिया था। हज़रत ज़ुबैर बिन अ़वाम रज़ि. का बयान है कि यह हुक्म ख़ास हम अन्सार व मुहाजिरीन के बारे में उतरा है। हम जब मक्का छोड़कर मदीना आये तो हमारे पास कुछ माल न था, यहाँ आकर हमने अन्सार से भाईचारा किया, ये बेहतरीन भाई साबित हुए यहाँ तक कि इनके फ़ौत होने (इन्तिक़ाल करने) के बाद इनके माल के वारिस भी हम होते थे। हज़रत अबू बक्र रज़ि. का भाईचारा ख़ारिजा बिन ज़ैद के साथ था। हज़रत उमर रज़ि. का फ़ुलाँ के साथ। हज़रत उस्मान रज़ि. का एक ज़रीक़ी शख़्स के साथ। ख़ुद मेरा कअ़ब बिन मालिक के साथ। यह ज़ख़्मी हुए और ज़ख़्म भी बहुत गहरे थे, अगर उस वक़्त उनका इन्तिक़ाल हो जाता तो मैं भी उनका वारिस बनता। फिर यह आयत उतरी और मीरास का आ़म हुक्म हमारे लिये भी हो गया। फिर फ़रमाता है कि मीरास में हिस्सा तो उनका नहीं लेकिन वैसे अगर तुम अपने इन मुख़्लिस अहबाब (साथियों और दोस्तों) के साथ सुलूक करना चाहो तो तुम्हें इख़्तियार है। वसीयत के तौर पर कुछ दे दिला सकते हो। फिर फ़रमाता है कि ये सिर्फ़ एक ख़ास मस्लेहत की बिना पर ख़ास वक़्त के लिये था, अब यह हटा दिया गया और असली हुक्म दे दिया गया। वल्लाहु आलम।

और जबकि हमने तमाम पैग़म्बरों से उनका इक़रार लिया और आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से भी, और नूह (अ़लैहिस्सलाम) और इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) और ईसा बिन मरियम (अ़लैहिस्सलाम) से भी, और हमने उन सब से ख़ूब पक्का अ़हद लिया (7) ताकि उन सच्चों से उनके सच की तहक़ीक़ात करे, और काफ़िरों के लिए अल्लाह तआ़ला ने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (8)	وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۠ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝ لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ ع

एक अ़हद व इक़रार

फ़रमान है कि उन पाँचों बुलन्द रुतबे वाले पैग़म्बरों से और आ़म नबियों से सबसे हमने अ़हद लिया कि वे मेरे दीन की तब्लीग़ करेंगे, उस पर क़ायम रहेंगे, आपस में एक-दूसरे की इमदाद व ताईद करेंगे और इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद रखेंगे। उसी अ़हद का ज़िक्र इस आयत में है:

Maktab E Ashraf

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيثَاقَ النَّبِيِّيْنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتَابٍ وَّحِكْمَةٍ.

यानी अल्लाह तआला ने नबियों से कौल व करार लिया कि जो कुछ किताब व हिक्मत देकर मैं तुम्हें भेजूँ फिर तुम्हारे साथ की चीज़ की तस्दीक़ करने वाला रसूल आ जाये तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना और उसकी इमदाद (सहयोग) करना। बोलो तुम्हें इसका इक़रार है? और मेरे सामने इसका पुख़्ता वायदा करते हो? सब ने जवाब दिया कि हाँ हमें इक़रार है। बारी तआला ने फ़रमाया बस अब गवाह रहना और मैं ख़ुद भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ। यहाँ तमाम नबियों का ज़िक्र करके फिर ख़ास बड़े और बुलन्द रुतबे वाले पैग़म्बरों का नाम भी ले दिया। इसी तरह उनके नाम इस आयत में भी हैं:

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا.........الخ

यहाँ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का ज़िक्र है जो ज़मीन पर ख़ुदा के पहले पैग़म्बर थे। हज़रत मुहम्मद सल्ल. का ज़िक्र है जो सबसे आख़िरी पैग़म्बर थे। और इब्राहीम, मूसा, ईसा अलैहिमुस्सलाम का ज़िक्र है जो बीच के दौर के पैग़म्बर थे। एक बारीक बात इसमें यह है कि पहले पैग़म्बर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाद के पैग़म्बर हज़रत नूह का ज़िक्र किया और आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल. से पहले के पैग़म्बर हज़रत ईसा का ज़िक्र किया और बीच के पैग़म्बरों में से हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा का ज़िक्र किया। यहाँ तो यह तरतीब रखी कि पहले और आख़िर पैग़म्बर का ज़िक्र करके बीच के नबियों का बयान किया और इस आयत में सबसे पहले ख़ातिमुल-अम्बिया सल्ल. का नाम लिया इसलिये कि सबसे अशरफ़ व अफ़ज़ल (बड़े रुतबे वाले) आप ही हैं। फिर एक के बाद एक जिस तरह आये हैं उसी तरह तरतीबवार (क्रमानुसार) बयान किया। अल्लाह तआला अपने तमाम नबियों पर अपना दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाये।

इस आयत की तफ़सीर में हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि मैं पैदाईश के एतिबार से सब नबियों से पहले हूँ और दुनिया में आने के एतिबार से सबसे आख़िर में हूँ। पस मुझी से शुरूआत की है। यह हदीस इब्ने अबी हातिम में है लेकिन इसके एक रावी सईद बिन बशीर ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं और सनद से यह मुर्सल है। यही ज़्यादा सही है और बाज़ों ने इसे मौक़ूफ़ रिवायत की है। वल्लाहु आलम।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद में अल्लाह तआला के सबसे ज़्यादा पसन्दीदा पाँच पैग़म्बर हैं- हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलाम और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। इस आयत में एक रावी हमज़ा ज़ईफ़ हैं। यह भी कहा गया है कि इस आयत से जिस अहद व इक़रार का ज़िक्र है यह वह है जो रोज़े-अज़ल में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पीठ से तमाम इनसानों को निकाल कर लिया था। हज़रत उबई बिन कअब रज़ि. से नक़ल है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बुलन्द किया गया, आपने अपनी औलाद को देखा, उनमें मालदार ग़रीब, ख़ूबसूरत और बदसूरत हर तरह के लोग देखे तो कहा कि ख़ुदाया क्या अच्छा होता कि तूने इन सबको बराबर ही रखा होता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह इसलिये है कि मेरा शुक्र अदा किया जाये। उनमें जो अम्बिया थे उन्हें भी आपने देखा, वे एक रोशनी की तरह ज़ाहिर थे, उन पर नूर बरस रहा था, उनसे नुबुव्वत व रिसालत का एक ख़ास अहद लिया गया था जिसका बयान इस आयत में है। सादिक़ों (सच्चों) से उनके सिद्क़ (सच्चाई) का सवाल हुआ यानी उनसे जो रसूल सल्ल. की हदीसें पहुँचाने वाले थे, उनकी उम्मतों में से जो भी उनको न माने उसे सख़्त अज़ाब होगा। ऐ अल्लाह तू गवाह रह, हमारी गवाही है, हम दिल से मानते हैं कि बेशक तेरे रसूलों ने तेरा पैग़ाम तेरे बन्दों को बिना किसी कमी व ज़्यादती के

Muftaah-E-Ashraf

पहुँचा दिया। उन्होंने पूरी ख़ैरख़्वाही की और हक़ को साफ़ तौर पर स्पष्ट तरीक़े से वाज़ेह कर दिया, जिसमें कोई पोशीदगी कोई शुब्हा कोई किसी तरह का शक न रहा, अगरचे बदनसीब ज़िद्दी झगड़ालू लोगों ने उन्हें न माना। हमारा ईमान है कि तेरे रसूलों की तमाम बातें सच और हक़ हैं और जिसने उनकी राह न पकड़ी वह गुमराह और बातिल (ग़लत रास्ते) पर है।

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱذْكُرُوا نِعْمَةَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝ إِذْ جَآءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ ٱلْأَبْصَـٰرُ وَبَلَغَتِ ٱلْقُلُوبُ ٱلْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِٱللَّهِ ٱلظُّنُونَا ۝

ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह का इनाम याद करो जब तुम पर बहुत-से लश्कर चढ़ आए, फिर हमने उन पर एक आँधी भेजी और ऐसी फ़ौज भेजी जो तुमको दिखाई न देती थी, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आमाल को देखते थे। (9) जबकि वे लोग तुम पर आ चढ़े थे ऊपर की तरफ़ से भी और नीचे की तरफ़ से भी, और जबकि आँखें खुली की खुली रह गई थीं और कलेजे मुँह को आने लगे थे। और तुम लोग अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान कर रहे थे। (10)

एक हादसा

और उस पर अल्लाह की तरफ़ से इमदाद का आना

जंग-ए-ख़न्दक़ में जो सन् 5 हिजरी में शव्वाल के महीने में हुई थी, अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों पर जो अपना फ़ज़्ल व एहसान किया था उसका बयान हो रहा है। जबकि मुश्रिकों ने पूरी ताक़त और पूरे जत्थे से बल्कि मुसलमानों को मिटा देने के इरादे से ज़बरदस्त लश्कर लेकर हमला किया था। बाज़ लोग कहते हैं कि जंग-ए-ख़न्दक़ सन् 4 हिजरी में हुई थी। इस लड़ाई का क़िस्सा यह है कि बनू नज़ीर के यहूदी सरदारों ने जिनमें सलाम बिन अबू हक़ीक़, सलाम बिन मुश्कम और किनाना बिन रबीअ़ वग़ैरह थे। मक्के में आकर क़ुरैशियों को जो पहले ही से तैयार थे हुज़ूर सल्ल. से लड़ाई करने पर आमादा किया और उनसे वायदा किया कि हम अपने असर वाले लोगों के साथ आपकी जमाअ़त में शामिल हैं। उन्हें तैयार करके ये लोग क़बीला-ए-ग़तफ़ान के पास गये, उनसे भी साज़-बाज़ करके उन्हें अपने साथ शामिल कर लिया। क़ुरैश वालों ने भी इधर-उधर फिरकर तमाम अ़रब में आग लगाकर सब लोगों को अपने साथ मिला लिया। उन सब का सरदार अबू सुफ़ियान सख़र बिन हरब बना और ग़तफ़ान का सरदार उयैना बिन हसन बिन बदर मुक़र्रर हुआ। इन लोगों ने कोशिश करके दस हज़ार का लश्कर इकट्ठा कर लिया और मदीने की तरफ़ चढ़ दौड़े। हुज़ूर सल्ल. को जब लश्कर की चढ़ाई की ख़बरें पहुँचीं तो आपने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. के मश्विरे के मुताबिक़ मदीना शरीफ़ की पूर्वी दिशा में ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया। ख़न्दक़ के खोदने में तमाम सहाबा मुहाजिरीन व अन्सार शामिल थे और ख़ुद आप भी उसमें हिस्सा लेते थे, खोदने में भी और हिस्सा लेने में

भी। मुश्रिकों का लश्कर बिना किसी रोक-टोक के मदीना शरीफ़ तक पहुँच गया और मदीने के पूर्वी हिस्से में उहुद पहाड़ के क़रीब अपना पड़ाव जमाया। यह था मदीने का निचला हिस्सा, ऊपर के हिस्से में उन्होंने अपनी एक बड़ी भारी तायदाद भेज दी जिसने मदीने के ऊपर के हिस्सों में लश्कर का पड़ाव डाला और नीचे ऊपर से मुसलमानों को घेरे में ले लिया। हुज़ूर सल्ल. ने अपने साथ सहाबा को जो तीन हज़ार से कम थे और बाज़ रिवायात में है कि सिर्फ़ सात सौ थे, लेकर उनके मुक़ाबले पर आये। सलअ़ पहाड़ी को आपने अपनी पुश्त पर किया और दुश्मनों की तरफ़ सामने का हिस्सा रखकर फ़ौज को तरतीब दिया। ख़न्दक़ जो आपने खोदी और खुदवाई थी उसमें पानी वग़ैरह न था, वह सिर्फ़ एक गड्ढ़ा था जो मुश्रिकीन के रेले को बेरोक आने नहीं देता था। आपने बच्चों और औ़रतों को मदीने के एक मौहल्ले में कर दिया था। यहूदियों की एक जमाअ़त बनू क़ुरैज़ा मदीने में भी थी, पूर्वी दिशा में उनका मौहल्ला था। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से उनका समझौता और सुलह मज़बूत थी, उनका भी बड़ा गिरोह था, तक़रीबन आठ सौ लड़ाके लड़ने के क़ाबिल मर्द उनमें मौजूद थे। मुश्रिक लोगों और यहूद ने उनके पास हुय्यि बिन अख़्तब नज़री को भेजा, उसने उन्हें भी बहका-फुसलाकर, सब्ज़ बाग़ दिखाकर अपनी तरफ़ कर लिया और उन्होंने भी बिल्कुल ऐन मौक़े पर मुसलमानों के साथ बद-अ़हदी की (यानी मुआ़हदे और समझौते के ख़िलाफ़ किया) और ऐलानिया तौर पर सुलह तोड़ी।

बाहर से दस हज़ार का वह लश्कर जो घेरा डाले पड़ा है, अन्दर से इन यहूदियों की बग़ावत जो बग़ली घूँसे की तरह उठ खड़े हुए। बत्तीस दाँतों में ज़बान या आटे में नमक की तरह मुसलमान हो गये। ये कुल सात सौ आदमी कर ही क्या सकते थे। यह वह वक़्त था जिसका नक़्शा क़ुरआने करीम ने खींचा है कि आँखें पत्थरा गईं, दिल परेशान, तरह-तरह के ख़्यालात परेशान करने लगे। झिंझोड़ दिये गये और सख़्त इम्तिहान में मुब्तला हो गये। महीने भर तक घेराबन्दी की यही तल्ख़ सूरत क़ायम रही, अगरचे मुश्रिकों की यह जुर्रत तो नहीं हुई कि ख़न्दक़ से पार होकर आमने-सामने की लड़ाई लड़ते, लेकिन हाँ घेरा डाले पड़े रहे और मुसलमानों को तंग कर दिया। अलबत्ता अ़मर बिन अ़ब्दे-वुद्द आ़मिरी जो अ़रब का मशहूर बहादुर पहलवान और सिपह-सालारी के फ़न में बेजोड़ था, साथ ही बहादुर, दिलेर और ताक़तवर था, एक मर्तबा हिम्मत करके अपने साथ चन्द जाँबाज़ पहलवानों को लेकर ख़न्दक़ से अपने घोड़ों को कुदा लाया।

यह हाल देखकर रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने सवारों की तरफ़ इशारा किया, लेकिन कहा जाता है कि उन्हें तैयार न पाकर आपने हज़रत अ़ली रज़ि. को हुक्म दिया कि तुम इसके मुक़ाबले पर आ जाओ। आप गये, थोड़ी देर तक दोनों बहादुरों में तलवार चलती रही लेकिन आख़िरकार शेरे ख़ुदा ने कुफ़्र के उस देव को मार डाला, जिससे मुसलमान बहुत ख़ुश हुए और उन्होंने समझ लिया कि फ़तह हमारी है। फिर परवर्दिगार ने वह तेज़ व तुन्द आँधी भेजी कि मुश्रिकों के तमाम ख़ेमे उखड़ गये, कोई चीज़ अपनी जगह बाक़ी न रही, आग का जलाना मुश्किल हो गया, कोई पनाह की जगह नज़र न आई। आख़िर तंग आकर नामर्दी से वापस हुए, जिसका बयान इस आयत में है, जिस हवा का इस आयत में ज़िक्र है। बक़ौल मुजाहिद रह. यह सबा है और इसकी ताईद हुज़ूर सल्ल. के इस फ़रमान से भी होती है कि मेरी सबा हवा से मदद की गई और आ़द क़ौम वाले दबूर हवाओं से हलाक किये गये थे।

हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि दक्षिणी हवा ने उत्तरी हवा से उस जंगे अहज़ाब में कहा कि चल हम तुम जाकर रसूलुल्लाह सल्ल. की मदद करें तो उत्तरी हवा ने कहा गर्मी रात को नहीं चला करती। फिर उन पर सबा हवा भेजी गई। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे मामूँ हज़रत उस्मान बिन

मज़ऊन ने ख़न्दक़ वाली रात जाड़े और तेज़ हवा में मदीना शरीफ़ भेजा कि खाना और लिहाफ़ ले आऊँ। मैंने हुज़ूर सल्ल. से इजाज़त चाही तो आपने इजाज़त इनायत फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि मेरे जो सहाबी तुम्हें मिलें उन्हें कहना कि मेरे पास चले आयें। अब मैं चला, हवायें ज़न्नाटे की शायें-शायें चल रही थीं, मुझे जो मुसलमान मिला मैंने उसे हुज़ूर सल्ल. का पैग़ाम पहुँचा दिया और जिसने सुना उल्टे पाँव फ़ौरन हुज़ूर सल्ल. की तरफ़ चल दिया, यहाँ तक कि उनमें से किसी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। हवा मेरी ढाल को धक्के दे रही थी और वह मुझे लग रही थी यहाँ तक कि उसका लोहा मेरे पाँव पर गिर पड़ा, मैंने नीचे फेंक दिया। उस हवा के साथ ही साथ ख़ुदा तआ़ला ने फ़रिश्ते भी नाज़िल फ़रमाये थे जिन्होंने मुश्रिकों के दिल और सीने ख़ौफ़ और रौब से भर दिये, यहाँ तक कि लश्कर के जितने सरदार थे अपने मातहत सिपाहियों को अपने पास बुला-बुलाकर कहने लगे कि निजात की सूरत तलाश करो, बचाव का इन्तिज़ाम करो। यह था फ़रिश्तों का डाला हुआ डर और रौब। यही वह लश्कर है जिसका बयान इस आयत में है कि उस लश्कर को तुमने नहीं देखा।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि. से एक नौजवान शख़्स ने जो कूफ़े के रहने वाले थे कहा- ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह! तुम बड़े ख़ुशनसीब हो कि तुमने अल्लाह के रसूल सल्ल. को देखा और आपकी मज्लिस में बैठे, बताओ तुम क्या करते थे? हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. ने फ़रमाया वल्लाह हम जाँनिसारियाँ करते थे। नौजवान फ़रमाने लगे सुनिये चचा अगर हम हुज़ूर सल्ल. के ज़माने को पाते तो वल्लाह आपको क़दम भी ज़मीन पर न रखने देते, अपनी गर्दनों पर उठाकर ले जाते। आपने फ़रमाया लो भतीजे एक वाक़िआ़ सुनो! जंगे ख़न्दक़ के मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्ल. देर रात तक नमाज़ पढ़ते रहे। फ़ारिग़ होकर मालूम किया कि कोई है जो जाकर काफ़िरों के लश्कर की ख़बर ला दे? अल्लाह के नबी उससे शर्त करते हैं कि वह जन्नत में दाख़िल होगा। कोई खड़ा न हुआ क्योंकि ख़ौफ़, भूख और सर्दी की इन्तिहा थी। फिर आप देर तक नमाज़ पढ़ते रहे। फिर फ़रमाया- है कोई जो जाकर यह ख़बर ला दे कि मुख़ालिफ़ों ने क्या किया? अल्लाह के रसूल उसे मुत्मईन करते हैं कि वह ज़रूर वापस आयेगा और मेरी दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत में मेरा रफ़ीक़ (साथी) करे। इस बार भी कोई खड़ा न हुआ और खड़ा होता कैसे? भूख के मारे पेट कमर से लग रहा था, सर्दी के मारे दाँत से दाँत बज रहा था, ख़ौफ़ के मारे पित्ते पानी हो रहे थे। आख़िरकार मेरा नाम लेकर रसूले करीम ने आवाज़ दी, अब तो बिना खड़े हुए चारा ही न था, फ़रमाने लगे हुज़ैफ़ा! तू जा और देखकर आ कि वे इस वक़्त क्या कर रहे हैं? देख जब तक मेरे पास वापस न पहुँच जाये कोई काम न करना। मैंने जी बहुत अच्छा कहकर अपनी राह ली और जुर्रत के साथ मुश्रिकों में घुस गया। वहाँ जाकर अ़जीब हाल देखा कि दिखाई न देने वाले ख़ुदा के लश्कर अपना काम फुर्ती से कर रहे हैं, चूल्हों से देगें हवा ने उलट दी हैं, ख़ेमों की चोबें उखड़ गई हैं, आग जला नहीं सकते, कोई चीज़ अपने ठिकाने नहीं रही।

उसी वक़्त अबू सुफ़ियान खड़ा हुआ और उसने बुलन्द आवाज़ से मुनादी की कि ऐ क़ुरैश वालो! अपने अपने साथी से होशियार हो जाओ, अपने साथी को देखभाल लो, ऐसा न हो कि कोई ग़ैर खड़ा हुआ हो। मैंने यह सुनते ही मेरे पास जो एक क़ुरैशी जवान था उसका हाथ पकड़ लिया और उससे पूछा- तू कौन है? उसने कहा मैं फ़ुलाँ पुत्र फ़ुलाँ हूँ। मैंने कहा अब होशियार रहना। फिर अबू सुफ़ियान ने कहा क़ुरैश वालो ख़ुदा की क़सम हम इस वक़्त किसी ठहरने की जगह पर नहीं हैं, हमारे मवेशी हमारे ऊँट हलाक हो रहे हैं, बनू क़ुरैज़ा ने हमसे वायदा-ख़िलाफ़ी की (धोखा किया), उसने हमें बड़ी तकलीफ़ पहुँचाई। फिर इस हवा ने तो हमें परेशान कर रखा है, हम पका-खा नहीं सकते, आग तक जला नहीं सकते, ख़ेमे डेरे ठहर नहीं

Maktab E Ashraf

सकते। मैं तो तंग आ गया हूँ और मैंने तो इरादा कर लिया है कि वापस हो जाऊँ। पस मैं तुम सब को हुक्म देता हूँ कि वापस चलो। इतना कहते ही अपने ऊँट पर जो पैर बंधा हुआ बैठा था चढ़ गया और उसे मारा, वह तीन पाँव से ही खड़ा हो गया। फिर उसका पाँव खोला, उस वक़्त ऐसा अच्छा मौक़ा था कि अगर मैं चाहता तो एक ही तीर में अबू सुफ़ियान का काम तमाम कर देता, लेकिन रसूले ख़ुदा ने मुझसे फ़रमा दिया था कि कोई काम न करना, इसलिये मैंने ख़ुद को रोक लिया। अब मैं वापस लौटा और अपने लश्कर में आ गया।

जब मैं पहुँचा हूँ तो मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल. एक चादर लपेटे हुए जो आपकी किसी बीवी साहिबा की थी, नमाज़ में मशग़ूल हैं। आपने मुझे देखकर अपने दोनों पैरों के दरमियान बैठा लिया और चादर मुझे उढ़ा दी। फिर रुकूअ़ सज्दा किया और मैं वहीं चादर ओढ़े बैठा रहा। जब आप फ़ारिग़ हुए तो मैंने सारा वाक़िआ़ बयान किया। क़ुरैशियों के वापस लौट जाने की ख़बर जब क़बीला-ए-ग़तफ़ान को पहुँची तो उन्होंने भी सामान बाँधा और वापस लौट गये।

एक और रिवायत में है, हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब मैं चला तो बावजूद कड़ाके की सख़्त सर्दी के क़सम ख़ुदा की मुझे यह मालूम होता था कि गोया मैं किसी गर्म हम्माम में हूँ। उस वक़्त अबू सुफ़ियान आग सुलगाये हुए ताप रहा था। मैंने उसे देखकर पहचान कर अपना तीर कमान में चढ़ा लिया और चाहता ही था कि चला दूँ और वह बिल्कुल निशाने पर था, नामुम्किन था कि मेरा निशाना ख़ाली जाये, लेकिन मुझे रसूले ख़ुदा सल्ल. का यह फ़रमान याद आ गया कि कोई ऐसी हरकत न करना कि वे चौकन्ने होकर भड़क जायें, तो मैंने अपना इरादा छोड़ दिया। जब मैं वापस आया उस वक़्त भी मुझे कोई सर्दी महसूस न हुई बल्कि यह मालूम हो रहा था कि गोया मैं हम्माम में चल रहा हूँ (यानी नबी करीम सल्ल. की दुआ़ की बरकत थी कि आपको सख़्त सर्दी में भी कोई तकलीफ़ नहीं हुई)। हाँ जब हुज़ूर सल्ल. के पास पहुँच गया तो बहुत ज़ोर की सर्दी लगी और मैं कपकपाने लगा तो हुज़ूर सल्ल. ने अपनी चादर मुझको उढ़ा दी। मैं ओढ़कर लेटा तो मुझे नींद आ गई और सुबह तक सोता रहा। सुबह ख़ुद हुज़ूर सल्ल. ने मुझे यह कहकर जगाया कि ऐ सोने वाले! बेदार हो जा।

एक दूसरी रिवायत में है कि जब उस ताबिई ने कहा कि काश हम रसूलुल्लाह सल्ल. को देखते और आपके ज़माने को पाते, तो हुज़ैफ़ा रज़ि. ने कहा काश कि तुम जैसा ईमान हमें नसीब होता कि बावजूद न देखने के पूरा और पुख़्ता अ़क़ीदा रखते हो। ऐ भतीजे! जो तमन्ना तुम करते हो यह तमन्ना ही है, न जाने होते तो क्या करते? हम पर तो ऐसे-ऐसे कठिन वक़्त आये हैं। यह कहकर आपने ऊपर ज़िक्र हुआ ख़न्दक़ की रात वाला वाक़िआ़ बयान किया। उसमें यह भी है कि हवा झड़ी और आँधी के साथ बारिश भी थी।

एक और रिवायत में है कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. हुज़ूर सल्ल. के साथ के वाक़िआ़त को बयान फ़रमा रहे थे कि आपकी मज्लिस में मौजूद लोगों ने कहा- अगर हम उस वक़्त होते तो यूँ और यूँ करते। इस पर आपने यह वाक़िआ़ बयान फ़रमा दिया। बाहर से तो दस हज़ार का लश्कर घेरे हुए है, अन्दर से बनू क़ुरैज़ा के आठ सौ यहूदी बिगड़े हुए हैं, बाल बच्चे और औ़रतें मदीने में हैं, ख़तरा लगा हुआ है कि अगर बनू क़ुरैज़ा ने इस तरफ़ का रुख़ कर लिया तो एक घड़ी में ही औ़रतों बच्चों का काम तमाम कर देंगे। वल्लाह उस रात जैसी ख़ौफ़ व घबराहट की हालत कभी हम पर नहीं गुज़री।

फिर वे हवायें चलती हैं, आँधियाँ उठती हैं, अंधेरा छाता है, कड़क गरज और बिजली होती है कि अल्लाह की बड़ाई और शान ज़ाहिर होती है। साथी को देखता हूँ तो कहाँ! अपनी उंगलियाँ भी नज़र न

आती थीं। जो मुनाफ़िक़ हमारे साथ थे वे एक-एक होकर यह बहाना बनाकर कि हमारे बाल-बच्चे और औरतें वहाँ हैं और घर का निगहबान कोई नहीं, हुज़ूर सल्ल. से आकर इजाज़त चाहने लगे और आपने भी किसी को न रोका, जिसने कहा मैं जाऊँ? आपने फ़रमाया शौक़ से जाओ। वे एक-एक होकर सरकने लगे और हम सिर्फ़ तीन सौ के क़रीब रह गये। हुज़ूर सल्ल. अब तशरीफ़ लाये एक-एक को देखा। मेरी अ़जीब हालत थी, न मेरे पास दुश्मन से बचने के लिये कोई हथियार था न सर्दी से सुरक्षित रहने के लिये कोई कपड़ा था। सिर्फ़ मेरी बीवी की एक छोटी सी चादर थी जो मेरे घुटनों तक भी नहीं पहुँचती थी।

जब हुज़ूर सल्ल. मेरे पास पहुँचे उस वक़्त मैं अपने घुटनों में सर डाले हुए दुबक कर बैठा हुआ कपकपा रहा था। आपने पूछा यह कौन हैं? मैंने कहा हुज़ैफ़ा। फ़रमाया हुज़ैफ़ा सुन! अल्लाह की क़सम मुझ पर तो ज़मीन तंग हो गई कि कहीं हुज़ूर सल्ल. खड़ा न करें, मेरी तो दुर्गत हो रही है, लेकिन करता क्या हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान था मैंने कहा हुज़ूर सुन रहा हूँ इरशाद फ़रमाईये। आपने फ़रमाया दुश्मनों में एक नई बात होने वाली है, जाओ उनकी ख़बर लाओ। वल्लाह उस वक़्त मुझसे ज़्यादा न तो किसी को ख़ौफ़ था न घबराहट थी न सर्दी थी, लेकिन हुज़ूर सल्ल. का हुक्म सुनते ही खड़ा हो गया और चलने लगा। मैंने सुना कि आप मेरे लिये दुआ़ कर रहे हैं कि ख़ुदाया इसके आगे से पीछे से दायें से बायें से ऊपर से नीचे से इसकी हिफ़ाज़त कर। हुज़ूर सल्ल. की इस दुआ़ के साथ ही मैंने देखा कि किसी क़िस्म का कोई ख़ौफ़, डर और घबराहट मेरे दिल में थी ही नहीं। फिर हुज़ूर सल्ल. ने मुझे आवाज़ देकर फ़रमाया देखो हुज़ैफ़ा! वहाँ जाकर मेरे पास वापस आने तक कोई बात न करना। इस हिदायत में यह भी है कि मैं अबू सुफ़ियान को उससे पहले न पहचानता था, मैं गया तो वहाँ यही आवाज़ें लग रही थीं कि चलो कूच करो, वापस चलो।

एक अ़जीब बात मैंने यह भी देखी कि वह ख़तरनाक हवा जो देगें उलट देती थी, वह सिर्फ़ उनके लश्कर के इहाते (दायरे) तक थी। वल्लाह उससे एक बालिश्त भर बाहर न थी। मैंने देखा कि पत्थर उड़-उड़कर उन पर गिरते थे। जब मैं वापस चला तो मैंने देखा कि तक़रीबन बीस सवार हैं जो पगड़ियाँ बाँधे हुए हैं, उन्होंने मुझसे फ़रमाया जाओ और रसूलुल्लाह सल्ल. को ख़बर करो कि अल्लाह तआ़ला ने आपकी किफ़ायत कर दी और आपके दुश्मनों को शिकस्त दी। उसमें यह भी बयान है कि हुज़ूर सल्ल. की आ़दत में दाख़िल था कि जब कोई घबराहट और परेशानी का वक़्त होता तो आप नमाज़ शुरू कर देते। जब मैंने हुज़ूर सल्ल. को ख़बर पहुँचाई उसी वक़्त यह आयत उतरी। पस आयत में नीचे की तरफ़ से आने वालों से मुराद बनू क़ुरैज़ा हैं। ख़ौफ़ की शिद्दत और सख़्त घबराहट से आँखें उलट गई थीं, दिल हलक़ूम तक पहुँच गये थे और तरह-तरह के गुमान हो रहे थे यहाँ तक कि बाज़ मुनाफ़िक़ों ने समझ लिया था कि अब लड़ाई में काफ़िर ग़ालिब आ जायेंगे। आ़म मुनाफ़िक़ों का तो पूछना ही क्या है, मातब बिन क़ुशैर कहने लगा कि अल्लाह के नबी तो हमें कह रहे थे कि हम क़ैसर व किसरा (ईरान व रोम के बादशाहों) के ख़ज़ानों के मालिक बनेंगे और यहाँ हालत यह है कि पाख़ाने को जाना भी दूभर हो रहा है। यह मुख़्तलिफ़ गुमान मुख़्तलिफ़ लोगों के थे। मुसलमान तो यक़ीन करते थे कि ग़लबा हमारा ही है जैसा कि फ़रमाया कि मुसलमानों पुख़्ता यक़ीन था कि ग़लबा उन्हीं का होगा। लेकिन मुनाफ़िक़ लोग कहते थे कि अब की मर्तबा सारे मुसलमान मय मुहम्मद (सल्ल.) के गाजर मूली की तरह काटकर रख दिये जायेंगे। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने ऐन उस घबराहट और परेशानी के वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. से कहा कि हुज़ूर! इस वक़्त हमें इससे बचाव की तलक़ीन करें। आपने फ़रमाया यह दुआ़ माँगोः

Maktab E Ashraf

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْعَوْرَاتِنَاوَاٰمِنْ رَوْعَاتِنَا.

'अल्लाहुम्मस्तुर औरातिना व आमिन् रौआतिना'

यानी ऐ अल्लाह! हमारी पर्दा-पोशी कर, और हमारे ख़ौफ़ व डर को अमन व अमान से बदल दे।

इधर मुसलमानों की ये दुआयें बुलन्द हुईं उधर ख़ुदाई लश्कर हवाओं की शक्ल में आया और काफ़िरों का तिया-पाँचा (यानी उनको अस्त-व्यस्त) कर दिया। वाक़ई तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं।

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ۝ وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اِلَّا غُرُوْرًا ۝ وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ۝

उस मौक़े पर मुसलमानों का इम्तिहान किया गया और सख़्त ज़लज़ले में डाले गए। (11) और जबकि मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, यूँ कह रहे थे कि हम से तो अल्लाह और उसके रसूल ने धोखे ही का वायदा कर रखा है। (12) और जबकि उनमें से बाज़ लोगों ने कहा कि ऐ यसरिब (यानी मदीना) के लोगो! तुम्हारे लिए ठहरने का मौक़ा नहीं, सो लौट चलो। और बाज़ लोग उनमें नबी से इजाज़त माँगते थे, कहते थे कि हमारे घर ग़ैर-महफ़ूज़ "यानी असुरक्षित" हैं, हालाँकि वे ग़ैर-महफ़ूज़ नहीं हैं, ये सिर्फ़ भागना ही चाहते हैं। (13)

एक सख़्त परेशानी का वक़्त

उस घबराहट और परेशानी का हाल बयान हो रहा है जो जंगे-अहज़ाब के मौक़े पर मुसलमानों की थी कि बाहर से दुश्मन अपनी पूरी क़ुव्वत और काफ़ी लश्कर से घेरा डाले खड़ा है, शहर के अन्दर बग़ावत की आग भड़की हुई है, यहूदियों ने अचानक सुलह तोड़कर बेचैनी पैदा कर दी है, मुसलमान खाने पीने तक से तंग हो गये हैं, मुनाफ़िक़ खुल्लम-खुल्ला अलग हो गये हैं, कमज़ोर दिल के लोग तरह-तरह की बातें बना रहे हैं, कह रहे हैं कि बस ख़ुदा के रसूल के वायदे देख लिये। कुछ लोग हैं जो एक दूसरे के कान में सूर फूँक रहे हैं कि मियाँ पागल हुए हो? देख नहीं रहे? दो घड़ी में नक़्शा पलटने वाला है, भाग चलो, लौटो लौटो वापस चलो। यसरिब से मुराद मदीना है। जैसे एक सही हदीस में है कि मुझे ख़्वाब में तुम्हारी हिजरत की जगह दिखाई गई है जो दो पथरीले मैदानों के बीच है। पहले तो मेरा ख़्याल हुआ था कि यह हिज्र है, लेकिन नहीं! वह जगह यसरिब है। एक और रिवायत में है कि वह जगह मदीना है। अलबत्ता ख़्याल रहे, एक ज़ईफ़ हदीस में है कि जो मदीने को यसरिब कहे वह इस्तिग़फ़ार करे। मदीना तो ताबा (पाक और उम्दा) है, वह ताबा है। यह हदीस सिर्फ़ मुस्नद अहमद में है और इसकी इस्नाद में कमज़ोरी है।

कहा गया है कि अ़मालीक़ (मुल्क शाम के बादशाह, ये अ़रब क़बीलों में से अनेक क़ौमें थीं जो विभिन्न इलाक़ों में फैल गयी थीं) में से जो शख़्स यहाँ आकर ठहरा था चूँकि उसका नाम यसरिब बिन

Maktab E Ashraf

अ़बीद बिन महलाईल बिन अ़िवस बिन अ़मलाक़ बिन लाज़ बिन इरम बिन साम बिन नूह था, इसलिये इस शहर को भी उसी के नाम से मशहूर किया गया। यह भी क़ौल है कि तौरात शरीफ़ में इसके ग्यारह नाम आये हैं। मदीना व ताबा, तैबा, मिस्कीना, जाबिरा, मुहिब्बा, महबूबा, क़ासिमा, मजबूरा, उज़्रा, मरहूमा। कअ़बे अहबार फ़रमाते हैं कि हम तौरात में यह इबारत पाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने मदीना शरीफ़ से फ़रमाया- ऐ तैबा और ऐ ताबा और ऐ मिस्कीना ख़ज़ानों में मुब्तला न हो, तमाम बस्तियों पर तेरा दर्जा बुलन्द होगा।

कुछ लोग तो इस ख़न्दक़ के मौक़े पर कहने लगे- यहाँ (हुज़ूर नबी करीम सल्ल. के पास) ठहरने की जगह नहीं अपने घरों को लौट चलो। बनू हारिसा कहने लगे या रसूलल्लाह! हमारे घरों में चोरी होने का ख़तरा है, वे ख़ाली पड़े हैं, हमें वापस जाने की इजाज़त मिलनी चाहिये। औस बिन क़ैज़ी ने भी यही कहा था कि हमारे घरों में दुश्मन के घुस जाने का अन्देशा है, हमें जाने की इजाज़त दीजिये। अल्लाह तआ़ला ने उनके दिल की बात बतला दी कि यह तो धोखा है, हक़ीक़त में उज़्र कुछ भी नहीं, नामर्दी से भगोड़ापन दिखाते हैं। लड़ाई से जी चुराकर सरकना चाहते हैं।

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا ٥ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ؕ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْئُوْلًا ٥ قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ٥ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ٥	और अगर (मदीना में) उसकी दिशाओं और किनारों से उन पर कोई आ घुसे फिर उनसे फ़साद की दरख़्वास्त की जाए तो ये उसको मन्ज़ूर कर लें और उन घरों में बहुत ही कम ठहरें। (14) हालाँकि यही लोग पहले ख़ुदा से अ़हद कर चुके थे कि पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से जो अ़हद किया जाता है उसकी पूछ "और सवाल" होगा। (15) आप फ़रमा दीजिए कि तुमको भागना कुछ फ़ायदेमन्द नहीं हो सकता। अगर तुम मौत से या क़त्ल से भागते हो, और इस हालत में सिवाय थोड़े दिनों के और ज़्यादा फ़ायदा उठाने वाले नहीं हो सकते। (16) यह भी फ़रमा दीजिए कि वह कौन है जो तुमको ख़ुदा से बचा सके, अगर वह तुम्हारे साथ बुराई करना चाहे। या वह कौन है जो ख़ुदा के फ़ज़्ल से तुमको रोक सके अगर वह तुम पर फ़ज़्ल करना चाहे, और ख़ुदा के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएँगे और न कोई मददगार। (17)

बहादुरी से भरी ज़िन्दगी या बुज़दिली का प्रदर्शन

जो लोग यह उज़्र करके (यानी बहाना बनाकर) जिहाद से भाग रहे थे कि हमारे घर अकेले पड़े हैं,

Mahtab E Ashraf

जिनका बयान ऊपर गुज़रा, उनके बारे में बारी तआ़ला फ़रमाता है कि अगर उन पर दुश्मन मदीने की तरफ़ से और हर-हर तरफ़ से आ जाये, फिर उनसे कुफ़्र में दाख़िल होने का सवाल किया जाये तो ये बिना किसी संकोच के कुफ़्र को क़बूल कर लेंगे। लेकिन थोड़े ख़ौफ़ और ख़्याली दहशत की बिना पर ईमान से भाग रहे हैं। यह उनकी बुराई बयान फ़रमाई है।

फिर फ़रमाता है कि यही तो हैं जो इससे पहले डींगे मारा करते थे कि चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये हम मैदाने जंग से पीठ फेरने वाले नहीं। क्या ये नहीं जानते कि ये जो वायदे इन्होंने ख़ुदा से किये थे अल्लाह तआ़ला उनके बारे में सवाल और पूछगछ करेगा। फिर इरशाद होता है कि यह मौत से भागना, लड़ाई से मुँह छुपाना, मैदान में पीठ दिखाना जान नहीं बचा सकता, बल्कि बहुत मुम्किन है कि ख़ुदा की अचानक पकड़ के जल्द आ जाने का यही कारण बन जाये और दुनिया का थोड़ा सा नफ़ा भी हासिल न हो सके। हालाँकि दुनिया तो आख़िरत जैसी बाक़ी चीज़ के मुक़ाबले पर सारी की सारी हक़ीर (बेवक़्अ़त, मामूली) और महज़ नाचीज़ है (यानी कुछ भी नहीं)। फिर फ़रमाया कि सिवाय ख़ुदा के कोई न दे सके न दिला सके, न मददगारी कर सके न हिमायत पर आ सके। ख़ुदा अपने इरादों को पूरा करके ही रहता है।

قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۭ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝

अल्लाह तआ़ला तुममें से उन लोगों को जानता है जो रुकावट बनते हैं और जो अपने (नसबी या वतनी) भाईयों से यूँ कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ, और लड़ाई में बहुत ही कम आते हैं। (18) तुम्हारे हक़ में कन्जूसी लिए हुए, सो जब ख़ौफ़ पेश आता है तो उनको देखते हो कि वे आपकी तरफ़ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आँखें चकराई जाती हैं, जैसे किसी पर मौत की बेहोशी तारी हो। फिर जब वह ख़ौफ़ दूर हो जाता है तो तुमको तेज़-तेज़ ज़बानों से ताने देते हैं, माल पर हिर्स लिए हुए। ये लोग ईमान नहीं लाए तो अल्लाह तआ़ला ने उनके तमाम आमाल बेकार कर रखे हैं, और यह बात अल्लाह के नज़दीक बिल्कुल आसान है। (19)

ज़ाहिर में ख़ाली बातें और अन्दर ही अन्दर फ़रेब व साज़िशें

अल्लाह तआ़ला अपने मुहीत (जो हर चीज़ को अपने घेरे में लिये हुए है) इल्म से उन्हें ख़ूब जानता है जो दूसरों को भी जिहाद से रोकते हैं। अपने मज्लिस के साथियों से, यार दोस्तों से, कुनबे क़बीले वालों से कहते हैं कि आओ तुम भी हमारे साथ रहो, अपने घरों को अपने आराम को अपनी ज़मीन को अपने बाल-बच्चों और घर वालों को न छोड़ो। ख़ुद भी जिहाद में नहीं आते, यह और बात है कि किसी-किसी वक़्त मुँह दिखा जायें और नाम लिखा जायें।

Maktab E Ashraf

ये बड़े बख़ील (कन्जूस) हैं, न इनसे तुम्हें कोई मदद पहुँचे न इनके दिल में तुम्हारी हमदर्दी, न माले ग़नीमत में तुम्हारे हिस्से पर ये ख़ुश हों। ख़ौफ़ के वक़्त तो नामर्दों और कायरों के हाथों के तोते उड़ जाते हैं। मायूसी भरी निगाहों से तकने लगते हैं, लेकिन ख़ौफ़ दूर हुआ कि इन्होंने लम्बी-लम्बी ज़बानें निकाल डालीं और बढ़-चढ़कर दावे करने लगे। 'हमें दो हमें दो' का शोर मचा देते हैं। हम आपके साथी हैं, हमने जंगी ख़िदमात अन्जाम दी हैं, हमारा हिस्सा है। और जंग के वक़्त सूरतें भी नहीं दिखाते, भागने वालों के आगे और लड़ने वालों के पीछे रहा करते हैं। माल के लालच और हिर्स में मक्खियों की तरह छटने लगते हैं। भला झूठ और नामर्दी दोनों ऐब जिसमें जमा हों उस जैसा बेख़ैर (यानी बेकार और अपने अन्दर कोई भलाई न रखने वाला) इनसान और कौन होगा? अमन के वक़्त अय्यारी मक्कारी, बद-अख़्लाक़ी बद-ज़बानी और लड़ाई के वक़्त नामर्दी, और ज़नानापन। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- बात यह है कि इनके दिल शुरू से ही ईमान से ख़ाली हैं, इसलिये इनके आमाल भी अकारत (बरबाद) हैं। अल्लाह पर यह आसान है।

يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ
يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ
فِى الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ
وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ۟ع ٢ ١٨

उन लोगों का यह ख़्याल है कि (अभी तक) ये लश्कर गए नहीं, और अगर (फ़र्ज़ कर लें कि) ये (गए हुए) लश्कर (फिर लौटकर) आ जाएँ तो (फिर तो) ये लोग (अपने लिए) यही पसन्द करेंगे कि काश! हम देहातियों में बाहर जाकर रहें कि तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें, और अगर तुम ही में रहें तब भी कुछ यूँ ही-सा लड़ें। (20)

यह कायरता

इनकी बुज़दिली (कायर्ता) और रौब में आ जाने का यह आ़लम है कि अब तक इन्हें इस बात का यक़ीन ही नहीं हुआ कि काफ़िरों का लश्कर वापस चला गया। इन्हें आशंका है कि वे कहीं न आ पड़ें। मुश्रिकों के लश्करों को देखते ही छक्के छूट जाते हैं और कहते हैं कि काश हम मुसलमानों के साथ इस शहर में ही न होते, बल्कि ग्रीमीणों (देहातियों) के साथ किसी गुमनाम गाँव या किसी दूर परे के जंगल में होते। किसी आते-जाते से पूछ लेते कि कहो भई लड़ाई का क्या परिणाम हुआ? अल्लाह फ़रमाता है कि ये अगर तुम्हारे साथ भी हों तो बेकार हैं, इनके दिल मुर्दा हैं, नामर्दी के घुन ने इन्हें खोखला कर रखा है, ये क्या लड़ेंगे और कौनसी बहादुरी दिखायेंगे।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ
الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ۟ وَلَمَّا
رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا

तुम लोगों के लिए यानी ऐसे शख़्स के लिए जो अल्लाह से और आख़िरत के दिन से डरता हो, और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करता हो, रसूलुल्लाह का एक उम्दा नमूना मौजूद था। (21) और जब ईमान वालों ने उन लश्करों को देखा तो कहने लगे कि यह वही है

مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّ تَسْلِيْمًا ﴿۲۲﴾	जिसकी हमको अल्लाह और उसके रसूल ने ख़बर दी थी, और अल्लाह व रसूल ने सच फ़रमाया था और उससे उनके ईमान और फ़रमाँबरदारी में तरक़्क़ी हो गई। (22)

Maktab E Ashraf

उम्दा नमूना

यह आयत बहुत बड़ी दलील है इस बात पर कि नबी करीम सल्ल. के तमाम अक़्वाल (बातें और फ़रमान), अफ़आ़ल (आमाल और काम), अहवाल (हालात) पैरवी, ताबेदारी और अनुसरण के लायक़ हैं। जंगे अहज़ाब में भी जो सब्र व सयंम और बेमिसाल बहादुरी का नमूना हुज़ूर सल्ल. ने पेश किया, जैसी राहे ख़ुदा की तैयारी, जिहाद के शौक़ और सख़्ती के वक़्त भी रब से आसानी की उम्मीदें उस वक़्त आपने दिखाईं ये तमाम चीज़ें यक़ीनन इस क़ाबिल हैं कि मुसलमान इन्हें अपनी ज़िन्दगी का ख़ास हिस्सा बना लें और अपने प्यारे रसूल हबीबे ख़ुदा अहमदे मुज्तबा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अपने लिये बेहतरीन नमूना बना लें और ये सिफ़तें और ख़ूबियाँ अपने अन्दर पैदा कर लें। इसलिये क़ुरआने करीम उन लोगों को जो उस वक़्त सटपटा रहे थे और घबराहट व परेशानी का इज़हार करते थे, फ़रमाता है कि तुमने मेरे नबी की ताबेदारी क्यों न की? मेरे रसूल तो तुम में मौजूद थे उनका नमूना तुम्हारे सामने था, तुम्हें सब्र व जमाव की न सिर्फ़ तलक़ीन थी बल्कि साबित-क़दमी, जमाव और इत्मीनान का पहाड़ तुम्हारी नज़रों के सामने था। तुम जबकि ख़ुदा पर ईमान रखते हो फिर कोई वजह न थी कि तुम अपने रसूल को अपने लिये नमूना और नज़ीर न बनाते।

फिर ख़ुदाई फ़ौज के सच्चे मोमिनों की, हुज़ूर सल्ल. के सच्चे साथियों के ईमान की पुख़्तगी बयान हो रही है कि उन्होंने जब काफ़िरों के बहुत बड़े टिड्डी-दल लश्कर को देखा तो पहली निगाह में ही बोल उठे कि इन्हीं पर फ़तह पाने की हमें ख़ुशख़बरी दी गई है। इन्हीं की शिकस्त का हम से वायदा हुआ है, और वायदा भी किसका? ख़ुदा का और रसूले ख़ुदा का। और यह हो ही नहीं सकता कि ख़ुदा और रसूल का वायदा ग़लत हो, यक़ीनन इस जंग की फ़तह का सेहरा हमारे सर होगा। उनके इस कामिल यक़ीन और सच्चे ईमान को रब ने भी देख लिया और दुनिया व आख़िरत में अन्जाम की बेहतरी उन्हें अ़ता फ़रमाई। बहुत मुम्किन है कि ख़ुदा के जिस वायदे की तरफ़ इसमें इशारा है वह आयत यह हो जो सूरः ब-क़रह में गुज़र चुकी है:

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ.......... الخ

यानी क्या तुमने यह समझ लिया है कि बग़ैर इसके कि तुम्हारी आज़माईश हो तुम जन्नत में चले जाओगे? तुमसे पहलों की आज़माईश भी होती थी नहीं भी, तो दुख-दर्द लड़ाई-भिड़ाई में मुब्तला किया गया यहाँ तक कि उन्हें हिलाया गया कि ईमान वाले और ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़बान से निकल गया कि ख़ुदा की मदद को देर क्यों लग गई? याद रखो रब की मदद बहुत ही क़रीब है। यानी यह तो सिर्फ़ इम्तिहान है, इधर तुमने साबित-क़दमी (दीन पर जमाव) दिखाई उधर रब की मदद आई। ख़ुदा और उसका रसूल सच्चा है, फ़रमाता है कि इन रसूल के सहाबा का ईमान अपने मुख़ालिफ़ों की इस क़द्र जमीयत (भारी

Maktaba E Ashraf

संख्या) को देखकर और बढ़ गया। ये अपने ईमान में, अपने तस्लीम करने में और बढ़ गये। पूरा यक़ीन हो गया, फ़रमाँबरदारी और बढ़ गई।

इस आयत में दलील है ईमान की ज़्यादती होने (बढ़ने) पर, और दूसरों के मुक़ाबले में इनके ईमान के क़वी (ताक़तवर) होने पर जमहूर अइम्मा-ए-किराम का भी यही फ़रमान है कि ईमान बढ़ता और घटता है, हमने भी इसकी तक़रीर शरह बुख़ारी के शुरू में कर दी है।

पस फ़रमाता है कि इस तंगी-तुर्शी ने, इस सख़्ती और तंगहाली ने, इस हाल और इस नक़्शे ने उनका जो ईमान ख़ुदा पर था उसे और बढ़ा दिया और जो तस्लीम की आदत उनमें थी कि ख़ुदा व रसूल की बातें माना करते थे और उन पर अ़मल करते थे, इस इताअ़त (आज्ञाकारी और फ़रमाँबरदारी) में और बढ़ गये।

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ۝ لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝	उन मोमिनों में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि उन्होंने जिस बात का अल्लाह से अ़हद किया था उसमें सच्चे उतरे, फिर बाज़े आदमी तो उनमें वे हैं जो अपनी मन्नत पूरी कर चुके हैं और बाज़े उनमें आरज़ू करने वाले हैं और उन्होंने ज़रा भी बदलाव नहीं किया। (23) यह वाक़िआ़ इसलिए हुआ ताकि अल्लाह तआ़ला सच्चे मुसलमानों को उनके सच का सिला दे, और मुनाफ़िक़ों को चाहे सज़ा दे या चाहे उनको तौबा की तौफ़ीक़ दे। बेशक अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (24)

अ़हद का पूरा करना

मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र हो चुका कि वक़्त से पहले तो जाँनिसारी के लम्बे-चौड़े दावे करते थे, लेकिन वक़्त आने पर पूरे बुज़दिल और नामर्द (कायर) साबित हुए। सारे दावे और वायदे रखे के रखे रह गये और बजाय साबित-क़दमी (जमाव) के पीठ फेरकर भाग खड़े हुए। यहाँ मोमिनों का ज़िक्र हो रहा है कि उन्होंने अपने वायदे पूरे कर दिखाये। बाज़ ने तो शहादत का जाम पी लिया और बाज़ उसके इन्तिज़ार में बेचैन हैं। सही बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत साबित रज़ि. फ़रमाया करते थे कि जब हमने क़ुरआन लिखना शुरू किया तो एक आयत मुझे नहीं मिलती थी हालाँकि सूरः अहज़ाब में वह आयत मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़बाने मुबारक से सुनी थी, आख़िर ख़ुज़ैमा बिन साबित अन्सारी के पास यह आयत मिली। यह वह सहाबी हैं जिनकी अकेले की गवाही को रसूले करीम सल्ल. ने दो गवाहों के बराबर कर दिया था। वह आयत

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا.........الخ

है (यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)। यह आयत हज़रत अनस बिन नज़र रज़ि. के बारे में नाज़िल हुई है। वाक़िआ़ यह है कि आप बदर की जंग में शरीक नहीं हो सके थे, जिसका उन्हें सख़्त अफ़सोस था कि सबसे पहली जंग में जिसमें ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल. शरीक थे मैं शामिल न हो सका। अब

जो जिहाद का मौक़ा आयेगा तो मैं अल्लाह तआ़ला को अपनी सच्चाई दिखा दूँगा। और यह भी कि मैं क्या करता हूँ? इससे ज़्यादा कहते हुए ख़ौफ़ खाया। अब जंगे उहुद का मौक़ा जब आया तो उन्होंने देखा कि सामने से हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ि. वापस आ रहे हैं, उन्हें देखकर ताज्जुब से फ़रमाया- ऐ अबू अ़मर! कहाँ जा रहे हो? वल्लाह मुझे उहुद पहाड़ के उस तरफ़ से जन्नत की ख़ुशबूयें आ रही हैं। यह कहते ही आगे बढ़े और ख़ूब तलवार चलाई। चूँकि मुसलमान लौट गये थे, यह तन्हा थे, इनके बेपनाह हमलों ने कुफ़्फ़ार के दाँत खट्टे कर दिये और भिड़-भिड़ाकर आ गये, हर तरफ़ से घेर लिया और शहीद कर दिया। आपको अस्सी से ऊपर ज़ख़्म आये थे, कोई नेज़े का कोई तलवार का कोई तीर का। शहादत के बाद कोई आपको पहचान न सका, सिर्फ़ आपकी बहन ने आपको पहचाना और वह भी हाथों की उंगलियों की पोरियाँ देखकर। उन्हीं के बारे में यह आयत नाज़िल हुई और यही ऐसे थे जिन्होंने जो कहा था कर दिखाया। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन।

एक और रिवायत में है कि जब मुसलमान भागे तो आपने फ़रमाया- ख़ुदाया इन्होंने जो किया मैं उससे अपनी माज़ूरी ज़ाहिर करता हूँ और मुश्रिकों ने जो किया उससे बेज़ार हूँ। उसमें यह भी है कि हज़रत सअ़द रज़ि. ने उनसे फ़रमाया मैं आपके साथ हूँ। साथ चलिये, लेकिन फ़रमाते हैं जो वे कर रहे हैं वह मेरी ताक़त से बाहर था। हज़रत तलहा रज़ि. का बयान इब्ने अबी हातिम में है कि जंगे उहुद से जब रसूलुल्लाह सल्ल. मदीना वापस आये तो मिम्बर पर चढ़कर अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ व सना बयान की और मुसलमानों से हमदर्दी ज़ाहिर की, जो-जो शहीद हो गये थे उनके बुलन्द रुतबों की ख़बर दी। फिर इसी आयत की तिलावत की। एक मुसलमान ने खड़े होकर पूछा कि या रसूलल्लाह! जिन लोगों का इस आयत में ज़िक्र है वे कौन हैं? उस वक़्त मैं सामने से आ रहा था और हज़रमी सब्ज़ रंग के दो कपड़े पहने हुए था। आपने मेरी तरफ़ इशारा करके फ़रमाया ऐ पूछने वाले यह भी उन्हीं में से हैं। उनके साहिबज़ादे हज़रत मूसा बिन तलहा हज़रत मुआ़विया के दरबार में गये, जब वहाँ से वापस आने लगे दरवाज़े से बाहर निकले ही थे कि हज़रत मुआ़विया रज़ि. ने वापस बुला लिया और फ़रमाया आओ मुझसे एक हदीस सुनते जाओ। मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि तुम्हारे वालिद तलहा उनमें से हैं जिनका बयान इस आयत में है कि उन्होंने अपना अ़हद और मन्नत पूरी कर दी।

रब्बुल-आ़लमीन इनका बयान फ़रमाकर फ़रमाता है कि बाज़ उस दिन के मुन्तज़िर हैं कि फिर लड़ाई हो और वे अपनी कारगुज़ारी ख़ुदा को दिखायें और शहादत का जाम नोश फ़रमायें। पस बाज़ों ने तो सच्चाई और वफ़ादारी साबित कर दी और बाज़ मौक़े के मुन्तज़िर हैं, उन्होंने न अ़हद बदला न नज़्र (मन्नत) को पूरी न करने का उन्हें ख़्याल गुज़रा, बल्कि वे अपने वायदे पर क़ायम हैं। वे मुनाफ़िक़ों की तरह वक़्त पर बहाने बनाने वाले नहीं, यह ख़ौफ़ और ज़लज़ला (लड़खड़ाहट) सिर्फ़ इस वास्ते था कि ख़बीस व तय्यिब (अच्छे और बुरे, पाक और नापाक) की तमीज़ (फ़र्क़ और पहचान) हो जाये और बुरे भले का हाल हर एक पर खुल जाये। क्योंकि ख़ुदा तो आ़लिमुल-ग़ैब है, उसके नज़दीक तो छुपा खुला सब बराबर है, जो नहीं हुआ उसे भी वह इसी तरह जानता है जिस तरह उसे जो हो चुका, लेकिन उसकी आ़दत है कि जब तक मख़्लूक़ अ़मल न कर ले उन्हें सिर्फ़ अपने इल्म की बिना पर जज़ा व सज़ा (अच्छा या बुरा बदला) नहीं देता। जैसे उसका फ़रमान है:

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِيْنَ........ الخ

हम तुम्हें ख़ूब परख कर मुजाहिदीन व साबिरीन को तुम में से अलग और नुमायाँ कर देंगे....।

पस वजूद से पहले का इल्म फिर वजूद के बाद का इल्म दोनों ख़ुदा को हैं और उसके बाद जज़ा और सज़ा। जैसे फ़रमायाः

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ......... الخ

यानी अल्लाह तआला जिस हाल पर तुम हो उसी पर मोमिनों को छोड़ दे ऐसा नहीं, जब तक कि वह भले बुरे की तमीज़ न करे। न अल्लाह ऐसा है कि तुम्हें ग़ैब पर आगाह कर दे।

पस यहाँ भी फ़रमाता है कि यह इसलिये कि सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और अ़हद तोड़ने वाले मुनाफ़िक़ों को सज़ा दे। या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे कि वे अपनी रविश (तरीक़ा और चलन) बदल दें और सच्चे दिल से ख़ुदा की तरफ़ झुक जायें तो अल्लाह भी मेहरबान हो जाये और उनकी ख़तायें माफ़ फ़रमा दे। इसलिये कि वह अपनी मख़्लूक़ की ख़तायें माफ़ फ़रमाने वाला और उन पर मेहरबानियाँ करने वाला है। उसकी रहमत व नर्मी उसके ग़ज़ब व ग़ुस्से से बढ़ी हुई है।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ۝	और अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों को उनके ग़ुस्से में भरा हुआ हटा दिया कि उनकी कुछ भी मुराद पूरी न हुई। और जंग में अल्लाह तआ़ला मुसलमानों के लिए आप ही काफ़ी हो गया, और अल्लाह तआ़ला बड़ी क़ुव्वत वाला, बड़ा ज़बरदस्त है। (25)

अल्लाह की तरफ़ से मदद व ताईद

अल्लाह तआ़ला अपना एहसान बयान फ़रमा रहा है कि उसने हवा व बारिश का तूफ़ान भेजकर और अपने नज़र न आने वाले लश्कर उतार कर काफ़िरों का धड़ तोड़ दिया, उन्हें सख़्त मायूसी हुई और नामुरादी (असफ़लता) के साथ घेराव हटाना पड़ा। बल्कि अगर रहमतुल-लिलआ़लमीन की उम्मत में ये न होते तो ये हवायें उनके साथ वही करतीं जो क़ौमे आ़द वालों के साथ इस बेबरकत हवा ने किया था। चूँकि रब्बुल-आ़लमीन का फ़रमान है कि तू जब तक उनमें है अल्लाह उन्हें आ़म अ़ज़ाब नहीं करेगा, लिहाज़ा उन्हें सिर्फ़ उनकी शरारत का मज़ा चखा दिया। उनके मजमे को मुन्तशिर (बिखेर) करके उन पर से अपना अ़ज़ाब हटा लिया। चूँकि यह उनका जमा और संगठित होना ख़ालिस नफ़्सानी इच्छा पर आधारित था इसलिये हवा ने ही उन्हें परागन्दा कर (विखेर) दिया। जो सोच और प्लान बनाकर आये थे सब ख़ाक में मिल गया, कहाँ की ग़नीमत? कहाँ की फ़तह? जान के लाले पड़ गये और हाथ मलते दाँत पीसते, झुंझलाते, ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ नामुरादी और नाकामयाबी से वापस हुए। दुनिया का ख़सारा (नुक़सान और घाटा) अलग हुआ आख़िरत का वबाल अलग है। क्योंकि जो शख़्स किसी काम का इरादा करे और अपने इरादे को अ़मली सूरत भी दे दे तो फिर वह उसमें कामयाब हो या न हो गुनाहगार तो हो ही गया। पस रसूलुल्लाह सल्ल. के क़त्ल और आपके दीन को फ़ना करने की आरज़ू, फिर इसकी कोशिश और प्लान, फिर इस पर अ़मल सब कुछ उन्होंने कर लिया, लेकिन क़ुदरत ने दोनों जहान का भार उन पर लादकर उन्हें जले दिल के साथ वापस किया। अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद ही मोमिनों की तरफ़ से उनका मुक़ाबला किया, न मुसलमान

Maktab E Ashraf

उनसे लड़े न उन्हें हटाया, बल्कि मुसलमान अपनी जगह रहे और वे भागते बने।

अल्लाह ने अपने लश्कर की लाज रख ली, अपने बन्दे की मदद की और ख़ुद ही काफ़ी हो गया। इसी लिये हुज़ूर सल्ल. फ़रमाया करते थे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसने अपने वायदे को सच्चा किया, अपने बन्दे की मदद की, अपने लश्कर की इज़्ज़त की, तमाम दुश्मनों से आप ही निपट लिया और सब को शिकस्त दे दी। उसके बाद और कोई भी नहीं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हुज़ूर सल्ल. ने जंगे अहज़ाब के मौक़े पर अल्लाह तआ़ला से जो दुआ़ की थी वह भी बुख़ारी व मुस्लिम में मौजूद है कि आपने फ़रमायाः

اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيْعَ الْحِسَابِ اِهْزِمِ الْاَحْزَابَ وَزَلْزِلْهُمْ.

ऐ अल्लाह! ऐ किताब के उतारने वाले! जल्द हिसाब ले लेने वाले! उन लश्करों को शिकस्त दे और उन्हें हिला डाल। इस फ़रमानः

وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ.

यानी ख़ुदा तआ़ला मोमिनों की तरफ़ से जंग में काफ़ी हो गया। इसमें एक निहायत लतीफ़ बात यह है कि न सिर्फ़ उस जंग से ही मुसलमान छूट गये हैं बल्कि आईन्दा हमेशा ही सहाबा इससे बच गये कि मुश्रिक लोग उन पर चढ़ दौड़ें। चुनाँचे आप तारीख़ (इतिहास) देख लीजिये जंगे ख़न्दक़ के बाद काफ़िरों की हिम्मत ही नहीं पड़ी कि वे मदीने पर या हुज़ूर सल्ल. पर किसी जगह ख़ुद चढ़ाई करते। उनके मन्हूस क़दमों से ख़ुदा ने अपने नबी के ठिकाने और आराम-गाह को महफ़ूज़ (सुरक्षित) कर दिया। तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिये हैं। बल्कि इसके विपरीत और उलट मुसलमान उन पर चढ़ गये, यहाँ तक कि अ़रब की सरज़मीन (इलाक़े) से ख़ुदा ने शिर्क व कुफ़्र को मिटा दिया।

जब इस जंग से काफ़िर लौटे उसी वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. ने बतौर पेशीनगोई (भविष्यवाणी) के फ़रमा दिया था कि इस साल के बाद क़ुरैश तुम से जंग नहीं करेंगे बल्कि तुम उनसे जंग करोगे। चुनाँचे यही हुआ यहाँ तक कि मक्का फ़तह हो गया। अल्लाह की क़ुव्वत का मुक़ाबला बन्दे के बस का नहीं। अल्लाह को कोई मग़लूब नहीं कर सकता, उसी ने अपनी मदद व क़ुव्वत से उन सरफिरे हुए और बिखरे हुए लश्करों को पीछे हटने पर मजबूर किया। उन्हें बराये नाम भी कोई नफ़ा (फ़ायदा और लाभ) न पहुँचाया। उसने इस्लाम और मुसलमानों को ग़ालिब किया, अपना वायदा सच्चा कर दिया और अपने बन्दे व रसूल सल्ल. की मदद फ़रमाई। फ़ल्हम्दु लिल्लाह

وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ۝ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ	और जिन अहले किताब ने उनकी मदद की थी उनको उनके क़िलों से नीचे उतार दिया और उनके दिलों में तुम्हारा रौब बिठा दिया, बाज़ को तुम क़त्ल करने लगे और बाज़ को क़ैद कर लिया। (26) और उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का तुमको मालिक बना दिया,

और ऐसी ज़मीन का भी जिस पर तुमने क़दम नहीं रखा, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। (27)	وَدِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَئُوْهَا ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ۝

Maktab E Ashraf

मुसलमानों की धाक और ग़लबा

इतना हम पहले भी लिख चुके हैं कि जब मुश्रिक लोगों और यहूद के लश्कर मदीने पर आये और उन्होंने घेरा डाला तो बनू क़ुरैज़ा के यहूदी जो मदीने में थे और जिनसे हुज़ूर सल्ल. का अ़हद व पैमान (समझौता) हो चुका था, उन्होंने भी ऐन मौक़े पर बेवफ़ाई की और अ़हद तोड़कर आँखें दिखाने लगे। उनका सरदार कअ़ब बिन असद बातों में आ गया और हुय्यि बिन अख़्तब ख़बीस ने उसे बद-अ़हदी (समझौता तोड़ने) पर आमादा कर दिया। पहले तो यह न माना और अपने अ़हद पर क़ायम रहा, हुय्यि ने कहा कि देख तो सही मैं तो तुझे इ़ज़्ज़त का ताज पहनाने आया हूँ। क़ुरैश, उनके साथ ग़तफ़ान और उनके साथी और हम सब एक साथ हैं। हमने क़सम खा रखी है कि जब तक एक-एक मुसलमान का क़ीमा न कर लेंगे यहाँ से नहीं हटेंगे। कअ़ब चूँकि तजुर्बेकार शख़्स था उसने जवाब दिया कि यह बिल्कुल ग़लत है। ये तुम्हारे बस के नहीं, तू हमें ज़िल्लत का तौक़ पहनाने आया है। तू बड़ा मन्हूस शख़्स है, मेरे सामने से हट जा और मुझे अपनी मक्कारी का शिकार न बना। लेकिन हुय्यि फिर भी न टला और उसे समझाता बुझाता रहा, आख़िर में कहा अगर फ़र्ज़ करो क़ुरैश और ग़तफ़ान भाग भी जायें तो मैं मय अपनी जमाअ़त के तेरी गढ़ी में आ जाऊँगा और जो कुछ तेरा और तेरी क़ौम का हाल होगा वही मेरा और मेरी क़ौम का हाल होगा। आख़िरकार कअ़ब पर हुय्यि का जादू चल गया और बनू क़ुरैज़ा ने सुलह तोड़ दी, जिससे हुज़ूर सल्ल. और सहाबा रज़ि. को बहुत सदमा हुआ और उनका यह इक़्दाम (क़दम उठाना) आपको बहुत ही भारी पड़ा। फिर जब अल्लाह तआ़ला ने अपने मुख़्लिस बन्दों की मदद की और हुज़ूर सल्ल. मय सहाबा के कामयाब व विजयी मदीना शरीफ़ को वापस आये तो सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने हथियार खोल दिये और हुज़ूर सल्ल. भी हथियार उतार कर हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के घर में गर्द व ग़ुबार से पाक साफ़ होने के लिये ग़ुस्ल करने को बैठे ही थे कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ज़ाहिर हुए, आपके सर पर रेशमी अ़मामा (पगड़ी) था। ख़च्चर पर सवार थे जिस पर रेशमी गद्दा था, फ़रमाने लगे कि या रसूलल्लाह! क्या आपने कमर खोल ली? आपने फ़रमाया हाँ। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया लेकिन फ़रिश्तों ने अब तक अपने हथियार अलग नहीं किये। मैं काफ़िरों का पीछा करके अभी-अभी आ रहा हूँ। सुनिये! अल्लाह तआ़ला का हुक्म है कि बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ चलिये और उनको उनके किये की सज़ा दीजिये। मुझे भी ख़ुदा का हुक्म मिल चुका है कि मैं उन्हें थर्रा दूँ।

हुज़ूर सल्ल. उसी वक़्त खड़े हुए तैयार होकर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को कूच का हुक्म किया और फ़रमाया कि तुममें से हर एक अ़सर की नमाज़ बनू क़ुरैज़ा ही में पढ़े। ज़ोहर की नमाज़ के बाद यह हुक्म मिला था। बनू क़ुरैज़ा का क़िला यहाँ से कई मील पर था, नमाज़ का वक़्त सहाबा रज़ि. को रास्ते ही में आ गया तो बाज़ों ने तो नमाज़ अदा कर ली और फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल. के इस फ़रमान का मतलब यही था कि हम बहुत तेज़ चाल चलें और बहुत सों ने कहा कि हम तो वहाँ पहुँचे बग़ैर नमाज़ नहीं पढ़ेंगे। जब आपको यह बात मालूम हुई तो आप सल्ल. ने दोनों में से किसी को डाँट-डपट नहीं की। आपने मदीने में

Maktab-e-Ashraf

हज़रत उम्मे मक्तूम रज़ि. को ख़लीफ़ा बनाया, हज़रत अ़ली रज़ि. के हाथ में लश्कर का झण्डा दिया और आप भी सहाबा रज़ि. के पीछे ही पीछे बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ चले और जाकर उनके क़िले को घेर लिया। यह मुहासरा (घेराव) पच्चीस रोज़ तक रहा। जब यहूदियों का नाक में दम आ गया और तंगहाल हो गये तो उन्होंने अपना हकम (फ़ैसला करने वाला) सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ि. को बनाया जो क़बीला-ए-औस के सरदार थे। बनू क़ुरैज़ा और औस में इस्लाम से भी पहले ज़माने में मेलजोल और एकता थी। एक दूसरे के हलीफ़ (साथी) थे, इसलिये उन यहूदियों को ख़्याल रहा कि हज़रत सअ़द हमारा लिहाज़ और पास करेंगे जैसे कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल ने बनू क़ैनुक़ाअ़ को छुड़वाया था।

उधर हज़रत सअ़द रज़ि. की हालत यह थी कि जंगे ख़न्दक़ में उन्हें बाज़ू की रग में एक तीर लगा था जिससे ख़ून जारी था, हुज़ूर सल्ल. ने ज़ख़्म पर दाग़ लगवाया था और मस्जिद के ख़ेमे में ही उन्हें रखा था कि पास ही पास अ़यादत और बीमारपुर्सी कर लिया करें। हज़रत सअ़द रज़ि. ने जो दुआ़यें की थीं उनमें एक दुआ़ यह भी थी कि ऐ परवर्दिगार! अगर अब भी कोई लड़ाई बाक़ी है जिसमें क़ुरैश के काफ़िर तेरे नबी पर चढ़ आयें तो तू मुझे ज़िन्दा रख कि मैं उसमें शिर्कत कर सकूँ। और अगर तूने कोई एक लड़ाई भी ऐसी बाक़ी नहीं रखी तो ख़ैर मेरे ज़ख़्म का ख़ून बहता रहे लेकिन ऐ मेरे रब! जब तक बनू क़ुरैज़ा क़बीले की सरकशी की सज़ा से मैं अपनी आँखें ठंडी न कर लूँ तू मेरी मौत को टाल देना।

हज़रत सअ़द रज़ि. जैसे मुस्तजाबुद्-दावात (मक़बूल दुआ़ वाले) की दुआ़ की क़बूलियत की शान देखिये कि इधर आप यह दुआ़ करते हैं उधर बनू क़ुरैज़ा के यहूद आपके फ़ैसले पर रज़ामन्दी और सहमति का इज़हार करके क़िले को मुसलमानों के सुपुर्द करते हैं। जनाब रसूले ख़ुदा सल्ल. आदमी भेजकर आपको मदीना से बुलवाते हैं कि आप आकर उनके बारे में अपना फ़ैसला सुना दें। ये गधे पर सवार करा लिये गये और सारा क़बीला-ए-औस लिपट गया कि देखिये हज़रत ख़्याल रखियेगा, बनू क़ुरैज़ा आपके आदमी हैं, उन्होंने आप पर भरोसा किया है, वे आपके हलीफ़ (साथी) हैं, आपकी क़ौम के दुख-सुख के साथी हैं, आप उन पर रहम फ़रमाईयेगा, उनके साथ नर्मी से पेश आईयेगा। देखिये इस वक़्त उनका कोई नहीं, वे आपके बस में हैं, वग़ैरह। लेकिन हज़रत सअ़द रज़ि. बिल्कुल ख़ामोश थे, कोई जवाब नहीं देते थे। उन लोगों ने मजबूर किया कि जवाब दें, पीछा ही नहीं छोड़ा, आख़िर आपने फ़रमाया वक़्त आ गया है कि सअ़द इस बात का सुबूत दे कि उसे ख़ुदा की राह में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह नहीं। यह सुनते ही उन लोगों के तो दिल डूब गये और समझ लिया कि बनू क़ुरैज़ा की ख़ैर नहीं।

जब हज़रत सअ़द रज़ि. की सवारी उस ख़ेमे के क़रीब पहुँच गई जिसमें जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल. थे तो आपने फ़रमाया लोगो! अपने सरदार के इस्तिक़बाल (स्वागत) के लिये उठो। चुनाँचे मुसलमान उठ खड़े हुए और आपको इ़ज़्ज़त व इकराम, अदब व सम्मान से सवारी से उतारा। यह इसलिये था कि उस वक़्त आप हकम (फ़ैसला देने वाले) की हैसियत में थे। आपका फ़ैसला आख़िरी और नाफ़िज़ समझा जाने वाला था। आपके बैठते ही हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया ये लोग आपके फ़ैसले पर रज़ामन्द होकर क़िले से निकल आये हैं, अब आप इनके बारे में जो चाहें हुक्म कीजिये। आपने कहा क्या जो मैं इनके बारे में फ़ैसला कर दूँगा वह पूरा होगा? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया हाँ क्यों नहीं? कहा और इस ख़ेमे वालों पर उसकी तामील ज़रूरी होगी? आपने फ़रमाया यक़ीनन। पूछा और इस तरफ़ वालों पर भी? और इशारा उस तरफ़ किया जिस तरफ़ ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल. थे। लेकिन आपकी तरफ़ नहीं देखा, आपकी बुज़ुर्गी और इ़ज़्ज़त व सम्मान की वजह से। हुज़ूर सल्ल. ने जवाब दिया हाँ इस तरफ़ वालों पर भी। आपने फ़रमाया अब मेरा फ़ैसला सुनिये। मैं कहता

Mahtab E Ashraf

हूँ कि बनू क़ुरैज़ा में जितने लोग लड़ने वाले हैं उन्हें क़त्ल कर दिया जाये, उनकी औलाद को क़ैद कर लिया जाये, उनके माल क़ब्ज़े में लाये जायें। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया ऐ सअ़द! तुमने उनके बारे में वही हुक्म किया जो अल्लाह तआ़ला ने सातवें आसमान के ऊपर किया है।

एक रिवायत में है कि आपने फ़रमाया- तुमने सच्चे मालिक ख़ुदा तआ़ला का जो हुक्म था वही सुनाया है। फिर हुज़ूर सल्ल. के हुक्म से ख़न्दकें, खाई खुदवाकर उन्हें बंधा हुआ बुलवाकर उनकी गर्दनें मारी गईं, ये गिनती में सात आठ सौ थे। उनकी औरतें और नाबालिग़ बच्चे और माल ले लिये गये। हमने ये तमाम वाक़िआ़त अपनी सीरत की किताब में काफ़ी तफ़सील से लिख दिये हैं।

पस फ़रमाता है कि जिन अहले किताब यानी यहूदियों ने काफ़िरों के लश्करों की हिम्मत और हौसला बढ़ाया और उनका साथ दिया था उनसे भी अल्लाह तआ़ला ने उनके क़िले ख़ाली करा दिये। उस क़ौम बनू क़ुरैज़ा के बड़े सरदार जिनसे उनकी नस्ल जारी हुई थी, अगले ज़माने में आकर हिजाज़ (सऊदी के इलाक़े) में इसी ख़्याल से बसे थे कि जिस नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) हमारी किताबों में है वह चूँकि यहीं होने वाले हैं तो हम सबसे पहले आपकी इत्तिबा (पैरवी और ताबेदारी) से लाभान्वित होंगे। लेकिन जब ख़ुदा के वह नबी आये तो उनकी इन नालायक़ औलादों ने उनको झुठलाया, जिसकी वजह से ख़ुदा की लानत इन पर नाज़िल हुई। 'सयासी' से मुराद क़िले हैं, इस मायने के लिहाज़ से सींगों को भी सयासी कहते हैं, इसलिये कि जानवर के सारे जिस्म के ऊपर और सबसे बुलन्द यही होते हैं।

उनके दिलों में रौब डाल दिया, उन्होंने ही मुश्रिकों को भड़काकर रसूलुल्लाह सल्ल. पर चढ़ाई कराई थी। आ़लिम जाहिल बराबर नहीं होते, यही थे जिन्होंने मुसलमानों को जड़ों से उखाड़ देना चाहा था, लेकिन मामला इसके उलट हो गया, पाँसा पलट गया, क़ुव्वत कमज़ोरी और मुराद नामुरादी से बदल गई। नक़्शा बिगड़ गया, हिमायती भाग खड़े हुए, ये तन्हा और बेबस रह गये। इज़्ज़त की ख़्वाहिश ने ज़िल्लत दिखाई, मुसलमानों के बरबाद करने और पीस डालने की तमन्ना ने अपने आपको पिसवा दिया, और अभी आख़िरत की मेहरूमी बाक़ी है। कुछ क़त्ल कर दिये गये।

अ़तीया क़ुरज़ी का बयान है कि मैं जब हुज़ूर सल्ल. के सामने पेश किया गया तो मेरे बारे में हुज़ूर सल्ल. को कुछ पसोपेश हुआ। फ़रमाया इसे अलग ले जाओ, देखो अगर इसकी नाफ़ के नीचे बाल हों तो क़त्ल कर दो (यानी अगर यह बालिग़ हो) वरना क़ैदियों में बैठा दो। मैं बच्चा था, ज़िन्दा छोड़ दिया गया। उनकी ज़मीन के उनके घर के माल के मालिक मुसलमान हो गये। बल्कि उस ज़मीन के भी जो अब तक पड़ी थी और जहाँ मुसलमानों के क़दम के निशान भी न पड़े थे, यानी ख़ैबर की ज़मीन या मक्का शरीफ़ की ज़मीन या फ़ारस की या रोम की ज़मीन, और मुम्किन है कि इससे तमाम ख़ित्ते मुराद हों और अल्लाह बड़ी क़ुदरतों वाला है।

मुस्नद अहमद में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का बयान है कि ख़न्दक़ वाले दिन मैं निकली कि लश्कर का कुछ हाल मालूम करूँ तो मुझे अपने पीछे से किसी के बड़े ज़ोर से आने की आहट और उसके हथियार की झंकार सुनाई दी। मैं रास्ते से हटकर एक जगह बैठ गई। देखा कि हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ लश्कर की तरफ़ जा रहे हैं और उनके साथ उनके भाई हारिस बिन औस थे, जिनके हाथ में उनकी ढाल थी। हज़रत सअ़द रज़ि. लोहे की ज़िरह (लोहे का कुर्ता) पहने हुए थे लेकिन बड़े लम्बे चौड़े थे, ज़िरह पूरे बदन पर नहीं आई थी, हाथ खुले हुए थे, अश्आ़र पढ़ते हुए झूमते चले जा रहे थे। मैं यहाँ से और आगे बढ़ी और एक बाग़ीचे में चली गई, वहाँ कुछ मुसलमान मौजूद थे जिनमें उमर बिन ख़त्ताब भी थे और एक

Maktabah Ashraf

साहिब जो 'खुद' (लोहे की टोपी) ओढ़े हुए थे। हज़रत उमर ने मुझे देख लिया बस फिर क्या था, बड़े ही बिगड़े और मुझसे फ़रमाने लगे यह दिलेरी? तुम नहीं जानतीं लड़ाई हो रही है? ख़ुदा जाने क्या नतीजा हो? तुम कैसे यहाँ चली आईं वग़ैरह वग़ैरह। ग़र्ज़ मुझे इस क़द्र मलामत की कि ज़मीन फट जाती तो मैं उसमें समा जाती। जो साहिब 'खुद' से अपना मुँह छुपाये हुए थे उन्होंने हज़रत उमर फ़ारूक़ की ये बातें सुनकर अपने सर से लोहे का टोप उतारा, देखा अब मैं पहचान गई कि वह तलहा बिन उबैदुल्लाह थे। उन्होंने हज़रत उमर को ख़ामोश किया कि क्या मलामत शुरू कर रखी है, नतीजे का क्या डर है? क्यों तुम्हें इतनी घबराहट है? कोई भाग कर जायेगा कहाँ? सब कुछ अल्लाह के हाथ में है।

हज़रत सअ़द रज़ि. को एक क़ुरैशी ने ताक कर तीर लगाया और कहा ले मैं इब्ने अ़रक़ा हूँ। हज़रत सअ़द रज़ि. की अक्हल की रग पर वह तीर पड़ा और पेवस्त हो गया। ख़ून के फ़ुव्वारे छूट गये। उसी वक़्त आपने दुआ़ की कि ख़ुदाया मुझे मौत न देना जब तक कि बनू क़ुरैज़ा की तबाही अपनी आँखों से न देख लूँ। ख़ुदा की शान देखिये कि उसी वक़्त ख़ून थम गया, मुश्रिकों को हवाओं ने भगा दिया और अल्लाह ने मोमिनों की मदद की। अबू सुफ़ियान और उसके साथी तो भागकर तिहामा में चले गये, उयैना बिन बदर और उसके साथी नज्द में चले गये। बनू क़ुरैज़ा ने अपने क़िले में जाकर पनाह ली। मैदान ख़ाली देखकर रसूलुल्लाह सल्ल. मदीने में वापस तशरीफ़ ले आये। हज़रत सअ़द रज़ि. के लिये मस्जिद में ही चमड़े का ख़ेमा गाड़ा गया। उसी वक़्त हज़रत जिब्राईल आये, आपका चेहरा गर्द से भरा हुआ था। फ़रमाने लगे आपने हथियार खोल दिये? हालाँकि फ़रिश्ते अब तक हथियार लगाये हुए हैं। उठिये बनू क़ुरैज़ा से भी फ़ैसला कर लीजिये, उन पर चढ़ाई कीजिये।

हुज़ूर सल्ल. ने फ़ौरन हथियार लगाये और सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम में भी कूच की मुनादी करा दी। बनू तमीम के मकानात मस्जिदे नबवी से मिले हुए ही थे, राह में आपने उनसे पूछा क्यों भई किसी को जाते हुए देखा है? उन्होंने कहा अभी-अभी हज़रत दिहया कलबी गये हैं, हालाँकि थे तो वह हज़रत जिब्राईल लेकिन आपकी दाढ़ी चेहरा बिल्कुल हज़रत दिहया से मिलता-जुलता था। अब आपने जाकर बनू क़ुरैज़ा का घेराव कर लिया, पच्चीस रोज़ तक यह घेराव रहा। जब वे घबराये और तंग आ गये तो उनसे कहा गया कि क़िला हमें सौंप दो और तुम भी हमारे क़ब्ज़े में आ जाओ। रसूलुल्लाह सल्ल. तुम्हारे बारे में जो चाहेंगे फ़ैसला फ़रमा देंगे। उन्होंने हज़रत लबाबा अ़ब्दुल-मुन्ज़िर से मश्विरा किया तो उन्होंने इशारा किया कि इस सूरत में अपनी जान से हाथ धो लेना। उन्होंने यह मालूम करके इसे तो नामन्ज़ूर कर दिया और कहने लगे हम क़िला ख़ाली कर देते हैं, आपकी फ़ौज को क़ब्ज़ा दे देते हैं, हम अपने बारे में इस फ़ैसले का इख़्तियार हज़रत सअ़द को देते हैं। आपने इसे भी मन्ज़ूर फ़रमा लिया। हज़रत सअ़द रज़ि. को बुलवाया, आप तशरीफ़ ले आये, गधे पर सवार थे जिस पर खजूर के पेड़ की छाल की गद्दी थी, आप उस पर मुश्किल से सवार कर दिये गये थे, आपकी क़ौम आपको घेरे हुए थी और समझा रही थी कि देखो बनू क़ुरैज़ा हमारे हलीफ़ (साथी) हैं, हमारे दोस्त हैं, हमारे मरने जीने के शरीक हैं और उनके ताल्लुक़ात जो हमसे हैं वह आप पर छुपे नहीं। आप ख़ामोशी से सब की बातें सुनते जाते थे।

जब उनके मौहल्ले में पहुँचे तो उनकी तरफ़ नज़र डाली और कहा वक़्त आ गया है कि मैं ख़ुदा की राह में किसी मलामत करने वाले की मलामत की ज़रा भी परवाह न करूँ। जब हुज़ूर सल्ल. के ख़ेमे के पास आपकी सवारी पहुँची तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया अपने सरदार व आक़ा की तरफ़ उठो और उन्हें उतारो। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया हमारा आक़ा तो अल्लाह ही है। आपने फ़रमाया उतारो। लोगों ने

Maktab E Ashraf

मिल-जुलकर उन्हें सवारी से उतारा। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया सअ़द इनके बारे में जो हुक्म करना चाहो कर दो। आपने फ़रमाया उनके बड़े क़त्ल कर दिये जायें, उनके छोटे गुलाम बना लिये जायें, उनका माल तक़सीम कर लिया जाये। आपने फ़रमाया सअ़द तुमने इस हुक्म में अल्लाह और रसूल की पूरी मुवाफ़कृत की। फिर हज़रत सअ़द रज़ि. ने दुआ़ माँगी कि ख़ुदाया! अगर तेरे नबी पर क़ुरैश की कोई और चढ़ाई भी बाक़ी हो तो तू मुझे उसमें शिर्कत के लिये ज़िन्दा रख वरना अपनी तरफ़ बुला ले। उसी वक़्त ज़ख़्म से ख़ून बहने लगा, हालाँकि वह पूरा भर चुका था मामूली सा ही बाक़ी था। चुनाँचे उन्हें फिर वापस उसी ख़ेमे में पहुँचा दिया गया और आप वहीं शहीद हो गये। रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

खुद हुज़ूर सल्ल. और आपके साथ हज़रत अबू बक्र रज़ि. हज़रत उमर रज़ि. वग़ैरह भी आये, सब रो रहे थे और मैं अबू बक्र की आवाज़ और उमर की आवाज़ में फ़र्क़ भी कर रही थी। मैं उस वक़्त अपने हुजरे में थी। वास्तव में रसूलुल्लाह सल्ल. के सहाबा ऐसे ही थे जैसा कि ख़ुदा तआ़ला ने फ़रमायाः

رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ.

कि वे आपस में एक दूसरे की पूरी मुहब्बत और एक दूसरे से उलफ़त रखने वाले थे।

हज़रत अ़ल्क़मा रह. ने पूछा उम्मुल-मोमिनीन! यह तो फ़रमाईये कि रसूलुल्लाह सल्ल. किस तरह रोया करते थे? फ़रमाया आपकी आँखें किसी पर आँसू नहीं बहाती थीं, हाँ ग़म व रंज के मौक़े पर आप अपनी दाढ़ी मुबारक अपनी मुट्ठी में ले लेते थे।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ○ وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ○

ऐ नबी! आप अपनी बीवियों से फ़रमा दीजिए कि तुम अगर दुनियावी ज़िन्दगी (का ऐश) और उसकी बहार चाहती हो तो आओ मैं तुमको कुछ माल और (दुनियावी) सामान दे दूँ और तुमको ख़ूबी के साथ रुख़्सत करूँ। (28) और अगर तुम अल्लाह को चाहती हो और उसके रसूल को और आख़िरत के घर को तो तुममें नेक किरदारों के लिए अल्लाह तआ़ला ने बड़ा अज्र मुहैया कर रखा है। (29)

दुनियावी ज़िन्दगी का ऐश व आराम

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला अपने नबी को हुक्म देता है कि अपनी बीवियों को दो बातों में से एक के इख़्तियार करने का हुक्म दें। उनसे कहिये कि अगर तुम दुनिया और उसकी रौनक़ पर रीझती हो तो आओ मैं तुम्हें अपने निकाह से अलग कर देता हूँ। और अगर तुम तंगी-तुर्शी पर सब्र करके ख़ुदा की ख़ुशी, रसूल की रज़ामन्दी चाहती हो और आख़िरत की रौनक़ पसन्द है तो सब्र व संयम से मेरे साथ ज़िन्दगी गुज़ारो। अल्लाह तुम्हें वहाँ की नेमतों से सम्मानित फ़रमायेगा। अल्लाह आपकी तमाम बीवियों से जो उम्मत की माँयें हैं, ख़ुश रहे। सब ने अल्लाह को, उसके रसूल को और आख़िरत के जहान को ही पसन्द फ़रमाया,

Maktab E Ashraf

जिस पर रब राज़ी हुआ और आख़िरत साथ ही दुनिया की ख़ुशियाँ भी अ़ता फ़रमाईं।

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का बयान है कि इस आयत के उतरते ही अल्लाह के नबी मेरे पास आये और मुझसे फ़रमाने लगे कि मैं एक बात का तुमसे ज़िक्र करने वाला हूँ तुम जवाब में जल्दी न करना, अपने माँ-बाप से मश्विरा करके जवाब देना। यह तो आप जानते ही थे कि नामुम्किन है कि मेरे वालिदैन मुझे आपसे जुदाई और अलग होने का मश्विरा दें। फिर आपने यह आयत पढ़कर सुनाई। मैंने फ़ौरन जवाब दिया कि या रसूलल्लाह! इसमें माँ-बाप से मश्विरा करने की कौनसी बात है, मुझे ख़ुदा पसन्द है, उसके रसूल पसन्द हैं और आख़िरत का घर पसन्द है। आपकी और दूसरी तमाम बीवियों ने भी वही किया जो मैंने किया था।

एक और रिवायत में है कि तीन दफ़ा हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया कि देखो बग़ैर अपने माँ-बाप से कोई मश्विरा किये कोई फ़ैसला न कर लेना। फिर जब हुज़ूर सल्ल. ने मेरा जवाब सुना तो आप ख़ुश हो गये और हंस दिये। फिर आप दूसरी अज़्वाजे-मुतह्हरात (अपनी पाक बीवियों) के हुजरों में तशरीफ़ ले गये, उनसे पहले ही फ़रमा देते थे कि आ़यशा ने तो यह जवाब दिया है।

नोटः मक़सद यह था कि वे देखें कि जब अबू बक्र की बेटी, सबसे अ़क़्लमन्द और ज़हीन और एक कुंवारी व नौउम्र का यह फ़ैसला है, जबकि उसको ज़्यादा नाज़ व नेमत और ज़ाहिरी ज़ीनत की ज़रूरत है तो हम ज़्यादा उम्र वालियों, ग़ैर-कुंवारियों को तो और भी ज़्यादा सादगी और दुनिया से बेरग़बती की ज़रूरत है। यानी हमें दुनिया की रौनक़ व ज़ीनत के मुक़ाबले में अल्लाह, उसके रसूल और आख़िरत ही को पसन्द करना चाहिये। आपका मक़सद यही था कि कोई बहक न जाये, अपने इस वक़ार व सम्मान को न खो दे जो तमाम रसूलों के सरदार की बीवी बनने का अल्लाह तआ़ला ने उनको बख़्शा है। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

फ़रमाती हैं कि इस इख़्तियार के बाद जब हमने आपको इख़्तियार किया तो यह इख़्तियार तलाक़ में शुमार नहीं हुआ। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर होना चाहा, लोग आपके दरवाज़े पर बैठे हुए थे और आप अन्दर तशरीफ़ रखते थे। इजाज़त नहीं मिली। इतने में हज़रत उमर भी आ गये, इजाज़त चाही लेकिन उन्हें इजाज़त न मिली। थोड़ी देर में दोनों को याद फ़रमाया गया। देखा कि आपकी पाक बीवियाँ आपके पास बैठी हैं और आप ख़ामोश हैं। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा देखो मैं ख़ुदा के पैग़म्बर को हंसा देता हूँ। फिर कहने लगे या रसूलल्लाह! काश कि आप देखते मेरी बीवी ने आज मुझसे रुपया-पैसा माँगा, मेरे पास था नहीं, जब ज़्यादा ज़िद करने लगीं तो मैंने उठकर गर्दन नापी। यह सुनते ही हुज़ूर सल्ल. हंस पड़े और फ़रमाने लगे यहाँ भी यही क़िस्सा है। देखो ये सब बैठी हुई मुझसे माल तलब कर रही हैं? अबू बक्र रज़ि., हज़रत आ़यशा की तरफ़ लपके और उमर रज़ि. हज़रत हफ़्सा रज़ि. की तरफ़ और फ़रमाने लगे अफ़सोस तुम रसूलुल्लाह से वह माँगती हो जो आपके पास नहीं। वह तो कहिये ख़ैर गुज़री कि रसूलुल्लाह ने उन्हें रोक लिया वरना अ़जब नहीं दोनों बुज़ुर्ग अपनी-अपनी बेटियों को मारते। अब तो सब बीवियाँ कहने लगीं कि अच्छा हमारी ग़लती और क़ुसूर हुआ अब से हम हुज़ूर को हरगिज़ तंग न करेंगे। अब ये आयतें उतरीं और दुनिया और आख़िरत की पसन्दीदगी में उन्हें इख़्तियार दिया। सबसे पहले आप हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास गये, उन्होंने आख़िरत को पसन्द किया जैसा कि तफ़सील से गुज़रा। साथ ही दरख़्वास्त की कि या रसूलल्लाह! अपनी किसी बीवी से यह न फ़रमाईयेगा कि मैंने आपको पसन्द किया है (हज़रत आ़यशा हुज़ूरे पाक से हद से ज़्यादा मुहब्बत की वजह से शायद यह

Maktab E Ashraf

सोच रही हों कि आप मेरे अकेली ही के रह जायें)। आपने जवाब दिया कि ख़ुदा ने मुझे छुपाने वाला बनाकर नहीं भेजा, बल्कि मैं सिखाने वाला आसानी करने वाला बनाकर भेजा गया हूँ। मुझसे तो जो पूछेगी मैं साफ़-साफ़ बता दूँगा।

हज़रत अ़ली रज़ि. का फ़रमान है कि तलाक़ का इख़्तियार नहीं दिया गया था बल्कि दुनिया या आख़िरत की तरजीह का इख़्तियार दिया, लेकिन इसकी सनद में इन्क़िता है, और यह आयत के ज़ाहिरी लफ़्ज़ों के भी ख़िलाफ़ है। क्योंकि पहली आयत के आख़िर में साफ़ मौजूद है कि आओ मैं तुम्हारे हुक़ूक़ अदा कर दूँ और तुम्हें छुटकारा दे दूँ। इसमें उलेमा-ए-किराम का अगरचे इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि अगर आप तलाक़ दे दें तो फिर किसी का उनसे निकाह जायज़ है या नहीं? लेकिन सही क़ौल यह है कि जायज़ है ताकि उस तलाक़ से वह नतीजा यानी दुनिया-तलबी और दुनिया की ज़ीनत व रौनक़ उन्हें हासिल हो सके (लेकिन वफ़ात की सूरत में सबका इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि आपकी किसी भी बीवी से निकाह जायज़ नहीं) वल्लाहु आलम।

जब यह आयत उतरी और जब इसका हुक्म हुज़ूर सल्ल. ने अज़वाजे मुतह्हरात उम्महातुल-मोमिनीन को सुनाया उस वक़्त आपकी नौ बीवियाँ थीं, पाँच तो क़ुरैशिया (1) आयशा (2) हफ़्सा (3) उम्मे हबीबा (4) सौदा (5) उम्मे सलमा। और (6) सफ़िया बिन्ते हुय्यि जो क़बीला नज़र की थीं (7) मैमूना बिन्ते हारिस जो हिलालिया थीं (8) ज़ैनब बिन्ते जहश जो असदिया थीं और (9) जुवैरिया बिन्ते हारिस जो तलाक़-याफ़्ता थीं। रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न अज्मईन।

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की बीवियो! जो कोई तुममें से ख़ुली हुई बेहूदगी करेगी, उसको दोहरी सज़ा दी जाएगी। और यह बात अल्लाह को आसान है। (30)	يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝

जिनके रुतबे बुलन्द हैं उनकी मुश्किलात भी बड़ी होती हैं

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बीवियों ने यानी मोमिनों की माँओं ने जब अल्लाह को, उसके रसूल सल्ल. को और आख़िरत के घर को पसन्द कर लिया और हुज़ूर सल्ल. के घर में वे हमेशा के लिये ठहर चुकीं तो अब अल्लाह तआ़ला इस आयत में उन्हें वअ़ज़ (नसीहत) फ़रमा रहा और बतला रहा है कि तुम्हारा मामला आ़म औरतों जैसा नहीं है। अगर फ़र्ज़ करो तुमने नबी की फ़रमाँबरदारी से मुँह मोड़ा और अगर फ़र्ज़ करो तुमसे कोई बद-ख़ुल्क़ी (बुराई और गिरी हुई हरकत) सरज़द हुई तो तुम्हें दुनिया और आख़िरत में इताब (अल्लाह की नाराज़गी का सामना) होगा। चूँकि तुम्हारे रुतबे बड़े हैं, तुम्हें गुनाहों से बिल्कुल दूर रहना चाहिये, वरना रुतबे के मुताबिक़ मुश्किल बढ़ जायेगी। अल्लाह पर सब सहल और आसान है। यह याद रखना चाहिये कि यह फ़रमान बतौर शर्त के है और शर्त का उत्पन्न होना ज़रूरी नहीं होता, जैसे अल्लाह का फ़रमान हैः

لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ........ الخ

Maktab E Ashraf

ऐ नबी! अगर तुम शिर्क करोगे तो तुम्हारे आमाल अकारत हो जायेंगे.......। नबियों का ज़िक्र करके फ़रमायाः

لَئِنْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ.

अगर ये शिर्क करें तो इनकी नेकियाँ बेकार हो जायें। एक और आयत में हैः

قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ فَاَنَا اَوَّلُ الْعَابِدِيْنَ.

कि अगर अल्लाह के औलाद होती तो सबसे पहले मैं उसकी परस्तिश करने वाला होता। एक और आयत में इरशाद हो रहा हैः

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ....... الخ

यानी अगर खुदा को औलाद मन्ज़ूर होती तो वह अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता पसन्द फ़रमा लेता, वह पाक है, यक्ता और एक है, वह ग़ालिब और सब पर हाकिम है।

पस इन पाँचों आयतों में शर्त के साथ बयान है (यानी हर जगह यह है "अगर ऐसा होता") लेकिन ऐसा हुआ नहीं, न नबियों से शिर्क होना मुम्किन, न सरदारे अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से यह मुम्किन, न खुदा की औलाद। इसी तरह उम्महातुल-मोमिनीन रज़ि. (नबी करीम की पाक बीवियों) के बारे में भी जो फ़रमाया कि अगर तुम में से कोई खुली बुरी और बेहूदा हरकत करे तो उसे दोगुनी सज़ा होगी, इससे यह न समझा जाये कि वाक़ई उनमें से किसी ने कोई ऐसी नाफ़रमानी और बद-अख़्लाक़ी की हो। नऊज़ु बिल्लाह।

अल्हम्दु लिल्लाह इक्कीसवें पारे की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर बाईस

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ
صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا
لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ۝

और जो कोई तुम में अल्लाह की और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करेगी और नेक काम करेगी तो हम उसको उसका सवाब दोहरा देंगे, और हमने उसके लिए एक उम्दा रोज़ी तैयार कर रखी है। (31)

अहले बैत से एक वायदा

इस आयत में अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल का बयान फ़रमा रहा है और हुज़ूर सल्ल. की अज़्वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) से ख़िताब करके फ़रमा रहा है कि तुम्हारी इताअ़त-गुज़ारी और नेकोकारी पर तुम्हें दोगुना अज्र है और तुम्हारे लिये जन्नत में इज़्ज़त व सम्मान वाली रोज़ी है, क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्ल. के साथ आपकी मन्ज़िल (ठिकाने और दर्जे) में होंगी और हुज़ूर सल्ल. की मन्ज़िल इल्लिय्यीन में है जो तमाम लोगों से बालातर (ऊँचे दर्जे वाला) है। उसी का नाम "वसीला" है। यह जन्नत की सबसे आला और सबसे ऊँची मन्ज़िल (ठिकाना और दर्जा) है, जिसकी छत अल्लाह का अ़र्श है।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ
اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ
الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا
مَّعْرُوْفًا ۝ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ
تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ
وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ
اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ
اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ۝ۚ
وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ

ऐ नबी की बीवियो! तुम मामूली औ़रतों की तरह नहीं हो, अगर तुम तक़्वा इख़्तियार करो, तो तुम (नामेहरम मर्द से) बोलने में (जबकि ज़रूरत से बोलना पड़े) नर्मी और लचक मत करो, (इससे) ऐसे शख़्स को (तबई तौर पर बुरा) ख़्याल पैदा होने लगता है जिसके दिल में ख़राबी है, और (पाकदामनी के) क़ायदे के मुवाफ़िक़ बात कहो। (32) और तुम अपने घरों में क़रार से रहो और पुराने जहालत के ज़माने के दस्तूर के मुवाफ़िक़ मत फिरो, और तुम नमाज़ों की पाबन्दी रखो और ज़कात दिया करो और अल्लाह का और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का कहना मानो, अल्लाह को यह मन्ज़ूर है कि ऐ घर वालो! तुमसे आलूदगी (यानी हर तरह के मेल-कुचैल) को दूर रखे और तुमको (हर तरह ज़ाहिरी तौर पर भी और बातिनी तौर पर भी) पाक-साफ़ रखे। (33) और

तुम उन आयतों को और उस इल्म (अहकाम) को याद रखो जिसका तुम्हारे घरों में चर्चा रहता है। बेशक अल्लाह तआ़ला राज़ का जानने वाला है, पूरा ख़बर रखने वाला है। (34)	اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ۝

Mahtab E Ashraf

कुछ ख़ास अहकाम

अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. की बीवियों को आदाब सिखाता है और चूँकि तमाम औ़रतें उन्हीं के मातहत (यानी हुक्म व अ़मल में उनके ताबे) हैं इसी लिये ये अहकाम सब मुसलमान औ़रतों के लिये हैं। पस फ़रमाते हैं कि तुम में से जो परहेज़गारी अपनायें वे बहुत बड़ी फ़ज़ीलत और मर्तबे वाली हैं। मर्दों से जब तुम्हें कोई बात करनी पड़े तो आवाज़ बनाकर (नर्मी व नज़ाकत के साथ) बात न करो कि जिनके दिलों में रोग है उन्हें लालच और कशिश पैदा हो बल्कि बात अच्छी और दस्तूर के मुताबिक़ करो। पस औ़रतों को ग़ैर-मर्दों से नज़ाकत के साथ अच्छी आवाज़ बनाकर बातें करनी मना है। घुल-मिलकर वे सिर्फ़ अपने शौहरों (पतियों) से ही कलाम कर सकती हैं।

फिर फ़रमाया कि बग़ैर किसी ज़रूरी काम के घर से बाहर न निकलो, मस्जिद में नमाज़ के लिये आना भी शरई ज़रूरत है, जैसे कि हदीस में है- अल्लाह की लौंडियों (बन्दियों) को अल्लाह की मस्जिदों से न रोको। लेकिन चाहिये कि जिस तरह घरों में रहती हैं उसी तरह आयें। एक रिवायत में है कि उनके लिये उनके घर बेहतरीन मस्जिद हैं। हदीस की किताब बज़्ज़ार में है कि औ़रतों ने हाज़िर होकर रसूले ख़ुदा सल्ल. से कहा कि जिहाद वग़ैरह की तमाम फ़ज़ीलतें मर्द ही ले गये। अब आप हमें कोई ऐसा अ़मल बतलाईये जिससे हम मुजाहिदीन (अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वालों) की फ़ज़ीलत को पा सकें। आपने फ़रमाया तुममें से जो अपने घर में पर्दे और अ़स्मत (आबरू की हिफ़ाज़त) के साथ बैठी रहे वह जिहाद की फ़ज़ीलत पा लेगी। तिर्मिज़ी वग़ैरह में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि औ़रत सर से पैर तक पर्दे की चीज़ है। यह जब घर से बाहर क़दम निकालती है तो शैतान झाँकने लगता है। यह सब से ज़्यादा ख़ुदा से क़रीब उस वक़्त होती है जबकि यह अपने घर के अन्दरूनी हुजरे (कमरे) में हो। अबू दाऊद वग़ैरह में है कि औ़रत की अपने घर की अन्दरूनी कोठरी की नमाज़, घर की नमाज़ से अफ़ज़ल है। और घर की नमाज़ सेहन की नमाज़ से बेहतर है। जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) में औ़रतें बेपर्दा फिरा करती थीं, अब इस्लाम बेपर्दगी को हराम क़रार देता है। नाज़ से (अदा के साथ) इठलाकर चलना मना है। दुपट्टा गले में डाल लिया लेकिन उसे लपेटा नहीं जिससे गर्दन और कानों के ज़ेवरात दूसरों की नज़रों में आयें, यह जाहिलीयत का बनाव-सिंगार था जिससे इस आयत में रोका गया है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि हज़रत नूह और हज़रत इदरीस अ़लैहिमस्सलाम के दरमियान एक हज़ार साल का ज़माना था, इस दरमियान में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की दो नस्लें आबाद थीं, एक तो पहाड़ी पर दूसरे नर्म ज़मीन पर। पहाड़ों के मर्द अच्छी शक्ल व सूरत वाले थे, औ़रतें काले रंग की थीं, और ज़मीन वालों की औ़रतें ख़ूबसूरत थीं जबकि मर्दों के रंग साँवले थे। इब्लीस (शैतान) इनसानी सूरत इख़्तियार करके उन्हें बहकाने के लिये नर्म ज़मीन वालों के पास आया और एक शख़्स का गुलाम बनकर रहने लगा। फिर उसने बाँसुरी के अन्दाज़ की एक चीज़ बनाई और उसे बजाने लगा। उसकी आवाज़ पर लोग लट्टू हो गये और भीड़ लगने लगी। फिर एक दिन मेले का मुक़र्रर हो गया जिसमें हज़ारों मर्द व

Maktab E Ashraf

औरतें जमा होने लगे। इत्तिफ़ाक़न एक दिन एक पहाड़ी आदमी भी आ गया और उनकी औरतों को देखकर वापस जाकर अपने लोगों में उनके हुस्न का चर्चा करने लगा। अब वे लोग कसरत से आने लगे और होते-होते औरतों और मर्दों में मेलजोल बढ़ गया और बदकारी व ज़िनाकारी का आ़म रिवाज हो गया। यही जाहिलीयत का बनाव-सिंगार है जिससे यह आयत रोक रही है।

इन कामों से रोकने के बाद अब कुछ अहकाम बयान हो रहे हैं कि अल्लाह की इबादत में सब से बड़ी इबादत नमाज़ है, इसकी पाबन्दी करो और बहुत अच्छी तरह से अदा करती रहो। इसी तरह मख़्लूक़ के साथ नेक सुलूक करो, यानी ज़कात निकालती रहो। इन ख़ास अहकाम के पूरा करने का हुक्म देकर फिर आ़म तौर पर उसके रसूल सल्ल. की फ़रमाँबरदारी करने का हुक्म दिया। फिर फ़रमाया अल्लाह अहले बैत (अल्लाह के रसूल के घर वालों) से हर क़िस्म के मैल-कुचैल के दूर करने का इरादा कर चुका है। वह तुम्हें बिल्कुल साफ़ कर देगा।

यह आयत इस बात पर नस्स (शरई दलील) है कि रसूले ख़ुदा सल्ल. की बीवियाँ इन आयतों में अहले बैत में दाख़िल हैं, इसलिये कि यह आयत उन्हीं के बारे में उतरी है। आयत का शाने नुज़ूल तो आयत के हुक्म में दाख़िल होता ही है अगरचे बाज़ कहते हैं कि सिर्फ़ वही दाख़िल होता है और बाज़ कहते हैं कि वह भी और उसके अ़लावा भी। और यह दूसरा क़ौल ही ज़्यादा सही है। हज़रत इक्रिमा रज़ि. तो बाज़ारों में मुनादी करते फिरते थे कि यह आयत नबी सल्ल. की बीवियों के बारे में ख़ास तौर पर नाज़िल हुई है। (इब्ने जरीर)

इब्ने अबी हातिम में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से भी यही मन्क़ूल है और हज़रत इक्रिमा रज़ि. तो यहाँ तक फ़रमाते हैं कि जो चाहे मुझसे मुबाहला करे (यानी आकर मुक़ाबले में हलफ़ उठाये) यह आयत हुज़ूर सल्ल. की अज़वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) ही की शान में नाज़िल हुई है।

इस क़ौल से अगर यह मतलब है कि आयत का शाने नुज़ूल (उतरने का मौक़ा) यही है और नहीं तो यह ठीक है, और अगर इससे मुराद यह है कि अहले बैत में और कोई उनके सिवा दाख़िल नहीं तो इसमें ताम्मुल (सोचने और ग़ौर करने की बात) है। इसलिये कि हदीसों से अहले बैत में अज़वाजे मुतह्हरात (नबी करीम सल्ल. की पाक बीवियों) के अ़लावा औरों का दाख़िल होना भी पाया जाता है। मुस्नद अहमद और तिर्मिज़ी में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. सुबह की नमाज़ के लिये जब निकलते तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के दरवाज़े पर पहुँचकर फ़रमाते- ऐ अहले बैत! नमाज़ का वक़्त आ गया। फिर इसी आयत की तिलावत करते। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन ग़रीब बतलाते हैं। इब्ने जरीर की एक इसी हदीस में सात महीने का बयान है। इसमें एक रावी अबू दाऊद आमा नफ़ी बिन हारिस कज़्ज़ाब (झूठी रिवायतें बयान करने वाला) है। यह रिवायत ठीक नहीं।

मुस्नद अहमद में है, शद्दाद बिन अ़म्मार कहते हैं कि मैं एक दफ़ा हज़रत वासिला बिन अस्क़ा रज़ि. के पास गया। उस वक़्त वहाँ कुछ और लोग भी बैठे हुए थे और हज़रत अ़ली का ज़िक्र हो रहा था। वे आपको बुरा-भला कह रहे थे। मैंने भी उनका साथ दिया। जब वे लोग चले गये तो मुझसे हज़रत वासिला ने फ़रमाया- तूने भी हज़रत अ़ली की शान की गुस्ताख़ी के अलफ़ाज़ कहे? मैंने कहा हाँ मैंने सब की ज़बान में ज़बान मिलाई। फ़रमाया- सुन मैंने जो देखा है तुझे सुनाता हूँ: एक मर्तबा हज़रत अ़ली रज़ि. के घर गया तो मालूम हुआ कि आप हुज़ूर सल्ल. की मज्लिस में गये हुए हैं। मैं उनके इन्तिज़ार में बैठ गया, थोड़ी देर में देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल. आ रहे हैं और आपके साथ हज़रत अ़ली, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि.

Maktab E Ashraf

भी हैं। दोनों बच्चे आपकी उंगली थामे हुए थे। आप सल्ल. ने हज़रत अ़ली रज़ि. और हज़रत फ़ातिमा रज़ि. को तो सामने बिठा लिया और दोनों नवासों को अपने घुटनों पर बैठा लिया और एक कपड़े से ढक लिया, फिर इसी आयत की तिलावत करके फ़रमाया ऐ अल्लाह! ये हैं मेरे अहले बैत और मेरे अहले बैत ज़्यादा हक़दार हैं। दूसरी रिवायत में इतना इज़ाफ़ा भी है कि हज़रत वासिला फ़रमाते हैं- मैंने यह देखकर कहा या रसूलल्लाह! मैं भी आपके अहले बैत में से हूँ। आपने फ़रमाया हाँ तू भी मेरे अहले बैत में से है। हज़रत वासिला फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. का यह फ़रमान मेरे लिये बहुत ही बड़ी उम्मीद है।

एक और रिवायत में है, हज़रत वासिला फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल. के पास था कि हज़रत अ़ली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम आये। आपने अपनी चादर उन पर डालकर फ़रमाया- ऐ अल्लाह! ये मेरे अहल व अ़याल हैं, या अल्लाह इनसे नापाकी को दूर फ़रमा और इन्हें पाक कर दे। मैंने कहा मैं भी, आपने कहा हाँ तू भी। मेरे नज़दीक सब से ज़्यादा मेरा मज़बूत अ़मल यही है। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं- हुज़ूर सल्ल. मेरे घर में थे कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि. हरीरे की एक पतीली भरी हुई लाईं। आपने फ़रमाया अपने मियाँ और अपने बच्चों को भी बुला लो, चुनाँचे वे भी आ गये और खाना शुरू हुआ। आप अपने बिस्तर पर थे, ख़ैबर की एक चादर आपके नीचे बिछी हुई थी। मैं हुजरे में नमाज़ अदा कर रही थी कि यह आयत उतरी, पस हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें चादर उढ़ा दी और चादर में से एक हाथ निकाल कर आसमान की तरफ़ उठाकर यह दुआ़ की कि इलाही! ये मेरे अहले बैत और हिमायती हैं, तू इनसे नापाकी दूर कर और इन्हें ताहिर (पाक-साफ़) कर। मैंने अपना सर घर में से निकाल कर कहा या रसूलल्लाह! मैं भी आपके साथ हूँ। आपने फ़रमाया यक़ीनन तू बेहतरी की तरफ़ है, वास्तव में तू ख़ैर की तरफ़ है।

इस रिवायत के रावियों में अ़ता के उस्ताद का नाम नहीं जो मालूम हो सके कि वह कैसे रावी हैं, बाक़ी रावी मोतबर और भरोसेमन्द हैं। दूसरी सनद से इन्हीं उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मन्क़ूल है कि एक मर्तबा उनके सामने हज़रत अ़ली का ज़िक्र आया तो आपने फ़रमाया आयते ततहीर तो मेरे घर में उतरी है, आप मेरे यहाँ आये और फ़रमाया किसी और को आने की इजाज़त न देना। थोड़ी देर में हज़रत फ़ातिमा रज़ि. आईं। अब भला मैं बेटी को बाप से कैसे रोकती? फिर हज़रत हसन आये नवासे को नाना से कौन रोके? फिर हज़रत हुसैन आये मैंने उन्हें भी न रोका। फिर हज़रत अ़ली आये मैं उन्हें भी न रोक सकी। जब ये जमा हो गये तो जो चादर हुज़ूर सल्ल. ओढ़े हुए थे उसी में इन सब को ले लिया और कहा इलाही ये मेरे अहले बैत हैं, इनसे पलीदी (नापाकी) को दूर कर दे और इन्हें ख़ूब पाक कर दे। पस यह आयत उस वक़्त उतरी जब ये चादर पर जमा हो चुके थे, मैंने कहा या रसूलल्लाह! मैं भी, लेकिन अल्लाह तआ़ला जानता है आप इस पर ख़ुश न हुए और फ़रमाया तू ख़ैर की तरफ़ है।

मुस्नद की एक और रिवायत में है कि मेरे घर में हज़रत थे कि ख़ादिम ने आकर ख़बर की कि फ़ातिमा और अ़ली आ गये हैं, आपने मुझसे फ़रमाया एक तरफ़ हो जाओ मेरे अहले बैत आ गये। मैं घर के एक कोने में बैठ गई। दोनों नन्हे बच्चे और ये दोनों हज़रात तशरीफ़ लाये। आपने दोनों बच्चों को गोदी में ले लिया, प्यार किया, एक हाथ हज़रत अ़ली रज़ि. की गर्दन में दूसरा हज़रत फ़ातिमा रज़ि. की गर्दन में डालकर उन दोनों को भी प्यार किया और एक सियाह चादर सब पर डालकर फ़रमाया- या अल्लाह! तेरी तरफ़ न कि आग की तरफ़, मैं और मेरे अहले बैत (मेरे घर वाले)। मैंने कहा मैं भी? फ़रमाया हाँ तू भी। एक और रिवायत में है कि मैं उस वक़्त घर के दरवाज़े पर बैठी हुई थी और मैंने कहा या रसूलल्लाह! क्या

मैं अहले बैत मैं से नहीं हूँ? आपने फ़रमाया तू भलाई की तरफ़ है और नबी की बीवियों में से है।

एक और रिवायत में है कि मैंने कहा- मुझे भी इनके साथ शामिल कर लीजिये तो फ़रमाया तू मेरे अहल (अपनों) में से है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मन्क़ूल है कि हुज़ूर सल्ल. सियाह चादर ओढ़े हुए एक दिन सुबह ही सुबह निकले और इन चारों को अपनी चादर तले लेकर यह आयत पढ़ी। (मुस्लिम वग़ैरह) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से एक मर्तबा किसी ने हज़रत अली के बारे में सवाल किया तो आपने फ़रमाया वे सब से ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्ल. के महबूब थे, उनके घर में आपकी साहिबज़ादी थीं जो सब से ज़्यादा आपकी महबूब थीं। फिर चादर का वाक़िआ बयान फ़रमाकर फ़रमाया मैंने क़रीब जाकर कहा या रसूलल्लाह! मैं भी आपके अहले बैत में से हूँ फ़रमाया दूर रहो, तुम यक़ीनन ख़ैर पर हो। (इब्ने अबी हातिम) हज़रत अबू सईद रज़ि. का अपना क़ौल होना मन्क़ूल है कि हुज़ूरे पाक ने फ़रमाया मेरे और इन चारों के बारे में यह आयत उतरी है, एक और सनद से यह अबू सईद का अपना क़ौल होना नक़ल किया गया है। वल्लाहु आलम।

हज़रत सअ़द रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल. पर 'वही' उतरी तो आपने इन चारों को अपने कपड़े के नीचे लेकर फ़रमाया या रब! ये मेरे अहल हैं और मेरे अहले बैत हैं। (इब्ने जरीर)

मुस्लिम शरीफ़ में है, हज़रत ज़ैद बिन हिब्बान फ़रमाते हैं कि मैं, हसीन बिन सबरा और उमर बिन मुस्लिमा मिलकर हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ि. के पास गये। हसीन कहने लगे ऐ ज़ैद! आपको तो बहुत सी भलाईयाँ मिल गईं। आपने हुज़ूर सल्ल. की ज़ियारत की, आपकी हदीसें सुनीं, आपके साथ जिहाद किये, आपके पीछे नमाज़ें पढ़ीं, ग़र्ज़ कि आपकी बहुत ख़ैर व बरकत पा ली। अच्छा हमें कोई हदीस तो सुनाओ। आपने फ़रमाया- भतीजे अब मेरी उम्र बड़ी हो गई, हुज़ूर सल्ल. का ज़माना दूर हो गया, बाज़ बातें ज़ेहन से जाती रहीं। अब तो ऐसा करो जो बातें मैं अपनी तरफ़ से बयान करूँ उन्हें क़बूल कर लो वरना मुझे तकलीफ़ न दो। सुनो! मक्का और मदीने के दरमियान में एक पानी की जगह जिसे ख़ुम कहा जाता है, वहाँ हुज़ूर सल्ल. ने खड़े होकर हमें एक ख़ुतबा दिया। अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना (तारीफ़ व प्रशंसा) और वअ़ज़ व नसीहत के बाद फ़रमाया- मैं एक इनसान हूँ बहुत मुम्किन है कि मेरे पास मेरे रब का क़ासिद आये और मैं उसकी मान लूँ (यानी इस दुनिया से रुख़्सती का पैग़ाम आये और मैं अपने रब के हुज़ूर हाज़िर हो जाऊँ), मैं तुम में दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ। पहली तो किताबुल्लाह जिसमें हिदायत व नूर है, तुम अल्लाह तआ़ला की किताब लो और उसे मज़बूती से थाम लो। फिर आपने किताबुल्लाह की तरफ़ तवज्जोह दिलाई और ख़ूब ही मुतवज्जह फ़रमाया। फिर फ़रमाया मेरे अहले बैत के बारे में ख़ुदा को याद दिलाता हूँ। तीन मर्तबा यही कलिमा फ़रमाया तो हसीन ने ज़ैद से पूछा- आपके अहले बैत कौन हैं? क्या आपकी बीवियाँ आपकी अहले बैत नहीं हैं? फ़रमाया आपकी बीवियाँ तो आपकी अहले बैत ही हैं, लेकिन आपके अहले बैत वे हैं जिन पर आपके बाद सदक़ा खाना हराम है। पूछा वे कौन हैं? फ़रमाया- आले अ़ली, आले अ़क़ील, आले जाफ़र, आले अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम। पूछा क्या इन सब पर आपके बाद सदक़ा हराम है? कहा हाँ। दूसरी सनद से यह भी नक़ल है कि मैंने पूछा क्या आपकी बीवियाँ भी अहले बैत में दाख़िल हैं? कहा नहीं। क़सम है ख़ुदा की, बीवी तो यह है कि वह अपने ख़ाविन्द के पास अगरचे एक लम्बी मुद्दत तक हो लेकिन फिर अगर वह तलाक़ दे दे तो अपने मैके और अपनी क़ौम में चली जाती है। आपके अहले बैत आपकी असल और अ़सबा हैं, जिन पर आपके बाद सदक़ा हराम है। इस रिवायत में यही है लेकिन पहली रिवायत ही आला है और उसी को तरजीह देना ठीक है, और इस दूसरी में जो है इससे मुराद सिर्फ़

Maktab E Ashraf

हदीस में जिन अहले बैत का ज़िक्र है वे हैं, क्योंकि वहाँ वह आल मुराद है जिन पर सदके का खाना हराम है, या यह कि मुराद सिर्फ़ बीवियाँ ही नहीं बल्कि वे मय आपके और आल के हैं। यही बात ज़्यादा वरीयता प्राप्त है और इससे इस रिवायत और इससे पहले की रिवायत में जमा (मुवाफ़कत और तालमेल) भी हो जाती है, और क़ुरआन व हदीस में भी ततबीक़ (मुवाफ़क़त) हो जाती है। लेकिन यह इस सूरत में कि इन हदीसों का सही होना मान लिया जाये, क्योंकि इनकी बाज़ सनदों में कलाम और नज़र है। वल्लाहु आलम।

जिस शख़्स को नूरे मारिफ़त हासिल हो और क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र करने की आदत हो वह यक़ीनन पहली ही निगाह में जान लेगा कि इस आयत में हुज़ूर सल्ल. की बीवियाँ बिला शक व शुब्हा दाख़िल हैं इसलिये कि ऊपर से कलाम ही उनके साथ और उन्हीं के बारे में चल रहा है, यही वजह है कि इसके बाद ही फ़रमाया कि ख़ुदा की आयतें और रसूल की बातें जिनका दर्स (पढ़ना-पढ़ाना) तुम्हारे घरों में हो रहा है उन्हें याद रखो और उन पर अ़मल करो। पस अल्लाह की आयतों और हिक्मत से मुराद बक़ौल हज़रत क़तादा वग़ैरह किताब व सुन्नत है। पस यह ख़ास ख़ुसूसियत है जो उनके सिवा किसी और को नहीं मिली कि उनके घरों में ख़ुदा की 'वही' और रहमते इलाही नाज़िल हुआ करती है और उनमें भी यह शर्फ़ (गौरव) हज़रत उम्मुल-मोमिनीन आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को सबसे ज़्यादा हासिल है। क्योंकि हदीस शरीफ़ में साफ़ है कि किसी औ़रत के बिस्तर पर हुज़ूर सल्ल. पर 'वही' नहीं आई सिवाय आपके बिस्तर के, यह इसलिये भी कि हुज़ूर सल्ल. ने किसी और बाकिरा (कुंवारी) से निकाह नहीं किया था, उनका बिस्तर सिवाय रसूलुल्लाह के और किसी के लिये नहीं था। पस इस दर्जे और मर्तबे की बुलन्दी और ज़्यादती की वह सही तौर पर हक़दार थीं, हाँ जबकि आपकी बीवियाँ आपके अहले बैत हुई तो आपके क़रीबी रिश्तेदार और भी ज़्यादा आपके अहले बैत हैं। जैसे हदीस में गुज़र चुका कि मेरे अहले बैत ज़्यादा हक़दार हैं। इसकी मिसाल में यह आयत ठीक तौर पर पेश हो सकती है:

لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ......... الخ

(यानी सूरः तौबा की आयत 108) कि यह उतरी तो है मस्जिदे क़ुबा के बारे में जैसा कि साफ़-साफ़ हदीसों में मौजूद है लेकिन सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. से सवाल हुआ कि इस मस्जिद से कौनसी मस्जिद मुराद है? आपने फ़रमाया वह मेरी ही मस्जिद है, यानी मस्जिदे नबवी। पस जो सिफ़त मस्जिदे क़ुबा में थी वही सिफ़त चूँकि मस्जिदे नबवी में भी है इसी लिये इस मस्जिद को भी इसी नाम से इस आयत के तहत दाख़िल कर दिया। इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत अ़ली रज़ि. की शहादत के बाद हज़रत हसन को ख़लीफ़ा बनाया गया। आप एक मर्तबा नमाज़ पढ़ा रहे थे कि बनू असद का एक शख़्स कूदकर आया और सज्दे की हालत में आपके जिस्म में खंजर घोंप दिया जो आपके नर्म गोश्त में लगा, जिससे आप कई महीने बीमार रहे। जब अच्छे हो गये तो मस्जिद में आये, मिम्बर पर बैठकर ख़ुतबा दिया, जिसमें फ़रमाया ऐ इराक़ियो! हमारे बारे में ख़ौफ़े ख़ुदा करो। हम तुम्हारे हाकिम हैं, तुम्हारे मेहमान हैं, हम अहले बैत में से हैं, जिनके बारे में यह आयत उतरी है:

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ............ الخ

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) इस पर आपने ख़ूब ज़ोर दिया और इस मज़मून को बार-बार अदा किया, जिससे मस्जिद वाले रोने लगे। एक मर्तबा आपने एक शामी (सीरिया के रहने वाले) से फ़रमाया था- क्या तूने सूरः अहज़ाब की आयते ततहीर नहीं पढ़ी? उसने कहा हाँ, उससे मुराद तुम

Maktab E Ashraf

हो? फ़रमाया हाँ। अल्लाह तआ़ला बड़े लुत्फ़ व करम वाला बड़े इल्म और पूरी ख़बर वाला है। उसने जान लिया कि तुम उसके लुत्फ़ के अहल हो इसलिये उसने तुम्हें नेमतें अ़ता फ़रमाईं और ये फ़ज़ीलतें तुम्हें दीं।

पस तफ़सीर इब्ने जरीर के मुताबिक़ इस आयत के मायने ये हुए कि ऐ नबी की बीवियो! तुम पर अल्लाह की नेमत है, उसे तुम याद करो कि उसने तुम्हें उन घरों में आबाद किया जहाँ अल्लाह की आयतें और हिक्मत पढ़ी जाती है, तुम्हें अल्लाह तआ़ला की इस नेमत पर उसका शुक्र अदा करना चाहिये और उसकी हम्द (तारीफ़) पढ़नी चाहिये कि तुम पर अल्लाह का लुत्फ़ व करम है कि उसने तुम्हें उन घरों में आबाद किया। हिक्मत से मुराद सुन्नत व हदीस है, अल्लाह तआ़ला अन्जाम तक से ख़बरदार है, इसलिये अपने पूरे और सही इल्म से जाँच कर तुम्हें अपने नबी की बीवियाँ बनने के लिये चुन लिया, पस दर असल यह भी खुदा का तुम पर एहसान है जो हर बारीक से बारीक और बड़ी से बड़ी बात और मामले की पूरी ख़बर रखने वाला है।

नोटः "अहले बैत" के बारे में इब्ने कसीर ने जो तफ़सील पेश की और रिवायतें बयान कीं वह आपके सामने आ चुकीं। हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. ने 'अहले बैत' के बारे में जो मुख़्तसर बात तहरीर फ़रमाई बेहतर है कि उसको भी देख लिया जाये ताकि इस सिलसिले में अगर ज़ेहन में कोई उलझन हो तो वह भी दूर हो जाये। फ़रमाते हैं कि इब्ने कसीर ने इस मसले पर कि 'अहले बैत' कौन हैं अब तक जो तफ़सील पेश की वह आपके सामने है। आप विभिन्न और अलग-अलग मज़ामीन की रिवायतें देखकर शायद यह फ़ैसला न कर सके हों कि वास्तविक तौर पर 'अहले बैत' कौन हैं इसलिये बात को मुख़्तसर करने और समेटने के लिये मैं कुछ अ़र्ज़ करता हूँ। ख़ूब समझ लीजिये एक तो नबी करीम सल्ल. का उमूमी ताल्लुक़ है और एक ख़ुसूसी। आप तमाम उम्मत के शफ़ीक़ व मेहरबान बाप की हैसियत में हैं, यह आपका उमूमी ताल्लुक़ है, चूँकि इस एतिबार से पूरी उम्मत आपकी 'अहले बैत' हो सकती है यही वजह है कि वह रिवायत जिसमें हज़रत वासिला रज़ि. को अहले बैत में शुमार करना आता है वह इसी हैसियत से आता है। फिर आपका एक ताल्लुक़ अपनी क़ौम और ख़ानदान से है, यह ख़ुसूसी ताल्लुक़ है। यह पहले जैसा आ़म नहीं, और न बाद में आने वाले एक और ताल्लुक़ की तरह 'बहुत ज़्यादा ख़ास' है। इसी ताल्लुक़ के एतिबार से आपने 'आले अ़ली' 'आले अ़क़ील' 'आले जाफ़र' और 'आले इब्ने अ़ब्बास' को अपने अहले बैत में शुमार किया है। फिर इसके बाद में एक ताल्लुक़ आपका बहुत ज़्यादा ख़ास है और वह अपनी बीवियों और बेटियों की औलाद से है। यही ताल्लुक़ आप सल्ल. के पेशे नज़र रहा जबकि आपने अहले बैत में अपनी बीवियों को भी दाख़िल फ़रमा लिया। और एक ताल्लुक़ आपका ऐसा ख़ास है कि उसमें कोई दूसरा शरीक नहीं, वह आपका ताल्लुक़ हज़रत फ़ातिमा रज़ि. और उनकी औलाद से है, जैसा कि बाज़ मौक़ों पर आपने उन्हीं को 'अहले बैत' फ़रमाया है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِينَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِينَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِينَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِينَ وَالْخٰشِعٰتِ	बेशक इस्लाम के काम करने वाले मर्द और इस्लाम के काम करने वाली औ़रतें, और ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औ़रतें, और फ़रमाँबरदारी करने वाले मर्द और फ़रमाँबरदारी करने वाली औ़रतें, और सच्चे मर्द और सच्ची औ़रतें, और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औ़रतें, और ख़ुशूअ़ करने वाले मर्द और ख़ुशूअ़ करने वाली औ़रतें, और

Maktaba E Ashraf

وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا○	ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औ़रतें, और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औ़रतें, और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औ़रतें, और कसरत से ख़ुदा को याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औ़रतें, इन सबके लिए अल्लाह तआ़ला ने मग़फ़िरत और बड़ा अज्र तैयार कर रखा है। (35)

ये नेक ख़स्लत वाली बीबियाँ

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि आख़िर इसकी वजह क्या है कि मर्दों का ज़िक्र क़ुरआन में बराबर होता रहता है लेकिन हम औ़रतों का तो ज़िक्र ही नहीं किया जाता। एक दिन मैं अपने घर में बैठी अपना सर गूँध रही थी कि मैंने हुज़ूर सल्ल. की आवाज़ मिम्बर पर सुनी, मैंने बालों को यूँ ही लपेट लिया और हुजरे में आकर आपकी बातें सुनने लगी तो आप उस वक़्त यही आयत तिलावत फ़रमा रहे थे। (नसाई शरीफ़ वग़ैरह)

और बहुत सी रिवायतें आपसे मुख़्तसर तौर पर नक़ल की गयी हैं। एक रिवायत में है कि चन्द औ़रतों ने हुज़ूर सल्ल. से यह कहा था। एक और रिवायत में है कि औ़रतों ने अज़वाजे-मुतह्हरात (अल्लाह के रसूल की पाक बीवियों) से यह कहा था।

इस्लाम और ईमान को अलग-अलग बयान करना दलील है इस बात की कि ईमान इस्लाम से अलग दूसरी चीज़ है, और ईमान इस्लाम से मख़्सूस व मुमताज़ है।

'क़ालतिल् अअ़्राबु आमन्ना' (सूरः हुजुरात आयत 14) वाली आयत और सहीहैन की हदीस कि ज़ानी ज़िना के वक़्त मोमिन नहीं होता। फिर इस बात पर सर्वसम्मति कि ज़िना से कुफ़्र लाज़िम नहीं आता, यह इस पर दलील है। और हम अपनी किताब शरह बुख़ारी के शुरू में इसे साबित कर चुके हैं। 'क़ुनूत' से मुराद सुकून के साथ इताअ़त-गुज़ारी (अल्लाह व रसूल के हुक्मों का पालन) है। जैसा कि इरशाद है:

اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ.........الخ

(सूरः ज़ुमर आयत 9) एक जगह और फ़रमान है:

وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ كُلٌّ لَّهٗ قَانِتُوْنَ.

यानी आसमान व ज़मीन की हर चीज़ ख़ुदा की फ़रमाँबरदार है। एक और जगह फ़रमाता है:

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ......... الخ

(सूरः आले इमरान आयत 43) एक जगह यह इरशाद है:

وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ.

यानी ख़ुदा के सामने अदब के साथ फ़रमाँबरदारी की सूरत में खड़े हुआ करो।

पस इस्लाम के ऊपर का मर्तबा ईमान है और इनके इज्तिमा (एक जगह जमा होने) से इनसान में हुक्म-बरदारी और इताअ़त-गुज़ारी (यानी हुक्मों का पालन करना और आज्ञाकारी होना) पैदा हो जाती है। बातों की सच्चाई ख़ुदा को बहुत ही महबूब है और यह आ़दत हर तरह महमूद (पसन्दीदा और सराहनीय) है। सहाबा हज़रात में तो वे बुज़ुर्ग भी थे जिन्होंने जाहिलीयत के ज़माने में भी कोई झूठ न बोला था। सच्चाई ईमान की निशानी है और झूठ निफ़ाक़ (दोग़लेपन) की अ़लामत है। सच्चा निजात पाता है। सच ही बोला करो। सच्चाई नेकी की तरफ़ रहबरी करती है और नेकी जन्नत की तरफ़ ले जाती है। झूठ से बचो, झूठ बदकारी की तरफ़ रहनुमाई करता है और फ़िस्क़ व फ़ुजूर (गुनाह और बुरे काम) इनसान को जहन्नम की तरफ़ ले जाता है। इनसान सच बोलते बोलते और सच्चाई का इरादा करते करते ख़ुदा के यहाँ सिद्दीक़ लिख लिया जाता है और झूठ बोलते हुए और झूठ का क़स्द करते हुए ख़ुदा के नज़दीक झूठा लिख लिया जाता है। और भी इस बारे में बहुत सी हदीसें हैं।

सब्र, साबित-क़दमी (यानी सच्चाई पर जमने) का नतीजा है, मुसीबतों पर सब्र होता है, इस इल्म पर कि तक़दीर का लिखा टलता नहीं। सबसे ज़्यादा सख़्त सब्र सदमे के इब्तिदाई (यानी शुरू के) वक़्त पर है और उसी का अज्र ज़्यादा है। फिर तो जैसे-जैसे ज़माना गुज़रता है सब्र आ ही जाता है।

ख़ुशूअ़ से मुराद दिल के जमाव, सुकून विनम्रता, दिल के झुकाव और तवाज़ो के साथ अ़मल को अन्जाम देना है। यह चीज़ इनसान में उस वक़्त आती है जबकि दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा हो और रब को हर वक़्त हाज़िर व नाज़िर जानता हो और इसी तरह ख़ुदा की इबादत करता हो। जैसे वह ख़ुदा को देख रहा है, और यह नहीं तो कम से कम इस दर्जे पर तो ज़रूर हो कि ख़ुदा उसे देख रहा है। सदक़े से मुराद मोहताज ज़ईफ़ों को जिनकी कोई कमाई न हो, न जिनका कोई कमाने वाला हो उन्हें अपना फ़ालतू माल देना इस नीयत से कि ख़ुदा की इताअ़त (हुक्म का पालन) हो और उसकी मख़्लूक़ का काम है।

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की हदीस में है कि सात क़िस्म के लोगों को अल्लाह तआ़ला अपने अ़र्श के नीचे साये में जगह देगा, जिस दिन उसके साये के सिवा कोई साया न होगा। उनमें एक वह भी है जो सदक़ा देता है, लेकिन इस तरह पोशीदा तौर पर कि दाहिने हाथ के ख़र्च की बायें हाथ को ख़बर नहीं लगती (यानी अपने देने को सबसे छुपाये और सिर्फ़ अल्लाह के वास्ते दे)। एक और हदीस में है कि सदक़ा ख़ताओं को इस तरह मिटा देता है जिस तरह पानी आग को बुझा देता है। और भी इस बारे में बहुत सी हदीसें हैं। रोज़े के बारे में हदीस है कि यह बदन की ज़कात है यानी उसे पाक साफ़ कर देता है। और तिब्बी एतिबार से भी बहुत सी बीमारियों का एक कामयाब इलाज है।

हज़रत सअ़द बिन जुबैर फ़रमाते हैं कि रमज़ान के रोज़े रखकर जिसने हर महीने में तीन रोज़े रख लिये वह 'साईमीन व साईमात' (यानी जिन रोज़ेदारों का इस आयत में ज़िक्र है) में दाख़िल हो गया। रोज़ा शहवत (जिन्सी उभार) को भी तोड़ देने वाला है। हदीस में है ऐ नौजवानो! तुम में से जिसे ताक़त हो वह तो अपना निकाह कर ले ताकि उससे निगाहें नीचीं रहें और पाकदामनी हासिल हो जाये, और जिसे निकाह की ताक़त न हो वह रोज़े रखे, यही उसके लिये गोया ख़स्सी होना है। इसी लिये रोज़ों के ज़िक्र के बाद ही बदकारी से बचने का ज़िक्र किया। और फ़रमाया कि ये मुसलमान मर्द औ़रत हराम से और गुनाह के कामों से बचते रहते हैं। अपनी इसी ख़ास क़ुव्वत को जायज़ जगह सर्फ़ (ख़र्च) करते हैं। जैसे एक दूसरी आयत में है कि ये लोग अपने बदन को रोके रखते हैं मगर अपनी बीवियों से और बाँदियों से, उन पर कोई मलामत

Maktab E Ashraf

नहीं। हाँ इसके सिवा जो और कुछ तलब करे वह हद से गुज़रने वाला है। अल्लाह के ज़िक्र के बारे में एक हदीस में है कि जब मियाँ अपनी बीवी को रात के वक़्त जगाये और दो रक्अत नमाज़ दोनों पढ़ लें तो वे अल्लाह का ज़िक्र करने वालों में लिख लिये जाते हैं (मुलाहिज़ा हो अबू दाऊद वग़ैरह)। हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि. ने पूछा कि या रसूलल्लाह! सबसे बड़े दर्जे वाला बन्दा क़ियामत के दिन अल्लाह के नज़दीक कौन है? आपने फ़रमाया ख़ूब ज़्यादा कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करने वाला। मैंने कहा या रसूलल्लाह! ख़ुदा की राह के मुजाहिद से भी? आपने फ़रमाया अगर वह काफ़िरों पर तलवार चलाये यहाँ तक कि तलवार टूट जाये और वह ख़ून में रंग जाये तब भी यह अल्लाह का कसरत से ज़िक्र करने वाला उससे अफ़ज़ल ही रहेगा। (मुस्नद अहमद)

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. मक्के के रास्ते पर जा रहे थे, हमदान पहुँचकर फ़रमाया यह हमदान है, चले चलो 'मुफ़रद' सबक़त कर गये (यानी आगे बढ़ गये)। लोगों ने पूछा मुफ़रद से क्या मुराद है? फ़रमाया अल्लाह तआ़ला का बहुत ज़िक्र करने वाले। फिर फ़रमाया ऐ अल्लाह! हज व उमरे में अपना सर मुंडवाने वालों पर रहम फ़रमा। लोगों ने कहा बाल कतरवाने वालों के लिये भी दुआ़ कीजिये, आपने फ़रमाया अल्लाह सर मुंडवाने वालों को बख़्श, लोगों ने फिर कतरवाने वालों के लिये दरख़्वास्त की तो आपने फ़रमाया कतरवाने वाले भी। आपका फ़रमान है कि अल्लाह के अ़ज़ाब से निजात देने वाला कोई अ़मल अल्लाह के ज़िक्र से बड़ा नहीं।

एक मर्तबा आपने फ़रमाया मैं तुम्हें सब से बेहतर पाक और सब से बुलन्द दर्जे का अ़मल बताऊँ? जो तुम्हारे हक़ में सोना चाँदी राहे ख़ुदा में लुटाने से भी बेहतर हो। और इससे भी अफ़ज़ल हो कि कल तुम अपने दुश्मनों से मुक़ाबला करो, तुम उनकी गर्दनें मारो और वे तुम्हारी गर्दनें मारें। लोगों ने कहा हुज़ूर! ज़रूरत बताईये। फ़रमाया अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र। मुस्नद अहमद की एक हदीस में है कि एक शख़्स ने रसूले ख़ुदा सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि कौनसा मुजाहिद अफ़ज़ल है? आपने फ़रमाया सबसे ज़्यादा ख़ुदा का ज़िक्र करने वाला। उसने फिर रोज़ेदार के बारे में पूछा, यही जवाब मिला। फिर नमाज़, ज़कात, हज, सदक़ा सब के बारे में पूछा और हुज़ूर सल्ल. ने सब का यही जवाब दिया, तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने हज़रत उमर फ़ारूक़ से कहा- फिर अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करने वाले बहुत ही बढ़ गये। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया हाँ। अल्लाह तआ़ला का कसरत से ज़िक्र करने की फ़ज़ीलत में और भी बहुत सी हदीसें आई हैं। इसी सूरत की आयतः

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ........ الخ

(सूरः अहज़ाब आयत 41-42) की तफ़सीर में हम उन हदीसों को बयान करेंगे, इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

फिर फ़रमाया कि ये नेक सिफ़तें जिनमें हों हमने उनके लिये मग़फ़िरत तैयार कर रखी है और अज्रे अ़ज़ीम, यानी जन्नत।

और किसी ईमान वाले मर्द और किसी ईमान वाली औ़रत को गुन्जाईश नहीं है जबकि अल्लाह और उसका रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) किसी काम का हुक्म दे दें कि (फिर)	وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ

उन (मोमिनों) को उनके उस काम में कोई इख़्तियार (बाक़ी) रहे। और जो शख़्स अल्लाह का और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का कहना न मानेगा वह खुली गुमराही में जा पड़ा। (36)	الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ؕ

Maktab E Ashraf

अब कोई इख़्तियार नहीं

रसूलुल्लाह सल्ल. हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि. का पैग़ाम लेकर हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास गये। उन्होंने कहा मैं उनसे निकाह नहीं करूँगी। आपने फ़रमाया ऐसा न कहो और उनसे निकाह कर लो। हज़रत ज़ैनब रज़ि. ने जवाब दिया कि अच्छा फिर मुझे मोहलत दीजिये मैं कुछ सोच लूँ। अभी ये बातें हो ही रही थीं कि 'वही' नाज़िल हुई और यह आयत उतरी। इसे सुनकर हज़रत ज़ैनब ने फ़रमाया या रसूलल्लाह! क्या आप इस निकाह से रज़ामन्द (ख़ुश) हैं? आपने फ़रमाया हाँ। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने जवाब दिया कि फिर तो मुझे भी कोई इनकार नहीं। मैं अल्लाह के रसूल की नाफ़रमानी नहीं करूँगी। मैंने ख़ुद को उनके निकाह में दे दिया। एक और रिवायत में है कि वजह यह थी कि नसब (ख़ानदान) के एतिबार से यह (यानी हज़रत ज़ैनब रज़ि.) हज़रत ज़ैद रज़ि. के मुक़ाबले में ज़्यादा शरीफ़ (ऊँची) थीं। हज़रत ज़ैद रज़ि. रसूलुल्लाह सल्ल. के आज़ाद किये हुए ग़ुलाम थे।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन असलम रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह आयत उक़्बा बिन अबी मुईत की बेटी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में नाज़िल हुई है। सुलह हुदैबिया के बाद सबसे पहली मुहाजिर औ़रत यही थीं, इन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल. से कहा कि हुज़ूर! मैं ख़ुद को आपके लिये हिबा करती हूँ, आपने फ़रमाया मुझे क़बूल है। फिर हज़रत ज़ैद बिन हारिसा से उनका निकाह करा दिया। ग़ालिबन यह निकाह हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा के अलग होने के बाद हुआ होगा। इससे हज़रत उम्मे-कुलसूम नाराज़ हुईं और उनके भाई भी बिगड़ बैठे कि हमारा अपना इरादा ख़ुद हुज़ूर से निकाह का था, न कि आपके ग़ुलाम से निकाह करने का। इस पर यह आयत उतरी, बल्कि इससे भी ज़्यादा मामला साफ़ कर दिया गया और फ़रमा दिया गयाः

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ...............الخ

कि नबी (सल्ल.) मोमिनों की अपनी जानों से भी ज़्यादा औला हैं। पस आयत 'मा का-न लिमुअ्मिनिन् व ला मुअ्मिनतिन्...............' ख़ास है और इससे भी जामे आयत यह है। मुस्नद अहमद में है कि एक अन्सारी सहाबी को रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया तुम अपनी लड़की का निकाह जुलैबीब से कर दो। उन्होंने जवाब दिया कि अच्छी बात है, मैं उसकी माँ से भी मश्विरा कर लूँ। जाकर उनसे मश्विरा किया तो उन्होंने कहा यह नहीं हो सकता, हम फ़ुलाँ-फ़ुलाँ उनसे बड़े-बड़े आदमियों के रिश्ते और मंगनियाँ तो वापस कर दें और जुलैबीब से निकाह कर दें? वह अन्सारी सहाबी अपनी बीवी का यह जवाब सुनकर हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में जाना चाहते ही थे कि लड़की जो पर्दे के पीछे से यह तमाम गुफ़्तगू सुन रही थी बोल उठी कि तुम रसूलुल्लाह की बात रद्द करते हो? जब आप इससे ख़ुश हैं तो तुम्हें इनकार न करना चाहिये। अब दोनों ने कहा कि बच्ची ठीक कह रही है, बीच में रसूलुल्लाह सल्ल. हैं, इस निकाह से इनकार करना गोया हुज़ूर

Maktab E Ashraf

सल्ल. के इरशाद को और आपकी ख़्वाहिश को रद्द करना है। यह ठीक नहीं। चुनाँचे अन्सारी सहाबी रज़ि. सीधे हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि क्या आप इस बात से खुश हैं? आपने फ़रमाया हाँ मैं तो इससे रज़ामन्द हूँ। कहा फिर आपको इख़्तियार है, आप निकाह कर दीजिये। चुनाँचे निकाह हो गया।

एक मर्तबा मुसलमान मदीने वाले दुश्मनों के मुक़ाबले के लिये निकले, लड़ाई हुई जिसमें हज़रत जुलैबीब रज़ि. शहीद हो गये। उन्होंने बहुत से काफ़िरों को क़त्ल किया था जिनकी लाशें उनके आस-पास पड़ी हुई थीं। हज़रत अनस रज़ि. का बयान है कि मैंने खुद देखा उनका घर बड़ा आसूदाहाल (यानी आरामदेह और अच्छा बना हुआ) था, तमाम मदीने में उनसे ज़्यादा ख़र्चीला कोई न था। एक और रिवायत में हज़रत अबू बरज़ा असलमी रज़ि. का बयान है कि हज़रत जुलैबीब की तबीयत में मज़ाक़ था, इसलिये मैंने अपने घर में कह दिया था कि यह तुम्हारे पास न आयें। अन्सारियों की आ़दत थी कि वे किसी औ़रत का निकाह नहीं करते थे जब तक यह मालूम न कर लें कि हुज़ूर सल्ल. उनके बारे में कुछ नहीं फ़रमाते, फिर यह वाक़िआ़ बयान फ़रमाया जो ऊपर मज़कूर हुआ। उसमें यह भी है कि हज़रत जुलैबीब रज़ि. ने सात काफ़िरों को उस ग़ज़वे (दीनी लड़ाई) में क़त्ल किया था। फिर काफ़िरों ने एक साथ घेरकर आपको शहीद कर दिया। हुज़ूर सल्ल. उनकी लाश तलाश करते हुए जब उनकी लाश के पास आये तो फ़रमाया सात को मारकर शहीद हुए हैं, यह मेरे हैं और मैं इनका हूँ। दो या तीन मर्तबा यही फ़रमाया। फिर क़ब्र खुदवा कर अपने हाथों पर उठाकर क़ब्र में उतारा, रसूलुल्लाह सल्ल. का हाथ मुबारक ही उनका जनाज़ा था और कोई चारपाई वग़ैरह न थी। यह भी मज़कूर नहीं कि उन्हें गुस्ल दिया गया हो, उस नेक-बख़्त अन्सारी औ़रत के लिये जिन्होंने हुज़ूर सल्ल. की बात की इज़्ज़त रखकर अपने माँ-बाप को समझाया था कि इनकार न करो, अल्लाह तआ़ला के रसूल सल्ल. ने यह दुआ़ की थी कि खुदाया उस पर तू अपनी रहमतों की बारिश बरसा और उसे ज़िन्दगी के पूरे लुत्फ़ अ़ता फ़रमा। तमाम अनसार में उनसे ज़्यादा ख़र्च करने वाली औ़रत कोई न थी, उन्होंने जब पर्दे के पीछे से अपने वालिदैन (माँ-बाप) से कहा था कि हुज़ूर की बात रद्द न करो उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई थी (जिसकी यह तफ़सीर बयान हो रही है)।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से हज़रत ताऊस रह. पूछते हैं कि अ़सर के बाद दो रक्अ़तें पढ़ सकते हैं? तो आपने मना फ़रमाया और इस आयत की तिलावत की। पस यह आयत अगरचे शाने नुज़ूल के एतिबार से मख़्सूस है लेकिन हुक्म के एतिबार से आ़म है, खुदा और उसके रसूल के फ़रमान के होते हुए न तो कोई मुख़ालफ़त (विरोध और उल्लंघन) कर सकता है न उसे मानने न मानने का इख़्तियार किसी को बाक़ी रहता है, न राय क़ियास करने (अपनी अ़क़्ल चलाने) का हक़, न किसी और बात का। जैसे फ़रमायाः

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ..........الخ

यानी क़सम है तेरे रब की, लोग ईमान वाले न होंगे जब तक कि वे अपने आपस के तमाम इख़्तिलाफ़ात (झगड़े और विवादों) में तुझे हाकिम न मान लें। फिर तेरे फ़ैसले से दिल में किसी क़िस्म की तंगी न रखें, बल्कि दिल के पूरे इत्मीनान और खुशी के साथ तस्लीम कर लिया करें।

सही हदीस में है, उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि तुममें से कोई मोमिन नहीं होगा जब तक कि उसकी ख़्वाहिश इस चीज़ की ताबे और मातहत न हो जाये जिसे मैं लाया हूँ (यानी क़ुरआन और आपका फ़रमान)। इसी लिये यहाँ भी इसके ख़िलाफ़ बुराई बयान फ़रमा दी कि खुदा और उसके रसूल की

Maktab E Ashraf

नाफ़रमानी करने वाला खुल्लम-खुल्ला गुमराह है। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमान है:

فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ.

यानी जो लोग अल्लाह के नबी के इरशाद के ख़िलाफ़ करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिये, ऐसा न हो कि उन पर कोई फ़ितना (आज़माईश) आ पड़े या उन्हें कोई दर्दनाक अ़ज़ाब हो।

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ ۖ فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ○

और जब आप उस शख़्स से फ़रमा रहे थे जिस पर अल्लाह ने भी इनाम किया और आपने भी इनाम किया, कि अपनी बीवी (ज़ैनब) को अपने निकाह में रहने दे और ख़ुदा से डर, और आप अपने दिल में वह (बात भी) छुपाए हुए थे जिसको अल्लाह तआ़ला (आख़िर में) ज़ाहिर करने वाला था, और आप लोगों (के ताना देने) से अन्देशा करते थे, और डरना तो आपको ख़ुदा ही से ज़्यादा मुनासिब है। फिर जब ज़ैद (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) का उससे जी भर गया, हमने आपसे उसका निकाह कर दिया, ताकि मुसलमानों पर अपने मुँह-बोले बेटों की बीवियों के (निकाह के) बारे में कुछ तंगी न रहे, जब वे (मुँह बोले बेटे) उनसे अपना जी भर चुकें, और ख़ुदा का यह हुक्म तो होने वाला ही था। (37)

एक वाक़िआ़, ईमान व कुफ़्र का मेयार
मोमिनों की आज़माईश, नेकबख़्ती व बदबख़्ती के फ़ैसले

अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि उसके नबी (सल्ल.) ने अपने आज़ाद किये हुए ग़ुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि. को हर तरह समझाया, उन पर ख़ुदा का इनाम था कि इस्लाम और रसूल सल्ल. की पैरवी की तौफ़ीक़ दी, और हुज़ूर सल्ल. का भी उन पर एहसान था कि उन्हें ग़ुलामी से आज़ाद कर दिया। यह बड़ी शान वाले थे, यहाँ तक कि इन्हें सब मुसलमान 'हिब्बुर्रसूल' (रसूल के महबूब) कहते थे। इनके बेटे हज़रत उसामा रज़ि. को भी "हिब्ब बिन हिब्ब" (यानी महबूब के महबूब) कहते थे।

हज़रत आयशा रज़ि. का इरशाद है कि जिस लश्कर में हुज़ूर सल्ल. उन्हें भेजते थे उस लश्कर का सरदार उन्हीं को बनाते थे। अगर यह ज़िन्दा रहते तो रसूलुल्लाह सल्ल. के ख़लीफ़ा बन जाते। (अहमद)

बज़्ज़ार में है, हज़रत उसामा रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में था, मेरे पास हज़रत अ़ब्बास और हज़रत अ़ली रज़ि. आये और मुझसे कहा जाओ हुज़ूर सल्ल. से हमारे लिये इजाज़त तलब करो। मैंने आपको ख़बर की, आपने फ़रमाया जानते हो वे क्यों आये हैं? मैंने कहा नहीं। आपने फ़रमाया लेकिन मैं जानता हूँ

जाओ बुला लो। ये आये और कहा या रसूलल्लाह! ज़रा फ़रमाईये तो आपको अपने अहल में सबसे ज़्यादा महबूब कौन है? आपने फ़रमाया मेरी बेटी फ़ातिमा। उन्होंने कहा हम हज़रत फ़ातिमा के बारे में नहीं पूछते, आपने फ़रमाया फिर उसामा बिन ज़ैद बिन हारिसा, जिन पर ख़ुदा तआ़ला ने इनाम किया और मैंने भी। हुज़ूर सल्ल. ने उनका निकाह अपनी फूफी अमीमा बिन्ते अ़ब्दुल-मुत्तलिब की लड़की ज़ैनब बिन्ते जहश असदिया से कर दिया था, दस दीनार और सात दिर्हम मेहर दिया था और एक दुपट्टा एक चादर एक कुर्ता, पचास खजूरें दी थीं। एक साल से कुछ ज़्यादा मुद्दत तो यह घर बसा फिर आपस में ना-इत्तिफ़ाक़ी शुरू हो गई। हज़रत ज़ैद रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. के पास आकर शिकायत की तो आप उन्हें समझाने लगे कि घर बरबाद न करो, अल्लाह से डरो........।

इब्ने अबी हातिम और इब्ने जरीर ने इस जगह बहुत से ग़ैर-सही अक़वाल और रिवायतें नक़ल की हैं जिनका नक़ल करना भी हम नामुनासिब जान कर छोड़ते हैं, क्योंकि उनमें से एक भी साबित और सही नहीं। मुस्नद अहमद में भी एक रिवायत हज़रत अनस रज़ि. से है लेकिन उसमें बड़ी ग़राबत (कमज़ोरी) है। इसलिये हमने उसे भी बयान नहीं किया। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि यह आयत हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि. के बारे में उतरी है। इब्ने अबी हातिम में है कि अल्लाह तआ़ला ने पहले ही से अपने नबी सल्ल. को ख़बर दे दी थी कि हज़रत ज़ैनब आपके निकाह में आयेंगी, यही बात थी जिसे आपने ज़ाहिर न किया और हज़रत ज़ैद को समझाया कि वह अपनी बीवी को अलग न करें। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल. अगर ख़ुदा की 'वही' किताबुल्लाह में से एक आयत को छुपाने वाले होते तो इस आयत को छुपा लेते। 'वतरुन्' के मायने हाजत के हैं। मतलब यह है कि जब ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु उनसे सैर हो गये और बावजूद समझाने बुझाने के मेल-मिलाप क़ायम न रह सका, बल्कि तलाक़ हो गई तो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा को अपने नबी के निकाह में दे दिया। इसलिये वली की, ईजाब व क़बूल की, मेहर और गवाहों की ज़रूरत ही न रही (यह सिर्फ़ हुज़ूरे पाक की ख़ुसूसियत थी और किसी का निकाह इस तरह नहीं हो सकता)।

नोटः उर्दू ज़बान की तफ़सीरों में भी इस आयत की यही तफ़सीर लिखी है कि जब हज़रत ज़ैद का उनसे जी भर गया, या उन्होंने उनसे अपनी ज़रूरत पूरी कर ली, या वह उनसे सैर हो गये वग़ैरह-वग़ैरह। 'वतरुन' लफ़्ज़ की असल तहक़ीक़ और अ़रबी के मुहावरात व अश्आ़र में इसका इस्तेमाल तो अ़रबी भाषा के माहिर हज़रात ज़्यादा बेहतर बता सकते हैं, मगर मुझे इन अलफ़ाज़ में एक हल्कापन महसूस होता है, जबकि हज़रत ज़ैनब बाद में 'उम्मुल-मोमिनीन' (तमाम मुसलमानों की रूहानी माँ) बनीं, और यह अल्लाह तआ़ला ने पहले से उनके मुक़द्दर में लिख दिया था। हमारे इलाक़े में 'जी भर गया' मुहावरे से मुराद तबीयत और मिज़ाज में ताल-मेल और मुवाफ़क़त का ख़त्म होना भी लिया जाता है उसकी वजह चाहे जो हो। यहाँ यह मफ़्हूम भी हो सकता है कि जब मिज़ाज न मिलने की वजह से उनका जी भर गया, उनके प्रति दिल में वह लगाव और रग़बत न रही जो पहले थी, या एक बीवी के बारे में होनी चाहिये तो उन्होंने उनको अलग कर दिया। सैर हो जाना, तबीयत भर लेना, ज़रूरत व हाजत पूरी कर लेना, ये मायने उर्दू और हिन्दी ज़बान के लिहाज़ से सही और सम्मान-जनक मालूम नहीं होते। वल्लाहु आलम। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत ज़ैनब रज़ि. की इद्दत पूरी हो चुकी तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा से कहा- तुम जाओ और उन्हें मुझसे निकाह का पैग़ाम पहुँचाओ। हज़रत ज़ैद गये, उस वक़्त आप आटा गूँध रही थीं। हज़रत ज़ैद रज़ि. पर उनकी अ़ज़्मत (सम्मान व इज़्ज़त) इस तरह छाई कि सामने

पड़कर बात न कर सके, मुँह फेरकर बैठ गये और ज़िक्र किया। उम्मुल-मोमिनीन ने फ़रमाया ठहरो मैं ख़ुदा तआ़ला से इस्तिख़ारा कर लूँ। यह तो खड़ी होकर नमाज़ पढ़ने लगीं, उधर रसूलुल्लाह सल्ल. पर 'वही' उतरी जिसमें अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- मैंने उनका निकाह तुमसे कर दिया। चुनाँचे उसी वक़्त हुज़ूर सल्ल. बिना इत्तिला किये चले आये। फिर वलीमे की दावत में आपने हम सब को गोश्त रोटी खिलाई। लोग खा-पीकर चले गये मगर चन्द आदमी वहीं बैठे बातें करते रहे, आप बाहर निकल कर अपनी बीवियों के पास गये। आप उन्हें सलामु अ़लैक करते थे और वे आप से दरियाफ़्त करती थीं कि फ़रमाईये बीवी साहिबा से ख़ुश तो हैं? मुझे याद नहीं कि मैंने हुज़ूर सल्ल. को ख़बर दी या आपको ख़बर कहीं और से मिली कि लोग वहाँ से चले गये। उसके बाद उस घर की तरफ़ तशरीफ़ ले गये, मैं भी आपके साथ था। मैंने आपके साथ ही जाने का इरादा किया लेकिन आपने पर्दा करा दिया, मेरे और आपके दरमियान हिजाब (आड़) हो गया और पर्दे की आयतें उतरीं। सहाबा किराम को नसीहत की गई और फ़रमा दिया गया कि नबी सल्ल. के घरों में बिना इजाज़त न जाओ।

मुस्लिम और सही बुख़ारी में है कि हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा नबी करीम सल्ल. की दूसरी बीवियों से फ़ख़्र के तौर पर कहा करती थीं कि तुम सब के निकाह तुम्हारे वली वारिसों ने किये और मेरा निकाह ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने सातवें आसमान पर करा दिया। सूरः नूर की तफ़सीर में हम यह रिवायत बयान कर चुके हैं कि हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कहा- मेरा निकाह आसमान से उतरा और उनके मुक़ाबले पर हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया मेरी बराअत की आयतें आसमान से उतरीं, जिनका हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने इक़रार किया।

इब्ने जरीर में है कि हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने रसूलुल्लाह सल्ल. से एक मर्तबा कहा- मुझ में अल्लाह तआ़ला ने तीन ख़ुसूसियतें रखी हैं जो आपकी दूसरी बीवियों में नहीं, एक तो यह है कि मेरा और आपका दादा एक है, दूसरे यह कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान से मुझे आपके निकाह में दिया, तीसरे यह कि हमारे दरमियान सफ़ीर (दूत) हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम थे।

फिर फ़रमाता है कि हमने उनसे निकाह करना तेरे साथ जायज़ कर दिया ताकि मुसलमानों पर उनके ले-पालक (गोद लिये हुए) लड़कों की बीवियों के बारे में जब उन्हें तलाक़ दे दी जाये कोई हर्ज न रहे, यानी अगर वे चाहें तो उनसे निकाह कर सकें। (क्योंकि इससे पहले अ़रब के दस्तूर के मुताबिक़ गोद लिये हुए और बेटे बनाये हुए लड़कों की बीवियों से निकाह को हराम समझा जाता था)। हुज़ूर सल्ल. ने नुबुव्वत से पहले हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अपना मुतबन्ना (ले-पालक, मुँह बोला बेटा) बना रखा था। आ़म तौर पर उन्हें ज़ैद बिन मुहम्मद कहा जाता था। क़ुरआन ने इस निस्बत से भी मनाही कर दी और हुक्म दिया कि उन्हें उनके असली बाप की तरफ़ निस्बत करके पुकारा करो। फिर हज़रत ज़ैद ने जब हज़रत ज़ैनब रज़ि. को तलाक़ दे दी तो अल्लाह पाक ने उन्हें अपने नबी के निकाह में देकर यह बात भी ख़त्म कर दी। जिस आयत में हराम औ़रतों का ज़िक्र आया है वहाँ भी यही फ़रमाया कि तुम्हारे अपने सुलबी (अपनी पीठ के) लड़कों की बीवियाँ तुम पर हराम हैं ताकि ले-पालक लड़कों की बीवियाँ इस हुक्म से ख़ारिज रहें, क्योंकि ऐसे लड़के अ़रब में बहुत थे। यह मामला ख़ुदा तआ़ला के नज़दीक मुक़र्रर हो चुका था, इसका होना हतमी यक़ीनी और ज़रूरी था, और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा को यह शर्फ़ (सम्मान व रुतबा) मिलना पहले ही से लिखा जा चुका था कि वह अज़्वाजे मुतह्हरात (अल्लाह के नबी की पाक बीवियों) उम्मुल-मोमिनीन में दाख़िल हों। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा।

Maktaba E Ashraf

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرًا ۝

और उन पैग़म्बर के लिए जो बात (तक़दीरी तौर पर या शरीअ़त के हुक्म के तौर पर) ख़ुदा तआ़ला ने मुक़र्रर कर दी थी उसमें नबी पर कोई इल्ज़ाम नहीं, अल्लाह तआ़ला ने उन (पैग़म्बरों) के हक़ में (भी) यही मामूल कर रखा है जो पहले हो गुज़रे हैं, और अल्लाह का हुक्म (पहले से) तजवीज़ किया हुआ होता है। (38)

इसमें कोई हर्ज नहीं

फ़रमाता है कि जब अल्लाह के नज़दीक अपने ले-पालक (मुँह बोले बेटे) की बीवी से उसकी तलाक़ के बाद निकाह करना हलाल है, फिर इसमें नबी पर क्या हर्ज है? अगले नबियों पर जो हुक्मे ख़ुदा नाज़िल होते थे उन पर अ़मल करने में उन पर कोई हर्ज नहीं था। इससे ग़र्ज़ मुनाफ़िक़ों के इस क़ौल का रद्द करना है कि देखो अपने आज़ाद किये हुए गुलाम और ले-पालक लड़के की बीवी से निकाह कर लिया। उस ख़ुदा के मुक़र्रर किये हुए मामलात होकर ही रहते हैं, वह जो चाहता है वही होता है, जो नहीं चाहता वह नहीं होता।

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ ع ٥ ٢

ये सब (पहले गुज़रे हुए पैग़म्बर) ऐसे थे कि अहकाम पहुँचाया करते थे और इस बारे में अल्लाह ही से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरते थे, और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है। (39) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं लेकिन अल्लाह के रसूल हैं, सब नबियों के ख़त्म पर हैं, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानता है। (40)

रसूलुल्लाह और ख़ातमुन्नबिय्यीन

उनकी तारीफ़ हो रही है जो अल्लाह की मख़्लूक़ को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाते हैं, अल्लाह की अमानत की अदायेगी करते हैं, उससे डरते रहते हैं और अल्लाह के अ़लावा किसी का ख़ौफ़ नहीं करते। किसी की आन-बान और शान व शौकत से मरऊब होकर पैग़ामे ख़ुदा के पहुँचाने में ख़ौफ़ नहीं खाते। अल्लाह तआ़ला की नुसरत व इमदाद काफ़ी है, इस मन्सब (ज़िम्मेदारी और फ़र्ज़) की अदायेगी में सब के पेशवा बल्कि हर-हर मामले में सब के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं। ख़्याल फ़रमाईये कि पूरब व पश्चिम में हर इनसान को हुज़ूर सल्ल. ने ख़ुदा के दीन की तब्लीग़ की और जब तक ख़ुदा का दीन दुनिया के चारों कोनों (यानी पूरी दुनिया) में फैल न गया आप बराबर ख़ुदा के दीन की इशाअ़त (प्रसार) करने में मसरूफ़ रहे। आप से पहले तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम अपनी-अपनी क़ौम की

तरफ़ आते रहे, लेकिन हुज़ूर सल्ल. सारी दुनिया की तरफ़ ख़ुदा के रसूल बनकर आये थे। क़ुरआन में फ़रमाने ख़ुदा है कि लोगों में ऐलान कर दो कि मैं तुम सब की तरफ़ ख़ुदा का रसूल हूँ।

फिर आपके बाद मन्सबे तब्लीग़ (अल्लाह के दीन को पहुँचाने की ज़िम्मेदारी) आपकी उम्मत को मिला। उन सब के सरदार आपके सहाबा हैं। रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन। जो कुछ उन्होंने हुज़ूर सल्ल. से सीखा था सब कुछ बाद वालों को सिखा दिया। तमाम अक़वाल व अफ़आ़ल दिन और रात के सफ़र और हज़रत के ज़ाहिर और पोशीदा दुनिया के सामने रख दिये। ख़ुदा उन पर अपनी रज़ामन्दी नाज़िल फ़रमाये। फिर उनके बाद वाले उनके वारिस हुए और इसी तरह हर बाद वाले अपने पहले वालों के वारिस बने और ख़ुदा का दीन उनसे फैलता रहा। क़ुरआन व हदीस लोगों के कानों में पड़ता रहा। हिदायत वाले उनकी पैरवी से मुनव्वर (रोशन और लाभान्वित) होते रहे और जिनको ख़ैर की तौफ़ीक़ मिली वे उनके बताये हुए रास्ते पर चलते रहे। अल्लाह करीम से हमारी दुआ़ है कि वह हमें भी उनमें से कर दे, आमीन।

मुस्नद अहमद में है कि तुम में से कोई ख़ुद को ज़लील न करे। लोगों ने कहा- हुज़ूर! यह कैसे? फ़रमाया शरीअ़त के ख़िलाफ़ काम देखकर लोगों के ख़ौफ़ के मारे ख़ामोश न रहे वरना क़ियामत के दिन उससे बाज़पुर्स (सवाल और पूछ) होगी कि तू क्यों ख़ामोश रहा? यह कहेगा कि लोगों के डर से, अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा सबसे ज़्यादा ख़ौफ़ रखने के क़ाबिल तो मेरी ज़ात थी।

फिर अल्लाह तआ़ला मना फ़रमाता है कि किसी को हुज़ूर सल्ल. का साहिबज़ादा (बेटा) न कहा जाये, लोग जो ज़ैद बिन मुहम्मद कहते थे, जिसका बयान ऊपर गुज़र चुका है, तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मुहम्मद ज़ैद के वालिद नहीं। यही हुआ भी कि हुज़ूर सल्ल. की नरीना औलाद बलूग़त को पहुँची ही नहीं। क़ासिम, तैयब और ताहिर तीन बच्चे हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के पेट से हुज़ूर सल्ल. के यहाँ हुए लेकिन तीनों बचपन में ही इन्तिक़ाल कर गये। फिर हज़रत मारिया क़िब्तिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा से एक बच्चा पैदा हुआ जिसका नाम इब्राहीम था, लेकिन यह भी दूध पीने के ज़माने में ही इन्तिक़ाल कर गये। आपकी लड़कियाँ हज़रत ख़दीजा रज़ि. से चार थीं- ज़ैनब, रुक़ैया, उम्मे कुलसूम और फ़ातिमा रज़ि.। इनमें से तीन तो आपकी ज़िन्दगी ही में इन्तिक़ाल फ़रमा गईं, सिर्फ़ हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल आपके छह माह बाद हुआ।

फिर फ़रमाता है- बल्कि आप सल्ल. ख़ुदा तआ़ला के रसूल और ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। जैसे फ़रमाया कि ख़ुदा ख़ूब जानता है जिसको अपना रसूल बनाना होता है। यह आयत शरई दलील है इस बात पर कि आपके बाद कोई नबी नहीं, और जब नबी ही नहीं तो रसूल कहाँ? कोई नबी व रसूल आपके बाद नहीं आने का। रिसालत तो नुबुव्वत से भी ख़ास चीज़ है, हर रसूल नबी है लेकिन हर नबी रसूल नहीं। मुतवातिर हदीसों से भी हुज़ूर सल्ल. का ख़ातमुन्नबिय्यीन होना साबित है। बहुत से सहाबा से ये हदीसें रिवायत की गई हैं। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मेरी मिसाल नबियों में ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने एक बहुत अच्छा और पूरा मकान बनाया लेकिन उसमें एक ईंट की जगह छोड़ दी, जहाँ कुछ न रखा, लोग उसे चारों तरफ़ से देखते भालते और उसकी बनावट से ख़ुश होते लेकिन कहते क्या ही अच्छा होता कि इस ईंट की जगह भी पुर कर ली जाती। पस मैं नबियों में उसी ईंट की जगह हूँ। इमाम तिर्मिज़ी रह. भी इस हदीस को लाये हैं और इसे हसन सही कहा है। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि रिसालत और नुबुव्वत ख़त्म हो गई, मेरे बाद न कोई रसूल है न नबी। सहाबा रज़ि. पर यह बात भारी गुज़री तो आपने फ़रमाया लेकिन ख़ुशख़बरियाँ देने वाले। सहाबा रज़ि. ने पूछा ख़ुशख़बरियाँ देने वाले क्या

हैं? फ़रमाया मुसलमानों के ख़्वाब जो नुबुव्वत के हिस्सों में से एक हिस्सा है। यह हदीस भी तिर्मिज़ी शरीफ़ में है और इमाम तिर्मिज़ी इसे सही ग़रीब कहते हैं। महल की मिसाल वाली हदीस अबू दाऊद व तियालिसी में भी है, उसके आख़िर में यह है कि मैं उस ईंट की जगह हूँ। मुझ पर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की नुबुव्वत व रिसालत का सिलसिला ख़त्म किया गया। इसे बुख़ारी व मुस्लिम और तिर्मिज़ी भी लाये हैं। मुस्नद की इस हदीस की सनद में है कि मैं आया और उस ख़ाली ईंट की जगह पुर कर दी। मुस्नद में है कि मेरे बाद नुबुव्वत नहीं मगर ख़ुशख़बरी देने वाले। पूछा गया या रसूलल्लाह! वे क्या हैं? फ़रमाया अच्छे ख़्वाब या फ़रमाया नेक ख़्वाब। मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ वग़ैरह में महल की ईंट की मिसाल वाली हदीस में है कि लोग उसे देखकर महल वाले से कहते हैं कि तूने इस ईंट की जगह क्यों छोड़ दी। पस मैं वह ईंट हूँ।

सही मुस्लिम शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुझे तमाम अम्बिया पर छह फ़ज़ीलतें दी गईं:

1. मुझे जामे कलिमात अ़ता फ़रमाये गये हैं।
2. सिर्फ़ रौब से मेरी मदद की गई।
3. मेरे लिये ग़नीमतों के माल हलाल किये गये हैं।
4. मेरे लिये सारी ज़मीन मस्जिद और वुज़ू बनाई गई है।
5. मैं सारी मख़्लूक़ की तरफ़ नबी बनाकर भेजा गया हूँ।
6. मुझ पर नुबुव्वत का सिलसिला ख़त्म किया गया।

यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही कहते हैं। सही मुस्लिम वग़ैरह में भी महल की मिसाल वाली रिवायत में ये अलफ़ाज़ आये हैं कि मैं आया और मैंने उस ईंट की जगह को पूरा कर दिया। मुस्नद में है- मैं ख़ुदा के नज़दीक नबियों का ख़त्म करने वाला था उस वक़्त जबकि आदम अ़लैहिस्सलाम पूरे तौर पर पैदा भी नहीं हुए थे। एक और हदीस में है कि मेरे कई नाम हैं, मैं मुहम्मद हूँ, मैं अहमद हूँ और मैं माही (मिटाने वाला) हूँ। अल्लाह तआ़ला मेरी वजह से कुफ़्र को मिटा देगा और मैं हाशिर हूँ तमाम लोगों का हश्र मेरे क़दमों तले होगा। और मैं आ़क़िब हूँ जिसके बाद कोई नबी नहीं। (सहीहैन)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक रोज़ हुज़ूर सल्ल. हमारे पास आये, गोया आप रुख़्सत कर रहे हैं और तीन मर्तबा फ़रमाया- मैं नबी-ए-उम्मी हूँ मेरे बाद कोई नबी नहीं। मैं फ़ातेह कलिमात दिया गया हूँ और निहायत जामे। और पूरे तौर पर मैं जानता हूँ कि जहन्नम के दारोग़ा कितने हैं और अ़र्श के उठाने वाले कितने हैं। मेरा अपनी उम्मत से तआ़रुफ़ (परिचय) कराया गया है, जब तक कि मैं तुम में हूँ मेरी सुनते रहो और मानते चले जाओ, जब मैं रुख़्सत हो जाऊँ तो किताबुल्लाह को थाम लो, उसके हलाल को हलाल और हराम को हराम समझो। (मुस्नद इमाम अहमद रह.)

इस बारे में और भी बहुत सी हदीसें हैं अल्लाह तआ़ला की इस विस्तृत रहमत पर उसका शुक्र करना चाहये कि उसने अपने रहम व करम से ऐसे बड़े रसूल को हमारी तरफ़ भेजा और उन्हें ख़त्मुल-मुर्सलीन और ख़ातमुन्नबिय्यीन बनाया और यक्सूई वाला आसान सच्चा और सहल दीन आपके हाथों कमाल को पहुँचा। रब्बुल-आ़लमीन ने अपनी किताब में और रहमतुल्-लिल्आ़लमीन ने अपनी मुतवातिर (लगातार) हदीसों में यह ख़बर दे दी कि आपके बाद कोई नबी नहीं (यानी किसी भी शक्ल में, न आंशिक न ज़िल्ली न बुरूज़ी)। पस जो शख़्स भी आपके बाद नुबुव्वत या रिसालत का दावा करे वह झूठा बोहतान बाज़, फ़रेबी, गुमराह करने वाला है, चाहे वह कितने ही कर्तब और चमत्कार दिखाये, जादूगरी करे और बड़े कमालात और अ़क़्ल को

हैरान कर देने वाली चीज़ें पेश करे, और तरह-तरह की अज़ीब-अज़ीब चीज़ें दिखाये लेकिन अ़क्लमन्द यह जानते हैं कि यह सब धोखा और मक्कारी है। यमन के नुबुव्वत के दावेदार अ़नसी को और यमामा के नुबुव्वत के दावेदार मुसैलमा को देख लो कि दुनिया ने उन्हें जैसे वे थे समझ लिया और उनकी असलियत सब पर ज़ाहिर हो गई। यही हाल होगा हर उस शख़्स का जो क़ियामत तक इस दावे से मख़्लूक़ के सामने आयेगा कि उसका झूठ और उसकी गुमराही सब पर खुल जायेगी, यहाँ तक कि सबसे आख़िरी दज्जाल मसीह दज्जाल आयेगा। उसकी अ़लामतों से भी हर आ़लिम हर मोमिन उसका कज़्ज़ाब (झूठा) होना जान लेगा। पस यह ख़ुदा की एक नेमत है कि ऐसे झूठे दावेदारों को यह नसीब नहीं होता कि वे नेकी के अहकाम दें और बुराई से रोकें। हाँ जिनके अहकाम में उनका अपना मक़सद होता है उन पर बहुत ज़ोर देते हैं, उनके अक़्वाल (बातें) उनके अफ़आ़ल (काम) झूठ, बोहतान और बदकारियों वाले होते हैं। जैसे फ़रमाने बारी है:

هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ. تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ........ الخ

यानी क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शयातीन किन के पास आते हैं? हर एक बोहतान बाज़ गुनाहगार के पास........।

सच्चे नबियों का हाल इसके बिल्कुल उलट होता है, वे निहायत नेकी वाले बहुत सच्चे हिदायत वाले, दीन पर जमाव वाले, क़ौल व फ़ेल के अच्छे, नेकियों का हुक्म देने वाले, बुराईयों से रोकने वाले होते हैं। साथ ही ख़ुदा की तरफ़ से उनकी ताईद होती है मोजिज़ों और असाधारण चीज़ों से उनकी सच्चाई और ज़्यादा ज़ाहिर हो जाती है, और इस क़द्र ज़ाहिर व वाज़ेह और साफ़ दलीलें उनकी नुबुव्वत पर होती हैं कि एक सलामती वाला दिल उनके मानने पर मजबूर हो जाता है। अल्लाह तआ़ला अपने सब सच्चे नबियों पर क़ियामत तक अपने दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाता रहे।

(और) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह को ख़ूब कसरत से याद करो (41) और सुबह व शाम (यानी हमेशा) उसकी तस्बीह (व पाकी बयान) करते रहो। (42) वह ऐसा (रहीम) है कि वह (ख़ुद भी) और उसके फ़रिश्ते (भी) तुम पर रहमत भेजते रहते हैं, ताकि हक़ तआ़ला तुमको अन्धेरियों से नूर की तरफ़ ले आए। और अल्लाह तआ़ला मोमिनों पर बहुत मेहरबान है। (43) वे जिस दिन अल्लाह से मिलेंगे तो उनको जो सलाम होगा वह यह होगा कि अस्सलामु अ़लैकुम, और अल्लाह ने उनके लिए उम्दा सिला (जन्नत) तैयार कर रखा है। (44)	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ○ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ○ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ○ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ وَّاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ○

अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र

बहुत सी नेमतों के अ़ता करने वाले ख़ुदा का हुक्म हो रहा है कि हमें उसका कसरत से ज़िक्र करना

Maktaba E Ashraf

चाहिये और इस पर हमें नेमतें और बड़े अज्र व सवाब का वायदा दिया जाता है। एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- क्या मैं तुम्हें बेहतर अ़मल, बहुत ही पाकीज़ा काम, सबसे बड़े दर्जे की नेकी और सोने चाँदी को राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से भी ज़्यादा बेहतर और जिहाद से भी अफ़ज़ल काम न बताऊँ? लोगों ने पूछा हुज़ूर! वह क्या है? फ़रमाया अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र। (तिर्मिज़ी इब्ने माजा वग़ैरह)

यह हदीस पहले 'वज़्ज़ाकिरीनल्ला-ह' की तफ़सीर में गुज़र चुकी है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से यह दुआ़ सुनी है जिसे मैं किसी वक़्त तर्क नहीं करता (यानी नहीं छोड़ता)।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ اُعْظِمُ شُكْرَكَ وَاَتَّبِعُ نَصِيْحَتَكَ وَاُكْثِرُ ذِكْرَكَ وَاَحْفَظُ وَصِيَّتَكَ.

यानी ऐ अल्लाह! तू मुझे अपना शुक्रगुज़ार फ़रमाँबरदार, कसरत से ज़िक्र करने वाला, और तेरे अहकाम की हिफ़ाज़त करने वाला बना दे। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

दो देहाती लोग रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आये, एक ने पूछा सबसे अच्छा शख़्स कौन है? आपने फ़रमाया जो उम्र पाये और नेक आमाल करे। दूसरे ने पूछा हुज़ूर! अहकामे इस्लाम तो बहुत सारे हैं, मुझे कोई ऐसा हुक्म बता दीजिये कि उसको अपनी ज़िन्दगी का वज़ीफ़ा बनाऊँ। आपने फ़रमाया ज़िक्रुल्लाह से हर वक़्त अपनी ज़बान को तर रख। (तिर्मिज़ी)

फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में हर वक़्त मशग़ूल रहो यहाँ तक कि लोग तुम्हें मजनूँ कहने लगें। (मुस्नद अहमद)

फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का कसरत से ज़िक्र करो, यहाँ तक कि मुनाफ़िक़ तुम्हें रियाकार कहने लगें। (तबरानी)

फ़रमाते हैं कि जो लोग किसी मज्लिस में बैठें और वहाँ अल्लाह का ज़िक्र न करें तो वह मज्लिस क़ियामत के दिन उन पर हसरत व अफ़सोस का कारण बनेगी (यानी वक़्त की कोई क़द्र न की, मोहलत और फ़ुर्सत को यूँही बरबाद कर दिया)। (मुस्नद)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हर फ़र्ज़ काम की कोई हद है, फिर उज़्र की हालत में वह माफ़ भी है, लेकिन अल्लाह के ज़िक्र की कोई हद नहीं, न वह किसी वक़्त साक़ित होता (यानी ज़िम्मे से उतरता) है, हाँ कोई दीवाना हो तो और बात है। खड़े बैठे, रात को दिन को, ख़ुश्की में पानी में, सफ़र में हज़र में, मालदारी में फ़क़ीरी में, सेहत में बीमारी में, पोशीदगी में ज़ाहिर में, ग़र्ज़ कि हर हाल में ज़िक्रुल्लाह करना चाहिये। सुबह शाम अल्लाह की तस्बीह (पाकी) बयान करनी चाहिये। तुम जब यह कर लोगे तो अल्लाह तुम पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमायेगा और फ़रिश्ते तुम्हारे लिये हर वक़्त दुआ़ करने वाले रहेंगे। इस बारे में और भी बहुत सी हदीसें व अक़वाल हैं। इस आयत में भी कसरत से अधिकता के साथ अल्लाह का ज़िक्र करने की हिदायत हो रही है। बुज़ुर्गों ने अल्लाह के ज़िक्र और वज़ीफ़ों की बहुत सी मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं, जैसे इमाम नसाई, इमाम मामरी रह. वग़ैरह। इन सब में बेहतरीन किताब इस मौज़ू (विषय) पर हज़रत इमाम नववी रह. की है। सुबह व शाम उसकी तस्बीह बयान करते रहो, जैसे फ़रमायाः

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ........ الخ

अल्लाह के लिये पाकी है, जब तुम शाम करो और जब तुम सुबह करो उसी के लिये हम्द (तारीफ़) है। आसमानों में और ज़मीन में ज़वाल के बाद और ज़ोहर के वक़्त।

Maktab E Ashraf

फिर उसकी फ़ज़ीलत बयान करने और उसकी तरफ़ रग़बत दिलाने के लिये फ़रमाता है, वह ख़ुद तुम पर रहमत भेज रहा है। यानी जब वह तुम्हारी याद रखता है तो क्या वजह कि तुम उसके ज़िक्र से ग़फ़लत करो? जैसे फ़रमायाः

كَمَآ اَرْسَلْنَافِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ.......... الخ

जिस तरह हमने ख़ुद तुममें ख़ुद तुम्हीं में से रसूल भेजा जो तुम पर हमारी किताब पढ़ता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब व हिक्मत सिखाता है और वह सिखाता है जिसे तुम जानते भी न थे। पस तुम मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हारी याद करूँगा और तुम मेरा शुक्र करो और मेरी नाशुक्री न करो। हदीसे क़ुदसी में है, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है जो मुझे अपने दिल में याद करता है मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ। और जो मुझे किसी जमाअ़त में याद करता है मैं उसे जमाअ़त में याद करता हूँ जो उसकी जमाअ़त से बेहतर होती है।

'सलात' (का लफ़्ज़) जब ख़ुदा की तरफ़ मुज़ाफ़ (मन्सूब) हो तो मतलब यह होता है कि अल्लाह तआ़ला उसकी भलाई अपने फ़रिश्तों के सामने बयान करता है और बाज़ यह भी कहते हैं कि मुराद इससे रहमत है, अगरचे दोनों क़ौलों का मतलब एक ही है। फ़रिश्तों की 'सलात' उनकी दुआ़ और इस्तिग़फ़ार है जैसे एक दूसरी आयत में हैः

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ......... الخ

अ़र्श के उठाने वाले और उसके आस पास वाले अपने रब की हम्द व तस्बीह (तारीफ़ व पाकी) बयान करते हैं, उस पर ईमान लाते हैं और मोमिन बन्दों के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं कि ऐ अल्लाह तू उन्हें बख़्श जो तौबा करते हैं और तेरी राह पर चलते हैं, उन्हें अ़ज़ाबे जहन्नम से भी निजात दे, उन्हें उन जन्नतों में ले जा जिनका तू उनसे वायदा कर चुका है। और उन्हें भी उनके साथ पहुँचा दे जो उनके बाप दादाओं, बीवियों और औलाद में नेक हों, उन्हें बुराईयों से बचा ले.........।

वह अपनी रहमत को तुम पर नाज़िल फ़रमाकर अपने फ़रिश्तों की दुआ़ को तुम्हारे हक़ में क़बूल फ़रमाकर तुम्हें जहालत व गुमराही की अंधेरियों से निकाल कर हिदायत व यक़ीन के नूर की तरफ़ ले जाता है। वह दुनिया और आख़िरत में मोमिनों पर रहीम व करीम है, दुनिया में हक़ की तरफ़ उनकी रहबरी करता है और रोज़ियाँ अ़ता फ़रमाता है। आख़िरत में घबराहट और डर ख़ौफ़ से बचा लेगा। फ़रिश्ते उन्हें बशारत (ख़ुशख़बरियाँ) देंगे कि तुम जहन्नम से आज़ाद हो और जन्नती हो। क्योंकि फ़रिश्तों के दिल मोमिनों की मुहब्बत व उलफ़त से पुर (भरे हुए) हैं।

हुज़ूर सल्ल. एक मर्तबा अपने सहाबा के साथ रास्ते से गुज़र रहे थे, एक छोटा बच्चा रास्ते में था, उसकी माँ ने जब एक जमाअ़त को आते हुए देखा तो मेरा बच्चा मेरा बच्चा कहती हुई दौड़ी और बच्चे को गोद में लेकर एक तरफ़ हट गई। माँ की इस मुहब्बत को देखकर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने कहा या रसूलल्लाह! ख़्याल तो फ़रमाईये क्या यह अपने बच्चे को आग में डाल देगी? हुज़ूर सल्ल. उनके मतलब को समझ कर फ़रमाने लगे- क़सम ख़ुदा की अल्लाह तआ़ला भी अपने दोस्तों को आग में नहीं डालेगा।

(मुस्नद अहमद)

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक क़ैदी औ़रत को देखा कि उसने अपने बच्चे को देखते ही उठा लिया और अपने कलेजे से लगाकर उसे दूध पिलाने लगी। आपने फ़रमाया बताओ तो अगर इसके

इख़्तियार में हो तो क्या यह अपनी ख़ुशी से इस बच्चे को आग में डाल देगी? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अ़र्ज़ किया हरगिज़ नहीं। आपने फ़रमाया क़सम है ख़ुदा की, अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर इससे भी ज़्यादा मेहरबान है। ख़ुदा की तरफ़ से उनका तोहफ़ा जिस दिन ये उससे मिलेंगे सलाम होगाः

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ

उनको उनके परवर्दिगार की तरफ़ से सलाम फ़रमाया जायेगा। (सूरः यासीन आयत 58)

क़तादा रह. फ़रमाते हैं- आपस में एक दूसरे को सलाम करेंगे। इसकी ताईद इस आयत से भी होती हैः

دَعْوٰهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ.......... الخ

उनके मुँह से यह बात निकलेगी कि सुब्हानल्लाह! और उनको आपसी सलाम उसमें यह होगा अस्सलामु अ़लैकुम! और उनकी आख़िरी बात यह होगी 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन'। (सूरः यूनुस-10)

अल्लाह तआ़ला ने उनके लिये अ़ज़ीम अज्र यानी जन्नत मय उसकी तमाम नेमतों के तैयार कर रखी है, जिसमें से हर नेमत खाना पीना पहनना ओढ़ना औ़रतें लज़्ज़तें मन्ज़र वग़ैरह ऐसे हैं कि किसी के ख़्वाब व ख़्याल में भी नहीं आ सकते, कहाँ यह कि देखने में या सुनने में आयें।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ۝ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝

ऐ नबी! हमने बेशक आपको इस शान का रसूल बनाकर भेजा है कि आप गवाह होंगे और आप (मोमिनों को) ख़ुशख़बरी देने वाले हैं, और (काफ़िरों को) डराने वाले हैं। (45) और (सब को) अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाने वाले हैं और आप एक रोशन चिराग़ हैं। (46) और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए कि उन पर अल्लाह की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल होने वाला है। (47) और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहना न मानिए, और उनकी तरफ़ से जो तकलीफ़ पहुँचे उसका ख़्याल न कीजिए, और अल्लाह पर भरोसा कीजिए और अल्लाह तआ़ला काफ़ी कारसाज़ है। (48)

चमकदार और रोशन सूरज

हज़रत अ़ता बिन यसार रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ि. से कहा कि हुज़ूर सल्ल. की सिफ़ात तौरात में क्या हैं? फ़रमाया जो सिफ़ात आपकी क़ुरआन में हैं उन्हीं में के कुछ सिफ़तें आपकी तौरात में भी हैं। तौरात में है ऐ नबी! हमने तुझे गवाह, ख़ुशी सुनाने वाला, डराने वाला और उम्मियों का बचाव करने वाला बनाकर भेजा है, तू मेरा बन्दा और रसूल है। मैंने तेरा नाम मुतवक्किल रखा है, तू बदगो (ज़बान से बुरी बातें निकालने वाला) और गन्दी व अश्लील कलाम करने वाला नहीं है, न बाज़ारों में शोर मचाने वाला, वह बुराई के बदले बुराई नहीं करता बल्कि दरगुज़र करता

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

और माफ़ फ़रमाता है। उसे अल्लाह तआ़ला मौत नहीं देगा जब तक कि लोगों के टेढ़ा कर दिये हुए दीन को उसकी ज़ात से बिल्कुल सीधा न कर दे और वे "ला इला-ह इल्लल्लाहु" के क़ायल न हो जायें, जिससे अंधी आँखें रोशन हो जायें और बेहरे कान सुनने वाले बन जायें और पर्दों वाले दिलों के ज़ंग छूट जायें। (बुख़ारी शरीफ़)

इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत वहब बिन मुनब्बेह रह. फ़रमाते हैं- बनी इस्राईल के एक नबी हज़रत शअ़्या अ़लैहिस्सलाम पर ख़ुदा तआ़ला ने 'वही' नाज़िल फ़रमाई कि अपनी क़ौम बनी इस्राईल में खड़े हो जाओ, मैं तुम्हारी ज़बान से अपनी बातें कहलवाऊँगा, मैं उम्मियों में से एक नबी-ए-उम्मी को भेजने वाला हूँ जो न बुरे अख़्लाक़ वाला है न बद-गो (बुरी बातें ज़बान से निकालने वाला), न बाज़ारों में शोर व ग़ुल करने वाला, इस क़द्र सकीनत वाला है कि अगरचे चिराग़ के पास से भी गुज़र जाये तो वह न बुझे, और अगर बाँसों पर भी चले तो पैर की चाप न मालूम हो। मैं उसे ख़ुशख़बरियाँ सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजूँगा जो हक़-गो (सही और हक़ कहने वाला) होगा। मैं उसकी वजह से अंधी आँखों को खोल दूँगा, बहरे कानों को सुनने वाला कर दूँगा और ज़ंग से भरे दिलों को साफ़ कर दूँगा, हर भलाई की तरफ़ उसकी रहबरी करूँगा, हर नेक ख़स्लत उसमें मौजूद रखूँगा। दिल-जमई (दिल का सुकून और इत्मीनान) उसका लिबास होगी, नेकी उसका चलन होगी। तक़्वा उसका दिल होगा, हिक्मत उसकी गोयाई (बोलना) होगी, सच्चाई व वफ़ा उसकी आ़दत होगी, माफ़ी व दरगुज़र उसका ताल्लुक़ होगा, हक़ उसकी शरीअ़त होगी, अ़दल उसकी सीरत होगी, हिदायत उसका इमाम होगी, इस्लाम उसका दीन होगा, अहमद उसका नाम होगा, गुमराहों को मैं उसकी वजह से हिदायत दूँगा, जाहिलों को उसकी बदौलत उलेमा बना दूँगा, गिरावट वालों को तरक़्क़ी पर पहुँचा दूँगा, ग़ैर-मारूफ़ (जिन्हें कोई नहीं जानता उन) लोगों को मैं मशहूर कर दूँगा, क़िल्लत (कमी) को उसकी वजह से कसरत (ज़्यादती) से, फ़क़ीरी को अमीरी से, आपसी बिखराव को उलफ़त से, इख़्तिलाफ़ को इत्तिफ़ाक़ से बदल दूँगा। एक दूसरे के ख़िलाफ़ और भिन्न दिलों को मुत्तफ़िक़ और मुत्तहिद (एक और मुहब्बत वाला) कर दूँगा। लोगों की विभिन्न ख़्वाहिशों को एक और इकट्ठा कर दूँगा, दुनिया को उसकी वजह से हलाकत से बचा लूँगा, तमाम उम्मतों से उसकी उम्मत को आला व अफ़ज़ल बना दूँगा। वे लोगों को फ़ायदा पहुँचाने के लिये दुनिया में पैदा किये जायेंगे, हर एक को नेकी का हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे। वे तौहीद वाले होंगे, मोमिन होंगे, इख़्लास वाले होंगे, रसूलों पर जो कुछ नाज़िल हुआ है सब को सच मानने वाले होंगे, वह अपनी मस्जिदों मज्लिसों और बिस्तरों पर चलते-फिरते उठते-बैठते मेरी तस्बीह व तारीफ़ बुज़ुर्गी और बड़ाई बयान करते रहेंगे और बैठे नमाज़ें अदा करते रहेंगे।

अल्लाह के दुश्मनों से सफ़ें बाँधकर हमले करके जिहाद करेंगे। उनमें से हज़ारों लोग मेरी रज़ामन्दी की जुस्तजू में अपना घर-बार छोड़कर निकल खड़े होंगे, मुँह हाथ वुज़ू में धोया करेंगे, तहबन्द आधी पिंडली तक बाँधेंगे, मेरी राह में क़ुरबानियाँ देंगे, मेरी किताब उनके सीनों में होगी, रातों को आ़बिद और दिन के वक़्तों में मुजाहिद होंगे, मैं उस नबी के अहले बैत और औलाद में सब्क़त करने वाले सिद्दीक़, शहीद और सालेह (नेक) लोग पैदा करूँगा, उसकी उम्मत उसके बाद दुनिया को हक़ की हिदायत करेगी और हक़ के साथ अ़दल व इन्साफ़ करेगी।

उनकी इमदाद करने वालों को मैं इज़्ज़त वाला करूँगा, और उनको मिलाने वालों की मैं मदद करूँगा, उनके मुख़ालिफ़ों और उनके बाग़ी बुरा चाहने वालों पर मैं बुरे दिन लाऊँगा, मैं उन्हें उनके नबी का वारिस कर दूँगा, जो अपने रब की तरफ़ लोगों को दावत देंगे, नेकियों की बातें बतलायेंगे बुराईयों से रोकेंगे, नमाज़

अदा करेंगे, ज़कात देंगे, वायदे पूरे करेंगे, इस ख़ैर को मैं उसके हाथों पूरी करूँगा जो उनसे शुरू हुई थी, यह है मेरा अफ़ज़ल जिसे चाहूँ दूँ और मैं बहुत बड़े फ़ज़्ल व करम वाला हूँ।

इब्ने अबी हातिम में है कि आप हज़रत अली और हज़रत मुआज़ रज़ि. को यमन का हाकिम बनाकर भेज रहे हैं कि यह आयत उतरी। तो आपने उनसे फ़रमाया जाओ ख़ुशख़बरियाँ सुनाना, नफ़रत न दिलाना, आसानी करना सख़्ती न करना, देख मुझ पर यह आयत उतरी है.....।

तबरानी में यह भी है कि आपने फ़रमाया- मुझ पर यह उतरा है कि ऐ नबी! हमने तुझे तेरी उम्मत पर गवाह बनाकर जन्नत की ख़ुशख़बरी देने वाला बनाकर और जहन्नम से डराने वाला बनाकर और अल्लाह के हुक्म से उसकी तौहीद की शहादत की तरफ़ लोगों को बुलाने वाला बनाकर और रोशन चिराग़ क़ुरआन के साथ बनाकर भेजा है। पस आप अल्लाह तआ़ला की वह्दानियत (एक होने) पर कि उसके साथ और कोई माबूद नहीं, गवाह हैं। और क़ियामत के दिन आप लोगों के आमाल पर गवाह होंगे, जैसे कि इरशाद है:

وَجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا.

यानी हम तुझे उन पर गवाह बनाकर लायेंगे।

एक और आयत में है कि तुम लोगों पर गवाह हो और तुम पर ये रसूल गवाह हैं, आप मोमिनों को बेहतरीन अज्र की ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और काफ़िरों को बदतरीन अ़ज़ाब का डर सुनाने वाले हैं, और चूँकि ख़ुदा का हुक्म है उसके पालन के लिये आप मख़्लूक़ को ख़ालिक़ की इबादत की तरफ़ बुलाने वाले हैं, आपकी सच्चाई इस तरह ज़ाहिर है जैसे सूरज की रोशनी। हाँ कोई मुख़ालिफ़ और दुश्मन न माने तो और बात है। ऐ नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानो, न उनकी तरफ़ कान लगाओ, न उनसे दरगुज़र (माफ़ी का मामला) करो। ये जो ईज़ा (तकलीफ़) पहुँचाते हैं, उन्हें ख़्याल में भी न लाओ और ख़ुदा पर पूरा भरोसा करो, वह काफ़ी है।

ऐ ईमान वालो! तुम जब मुसलमान औरतों से निकाह करो (और) फिर तुम उनको हाथ लगाने से पहले (किसी इत्तिफ़ाक़ से) तलाक़ दे दो, तो तुम्हारी उन पर कोई इद्दत (वाजिब) नहीं, जिसको तुम गिनने लगो, तो उनको कुछ (माल) सामान दे दो, और ख़ूबी के साथ उनको रुख़्सत करो। (49)	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝

निकाह व तलाक़ के कुछ मसाईल

इस आयत में बहुत से अहकाम हैं, इससे मालूम होता है कि सिर्फ़ 'अ़क़्द' पर निकाह का हुक्म होता है। इसके सुबूत में इससे ज़्यादा स्पष्ट आयत और नहीं। इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि लफ़्ज़ 'निकाह' हक़ीक़त में सिर्फ़ 'ईजाब व कबूल' के लिये है या सिर्फ़ 'जिमा' (सोहबत व हमबिस्तरी) के लिये है, या इन दोनों के मजमूए के लिये? क़ुरआने करीम में निकाह का हुक्म अ़क़्द व हमबिस्तरी दोनों पर ही हुआ है,

लेकिन इस आयत में सिर्फ़ अ़क्द पर ही हुक्म है।

इस आयत से यह भी साबित होता है कि हमबिस्तरी से पहले भी शौहर अपनी बीवी को तलाक़ दे सकता है। मोमिन औरतों का ज़िक्र यहाँ पर ग़लबे की वजह से है (यानी इस्लामी अहकाम पर ज़्यादा अ़मल करने वाली वही हैं) वरना किताबिया औरत का भी यही हुक्म है। पहले उलेमा और बुज़ुर्गों की एक बड़ी जमाअ़त ने इसी आयत से इस्तिदलाल करके (यानी दलील पकड़कर) कहा है कि तलाक़ उसी वक़्त वाक़े होती है जब उससे पहले निकाह हो गया हो। इस आयत में निकाह के बाद तलाक़ को फ़रमाया है। पस मालूम हुआ कि निकाह से पहले न तलाक़ देना सही है न वह वाक़े होती है। इमाम शाफ़ई रह. और इमाम अहमद रह. और पहले व बाद के उलेमा की बहुत बड़ी जमाअ़त का भी यही मज़हब है। इमाम मालिक और अबू हनीफ़ा रह. का ख़्याल है कि निकाह से पहले भी तलाक़ दुरुस्त हो जाती है। जैसे किसी ने कहा कि अगर मैं फ़ुलाँ औरत से निकाह करूँ तो उस पर तलाक़ है, तो अब जब भी उससे निकाह करेगा तलाक़ पड़ जायेगी। फिर इमाम मालिक और इमाम अबू हनीफ़ा रह. में उस शख़्स के बारे में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है जो कहे कि जिस औरत से मैं निकाह करूँ उस पर तलाक़ है, तो इमाम अबू हनीफ़ा रह. कहते हैं कि जिससे वह निकाह करेगा उस पर तलाक़ पड़ जायेगी, और इमाम मालिक रह. का क़ौल है कि नहीं पड़ेगी, क्योंकि किसी ख़ास औरत को मुक़र्रर करके उसने यह नहीं कहा। जमहूर जो इसके ख़िलाफ़ हैं उनकी दलील यह आयत है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से पूछा गया कि अगर किसी शख़्स ने निकाह से पहले यह कहा हो कि मैं जिस औरत से निकाह करूँ उस पर तलाक़ है, तो क्या हुक्म है? आपने यह आयत तिलावत की और फ़रमाया इस सूरत में तलाक़ नहीं होगी। क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने तलाक़ को निकाह के बाद फ़रमाया है, पस निकाह से पहले तलाक़ कोई चीज़ नहीं।

नोटः हालाँकि इस सूरत में कि मैं जब किसी औरत से शादी करूँ तो उस औरत को तलाक़, यहाँ पर भी तलाक़ तो उसी वक़्त वाक़े होगी जब वह निकाह कर लेगा, तो इस तरह तलाक़ निकाह के बाद ही हुई।

हिन्दी अनुवादक

मुस्नद अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- इनसान जिसका मालिक न हो उसमें तलाक़ नहीं। एक और हदीस में है जो तलाक़ निकाह से पहले की हो वह किसी शुमार में नहीं। (इब्ने माजा)

पस अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जब तुम औरतों को निकाह के बाद हाथ लगाने से पहले ही तलाक़ दे दो तो उन पर कोई इद्दत नहीं, बल्कि वे जिससे चाहें उसी वक़्त निकाह कर सकती हैं। हाँ अगर ऐसी हालत में उसका शौहर फ़ौत हो गया हो तो यह हुक्म नहीं। उसे चार माह दस दिन की इद्दत गुज़ारनी पड़ेगी। उलेमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ (सब की सहमति) है, पस निकाह के बाद ही मियाँ ने बीवी को छूने से पहले ही अगर तलाक़ दे दी है तो अगर मेहर मुक़र्रर हो चुका है तो उसका आधा देना पड़ेगा वरना थोड़ा बहुत दे देना काफ़ी है। एक और आयत में हैः

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَافَرَضْتُمْ.

यानी अगर मेहर मुक़र्रर हो चुका है और हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दी तो वह आधे मेहर की हक़दार है। एक दूसरी आयत में इरशाद हैः

Maktab E Ashraf

لَاجُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَالَمْ تَمَسُّوْهُنَّ........الخ

यानी अगर तुम अपनी बीवियों को हाथ लगाने से पहले ही तलाक़ दे दो तो यह कुछ गुनाह की बात नहीं अगर उनका मेहर मुक़र्रर न हुआ हो तो तुम उन्हें कुछ न कुछ दे दो, अपनी-अपनी ताक़त के मुताबिक़ अमीर व ग़रीब दस्तूर के मुताबिक़ उनसे सुलूक करे। भले लोगों पर यह ज़रूरी है। चुनाँचे ऐसा एक वाक़िआ ख़ुद हुज़ूर सल्ल. के साथ भी गुज़रा कि आपने उमैमा बिन्ते शुरहबील से निकाह किया, यह रुख़्सत होकर आ गईं। आप गये हाथ बढ़ाया तो गोया उसने इसे पसन्द न किया, आपने हज़रत उसैद को हुक्म दिया कि इनका सामान तैयार कर दें और दो कपड़े अज़्रक़िया के उन्हें दे दें। पस 'सराहे जमील' यानी अच्छाई से रुख़्सत कर देना यही है कि इस सूरत में अगर मेहर मुक़र्रर है तो आधा दे दे और अगर मुक़र्रर नहीं है तो अपनी ताक़त के मुताबिक़ उसके साथ सुलूक (यानी देना-दिलाना) करे।

يٰٓـاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْٓ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۡ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۚ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ○

ऐ नबी! हमने आपके लिए आपकी ये बीवियाँ जिनको आप उनके मेहर दे चुके हैं, हलाल की हैं, और वे औरतें भी जो तुम्हारी मिल्क में हैं, जो अल्लाह तआ़ला ने ग़नीमत में आपको दिलवा दी हैं, और आपके चचा की बेटियाँ और आपकी फूफियों की बेटियाँ और आपके मामूँ की बेटियाँ और आपकी ख़ालाओं की बेटियाँ भी जिन्होंने आपके साथ हिजरत की हो, और उस मुसलमान औरत को भी जो बिना बदले के अपने को पैग़म्बर को दे दे, बशर्ते कि पैग़म्बर उसको निकाह में लाना चाहें। ये सब आपके लिए मख़्सूस किए गए हैं न कि और मोमिनों के लिए। हमको वे अहकाम मालूम हैं जो हमने उन पर उनकी बीवियों और बाँदियों के बारे में मुक़र्रर किए हैं। ताकि आपपर किसी क़िस्म की तंगी न हो। और अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (50)

निकाह वग़ैरह के कुछ और अहकाम

अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. से फ़रमा रहा है कि आपने जिन बीवियों को मेहर दिये हैं वे सब आप पर हलाल हैं। आपकी तमाम अज़्वाजे-मुतह्हरात (पाक बीवियों) का मेहर साढ़े बारह औक़िया था, जिसके पाँच सौ दिर्हम होते हैं, हाँ उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा बिन्ते सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अ़न्हा का मेहर हज़रत नजाशी रह. ने अपने पास से चार सौ दीनार दिया था और इसी तरह उम्मुल-मोमिनीन हज़रत

सफ़िया बिन्ते हुय्यि रज़ियल्लाहु अ़न्हा का मेहर सिर्फ़ उनकी आज़ादी थी। ख़ैबर के क़ैदियों में आप भी थीं, फिर आपने उन्हें आज़ाद कर दिया और उसी आज़ादी को मेहर क़रार दिया और निकाह कर लिया। हज़रत जुवैरिया बिन्ते हारिस ने जितनी रक़म पर मुकातबा किया था, वह पूरी रक़म आपने हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शिमास को अदा करके उनसे अ़क़्द बाँधा (यानी निकाह किया) था। अल्लाह तआ़ला आपकी तमाम पाक बीवियों पर अपनी रज़ामन्दी नाज़िल फ़रमाये।

इसी तरह जो बाँदियाँ ग़नीमत (दीनी लड़ाईयों में हाथ आये माल) में आपके क़ब्ज़े में आईं, वे भी आप पर हलाल हैं। हज़रत सफ़िया और हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के मालिक आप हो गये थे, फिर आपने उन्हें आज़ाद करके उनसे निकाह कर लिया। रेहाना बिन्ते शमऊन नसरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा और हज़रत मारिया क़िब्तिया भी आपकी मिल्कियत में आई थीं। हज़रत मारिया से आपका फ़रज़न्द (बेटा) भी हुआ, जिनका नाम हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अ़न्हु था। चूँकि निकाह के बारे में ईसाईयों और यहूदियों ने अनियमितता से काम लिया था। इस अ़दल व इन्साफ़ वाली आसान और साफ़ शरीअ़त ने हक़ की दरमियाना राह को ज़ाहिर कर दिया। ईसाई तो सात पुश्तों तक जिस औ़रत मर्द का नसब न मिलता हो उनका निकाह जायज़ मानते थे, और यहूदी बहन और भाई की लड़की से भी निकाह कर लेते थे। पस इस्लाम ने भानजी और भतीजी से निकाह करने से रोका, और चचा की लड़की फूफी की लड़की मामूँ की लड़की ख़ाला की लड़की से निकाह को मुबाह (जायज़ और दुरुस्त) क़रार दिया।

इस आयत के अलफ़ाज़ की ख़ूबी पर नज़र डालिये कि चचा, मामूँ के लफ़्ज़ को तो वाहिद (एक वचन) लाये और अ़म्मात और ख़ालात यानी फूफी और ख़ाला के लफ़्ज़ को जमा (बहुवचन) लाये। जिसमें मर्दों की एक क़िस्म की फ़ज़ीलत औ़रतों पर साबित हो रही है। जैसे क़ुरआन की एक आयत में है:

يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ.

यहाँ भी चूँकि ज़ुलुमात (अंधेरियाँ) और नूर यानी अंधेरे और उजाले का ज़िक्र था और उजाले को अंधेरे पर फ़ज़ीलत है, इसलिये लफ़्ज़ ज़ुलुमात जमा (बहुवचन) लाये और लफ़्ज़ नूर मुफ़्रद (एक वचन) लाये। इसकी और भी बहुत सी तौजीहात (मतलब) बयान की जा सकती हैं। फिर फ़रमाया कि जिन्होंने तेरे साथ हिजरत की है।

हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मेरे पास हुज़ूर सल्ल. का रिश्ता (मंगनी) आया तो मैंने अपनी माज़ूरी ज़ाहिर की, जिसे आपने तस्लीम कर लिया और यह आयत उतरी। मैं हिजरत करने वालियों में न थी बल्कि फ़त्हे-मक्का के बाद ईमान लाने वालियों में थी। मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) ने भी यही कहा है कि मुराद यह है कि जिन्होंने मदीने की तरफ़ आपके साथ हिजरत की हो। क़तादा रह. से एक रिवायत में इससे मुराद इस्लाम लाना भी मन्क़ूल है। इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में 'वल्लाती हाजर्-न म-अ़-क' है। फिर फ़रमाया और वह मोमिन औ़रत जो अपना नफ़्स अपने नबी के लिये हिबा कर दे और नबी भी उससे निकाह करना चाहें तो बिना मेहर दिये उसे निकाह में ला सकते हैं। पस यह हुक्म दो शर्तों के साथ है, जैसे इस आयत में हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम से फ़रमाते हैं:

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ.

कि अगर मैं तुम्हें नसीहत करना चाहूँ और अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हें उस नसीहत से लाभान्वित न करना चाहे तो मेरी नसीहत तुम्हें कोई नफ़ा नहीं दे सकती। और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के इस फ़रमान

Maktab E Ashraf

में बयान किया गया हैः

يَاقَوْمِ إِنْ كُنتُمْ آمَنتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوٓا إِنْ كُنتُمْ مُّسْلِمِينَ.

यानी ऐ मेरी मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाये हो और अगर मुसलमान हो गये हो तो तुम्हें अल्लाह तआ़ला ही पर भरोसा करना चाहिये।

बस जैसे इन दोनों आयतों में दो-दो शर्तें हैं इसी तरह इस आयत में भी दो शर्तें हैं। एक तो उसका अपना नफ़्स हिबा करना, दूसरे आपका भी उसे अपने निकाह में लाने का इरादा करना। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. के पास एक औ़रत आई और कहा मैं अपना नफ़्स आपके लिये हिबा करती हूँ फिर वह देर तक खड़ी रही तो एक सहाबी ने खड़े होकर कहा या रसूलल्लाह! अगर आप इनसे निकाह का इरादा न रखते हों तो मेरे निकाह में दे दीजिये। आपने फ़रमाया तुम्हारे पास कुछ है भी, जो इन्हें मेहर में दें? जवाब दिया कि इस तहबन्द के अ़लावा और कुछ नहीं। आपने फ़रमाया- यह अगर तुम इन्हें दे दोगे तो ख़ुद बग़ैर तहबन्द के रह जाओगे, कुछ और तलाश करो। उसने कहा मैं और कुछ नहीं पाता, आपने फ़रमाया तलाश तो करो चाहे लोहे की अंगूठी ही मिल जाये। उन्होंने हर चन्द देखभाल की लेकिन कुछ न पाया। आपने फ़रमाया क़ुरआन की कुछ सूरतें भी तुम्हें याद हैं? उसने कहा हाँ फ़ुलाँ-फ़ुलाँ सूरतें याद हैं, आपने फ़रमाया बस तो उन्हीं सूरतों पर मैंने इन्हें तुम्हारे निकाह में दे दिया। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है।

हज़रत अनस रज़ि. जब यह वाक़िआ़ बयान करने लगे तो उनकी बेटी भी सुन रही थीं, कहने लगीं उस औ़रत में बहुत कम हया (शर्म) थी। तो आपने फ़रमाया तुमसे वह बेहतर थीं कि हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत की रग़बत कर रही थीं (यानी आपकी ख़िदमत करने की इच्छुक थीं) और ख़ुद आपके लिये अपना नफ़्स पेश कर रही थीं। (बुख़ारी शरीफ़)

मुस्नद अहमद में है कि एक औ़रत हुज़ूर सल्ल. के पास आईं और अपनी बेटी की बहुत सी तारीफ़ें करके कहने लगीं कि हुज़ूर! मेरी मुराद यह है कि आप उससे निकाह कर लें। आपने क़बूल फ़रमा लिया। वह फिर भी तारीफ़ करती रहीं यहाँ तक कहा कि हुज़ूर! न वह कभी बीमार पड़ी हैं न सर में दर्द हुआ है। यह सुनकर आपने फ़रमाया फिर मुझे उसकी कोई हाजत नहीं। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मन्क़ूल है कि अपने नफ़्स को हिबा करने वाली बीवी साहिबा हज़रत ख़ौला बिन्ते हकीम रज़ियल्लाहु अ़न्हा थीं।

एक और रिवायत में है कि यह क़बीला बनू सुलैम में से थीं। एक रिवायत में है कि यह बड़ी नेक बख़्त औ़रत थीं, मुम्किन है उम्मे सुलैम ही हज़रत ख़ौला हों। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा। और यह भी हो सकता है कि यह दूसरी कोई औ़रत हों।

इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर सल्ल. ने तेरह औ़रतों से निकाह किया जिनमें से छह तो क़ुरैशिया थीं, ख़दीजा, आ़यशा, हफ़्सा, उम्मे हबीबा, सौदा और उम्मे सलमा रज़ि.। और तीन बनू आ़मिर बिन सअ़सा के क़बीले से थीं और दो औ़रतें क़बीला बनू हिलाल बिन आ़मिर में से थीं। हज़रत मैमूना बिन्ते हारिस रज़ि. यही वह हैं जिन्होंने अपना नफ़्स रसूलुल्लाह सल्ल. को हिबा किया था और हज़रत ज़ैनब रज़ि. जिनकी कुन्नियत उम्मुल-मसाकीन थी और एक औ़रत बनू अबी बक्र बिन किलाब से, यह वही है जिसने दुनिया को इख़्तियार किया था और बनू जून में से एक औ़रत जिसने पनाह तलब की थी। और एक औ़रत असदिया जिनका नाम ज़ैनब बिन्ते जहश है रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न। दो कनीज़ें (बाँदियाँ) थीं- सफ़िया बिन्ते हुयि्य बिन अख़्तब रज़ि. और जुवैरिया बिन्ते हारिस बिन अ़मर बिन मुस्तलक़ ख़ुज़ाईया।

Maktab E Ashraf

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि अपने नफ़्स को हिबा करने वाली औ़रत हज़रत मैमूना बिन्ते हारिस थीं। लेकिन इसमें इन्क़िता है (यानी इस रिवायत की सनद मुसलसल नहीं) और यह रिवायत मुर्सल है। यह मशहूर बात है कि हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा जिनकी कुन्नियत उम्मुल-मसाकीन थी, यह ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा थीं। क़बीला-ए-अन्सार में से थीं और हुज़ूर सल्ल. की ज़िन्दगी ही में इन्तिक़ाल कर गईं रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा। वल्लाहु आलम।

मक़सद यह है कि वे औ़रतें जिन्होंने अपने नफ़्स का इख़्तियार आपको दिया था वे बहुत सी हैं, चुनाँचे सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मन्क़ूल है कि मैं उन औ़रतों पर ग़ैरत किया करती थी जो अपना नफ़्स हुज़ूर को हिबा कर देती थीं और मुझे बड़ा ताज्जुब मालूम होता था कि औ़रतें अपना नफ़्स हिबा करती हैं! जब यह आयत उतरीः

تُرْجِیْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِیْٓ اِلَیْکَ مَنْ تَشَآءُ. الخ

कि तू उनमें से जिसे चाहे अपने से दूर रख और जिसे चाहे उसे अपने पास जगह दे, और जिनसे तूने यक्सूई कर ली है (यानी उनको दूर कर रखा है) उन्हें भी अगर तुम ले आओ तो तुम पर कोई हर्ज नहीं।

तो मैंने कहा बस तो अल्लाह तआ़ला ने आप पर ख़ूब वुस्अ़त व कुशादगी कर दी (यानी पूरी छूट और रियायत दे दी)। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि कोई ऐसी औ़रत हुज़ूर सल्ल. के पास न थी जिसने अपना नफ़्स आपको हिबा कर दिया हो। हज़रत यूनुस बिन बुकैर रज़ि. फ़रमाते हैं कि अगरचे आपके लिये यह मुबाह (जायज़) था कि जो औ़रत ख़ुद को आपको सौंप दे आप उसे अपने पास रख लें लेकिन आपने ऐसा नहीं किया क्योंकि यह मामला आपकी मर्ज़ी पर रखा गया था, यह बात और किसी के लिये जायज़ नहीं। हाँ मेहर अदा कर दे तो बेशक जायज़ है। चुनाँचे हज़रत बरवा बिन्ते वाशिक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में जिन्होंने अपना नफ़्स सौंप दिया था, जब उसके शौहर इन्तिक़ाल कर गये तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने यही फ़ैसला किया था कि उनके ख़ानदान की दूसरी औ़रतों के बराबर उन्हें मेहर दिया जाये। जिस तरह मौत मेहर को मुक़र्रर कर देती है उसी तरह सिर्फ़ हमबिस्तरी से भी मेहर वाजिब हो जाता है। हाँ हुज़ूर सल्ल. इस हुक्म से अलग थे, ऐसी औ़रतों को कुछ देना आप पर वाजिब न था चाहे उसे हमबिस्तरी का शर्फ़ भी हासिल हो चुका हो, इसलिये कि आपको बग़ैर मेहर के और बग़ैर वली के और बग़ैर गवाहों के निकाह कर लेने का इख़्तियार था, जैसा कि हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अ़न्हा के क़िस्से में है।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि किसी औ़रत के लिये जायज़ नहीं कि ख़ुद को बग़ैर वली और बग़ैर मेहर के किसी के निकाह में दे दे, हाँ सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्ल. के लिये यह था और मोमिनों पर जो हमने मुक़र्रर कर दिया है उसे हम ख़ूब जानते हैं। यानी वे चार से ज़्यादा बीवियाँ नहीं रख सकते, हाँ उनके अ़लावा बाँदियाँ रख सकते हैं और उनकी कोई तायदाद मुक़र्रर नहीं। इसी तरह वली की, मेहर की, गवाहों की भी शर्त है। पस उम्मत के लिये तो यह हुक्म है और आप पर इसकी पाबन्दी नहीं, ताकि आप पर कोई हर्ज न हो। अल्लाह तआ़ला बड़ा ग़फ़ूर व रहीम (माफ़ करने वाला और रहम करने वाला) है।

उनमें से आप जिसको चाहें (और जब तक चाहें) अपने से दूर रखें, और जिसको चाहें (और जब तक चाहें) अपने नज़दीक रखें, और जिनको दूर कर रखा था उनमें से फिर किसी	تُرْجِیْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِیْٓ اِلَیْکَ مَنْ تَشَآءُ ۭ وَمَنِ ابْتَغَیْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ

Maktab E Ashraf

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ۝

को तलब करें तब भी आप पर कोई गुनाह नहीं। इसमें ज़्यादा उम्मीद है कि उनकी आँखें ठंडी रहेंगी और ग़मगीन न होंगी। और जो कुछ भी आप उनको दे देंगे उस पर सबकी सब राज़ी रहेंगी। और ख़ुदा तआ़ला को तुम लोगों के दिलों की सब बातें मालूम हैं, और अल्लाह तआ़ला (यही क्या) सब कुछ जानने वाला, बुर्दबार है। (51)

एक ख़ास और विशेष हुक्म

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि मैं उन औ़रतों पर आ़र (शर्म महसूस) किया करती थी जो अपना नफ़्स हुज़ूर सल्ल. को हिबा कर दें, और कहती थी कि औ़रतें बग़ैर मेहर के अपने आपको हुज़ूर सल्ल. के हवाले करने से शर्माती नहीं हैं, यहाँ तक कि यह आयत उतरी तो मैंने कहा कि आपका रब आपके लिये कुशादगी (आसानी) करता है। पस मालूम हुआ कि आयत से मुराद यही औ़रतें हैं, इनके बारे में अल्लाह के नबी को इख़्तियार है कि जिसे चाहें क़बूल करें और जिसे चाहें क़बूल न फ़रमायें। फिर इसके बाद यह भी आपके इख़्तियार में है कि जिन्हें क़बूल न फ़रमायें उन्हें जब चाहें नवाज़ दें। आ़मिर शअ़बी रह. से मन्क़ूल है कि जिन्हें बाद में रखा है उनमें हज़रत उम्मे शुरैक रज़ियल्लाहु अ़न्हा थीं। एक मतलब इस जुमले का यह भी बयान किया गया है कि अपनी बीवियों के बारे में जो इख़्तियार था कि अगर चाहें तो तक़सीम करें चाहें न करें, जिसे चाहें मुक़द्दम करें (पहले रखें) जिसे चाहें मोअख़्ख़र करें (यानी बाद में रखें) इसी तरह ख़ास बातचीत में भी। लेकिन याद रहे कि हुज़ूर सल्ल. अपनी पूरी उम्र बराबर अपनी पाक बीवियों के साथ बराबरी की तक़सीम करते रहे। शाफ़ई हज़रात में से बाज़ फ़ुक़हा का क़ौल है कि हुज़ूर सल्ल. पर तक़सीम वाजिब थी। सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद भी अल्लाह के नबी हमसे इजाज़त लिया करते थे, मुझसे तो जब मालूम फ़रमाते मैं कहती अगर मेरे बस में हो तो मैं किसी और के पास हरगिज़ न जाने दूँ। पस सही बात जो बहुत अच्छी है और जिससे इन अक़वाल में मुताबक़त भी हो जाती है वह यह है कि आयत आ़म है अपने नफ़्स के सौंपने वालियों और आपकी बीवियों को सब को शामिल है, हिबा करने वालियों के बारे में निकाह करने न करने का और निकाह वालियों में तक़सीम करने न करने का आपको इख़्तियार था।

फिर फ़रमाता है कि यही हुक्म बिल्कुल मुनासिब है और रसूलुल्लाह की बीवियों के लिये आसान है, जब वे जान लेंगी कि आप बारियों के मुकल्लिफ़ नहीं हैं फिर भी मुसावात (बराबरी) क़ायम रखते हैं तो उन्हें बहुत ख़ुशी होगी और आपकी शुक्रगुज़ार व एहसान-मन्द होंगी और आपके इन्साफ़ की दाद देंगी। अल्लाह दिलों की हालतों से वाक़िफ़ है, वह जानता है कि किस तरफ़ ज़्यादा रग़बत (दिल का रुझान और चाह) है। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. अपने तौर पर सही तक़सीम और पूरे अ़दल (इन्साफ़) के बाद भी अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ किया करते थे कि ऐ अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन! जहाँ तक मेरे बस में था मैंने इन्साफ़ कर दिया, अब जो मेरे बस में नहीं उस पर तू मुझे मलामत न करना, यानी दिल के रुजू करने का

Maktab E Ashraf

इख़्तियार मुझे नहीं। अल्लाह तआ़ला सीनों की बातों का आ़लिम है, लेकिन बुर्दबार व करम करने वाला है, चश्म-पोशी करता है, माफ़ फ़रमाता है।

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَامَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ۝ۧ

इनके अ़लावा और औ़रतें आपके लिए हलाल नहीं हैं, और न यह दुरुस्त है कि आप इन (मौजूदा) बीवियों की जगह दूसरी बीवियाँ कर लें, अगरचे आपको उन (दूसरियों) का हुस्न अच्छा मालूम हो, हाँ मगर जो आपकी मिल्क में हो, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ (की हक़ीक़त और आसार और मस्लेहतों) का पूरा निगराँ (निगरानी करने वाला) है। (52)

इसका भी ध्यान रहे

पहली आयतों में गुज़र चुका है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपनी पाक बीवियों को इख़्तियार दिया कि अगर वे चाहें तो हुज़ूर सल्ल. की बीवी बनी रहें और अगर चाहें तो आपसे अलग हो जायें, लेकिन उम्महातुल-मोमिनीन रज़ि. ने रसूल सल्ल. के दामन को छोड़ना, रसूल को छोड़ना पसन्द न फ़रमाया। इस पर उन्हें ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से दुनियावी बदला एक यह भी मिला कि हुज़ूर सल्ल. को इस आयत में हुक्म हुआ कि अब उनके सिवा आप किसी और औ़रत से निकाह नहीं कर सकते। आप उनमें से किसी को छोड़ कर उसके बदले में दूसरी नहीं ला सकते हैं, अगरचे वह कितनी ही हसीन क्यों न हो। हाँ लौंडियों (बाँदियों) और कनीज़ों की और बात है। इसके बाद रब्बुल-आ़लमीन ने यह तंगी आप पर से उठा ली और निकाह की इजाज़त दे दी, लेकिन ख़ुद हुज़ूर सल्ल. ने फिर और कोई निकाह किया ही नहीं। इस हर्ज के उठाने और फिर अ़मल के न होने में बहुत बड़ी मस्लेहत यह थी कि हुज़ूर सल्ल. का यह एहसान अपनी बीवियों पर रहे, चुनाँचे हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मन्क़ूल है कि आपकी वफ़ात से पहले ही ख़ुदा तआ़ला ने आपके लिये और औ़रतें हलाल कर दी थीं। (तिर्मिज़ी, नसाई वग़ैरह)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से भी यह मन्क़ूल है। हलाल करने वाली आयतः

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ........ الخ

से यानी जो इस आयत से पहले गुज़र चुकी है, बयान में वह पहले है और उतरने में वह पीछे है। सूरः ब-क़रह में भी इसी तरह इद्दत व वफ़ात की पिछली आयत मन्सूख़ है और पहली आयत उसकी नासिख़ (निरस्त करने वाली) है। वल्लाहु आलम।

इस आयत के एक दूसरे मायने भी बहुत से हज़रात से मन्क़ूल हैं। वे कहते हैं कि इससे मतलब यह है कि जिन औ़रतों का ज़िक्र इससे पहले है उनके सिवा और हलाल नहीं। उबई बिन कअ़ब रज़ि. से सवाल हुआ कि क्या हुज़ूर सल्ल. की जो बीवियाँ थीं अगर वे आपकी मौजूदगी में इन्तिक़ाल कर जातीं तो आप और दूसरी औ़रतों से निकाह नहीं कर सकते थे? आपने फ़रमाया यह क्यों? तो पूछने वाले ने 'ला यहिल्लु लकन्निसा-उ...........' वाली आयत पढ़ी। यह सुनकर हज़रत उबई ने फ़रमाया इसका मतलब तो यह है कि औ़रतों की जो क़िस्में इससे पहले बयान हुई हैं यानी मन्कूहा, बाँदियाँ, चचा की फूफियों की मामूँ की

Maktab-E-Ashraf

ख़ालाओं की बेटियाँ, हिबा करने वाली औरतें उनके सिवा जो और क़िस्म की औरतें हों, जिनमें ये सिफ़तें न हों वे आप पर हलाल नहीं हैं। (इब्ने जरीर)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि सिवाय इन मुहाजिर मोमिन औरतों के और औरतों से निकाह करने की आपको मनाही कर दी गई। ग़ैर-मुस्लिम औरतों से निकाह हराम कर दिया गया। क़ुरआन में हैः

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْإِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ.

यानी ईमान के बाद कुफ़्र करने वाले के आमाल ग़ारत (बरबाद) हैं। पस अल्लाह तआ़ला ने आयत 'इन्ना अह्ललना ल-क अज़्वाज-क........' में औरतों की जिन क़िस्मों का ज़िक्र किया वे तो हलाल हैं, उनके अ़लावा और हराम हैं। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि उनके सिवा हर क़िस्म की औरतें चाहे मुसलमान हों चाहे यहूदियां हों, चाहे ईसाईया हों सब हराम हैं। अबू सालेह फ़रमाते हैं कि देहाती और अनजान औरतों के निकाह से रोक दिये गये, लेकिन जो औरतें हलाल थीं उनमें से अगर चाहें सैंकड़ों कर लें, हलाल हैं। ग़र्ज़ यह कि आयत आ़म है उन औरतों को जो आपके घर में थीं और उन औरतों को जिनकी क़िस्में बयान हुई सब को शामिल है। और जिन लोगों से इसके ख़िलाफ़ मन्क़ूल (नक़ल किया गया) है उनसे इसके मुताबिक़ भी नक़्ल है, लिहाज़ा कोई मुनाफ़ात (विरोधाभास) नहीं। हाँ इस पर एक बात बाक़ी रह जाती है कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को तलाक़ दे दी थी फिर उनसे रुजू कर लिया था और हज़रत सौदा रज़ि. को भी अलग करने का इरादा किया था जिस पर उन्होंने अपनी बारी का दिन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को दे दिया था। इसका जवाब इमाम इब्ने जरीर रह. ने यह दिया है कि यह वाक़िआ़ इस आयत के नाज़िल होने से पहले का है। बात यही है, लेकिन हम कहते हैं कि इस जवाब की भी ज़रूरत नहीं। इसलिये कि इस आयत में उनके सिवा दूसरी औरतों के निकाह करने और इन्हें निकाल कर औरों को लाने की मनाही है, न कि तलाक़ देने की। वल्लाहु आलम। हज़रत सौदा रज़ि. वाले वाक़िए में आयतः

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ......... الخ

(सूरः निसा आयत 128)

उतरी है, और हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा वाला वाक़िआ़ अबू दाऊद वग़ैरह में मौजूद है। अबू यअ़ला में है कि हज़रत उमर रज़ि. अपनी बेटी हज़रत हफ़्सा रज़ि. के पास एक दिन आये, देखा कि वह रो रही हैं। पूछा कि शायद तुम्हें हुज़ूर ने तलाक़ दे दी? सुनो अगर रुजू हो गया और फिर यही मौक़ा पेश आया तो क़सम ख़ुदा की मरते दम तक तुमसे कलाम न करूँगा। आयत में अल्लाह तआ़ला ने आपको औरतों में इज़ाफ़ा करने का और किसी को निकाल कर उसके बदले दूसरी को लाने से मना किया है, मगर लौंडियाँ (बाँदियाँ) हलाल रखी गई हैं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) में एक ग़लत रिवाज यह था कि लोग आपस में बीवियों का तबादला कर लिया करते थे। यह अपनी उसे दे देता था और वह अपनी इसे दे देता था। इस्लाम ने इस गन्दे तरीक़े से मुसलमानों को रोक दिया। एक मर्तबा का वाक़िआ़ है कि उयैना बिन हिसन फ़ज़ारी हुज़ूर सल्ल. के पास आये और अपनी जाहिलीयत की आ़दत के मुताबिक़ बग़ैर इजाज़त के चले आये। उस वक़्त आपके पास हज़रत आ़यशा रज़ि. बैठी हुई थीं, आपने फ़रमाया तुम बिना इजाज़त क्यों चले आये? उसने कहा वाह! मैंने तो आज तक क़बीला-ए-मुज़र के

Maktab E Ashraf

ख़ानदान के किसी शख़्स से इजाज़त माँगी ही नहीं। फिर कहने लगा यह आपके पास कौनसी औरत बैठी हुई थीं? आपने फ़रमाया यह उम्मुल-मोमिनीन आयशा थीं। तो कहने लगा हुज़ूर! इन्हें छोड़ दें मैं इनके बदले में अपनी बीवी आपको देता हूँ जो ख़ूबसूरती में बेमिस्ल है। आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने ऐसा हराम कर दिया है। जब वह चले गये तो हज़रत आयशा रज़ि. ने दरियाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह! यह कौन था? आपने फ़रमाया एक अहमक़ सरदार था। तुमने उसकी बातें सुनीं? इस पर भी यह अपनी क़ौम का सरदार है। इस रिवायत का एक रावी इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बहुत ही नाक़ाबिले एतिबार है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ
النَّبِيِّ اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ
نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا
فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ
لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ
فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۫ وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ
الْحَقِّ ؕ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا
فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ
اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ؕ وَمَا كَانَ لَكُمْ
اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَآ اَنْ تَنْكِحُوْٓا
اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖٓ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ
عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ۝ اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ
تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝

ऐ ईमान वालो! नबी के घरों में (बिना बुलाए) मत जाया करो, मगर जिस वक़्त तुमको खाने के लिए इजाज़त दी जाए, ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के मुन्तज़िर न रहो। लेकिन जब तुमको बुलाया जाए (कि खाना तैयार है) तब जाया करो। फिर जब खाना खा चुको तो उठकर चले जाया करो और बातों में जी लगाकर मत बैठे रहा करो, इस बात से नबी को नागवारी होती है, सो वह तुम्हारा लिहाज़ करते हैं, और अल्लाह तआ़ला साफ़-साफ़ बात कहने से (किसी का) लिहाज़ नहीं करता। और जब तुम उनसे कोई चीज़ माँगो तो पर्दे के बाहर से माँगा करो। यह बात (हमेशा के लिए) तुम्हारे दिलों और उनके दिलों के पाक रहने का उम्दा ज़रिया है। और तुमको जायज़ नहीं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को तकलीफ़ पहुँचाओ, और न यह जायज़ है कि तुम आपके बाद आपकी बीवियों से कभी भी निकाह करो, यह ख़ुदा के नज़दीक बड़ी भारी (गुनाह और नाफ़रमानी की) बात है। (53) अगर तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करोगे या उसको छुपाओगे तो अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को अच्छी तरह जानते हैं। (54)

पर्दे का हुक्म

इस आयत में पर्दे का हुक्म है और शरई आदाब व अहकाम का बयान है। हज़रत उमर रज़ि. के क़ौल के मुताबिक़ जो आयतें उतरी हैं उनमें एक यह भी है। बुख़ारी व मुस्लिम में आप से एक रिवायत है कि तीन बातें मैंने कहीं जिनके मुताबिक़ ही रब्बुल-आ़लमीन के अहकाम नाज़िल हुए। मैंने कहा या रसूलल्लाह!

Maktab E Ashraf

अगर आप मक़ामे इब्राहीम को किब्ला बनायें तो बेहतर हो, ख़ुदा तआ़ला का भी यही हुक्म उतराः

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرَاهِيْمَ مُصَلًّى.

(सूरः ब-क़रह आयत 125)

मैंने कहा या रसूलल्लाह! मुझे अच्छा नहीं मालूम होता है कि घर में हर कोई यूँ ही आ जाये। आप अपनी बीवियों को पर्दे का हुक्म दें तो अच्छा है। पस अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से पर्दे का हुक्म नाज़िल हुआ। जब हुज़ूर सल्ल. की अज़्वाजे-मुतह्हरात (पाक बीवियाँ) ग़ैरत की वजह से कुछ कहने सुनने लगीं तो मैंने कहा किसी गुरूर में न रहना, अगर हुज़ूर सल्ल. तुम्हें छोड़ दें तो अल्लाह तआ़ला तुम से बेहतर बीवियाँ आपको दिलवा देगा। चुनाँचे यही आयत क़ुरआन में नाज़िल हुई।

सही मुस्लिम में एक चौथी मुवाफ़क़त भी मज़कूर है। वह बदर के क़ैदियों का फ़ैसला है। एक और रिवायत में है। सन् 5 हिजरी माह ज़ीक़ादा में जबकि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ि. से निकाह किया, वह निकाह ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने कराया था तो उसी सुबह को पर्दे की आयत नाज़िल हुई है। बाज़ हज़रात कहते हैं कि यह वाक़िआ़ सन् 3 हिजरी का है। वल्लाहु आलम।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. ने जब हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अ़न्हा से निकाह किया तो लोगों की दावत की, वे खा-पीकर बातों में बैठे रहे। आपने उठने की तैयारी भी की फिर भी वे न उठे। यह देखकर आप खड़े हो गये। आपके साथ ही कुछ लोग तो उठकर चल दिये लेकिन फिर भी तीन शख़्स वहीं बैठे रह गये और बातें करते रहे। हुज़ूर सल्ल. वापस तशरीफ़ लाये तो देखा कि वे अभी तक बातों में लगे हुए हैं। आप फिर लौट गये। जब ये लोग चले गये तो हज़रत अनस रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. को ख़बर दी। अब आप घर में तशरीफ़ ले गये। हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने भी चाहा तो आपने अपने और मेरे बीच पर्दा कर दिया और यह आयत उतरी। एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने उस मौक़े पर गोश्त रोटी खिलाई थी और हज़रत अनस रज़ि. को भेजा था कि लोगों को बुला लायें। लोग आते थे, खाते थे और वापस जाते थे। जब एक भी ऐसा न बचा कि जिसे हज़रत अनस रज़ि. बुलाते तो आप को ख़बर दी। आपने फ़रमाया अब दस्तरख़्वान बढ़ा दो (यानी उठा दो) सब लोग चले गये मगर तीन शख़्स बातों में लगे रहे। हुज़ूर सल्ल. यहाँ से निकल कर हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास गये और फ़रमाया अस्सलामु अ़लैकुम अहलल-बैति व रह्मतुल्लाहि व बरकातुहू। हज़रत आ़यशा रज़ि. ने जवाब दिया 'व अ़लैकुमुस्सलाम व रह्मतुल्लाहि' फ़रमाईये हुज़ूर बीवी साहिबा से ख़ुश तो हैं? आपने फ़रमाया ख़ुदा तुम्हें बरकत दे। इसी तरह आप अपनी तमाम अज़्वाजे-मुतह्हरात के पास गये और सब जगह यही बातें हुईं। अब लौटकर जो आये तो देखा कि वे तीनों साहिब अब तक नहीं गये। चूँकि आप में शर्म व हया, लिहाज़ व मुरव्वत बेहद था इसलिये आप कुछ फ़रमा न सके और फिर से हज़रत आ़यशा रज़ि. के हुजरे की तरफ़ चले। अब न जाने मैंने ख़बर दी या आपको कहीं और से इत्तिला मिली कि वे तीनों भी चले गये तो आप फिर आये और चौखट पर क़दम रखते ही आपने पर्दा डाल दिया और पर्दे की आयत नाज़िल हुई।

एक रिवायत में बजाय तीन शख़्सों के दो का ज़िक्र है। इब्ने अबी हातिम में है कि आपके कई नये निकाहों पर उम्मे सुलैम रज़ि. ने मालीदा बनाकर एक लगन में रखकर हज़रत अनस रज़ि. से कहा इसे ख़ुदा के रसूल को पहुँचाओ और कह देना यह थोड़ा सा तोहफ़ा हमारी तरफ़ से क़बूल फ़रमाईये और मेरा सलाम भी कह देना। उस वक़्त लोग थे तंगी में। मैंने जाकर हुज़ूर सल्ल. को सलाम किया और उनका सलाम

पहुँचाया और पैग़ाम भी, आपने उसे देखा और फ़रमाया अच्छा इसे रख दो। मैंने घर के एक कोने में रख दिया फिर फ़रमाया जाओ फ़ुलाँ और फ़ुलाँ को बुला लाओ। बहुत से लोगों के नाम लिये और फ़रमाया इनके अ़लावा जो मुसलमान मिल जाये, मैंने यही किया। जो मिला उसे हुज़ूर सल्ल. के यहाँ खाने के लिये भेजता रहा, वापस लौटा तो देखा कि घर, अंगनाई और बैठक सब लोगों से भर गये हैं। तक़रीबन तीन सौ आदमी जमा हो गये थे। अब मुझसे आपने फ़रमाया जाओ वह प्याला उठा लाओ, मैं लाया तो आपने अपना हाथ उस पर रखकर दुआ़ की और जो ख़ुदा ने चाहा आपने ज़बान से कहा। फिर फ़रमाया चलो दस-दस आदमी हल्क़ा करके (यानी दायरा बनाकर) बैठ जाओ और बिस्मिल्लाह कहकर अपने-अपने आगे से खाना शुरू करो। इसी तरह खाना शुरू हुआ और सब के सब खा चुके तो आपने फ़रमाया प्याला उठा लो। हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने प्याला उठाकर देखा तो मैं नहीं कह सकता कि जिस वक़्त रखा था उस वक़्त उसमें ज़्यादा था या अब? चन्द लोग आपके घर में ठहर गये, उनमें बातें हो रही थीं और उम्मुल-मोमिनीन दीवार की तरफ़ मुँह फेरे बैठी हुई थीं, उनका इतनी देर तक न हटना हुज़ूर सल्ल. पर शाक़ (भारी) गुज़र रहा था, लेकिन शर्म व हया की वजह से कुछ फ़रमाते न थे। अगर उन्हें इस बात का इल्म हो जाता तो वे निकल जाते लेकिन वे बेफ़िक्री से बैठे ही रहे। आप घर से निकल कर दूसरी अज़्वाजे-मुतह्हरात के हुजरों के पास चले गये। फिर वापस आये तो देखा कि वे बैठे हुए हैं, अब तो ये समझ गये, बड़े नादिम (शर्मिन्दा) हुए और झट से निकल चले। आप अन्दर बढ़े और पर्दा लटका दिया। मैं भी हुजरे ही में था कि यह आयत उतरी और आप इसकी तिलावत करते हुए बाहर आये। सब से पहले इस आयत को औ़रतों ने सुना और मैं तो सब से अव्वल इसका सुनने वाला हूँ।

पहले हज़रत ज़ैनब रज़ि. के पास आपका रिश्ता (मंगनी) ले जाने की रिवायत आयत

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ.......... الخ

(सूरः अहज़ाब आयत 37)

की तफ़सीर में गुज़र चुकी है, उसके आख़िर में बाज़ रिवायात में यह भी है कि फिर लोगों को नसीहत की गई और हाशिम की उस हदीस में इस आयत का बयान भी है। इब्ने जरीर में है कि रातों के वक़्त अज़्वाजे-मुतह्हरात (नबी करीम की पाक बीवियाँ) क़ज़ा-ए-हाजत (शौच की ज़रूरत पूरी करने) के लिये जंगल को जाया करती थीं। हज़रत उमर रज़ि. को यह पसन्द न था। आप फ़रमाया करते थे कि इन्हें इस तरह न जाने दीजिये। हुज़ूर सल्ल. इस पर तवज्जोह न फ़रमाते थे। एक मर्तबा हज़रत सौदा बिन्ते ज़मआ़ रज़ि. निकलीं तो चूँकि फ़ारूक़े आज़म रज़ि. की मंशा यह थी कि किसी तरह अज़्वाजे-मुतह्हरात का यह निकलना बन्द हो इसलिये उन्हें उनके क़द व क़ामत की वजह से पहचान कर बुलन्द आवाज़ से कहा कि हमने तुम्हें ऐ सौदा पहचान लिया। इसके बाद पर्दे की आयतें उतरीं। इस रिवायत में यूँ ही है, लेकिन मशहूर यह है कि यह वाक़िआ़ पर्दे का हुक्म नाज़िल होने के बाद का है। चुनाँचे मुस्नद अहमद में हज़रत आ़यशा रज़ि. की रिवायत है कि हिजाब (पर्दे) के हुक्म के बाद हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा निकलीं........। उसमें यह भी है कि यह उसी वक़्त वापस आ गईं। नबी करीम सल्ल. शाम का खाना खा रहे थे, एक हड्डी हाथ में थी, आकर वाक़िआ़ बयान किया उसी वक़्त 'वही' नाज़िल हुई। जब ख़त्म हुई उस वक़्त भी वह हड्डी हाथ में ही थी, उसे छोड़ी ही न थी, तो आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला तुम्हें तुम्हारी ज़रूरतों की बिना पर बाहर निकलने की इजाज़त देता है। आयत में अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को उस आ़दत से रोकता है जो

Maktab E Ashraf

जाहिलीयत में और इस्लाम के शुरू ज़माने में उनमें थीं, कि बिना इजाज़त दूसरों के घर में चले जाते। पस अल्लाह तआ़ला इस उम्मत का इकराम करते (सम्मान बढ़ाते) हुए इसे यह अदब सिखाता है। चुनाँचे एक हदीस में भी यह मज़मून है कि ख़बरदार औरतों के पास न जाओ। फिर अल्लाह तआ़ला ने इस हुक्म से उन्हें अलग कर दिया जिन्हें इजाज़त दी जाये तो फ़रमाया मगर यह कि तुम्हें इजाज़त दी जाये, खाने की तरफ़, इस तरह कि तुम उसकी तैयारी के मुन्तज़िर न रहो।

मुजाहिद और क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि खाने के पकने और उसके तैयार होने के वक़्त ही न पहुँचो, जब समझा कि खाना तैयार होगा जा घुसे, यह ख़स्लत ख़ुदा को पसन्द नहीं। यह दलील है तुफ़ैली बनने के हराम होने पर। इमाम ख़तीबे बग़दादी रह. ने इसकी मज़म्मत (निंदा) में पूरी एक किताब लिखी है। फिर फ़रमाया- जब बुलाये जाओ तो जाओ और जब खा चुको तो निकल जाओ।

सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि तुम में से किसी को जब उसका भाई बुलाये तो उसे दावत क़बूल करनी चाहिये चाहे निकाह की हो या कोई और। एक और हदीस में है कि अगर मुझे एक खुर की दावत दी जाये तो भी मैं उसे क़बूल करूँगा। दस्तूरे दावत में यह भी बयान फ़रमाया कि जब खा चुको तो फिर मेज़बान के यहाँ बातें करने को न बैठ जाओ बल्कि वहाँ से चले जाओ। बातों में मशग़ूल न हो जाया करो, जैसे उन तीन शख़्सों ने किया था जिससे हुज़ूर सल्ल. को तकलीफ़ हुई। लेकिन मुरव्वत और लिहाज़ से कुछ न बोले। इसी तरह मतलब यही है कि तुम्हारा बिना इजाज़त नबी करीम सल्ल. के घरों में चले जाना आप पर शाक़ (भारी और नागवार) गुज़रता है, लेकिन आप शर्म व हया की वजह से कह नहीं सकते। अल्लाह तआ़ला तुम से साफ़-साफ़ बयान फ़रमा रहा है कि ऐसा न करना। हक़ तआ़ला हुक्म देने से हया नहीं करता। तुम्हें जिस तरह बिना इजाज़त आपकी बीवियों के पास जाना मना है उसी तरह उनकी तरफ़ आँख उठाकर देखना भी हराम है, अगर तुम्हें उनसे कोई ज़रूरी चीज़ लेनी देनी भी हो तो पर्दे के पीछे से लेन-देन हो।

इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर सल्ल. एक मर्तबा मालीदा खा रहे थे, हज़रत उमर रज़ि. को भी बुला लिया। आप भी खाने बैठ गये, हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ि. पहले से खाने में शरीक थीं। हज़रत उमर रज़ि. अज़्वाजे-मुतह्हरात के पर्दे की तमन्ना में थे, खाते हुए उंगलियों से उंगलियाँ लग गईं तो बेसाख़्ता फ़रमाने लगे काश कि मेरी मान ली जाती और पर्दा कराया जाता तो किसी की निगाह भी न पड़ती। उस वक़्त पर्दे का हुक्म उतरा।

फिर अल्लाह तआ़ला पर्दे की तारीफ़ फ़रमा रहा है कि मर्दों औरतों के दिलों में पाकीज़गी का यह ज़रिया है, किसी शख़्स ने आपकी किसी बीवी से आपके बाद निकाह करने का इरादा किया होगा, इस आयत में यह हराम क़रार दिया गया, क्योंकि हुज़ूर सल्ल. की बीवियाँ ज़िन्दगी में और जन्नत में भी आपकी बीवियाँ हैं, और वे तमाम मुसलमानों की माँयें हैं, इसलिये मुसलमानों पर उनका निकाह करना बिल्कुल हराम है। यह हुक्म उन बीवियों के लिये है जो आपके घर में आपके इन्तिक़ाल के वक़्त थीं, सब के नज़दीक सर्वसम्मति से यह तय है, लेकिन जिस बीवी को आपने अपनी ज़िन्दगी में तलाक़ दे दी और उससे मेल जोल हो चुका हो तो उससे कोई निकाह कर सकता है या नहीं इसमें दो मज़हब हैं, और जिससे हमबिस्तरी न हो और तलाक़ दे दी हो उससे दूसरे निकाह कर सकते हैं। क़ीला बिन्ते अश्अ़स बिन क़ैस हुज़ूर सल्ल. की मिल्कियत में आ गई थी, आपके इन्तिक़ाल के बाद उसने हज़रत इक्रिमा बिन अबू जहल से निकाह कर लिया, हज़रत अबू बक्र रज़ि. को यह नागवार गुज़रा लेकिन हज़रत उमर रज़ि. ने समझाया कि ऐ ख़लीफ़ा-

Maktab E Ashraf

ए-रसूल यह हुज़ूर सल्ल. की बीवी न थी, न इसे हुज़ूर सल्ल. ने इख़्तियार दिया, न इसे पर्दे का हुक्म दिया और इसकी क़ौम के साथ इसकी वापसी की वजह से ख़ुदा ने इसे हुज़ूर सल्ल. से बरी कर दिया। यह सुनकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. को इत्मीनान हो गया।

पस इन दोनों बातों की बुराई बयान फ़रमाता है कि रसूलुल्लाह सल्ल. को ईज़ा देना, उनकी बीवियों से उनके बाद निकाह कर लेना ये दोनों गुनाह ख़ुदा के नज़दीक बहुत बड़े हैं। तुम्हारी छुपी हुई और ऐलानिया बातें सब ख़ुदा पर ज़ाहिर हैं, उस पर कोई छोटी से छोटी चीज़ भी पोशीदा नहीं। आँखों की ख़ियानत (यानी इशारे) को, सीने में छुपी हुई बातों और दिल के इरादों को वह जानता है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآئِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآئِهِنَّ وَلَآ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ○	पैग़म्बर की बीवियों पर अपने बापों के बारे में कोई गुनाह नहीं, और न अपने बेटों के, और न अपने भाईयों के, और न अपने भतीजों के, और न अपने भानजों के, और न अपनी औरतों के, और न अपनी बाँदियों के, और ख़ुदा से डरती रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर हाज़िर (यानी देखने वाला) है। (55)

इसमें कोई हर्ज नहीं

चूँकि ऊपर की आयतों में अजनबियों से पर्दे का हुक्म हुआ था इसलिये जिन क़रीबी रिश्तेदारों से पर्दा न था उनका बयान इस आयत में कर दिया। सूरः नूर में भी इसी तरह फ़रमाया कि औरतें अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें मगर अपने ख़ाविन्द, बाप, ससुर, लड़कों, ख़ाविन्द के लड़कों, भाईयों, भतीजों, भानजों औरतों और जिनकी मिल्कियत उनके हाथों में हो, उनके सामने काम करने वाले बिना इच्छा रखने वाले मर्दों या बच्चों के सामने। इसकी पूरी तफ़सीर इसी आयत के तहत गुज़र चुकी है। चचा और मामूँ का ज़िक्र यहाँ इसलिये नहीं किया गया कि मुम्किन है कि वे अपने लड़कों के सामने उसके औसाफ़ (ख़ूबियाँ और ख़ूबसूरती वग़ैरह) बयान करें। हज़रत शअ़बी और हज़रत इक्रिमा तो इन दोनों के सामने औरत का दुपट्टा मक्रूह जानते थे।

'निसाईहिन्-न' से मुराद मोमिन औरतें हैं, मातहत से मुराद लौंडी (बाँदी) गुलाम हैं, जैसे कि पहले इसका बयान गुज़र चुका है। और हदीस भी हम वहीं ज़िक्र कर चुके हैं। सईद बिन मुसैयब रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद सिर्फ़ लौंडियाँ ही हैं। अल्लाह तआ़ला से डरती रहो, अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर शाहिद (नज़र रखने वाला) है, छुपा खुला सब उसे मालूम है। उस मौजूद और हाज़िर का ख़ौफ़ रखो और उसका लिहाज़ करती रहो।

Maktab_E_Ashraf

बेशक अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिश्ते रहमत भेजते हैं इन पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर। ऐ ईमान वालो! तुम भी आप पर रहमत भेजा करो और ख़ूब सलाम भेजा करो। (56)	اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

उन पर लाखों सलाम

सही बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत अबुल-आ़लिया रह. से रिवायत है कि ख़ुदा का अपने नबी पर दुरूद भेजना अपने फ़रिश्तों के सामने आपकी तारीफ़ व सिफ़त बयान करना है, और फ़रिश्तों का दुरूद आपके लिये दुआ़ करना है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं यानी बरकत की दुआ़। अक्सर उलेमा का क़ौल है कि ख़ुदा का दुरूद रहमत है और फ़रिश्तों का दुरूद इस्तिग़फ़ार है। अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तबारक व तआ़ला की सलात "सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन स-बक़त् रह़्मती ग़-ज़बी" है।

मक़सूद इस आयते शरीफ़ा से यह है कि हुज़ूर सल्ल. की क़द्र व मन्ज़िलत, इज़्ज़त व रुतबा लोगों की निगाहों में क़ायम हो जाये। और वे जान लें कि ख़ुद ख़ुदा तआ़ला आपका तारीफ़ करने वाला है और उसके फ़रिश्ते आप पर दुरूद भेजते रहते हैं। 'मला-ए-आला' की यह ख़बर देकर अब ज़मीन वालों को हुक्म देता है कि तुम भी आप (सल्ल.) पर दुरूद व सलाम भेजा करो ताकि ऊपर वाले आ़लम और नीचे वाले आ़लम के लोगों का इस पर इजमा (सर्वसम्मति) हो जाये। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से बनी इस्राईल ने पूछा था कि क्या ख़ुदा तुम पर सलात भेजता है? तो अल्लाह तआ़ला ने 'वही' भेजी कि उनसे कह दो- हाँ ख़ुदा तआ़ला अपने नबियों और रसूलों पर रहमत भेजता रहता है। इसी की तरफ़ इस आयत में भी इशारा है। दूसरी आयत में अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि यही रहमत अल्लाह तआ़ला अपने मोमिन बन्दों पर भी नाज़िल फ़रमाता है। इरशाद हैः

هُوَ الَّذِىْ يُصَلِّىْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ........ الخ

यानी ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह तआ़ला का ख़ूब ज़्यादा कसरत से ज़िक्र करते रहा करो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह बयान किया करो। वह ख़ुद तुम पर दुरूद भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी।

एक और आयत में हैः

وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ............. الخ

सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो, जिन्हें जब कभी कोई मुसीबत पहुँचती है तो वे 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ते हैं, उन पर उनके रब की तरफ़ से दुरूद नाज़िल होते हैं।

हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिश्ते सफ़ों के दाहिनी तरफ़ वालों पर सलात भेजते रहते हैं। दूसरी हदीस में हुज़ूर सल्ल. की एक शख़्स के लिये यह दुआ़ मन्क़ूल है कि "ख़ुदाया! अबू औफ़ा पर अपनी रहमत फ़रमा" हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बीवी ने हुज़ूर सल्ल. से दरख़्वास्त की कि मेरे और मेरे शौहर के लिये सलात भेजिये तो आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला तुझ पर और तेरे शौहर पर दुरूद नाज़िल फ़रमाये। दुरूद शरीफ़ के बयान की बहुत सी हदीसें हैं जिनमें से थोड़ी हम यहाँ ज़िक्र

Maktab E Ashraf

करते हैं। अल्लाह ही है मददगार।

बुख़ारी शरीफ़ में है कि आप से कहा गया- या रसूलल्लाह! हम आपको सलाम करना तो जानते हैं सलात का क्या तरीक़ा है? आपने 'अत्तहिय्यातु' के बाद दोनों दुरूद बतलाये। लेकिन दोनों में 'व अ़ला इब्राही-म' का लफ़्ज़ नहीं। एक और रिवायत में 'अ़ला इब्राही-म' का लफ़्ज़ नहीं। एक और रिवायत में पहला दुरूद पूरे लफ़्ज़ों के साथ है और दूसरा कुछ तग़य्युर (तब्दीली) के साथ। अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला आख़िर में 'व अ़लैना म-अ़हुम' भी कहते थे। (तिर्मिज़ी)

जिस सलाम का इसमें ज़िक्र है वह अत्तहिय्यात में 'अस्सलामु अ़लै-क अय्युहन्नबिय्यु व रह्मतुल्लाहि व ब-रकातुहू' है। यह अत्तहिय्यात आप क़ुरआन की सूरतों की तरह सिखाया करते थे। एक रिवायत में 'अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन् अ़ब्दि-क व रसूलि-क' भी है और पिछले दुरूद में किसी क़द्र तब्दीली और भिन्नता है। एक रिवायत में दुरूद के अलफ़ाज़ ये हैं:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ اَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्-व अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म व बारिक् अ़ला मुहम्मदिंव्-व अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही कमा बारक्-त अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्-मजीद।

बाज़ रिवायतों में 'अ़ला इब्राही-म' के बाद 'फ़िल-आ़लमीन' का लफ़्ज़ भी है। एक रिवायत में सवाल में यह लफ़्ज़ भी हैं कि दुरूद नमाज़ में किस तरह पढ़ें?

इमाम शाफ़ई रह. का मज़हब है कि नमाज़ के आख़िरी तशह्हुद (अत्तहिय्यात) में अगर किसी ने दुरूद नहीं पढ़ा तो उसकी नमाज़ सही नहीं। दुरूद का पढ़ना इस जगह वाजिब है। बाद के कुछ उलेमा ने इस मसले में इमाम साहिब का रद्द किया और कहा है कि यह सिर्फ़ उन्हीं का क़ौल है और इसके ख़िलाफ़ इजमा (दूसरे उलेमा की सर्वसम्मति) है, हालाँकि यह ग़लत है। सहाबा रज़ि. की एक और जमाअ़त ने यही कहा है। जैसे हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि., हज़रत अबू मसऊद बदरी रज़ि., हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि.। ताबिईन में भी इस मज़हब के लोग गुज़रे हैं जैसे शअ़बी रह., अबू जाफ़र रह., बाक़िर बिन मुक़ातिल बिन हय्यान वग़ैरह। और शाफ़ई हज़रात का तो सब का यही मज़हब है। इमाम अहमद रह. का भी आख़िरी क़ौल यही है जैसा कि अबू ज़ुरआ़ दमिश्क़ी का बयान है। इस्हाक़ बिन राहवैह रह., इमाम मुहम्मद बिन इब्राहीम फ़क़ीह रह. भी यही कहते हैं, बल्कि हंबली इमामों ने भी कहा है कि कम से कम "सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम" का नमाज़ में कहना वाजिब है जैसा कि सहाबा रज़ि. के सवाल पर आपने तालीम दी और हमारे बाज़ साथियों ने आपकी आल पर दुरूद भेजना भी वाजिब कहा है।

ग़र्ज़ कि दुरूद का नमाज़ में वाजिब होने का क़ौल बहुत ज़ाहिर है, हदीस में इसकी दलील भी मौजूद है और पहले व बाद के उलेमा और इमामों में इमाम शाफ़ई रह. के अ़लावा दूसरे इमाम हज़रात भी इसके क़ायल रहे हैं। पस यह कहना किसी तरह सही नहीं कि इमाम साहिब ही का यह क़ौल है और यह ख़िलाफ़े इजमा है। इसकी ताईद उस सही हदीस से भी होती है जो मुस्नद अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसाई, इब्ने ख़ुज़ैमा, इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह में है कि हुज़ूर सल्ल. सुन रहे थे, एक शख़्स ने बग़ैर ख़ुदा की तारीफ़ व सना किये और बग़ैर हुज़ूर सल्ल. पर दुरूद पढ़े अपनी नमाज़ में दुआ़ की तो आपने फ़रमाया उसने बहुत

Maktab E Ashraf

जल्दी की। फिर उसे बुलाकर फ़रमाया या किसी और को फ़रमाया कि जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो पहले अल्लाह की तारीफ़ें बयान करे, फिर दुरूद पढ़े, फिर जो चाहे माँगे।

इब्ने माजा में है कि जिसका वुज़ू नहीं उसकी नमाज़ नहीं। जो वुज़ू में बिस्मिल्लाह न कहे उसका वुज़ू नहीं। जो नबी पर दुरूद न भेजे उसकी नमाज़ नहीं, जो अन्सार से मुहब्बत न रखे उसकी नमाज़ नहीं। लेकिन इसकी सनद में अ़ब्दुल-मुहैमिन नाम का रावी मतरूक है। तबरानी में यह रिवायत उनके भाई से नक़ल है, लेकिन उसमें भी ताम्मुल है (यानी हदीस के इमामों ने इसे विचारनीय क़रार दिया है) और मारूफ़ रिवायत पहली ही है। वल्लाहु आलम।

मुस्नद में है कि हमने कहा हुज़ूर! हम आप पर सलाम कहना तो जानते हैं, दुरूद सिखा दीजिये, तो आपने फ़रमाया यूँ कहो:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلَوَاتِكَ وَرَحْمَتَكَ وَبَرَكَاتِكَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا جَعَلْتَهَا عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَاٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

अल्लाहुम्-म इज्अ़ल् स-लवाति-क व रह्म-त-क व ब-रकाति-क अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा ज-अ़ल्तहा अ़ला इब्राही-म व आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम् मजीद।

इसका एक रावी अबू दाऊद आमा जिसका नाम नुफ़ेअ़ बिन हारिस है, वह मतरूक है। हज़रत अ़ली रज़ि. से लोगों को इस दुआ़ का सिखाना भी नक़ल किया गया है।

اَللّٰهُمَّ دَاحِيَ الْمَدْحُوَّاتِ وَبَارِئَ الْمَسْمُوْكَاتِ وَجَبَّارَ الْقُلُوْبِ عَلٰى فِطْرَتِهَا شَقِيِّهَا وَسَعِيْدِهَا اِجْعَلْ شَرَآئِفَ صَلَوٰتِكَ وَنَوَامِيَ بَرَكَاتِكَ وَفَضَآئِلَ اٰلَآئِكَ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَالْخَاتِمِ لِمَا سَبَقَ وَالْفَاتِحِ لِمَا اُغْلِقَ وَالْمُعِيْنِ الْحَقِّ وَالدَّامِغِ لِجَيْشَاتِ الْاَبَاطِيْلِ كَمَا حُمِّلَ فَاضْطَلَعَ بِاَمْرِكَ بِطَاعَتِكَ مُسْتَوْفِزًا فِيْ مَرْضَاتِكَ غَيْرَ نَكِلٍ فِيْ قَدَمٍ وَّلَا وَهْنٍ فِيْ عَزْمٍ وَاعِيًا لِوَحْيِكَ حَافِظًا بِعَهْدِكَ مَاضِيًا عَلٰى نَفَاذِ اَمْرِكَ حَتّٰى اَوْرٰى قَبَسًا لِقَابِسٍ اٰلَآءُ اللّٰهِ تَصِلُ بِاَهْلِهٖ اَسْبَابُهٗ هُدِيَتِ الْقُلُوْبُ بَعْدَ خَوْضَاتِ الْفِتَنِ وَالْاِثْمِ وَاَبْهَجَ مُوْضِحَاتِ الْاَعْلَامِ وَنَائِرَاتِ الْاَحْكَامِ وَمُنِيْرَاتِ الْاِسْلَامِ فَهُوَ اَمِيْنُكَ الْمَاْمُوْنُ وَخَازِنُ عِلْمِكَ الْمَخْزُوْنِ وَشَهِيْدُكَ يَوْمَ الدِّيْنِ وَبَعِيْثُكَ نِعْمَةً وَّرَسُوْلُكَ بِالْحَقِّ رَحْمَةً اَللّٰهُمَّ افْسَحْ لَهٗ فِيْ عَدْلِكَ وَاجْزِهٖ مُضَاعَفَاتِ الْخَيْرِ مِنْ فَضْلِكَ لَهٗ مُهَنَّاتٍ غَيْرَ مُكَدَّرَاتٍ مِّنْ فَوْزِ ثَوَابِكَ الْمَعْلُوْلِ وَجَزِيْلِ عَطَآئِكَ الْمَجْمُوْلِ. اَللّٰهُمَّ اَعْلِ الْبَانِيْنَ بُنْيَانَهٗ وَاَكْرِمْ مَثْوَاهُ لَدَيْكَ وَنُزُلَهٗ وَاَتْمِمْ لَهٗ نُوْرَهٗ وَاجْزِهٖ مِنْ اِبْتِعَاثِكَ لَهٗ مَقْبُوْلَ الشَّهَادَةِ مَرْضِيَّ الْمَقَالَةِ ذَا مَنْطِقٍ عَدْلٍ وَّخُطَّةٍ فَصْلٍ وَّ حُجَّةٍ وَّ بُرْهَانٍ عَظِيْمٍ.

मगर इसकी सनद ठीक नहीं। इसका रावी अबुल-हज्जाज मिज़्ज़ी सलामा कन्दी न तो मारूफ़ है न उसकी मुलाक़ात हज़रत अ़ली से साबित है। इब्ने माजा में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते

Maktub E Ashraf

हैं कि जब तुम रसूलुल्लाह सल्ल. पर दुरूद भेजो तो बहुत अच्छा दुरूद पढ़ा करो, बहुत मुम्किन है कि तुम्हारा यह दुरूद हुज़ूर पर पेश किया जाये। लोगों ने कहा फिर आप हमें कोई ऐसा दुरूद सिखाईए। आपने फ़रमाया बेहतर है यह पढ़ोः

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلٰوتَكَ وَرَحْمَتَكَ وَبَرَكَاتِكَ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ وَخَاتِمِ النَّبِيِّيْنَ مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ اِمَامِ الْخَيْرِ وَقَائِدِ الْخَيْرِ وَرَسُوْلِ الرَّحْمَةِ. اَللّٰهُمَّ ابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا يَغْبِطُهُ الْاَوَّلُوْنَ وَالْاٰخِرُوْنَ.

"अल्लाहुम्-म इज्अ़ल स-लवाति-क व रह्म-त-क व बरकाति-क अ़ला सय्यिदिल-मुर्सली-न व इमामिल् मुत्तक़ी-न व ख़ातिमिन्नबिय्यी-न मुहम्मदिन् अ़ब्दि-क व रसूलि-क इमामिल् ख़ैरि व क़ायिदिल् ख़ैरि व रसूलिर्रहमति। अल्लाहुम्मब्अ़स्हु मक़ामम् महमूदन् यग़्बितुहुल-अव्वलू-न वल-आख़िरून........." इसके बाद अत्तहिय्यात के बाद के दोनों दुरूद हैं।

यह रिवायत भी मौक़ूफ़ है। इब्ने जरीर की एक रिवायत में है कि हज़रत यूनुस बिन ख़ब्बाब ने अपने फ़ारिस (ईरान) के एक ख़ुतबे में इस आयत की तिलावत की, फिर लोगों के दुरूद के तरीक़े के सवाल को बयान फ़रमाकर हुज़ूर सल्ल. के जवाब में 'वर्हम् मुहम्मदन् व आ-ल मुहम्मदन् कमा रहिम्-त आ-ल इब्राहीम' को भी बयान फ़रमाया है। इससे यह इस्तिदलाल किया गया (यानी दलील पकड़ी गयी) है कि आपके लिये रहम की दुआ़ भी है, जमहूर का यही मज़हब है कि इसकी मज़ीद ताईद उस हदीस से भी होती है जिसमें है कि एक देहाती ने अपनी दुआ़ में कहा था- ख़ुदाया! मुझ पर और मुहम्मद पर रहम कर और हमारे साथ किसी और पर रहम न कर, तो आपने उससे फ़रमाया तूने बहुत ज़्यादा चीज़ को तंग कर दिया (यानी ख़ुदा तआ़ला की रहमत तो आ़म और बेहिसाब है तुमने उसे सीमित और तंग कर दिया)।

क़ाज़ी अ़याज़ ने मालिकी हज़रात में से जमहूर उलेमा से इसका जायज़ न होना नक़ल किया है। अबू मुहम्मद बिन अबू ज़ैद भी इसके जायज़ होने की तरफ़ गये हैं। अब तुम्हारे इख़्तियार में है कि कमी करो या ज़्यादती करो। (इब्ने माजा)

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा क़रीब कियामत में मुझसे वह होगा जो सबसे ज़्यादा मुझ पर दुरूद पढ़ा करता था। (तिर्मिज़ी) फ़रमान है कि जो मुझ पर एक मर्तबा दुरूद भेजेगा अल्लाह तआ़ला उस पर अपनी दस रहमतें भेजता है। इस पर एक शख़्स ने कहा फिर मैं अपनी दुआ़ का आधा वक़्त दुरूद ही पर ख़र्च करूँगा। फ़रमाया जैसी तेरी मर्ज़ी। उसने कहा फिर मैं दो तिहाई कर लूँ? आपने फ़रमाया अगर चाहे। उसने कहा फिर तो अपना सारा ही वक़्त उसके लिये कर देता हूँ। आपने फ़रमाया उस वक़्त अल्लाह तआ़ला तुझे दीन व दुनिया के ग़म से निजात देगा। (तिर्मिज़ी)

हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु का बयान है कि आधी रात को हुज़ूर सल्ल. बाहर निकलते और फ़रमाते- हिला देने वाली आ रही है और उसके पीछे ही पीछे लगने वाली भी है। हज़रत उबई रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने एक मर्तबा कहा कि हुज़ूर! मैं रात को कुछ नमाज़ पढ़ा करता हूँ तो उसका तिहाई हिस्सा आप पर दुरूद पढ़ता रहूँ। आपने फ़रमाया आधा हिस्सा। उन्होंने कहा आधा कर लूँ? फ़रमाया दो तिहाई। कहा अच्छा मैं पूरा वक़्त इसी में गुज़ारूँगा। आपने फ़रमाया तो अल्लाह तआ़ला तेरे तमाम गुनाह माफ़ कर देगा। (तिर्मिज़ी) इसी रिवायत की एक और सनद है कि तिहाई रात गुज़रने के बाद हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- लोगो

Maktab E Ashraf

खुदा को याद करो। लोगो! अल्लाह का ज़िक्र करो। देखो कपकपा देने वाली आ रही है, मौत अपने साथ तमाम मुसीबतों और आफ़तों को लिये हुए चली आ रही है, मौत अपने साथ की तमाम चीज़ों को लिये हुए आ रही है। हज़रत उबई रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहा या रसूलल्लाह! मैं आप पर कसरत से दुरूद पढ़ता हूँ पस कितना वक़्त उसमें गुज़ारूँ? आपने फ़रमाया जितना तू चाहे, कहा चौथाई? फ़रमाया जितना चाहो, और ज़्यादा कर लो तो अच्छा है। कहा आधा? तो यही जवाब दिया। पूछा दो तिहाई? तो यही जवाब मिला। कहा बस तो मैं सारा ही वक़्त इसमें गुज़ारूँगा। फ़रमाया फिर अल्लाह तआ़ला तुझे तेरे ग़मों से बचा लेगा और तेरे गुनाह माफ़ फ़रमा देगा। (तिर्मिज़ी)

एक शख़्स ने आपसे कहा कि हुज़ूर! अगर मैं अपनी सारी की सारी सलवात (दुरूद) आप ही पर कर दूँ तो? आपने फ़रमाया दुनिया और आख़िरत के तमाम मक़ासिद पूरे हो जायेंगे। (मुस्नद अहमद)

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि. फ़रमाते हैं कि आप एक मर्तबा घर से निकले, मैं साथ हो लिया। आप खजूरों के एक बाग़ में गये। वहाँ जाकर सज्दे में गिर गये और इतना लम्बा सज्दा किया और इस क़द्र देर लगाई कि मुझे तो यह खटका गुज़रा कि कहीं आपकी रूह परवाज़ न कर गई हो। क़रीब जाकर आपको देखने लगा, इतने में आपने सर उठाया मुझसे पूछा क्या बात है? मैंने अपनी हालत ज़ाहिर की। फ़रमाया बात यह थी कि जिब्राईल मेरे पास आये थे और मुझसे फ़रमाया मैं तुम्हें बशारत (ख़ुशख़बरी) सुनाता हूँ कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है जो तुझ पर दुरूद भेजेगा मैं भी उस पर दुरूद भेजूँगा, और जो तुझ पर सलाम भेजेगा मैं भी उस पर सलाम भेजूँगा। (मुस्नद अहमद, इमाम अहमद बिन हंबल)

एक और रिवायत में है कि यह सज्दा इस बात पर ख़ुदा के शुक्रिये का था।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. अपने किसी काम के लिये निकले, कोई न था जो आपके साथ जाता तो हज़रत उमर रज़ि. जल्दी से पीछे-पीछे लग गये। देखा कि आप सज्दे में हैं, दूर हटकर खड़े हो गये। आपने सर उठाकर उनकी तरफ़ देखकर फ़रमाया- तुमने यह बहुत अच्छा किया कि मुझे सज्दे में देखकर पीछे हट गये। सुनो मेरे पास जिब्राईल आये और फ़रमाया कि आपकी उम्मत में से जो एक मर्तबा आप पर दुरूद भेजेगा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रहमतें उतारेगा और उसके दस दर्जे बुलन्द करेगा। (तबरानी)

एक मर्तबा आप अपने सहाबा के पास आये। चेहरे से ख़ुशी ज़ाहिर हो रही थी। सहाबा रज़ि. ने सबब मालूम किया तो फ़रमाया एक फ़रिश्ते ने आकर मुझे यह बशारत दी कि मेरा उम्मती जब मुझ पर दुरूद भेजेगा तो अल्लाह तआ़ला की दस रहमतें उस पर उतरेंगी। इसी तरह एक सलाम के बदले दस सलाम। (नसाई) एक और रिवायत में है कि एक दुरूद के बदले दस नेकियाँ मिलेंगी, दस गुनाह माफ़ होंगे, दस दर्जे बढ़ेंगे और इसी के जैसे उस पर लौटाया जायेगा। (मुस्नद अहमद) जो शख़्स मुझ पर एक दुरूद भेजेगा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमायेगा। (मुस्लिम वग़ैरह)

फ़रमाते हैं कि मुझ पर दुरूद भेजा करो वह तुम्हारे लिये ज़कात है, और मेरे लिये वसीला तलब किया करो कि वह जन्नत में आला दर्जा है जो एक शख़्स को ही मिलेगा, क्या अ़जब कि वह मैं ही हूँ। (अहमद)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. का क़ौल है कि हुज़ूर सल्ल. पर जो दुरूद भेजता है अल्लाह और उसके फ़रिश्ते उस पर सत्तर दुरूद भेजते हैं। अब जो चाहे कम करे और जो चाहे ज़्यादा करे। सुनो! एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. हमारे पास आये, ऐसे कि गोया किसी को रुख़्सत कर रहे हों। तीन बार फ़रमाया कि मैं उम्मी-ए-नबी मुहम्मद हूँ। मेरे बाद कोई नबी नहीं, मुझे निहायत खुला बहुत जामे और ख़त्म कर देने वाला कलाम दिया गया है। मुझे जहन्नम के दारोग़ों की अ़र्श के उठाने वालों की गिनती बतला दी गई है। मुझ

Maktab E Ashraf

पर ख़ास इनायत की गई है और मुझे और मेरी उम्मत को आफ़ियत अता फ़रमाई गई है। जब तक मैं तुम में मौजूद हूँ सुनते और मानते रहो, जब मुझे मेरा रब ले जाये तो तुम किताबुल्लाह को मज़बूत थामे रहना। उसके हलाल को हलाल और उसके हराम को हराम समझना। (मुस्नद इमाम अहमद रह.)

फ़रमाते हैं कि जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया जाये उसे चाहिये कि मुझ पर दुरूद भेजे। एक मर्तबा के दुरूद भेजने से खुदा तआ़ला उस पर अपनी दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (अबू दाऊद तियालिसी)

एक दुरूद दस रहमतें दिलवाता है और दस गुनाह माफ़ कराता है। (मुस्नद) बख़ील वह है जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया गया और उसने मुझ पर दुरूद न पढ़ा। (तिर्मिज़ी) एक और रिवायत में है कि ऐसा शख़्स सबसे बड़ा बख़ील है। एक मुर्सल हदीस में है कि इनसान को यह बुख़्ल काफ़ी है कि मेरा नाम सुनकर दुरूद न पढ़े। फ़रमाते हैं कि वह शख़्स बरबाद हुआ जिसके पास मेरा ज़िक्र किया गया और उसने मुझ पर दुरूद न भेजा। वह भी बरबाद हुआ जिसकी ज़िन्दगी में रमज़ान आया और निकल जाने तक उसके गुनाह माफ़ न हुए (यानी वह रमज़ान जैसे रहमतों और मग़फ़िरतों के मौक़े से फ़ायदा न उठा सका कि उसकी मग़फ़िरत होती)। मतलब यह है कि उनकी ख़िदमत करता तो जन्नत का मुस्तहिक़ हो जाता, लेकिन उस बद-नसीब ने न ख़िदमत की और न जन्नत का मुस्तहिक़ साबित हुआ।

ये हदीसें दलील हैं इस बात पर कि हुज़ूर सल्ल. पर दुरूद पढ़ना वाजिब है। उलेमा की एक जमाअ़त का भी यही क़ौल है जैसे तहावी, हलीमी वग़ैरह। इब्ने माजा में है कि जो मुझ पर दुरूद पढ़ना भूल गया उसने जन्नत की राह से ख़ता की। यह हदीस मुर्सल है, लेकिन पहली हदीसों से इसकी पूरी मज़बूती हो जाती है। बाज़ लोग कहते हैं कि मज्लिस में एक दफ़ा तो वाजिब है, फिर मुस्तहब है। चुनाँचे तिर्मिज़ी की एक हदीस में है कि जो लोग किसी मज्लिस में बैठें और खुदा के ज़िक्र और दुरूद के बग़ैर उठ खड़े हों वह मज्लिस क़ियामत के दिन उन पर वबाल हो जायेगी। अगर खुदा चाहे तो उन्हें अ़ज़ाब करे, चाहे माफ़ कर दे। एक और रिवायत में अल्लाह के ज़िक्र का ज़िक्र नहीं। उसमें भी है कि अगरचे वे जन्नत में जायें लेकिन सवाब की मेहरूमी के सबब उन्हें सख़्त अफ़सोस रहेगा। बाज़ का क़ौल है कि उम्र भर में एक मर्तबा दुरूद वाजिब है, फिर मुस्तहब है, ताकि आयत की तामील हो जाये।

क़ाज़ी अ़याज़ रह. ने हुज़ूर सल्ल. पर दुरूद भेजने का वाजिब होना बयान फ़रमाकर इसी क़ौल की ताईद की है। लेकिन तबरी रह. फ़रमाते हैं कि इस आयत से तो इस्तेहबाब (यानी इसका मुस्तहब होना) ही साबित होता है, और इस पर इजमा (उलेमा की सर्वसम्मति) का दावा किया है। बहुत मुम्किन है कि उनका मतलब भी यही हो कि एक मर्तबा वाजिब फिर मुस्तहब, जैसे आपकी नुबुव्वत की गवाही। लेकिन मैं कहता हूँ कि बहुत से ऐसे वाकिआ़त हैं जिनमें हुज़ूर सल्ल. पर दुरूद पढ़ने का हुक्म मिला है। लेकिन बाज़ वक़्त वाजिब है और बाज़ जगह वाजिब नहीं। चुनाँचे-

1. अज़ान सुनकर। देखिये मुस्नद की हदीस में है कि जब तुम अज़ान सुनो तो जो मुअज़्ज़िन कह रहा है तुम भी कहो। फिर मुझ पर दुरूद भेजो। एक के बदले में दस दुरूद अल्लाह तुम पर भेजेगा। फिर मेरे लिये वसीले की दुआ़ करता है, उसके लिये मेरी शफ़ाअ़त हलाल हो जाती है। पहले दुरूद की ज़कात होने की हदीस में भी इसका बयान गुज़र चुका है। फ़रमान है कि जो शख़्स दुरूद भेजे और कहे:

اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ.

अल्लाहुम्-म अन्ज़िल्हुल् मक्अ़दल् मुक़र्र-ब अिन्द-क यौमल् क़ियामति।

उसके लिये मेरी शफ़ाअ़त क़ियामत के दिन वाजिब हो जायेगी। (मुस्नद)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह दुआ़ नक़ल की गयी है:

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ شَفَاعَةَ مُحَمَّدِ نِالْكُبْرٰى وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ الْعُلْيَا وَاَعْطِهٖ سُؤْلَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى كَمَا اٰتَيْتَ اِبْرَاهِيْمَ وَمُوْسٰى عَلَيْهِمَا السَّلَامُ.

अल्लाहुम्-म तक़ब्बल् शफ़ाअ़-त मुहम्मदि-निल्कुबरा वर्फ़अ़् द-र-ज-तहुल् अ़ुल्या व अअ़्तिहु सुअ्लहू फ़िल् आख़िरति वल् ऊला कमा आतै-त इब्राही-म व मूसा अ़लैहिमस्सलामु।

2. मस्जिद में जाने और मस्जिद से निकलने के वक़्त। चुनाँचे मुस्नद में है, हज़रत फ़ातिमा रज़ि. फ़रमाती हैं कि जब नबी करीम सल्ल. मस्जिद में जाते तो दुरूद व सलाम पढ़ते और उसके बादः

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ ذُنُوْبِىْ وَافْتَحْ لِىْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ.

अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली ज़ुनूबी वफ़्तह् ली अबवा-ब रह्मति-क।

और जब मस्जिद से निकलते तो दुरूद व सलाम के बाद यह दुआ़ पढ़तेः

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ ذُنُوْبِىْ وَافْتَحْ لِىْ اَبْوَابَ فَضْلِكَ.

अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली ज़ुनूबी वफ़्तह् ली अबवा-ब फ़ज़्लि-क।

हज़रत अ़ली रज़ि. का फ़रमान है कि जब मस्जिद में जाओ तो नबी सल्ल. पर दुरूद पढ़ा करो।

3. नमाज़ के आख़िरी क़अ़्दे (बैठने) में अत्तिहय्यात का दुरूद। इसकी बहस पहले गुज़र चुकी है। हाँ अत्तहिय्यात के शुरू में इसे किसी ने वाजिब नहीं कहा, अलबत्ता मुस्तहब होने का एक क़ौल इमाम शाफ़ई रह. का है, अगरचे दूसरा क़ौल इसके ख़िलाफ़ भी उन्हीं से मन्क़ूल है।

4. जनाज़े की नमाज़ में आप पर दुरूद पढ़ना। चुनाँचे सुन्नत तरीक़ा यही है कि पहली तकबीर में सूरः फ़ातिहा पढ़े, दूसरी में दुरूद पढ़े, तीसरी में मय्यित के लिये दुआ़ करे, चौथी में:

اَللّٰهُمَّ لَاتَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ وَلَاتَفْتِنَّا بَعْدَهٗ.

"अल्लाहुम्-म ला तह्रिमना अज्रहू व ला तफ़्तिन्ना बअ़्दहू" पढ़े।

एक सहाबी का क़ौल है कि मस्नून नमाज़े जनाज़ा यूँ है कि इमाम तकबीर कहकर आहिस्ता से अल्हम्दु पढ़े, फिर हुज़ूर सल्ल. पर दुरूद भेजे और जनाज़े के लिये ख़ुलूस के साथ (यानी दिल से) दुआ़ करे और तकबीरों में कुछ न पढ़े। फिर आहिस्ता से सलाम फेर दे। (नसाई)

5. ईद की नमाज़ में हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि., हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. और हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. के पास आकर वलीद बिन उक़्बा कहता है कि ईद का दिन है, बताओ तकबीरों की क्या कैफ़ियत है? अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया तकबीरे तहरीमा कहकर अल्लाह तआ़ला की हम्द कर (तारीफ़ कर, यानी अल्हम्दु पढ़), अपने नबी पर दुरूद भेज, फिर दुआ़ माँग, फिर तकबीर कह, फिर तकबीर कह, फिर तकबीर कह, फिर क़िराअत कर, फिर तकबीर कहकर रुकूअ़ कर, फिर खड़ा होकर पढ़ और अपने रब की हम्द (तारीफ़) बयान कर और हुज़ूर सल्ल. पर सलात पढ़ और दुआ़ कर और तकबीर कह और इसी तरह फिर रुकूअ़ में जा। हज़रत हुज़ैफ़ा और हज़रत अबू मूसा ने भी इसकी तस्दीक़ की।

6. दुआ़ के ख़ात्मे पर। तिर्मिज़ी में हज़रत उमर रज़ि. का क़ौल है कि दुआ़ आसमान व ज़मीन में

Muftah E Ashraf

लटकी और रुकी रहती है यहाँ तक कि तू दुरूद पढ़े तब चढ़ती है। एक मरफ़ूअ़ रिवायत भी इसी तरह आई है। उसमें यह भी है कि दुआ के शुरू में, बीच में और आख़िर में दुरूद पढ़ लिया करो। एक ग़रीब और ज़ईफ़ हदीस में है कि मुझे सवार के प्याले की तरह न कर लो कि जब वह अपनी तमाम ज़रूरी चीज़ें ले लेता है तो पानी का कटोरा भी भर लेता है, अगर वुज़ू की ज़रूरत पड़ी तो वुज़ू कर लिया, प्यास लगी तो पी लिया वरना बहा दिया। दुआ के शुरू व बीच में और दुआ के आख़िर में मुझ पर दुरूद पढ़ लिया करो। खुसूसन दुआ-ए-क़नूत में दुरूद की ज़्यादा ताकीद है। हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूर सल्ल. ने ये कलिमात सिखाये जिन्हें मैं वित्रों में पढ़ा करता हूँ:

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ فِیْمَنْ هَدَیْتَ وَعَافِنِیْ فِیْمَنْ عَافَیْتَ وَتَوَلَّنِیْ فِیْمَنْ تَوَلَّیْتَ وَبَارِكْ لِیْ فِیْمَآ اَعْطَیْتَ وَقِنِیْ شَرَّمَا قَضَیْتَ فَاِنَّكَ تَقْضِیْ وَلَا یُقْضٰی عَلَیْكَ. اِنَّهٗ لَایَذِلُّ مَنْ وَّالَیْتَ وَلَایَعِزُّمَنْ عَادَیْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَاوَتَعَالَیْتَ.

अल्लाहुम्मह्दिनी फ़ी मन् हदै-त व आ़फ़िनी फ़ी मन् आ़फ़ै-त व तवल्लनी फ़ी मन् तवल्लै-त व बारिक् ली फ़ी मा अअ़्तै-त व क़िनी शर्-र मा क़ज़ै-त फ़-इन्न-क तक़्ज़ी व ला युक़्ज़ा अ़लै-क। इन्नहू ला यज़िल्लु मंव्-वालै-त व ला यअ़िज़्ज़ु मन् आ़दै-त तबारक्-त रब्बना व तआ़लै-त। (अहले सुनन)

नसाई की रिवायत में आख़िर में ये अलफ़ाज़ भी हैं: "व सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यि"।

7. जुमे के दिन और जुमे की रात में। मुस्नद अहमद में है कि सबसे अफ़ज़ल दिन जुमे का दिन है, इसी में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पैदा किये गये, इसी में क़ब्ज़ किये गये, इसी में सूर फूँका जाना है, इसी में बेहोशी है। पस तुम इस दिन मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ा करो। तुम्हारे दुरूद मुझ पर पेश किये जाते हैं। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा- आप तो ज़मीन में दफ़ना दिये गये होंगे फिर हमारे दुरूद आप पर कैसे पेश किये जायेंगे? आपने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने नबियों के जिस्मों को खाना ज़मीन पर हराम कर दिया है। अबू दाऊद, नसाई वग़ैरह में भी यह हदीस है। इब्ने माजा में है कि जुमे के दिन कसरत से (यानी ख़ूब ज़्यादा) दुरूद पढ़ो। इस दिन फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं। जब कोई मुझ पर दुरूद पढ़ता है तो उसका दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है, जब तक वह फ़ारिग़ हो। पूछा गया मौत के बाद भी? फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर नबियों के जिस्मों को गलाना सड़ाना हराम कर दिया है। अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं, रोज़ी दिये जाते हैं। यह हदीस ग़रीब है और इसमें इन्क़िता है। उबादा बिन नसी ने हज़रत अबू दर्दा रज़ि. को पाया नहीं, वल्लाहु आलम।

बैहक़ी में भी हदीस है कि जुमे के दिन और जुमे की रात मुझ पर कसरत से दुरूद भेजो, लेकिन वह भी ज़ईफ़ है। एक रिवायत में है कि उसका जिस्म ज़मीन नहीं खाती जिससे रूहुल-क़ुदुस ने कलाम किया हो, लेकिन यह हदीस मुर्सल है। एक मुर्सल हदीस में भी जुमे के दिन और रात में दुरूद की कसरत का हुक्म है।

8. इसी तरह ख़तीब (ख़ुतबा देने वाले) पर भी दोनों ख़ुतबों में दुरूद वाजिब है, इसके बग़ैर ख़ुतबे सही नहीं होंगे। इसलिये कि यह इबादत है और इसमें अल्लाह का ज़िक्र वाजिब है। पस ज़िक्रे रसूल भी वाजिब होगा। जैसे अज़ान व नमाज़। इमाम शाफ़ई रह. और इमाम अहमद रह. का यही मज़हब है।

9. आपकी क़ब्र शरीफ़ पर ज़ियारत के वक़्त। अबू दाऊद में है कि जो मुसलमान मुझ पर सलाम

Maktaba E Ashraf

पढ़ता है। अल्लाह तआला मेरी रूह को लौटा देता है, यहाँ तक कि मैं उसके सलाम का जवाब दूँ। अबू दाऊद में है कि अपने घरों को क़ब्रें न बनाओ (यानी उनमें नमाज़, तिलावत और अल्लाह का ज़िक्र करते रहो, उनको क़ब्रिस्तान की ख़ामोशी न दो), मेरी क़ब्र पर उर्स मेला न लगाओ, हाँ मुझ पर दुरूद पढ़ो, चाहे तुम कहीं भी हो लेकिन तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचाया जाता है।

क़ाज़ी इस्माईल बिन इस्हाक़ अपनी किताब 'फ़ज़लुस्सलात' में एक रिवायत लाये हैं कि एक शख़्स हर सुबह रौज़ा-ए-रसूल पर आता था। एक दिन उससे हज़रत अ़ली बिन हुसैन बिन अ़ली रज़ि. ने कहा तुम रोज़ ऐसा क्यों करते हो? उसने जवाब दिया कि हुज़ूर सल्ल. पर सलाम करना मुझे बहुत महबूब है। आपने फ़रमाया सुनो! मैं तुम्हें एक हदीस सुनाऊँ, मैंने अपने बाप से उन्होंने अपने दादा से सुना है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मेरी क़ब्र पर ईद न मनाओ (यानी वहाँ उर्स व मेला न लगाओ)। न अपने घरों को क़ब्रें बनाओ, जहाँ कहीं तुम हो वहीं से मुझ पर दुरूद व सलाम भेजो, वो मुझे पहुँच जाते हैं। इसकी सनद में एक रावी मुब्हम (अस्पष्ट) है, जिसका नाम मज़कूर नहीं, और सनद से यह रिवायत मुर्सल है। हसन बिन हसन बिन अ़ली रह. से नक़ल किया गया है कि उन्होंने आपकी क़ब्र के पास कुछ लोगों को देखकर उन्हें यह हदीस सुनाई कि आपकी क़ब्र पर मेला लगाने से आपने रोक दिया है। मुम्किन है कि उनकी किसी बेअदबी की वजह से यह हदीस आपको सुनाने की ज़रूरत पड़ी हो। जैसे वे बुलन्द आवाज़ से बोल रहे हों, यह भी है कि आपने एक शख़्स को हुज़ूर सल्ल. के रौज़े पर लगातार और बराबर आते हुए देखकर फ़रमाया तू और जो शख़्स उन्दुलुस में हो, हुज़ूर सल्ल. पर सलाम भेजने के एतिबार से बिल्कुल बराबर हैं।

तबरानी में है कि जहाँ कहीं तुम हो वहीं से सलाम भेजो, तुम्हारे सलाम मुझे पहुँचा दिये जाते हैं। तबरानी में है कि हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया कि यह ख़ास राज़ है, अगर तुम मुझसे न पूछते तो मैं भी न बताता। सुनो मेरे साथ फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, जब मेरा ज़िक्र किसी मुसलमान के सामने किया जाता है और वह मुझ पर दुरूद भेजता है तो वे फ़रिश्ते कहते हैं- ख़ुदा तुझे बख़्शे और ख़ुद ख़ुदा और उसके फ़रिश्ते हैं जो ज़मीन पर आमीन कहते हैं। यह हदीस बहुत ग़रीब है और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। मुस्नद अहमद में है कि अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्ते हैं जो ज़मीन पर चलते फिरते रहते हैं, मेरी उम्मत के सलाम मुझ तक पहुँचाते रहते हैं, मैं उसे सुनता हूँ और जो दूर से सलाम भेजता है मुझ तक पहुँचा दिया जाता है। यह हदीस सनद के एतिबार से सही नहीं। मुहम्मद बिन मरवान सुद्दी सग़ीर मतरूक है।

10. हमारे साथियों का क़ौल है कि एहराम वाला जब लब्बैक करे तो उसे भी दुरूद पढ़ना चाहिये। दारे क़ुतनी वग़ैरह में क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ का फ़रमान है कि लोगों को इस बात का हुक्म किया जाता था। सही सनद से हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. का क़ौल है कि जब तुम मक्का पहुँचो तो सात मर्तबा तवाफ़ करो। मक़ामे इब्राहीम पर दो रक्अ़त नमाज़ अदा करो, फिर सफ़ा पर चढ़ो इतना कि वहाँ से बैतुल्लाह नज़र आये। वहाँ खड़े रहकर सात तकबीरें कहो। उनके दरमियान अल्लाह की हम्द व सना (तारीफ़) करो और दुरूद पढ़ो और अपने लिये दुआ़ करो। फिर मरवा पर भी इसी तरह करो।

11. हमारे साथियों ने यह भी कहा है कि ज़िबह के वक़्त भी अल्लाह के नाम के साथ दुरूद पढ़ना चाहिये। आयत "व रफ़अ़्ना ल-क ज़िक्र-क" से उन्होंने ताईद पेश की है, क्योंकि इसकी तफ़सीर में है कि जहाँ ख़ुदा का ज़िक्र किया जाये वहीं आपका नाम भी लिया जाये। जमहूर इसके मुख़ालिफ़ हैं। वे कहते हैं कि यहाँ सिर्फ़ अल्लाह का ज़िक्र काफ़ी है। जैसे खाने के वक़्त और जिमा (हमबिस्तरी) के वक़्त वग़ैरह

Maktab E Ashraf

वग़ैरह, कि इन वक़्तों में दुरूद पढ़ना सुन्नत से साबित नहीं हुआ। एक हदीस में है कि ख़ुदा के तमाम अम्बिया और रसूलों पर भी सलात व सलाम भेजो कि वे भी मेरी तरह ख़ुदा के भेजे हुए हैं। लेकिन इसकी सनद में दो ज़ईफ़ (कमज़ोर) रावी हैं, उमर बिन हारून और उनके उस्ताद।

12. कान की सनसनाहट के वक़्त भी दुरूद पढ़ना एक हदीस में है। अगर इसकी सनद सही साबित हो जाये। सही इब्ने ख़ुज़ैमा में है कि जब तुम में से किसी के कान में सनसनाहट हो तो मुझे ज़िक्र करके दुरूद पढ़े और कहे कि जिसने मुझे भलाई से याद किया उसे ख़ुदा भी याद करे। इसकी सनद ग़रीब है और इसके सुबूत में काफ़ी ताम्मुल (विचार का मक़ाम) है।

मसलाः अहले किताब (यानी यहूद व ईसाई लोग) इस बात को मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) मानते हैं कि कातिब जब हुज़ूर सल्ल. का नाम लिखे तो 'सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम' लिखे। एक हदीस में है कि जो शख़्स किसी किताब में मुझ पर दुरूद लिखे उसके दुरूद का सवाब उस वक़्त तक जारी रहता है जब तक वह किताब में रहे, लेकिन कई वजह से यह हदीस सही नहीं। बल्कि इमाम ज़हबी रह. के उस्ताद तो इसे मौज़ू (गढ़ा हुआ) कहते हैं। यह हदीस बहुत से तरीक़ (सनदों) से मन्क़ूल है, लेकिन एक सनद भी सही नहीं। इमाम ख़तीबे बग़दादी रह. अपनी किताब "आदाबुर्रावी वस्सामेअ़" में लिखते हैं कि मैंने इमाम अहमद रह. की दस्ती (हाथ की) लिखी हुई किताब में बहुत जगह रसूलुल्लाह सल्ल. का नाम देखा जहाँ दुरूद लिखा हुआ न था। आप ज़बानी दुरूद पढ़ लिया करते थे।

फ़स्लः नबियों के सिवा ग़ैर-नबियों पर सलात (दुरूद) भेजना अगर अम्बिया के ताबे बनाकर हो तो बेशक जायज़ है। जैसे हदीस में हैः

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ.

"अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्-व आलिही व अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही" हाँ सिर्फ़ ग़ैर-नबियों पर सलात भेजने में इख़्तिलाफ़ (उलेमा का मतभेद) है, बाज़ तो इसे जायज़ बतलाते हैं और दलील में ये आयतें पेश करते हैं:

هُوَالَّذِىْ يُصَلِّىْ عَلَيْكُمْ..............الخ

(सूरः अहज़ाब आयत 43)

اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ.........الخ

(सूरः ब-क़रह आयत 157)

صَلِّ عَلَيْهِمْ.........الخ

(सूरः तौबा आयत 103)

पेश करते हैं। और हदीस में भी रसूलुल्लाह सल्ल. के पास किसी क़ौम का तदक़ा आता तो आप फ़रमाते "अल्लाहुम्-म सल्लि अ़लैहिम"। चुनाँचे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा फ़रमाते हैं कि जब मेरे वालिद आपके पास अपना सदक़े का माल लाये तो आपने फ़रमायाः

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰٓى اٰلِ اَبِىْ اَوْفٰى.

ऐ अल्लाह! अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा अबू औफ़ा की आल पर। (बुख़ारी व मुस्लिम)

Maktab E Ashraf

एक और हदीस में है कि एक औरत ने कहा या रसूलल्लाह! मुझ पर और मेरे शौहर पर सलात भेजिये, तो आपने फ़रमाया 'सल्लल्लाहु अ़लैकि व अ़ला ज़ौजिकि'। लेकिन जमहूर उलेमा इसके ख़िलाफ़ हैं और कहते हैं कि अम्बिया के सिवा औरों पर ख़ास सलात भेजना मना है। इसलिये कि इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल अम्बिया के लिये इस क़द्र कसरत से हो गया कि सुनते ही ज़ेहन में यही ख़्याल आता है कि यह नाम किसी नबी का है, तो एहतियात इसी में है कि ग़ैर-नबी के लिये ये अलफ़ाज़ न कहे जायें। जैसे अबू बक्र सल्लल्लाहु अ़लैहि, या अ़ली सल्लल्लाहु अ़लैहि न कहा जाये, अगरचे मायने के एतिबार से इसमें कोई बुराई और हर्ज नहीं। जैसे मुहम्मद अज़्-ज़ व जल्-ल नहीं कहा जाता, हालाँकि इज़्ज़त और मर्तबे वाले आप (यानी नबी पाक सल्ल.) भी हैं। इसलिये कि ये अलफ़ाज़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात के लिये मशहूर हो चुके हैं। और किताब व सुन्नत में सलात का इस्तेमाल ग़ैर-अम्बिया के लिये हुआ है वह दुआ़ के लिये है। इसी वजह से आले अबी औफ़ा को इसके बाद किसी ने इन अलफ़ाज़ से याद नहीं किया न हज़रत जाबिर रज़ि. और उनकी बीवी को, यही मस्लक हमें भी सही मालूम होता है। वल्लाहु आलम।

बाज़ हज़रात एक और वजह भी बयान करते हैं, यानी यह कि ग़ैर-अम्बिया के लिये ये अलफ़ाज़ इस्तेमाल करना बद-दीनों का शेवा (तरीक़ा और चलन) हो गया है, वे अपने बुज़ुर्गों के हक़ में यही अलफ़ाज़ इस्तेमाल करते हैं, पस उनकी पैरवी हमें न करनी चाहिये। इसमें भी इख़्तिलाफ़ है कि यह मुख़ालफ़त किस दर्जे की है, हुर्मत (हराम होने) के तौर पर या कराहियत (बुरा और नापसन्दीदा होने) के तौर पर, या ख़िलाफ़े औला (नामुनासिब) है। सही यह है कि यह मक्रूहे तन्ज़ीही है। इसलिये कि बिदअ़तियों का तरीक़ा है जिस पर कारबन्द होना हमें ठीक नहीं, और मक्रूह वही होता है जिसमें नही (उस काम से रोकना और मना करना) मक़सूद हो। ज़्यादातर एतिबार इसी पर है कि सलात का लफ़्ज़ पहले उलेमा और बुज़ुर्गों में नबियों पर ही बोला जाता रहा जैसा कि 'अज़्-ज़ व जल्-ल' का लफ़्ज़ अल्लाह ही के लिये बोला जाता रहा।

अब रहा सलाम तो इसके बारे में शैख़ अबू मुहम्मद जुवैनी फ़रमाते हैं कि यह भी सलात के मायने में है। पस ग़ायब पर इसका इस्तेमाल न किया जाये, और जो नबी न हो उसके लिये ख़ासकर इसे भी न बोला जाये। पस अ़ली अ़लैहिस्सलाम न कहा जाये, ज़िन्दों और मुर्दों का यही हुक्म है, हाँ जो सामने मौजूद हो उससे ख़िताब करके 'सलामुन अ़लै-क' या 'सलामु अ़लैकुम' या 'अस्सलामु अ़लै-क' या 'अस्सलामु अ़लैकुम' कहना जायज़ है। इस पर इजमा (सब उलेमा की सहमति) है। यहाँ यह बात याद रखनी चाहिये कि उमूमन मुसन्निफ़ीन (किताबों के लेखकों) के क़लम से अ़ली अ़लैहिस्सलाम निकलता है या अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू निकलता है, अगरचे मायने के एतिबार से इसमें कोई हर्ज न हो लेकिन इससे दूसरे सहाबा की शान में एक तरह की बेअदबी पाई जाती है, हमें सब सहाबा के साथ अच्छी अ़क़ीदत रखनी चाहिये। ये अलफ़ाज़ तकरीम (सम्मान) के हैं, इसलिये हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से ज़्यादा इनके मुस्तहिक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हुम हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मन्क़ूल है कि नबी सल्ल. के सिवा किसी और पर सलात न भेजनी चाहिये। हाँ मुसलमान मर्दों औरतों के लिये दुआ़-ए-मग़फ़िरत करनी चाहिये। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. ने अपने एक ख़त में लिखा है कि बाज़ लोग आख़िरत के आमाल से दुनिया के जमा करने की फ़िक्र में हैं और बाज़ मौलवी वअ़ज़ (बयान) में अपने बादशाहों और हाकिमों के लिये सलात के वही अलफ़ाज़ बोलते हैं जो रसूलुल्लाह सल्ल. के लिये थे। जब तेरे पास मेरा यह ख़त पहुँचे तो उनसे कह देना कि सलात सिर्फ़ नबियों के लिये है और आ़म मुसलमानों के लिये इसके सिवा जो चाहें दुआ़ करें।

Muhtab E Ashraf

हज़रत कअ़ब कहते हैं कि हर सुबह सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतर कर क़ब्र पर रसूलुल्लाह सल्ल. को घेर लेते हैं और अपने पंख समेट कर हुज़ूर सल्ल. के लिये दुआ़-ए-रहमत करते रहते हैं। और सत्तर हज़ार रात को आते हैं, यहाँ तक कि क़ियामत के दिन जब आपकी क़ब्र मुबारक खुलेगी तो आपके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे। (फ़रअ़)

इमाम नववी रह. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. पर सलात व सलाम एक साथ भेजने चाहियें, सिर्फ़ सल्लल्लाहु या अ़लैहिस्सलाम न कहे। इस आयत में भी दोनों ही का हुक्म है। पस बेहतर और अच्छा यह है कि यूँ कहा जाये 'सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल-म तस्लीमा'।

बेशक जो लोग अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल को तकलीफ़ देते हैं अल्लाह तआ़ला उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत करता है, और उनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (57) और जो लोग ईमान वाले मर्दों को और ईमान वाली औरतों को बग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ किया हो तकलीफ़ पहुँचाते हैं तो वे लोग बोहतान और खुले गुनाह का बोझ लेते हैं। (58)	اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ۝ وَالَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَیْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِیْنًا ۝ ع

ये लोग लानत के हक़दार हैं

जो लोग खुदा के अहकाम की ख़िलाफ़-वर्ज़ी (उल्लंघन) करके उसके मना किये हुए कामों से न रुक कर उसकी नाफ़रमानियों पर जम कर उसे नाराज़ कर रहे हैं, और उसके रसूल के ज़िम्मे तरह-तरह के बोहतान बाँध रहे हैं, वे मलऊन और अ़ज़ाब पाने वाले हैं। हज़रत इक्रिमा फ़रमाते हैं कि इससे मुराद तस्वीरें बनाने वाले हैं। बुख़ारी व मुस्लिम में फ़रमाने रसूल है कि खुदा तआ़ला फ़रमाता है- मुझे आदम का बेटा (इनसान) तकलीफ़ देता है, वह ज़माने को गालियाँ देता है और ज़माना मैं हूँ (यानी ज़माने और हालात का उलट-फेर तो मेरे हाथ और मेरे क़ब्ज़े में है। गोया यह एक तरह से मुझको बुरा कहना है)। मैं ही दिन रात का हेर-फेर कर रहा हूँ। मतलब यह है कि जाहिलीयत वाले कहा करते थे- हाय ज़माने को हलाकत! इसने हमारे साथ यह किया और यूँ किया। पस अल्लाह तआ़ला के अफ़आ़ल (कामों) को ज़माने की तरफ़ मन्सूब करके फिर ज़माने को बुरा कहते थे। गोया अफ़आ़ल (कामों) के फ़ाज़िल (करने वाला) यानी खुद खुदा को बुरा कहते थे। हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा से जब हुज़ूर सल्ल. ने निकाह किया था तो इस पर भी बाज़ लोगों ने बातें बनानी शुरू की थीं। बक़ौल इब्ने अ़ब्बास रज़ि. यह आयत इस बारे में उतरी। आयत आ़म है, किसी भी तरह खुदा के रसूल को तकलीफ़ दे, वह इस आयत के मज़मून के मुताबिक़ मलऊन और अ़ज़ाब का हक़दार है। इसलिये कि रसूलुल्लाह सल्ल. को ईज़ा (तकलीफ़) देना गोया खुदा को ईज़ा देना है। जिस तरह आपकी इताअ़त ऐन इताअ़ते खुदा है।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मैं तुम्हें अल्लाह की याद दिलाता हूँ। देखो खुदा को बीच में रखकर तुमसे कहता हूँ कि मेरे सहाबा (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) को मेरे बाद निशाना न बना लेना। मेरी मुहब्बत की वजह से

Maktaba Ashraf

इनसे भी मुहब्बत रखना, इनसे बुग़ज़ व बैर रखने वाला मुझसे दुश्मनी करने वाला है। इन्हें जिसने ईज़ा (तकलीफ़) दी उसने मुझे ईज़ा दी, और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने ख़ुदा को ईज़ा दी और जिसने ख़ुदा को ईज़ा दी यक़ीन मानो कि ख़ुदा उसकी भूसी उड़ा देगा। यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है जो लोग ईमान वालों की तरफ़ उन बुराईयों को मन्सूब करते हैं जिनसे वे बरी हैं, वे बड़े बोहतान बाज़ और ज़बरदस्त गुनाहगार हैं। इस वईद (धमकी और सज़ा की चेतावनी) में सबसे पहले तो कुफ़्फ़ार दाख़िल हैं, फिर राफ़ज़ी शिया जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर ऐब लगाते हैं और ख़ुदा ने जिनकी तारीफ़ें की हैं ये उन्हें बुरा कहते हैं। अल्लाह तआ़ला ने साफ़ फ़रमा दिया है कि वह अन्सार व मुहाजिरीन से ख़ुश है, क़ुरआने करीम में जगह जगह उनकी तारीफ़ व प्रशंसा मौजूद है। लेकिन ये बेख़बर बद-बातिन उन्हें बुरा कहते हैं, उनकी बुराई और मज़म्मत करते हैं और उनके मुताल्लिक़ वह कुछ कहते हैं जिससे उनका दूर का भी वास्ता नहीं। हक़ तो यह है कि ख़ुदा की तरफ़ से उनके दिल अन्धे हो गये हैं, इसलिये उनकी ज़बानें भी उल्टी चलती हैं। तारीफ़ के क़ाबिल लोगों की मज़म्मत (बुराई और निंदा) करते हैं और मज़म्मत करने वालों की तारीफ़ें करते हैं।

हुज़ूर सल्ल. से सवाल होता है कि ग़ीबत किसे कहते हैं? आप फ़रमाते हैं कि तेरा अपने भाई का इस तरह ज़िक्र करना जिसे अगर वह सुने तो उसे बुरा मालूम हो। आपसे सवाल हुआ कि अगर वह बात उसमें हो तब? आपने फ़रमाया तभी तो ग़ीबत है, वरना बोहतान है। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

एक मर्तबा आपने सहाबा से सवाल किया कि सबसे बड़ी सूदख़ोरी क्या है? उन्होंने कहा अल्लाह जाने और उसका रसूल। आपने फ़रमाया- सबसे बड़ा सूद अल्लाह तआ़ला के नज़दीक किसी मुसलमान की आबरूरेज़ी (बेइज़्ज़ती और अपमान) करना है, फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

ऐ पैग़म्बर! अपनी बीवियों से और अपनी बेटियों से और दूसरे मुसलमानों की बीवियों से भी कह दीजिए कि (सर से) नीचे कर लिया करें अपने ऊपर थोड़ी-सी अपनी चादरें, इससे जल्दी पहचान हो जाया करेगी, तो तकलीफ़ न दी जाया करेंगी। और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (59) ये मुनाफ़िक़ लोग और वे लोग जिनके दिलों में ख़राबी है, और वे लोग जो मदीने में (झूठी-झूठी) अफ़वाहें उड़ाया करते हैं, अगर बाज़ न आए तो ज़रूर हम आपको उन पर मुसल्लत करेंगे, फिर ये लोग आपके पास मदीने में बहुत ही कम रहने पाएँगे। (60) वे भी (हर तरफ़ से) फटकारे हुए जहाँ मिलेंगे पकड़-धकड़ और मार-धाड़ की जाएगी। (61) अल्लाह तआ़ला ने उन (फ़साद करने वाले)	يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ قُل لِّأَزْوَٰجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَآءِ ٱلْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِن جَلَـٰبِيبِهِنَّ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ أَن يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ لَّئِن لَّمْ يَنتَهِ ٱلْمُنَـٰفِقُونَ وَٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَٱلْمُرْجِفُونَ فِى ٱلْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَآ إِلَّا قَلِيلًا ۝ مَّلْعُونِينَ ۖ أَيْنَمَا ثُقِفُوٓا۟ أُخِذُوا۟ وَقُتِّلُوا۟ تَقْتِيلًا ۝ سُنَّةَ ٱللَّهِ فِى

लोगों में भी अपना यही दस्तूर रखा है जो पहले हो गुज़रे हैं, और आप ख़ुदा के दस्तूर में किसी शख़्स की तरफ़ से रद्दोबदल न पाएँगे। (62)	الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝

Maktab E Ashraf

शरई पर्दे का हुक्म

अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. से फ़रमाता है कि आप मोमिन औ़रतों से फ़रमा दें, ख़ास तौर पर अपनी बीवियों और बेटियों से, क्योंकि वे तमाम दुनिया की औ़रतों से बेहतर व अफ़ज़ल हैं, कि वे अपनी चादरें किसी क़द्र लटका लिया करें ताकि जाहिलीयत की औ़रतों से मुम्ताज़ (अलग और नुमायाँ) हो जायें। इसी तरह लौंड़ियों (बाँदियों) से भी आज़ाद औ़रतों की पहचान हो जाये। 'जलबाब' उस चादर को कहते हैं जो औ़रतें अपनी दुपटिया के ऊपर डाल लेती हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं, अल्लाह तआ़ला मुसलमान औ़रतों को हुक्म देता है कि जब वे अपने किसी काम के लिये बाहर निकलें तो जो चादर ओढ़ती हैं उसे सर पर झुका कर मुँह ढक लिया करें। सिर्फ़ एक आँख खुली रखें।

इमाम मुहम्मद बिन सीरीन रह. के सवाल पर हज़रत उबैद सलानी रह. ने अपना चेहरा और सर ढाँक कर और बाईं आँख खुली रखकर बतला दिया कि यह मतलब इस आयत का है। हज़रत इक्रिमा रज़ि. का क़ौल है कि अपनी चादर से अपना गला ढाँप ले। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि. फ़रमाती हैं कि इस आयत के उतरने के बाद अन्सार की औ़रतें जब निकलती थीं तो इस तरह लगी-छुपी चलती थीं कि गोया उनके सरों पर परिन्दे हैं (यानी बहुत एहतियात से, बदन की लचक के बग़ैर) सियाह चादरें अपने ऊपर डाल लिया करती थीं। जब इमाम ज़ोहरी से सवाल हुआ कि क्या लौंडियाँ (बाँदियाँ) भी चादर ओढ़ें? चाहे शौहर वाली हों या बिना शौहर वाली हों? फ़रमाया दुपटिया ज़रूर ओढ़ें, अगर वे शौहर वालियाँ हों और चादर न ओढ़ें कि उनमें और आज़ाद औ़रतों में फ़र्क़ रहे। हज़रत सुफ़ियान रह. से मन्क़ूल है कि ज़िम्मी काफ़िरों की औ़रतों की ज़ीनत (सिंगार) का देखना सिर्फ़ ख़ौफ़े ज़िना की वजह से मना है, न कि उनकी इ़ज़्ज़त व सम्मान की वजह से, बल्कि आयत में मोमिनों का ज़िक्र है। चादर का लगाना चूँकि अ़लामत (निशानी) है आज़ाद पाकदामन औ़रतों की, इसलिये ये चादर लटकाने से पहचान ली जायेंगी कि ये न बदकार औ़रतें हैं न लौंडियाँ (बाँदियाँ) हैं। सुद्दी रह. का क़ौल है कि फ़ासिक़ लोग अंधेरी रातों में रास्ते से गुज़रने वाली औ़रतों पर आवाज़ें कसते थे, इसलिये यह फ़र्क़ हो गया कि घर-ग्रहस्थन औ़रतों और लौंडियों बाँदियों वग़ैरह में तमीज़ हो जाये। और उन पाकदामन औ़रतों पर कोई लब न हिला सके।

फिर फ़रमाया कि जाहिलीयत (इस्लाम से पहले) के ज़माने में जो बेपर्दगी की रस्म थी, जब तुम ख़ुदा के इस हुक्म के आ़मिल (अ़मल करने वाले) बन जाओगे तो अल्लाह तआ़ला तमाम अगली (पहले हुई) ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमा लेगा और तुम पर मेहरबानी व करम करेगा।

फिर फ़रमाता है कि अगर मुनाफ़िक़ और बदकार लोग और झूठी अफ़वाहें दुश्मनों की चढ़ाई वग़ैरह की उड़ाने वाले अब भी बाज़ न आये और हक़ के तरफ़दार न हुए तो ऐ नबी! हम तुझे उन पर ग़ालिब और मुसल्लत कर देंगे। फिर तो वे मदीने में ठहर ही न सकेंगे। बहुत जल्दी तबाह कर दिये जायेंगे। और जो कुछ दिन उनके मदीने में ठहरने के गुज़रेंगे वे भी लानत व फटकार में गुज़रेंगे। हर तरफ़ से धुतकारे जायेंगे, ज़लील होकर निकाल दिये जायेंगे, जहाँ पाये जायेंगे गिरफ़्तार किये जायेंगे और बुरी तरह क़त्ल किये जायेंगे।

Maktab_e_Ashraf

ऐसे कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ों पर जबकि वे अपनी सरकशी से बाज़ न आयें मुसलमानों को ग़लबा देना यह हमारी पुरानी सुन्नत (तरीक़ा) है, जिसमें न कभी तग़य्युर व तब्दीली हुई, न होगी।

يَسْئَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ إِنَّمَا
عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ
السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ○ إِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ
الْكٰفِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ○ خٰلِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ۚ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيرًا ○
يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ
يٰلَيْتَنَا أَطَعْنَا اللّٰهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ○ وَ
قَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا
فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ○ رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ
مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ○ ع ٨ ٥

ये (इनकार करने वाले) लोग आप से क़ियामत के मुताल्लिक़ सवाल करते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि उसकी ख़बर तो बस अल्लाह तआ़ला ही के पास है। और आपको उसकी क्या ख़बर, अ़जब नहीं कि क़ियामत क़रीब ही ज़ाहिर हो जाए। (63) बेशक अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों को रहमत से दूर रखा है, और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है। (64) जिसमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे, न कोई यार पाएँगे और न कोई मददगार। (65) जिस दिन उनके चेहरे दोज़ख़ में उलट-पुलट किए जाएँगे, यूँ कहते होंगे कि ऐ काश! हमने अल्लाह की इताअ़त की होती और हमने रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की इताअ़त की होती। (66) और यूँ कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना था। सो उन्होंने हमको (सीधे) रास्ते से गुमराह किया था। (67) ऐ हमारे रब! उनको दोहरी सज़ा दीजिए और उन पर बड़ी लानत कीजिए। (68)

क़ियामत का धमाका

लोग यह समझ कर कि क़ियामत कब आयेगी, इसका इल्म हुज़ूर सल्ल. को है आपसे सवाल करते थे तो ख़ुदा तआ़ला ने सब को अपने नबी की ज़बानी मालूम करा दिया कि इसका नबी को बिल्कुल भी इल्म नहीं, यह सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला ही जानता है। सूरः आराफ़ में भी यह बयान है जो कि मक्का में उतरी थी। यह सूरत मदीने में नाज़िल हुई, जिससे मालूम हुआ कि इब्तिदा से इन्तिहा तक क़ियामत के सही वक़्त की ख़बर आपको मालूम न थी। हाँ इतना अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को मालूम करा दिया था कि क़ियामत का वक़्त क़रीब है। जैसे एक आयत में है:

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ.

क़ियामत क़रीब आ गयी। एक और आयत में है:

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ.

इनसानों के हिसाब व किताब का वक़्त क़रीब आ गया। एक और जगह है:

Maktab E Ashraf

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ.

कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा, तुम जल्दी मत मचाओ।

अल्लाह तआला ने काफ़िरों को अपनी रहमत से दूर कर दिया है, उन पर हमेशा की लानत नाज़िल फ़रमाई है। आख़िरत की दुनिया में उनके लिये जहन्नम तैयार है जो बड़ी भड़कने वाली चीज़ है, जिसमें वे हमेशा रहेंगे। न कभी निकल सकेंगे न छूट सकेंगे और न कोई अपना फ़रियाद को पहुँचने वाला पायेंगे, न कोई दोस्त मददगार जो उन्हें छुड़ा ले या बचा सके। ये जहन्नम में मुँह के बल डाले जायेंगे। उस वक़्त तमन्ना करेंगे कि काश हम ख़ुदा व रसूल के ताबेदार होते। मैदाने क़ियामत में भी उनकी यही तमन्ना रहेगी। हाथों को चबाते हुए कहेंगे काश हम क़ुरआन के आमिल होते, काश कि मैंने फ़ुलाँ को दोस्त न बनाया होता, उसने तो मुझे क़ुरआन व हदीस से बहका दिया। वास्तव में शैतान इनसान को ज़लील करने वाला है। एक दूसरी आयत में है:

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ.

बहुत जल्द काफ़िर लोग आरज़ू करेंगे कि काश वे मुसलमान होते।

उस वक़्त कहेंगे ख़ुदाया! हमने अपने सरदारों और अपने उलेमा की पैरवी की। अमीरों और मशाईख़ के पीछे लगे और रसूल का ख़िलाफ़ (विरोध और मुख़ालफ़त) किया और यह समझा कि हमारे बड़े सही रास्ते पर हैं उनके पास हक़ है। आज साबित हुआ कि दर हक़ीक़त वे तो कुछ न थे, उन्होंने तो हमें बहका दिया, परवर्दिगार तू उन्हें दोहरा अ़ज़ाब कर, एक तो उनके पास अपने कुफ़्र का, एक हमें बरबाद करने का और उन पर बदतरीन लानत नाज़िल कर। एक क़िराअत में 'कबीरन' के बदले 'कसीरन' है। मतलब दोनों का एक है। बुख़ारी व मुस्लिम में है, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्ल. से किसी ऐसी दुआ़ की दरख़्वास्त की जिसे वह नमाज़ में पढ़ें तो आपने यह दुआ़ तालीम फ़रमाई।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ.

अल्लाहुम्-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन् कसीरंव्-व ला यग़फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त फ़ग़फ़िर् ली मग़फ़िरतम् मिन् अ़िन्दि-क वर्हम्नी इन्न-क अन्तल् ग़फ़ूरुर्रहीम।

यानी ख़ुदाया! मैंने बहुत से गुनाह किये हैं। मैं मानता हूँ कि तेरे सिवा कोई माफ़ नहीं कर सकता। पस तू मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा, तू बड़ा ही बख़्शिश करने वाला मेहरबान है।

इस हदीस में भी 'ज़ुलमन् कसीरन्' और 'कबीरन' दो ही हैं, बाज़ लोगों ने यह भी कहा है कि दुआ़ में 'कसीरन' 'कबीरन' दोनों लफ़्ज़ मिलाये, लेकिन यह ठीक नहीं बल्कि ठीक यह है कि कभी 'कसीरन' कहे कभी 'कबीरन', दोनों लफ़्ज़ों में से जिसे चाहे इख़्तियार करे जैसे कि आयत में दोनों क़िराअतों में से जिसे चाहे पढ़ सकता है, लेकिन दोनों को जमा नहीं कर सकता। वल्लाहु आलम।

हज़रत अ़ली रज़ि. का एक साथी आपके मुख़ालिफ़ों से कह रहा था कि "क्या तुम ख़ुदा के यहाँ जाकर यह कहोगे कि 'रब्बना इन्ना अतअ़ना.......' (ऐ हमारे रब हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना था सो उन्होंने हमको सीधे रास्ते से गुमराह किया था, ऐ हमारे रब उनको दोहरी सज़ा दीजिये और उन पर बड़ी लानत कीजिये)।

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह मत होना जिन्होंने (कुछ तोहमत गढ़कर) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को तकलीफ़ दी थी, सो उनको ख़ुदा तआ़ला ने बरी साबित कर दिया, और वह अल्लाह के नज़दीक बड़े इज़्ज़त वाले "यानी सम्मानित" थे। (69)	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۭ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ۝

Mahtab E Ashraf

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर एक तोहमत

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम बहुत ही शर्मीले और बड़े हयादार थे। यही मतलब है क़ुरआन की इस आयत का। किताबुत्तफ़सीर में तो इमाम साहिब रह. इस हदीस को इतनी ही मुख़्तसर लाये हैं लेकिन अहादीसे-अम्बिया के बयान में इसे तफ़सील के साथ लाये हैं। उसमें यह भी है कि वह शर्म व हया की वजह से अपना बदन किसी के सामने नंगा नहीं करते थे। बनी इस्राईल आपको सताने और तकलीफ़ देने के पीछे पड़ गये और यह उड़ा दिया कि चूँकि इनके जिस्म पर बरस (एक रोग) के दाग़ हैं, या इनके बेज़े (फ़ोते) बढ़ गये हैं, या कोई और कमी और नुक़्स है इस वजह से इस क़द्र पर्दा दारी करते हैं। अल्लाह तआ़ला का इरादा हुआ कि यह बदगुमानी आपसे दूर करे।

एक दिन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम तन्हाई में नंगे नहा रहे थे। एक पत्थर पर आपने कपड़े रख दिये थे। जब ग़ुस्ल से फ़ारिग़ होकर आये कपड़े लेने चाहे तो पत्थर आगे सरक गया, आप अपनी लकड़ी लिये उसके पीछे गये, वह दौड़ने लगा, आप भी ऐ पत्थर मेरे कपड़े, मेरे कपड़े करते हुए उसके पीछे दौड़े। बनी इस्राईल की जमाअ़त एक जगह बैठी हुई थी, जब आप वहाँ तक पहुँच गये तो ख़ुदा के हुक्म से पत्थर ठहर गया। आपने अपने कपड़े पहन लिये, बनी इस्राईल ने आपके तमाम जिस्म को देख लिया और जो ग़लत बातें उनके कानों में पड़ी थीं उनसे अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को बरी कर दिया। ग़ुस्से में हज़रत मूसा ने तीन चार या पाँच लकड़ियाँ पत्थर पर मारी थीं, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं वल्लाह उन लकड़ियों के निशान उस पत्थर पर पड़ गये। इसी बराअत (बरी होने) वग़ैरह का ज़िक्र इस आयत में है। यह हदीस मुस्लिम में नहीं, यह रिवायत बहुत सी सनदों से बहुत सी किताबों में है। बाज़ रिवायतें मौक़ूफ़ भी हैं।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मन्क़ूल है कि एक मर्तबा हज़रत मूसा और हज़रत हारून अ़लैहिमस्सलाम पहाड़ पर गये थे। जहाँ हज़रत हारून अ़लैहि. का इन्तिक़ाल हो गया। लोगों ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ बदगुमानी की और आपको सताना शुरू किया। परवर्दिगारे आ़लम ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया और वे उसे उठा लाये और बनी इस्राईल की मज्लिस के पास से गुज़रे, अल्लाह ने उसे ज़बान दी और क़ुदरती मौत का इज़हार किया। उनकी क़ब्र का सही निशान नामालूम है सिर्फ़ उस टीले का लोगों को इल्म है और वही उनकी क़ब्र की जगह मानते हैं। लेकिन बेज़बान है तो हो सकता है कि ईज़ा (तकलीफ़ देना और सताना, जिसका इस आयत में ज़िक्र है) यही हो, और हो सकता है कि वह ईज़ा हो जिसका बयान पहले गुज़र चुका। लेकिन मैं कहता हूँ यह भी हो सकता है कि यह और वह दोनों हों बल्कि इनके सिवा और भी ईज़ायें (तकलीफ़ें) हों।

हुज़ूर सल्ल. ने एक मर्तबा लोगों में कुछ तक़सीम किया, इस पर एक शख़्स ने कहा इस तक़सीम से

Maktab E Ashraf

ख़ुदा की रज़ामन्दी का इरादा नहीं किया गया है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं- जब मैंने यह सुना तो मैंने कहा ऐ ख़ुदा के दुश्मन! मैं तेरी इस बात की ख़बर रसूलुल्लाह सल्ल. को ज़रूर पहुँचाऊँगा। चुनाँचे मैंने जाकर हुज़ूर सल्ल. को ख़बर दी, आपका चेहरा सुर्ख़ हो गया।

फिर फ़रमाया अल्लाह तआ़ला की रहमत हो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर वह इससे बहुत ज़्यादा ईज़ा (तकलीफ़) दिये गये हैं, लेकिन सब्र किया। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक और रिवायत में है, हुज़ूर सल्ल. का आ़म इरशाद था कि कोई भी मेरे पास किसी की तरफ़ से कोई बात न पहुँचाये। मैं चाहता हूँ कि मैं तुम में आकर बैठूँ तो मेरे दिल में किसी की तरफ़ से कोई बात चुभती न हो। एक मर्तबा कुछ माल आपके पास आया आपने उसे लोगों में तक़सीम कर दिया। दो शख़्स उसके बाद आपस में बातें कर रहे थे, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. उनके पास से गुज़रे, एक दूसरे से कह रहा था कि वल्लाह इस तक़सीम से न तो हुज़ूर सल्ल. ने ख़ुदा तआ़ला की ख़ुशी का इरादा किया न आख़िरत के घर का। मैं ठहर गया और दोनों की बातें सुनीं। फिर ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुआ और कहा कि आपने तो यह फ़रमाया है कि किसी की कोई बात मेरे सामने न लाया करो। अभी का वाक़िआ़ है, मैं जा रहा था कि फ़ुलाँ और फ़ुलाँ से मैंने ये बातें सुनीं। इसे सुनकर हुज़ूर सल्ल. का चेहरा ग़ुस्से के मारे सुर्ख़ हो गया और आप पर यह बात बहुत ही नागवार गुज़री। फिर मेरी तरफ़ देखकर फ़रमाया अ़ब्दुल्लाह जाने दो। देखो मूसा अ़लैहिस्सलाम इससे भी ज़्यादा सताये गये लेकिन उन्होंने सब्र किया। क़ुरआन फ़रमाता है कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के नज़दीक बड़े मर्तबे वाले थे, जो दुआ़ करते थे क़बूल होती थी। हाँ ख़ुदा का दीदार न हुआ इसलिये कि यह ताक़ते इनसानी से ख़ारिज (बाहर) था। सबसे बढ़कर उनकी वजाहत (शान व रुतबे) का सुबूत इससे मिलता है कि उन्होंने अपने भाई हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम के लिये नुबुव्वत माँगी, ख़ुदा ने वह भी अ़ता फ़रमाई।

फ़रमाता हैः

وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا.

हमने अपनी रहमत से उसके भाई हारून को नबी बना कर उन्हें दिया।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्ची बात कहो। (70) अल्लाह तआ़ला (इसके सिले में) तुम्हारे आमाल को क़बूल करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त करेगा, सो वह बड़ी कामयाबी को पहुँचेगा। (71)

बड़ी कामयाबी यह है

अल्लाह तआ़ला अपने मोमिन बन्दों को अपने तक़वे की हिदायत करता है, उनसे फ़रमाता है कि इस तरह वे उसकी इबादत करें कि गोया उसे अपनी आँखों से देख रहे हैं, और बात बिल्कुल साफ़ सीधी ऐंच पेंच के बग़ैर सच्ची और भली बोला करें। जब वे दिल में तक़वा, ज़बान पर सच्चाई इख़्तियार कर लेंगे तो

Maktab E Ashraf

इसके बदले में अल्लाह तआ़ला उन्हें नेक आमाल की तौफ़ीक़ देगा और उनके तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा देगा बल्कि आईन्दा के लिये भी इस्तिग़फ़ार की तौफ़ीक़ देगा। ताकि गुनाह बाक़ी न रह जायें। वे ख़ुदा व रसूल के सच्चे फ़रमाँबरदार औस सही मायनों में कामयाब हैं, जहन्नम से दूर और जन्नत से सम्मानित हैं।

एक दिन ज़ोहर की नमाज़ के बाद मर्दों की तरफ़ मुतवज्जह होकर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मुझे ख़ुदा का हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हें अल्लाह से डरते रहने और सीधी बात बोलने का हुक्म दूँ। फिर औ़रतों की तरफ़ मुतवज्जह होकर भी यही फ़रमाया। (इब्ने अबी हातिम)

इब्ने अबिद्दुन्या की 'किताबुत्तक़वा' में है कि हुज़ूर सल्ल. हमेशा मिम्बर पर हर ख़ुतबे में यह आयत तिलावत फ़रमाया करते थे। लेकिन इसकी सनद ग़रीब है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है, जिसे यह बात पसन्द हो कि लोग उसकी इ़ज़्ज़त करें उसे अल्लाह तआ़ला से डरते रहना चाहिये। हज़रत इक्रिमा रज़ि. फ़रमाते हैं कि 'क़ौले सदीद' (रास्ती की बात से मुराद) ला इला-ह इल्लल्लाहु है। बाज़ फ़रमाते हैं कि सच्ची बात 'क़ौले सदीद' है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि सीधी बात 'क़ौले सदीद' है। यह सब 'क़ौले सदीद' में दाख़िल है।

हमने यह अमानत (यानी अहकाम जो अमानत के दर्जे में हैं) आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की थी, सो उन्होंने इसकी ज़िम्मेदारी से इनकार कर दिया और इस से डर गए, और इनसान ने इसको अपने ज़िम्मे ले लिया, वह ज़ालिम है, जाहिल है। (72) अन्जाम यह हुआ कि अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को सज़ा देगा, और मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों पर तवज्जोह (और रहमत) फ़रमायेगा और अल्लाह तआ़ला मग़फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (73)	اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۙ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۠ ع ٩ ٥ ٦

यह मुहब्बत का ख़िताब है

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि "अमानत" से मुराद यहाँ इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) है। इसे हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पर पेश करने से पहले ज़मीन व आसमान और पहाड़ों पर पेश किया गया लेकिन वे अमानत का बोझ न उठा सके और अपनी मजबूरी का इज़्हार किया। अल्लाह तआ़ला ने इसे अब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पर पेश किया, ये सब तो लेने से इनकार करते हैं अब तुम कहो। आपने पूछा ख़ुदाया! इसमें बात क्या है? फ़रमाया अगर बजा लाओगे तो सवाब पाओगे और नाफ़रमानी करोगे तो बुराई की सज़ा पाओगे। आपने फ़रमाया मैं तैयार हूँ। आपसे यह भी नक़ल किया गया है कि अमानत से

मुराद फ़राईज़ हैं, दूसरों पर जो पेश किया था यह बतौर हुक्म के न था बल्कि जवाब तलब किया था तो उनका इनकार और इज़हारे मजबूरी गुनाह न थी, बल्कि उसमें एक किस्म की ताज़ीम (अदब व सम्मान) थी कि बावजूद पूरी ताक़त के ख़ुदा के ख़ौफ़ से थर्रा उठे कि कहीं पूरी अदायेगी न हो सके और मारे न जायें। लेकिन इनसान जो कि भोला था, इसने इस अमानत के बोझ को ख़ुशी-ख़ुशी उठा लिया। आप ही से यह भी मन्क़ूल है कि अ़सर के क़रीब यह अमानत उठाई थी और मग़रिब से पहले ही ख़ता (यानी चूक और ग़लती) सर्ज़द हो गई।

हज़रत उबई का बयान है कि औ़रत की पाकदामनी भी अल्लाह तआ़ला की अमानत है। क़तादा रह. का क़ौल है कि दीन, फ़राईज़, हुदूद सब अल्लाह तआ़ला की अमानत हैं। जनाबत (नापाकी से पाकी हासिल करने) का ग़ुस्ल भी बक़ौल बाज़ अमानत है। ज़ैद बिन असलम रह. फ़रमाते हैं कि तीन चीज़ें ख़ुदा तआ़ला की अमानत हैं, ग़ुस्ले जनाबत (नापाकी की हालत से निकलने के लिये पाकी का ग़ुस्ल करना) और रोज़ा और नमाज़, मतलब यह है कि ये चीज़ें सब की सब अल्लाह की अमानत में दाख़िल हैं। तमाम अहकाम को बजा लाने, तमाम मना की हुई चीज़ों और बातों से परहेज़ करने का इनसान मुकल्लफ़ (ज़िम्मेदार) है, जो बजा लायेगा सवाब पायेगा, जहाँ गुनाह करेगा सज़ा पायेगा।

इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं- ख़्याल करो कि आसमान बावजूद इस पुख़्तगी, सजावट और नेक फ़रिश्तों का ठिकाना होने के ख़ुदा की अमानत बरदाश्त न कर सका, जब उसने यह मालूम कर लिया कि बजा-आवरी (यानी हुक्मों का पालन) अगर न हुई तो अ़ज़ाब होगा। ज़मीन बावजूद अपनी सख़्ती और मज़बूती के, लम्बाई और चौड़ाई के डर गई और अपनी आ़जिज़ी ज़ाहिर करने लगी। पहाड़ बावजूद अपनी बुलन्दी, ताक़त और सख़्ती के इससे काँप गये और अपनी लाचारी ज़ाहिर करने लगे। हज़रत मुक़ातिल फ़रमाते हैं कि पहले आसमानों ने जवाब दिया और कहा यूँ तो हम ताब्रेदार और फ़रमाँबरदार हैं लेकिन हाँ हमारे बस की यह बात नहीं, क्योंकि पालन न होने की सूरत में ख़तरा बहुत बड़ा है। फिर ज़मीन से कहा गया कि पूरी उतरी तो फ़ज़्ल व करम से नवाज़ूँगा, लेकिन उसने कहा यूँ तो मैं हर तरह से फ़रमान के ताबे हूँ जो फ़रमाया जाये अ़मल करूँ, लेकिन मेरी वुस्अ़त से तो यह बाहर है। फिर पहाड़ों से कहा गया, उन्होंने भी जवाब दिया कि नाफ़रमानी तो हम करने के नहीं, अमानत डाल दी जाये तो उठा लेंगे, लेकिन यह हमारे बस की बात नहीं, हमें माफ़ फ़रमाया जाये। फिर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से कहा गया, उन्होंने कहा ख़ुदाया! अगर पूरा उतरूँ तो क्या मिलेगा? फ़रमाया बड़ी बुज़ुर्गी (सम्मान व रुतबा) व जन्नत मिलेगी, रहम व करम होगा। और अगर इताअ़त न की, नाफ़रमानी की तो फिर सख़्त संज़ा होगी और आग में डाल दिये जाओगे। उन्होंने कहा ख़ुदाया! मन्ज़ूर है।

मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि आसमान ने कहा मैंने सितारों को जगह दी, फ़रिश्तों को उठा लिया, लेकिन यह नहीं उठा सकूँगा। यह तो फ़राईज़ का तहम्मुल (उठाना और ज़िम्मेदारी लेना) है, जिसकी मुझ में ताक़त नहीं। ज़मीन ने कहा मुझ में तूने दरख़्त बोये, दरिया जारी किये, लोगों को बसायेगा, लेकिन यह अमानत मेरे बस की नहीं। मैं फ़र्ज़ की पाबन्द होकर सवाब की उम्मीद पर अ़ज़ाब के एहतिमाल (संभावना) को नहीं उठा सकती। पहाड़ों ने भी यही कहा लेकिन इनसान ने इसे आगे बढ़कर उठा लिया।

बाज़ रिवायात में है कि तीन दिन तक वे गिरया-व-ज़ारी (रोना व फ़रियाद करना) करते रहे और अपनी बेबसी बतलाते रहे। लेकिन इनसान ने इसे अपने ज़िम्मे ले लिया। ख़ुदा तआ़ला ने इससे फ़रमाया अब सुन! अगर तू नेकबख़्त रहा तो मेरी अमानत हमेशा तेरे शामिले हाल रहेगी। तेरी आँखों में दो पलकें

कर देता हूँ कि मेरी नाराज़गी की चीज़ों से तू इन्हें बन्द कर ले, मैं तेरी ज़बान पर दो होंठ बना देता हूँ कि जब वह मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ बोलना चाहे तो तू इसे बन्द कर ले, तेरी शर्मगाह की हिफ़ाज़त के लिये मैं लिबास उतारता हूँ कि मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ तू इसे न खोले। ज़मीन व आसमान ने सवाब व अ़ज़ाब से इनकार कर दिया और फ़रमाँबरदारी में मुसख़्ख़र (हुक्म के ताबे) रहे लेकिन इनसान ने इसे उठा लिया।

एक बिल्कुल ग़रीब मरफ़ूअ़ हदीस में है कि अमानत और वफ़ा इनसानों पर नबियों की मारिफ़त (ज़रिये) नाज़िल हुईं, ख़ुदा का कलाम उनकी ज़बानों में उतरा, नबियों की सुन्नतों से उन्होंने हर भलाई बुराई मालूम कर ली, हर शख़्स नेकी बदी को जान गया। याद रखो! सबसे पहले लोगों में अमानत दारी थी, फिर वफ़ा और अ़हद की हिफ़ाज़त व पासदारी और ज़िम्मेदारी को पूरा करना था। अमानत दारी के धुंधले से निशानात लोगों के दिलों पर रह गये, किताबें उनके हाथों में हैं, आ़लिम अ़मल करते हैं, जाहिल जानते हैं लेकिन अनजान बने रहते हैं। अब यह अमानत व वफ़ा मुझ तक और मेरी उम्मत तक पहुँची। याद रखो! ख़ुदा उसी को हलाक करता है जो ख़ुद को हलाक कर ले, उसे छोड़कर ग़फ़लत में पड़ जाये। लोगो होशियार रहो, देखते भालते रहो, शैतानी वस्वसों से बचो, ख़ुदा तुम्हें आज़मा रहा है कि तुममें से अच्छे अ़मल करने वाला कौन है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स ईमान के साथ इन चीज़ों को लायेगा जन्नत में जायेगा। पाँचों वक़्तों में नमाज़ की हिफ़ाज़त करता हो, वुज़ू, रुकूअ़, सज्दा और वक़्त के साथ ज़कात अदा करता हो। दिल की ख़ुशी के साथ ज़कात की रक़म निकालता हो। सुनो! यह अल्लाह पर बग़ैर ईमान के हो ही नहीं सकता, और अमानत को अदा करे।

हज़रत अबू दर्दा रज़ि. से सवाल हुआ कि अमानत की अदायेगी से क्या मुराद है? फ़रमाया- जनाबत (नापाकी से पाकी हासिल करने) का ग़ुस्ल। पस अल्लाह तआ़ला ने इब्ने आदम (यानी इनसान) पर अपने दीन में से किसी चीज़ की इसके सिवा अमानत नहीं दी। तफ़सीर इब्ने जरीर में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- अल्लाह की राह का क़त्ल (यानी जिहाद में मारा जाना) तमाम गुनाहों को ख़त्म कर देता है, मगर अमानत की ख़ियानत को नहीं मिटाता। इन ख़ियानत करने वालों से क़ियामत के दिन कहा जायेगा जाओ इनकी अमानतें अदा करो। ये जवाब देंगे ख़ुदाया कहाँ से अदा करें? दुनिया तो जाती रही। तीन मर्तबा यही सवाल व जवाब होगा, फिर हुक्म होगा कि इन्हें इनकी माँ हाविया (यानी दोज़ख़) में ले जाओ। फ़रिश्ते धक्के देते हुए गिरा देंगे, नीचे तक पहुँच जायेंगे तो इन्हें उसी अमानत की हमशक्ल जहन्नम की आग की चीज़ नज़र पड़ेगी। ये उसे लेकर ऊपर को चढ़ेंगे, जब किनारे तक पहुँच जायेंगे तो पाँव फिसल जायेगा, फिर गिर पड़ेंगे और जहन्नम के नीचे तक गिरते चले जायेंगे, फिर लायेंगे फिर गिरेंगे, हमेशा इसी अ़ज़ाब में मुब्तला रहेंगे।

अमानत वुज़ू में भी है, नमाज़ में भी है। अमानत बातचीत में भी है और इन सबसे ज़्यादा अमानत उन चीज़ों में है जो किसी के पास बतौर अमानत रखी जायें। हज़रत बरा रज़ि. से सवाल होता है कि आपके भाई अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद यह क्या हदीस बयान फ़रमा रहे हैं? तो आपने इसकी तस्दीक़ की कि हाँ ठीक है। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. से मैंने दो हदीसें सुनी हैं। एक को मैंने अपनी आँखों से देख लिया और दूसरी के ज़ाहिर होने का इन्तिज़ार है। एक तो यह है कि आपने फ़रमाया- अमानत लोगों की जिबिल्लत (फ़ितरत) में उतारी गई। फिर क़ुरआन उतरा, हदीसें बयान हुईं फिर आपने अमानत के उठ जाने के बारे में फ़रमाया- इनसान सोयेगा कि उसके दिल से अमानत उठ जायेगी और ऐसा निशान रह जायेगा जैसे किसी के पैर पर कोई अंगारा गिर गया हो और फफोला पड़ गया हो कि उभरा

Maktab E Ashraf

हुआ मालूम होता है, लेकिन अन्दर से कुछ भी नहीं। फिर आपने एक कंकर लेकर उसे पैर पर लुढ़का कर दिखाया कि इस तरह लोग लेन-देन ख़रीद व फ़रोख़्त किया करेंगे। लेकिन तक़रीबन एक भी ईमानदार न होगा, यहाँ तक कि मशहूर हो जायेगा कि फ़ुलाँ क़बीले में कोई ईमानदार है और यहाँ तक कहा जायेगा कि यह शख़्स कैसा अ़क़्लमन्द किस क़द्र समझदार दाना और फ़िरासत वाला है, हालाँकि उसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान न होगा।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. फ़रमाते हैं- देखो इससे पहले तो मैं हर एक से उधार-सुधार कर लिया करता था क्योंकि अगर मुसलमान है तो ख़ुद वह मेरा हक़ मुझे दे जायेगा और अगर यहूद व ईसाई है तो हुकूमते इस्लाम मुझे उससे दिलवा देगी। लेकिन अब तो सिर्फ़ फ़ुलाँ-फ़ुलाँ ही को उधार देता हूँ बाक़ी बन्द कर दिया। (मुस्लिम वग़ैरह)

मुस्नद अहमद में फ़रमाने रसूल है कि चार बातें जब तुझ में हों फिर अगर सारी दुनिया भी फ़ौत हो जाये (यानी तुझे न मिल सके) तो तुझे नुक़सान नहीं।

1. अमानत की हिफ़ाज़त।
2. बातचीत की सदाक़त (सच्चाई)।
3. अच्छे अख़्लाक़।
4. हलाल की रोज़ी।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह. की 'किताबुज़्ज़ोहद' में है कि जब इब्ने सुहैम हज़रत ज़ियाद के साथ थे, इत्तिफ़ाक़ से उनके मुँह से बातों ही बातों में निकल गया। क़सम है अमानत की। इस पर हज़रत ज़ियाद रोने लगे और बहुत रोये। मैं डर गया कि मुझसे कोई गुनाह हो गया। मैंने कहा क्या वह इसे मक्रूह जानते थे? फ़रमाया हाँ। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. इसे बहुत मक्रूह (बुरा और नापसन्दीदा) जानते थे और इससे मना फ़रमाते थे। अबू दाऊद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- वह हममें से नहीं जो अमानत की क़सम खाये। अमानतदारी जो हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने की उसका नतीजा यह होगा कि मुनाफ़िक़ मर्द व औरत और मुश्रिक मर्द व औरत यानी वे जो ज़ाहिर में मुसलमान और बातिन (दिल) में काफ़िर थे, और वे जो अन्दर बाहर से बराबर एक जैसे काफ़िर थे, उन्हें तो सख़्त सज़ा मिले और मोमिन मर्द व औरत पर रहमते ख़ुदा नाज़िल हो, जो ख़ुदा को उसके फ़रिश्तों को और उसके रसूल को मानते थे और ख़ुदा तआ़ला के सच्चे फ़रमाँबरदार रहे, अल्लाह तआ़ला ग़फ़ूर (माफ़ करने वाला) व रहीम (रहम करने वाला) है।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः अहज़ाब की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Mahtab E Ashraf

सूरः सबा

सूरः सबा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 54 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ○ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ○	पूरी की पूरी तारीफ़ें (और प्रशंसा) उसी अल्लाह के लिए हैं जिसकी मिल्क में है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और उसी को तारीफ़ (और प्रशंसा) आख़िरत में भी (लायक़) है। और वह हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला है। (1) वह सब कुछ जानता है जो चीज़ ज़मीन के अन्दर दाख़िल होती है (जैसे बारिश), और जो चीज़ उसमें से निकलती है (जैसे पेड़-पौधे, घास, सब्ज़ियाँ और हरियाली वग़ैरह) और जो चीज़ आसमान से उतरती है, और जो चीज़ उसमें चढ़ती है, और वह (अल्लाह तआ़ला) रहीम (और) ग़फ़ूर (भी) है। (2)

अल्लाह माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है

चूँकि दुनिया और आख़िरत की सब नेमतें ख़ुदा ही की तरफ़ से हैं, सारी हुकूमतों का हाकिम वही एक है, इसलिये हर क़िस्म की तारीफ़ व सना का मुस्तहिक़ भी वही है। वही माबूद है जिसके सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं, उसके लिये दुनिया और आख़िरत की तारीफ़ व सना सज़ावार है, उसकी हुकूमत है और उसी की तरफ़ सब लौटाये जाते हैं। ज़मीन व आसमान में जो कुछ है सब उसकी मातहती में (हुक्म के ताबे) है, जितने भी हैं सब उसके ग़ुलाम हैं, उसके क़ब्ज़े में हैं। सब पर तसर्रुफ़ (क़ब्ज़ा और अ़मल-दख़ल) उसी का है। जैसे एक और आयत में है:

وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى.

हमारे ही क़ब्ज़े में है दुनिया व आख़िरत।

आख़िरत में उसी की तारीफ़ें होंगी। वह अपने अक़वाल (बातों) व अफ़आ़ल (कामों) और तक़दीर पर सब में हुकूमतों वाला है, और ऐसा ख़बरदार (हर चीज़ का ख़बर रखने वाला) है जिस पर कोई चीज़ छुपी नहीं, जिससे कोई ज़र्रा पोशीदा नहीं। जो अपने अहकाम में हकीम (हिक्मत वाला), जो अपनी मख़्लूक़ से बाख़बर, जितने क़तरे बारिश के ज़मीन में जाते हैं, जितने दाने उसमें बोये जाते हैं, उसके इल्म से बाहर

Maktab E Ashraf

नहीं, जो ज़मीन से निकलता है, उगता है, उसे भी वह जानता है। उसके मुहीत (हर चीज़ को अपने घेरे में लिये हुए) वसी (विस्तृत) और बेहिसाब इल्म से कोई चीज़ बाहर नहीं। हर चीज़ की गिनती, कैफ़ियत और सिफ़त उसे मालूम है।

आसमान से जो बारिश बरसती है उसके क़तरों की गिनती भी उसके इल्म में महफ़ूज़ है, जो रिज़्क़ वहाँ से उतरता है उसके इल्म से, नेक आमाल वग़ैरह जो आसमान पर चढ़ते हैं वो भी उसके इल्म में हैं। वह अपने बन्दों पर ख़ुद उससे भी ज़्यादा मेहरबान है, इस वजह से उनके गुनाहों पर इत्तिला रखते हुए उन्हें जल्दी से सज़ा नहीं देता बल्कि मोहलत देता है कि वे तौबा कर लें और बुराईयाँ छोड़ दें, रब की तरफ़ रुजू कर लें। फिर ग़फ़ूर (मग़फ़िरत करने वाला) है, इधर बन्दा रोया पीटा उधर उसने बख़्श दिया, माफ़ फ़रमा दिया, दरगुज़र कर दिया। तौबा करने वाला धुतकारा नहीं जाता, तवक्कुल करने वाला नुक़सान नहीं उठाता।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ط قُلْ بَلٰى وَرَبِّىْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ لا عٰلِمِ الْغَيْبِ ج لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ○ لا لِّيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ط اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ○ وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِىْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ○ وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِىْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ لا وَيَهْدِىْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ○

और ये काफ़िर कहते हैं कि हम पर क़ियामत न आएगी। आप फ़रमा दीजिए कि क्यों नहीं! क़सम है अपने परवर्दिगार ग़ैब के जानने वाले की, वह ज़रूर तुम पर आएगी। उस (के इल्म) से कोई ज़र्रा बराबर भी ग़ायब नहीं, न आसमानों में और न ज़मीन में, और न कोई चीज़ इस (ज़िक्र हुई मात्रा) से छोटी है और न कोई चीज़ (इससे) बड़ी है, मगर ये सब किताबे मुबीन में (लिखी हुई) है। (3) ताकि उन लोगों को (नेक) सिला दे जो ईमान लाए थे और उन्होंने नेक काम किए थे, (सो) ऐसे लोगों के लिए मग़फ़िरत और (जन्नत में) इज़्ज़त की रोज़ी है। (4) और जिन लोगों ने हमारी आयतों के मुताल्लिक़ (उनके बातिल करने की) कोशिश की थी हराने के लिए, ऐसे लोगों के वास्ते सख़्ती का दर्दनाक अज़ाब होगा। (5) और जिन लोगों को (आसमानी किताबों का) इल्म दिया गया है, वे इस क़ुरआन को जो कि आपके रब की तरफ़ से आपके पास भेजा गया है, ऐसा समझते हैं कि वह हक़ है और वह ख़ुदा-ए-ग़ालिब तारीफ़ वाले (की रज़ा) का रास्ता बतलाता है। (6)

एक-एक ज़र्रे की निगरानी रखने वाला

पूरे क़ुरआन में तीन आयतें हैं जहाँ क़ियामत के आने पर क़सम खाकर बयान फ़रमाया गया है। एक

Maktab E Ashraf

तो सूरः युनूस में:

وَيَسْتَنْبِئُوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَقُلْ اِىْ وَرَبِّىْ اِنَّهٗ لَحَقٌّ، وَمَآاَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ.

लोग तुझसे मालूम करते हैं कि क्या क़ियामत का आना हक़ ही है? तू कह दे कि हाँ मेरे रब की क़सम वह यक़ीनन हक़ ही है, और तुम ख़ुदा को मग़लूब नहीं कर सकते।

दूसरी आयत यही है (यानी जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)।

तीसरी आयत सूरः तग़ाबुन में है:

زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْآاَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا قُلْ بَلٰى وَرَبِّىْ لَتُبْعَثُنَّ.

यानी कुफ़्फ़ार का ख़्याल है कि वे क़ियामत के दिन उठाये न जायेंगे, तू कह दे कि हाँ मेरे रब की क़सम तुम ज़रूर उठाये जाओगे और यह तो ख़ुदा पर बिल्कुल ही आसान है।

पस यहाँ काफ़िरों का क़ियामत का इनकार ज़िक्र करके अपने नबी सल्ल. को उनका जवाब क़सम के अन्दाज़ में बतला कर फिर इसकी और ज़्यादा ताकीद करते हुए फ़रमाता है कि वह ख़ुदा जो आ़लिमुल-ग़ैब है, जिससे कोई ज़र्रा पोशीदा नहीं, सब उसके इल्म में है। अगरचे सड़-गल जायेंगे, उनके रेज़े बिखर जायेंगे लेकिन वे कहाँ हैं? कितने हैं? वह सब जानता है। वह उन सब को जमा करने पर क़ादिर है, जैसा कि शुरू में उनको पैदा करने पर क़ादिर था। वह हर चीज़ का जानने वाला है और तमाम चीज़ें उसके पास उसकी किताब में लिखी हुई हैं। फिर क़ियामत के आने की हिक्मत बयान फ़रमाई ताकि ईमान वालों को उनकी नेकियों का बदला मिले, वे मग़फ़िरत और रिज़्क़े करीम से नवाज़े जायें और जिन्होंने ख़ुदा की बातों से ज़िद की, रसूलों की न मानी, उन्हें बदतरीन और सख़्त सज़ायें हों। नेक काम करने वाले मोमिन जज़ा (सवाब और अच्छा बदला) और बदकार कुफ़्फ़ार मज़ा पायें। जैसे फ़रमाया- जहन्नमी और जन्नती बराबर नहीं। जन्नती कामयाब और फ़लाह पाने वाले हैं। एक और आयत में है:

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا.......... الخ

यानी मोमिन और मुफ़सिद (ख़राबी व बिगाड़ वाला), मुत्तक़ी और फ़ाजिर (नेक और बदकार) बराबर नहीं।

फिर क़ियामत की एक और हिक्मत बयान फ़रमाई कि ईमान वाले भी क़ियामत के दिन नेकों को जज़ा और बदकारों को सज़ा पाते हुए देखेंगे तो वे इल्मुल-यक़ीन से ऐनुल-यक़ीन (यानी जो चीज़ अब तक सिर्फ़ इल्म में थी उसको अपनी आँखों से देखकर पुख़्ता यक़ीन) हासिल कर लेंगे, और उस वक़्त कह उठेंगे कि हमारे रब के रसूल हमारे पास हक़ लाये थे, और उस वक़्त कहा जायेगा कि यह जिसका वायदा रहमान ने किया था और रसूलों ने सचमुच कह दिया था, ख़ुदा ने तो लिख दिया था कि तुम क़ियामत तक रहोगे तो अब क़ियामत का दिन आ चुका, वह ख़ुदा अ़ज़ीज़ है यानी बुलन्द बारगाह वाला, बड़ी सरकार वाला है, बड़ी इ़ज़्ज़त वाला है, पूरे ग़लबे वाला है, न उस पर किसी का बस, न किसी का ज़ोर, हर चीज़ उसके सामने पस्त और आ़जिज़। वह क़ाबिले तारीफ़ है, अपने अक़वाल व अफ़आ़ल (बातों और कामों), शरीअ़त (ख़ुदाई क़ानून) और तक़दीर इन तमाम में सारी मख़्लूक़ उसकी तारीफ़ करने वाली (प्रशंसक) है।

Maktab E Ashraf

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۚ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ۝ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝	और काफ़िर (आपस में) कहते हैं कि क्या हम तुमको एक ऐसा आदमी बताएँ जो तुमको यह अ़जीब ख़बर देता है कि जब तुम बिल्कुल रेज़ा-रेज़ा हो जाओगे तो (उसके बाद क़ियामत में) ज़रूर एक नए जन्म में आओगे? (7) मालूम नहीं उस शख़्स ने ख़ुदा तआ़ला पर (जान-बूझकर) झूठ बोहतान बाँधा है या उसको किसी तरह का जुनून है, बल्कि जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते (वही) अ़ज़ाब और दूर-दराज़ गुमराही में (मुब्तला) हैं। (8) तो क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन की तरफ़ नज़र नहीं की, जो उनके आगे भी और उनके पीछे (भी) मौजूद हैं। अगर हम चाहें तो उनको ज़मीन में धंसा दें या उन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें। इस (ज़िक्र हुई दलील) में (अल्लाह की क़ुदरत की) पूरी दलील है, (मगर) उस बन्दे के लिए जो (ख़ुदा की तरफ़) मुतवज्जह (भी) हो। (9)

अ़क्ल का धोखा

काफ़िर और मुल्हिद (बेदीन और अल्लाह का इनकार करने वाले) जो क़ियामत के आने को मुहाल जानते हैं और उस पर अल्लाह तआ़ला के नबी का मज़ाक़ उड़ाते थे। उनके कुफ़्रिया कलिमात का ज़िक्र हो रहा है कि वे आपस में कहते थे- लो और सुनो! हम में एक साहिब हैं जो फ़रमाते हैं कि जब मरकर मिट्टी में मिल जायेंगे और चूरा-चूरा और रेज़ा-रेज़ा हो जायेंगे उसके बाद भी हम ज़िन्दा किये जायेंगे। उस शख़्स के बारे में दो ही ख़्याल हो सकते हैं, या तो यह कि होश व हवास के होते हुए जान-बूझकर वह ख़ुदा के ज़िम्मे एक झूठ बोल रहा है, और जो उसने नहीं फ़रमाया वह उसकी तरफ़ निस्बत करके यह कह रहा है। और अगर यह नहीं तो उसका दिमाग़ ख़राब है, मजनूँ है, बिना सोचे-समझे जो जी में आया कह देता है। अल्लाह तआ़ला उन्हें जवाब देता है कि ये दोनों बातें नहीं। नबी करीम सल्ल. सच्चे हैं, नेक हैं, सही राह पर हैं, दाना हैं, अ़क्ल व समझ वाले हैं। लेकिन इसे क्या किया जाये कि मुन्किर लोग जहालत और बेसमझी से काम ले रहे हैं और ग़ौर व फ़िक्र (सोच-विचार) से बात की तह तक पहुँचने की कोशिश ही नहीं करते। एक इनकार सीख लिया है जिसे इस्तेमाल करते रहते हैं, जिसकी वजह से हक़ बात और सीधी राह उनसे छूट जाती है और बहुत दूर निकल खड़े हो जाते हैं। क्या उसकी क़ुदरत में तुम कोई कमी देख रहे हो? जिसने इतना बड़ा आसमान और फैली हुई ज़मीन पैदा कर दी। जहाँ जाओ न आसमान का साया छूटे न ज़मीन का फ़र्श। जैसे फ़रमान है:

Maktab E Ashraf

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ. وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ.

हमने आसमान को अपने हाथों से बनाया और हम कुशादगी वाले हैं। ज़मीन को हमने ही बिछाया और हम बहुत अच्छे बिछाने वाले हैं।

यहाँ भी फ़रमाया कि आगे देखो तो और पीछे देखो तो, इसी तरह दायें नज़र डालो तो और बाईं तरफ़ तवज्जोह करो तो इतने बड़े आसमान और इतनी बड़ी फैली हुई ज़मीन नज़र आयेगी। इतनी बड़ी मख़्लूक़ का ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाला) इतना ज़बरदस्त क़ादिर, क्या तुम जैसी छोटी सी मख़्लूक़ को फ़ना करके फिर पैदा करने पर क़ुदरत खो बैठा? वह तो इस पर क़ादिर है कि अगर चाहे तो तुम्हें ज़मीन में धंसा दे या आसमान तुम पर तोड़ दे। यक़ीनन तुम्हारे ज़ुल्म और गुनाह इसी क़ाबिल हैं। लेकिन ख़ुदा का हिल्म (बरदाश्त और बुर्दबार) और माफ़ करने वाला देखो कि वह तुम्हें मोहलत दिये हुए है। जिसमें अ़क़्ल हो, जिसमें दूरबीनी (दूरदर्शिता) हो, जिसमें ग़ौर व फ़िक्र हो, जिसकी ख़ुदा की तरफ़ झुकने वाली तबीयत हो, जिसके सीने में दिल, दिल में हिक्मत और हिक्मत में नूर हो, वह तो इन ज़बरदस्त निशानियों को देखने के बाद उस क़ादिर व ख़ालिक़ ख़ुदा की इस क़ुदरत में शक कर ही नहीं सकता कि मरने के बाद फिर जीना है। आसमानों जैसे शामियाने और ज़मीनों जैसे फ़र्श जिसने पैदा कर दिये उस पर इनसान की पैदाईश क्या मुश्किल है? जिसने हड्डियों गोश्त और खाल को शुरू में पैदा किया, उसे इसके सड़ गल जाने और रेज़ा रेज़ा होकर झड़ने के बाद इकट्ठा करके उठाना बैठाना क्या भारी है? इसको एक और आयत में फ़रमायाः

اَوَلَيْسَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ............ الخ

यानी जिसने आसमानों और ज़मीनों को पैदा कर दिया क्या वह इन जैसों को पैदा करने पर क़ादिर नहीं? बेशक क़ादिर है। एक और आयत में है:

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ.

यानी इनसानों की पैदाईश से बहुत ज़्यादा मुश्किल तो आसमान व ज़मीन की पैदाईश (बनाना) है, लेकिन अक्सर लोग बेइल्मी बरतते हैं।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ۘ يٰجِبَالُ اَوِّبِىْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ۝ اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِى السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۘ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

और हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से बड़ी नेमत दी थी। ऐ पहाड़ो! दाऊद के साथ बार-बार तस्बीह करो, और (इसी तरह) परिन्दों को भी हुक्म दिया, और हमने उनके वास्ते लोहे को (मोम की तरह) नर्म कर दिया। (10) (और यह हुक्म दिया) कि तुम पूरी ज़िरहें बनाओ (और कड़ियों के) जोड़ने में अन्दाज़ा रखो, और तुम सब नेक काम किया करो, मैं तुम्हारे सब आमाल देख रहा हूँ। (11)

हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की फ़ज़ीलतें

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि उसने अपने बन्दे और रसूल हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर

Maktab E Ashraf

दुनिया व आख़िरत की रहमत नाज़िल फ़रमाई। नुबुव्वत भी दी, बादशाहत भी, लाव व लश्कर भी दिये। ताकृत व क़ुव्वत भी दी, फिर एक पाकीज़ा मोजिज़ा यह अ़ता फ़रमाया कि इधर नग़मा-ए-दाऊदी हवा में गूँजा उधर पहाड़ों और परिन्दों को भी वज्द आ गया। पहाड़ों ने आवाज़ में आवाज़ मिलाकर ख़ुदा की तारीफ़ व सना शुरू की, परिन्दों ने पंख हिलाने छोड़ दिये और अपनी तरह-तरह की प्यारी-प्यारी बोलियों में रब की वह्दानियत (अल्लाह के एक होने) के गीत गाने लगे।

सही हदीस में है कि रात को हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. क़ुरआन पाक की तिलावत कर रहे थे जिसे सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल. ठहर गये। देर तक सुनते रहे, फिर फ़रमाने लगे उन्हें नग़मा-ए-दाऊदी (हज़रत दाऊद की उम्दा आवाज़) का कुछ हिस्सा मिल गया है। अबू उस्मान नहदी रह. का बयान है कि वल्लाह हमने अबू मूसा से ज़्यादा प्यारी आवाज़ किसी बाजे की भी नहीं सुनी।

'अव्विबी' के मायने हब्शी ज़बान में यह हैं कि तस्बीह बयान करो। लेकिन हमारे नज़दीक इसमें और ज़्यादा ग़ौर करने की ज़रूरत है। अ़रब की लुग़त (भाषा) में यह लफ़्ज़ 'तरजीअ़' (लौटाने और वापस लाने) के मायने में मौजूद है। पस पहाड़ों और परिन्दों को हुक्म हो रहा है कि वे हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की आवाज़ के साथ अपनी आवाज़ मिला लिया करें। 'तावीब' के एक मायने दिन को चलने के भी आते हैं जैसे 'सरि-य' के मायने रात को चलने के हैं, लेकिन यह मायने भी यहाँ कुछ ज़्यादा मुनासिब मालूम नहीं होते, यहाँ तो यह मतलब है कि दाऊद की तस्बीह की आवाज़ में तुम भी आवाज़ मिलाकर ख़ुश-आवाज़ी से रब की तारीफ़ बयान करो। एक और फ़ज़्ल उन पर हुआ कि उनके लिये लोहा नर्म कर दिया गया, न उन्हें लोहे को भट्टी में डालने की ज़रूरत, न हथौड़े मारने की हाजत, हाथ में आते ही ऐसा हो जाता था जैसा कि नर्म व नाज़ुक रेशम। अब उस लोहे से अल्लाह के फ़रमान के मुताबिक़ आप ज़िरहें (लड़ाई के लिये लोहे का लिबास) बनाते थे, बल्कि यह भी कहा गया है कि दुनिया में सबसे पहले ज़िरह आप ही ने ईजाद की है। हर रोज़ एक ज़िरह बनाते थे, छह हज़ार दिर्हम में बिक जाती (दो हज़ार घर-बार के ख़र्च के लिये रख लेते चार हज़ार लोगों के खिलाने पिलाने में ख़र्च कर देते, ज़िरह बनाने की तरकीब ख़ुद ख़ुदा की सिखाई हुई थी कि कड़ियाँ ठीक-ठीक रखें, हल्क़े (दायरे और ख़ाने) छोटे न हों कि ठीक न बैठें, बहुत बड़े न हों कि ढीलापन रह जाये। बल्कि नाप-तौल कर और सही अन्दाज़े से हल्क़े और कड़ियाँ हों।

इब्ने अ़साकिर में है कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम भेस बदल कर निकला करते थे और रिआ़या के लोगों (पब्लिक और अ़वाम) से मिलकर उनसे और बाहर के आने जाने वालों से मालूम फ़रमाते कि दाऊद कैसा आदमी है? लेकिन हर शख़्स को तारीफ़ें करता हुआ ही पाते, किसी से कोई बात अपने बारे में सुधार के क़ाबिल न सुनते। एक मर्तबा अल्लाह तआ़ला ने एक फ़रिश्ते को इनसानी सूरत में नाज़िल फ़रमाया, हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की उनसे भी मुलाक़ात हुई तो जैसे औरों से पूछते थे उनसे भी सवाल किया। उन्होंने कहा दाऊद है तो अच्छा आदमी, लेकिन अगर एक कमी उसमें न होती तो कामिल बन जाता। आपने बड़ी रग़बत (ध्यान और दिलचस्पी) से पूछा- वह क्या? फ़रमाया यह कि वह अपना बोझ मुसलमानों के बैतुल-माल (सरकारी ख़ज़ाने) पर डाले हुए है, ख़ुद भी उसमें से लेता है और अपने अहल व अ़याल (घर वालों और बाल-बच्चों) को भी उसी में से खिलाता है। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के दिल में बात बैठ गई कि यह शख़्स ठीक कहता है, उसी वक़्त अल्लाह की बारगाह की तरफ़ झुक पड़े और रोकर फ़रियाद के साथ दुआयें करने लगे कि ख़ुदाया! मुझे कोई काम सिखा दे जिससे मेरा पेट भर जाया करे, कोई हुनर और कारीगरी मुझे बता दे जिससे मैं इतना हासिल कर लिया करूँ कि वह मुझे और मेरे बाल बच्चों को काफ़ी हो

Maktab E Ashraf

जाये। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ज़िरहें बनानी सिखाईं और अपनी रहमत से लोहे को उनके लिये बिल्कुल नर्म कर दिया। सबसे पहले ज़िरहें आपने ही बनाई हैं। एक ज़िरह (जेकिट) बनाकर फ़रोख़्त फ़रमाते और उसकी क़ीमत तीन हिस्से कर लेते, एक अपने खाने पीने वग़ैरह के लिये, एक सदक़े के लिये, एक रख छोड़ने के लिये ताकि दूसरी ज़िरह बनाने तक ख़ुदा के बन्दों को देते रहें। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम को जो नग़मा (आवाज़ की उम्दगी) दिया गया था वह बेनज़ीर था। ख़ुदा की किताब पढ़ने बैठते, आवाज़ निकलते ही चरिन्द-परिन्द, जंगल के जानवर, पहाड़ कंकर सब वज्द (बेख़ुदी) में आ जाते और हर चीज़ सब्र व सुकून के साथ बेख़ुदी के आ़लम में आपकी आवाज़ से मुतास्सिर होकर किताबे ख़ुदा में मशग़ूल हो जाती। तमाम बाजे और राग शयातीन ने नग़मा-ए-दाऊदी (हज़रत दाऊद की आवाज़ के तरन्नुम) से निकाले हैं, आपकी बेमिस्ल उम्दा आवाज़ की यह चिड़ावनी नक़लें हैं।

अपनी इन नेमतों को बयान फ़रमाकर हुक्म होता है कि अब तुम्हें भी चाहिये कि नेक आमाल करते रहो, मेरे फ़रमान के ख़िलाफ़ न करो, यह बहुत बुरी बात है कि जिसके इतने बड़े और बेशुमार एहसान हों उसकी फ़रमाँबरदारी छोड़ दी जाये, मैं तुम्हारे आमाल का निगराँ हूँ तुम्हारा कोई अ़मल छोटा बड़ा, नेक बद मुझसे छुपा नहीं।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝ يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ۝

और सुलैमान के लिए हवा को ताबे कर दिया कि उस (हवा) की सुबह की मन्ज़िल एक महीने भर की (राह) होती और उसकी शाम की मन्ज़िल एक महीने भर की (राह) होती, और हमने उनके लिए ताँबे का चश्मा बहा दिया, और जिन्नात में बाज़े वे थे जो उनके आगे काम करते थे उनके रब के हुक्म से, और उनमें से जो शख़्स हमारे इस हुक्म से सरकशी करेगा, हम उसको (आख़िरत में) अ़ज़ाब चखा देंगे। (12) वे जिन्नात उनके लिए वे-वे चीज़ें बनाते जो उनको (बनवाना) मन्ज़ूर होता। बड़ी-बड़ी इमारतें और मूरतें और लगन (ऐसे बड़े) जैसे हौज़ और (बड़ी-बड़ी) देगें जो एक ही जगह जमी रहें। ऐ दाऊद के ख़ानदान वालो! तुम सब शुक्रिए में नेक काम किया करो, और मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार कम ही होते हैं। (13)

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का उड़न-खटोला

हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर जो नेमतें रहीं उनका बयान करके फिर आपके बेटे हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम पर जो नेमतें की थीं उनका बयान हो रहा है कि उनके लिये हवा को उनके हुक्म के ताबे

Maktaba Ashraf

बना दिया। महीने भर की राह सुबह ही सुबह तय हो जाती, और इतनी ही दूरी का सफ़र शाम को हो जाता। जैसे दमिश्क़ से तख़्त मय फ़ौज व असबाब के उड़ाया और थोड़ी देर में असफ़न्द पहुँचा दिया जो तेज़ रफ़्तार चलने वाले सवार के लिये महीने भर का सफ़र था। इसी तरह शाम को वहाँ से तख़्त उड़ाया और शाम ही को काबुल पहुँच गया (आज के तेज़-रफ़्तार जहाज़ों को देखकर अब ये बातें समझ से परे नहीं रहीं)। ताँबे को पानी की तरह बहता बनाकर चश्मे बहा दिये थे (आज लोहे और दूसरी धातुओं को पिघलाकर विभिन्न चीज़ें बनाई जा रही हैं) कि जिस काम में जिस तरह जिस वक़्त लाना चाहें बिना किसी दिक़्क़त लाया करें। यह ताँबा उन्हीं के वक़्त से काम आ रहा है। सुद्दी रह. का क़ौल है कि तीन दिन तक यह बहता रहा। जिन्नात को उनकी मातहती में कर दिया, जो वह चाहते अपने सामने उनसे काम लेते। उनमें से जो जिन्न सुलैमानी हुक्म से जी चुराता फ़ौरन आग में जला दिया जाता।

इब्ने अबी हातिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं जिन्नात की तीन क़िस्में हैं- एक तो पंख वाले है, दूसरी क़िस्म साँप और कहते हैं कि तीसरी क़िस्म वह है जो सवारियों पर सवार होते हैं, उतरते हैं वग़ैरह। यह हदीस बहुत ग़रीब है। इब्ने नुऐम से रिवायत है कि जिन्नात की तीन क़िस्में हैं, एक के लिये तो अ़ज़ाब सवाब है, एक आसमान व ज़मीन में उड़ते रहते हैं, एक साँप कुत्ते हैं। इनसानों की भी तीन क़िस्में हैं, एक वे जिन्हें अल्लाह तआ़ला अपने अ़र्श के साये के नीचे जगह देगा जिस दिन सिवाय उसके साये के और कोई साया न होगा। और एक क़िस्म चौपायों (जानवरों) के जैसी है बल्कि उनसे भी बुरी, और तीसरी क़िस्म इनसानी सूरतों में शैतानी दिल रखने वाले। हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि जिन्नात इब्लीस की औलाद में से हैं और इनसान हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से हैं, दोनों में मोमिन भी हैं और काफ़िर भी, अ़ज़ाब सवाब में दोनों शरीक हैं। दोनों के ईमान वाले वलीयुल्लाह (अल्लाह के दोस्त) हैं, और दोनों के बेईमान शैतान हैं।

'महारीब' कहते हैं बेहतरीन इमारतों को, घर के बेहतरीन हिस्से को, मज्लिस की मुख्य जगह को। बक़ौल मुजाहिद रह. उन इमारतों को जो महलों से कम दर्जे की हों। इमाम ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं- मस्जिदों को। क़तादा रह. कहते हैं बड़े-बड़े महल और मस्जिदों को। इब्ने ज़ैद कहते हैं कि घरों को। "तमासील' कहते हैं तस्वीरों को, ये ताँबे की थीं। बक़ौल क़तादा रह. वह मिट्टी और शीशे की थीं। 'जवाब' बहुवचन है 'जाबियतुन' की, जाबिया उस हौज़ को कहते हैं जिसमें पानी आता रहता है, यह तालाब की तरह की थीं, बहुत बड़े-बड़े लगन थे ताकि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की बहुत बड़ी फ़ौज के लिये एक ही वक़्त में बहुत सारा खाना तैयार हो सके और उनके सामने लाया जा सके और जमी हुई देंगे जो भारी और बड़ी होने की वजह से इधर-उधर नहीं जा सकती थीं। उनसे ख़ुदा ने फ़रमा दिया था कि दीन व दुनिया की जो नेमतें दे रखी हैं उन पर मेरा शुक्र करो। शुक्र जिस तरह क़ौल व इरादे से होता है फ़ेल (अ़मल) से भी होता है। जैसे शायर का क़ौल है:

اَفَادَتْكُمُ النَّعْمَآءُ مِنِّىْ ثَلَاثَةً   يَدِىْ وَلِسَانِىْ وَالضَّمِيْرُ الْمُحَجَّبَا

इसमें भी शायर नेमतों का शुक्र तीनों तरह मानता है। फ़ेल (अ़मल) से, ज़बान से और दिल से।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान सुलमी से मन्क़ूल है कि नमाज़ भी शुक्र है, रोज़ा भी शुक्र है और भला अ़मल जिसे तू अल्लाह के लिये करे, शुक्र है। और सबसे अफ़ज़ल शुक्र हम्द (अल्लाह की तारीफ़) है। मुहम्मद बिन कअ़ब क़ुरज़ी फ़रमाते हैं- शुक्र अल्लाह तआ़ला का तक़वा और नेक अ़मल है। आले दाऊद दोनों तरह का

शुक्र अदा करती थी, क़ौल से भी और फ़ेल से भी। साबित बनानी रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी अहल व अयाल, औलाद और औरतों पर इस तरह वक़्तों की पाबन्दी के साथ नफ़िल नमाज़ तक़सीम की थी कि हर वक़्त कोई न कोई नमाज़ में मशग़ूल नज़र आता।

बुख़ारी व मुस्लिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला को सबसे ज़्यादा पसन्द हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की नमाज़ थी। आप आधी रात को सोते, तिहाई रात क़ियाम करते और छठा हिस्सा सो रहते। इसी तरह सब रोज़ों से ज़्यादा महबूब रोज़े भी ख़ुदा तआला को आप ही के थे। आप एक दिन रोज़े से रहते और एक दिन बेरोज़ा रहते। एक ख़ूबी आप में यह भी थी कि दुश्मन से जिहाद के वक़्त मुँह न फेरते। इब्ने माजा में है कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की वालिदा ने आपसे फ़रमाया- रात को बहुत न सोया करो, रात को ज़्यादा नींद इनसान को क़ियामत के दिन फ़क़ीर बना देती है।

इब्ने अबी हातिम में इस मौक़े पर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की एक लम्बी और तफ़सीली हदीस है, इसी किताब में यह भी है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ किया कि रब्बुल-आलमीन! तेरा शुक्र कैसे अदा होगा, शुक्रगुज़ारी ख़ुद तेरी एक नेमत है। जवाब मिला अब तूने मेरी शुक्रगुज़ारी अदा कर ली, जबकि तूने इसे जान लिया कि तमाम नेमतें मेरी ही तरफ़ से हैं। फिर एक वाक़िए की ख़बर दी जाती है कि बन्दों में से शुक्रगुज़ार बन्दे बहुत ही कम हैं।

फिर जब हमने उन पर मौत का हुक्म जारी कर दिया तो किसी चीज़ ने उनके मरने का पता न बतलाया मगर घुन के कीड़े ने, कि वह सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की लाठी को खाता था। सो जब वह गिर पड़े तब जिन्नात को हक़ीक़त मालूम हुई कि अगर वे ग़ैब जानते होते तो इस ज़िल्लत की मुसीबत में न रहते। (14)	فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَن لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝

सुलैमान अलैहिस्सलाम की वफ़ात और शैतानों की बेबसी

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की मौत की कैफ़ियत बयान हो रही है, और यह भी कि जो जिन्नात उनके फ़रमान के मातहत काम-काज में लगे हुए थे, उन पर उनकी मौत कैसे नामालूम रही। वह इन्तिक़ाल के बाद भी लकड़ी को टेके खड़े ही रहे, और ये उन्हें ज़िन्दा समझते हुए सर झुकाये अपने सख़्त कामों में मशग़ूल रहे। मुजाहिद रह. वग़ैरह फ़रमाते हैं, तक़रीबन साल भर इसी तरह गुज़रा, जिस लकड़ी के सहारे आप खड़े थे जब उसे दीमक चाट गई और वह खोखली हो गई तो आप गिर पड़े। अब जिन्नात और इनसान को आपकी मौत का पता चला, तब तो न सिर्फ़ इनसानों को बल्कि ख़ुद जिन्नात को भी यक़ीन हो गया कि उनमें से कोई ग़ैब का जानने वाला नहीं।

एक मरफ़ूअ़ मुन्कर और ग़रीब हदीस में है, लेकिन तहक़ीक़ी बात यह है कि इसका मरफ़ूअ़ होना ठीक नहीं। फ़रमाते हैं कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम जब नमाज़ पढ़ते तो एक दरख़्त अपने सामने देखते,

Maktab E Ashraf

उससे पूछते कि तू कैसा दरख़्त है? तेरा क्या नाम है? वह बता देता, आप उसे उसी इस्तेमाल में लाते। एक मर्तबा जब नमाज़ को खड़े हुए और इसी तरह एक दरख़्त (पेड़/पौधे) को देखा तो पूछा तेरा नाम क्या है? उसने कहा ज़रूब। पूछा किस लिये है? कहा इस घर को उजाड़ने के लिये। तब आपने दुआ माँगी कि खुदाया! मेरी मौत की ख़बर जिन्नात पर ज़ाहिर न होने दे ताकि इनसानों को यक़ीन आ जाये कि जिन्न ग़ैब नहीं जानते। अब आप उस लकड़ी पर टेक लगाकर खड़े हो गये और जिन्नात को बहुत ही मुश्किल काम सौंप दिये। आपका इन्तिक़ाल हो गया लेकिन लकड़ी के सहारे आप वैसे ही खड़े रहे। जिन्नात देखते रहे और समझते रहे कि आप ज़िन्दा हैं। अपने-अपने काम में मशग़ूल रहे। पूरा एक साल हो गया, चूँकि दीमक आपकी लकड़ी को चाट रही थी, साल भर गुज़रने पर वह उसे खा गई। अब हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम गिर पड़े और इनसानों ने जान लिया कि जिन्नात ग़ैब नहीं जानते। वरना साल भर तक इस मुसीबत में न रहते। लेकिन इसका रावी अ़ता बिन मुस्लिम ख़ुरासानी की बाज़ हदीसों में नकारत (मुन्कर होना) होती थी। बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से मन्क़ूल है कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की आ़दत थी, आप साल साल या कम व ज़्यादा मुद्दत के लिये मस्जिदे अक़्सा में एतिकाफ़ में बैठ जाते, आख़िरी मर्तबा इन्तिक़ाल के वक़्त भी आप बैतुल-मुक़द्दस में थे, हर सुबह एक दरख़्त (पौधा) आपके सामने ज़ाहिर होता, आप उससे नाम पूछते, फ़ायदा पूछते, वह बताता आप उसी काम में लाते। आख़िरकार एक दरख़्त नाज़िल हुआ जिसने अपना नाम ज़रूबा बताया, कहा तू किस मतलब का है? कहा इस मस्जिद के उजाड़ने के लिये। हज़रत सुलैमान समझ गये, फ़रमाने लगे मेरी ज़िन्दगी में तो यह मस्जिद वीरान होगी नहीं, अलबत्ता तू मेरी मौत और वीरानी के लिये है। चुनाँचे आपने उसे अपने बाग़ में लगा दिया। मस्जिद के बीच की जगह में खड़े होकर लकड़ी के सहारे नमाज़ शुरू कर दी, वहीं इन्तिक़ाल हो गया, लेकिन किसी को उसका इल्म न हुआ। शयातीन सब के सब अपनी ड्यूटी बजा लाते रहे कि ऐसा न हो हम सुस्ती करें और ख़ुदा के रसूल आ जायें तो हमें सज़ा दें, ये मेहराब के आगे पीछे आये। उनमें से जो एक बहुत बड़ा शैतान था उसने कहा देखो इसमें आगे और पीछे सुराख़ हैं, अगर मैं यहाँ से जाकर वहाँ से निकल आऊँ तो मेरी ताक़त मानोगे या नहीं? चुनाँचे वह निकल गया और निकल आया। लेकिन उसे हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की आवाज़ न आई, देख तो सकते न थे क्योंकि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ निगाह भरकर देखते ही वे मार जाते थे, लेकिन उसके दिल में कुछ ख़्याल सा गुज़रा, उसने फिर जुर्रत की और मस्जिद में चला गया, देखा कि वहाँ जाने के बाद भी वह न जला तो उसकी हिम्मत और बढ़ गई और उसने निगाह भरकर आपको देखा तो देखा कि वह गिर पड़े और इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं।

अब आकर सबको ख़बर की, लोग आये मेहराब खोला तो वाक़ई ख़ुदा के रसूल को ज़िन्दा न पाया, आपको मस्जिद से निकाल लाये। इन्तिक़ाल की मुद्दत का इल्म हासिल करने के लिये उन्होंने उसी लकड़ी को दीमक के सामने डाल दिया, एक दिन रात में जिस क़द्र दीमक ने उसको खाया उसे देखकर अन्दाज़ा किया तो मालूम हुआ कि आपके इन्तिक़ाल को पूरा एक साल गुज़र चुका है, तमाम लोगों को उस वक़्त कामिल यक़ीन हो गया कि जिन्नात जो कहते थे कि हम ग़ैब की ख़बरें जानते हैं, यह तो बिल्कुल ढोंग था। वरना साल भर तक क्यों मुसीबत पीटते रहते। उस वक़्त से जिन्नात घुन के कीड़े को मिट्टी और पानी ला दिया करते हैं। गोया उसका शुक्रिया अदा करते हैं।

कहा यह भी था कि अगर तू कुछ खाता पीता तो हम बेहतर से बेहतर ग़िज़ा (खाने की चीज़) तुझे पहुँचाते। लेकिन हैं ये सब बातें बनी इस्राईल के उलेमा की, इनमें से जो मुताबिक़े हक़ हों क़बूल, ख़िलाफ़े

हक़ हों मरदूद, और जो दोनों से अलग हों वे न तस्दीक़ के क़ाबिल न तकज़ीब के। वल्लाहु आलम।

हज़रत ज़ैद बिन असलम से मन्क़ूल है कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने मलकुल-मौत से कह रखा था कि मेरी मौत से कुछ पहले बता देना। हज़रत मलकुल-मौत ने यही किया तो आपने जिन्नात को बग़ैर दरवाज़े के एक शीशे का मकान बनाने का हुक्म दिया और उसमें एक लकड़ी पर टेक लगाकर नमाज़ शुरू की, यह मौत के डर की वजह से न था। हज़रत मलकुल-मौत अपने वक़्त पर आये और रूह क़ब्ज़ कर गये। फिर लकड़ी के सहारे आप साल भर तक इसी तरह खड़े रहे। जिन्नात इधर-उधर से देखकर आपको ज़िन्दा समझकर अपने कामों में आपकी हैबत (डर और रौब) की वजह से मशग़ूल रहे। लेकिन जो कीड़ा आपकी लकड़ी को खा रहा था जब वह आधी खा चुका तो अब लकड़ी बोझ सहार न सकी और आप गिर पड़े, जिन्नात को आपकी मौत का यक़ीन हो गया और वे भाग खड़े हुए। और भी बहुत से बुज़ुर्गों और पहले उलेमा से यह बात नक़ल की गयी है।

सबा (के लोगों) के लिए उनके वतन (की मज्मूई हालत) में निशानियाँ मौजूद थीं। दो क़तारें थीं बाग़ की दाएँ और बाएँ, अपने रब का (दिया हुआ) रिज़्क़ खाओ और उसका शुक्र अदा करो (कि रहने को) उम्दा शहर (दिया) और बख़्शने वाला, परवर्दिगार है। (15) सो उन्होंने नाफ़रमानी की तो हमने उन पर बन्द का सैलाब छोड़ दिया। और हमने उनके उन दो तरफ़ा बाग़ों के बदले और दो बाग़ दिए जिनमें ये चीज़ें रह गईं- बदमज़ा फल और झाव और थोड़ी-सी बेरी। (16) उनको यह सज़ा हमने उनकी नाशुक्री के सबब दी। और हम ऐसी सज़ा बड़े नाशुक्रे ही को दिया करते हैं। (17)	لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِىْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ۬ؕ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ۝ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَىْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَىْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ۝ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ وَهَلْ نُجٰزِىْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ۝

क़ौमे सबा का ज़िक्र

क़ौमे सबा यमन में रहती थी। 'तुब्बा' भी उनमें से ही थे। बिल्क़ीस भी उन्हीं में से थीं। ये बड़ी नेमतों और राहतों में थे, चैन व आराम से ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। ख़ुदा के रसूल उनके पास आये, उन्हें शुक्र करने की तल्क़ीन (हिदायत) दी। रब की वह्दानियत (अल्लाह के एक होने) की तरफ़ बुलाया, उसकी इबादतें समझाईं तो कुछ ज़माने तक यूँ ही रहे लेकिन फिर जब कि उन्होंने नाफ़रमानी और रू-गर्दानी की। अल्लाह के अहकाम बेपरवाही से टाल दिये तो उन पर ज़ोर का सैलाब आया और तमाम मुल्क, बाग़ात और खेतियाँ वग़ैरह हलाक व बरबाद हो गईं, जिसकी तफ़सील यह है।

रसूले ख़ुदा सल्ल. से सवाल हुआ कि सबा किसी औ़रत का नाम है या मर्द का? या जगह का? आपने फ़रमाया यह एक मर्द था जिसके दस लड़के थे, जिनमें से छह तो यमन में जा बसे थे और चार शाम

(सीरिया) में। मिज़्हज, किन्दा, अज़्द, अश्अरियून, अनमार व हमीर, ये छह क़बीले यमन में लख़्म जुज़ाम, आमिला और ग़स्सान, ये चार क़बीले शामी हैं। (मुस्नद अहमद)

फ़रवा बिन मुसैक रज़ि. फ़रमाते हैं- मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से पूछा क्या मैं अपनी क़ौम में से मानने वालों और आगे बढ़ने वालों को लेकर न मानने वालों और पीछे हटने वालों से लड़ूँ? आपने फ़रमाया हाँ। जब मैं जाने लगा तो आपने बुलाकर फ़रमाया- देखो पहले उन्हें इस्लाम की दावत देना, न मानें तब जिहाद की तैयारी करना। मैंने कहा हुज़ूर! यह सबा किसका नाम है? इस पर आप सल्ल. ने जो जवाब दिया वह तक़रीबन वही है जो मज़कूर हुआ है। उसमें यह भी है कि क़बीला-ए अस्मा में से बुजैला और ख़स्अम भी हैं। एक और तफ़सीली रिवायत में इस आयत के शाने नुज़ूल के मुताल्लिक़ इसी के साथ है कि फ़रवा रज़ि. ने नबी करीम सल्ल. से कहा या रसूलल्लाह! जाहिलीयत के ज़माने में क़ौमे सबा की इज़्ज़त थी, मुझे अब उनके इर्तिदाद (दीन से फिर जाने) का ख़ौफ़ है, तो अब अगर आप इजाज़त दें तो मैं उनसे जिहाद करूँ। आपने फ़रमाया उनके बारे में मुझे हुक्म नहीं दिया गया। पस यह आयत उतरी......।

लेकिन इसमें ग़राबत है। इससे तो यह पाया जाता है कि यह आयत मदनी है हालाँकि यह सूरत मक्किया है। मुहम्मद बिन इस्हाक़ 'सबा' का नसब-नामा इस तरह बयान करते हैं- अ़ब्दे शम्स बिन यश्जब बिन यअ़रब बिन क़हतान, इसे सबा इसलिये कहते हैं कि इसी ने सबसे पहले अ़रब में दुश्मन क़ैद करने का रिवाज निकाला और इसी ने सबसे पहले माले ग़नीमत को फ़ौजियों में तक़सीम करने का रिवाज डाला। इस वजह से उसे राईश भी कहते हैं। माल को रेश और रियाश भी कहते हैं। यह भी मज़कूर है कि उस बादशाह ने नबी करीम सल्ल. के तशरीफ़ लाने से पहले ही आपकी पेशीनगोई (भविष्यवाणी) की थी कि मुल्क का मालिक हमारे बाद एक नबी होगा जो हरम की इज़्ज़त करेगा, उसके बाद उसके ख़ुलफ़ा (जानशीन) होंगे, जिनके सामने दुनिया के बादशाह सर झुका लेंगे, फिर हम में भी बादशाहत आयेगी और बनू क़हतान के नेक बादशाह होंगे। उस नबी का नाम अहमद होगा (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)। काश कि मैं भी उनके नुबुव्वत के ज़माने को पा लेता तो हर तरह की ख़िदमत को ग़नीमत समझता।

लोगो! जब भी अल्लाह के रसूल ज़ाहिर हों तो तुम पर फ़र्ज़ है कि उनका साथ दो, उनके मददगार बन जाओ और जो भी आपसे मुलाक़ात करे उस पर मेरी जानिब से फ़र्ज़ है कि वह आपकी ख़िदमत में मेरा सलाम पहुँचा दे। (अक़ील हमदानी)

क़हतान के बारे में तीन क़ौल हैं, एक यह कि वह इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की नस्ल में से है। दूसरा यह कि वह आ़बिर यानी हूद अ़लैहिस्सलाम की नस्ल में से है। तीसरा यह कि हज़रत इस्माईल बिन इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से है। इन सब को तफ़सील के साथ हाफ़िज़ अ़ब्दुल-बर्र रह. ने अपनी किताबे 'अल-इश्बाह' में ज़िक्र किया है। बाज़ रिवायतों में जो आया है कि सबा अ़रब में से थे इसका मतलब यह है कि उन लोगों में से जिनकी नस्ल से अ़रब हुए उनका नस्ले इब्राहीमी में से होना मशहूर नहीं। वल्लाहु आलम। सही बुख़ारी में है, क़बीला-ए-असलम जब तीरों से निशाने बाज़ी कर रहे थे और हुज़ूर सल्ल. उनके पास से निकले तो आपने फ़रमाया ऐ औलादे इस्माईल! तीर-अन्दाज़ी किये जाओ तुम्हारे वालिद भी पूरे तीर-अन्दाज़ थे। इससे तो मालूम होता है कि सबा का सिलसिला-ए-नसब ख़लीलुल्लाह तक पहुँचता है। असलम अन्सार का एक क़बीला था और अन्सार सारे के सारे ग़स्सान में से हैं। और ये सब यमनी थे, सबा की औलाद हैं, ये लोग मदीने में उस वक़्त आये थे जब सैलाब से इनका वतन तबाह हो गया। एक जमाअ़त यहाँ आकर बसी थी, दूसरी शाम चली गई। इन्हें ग़स्सानी इसलिये कहते हैं कि इसी नाम की पानी

वाली एक जगह पर ये ठहरे थे, यह भी कहा गया है कि यह मुशल्लल के क़रीब है।

हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि. के शे'र से भी इसका सुबूत मिलता है कि एक पानी वाली जगह या उस कुएँ का नाम ग़स्सान था। यह जो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि उसकी दस औलाद थीं, इससे मुराद सुलबी (अपनी पुश्त की) औलादें नहीं। क्योंकि बाज़े तो दो दो तीन तीन नस्लों बाद के भी हैं। जैसे कि नसबों की किताबों में मौजूद है, ये जो शाम और यमन में जाकर आबाद हुए यह भी सैलाब आने के बाद का ज़िक्र है। बाज़ वहीं रहे, बाज़ इधर-उधर चले गये।

दीवार का क़िस्सा यह है कि उनके दोनों जानिब पहाड़ थे जहाँ से नहरें और चश्मे बह-बहकर उनके शहरों में आते थे इसी तरह नाले भी और दरिया भी इधर-उधर से आते थे। उनके क़दीमी बादशाहों में से किसी ने दोनों पहाड़ों के दरमियान एक मज़बूत पुश्ता बनवा दिया था। जिस दीवार की वजह से पानी इधर-उधर हो गया था और ख़ूबसूरत दरिया जारी रहा करता था, जिसके दोनों जानिब बाग़ात और खेतियाँ लगा दी थीं। पानी की कसरत और ज़मीन की उम्दगी की वजह से यह ख़ित्ता बहुत ही ज़ेरख़ेज़ (उपजाऊ) और हरा-भरा रहा करता था। यहाँ तक कि हज़रत क़तादा रह. का बयान है कि कोई औरत अपने सर पर झिल्ली रखकर चलती थी कुछ दूर जाने तक वह झिल्ली फलों से बिल्कुल भर जाती थी। दरख़्तों से जो फल ख़ुद-ब-ख़ुद झड़ते थे वे इस क़द्र कसरत से होते थे कि हाथ से तोड़ने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। यह दीवार मारिब में थी जो सनआ से तीन मन्ज़िल पर थी और सद-मारिब के नाम से मशहूर थी। पानी-हवा की उम्दगी मिज़ाज की सेहत और एतिदाल इनायते ख़ुदावन्दी से इस तरह था कि उनके यहाँ मक्खी मच्छर और ज़ेहरीले जानवर भी न होते थे। यह इसलिये था कि वे लोग ख़ुदा की तौहीद को मानें और उसकी ख़ुलूस के साथ इबादत करें। यह थी वह क़ुदरत की निशानी जिसका ज़िक्र आयत में है कि दोनों पहाड़ों के दरमियान आबाद बस्ती और बस्ती के दोनों तरफ़ हरे-भरे फलदार बाग़ात और सरसब्ज़ खेतियाँ, उनसे अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया था कि अपने रब की दी हुई रोज़ियाँ खाओ पियो और उसके शुक्र में लगे रहो। लेकिन उन्होंने ख़ुदा की तौहीद को और उसकी नेमतों के शुक्र के भुला दिया और सूरज की परस्तिश करने लगे जैसा कि हुदहुद ने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को ख़बर दी थीः

جِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ.............الخ

यानी मैं तुम्हारे पास सबा की एक पुख़्ता ख़बर लाया हूँ। एक औरत उनकी बादशाहत कर रही है, जिसके पास तमाम चीज़ें मौजूद हैं और अज़ीमुश्शान तख़्ते सल्तनत पर वह ब्राजमान है। शहज़ादी और रियाया सब सूरज-परस्त (सूरज को पूजने वाले) हैं। शैतान ने उनको गुमराह कर रखा है, बेराह हो रहे हैं।

मन्क़ूल है कि बारह या तेरह पैग़म्बर उनके पास आये थे आख़िरकार शामते आमाले रंग लाई जो दीवार उन्होंने बना रखी थी उसे चूहों ने अन्दर से खोखली कर दी और बारिश के ज़माने में वह टूट गई, पानी की रेल-पेल हो गई। उन दरियों के चश्मों के बारिश के नालों के सब पानी आ गये। उनकी बस्तियाँ उनके महल उनके बाग़ात और उनकी खेतियाँ सब तबाह व बरबाद हो गईं। हाथ मलते रह गये, कोई तदबीर कारगार न हुई, फिर तो वह तबाही आई कि उस ज़मीन पर कोई फलदार दरख़्त जमता ही नहीं था। पीलू के, झाऊ के, कीकर के, बबूल के और ऐसे ही बेमज़ा बेकार दरख़्त उगते थे। हाँ अलबत्ता कुछ बेरियों के दरख़्त उग आये थे जो और दरख़्तों के मुक़ाबले में कारामद थे। लेकिन वह भी बहुत ज़्यादा ख़ारदार (काँटेदार) और बहुत कम फलदार थे। यह था उनके कुफ़्र व शिर्क, सरकशी और तकब्बुर का बदला कि

नेमतें खो बैठे और ज़हमतों में मुब्तला हो गये। काफ़िरों को यही और इस जैसी ही सख़्त सज़ायें दी जाती हैं। हज़रत इब्ने ख़ैरा रह. फ़रमाते हैं कि गुनाहों का बदला यही होता है कि इबादतों में सुस्ती आ जाये, रोज़गार में तंगी वाके हो, लज़्ज़तें ख़त्म हो जायें। यानी जहाँ किसी राहत का मुँह देखा कि कोई ज़हमत आ पड़ी, मज़ा तल्ख़ (कड़वा और ख़राब) हो गया।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ۚ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ○ فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ○	और हमने उनके और उन बस्तियों के दरमियान में जहाँ हमने बरकत कर रखी है, बहुत-से गाँव आबाद कर रखे थे जो नज़र आते थे, और हमने उन देहात के दरमियान उनके चलने का एक ख़ास अन्दाज़ रखा था कि बिना किसी डर और ख़ौफ़ के उनमें रातों को और दिनों को चलो। (18) सो वे कहने लगे कि ऐ हमारे रब! हमारे सफ़रों में लम्बाई कर दे, और (इस नाशुक्री के अ़लावा) उन्होंने (और भी नाफ़रमानियाँ करके) अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, सो हमने उनको अफ़साना बना दिया और उनको बिल्कुल तितर-बितर कर दिया। बेशक इस (क़िस्से) में हर साबिर व शाकिर (मोमिन) के लिए बड़ी इब्रतें हैं। (19)

भूली हुई और ज़ेहन से ओझल बात

उन पर जो नेमतें थीं, उनका ज़िक्र हो रहा है कि क़रीब-क़रीब आबादियाँ थीं, किसी मुसाफ़िर को अपने सफ़र में तोशा या पानी ले जाने की ज़रूरत न थी। हर-हर मन्ज़िल पर पुख़्ता मज़ेदार ताज़ा मेवे ख़ुशगवार मीठा पानी मौजूद। रात किसी बस्ती में गुज़ार लें और राहत व आराम अमन व अमान से जायें आयें। कहते हैं कि ये बस्तियाँ सुनआ़ के आस-पास के इलाक़ों में थी। 'बाअ़िद' की दूसरी क़िराअत 'बअ़्अ़िद' है। इस राहत व आराम पर फूल गये और जिस तरह बनी इस्राईल ने 'मन्न' व 'सलवा' के बदले लहसुन प्याज़ वग़ैरह तलब किया था, इन्होंने भी दूर-दराज़ के (यानी लम्बे-लम्बे) सफ़र तय करने की तमन्ना की, ताकि दरमियान में जंगल आये, ग़ैर-आबाद जगहें भी आयें, घूमने-फिरने का लुत्फ़ आ जाये। क़ौमे मूसा की इस तलब ने उन पर ज़िल्लत और मस्कनत (तंगी) डाली। इसी तरह उन्हें भी रोज़ी की फ़राख़ी के बाद हलाकत मिली। भूख और ख़ौफ़ में पड़े। इत्मीनान और अमन तबाह हुआ। उन्होंने कुफ़्र करके ख़ुद अपना ही बिगाड़ा। अब उनकी कहानियाँ रह गईं, लोगों में उनके अफ़साने रह गये। तितर-बितर हो गये, यहाँ तक कि जो क़ौम तीन तेरह हो जाये तो अ़रब में उन्हें सबा वालों की कहावतें सुनाते हैं।

हज़रत इक्रिमा रह. उनका क़िस्सा बयान फ़रमाते हुए कहते हैं कि उनमें एक काहिना और एक काहिन (जिन्नात के द्वारा मालूम करके ग़ैब की ख़बरें बताने वाले अर्थात ज्योतिषी) थे, जिनके पास जिन्नात इधर-उधर की ख़बरें लाया करते थे। उस काहिन को कहीं से पता चल गया कि इस बस्ती की वीरानी

(तबाही) का ज़माना क़रीब आ गया है और यहाँ के लोग हलाक होने वाले हैं। था यह बड़ा मालदार ख़ुसूसन जायदाद बहुत सारी थी, इसने सोचा कि मुझे क्या करना चाहिये और इन हवेलियों मकानात और बाग़ात के बारे में क्या इन्तिज़ाम करना चाहिये? आख़िर एक बात उसकी समझ में आ गई। उसकी ससुराल के लोग बहुत सारे थे और वह क़बीला भी बहादुर व मालदार था। उसने अपने लड़के को बुलाया और उससे कहा, सुनो! कल लोग मेरे पास जमा हो जायेंगे मैं तुझे किसी काम को कहूँगा तू इनकार कर देना, मैं तुझे बुरा-भला कहूँगा तू भी मुझे मेरी गालियों का जवाब देना, मैं उठकर तुझे थप्पड़ मारूँगा तू भी उसके जवाब में मुझे थप्पड़ मारना। उसने कहा अब्बा जी! मुझसे यह कैसे हो सकेगा? काहिन ने कहा तुम नहीं समझते एक ऐसा ही अहम मामला दरपेश है और तुम्हें मेरा हुक्म मानना चाहिये। उसने इक़रार किया।

दूसरे दिन जबकि उसके पास उसके मिलने-जुलने वाले सब जमा हो गये, उसने अपने लड़के से किसी काम को कहा। उसने साफ़ इनकार कर दिया, इसने उसे गालियाँ दीं, तो उसने भी सामने से गालियाँ दीं। यह ग़ुस्से में उठा और उसे मारा, लड़के ने भी पलट कर इसे पीटा, यह और ग़ज़बनाक (ग़ुस्से में) हुआ और कहने लगा छुरी लाओ मैं इसे ज़िबह करूँगा। तमाम लोग घबरा गये, बहुत समझाया लेकिन यह यही कहता रहा कि मैं तो इसे ज़िबह करूँगा। लोग दौड़े भागे और लड़के के ननिहाल वालों को ख़बर की, वे सब आ गये। पहले तो मिन्नत समाजत से मनाना चाहा लेकिन यह कब मानता था, उन्होंने कहा आप इसे और कोई सज़ा दीजिये, इसके बदले हमें जो चाहे सज़ा दीजिये। लेकिन इसने कहा मैं तो इसे लिटाकर ज़िबह करूँगा। उन्होंने कहा आप ऐसा नहीं कर सकते, इससे पहले हम आपको मार डालेंगे। उसने कहा अच्छा जब यहाँ तक बात पहुँच गई है तो मैं ऐसे शहर में नहीं रहना चाहता जहाँ मेरे और मेरी औलाद के दरमियान और लोग पड़ें। मुझसे मेरे मकानात जायदादें और ज़मीनें ख़रीद लो, मैं यहाँ से कहीं और चला जाता हूँ। चुनाँचे उसने सब कुछ बेच डाला और क़ीमत नक़द वसूल कर ली।

जब इस तरफ़ से इत्मीनान हो गया तो उसने अपनी क़ौम को ख़बर दी कि सुनो! अल्लाह का अ़ज़ाब आ रहा है, तबाही और ख़ात्मे का वक़्त क़रीब पहुँच चुका है। अब तुम में से जो मेहनत करके लम्बा सफ़र करके नये घरों का इच्छुक हो वह तो अ़म्मान चला जाये और जो कुछ खाने पीने का शौक़ीन हो वह बसरा चला जाये, और जो मज़ेदार खजूरें बाग़ात में बैठकर आज़ादी से खाना चाहता हो वह मदीना चला जाये। क़ौम को उसकी बातों का यक़ीन था जिसे जो जगह पसन्द आई वह उसी तरफ़ मुँह उठाये भागा। कुछ अ़म्मान की तरफ़, कुछ बसरा की तरफ़ और कुछ मदीना की तरफ़। इस तरफ़ (यानी मदीने की तरफ़) तीन क़बीले चले थे 'औस', 'ख़ज़्रज' और 'बनू उस्मान'। जब ये लोग बतने मर्र में पहुँचे तो बनू उस्मान ने कहा- हमें तो यह जगह पसन्द है, अब हम आगे नहीं जायेंगे। चुनाँचे ये यहीं बस गये और इसी वजह से इन्हें ख़ुज़ाआ कहा गया, क्योंकि वे अपने साथियों से पीछे रह गये। औस व ख़ज़्रज मदीना पहुँचे और यहाँ आकर क़ियाम किया।

यह असर (रिवायत और क़ौल) भी अ़जीब व ग़रीब है, जिस काहिन का इसमें ज़िक्र है उसका नाम अ़मर बिन आ़मिर है। यह यमन का एक सरदार था और सबा के बड़े लोगों में से था, और उनका काहिन था। सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि सबसे पहले यही यमन से निकला था, इसलिये कि 'सद्दे मआरिब' (मआरिब की दीवार) को खोखला करते हुए। उसने चूहों को देख लिया था और समझ गया था कि अब यमन की ख़ैर नहीं, जैसे ही यह दीवार गिरी सैलाब सब कुछ अस्त-व्यस्त कर देगा, तो उसने अपने सबसे छोटे लड़के को वह फ़रेब सिखाया जिसका ज़िक्र ऊपर गुज़रा। उस वक़्त उसने ग़ुस्से में कहा कि मैं ऐसे

Maktab_e_Ashraf

शहर में रहना पसन्द नहीं करता, मैं अपनी जायदादें और ज़मीनें इसी वक़्त बेचता हूँ। लोगों ने कहा अ़मर के इस गुस्से को ग़नीमत जानो, चुनाँचे सस्ता महंगा सब कुछ बेच डाला और फ़ारिग़ होकर चल पड़ा। क़बीला-ए-असद भी उसके साथ हो लिया। रास्ते में अक बस्ती वाले उनसे लड़े। बराबर-बराबर लड़ाई रही जिसका ज़िक्र अ़ब्बास बिन मरदास असलमी के शे'रों में भी है।

फिर ये यहाँ से चलकर विभिन्न शहरों में पहुँच गये। 'आले जफ़ना बिन अ़मर बिन आ़मिर' शाम में गये। औस व ख़ज़रज मदीने में, खुज़ाआ मर्रा में, अज़्द सरात में, अज़्द अ़म्मान में। यहाँ सैलाब आया जिसने मआरिब के बन्द को तोड़ दिया। सुद्दी रह. ने इस क़िस्से में बयान किया है कि उसने अपने मुक़ाबले के लिये अपने बेटे को नहीं बल्कि भतीजे को कहा था। बाज़ उलेमा का बयान है कि उसकी औ़रत का नाम तरीफ़ा था उसने अपनी कहानत से यह बात मालूम करके सब को बतलाई थी। एक और रिवायत में है कि अ़म्मान में ग़स्सानी और अज़्द भी हलाक कर दिये गये। बावजूद मीठे और ठंडे पानी की रेल-पेल, फलों और खेतों की बेशुमार रोज़ी के 'सैल-ए-अ़रम" से यह हालत हो गई कि एक-एक लुक़्मे को और एक-एक बूँद को तरस गये। यह पकड़ और अ़ज़ाब, यह तंगी और सज़ा जो उन्हें दी गई उससे हर साबिर व शाकिर इब्रत हासिल कर सकता है कि ख़ुदा की नाफ़रमानियाँ किस तरह इनसान को घेर लेती हैं, आ़फ़ियत को हटाकर आफ़त ले आती हैं। मुसीबतों पर सब्र नेमतों पर शुक्र करने वाले इसमें क़ुदरत की दलीलें पाते हैं।

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- अल्लाह तआ़ला ने मोमिन के लिये हैरत-अंगेज़ फ़ैसला किया है, अगर राहत मिले और यह शुक्र करे तो अज्र पाये और अगर इसे मुसीबत पहुँचे और यह सब्र करे तो अज्र पाये। ग़र्ज़ कि मोमिन को हर हालत में अज्र व सवाब मिलता है। इसका हर काम नेक है, यहाँ तक कि मुहब्बत के साथ जो लुक़मा उठाकर यह अपनी बीवी के मुँह में दे इस पर इसे सवाब मिलता है। (मुस्नद अहमद)

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है, आप फ़रमाते हैं- ताज्जुब है कि मोमिन के लिये ख़ुदा तआ़ला की हर क़ज़ा (फ़ैसला और तक़दीर) भलाई के लिये ही होती है, अगर उसे राहत और ख़ुशी पहुँचती है तो शुक्र करके भलाई हासिल करता है और अगर बुराई और ग़म पहुँचे तो यह सब्र करता है और बदला हासिल करता है। यह नेमत तो सिर्फ़ मोमिन ही को हासिल है कि जिसकी हर हालत में बेहतरी और भलाई होती है। हज़रत मुतर्रिफ़ रह. फ़रमाते हैं कि सब्र व शुक्र करने वाला बन्दा कितना अच्छा है कि जब उसे नेमत मिले तो शुक्र करे और जब ज़हमत (तकलीफ़ व परेशानी) पहुँचे तो सब्र करे।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ○ وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ○ ع ٢ ٨

और वाक़ई शैतान ने उन लोगों के बारे में अपना गुमान सही पाया कि ये सब उसी की राह पर हो लिए, मगर ईमान वालों का गिरोह। (20) और शैतान का उन लोगों पर (बहकाने और गुमराह करने के तौर पर जो) क़ब्ज़ा है, इसके सिवा और किसी वजह से नहीं कि हमको (ज़ाहिरी तौर पर) उन लोगों को जो कि आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से (अलग करके) मालूम करना है जो उसकी तरफ़ से शक में हैं, और आपका रब हर चीज़ का निगराँ है। (21)

Maktab E Ashraf

शैतान का धोखा

क़ौमे सबा के क़िस्से के बयान के बाद शैतान के फ़रेब में आये हुए लोगों का आ़म तौर पर ज़िक्र फ़रमाता है कि वह हिदायत के बदले ज़लालत (गुमराही), भलाई के बदले बुराई ले लेते हैं। इब्लीस ने अल्लाह की बारगाह से धुतकारे जाने के वक़्त जो कहा था कि मैं आदम की औलाद को हर तरह बरबाद करने की कोशिश करूँगा और सिवाय थोड़ी सी जमाअ़त के बाक़ी सब लोगों को तेरी सीधी राह से भटका दूँगा। उसने यह कर दिखाया और आदम की औलाद (इनसानों) को अपने पंजे में फाँस लिया।

जब हज़रत आदम व हव्वा अ़लैहिमस्सलाम अपनी ख़ता की वजह से जन्नत से उतार दिये गये और इब्लीस मरदूद भी उनके साथ उतरा, उस वक़्त वह बहुत ख़ुश था और दिल में इठला (ख़ुश हो) रहा था कि इन्हें मैंने बहका लिया तो इनकी औलाद को तबाह करना तो मेरे बायें हाथ का खेल है। इस ख़बीस का क़ौल था कि मैं आदम की औलाद को सब्ज़ बाग़ दिखाता रहूँगा, ग़फ़लत में रखूँगा, तरह-तरह के धोखे दूँगा और अपने जाल में फंसाये रखूँगा। जिसके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया था- मुझे भी अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम है कि मौत के ग़रग़रे से पहले जब कभी वह (यानी आदम की औलाद में से कोई) तौबा करेगा मैं फ़ौरन क़बूल कर लूँगा। वह मुझे पुकारेगा तो मैं उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाऊँगा, मुझसे जब कभी जो कुछ माँगेगा मैं उसे दूँगा। मुझसे वह बख़्शिश तलब करेगा तो मैं उसे बख़्श दूँगा। (इब्ने अबी हातिम)

उसका कोई ग़लबा, हुज्जत, ज़बरदस्ती मारपीट इनसान पर न थी, सिर्फ़ धोखा फ़रेब और मक्रबाज़ी थी। जिसमें ये सब फंस गये। इसमें अल्लाह की यह हिक्मत थी कि मोमिन व काफ़िर ज़ाहिर हो जायें, अल्लाह की हुज्जत पूरी और ख़त्म हो जाये। आख़िरत को मानने वाले शैतान की नहीं मानेंगे। उसके मुन्किर (इनकारी) रहमान की इत्तिबा नहीं करेंगे। ख़ुदा हर चीज़ पर निगहबान (निगरानी करने वाला) है। मोमिनों की जमाअ़त उसकी हिफ़ाज़त का सहारा लेती है। इसलिये इब्लीस उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। और काफ़िरों की जमाअ़त ख़ुद ख़ुदा को छोड़ देती है, इसलिये उन पर से ख़ुदा तआ़ला की निगहबानी हट जाती है और वे शैतान के हर फ़रेब का शिकार बन जाते हैं।

आप फ़रमा दीजिए कि जिनको तुम ख़ुदा के सिवा (ख़ुदाई में दख़ील) समझ रहे हो उनको पुकारो, वे ज़र्रा बराबर इख़्तियार नहीं रखते, न आसमानों में और न ज़मीन में, और न उनकी उन दोनों (के पैदा करने) में कोई शिर्कत है, और न उनमें से कोई अल्लाह का (किसी काम में) मददगार है। (22) और ख़ुदा के सामने (किसी की) सिफ़ारिश किसी के लिए काम नहीं आती मगर उसके लिए जिसके मुताल्लिक़ (सिफ़ारिश करने वाले को) वह इजाज़त दे दे।	قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ۝ وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ۭ حَتّٰٓى

यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है तो एक-दूसरे से पूछते हैं कि तुम्हारे परवर्दिगार ने क्या हुक्म फ़रमाया? वे कहते हैं कि (फ़ुलानी) हक़ बात का हुक्म फ़रमाया, और वह आलीशान, सबसे बड़ा है। (23)	اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا لا قَالَ رَبُّكُمْ ط قَالُوا الْحَقَّ ج وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ٥

Maktab e Ashraf

अल्लाह एक है

बयान हो रहा है कि अल्लाह एक है, वाहिद है, अहद है, फ़र्द है, समद है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसका कोई नज़ीर नहीं, वह शरीक से बरी और बेमिस्ल है, उसका कोई साझी नहीं, साथी नहीं, मुशीर (सलाहकार) नहीं, वज़ीर नहीं, मददगार व पुश्तीबान (पीछा संभालने वाला) नहीं, फिर ज़िद करने वाला और ख़िलाफ़ कहने वाला तो कहाँ? जिन-जिनको पुकारते हो पुकार कर देख लो तो मालूम हो जायेगा कि वे एक ज़र्रे के भी मुख़्तार (मालिक) नहीं, महज़ बेबस और बिल्कुल मोहताज व आजिज़ हैं, न ज़मीनों में उनकी कुछ चलती है न आसमानों में। जैसे एक और आयत में है:

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ.

कि वे एक खजूर के छिलके के भी मालिक नहीं, और यही नहीं कि उन्हें ख़ुद इख़्तियारी हुकूमत न हो न सही शिर्कत के तौर पर ही हो, नहीं शिर्कत के तौर पर नहीं। न ख़ुदा तआ़ला उनसे अपने किसी काम में मदद लेता है। बल्कि ये तो सब के सब फ़क़ीर मोहताज हैं, उसके दर के ग़ुलाम और उसके बन्दे हैं। उसकी बड़ाई व किब्रियाई और इज़्ज़त व अ़ज़मत ऐसी है कि बग़ैर उसकी इजाज़त के किसी को जुर्रत नहीं कि उसके सामने किसी की सिफ़ारिश के लिये भी जुर्रत कर सके। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमान है:

مَنْ ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلَّا بِاِذْنِهٖ.

कौन है जो उसके सामने किसी की शफ़ाअ़त बग़ैर उसकी रज़ामन्दी के कर सके? एक और आयत अल्लाह का इरशाद है:

كَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ......... الخ

यानी आसमानों के फ़रिश्ते भी उसके सामने किसी की शफ़ाअ़त के लिये लब हिला नहीं सकते, मगर जिसके लिये ख़ुदा अपनी रज़ामन्दी से इजाज़त दे दे। एक और जगह फ़रमान है:

وَلَا يَشْفَعُوْنَ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى........ الخ

वे लोग सिर्फ़ उनकी शफ़ाअ़त कर सकते हैं जिनके लिये ख़ुदा की रज़ामन्दी हो। वे तो ख़ुद ही उसके ख़ौफ़ से थर्रा रहे होंगे, तमाम इनसानों के सरदार सबसे बड़े शफ़ी और सिफ़ारिशी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल. भी जब क़ियामत के दिन मक़ामे महमूद में शफ़ाअ़त के लिये तशरीफ़ ले जायेंगे कि अल्लाह तआ़ला आये और मख़्लूक़ के फ़ैसले करे। उस वक़्त के बारे में आप फ़रमाते हैं कि मैं अल्लाह तआ़ला के सामने सज्दे में गिर पड़ूँगा, ख़ुदा ही जानता है कि कब तक सज्दे में पड़ा रहूँगा। उस सज्दे में इस क़द्र अपने रब की तारीफ़ करूँगा कि इस वक़्त तो वे अलफ़ाज़ भी मुझे मालूम नहीं। फिर मुझसे कहा जायेगा ऐ मुहम्मद!

Maktab E Ashraf

अपना सर उठाईये, आप बात कीजिये आपकी बात सुनी जायेगी। आप माँगिये आपको दिया जायेगा, आप शफ़ाअ़त कीजिये क़बूल की जायेगी........।

रब तआ़ला की बड़ाई का एक और मक़ाम बयान हो रहा है कि जब वह अपनी 'वही' में कलाम करता है और आसमानों के मुक़र्रब फ़रिश्ते उसे सुनते हैं तो उसकी हैबत व जलाल से काँप उठते हैं और बेहोशी जैसी हालत में हो जाते हैं। जब उनके दिलों से घबराहट जाती है तो अब आपस में एक दूसरे से दरियाफ़्त करते हैं कि इस वक़्त रब का क्या हुक्म नाज़िल हुआ? पस अ़र्ज़ करने वाले अपने पास वालों को, वे अपने पास वालों को यूँ ही दर्जा ब दर्जा हुक्मे ख़ुदा पहुँचा देते हैं, बिना किसी कमी बेशी के ठीक-ठीक उसी तरह पहुँचा देते हैं।

एक मतलब इस आयत का यह भी बयान किया गया है कि जब सकरात (जान निकलने) का वक़्त आता है उस वक़्त मुश्रिक यह कहते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया? जवाब मिलेगा हक़ फ़रमाया, हक़ फ़रमाया और जिस चीज़ से दुनिया में बेफ़िक्र थे आज उनके सामने पेश कर दी जायेगी। तो दिलों से घबराहट दूर किये जाने के यह मायने हुए कि जब आँखों पर से पर्दा उठा दिया जायेगा, उस वक़्त सब शक व तकज़ीब (यानी आख़िरत में शक करना और उसके नबियों को झुठलाना) दूर हो जायेगा। शैतान के वस्वसें दूर हो जायेंगे। उस वक़्त रब की मुद्दतों की हक़्क़ानियत तस्लीम करेंगे और उसकी बुलन्दी और बड़ाई के क़ायल होंगे। पस न तो मौत के वक़्त इक़रार नफ़ा देगा न क़ियामत के मैदान का इक़रार फ़ायदा पहुँचायेगा। लेकिन इमाम इब्ने जरीर के नज़दीक पहली तफ़सीर ही राजेह (वरीयता प्राप्त) है, यानी मुराद इससे फ़रिश्ते हैं और यही ठीक भी है और इसी की ताईद हदीसों व आसार (बुज़ुर्गों के अक़वाल व रिवायात) से भी होती है।

सही बुख़ारी शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर के मौक़े पर है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी मामले का फ़ैसला आसमान में करता है तो फ़रिश्ते आ़जिज़ी के साथ अपने पर (पंख) झुका लेते हैं और रब का कलाम ऐसा वाक़े होता है जैसे उस ज़न्जीर की आवाज़ जो पत्थर पर बजाई जाती हो, जब हैबत कम हो जाती है तो पूछते हैं कि तुम्हारे रब ने इस वक़्त क्या फ़रमाया? जवाब मिलता है कि जो फ़रमाया हक़ है और वह बुलन्द व बड़ाई वाला है।

बाज़ मर्तबा ऐसा होता है कि जो जिन्नात फ़रिश्तों की बातें सुनने की ग़र्ज़ से गये हुए हैं और जो एक दूसरे के ऊपर हैं वे कोई कलिमा सुन लेते हैं। ऊपर वाला नीचे वाले को वह अपने से नीचे वाले को सुना देता है, और वे काहिनों के कानों तक पहुँचा देते हैं, उनके पीछे फ़ौरन उनके जलाने को आग का शोला लपकता है लेकिन कभी-कभी तो वह आये इससे पहले ही एक दूसरे को पहुँचा देता है और कभी पहुँचाये इससे पहले ही जला दिया जाता है। काहिन उस एक कलिमे के साथ सौ झूठ मिलाकर लोगों में फैलाता है, वह एक बात सच्ची निकलती है लोग उसके मुरीद बन जाते हैं कि देखो यह बात इसके कहने के मुताबिक़ ही हुई।

मुस्नद में है कि हुज़ूर सल्ल. एक मर्तबा सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के पास बैठे हुए थे कि एक सितारा झड़ा और ज़बरदस्त रोशनी हो गई। आपने फ़रमाया कि जाहिलीयत में तुम्हारा ख़्याल इन सितारों के झड़ने के बारे में क्या था? उन्होंने कहा हम इस मौक़े पर समझते थे कि या तो कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ या मरा। इमाम ज़ोहरी रह. से सवाल हुआ कि क्या जाहिलीयत के ज़माने में भी सितारे झड़ते थे? कहा हाँ लेकिन बहुत कम, और आपकी बेसत (नबी बनकर तशरीफ़ लाने) के ज़माने से तो इनमें बहुत ज़्यादती हो गई है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- सुनो इन्हें किसी की मौत व हयात से कोई वास्ता नहीं। बात यह है कि

Maktaba Ashraf

जब हमारा रब तबारक व तआ़ला किसी मामले का आसमानों में फ़ैसला करता है तो अ़र्श को उठाने वाले फ़रिश्ते उसकी तस्बीह बयान करते हैं, फिर सातवें आसमान वाले फिर छठे आसमान वाले यहाँ तक कि आसमाने दुनिया तक पहुँचती है। फिर अ़र्श के आस-पास के फ़रिश्ते अ़र्श के उठाने वाले फ़रिश्तों से पूछते हैं कि ख़ुदा तआ़ला ने क्या फ़रमाया? वे उन्हें बतलाते हैं। फिर हर नीचे वाला ऊपर वाले से दरियाफ़्त करता है और वह उसे बतलाता है यहाँ तक कि पहले आसमान वालों को ख़बर पहुँचती है, कभी उचक ले जाने वाले जिन्नात उसे सुन लेते हैं तो उन पर ये सितारे झड़ते हैं, फिर भी जो बात ख़ुदा को पहुँचानी मन्ज़ूर होती है उसे वे ले उड़ते हैं और उसके साथ बहुत कुछ बातिल और झूठ मिलाकर लोगों में शोहरत देते हैं। इब्ने अबी हातिम में है कि अल्लाह तआ़ला जब अपने अम्र (किसी मामले और हुक्म) की 'वही' करता है तो आसमान मारे ख़ौफ़ के कपकपा उठते हैं और फ़रिश्ते डर के मारे सज्दे में गिर पड़ते हैं। सबसे पहले जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम सर उठाते हैं और ख़ुदा का फ़रमान सुनते हैं, फिर उनकी ज़बानी दूसरे फ़रिश्ते सुनते हैं। और वे कहते जाते हैं कि ख़ुदा ने हक़ फ़रमाया, वह बुलन्दी और बड़ाई वाला है, यहाँ तक कि वह ख़ुदा का अमीन फ़रिश्ता जिस तरफ़ हो उसे पहुँचा देता है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि यह उस 'वही' का ज़िक्र है जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बाद नबियों के न होने के ज़माने में बन्द रहकर फिर नबी करीम सल्ल. के शुरू ज़माने पर नाज़िल हुई। हक़ीक़त यह है कि उस शुरूआ़ती 'वही' के भी इस आयत के तहत में दाख़िल होने में कोई शक नहीं, लेकिन आयत शामिल है इसे और उसे सब को।

आप (तौहीद की तहक़ीक़ के लिए यह भी) पूछिए कि (अच्छा बतलाओ) तुमको आसमान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है? आप (ही) कह दीजिए कि अल्लाह (रोज़ी देता है)। और (यह भी कहिए कि इस तौहीद के मसले में) बेशक हम या तुम ज़रूर सही रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में हैं। (24) आप (यह भी) फ़रमा दीजिए कि अगर हम मुजरिम हैं (तो) तुम से हमारे जुर्मों की पूछताछ न होगी, और हमसे तुम्हारे आमाल की पूछताछ न होगी। (25) (और यह भी) कह दीजिए कि हमारा रब हम सबको (एक जगह) जमा करेगा। फिर हमारे दरमियान ठीक-ठीक (अ़मली) फ़ैसला कर देगा, और वह बड़ा फ़ैसला करने वाला, जानने वाला है। (26) आप (यह भी) कहिए कि मुझको ज़रा वे तो दिखलाओ जिनको तुमने शरीक बनाकर ख़ुदा के साथ मिला रखा है, हरगिज़ (उसका कोई शरीक) नहीं, बल्कि (हक़ीक़त में) वही है अल्लाह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला। (27)	قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○ قُلْ لَّا تُسْــَٔـلُوْنَ عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْــَٔـلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ○ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۭ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ○ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَاۗءَ كَلَّا ۭ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○

Maktab E Ashraf

रिज़्क़ देने वाला अल्लाह है

अल्लाह तआ़ला इस बात को साबित कर रहा है कि सिर्फ़ वही ख़ालिक़ व राज़िक़ है, वही माबूद है। जैसे उन लोगों ने इसका इक़रार है कि आसमान से बारिशें बरसाने वाला और ज़मीनों से अनाज उगाने वाला अल्लाह तआ़ला ही है। ऐसे ही उन्हें यह भी मान लेना चाहिये कि इबादत के लायक़ भी सिर्फ़ वही है। फिर फ़रमाता है कि जब हम तुम में इतना बड़ा इख़्तिलाफ़ है तो लाज़िमी तौर पर एक हिदायत पर और दूसरा गुमराही पर है। यह नहीं हो सकता कि दोनों फ़रीक़ हिदायत पर हों, या दोनों गुमराही पर हों। हम एक अल्लाह को मानने वाले हैं और तौहीद (अल्लाह के एक होने) की दलीलें खुलीं-खुलीं और बहुत वाज़ेह हम बयान कर चुके हैं। और तुम शिर्क पर हो जिसकी कोई दलील तुम्हारे हाथों में नहीं, पस यक़ीनन हम हिदायत पर और यक़ीनन तुम गुमराही पर हो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुश्रिकों से यही कहा था कि हम दोनों फ़रीक़ में से एक ज़रूर सच्चा है, क्योंकि इस क़द्र तज़ाद व टकराव (विरोधाभास) के बाद दोनों का सच होना तो अ़क़्ली तौर पर मुहाल है। इस आयत के एक मायने यह भी बयान किये गये हैं कि हम ही हिदायत पर और तुम गुमराही पर हो, हमारा तुम्हारा बिल्कुल कोई ताल्लुक़ नहीं। हम तुमसे और तुम्हारे आमाल से बरी हैं, हाँ जिस राह पर हम चल रहे हैं उसी राह पर तुम भी आ जाओ तो बेशक तुम हमारे हो और हम तुम्हारे हैं, वरना हम में और तुममें कोई ताल्लुक़ नहीं। एक दूसरी आयत में भी है कि अगर ये तुझे झुठलायें तो कह दे कि मेरा अ़मल मेरे साथ है और तुम्हारा अ़मल तुम्हारे साथ है, तुम मेरे आमाल से चिड़ते हो और मैं तुम्हारी करतूत से बेज़ार हूँ।

सूरः काफ़िरून में भी इसी बेताल्लुक़ी और बराअत का ज़िक्र है। रब्बुल-आ़लमीन तमाम आ़लम को मैदाने क़ियामत में जमा करके फ़ैसले फ़रमा देगा। नेकों को उनकी नेकी की जज़ा और बुरों को उनकी सज़ा देगा। उस दिन तुम्हें हमारी हक़्क़ानियत व सदाक़त (सच्चाई और हक़ पर होना) मालूम हो जायेगी। जैसा कि अल्लाह का इरशाद है:

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ .... الخ

क़ियामत के दिन सब अलग-अलग हो जायेंगे, ईमान वाले जन्नत के अच्छे मन्ज़र वाले बाग़ीचों में ख़ुश व प्रसन्न होंगे। और हमारी आयतों और आख़िरत के दिन को झुठलाने वाले, कुफ़्र करने वाले दोज़ख़ के गड्ढ़ों में हैरान व परेशान होंगे। वह हाकिम व आ़दिल है, हक़ीक़ते हाल का पूरा आ़लिम है, तुम अपने माबूदों को ज़रा मुझे भी तो दिखाओ। लेकिन कहाँ से सुबूत दे सकोगे जबकि मेरा रब बेनज़ीर है, बेशरीक और बेजोड़ है, वह अकेला है, वह इ़ज़्ज़त वाला है, जिसने सब को अपने क़ब्ज़े में कर रखा है और हर एक पर ग़ालिब आ गया है। हकीम है, अपने अक़वाल व अफ़आ़ल (बातों और कामों) में इसी तरह शरीअ़त और तक़दीर में भी बरकतों वाला है, पाक, मुनज़्ज़ा और मुश्रिकों की तमाम तोहमतों से बरी है।

और हमने तो आपको तमाम लोगों के वास्ते पैग़म्बर बनाकर भेजा है, (ईमान लाने पर उनको हमारी रज़ा और सवाब की) ख़ुशख़बरी सुनाने वाले, और (ईमान न लाने पर उनको	وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّ نَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ۝

Maktab E Ashraf

हमारे अ़ज़ाब व ग़ज़ब से) डराने वाले, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते। (28) और ये लोग (ऐसे मज़ामीन सुनकर) कहते हैं कि यह वायदा कब होगा, अगर तुम (यानी नबी और आपके मानने वाले) सच्चे हो (तो बतलाओ)। (29) आप कह दीजिए कि तुम्हारे वास्ते एक ख़ास दिन का वायदा (मुक़र्रर) है, कि उससे न एक घड़ी पीछे हट सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो। (30)	وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ○

रुकूअ़ 3

ख़ुशख़बरी देने और डराने वाला

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे और अपने रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. से फ़रमा रहा है कि हमने तुझे कायनात की तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा है। जैसे एक दूसरी जगह इरशाद हैः

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا.

यानी ऐलान कर दो कि ऐ लोगो! मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह तआ़ला का रसूल हूँ। एक और आयत में हैः

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا.

बरकत वाला है वह ख़ुदा जिसने अपने बन्दे पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया ताकि वह तमाम जहान को होशियार कर दे।

यहाँ भी फ़रमाया कि इताअ़त-गुज़ारों (नेक काम करने वालों और अल्लाह के हुक्मों का पालन करने वालों) को जन्नत की ख़ुशख़बरी दे और नाफ़रमानों को जहन्नम से डरा, लेकिन अक्सर लोग अपनी जहालत से नबी की नुबुव्वत को नहीं मानते। इसी तरह एक और जगह फ़रमायाः

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ.

अगरचे तू कितना ही चाहे मगर अक्सर लोग बिना ईमान के ही रहेंगे।

एक और जगह इरशाद हुआ कि अगर बड़ी जमाअ़त की मानेगा तो वे ख़ुद तुझे भी सही रास्ते से हटा देंगे। पस हुज़ूर सल्ल. की रिसालत आ़म लोगों की तरफ़ थी। अ़रब अ़जम (अ़रब के रहने वाले और अ़रब से बाहर के रहने वाले यानी पूरी दुनिया) सब की तरफ़, ख़ुदा तआ़ला को सबसे ज़्यादा प्यारा वह है जो सबसे ज़्यादा उसका फ़रमाँबरदार हो।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को आसमान वालों पर और नबियों पर सब पर फ़ज़ीलत दी है, लोगों ने इसकी दलील दरियाफ़्त की तो आपने फ़रमाया देखो क़ुरआन फ़रमाता है कि हर रसूल को उसकी क़ौम की ज़बान (भाषा) के साथ भेजा ताकि वह उसमें तब्लीग़ कर दे और नबी करीम सल्ल. के बारे में फ़रमाता है कि हमने तुझे आ़म लोगों की तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा। बुख़ारी व मुस्लिम में अल्लाह के रसूल का फ़रमान है कि मुझे पाँच सिफ़तें ऐसी दी गई हैं

Maktab E Ashraf

जो मुझसे पहले किसी नबी को नहीं दी गईं। महीने भर की राह तक मेरी मदद सिर्फ़ रौब से की गई है, मेरे लिये सारी ज़मीन मस्जिद और पाक बनाई गई है। मेरी उम्मत में से जिस किसी को जिस जगह नमाज़ का वक़्त आ जाये वह उसी जगह नमाज़ पढ़ ले, मुझसे पहले किसी नबी के लिये ग़नीमतों का माल हलाल नहीं किया गया था, मेरे लिये ग़नीमतें हलाल कर दी गईं, मुझे शफ़ाअ़त दी गई हर नबी सिर्फ़ अपनी क़ौम की तरफ़ भेजा जाता है और मैं तमाम लोगों की तरफ़ भेजा गया हूँ। यानी जिन्नात व इनसान, अ़रब व अ़जम सब की तरफ़। फिर काफ़िरों का क़ियामत का मुहाल जानना बयान हो रहा है कि पूछते हैं- क़ियामत कब आयेगी? जैसे एक और जगह है कि बेईमान तो उसकी जल्दी मचा रहे हैं और ईमान वाले उससे कपकपा रहे हैं और उसे हक़ जानते हैं.......। जवाब देता है कि तुम्हारे लिये वायदे का दिन मुक़र्रर हो चुका है। जिसमें तक़दीम व ताख़ीर (आगे पीछे होना) और कमी ज़्यादती नामुम्किन है। जैसे एक जगह फ़रमायाः

اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ.

और फ़रमायाः

وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ........ الخ

यानी वह मुक़र्ररा वक़्त पीछे हटने का नहीं। तुम्हें उस वक़्ते मुक़र्ररा तक ढील है, जब वह दिन आ गया फिर कोई लब भी न हिला सकेगा। उस दिन बाज़ नेकबख़्त होंगे और बाज़ बदबख़्त।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ۭ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ښ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ۨ الْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ○ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ○ وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ	और ये काफ़िर लोग (दुनिया में तो ख़ूब बातें बनाते हैं और) कहते हैं कि हम हरगिज़ इस क़ुरआन पर ईमान न लाएँगे और न इससे पहली किताबों पर, और अगर आप (उनकी) उस वक़्त की हालत देखें (तो एक हौलनाक मन्ज़र नज़र आए), जब ये ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएँगे, एक-दूसरे पर बात डालता होगा। (चुनाँचे) अदना दर्जे के लोग बड़े लोगों से कहेंगे कि (हम तो तुम्हारे सबब से बरबाद हुए) अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान ले आए होते। (31) (इस पर) ये बड़े लोग उन अदना दर्जे के लोगों से कहेंगे कि क्या हमने तुमको हिदायत (पर अ़मल करने) से (ज़बरदस्ती) रोका था? इसके बाद कि वह (हिदायत) तुमको पहुँच चुकी थी। नहीं! बल्कि तुम ही क़ुसूरवार हो। (32) और (इसके जवाब में) ये कम दर्जे के लोग उन बड़े लोगों से कहेंगे कि (हम ज़बरदस्ती को रुकावट) नहीं (कहते)

बल्कि तुम्हारी रात-दिन की तदबीरों ने रोका था, जब तुम हमको फ़रमाईश करते रहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें, और उसके लिए शरीक क़रार दें। और वे लोग (अपनी उस) शर्मिन्दगी को (एक-दूसरे से) छुपाकर रखेंगे जबकि अ़ज़ाब देखेंगे। और हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ डालेंगे, जैसा करते थे वैसा ही तो भरा। (33)	اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○

एक हसरत भरी गुफ़्तगू

काफ़िरों की सरकशी का बयान हो रहा है कि उन्होंने फ़ैसला कर लिया है कि अगरचे क़ुरआन की हक़्क़ानियत की हज़ारों दलीलें देख लें लेकिन मान कर नहीं देंगे। बल्कि इससे अगली किताब पर ईमान नहीं लायेंगे। इन्हें अपने क़ौल का मज़ा उस वक़्त आयेगा जब ख़ुदा के सामने जहन्नम के किनारे खड़े-खड़े छोटे बड़ों को बड़े छोटों को इल्ज़ाम देंगे, और हर एक दूसरे को क़ुसूरवार ठहरायेगा। ताबेदारी करने वाले अपने सरदारों से कहेंगे- अगर तुम हमें न रोकते तो हम ज़रूर ईमान लाये होते। उनके बुज़ुर्ग उन्हें जवाब देंगे कि क्या हमने तुम्हें रोका था? हमने एक बात कही तुम जानते थे कि यह बिना दलील के है, दूसरी जानिब दलीलों की बरसती बारिश तुम्हारी आँखों के सामने थी। फिर तुमने उसकी पैरवी छोड़कर हमारी क्यों मान ली? यह तो तुम्हारी अपनी बेअ़क़्ली थी, तुम्हारे अपने दिल ख़ुदा की बातों से भागते थे। रसूलों की ताबेदारी ख़ुद तुम्हारी तबीयतों पर शाक़ (भारी) गुज़रती थी। सारा क़ुसूर तुम्हारा अपना है, हमें क्यों इल्ज़ाम दे रहे हो? यह बेदलील अपने बुज़ुर्गों की मान लेने वाले उन्हें फिर जवाब देंगे कि दिन रात की तुम्हारी धोखेबाज़ियाँ जालसाज़ियाँ फ़रेबकारियाँ हमें इत्मीनान दिलाना कि हमारे अफ़आ़ल (काम) और अ़क़ीदे ठीक हैं, हमसे बार-बार कुफ़्र और शिर्क के न छोड़ने को, पुराने दीन के न बदलने को, बाप दादों की रविश पर क़ायम रहने को कहना, हमारी क़मर थपकना, यही सबब हुआ हमारे ईमान से रुक जाने का, तुम ही आ आकर हमें अ़क़्ली ढकोसले सुनाकर इस्लाम से फेरते थे। दोनों इल्ज़ाम भी देंगे, बराअत भी करेंगे, लेकिन दिल में अपने किये पर पछता रहे होंगे, उन सब के हाथों को गर्दन से मिलाकर तौक़ व ज़न्जीर से जकड़ दिये जायेंगे। अब हर एक को उनके आमाल के मुताबिक़ बदला मिलेगा, गुमराह करने वालों को भी और गुमराह होने वालों को भी। हर एक को पूरा-पूरा अ़ज़ाब होगा।

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जहन्नमी जब हंकाकर जहन्नम के पास पहुँचाये जायेंगे तो जहन्नम के एक ही शोले की लपट से सारे जिस्म का गोश्त झुलस कर पैरों में आ पड़ेगा। (इब्ने अबी हातिम)

हसन बिन यहया ख़ुशनी रह. फ़रमाते हैं कि जहन्नम के हर क़ैदख़ाने हर ग़ार हर ज़न्जीर हर क़ैदी पर जहन्नमी का नाम लिखा हुआ है। जब हज़रत सुलैमान दारानी के सामने यह बयान हुआ तो आप बहुत रोये और फ़रमाने लगे- हाय-हाय फिर क्या हाल होगा उसका जिस पर अ़ज़ाब जमा हो जायेंगे, पैरों में बेड़ियाँ होंगी, हाथों में हथकड़ियाँ होंगी, गर्दन में तौक़ होंगे, फिर जहन्नम के ग़ार में धकेल दिया जायेगा। ख़ुदाया तू

बचाना, परवर्दिगार तू हमें सलामत रखना। या अल्लाह! तू हमें सलामत रखना।

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ
مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ○
وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا
نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ○ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ○ع وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ ع ١٠
اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى
اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۙ فَاُولٰٓئِكَ
لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي
الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ
اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ
مُحْضَرُوْنَ ○ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ وَمَآ
اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ
الرّٰزِقِيْنَ ○

और हमने किसी बस्ती में कोई डराने वाला (पैग़म्बर) नहीं भेजा, मगर वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम तो उन अहकाम के इनकार करने वाले हैं जो तुमको देकर भेजा गया है। (34) और उन्होंने यह भी कहा कि हम माल और औलाद में तुमसे ज़्यादा हैं, और हमको कभी अज़ाब न होगा। (35) आप कह दीजिए कि मेरा परवर्दिगार जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहता है कम देता है, और लेकिन अक्सर लोग (इससे) वाक़िफ़ नहीं। (36)

और तुम्हारे माल और औलाद ऐसी चीज़ नहीं जो दर्जे में तुमको हमारा मुक़र्रब बना दे, (यानी अल्लाह की निकटता की भी सबब व इल्लत नहीं) मगर हाँ जो ईमान लाए और अच्छे काम करे (ये दोनों चीज़ें अलबत्ता निकटता का सबब हैं) सो ऐसे लोगों के लिए उनके (नेक) अमल का सिला है और वे (जन्नत के) बाला-ख़ानों में चैन से (बैठे) होंगे। (37) और जो लोग हमारी आयतों के मुताल्लिक़ (उनको बातिल करने की) कोशिश कर रहे हैं (नबी को) हराने के लिए, ऐसे लोग अज़ाब में लाए जाएँगे। (38) आप (मोमिनों से) फ़रमा दीजिए कि मेरा रब अपने बन्दों में से जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहे तंगी से देता है, और जो चीज़ तुम (अल्लाह के हुक्म के मौक़ों में) ख़र्च करोगे, सो वह (यानी अल्लाह तआ़ला) उसका बदला देगा, और वह सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है। (39)

एक धोखा

अल्लाह तआ़ला अपने नबी और अगले पैग़म्बरों की सीरत इख़्तियार करने को फ़रमाता है कि जिस बस्ती में जो रसूल भेजा गया उसका मुक़ाबला हुआ, बड़े लोगों ने कुफ़्र किया, हाँ ग़रीबों ने ताबेदारी की।

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

जैसे क़ौमे नूह ने अपने नबी से कहा थाः

اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ.

हम तुझ पर कैसे ईमान लायें? तेरे मानने वाले तो सब नीचे दर्जे के लोग हैं। यही मज़मून एक दूसरी आयत में इस तरह हैः

وَمَانَرَاكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا.........الخ

हम तो कमज़ोर और कम-दर्जे के लोगों के अ़लावा किसी को आपका मानने वाला नहीं देखते।

क़ौमे सालेह के घमंडी लोग उस क़ौम के कमज़ोरों और ज़ईफ़ों से कहते हैं:

اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صَالِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّه...... الخ

क्या तुम्हें सालेह के नबी होने का यक़ीन है? उन्होंने कहा हाँ हम तो मोमिन हैं। तो घमंडियों ने साफ़ कहा कि हम नहीं जानते। एक और आयत में है:

وَلِذَالِكَ فَتَنَّا.......... الخ

यानी इस तरह हमने एक को दूसरे से फ़ितने (आज़माईश) में डाला ताकि वे कहें क्या यही लोग हैं जिन पर ख़ुदा ने हम सब में से एहसान किया, क्या ख़ुदा शुक्रगुज़ारों को जानने वाला नहीं? एक और जगह फ़रमान है कि हर बस्ती में वहाँ के बड़े लोग मुजरिम और मक्कार होते हैं। एक और फ़रमान है:

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا......... الخ

जब किसी बस्ती की हलाकत (तबाह करने) का हम इरादा करते हैं तो उसके सरकश लोगों को कुछ अहकाम देते हैं, वे नहीं मानते, फिर हम उन्हें हलाक कर देते हैं।

पस यहाँ भी फ़रमाता है कि हमने जिस बस्ती में कोई नबी व रसूल भेजा वहाँ के आन-बान, शान व शौकत वाले रईसों, अमीरों, सरदारों और बड़े लोगों ने झट से अपने कुफ़्र का ऐलान कर दिया। इब्ने अबी हातिम में है, अबू रज़ीन रह. फ़रमाते हैं कि दो शख़्स आपस में शरीक थे, एक तो समुद्र पार चला गया, एक वहीं रहा, जब नबी करीम सल्ल. मबऊस हुए तो उसने अपने साथी से लिखकर दरियाफ़्त किया कि हुज़ूर का क्या हाल है? उसने जवाब दिया कि छोटे लोगों ने उसकी बात मानी है। शरीफ़ क़ुरैशियों ने उसकी इताअ़त नहीं की। इस ख़त को पढ़कर वह अपनी तिजारत को छोड़-छाड़कर सफ़र करके अपने शरीक के पास पहुँचा था। यह पढ़ा-लिखा था, आसमानी किताबों का इल्म इसे हासिल था। उससे पूछा कि बताओ हुज़ूर कहाँ हैं? मालूम करके आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उसने पूछा कि आप लोगों को किस चीज़ की तरफ़ बुलाते हैं? आपने इस्लाम के अरकान उसके सामने बयान फ़रमाये, वह उन्हें सुनते ही ईमान ले आया। आपने फ़रमाया तुम्हें इसकी तस्दीक़ क्योंकर हो गई? उसने कहा इस बात से कि तमाम अम्बिया के शुरू में मानने वाले हमेशा ज़ईफ़ मिस्कीन और कमज़ोर लोग ही होते हैं। इस पर ये आयतें उतरीं और हुज़ूर सल्ल. ने आदमी भेजकर उनसे कहलवाया था कि तुम्हारी बात की तस्दीक़ अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई।

इसी तरह रोम के बादशाह हिरक़्ल ने कहा था जबकि उसने अबू सुफ़ियान से उनकी जाहिलीयत की हालत में नबी करीम सल्ल. के बारे में मालूम किया था कि क्या शरीफ़ (बड़े लोगों) ने उनकी ताबेदारी की है या ज़ईफ़ों ने? तो अबू सुफ़ियान ने जवाब दिया कि ज़ईफ़ों ने। इस पर हिरक़्ल ने कहा कि हर रसूल की

Maktab E Ashraf

शुरू में ताबेदारी करने वाले यही ज़ईफ़ लोग होते हैं। फिर फ़रमाया ये ख़ुशहाल लोग माल व औलाद की कसरत पर ही फ़ख़्र करते हैं और इसे दलील बनाते हैं इस बात की कि वे अल्लाह के महबूब और पसन्दीदा हैं, अगर ख़ुदा की ख़ास इनायत व मेहरबानी उन पर न होती तो उन्हें ये नेमतें न देता, और जब यहाँ रब मेहरबान है तो आख़िरत में भी वह मेहरबान ही रहेगा। क़ुरआन ने हर जगह इसका रद्द किया है। एक जगह फ़रमायाः

اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ......... الخ

क्या उनका ख़्याल है कि माल व औलाद में इज़ाफ़ा उनके लिये बेहतरी है? नहीं! बल्कि बुराई है, लेकिन ये बेशऊर (नासमझ) हैं। एक और आयत में हैः

وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ........ الخ

उनका माल और औलाद तुझे धोखे में न डाले। इससे इन्हें दुनिया में भी सज़ा होगी और मरते दम तक ये कुफ़्र ही में रहेंगे। एक और आयत में हैः

ذَرْنِىْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا........... الخ

यानी मुझे और उस शख़्स को छोड़ दे जिसे मैंने मुम्ताज़ कर दिया (यानी लोगों के बीच सम्मानित बनाया) है, और ख़ूब ज़्यादा माल दे रखा है, और हुक्म को मानने वाले बेटे दे रखे हैं और हर तरह का ऐश उसके लिये मुहैया कर दिया है, फिर भी उसे लालच और हिर्स है कि मैं और ज़्यादा दूँ। ऐसा नहीं! यह हमारी आयतों का मुख़ालिफ़ है, कुछ ही समय के बाद उसे दोज़ख़ के पहाड़ों पर चढ़ाऊँगा।

उस शख़्स का वाक़िआ भी बयान हुआ है जिसके दो बाग़ थे, माल वाला फलों वाला और औलाद वाला था, लेकिन किसी चीज़ ने कोई फ़ायदा न दिया, अल्लाह के अ़ज़ाब से सब चीज़ें दुनिया ही में तबाह हुईं और मिट्टी में मिल गयीं। ख़ुदा जिसकी रोज़ी कुशादा करना चाहे कुशादा कर देता है और जिसकी तंग करना चाहे तंग कर देता है। दुनिया तो वह अपने दोस्तों दुश्मनों सब को देता है, मालदार या फ़क़ीर होना उसकी रज़ामन्दी और नाराज़गी की दलील नहीं, बल्कि इसमें और ही हिक्मतें होती हैं, जिन्हें अक्सर लोग जान नहीं सकते। माल व औलाद को हमारी इनायत व मेहरबानी की दलील बनाना ग़लती है, यह हमारे पास मर्तबा बढ़ाने वाली कोई चीज़ नहीं। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सूरतों और मालों को नहीं देखता बल्कि दिलों और अ़मलों को देखता है। (मुस्लिम) हाँ उसके पास दर्जे दिलाने वाली चीज़ ईमान और नेक आमाल हैं। इनकी नेकियों के बदले इन्हें बहुत बढ़ा-चढ़ाकर दिये जायेंगे, एक-एक नेकी दस-दस गुनी बल्कि सात-सात सौ गुनी करके दी जायेगी, जन्नत की बुलन्द-तरीन मन्ज़िलों में हर डर ख़ौफ़ से हर खटके और ग़म से अमन में होंगे, न कोई दुख दर्द होगा, न तकलीफ़ और सदमा। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जन्नत में ऐसे बालाख़ाने (चौबारे) हैं जिनका बाहर का हिस्सा अन्दर से और अन्दर का हिस्सा बाहर से नज़र आता है। एक देहाती ने कहा ये बालाख़ाने किसके लिये हैं? आपने फ़रमाया जो नर्म-कलामी करे, खाना खिलाये, कसरत से रोज़े रखे और लोगों के सोने के वक़्त तहज्जुद पढ़े।

(इब्ने अबी हातिम)

जो लोग ख़ुदा की राह से औरों को रोकते हैं, रसूलों की ताबेदारी से लोगों को बाज़ रखते हैं, ख़ुदा की आयतों की तस्दीक़ नहीं करने देते, वे जहन्नम की सज़ाओं में हाज़िर किये जायेंगे और बराबर बदला पायेंगे।

Maktaba Ashraf

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला अपनी कामिल हुकूमत के मुताबिक़ जिसे चाहे बहुत सारी दुनिया देता है और जिसे चाहे बहुत कम देता है। यह सुख-चैन की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है, वह दुख-दर्द में मुब्तला है। रब की हिक्मतों को कोई नहीं जान सकता, उसकी मस्लेहतें वही ख़ूब जानता है। जैसे एक जगह फ़रमायाः

اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا.

तू देख ले कि हमने किस तरह एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दे रखी है और अलबत्ता आख़िरत दर्जों और फ़ज़ीलतों में बहुत बड़ी है।

यानी जिस तरह तंगदस्ती व मालदारी के साथ दर्जों की ऊँच-नीच यहाँ है, इसी तरह आख़िरत में भी आमाल के मुताबिक़ दर्जे व मर्तबे होंगे। नेक लोग तो जन्नतों के बुलन्द बालाख़ानों में और बद लोग जहन्नम के नीचे के तबक़े के जेलख़ानों में। दुनिया में सबसे बेहतर शख़्स रसूलुल्लाह सल्ल. के फ़रमान के मुताबिक़ वह है जो सच्चा मुसलमान हो और ज़रूरत के मुताबिक़ रोज़ी पाता हो, और ख़ुदा की तरफ़ से उसको क़नाअ़त (जो मिले उसी पर दिल से सब्र व शुक्र) भी हासिल हो। (मुस्लिम शरीफ़)

ख़ुदा के हुक्म या उसकी इजाज़त के अधीन तुम जो कुछ ख़र्च करोगे उसका बदला वह तुम्हें दोनों जहानों में देगा। सही हदीस में है- तू ख़र्च कर तो तुझ पर भी ख़र्च किया जायेगा। एक और हदीस में है कि हर सुबह एक फ़रिश्ता दुआ़ करता है- ऐ ख़ुदा! बख़ील (कन्जूस) के माल को तलफ़ और बरबाद कर। दूसरा दुआ़ करता है ऐ ख़ुदा! ख़र्च करने वाले को नेक बदला दे। हज़रत बिलाल रज़ि. से एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- ऐ बिलाल! ख़र्च कर और अ़र्श वाले की तरफ़ से तंगी का ख़्याल भी न कर। इब्ने अबी हातिम में है- रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि तुम्हारे इस ज़माने के बाद ऐसा ज़माना आ रहा है जो काट खाने वाला होगा, माल होगा लेकिन मालदार गोया अपने माल पर दाँत गाड़े हुए होंगे कि कहीं ख़र्च न हो जाये। फिर हुज़ूर सल्ल. ने इसी आयतः

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ، وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ.

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) की तिलावत फ़रमाई। और हदीस में है कि बदतरीन लोग वे हैं जो बेबस और परेशान हाल लोगों की चीज़ें कम दामों में ख़रीदते फिरें। याद रखो ऐसी बै (ख़रीदारी) हराम है। मुज़्तर (बेक़रार व परेशान हाल) की बै हराम है (अगरचे यह ख़रीद व बेच जायज़ है मगर उसमें बरकत न होगी क्योंकि उसमें दिल की ख़ुशी न होगी, हालात की मजबूरी होगी)। मुसलमान मुसलमान का भाई है, न उस पर ज़ुल्म करे न उसे रुस्वा करे। अगर तुझसे हो सके तो दूसरों के साथ सुलूक और भलाई कर वरना उसकी हलाकत को तू न बढ़ा। (अबू यअ़ला मूसली)

यह हदीस इस सनद से ग़रीब है और ज़ईफ़ भी है। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं- कहीं इस आयत का ग़लत मतलब न ले लेना, अपने माल को ख़र्च करने में दरमियानी रास्ता इख़्तियार करना। रोज़ियाँ बंट चुकी हैं, रिज़्क़ तक़सीम हो चुका (यानी पहले से तय हो चुका है कि किसको क्या मिलना) है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ○

और (वह दिन ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जिस दिन अल्लाह तआ़ला उन सबको (क़ियामत के मैदान में) जमा फ़रमाएगा। फिर फ़रिश्तों से

Maktab E Ashraf

قَالُوا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ○ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ○	इरशाद फ़रमाएगा, क्या ये लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे? (40) वे अ़र्ज़ करेंगे कि आप पाक हैं, हमारा तो आपसे ताल्लुक़ है न कि इनसे, बल्कि ये लोग शैतानों को पूजा करते थे, उनमें अक्सर लोग उन्हीं के मोतक़िद थे। (41) सो (काफ़िरों से कहा जाएगा) आज तुम (इबादत करने वाले और जिनकी इबादत की जाती थी सबके सब) में से न कोई किसी को नफ़ा पहुँचाने का इख़्तियार रखता है और न नुक़सान पहुँचाने का, और (उस वक़्त) हम ज़ालिमों (यानी काफ़िरों) से कहेंगे कि जिस दोज़ख़ के अ़ज़ाब को तुम झुठलाया करते थे (अब) उसका मज़ा चखो। (42)

हश्र का दिन

मुशिरकीन को शर्मिन्दा, लाजवाब और बे-उज़्र करने के लिये उनके सामने फ़रिश्तों से सवाल होगा, जिनकी बनावटी शक्लें बनाकर ये मुशिरक दुनिया में पूजते रहे कि वे उन्हें अल्लाह तआ़ला से मिला दें। सवाल होगा कि क्या तुमने इन्हें अपनी इबादत करने को कहा था? जैसे सूरः फ़ुरक़ान में है:

ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ.

यानी क्या तुमने इन्हें गुमराह किया था? या ये ख़ुद ही बहके हुए थे?

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से भी यही सवाल होगा- क्या तुम लोगों से कह आये थे कि ख़ुदा को छोड़ कर मेरी और मेरी माँ की इबादत करना? आप जवाब देंगे कि ख़ुदाया तेरी ज़ात पाक है, मुझे जो कहना सज़ावार (मुनासिब) न था उसे मैं कैसे कह देता। इसी तरह फ़रिश्ते भी अपनी बराअत ज़ाहिर करेंगे और कहेंगे तू इससे बहुत बुलन्द और पाक है कि तेरा कोई शरीक हो, हम ख़ुद तेरे बन्दे हैं, हम इनसे बेज़ार रहे और अब भी इनसे अलग हैं। ये शयातीन की परस्तिश करते थे, शैतानों ने ही इनके लिये बुतों की पूजा को अच्छा बनाकर दिखा रहा था और इन्हें गुमराह कर दिया था। इनमें के अक्सर का एतिक़ाद शैतान ही पर था। जैसे अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا وَّاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيْدًا لَّعَنَهُ اللّٰهُ.

यानी ये लोग ख़ुदा को छोड़कर औरतों की परस्तिश (पूजा और इबादत) करते हैं और सरकश शैतान की इबादत करते हैं, जिस पर ख़ुदा की फटकार है। पस जिन-जिनसे तुम ऐ मुशिरको! लौ लगाये हुए थे उनमें से एक भी तुम्हें कोई नफ़ा न पहुँचा सकेगा। इस मुसीबत व तकलीफ़ के वक़्त ये सारे झूठे माबूद तुम से यक्सू (एक तरफ़ और अलग) हो जायेंगे। क्योंकि उन्हें किसी के किसी तरह के नफ़े व नुक़सान का इख़्तियार था ही नहीं, आज हम ख़ुद मुशिरकों से फ़रमा देंगे कि लो दोज़ख़ के जिस अ़ज़ाब को तुम झुठला

Maktab E Ashraf

रहे थे आज उसका मज़ा चखो।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا
هَٰذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا
كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ ۚ وَقَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا
إِفْكٌ مُفْتَرًى ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ
مُبِينٌ ۝ وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا
وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ۝
وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوا
مِعْشَارَ مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۖ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝ ع ٥

और जब उन लोगों के सामने हमारी आयतें जो (हक़ और हिदायत वाली होने की सिफ़त में) साफ़-साफ़ पढ़ी जाती हैं, तो ये लोग (पढ़ने वाले यानी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में) कहते हैं (अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे) कि यह महज़ एक ऐसा शख़्स है जो यूँ चाहता है कि तुमको उन चीज़ों (की इबादत) से रोक दे जिनको (पहले से) तुम्हारे बड़े पूजते थे, और (क़ुरआन के बारे में) कहते हैं (अल्लाह की पनाह) कि यह महज़ एक गढ़ा हुआ झूठ है। और ये काफ़िर इस हक़ चीज़ (यानी क़ुरआन) के मुताल्लिक़ जबकि वह उनके पास पहुँचा यूँ कहते हैं कि यह महज़ एक खुला जादू है। (43) और हमने उनको किताबें नहीं दी थीं कि उनको पढ़ते-पढ़ाते हों, और (इसी तरह) हमने आपसे पहले उनके पास कोई डराने वाला (यानी पैग़म्बर) नहीं भेजा था। (44) और उनसे पहले जो (काफ़िर) लोग थे उन्होंने झुठलाया था और ये (अ़रब के मुश्रिक लोग) तो उस सामान के जो हमने उनको दे रखा था, दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे। ग़र्ज़ उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, सो (देखो) मेरा (उन पर) कैसा अ़ज़ाब हुआ। (45)

झुठलाना और रद्द करना

काफ़िरों की वह शरारत बयान हो रही है जिसके सबब वे ख़ुदा तआ़ला के अ़ज़ाब के हक़दार हुए हैं कि ख़ुदा का कलाम ताज़ा-ब-ताज़ा उसके अफ़ज़ल रसूल सल्ल. की ज़बान से सुनते हैं, क़बूल करना मानना, उसके मुताबिक़ अ़मल करना तो एक तरफ़, ऊपर से कहते हैं कि देखो यह शख़्स तुम्हें तुम्हारे पुराने और सच्चे दीन से रोक रहा है और अपने बातिल ख़्यालात की तरफ़ तुम्हें बुला रहा है। यह क़ुरआन तो इसका ख़ुद तराशा हुआ है, आप ही गढ़ लेता है और यह तो जादू है, इसका जादू होना कुछ ढका-छुपा नहीं, बिल्कुल ज़ाहिर है।

फिर फ़रमाता है कि उन अ़रब की तरफ़ न तो इससे पहले कोई किताब भेजी गई है न आपसे पहले उनमें कोई रसूल आया है। इसलिये इन्हें मुद्दतों से तमन्ना थी कि अगर ख़ुदा का रसूल हम में आता, अगर

किताबुल्लाह हम में उतरती तो हम सबसे ज़्यादा फ़रमाँबरदार और पाबन्द हो जाते। लेकिन जब ख़ुदा ने इनकी यह पुरानी आरज़ू पूरी की तो लगे झुठलाने और इनकार करने, इनसे पहले की उम्मतों के नतीजे इनके सामने हैं, वे क़ुव्वत व ताक़त, माल व मता, असबाबे दुनियावी इनसे बहुत ज़्यादा रखते थे, ये तो अभी उनके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे लेकिन मेरे अज़ाबों के उतरने के बाद न माल काम आया न औलाद और कुनबे क़बीले काम आये, न क़ुव्वत ताक़त ने कोई फ़ायदा दिया, बरबाद कर दिये गये। जैसा कि एक जगह इरशाद फ़रमायाः

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ........ الخ

यानी हमने उन्हें क़ुव्वत व ताक़त दे रखी थी, आँखें और कान भी दे रखे थे, दिल भी थे, लेकिन मेरी आयतों के इनकार पर जो अज़ाब आये उस वक़्त किसी चीज़ ने कुछ फ़ायदा न दिया, और जिसके साथ मज़ाक़ उड़ाते थे उसने उन्हें घेर लिया। क्या ये लोग ज़मीन पर चल-फिरकर अपने से अगलों का अन्जाम देखते नहीं जो इनसे तायदाद में ज़्यादा और ताक़त में बढ़े हुए थे। मतलब यह है कि रसूलों के झुठलाने के सबब पीस दिये गये, जड़ से उखाड़ फेंक दिये गये। तुम देख लो ग़ौर कर लो कि मैंने किस तरह अपने रसूलों की मदद की और किस तरह झुठलाने वालों पर अपना अज़ाब उतारा।

आप कहिए कि मैं तो सिर्फ़ एक बात समझाता हूँ। वह यह कि तुम (सिर्फ़) ख़ुदा के वास्ते खड़े हो जाओ, दो-दो और एक-एक, फिर सोचो कि तुम्हारे उस साथी को जुनून (तो) नहीं है। वह तो तुमको एक सख़्त अज़ाब आने से पहले डराने वाला है। (46)	قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۚ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ۝

आप मजनूँ नहीं हैं

हुक्म होता है कि ये काफ़िर जो तुझे मजनूँ बता रहे हैं, इनसे कह कि एक काम तो करो ख़ुलूस के साथ, तास्सुब और ख़ुदा को छोड़कर ज़रा सी देर सोचो तो, आपस में एक-दूसरे से मालूम करो कि क्या मुहम्मद मजनूँ (दीवाने) हैं? और ईमानदारी से एक दूसरे को जवाब दे। हर शख़्स तन्हा-तन्हा भी ग़ौर करे और दूसरे से भी पूछे, लेकिन यह शर्त है कि ज़िद और हठ को बात की पच को दिमाग़ से निकाल कर तास्सुब और हठधर्मी को छोड़कर, तुम्हें ख़ुद मालूम हो जायेगा, तुम्हारे दिल से यह आवाज़ उठेगी कि वास्तव में हुज़ूर सल्ल. को जुनून (पागलपन) नहीं। बल्कि आप तुम सब के ख़ैरख़्वाह और दर्दमन्द हैं। एक आने वाले ख़तरे से जिससे तुम बेख़बर हो वह तुम्हें आगाह कर रहे हैं।

बाज़ लोगों ने इस आयत से तन्हा और जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने का मतलब समझा है और इसके सुबूत में एक हदीस भी पेश करते हैं। लेकिन वह हदीस ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। उसमें है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मुझको तीन चीज़ें दी गई हैं जो मुझसे पहले किसी को नहीं दी गईं, यह मैं फ़ख़्र (बड़ाई) के तौर पर नहीं कह रहा हूँ।

Maktaba Ashraf

1. मेरे लिये माले ग़नीमत (जंग में हाथ आया हुआ दुश्मनों का माल) हलाल किया गया, मुझसे पहले वह किसी के लिये हलाल नहीं किया जाता था, वे माले ग़नीमत को जमा करके जला देते थे।

2. मैं हर सुर्ख़ व सियाह की तरफ़ भेजा गया हूँ। हर नबी सिर्फ़ अपनी ही क़ौम की तरफ़ भेजा जाता रहा है।

3. मेरे लिये सारी ज़मीन मस्जिद और वुज़ू की चीज़ बना दी गई है कि मैं इसकी मिट्टी से तयम्मुम कर लूँ और जहाँ भी हूँ और नमाज़ का वक़्त आ जाये नमाज़ अदा कर लूँ।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे सामने अदब से खड़े हो जाया करो, दो-दो और एक-एक। और एक महीने की राह तक मेरी मदद सिर्फ़ रौब से की गई है।

यह हदीस सनद के एतिबार से ज़ईफ़ (कमज़ोर) है, बहुत मुम्किन है कि इसमें आयत का ज़िक्र और उसे जमाअ़त से या अलग नमाज़ पढ़ लेने के मायने में ले लेना, यह रावी (रिवायत बयान करने वाले) का अपना क़ौल हो, और इस तरह बयान कर दिया गया हो कि बज़ाहिर वे हदीस के अलफ़ाज़ मालूम होते हैं, क्योंकि हुज़ूर सल्ल. की ख़ुसूसियात की हदीसें सही सनद से बहुत सी मन्क़ूल हैं और किसी में भी ये अलफ़ाज़ नहीं। वल्लाहु आलम।

आप लोगों को उस अ़ज़ाब से डराने वाले हैं जो उनके आगे आ रहा है, और अ़रब के दस्तूर के मुताबिक़ "या सबाहु" कहकर आवाज़ बुलन्द की जो अ़लामत थी कि कोई शख़्स किसी अहम बात के लिये बुला रहा है। आ़दत के मुताबिक़ इसे सुनते ही लोग जमा हो गये। आपने फ़रमाया सुनो! अगर मैं तुम्हें ख़बर दूँ कि दुश्मन तुम्हारी तरफ़ चढ़ाई करके चला आ रहा है और अ़जब नहीं कि सुबह व शाम ही तुम पर हमला कर दे तो क्या तुम मुझे सच्चा समझोगे? सब ने एक ज़बान में जवाब दिया कि बेशक हम आपको सच्चा मानेंगे। आपने फ़रमाया सुनो! मैं तुम्हें उस अ़ज़ाब से डरा रहा हूँ जो तुम्हारे आगे है। यह सुनकर अबू लहब मलऊन ने कहा- तेरे हाथ टूटें क्या इसी लिये तूने हम सब को जमा किया था? इस पर सूरः "तब्बत यदा अबी ल-हब" उतरी। ये हदीसें आयतः

وَاَنْذِرْعَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ.

(सूरः शुअ़रा आयत 214) की तफ़सीर में गुज़र चुकी हैं।

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. निकले और हमारे पास आकर तीन मर्तबा आवाज़ दी। फ़रमाया लोगो! मेरी और अपनी मिसाल जानते हो? उन्होंने कहा ख़ुदा और उसके रसूल को पूरा इल्म है। आपने फ़रमाया मेरी और तुम्हारी मिसाल उस क़ौम जैसी है जिन पर दुश्मन हमला करने वाला था, उन्होंने अपना आदमी भेजा कि जाकर देखे और दुश्मन की नक़ल व हरकत (गतिविधियों) से उन्हें अवगत कराये। उसने जब देखा कि दुश्मन उनकी तरफ़ चला आ रहा है और क़रीब पहुँच चुका है तो वह दौड़ता हुआ क़ौम की तरफ़ बढ़ा कि कहीं ऐसा न हो कि मेरी इत्तिला पहुँचने से पहले ही दुश्मन का हमला हो जाये, इसलिये उसने रास्ते ही में अपना कपड़ा हिलाना शुरू कर दिया कि होशियार हो जाओ दुश्मन आ पहुँचा। तीन मर्तबा यही कहा। एक और हदीस में है कि मैं और क़ियामत एक साथ ही भेजे गये। बहुत उम्मीद थी इस बात की कि क़ियामत मुझसे पहले आ जाती।

قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ط اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ج وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدٌo قُلْ اِنَّ رَبِّیْ یَقْذِفُ بِالْحَقِّ ج عَلَّامُ الْغُیُوْبِo قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا یُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا یُعِیْدُo قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِیْ ج وَاِنِ اهْتَدَیْتُ فَبِمَا یُوْحِیْٓ اِلَیَّ رَبِّیْ ط اِنَّهٗ سَمِیْعٌ قَرِیْبٌo

आप कह दीजिए कि मैंने तुमसे (इस तब्लीग़ पर) कुछ मुआवज़ा माँगा हो तो वह तुम्हारा ही रहा, मेरा मुआवज़ा तो बस अल्लाह तआला ही के ज़िम्मे है और वही हर चीज़ पर इत्तिला रखने वाला है। (47) आप कह दीजिए कि मेरा रब हक़ बात (यानी ईमान) को (कुफ़्र पर) ग़ालिब कर रहा है (और) वह तमाम ग़ैब की बातों और चीज़ों को जानता है। (48) आप कह दीजिए कि (दीने) हक़ आ गया और (दीने) बातिल न करने का रहा न धरने का। (49) आप कह दीजिए कि अगर (मसलन् मान लें और फ़र्ज़ कर लें) मैं गुमराह हो जाऊँ तो मेरी गुमराही मुझ ही पर वबाल होगी, और अगर मैं (सही) रास्ते पर हूँ तो यह इस क़ुरआन की बदौलत है जिसको मेरा रब मेरे पास भेज रहा है। वह सब कुछ सुनता (और) बहुत नज़दीक है। (50)

Maktab E Ashraf

मुश्रिक लोगों से साफ़-साफ़ बातें

हुक्म हो रहा है कि मुश्रिकों से फ़रमा दीजिये कि मैं जो तुम्हारी ख़ैरख़्वाही करता हूँ, तुम्हें दीनी अहकाम पहुँचा रहा हूँ, वअ़्ज़ व नसीहत करता हूँ, इस पर मैं तुमसे कोई मुआ़वज़े का तालिब नहीं, मुआ़वज़ा तो ख़ुदा ही देगा जो तमाम चीज़ों की हक़ीक़त जानता है। मेरी और तुम्हारी हालत उस पर ख़ूब रोशन (स्पष्ट और वाज़ेह) है। फिर जो फ़रमाया। इसी तरह की आयतः

یُلْقِی الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰی مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ.

(सूरः मोमिन आयत 15) है, यानी अल्लाह तआ़ला अपने फ़रमान से हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को जिस पर चाहता है अपनी 'वही' के साथ भेजता है। वह हक़ के साथ फ़रिश्ता उतारता है, वह तमाम ग़ैबी बातों और मामलात का जानने वाला है, उस पर आसमान व ज़मीन की कोई चीज़ छुपी नहीं। अल्लाह की तरफ़ से हक़ और मुबारक शरीअ़त आ चुकी। बातिल बिखर कर और बोदा होकर बरबाद हो गया। जैसे फ़रमान हैः

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ فَیَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ.

हम बातिल पर हक़ को नाज़िल फ़रमाकर बातिल के टुकड़े उड़ा देते हैं और उसकी भूसी उड़ जाती है।

नबी करीम सल्ल. फ़त्हे मक्का वाले दिन जब बैतुल्लाह में दाख़िल हुए तो वहाँ के बुतों को अपनी कमान की लकड़ी से गिराते जाते थे और ज़बान से फ़रमाते जाते थेः

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ. اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا.

Maktaba E Ashraf

हक़ आ गया, बातिल मिट गया, वह था ही मिटने वाला। (बुख़ारी व मुस्लिम)

बातिल और नाहक़ का ग़लबा सब ख़त्म हो गया। बाज़ मुफ़स्सिरीन से मन्क़ूल है कि बातिल से यहाँ इब्लीस (शैतान) मुराद है, यानी न उसने किसी को पहले पैदा किया न आईन्दा कर सकेगा, न मुर्दे को ज़िन्दा कर सकता है न उसे कोई और ऐसी क़ुदरत। बात तो यह भी ठीक है लेकिन यहाँ यह मुराद नहीं। वल्लाहु आलम।

फिर जो फ़रमाया उसका मतलब यह है कि ख़ैर सब की सब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है और ख़ुदा की भेजी हुई 'वही' में है वही हक़ है। और हिदायत व बयान और रहनुमाई है। गुमराह होने वाले आप ही बिगड़ रहे हैं और अपना ही नुक़सान कर रहे हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से जबकि मुफ़व्विज़ा (यानी वह लड़की जिसने अपने निकाह का इख़्तियार किसी को दे दिया हो) का मसला दरियाफ़्त किया गया तो आपने फ़रमाया था- इसे मैं अपनी राय से बयान करता हूँ। अगर सही हो तो ख़ुदा की तरफ़ से है और अगर ग़लत हो तो मेरी और शैतान की तरफ़ से है, और अल्लाह और उसका रसूल इससे बरी हैं। वह ख़ुदा अपने बन्दों की बातों का सुनने वाला है और क़रीब है, पुकारने वाले की पुकार को हर वक़्त सुनता और क़बूल फ़रमाता है। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने एक मर्तबा अपने सहाबा से फ़रमाया- तुम किसी बहरे या ग़ायब को नहीं पुकार रहे हो, जिसे तुम पुकार रहे हो वह समी (बहुत ज़्यादा और सब कुछ सुनने वाला), क़रीब और मुजीब (क़बूल करने वाला) है।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا
مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝ وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى
لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍ ۢ بَعِيْدٍ ۝ وَّقَدْ
كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ
مِنْ مَّكَانٍ ۢ بَعِيْدٍ ۝ وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا
يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ
اِنَّهُمْ كَانُوْا فِىْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ۝ ع ٦/٩ ١٢

और अगर आप वह वक़्त देखें (तो आपको हैरत हो) जबकि काफ़िर लोग घबराए फिरेंगे, फिर निकल भागने की कोई सूरत न होगी और पास के पास ही (यानी फ़ौरन) पकड़ लिए जाएँगे। (51) और कहेंगे कि हम हक़ दीन पर ईमान ले आए, और इतनी दूर जगह से (ईमान का) उनके हाथ आना कहाँ मुम्किन है। (52) हालाँकि पहले से (दुनिया में) ये लोग उस का इनकार करते रहे, और बिना तहक़ीक़ बातें दूर-ही-दूर से हाँका करते थे। (53) और उनमें और उनकी (ईमान क़बूल करने की) आरज़ू में एक आड़ कर दी जाएगी, जैसा कि उनके हम-ख़्यालों के साथ (भी) यही (बर्ताव) किया जायेगा जो उनसे पहले थे, क्योंकि ये सब बड़े शक में थे जिसने इनको दुविधा में डाल रखा था। (54)

वह वक़्त भी देखने के क़ाबिल होगा

अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमा रहा है कि ऐ नबी! काश आप उन काफ़िरों की क़ियामत के दिन घबराहट देखते कि अ़ज़ाब से छुटकारे की तमाम कोशिश करेंगे लेकिन बचाव की कोई सूरत नहीं पायेंगे। न

Maktab E Ashraf

भागकर न छुपकर न किसी की हिमायत से न किसी की पनाह से, बल्कि फ़ौरन ही पकड़ लिये जायेंगे। इधर कब्रों से निकले उधर फंसा लिये गये। इधर खड़े हुए उधर गिरफ़्तार कर लिये गये। यह भी मतलब हो सकता है कि दुनिया में ही अ़ज़ाब में फंस गये, चुनाँचे बदर वग़ैरह के मैदानों में क़त्ल व गिरफ़्तार हुए। लेकिन सही यही है कि मुराद क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब हैं।

बाज़ कहते हैं कि बनू अ़ब्बास की ख़िलाफ़त के ज़माने में मक्का मदीना के दरमियान उनके लश्करों का ज़मीन में धंसाया जाना मुराद है। इब्ने जरीर रह. ने इसे बयान करके इसकी दलील में एक हदीस ज़िक्र की है जो बिल्कुल ही मौज़ू और गढ़ी हुई है, लेकिन ताज्जुब पर ताज्जुब है कि इमाम साहिब ने उसका मौज़ू (बेअस्ल और गढ़ा हुआ) होना बयान नहीं किया। क़ियामत के दिन कहेंगे कि हम ईमान क़बूल करते हैं। अल्लाह तआ़ला पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसके रसूलों पर ईमान लाये। जैसे एक और आयत में है:

وَلَوْ تَرَىٰٓ اِذِ الظّٰلِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ....... الخ

काश कि तू देखता जबकि गुनाहगार लोग अपने रब के सामने सर झुकाये खड़े होंगे और शर्मिन्दगी से कह रहे होंगे कि ख़ुदाया! हमने देख सुन लिया, हमें यक़ीन आ गया, अब तू हमें फिर से दुनिया में भेज दे तो हम दिल से मानेंगे, लेकिन कोई शख़्स जिस तरह बहुत दूर की चीज़ को लेने के लिये दूर ही से हाथ बढ़ाता है और वह उसके हाथ नहीं आ सकती इसी तरह यही हाल उनका है कि आख़िरत में वह काम करते हैं जो दुनिया में करने चाहिया था। आख़िरत में वह ईमान लाना बेसूद है, अब न दुनिया में लौटाये जायेंगे न उस वक़्त का रोना-धोना, तौबा व फ़रियाद, ईमान व इस्लाम कुछ काम आयेगा। इससे पहले दुनिया में तो मुन्किर रहे, न ख़ुदा को माना न रसूल पर ईमान लाये, न क़ियामत के क़ायल हुए, यूँ ही जैसे कोई बिन देखे अन्दाज़े ही से निशाने पर तीरबाज़ी कर रहा हो इसी तरह ख़ुदा की बातों को अपने गुमान ही से रद्द करते रहे। नबी को कभी काहिन (जिन्नात से मालूम करे ग़ैब की और आने वाली ख़बरें बताने वाला) कह दिया, कभी शायर बतला दिया, कभी जादूगर कहा और कभी मजनूँ। सिर्फ़ अटकल पच्चू से क़ियामत को झुठलाते रहे और बिना दलील औरों की इबादत करते रहे, जन्नत दोज़ख़ का मज़ाक़ उड़ाते रहे। अब ईमान में और उनमें हिजाब (आड़ और पर्दा) आ गया। तौबा में और उनमें पर्दा पड़ गया, दुनिया उनसे छूट गई, ये दुनिया से अलग हो गये।

इब्ने अबी हातिम ने यहाँ पर अ़जीब व ग़रीब असर (रिवायत और क़ौल) नक़ल किया है, जिसे हम पूरा ही नक़ल करते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि बनी इस्राईल में एक फ़ातेह शख़्स था जिसके पास माल बहुत था। जब वह मर गया और उसका लड़का उसका वारिस हुआ तो बुरी तरह नाफ़रमानियों में माल लुटाने लगा। उसके चचाओं ने उसे मलामत की और समझाया, उसने ग़ुस्से में आकर सब चीज़ें बेचकर रुपये लेकर ऐन शजाजा के पास आकर महल तामीर कराकर यहाँ रहने लगा।

एक रोज़ ज़ोर की आँधी उठी, जिसमें एक ख़ूबसूरत औ़रत उसके पास आ पड़ी। उसने उससे पूछा तुम कौन हो? उसने कहा बनी इस्राईल का एक शख़्स हूँ। कहा यह महल और माल आप ही का है? उसने कहा हाँ। पूछा आपकी बीवी भी है? कहा नहीं। फिर तुम अपनी ज़िन्दगी का लुत्फ़ क्या उठाते हो? अब इसने पूछा कि क्या तुम्हारा शौहर है? उसने कहा नहीं। कहा फिर मुझे क़बूल करो। उसने जवाब दिया मैं यहाँ से मील भर दूर रहती हूँ कल तुम यहाँ से अपने साथ दिन भर का खाना-पीना लेकर चलो और मेरे यहाँ आओ, रास्ते में कुछ अ़जायबात (आश्चर्य जनक बातें) देखो तो घबराना नहीं। इसने क़बूल किया और दूसरे दिन

Maktab E Ashraf

तोशा लेकर चला। मील भर दूर जाकर एक बहुत ही आलीशान महल देखा। दस्तक देने से एक ख़ूबसूरत नौजवान शख़्स आया। पूछा आप कौन हैं? जवाब दिया बनी इस्राईल में से हूँ। कहा कैसे आये हैं? कहा इस मकान की मालिका ने बुलवाया है। पूछा रास्ते में कुछ हौलनाक ख़बरें भी देखीं? जवाब दिया हाँ, और अगर मुझे यह कहा हुआ न होता कि घबराना मत तो मैं हौल व दहशत से हलाक व बरबाद हो गया होता। मैं चला एक लम्बे रास्ते पर पहुँचा तो देखा कि एक कुतिया मुँह फाड़े बैठी हुई है। मैं घबराकर दौड़ा तो देखा कि वह मुझसे आगे आगे है और उसके पिल्ले (बच्चे) उसके पेट में हैं और भौंक रहे हैं।

उस नौजवान ने कहा तू उसे नहीं पायेगा यह तो आख़िर ज़माने में होने वाली एक बात की मिसाल तुझे दिखलाई गई है कि एक नौजवान बूढ़े-बड़ों की मज्लिस में बैठेगा और उनसे अपने राज़ की पोशीदा बातें करेगा। मैं और आगे बढ़ा तो देखा कि एक सौ बकरियाँ हैं जिनके थन दूध से भरे हैं। एक बच्चा है जो दूध पी रहा है। जब दूध ख़त्म हो जाता है और वह जान लेता है कि और कुछ बाक़ी नहीं रहा तो वह मुँह खोल देता है, गोया और माँग रहा है। उस नौजवान ने कहा तू उसे नहीं पायेगा यह मिसाल तुझे बतलाई गई है उन बादशाहों की जो आख़िर ज़माने में आयेंगे। लोगों से सोना चाँदी घसीटेंगे यहाँ तक कि समझ लेंगे कि अब किसी के पास कुछ नहीं बचा तो वे ज़ुल्म व ज़्यादती करके मुँह फैलाये रहेंगे। उसने कहा मैं और आगे बढ़ा तो मैंने देखा कि एक दरख़्त है बहुत ही तरोताज़ा, अच्छा दिखने वाला और उम्दा, मैंने उसकी एक टहनी तोड़नी चाही तो दूसरे दरख़्त से आवाज़ आई कि ऐ बन्दा-ए-ख़ुदा! मेरी डाली तोड़ जा, फिर तो हर एक दरख़्त से यही आवाज़ आने लगी। दरबान ने कहा तू उसे भी न पायेगा, इसमें इशारा है कि आख़िर ज़माने में मर्दों की क़िल्लत और औरतों की क़सरत हो जायेगी, यहाँ तक कि जब एक मर्द की तरफ़ से औरत को पैग़ाम जायेगा तो दस बीस औरतें उसे अपनी तरफ़ बुलाने लगेंगी।

उसने कहा मैं और आगे बढ़ा तो मैंने देखा कि एक दरिया के किनारे एक शख़्स खड़ा हुआ है और लोगों को पानी भर-भरकर दे रहा है, फिर एक मश्क में डालता है लेकिन उसमें एक क़तरा भी नहीं ठहरता। दरबान ने कहा तू इसे भी न पायेगा। इसमें इशारा है कि आख़िर ज़माने में ऐसे उलेमा और वाअ़िज़ (बयान करने वाले) होंगे जो लोगों को इल्म सिखायेंगे, भली बातें बतायेंगे लेकिन ख़ुद आ़मिल न होंगे बल्कि ख़ुद गुनाहों में मुब्तला रहेंगे। फिर जो मैं आगे बढ़ा तो मैंने देखा कि एक बकरी है, बाज़ लोगों ने तो उसके पैर पकड़ रखे हैं, बाज़ ने दुम थाम रखी है, बाज़ों ने सींग पकड़ रखे हैं, बाज़ उस पर सवार हैं और बाज़ उसका दूध पी रहे हैं। उसने कहा यह मिसाल है दुनिया की, जो उसके पैर थामे हुए हैं ये तो वे हैं जो दुनिया में मायूस हो गये, जिन्हें यह न मिली। जिसने सींग थाम रखे हैं, यह वह है जो अपना गुज़ारा कर लेता है लेकिन तंगी तुर्शी से, दुम पकड़ने वाले वे हैं जिनसे दुनिया भाग खड़ी हुई है। सवार वे हैं जो अपनी तरफ़ से दुनिया से किनार किये हुए हैं, हाँ दुनिया से सही फ़ायदा उठाने वाले वे हैं जिन्हें तुमने उस बकरी का दूध पीते हुए देखा, उन्हें ख़ुशी हो ये मुबारकबाद के मुस्तहिक़ हैं।

उसने कहा मैं और आगे चला तो देखा कि एक शख़्स एक कुएँ से पानी खींच रहा है और एक हौज़ में डाल रहा है, और हौज़ में से पानी फिर कुएँ में चला जाता है। उसने कहा यह वह शख़्स है जो नेक अ़मल करता है लेकिन क़बूल नहीं होते। उसने कहा फिर मैं आगे बढ़ा तो देखा उस शख़्स ने दाने ज़मीन में बोये और उसी वक़्त खेती तैयार हो गई और बहुत अच्छे नफ़ीस गेहूँ निकल आये। कहा यह वह शख़्स है जिसकी नेकियाँ अल्लाह तआ़ला क़बूल फ़रमाता है। उसने कहा मैं और आगे बढ़ा तो देखा कि एक शख़्स

चित लेटा हुआ है, मुझसे कहने लगा भाई मेरा हाथ पकड़ कर बैठा दो। वल्लाह जब से मैं पैदा हुआ हूँ बैठा ही नहीं, मेरे हाथ पकड़ते ही वह खड़ा होकर तेज़ दौड़ा, यहाँ तक कि मेरी नज़रों से ग़ायब हो गया। उस दरबान ने कहा यह तेरी उम्र थी जो जा चुकी और ख़त्म हो गई। मैं मलकुल-मौत हूँ और जिस औ़रत से तू मिलने आया है उसकी सूरत में भी मैं ही था। ख़ुदा के हुक्म से तेरे पास आया था कि तेरी रूह इस जगह क़ब्ज़ करूँ फिर तुझे जहन्नम रसीद करूँ। इसके बारे में यह आयतः

وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَايَشْتَهُوْنَ.......... الخ

नाज़िल हुई (यानी यही आयत जिसकी यह तफ़सीर बयान हो रही है)। यह असर ग़रीब है और इसके सही होने में भी कलाम है। आयत का मतलब ज़ाहिर है कि काफ़िरों की जब मौत आती है तो उनकी रूह दुनियावी ज़िन्दगी की लज़्ज़तों में अटकी रहती है, लेकिन मौत मोहलत नहीं देती और उनकी ख़्वाहिश और उनके बीच रोक हो जाती है, जैसे उस घमंडी और आज़माईश में पड़े हुए शख़्स का हाल हुआ कि गया तो औ़रत को ढूँढने को और मुलाक़ात हो गई मलकुल-मौत से, उम्मीद पूरी होने से पहले रूह परवाज़ कर गई।

फिर फ़रमाता है कि इनसे पहली उम्मतों के साथ भी यही किया गया, वह भी मौत के वक़्त ज़िन्दगी और ईमान की आरज़ू करते रहे जो बिल्कुल बेसूद थी, जैसे फ़रमान हैः

فَلَمَّارَاَوْا بَأْسَنَا........ الخ

जब उन्होंने हमारे अ़ज़ाब देख लिये तो कहने लगे हम अल्लाह पर ईमान लाये और जिस-जिसको हम शरीके ख़ुदा बनाते थे उन सबसे हम इनकार करते हैं। लेकिन उस वक़्त उनके ईमान ने उन्हें कोई फ़ायदा नहीं दिया। इनसे पहलों में भी यही तरीक़ा-ए-ख़ुदा जारी रहा। कुफ़्फ़ार नफ़े से मेहरूम ही हैं। यहाँ फ़रमाया कि दुनिया में तो ज़िन्दगी भर शक व शुब्हे और दुविधा में ही रहे। इसी वजह से अ़ज़ाब के देखने के बाद ईमान बेकार है। हज़रत क़तादा रह. का आबे ज़र (सोने के पानी) से लिखने के लायक़ यह क़ौल है जो आप फ़रमाते हैं कि शुब्हात और शुकूक से बचो, इस पर जिसकी मौत आई वह क़ियामत के दिन भी इसी पर उठाया जायेगा। और जो यक़ीन पर मरा उसे यक़ीन पर ही उठाया जायेगा।

नोटः हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. तहरीर फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि इस्लाम पर ईमान और कामिल यक़ीन रखो, और फिर इस्लाम के बारे में या ख़ुदा और रसूल के बारे में कोई शुब्हा दिल में न आने दो, और अगर कोई शुब्हा पैदा भी हो तो उसको फ़ौरन ख़त्म कर दो, किसी आ़लिम से पूछ लो, अगर आ़लिम न मिले तो समझो हमारी अ़क़्ल का क़सूर है, इस्लाम में कोई नुक़्स और कमी नहीं। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और उसके लुत्फ़ व रहम से सूरः सबा की तफ़सीर ख़त्म हुई। या अल्लाह इसे हमारी तरफ़ से क़बूल फ़रमा और हमारी ज़रूरतों व हाजतों को पूरा फ़रमा। आमीन

Maktab E Ashraf

सूरः फ़ातिर

सूरः फ़ातिर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 45 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ○	पूरी की पूरी तारीफ़ (उसी) अल्लाह को लायक़ है जो आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला है। जो फ़रिश्तों को पैग़ाम पहुँचाने वाला बनाने वाला है, जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर वाले बाज़ू हैं। वह पैदाईश में जो चाहे ज़्यादा कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (1)

पहले पहल

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि फ़ातिर के बिल्कुल ठीक मायने मैंने सबसे पहले एक आराबी (देहाती और सेहरा के रहने वाले) की ज़बान से सुनकर मालूम किये। वह अपने साथी आराबी (देहाती) से झगड़ता हुआ आया। एक कुएँ के बारे में उनका इख़्तिलाफ़ (विवाद) था तो आराबी ने कहाः

"अ-न फ़तर्तुहा" यानी पहले पहल मैंने ही उसे बनाया है। पस मायने यह हुए कि बिना नमूने के पहले पहल सिर्फ़ अपनी कामिल क़ुदरत से अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ज़मीन व आसमान को पैदा किया। इमाम ज़हहाक रह. से मन्क़ूल है कि फ़ातिर के मायने ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाले) के हैं। अपने और अपने नबियों के दरमियान क़ासिद उसने अपने फ़रिश्तों को बनाया है जो परों (पंख) वाले हैं। उड़ते हैं, ताकि जल्दी से ख़ुदा का पैग़ाम उसके रसूलों तक पहुँचा दें। उनमें से बाज़ दो पंखों वाले हैं और बाज़ के तीन-तीन पंख हैं, बाज़ के चार-चार पंख हैं। बाज़ के इनसे भी ज़्यादा हैं। चुनाँचे हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने मेराज की रात में हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को देखा, उनके छह सौ पंख थे और हर दो पंख के बीच पूरब व पश्चिम जितना फ़ासला था। यहाँ भी फ़रमाता है कि रब जो चाहे अपनी मख़्लूक़ में ज़्यादती करे, जिसे चाहता है इससे भी ज़्यादा पर (पंख) अ़ता कर देता है और कायनात में जो चाहे रचाता है। इससे मुराद अच्छी आवाज़ भी ली गई है। वल्लाहु आलम

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ○	अल्लाह जो रहमत (बारिश वग़ैरह) लोगों के लिए खोल दे, सो उसका कोई बन्द करने वाला नहीं। और जिसको बन्द कर दे, सो उसके (बन्द करने के) बाद उसका कोई जारी करने वाला नहीं, और वही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (2)

Maktab E Ashraf

उसी का चाहा होता है

अल्लाह तआ़ला का चाहा होकर रहता है, उसकी मशिय्यत के बग़ैर कुछ भी नहीं होता। जो वह दे उसे कोई रोकने वाला नहीं। फ़र्ज़ नमाज़ के सलाम के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल. हमेशा यह कलिमात पढ़तेः

لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ. اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَآ اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِیَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَاالْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ.

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल-मुल्कु व लहुल-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर। अल्लाहुम्-म ला मानि-अ़ लिमा अअ़्तै-त व ला मुअ़्ति-य लिमा मनअ़्-त व ला यन्फ़अ़ु ज़ल्जद्दि मिन्कल् जद्दु।

और हुज़ूर सल्ल. फ़ुज़ूल बात करने और फ़ालतू के बिना ज़रूरत के सवाल और माल की बरबादी से मना फ़रमाते थे, और आप लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करने और माल की नाफ़रमानियाँ करने और ख़ुद लेने और दूसरों को न देने से भी रोकते थे। (बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह)

सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. रुकूअ़ से सर उठाते हुए 'समिअ़ल्लाहु लिमन् हमिदह्' कहकर फ़रमातेः

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْاَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَمِلْاَ مَاشِئْتَ مِنْ شَیْءٍ. اَللّٰهُمَّ اَهْلَ الثَّنَآءِ وَالْمَجْدِ اَحَقُّ مَاقَالَ الْعَبْدُ وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ. اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَآ اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِیَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَاالْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ.

अल्लाहुम्-म रब्बना लकल्-हम्दु मिल्अस्समा-इ वल-अर्ज़ि व मिल्-अ मा शिअ्-त मिन शैइन् अल्लाहुम्-म अह्लस्सना-इ वल्मज्दि अहक़्क़ु मा क़ालल् अ़ब्दु व कुल्लुना ल-क अ़ब्दुन्। अल्लाहुम्-म ला मानि-अ़ लिमा अअ़्तै-त व ला मुअ़्ति-य लिमा मनअ़्-त व ला यन्फ़अ़ु ज़ल्जद्दि मिन्कल् जद्दु।

इसी आयत जैसी यह आयत हैः

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ...... الخ

(सूरः युनुस आयत 107) और भी इसकी नज़ीर की (यानी इसी मायने की) आयतें बहुत सी हैं। हज़रत इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं कि बारिश बरसती तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते- हम पर फ़तह के तारे से बारिश बरसाई गई। फिर इसी आयत की तिलावत करते। (इब्ने अबी हातिम)

يٰۤـاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ	ऐ लोगो! तुम पर जो अल्लाह के एहसान हैं उनको याद करो, (शुक्र करो और ग़ौर करो कि) क्या अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई पैदा करने वाला है जो तुमको आसमान और ज़मीन

Maktab E Ashraf

मِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ڮ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ○	से रिज़्क़ पहुँचाता हो? उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, सो तुम (शिर्क करके) कहाँ उल्टे जा रहे हो? (3)

अल्लाह की नेमतों को याद करो

इस बात की दलील बयान हो रही है कि इबादतों के लायक़ सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की ज़ात है, क्योंकि ख़ालिक़ व राज़िक़ सिर्फ़ वही है, फिर उसके सिवा दूसरों की इबादत करना सख़्त ग़लती है। दर असल उसके सिवा लायक़े इबादत और कोई नहीं। फिर तुम इस वाज़ेह और स्पष्ट दलील व हुज्जत के बाद कैसे बहक रहे हो? और दूसरों की इबादत की तरफ़ झुके जाते हो? वल्लाहु आलम।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ○ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۫ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ○ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۭ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ○	और अगर ये लोग आपको झुठलाएँ तो (आप ग़म न करें, क्योंकि) आपसे पहले भी बहुत-से पैग़म्बर झुठलाए जा चुके हैं, और सब मामलात अल्लाह ही के सामने पेश किए जाएँगे। (4) ऐ लोगो! अल्लाह तआ़ला का (यह) वायदा ज़रूर सच्चा है। सो ऐसा न हो कि यह दुनियावी ज़िन्दगी तुमको धोखे में डाले रखे, और ऐसा न हो कि तुमको धोखेबाज़ शैतान अल्लाह से धोखे में डाल दे। (5) यह शैतान बेशक तुम्हारा दुश्मन है, सो तुम उसको (अपना) दुश्मन (ही) समझते रहो। वह तो अपने गिरोह को महज़ इसलिए (बातिल की तरफ़) बुलाता है ताकि वे लोग दोज़ख़ियों में से हो जाएँ। (6)

दुनिया का फ़रेब

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! अगर काफ़िर लोग आपका विरोध करें और आपकी बतलाई हुई तौहीद और ख़ुद आपकी सच्ची रिसालत को झुठलायें तो आप शिकस्ता-दिल (मायूस) न हो जाया करें, पहले नबियों के साथ भी यही होता रहा। सब कामों का लौटना अल्लाह तआ़ला की तरफ़ है। वह सब को उनके तमाम कामों के बदले देगा, और सज़ा व जज़ा सब कुछ होगी। लोगो! क़ियामत का दिन हक़ है, वह यक़ीनन आने वाला है। वह अटल वायदा है। वहाँ की नेमतों के बदले यहाँ के फ़ानी ऐश पर रीझ न जाओ। दुनिया की ज़ाहिरी मुसर्रतें वहाँ की हक़ीक़ी ख़ुशी से कहीं तुम्हें मेहरूम न कर दें। इसी तरह शैतान मक्कार से भी होशियार रहना। उसके चलते फिरते जादू में न फंस जाना। उसकी झूठी और चिकनी चुपड़ी बातों में आकर ख़ुदा व रसूल के हक़ और सच्चे कलाम को न छोड़ बैठना।

सूरः लुक़मान के आख़िर में भी यही फ़रमाया है। पस ग़ुरूर यानी धोखेबाज़ यहाँ शैतान को कहा गया

Muftah E Ashraf

है, जब मुसलमानों और मुनाफ़िक़ों के बीच क़ियामत के दिन दीवार खड़ी कर दी जायेगी, जिसमें दरवाज़ा होगा, जिसके अन्दरूनी हिस्से में रहमत होगी और बाहरी हिस्से में अ़ज़ाब होगा। उस वक़्त मुनाफ़िक़ लोग मोमिनों से कहेंगे- क्या हम तुम्हारे साथी न थे? ये जवाब देंगे कि हाँ साथी तो थे लेकिन तुमने तो ख़ुद को फ़ितने में डाल दिया था और सोचते ही रहे, शक व शुब्हा दूर ही न किया। ख़्वाहिशों (इच्छाओं) को पूरा करने में डूबे रहे, यहाँ तक कि ख़ुदा का हुक्म आ पहुँचा और धोखेबाज़ शैतान ने तुम्हें फ़रेब में ही रखा।

इस आयत में भी शैतान को ग़रूर कहा गया है। फिर शैतानी दुश्मनी को बयान किया कि वह तो तुम्हें ख़बरदार करके तुम्हारी दुश्मनी और बरबादी का बेड़ा उठाए हुए है। फिर तुम क्यों उसकी बातों में आ जाते हो और उसके धोखे में फंस जाते हो? उसकी और उसकी फ़ौज की तो तमन्ना ही यह है कि वह तुम्हें अपने साथ घसीटकर जहन्नम में ले जाये। अल्लाह तआ़ला क़वी व अ़ज़ीज़ से हमारी दुआ़ है कि वह हमें शैतान का दुश्मन ही रखे और उसके मक्र से हमें महफ़ूज़ रखे, और अपनी किताब और अपने नबी की सुन्नतों की पैरवी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। वह हर चीज़ पर क़ादिर है और दुआ़ओं का क़बूल फ़रमाने वाला है।

जिस तरह इस आयत में शैतान की दुश्मनी को बयान किया गया है इसी तरह सूरः कहफ़ की आयतः

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا....... الخ

(आयत 50) में भी इसकी दुश्मनी का ज़िक्र है।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۞ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ۭ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ڮ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۞	(पस) जो लोग काफ़िर हो गए उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए (गुनाहों की) बख़्शिश और ईमान पर बड़ा अज्र है। (7) तो क्या ऐसा शख़्स जिसको उसका बुरा अ़मल अच्छा करके दिखाया गया, फिर वह उसको अच्छा समझने लगा (यानी काफ़िर), और ऐसा शख़्स जो बुरे को बुरा समझता है (यानी मोमिन), कहीं बराबर हो सकते हैं? सो अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है हिदायत देता है। सो उन पर अफ़सोस करके कहीं आपकी जान न जाती रहे, अल्लाह को उनके सब कामों की ख़बर है। (8)

ع ١٣

ज़बरदस्त अ़ज़ाब या करम व मग़फ़िरत

ऊपर बयान हुआ था कि शैतानों के ताबेदारों की जगह जहन्नम है, इसलिये यहाँ बयान हो रहा है कि काफ़िरों के लिये बहुत सख़्त अ़ज़ाब हैं। इसलिये कि ये शैतान के ताबेदार और रहमान के नाफ़रमान हैं। मोमिनों से जो गुनाह भी हो जायें बहुत मुम्किन है कि ख़ुदा तुम्हें माफ़ फ़रमा दे, और जो नेकियाँ उनकी हैं उन पर उन्हें बड़ा अज्र व सवाब मिलेगा, काफ़िर और बदकार लोग अपने बुरे आमाल को नेकियाँ समझ बैठे

हैं। तो ऐसे गुमराह लोगों पर तेरा क्या बस है? हिदायत व गुमराही अल्लाह तआ़ला के हाथ में है। पस तुझे उन पर ग़मगीन न होना चाहिये। अल्लाह का लिखा हुआ और मुक़द्दर किया हुआ जारी हो चुका है। अल्लाह तआ़ला की मस्लेहत को उसके सिवा कोई नहीं जानता, हिदायत व गुमराही में भी उसकी हिक्मत है, कोई काम उस सच्चे हकीम की हिक्मत से ख़ाली नहीं। लोगों के तमाम अफ़आ़ल (काम और अ़मल) उस पर वाज़ेह हैं। नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं- अल्लाह तआ़ला ने अपनी तमाम मख़्लूक़ को अंधेरे में पैदा किया। फिर उन पर अपना नूर डाला, पस जिस पर वह नूर पड़ गया वह दुनिया में आकर सीधी राह चला और जिसे उस दिन वह नूर न मिला वह दुनिया में आकर भी हिदायत न पा सका। इसी लिये मैं कहता हूँ कि अल्लाह तआ़ला के इल्म के मुताबिक़ क़लम चलकर ख़ुश्क हो गया। (इब्ने अबी हातिम)

एक और रिवायत में है कि हमारे पास हुज़ूर सल्ल. आये और फ़रमाया- अल्लाह के लिये सब तारीफ़ है जो गुमराही से हिदायत पर लाता है, और जिस पर चाहता है गुमराही का दरवाज़ा खोल देता है। यह हदीस भी बहुत ग़रीब है।

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝

और अल्लाह ऐसा (क़ुदरत वाला) है जो (बारिश से पहले) हवाओं को भेजता है, फिर वे (हवाएँ) बादलों को उठाती हैं, फिर हम उस बादल को ज़मीन के सूखे टुकड़े की तरफ़ हाँक ले जाते हैं, फिर हम उसके (पानी के) ज़रिए से ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं, इसी तरह (क़ियामत में आदमियों का) जी उठना है। (9) जो शख़्स इज़्ज़त हासिल करना चाहे तो पूरी की पूरी इज़्ज़त ख़ुदा ही के लिए है। अच्छा कलाम उसी तक पहुँचता है और अच्छा काम उसको पहुँचाता है। और जो लोग (उसके ख़िलाफ़) बुरी-बुरी तदबीरें कर रहे हैं उनको सख़्त अ़ज़ाब होगा, और उन लोगों का यह मक्र नेस्तनाबूद हो जाएगा। (10) और अल्लाह ने तुमको (ज़िम्नी तौर पर) मिट्टी से पैदा किया है, फिर (मुस्तक़िल तौर पर) नुत्फ़े से पैदा किया, फिर तुमको जोड़े-जोड़े बनाया। और किसी औरत को न गर्भ रहता है और न वह जन्म देती है मगर सब उसकी इत्तिला से होता है। और (इसी तरह) न किसी की उम्र ज़्यादा (मुक़र्रर) की जाती है और न किसी की उम्र कम (मुक़र्रर) की जाती है मगर ये सब लौहे-महफ़ूज़ में होता है। यह सब अल्लाह को आसान है। (11)

Maktaba E Ashraf

Muftah E Ashraf

कि जंगल का जंगल हरा हो गया

मौत के बाद ज़िन्दगी पर क़ुरआने करीम में उमूमन ख़ुश्क ज़मीन के हरा होने से इस्तिदलाल किया गया है। जैसे सूरः हज वग़ैरह में है। बन्दों के लिये इसमें पूरी इबरत (सीख) है और मुर्दों के ज़िन्दा होने की पूरी दलील इसमें मौजूद है कि ज़मीन बिल्कुल सूखी पड़ी है, कोई तरोताज़गी उसमें नज़र नहीं आती, लेकिन बादल उठते हैं, पानी बरसता है तो उसकी ख़ुश्की ताज़गी में से और उसकी मौत ज़िन्दगी से बदल जाती है। या तो एक तिनका भी नज़र न आता था या कोसों दूर तक हरियाली हो जाती है। इसी तरह इनसान के बदनी हिस्से (जिस्मानी अंग) क़ब्रों वग़ैरह में बिखरे हुए होंगे। एक दूसरे से अलग होगा, लेकिन अर्श के नीचे से पानी बरसते ही तमाम जिस्म क़ब्रों में से उगने लगेंगे। जैसे ज़मीन से दाने उग आते हैं। चुनाँचे सही हदीस में है- इनसान पूरा का पूरा गल-सड़ जाता है लेकिन रीढ़ की हड्डी नहीं सड़ती। उसी से पैदा किया गया है और उसी से फिर तैयार किया जायेगा। यहाँ भी निशान बयान करके फ़रमाया- इसी तरह मौत के बाद की ज़िन्दगी है।

सूरः हज की तफ़सीर में यह हदीस गुज़र चुकी है कि अबू रज़ीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्ल. से पूछा कि हुज़ूर! अल्लाह तआला मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करेगा? और उसकी मख़्लूक़ में इस बात की क्या निशानी है? आपने फ़रमाया- अबू रज़ीन! क्या तुम अपनी बस्ती के आस-पास की ज़मीन से इस हालत में नहीं गुज़रे कि वह ख़ुश्क (सूखी) पड़ी होती है। फिर जो तुम गुज़रते हो तो देखते हो कि वह सब्ज़ा-ज़ार (हरी-भरी) बनी हुई है और ताज़गी के साथ लहलहा रही है। हज़रत अबू रज़ीन रज़ि. ने जवाब दिया- हाँ हुज़ूर! यह तो अक्सर देखने में आया है। आपने फ़रमाया पस इसी तरह अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा। जो शख़्स दुनिया और आख़िरत में इज़्ज़त व सम्मान के साथ रहना चाहता हो उसे अल्लाह तआला की इताअत करनी चाहिये, वही इस मक़सद का पूरा करने वाला है। दुनिया और आख़िरत का मालिक वही है। सारी इज़्ज़तें उसी के क़ब्ज़े में हैं। चुनाँचे एक और आयत में है कि जो लोग मोमिनों को छोड़कर काफ़िरों से दोस्तियाँ करते हैं कि उनके पास हमारी इज़्ज़त हो, वे इज़्ज़त से हाथ धो लें। इज़्ज़तें तो ख़ुदा तआला के क़ब्ज़े में हैं। एक और जगह इरशाद है- तुझे उनकी बातें ग़मनाक (रन्जीदा) न करें। सारी की सारी इज़्ज़तें अल्लाह तआला ही के लिये हैं। एक और आयत में अल्लाह तआला का फ़रमान है:

وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ.

यानी इज़्ज़तें अल्लाह तआला ही के लिये हैं और उसके रसूल के लिये और ईमान वालों के लिये। लेकिन मुनाफ़िक़ बेइल्म हैं।

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि बुतों की परस्तिश (पूजा) में इज़्ज़त नहीं। इज़्ज़तों वाला तो अल्लाह तआला ही है। पस बक़ौल क़तादा रह. आयत का मतलब यह है कि इज़्ज़त के इच्छुक को अल्लाह के अहकाम की तामील में मशग़ूल रहना चाहिये। और यह भी कहा गया है कि जो यह जानना चाहता हो कि किसके लिये इज़्ज़त है वह जान ले कि सारी इज़्ज़तें अल्लाह ही के लिये हैं। ज़िक्र, तिलावत, दुआ वग़ैरह पाक कलिमे उसी की तरफ़ चढ़ते हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम जितनी हदीसें तुम्हारे सामने बयान करते हैं, सब की तस्दीक़ अल्लाह की किताब से पेश करते हैं। सुनो! मुसलमान बन्दा जब 'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु

Maktab E Ashraf

लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर तबारकल्लाहु' पढ़ता है तो इन कलिमात को फ़रिश्ता अपने पर (पंख) के नीचे लेकर आसमान पर चढ़ जाता है। फ़रिश्तों के जिस मजमे के पास से गुज़रता है वह इन कलिमात के कहने वाले के लिये इस्तिग़फ़ार करता है। यहाँ तक कि रब्बुल-आलमीन के सामने ये कलिमात पेश किये जाते हैं। फिर आपने क़ुरआन पाक की यह आयत पढ़ीः

اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ.

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर चल रही है) (इब्ने जरीर)

हज़रत कअ़बे अहबार रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं 'सुब्हानल्लाह' और 'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' अ़र्श के आस-पास आहिस्ता-आहिस्ता आवाज़ निकालते हैं, जैसे शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट होती है। अपने कहने वाले का ज़िक्र ख़ुदा के सामने करते रहते हैं और नेक आमाल के ख़ज़ानों में महफ़ूज़ रहते हैं। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो लोग अल्लाह का जलाल, उसकी तस्बीह, उसकी तारीफ़, उसकी अ़ज़मत (बड़ाई) वह्दानियत का ज़िक्र करते रहते हैं, उनके लिये ये कलिमात अ़र्श के आस-पास ख़ुदा के सामने उनका ज़िक्र करते रहते हैं। क्या तुम नहीं चाहते कि कोई न कोई तुम्हारा ज़िक्र तुम्हारे रब के सामने करता रहे?

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का फ़रमान है कि पाक कलिमों से मुराद ज़िक्रुल्लाह है और नेक अ़मल से मुराद फ़राईज़ की अदायेगी है। पस जो शख़्स ज़िक्रुल्लाह (अल्लाह के ज़िक्र) और फ़रीज़े की अदायेगी करे, उसका अ़मल उसके ज़िक्र को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ चढ़ाता है और जो ज़िक्र करे लेकिन फ़रीज़ा अदा न करे उसका कलाम उसके अ़मल पर लौटा दिया जाता है। इसी तरह हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि कलिमा-ए-तैयबा ऊपर को नहीं उठता, हसन और क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि क़ौल बग़ैर अ़मल के मरदूद (नकारनीय) है। बुराईयों के फ़िक्र में लगने वाले वे लोग जो मक्कारी और रियाकारी से आमाल करते हों, लोगों पर अगरचे ज़ाहिर हो कि वे ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी करते हैं। लेकिन दर असल ख़ुदा के नज़दीक वे सबसे ज़्यादा बुरे हैं। जो नेकियाँ वे करते हैं वह सिर्फ़ दिखावे की हैं। ये अल्लाह का ज़िक्र बहुत ही कम करते हैं।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि इससे मुराद मुश्रिक हैं लेकिन सही यह है कि यह आयत आ़म है, मुश्रिक इसमें और भी ज़्यादा दाख़िल हैं। उनके लिये सख़्त अ़ज़ाब हैं और उनका ज़िक्र फ़ासिद व बातिल है, उनका झूठ आज नहीं तो कल खुल जायेगा। अ़क़्लमन्द उनके मक्र से वाक़िफ़ हो जायेंगे। जो शख़्स जो करे उसका असर उसके चेहरे से ज़ाहिर हो जाता है, उसकी ज़बान उसी रंग से रंग दी जाती है। जैसा बातिन होता है उसी का अ़क्स ज़ाहिर पर भी पड़ता है, रियाकार की बेईमानी मुद्दत तक छुपी नहीं रह सकती। हाँ कोई बेवक़ूफ़ उसके दाम (जाल) में फंस जाये तो और बात है। मोमिन पूरे अ़क़्लमन्द और कामिल दाना होते हैं, वे उन धोखेबाज़ों से बख़ूबी आगाह हो जाते हैं और उस आ़लिमुल-ग़ैब ख़ुदा पर तो कोई बात भी छुप नहीं सकती।

अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे बाप हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को मिट्टी से पैदा किया और उनकी नस्ल को एक हक़ीर पानी यानी मनी (वीर्य) के क़तरे से जारी रखा, फिर तुम्हें जोड़ा बनाया, यानी मर्द व औ़रत। यह भी उसका लुत्फ़ व करम और इनाम व एहसान है कि मर्दों के लिये बीवियाँ बनाईं जो उनके सुकून और राहत का सबब हैं। हर हामिला (गर्भवती) के हमल (गर्भ) की और हर बच्चे के पैदा होने की उसे ख़बर है।

Maktab E Ashraf

बल्कि हर पत्ते के झड़ने, अंधेरे में पड़े हुए दाने से और हर तर व ख़ुश्क चीज़ का उसे इल्म है, बल्कि उसकी किताब में वह लिखा हुआ है। इसी आयत जैसी यह आयत भी है:

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَاتَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى...... الخ

(सूरः रअ़्द आयत 8-9)

और वहीं इसकी पूरी तफ़सीर भी गुज़र चुकी है। इसी तरह अल्लाह तआ़ला आ़लिमुल-ग़ैब को यह भी इल्म है कि किस नुत्फ़े को कितनी उम्र मिलने वाली है, यह भी उसके पास लिखा हुआ है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि जिस शख़्स के लिये मैंने लम्बी उम्र मुक़द्दर की है वह उसे पूरी करके ही रहेगा। लेकिन वह लम्बी उम्र मेरी किताब में लिखी हुई है वहीं तक पहुँचेगी। और जिसके लिये मैंने कम उम्र मुक़र्रर की है, उसकी ज़िन्दगी उसी उम्र तक पहुँचेगी। यह सब कुछ ख़ुदा की किताब में लिखा हुआ मौजूद है। और रब पर यह सब कुछ आसान है। उम्र के नाक़िस होने का एक मतलब यह भी हो सकता है कि जो नुत्फ़ा तमाम होने (पूरा होने या बच्चा बनने) से पहले ही गिर जाता है, वह भी अल्लाह के इल्म में है। बाज़ इनसान सौ साल की उम्र पाते हैं और बाज़ पैदा होते ही मर जाते हैं। साठ साल से कम उम्र में मरने वाला भी नाक़िस उम्र वाला है। यह भी कहा गया है कि माँ के पेट में लम्बी उम्र या कम उम्र लिख ली जाती है। सारी मख़्लूक़ की बराबर उम्र नहीं होती। कोई लम्बी उम्र वाला कोई कम उम्र वाला। यह सब ख़ुदा के यहाँ लिखा हुआ है और उसी के मुताबिक़ सामने आ रहा है।

बाज़ कहते हैं कि इसके मायने ये हैं कि जो अजल (मुद्दत) लिखी गई है और उसमें से जो गुज़र रही है सब अल्लाह तआ़ला के इल्म में है और उसकी किताब में लिखी हुई है। बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- जो चाहे कि उसकी उम्र और रोज़ी बढ़े वह सिला-रहमी (रिश्तों का सम्मान करे उनको जोड़े, उनके हक़ अदा) करे। इब्ने अबी हातिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- किसी की अजल (मुद्दत यानी मौत) आ जाने के बाद उसे मोहलत नहीं मिलती। उम्र की ज़्यादती (बढ़ने) से मुराद नेक औलाद का होना है। जिसकी दुआ़यें उसे मरने के बाद उसकी क़ब्र में पहुँचती रहती हैं। यही उम्र की ज़्यादती है। यह अल्लाह तआ़ला पर आसान है, उसका इल्म उसके पास है, उसका इल्म तमाम मख़्लूक़ को घेरे हुए है। वह हर चीज़ को जानता है, उस पर कुछ छुपा नहीं।

وَمَا يَسْتَوِى الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۖ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○	और दोनों दरिया बराबर नहीं हैं (बल्कि) एक तो मीठा प्यास बुझाने वाला है, जिसका पीना आसान है, और एक खारा कड़वा है, और तुम हर एक (दरिया) से (मछलियाँ निकालकर उनका) ताज़ा गोश्त खाते हो, (तथा) ज़ेवर (मोती) निकालते हो जिसको तुम पहनते हो। और तू कश्तियों को उसमें देखता है पानी को फाड़ती हुई चली जाती हैं, ताकि तुम (उनके ज़रिए से) उसकी रोज़ी ढूँढो और ताकि तुम शुक्र अदा करो। (12)

Maktab E Ashraf

मीठे चश्मे और खारा पानी

मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) क़िस्म की चीज़ों की पैदाईश को बयान फ़रमाकर अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत को साबित कर रहा है। दो क़िस्म के दरिया पैदा कर दिये, एक का तो साफ़ सुथरा मीठा और उम्दा पानी जो आबादियों में जंगलों में बह रहा है, और दूसरे साकिन दरिया जिनका पानी खारा और कड़वा है, जिसमें बड़ी बड़ी कश्तियाँ और जहाज़ चल रहे हैं। और दोनों क़िस्म के दरिया में क़िस्म-क़िस्म की मछलियाँ तुम निकालते हो और तरोताज़ा गोश्त खाते रहते हो। फिर उनमें से ज़ेवर निकालते हो। यानी लुअ्लुअ् और मरजान। ये कश्तियाँ बराबर पानी को काटती रहती हैं। हवाओं का मुक़ाबला करके चलती रहती हैं ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश कर लो। तिजारती (व्यापारिक) सफ़र उन पर तय करो। एक मुल्क से दूसरे मुल्क पहुँच सको और ताकि तुम अपने रब का शुक्र करो कि उसने ये सब चीज़ें तुम्हारे फ़रमान के ताबे बना दीं। तुम समुद्र से, दरियाओं से कश्तियों से नफ़ा हासिल करते रहो। जहाँ जाना चाहो पहुँच जाते हो, उस क़ुदरत वाले ख़ुदा ने ज़मीन व आसमान की चीज़ों को तुम्हारे लिये मुसख़्ख़र (ताबे और अधीन) कर दिया है। यह सिर्फ़ उसका फ़ज़्ल व करम है।

يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي
الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ
يَّجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ
رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن
دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ ۝ إِن
تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ ۚ وَلَوْ
سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ
خَبِيرٍ ۝

الثلثة ٣ ع ١٤

वह रात को दिन में दाख़िल कर देता है और दिन को रात में दाख़िल कर देता है। और (जैसे यह कि) उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक चलते रहेंगे। यही अल्लाह (जिसकी यह शान है) तुम्हारा परवर्दिगार है, उसी की हुकूमत है और उसके सिवा जिनको तुम पुकारते हो वे तो खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी इख़्तियार नहीं रखते। (13) अगर तुम उनको पुकारो भी तो वे तुम्हारी पुकार (पहले तो) सुनेंगे नहीं, और अगर (फ़र्ज़ कर लो कि) सुन भी लें तो तुम्हारा कहना न करेंगे। और क़ियामत के दिन वे (ख़ुद) तुम्हारे शिर्क करने की मुख़ालफ़त करेंगे, और तुझको ख़बर रखने वाले की बराबर कोई नहीं बतलाएगा। (14)

रात दिन का यह उलट-फेर

अल्लाह तआ़ला अपनी कामिल क़ुदरत का बयान फ़रमा रहा है कि उसने रात को अंधेरे वाली और दिन को रोशनी वाला बनाया है। कभी रातें बड़ीं, कभी दिन बड़े, कभी दोनों बराबर। कभी जाड़े हैं कभी गर्मियाँ। उसी ने सूरज और चाँद को और थमे हुए और चलते फिरते सितारों को ताबे कर रखा है। एक निर्धारित वक़्त पर ख़ुदा की तरफ़ से तय की हुई चाल चलते रहते हैं। पूरी क़ुदरतों वाले और कामिल इल्म

वाले ख़ुदा ने यह निज़ाम (व्यवस्था) क़ायम कर रखा है, जो बराबर चल रहा है। और वक़्ते मुक़र्ररा यानी क़ियामत तक यूँ ही जारी रहेगा। जिस अल्लाह ने यह सब किया है वही दर असल इबादत के लायक़ है और वही सब का पालने वाला है। उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। जिन बुतों को और ख़ुदा के सिवा जिन-जिनको लोग पुकारते हैं चाहे वे फ़रिश्ते ही क्यों न हों लेकिन सब के सब उसके सामने मजबूर और बिल्कुल बेबस हैं। खजूर की गुठली के ऊपर के बारीक छिलके जैसी चीज़ का भी उन्हें इख़्तियार नहीं, आसमान व ज़मीन की हक़ीर से हक़ीर (मामूली से मामूली) चीज़ के भी वे मालिक नहीं, जिन-जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो वे तुम्हारी आवाज़ सुनते ही नहीं। ये बुत वग़ैरह बेजान चीज़ें हैं, कान वाली नहीं जो सुन सकें, बेजान चीज़ें भी कहीं किसी की सुन सकती हैं? और फ़र्ज़ करो कि तुम्हारी पुकार सुन भी लें तो चूँकि उनके क़ब्ज़े में कोई चीज़ नहीं इसलिये वे तुम्हारी हाजत पूरी नहीं कर सकते। क़ियामत के दिन तुम्हारे इस शिर्क से वे मुन्किर हो जायेंगे। तुम से बेज़ार नज़र आयेंगे। जैसे फ़रमायाः

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ........ الخ

यानी उससे ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पुकारता है जो क़ियामत तक उनकी पुकार को न क़बूल कर सकें, बल्कि इनकी दुआओं से वे बिल्कुल बेख़बर और ग़ाफ़िल हैं और मैदाने मेहशर में वे इनके दुश्मन हो जायेंगे और इनकी इबादतों के मुन्किर हो जायेंगे। एक दूसरी आयत में हैः

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا...... الخ

यानी ख़ुदा के सिवा और (दूसरे) माबूद बना लिये हैं ताकि वे उनके लिये इज़्ज़त का सबब बनें। लेकिन ऐसा होने का नहीं, बल्कि वे इनकी इबादतों से भी इनकार कर देंगे। और इनके मुख़ालिफ़ और दुश्मन बन जायेंगे। भला बताओ ख़ुदा जैसी सच्ची ख़बरें और कौन दे सकता है? जो उसने फ़रमाया वह यक़ीनन होकर ही रहेगा, जो कुछ होने वाला है उससे ख़ुदा तआ़ला पूरी तरह ख़बरदार है। उस जैसी सच्ची ख़बरें कोई और नहीं दे सकता।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَ اللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ۝ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۗ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ	ऐ लोगो! तुम (ही) ख़ुदा तआ़ला के मोहताज हो और अल्लाह (तो) बेपरवाह (और ख़ुद तमाम) ख़ूबियों वाला है। (15) अगर वह चाहे तुमको फ़ना कर दे और एक नई मख़्लूक़ पैदा कर दे (16) और यह बात अल्लाह तआ़ला को कुछ मुश्किल नहीं। (17) और कोई दूसरे का (गुनाह का) बोझ न उठाएगा। और अगर कोई बोझ का लदा हुआ (यानी कोई गुनाहगार) किसी को अपना बोझ उठाने के लिए बुलाएगा (भी) तब भी उसमें से कुछ भी बोझ न बटाया जाएगा अगरचे वह शख़्स क़रीबी रिश्तेदार ही (क्यों न) हो। आप तो सिर्फ़ ऐसे लोगों को डरा

Maktab E Ashraf

رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ط وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ط وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ○	सकते हैं जो बेदेखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं। और जो शख़्स पाक होता है वह अपने लिए पाक होता है, और ख़ुदा की तरफ़ लौटकर जाना है। (18)

नफ़्स की पाकीज़गी

ख़ुदा सारी मख़्लूक़ से बेनियाज़ है (यानी किसी की ज़रूरत नहीं) और तमाम मख़्लूक़ उसकी मोहताज है। वह ग़नी है और सब फ़क़ीर हैं। वह बेपरवाह है और सब उसके हाजत-मन्द हैं। उसके सामने हर कोई ज़लील (पस्त) है और वह अ़ज़ीज़ (ग़ालिब) है। किसी क़िस्म की हरकत व सुकून पर कोई क़ादिर नहीं। साँस तक लेना किसी के बस में नहीं। मख़्लूक़ बिल्कुल ही बेबस है। ग़नी, बेपरवाह और बेनियाज़ सिर्फ़ अल्लाह ही है, तमाम बातों पर क़ादिर वही है। वह जो करता है वह क़ाबिले तारीफ़ है। उसका कोई काम हिक्मत व तारीफ़ से ख़ाली नहीं। अपने क़ौल में, अपने फ़ेल में, अपनी शरीअ़त (क़ानून) में और तक़दीरों के मुक़र्रर करने में, ग़र्ज़ हर तरह वह बुज़ुर्ग और तारीफ़ व प्रशंसा के लायक़ है। लोगो! ख़ुदा की क़ुदरत है। अगर वह चाहे तो तुम सब को ग़ारत व बरबाद कर दे और तुम्हारे बदले दूसरे लोगों को लाये, रब पर यह काम कुछ मुश्किल नहीं। क़ियामत के दिन कोई दूसरे पर अपना बोझ लादना चाहे तो यह कोशिश भी पूरी न होगी। कोई न लेगा कि उसका बोझ उठाये। यार रिश्तेदार भी मुँह मोड़ लेंगे और पीठ फेर लेंगे, अगरचे माँ-बाप और औलाद हो। हर शख़्स अपने हाल में फंसा हुआ होगा, हर एक को अपनी-अपनी पड़ी होगी।

हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि पड़ोसी पड़ोसी के पीछे पड़ जायेगा। अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ करेगा कि इससे पूछ तो सही कि इसने मुझसे अपना दरवाज़ा बन्द क्यों कर लिया था? काफ़िर मोमिन के पीछे लग जायेगा और जो एहसान उसने दुनिया में किये थे वो याद करके कहेगा कि आज मैं तेरा मोहताज हूँ। मोमिन भी उसकी सिफ़ारिश करेगा और हो सकता है कि उसका कुछ अ़ज़ाब कम हो जाये अगरचे जहन्नम से छुटकारा मुहाल है। बाप बेटे को अपने एहसान जतायेगा और कहेगा कि राई के दाने के बराबर मुझे आज अपनी नेकियों में से दे दे, वह कहेगा अब्बा! आप चीज़ तो थोड़ी तलब फ़रमा रहे हैं लेकिन आज तो जो खटका आपको है वही मुझे भी है, मैं तो कुछ नहीं दे सकता। फिर बीवी के पास जायेगा, उससे कहेगा मैंने तेरे साथ दुनिया में कैसे सुलूक किये हैं? वह कहेगी बहुत ही अच्छे। यह कहेगा आज मैं तेरा मोहताज हूँ मुझे एक नेकी दे दे ताकि अ़ज़ाब से छूट जाऊँ। जवाब मिलेगा कि तुम्हारा सवाल तो बहुत मामूली है लेकिन जिस ख़ौफ़ में तुम हो वही डर मुझे भी लगा हुआ है, मैं तो कुछ भी सुलूक (एहसान का मामला) आज नहीं कर सकती। क़ुरआने करीम की एक और आयत में है:

لَا يَجْزِىْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ وَلَامَوْلُوْدٌ هُوَجَازٍعَنْ وَّالِدِهٖ شَيْئًا.

यानी आज न बाप बेटे के काम आये न बेटा बाप के काम आये। एक दूसरी जगह फ़रमान है:

يَوْمَ يَفِرُّالْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ.. ..... الخ

आज इनसान अपने भाई से, माँ से, बाप से, बीवी से छुपता फिरेगा। हर शख़्स अपने हाल में मस्त व

Maktab E Ashraf

बेख़ुद होगा। हर एक दूसरे से ग़ाफ़िल होगा। तेरे वअ़ज़ व नसीहत से वही लोग फ़ायदा उठा सकते हैं जो अ़क़्लमन्द और समझ रखने वाले हों। जो अपने रब से क़दम-क़दम पर ख़ौफ़ करने वाले और अल्लाह की इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) करते हुए नमाज़ों को पाबन्दी से अदा करने वाले हों। नेक आमाल ख़ुद तुम ही को नफ़ा देंगे। जो पाकीज़गियाँ (अच्छे आमाल) तुम करो उनका नफ़ा तुम ही को पहुँचेगा, आख़िर ख़ुदा के पास जाना है, उसके सामने पेश होना है। हिसाब किताब उसके सामने होना है। आमाल का बदला वह ख़ुद देने वाला है।

وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ○ وَلَا
الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ○ وَلَا الظِّلُّ وَلَا
الْحَرُوْرُ ○ وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا
الْاَمْوَاتُ ط اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ج
وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ○ اِنْ
اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ○ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ
بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ط وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا
نَذِيْرٌ ○ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ج جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ○ ثُمَّ اَخَذْتُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ○ ع

और अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं हो सकते (19) और न अंधेरा और रोशनी (20) और न छाँव और धूप। (21) और ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह जिसको चाहता है सुनवा देता है, और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में (दफ़न) हैं। (22) आप तो सिर्फ़ डराने वाले हैं। (23) हम ही ने आपको (दीने) हक़ देकर ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डर सुनाने वाला बनाकर भेजा है। और कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई जिसमें कोई डर सुनाने वाला न गुज़रा हो। (24) और अगर ये लोग आपको झुठलाएँ तो जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उन्होंने भी झुठलाया था, (और) उनके पास भी उनके पैग़म्बर मोजिज़े और सहीफ़े और रोशन किताबें लेकर आए थे। (25) फिर मैंने उन काफ़िरों को पकड़ लिया। सो (देखो) मेरा कैसा अ़ज़ाब हुआ। (26)

ये सब बराबर नहीं

इरशाद होता है कि मोमिन और काफ़िर बराबर नहीं, जिस तरह अंधा और देखता, अंधेरा और रोशनी, साया और धूप, ज़िन्दा और मुर्दा बराबर नहीं। जिस तरह इन चीज़ों में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है उसी तरह ईमान वाले और बेईमान में भी बेइन्तिहा फ़र्क़ है। मोमिन आँखों वाले, उजाले और ज़िन्दे की तरह है। इसके उलट काफ़िर है जो एक अंधेरे और लू वाली गर्मी की तरह है। जैसे फ़रमायाः

اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ........ الخ

यानी जो मुर्दा था फिर उसे हमने ज़िन्दा कर दिया। और उसे नूर दिया जिसे लिये हुए लोगों में चल फिर रहा है। ऐसा शख़्स और वह शख़्स जो अंधेरों में घिरा हुआ है जिनसे निकल ही नहीं सकता, क्या ये

Maktab E Ashraf

दोनों बराबर हो सकते हैं? एक और आयत में है:

مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ............ الخ

यानी इन दोनों जमाअ़तों की मिसाल अन्धे और देखते, सुनते की सी है......।

मोमिन तो आँखों और कानों वाला, उजाले और नूर वाला है, फिर सीधी राह पर है जो सही तौर पर सायों और नहरों वाली जन्नत में पहुँचेगा, और काफ़िर अन्धा बहरा और अन्धेरों में फंसा हुआ है, जिनसे निकल ही नहीं सकता और ठीक जहन्नम में पहुँचेगा, जो हरारत, तुन्दी, तेज़ी और गर्मी वाली आग का मख़्ज़न (भण्डार) है। अल्लाह तआ़ला जिसे चाहे सुना दे। यानी इस तरह सुनने की तौफ़ीक़ दे कि सुनकर क़बूल भी करता जाये। तू क़ब्रों वालों को नहीं सुना सकता, यानी जिस तरह कोई मरने के बाद क़ब्र में दफ़ना दिया जाये तो उसे पुकारना बेसूद है, इसी तरह काफ़िर लोग हैं कि हिदायत व दावत उनके लिये बेकार है। इसी तरह इन मुश्रिकों पर इनकी बदबख़्ती छा गई है और इनकी हिदायत की कोई सूरत बाक़ी नहीं रही, तू इन्हें किसी हिदायत पर नहीं ला सकता। तू सिर्फ़ आगाह कर देने वाला है, तेरे ज़िम्मे सिर्फ़ तब्लीग़ है, हिदायत व गुमराही अल्लाह की तरफ़ से है। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर आज तक हर उम्मत में रसूल आते रहे ताकि उनका उज़्र (और बहाना) बाक़ी न रह जाये। जैसे एक और आयत में है:

وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ.

हर क़ौम के लिये एक हादी और रहनुमा है। जैसे एक और जगह फ़रमान है:

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِىْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا ....الخ

कि हमने हर उम्मत में रसूल भेजा है।

इनका तुझे झुठलाना कोई नई बात नहीं है। इनसे पहले लोगों ने भी ख़ुदा के रसूलों को झुठलाया। जो बड़े-बड़े मोजिज़े खुली-खुली दलीलें साफ़-साफ़ आयतें लेकर आये थे और नूरानी सहीफ़े उनके हाथों में थे। आख़िर उनके झुठलाने का नतीजा यह हुआ कि मैंने उन्हें अ़ज़ाब व सज़ा में गिरफ़्तार कर लिया। देख ले कि फिर मेरे इनकार का नतीजा क्या हुआ? किस तरह तबाह व बरबाद हुए।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ۭ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ۭ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ۝	(ऐ मुख़ातब!) क्या तूने इस बात पर नज़र नहीं की कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा, फिर हमने उसके ज़रिये से मुख़्तलिफ़ रंगतों के फल निकाले। और (इसी तरह) पहाड़ों के भी मुख़्तलिफ़ हिस्से हैं- (बाज़े) सफ़ेद, (बाज़े) सुर्ख़ कि उनकी भी रंगतें अलग-अलग हैं। (और बाज़े न सफ़ेद न सुर्ख़ बल्कि) बहुत गहरे काले। (27) और इसी तरह आदमियों और जानवरों और चौपायों में भी बाज़ ऐसे हैं कि उनकी रंगतें अलग-अलग हैं। ख़ुदा से उसके वही बन्दे डरते हैं जो (उसकी बड़ाई का) इल्म रखते हैं, वाक़ई अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त, बड़ा बख़्शने वाला है। (28)

Maktab-E-Ashraf

अल्लाह की इन निशानियों को भी देखो

रब की क़ुदरतों के कमालात को देखो कि एक ही क़िस्म की चीज़ों में विभिन्न प्रकार के नमूने नज़र आते हैं। एक पानी आसमान से उतरता है और उसी से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के रंग बिरंग के फूल पैदा हो जाते हैं, सुर्ख़ सब्ज़, सफ़ेद वग़ैरह। इसी तरह हर एक की ख़ुशबू अलग-अलग, हर एक का ज़ायक़ा अलग और भिन्न। जैसे एक दूसरी आयत में फ़रमाया है:

وَفِي الْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ......... الخ

यानी कहीं अंगूर है कहीं खजूर है कहीं खेती है वग़ैरह। इसी तरह पहाड़ों की पैदाईश भी क़िस्म-क़िस्म की है, कोई सफ़ेद है कोई सुर्ख़ है कोई काला है। किसी में रास्ते और घाटियाँ हैं, कोई लम्बा है कोई ना-हमवार है। इन बेजान चीज़ों के बाद जानदार चीज़ों पर एक नज़र डालो। इनसानों को जानवरों को चौपायों को देखो। इनमें भी क़ुदरत की साख़्त (कारीगरी) और काट-छाँट की गुलकारियाँ पाओगे। बरबर हब्शी तुमातम बिल्कुल काले रंग के होते हैं, सक़ालिबा रोमी बिल्कुल सफ़ेद रंग के, अ़रब दरमियाना, हिन्दी उनके क़रीब क़रीब, चुनाँचे एक दूसरी आयत में है:

وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ.

तुम्हारी बोलचाल का इख़्तिलाफ़ (अलग-अलग और एक दूसरे से भिन्न होना), तुम्हारी रंगतों का इख़्तिलाफ़ भी एक आ़लिम के लिये तो क़ुदरत की कामिल निशानी है, इसी तरह चौपाये और दूसरे हैवानात के रंग व रूप अलग अलग हैं। बल्कि एक ही क़िस्म के जानवरों में उनकी रंगतें भी अलग-अलग हैं, बल्कि एक ही जानवर के जिस्म पर कई क़िस्म के रंग होते हैं, सुब्हानल्लाह। सबसे अच्छा ख़ालिक़ ख़ुदा कैसी कुछ बरकतों वाला है।

मुस्नद बज़्ज़ार में है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्ल. से सवाल किया कि क्या ख़ुदा तआ़ला रंग भी भरता है? आपने फ़रमाया हाँ! ऐसा रंग रंगता है जो कभी हल्का न पड़े, सुर्ख़ ज़र्द और सफ़ेद। यह हदीस मुर्सल और मौक़ूफ़ भी नक़ल की गयी है, इसके बाद ही फ़रमाया कि जितना कुछ ख़ौफ़े ख़ुदा करना चाहिये इतना ख़ौफ़ तो उससे सिर्फ़ उलेमा ही करते हैं। क्योंकि वे जानने बूझने वाले होते हैं। हक़ीक़त में जो शख़्स जिस क़द्र अल्लाह तआ़ला की ज़ात के बारे में मालूमात ज़्यादा रखेगा उसी क़द्र उस अ़ज़ीम क़दीर अ़लीम ख़ुदा की अ़ज़मत व हैबत उसके दिल में बढ़ेगी और उसी क़द्र उसकी ख़शीयत (डर और ख़ौफ़) उसके दिल में ज़्यादा होगी। जो जानेगा कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है वह क़दम-क़दम पर उससे डरता रहेगा। ख़ुदा के साथ सच्चा इल्म उसे हासिल है जो उसकी ज़ात के साथ किसी को शरीक न करे। उसके हलाल किये हुए को हलाल और उसके हराम बताये हुए को हराम जाने। उसके फ़रमान पर यक़ीन करे, उसके अहकाम की तामील करे। उसकी मुलाक़ात को सच्चा और यक़ीनी जाने, अपने आमाल के हिसाब को सच समझे।

ख़शीयत (अल्लाह का डर और ख़ौफ़) एक क़ुव्वत होती है जो बन्दे और ख़ुदा की नाफ़रमानी के दरमियान रोक और बाधा हो जाती है। आ़लिम कहते ही उसे हैं जो तन्हाई और एकांत में भी ख़ुदा से डरता रहे और ख़ुदा की रज़ामन्दी की रग़बत करे और उसकी नाराज़गी के कामों से नफ़रत करे।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि मालूमात की अधिकता का नाम इल्म नहीं, बल्कि इल्म नाम है ख़ुदा तआ़ला से बहुत ज़्यादा डरने का। हज़रत इमाम मालिक रह. का क़ौल है कि बहुत ज़्यादा रिवायतें

बयान करने का नाम इल्म नहीं, इल्म तो एक नूर है जिसे अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे के दिल में डाल देता है। हज़रत इब्ने सालेह मिस्री रह. फ़रमाते हैं कि इल्म बहुत ज़्यादा रिवायतें बयान करने का नाम नहीं, बल्कि इल्म नाम है उसका जिसकी ताबेदारी ख़ुदा की तरफ़ से फ़र्ज़ है, यानी किताब व सुन्नत और जो सहाबा और इमामों से पहुँचा हो, वह रिवायत से ही हासिल होता है। नूर जो बन्दे के आगे-आगे होता है वह इल्म को और उसके मतलब को समझ लेता है। नक़ल है कि उलेमा की तीन क़िस्में हैं-

1. आ़लिम बिल्लाह।
2. आ़लिम बि-अमरिल्लाह।
3. आ़लिम बिल्लाह व बि-अमरिल्लाह।

आ़लिम बिल्लाह आ़लिम बि-अमरिल्लाह नहीं, और आ़लिम बि-अमरिल्लाह आ़लिम बिल्लाह नहीं, हाँ आ़लिम बि-अमरिल्लाह व बिल्लाह आ़लिम है जो अल्लाह तआ़ला से डरता हो और फ़राईज़ की हदों को जानता हो। 'आ़लिम बिल्लाह' वह है जो अल्लाह तआ़ला से डरता हो लेकिन हुदूद व फ़राईज़ को न जानता हो। 'आ़लिम बि-अमरिल्लाह' वह है जो हुदूद व फ़राईज़ को तो जानता हो लेकिन दिल उसका अल्लाह के ख़ौफ़ से ख़ाली हो।

जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत (और साथ ही उस पर अ़मल भी) करते रहते हैं और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं, और जो कुछ हमने उनको अ़ता फ़रमाया है उसमें से छुपे और खुले तौर पर ख़र्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी मदधम और फीकी न होगी। (29) ताकि उनको उनकी उजरतें (भी) पूरी-पूरी दें और उनको अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा (भी) दें। बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला, बड़ा क़द्र करने वाला है। (30)	اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ۝ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝

क़ुरआन की तिलावत, नमाज़ को क़ायम करना और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना

मोमिन बन्दों की नेक सिफ़्तें बयान हो रही हैं कि वे किताबुल्लाह की तिलावत में मशग़ूल रहा करते हैं। ईमान के साथ बढ़ते रहते हैं। अ़मल भी हाथ से जाने नहीं देते। नमाज़ के पाबन्द, ज़कात ख़ैरात के आ़दी, पोशीदा ऐलानिया ख़ुदा के बन्दों के साथ सुलूक करने वाले होते हैं। और अपने माल के सवाब के उम्मीदार ख़ुदा से होते हैं, जिसका मिलना यक़ीनी है। जैसे कि इस तफ़सीर के शुरू में फ़ज़ाईले क़ुरआन के ज़िक्र में हमने बयान किया है कि कलामुल्लाह शरीफ़ अपने साथी से कहेगा कि हर ताजिर अपनी तिजारत के पीछे है और तू सब की सब तिजारतों के पीछे है। उन्हें उनके पूरे सवाब मिलेंगे बल्कि बहुत बढ़ा-चढ़ाकर मिलेंगे, जिसका ख़्याल भी नहीं। ख़ुदा गुनाहों का बख़्शने वाला और छोटे और थोड़े अ़मल का भी क़द्रदान

है। हज़रत मुतर्रिफ़ रह. तो इस आयत को क़ारियों की आयत कहते थे।

मुस्नद की एक हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे से राज़ी होता है तो उस पर भलाईयों की सना (तारीफ़ व प्रशंसा) करता है जो उसने की न हो। और जब किसी से नाराज़ होता है तो इसी तरह बुराईयों की। लेकिन यह हदीस बहुत ही ग़रीब है।

Maktab E Ashraf

और यह किताब जो हमने आपके पास 'वही' के तौर पर भेजी है, यह बिल्कुल ठीक है जो कि अपने से पहली किताबों की भी तस्दीक़ करती है। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की (हालत की) पूरी ख़बर रखने वाला, ख़ूब देखने वाला है। (31)	وَالَّذِیٓ اَوْحَیْنَآ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِیْرٌۢ بَصِیْرٌ ○

क़ुरआन मजीद

क़ुरआन ख़ुदा का सच्चा कलाम है और जिस तरह अगली (पहली आसमानी) किताबें इसकी ख़बर देती रही हैं यह भी उन अगली किताबों की तस्दीक़ कर रहा है। रब तआ़ला ख़बीर व बसीर (यानी हर चीज़ की ख़बर रखने और हर चीज़ को देखने वाला) है। हर फ़ज़ीलत व सम्मान के हक़दार को अच्छी तरह जानता है। अम्बिया को दूसरे इनसानों पर उसने अपने वसीअ़ (बेहिसाब और विस्तृत) इल्म से फ़ज़ीलत दी है, फिर अम्बिया में भी आपस में मर्तबे मुक़र्रर कर दिये हैं और हुज़ूर सल्ल. का दर्जा सबसे बड़ा कर दिया है। अल्लाह तआ़ला अपने तमाम अम्बिया पर दुरूद व सलाम भेजे।

फिर यह किताब हमने उन लोगों के हाथों में पहुँचाई जिनको हमने अपने (तमाम दुनिया के) बन्दों में से पसन्द फ़रमाया, फिर बाज़े तो उनमें अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं और बाज़े उनमें दरमियानी दर्जे के हैं, और बाज़े उनमें ख़ुदा की तौफ़ीक़ से नेकियों में तरक़्क़ी किए चले जाते हैं। यह बड़ा फ़ज़्ल है। (32)	ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِیْنَ اصْطَفَیْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَیْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِیْرُ ○

विभिन्न कोशिशें

जिस किताब का ऊपर ज़िक्र हुआ था उस किताब यानी क़ुरआने करीम को हमने अपने चुने हुए बन्दों के हाथों में दिया, यानी इस उम्मत के। फिर इनमें तीन क़िस्म के लोग हो गये। बाज़ तो ज़रा कुछ आगे पीछे हो गये वे ज़ालिम कहलाये, उनसे कुछ ग़ैर-मुनासिब काम भी सर्ज़द हो गये। बाज़ दरमियानी दर्जे के रहे जिन्होंने हराम की हुई चीज़ों और बातों से परहेज़ किया, वाजिबात बजा लाते रहे। लेकिन कभी-कभी कोई मुस्तहब काम उनसे छूट भी गया और कभी कोई हल्की सी नाफ़रमानी भी सर्ज़द हो गई। बाज़ दर्जों में बहुत ही आगे निकल गये, वाजिबात के साथ तो मुस्तहब चीज़ों को भी उन्होंने नहीं छोड़ा और हराम की

हुई चीज़ों को छोड़ा, मक्रूह चीज़ों और बातों से भी बिल्कुल अलग रहे, बल्कि बाज़ मर्तबा मुबाह (जायज़) चीज़ों को भी डरकर छोड़ दिया।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि पसन्दीदा बन्दों से मुराद उम्मते मुहम्मदिया है, जो ख़ुदा की हर किताब की वारिस बनाई गई है। इनमें से जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं उन्हें बख़्शा जायेगा, और इनमें से जो दरमियानी दर्जे के लोग हैं उनसे आसानी से हिसाब लिया जायेगा, और इनमें से जो नेकियों में बढ़ जाने वाले हैं उन्हें बेहिसाब जन्नत में पहुँचाया जायेगा। तबरानी में है, हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि मेरी शफ़ाअ़त मेरी उम्मत के कबीरा (बड़े) गुनाह वालों के लिये है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि 'साबिक़ बिल-ख़ैरात' (नेकियों में आगे बढ़ जाने वाले) लोग तो बग़ैर हिसाब किताब के दाख़िले जन्नत होंगे और अपने नफ़्सों पर ज़ुल्म करने वाले और आराफ़ वाले हज़रत मुहम्मद सल्ल. की शफ़ाअ़त से जन्नत में जायेंगे। ग़र्ज़ यह कि इस उम्मत के हल्के गुनाहगार भी ख़ुदा के पसन्दीदा बन्दों में दाख़िल हैं। अल्लाह की ज़ात बड़ी अ़ज़्मत वाली और क़ाबिले तारीफ़ है।

अगरचे अक्सर बुज़ुर्गों और पहले उलेमा का क़ौल यही है लेकिन बाज़ बुज़ुर्गों ने यह भी फ़रमाया है कि ये लोग न तो इस उम्मत में दाख़िल हैं न चुने हुए और पसन्दीदा हैं, न किताब के वारिस हैं, बल्कि मुराद इससे काफ़िर मुनाफ़िक़ और बायें हाथ से नामा-ए-आमाल दिये जाने वाले लोग हैं। पस ये तीन क़िस्में वही हैं जिनका बयान सूरः वाक़िआ़ के शुरू व आख़िर में है यानी ये जो तीन क़िस्में गिनाई गई हैं ये बरगुज़ीदा (अल्लाह के पसन्दीदा और नेक) बन्दों की नहीं बल्कि बन्दों की हैं, यानी "इबादिना" की, कि वे किन-किन क़िस्मों के होते हैं। लेकिन सही क़ौल यही है कि ये इसी उम्मत में हैं। इमाम इब्ने जरीर भी इसी क़ौल को पसन्द करते हैं, और आयत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ भी यही हैं। हदीसों से भी यही साबित होता है। चुनाँचे एक हदीस में है कि ये तीनों गोया एक हैं और तीनों ही जन्नती हैं। (मुस्नद अहमद)

यह हदीस ग़रीब है और इसके रावियों में एक रावी हैं जिनका नाम ज़िक्र नहीं हुआ। इस हदीस का मतलब यह है कि इस उम्मत में होने के एतिबार से और इस एतिबार से कि वे जन्नती हैं गोया एक ही हैं। हाँ मर्तबों में फ़र्क़ होना लाज़िमी है। दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तिलावत करके फ़रमाया- 'साबिक़ीन' तो बेहिसाब जन्नत में जायेंगे और दरमियानी दर्जे के लोगों से हिसाब आसानी के साथ लिया जायेगा और अपने नफ़्सों पर ज़ुल्म करने वाले मेहशर की लम्बी मुद्दत में रोके जायेंगे, फिर ख़ुदा की रहमत से तलाफ़ी हो जायेगी और ये कहेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है कि उसने हमसे रंज व ग़म को दूर कर दिया। हमारा रब बड़ा ही ग़फ़ूर (माफ़ करने वाला) व शकूर (क़द्रदान) है, जिसने हमें अपने फ़ज़्ल व करम से रहने की ऐसी जगह अ़ता फ़रमाई जहाँ हमें कोई दुख-दर्द नहीं। (मुस्नद)

इब्ने अबी हातिम की इस रिवायत में अलफ़ाज़ की कमी-बेशी है। इब्ने जरीर ने भी इस हदीस को रिवायत किया है, उसमें है कि हज़रत अबू साबित मस्जिद में आते हैं, हज़रत अबू दर्दा रज़ि. के पास बैठ जाते हैं और दुआ़ करते हैं कि ख़ुदाया मेरी वह्शत (घबराहट और तन्हाई) का अनीस (साथी) मेरे लिये मुहैया कर दे और मेरी ग़ुर्बत पर रहम कर और मुझे कोई अच्छा रफ़ीक़ (साथी) अ़ता फ़रमा। यह सुनकर सहाबी उनकी तरफ़ मुतवज्जह होते हैं और फ़रमाते हैं कि मैं तेरा साथी हूँ। सुन मैं तुझे आज वह हदीसे रसूल सुनाता हूँ जो मैंने आज तक किसी को नहीं सुनायी। फिर इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया 'साबिक़ बिलख़ैरात' (नेकियों में आगे बढ़ने और तरक़्क़ी करने वाले) तो जन्नत में बेहिसाब जायेंगे, और "मुक़्तसिद" (दरमियानी दर्जे के) लोगों से आसानी के साथ हिसाब लिया जायेगा। और 'ज़ालिमुल्लिनफ़्सिही'

(अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले यानी गुनाहगार) को उस जगह में रंज व ग़म पहुँचेगा, जिससे निजात पाकर कहेंगे 'ख़ुदा का शुक्र है जिसने हमसे रंज व ग़म दूर कर दिया'।

तीसरी हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने इन तीनों के बारे में फ़रमाया कि ये सब इसी उम्मत से हैं। चौथी हदीस में है कि मेरी उम्मत के तीन हिस्से हैं, एक बेहिसाब व बेअ़ज़ाब जन्नत में जाने वाला, दूसरा आसानी से हिसाब लिया जाने वाला और फिर जन्नत में जाने वाला, तीसरी वह जमाअ़त होगी जिनसे बाज़पुर्स (पूछगछ) तो ज़रूर होगी लेकिन फ़रिश्ते हाज़िर होकर कहेंगे कि हमने इन्हें 'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू' कहते हुए पाया है। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा सच है मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, अच्छा मैंने इनको इस क़ौल की वजह से छोड़ा, जाओ इन्हें जन्नत में ले जाओ और इनकी ख़ताएँ जहन्नमियों पर लाद दो। इसी का ज़िक्र इस आयत में है:

وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ مَّعَ أَثْقَالِهِمْ.

यानी वे इनके बोझ अपने बोझ के साथ उठायेंगे।

इसकी तस्दीक़ उसमें है जिसमें फ़रिश्तों का ज़िक्र है। अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों में से जिन्हें किताब का वारिस बनाया है उनका ज़िक्र करते हुए उनकी तीन क़िस्में बताई हैं, पस उनमें से जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं उनसे बाज़पुर्स (हिसाब यानी पूछगछ) की जायेगी। (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस उम्मत की क़ियामत के दिन तीन जमाअ़तें होंगी, एक बेहिसाब जन्नत में जाने वाली, एक आसानी से हिसाब लिये जाने वाली, एक गुनाहगार जिसके बारे में ख़ुदा तआ़ला दरियाफ़्त फ़रमायेगा हालाँकि वह ख़ूब जानता है कि ये कौन हैं? फ़रिश्ते कहेंगे ख़ुदाया इनके बड़े बड़े गुनाह हैं, लेकिन इन्होंने कभी भी तेरे साथ कोई शरीक नहीं किया। रब तआ़ला फ़रमायेगा इन्हें मेरी रहमत में दाख़िल कर दो। फिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। (इब्ने जरीर)

दूसरा क़ौल हज़रत आ़यशा रज़ि. से है, इस आयत के बारे में सवाल होता है तो आप फ़रमाती हैं कि बेटा ये सब जन्नती लोग हैं। 'साबिक़ बिलख़ैरात' तो वे हैं जो रसूलुल्लाह सल्ल. के ज़माने में थे, जिन्हें ख़ुद आपने जन्नत की बशारत (ख़ुशख़बरी) दी। "मुक़्तसिद" वे हैं जिन्होंने आपकी पैरवी की, यहाँ तक कि उनसे मिल गये (यानी सहाबा के पैरो बन गये) और 'ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही' मुझ तुझ जैसे हैं। (अबू दाऊद तियालिसी) ख़्याल फ़रमाईये कि हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ि. इसके बावजूद कि 'साबिक़ बिलख़ैरात' (नेकियों में आगे बढ़ने और तरक़्क़ी करने वालों) में से बल्कि उनमें भी बेहतर दर्जे वालों में से हैं लेकिन किस तरह अपने बारे में इन्किसारी और विनम्रता से काम लेती हैं। हालाँकि हदीस में आ चुका है कि तमाम औ़रतों पर उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ि. को ही फ़ज़ीलत है जो फ़ज़ीलत 'सरीद' (यह अ़रब का एक ख़ास खाना है) को हर क़िस्म के खानों पर है। हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. फ़रमाते हैं कि 'ज़ालिमुल-लिनफ़्सिही' (अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाले) तो हमारे बदवी (देहाती) लोग हैं, और 'मुक़्तसिद' (दरमियानी दर्जे के) हमारे शहरी लोग हैं। और 'साबिक़ बिलख़ैरात' (नेकियों में आगे बढ़ने और तरक़्क़ी करने वाले) हमारे मुजाहिद लोग हैं। (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत कअ़बे अहबार रह. फ़रमाते हैं कि ये तीनों क़िस्म के लोग इसी उम्मत में से हैं और सब जन्नती हैं। क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने इन तीनों क़िस्मों के लोगों के ज़िक्र के बाद जन्नत का ज़िक्र करके फिर फ़रमाया है-

Maktab-E-Ashraf

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ.

पस जिन लोगों ने कुफ़्र किया ये दोज़ख़ी हैं। (इब्ने जरीर)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने हज़रत कअ़बे अहबार से इस आयत के बारे में सवाल किया तो आपने फ़रमाया- कअ़ब! ख़ुदा की क़सम यह एक ही जमाअ़त और गिरोह में हैं, हाँ आमाल के मुताबिक़ इनके दर्जे कम व ज़्यादा हैं। अबू इस्हाक़ सबीअ़ी भी इस आयत के बारे में फ़रमाते हैं कि ये तीनों जमाअ़तें नाजी (निजात पाने वाली) हैं। मुहम्मद बिन हनफ़िया रह. फ़रमाते हैं कि यह उम्मते मरहूमा है इनके गुनाहगारों को बख़्श दिया जायेगा और इनके मुक़्तसिद ख़ुदा के पास जन्नत में होंगे, और इनके साबिक़ बुलन्द दर्जों में होंगे। मुहम्मद बिन अ़ली बाक़िर रह. फ़रमाते हैं कि यहाँ जिन लोगों को 'अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले' कहा गया है ये वे लोग हैं जिन्होंने गुनाह भी किये थे और नेकियाँ भी।

इन हदीसों और अक़्वाल को सामने रखकर तो यह साफ़ मालूम होता है कि इस आयत में उमूम है और इस उम्मत की इन तीनों क़िस्मों को यह शामिल है। पस उलेमा-ए-किराम इस नेमत के साथ सबसे ज़्यादा रश्क (ईर्ष्या) के क़ाबिल हैं और इस रहमत के सबसे ज़्यादा हक़दार हैं। जैसे कि मुस्नद अहमद की हदीस में है कि एक शख़्स मदीने से दमिश्क़ में हज़रत अबू दर्दा रज़ि. के पास जाता है और आपसे मुलाक़ात करता है तो आप दरियाफ़्त फ़रमाते हैं- प्यारे भाई यहाँ कैसे आना हुआ? वह कहते हैं उस हदीस को सुनने के लिये आया हूँ जो आप बयान किया करते हैं। पूछा क्या किसी तिजारत की ग़र्ज़ से नहीं आये? जवाब दिया नहीं। पूछा फिर कोई और मतलब भी होगा? फ़रमाया कोई मक़सद नहीं। पूछा फिर क्या हदीस की तलब के लिये यह सफ़र किया है? जवाब दिया कि हाँ। फ़रमाया सुनो! मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि जो शख़्स इल्म की तलाश में किसी रास्ते को तय करे अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत के बाग़ों में चलायेगा, ख़ुदा की रहमत के फ़रिश्ते तालिब-इल्मों के लिये पर बिछा देते हैं, क्योंकि वे उनसे बहुत ख़ुश हैं और उनकी ख़ुशी के तालिब व इच्छुक हैं। आ़लिम के लिये आसमान व ज़मीन की हर चीज़ इस्तिग़फ़ार करती है, यहाँ तक कि पानी के अन्दर की मछलियाँ भी। आ़बिद पर आ़लिम की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसी चाँद की फ़ज़ीलत तारों पर। उलेमा नबियों के वारिस हैं। अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ने अपनी मीरास में दिरहम व दीनार (यानी दुनिया का माल) नहीं छोड़े उनका वरसा इल्मे दीन है। जिसने इसे लिया उसने बड़ी दौलत हासिल कर ली। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी वग़ैरह)

इस हदीस के तमाम तरीक़ (सनद) और अलफ़ाज़ और शरह मैंने सही बुख़ारी किताबुल-इल्म की शरह में मुफ़स्सल बयान कर दी है। फ़ल्हम्दु लिल्लाह। सूरः तॉ-हा के शुरू में वह हदीस गुज़र चुकी है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उलेमा से फ़रमायेगा- मैंने अपना इल्म व हिक्मत तुम्हें इसलिये ही दिया था कि मैं तुम्हें बख़्श दूँगा, तुम कैसे ही हो मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं।

वे बाग़ात हैं हमेशा रहने के जिनमें ये लोग दाख़िल होंगे (और) उनको सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे, और वहाँ उनका लिबास रेशम का होगा। (33) और कहेंगे अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है जिसने हमसे (रंज और) ग़म	جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ○ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ

दूर किया, बेशक हमारा परवर्दिगार बड़ा बख़्शने वाला, क़द्रदान है। (34) जिसने हमको अपने फ़ज़्ल से हमेशा रहने के ठिकाने में ला उतारा, जहाँ हमको न कोई परेशानी पहुँचेगी और न हमको कोई ख़स्तगी पहुँचेगी। (35)	عَنَّا الْحَزَنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝ الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِن فَضْلِهِ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ۝

Mahtab E Ashraf

यह इनाम व इकराम

फ़रमाता है कि जिन बरगुज़ीदा (चुने हुए और मक़बूल) लोगों को हमने अपनी किताब का वारिस किया है उन्हें क़ियामत के दिन हमेशा रहने वाली अबदी नेमतों वाली जन्नतों में पहुँचायेंगे। जहाँ उन्हें सोने और मोतियों के कंगन पहनाये जायेंगे। हदीस में है कि मोमिन का ज़ेवर वहाँ तक होगा जहाँ तक उसके वुज़ू का पानी पहुँचता है। उसका लिबास वहाँ ख़ालिस रेशमी होगा जिसकी दुनिया में इनको मनाही कर दी गई थी। हदीस में है कि जो शख़्स यहाँ दुनिया में हरीर व रेशम पहनेगा वह उसे आख़िरत में नहीं पहनाया जायेगा। एक और हदीस में है कि यह रेशम काफ़िरों के लिये दुनिया में है और मोमिनों के लिये आख़िरत में है। एक दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने जन्नत वालों के ज़ेवरों का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि उन्हें सोने चाँदी के ज़ेवर पहनाये जायेंगे जो मोतियों के जड़ाऊ किये हुए होंगे। उन पर दुर्र व याक़ूत (क़ीमती मोतियों) के ताज होंगे, बिल्कुल शाहाना होंगे, वे नौजवान होंगे। बग़ैर बालों के सुर्मा लगी हुई आँखों वाले। वे अल्लाह तआ़ला का शुक्रिया अदा करते हुए कहेंगे कि अल्लाह का एहसान है जिसने हमसे ख़ौफ़ को दूर कर दिया और दुनिया व आख़िरत की परेशानियों से हमें निजात दे दी।

हदीस में है कि 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' वालों पर क़ब्रों में मैदाने हश्र में कोई ख़ौफ़ और घबराहट नहीं। मैं तो गोया उन्हें अब देख रहा हूँ कि वे सरों से मिट्टी झाड़ते हुए कह रहे हैं- ख़ुदा का शुक्र है जिसने हमसे ग़म व रंज दूर कर दिया। (इब्ने अबी हातिम)

तबरानी में है कि मौत के वक़्त भी उन्हें कोई घबराहट नहीं होगी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का फ़रमान है कि उनकी बड़ी-बड़ी और बहुत सी ख़तायें माफ़ कर दी गईं। छोटी-छोटी और कम-मिक़्दार (थोड़ी) नेकियाँ क़द्रदानी के साथ क़बूल फ़रमाई गईं। ये कहेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है जिसने अपने फ़ज़्ल व करम, लुत्फ़ व रहम से यह पाकीज़ा-तरीन मक़ामात अ़ता फ़रमाये, हमारे आमाल तो इस क़ाबिल थे ही नहीं। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि तुम में से किसी को उसके आमाल जन्नत में नहीं ले जा सकते। लोगों ने पूछा आपको भी नहीं? फ़रमाया न मुझे, मगर इसी सूरत में कि ख़ुदा की रहमत मेरा साथ दे। वे कहेंगे यहाँ तो हमें न कसी तरह की मशक़्क़त व मेहनत है, न थकान व कुलफ़त है। रूह अलग ख़ुश है, जिस्म अलग राज़ी है, बदला उसका जो दुनिया में राहे ख़ुदा की तकलीफ़ें इन्हें उठानी पड़ी थीं। आज राहत ही राहत है। इनसे कह दिया गया है कि सहता-पचता खाते पीते रहो, उसके बदले जो दुनिया में तुमने मेरी फ़रमाँबरदारियाँ कीं।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۝ وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا ۚ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ۝	और (उनके विपरीत) जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए दोज़ख़ की आग है, न तो उनकी मौत आएगी कि मर ही जाएँ और न उनसे दोज़ख़ का अ़ज़ाब ही हल्का किया जाएगा। हम हर काफ़िर को ऐसी ही सज़ा देते हैं। (36) और वे लोग उस (दोज़ख़) में चिल्लाएँगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको (यहाँ से) निकाल लीजिए, हम (अब ख़ूब) अच्छे (-अच्छे) काम करेंगे, उन कामों के उलट जो किया करते थे। क्या हमने तुमको इतनी उम्र न दी थी कि जिसको समझना होता वह समझ सकता? और तुम्हारे पास डराने वाला भी पहुँचा था। सो (उसे न मानने का) मज़ा चखो, कि ऐसे ज़ालिमों का (यहाँ) कोई मददगार नहीं। (37)

ع ۱۱ ۱۶

कितने ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब

नेक लोगों का हाल बयान फ़रमाकर अब बुरे लोगों का हाल बयान हो रहा है कि ये दोज़ख़ की आग में जलते झुलसते रहेंगे। इन्हें वहाँ मौत भी न आयेगी कि मर जायें। जैसे एक और आयत में है:

لَا يَمُوْتُ فِيهَا وَلَا يَحْيٰى.

न वहाँ इन्हें मौत आयेगी न कोई अच्छी ज़िन्दगी होगी।

सही मुस्लिम शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो हमेशा के जहन्नमी हैं उन्हें वहाँ मौत न आयेगी और न अच्छी ज़िन्दगी मिलेगी। वे तो कहेंगे ऐ दारोग़ा-ए-जहन्नम तुम ही अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करो कि अल्लाह हमें मौत दे दे लेकिन जवाब मिलेगा कि तुम तो यहीं पड़े रहोगे। पस वे तो मौत को अपने लिये राहत समझेंगे लेकिन वह आयेगी ही नहीं। न मरें न अ़ज़ाब में कमी देखें। जैसे एक और आयत में है:

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُوْنَ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ.

यानी काफ़िर लोग हमेशा अ़ज़ाब में रहेंगे जो अ़ज़ाब कभी भी न हटेंगे न कम होंगे। ये तमाम भलाई से पूरी तरह मायूस होंगे। एक दूसरी जगह है:

كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا.

जहन्नम की आग हमेशा तेज़ ही होती रहेगी। एक और जगह फ़रमाता है:

فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا.

लो अब मज़े चखो अ़ज़ाब ही अ़ज़ाब अब तुम्हारे लिये बढ़ते रहेंगे, काफ़िरों का यही बदला है। वे चीख़ पुकार करेंगे, हाय-वाय करेंगे, दुनिया की तरफ़ लौटना चाहेंगे। इक़रार करेंगे कि अब गुनाह नहीं करेंगे,

Maktab E Ashraf

नेकियाँ करेंगे, लेकिन रब्बुल-आलमीन ख़ूब जानता है कि अगर ये वापस भी जायें तो वही सरकशी करेंगे। इसी लिये इनकी यह तमन्ना पूरी न होगी। जैसे एक और जगह फ़रमाया कि इन्हें इनके इस सवाल पर जवाब मिलेगा कि तुम वही हो कि जब ख़ुदा की वह्दानियत (अल्लाह के एक होने) का बयान होता था तो तुम कुफ़्र करने लगते थे। वहाँ उसके साथ शिर्क करने में तुम्हें मज़ा आता था, पस अगर तुम्हें लौटा दिया गया तो वही करोगे जिससे रोका जाता है। पस फ़रमाया दुनिया में तुम बहुत जिये तुम उस लम्बी मुद्दत में बहुत कुछ कर सकते थे, जैसे सत्तर साल जिये।

हज़रत क़तादा रह. का क़ौल है कि लम्बी उम्र ख़ुदा की तरफ़ से हुज्जत पूरी करता है। अल्लाह तआ़ला से पनाह माँगनी चाहिये कि उम्र के बढ़ने के साथ ही इनसान बुराईयों में बढ़ता चला जाये। देखो तो यह आयत जब उतरी है उस वक़्त बाज़ लोग सिर्फ़ अट्ठारह साल की उम्र के ही थे। वहब बिन मुनब्बेह रह. फ़रमाते हैं कि मुराद बीस साल की उम्र है। हसन रह. फ़रमाते हैं कि चालीस साल की उम्र में इनसान को होशियार हो जाना चाहिये। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस उम्र तक पहुँचना ख़ुदा की तरफ़ से उज़्र का पूरा हो जाना है, आप ही से साठ साल का क़ौल भी नक़ल किया गया है, और यही ज़्यादा सही भी है। जैसे एक हदीस में भी है। गोया इमाम इब्ने जरीर रह. इसकी सनद में कलाम करते हैं लेकिन वह कलाम ठीक नहीं। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से भी साठ साल ही मरवी हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन एक मुनादी यह भी होगी कि साठ साल की उम्र को पहुँच जाने वाले कहाँ हैं? लेकिन इसकी सनद ठीक नहीं। मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जिसे अल्लाह तबारक व तआ़ला ने साठ सत्तर साल की उम्र को पहुँचा दिया उसका कोई उज़्र भी ख़ुदा के यहाँ नहीं चलेगा (यानी उसको इतनी उम्र मिली कि नेक काम करके अपनी आख़िरत संवार सकता था)। सही बुख़ारी में है कि उस शख़्स का उज़्र ख़ुदा ने काट दिया जिसे साठ साल तक दुनिया में रखा। इस हदीस की और सनदें भी हैं लेकिन अगर न भी हों तो भी सिर्फ़ हज़रत इमाम बुख़ारी रह. का इसे अपनी किताब सही बुख़ारी में लाना इसकी सेहत का काफ़ी सुबूत था। इब्ने जरीर रह. का यह कहना कि इसकी सनद की जाँच की ज़रूरत है। इमाम बुख़ारी के सही कहने के मुक़ाबले में एक जौ की भी क़ीमत नहीं रखता। वल्लाहु आलम।

बाज़ लोग कहते हैं कि तबीबों के नज़दीक तबई उम्र एक सौ बीस साल की है, साठ साल तक तो इनसान बढ़ोतरी में रहता है फिर घटना शुरू हो जाता है। पस आयत में भी इसी उम्र को मुराद लेना अच्छा है। और यही इस उम्मत की ग़ालिब (ज़्यादातर) उम्र है। चुनाँचे एक हदीस में है कि मेरी उम्मत की उम्रें साठ से सत्तर साल तक हैं और इससे आगे बढ़ने वाले कम हैं। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

इमाम तिर्मिज़ी रह. तो इस हदीस के बारे में फ़रमाते हैं कि इसकी और कोई सनद नहीं। लेकिन ताज्जुब है कि इमाम साहिब रह. ने यह कैसे फ़रमा दिया! इसकी एक दूसरी सनद इब्ने अबिद्दुन्या में मौजूद है। ख़ुद तिर्मिज़ी शरीफ़ में भी यह हदीस दूसरी सनद से किताबुज़्ज़ोहद में मौजूद है। एक और ज़ईफ़ (कमज़ोर) हदीस में है मेरी उम्मत में सत्तर साल की उम्र वाले भी कम होंगे। दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. से आपकी उम्मत की उम्र के बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया- पचास से साठ साल तक की उम्र है। पूछा गया सत्तर साल की उम्र वाले? फ़रमाया बहुत कम। अल्लाह तआ़ला उन पर और अस्सी साल वालों पर अपना रहम फ़रमाये। (बज़्ज़ार)

इस हदीस का एक रावी उस्मान बिन मतर क़वी नहीं। सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. की उम्र

Maktab-e-Ashraf

तरेसठ साल की थी। एक क़ौल है कि साठ साल की थी। यह भी कहा गया है कि पैंसठ बरस की थी। वल्लाहु आलम। और तुम्हारे पास डराने वाले आ गये यानी सफ़ेद बाल या ख़ुद रसूले ख़ुदा सल्ल.। ज़्यादा सही क़ौल दूसरा ही है, जैसे फ़रमान है:

هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى.

ये पैग़म्बर नज़ीर (डराने वाले) हैं, पस उम्र देकर रसूल भेजकर अपनी हुज्जत पूरी कर दी। चुनाँचे क़ियामत के दिन भी जब दोज़ख़ी मौत की तमन्ना करेंगे तो यही जवाब मिलेगा कि तुम्हारे पास हक़ आ चुका था। यानी रसूल की ज़बानी हम पैग़ामे हक़ तुम्हें पहुँचा चुके थे, लेकिन तुम न माने। एक दूसरी आयत में है:

مَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا.

हम जब तक रसूल न भेज दें अ़ज़ाब नहीं करते।

सूरः मुल्क में फ़रमान है कि जब जहन्नमी जहन्नम में डाले जायेंगे तो वहाँ के दारोग़ा उनसे पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास डराने वाले नहीं आये थे? ये जवाब देंगे कि हाँ आये थे, लेकिन हमने उन्हें न माना। उन्हें झूठा माना और कह दिया कि ख़ुदा ने तो कोई किताब वग़ैरह नाज़िल नहीं फ़रमाई। तुम यूँ ही बक रहे हो। पस आज क़ियामत के दिन उनसे कह दिया जायेगा कि नबियों की मुख़ालफ़त का मज़ा चखो, पूरी उम्र उन्हें झुठलाते रहे। अब आज बदले उठा लो, सुनकर कोई खड़ा न होगा कि तुम्हारे काम आ सके, तुम्हारी कुछ मदद कर सके और अ़ज़ाबों से बचा सके या छुड़ा सके।

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ ۢبِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ۝

बेशक अल्लाह तआ़ला (ही) जानने वाला है आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ों का। बेशक वही जानने वाला है दिल की बातों का। (38) वही ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में आबाद किया। सो जो शख़्स कुफ़्र करेगा उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर पड़ेगा, और काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र उनके परवर्दिगार के नज़दीक नाराज़ी ही बढ़ने का सबब हो जाता है, और (साथ ही) काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र घाटा ही बढ़ने का सबब होता है। (39)

ग़ैब का जानने वाला

अल्लाह तआ़ला अपने असीमित और बेपनाह इल्म का बयान फ़रमा रहा है कि वह तो आसमानों और ज़मीनों की हर चीज़ का आ़लिम (जानने वाला) है। दिलों के भेद सीनों की बातें उस पर रोशन और खुली हैं। हर आ़मिल (अ़मल करने वाले) को अमन के अ़मल का वह बदला देगा। उसने तुम्हें ज़मीन में एक दूसरे का ख़लीफ़ा (एक दूसरे की जगह लेने वाला) बनाया है, काफ़िरों के कुफ़्र का वबाल ख़ुद उन पर है। वे

Maktab e Ashraf

जैसे-जैसे अपने कुफ़्र में बढ़ते हैं वैसे-वैसे ख़ुदा की नाराज़गी बढ़ती है और उनका नुक़सान और ज़्यादा होता जाता है। इसके विपरीत मोमिन का मामला है कि उसकी उम्र जिस क़द्र बढ़ती है नेकियाँ भी बढ़ती हैं, दर्जे पाता है और ख़ुदा के यहाँ मक़बूल हो जाता है।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰي بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ○ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ڬ وَلَىِٕنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ ۢ بَعْدِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ○	आप कहिए कि तुम अपने बनाए हुए शरीकों का हाल तो बताओ जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पूजा करते हो। यानी मुझको यह बतलाओ कि उन्होंने ज़मीन का कौन-सा हिस्सा बनाया है, या उनका आसमान (बनाने) में कुछ साझा है, या हमने उनको कोई किताब दी है कि ये उसकी किसी दलील पर क़ायम हों, बल्कि ये ज़ालिम एक-दूसरे से ख़ालिस धोखे की बातों का वायदा करते आए हैं। (40) यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वे मौजूदा हालत को छोड़ न दें। और अगर (मान लो) वे मौजूदा हालत को छोड़ दें तो फिर ख़ुदा के सिवा और कोई उनको थाम भी नहीं सकता, वह हलीम है, मग़फ़िरत करने वाला है। (41)

शिर्क बाक़ी नहीं रह सकता

अल्लाह तआ़ला अपने रसूल सल्ल. से फ़रमा रहा है कि आप मुश्रिकों से फ़रमाईये कि ख़ुदा के सिवा जिनको तुम पुकारा करते हो तुम मुझे भी तो ज़रा दिखाओ कि उन्होंने किस चीज़ को पैदा किया है? या यही साबित कर दो कि आसमानों में उनका कौनसा साझा है? जबकि न वे ख़ालिक़ न साझी फिर तुम मुझे छोड़कर उन्हें क्यों पुकारो? वे तो एक ज़र्रे के भी मालिक नहीं। अच्छा यह भी नहीं तो कम से कम अपने इस कुफ़्र व शिर्क की कोई किताबी दलील ही पेश कर दो। लेकिन तुम यह भी नहीं कर सकते। हक़ीक़त यह है कि तुम सिर्फ़ अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों और अपनी राय के पीछे लग गये हो और दलील कुछ भी नहीं। बातिल, झूठ और धोखेबाज़ी में मुब्तला हो, एक दूसरे को फ़रेब दे रहे हो। अपने इन झूठे माबूदों की कमज़ोरी अपने सामने रखकर ख़ुदा तआ़ला जो सच्चा माबूद है उसकी क़ुदरत व ताक़त देखो कि आसमान व ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं। हर एक अपनी-अपनी जगह रुका हुआ और थमा हुआ है। इधर-उधर जुंबिश भी तो नहीं कर सकते। आसमान को ज़मीन पर गिर पड़ने से ख़ुदा तआ़ला रोके हुए है। ये दोनों उसके हुक्म से ठहरे हुए हैं, उसके सिवा कोई माबूद नहीं जो उसको थाम सके रोक सके, निज़ाम पर क़ायम रख सके, उस हलीम व ग़फ़ूर ख़ुदा को देखो कि मख़्लूक़ व मम्लूक (यानी अपनी पैदा की हुई और अपनी मिल्कियत व क़ब्ज़े में होने वाली चीज़ों) की नाफ़रमानी सरकशी कुफ़्र व शिर्क देखते हुए बुर्दबारी और

Maktab E Ashraf

बख़्शिश से काम ले रहा है। ढील और मोहलत दिये हुए है। गुनाहों को माफ़ फ़रमाता जाता है।

इब्ने अबी हातिम में इस आयत की तफ़सीर में एक ग़रीब बल्कि मुन्कर हदीस है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का एक वाक़िआ़ जनाब रसूले ख़ुदा सल्ल. ने एक मर्तबा मिम्बर पर बयान फ़रमाया कि आपके दिल में ख़्याल गुज़रा कि अल्लाह तआ़ला कभी सोता भी है? तो अल्लाह तआ़ला ने एक फ़रिश्ता उनके पास भेज दिया, जिसने उन्हें तीन दिन तक सोने न दिया, फिर उनके एक-एक हाथ में एक-एक बोतल दी और हुक्म दिया कि इनकी हिफ़ाज़त करो ये गिरें नहीं, टूटें नहीं। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उन्हें हाथों में लेकर हिफ़ाज़त करने लगे लेकिन नींद का ग़लबा था, ऊँघ आने लगी, कुछ झोंके तो ऐसे आये कि आप होशियार हो गये और बोतलें गिरने न दीं, लेकिन आख़िर नींद ग़ालिब आ गई और बोतलें हाथ से छूट कर ज़मीन पर गिर गईं और चूरा-चूरा हो गईं। मक़सद यह था कि सोने वाला दो बोतलें भी नहीं थाम सकता, फिर अगर अल्लाह तआ़ला सोता तो ज़मीन आसमान की हिफ़ाज़त उससे कैसे होती? लेकिन बज़ाहिर मालूम होता है कि यह हुज़ूर सल्ल. की हदीस नहीं बल्कि बनी इस्राईल की गढ़ी हुई ख़ुराफ़ात हैं। भला हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जैसा बुलन्द रुतबे वाला पैग़म्बर यह तसव्वुर भी कर सकता है कि अल्लाह तआ़ला सो जाता है? इसके बावजूद कि अल्लाह तआ़ला अपनी सिफ़ात में फ़रमा चुका है कि उसे न ऊँघ आती है न नींद, ज़मीन व आसमान की तमाम चीज़ों का मालिक सिर्फ़ वही है।

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में हदीस है कि ख़ुदा तआ़ला न सोता है न सोना उसकी शायाने शान है। वह तराज़ू को ऊँचा नीचा करता रहता है। दिन के अ़मल रात से पहले और रात के आमाल दिन से पहले उसकी तरफ़ चढ़ जाते हैं। उसका हिजाब (पर्दा) नूर है या आग है। अगर उसे खोल दे तो उसके चेहरे की तजल्लियाँ (नूरानी चमक) जहाँ तक उसकी निगाह पहुँचती है सब मख़्लूक़ को जला दें। इब्ने जरीर में है कि एक शख़्स हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के पास आया। आपने उससे दरियाफ़्त फ़रमाया कि कहाँ से आ रहे हो? उसने कहा शाम (मुल्क सीरिया) से। पूछा वहाँ किस से मिले? कहा कअ़ब से। पूछा कअ़ब ने क्या बात बयान की? कहा आसमान एक फ़रिश्ते के कन्धे तक घूम रहे हैं। पूछा तुमने इसे सच जाना या झुठला दिया? जवाब दिया कुछ भी नहीं कहा। सुनो! हज़रत कअ़ब ने ग़लत कहा, फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। इसकी सनदें सही हैं। दूसरी सनद में आने वाले का नाम है कि वह हज़रत जुन्दुब बजली रज़ि. थे। हज़रत इमाम मालिक रह. भी इसकी तरदीद करते थे कि आसमान गर्दिश में हैं और इसी आयत से दलील लेते थे और उस हदीस से भी जिसमें है कि पश्चिम में एक दरवाज़ा है जो तौबा का दरवाज़ा है वह बन्द न होगा जब तक कि सूरज पश्चिम से न निकले। यह हदीस बिल्कुल सही है। वल्लाहु तआ़ला आलम।

और उन (क़ुरैश के) काफ़िरों ने बड़ी ज़ोरदार क़सम खाई थी कि अगर उनके पास कोई डराने वाला आए तो वे हर-हर उम्मत से ज़्यादा हिदायत क़बूल करने वाले हों। फिर जब उनके पास एक पैग़म्बर आ पहुँचे तो बस उनकी नफ़रत ही को तरक़्क़ी हुई। (42) दुनिया में अपने को बड़ा समझने की वजह से और उनकी	وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ۝ اسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ

Maktab E Ashraf

السَّيِّءِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا○	बुरी तदबीरों को, और बुरी तदबीरों का (असली) वबाल उन तदबीर वालों ही पर पड़ता है। सो क्या ये उसी दस्तूर का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो अगले (काफ़िर) लोगों के साथ होता रहा है। सो आप ख़ुदा के (इस) दस्तूर को कभी बदलता हुआ न पाएँगे और आप ख़ुदा के दस्तूर को मुन्तक़िल होता हुआ "यानी एक जगह से दूसरी जगह जाने वाला" न पाएँगे। (43)

एक इरादा जो पूरा न हो सका

क़ुरैश ने और अ़रब के दूसरे लोगों ने हुज़ूर सल्ल. से पहले बड़ी क़समें खा रखी थीं कि अगर ख़ुदा का कोई रसूल हम में आये तो हम तमाम दुनिया से ज़्यादा उसकी ताबेदारी करेंगे। जैसे एक जगह फ़रमान है:

اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ........ الخ

यानी इसलिये कि तुम यह न कह सको कि हमसे पहले की जमाअ़तों पर तो अलबत्ता किताबें उतरीं लेकिन हम तो उनसे बेख़बर ही रहे। अगर हम पर किताब उतरती तो हम उनसे बहुत ज़्यादा राह पाने वाले (यानी फ़रमाँबरदार) हो जाते। तो लो अब ख़ुद तुम्हारे पास तुम्हारे रब की भेजी हुई दलील आ पहुँची, हिदायत व रहमत ख़ुद तुम्हारे हाथों में दी जा चुकी। अब बताओ कि रब की आयतों को झुठलाने वालों और उनसे मुँह मोड़ने वालों से ज़्यादा ज़ालिम कौन है?

दूसरी आयतों में है कि ये कहा करते थे कि अगर हमारे पास अगले (पहले गुज़रे) लोगों के इब्रतनाक वाक़िआत होते तो हम ख़ुदा के मुख़्लिस (नेक) बन्दे बन जाते लेकिन फिर भी इन्होंने उनके पास आने के बाद कुफ़्र किया। अब इन्हें जल्द ही इसका अन्जाम मालूम हो जायेगा। इनके पास ख़ुदा के आख़िरी पैग़म्बर और रब की आख़िरी और सबसे बेहतर किताब आ चुकी। लेकिन ये कुफ़्र में और बढ़ गये, इन्होंने ख़ुदा की बातें मानने से तकब्बुर (घमंड) किया। ख़ुद न मानकर फिर अपनी मक्कारियों से ख़ुदा के बन्दों को ख़ुदा की राह से रोका। लेकिन इन्हें यक़ीन कर लेना चाहिये कि इसका वबाल ख़ुद इन पर पड़ेगा। ये ख़ुदा का नहीं बल्कि अपना बिगाड़ कर रहे हैं।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मक्कारियों से परहेज़ करो, मक्र का बोझ मक्कार पर ही पड़ता है। और इसकी जवाबदेही ख़ुदा के यहाँ होगी। हज़रत मुहम्मद बिन कअ़ब क़ुरज़ी रह. फ़रमाते हैं कि तीन कामों का करने वाला निजात नहीं पा सकता। इन कामों का वबाल उस पर यक़ीनन आ पड़ता है। मक्र, बग़ावत और वायदों का तोड़ देना। फिर आपने यही आयत पढ़ी, इन्हें सिर्फ़ उसी का इन्तिज़ार है जो इन जैसे का हाल हुआ कि ख़ुदा के रसूलों के झुठलाने और फ़रमाने रसूल की मुख़ालफ़त की वजह से ख़ुदा तआ़ला के हमेशा के अ़ज़ाब उन पर आ गये। पस यह तो ख़ुदा की आ़दत ही है, और तू ग़ौर कर ले कि रब की आ़दत बदलती नहीं न पलटती है। जिस क़ौम पर अल्लाह का अ़ज़ाब का इरादा हो चुका फिर उस इरादे के बदलने पर कोई क़ुदरत नहीं रखता। न अ़ज़ाब उन पर से हटे न वे उससे बचें न कोई उन्हें बचा सके। वल्लाहु आलम।

Maktab E Ashraf

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ۝ ع ٥ ٨ ١٧

और क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं, जिसमें देखते-भालते कि जो (इनकार करने वाले) लोग उनसे पहले गुज़र चुके उनका अन्जाम क्या हुआ? हालाँकि वे कुव्वत में इनसे भी बढ़े हुए थे। और ख़ुदा तआ़ला ऐसा नहीं है कि कोई चीज़ (ताक़त वाली) उसको हरा दे, न आसमान में और न ज़मीन में, (क्योंकि) वह बड़े इल्म वाला (और) बड़ी क़ुदरत वाला है। (44) और अगर अल्लाह तआ़ला (उन) लोगों पर उनके आमाल के सबब (फ़ौरन) पकड़ फ़रमाने लगता तो रू-ए-ज़मीन पर एक जानदार को न छोड़ता, लेकिन अल्लाह तआ़ला उनको एक मुक़र्ररा मियाद (यानी क़ियामत) तक मोहलत दे रहा है। सो जब उनकी वह मियाद आ पहुँचेगी (उस वक़्त) अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को आप देख लेगा। (45)

दुनिया में चल-फिरकर अल्लाह की निशानियों को देखो

हुक्म होता है कि इन मुन्किरों (अल्लाह और उसके रसूल की तालीम का इनकार करने वालों) से फ़रमा दीजिये कि ज़मीन में चल-फिरकर देखें तो सही कि इन जैसे इनसे पहले लोगों के कैसे इब्रतनाक अन्जाम हुए। उनकी नेमतें भी छिन गईं, उनके महल उजाड़ दिये गये, उनकी ताक़त ख़त्म हो गई, उनके माल तबाह कर दिये गये, उनकी औलाद हलाक कर दी गई। ख़ुदा के अ़ज़ाब उन पर से किसी तरह न टले। आई हुई मुसीबत को वे न हटा सके। नोच लिये गये, तबाह व बरबाद कर दिये गये, कुछ काम न आया, कोई फ़ायदा किसी से न पहुँचा। ख़ुदा को कोई हरा नहीं सकता, उसे कोई आ़जिज़ नहीं कर सकता। उसका कोई इरादा मुराद से जुदा नहीं (यानी यह नहीं हो सकता कि वह किसी चीज़ का इरादा करे और उसके इरादे के मुताबिक़ उसका ज़हूर न हो)। उसका कोई हुक्म किसी से टल नहीं सकता। वह तमाम कायनात का आ़लिम है। वह तमाम कामों पर क़ादिर है। अगर वह अपने बन्दों के तमाम गुनाहों पर पकड़ करता तो तमाम आसमानों वाले और ज़मीनों वाले हलाक हो जाते। जानवर और रिज़्क़ तक बरबाद हो जाते। जानवरों को उनके घौंसलों और आशियानों में भी अ़ज़ाब पहुँच जाता। ज़मीन पर कोई जानवर बाक़ी न बचता। लेकिन अब ढील दिये हुए है, अ़ज़ाबों को टाले हुए है। वक़्त आ रहा है कि क़ियामत क़ायम हो जाये और हिसाब किताब शुरू हो जाये, नेकी का बदला सवाब मिले, नाफ़रमानी का अ़ज़ाब और उस पर सज़ा हो। अजल (मुक़र्ररा वक़्त) आने के बाद फिर ताख़ीर (मोहलत) नहीं मिलने की। अल्लाह अपने बन्दों को देख रहा है और वह ख़ूब अच्छी तरह देखने वाला है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः फ़ातिर की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः यासीन

सूरः यासीन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 83 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर चीज़ का दिल होता है और क़ुरआन शरीफ़ का दिल यासीन है। सूरः यासीन के पढ़ने वाले को दस क़ुरआन ख़त्म करने का सवाब मिलता है। यह हदीस ग़रीब है और इसका एक रावी मजहूल (नामालूम) है। इस बारे में और रिवायतें भी हैं लेकिन सनद से वे भी कुछ मज़बूत नहीं। एक और हदीस में है कि जो शख़्स रात को सूरः यासीन पढ़े उसे बख़्श दिया जाता है और जो सूरः दुख़ान पढ़े उसे भी बख़्श दिया जाता है। इसकी सनद बहुत क़वी (मज़बूत) है। मुस्नद की हदीस में है कि सूरः ब-क़रह क़ुरआन की कोहान (ऊँचाई) और इसकी बुलन्दी है, इसकी एक-एक आयत के साथ अस्सी-अस्सी फ़रिश्ते उतरते हैं। इसकी एक आयत यानी 'आयतुल-कुर्सी' अ़र्श के नीचे से लाई गई है और इसके साथ मिलाई गई है।

सूरः यासीन क़ुरआन का दिल है। इसे जो शख़्स नेक-नीयती से अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिये पढ़े उसके गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। इसे उन लोगों के सामने पढ़ो जो सकरात (दम निकलने और मौत की सख़्ती) की हालत में हों। बाज़ उलेमा-ए-किराम रह. का क़ौल है कि जिस सख़्त काम के वक़्त सूरः यासीन पढ़ी जाती है अल्लाह तआ़ला उसे आसान कर देता है। मरने वाले के सामने जब इसकी तिलावत होती है तो रहमत व बरकत नाज़िल होती है और रूह आसानी से निकलती है। वल्लाहु तआ़ला आलम।

बुज़ुर्गों ने भी फ़रमाया है कि ऐसे वक़्त सूरः यासीन पढ़ने से अल्लाह तआ़ला तख़्फ़ीफ़ (आसानी और सहूलत) कर देता है और आसानी हो जाती है। बज़्ज़ार में फ़रमाने रसूल है- मेरी तमन्ना है कि मेरी उम्मत के हर-हर फ़र्द (व्यक्ति) को यह सूरत याद हो।

या-सीन (1) क़सम है क़ुरआन की जो हिक्मत से भरा हुआ है। (2) कि बेशक आप पैग़म्बरों में से हैं। (3) (और) सीधे रास्ते पर हैं। (4) यह क़ुरआन ज़बरदस्त, मेहरबान ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से नाज़िल किया गया है। (5) कि आप (पहले) ऐसे लोगों को डराएँ जिनके बाप-दादा नहीं डराए गए थे, सो इसी वजह से ये बेख़बर हैं। (6) उनमें से अक्सर लोगों पर (तक़दीरी) बात साबित हो चुकी है। सो ये लोग (हरगिज़) ईमान न लाएँगे। (7)	يٰسٓ○ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ○ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ○ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ○ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ○ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ○ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ○

Maktab E Ashraf

आप अल्लाह तआ़ला के चुने हुए और मक़बूल पैग़म्बर हैं

हुरूफ़े मुक़त्तआ़त जो सूरतों के शुरू में होते हैं जैसे यहाँ 'या-सीन' है, इनका पूरा बयान हम सूरः ब-क़रह की तफ़सीर के शुरू में कर चुके हैं, लिहाज़ा अब यहाँ इसे दोहराने की ज़रूरत नहीं।

बाज़ लोगों ने कहा है कि "यासीन" से मुराद "ऐ इनसान" है। बाज़ कहते हैं कि हब्शी भाषा में ऐ इनसान के मायने में यह लफ़्ज़ है। कोई कहता है कि यह ख़ुदा का नाम है।

फिर फ़रमाता है- क़सम है मोहकम और मज़बूत क़ुरआन की जिसके आस-पास भी बातिल फटक नहीं सकता कि ऐ मुहम्मद! यक़ीनन आप ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं। आप सच्चे, अच्छे, मज़बूत, उम्दा, सीधे और साफ़ दीन पर हैं। यह सिराते मुस्तक़ीम ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम की है। यह दीन उसी का उतारा हुआ है जो इज़्ज़त वाला और मोमिनों पर ख़ास मेहरबानी करने वाला है। जैसे फ़रमान है:

وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ........ الخ

तू यक़ीनन सही रास्ते की तरफ़ रहबरी करता है जो उस ख़ुदा की सीधी राह है जो आसमान व ज़मीन का मालिक है और जिसकी तरफ़ तमाम उमूर (बातों और मामलों) का अन्जाम है, ताकि तू अ़रब वालों को डराये जिनके बुज़ुर्ग (बड़े और पुर्खे) भी होशियार नहीं किये गये, जो बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं। इनका तन्हा ज़िक्र करना इसलिये नहीं कि दूसरे इस तंबीह से अलग हैं, जैसे कि बाज़ अफ़राद के ज़िक्र से आ़म की नफ़ी नहीं होती। हुज़ूर सल्ल. की बेसत (नबी बनकर तशरीफ़ लाना) आ़म थी सारी दुनिया की तरफ़। इसके दलाईल बहुत तफ़सील से आयतः

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا.

(सूरः आराफ़ आयत 158) की तफ़सीर में बयान हो चुके हैं। अक्सर लोगों पर ख़ुदा के अ़ज़ाब का क़ौल साबित हो चुका है। उन्हें तो ईमान नसीब नहीं होगा, वे तो तुझे झुठलाते ही रहेंगे।

اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ○ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ○ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ	हमने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं, फिर वे ठोड़ियों तक (अड़ गए) हैं, जिससे उनके सर ऊपर को उठ रहे हैं। (8) और हमने एक आड़ उनके सामने कर दी और एक आड़ उनके पीछे कर दी, जिससे हमने (हर तरफ़ से) उनको (पर्दों में) घेर दिया, सो वे नहीं देख सकते। (9) और उनके हक़ में आपका डराना या न डराना दोनों बराबर हैं ये ईमान न लाएँगे। (10) पस आप तो सिर्फ़ ऐसे शख़्स को डरा सकते हैं जो नसीहत पर चले और ख़ुदा से बेदेखे डरे। सो आप उसको मग़फ़िरत और उम्दा बदले की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। (11) बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे, और हम लिखते जाते हैं वे

Maktab E Ashraf

بِمَغْفِرَةٍ وَّأَجْرٍ كَرِيْمٍ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ط وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ إِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝ ع ۱۸

आमाल भी जिनको लोग आगे भेजते जाते हैं, और उनके वे आमाल भी जिनको पीछे छोड़ जाते हैं। और हमने हर चीज़ को एक वाज़ेह किताब में लिख दिया था। (12)

सामने खड़ी दीवारें

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उन बदनसीबों का हिदायत तक पहुँचना बहुत मुश्किल बल्कि मुहाल है। ये तो उन लोगों की तरह हैं जिनके हाथ गर्दन पर बाँध दिये जायें और उनका सर ऊँचा जा रहा हो। गर्दन के ज़िक्र के बाद हाथ का ज़िक्र छोड़ दिया। लेकिन मुराद यही है कि गर्दन मिलाकर हाथ बाँध दिये गये हैं और सर ऊँचे हैं, और ऐसा होता है कि बोलने में एक चीज़ का ज़िक्र करके दूसरी चीज़ को जो उसी से समझ ली जाती है, उसका ज़िक्र छोड़ देते हैं। अ़रब शायरों के शे'रों में भी यह बात मौजूद है। "ग़ुल्ल" कहते हैं दोनों हाथों को गर्दन तक पहुँचाकर गर्दन के साथ जकड़-बन्द कर देने को। इसी लिये गर्दन का ज़िक्र किया और हाथों का ज़िक्र छोड़ दिया। मतलब यह है कि हमने उनके हाथ उनकी गर्दनों से बाँध दिये हैं। इसलिये वे किसी नेक और ख़ैर के काम की तरफ़ हाथ बढ़ा ही नहीं सकते। उनके सर ऊँचे हैं, उनके हाथ उनके मुँह पर हैं। वे हर भलाई से बेबस हैं। गर्दनों के इस तौक़ के साथ ही उनके आगे दीवार है, यानी हक़ के क़बूल करने से रुकावट है। पीछे भी दीवार है यानी हक़ से रुकावट है। इस वजह से शक और दुविधा में पड़े हुए हैं, हक़ के पास आ नहीं सकते, गुमराहियों में घिरे हुए हैं, आँखों पर पर्दे पड़े हुए हैं, हक़ को देख नहीं सकते। न हक़ की तरफ़ राह पायें न हक़ से फ़ायदा उठायें।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु की क़िराअत में 'फ़-अअ़्शैनाहुम' ऐन से है, यह एक क़िस्म की आँख की बीमारी है जो इनसान को नाबीना (अंधा) कर देती है। पस इस्लाम व ईमान और उनके बीच हर तरफ़ रुकावट है। जैसे एक और आयत में है कि जिन पर तेरे रब का कलिमा हक़ (साबित) हो चुका है वे तो ईमान लाने के ही नहीं अगरचे तू उन्हें सब आयतें बता दे, यहाँ तक कि वे दर्दनाक अ़ज़ाबों को देख लें। जिसे ख़ुदा रोक दे वह कहाँ से रोक हटा सके।

एक मर्तबा अबू जहल मलऊन ने कहा कि अगर मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को देख लूँ तो यह करूँगा और वह करूँगा। इस पर ये आयतें उतरीं। लोग उससे कहते थे यह हैं मुहम्मद, लेकिन आप उसे दिखाई नहीं देते थे और पूछता था कहाँ हैं? एक मर्तबा इसी मलऊन ने एक मजमे में कहा था कि देखो यह कहता है कि अगर तुम इसकी ताबेदारी करोगे तो तुम बादशाह बन जाओगे और मरने के बाद जन्नत में जाओगे। और अगर तुम इसका ख़िलाफ़ (मुख़ालफ़त) करोगे तो यहाँ ज़िल्लत की मौत मार दिये जाओगे और वहाँ अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होओगे। आज आने तो दो। उसी वक़्त रसूले ख़ुदा सल्ल. तशरीफ़ लाये, आपकी मुट्ठी में ख़ाक थी, आप शुरू से सूरः यासीन से ला युब्सिरून तक (यानी सूरः यासीन की शुरू की नौ आयतें) पढ़ते हुए आ रहे थे। ख़ुदा ने उन सब को अंधा कर दिया और आप उनके सरों पर ख़ाक डालते हुए तशरीफ़ ले गये। उन बदबख़्तों का गिरोह का गिरोह आपके घर को घेरे हुए था। इसके बहुत बाद एक साहिब घर से निकले उनसे पूछा कि तुम यहाँ कैसे घेरा डाले खड़े हो? उन्होंने कहा मुहम्मद

के इन्तिज़ार में हैं, आज उसे ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे। उसने कहा वाह-वाह वह तो गये भी और तुम सब के सरों पर ख़ाक डालते हुए निकल गये। यक़ीन न मानो तो अपने सरों को झाड़ो। अब जो सर झाड़ा तो वाक़ई ख़ाक निकली (यह आप सल्ल. का एक मोजिज़ा था)। हुज़ूर सल्ल. के सामने जब अबू जहल की यह बात दोहराई गई तो आपने फ़रमाया- उसने ठीक कहा वास्तव में मेरी ताबेदारी उनके लिये दोनों जहान की इज़्ज़त का सबब है, और मेरी नाफ़रमानी उनके लिये ज़िल्लत का कारण है और यही होगा। उन पर अल्लाह की मोहर लग चुकी है, नेक बात का असर नहीं लेते। सूरः ब-क़रह में भी इस मज़मून की एक आयत गुज़र चुकी है। एक और आयत में हैः

إِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ........ الخ

यानी जिन पर अ़ज़ाब का कलिमा साबित हो गया है उन्हें ईमान नसीब नहीं होगा चाहे तू उन्हें तमाम निशानियाँ दिखा दे, यहाँ तक कि वे ख़ुद अ़ज़ाबे ख़ुदा अपनी आँखों से न देख लें। हाँ तेरी नसीहत उन पर असर कर सकती है जो भली बात को मानने वाले हैं। क़ुरआन को मानने वाले हैं, बिन देखे ख़ुदा से डरने वाले हैं और ऐसी जगह भी ख़ौफ़े ख़ुदा रखते हैं जहाँ और कोई देखने वाला न हो। वे जानते हैं कि ख़ुदा हमारे हाल पर बाख़बर है और हमारे अफ़आ़ल (कामों और हरकतों) को देख रहा है। ऐसे लोगों को तो गुनाहों की माफ़ी की, अज्रे अ़ज़ीम व जमील की ख़ुशख़बरी पहुँचा दीजिये। जैसे एक दूसरी आयत में है कि जो लोग पोशीदगी में (छुपे तौर पर) भी ख़ौफ़े ख़ुदा रखते हैं उनके लिये मग़फ़िरत और बड़ा सवाब है। हम ही हैं जो मुर्दों को ज़िन्दा कर देते हैं, हम क़ियामत के दिन उन्हें नई ज़िन्दगी में पैदा करने पर क़ादिर हैं। और इसमें इशारा है कि मुर्दे को ज़िन्दा करने पर भी उस ख़ुदा तआ़ला को क़ुदरत है। वह गुमराहों को भी सही रास्ते पर डाल देता है। जैसे एक और जगह पर मुर्दा दिलों का ज़िक्र करके क़ुरआने हकीम ने फ़रमायाः

اِعْلَمُوْآ اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا.......... الخ

जान लो कि अल्लाह तआ़ला ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है। हमने तुम्हारी समझ बूझ के लिये बहुत कुछ बयान फ़रमा दिया। और हम उनके पहले भेजे हुए आमाल लिख लेते हैं। और उनके आसार (निशानियाँ) भी।

यानी जो ये अपने बाद बाक़ी छोड़ आये। अगर ख़ैर बाक़ी छोड़ आये तो जज़ा (अच्छा बदला) वरना सज़ा पायेंगे। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है- जो शख़्स इस्लाम में नेक तरीक़ा जारी करे उसका और उसे जो करे उन सब का बदला मिलता है, लेकिन उनके बदले कम होकर नहीं। और जो शख़्स किसी बुरे तरीक़े को जारी करे उसका बोझ उस पर है और उनका भी जो उस पर उसके बाद कारबन्द हों, लेकिन उनका बोझ घटकर नहीं। (मुस्लिम शरीफ़)

एक लम्बी हदीस में इसके साथ ही क़बीला-ए-मुज़र के चादर ओढ़ने वाले लोगों का वाक़िआ भी है और आख़िर में 'व नक्तुबु मा क़द्दमू' पढ़ने का ज़िक्र भी है। सही मुस्लिम शरीफ़ की एक और हदीस में है कि जब इनसान मर जाता है तो उसके तमाम अ़मल ख़त्म हो जाते हैं मगर तीन अ़मल- 'इल्म' जिससे नफ़ा हासिल किया जा सके, 'नेक औलाद' जो उसके लिये दुआ़ करे और वह 'सदक़ा-ए-जारिया' जो उसके बाद भी बाक़ी रहे।

मुजाहिद रह. से इस आयत की तफ़सीर में मन्क़ूल है कि गुमराह लोग जो अपनी गुमराही बाक़ी छोड़ जायें। सईद बिन जुबैर से मन्क़ूल है कि हर वह नेकी और बदी जिसे उसने जारी किया और अपने बाद

छोड़ गया। इमाम बग़वी भी इसी क़ौल को पसन्द फ़रमाते हैं। इस जुमले की तफ़सीर में दूसरा क़ौल यह है कि मुराद आसार से क़दम के निशान हैं, जो इताअ़त (नेकी) या मासीयत (बुराई और नाफ़रमानी) की तरफ़ उठें। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि ऐ इब्ने आदम! अगर अल्लाह तआ़ला तेरे किसी फ़ेल से ग़ाफ़िल होता तो तेरे क़दम के निशान से ग़ाफ़िल होता, जिन्हें हवा मिटा देती है। लेकिन ख़ुदा तबारक व तआ़ला निशाने क़दम और तेरे किसी भी अ़मल से ग़ाफ़िल नहीं। तेरे जितने क़दम उसकी इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) में उठते हैं सब उसके यहाँ लिखे हुए हैं। तुममें से जिससे हो सके वह ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी की तरफ़ क़दम बढ़ा ले। इसी मायने की बहुत सी हदीसें भी हैं।

पहली हदीसः मुस्नद अहमद में है, हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नबवी के आस-पास कुछ मकानात ख़ाली हुए तो क़बीला-बनू सलमा ने इरादा किया कि वे अपने मौहल्ले से उठकर यहीं मस्जिद के क़रीब मकानात में आ बसें। जब इसकी ख़बर रसूलुल्लाह सल्ल. को हुई तो आपने फ़रमाया- मुझे यह बात मालूम हुई है, क्या ठीक है? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ। आपने दो मर्तबा फ़रमाया-

बनू सलमा! अपने मकानात में ही रहो, तुम्हारे क़दम ख़ुदा के यहाँ लिखे जाते हैं (यानी मस्जिद आने के लिये जितने ज़्यादा क़दम पड़ेंगे उतना ही नेकियों का ज़ख़ीरा बढ़ेगा)।

दूसरी हदीसः इब्ने अबी हातिम में इसी रिवायत में है कि इसी बारे में यह आयत नाज़िल हुई और इस क़बीले ने अपना इरादा बदल दिया। बज़्ज़ार की इसी रिवायत में है कि बनू सलमा ने मस्जिद से अपने घर दूर होने की शिकायत हुज़ूर सल्ल. से की, इस पर यह आयत उतरी और फिर वे वहीं रहते रहे। लेकिन इस में ग़राबत है, क्योंकि इसमें इस आयत का इस बारे में नाज़िल होना बयान हुआ है और यह पूरी सूरत मक्की है। वल्लाहु आलम।

तीसरी हदीसः इब्ने जरीर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मौजूद है कि जिन बाज़ अन्सार के घर मस्जिदे नबवी से दूर थे उन्होंने मस्जिद के क़रीब घरों में आना चाहा, इस पर यह आयत उतरी तो उन्होंने कहा- अब हम उन घरों को नहीं छोड़ेंगे। यह हदीस मौक़ूफ़ है।

चौथी हदीसः मुस्नद अहमद में है कि एक मदनी सहाबी का मदीना शरीफ़ में इन्तिक़ाल हुआ तो आपने उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाकर फ़रमाया- काश कि यह अपने वतन के सिवा और जगह फ़ौत होते। किसी ने कहा यह क्यों? फ़रमाया यह इसलिये कि जब कोई मुसलमान ग़ैर-वतन में फ़ौत होता (यानी मौत पाता) है तो उसके वतन से लेकर वहाँ तक की ज़मीन के नाप के बराबर उसे जन्नत में जगह मिलती है।

इब्ने जरीर में हज़रत साबित रह. से रिवायत है कि मैं हज़रत अनस रज़ि. के साथ नमाज़ के लिये मस्जिद की तरफ़ चला। मैं लम्बे-लम्बे क़दम उठाकर चलने लगा तो आपने मेरा हाथ थाम लिया और अपने साथ आहिस्ता-आहिस्ता हल्के-हल्के क़दमों से ले जाने लगे। जब हम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आपने फ़रमाया मैं हज़रत ज़ैद बिन साबित के साथ मस्जिद को जा रहा था और तेज़-तेज़ चल रहा था तो आपने मुझसे फ़रमाया ऐ अनस! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि ये क़दम के निशान लिखे जाते हैं? इस क़ौल से पहले क़ौल की मज़ीद ताईद होती है, क्योंकि जब क़दम के निशान तक लिखे जाते हैं तो फैलाई हुई बुराई भलाई क्यों न लिखी जाती होगी? वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाया तमाम कायनात, तमाम मौजूदात मज़बूत किताब यानी लौहे-महफ़ूज़ में दर्ज है, जो 'उम्मुल-किताब' है। यही तफ़सीर बुज़ुर्गों से इस आयत की नक़ल की गयी है:

Maktab E Ashraf

وَيَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ.........الخ

कि उनका नामा-ए-आमाल जिसमें ख़ैर व शर (भलाई और बुराई) दर्ज है। जैसे इन आयतों में भी इसी तरह का मज़मून बयान हुआ है:

وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ......... الخ

(सूरः बनी इस्राईल आयत 71) और आयत

وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِيْٓئَ بِالنَّبِيِّيْنَ...........الخ

(सूरः जुमर आयत 69)

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ۝ قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ۝ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ۝ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝	और आप उनके सामने एक क़िस्सा यानी एक बस्ती वालों का क़िस्सा उस वक़्त का बयान कीजिए जबकि उस बस्ती में कई रसूल आए। (13) यानी जबकि हमने उनके पास (पहले) दो को भेजा, सो उन लोगों ने (पहले) दोनों को झूठा बतलाया, फिर तीसरे (रसूल) से ताईद की, सो उन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। (14) उन लोगों ने कहा कि तुम तो हमारी तरह (महज़) मामूली आदमी हो, और ख़ुदा-ए-रहमान ने (तो) कोई चीज़ नाज़िल (ही) नहीं की, तुम ख़ालिस झूठ बोलते हो। (15) उन रसूलों ने कहा कि हमारा परवर्दिगार जानता है कि बेशक हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। (16) और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ स्पष्ट तौर पर (हुक्म का) पहुँचा देना था। (17)

एक बस्ती का वाक़िआ

अल्लाह तआ़ला अपने नबी को हुक्म फ़रमा रहा है कि आप अपनी क़ौम के सामने उन लोगों का क़िस्सा बयान फ़रमाईये जिन्होंने इनसे पहले अपने रसूलों को इनकी तरह झुठलाया था। यह वाक़िआ शहरे अन्ताकिया का है। वहाँ के बादशाह का नाम अन्तीख़स था। उसके बाप दादा का भी यही नाम था। यह सब राजा प्रजा बुत-परस्त थे। उनके पास ख़ुदा तआ़ला के तीन पैग़म्बर आये। सादिक़, सदूक़ और शलूम। ख़ुदा के दुरूद व सलाम उन पर नाज़िल हों।

लेकिन उन बदनसीबों ने सबको झुठला दिया। जल्द ही यह बयान भी आ रहा है कि बाज़ बुज़ुर्गों ने इसे नहीं माना कि यह वाक़िआ अन्ताकिया का है। पहले तो उनके पास दो पैग़म्बर आये, उन्होंने उन्हें न माना, उन दो की ताईद में फिर तीसरे नबी आये। पहले दो रसूलों का नाम शमऊन अ़लैहिस्सलाम और

Maktab-E-Ashraf

यूहन्ना अ़लैहिस्सलाम था और तीसरे रसूल का नाम बोलिस अ़लैहिस्सलाम था। उन सब ने कहा कि हम खुदा के भेजे हुए हैं जिसने तुम्हें पैदा किया है। उसने हमारे द्वारा तुम्हें हुक्म भेजा है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करो।

हज़रत क़तादा बिन दुआ़मा का ख़्याल है कि ये तीनों बुज़ुर्ग हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम के भेजे हुए थे। बस्ती के उन लोगों ने जवाब दिया कि तुम हम जैसे ही इनसान हो, फिर क्या वजह है कि तुम्हारी तरफ़ खुदा की 'वही' आये और हमारी तरफ़ न आये। हाँ अगर तुम रसूल होते तो चाहिये था कि तुम फ़रिश्ते होते। अक्सर काफ़िरों ने यही शुब्हा अपने-अपने ज़माने के पैग़म्बरों के सामने पेश किया था, जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ......... الخ

यानी लोगों के पास रसूल आये और उन्होंने जवाब दिया कि क्या इनसान हमारे हादी बनकर आये?

एक और आयत में है:

قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا......... الخ

यानी तुम तो हम जैसे इनसान ही हो। तुम्हारी कोशिश सिर्फ़ यह है कि हमें अपने बाप-दादाओं के माबूदों से रोक दो, जाओ कोई खुली दलील ले आओ।

एक और जगह क़ुरआन में है:

وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ.

यानी काफ़िरों ने कहा कि अगर तुमने अपने जैसे इनसानों की ताबेदारी की तो तुम यक़ीनन बड़े ही टोटे में पड़ गये। इससे भी ज़्यादा वज़ाहत के साथ इस आयत में है:

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا........ الخ

(सूरः बनी इस्राईल आयत 94) यही उन लोगों ने भी उन तीनों नबियों से कहा तुम तो हम जैसे ही इनसान हो और हक़ीक़त में खुदा ने तो कुछ भी नाज़िल नहीं फ़रमाया, तुम यूँ ही ग़लत कह रहे हो। पैग़म्बरों ने जवाब दिया कि खुदा ख़ूब जानता है कि हम उसके सच्चे रसूल हैं, अगर हम झूठे होते तो खुदा तआ़ला पर झूठ बाँधने की सज़ा हमें खुदा तआ़ला दे देता। लेकिन तुम देखोगे कि वह हमारी मदद करेगा और हमें इज़्ज़त अ़ता फ़रमायेगा। उस वक़्त तुम पर खुद ज़ाहिर हो जायेगा कि कौन शख़्स अन्जाम के एतिबार से अच्छा रहा। जैसे एक और जगह इरशाद है:

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا........ الخ

मेरे और तुम्हारे बीच खुदा की शहादत (गवाही) काफ़ी है, वह तो आसमान व ज़मीन के ग़ैब जानता है। बातिल पर ईमान रखने वाले और खुदा से कुफ़्र करने वाले ही नुक़सान में हैं। सुनो हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ तब्लीग़ (पैग़ाम का पहुँचाना) है। मानोगे तो तुम्हारा भला है, न मानोगे तो खुद पछताओगे, हमारा कुछ नहीं बिगाड़ोगे। कल अपने किये का ख़मियाज़ा खुद भुगतोगे।

Maktaba Ashraf

वे लोग कहने लगे कि हम तो तुम को मन्हूस समझते हैं, अगर तुम बाज़ न आए तो हम पत्थरों से तुम्हारा काम तमाम कर देंगे, और तुमको हमारी तरफ़ से सख़्त तकलीफ़ पहुँचेगी। (18) उन रसूलों ने कहा कि तुम्हारी नहूसत तो तुम्हारे साथ लगी हुई है, क्या इसको नहूसत समझते हो कि तुमको नसीहत की जाए? बल्कि तुम (ख़ुद अक्ल और शरीअत की) हद से निकल जाने वाले लोग हो। (19)	قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۭ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ○

दुश्मनी और मुख़ालफ़त की इन्तिहा

उन काफ़िरों ने रसूलों से कहा कि तुम्हारे आने से हमें कोई बरकत व ख़ैरियत तो मिली नहीं, बल्कि और बुराई और बदी पहुँची। तुम हो ही बद-शगुन (यानी मन्हूस) लोग, जहाँ जाओगे बलायें बरसेंगी। सुनो! अगर तुम अपने इस तरीक़े से बाज़ न आये और यही कहते रहे तो हम तुम्हें संगसार कर देंगे और सख़्त दर्दनाक सज़ायें देंगे। रसूलों ने जवाब दिया कि तुम ख़ुद शर्री हो, तुम्हारे आमाल ही बुरे हैं, और यही वजह तुम पर मुसीबतें आने की है। जैसा करोगे वैसा भरोगे। यही बात फ़िरऔनियों ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनकी क़ौम के मोमिनों से कही थी, जब उन्हें कोई राहत मिलती तो कहते हम तो इसके मुस्तहिक़ (पात्र) ही थे, और अगर कोई रंज पहुँचता तो हज़रत मूसा और मोमिनों की बद-शगूनी (नहूसत) पर उसे महमूल करते, जिसके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَاللّٰهِ.

यानी उनकी मुसीबतों की वजह उनके बुरे आमाल हैं, जिनका वबाल हमारी जानिब से उन्हें पहुँच रहा है। सालेह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ने भी अपने नबी से यही कहा था और यही जवाब पाया था, ख़ुद जनाब पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ हज़रत मुहम्मद सल्ल. से भी यही कहा गया जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद हैः

وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ......... الخ

यानी अगर उन काफ़िरों को कोई नफ़ा होता है तो कहते हैं कि यह ख़ुदा की तरफ़ से है और अगर कोई नुक़सान होता है तो कहते हैं कि यह तेरी तरफ़ से है। तू कह दे कि यह सब कुछ अल्लाह तआ़ला की जानिब से है। उन्हें क्या हो गया है कि उनसे बात भी नहीं समझी जाती।

फिर फ़रमाता है कि सिर्फ़ इस वजह से कि हमने तुम्हें नसीहत की, तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की, तुम्हें भली राह समझाई, तुम्हारी ख़ुदा की तौहीद की तरफ़ रहनुमाई की, तुम्हें इख़्लास व इबादत के तरीक़े सिखाये, तुम हमें मन्हूस समझने लगे और हमें इस तरह डराने धमकाने लगे, ख़ौफ़ज़दा करने लगे और मुक़ाबले पर उतर आये? हक़ीक़त यह है कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो। अल्लाह की हदों से आगे बढ़ जाते हो, हमें देखो कि तुम हम से बुराई समझो, बतलाओ तो भला यह कोई इन्साफ़ की बात है? अफ़सोस तुम इन्साफ़ के दायरे से निकल गये।

Maktaba Ashraf

और एक (मुसलमान) शख़्स उस शहर के किसी दूर मक़ाम से दौड़ता हुआ आया (और) कहने लगा कि ऐ मेरी क़ौम! इन रसूलों की राह पर (ज़रूर) चलो। (20) ऐसे लोगों की राह पर चलो जो तुमसे कोई मुआवज़ा और सिला नहीं माँगते और वे ख़ुद सही रास्ते पर हैं। (21)	وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْئَلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝

शहर के उस किनारे से एक मुसलमान का आना

नक़ल है कि उस बस्ती के लोग यहाँ तक सरकश (नाफ़रमान और सरफिरे) हो गये कि उन्होंने ख़ुफ़िया तौर पर नबियों के क़त्ल का इरादा कर लिया। एक मुसलमान शख़्स जो उस बस्ती के आख़िरी हिस्से (किनारे) में रहता था, जिसका नाम हबीब था और रस्सी का काम करता था, था भी कोढ़ का बीमार। बहुत सख़ी आदमी था, जो कमाता था उसका आधा हिस्सा अल्लाह की राह में ख़ैरात कर देता था, दिल का नर्म और फ़ितरत का अच्छा था, लोगों से अलग-थलग एक ग़ार (गुफा) में बैठकर अल्लाह की इबादत किया करता था। इसलिये जब अपनी क़ौम के इस बुरे इरादे को किसी तरह मालूम कर लिया तो उससे सब्र न हो सका, दौड़ता भागता आया। बाज़ कहते हैं कि यह बढ़ई थे। एक क़ौल है कि यह धोबी थे। उमर बिन हकम फ़रमाते हैं कि यह जूती गाँठने वाले थे, अल्लाह उन पर रहम करे।

उन्होंने आकर अपनी क़ौम को समझाना शुरू किया कि तुम इन रसूलों की इताअ़त करो, इनका कहा मानो, इनकी राह चलो। देखो तो ये अपना कोई फ़ायदा नहीं कर रहे हैं, ये तुमसे रिसालत की तब्लीग़ का कोई बदला नहीं माँगते, अपनी ख़ैरख़्वाही की कोई उजरत तुमसे तलब नहीं कर रहे। दिल के दर्द के साथ तुम्हें ख़ुदा की तौहीद की दावत दे रहे हैं और सीधे व सच्चे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई कर रहे हैं, ख़ुद भी उसी राह पर चल रहे हैं। तुम्हें ज़रूर इनकी दावत पर लब्बैक कहना (यानी उसको क़बूल करना) चाहिये और इनकी इताअ़त करनी (यानी फ़रमान के ताबे होना) चाहिये। लेकिन क़ौम ने उनकी एक न सुनी बल्कि उन्हें शहीद कर दिया। अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी हो और उनको भी ख़ुश कर दे।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि तफ़सीर इब्ने कसीर का बाईसवाँ पारा मुकम्मल हुआ।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर तेईस

और मेरे पास कौन-सा उज़्र है कि मैं उस माबूद की इबादत न करूँ जिसने मुझको पैदा किया और तुम सबको उसी के पास लौटकर जाना है। (22) क्या मैं अल्लाह तआ़ला को छोड़कर दूसरे ऐसे-ऐसे माबूद क़रार दे लूँ कि अगर ख़ुदा-ए-रहमान मुझको कुछ तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो न उन माबूदों की सिफ़ारिश मेरे कुछ काम आए और न वे मुझको छुड़ा सकें। (23) अगर मैं ऐसा करूँ तो ख़ुली गुमराही में जा पड़ा। (24) मैं तो तुम्हारे रब पर ईमान ला चुका, सो तुम (भी) मेरी बात सुन लो। (25)	وَمَالِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِىْ فَطَرَنِىْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ۝ اِنِّىْٓ اِذًا لَّفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِنِّىْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ۝

हक़ का ऐलान

वह नेकबख़्त शख़्स जो ख़ुदा के पैग़म्बरों को झुठलाते, उनका रद्द होते और उनकी तौहीन होते देखकर दौड़ा आया था, जिसने अपनी क़ौम को अम्बिया की ताबेदारी की रग़बत दिलाई थी, वह अब अपने अ़मल और अ़क़ीदे को उनके सामने पेश कर रहा है और उन्हें हक़ीक़त से आगाह करके ईमान की दावत दे रहा है। कहता है कि मैं तो सिर्फ़ अपने ख़ालिक़ व मालिक अल्लाह वह्दहू ला शरी-क लहू की ही इबादत करता हूँ। जबकि उसी ने मुझे पैदा किया है तो मैं उसकी इबादत क्यों न करूँ? फिर यह नहीं कि अब हम उसकी क़ुदरत से निकल गये हों, उससे अब हमें कोई ताल्लुक़ न रहा हो, बल्कि सब के सब लौटकर उसके सामने जमा होने वाले हैं। उस वक़्त वह हर भलाई बुराई का बदला देगा। यह कैसी शर्म की बात है कि मैं उस ख़ालिक़ व क़ादिर को छोड़कर औरों को पूजूँ। जो न यह ताक़त रखें कि ख़ुदा की तरफ़ से आई हुई किसी मुसीबत को मुझ पर से टाल दें, न यह कि उनके कहने सुनने की वजह से मुझे कोई तकलीफ़ न पहुँचे, ख़ुदा अगर मुझे नुक़सान पहुँचाता है तो ये उसको दूर नहीं कर सकते, रोक नहीं सकते, न मुझे उससे बचा सकते हैं। अगर मैं ऐसे कमज़ोरों की इबादत करने लगूँ तो मुझसे बढ़कर गुमराह और बहका हुआ कौन होगा? फिर तो न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि दुनिया के हर भले इनसान पर मेरी गुमराही खुल जायेगी। ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अपने जिस हक़ीक़ी माबूद और परवर्दिगार से तुम मुन्किर हुए हो, सुनो! मैं उसकी ज़ात पर ईमान रखता हूँ।

और यह मायने भी इस आयत के हो सकते हैं कि उस अल्लाह के नेक बन्दे ने अब अपनी क़ौम से मुँह मोड़कर ख़ुदा तआ़ला के उन रसूलों से यह कहा हो कि ऐ ख़ुदा के पैग़म्बरो! तुम मेरे ईमान के गवाह रहना। मैं अल्लाह की पाक ज़ात पर ईमान लाया जिसने तुम्हे बर्हक़ रसूल बनाकर भेजा है। पस गोया यह अपने ईमान पर रसूलों को गवाह बना रहा है। यह क़ौल पहले क़ौल के मुक़ाबले में ज़्यादा वाज़ेह (स्पष्ट)

Maktab E Ashraf

है। वल्लाहु आलम।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. वगैरह फ़रमाते हैं कि यह बुज़ुर्ग इतना ही कह पाये थे कि तमाम कुफ़्फ़ार पिल पड़े और इनको मारने-पीटने लगे। कौन था जो उन्हें बचाता? पत्थर मारते-मारते उन्हें उसी वक़्त शहीद कर दिया। (अल्लाह उनसे राज़ी हो और उनको हर तरह का चैन दे)। यह बन्दा-ए-ख़ुदा और यह सच्चे अल्लाह के वली पत्थर खा रहे थे लेकिन ज़बान से यही कहे जा रहे थे कि ख़ुदा मेरी क़ौम को हिदायत दे, कि ये जानते नहीं।

قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِىْ يَعْلَمُوْنَ۝ بِمَا غَفَرَلِىْ رَبِّىْ وَجَعَلَنِىْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ۝ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ۝ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ۝	इरशाद हुआ कि जा जन्नत में दाख़िल हो, कहने लगा कि काश! मेरी क़ौम को यह बात मालूम हो जाती (26) कि मेरे परवर्दिगार ने मुझको बख़्श दिया और मुझको इज़्ज़तदारों में शामिल कर दिया। (27) और हमने उस (शहीद) की क़ौम पर उसके बाद कोई (फ़रिश्तों का) लश्कर आसमान से नहीं उतारा और न हमको उतारने की ज़रूरत थी। (28) वह सज़ा बस एक सख़्त आवाज़ थी और वे सब उसी दम (उससे) बुझकर (यानी मरकर) रह गए। (29)

मोमिन शख़्स का जन्नत में दाख़िला

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उन काफ़िरों ने उस मोमिने कामिल को बुरी तरह मारा पीटा, उसको गिराकर उसके पेट पर चढ़ बैठे और पैरों से उसे रौंदने लगे। यहाँ तक कि उसकी आँतें उसके पीछे के रास्ते से बाहर निकल आईं। उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसको जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाई गई। उसे अल्लाह तआ़ला ने दुनिया के रंज व ग़म से आज़ाद कर दिया और अमन चैन के साथ जन्नत में पहुँचा दिया। उनकी शहादत से ख़ुदा ख़ुश हुआ। जन्नत उनके लिये खोल दी गई और दाख़िले की इजाज़त मिल गई। अपने सवाब व अज्र और इज़्ज़त व सम्मान को देखकर फिर उनकी ज़बान से निकल गया- काश कि मेरी क़ौम यह जान लेती कि मुझे मेरे रब ने बख़्श दिया और मेरा बड़ा ही इकराम (इज़्ज़त व सम्मान) किया।

वास्तव में मोमिन सब के ख़ैरख़्वाह (हमदर्द और भला चाहने वाले) होते हैं। वे धोखेबाज़ और बुरा चाहने वाले नहीं होते। देखिये इस अल्लाह के बन्दे ने ज़िन्दगी में भी क़ौम की ख़ैरख़्वाही की और मरने के बाद भी उनके ख़ैरख़्वाह (भला चाहने वाले) रहे। यह भी मतलब है कि वह कहते हैं काश कि मेरी क़ौम यह जान लेती कि मुझे किस सबब से मेरे रब ने बख़्शा और क्यों मेरी इज़्ज़त की तो लाज़िमी तौर पर वह भी इस चीज़ को हासिल करने की कोशिश करती, अल्लाह पर ईमान लाती और रसूलों की पैरवी करती। अल्लाह तआ़ला उन पर रहमत करे और उनसे ख़ुश रहे। देखो तो क़ौम की हिदायत के किस क़द्र इच्छुक और आरज़ूमन्द थे।

हज़रत उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी ने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर! अगर इजाज़त दें तो मैं अपनी क़ौम में दीन की तब्लीग़ के लिये जाऊँ और उन्हें दावते इस्लाम दूँ? आपने फ़रमाया- ऐसा न हो कि वे तुम्हें क़त्ल कर दें? जवाब दिया कि हुज़ूर! इस बात का तो एहतिमाल (शंका) ही नहीं, क्योंकि उन्हें मुझसे इस क़द्र लगाव और अ़क़ीदत है कि अगर मैं सोया हुआ हूँ तो वे मुझे जगायेंगे भी नहीं। आपने फ़रमाया अच्छा फिर जाओ। यह चले जब लात व उ़ज़्ज़ा के बुतों के पास से इनका गुज़र हुआ तो कहने लगे- अब तुम्हारी शामत आ गई। इस बात पर पूरा सक़ीफ़ क़बीला बिगड़ बैठा। इन्होंने कहना शुरू किया कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम इन बुतों को छोड़ दो, ये लात व उ़ज़्ज़ा दर असल कोई चीज़ नहीं। इस्लाम क़बूल करो तो सलामती हासिल होगी। ऐ मेरे भाईयो! यक़ीन मानो कि ये बुत कुछ हक़ीक़त नहीं रखते, सारी भलाई इस्लाम में है वग़ैरह। अभी तीन ही मर्तबा इस कलिमे को दोहराया था कि गुस्से में भरे एक बदनसीब ने दूर ही से एक तीर चलाया जो अक्हल (बाज़ू की) रग पर लगा और आप उसी वक़्त शहीद हो गये। नबी करीम सल्ल. के पास जब यह ख़बर पहुँची तो आपने फ़रमाया- यह ऐसा ही था जैसे सूरः यासीन वाला। जिसने कहा था "काश मेरी क़ौम मेरी मग़फ़िरत और इ़ज़्ज़त को जान लेती (गोया कि नबी पाक सल्ल. ने उनके जन्नती होने की ख़ुशख़बरी दे दी)"।

हज़रत कअ़बे अहबार रज़ि. के पास जब हबीब बिन ज़ैद बिन आ़सिम रज़ि. का ज़िक्र किया गया जो क़बीला-ए-बनू माज़िन बिन नज्जार से थे, जिनको जंगे यमामा में मुसैलमा कज़्ज़ाब मलऊन ने शहीद कर दिया था, तो आपने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम यह हबीब भी उसी हबीब की तरह थे जिनका ज़िक्र सूरः यासीन में है। इनसे उस कज़्ज़ाब ने हुज़ूर सल्ल. के बारे में दरियाफ़्त किया तो आपने फ़रमाया- बेशक वह अल्लाह के रसूल हैं। उसने कहा मेरे बारे में भी तू गवाही देता है कि मैं रसूलुल्लाह हूँ? तो हज़रत हबीब रज़ि. ने फ़रमाया मैं नहीं सुनता। उसने कहा मुहम्मद के बारे में तू क्या कहता है? आपने फ़रमाया मैं उनकी सच्ची रिसालत को मानता हूँ। उसने फिर पूछा मेरी रिसालत के बारे में क्या कहता है? जवाब दिया कि मैं नहीं सुनता। उस मलऊन ने कहा उनके बारे में तो तू सुन लेता है और मेरे बारे में बहरा बन जाता है। चुनाँचे उसके बाद पूछता और उनके जवाब पर बदन के एक हिस्से को कटवा देता। फिर पूछता और यही जवाब पाता और बदन का एक हिस्सा कटवाता, इसी तरह जिस्म का एक-एक जोड़ कटवा दिया और वह अपने सच्चे इस्लाम पर आख़िरी दम तक क़ायम रहे और जो जवाब पहले था वही आख़िर तक रहा। यहाँ तक कि शहीद हो गये। रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

इसके बाद उन लोगों पर जो अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हुआ और जिस अ़ज़ाब से वे ग़ारत कर दिये गये उसका ज़िक्र हो रहा है। चूँकि उन्होंने ख़ुदा के रसूल को झुठलाया, ख़ुदा के वली को क़त्ल किया, इसलिये उन पर अ़ज़ाब आया और हलाक कर दिये गये। लेकिन उन्हें बरबाद करने के लिये ख़ुदा ने न तो कोई लश्कर आसमान से भेजा, न कोई ख़ास एहतिमाम करना पड़ा, न किसी बड़े से बड़े काम के लिये उसे इसकी ज़रूरत। उसका तो सिर्फ़ हुक्म कर देना काफ़ी है। न उन्हें उसके बाद कोई तंबीह (चेतावनी) की गई न उन पर फ़रिश्ते उतारे गये, बल्कि बिना मोहलत दिये अ़ज़ाब में पकड़ लिये गये और बग़ैर इसके कि कोई नामलेवा पानी दीवा हो अव्वल से लेकर आख़िर तक एक-एक करके सब के सब फ़ना के घाट उतार दिये गये। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और उनके शहर अन्ताकिया के दरवाज़े की चौखट थामकर इस ज़ोर से एक आवाज़ लगाई (यानी चीख़ मारी) कि कलेजे टुकड़े-टुकड़े हो गये, दिल दहल गये और रूहें परवाज़ कर गईं।

Maktab E Ashraf

हज़रत क़तादा रह. से मन्क़ूल है कि उन लोगों के पास जो तीनों रसूल आये थे ये हज़रत ईसा के भेजे हुए क़ासिद थे, लेकिन इसमें किसी क़द्र कलाम है। अव्वल तो यह कि ज़ाहिर से यह मालूम होता है कि वे मुस्तक़िल (ख़ुद अपने आप अल्लाह के) रसूल थे। अल्लाह का फ़रमान है:

إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ............ الخ

जबकि हमने उनकी तरफ़ दो रसूल भेजे। जब उन्होंने उन दोनों को झुठला दिया तो हमने उनकी मदद के लिये तीसरा रसूल भेजा।

फिर ख़ुदा के ये रसूल अन्ताकिया वालों से कहते हैं:

إِنَّآ إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ.......... الخ

यानी हम तुम्हारी तरफ़ रसूल हैं........।

पस अगर ये तीनों हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के हवारियों (सहाबा) में से हज़रत ईसा के भेजे हुए होते तो इन्हें यह कहना मुनासिब न था, बल्कि वे कोई ऐसा जुमला कहते जिससे मालूम हो जाता कि ये हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के क़ासिद हैं। वल्लाहु आलम।

फिर यह भी एक क़रीना (इशारा) है कि अन्ताकिया के काफ़िर उनके जवाब में कहते हैं:

إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا.

तुम तो हम ही जैसे इनसान हो।

देखो यह कलिमा काफ़िर लोग हमेशा रसूलों को ही कहते रहे। अगर वे हवारियों (हज़रत ईसा के साथियों) में से होते तब तो उनका अपने रसूल होने का मुस्तक़िल दावा था ही नहीं, फिर उन्हें ये लोग यह इल्ज़ाम ही क्यों देते? दूसरे यह कि अन्ताकिया वालों की तरफ़ हज़रत मसीह के क़ासिद गये थे और उस वक़्त उस बस्ती के लोग उन पर ईमान लाये थे। बल्कि यही पहली वह बस्ती है जो सारी की सारी जनाब हज़रत ईसा पर ईमान लाई। इसी लिये ईसाईयों के जो चार शहर मुक़द्दस (पवित्र) समझे जाते हैं उनमें एक यह भी है। बैतुल-मुक़द्दस की बुज़ुर्गी (बड़ाई और पवित्रता) के वे क़ायल इसलिये हैं कि वह हज़रत मसीह का शहर है, और अन्ताकिया को इज़्ज़त व सम्मान वाला शहर इसलिये कहते हैं कि सब से पहले यहीं के लोग हज़रत मसीह पर ईमान लाये, और स्कन्दरिया की अ़ज़मत की वजह यह है कि यहाँ उन्होंने अपने मज़हबी ओ़हदेदारों का चयन किया और इस पर सहमति बनी, और रोमिया की हुर्मत व सम्मान के क़ायल इस वजह से हैं कि क़ुस्तुनतुनिया के बादशाह का शहर यही है, और इसी बादशाह ने उनके दीन की इमदाद की थी और यहीं उनके तबर्रुकात (धार्मिक निशानियाँ और बरकती चीज़ें) थे। फिर जब उसने क़ुस्तुनतुनिया शहर बसाया तो उन तबर्रुकात को रोमिया से यहाँ ला रखा।

सअ़द बिन बतरीक़ वग़ैरह ईसाई इतिहासकारों की तारीख़ों (इतिहास) में इन सब वाक़िआ़त का उल्लेख है। मुसलमान इतिहासकारों ने भी यही लिखा है। पस मालूम हुआ कि अन्ताकिया वालों ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के क़ासिदों की तो मान ली थी। और यहाँ बयान है कि उन्होंने न मानी, उन पर अ़ज़ाबे इलाही आया और तहस-नहस कर दिये गये। तो साबित हुआ कि यह वाक़िआ़ और है और ये रसूल मुस्तक़िल (अल्लाह की तरफ़ से स्थाई तौर पर) रिसालत पर मामूर थे। और उन्होंने न माना जिस पर उन्हें सज़ा हुई, वे बेनिशान कर दिये गये और सुबह के चिराग़ की तरह बुझा दिये गये। वल्लाहु आलम।

Maktaba E Ashraf

तीसरी बात यह कि अन्ताकिया वालों का क़िस्सा जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के हवारियों के साथ पेश आया वह निश्चित तौर पर तौरात के उतरने के बाद का है। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. और बुज़ुर्गों की एक जमाअ़त से मन्क़ूल है कि तौरात के नाज़िल होने के बाद किसी बस्ती को अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़ज़ाब से बिल्कुल बरबाद नहीं किया, बल्कि मोमिनों को काफ़िरों से जिहाद करने का हुक्म देकर कुफ़्फ़ार को नीचा दिखाया है। जैसा कि इस आयत की तफ़सीर में हैः

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا .... الخ

(सूरः क़सस आयत 43)

और इस बस्ती की आसमानी अ़ज़ाब से हलाकत पर क़ुरआन की आयतें गवाह हैं, जिनसे यह मज़मून बिल्कुल स्पष्ट है। तथा इससे यह साबित होता है कि यह वाक़िआ़ अन्ताकिया शहर का नहीं, जैसा कि बाज़ पहले उलेमा और बुज़ुर्गों के अक़्वाल भी इसे किसी मक़ाम के निर्धारित करने से आज़ाद रखते हैं। उनका क़ौल है कि इससे मुराद यह मशहूर शहर अन्ताकिया नहीं, हाँ यह हो सकता है कि अन्ताकिया नाम का कोई शहर और भी हो और यह वाक़िआ़ वहाँ का हो। इसलिये कि जो अन्ताकिया मशहूर है उसका अ़ज़ाबे ख़ुदा से नेस्त व नाबूद होना मशहूर नहीं है। न तो ईसाई दौर में और न उससे पहले। वल्लाहु आलम।

यह भी याद रहे कि तबरानी की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि दुनिया में तीन ही शख़्स सबक़त करने में सबसे आगे निकल गये हैं- हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ सबक़त करने (आगे बढ़ने) वाले तो हज़रत यूशा बिन नून थे, और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ सबक़त करने वाले वह थे जिनका ज़िक्र सूरः यासीन में है, और मुहम्मद सल्ल. की ख़िदमत में आगे बढ़ने वाले हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि. थे। यह हदीस बिल्कुल मुन्कर है और सिर्फ़ हुसैन अश्क़र से रिवायत है, वह शिया है और मतरूक है (यानी उसकी हदीसें नहीं ली जातीं)। वल्लाहु सुब्हानहू व तआ़ला आलम।

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝ وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝

अफ़सोस ऐसे बन्दों के हाल पर, उनके पास कभी कोई रसूल नहीं आया जिसकी उन्होंने हंसी न उड़ाई हो। (30) क्या उन लोगों ने इस पर नज़र नहीं की कि हम उनसे पहले बहुत-सी उम्मतें ग़ारत कर चुके कि वे (फिर) उनकी तरफ़ (दुनिया में) लौटकर नहीं आते। (31) और उनमें कोई ऐसा नहीं जो मुज्तमा तौर पर "यानी इकट्ठा और जमा होकर" हमारे सामने हाज़िर न किया जाए। (32)

आह यह कैसा चलन और तरीक़ा है!

बन्दों पर हसरत व अफ़सोस है, बन्दे कल अपने ऊपर कैसे नादिम होंगे। वे बार-बार कहेंगे कि हाय अफ़सोस हमने तो ख़ुद अपना बुरा किया। बाज़ क़िराअतों में 'या हस्रतलू-इबादि अ़ला अन्फ़ुसिहिम' भी है। मतलब यह है कि क़ियामत के दिन अ़ज़ाब को देखकर हाथ मलेंगे कि उन्होंने क्यों रसूलों को झुठलाया और क्यों ख़ुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ किया। दुनिया में तो उनका यह था कि जब कभी जो रसूल आया उन्होंने

बेसोचे समझे उसको झुठलाया और दिल खोलकर उसकी बेअदबी और तौहीन की। वे अगर यहाँ ताम्मुल करते (सोचते-समझते) तो जान लेते कि उनसे पहले जिन लोगों ने पैग़म्बरों की न मानी थी वे ग़ारत व बरबाद कर दिये गये। एक भी तो उनमें से न बच सका, न उस आख़िरत के घर से वापस पलटा।

इसमें उन लोगों का भी रद्द है जो दहरिये थे, जिनका ख़्याल था कि यूँ ही दुनिया में मरते जीते चले जायेंगे, लौट-लौटकर इस दुनिया में आयेंगे। अल्लाह तआ़ला ने उन सब की बातों का रद्द किया और फ़रमाया कि तमाम गुज़रे हुए, मौजूद और आने वाले लोग क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने हिसाब व किताब के लिये हाज़िर किये जायेंगे और वहाँ हर-हर भलाई और बुराई का बदला पायेंगे जैसा कि एक दूसरी आयत में फ़रमायाः

وَاِنْ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ.

यानी हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा-पूरा बदला तेरा रब अ़ता फ़रमायेगा।

एक क़िराअत में "लमा" है। इस सूरत में आयत का मतलब यह होगा कि नहीं हैं ये सब मगर यह कि सब के सब हमारे सामने हाज़िर शुदा हैं। क़िराअत की दूसरी आयत पर भी मतलब यही रहेगा। वल्लाहु तआ़ला आलम।

और उन लोगों के लिए एक निशानी मुर्दा ज़मीन है। हमने उसको (बारिश से) ज़िन्दा किया और हमने उससे ग़ल्ले निकाले, सो उनमें से लोग खाते हैं। (33) और (तथा) हमने उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगाए और (साथ ही) उसमें चश्मे जारी किए। (34) ताकि लोग बाग़ के फलों में से खाएँ, और उस (फल और ग़ल्ले) को उनके हाथों ने नहीं बनाया, सो क्या शुक्र नहीं करते। (35) वह पाक ज़ात है जिसने तमाम मुक़ाबिल क़िस्मों को पैदा किया, ज़मीन में से उगने वाली चीज़ों में से भी, और (ख़ुद) उन आदमियों में से भी, और उन चीज़ों में से भी जिनको (आ़म लोग) नहीं जानते। (36)	وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَ اَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ۝ وَ جَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّ فَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ۝ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝ سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

बन्जर ज़मीन, लह्लहाते हुए खेत

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि मेरे वजूद पर और मेरी ज़बरदस्त क़ुदरत पर और मुर्दों के ज़िन्दा करने पर एक निशानी यह भी है कि मुर्दा ज़मीन जो बन्जर ख़ुश्क पड़ी हुई होती है, जिसमें कोई उपज, ताज़गी, हरियाली और घास वग़ैरह नहीं होती, मैं उस पर आसमान से पानी बरसाता हूँ और वह मुर्दा ज़मीन जी उठती है, लह्लहाने लगती है। हर तरफ़ सब्ज़ा उग जाता है और क़िस्म-क़िस्म के फल-फूल वग़ैरह नज़र आने लगते हैं। तो फ़रमाता है कि हम इस मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देते हैं और उसमें क़िस्म-क़िस्म

के अनाज पैदा करते हैं। बाज़ को तुम खाते हो और बाज़ को तुम्हारे जानवर खाते हैं। हम इसमें खजूरों के अंगूरों के बाग़ात वग़ैरह तैयार कर देते हैं, नहरें जारी कर देते हैं जो बाग़ों और खेतों को सैराब, सरसब्ज़ व शादाब करती रहती हैं। ये सब इसलिये कि इन दरख़्तों के मेवे दुनिया खाये और खेतों, बाग़ात से मुनाफ़ा हासिल करे और अपनी ज़रूरत पूरी करे। ये सब ख़ुदा की रहमत और उसकी क़ुदरत से पैदा हो रहे हैं। किसी के बस और इख़्तियार में नहीं। यह तुम्हारे हाथों की पैदा की हुई या हासिल की हुई चीज़ें नहीं, न तुम में इनको उगाने की ताक़त, न तुम में इनको बचाने की क़ुदरत, न इनको पकाने और तैयार करने का तुम्हें इख़्तियार। सिर्फ़ ख़ुदा के ये काम हैं और उसी की यह मेहरबानी है, और उसके एहसान के साथ ही साथ ये उसकी क़ुदरत के नमूने हैं। फिर लोगों को क्या हो गया है जो शुक्रगुज़ारी नहीं करते, और ख़ुदा तआ़ला की बेइन्तिहा अनगिनत नेमतें अपने पास होते हुए उनका एहसान नहीं मानते?

एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि बाग़ात के फल ये खाते हैं और अपने हाथों का बोया हुआ ये पाते हैं। चुनाँचे इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में 'व मिम्मा अ़मिलत्हु ऐदीहिम' है। पाक और बरतर और तमाम नुक़सानात से बरी वह ख़ुदा है जिसने ज़मीन की पैदावार को और ख़ुद तुम को जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है और विभिन्न प्रकार की मख़्लूक़ के जोड़े बनाये हैं, जिन्हें तुम जानते भी नहीं हो। जैसे एक और आयत में है:

وَمِن كُلِّ شَىْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ.

कि हमने हर चीज़ के जोड़े पैदा किये हैं, ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ۝ وَالشَّمْسُ تَجْرِىْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِىْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِىْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝	और एक निशानी उनके लिए रात है, कि हम उस (रात) पर से दिन को उतार लेते हैं, सो यकायक वे लोग अन्धेरे में रह जाते हैं। (37) और (एक निशानी) सूरज (है कि वह) अपने ठिकाने की तरफ़ चलता रहता है। यह अन्दाज़ा बाँधा हुआ है उस (ख़ुदा तआ़ला) का जो ज़बरदस्त, इल्म वाला है। (38) और चाँद के लिए मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं, यहाँ तक कि ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी। (39) न सूरज की मजाल है कि चाँद को जा पकड़े और न रात दिन से पहले आ सकती है, और दोनों एक-एक दायरे में तैर रहे हैं। (40)

अंधेरी रात और फिर सुबह की रोशनी

अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते कामिला की एक निशानी बयान हो रही है और वे दिन रात हैं, जो उजाले और अंधेरे वाले हैं, और बराबर एक दूसरे के पीछे आ-जा रहे हैं। जैसे फ़रमायाः

يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا.

Mahtab E Ashraf

रात से दिन को छुपाता है, रात दिन को जल्दी-जल्दी ढूँढती आती है।

यहाँ भी फ़रमाया कि रात में से हम दिन को खींच लेते हैं, दिन तो ख़त्म हुआ और रात आ गई और चारों तरफ़ अंधेरा छा गया। हदीस में है कि जब इधर रात आ जाये और दिन उधर चला जाये और सूरज गुरूब हो जाये तो रोज़ेदार इफ़तार कर ले। आयत के ज़ाहिरी मायने तो यही हैं, लेकिन हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि इसका मतलब इस आयत के जैसा है:

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ.

यानी अल्लाह तआ़ला रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल कर देता है।

हज़रत इमाम इब्ने जरीर रह. इस क़ौल को ज़ईफ़ (कमज़ोर) बतलाते हैं और फ़रमाते हैं कि इस आयत में जो लफ़्ज़ 'ईलाज' है इसके मायने एक की कमी करके दूसरी में ज़्यादती करने के हैं, और यह मुराद इस आयत में नहीं। इमाम साहिब रह. का यह क़ौल ठीक है। 'मुस्तक़र' से मुराद ठहरने की जगह है और वह अ़र्श के नीचे की वही दिशा है। पस एक सूरज ही नहीं बल्कि तमाम मख़्लूक़ अ़र्श के नीचे ही है, इसलिये कि अ़र्श सारी मख़्लूक़ के ऊपर है और सब को घेरे हुए है, और वह कुर्रा (गोल) नहीं, जैसा कि आसमानी चीज़ों और सितारों वग़ैरह का इल्म रखने वाले कहते हैं। बल्कि वह एक गुंबद की तरह है जिसके पाये हैं और जिसे फ़रिश्ते उठाये हुए हैं, इनसानों के सरों के ऊपर। ऊपर वाले आ़लम में है। पस जबकि आसमानी क़ुब्बे (गुंबद) में ठीक ज़ोहर का वक़्त होता है उस वक़्त वह अ़र्श से बहुत क़रीब होता है, फिर जब वह घूम कर चौथे आसमान में उसी मक़ाम के सामने आ जाता है, यह आधी रात का वक़्त होता है, जबकि वह अ़र्श से बहुत दूर हो जाता है पस वह सज्दा करता है और निकलने की इजाज़त चाहता है, जैसा कि हदीसों में है। सही बुख़ारी में है, हज़रत अबूज़र रज़ि. कहते हैं कि सूरज के ग़ुरूब होने के वक़्त मैं रसूलुल्लाह सल्ल. के पास मस्जिद में था तो आपने मुझसे फ़रमाया- "जानते हो यह सूरज कहाँ ग़ुरूब होता है?" मैंने कहा ख़ुदा और उसका रसूल ही ख़ूब जानते हैं। आपने फ़रमाया "वह अ़र्श के नीचे जाकर ख़ुदा को सज्दा करता है" फिर आपने यह आयत तिलावत की:

وَالشَّمْسُ تَجْرِىْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا............ الخ

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)

एक और हदीस में है कि आप से हज़रत अबूज़र रज़ि. ने इस आयत का मतलब पूछा तो आपने फ़रमाया- इसके ठहरने की जगह अ़र्श के नीचे है। मुस्नद अहमद में इससे पहले की हदीस में यह भी है कि वह अल्लाह तआ़ला से वापस होने की इजाज़त तलब करता है और उसे इजाज़त दी जाती है, गोया उससे कहा जाता है कि जहाँ से आया था वहीं लौट जा तो वह अपने निकलने की जगह से निकलता है। और यही उसका ठिकाना और क़रार-गाह है। फिर आपने इस आयत के शुरू के जुमले को पढ़ा।

एक रिवायत में यह भी है कि क़रीब है वह सज्दा करे लेकिन क़बूल न किया जाये और इजाज़त माँगे लेकिन इजाज़त न दी जाये, बल्कि कहा जाये कि जहाँ से आया है वहीं लौट जा। पस वह मग़रिब (पश्चिम) से ही निकलेगा। यही इस आयते करीमा के मायने हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि सूरज निकलता है तो उसे इनसानों के गुनाह लौटा देते हैं। वह ग़ुरूब होकर सज्दे में गिर पड़ता है और इजाज़त तलब करता है, इजाज़त मिल जाती है। एक दिन यह ग़ुरूब होकर आ़जिज़ी के साथ सज्दा करेगा और इजाज़त माँगेगा लेकिन इजाज़त न दी जायेगी। वह कहेगा कि राह दूर है और इजाज़त मिली नहीं,

इसलिये नहीं पहुँच सकूँगा। फिर कुछ रोक रखने के बाद उससे कहा जायेगा कि जहाँ से गुरूब हुआ था वहीं से निकल जा। यही क़ियामत का दिन होगा। जिस दिन ईमान लाना बिल्कुल बेसूद होगा और नेकियाँ करनी भी उनके लिये जो इससे पहले ईमान वाले और नेकोकार न थे, बेकार होंगी।

और यह भी कहा गया है कि मुस्तक़र्र (ठिकाने और क़रार-गाह) से मुराद उसके चलने की इन्तिहा (हद) है, पूरी बुलन्दी (यानी गर्मी की शिद्दत) जो गर्मियों में होती है और पूरी पस्ती (यानी धूप में कमी) जो जाड़ों में होती है। दूसरा क़ौल यह है कि आयत के इस लफ़्ज़ मुस्तक़र्र से मुराद इसकी चाल का ख़ात्मा है। क़ियामत के दिन इसकी हरकत सुस्त और बेकार हो जायेगी, यह बेनूर हो जायेगा और यह आलम सारा का सारा ख़त्म हो जायेगा। यह ज़माने के एतिबार से इसका ठिकाना है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि वह अपने मुस्तक़र्र पर चलता है, यानी अपने वक़्त और अपनी मियाद पर जिससे आगे नहीं बढ़ सकता। जो उसके रास्ते जाड़ों के और गर्मियों के मुक़र्रर हैं उन्हीं रास्तों से आता-जाता है। हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की क़िराअत में 'ला मुस्तक़र्रिल्-लहा' है। यानी इसके लिये सुकून व क़रार नहीं, बल्कि दिन रात अल्लाह के हुक्म से गर्दिश करता रहता है, न रुके न थके। जैसे फ़रमायाः

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ.........الخ

यानी उसने तुम्हारे लिये सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया (यानी तुम्हारे ताबे, मतलब यह कि तुम्हारे काम में लगा दिया) है जो न थकें न ठहरें। क़ियामत तक चलते फिरते ही रहेंगे। अन्दाज़ा उस ख़ुदा का है जो ग़ालिब है, जिसकी कोई मुख़ालफ़त नहीं कर सकता, जिसके हुक्म को कोई टाल नहीं सकता। वह अ़लीम है, हर हर हरकत व सुकून को जानता है। उसने अपनी कामिल हिक्मत से इसकी रफ़्तार मुक़र्रर की है, जिसमें न इख़्तिलाफ़ वाक़े हो सके न उसके ख़िलाफ़ हो सके। जैसे फ़रमायाः

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ.........الخ

सुबह का निकालने वाला जिसने रात को राहत का वक़्त बनाया और सूरज चाँद को हिसाब से मुक़र्रर किया। यही है अन्दाज़ा उसका जो ग़ालिब और इल्म वाला है। सूरः हा-मीम सज्दा की आयत को भी इसी तरह ख़त्म किया।

फिर फ़रमाता है कि चाँद की हमने मन्ज़िलें मुक़र्रर कर दी हैं, वह एक अलग अन्दाज़ की चाल चलता है जिससे महीने मालूम हो जायें, जैसे सूरज की चाल से रात दिन मालूम हो जाते हैं। जैसा कि एक जगह अल्लाह का फ़रमान है कि लोग तुझसे चाँद के बारे में सवाल करते हैं, तू जवाब दे कि वक़्तों और हज के मौसम को बतलाने के लिये है। एक और आयत में फ़रमाया कि उसने सूरज को रोशनी और चाँद को नूर दिया है, और इसकी मन्ज़िलें ठहरा दी (यानी निर्धारित कर दी) हैं कि ताकि तुम बरसों को और हिसाब को मालूम कर लो.........।

एक आयत में है कि हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बना दिया है। रात की निशानी को हमने धुंधला कर दिया है और दिन की निशानी को रोशन किया है ताकि तुम इसमें अपने रब की नाज़िल की हुई रोज़ी को तलाश कर सको और बरसों का शुमार और हिसाब कर सको। हमने हर चीज़ को ख़ूब तफ़सील से बयान कर दिया है। पस सूरज की चमक-दमक उसके साथ मख़्सूस है, और चाँद की रोशनी उसी में है, इसकी रफ़्तार भी अलग और भिन्न है। सूरज हर दिन निकलता और छुपता है, उसी रोशनी के साथ होता

है, हाँ उसके निकलने और छुपने की जगहें जाड़े और गर्मी में अलग-अलग होती हैं। इसी सबब से दिन रात में कमी-बेशी होती रहती है। सूरज दिन का सितारा है और चाँद रात का, उसकी मन्ज़िलें मुक़र्रर हैं। महीने की पहली रात में निकलता है, बहुत छोटा होता है, रोशनी कम होती है, दूसरी रात में उससे बढ़ जाती है और मन्ज़िल भी तरक़्क़ी करती जाती है। फिर जैसे-जैसे बुलन्द होता जाता है रोशनी बढ़ती जाती है, अगरचे इसकी नूरानियत सूरज से मिली हुई होती है। आख़िर चौदहवीं रात को चाँद पूरा हो जाता है और उसकी चाँदनी भी कामिल हो जाती है।

फिर घटना शुरू होता है और इसी तरह दर्जा-ब-दर्जा धीरे-धीरे घटता हुआ खजूर के एक ख़ोशे की टहनी के जैसा हो जाता है। जिस पर तर खजूरें लटकती हों और वह ख़ुश्क होकर बल खा गई हो। फिर उसे नये सिरे से अल्लाह तआ़ला दूसरे महीने के शुरू में ज़ाहिर करता है।

अ़रब में चाँद की रोशनी के एतिबार से महीने की रातों के नाम रख लिये गये हैं। जैसे पहली तीन रातों के नाम 'ग़ुरर' है। इसके बाद की तीन रातों का नाम 'नुफ़ल' है। उसके बाद की तीन रातों का नाम 'तुसअ़' है। इसलिये कि उनकी आख़िरी रात नवीं होती है। उसके बाद की तीन रातों का नाम 'उशर' है, इसलिये कि उनका शुरू दसवीं से है। उनके बाद की तीन रातों का नाम 'बियज़' है। इसलिये कि इन रातों में चाँदनी की रोशनी आख़िर तक रहा करती है। उसके बाद की तीन रातों का नाम उनके यहाँ 'दुरअ़' है। यह लफ़्ज़ दरआ़ की जमा (बहुवचन) है। उनका यह नाम इसलिये रखा है कि सौलहवीं को चाँद ज़रा देर से निकलता है तो थोड़ी देर तक अंधेरा यानी सियाही रहती है और अ़रब में उस बकरी को जिसका सर सियाह हो "शाते दरआ़" कहते हैं। उसके बाद की तीन की तीन रातों को 'ज़ुल्म' कहते हैं। फिर तीन को 'हनादस', फिर तीन को 'दआ़दी', फिर तीन को 'महाक़'। इसलिये कि इसमें चाँद ख़त्म हो जाता है और महीना भी ख़त्म हो जाता है। अबू उबैद इनमें से 'तुसअ़' और 'उशर' को क़ुबूल नहीं करते। मुलाहिज़ा हो किताब 'ग़रीबुल-मुसन्नफ़'।

सूरज और चाँद की हदें उसने मुक़र्रर कर रखी हैं, नामुम्किन है कि कोई अपनी हद से इधर या उधर हो जाये, या आगे पीछे हो जाये। इसकी बारी के वक़्त वह गुम है, उसकी बारी के वक़्त यह ख़ामोश है। हसन रह. कहते हैं कि यह चाँद रात को है। इब्ने मुबारक का क़ौल है कि हवा के पर हैं और चाँद पानी के ग़िलाफ़ के नीचे जगह करता है। (इस बात की कोई सनद नहीं -हिन्दी अुवादक)

अबू सालेह फ़रमाते हैं कि इसकी रोशनी उसकी रोशनी को पकड़ नहीं सकती। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि रात को सूरज नहीं निकल सकता, न रात दिन से आगे बढ़ सकती है, यानी रात के बाद ही रात नहीं आ सकती बल्कि बीच में दिन आ जायेगा। पस सूरज की सल्तनत दिन को है औरं चाँद की बादशाहत रात को है। रात इधर से जाती उधर से दिन आता, एक दूसरे के पीछे लगे हुए हैं लेकिन न टकराव का डर है न किसी अव्यवस्था का ख़तरा है। न यह कि दिन ही दिन चला जाये रात न आये, न इसके विपरीत। एक जाता है दूसरा आता है। हर एक अपने-अपने वक़्त पर ग़ायब व हाज़िर होता रहता है, सब के सब सूरज, चाँद, दिन-रात, आसमान में तैर रहे हैं और घूमते फिरते हैं।

ज़ैद बिन आ़सिम का क़ौल है कि आसमान व ज़मीन के बीच फ़लक में ये सब आ-जा रहे हैं, लेकिन यह बहुत ग़रीब बल्कि मुन्कर क़ौल है। बाज़ लोग कहते हैं कि वह फ़लक एक चरख़े के तकले की तरह है। बाज़ कहते हैं कि चक्की के लोहे के पाट की तरह है।

Maktab E Ashraf

और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनकी औलाद को भरी हुई कश्ती में सवार किया। (41) और हमने उनके लिए कश्ती ही जैसी ऐसी चीज़ें पैदा कीं जिन पर ये लोग सवार होते हैं। (42) और अगर हम चाहें तो उनको ग़र्क़ कर दें, फिर न तो कोई उनकी फ़रियाद को पहुँचने वाला हो और न ये ख़लासी "यानी छुटकारा और निजात" दिए जाएँ (43) मगर यह हमारी ही मेहरबानी है, और उनको एक मुक़र्ररा वक़्त तक फ़ायदा देना (मन्ज़ूर) है। (44)	وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ۝ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۝ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝

समुद्री जहाज़

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी क़ुदरत की एक और निशानी बतला रहा है कि उसने समुद्र को मुसख़्ख़र कर (यानी तुम्हारे काम में लगा) दिया है, जिसमें कश्तियाँ बराबर आना-जाना कर रही हैं। सबसे पहले कश्ती हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की थी, जिस पर सवार होकर वह ख़ुद और उनके साथ ईमान वाले बन्दे निजात पा गये थे। बाक़ी रू-ए-ज़मीन पर एक इनसान भी बचा न था। हमने इस ज़माने के लोगों के बाप-दादों (यानी पुर्खों और पूर्वजों) को कश्ती में बिठाया था जो बिल्कुल भरी हुई थी, क्योंकि उसमें ज़रूरत का तमाम सामान था और साथ ही हैवानात भी थे जो ख़ुदा के हुक्म से उसमें बिठा लिये गये थे। हर क़िस्म के जानवर का एक-एक जोड़ा था। बड़ी भरी हुई और बोझल थी। यह सिफ़त भी सही तौर पर हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कश्ती पर सादिक़ आती है।

इसी तरह ख़ुश्की की सवारियाँ भी ख़ुदा ने इनके लिये पैदा कर दी हैं, जैसे ऊँट, जो ख़ुश्की में वही काम देता है जो पानी में कश्ती काम देती है। इसी तरह दूसरे मवेशी जानवर भी। और यह भी हो सकता है कि कश्ती-ए-नूह नमूना बनी और फिर उस नमूने पर दूसरी कश्तियाँ और ज़हाज़ बनते चले गये। इस मतलब की ताईद इस आयत से भी होती है:

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً........ الخ

यानी जब पानी ने तुग़यानी की (उफान पर आया) तो हमने तुम्हें कश्ती पर सवार कर लिया ताकि उसे तुम्हारे लिये एक यादगार बनायें। और याद रखने वाले कान उसे याद रखें। हमारे इस एहसान को मत भुलाओ कि समुद्र से हमने तुम्हें पार कर दिया। अगर हम चाहते तो उसी में तुम्हें डुबो देते। कश्ती की कश्ती बैठ जाती, कोई न होता जो उस वक़्त तुम्हारी मदद करे, न कोई ऐसा तुम्हें मिलता जो तुम्हें बचा सके। लेकिन सिर्फ़ हमारी रहमत है कि ख़ुश्की और तरी के लिये लम्बे सफ़र तुम आराम व राहत से तय कर रहे हो और हम तुम्हें अपने ठहराये हुए (यानी एक निर्धारित) वक़्त तक हर तरह सलामत रखते हैं।

Maktab e Ashraf

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَابَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا
خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ٥ وَمَاتَاْتِيْهِمْ
مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا
مُعْرِضِيْنَ ٥ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا
رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْيَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ
اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ٥

और जब उन लोगों से कहा जाता है कि तुम लोग उस अ़ज़ाब से डरो जो तुम्हारे सामने है और तुम्हारे (मरने के) पीछे "बाद" है, ताकि तुम पर रहमत की जाए (45) तो वे बिल्कुल परवाह नहीं करते, और उनके रब की आयतों में से कोई आयत भी उनके पास ऐसी नहीं आती, जिससे वे मुँह न मोड़ते हों। (46) और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुमको दिया है उसमें से ख़र्च करो, तो ये कुफ़्फ़ार (उन) मुसलमानों से यूँ कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खाने को दें जिनको अगर ख़ुदा चाहे तो (बहुत कुछ) खाने को दे दे। तुम बिल्कुल खुली ग़लती में (पड़े) हो। (47)

चन्द हिदायतें

काफ़िरों की सरकशी, बेसमझी और दुश्मनी व तकब्बुर बयान हो रहा है कि जब इनसे गुनाहों से बचने को कहा जाता है कि जो कुछ कर चुके उस पर शर्मिन्दा होओ और उससे तौबा कर लो, और आईन्दा के लिये उनसे (यानी बुरे कामों से) एहतियात करो। इसके नतीजे में अल्लाह तआ़ला तुम पर रहम करेगा और तुम्हें अपने अ़ज़ाब से बचा लेगा। तो इस पर अ़मल करना तो एक तरफ़ और मुँह फुला लेते हैं। क़ुरआन ने इस जुमले को बयान नहीं फ़रमाया, क्योंकि आगे जो आयत है वह इस पर साफ़ तौर पर दलालत करती है। उसमें है कि यही एक बात क्या! इनकी तो आ़दत हो गई है कि ख़ुदा की हर बात से मुँह फेर लें। न उसकी तौहीद को मानते हैं और न रसूलों को सच्चा मानते हैं। न इनमें सोच-विचार की आ़दत, न इनमें क़बूलियत का माद्दा, न नफ़ा हासिल करने का जज़्बा। इनको जब कभी अल्लाह के रास्ते में ख़ैरात करने को कहा जाता है कि ख़ुदा ने जो तुम्हें दिया है उसमें से ग़रीबों, मिस्कीनों और मोहताजों का हिस्सा भी है, तो ये जवाब देते हैं कि अगर ख़ुदा की मंशा होती तो इन ग़रीबों को ख़ुद ही देता। जब ख़ुदा ही का इरादा इन्हें देने का नहीं तो हम ख़ुदा के इरादे के ख़िलाफ़ क्यों करें? तुम जो हमें ख़ैरात की नसीहत कर रहे हो इसमें बिल्कुल ग़लती पर हो। यह भी हो सकता है कि यह पिछला जुमला कुफ़्फ़ार की तरदीद (बात के रद्द) में ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से हो, यानी अल्लाह तआ़ला इन काफ़िरों से फ़रमा रहा है कि तुम खुली गुमराही में हो, लेकिन इससे यही अच्छा मालूम होता है कि यह भी काफ़िरों के जवाब का हिस्सा है। वल्लाहु आलम।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ٥ مَايَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً

और ये लोग (बतौर इनकार) कहते हैं कि यह वायदा कब होगा? अगर तुम सच्चे हो। (48) ये लोग बस एक सख़्त आवाज़ के

Mahtab E Ashraf

تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ۝ فَلَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ ٣
يَرْجِعُوْنَ ۝ ع ١٨
٢

मुन्तज़िर हैं जो उनको आ पकड़ेगी और वे सब आपस में लड़-झगड़ रहे होंगे। (49) सो न तो वसीयत करने की फ़ुर्सत होगी और न अपने घर वालों के पास लौटकर जा सकेंगे। (50)

एक ख़ौफ़नाक चीख़

काफ़िर चूँकि क़ियामत के क़ायल न थे इसलिये वे नबियों से और मुसलमानों से कहा करते थे कि "फिर क़ियामत को लाते क्यों नहीं?" अच्छा यह बतलाओ कि कब आयेगी? अल्लाह तआ़ला उन्हें जवाब देता है कि उसके आने के लिये कुछ सामान नहीं करने पड़ेंगे, सिर्फ़ एक मर्तबा सूर फूँक दिया जायेगा। दुनिया के लोग रोज़मर्रा की तरह अपने-अपने काम-काज में मश़गूल होंगे कि अल्लाह तआ़ला हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम को सूर फूँकने का हुक्म देगा। वहीं लोग इधर-उधर गिरने-पड़ने शुरू हो जायेंगे। उस आसमानी तेज़ व तुन्द आवाज़ से सब के सब मेहशर में ख़ुदा के सामने जमा कर दिये जायेंगे। उस चीख़ के बाद किसी को इतनी भी तो मोहलत नहीं मिलेगी कि किसी से कुछ कह-सुन सके, कोई वसीयत और नसीहत कर सके और न फिर उन्हें अपने घर वालों की तरफ़ वापस जाने की ताक़त रहेगी।

इस आयत के मुताल्लिक़ बहुत से आसार (बुज़ुर्गों के क़ौल, वाक़िआ़त) और हदीसें मौजूद हैं, जिनको हम दूसरी जगह ज़िक्र कर चुके हैं। इस पहली बार के सूर फूँकने के बाद दूसरी बार सूर फूँका जायेगा जिससे सब के सब मर जायेंगे, तमाम जहान फ़ना हो जायेगा, सिवाय ख़ुदा तआ़ला के जिसको फ़ना नहीं। उसके बाद फिर दोबारा उठने का सूर फूँका जायेगा।

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ
اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ
بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ سكتة هٰذَا مَا وَعَدَ
الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِنْ
كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ
جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝ فَالْيَوْمَ لَا
تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

और (फिर दोबारा) सूर फूँका जाएगा, सो वे सब एक दम से क़ब्रों से (निकल-निकल कर) अपने रब की तरफ़ जल्दी से चलने लगेंगे। (51) कहेंगे कि हाय! हमारी कमबख़्ती हमको हमारी क़ब्रों से किसने उठाया? यह वही (क़ियामत) है जिसका रहमान ने वायदा किया था, और पैग़म्बर सच कहते थे। (52) बस वह एक ज़ोर की आवाज़ होगी जिससे एक बार ही में सब जमा होकर हमारे पास हाज़िर कर दिए जाएँगे। (53) फिर उस दिन किसी शख़्स पर ज़रा ज़ुल्म न होगा, और तुमको बस उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम किया करते थे। (54)

Maktab-E-Ashraf

सूर की पित्ता पानी कर देने वाली आवाज़

इन आयतों से दूसरी बार के सूर फूँकने का ज़िक्र हो रहा है जिससे मुर्दे जी उठेंगे। 'यन्सिलून' 'नस्लान' से निकला है और इसके मायने तेज़ चलने के हैं। जैसे एक और आयत में है:

يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا........ الخ

जिस दिन ये क़ब्रों से निकल कर इस तेज़ी से चलेंगे कि गोया वे किसी निशान (मन्ज़िल और लक्ष्य) की तरफ़ लपके जा रहे हैं। चूँकि दुनिया में इन्हें क़ब्रों से उठने का इनकार रहा था इसलिये आज यह हालत देखकर कहेंगे कि हाय अफ़सोस हमारे सोने की जगह से हमें किसने उठाया। इससे क़ब्र के अ़ज़ाब का न होना साबित नहीं होता इसलिये कि जिस हौल व दहशत को, जिस तकलीफ़ और मुसीबत को अब ये देखेंगे उसके मुक़ाबले में तो क़ब्र के अ़ज़ाब बेहद हल्के थे। गोया कि वे वहाँ आराम में थे।

बाज़ बुज़ुर्गों ने यह भी फ़रमाया है कि इससे पहले ज़रा सी देर के लिये वास्तव में इन्हें नींद आ जायेगी। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि पहले सूर फूँके जाने और इस दूसरी बार के सूर को फूँके जाने के बीच ये सौ जायेंगे, इसलिये अब उठकर यूँ कहेंगे। इसका जवाब ईमान वाले लोग देंगे कि इसी का वायदा ख़ुदा का था, और यही ख़ुदा के सच्चे रसूल फ़रमाया करते थे। यह भी कहा गया है कि फ़रिश्ते यह जवाब देंगे। दोनों क़ौलों में इस तरह जोड़ और मुवाफ़क़त हो सकती है कि मोमिन भी कहें और फ़रिश्ते भी कहें। वल्लाहु आलम।

अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद रह. कहते हैं कि यह पूरा का पूरा क़ौल काफ़िरों का ही है। लेकिन सही बात वह है जिसे हमने पहले नक़ल किया जैसा कि सूरः सॉफ़्फ़ात में है कि ये कहेंगे "हाय अफ़सोस हम पर यह जज़ा (बदले) का दिन है, यही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते थे"। एक और आयत में है:

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ........ الخ

जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, गुनाहगार क़समें खा-खाकर कहेंगे कि वे सिर्फ़ एक साअ़त (घड़ी) ही (दुनिया में) रहे हैं। इस तरह वे हमेशा हक़ से फिरे रहे। उस वक़्त ईमान वाले और उलेमा हज़रात फ़रमायेंगे कि तुम ख़ुदा तआ़ला के लिखे हुए के मुताबिक़ क़ियामत के दिन तक रहे, यही क़ियामत का दिन है, लेकिन तुम बिल्कुल बेइल्म हो, तुम तो इसे अनहोनी मानते थे, हालाँकि वह हम पर बिल्कुल आसान है। एक आवाज़ की देर है कि सारी मख़्लूक़ हमारे सामने मौजूद हो जायेगी। जैसे एक और आयत में है कि डाँट के साथ ही सब मैदान में जमा हो जायेंगे। एक और आयत में फ़रमाया कि क़ियामत का मामला तो आँख झपकने की तरह है बल्कि इससे भी ज़्यादा क़रीब है। और जैसे फ़रमायाः

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ.

जिस दिन वह तुम्हें बुलायेगा और तुम उसकी तारीफ़ करते हुए उसे जवाब दोगे और यक़ीन कर लोगे कि तुम बहुत ही कम मुद्दत रहे।

ग़र्ज़ कि हुक्म के साथ ही सब हाज़िर सामने मौजूद, उस दिन किसी का कोई अ़मल बेकार न जायेगा। हर एक को उसके किये हुए आमाल का ही बदला दिया जायेगा।

إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِى شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ۝ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِى ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ۝ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ۝ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ۝

जन्नत वाले बेशक उस दिन अपने मश्ग़लों में ख़ुशदिल होंगे। (55) वे और उनकी बीवियाँ, सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। (56) उनके लिए वहाँ (हर तरह के) मेवे होंगे, और जो कुछ माँगेंगे उनको मिलेगा। (57) उन को मेहरबान रब की तरफ़ से सलाम फ़रमाया जाएगा। (58)

Maktab E Ashraf

जन्नती ख़ुश और प्रसन्न होंगे

जन्नती लोग मैदाने क़ियामत से फ़ारिग़ होकर जन्नतों में बहुत ही सम्मान व इकराम के साथ पहुँचाये जायेंगे और वहाँ की तरह-तरह की नेमतों और राहतों में इस तरह मशग़ूल होंगे कि दूसरी तरफ़ तवज्जोह तक न होगी, न किसी और तरफ़ ख़्याल। ये जहन्नम वालों से बेफ़िक्र होंगे, अपनी लज़्ज़तों और राहतों में इस क़द्र मसरूर होंगे कि हर एक चीज़ से बेख़बर हो जायेंगे। बहुत ही ख़ुश व प्रसन्न और चहकते हुए होंगे। कुँवारी हूरें उन्हें मिली हुई होंगी जिनसे वे लुत्फ़ उठा रहे होंगे, तरह-तरह के राग और रागनियाँ और तरानों से दिल को सुरूर पहुँचा रहे होंगे और वे इनके दिलों को लुभा रही होंगी। उनके साथ ही लुत्फ़ व सुरूर में उनकी बीवियाँ और उनकी हूरें भी शामिल होंगी। जन्नती मेवेदार दरख़्तों के ठंडे और घने सायों में आराम से तख़्तों पर तकियों से लगे बिना किसी ग़म और फ़िक्र के होंगे। ख़ुदा की मेहमान-नवाज़ी से मज़े उठा रहे होंगे, हर क़िस्म के मेवे ख़ूब ज़्यादा उनके पास मौजूद होंगे। और भी जिस चीज़ को जी चाहेगा, जो ख़्वाहिश (इच्छा) होगी वह पूरी की जायेगी।

सुनन इब्ने माजा की किताबुज़्ज़ोहद में और इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- क्या तुममें से कोई उस जन्नत में जाने का ख़्वाहिश-मन्द (इच्छुक) और उसके लिये तैयारियाँ करने वाला और मुस्तैदी ज़ाहिर करने वाला है? जिसमें कोई ख़ौफ़ व ख़तरा नहीं। काबा के रब की क़सम! वह सरासर नूर ही नूर है, उसकी ताज़गियाँ बेहिसाब हैं, उसका सब्ज़ा लह्लहा रहा है, उसके बालाख़ाने मज़बूत बुलन्द और पुख़्ता हैं, उसकी नहरें लबरेज़ और जारी हैं। उसके फल ज़ायक़ेदार, पके हुए और बहुत ज़्यादा हैं। उसमें ख़ूबसूरत नौजवान हूरें हैं, उनके लिबास रेशमी और बहुत ज़्यादा क़ीमती हैं, उसकी नेमतें हमेशा रहने वाली और ला-ज़वाल (ग़ैर-फ़ानी) हैं। वह सलामती का घर है, वह सब्ज़ और ताज़ा फलों का बाग़ है, उसके महल बुलन्द व बाला और सजे-सजाये हैं।

यह सुनकर जितने सहाबा थे सब ने कहा हुज़ूर! हम उसके लिये तैयारियाँ करने वाले और उसके हासिल करने की कोशिश करने वाले हैं। आप सल्ल. ने फ़रमाया- इन्शा-अल्लाह तआ़ला कहो। चुनाँचे उन्होंने कहा इन्शा-अल्लाह। ख़ुदा की तरफ़ से उन पर सलाम ही सलाम है, ख़ुद ख़ुदा की तरफ़ से जन्नत वालों के लिये सलाम है। जैसा कि फ़रमायाः

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ.

उनका तोहफ़ा जिस रोज़ वे ख़ुदा से मिलेंगे सलाम होगा।

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नती अपनी नेमतों में मशगूल होंगे कि ऊपर की जानिब से एक नूर चमकेगा, ये अपना सर उठायेंगे तो अल्लाह तआ़ला के दीदार से मुशर्रफ़ (सम्मानित) होंगे और ख़ुदा उनको देखेगा। किसी नेमत की तरफ़ वे उस वक़्त आँख भी न उठायेंगे, यहाँ तक कि हिजाब (पर्दा और आड़) बीच में आ जायेगा और नूर व बरकत उनके पास बाक़ी रह जायेगी।

यह हदीस इब्ने अबी हातिम में है लेकिन सनद कमज़ोर है। इब्ने माजा में किताबुस्सुन्नत में यह रिवायत मौजूद है। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला जब दोज़ख़ियों और जन्नतियों से फ़ारिग़ होगा तो बादल के साये में मुतवज्जह होगा। फ़रिश्ते उसके साथ होंगे, जन्नतियों को सलाम करेगा और जन्नती जवाब देंगे। क़ुरज़ी रह. फ़रमाते हैं कि यह अल्लाह के फ़रमान 'सलामुन् क़ौलम् मिर्रब्बिर्रहीम' में मौजूद है। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि मुझसे जो चाहो माँगो। ये कहेंगे परवर्दिगार! सब कुछ तो मौजूद है, क्या माँगें? अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ठीक है फिर भी जो जी में आये तलब करो। ये कहेंगे पस तेरी रज़ामन्दी मतलूब है। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा वह तो मैं तुम्हें दे चुका और उसी की बिना पर तुम मेरे इस मेहमान-ख़ाने में आये और मैंने तुम्हें इसका मालिक कर दिया। जन्नती कहेंगे फिर ख़ुदाया हम तुझसे क्या माँगें? तूने तो हमें इतना दे रखा है कि अगर तू हुक्म दे तो हममें से एक शख़्स तमाम इनसानों और जिन्नात की दावत कर सकता है और उन्हें पेट भरकर खिला-पिला और पहना-उढ़ा सकता है, बल्कि उनकी सब ज़रूरतों को पूरा कर सकता है, और फिर भी उसकी मिल्कियत में कोई कमी नहीं आ सकती। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अभी मेरे पास और कुछ है। चुनाँचे फ़रिश्ते उनके पास ख़ुदा की तरफ़ से नये-नये तोहफ़े लायेंगे।

इमाम इब्ने जरीर रह. इस रिवायत को बहुत सी सनदों से लाये हैं, लेकिन यह रिवायत है ग़रीब। वल्लाहु आलम।

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ○ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ○ وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ○ وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ○	और ऐ मुजरिमो! आज (ईमान वालों से) अलग हो जाओ। (59) ऐ आदम की औलाद! क्या मैंने तुमको ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (60) और यह कि मेरी (ही) इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। (61) और वह (शैतान) तुममें एक बड़ी मख़्लूक़ को गुमराह कर चुका (है), सो क्या तुम नहीं समझते थे? (62)

मुजरिम लोगों का मामला

फ़रमाता है कि नेककारों से बदकारों को अलग कर दिया जायेगा, काफ़िरों से कह दिया जायेगा कि मोमिनों से दूर हो जाओ। फिर हम उनमें फ़र्क़ और निशान कर देंगे, उन्हें अलग-अलग कर देंगे। इसी तरह

Maktab E Ashraf

सूरः युनूस में हैः

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ.

उस दिन सब के सब अलग-अलग हो जायेंगे, यानी उनके दो गिरोह बन जायेंगे। सूरः सॉफ़्फ़ात में फ़रमान हैः

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ.

यानी ज़ालिमों को और उन जैसों को और उनके झूठे माबूदों को जिन्हें वे ख़ुदा के सिवा पूजते थे जमा करो और उन्हें जहन्नम का रास्ता दिखाओ।

जन्नतियों पर जिस अन्दाज़ से तरह-तरह की नवाज़िशें हो रही हैं, उसी तरह जहन्नमियों पर तरह-तरह की सख़्तियाँ हो रही होंगी। उनको बतौर डाँट-डपट के कहा जायेगा कि क्या मैंने तुमसे अ़हद नहीं लिया था कि शैतान की न मानना, वह तुम्हारा दुश्मन है। लेकिन इसके बावजूद तुमने मेरी नाफ़रमानी की और उस शैतान की फ़रमाँबरदारी की। ख़ालिक़, मालिक और राज़िक़ मैं और फ़रमाँबरदारी की जाये मेरी बारगाह से धुतकारे हुए की? मैं तो कह चुका था कि एक मेरा ही मानना और सिर्फ़ मुझको ही पूजना और मुझ तक पहुँचने का सीधा क़रीब का और सही रास्ता यही है, लेकिन तुम उल्टे चले। यहाँ भी उल्टे जाओ। इन नेकबख़्तों (यानी ईमान वालों) की और तुम्हारी राह अलग-अलग है। ये जन्नती हैं तुम दोज़ख़ी हो।

"जिबिल्लन" से मुराद बेहिसाब मख़्लूक़ है। शैतान ने तुम में से बहुत ज़्यादा लोगों को बहकाया और सही रास्ते से हटा दिया। तुम में इतनी भी अ़क्ल न थी कि तुम इसका फ़ैसला कर सकते कि रहमान की मानें या शैतान की? ख़ुदा को पूजें या मख़्लूक़ को? इब्ने जरीर में है कि क़ियामत के दिन ख़ुदा के हुक्म से जहन्नम अपनी गर्दन निकालेगी, जिसमें सख़्त अंधेरा होगा और बिल्कुल ज़ाहिर होगी। वह भी कहेगी कि इनसानो! क्या अल्लाह ने तुमसे यह वायदा नहीं लिया था कि तुम शैतान की इबादत न करना? वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। और मेरी इबादत करना यह सीधी राह है। उसने तुम में से अक्सरों को गुमराह कर दिया क्या तुम समझते न थे? ऐ गुनाहगारो! आज तुम अलग हो जाओ। उस वक़्त नेक व बद अलग-अलग हो जायेंगे, हर एक घुटनों के बल गिर पड़ेगा, हर एक को उसके नामा-ए-आमाल की तरफ़ बुलाया जायेगा। आज वही बदला पाओगे जो करके आये हो।

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ○ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ○ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ○ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ	यह जहन्नम है जिसका तुमसे वायदा किया जाया करता था। (63) आज अपने कुफ़्र के बदले में उसमें दाख़िल होओ। (64) आज हम उनके मुँहों पर मोहर लगा देंगे, और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और उनके पाँव गवाही देंगे, जो कुछ ये लोग किया करते थे। (65) और अगर हम चाहते तो (दुनिया ही में) उनकी आँखों को मलियामेट कर देते, फिर ये रास्ते की तरफ़

दौड़ते-फिरते, सो उनको कहाँ नज़र आता। (66) और अगर हम चाहते तो उनकी सूरतें बदल डालते, इस हालत से कि ये जहाँ हैं वहीं रह जाते, जिससे ये लोग न आगे को चल सकते और न पीछे को लौट सकते। (67)	فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ۝

Maktab E Ashraf

एक हैरत-अंगेज़ मामला

जहन्नम भड़कती हुई, शोले मारती हुई और चिल्लाती हुई सामने होगी और काफ़िरों से कहा जायेगा कि यही जहन्नम है जिसका ज़िक्र मेरे रसूल किया करते थे, जिससे वे डराया करते थे और तुम्हें वे बुलाते थे तो अब अपने कुफ़्र का मज़ा चखो, उठो इसमें कूद पड़ो। चुनाँचे एक और आयत में है:

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ..........الخ

जिस दिन ये जहन्नम की तरफ़ धकेले जायेंगे और कहा जायेगा यही वह दोज़ख़ है जिसका तुम इनकार करते रहे। बतलाओ क्या यह जादू है? या तुम अंधे हो गये हो?

क़ियामत के दिन जब ये कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ लोग अपने गुनाहों का इनकार करेंगे और इस पर क़समें खा लेंगे तो अल्लाह तआ़ला उनकी ज़बानों को बन्द कर देगा और उनके बदन के हिस्से सच्ची-सच्ची गवाही देना शुरू कर देंगे। हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल. के पास थे कि आप अचानक हंसे और इस क़द्र हंसे कि मसूढ़े खुल गये। फिर हमसे मालूम करने लगे कि जानते हो मैं क्यों हंसा? हमने कहा अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ही ख़ूब जानते हैं। फ़रमाया जो बन्दा अपने रब से क़ियामत के दिन झगड़ा करेगा उस पर वह कहेगा कि बारी तआ़ला! क्या तूने मुझे ज़ुल्म से बचाया न था? अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा हाँ। तो यह कहेगा कि बस फिर मैं किसी गवाह की गवाही अपने ख़िलाफ़ मन्ज़ूर नहीं करूँगा। पस मेरा अपना बदन तो मेरा है बाक़ी सब मेरे दुश्मन हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अच्छा यूँ ही सही, तू अपना ही गवाह सही, और मेरे बुज़ुर्ग फ़रिश्ते गवाह न सही। चुनाँचे उस वक़्त ज़बान पर मोहर लगा दी जायेगी और बदन के अंगों से फ़रमाया जायेगा बोलो! तुम ख़ुद ही गवाही दो कि तुमसे इसने क्या-क्या काम लिये? वे साफ़-साफ़ खोल-खोलकर सच-सच एक-एक बात बतला देंगे। फिर उसकी ज़बान खोल दी जायेगी तो यह अपने जिस्म के जोड़ों हिस्सों से कहेगा तुम्हारा सत्यानास हो जाये, तुम ही मेरे दुश्मन बन गये? मैं तुम्हारे ही बचाव की कोशिश कर रहा था और तुम्हारे ही फ़ायदे की ख़ातिर हुज्जत-बाज़ी कर रहा था।

(नसाई वग़ैरह)

नसाई शरीफ़ की एक और हदीस में है कि तुम्हें ख़ुदा के सामने बुलाया जायेगा जबकि ज़बान बन्द होगी। सबसे पहले रानों और हथेलियों से सवाल होगा। क़ियामत की एक लम्बी हदीस में है कि फिर तीसरे मौक़े पर उससे कहा जायेगा कि तू क्या है? यह कहेगा तेरा बन्दा हूँ। तुझ पर, तेरे नबी पर, तेरी किताब पर ईमान लाया था। रोज़े नमाज़ ज़कात वग़ैरह का पाबन्द था, और भी बहुत सी नेकियाँ बयान कर जायेगा। उस वक़्त उससे कहा जायेगा कि अच्छा ठहर जा, हम गवाह लाते हैं। यह सोचता ही होगा कि

Maktab E Ashraf

किसे गवाही में पेश किया जायेगा, अचानक इसकी ज़बान बन्द कर दी जायेगी और इसकी रान से कहा जायेगा कि तू गवाही दे, अब रान, हड्डियाँ और गोश्त बोल उठेगा और उस मुनाफ़िक़ के सारे निफ़ाक़ (झूठ) को और तमाम छुपी हुई बातों को खोलकर रख देगा। यह इसलिये होगा कि उसकी हुज्जत बाक़ी न रहे और उसका उज़्र टूट जाये। चूँकि रब उस पर नाराज़ था इसलिये उससे सख़्ती से बाज़पुर्स (पूछगछ) हुई। (अबू दाऊद)

एक दूसरी हदीस में है कि मुँह पर मोहर लगने के बाद सबसे पहले इनसान की बातें रान बोलेगी। हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला मोमिन को बुलाकर उसके गुनाह उसके सामने पेश करके फ़रमायेगा कहो यह ठीक है? यह कहेगा हाँ ख़ुदाया सब दुरुस्त है, बेशक मुझसे ये ख़तायें हुई हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अच्छा हमने सब बख़्श दिये, लेकिन यह गुफ़्तगू इस तरह होगी कि किसी एक को भी इसका बिल्कुल इल्म न होगा। उसका एक गुनाह भी मख़्लूक़ में से किसी पर ज़ाहिर न होगा। अब उसकी नेकियाँ लाई जायेंगी और उन्हें खोल-खोलकर सारी मख़्लूक़ के सामने जता-जता कर रखा जायेगा।

(ऐ ऐबों और गुनाहों के छुपाने वाले! ऐ गुनाहों को बख़्शने वाले तू हम गुनाहगारों की पर्दापोशी कर और हम मुजरिमों से दरगुज़र फ़रमा। ख़ुदाया! उस दिन हमें रुस्वा और ज़लील न कर, अपने दामने रहमत में हमें ढाँप ले। ऐ ज़र्रा नवाज़! तू अपनी बेहिसाब बख़्शिश की मूसलाधार बारिश का एक क़तरा इधर भी बरसा दे और हमारे तमाम गुनाहों को धो डाल। परवर्दिगार! एक नज़रे रहमत इधर भी, मालिकुल-मुल्क हम भी तेरी रहमत की नज़र के मुन्तज़िर हैं। ऐ ग़फ़ुरुर्रहीम ख़ुदा! क्या तेरे दर से भी कोई सवाली ख़ाली झोली लेकर ना-उम्मीद होकर आज तक लौटा है? रहम कर, रहम कर। ऐ मालिक व ख़ालिक़ रहम कर। अपने इन्तिक़ाम से बचा, अपने ग़ुस्से से निजात दे, अपनी रहमतों से नवाज़ दे। अपने अ़ज़ाब से छुटकारा दे। अपनी जन्नत में पहुँचा दे। अपने दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमा। आमीन सुम्म आमीन)

और काफ़िर व मुनाफ़िक़ को बुलाया जायेगा। उसके बुरे आमाल उसके सामने रखे जायेंगे और उससे कहा जायेगा- कहो यह ठीक है? यह साफ़ इनकार कर जायेगा और क़समें खाने लगेगा कि ख़ुदाया! तेरे इन फ़रिश्तों ने झूठी तहरीर लिखी है, मैंने हरगिज़ ये गुनाह नहीं किये। फ़रिश्ता कहेगा अरे यह क्या कह रहा है? क्या फ़ुलाँ-फ़ुलाँ दिन फ़ुलाँ जगह तूने फ़ुलाँ काम नहीं किया? कहेगा ख़ुदाया! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ये बिल्कुल झूठ हैं, मैंने हरगिज़ नहीं किया। अब अल्लाह तआ़ला उसकी ज़बान बन्द कर देगा, ग़ालिबन सबसे पहले उसकी दाहिनी रान उसके ख़िलाफ़ गवाही देगी, यही मज़मून इस आयत में बयान हो रहा है।

फिर फ़रमाता है कि अगर हम चाहते तो उन्हें गुमराह कर देते और फिर कभी हिदायत हासिल न कर सकते। अगर हम चाहते तो उनकी आँखें अंधी कर देते तो ये यूँ ही भटकते फिरते, इधर-उधर रस्ते टटोलते हक़ को न देख सकते, न सही रास्ते पर पहुँच सकते। और अगर हम चाहते तो इन्हें इनके मकानों में ही मस्ख़ कर देते यानी इनकी सूरतें बदल देते, इन्हें हलाक कर देते, इन्हें पत्थर बना देते, इनकी टाँगें तोड़ देते फिर न वे चल सकते यानी आगे को न वे लौट सकते, यानी पीछे को, बल्कि बुत की तरह एक ही जगह बैठे रहते, आगे पीछे न हो सकते।

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۖ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ○ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ۖ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ○ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ○	और हम जिसकी उम्र ज़्यादा कर देते हैं तो उसको तबई हालत में उल्टा कर देते हैं, सो क्या वे लोग नहीं समझते? (68) और हमने आपको शायरी का इल्म नहीं दिया, और वह आपके लिए मुनासिब भी नहीं, वह तो महज़ नसीहत (का मज़मून) और एक आसमानी किताब है जो अहकाम को ज़ाहिर करने वाली है। (69) ताकि ऐसे शख़्स को डराए जो ज़िन्दा हो और ताकि काफ़िरों पर (अज़ाब की) हुज्जत साबित हो जाए। (70)

नुबुव्वत कोई शायरी नहीं

इनसान की जवानी जैसे-जैसे ढलती जाती है, बुढ़ापा, ज़ईफ़ी और कमज़ोरी आती जाती है। जैसे सूरः रूम की आयत में है:

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ.

अल्लाह ही वह है जिसने तुम्हें कमज़ोरी की हालत में पैदा किया फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त अ़ता फ़रमाई। फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा अ़ता कर दिया। वह जो चाहता है पैदा करता है और वह ख़ूब जानने वाला पूरी ताक़त रखने वाला है।

एक और आयत में है कि तुममें से बाज़ बहुत बड़ी उम्र की तरफ़ लौटाये जाते हैं ताकि इल्म के बाद वे बेइल्म हो जायें। पस मतलब आयत से यह है कि दुनिया ज़वाल (ख़ात्मे और पतन) और इन्तिक़ाल (हालत के बदलने) की जगह है, यह पायदार और मुस्तक़िल रहने की जगह नहीं, फिर भी क्या ये लोग अ़क़्ल नहीं रखते कि अपने बचपन, फिर जवानी और फिर बुढ़ापे पर ग़ौर करें और इससे नतीजा निकालें कि इस दुनिया के बाद आख़िरत आने वाली है, और इस ज़िन्दगी के बाद नई ज़िन्दगी में दोबारा पैदा होना है। फिर फ़रमाया न तो हमने अपने पैग़म्बर को शायरी सिखाई, न शायरी उसकी शान के लायक़, न उसे शे'र कहना पसन्द, न शे'र-अश्आ़र की तरफ़ उसकी तबीयत का मैलान। इसका सुबूत आपकी ज़िन्दगी में मिलता है कि किसी का शे'र पढ़ते थे तो भी सही तौर पर अदा नहीं होता था या पूरा याद नहीं होता था।

हज़रत शअ़बी रह. फ़रमाते हैं कि अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलाद का हर मर्द व औ़रत शे'र कहना जानता था मगर रसूलुल्लाह सल्ल. इससे कोसों दूर थे। (इब्ने असाकिर)

एक बार अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर ने ये अश्आ़र पढ़े:

كَفٰى بِالْاِسْلَامِ وَالشَّيْبِ لِلْمَرْءِ نَاهِيًا

इस पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने कहा हुज़ूर! यह इस तरह नहीं बल्कि यूँ है:

كَفٰى الشَّيْبُ وَالْاِسْلَامُ لِلْمَرْءِ نَاهِيًا.

Maktab E Ashraf

फिर हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने ही या हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया- सचमुच आप अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह तआ़ला ने सही फ़रमाया हैः

وَمَاعَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَوَمَايَنْبَغِيْ لَهٗ.

कि न हमने उनको शे'र का इल्म सिखाया है और न यह उनकी शान के मुनासिब है।

(इब्ने अबी हातिम)

दलाईले बैहक़ी में है कि आपने एक मर्तबा अ़ब्बास बिन मरदास सुलमी रज़ि. से फ़रमाया- तुम ही ने तो यह शे'र कहा है?

اَتَجْعَلُ نَهْبِيْ وَنَهْبَ الْعُبَيْدُ بَيْنَ الْاَقْرَعِ وَعُيَيْنَةَ.

उन्होंने कहा हुज़ूर! शे'र दर असल यूँ हैः

بَيْنَ عُيَيْنَةَ وَالْاَقْرَعِ.

आपने फ़रमाया चलो सब बराबर है मतलब तो फ़ौत नहीं होता। आप पर बेशुमार दुरूद व सलाम हों।

अ़ल्लामा सुहैली ने 'रौज़तुल-अन्फ़' में इस तक़दीम व ताख़ीर (मज़मून के आगे पीछे होने) की एक अ़जीब वजह बयान की है। वह कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने 'अक़्रअ़' (लफ़्ज़) को पहले और 'उयैना' को बाद,में इसलिये ज़िक्र किया कि उयैना ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ के बाद मुर्तद हो गया था, जबकि इसके विपरीत अक़्रअ़ कि वह साबित-क़दम रहे थे (यानी दीन इस्लाम पर जमे रहे) वल्लाहु आलम।

मग़ाज़ी-ए-उमवी में है कि बदर के मक़्तूल काफ़िरों के दरमियान गश्त लगाते हुए हुज़ूर सल्ल. की ज़बाने मुबारक से निकला 'नुफ़ल्लिक़ु हाम्मन्...........' आगे कुछ न फ़रमा सके। इस पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने पूरा शे'र पढ़ दियाः

.... مِنْ رِجَالٍ اَعِزَّةٍ عَلَيْنَا وَهُمْ كَانُوْا اَعَقَّ وَاَظْلَمَا

यह किसी अ़रब शायर का शे'र है, हमासा में मौजूद है। मुस्नद अहमद में है कि कभी-कभी रसूले ख़ुदा तरफ़ा का यह बैत पढ़ते थेः

وَيَاْتِيْكَ بِالْاَخْبَارِ مَنْ لَمْ تُزَوِّدِ.

इसका पहला मिसरा (पंक्ति) यह हैः

سَتُبْدِيْ لَكَ الْاَيَّامُ مَاكُنْتَ جَاهِلًا

यानी ज़माना तुझ पर वे बातें ज़ाहिर कर देगा जिनसे तू बेख़बर है और तेरे पास ऐसा शख़्स ख़बरें लायेगा जिसे तूने तोशा (सफ़र का सामान) नहीं दिया।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से सवाल हुआ कि क्या हुज़ूर सल्ल. शे'र पढ़ते थे? आपने जवाब दिया कि सबसे ज़्यादा नफ़रत आपको शे'रों से थी। हाँ कभी-कभी बनू क़ैस का कोई शे'र पढ़ते, लेकिन उसमें चूक करते, आगे पीछे कर दिया करते। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर! यूँ नहीं बल्कि यूँ है, तो आप फ़रमाते न मैं शायर हूँ न शे'र कहना मेरे लिये मुनासिब है। (इब्ने अबी हातिम)

दूसरी रिवायत में शे'र और आगे पीछे का ज़िक्र भी हैः

وَيَاْتِيْكَ بِالْاَخْبَارِ مَنْ لَمْ تُزَوِّدِ

को आपनेः

مَنْ لَمْ تُزَوِّدْ بِالْاَخْبَارِ

पढ़ा था, और बैहक़ी की रिवायत में है कि पूरा शे'र आप सल्ल. ने कभी नहीं पढ़ा, ज़्यादा से ज़्यादा एक पंक्ति पढ़ लेते थे। सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने ख़न्दक़ खोदते हुए हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि. के अश्आ़र पढ़े, सो याद रहे कि आपका यह पढ़ना सहाबा रज़ि. के साथ था। वे अश्आ़र ये हैं:

اَللّٰهُمَّ لَوْلَا اَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا

فَاَنْزِلْ سَكِيْنَةً عَلَيْنَا وَثَبِّتِ الْاَقْدَامَ اِنْ لَاقَيْنَا

اِنَّ الْاُوْلٰى قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا اِذَا اَرَادُوْا فِتْنَةً اَبَيْنَا

हुज़ूर सल्ल. लफ़्ज़ "अबैना" को खींचकर पढ़ते और साथ ही बुलन्द आवाज़ से पढ़ते।

इन शे'रों का तर्जुमा यह है कि ऐ अल्लाह! अगर तू न होता तो हम हिदायत याफ़्ता न होते, न सदक़ा देते और न नमाज़ें पढ़ते। अब तू हम पर सुकून नाज़िल फ़रमा और जब दुश्मनों से लड़ाई छिड़ जाये तो हमें साबित-क़दमी (जमाव और मज़बूती) अ़ता फ़रमा, यही लोग हम पर सरकशी (चढ़ाई और ज़्यादती) करते हैं। हाँ ये जब कभी फ़ितने का इरादा करते हैं तो हम इनकार करते हैं।

इसी तरह साबित है कि हुनैन वाले दिन आपने अपने ख़च्चर को दुश्मनों की तरफ़ बढ़ाते हुए फ़रमायाः

اَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبْ اَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ

कि मैं बेशक नबी हूँ। मैं अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलाद हूँ।

इसके बारे में याद रहे कि इत्तिफ़ाक़िया एक कलाम आपकी ज़बान से निकल गया जो शे'र के अन्दाज़ पर पूरा उतरा, न कि जान-बूझकर आपने शे'र कहा हो। हज़रत जुन्दुब बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल. के साथ एक ग़ार (गुफा) में थे कि आपकी उंगली ज़ख़्मी हो गई, तो आप सल्ल. ने फ़रमायाः

هَلْ اَنْتِ اِلَّا اِصْبَعٌ دَمِيْتِ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَا لَقِيْتِ

यानी तू एक उंगली ही तो है, और तू राहे ख़ुदा में ख़ून से भर गयी है। यह भी इत्तिफ़ाक़िया है, जान-बूझकर नहीं। इसी तरह एक हदीस 'इल्लल्ल-म-म' की तफ़सीर में आगे आयेगी। आपने फ़रमायाः

اِنْ تَغْفِرِ اللّٰهُمَّ تَغْفِرْ جَمًّا وَاَيُّ عَبْدٍ لَّكَ مَا اَلَمَّا

यानी ख़ुदाया तू जब बख़्शे तो हमारे तमाम गुनाह बख़्श दे, वरना यूँ तो तेरा कोई बन्दा नहीं जो छोटी छोटी ख़ताओं से भी पाक हो।

पस यह सब के सब इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि ख़ुदा तआ़ला की तालीम आपको शे'र कहने की न थी, बल्कि रब्बुल-आ़लमीन ने आपको क़ुरआने अ़ज़ीम की तालीम की थी जिसके पास भी बातिल (ग़ैर-हक़) फटक नहीं सकता। क़ुरआने हकीम की यह पाक नज़्म शायरी से मन्ज़िलों दूर थी। इसी तरह 'कहानत' (जिन्नात से मालूम करके आईन्दा की ख़बरें बताने), 'गढ़ लेने' और 'जादू' के कलिमात से जैसा कि कुफ़्फ़ार के मुख़्तलिफ़ गिरोह बोलियाँ बोलते थे। आपकी तो तबीयत इन हरकतों और कारीगरियों से पाक थी, सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।

Maktab E Ashraf

Maktab e Ashraf

अबू दाऊद में है, हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि मेरे नज़दीक ये तीनों बातें बराबर हैं- तिरयाक़ का पीना, गंडे का लटकाना और शे'र बनाना। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि. फ़रमाती हैं कि शे'र कहने से आपको तबई तौर पर नफ़रत थी, दुआ में आपको जामे कलिमात पसन्द आते थे और इसके सिवा छोड़ देते थे। (अहमद) अबू दाऊद में है कि पेट पीप से भर जाना उसके लिये शे'रों से भर लेने से बहुत अच्छा है। (अबू दाऊद) मुस्नद अहमद की एक ग़रीब हदीस में है कि "जिसने इशा की नमाज़ के बाद किसी शे'र का एक मिसरा (पंक्ति) भी बाँधा तो उसकी उस रात की नफ़िल नामक़बूल है" यह याद रहे कि शे'र कहने (यानी शायरी करने) की कई क़िस्में हैं। मुश्रिकों की बुराई में शे'र कहने की शरीअ़त में इजाज़त है, हज़रत हस्सान बिन साबित, हज़रत कअ़ब बिन मालिक, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वग़ैरह जैसे बड़े सहाबा ने कुफ़्फ़ार की निंदा और बुराई में अश्आ़र कहे हैं। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन।

बाज़ अश्आ़र अदब और हिक्मत के लिये होते हैं जैसे कि जाहिलीयत के ज़माने के शायरों के कलाम में ऐसे अश्आ़र पाये जाते हैं। चुनाँचे उमैया बिन सुलत के अश्आ़र के बारे में रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि उसके अश्आ़र तो ईमान लाये हैं लेकिन उसका दिल काफ़िर ही रहा। एक सहाबी ने आपको उमैया की एक सौ बैत सुनाई, हर बैत के बाद आप फ़रमाते और कहो। अबू दाऊद में हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि बाज़ बयान जादू के जैसे होते हैं और बाज़ शे'र सरासर हिक्मत (समझ की बात) वाले हैं।

पस फ़रमान है कि जो कुछ हमने इन्हें सिखाया है वह पूरा का पूरा ज़िक्र व नसीहत, वाज़ेह साफ़ और रोशन क़ुरआन है। जो शख़्स ज़रा सा भी ग़ौर करे उस पर यह खुल जाता है कि रू-ए-ज़मीन पर जितने लोग मौजूद हैं यह उन सब को आगाह कर दे और डरा दे। जैसा कि फ़रमायाः

لِأُنذِرَكُم بِهِ وَمَنۢ بَلَغَ.

ताकि मैं तुम्हें इसके साथ डरा दूँ और जिसे भी यह पहुँच जाये। एक और आयत में हैः

وَمَن يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ.

यानी जमाअ़तों में से जो भी इसे न माने वह दोज़ख़ की मुस्तहिक़ है।

हाँ इस क़ुरआन से और नबी के फ़रमान से असर वही लेता है जो ज़िन्दा-दिल और साफ़-बातिन हो, अ़क़्ल व समझ रखता हो और अ़ज़ाब की बात तो काफ़िरों पर साबित ही है। पस क़ुरआन मोमिनों के लिये रहमत और काफ़िरों के लिये हुज्जत का पूरा होना है।

क्या उन लोगों ने इस पर नज़र नहीं की कि हमने उनके (फ़ायदे के) लिए अपने हाथ की बनाई हुई चीज़ों में से मवेशी पैदा किए, फिर ये लोग उनके मालिक बन रहे हैं। (71) और हमने उन मवेशियों को उनका ताबे बना दिया सो उन में बाज़े तो उनकी सवारियाँ हैं और बाज़ों को वे खाते हैं। (72) और उनमें उन लोगों के और भी नफ़े हैं, और पीने की चीज़ें भी हैं (यानी दूध) सो क्या ये लोग शुक्र नहीं करते? (73)	أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُم مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ٥ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ٥ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ٥

Maktab E Ashraf

क्या वे हमारी इन निशानियों पर ग़ौर नहीं करते

अल्लाह तआ़ला अपने इनाम व एहसान का ज़िक्र फ़रमा रहा है कि उसने ख़ुद ही ये चौपाये (पशु) पैदा किये और इनसान की मिल्कियत में दे दिये। एक छोटा सा बच्चा भी ऊँट की नकेल थाम ले, ऊँट जैसा ताक़तवर और बड़ा जानवर उसके साथ-साथ हो लेता है। सौ ऊँटों की एक क़तार हो, एक बच्चे के हाँकने से सीधी चलती रहती है। इस मातहती के अ़लावा बाज़ पर लम्बे-लम्बे सफ़र आसानी से जल्दी-जल्दी तय हो जाते हैं। ख़ुद सवार होते हैं, सामान लादते हैं, बोझ ढोने के काम आते हैं। और बाज़ के गोश्त खाये जाते हैं। फिर सूफ़, ऊन, बालों और खालों वग़ैरह से फ़ायदा उठाते हैं। दूध पीते हैं और तरह-तरह के फ़ायदे हासिल किये जाते हैं। क्या फिर इनको न चाहिये कि इन नेमतों के अ़ता करने वाले, इन एहसानों के मोहसिन, इन चीज़ों के ख़ालिक़, इनके असली मालिक का शुक्र बजा लायें? सिर्फ़ उसी की इबादत करें, उसको एक जानें और उसके साथ किसी को शरीक न करें।

और उन्होंने ख़ुदा के सिवा और माबूद क़रार दे रखे हैं, इस उम्मीद पर कि उनको मदद मिले। (74) (लेकिन) वे उनकी कुछ मदद कर ही नहीं सकते, और वे उन लोगों के हक़ में एक (मुख़ालिफ़) फ़रीक़ हो जाएँगे जो हाज़िर किए जाएँगे। (75) तो उन लोगों की बातें आपके लिए रंजीदगी का सबब न होना चाहिए, बेशक हम सब जानते हैं जो कुछ ये दिल में रखते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं। (76)	وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ○ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ○ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ○

फिर यह शिर्क

मुश्रिकों के उस बातिल अ़क़ीदे की तरदीद हो रही है जो वे समझते थे कि जिन-जिनकी अल्लाह के अ़लावा ये इबादत करते हैं वे इनकी इमदाद व नुसरत करेंगे। इनकी रोज़ियों में बरकत देंगे और ख़ुदा से तक़र्रुब (निकटता) हासिल होगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि वे इनकी मदद करने से आ़जिज़ हैं, इनकी मदद तो क्या वे ख़ुद अपनी मदद भी नहीं कर सकते, बल्कि ये बुत तो अपने दुश्मन के नुक़सान से भी ख़ुद को नहीं बचा सकते। कोई आये और तोड़-मरोड़कर भी चला जाये तो ये उसका कुछ नहीं कर सकते, बल्कि बोल-चाल पर भी क़ादिर नहीं। इनमें समझ-बूझ नहीं, ये बुत क़ियामत के दिन हिसाब के वक़्त अपने आ़बिदों (पूजने वालों) के सामने लाचारी और बेकसी के साथ मौजूद होंगे ताकि मुश्रिकों की पूरी ज़िल्लत व रुस्वाई हो और इन पर हुज्जत पूरी हो।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि बुत तो इनकी किसी तरह इमदाद नहीं कर सकते, फिर भी ये बेसमझ मुश्रिक लोग उनके सामने इस तरह मौजूद रहते हैं जैसे कोई हाज़िर रहने वाला लश्कर हो। वे न इन्हें कोई नफ़ा पहुँचा सकते हैं न किसी नुक़सान को दूर कर सकते हैं, लेकिन ये हैं कि उनके

Maktab e Ashraf

नाम पर मरे जाते हैं, यहाँ तक कि उनके ख़िलाफ़ आवाज़ सुनना नहीं चाहते और ग़ुस्से से बेक़ाबू हो जाते हैं। ऐ नबी! इन काफ़िरों की बातों से आप रन्जीदा न हों, हम पर इनका ज़ाहिर और बातिन स्पष्ट और खुला है, वक़्त आ रहा है कि गिन-गिनकर हम इन्हें बदले देंगे।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ
فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ○ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا
وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَن يُحْيِي الْعِظَامَ
وَهِيَ رَمِيمٌ ○ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا
أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ○
الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ
نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ○

क्या आदमी को यह मालूम नहीं कि हमने उसको नुत्फ़े से पैदा किया, सो वह खुलेआम एतिराज़ करने लगा। (77) और उसने हमारी शान में एक अ़जीब मज़मून बयान किया और अपनी असल को भूल गया। कहता है कि हड्डियों को (ख़ास तौर पर) जबकि वे बोसीदा हो गई हों, कौन ज़िन्दा कर देगा? (78) आप जवाब दे दीजिए कि उनको वह ज़िन्दा करेगा जिसने पहली बार में उनको पैदा किया है, और वह सब तरह का पैदा करना जानता है। (79) वह ऐसा (क़ादिर) है कि (बाज़) हरे पेड़ से तुम्हारे लिए आग पैदा कर देता है, फिर तुम उससे और आग सुलगा लेते हो। (80)

इनसान अपनी हक़ीक़त पर ग़ौर करे

उबई बिन ख़लफ़ मलऊन एक मर्तबा अपने हाथ में बोसीदा खोखली सड़ी गली हड्डी लेकर आया और उसको अपनी चुटकी में मलते हुए जबकि उसके रेज़े हवा में उड़ रहे थे, हुज़ूर सल्ल. से कहने लगा- "आप कहते हैं कि इन हड्डियों को ख़ुदा ज़िन्दा करेगा?" आपने फ़रमाया हाँ! ख़ुदा तुझे हलाक कर देगा, फिर ज़िन्दा कर देगा, फिर तेरा हश्र जहन्नम की तरफ़ होगा। उस मौक़े पर इस सूरत की आख़िरी आयतें नाज़िल हुईं। एक और रिवायत में है कि यह एतिराज़ करने वाला आ़स बिन वाईल था और इस आयत से लेकर सूरत के ख़त्म तक की आयतें नाज़िल हुईं। एक और रिवायत में है कि यह वाक़िआ़ अ़ब्दुल्लाह बिन उबई से हुआ था। लेकिन यह ग़ौर-तलब है, इसलिये कि यह सूरत मक्की है और अ़ब्दुल्लाह बिन उबई तो मदीने में था। बहरहाल! चाहे उबई के सवाल पर ये आयतें उतरी हों या आ़स के सवाल पर, हैं आ़म। लफ़्ज़ 'इनसान' पर जो 'अलिफ़ लाम' है वह जिन्स का है, जो शख़्स भी दूसरी (यानी आख़िरत की) ज़िन्दगी का मुन्किर हो उसे जवाब है। मतलब यह है कि इन लोगों को चाहिये कि अपनी शुरू की पैदाईश पर ग़ौर करें, जिसने एक हक़ीर व ज़लील क़तरे (यानी वीर्य) से इनसान को पैदा कर दिया, हालाँकि उससे पहले वह कुछ न था, उसकी क़ुदरत पर एतिराज़ के क्या मायने? इस मज़मून को और भी बहुत सी आयतों में बयान फ़रमाया गया है जैसेः

أَلَمْ نَخْلُقكُّم مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ

(सूरः मुर्सलात आयत 20-22)

Maktab E Ashraf

और जैसेः

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ............الخ

(सूरः दहर आयत 2) वग़ैरह। मुस्नद अहमद में है कि एक मर्तबा नबी करीम सल्ल. ने अपनी हथेली पर थूका फिर उस पर उंगली रखकर फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ऐ इब्ने आदम! क्या तू मुझे भी आ़जिज़ कर सकता है? मैंने तुझे इस जैसी चीज़ से पैदा किया। फिर जब ठीक-ठाक दुरुस्त और चुस्त कर दिया और तू ज़रा कस-बल वाला (यानी ताक़तवर) हो गया तो तूने माल जमा करना और मिस्कीनों से रोककर रखना शुरू कर दिया। हाँ जब दम नरख़रे में अटका (यानी मरने लगा) तो कहने लगा अब मैं अपना तमाम माल राहे ख़ुदा में सदक़ा करता हूँ। भला अब सदक़े का वक़्त कहाँ? ग़र्ज़ यह कि नुत्फ़े से पैदा किया हुआ इनसान हुज्जत-बाज़ियाँ करने लगा और अपना दोबारा जी उठना मुहाल जानने लगा। उस ख़ुदा की क़ुदरत से निगाहें हटा लीं जिसने आसमान व ज़मीन और तमाम मख़्लूक़ को पैदा कर दिया। यह अगर ग़ौर करता तो इस अ़ज़ीमुश्शान मख़्लूक़ की पैदाईश के अ़लावा ख़ुद अपनी पैदाईश के भी दोबारा पैदा करने की क़ुदरत का एक अ़ज़ीम निशान पाता। लेकिन इसने तो अ़क़्ल की आँखों पर पत्थर रख लिया।

इसके जवाब में कह दो कि पहली बार में इन हड्डियों को जो अब गली सड़ी हैं, जिसने पैदा किया है वही दोबारा इन्हें पैदा करेगा। जहाँ-जहाँ भी ये हड्डियाँ हों वह ख़ूब जानता है। मुस्नद की हदीस में है कि एक मर्तबा हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. से उक़्बा बिन अ़मर ने कहा कि आप हमें ख़ुद हुज़ूर सल्लम. से सुनी हुई कोई हदीस सुनाईये तो आपने फ़रमाया- हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है कि एक शख़्स पर जब मौत की हालत तारी हुई तो उसने अपने वारिसों को वसीयत की कि जब मैं मर जाऊँ तो बहुत सारी लकड़ियाँ जमा करके मेरी लाश को जलाकर राख कर देना, फिर उसे समुद्र में बहा देना। चुनाँचे उन्होंने यही किया। अल्लाह तआ़ला ने उसकी राख जमा करके उसे दोबारा ज़िन्दा किया तो उससे पूछा कि तूने ऐसा क्यों किया? उसने जवाब दिया कि सिर्फ़ तेरे डर से, अल्लाह तआ़ला ने उसे बख़्श दिया। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने राह चलते चलते यह हदीस बयान फ़रमाई, जिसे मैंने ख़ुद आप सल्ल. की ज़बाने मुबारक से अपने कानों से सुना। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी बहुत से अलफ़ाज़ से रिवायत है।

एक रिवायत में है कि उसने कहा था कि मेरी राख हवा के रुख़ पर उड़ा देना, कुछ तो हवा में कुछ दरिया में बहा देना। समुद्र ने अल्लाह के हुक्म से जो राख उसमें थी उसको जमा कर दिया और इसी तरह हवा ने भी, फिर ख़ुदा के फ़रमान से वह खड़ा कर दिया गया.....। फिर अपनी क़ुदरत दिखाने के लिये और इस बात की दलील क़ायम करने के लिये कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है वह मुर्दों को भी ज़िन्दा कर सकता है, हालत व कैफ़ियत को तब्दील कर सकता है।

फ़रमाया कि तुम ग़ौर करो कि पानी से मैंने दरख़्त उगाये जो सरसब्ज़ और हरे-भरे फल वाले हुए। फिर वे सूख गये और उन लकड़ियों से मैंने आग निकाली, कहाँ वह तरी और ठंडक, कहाँ यह ख़ुश्की और गर्मी? पस मुझे कोई चीज़ करनी दुश्वार नहीं, तर को ख़ुश्क करना ख़ुश्क को तर करना, ज़िन्दा को मुर्दा कर देना और मुर्दे को जिलाना मेरी क़ुदरत में है। यह भी कहा गया है कि इससे मर्ख़ और अ़फ़ार के पेड़ मुराद हैं जो हिजाज (सऊदी के इलाक़े) में होते हैं, उनकी सब्ज़ टहनियों को आपस में रगड़ने से चक़माक़ की तरह आग निकलती है। चुनाँचे अ़रब में एक कहावत मशहूर हैः

Mukhtar E Ashraf

لِكُلِّ شَجَرٍ نَارٌ وَاسْمُهَا الْمَرْخُ وَالْعَفَارُ.

कि हर पेड़ में आग है और उसका नाम मर्ख़ और अ़फ़ार है।

और विज्ञानियों व विचारकों का क़ौल है कि सिवाय अंगूर के दरख़्त के हर दरख़्त में आग है।

اَوَلَيْسَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۭ بَلٰى ۤ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ۝ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ فَسُبْحٰنَ الَّذِىْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَىْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝	और जिसने आसमान और ज़मीन पैदा किए हैं, क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि उन जैसे आदमियों को (दोबारा) पैदा कर दे? ज़रूर क़ादिर है, और वह बड़ा पैदा करने वाला, ख़ूब जानने वाला है। (81) जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो बस उसका मामूल तो यह है कि उस चीज़ को कह देता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। (82) तो उसकी ज़ात पाक है जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा इख़्तियार है, और तुम सबको उसी के पास लौटकर जाना है। (83)

एक सवाल

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमा रहा है कि उसने आसमानों और उनकी सब चीज़ों को अपनी क़ुदरत से पैदा किया, ज़मीन और उसके अन्दर की सब चीज़ों को भी उसी ने बनाया। फिर इतनी बड़ी क़ुदरतों वाला, इनसानों जैसी छोटी मख़्लूक़ को पैदा करने से आ़जिज़ आ जाये! यह तो अ़क़्ल के भी ख़िलाफ़ है। जैसे फ़रमायाः

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ.

यानी आसमानों और ज़मीन का बनाना इनसान के बनाने से बहुत बड़ा और अहम है।

यहाँ भी फ़रमाया कि वह ख़ुदा जिसने आसमान व ज़मीन को पैदा कर दिया, क्या वह इनसानों जैसी कमज़ोर मख़्लूक़ को पैदा करने से आ़जिज़ आ जायेगा? और जब वह क़ादिर है तो यक़ीनन इन्हें मार डालने के बाद फिर इन्हें ज़िन्दा कर देगा। जिसने शुरू में पहली बार में पैदा किया है उस पर इनका दोबारा पैदा करना और लौटा देना बहुत आसान है। जैसे एक और आयत में है:

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ......... الخ

क्या वे नहीं देखते कि जिस ख़ुदा ने ज़मीन व आसमान को बनाया और इनकी पैदाईश से आ़जिज़ न आया न थका, तो क्या वह मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं? बेशक क़ादिर है, बल्कि वह तो हर चीज़ पर क़ादिर है। वही पैदा करने वाला और बनाने वाला है, ईजाद करने वाला और ख़ालिक़ है, साथ ही दाना बीना और रत्ती-रत्ती से वाक़िफ़ है। वह तो जो कुछ करना चाहता है उसका सिर्फ़ हुक्म काफ़ी है।

मुस्नद की हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- ऐ मेरे बन्दो! तुम सब गुनाहगार हो मगर जिसे मैं माफ़ कर दूँ। तुम मुझसे माफ़ी तलब करो, मेरा वायदा है कि माफ़ कर दूँगा। तुम सब फ़क़ीर हो मगर जिसे मैं ग़नी कर दूँ। मैं जव्वाद (एहसान करने वाला) हूँ। मैं माजिद (बड़ाई और मर्तबे वाला) हूँ।

Maktab E Ashraf

मैं वाजिद हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ। मेरा इनाम भी एक कलाम है और मेरा अ़ज़ाब भी एक कलाम है। मैं जिस चीज़ को करना चाहता हूँ कहता हूँ कि हो जा वह हो जाती है। हर बुराई से उसी हय्यु व क़य्यूम की ज़ात पाक है, जो ज़मीन व आसमान का बादशाह है, जिसके हाथ में आसमानों और ज़मीनों की कुन्जियाँ हैं। वह सब का ख़ालिक़ है, वही असल हाकिम है, उसी की तरफ़ क़ियामत के दिन सब लौटाये जायेंगे और वही आ़दिल (इन्साफ़ करने वाला) मुन्अ़िम (इनाम करने और नेमतें देने वाला) है, ख़ुदा इन्हें सज़ा व जज़ा देगा। एक और जगह इरशाद है कि वह ख़ुदा जिसके हाथ में हर चीज़ की मिल्कियत है। एक और आयत में है कि कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का इख़्तियार है? एक और जगह फ़रमान हैः

تَبَارَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ.

यानी पाक है वह ज़ात जिसके हाथ में मुल्क है।

'मुल्क' और 'मलकूत' दोनों के एक ही मायने हैं जैसे 'रहमत' व 'रहमूत' और 'हैबत' व 'हैबूत' और 'जबर' व 'जबरूत'। बाज़ों ने कहा है कि मुल्क से मुराद जिस्मों का आ़लम और मलकूत से मुराद रूहों का आ़लम है, लेकिन सही बात पहली ही है और यही क़ौल जमहूर मुफ़स्सिरीन का है। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक रात मैं तहज्जुद की नमाज़ में अल्लाह तआ़ला के रसूल सल्ल. की इक़्तिदा में खड़ा होगया। आपने सात लम्बी सूरतें (यानी पौने दस पारे) सात रक्अ़तों में पढ़ीं। 'समिअ़ल्लाहु लिमन् हमिदह्' कहकर रुकूअ़ से सर उठाकर आप यह पढ़ते थेः

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ذِى الْمَلَكُوْتِ وَالْجَبَرُوْتِ وَالْكِبْرِيَآءِ وَالْعَظَمَةِ.

अल्हम्दु लिल्लाहि ज़िल्म-लकूति वल्ज-बरूति वल-किब्रिया-इ वल्अ़ज़्मति।

फिर आपका रुकूअ़ क़ियाम के एतिबार से ही लम्बा था और सज्दा भी रुकूअ़ ही की तरह था। मेरी तो यह हालत हो गई थी कि पैर टूटने से लगे। (अबू दाऊद वग़ैरह)

इन्हीं हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. को आपने एक रात की नमाज़ पढ़ते हुए देखा, आपने यह दुआ़ पढ़कर फिर क़िराअत शुरू कीः

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ذِى الْمَلَكُوْتِ وَالْجَبَرُوْتِ وَالْكِبْرِيَآءِ وَالْعَظَمَةِ.

अल्लाहु अक्बरु अल्लाहु अक्बरु अल्लाहु अक्बरु अल्हम्दु लिल्लाहि ज़िल्म-लकूति वल्ज-बरूति वल-किब्रिया-इ वल्अ़ज़्मति।

फिर पूरी सूरः ब-क़रह पढ़कर रुकूअ़ किया और रुकूअ़ में भी क़रीब-क़रीब इतनी ही देर ठहरे रहे और 'सुब्हा-न रब्बियल-अ़ज़ीम' पढ़ते रहे। फिर अपना सर रुकूअ़ से उठाया और तक़रीबन उतनी ही देर खड़े रहे और 'लि-रब्बियल् हम्दु' पढ़ते रहे। फिर सज्दे में गये, वह भी तक़रीबन क़ियाम के बराबर था और सज्दे में 'सुब्हा-न रब्बियल्-अअ़्ला' पढ़ते रहे। फिर सज्दे से सर उठाया। आपकी आ़दते मुबारक थी कि दोनों सज्दों के बीच में इतनी देर बैठे रहते थे जितनी देर सज्दों में लगाते थे और 'रब्बिग़फ़िर् ली, रब्बिग़फ़िर् ली' पढ़ते रहते। चार रक्अ़तें अदा कीं, सूरः ब-क़रह, सूरः आले इमरान, सूरः निसा, सूरः मायदा की तिलावत की।

हज़रत शोबा रह. को शक है कि सूरः मायदा कहा या सूरः अन्आ़म? नसाई वग़ैरह में है, हज़रत औ़फ़ बिन मालिक अश्जई रज़ि. से रिवायत है कि एक रात मैंने हज़रत रसूले करीम सल्ल. के साथ तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी। आपने सूरः ब-क़रह की तिलावत फ़रमाई, हर उस आयत पर जिस पर रहमत का ज़िक्र होता

Maktab E Ashraf

आप ठहरते और अल्लाह तआ़ला से रहमत तलब करते, और हर उस आयत पर जिसमें अ़ज़ाब का ज़िक्र होता आप ठहरते और अल्लाह तआ़ला से पनाह तलब करते। फिर आपने रुकूअ़ किया वह भी क़ियाम (खड़े होने) से कुछ कम न था और रुकूअ़ में यह फ़रमाते थे:

سُبْحَانَ ذِی الْجَبَرُوْتِ وَالْمَلَكُوْتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظْمَةِ.

सुब्हा-न ज़िल-जबरूति वल्म-लकूति वल-किब्रिया-इ वल्अ़ज़्मति।

फिर आपने सज्दा किया, वह भी क़ियाम के क़रीब-क़रीब था (यानी जितनी देर खड़े हुए थे उसी के बराबर) और सज्दे में भी यही पढ़ते रहे। फिर दूसरी रक्अ़त में सूरः आले इमरान पढ़ी। फिर इसी तरह एक एक सूरत एक-एक रक्अ़त में पढ़ते रहे।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः यासीन की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः सॉफ़्फ़ात

सूरः सॉफ़्फ़ात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 182 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

नसाई शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. हमें मुख़्तसर (छोटी) नमाज़ पढ़ने का हुक्म फ़रमाते थे और आप हमें सूरः 'वस्सॉफ़्फ़ात'' से नमाज़ पढ़ाते थे।

क़सम है उन फ़रिश्तों की जो सफ़ बाँधकर खड़े होते हैं। (1) फिर उन फ़रिश्तों की जो बन्दिश करने वाले हैं। (2) फिर उन फ़रिश्तों की जो ज़िक्र की तिलावत करने वाले हैं। (3) कि तुम्हारा माबूद (बरहक़) एक है। (4) वह परवर्दिगार है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच में है। (5) और परवर्दिगार है तुलूअ़ करने के मौक़ों का ''यानी पूरब के उन स्थानों का जहाँ से सूरज निकलता है''।	وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا○ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا○ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا○ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ○ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ○

पूरब व पश्चिम का रब

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि इन तीन क़समों से मुराद फ़रिश्ते हैं, और भी अक्सर हज़रात का यही क़ौल है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि फ़रिश्तों की सफ़ें आसमानों पर हैं। मुस्लिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि हमें सब लोगों पर तीन बातों में फ़ज़ीलत दी गई है- हमारी सफ़ें

फ़रिश्तों की सफ़ों जैसी की गई हैं, हमारे लिये सारी ज़मीन को मस्जिद बना दी गई है और पानी न मिलने के वक़्त ज़मीन की मिट्टी हमारे लिये वुज़ू के क़ायम-मुक़ाम (बराबर) बना दी गई है। मुस्लिम वग़ैरह में है कि एक मर्तबा आपने हमसे फ़रमाया- तुम इस तरह सफ़ें नहीं बाँधते जिस तरह फ़रिश्ते अपने रब के सामने सफ़ बाँधकर खड़े होते हैं? हमने अ़र्ज़ किया वह किस तरह? आपने फ़रमाया अगली सफ़ों को पूरा करते जाते हैं और सफ़ें बिल्कुल मिलाया करते हैं। इमाम सुद्दी रह. वग़ैरह के मुताबिक़ डाँटने वालों से मुराद बादल को डाँटकर अहकाम देकर इधर से उधर ले जाने वाले फ़रिश्ते हैं। रबीअ़ बिन अनस वग़ैरह फ़रमाते हैं कि क़ुरआने करीम जिस चीज़ से रोकता है वे उसी से बहस करते हैं। अल्लाह के ज़िक्र की तिलावत करने वाले फ़रिश्ते वे हैं जो अल्लाह का पैग़ाम बन्दों के पास लाते हैं, जैसे फ़रमान हैः

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا. عُذْرًا اَوْنُذْرًا.

यानी 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) उतारने वाले फ़रिश्तों की क़सम, जो उज़्र को टालने या आगाह करने के लिये होती है। (यानी वही आने से पहले यह उज़्र कर सकते थे कि अगर हमारे पास अल्लाह का पैग़ाम और हिदायत पहुँचती तो हम उसको मान लेते और हिदायत के रास्ते पर आ जाते, अब वह उज़्र भी बाक़ी न रहा)।

इन क़समों के बाद जिस चीज़ पर ये क़समें खाई गई थीं उसका ज़िक्र हो रहा है कि तुम सब का सच्चा और असली माबूद एक अल्लाह तआ़ला ही है। वही आसमान व ज़मीन और इनके दरमियान की तमाम चीज़ों का मालिक व मुख़्तार है। उसी ने आसमान पर सितारे और चाँद को अपने हुक्म के ताबे कर रखा है, जो पूरब में से ज़ाहिर होते हैं और पश्चिम में ग़ुरूब होते हैं। मश्रिक़ों का ज़िक्र करके (यानी तुलू होने और निकलने की जगह को बहुवचन लाकर) इसकी दलालत मौजूद होने की वजह से छोड़ दिया (यानी जब निकलने की जगहें कई सारी हैं तो ज़ाहिर बात है कि छुपने और ग़ुरूब होने की जगहें भी कई होंगी)। दूसरी आयत में ज़िक्र कर भी दिया है। फ़रमायाः

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ.

यानी जाड़े और गर्मियों की तुलू व ग़ुरूब (चाँद-सूरज और सितारों के निकलने और छुपने) की जगहों का रब वही है।

हम ही ने रौनक़ दी है इस तरफ़ वाले आसमान को एक अ़जीब सजावट यानी सितारों के साथ। (6) और हिफ़ाज़त भी की है हर शरीर शैतान से। (7) वे शयातीन ऊपर के आ़लम की तरफ़ कान भी नहीं लगा सकते, और वे हर तरफ़ से मारकर धक्के दिए जाते हैं। (8) और उनके लिए हमेशा का अ़ज़ाब होगा। (9) मगर जो शैतान कुछ ख़बर ले ही भागे, तो एक दहकता हुआ शोला उसके पीछे लग लेता है। (10)	اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ نِ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝

Maktab E Ashraf

आसमान पर चमकते सितारों को देखो

दुनिया वाले आसमान को देखने वाली निगाहों के लिये जो सजाया-संवारा गया है उसका बयान फ़रमाया। इसके सितारों की, इसके सूरज की रोशनी ज़मीन को जगमगा देती है। जैसे एक आयत में है:

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا............الخ

कि हमने दुनिया वाले आसमान को ज़ीनत दी (यानी सजाया) सितारों के साथ, और उन्हें शैतानों के लिये कोड़े मारकर भगाने का ज़रिया बनाया, और हमने उनके लिये आग के जला देने वाले अ़ज़ाब तैयार कर रखे हैं।

एक और आयत में है कि हमने आसमान में बुरुज (सितारों के गृह) बनाये और उन्हें देखने वालों की आँखों में खप जाने (यानी अच्छी लगने) वाली चीज़ बनाई और हर शैताने रजीम से उसे महफ़ूज़ रखा। जो कोई किसी बात को लेकर उड़ना चाहता है एक तेज़ शोला उसकी तरफ़ उतरता है। और हमने आसमान की हिफ़ाज़त की हर सरकश शरीर शैतान से। उसका बस नहीं कि फ़रिश्तों की बातें सुने। वह जब यह करता है तो एक शोला लपकता है और उसे जला जाता है। ये आसमानों तक पहुँच ही नहीं सकते। खुदा की शरीअ़त (क़ानून), तक़दीर के (अल्लाह की तरफ़ से तय किये हुए) मामलात की किसी गुफ़्तगू को वे सुन ही नहीं सकते। इस बारे की हमने सूरः सबा की आयत 23 में हदीसें बयान कर दी हैं।

जिधर से भी ये आसमान पर चढ़ना चाहते हैं वहीं से इन पर आतिश-बाज़ी (शोलों की बरसात) की जाती है। इन्हें पस्त व ज़लील करने, रोकने और न आने के लिये यह सज़ा बयान की है, और आख़िरत के हमेशा वाले अ़ज़ाब अभी बाक़ी हैं जो बड़े दुखदायी और दर्दनाक होंगे। हाँ कभी किसी जिन्न ने कोई कलिमा किसी फ़रिश्ते की ज़बान से सुन लिया और उसे उसने अपने नीचे वाले से कह दिया और उसने अपने नीचे वाले से, वहीं उसके पीछे एक शोला लपकता है तो कभी तो वह इससे पहले कि वह बात दूसरे को पहुँचाये शोला उसे जला डालता है और कभी वह दूसरे के कानों तक पहुँचा देता है। यही वे बातें हैं जो काहिनों के कानों तक शैतानों के ज़रिये पहुँच जाती हैं।

'साक़िब' से मुराद सख़्त तेज़, बहुत ज़्यादा रोशनी वाला है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि शयातीन पहले जाकर आसमानों पर बैठते थे और 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से उतरने वाला पैग़ाम) सुन लेते थे। उस वक़्त उन पर तारे नहीं टूटते थे। ये वहाँ की 'वही' सुनकर ज़मीन पर आकर एक-एक की दस-दस करके काहिनों के कानों में फूँकते थे। जब हुज़ूर सल्ल. को नुबुव्वत मिली, फिर शैतानों का आसमान पर आना-जाना रोक दिया गया। अब ये जाते हैं तो इन पर आग के शोले फेंके जाते हैं और इन्हें जला दिया जाता है। इन्होंने जब इस नई स्थिति (यानी आसमानों पर जाने से रोक दिये जाने) की ख़बर जब इब्लीस मलऊन को दी तो उसने कहा कि किसी अहम नये मामले की वजह से इस क़द्र एहतियात व हिफ़ाज़त की गई है। चुनाँचे ख़बर लाने वालों की जमाअ़तें उसने रू-ए-ज़मीन पर फैला दीं, जो जमाअ़त हिजाज़ (सऊदी इलाक़े) की तरफ़ गई उसने देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल. नख़्ला की दोनों पहाड़ियों के दरमियान नमाज़ अदा कर रहे हैं। उसने जाकर इब्लीस को यह ख़बर दी, उसने कहा बस यही वजह है जो तुम्हारा आसमानों पर जाना बन्द हुआ। इसकी पूरी तहक़ीक़ ख़ुदा ने चाहा तो सूरः जिन्न की आयत 8-10 में आयेगी।

Maktaba E Ashraf

فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۝ وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۝ وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝ اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ۝ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝	तो आप उनसे पूछिए कि ये लोग बनावट में ज़्यादा सख़्त हैं या हमारी पैदा की हुई ये चीज़ें? (क्योंकि) हमने उन लोगों को चिपकती मिट्टी से पैदा किया है। (11) बल्कि आप तो ताज्जुब करते हैं और ये लोग मज़ाक़ उड़ाते हैं। (12) और जब उनको समझाया जाता है तो ये समझते नहीं। (13) और जब कोई मोजिज़ा देखते हैं तो (ख़ुद) उसकी हंसी उड़ाते हैं। (14) और कहते हैं कि यह तो खुला जादू है। (15) (क्योंकि) भला जब हम मर गए और मिट्टी और हड्डियाँ हो गए तो क्या हम (फिर) ज़िन्दा किए जाएँगे? (16) और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी? (17) आप कह दीजिए कि हाँ! (ज़रूर ज़िन्दा होगे) और तुम ज़लील भी होगे। (18) पस क़ियामत तो बस एक ललकार होगी (यानी दूसरी बार का सूर फूँका जाना), सो सब एक दम से देखने-भालने लगेंगे। (19)

इनसे मालूम कीजिये

अल्लाह तआला अपने नबी सल्ल. को हुक्म देता है कि इन क़ियामत के इनकारियो से पूछो तो कि तुम्हारा पैदा करना हम पर मुश्किल है या आसमान व ज़मीन, फ़रिश्ते, जिन्न वग़ैरह का? हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत 'अम् मन् अ़ददना' है। मतलब यह है कि इसका इक़रार तो इन्हें भी है, फिर मरकर जीने का इनकार क्यों कर रहे हैं? चुनाँचे एक दूसरी आयत में है कि इनसानों की पैदाईश से तो बहुत बड़ी और बहुत भारी पैदाईश आसमान व ज़मीन की है, लेकिन अक्सर लोग बेइल्मी बरतते हैं।

आगे इनसान की पैदाईश की कमज़ोरी बयान फ़रमाता है कि यह चिकनी मिट्टी से पैदा किया गया है (यानी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम) जिसमें लैस था और जो हाथों को चिपकती थी। तू चूँकि हक़ीक़त पहुँच गया है इनके इनकार पर ताज्जुब कर रहा है, क्योंकि ख़ुदा की क़ुदरतें तेरे सामने हैं और उसके फ़रमान भी, लेकिन ये तो उसे सुनकर हंसी उड़ाते हैं और जब कभी कोई वाज़ेह दलील सामने आ जाती है तो मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं। कहते हैं कि यह तो जादू है, हम किसी तरह इसे नहीं मानेंगे कि मरकर मिट्टी होकर फिर जी उठना होगा, बल्कि हमारे बाप-दादा भी दूसरी ज़िन्दगी में आ जायेंगे, हम तो इसके क़ायल नहीं।

ऐ नबी! तुम इनसे कह दो कि हाँ तुम यक़ीनन दोबारा पैदा किये जाओगे। तुम हो क्या चीज़? ख़ुदा की क़ुदरत और मशीयत के मातहत हो। उसकी ज़ात वह है कि किसी की उसके सामने कोई हस्ती नहीं। फ़रमाता है:

كُلٌّ اَتَوْهُ دَاخِرِيْنَ.

Maktab E Ashraf

कि हर शख़्स उसके सामने आ़जिज़ी और लाचारी से हाज़िर होने वाला है। एक और आयत में है:

اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دَاخِرِيْنَ.

मेरी इबादत से सरकशी करने वाले ज़लील व ख़्वार होकर जहन्नम में जायेंगे।

फिर अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि जिसे तुम मुश्किल समझते हो वह मुझ पर तो बिल्कुल ही आसान है, सिर्फ़ एक आवाज़ लगते ही हर एक ज़मीन से निकल कर घबराहट के साथ क़ियामत की हौलानाकियों और उसके अहवाल को देखने लगेगा। वल्लाहु आलम

وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ○ هٰذَا يَوْمُ
الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ○ ع ٥
اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا
كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ○ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ
اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ○ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ
مَّسْئُوْلُوْنَ ○ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ○ بَلْ
هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ○

और कहेंगे कि हाय! हमारी कमबख़्ती यह तो वही बदले का दिन मालूम होता है। (20) (इरशाद होगा कि हाँ) यह वही फ़ैसले का दिन है जिसको तुम झुठलाया करते थे। (21)

जमा कर लो ज़ालिमों को, और उनके हम मशरबों "यानी उन जैसे काम करने वालों और उनको साथियों" को और उन माबूदों को जिनकी वे लोग इबादत किया करते थे (22) अल्लाह के अ़लावा। फिर उन सबको दोज़ख़ का रास्ता बतलाओ। (23) और (अच्छा) उनको (ज़रा) ठहराओ, उनसे कुछ पूछा जाएगा। (24) कि अब तुमको क्या हुआ एक-दूसरे की मदद नहीं करते? (25) बल्कि वे सब-के-सब उस दिन सर झुकाए (खड़े) होंगे। (26)

हाय अफ़सोस!

क़ियामत के दिन काफ़िरों का ख़ुद को मलामत करना, पछताना और अफ़सोस व हसरत करना बयान हो रहा है कि वे नादिम (शर्मिन्दा) होकर क़ियामत के दहशतनाक मन्ज़र और घबराहट वाली चीज़ों को देखेंगे कि हाय-हाय यही तो बदले का दिन है, तो मोमिन और फ़रिश्ते बतौर डाँट-डपट और उनकी शर्मिन्दगी बढ़ाने को उनसे कहेंगे "हाँ यही तो वह फ़ैसले का दिन है जिसे तुम हक़ नहीं मानते थे" उस दिन ख़ुदा की तरफ़ से फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि ज़ालिमों को, उनके जोड़ों (यानी उन जैसों) को, उनके भाई-बन्दों को और उन जैसों को एक जगह जमा कर दो। जैसे ज़िना करने वाला ज़ानियों के साथ, सूदख़ोर सूदख़ोरों के साथ, शराबी शराबियों के साथ वग़ैरह। एक क़ौल यह भी है कि ज़ालिमों को और उनकी औ़रतों को, लेकिन यह ग़रीब है। ठीक मतलब यही है कि उन्हीं जैसों को, और उनके साथ ही जिन बुतों को और जिन-जिन को ये अल्लाह का शरीक ठहराये हुए थे उन सब को जमा करो। फिर उन सब को जहन्नम का रास्ता दिखाओ। जैसा कि क़ुरआन पाक के अन्दर अल्लाह का फ़रमान है:

وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ....... الخ

यानी उन्हें इनके मुँह के बल अंधे बहरे गूँगे करके हम जमा करेंगे फिर उनका ठिकाना जहन्नम होगा जिसकी आग जब हल्की हो जायेगी तो हम उसे और भड़का देंगे। उन्हें जहन्नम के पास कुछ देर ठहरा दो ताकि हम उनसे पूछ-गछ कर लें। उनसे हिसाब ले लें।

इब्ने अबी हातिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी को किसी चीज़ की तरफ़ बुलाये (यानी नेकी या बुराई की तरफ़), वह क़ियामत के दिन उसी के साथ खड़ा किया जायेगा। न बेवफ़ाई होगी न जुदाई होगी (यानी उनको मिलना ही होगा) चाहे एक को ही बुलाया हो। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

हज़रत उस्मान बिन ज़ायदा रह. फ़रमाते हैं कि सबसे पहले इनसान से उसके साथियों के बारे में सवाल किया जायेगा, फिर उनसे पूछा जायेगा कि क्यों आज एक दूसरे की मदद नहीं करते? तुम दुनिया में कहते फिरते थे कि हम सब एक साथ हैं और एक दूसरे के मददगार हैं। यह तो कहाँ? बल्कि आज तो ये हथियार डाल चुके, ख़ुदा के फ़रमाँबरदार बन गये। न ख़ुदा के किसी फ़रमान के ख़िलाफ़ करें न कर सकें। न उससे बच सकें न वहाँ से भाग सकें। वल्लाहु आलम।

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ٥ قَالُوْآ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ٥ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ٥ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ٥ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ٥ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ٥ فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ٥ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ٥ اِنَّهُمْ كَانُوْآ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ٥ وَيَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْآ اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ٥ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ٥	और वे एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर जवाब-सवाल (यानी झगड़ा) करने लगेंगे। (27) (चुनाँचे) पैरोकार कहेंगे कि हम पर तुम्हारी आमद बड़े ज़ोर की हुआ करती थी। (28) जिनकी पैरवी की जाती थी वे कहेंगे कि नहीं बल्कि तुम ख़ुद ही ईमान नहीं लाए थे। (29) और हमारा तुम पर कोई ज़ोर तो था ही नहीं, बल्कि तुम ख़ुद ही सरकशी किया करते थे। (30) सो हम सब पर ही हमारे रब की यह (हमेशा की "यानी शुरू में तय हो चुकी है वह") बात साबित हो चुकी थी कि हम सबको मज़ा चखना है। (31) तो हमने तुमको बहकाया, हम ख़ुद भी गुमराह थे। (32) तो वे सब-के-सब उस दिन अज़ाब में (भी) शरीक रहेंगे। (33) (और) हम ऐसे मुजरिमों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। (34) वे लोग ऐसे थे कि जब उनसे कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई माबूदे बरहक़ नहीं, तो तकब्बुर किया करते थे। (35) और कहा करते थे कि क्या हम अपने माबूदों को एक दीवाने शायर की वजह से छोड़ देंगे? (36) बल्कि एक सच्चा दीन लेकर आए हैं, और दूसरे पैग़म्बरों की तस्दीक़ करते हैं। (37)

Maktaba E Ashraf

एक दूसरे को लानत करेंगे

काफ़िर लोग जिस तरह जहन्नम के तबक़ों (दर्जों और वर्गों) में जलते हुए आपस में झगड़े करेंगे इसी तरह क़ियामत के मैदान में वे एक दूसरे पर यह इल्ज़ाम लगायेंगे। कमज़ोर लोग ज़ोरावरों से कहेंगे कि हम तुम्हारे हुक्म के ताबे थे, क्या आज हमें तुम थोड़े बहुत अ़ज़ाब से बचा लोगे? वे कहेंगे हम तो ख़ुद तुम्हारे साथ ही इसी जहन्नम में जल रहे हैं। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के दरमियान फ़ैसले फ़रमा चुका। जैसे एक दूसरी जगह इनकी यह बातचीत इस तरह मन्क़ूल है कि ज़ईफ़ (कमज़ोर और ताबे) लोग मुतकब्बिरों (ताक़तवरों और मुक़्तदाओं) से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान वाले बन जाते। वे जवाब देंगे क्या हमने तुमको हिदायत से रोक दिया? नहीं! बल्कि तुम ख़ुद ही बदकार थे। ये कहेंगे बल्कि यह सज़ा है दिन रात के मक्र (फ़रेब) की जबकि तुम हमें हुक्म करते थे कि हम अल्लाह तआ़ला के साथ कुफ़्र करें और उसके शरीक मुक़र्रर करें। अ़ज़ाब को देखते ही ये सब के सब नादिम व पशेमान होंगे। लेकिन अपनी नदामत (शर्मिन्दगी) को छुपायेंगे।

इन तमाम काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ डाल दिये जायेंगे। हाँ यह यक़ीनी बात है कि हर एक को सिर्फ़ उसकी करनी भरनी पड़ेगी। पस यहाँ भी यही बयान हो रहा है कि वे अपने बड़ों और सरदारों से कहेंगे कि हम तुम्हारी दाहिनी जानिब से आते थे, यानी चूँकि हम कमज़ोर कम-हैसियत थे और तुम्हें हम पर तरजीह (वरीयता हासिल) थी इसलिये तुम हमें दबा-दबाकर हक़ से नाहक़ की तरफ़ फेर देते थे। यह काफ़िरों का मक़ूला होगा जो वे शैतानों से कहेंगे। यह भी कहा गया है कि इनसान यह बात जिन्नात से कहेंगे कि तुम हमें भलाई से रोककर बुराई पर आमादा करते थे। गुनाह को अच्छा और मज़ेदार करके दिखाते थे और नेकी को एक बुरी चीज़ और मुश्किल राह ज़ाहिर करते थे, हक़ से रोकते थे और बातिल पर जमा देते थे। जब कभी नेकी का ख़्याल हमारे दिल में आता था तो तुम किसी न किसी फ़रेब से उससे रोक देते थे। इस्लाम व ईमान की ख़ूबी, नेकी और सआ़दत-मन्दी से तुमने हमें मेहरूम कर दिया। तौहीद से दूर डाल दिया, हम तुम्हें अपना ख़ैरख़्वाह (हमदर्द) समझते रहे, राज़दार बनाये रहे, तुम्हारी बातें मानते रहे और तुम्हें भला आदमी समझते रहे। इसके जवाब में जिन्नात और इनसान जितने भी सरदार, इज़्ज़त वाले और बड़े लोग थे उन कमज़ोरों को जवाब देंगे कि इसमें हमारा तो कोई क़ुसूर नहीं, तुम ख़ुद ही ऐसे थे। तुम्हारे दिल ईमान से भागते थे और कुफ़्र की जानिब दौड़कर जाते थे। हमने तुम्हें जिस चीज़ की तरफ़ बुलाया वह कोई हक़ बात न थी, न उसकी भलाई पर कोई दलील थी, लेकिन चूँकि तुम अपनी तबीयत में बुराई की तरफ़ माईल थे। ख़ुद तुम्हारे दिलों में सरकशी और बड़ाई थी, इसलिये तुमने हमारा कहा मान लिया। अब तो हम सब पर ख़ुदा का क़ौल साबित हो गया कि हम यक़ीनन अ़ज़ाब का मज़ा चखने वाले हैं।

ये बड़े लोग छोटों से, ये मतबू (जिनकी ताबेदारी और पैरवी की जाती थी) लोग अपने ताबेदारों से कहेंगे कि हम तो ख़ुद ही बहके हुए थे, हमने तुम्हें भी अपनी गुमराही की तरफ़ बुलाया, तुम दौड़े हुए आ गये, बतलाओ इसमें हमारा क्या क़ुसूर है? हमने तुम पर कोई ज़ुल्म व जबर तो नहीं किया? क्यों तुमने हमारी बात मान ली? अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है- पस आज के दिन ये सब लोग जहन्नम के अ़ज़ाबों में में शरीक हैं, हर एक अपने-अपने आमाल की सज़ा भुगत रहा है। मुजरिमों के साथ हम इसी तरह किया करते हैं। ये मोमिनों की तरह से ख़ुदा की तौहीद (यानी अल्लाह के एक होने) के क़ायल न थे, बल्कि तौहीद की आवाज़ से तकब्बुर व नफ़रत करते थे। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुझे हुक्म दिया

गया है कि लोगों से जिहाद करूँ जब तक कि वे 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' न कह लें। जो इसे कह ले उसने अपना माल और अपनी जान बचा ली और उसका बातिनी (यानी दिल का) हिसाब अल्लाह के ज़िम्मे है। अल्लाह की किताब में भी यही मज़मून है।

एक और मुतकब्बिर (घमंडी और नाफ़रमान) क़ौम का ज़िक्र है कि वे इस कलिमे से मुँह मोड़ते थे। इब्ने अबी हातिम में अबुल-उला रह. से मन्क़ूल है कि यहूदियों को क़ियामत के दिन लाया जायेगा और उनसे सवाल होगा कि तुम दुनिया में किसकी इबादत करते थे? वे कहेंगे अल्लाह की और उज़ैर की। उनसे कहा जायेगा अच्छा बायीं तरफ़ आओ। फिर ईसाईयों से यही सवाल होगा वे कहेंगे अल्लाह की और मसीह की। तो उनसे भी यही कहा जायेगा। फिर मुश्रिकों को लाया जायेगा और उनसे 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहा जायेगा। वे तकब्बुर करेंगे, तीन मर्तबा ऐसा ही होगा। फिर हुक्म होगा कि इन्हें भी बाईं तरफ़ ले चलो। फ़रिश्ते उन्हें परिन्दों से भी जल्दी पहुँचा देंगे।

फिर मुसलमानों को लाया जायेगा और उनसे पूछा जायेगा कि तुम किसकी इबादत करते रहे? ये कहेंगे सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की। उनसे कहा जायेगा क्या तुम उसे देखकर पहचान सकते हो? ये कहेंगे हाँ। पूछा जायेगा तुम कैसे पहचान लोगे हालाँकि तुमने कभी उसे देखा नहीं। ये जवाब देंगे हाँ यह तो ठीक है हम जानते हैं कि उसके बराबर कोई नहीं। पस अल्लाह तआ़ला अपने आपको उन्हें पहचानवा देगा और उनको निजात देगा।

ये मुश्रिक लोग कलिमा-ए-तौहीद सुनकर जवाब देते थे कि भला हम शायर और मजनूँ के कहने से अपने माबूदों से अलग हो जायेंगे? मानना तो एक तरफ़ उल्टे रसूलुल्लाह सल्ल. को शायर और दीवाना बताते थे। पस अल्लाह तआ़ला इसका रद्द करता है और फ़रमाता है यह तो बिल्कुल सच्चे हैं, सच लेकर आये हैं। सारी शरीअ़त सरासर हक़ है, ख़बरें हों तब और अहकाम हों तब भी। ये रसूलों को भी सच्चा जानता है, उन रसूलों ने जो सिफ़तें और पाकीज़गियाँ आपकी बयान की थीं उनके सही मिस्दाक़ आप ही हैं। ये भी वही अहकाम बयान करते हैं जो पहले अम्बिया ने किये। जैसे एक दूसरी आयत में है:

مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ........ الخ

यानी तुझसे वही कहा जाता है जो तुझसे पहले के नबियों से कहा जाता रहा।

اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ۝ وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ۝ فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝	तुम सबको दर्दनाक अ़ज़ाब चखना पड़ेगा। (38) और तुमको उसी का बदला मिलेगा जो कुछ तुम किया करते थे। (39) हाँ! मगर जो अल्लाह के ख़ास किए हुए बन्दे हैं (40) उनके वास्ते ऐसी ग़िज़ाएँ हैं जिनका हाल (क़ुरआन की दूसरी सूरतों में) मालूम (हो चुका) है। (41) यानी मेवे, और वे लोग बड़ी इज़्ज़त से (42) आराम के बाग़ों में (43) तख़्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे। (44) उनके पास शराब का ऐसा जाम लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा। (45) सफ़ेद होगी, पीने वालों को

بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝ لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ۝ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ۝ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ۝	मज़ेदार मालूम होगी। (46) न उसमें सरदर्द होगा और न उससे अ़क्ल में फ़तूर आएगा। (47) और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी-बड़ी आँखों वाली (हूरें) होंगी। (48) गोया कि वे बैज़े हैं जो छुपे हुए रखे हैं। (49)

दो जमाअ़तें, एक बदबख़्ती के शिकंजे में और दूसरी इनाम व इकराम से सम्मानित

अल्लाह तआ़ला तमाम लोगों से ख़िताब करके फ़रमा रहा है कि तुम दर्दनाक अ़ज़ाब चखने वाले हो और सिर्फ़ उसी का बदला तुमको दिया जायेगा जिसे तुमने किया-धरा है। फिर अपने मुख़्लिस बन्दों को इससे अलग कर लेता है, जैसेः

وَالْعَصْرِ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ. اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا......... الخ

में फ़रमाया कि तमाम इनसान घाटे में हैं मगर ईमान वाले जो नेक-आमाल वाले हों।

और सूरः "वत्तीनि" में फ़रमाया कि हमने इनसान को बहुत अच्छी पैदाईश में पैदा किया, फिर उसे पंजों से भी नीचा कर दिया, मगर जो ईमान लाये और जिन्होंने नेक आमाल किये। और सूरः "मरियम" में फ़रमायाः

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا............. الخ

कि तुममें से हर एक जहन्नम पर वारिद होने (यानी उस पर से गुज़रने) वाला है। यह तो तेरे रब ने फ़ैसला कर दिया है और यह ज़रूरी चीज़ है, लेकिन फिर हम मुत्तक़ियों को निजात देंगे और ज़ालिमों को उसी में गिरता-पड़ता छोड़ देंगे। सूरः "मुद्दस्सिर" में इरशाद हुआ हैः

كُلُّ نَفْسٍ ۢ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ....... الخ

कि हर शख़्स अपने-अपने आमाल में मशग़ूल (फंसा हुआ) है मगर वे जिनके दाहिने हाथ में नामा-ए-आमाल आ चुका है।

इसी तरह यहाँ भी अपने ख़ास बन्दों को इस हुक्म से अलग कर लिया कि वे दर्दनाक अ़ज़ाबों से, हिसाब की सख़्ती से, मुसीबतों से अलग हैं। या यह कि उनकी बुराईयों से अल्लाह तआ़ला ने दरगुज़र फ़रमा लिया है और उनकी नेकियाँ बढ़ा-चढ़ाकर एक की दस-दस गुनी करके, सात-सात सौ गुनी करके बल्कि इससे भी ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर उन्हें दी गई हैं। उनके लिये मुक़र्ररा रोज़ी है और वह क़िस्म-क़िस्म के मेवों से पुर है। वे मख़्दूम हैं (यानी जिनकी ख़िदमत की जायेगी), इज़्ज़त वाले हैं, सम्मानित हैं, हाथों हाथ लिये जाते हैं, बड़ी आव-भगत होती है, बड़ा अदब-लिहाज़ रखा जाता है। ये नेमतों से भरी जन्नतों में हैं। वहाँ के तख़्तों पर इस तरह बैठते हैं कि किसी की पीठ किसी की तरफ़ नहीं।

एक मरफ़ूअ़ ग़रीब हदीस में यह भी है कि इस आयत की तिलावत करके आपने फ़रमाया- हर एक

की निगाहें दूसरे के चेहरे पर पड़ेंगी, आमने-सामने बैठे हुए होंगे। उस पर शराब के दौर पर चल रहे होंगे, जो जारी है, जिसके ख़त्म हो जाने और कम हो जाने का कोई अन्देशा नहीं। जो ज़ाहिर व बातिन में सजी हुई है। ख़ूबियाँ हैं, बुराईयाँ नहीं, रंग की सफ़ेद, मज़े की अच्छी, लज़ीज़, न उसके पीने से सरदर्द हो न बेहोशी व नशा छाये, न मज़ाक़ उड़े।

दुनिया की शराब में यह नुक़सान और ख़राबी है कि पेट में दर्द, बेहोशी और बदहवासी वग़ैरह तारी हो जाती है, लेकिन जन्नत की शराब में इनमें से एक भी बुराई मौजूद नहीं होगी। देखने में अच्छे रंग की, पीने में मज़ेदार, फ़ायदों में आला, सुरूर व मस्ती में उम्दा, लेकिन अ़क्ल व समझ को बेकार कर देने वाली और बदमस्त बना देने वाली नहीं। न बदबू न बद-रंग न क़ाबिले नफ़रत, बल्कि ख़ुशबूदार, अच्छे रंग की, अच्छे ज़ायके की और फ़ायदेमन्द। उसके पीने से पेट में दर्द नहीं होता और उसकी अधिकता नुक़सानदेह नहीं, तबीयत के ख़िलाफ़ नहीं, सर भारी नहीं होता, चक्कर नहीं आते, भारीपन नहीं होता, होश व हवास जाते नहीं रहते, कोई ईज़ा व तकलीफ़ (क़ै, मतली) नहीं होती।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि शराब में चार बुराईयाँ हैं- नशा, सरदर्द, क़ै और पेशाब। मगर जन्नत की शराब इन तमाम बुराईयों से पाक है। उनके पास नीची निगाहों वाली, शर्मीली नज़रों वाली, पाक-दामन आबरू वाली हूरें हैं, जिनकी निगाह अपने शौहर के चेहरे के सिवा कभी किसी के चेहरे पर नहीं पड़ती और न पड़ेगी। बड़ी-बड़ी मोटी रसीली आँखें हैं। ज़ाहिरी हुस्न के साथ बातिनी ख़ूबियाँ दोनों चीज़ें उनमें मौजूद हैं। जिस तरह हज़रत ज़ुलैख़ा ने हज़रत युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम में दोनों ख़ूबियाँ देखीं, औ़रतों ने जब उन्हें ताने देने शुरू किये तो एक दिन सब को बुलाकर बैठा लिया और हज़रत युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम का पूरी तरह बनाव-सिंगार कराकर बुलाया। तमाम औ़रतों की निगाहें उनके जमाल (ख़ूबसूरती) को देखकर चुंधिया गईं और बेसाख़्ता उनके मुँह से निकल गया कि यह तो फ़रिश्ता है। ज़ुलैख़ा ने कहा यही तो वह शख़्स है जिसके बारे में तुम मुझे मलामत कर रही थीं, वल्लाह मैंने इसको हर तरह अपनी तरफ़ माईल करना चाहा लेकिन यह पाकदामन ही रहा। यह ज़ाहिरी ख़ूबसूरती के साथ बातिन की पाकीज़गी भी रखता है। बड़ा पाकबाज़, अमीन, पारसा, मुत्तक़ी और परहेज़गार है।

इसी तरह हूरे हैं, ज़ाहिरी हुस्न व ख़ूबसूरती के साथ ही बातिनी ख़ूबी भी अपने अन्दर रखती हैं। फिर उनका मज़ीद हुस्न बयान हो रहा है कि उनकी गोरी-गोरी पिंडलियाँ और रंग ऐसा चमकदार, दिलकश और देखने के क़ाबिल है कि गोया सुरक्षित मोती, जिस तक किसी का हाथ न पहुँचा हो। जो सीप से न निकला हो। जिसे ज़माने की हवा न लगी हो। जो अपनी आब रखने में बेमिस्ल हो। ऐसे ही उनकी अछूती पिंडलियाँ हैं। यह भी कहा गया है कि गोया वे अण्डे की तरह हैं, अण्डे के ऊपर छिलके के नीचे नाज़ुक छिलके जैसे उनके बदन हैं।

एक हदीस में हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के सवाल पर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- "हूरे-ऐन" से मुराद बहुत बड़ी आँखों वाली सियाह पलकों वाली हूरें हैं। फिर पूछा "बैज़े-मकनून" से क्या मुराद है? फ़रमाया अण्डे के अन्दर की सफ़ेद झिल्ली। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूले ख़ुदा सल्ल. फ़रमाते हैं- जब लोग क़ब्रों से उठाये जायेंगे तो सबसे पहले मैं खड़ा किया जाऊँगा और जबकि वे अल्लाह की जनाब में पेश होंगे तो मैं उनका ख़तीब बनूँगा, और जब वे ग़मगीन हो रहे होंगे तो मैं उन्हें ख़ुशख़बरियाँ सुनाने वाला होऊँगा और उनका सिफ़ारिशी बनूँगा जबकि ये ठहरे हुए होंगे। हम्द का झण्डा उस दिन मेरे हाथ में होगा। हज़रत आदम की औलाद में सबसे ज़्यादा अल्लाह के यहाँ सम्मान व इज़्ज़त वाला मैं हूँ। यह मैं बतौर फ़ख़्र

Maktab E Ashraf

के नहीं कह रहा। मेरे आगे पीछे कियामत के दिन एक हज़ार ख़ादिम घूम रहे होंगे जो छुपे हुए अण्डों और नादिर मोतियों की तरह होंगे। वल्लाहु आलम।

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَ لُوْنَ ○
قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّىْ كَانَ لِىْ قَرِيْنٌ ○
يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ○ ءَاِذَا
مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَ اِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ○
قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ○ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِىْ
سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ○ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ
لَتُرْدِيْنِ ○ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّىْ لَكُنْتُ مِنَ
الْمُحْضَرِيْنَ ○ اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ○ اِلَّا
مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ○ اِنَّ
هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○ لِمِثْلِ هٰذَا
فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ○

फिर एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बातचीत करेंगे। (50) उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि (दुनिया में) मेरा एक मिलने वाला था। (51) वह कहा करता था कि क्या तू मरने के बाद ज़िन्दा होने का यक़ीन रखने वालों में से है? (52) क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम जज़ा और सज़ा दिए जाएँगे? (53) इरशाद होगा कि क्या तुम झाँककर (उसको) देखना चाहते हो? (54) सो वह शख़्स झाँकेगा तो उसको जहन्नम के बीच में देखेगा। (55) कहेगा कि ख़ुदा की क़सम! तू तो मुझे तबाह ही करने को था। (56) और अगर मेरे रब का (मुझ पर) फ़ज़्ल न होता तो मैं भी पकड़े गए लोगों में होता। (57) क्या हम अब नहीं मरेंगे (58) पहली बार के मर चुकने के अ़लावा। और न हमको अ़ज़ाब होगा। (59) यह बेशक बड़ी कामयाबी है। (60) ऐसी ही कामयाबी के लिए अ़मल करने वालों को अ़मल करना चाहिए। (61)

एक अ़जीब मन्ज़र

जब जन्नती लोग मज़े उड़ाते हुए बेफ़िक्री और इत्मीनान के साथ जन्नत के ऊँचे-ऊँचे बालाख़ानों में ऐश व मस्ती के साथ आपस में मिल-जुलकर तख़्तों पर तकिये लगाये बैठे होंगे, हज़ारों परी जैसे ख़ूबसूरत ख़ादिम सलीक़े के साथ उनकी ख़िदमत पर मामूर होंगे, हुक्म अहकाम दे रहे होंगे, क़िस्म-क़िस्म के खाने पीने पहनने ओढ़ने और तरह-तरह की लज़्ज़तों में मसरूफ़ होंगे। शराबे तहूर का दौर चल रहा होगा। वहाँ बातों ही बातों में यह ज़िक्र निकल आयेगा कि दुनिया में क्या-क्या हाल गुज़रे, कैसे-कैसे दिन कटे? इस पर एक शख़्स कहेगा मेरी सुनो! मेरा शैतान एक मुश्रिक साथी था जो मुझसे अक्सर कहा करता था कि ताज्जुब है तू इस बात को मानता है कि जब हम मरकर मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो जायेंगे, हम खोखली, बोसीदा, सड़ी-गली हड्डी हो जायेंगे, उसके बाद भी हम हिसाब किताब, जज़ा सज़ा के लिये उठाये जायेंगे? मुझे वह शख़्स जन्नत में तो नज़र नहीं पड़ता, कुछ अ़जब नहीं अगर वह जहन्नम में गया हो। आओ ज़रा झाँककर देख लें कि जहन्नम में उसकी क्या दुर्गत हो रही है। अब झाँकते हैं कि वह शख़्स सर से पैर तक जल रहा है, ख़ुद वह आग बन रहा है, जहन्नम के बीच में खड़ा है, बेबसी के साथ फुंक रहा है और एक

उसे ही क्या देखेगा बल्कि उसको नज़र आयेगा कि तमाम बड़े-बड़े लोगों से जहन्नम भरी हुई है।

हज़रत कअ़बे अहबार रज़ि. फ़रमाते हैं कि जन्नत से जन्नती लोग जब भी किसी जहन्नमी को देखना चाहें तो देख सकते हैं। वे अपने दुश्मनों को जलते भुनते देखकर ख़ुश होकर अल्लाह का शुक्र करते हैं। जन्नती उसे देखते ही कहेगा- तूने तो वह फंदा डाला था कि मुझे तबाह ही कर डालता, लेकिन अल्लाह का शुक्र है कि उसने मुझे तेरे पंजे से छुड़ा दिया। अगर अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल व करम मेरे शामिले हाल न होता तो बड़ी बुरी बनती और मैं भी तेरे साथ खिंचा-खिंचा यहीं जहन्नम में आ जाता और जलता रहता। अल्लाह का शुक्र है कि उसने तेरे बातें बनाने और ज़ोरदार तरीक़े से दूसरों के सामने अपनी बात रखने से मुझे आ़फ़ियत में रखा। तूने तो अपना जाल डालने में कोई कसर न उठा रखी थी।

अब मोमिन एक बात और कहता है जिसमें उसकी अपनी तस्कीन और कामयाबी की ख़बर है, कि वह पहली मौत मर चुका, अब आख़िरत के जहान में है, न यहाँ उस पर मौत है न ख़ौफ़, न अ़ज़ाब है न वबाल और यही बेहतरीन कामयाबी और हमेशा की फ़लाह है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का फ़रमान है कि जन्नतियों से कहा जायेगा कि अपने आमाल के बदले में ख़ूब मज़े से खाओ पियो। इसमें इशारा है इस बात की तरफ़ कि जन्नती जन्नत में मरेंगे नहीं, तो वे यह सुनकर सवाल करेंगे क्या अब हमें मौत नहीं आयेगी? किसी वक़्त अ़ज़ाब तो नहीं होगा? जवाब मिलेगा नहीं! हरगिज़ नहीं। चूँकि उसे खटका था कि मौत आकर ये लज़्ज़तें फ़ौत न कर दे, जब यह अन्देशा जाता रहा तो वे सुकून का साँस लेकर कहेंगे- शुक्र है, यह तो बड़ी कामयाबी है।

इसके बाद फ़रमाया कि ऐसी ही जज़ा (बदले) और इनाम के लिये आ़मिलों (अ़मल करने वालों) को अ़मल करना चाहिये। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि यह जन्नत वालों का मक़ूला है। इमाम इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि यह अल्लाह का फ़रमान है। मतलब यह है कि इन जैसी नेमतों और रहमतों को हासिल करने के लिये लोगों को दुनिया में पूरी रग़बत (तवज्जोह और दिलचस्पी) के साथ अ़मल करना चाहिये ताकि अन्जाम कार उन नेमतों को हासिल कर सकें। इसी आयत के मज़मून से मिलता-जुलता एक क़िस्सा है उसे भी सुन लीजिये।

दो शख़्स आपस में शरीक (साझी) थे। उनके पास आठ हज़ार अशरफ़ियाँ जमा हो गईं। एक चूँकि पट्टे ख़ुरमे से वाक़िफ़ था और दूसरा नावाक़िफ़ था इसलिये उस वाक़िफ़ कार ने नावाक़िफ़ से कहा अब हमारा निबाह मुश्किल है, आप अपना हक़ लेकर अलग हो जाईये, आप काम-काज से नावाक़िफ़ हैं। चुनाँचे दोनों ने अपने-अपने हिस्से अलग-अलग कर लिये और जुदा-जुदा हो गये। फिर उस ख़ुरमे वाले ने बादशाह के मर जाने के बाद उसका शाही महल एक हज़ार दीनार में ख़रीदा और अपने साथी को बुलाकर उसे दिखाया और कहा बतलाओ मैंने कैसी चीज़ ख़रीदी? उसने बड़ी तारीफ़ की और वहाँ से बाहर चला। अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की और कहा ख़ुदाया! इस मेरे साथी ने तो एक हज़ार दीनार का दुनियावी महल ख़रीद लिया है और मैं तुझसे जन्नत का महल चाहता हूँ। मैं तेरे नाम से तेरे मिस्कीन बन्दों पर एक हज़ार अशरफ़ी ख़र्च करता हूँ। चुनाँचे उसने एक हज़ार दीनार अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ख़र्च कर दिये। फिर उस दुनियादार शख़्स ने एक ज़माने के बाद एक हज़ार दीनार ख़र्च करके अपना निकाह किया। दावत में अपने इस पुराने शरीक को भी बुलाया और इससे ज़िक्र किया कि मैंने एक हज़ार दीनार ख़र्च करके एक औरत से शादी की है। इसने इसकी भी तारीफ़ की। बाहर आकर अल्लाह तआ़ला की राह में एक हज़ार दीनार ख़र्च दिये और अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ की कि ऐ बारी तआ़ला! मेरे साथी ने तो इतनी ही रक़म

ख़र्च करके यहाँ एक औरत हासिल की है और मैं इस रक़म से हूरे-ऐन का तालिब हूँ और फिर वह रक़म राहे खुदा में सदक़ा कर दी। फिर कुछ मुद्दत के बाद उस दुनियादार ने इसको बुलाकर कहा कि दो हज़ार के दो बाग़ मैंने ख़रीदे हैं देख लो कैसे हैं? इसने देखकर बहुत तारीफ़ की और बाहर आकर अपनी आ़दत के मुताबिक़ अल्लाह की बारगाह में अ़र्ज़ की कि ख़ुदाया! मेरे साथी ने दो हज़ार के दो बाग़ ख़रीदे हैं, मैं तुझसे जन्नत के दो बाग़ चाहता हूँ और यह दो हज़ार दीनार तेरे नाम पर सदक़ा हैं। चुनाँचे उस रक़म को मुस्तहिक़ों में तक़सीम कर दिया।

फिर जब फ़रिश्ता उन दोनों को फ़ौत करके (यानी मौत के बाद) ले गया तो सदक़ा करने वाले को जन्नत के महल में पहुँचाया गया, जहाँ पर एक बेहतरीन हसीन औ़रत भी उसे मिली और उसे दो बाग़ भी दिये गये और वे नेमतें भी जिन्हें सिवाय ख़ुदा के और कोई नहीं जानता। तो उसे उस वक़्त अपना वह साथी याद आ गया। फ़रिश्ते ने बतलाया कि वह तो जहन्नम में है, तुम अगर चाहो तो झाँक कर उसे देख सकते हो। उसने जब उसे जहन्नम के अन्दर जलता हुआ देखा तो उससे कहा कि बात कुछ दूर न थी कि तू मुझे भी जाल में फंसा देता यह तो रब की मेहरबानी हुई कि मैं बच गया।

एक और रिवायत में है कि तीन-तीन हज़ार दीनार थे। एक काफ़िर था और एक मोमिन था। जब यह मोमिन अपनी तमाम रक़म अल्लाह की राह में ख़र्च कर चुका तो टोकरी सर पर रखकर कुदाली फावड़ा लेकर मज़दूरी के लिये चला, उसे एक शख़्स मिला और कहा अगर तू मेरे जानवरों की देखभाल करे और गोबर उठाये तो मैं तुझे खाने पीने को दूँगा। उसने मन्ज़ूर कर लिया और काम शुरू कर दिया, लेकिन वह शख़्स बड़ा बेरहम और बदगुमान था। जहाँ उसने किसी जानवर को बीमार कमज़ोर देखा तो इस मिस्कीन मुलाज़िम की गर्दन तोड़ता, ख़ूब मारता पीटता और कहता कि इसका दाना तू चुरा लेता होगा। उस मुसलमान से यह बेजा सख़्ती बरदाश्त न की गई तो एक दिन उसने अपने दिल में ख़्याल किया कि मैं अपने काफ़िर साझी के यहाँ चला जाऊँ, उसकी खेती है, बाग़ात हैं, मैं वहाँ काम-काज करूँगा और वह मुझे रोटी का टुकड़ा दे दिया करेगा और मुझे क्या लेना देना है? वहाँ जो पहुँचा तो शाही ठाठ देखकर हैरान रह गया। एक बहुत ऊँचा महल है, दरबान और पहरेदार ड्यूटी पर और चौकीदार ग़ुलाम और बाँदियाँ सब मौजूद हैं। यह थोड़ा झिझका और दरबानों ने इसे रोका। इसने बहुत कहा कि तुम अपने मालिक से मेरा ज़िक्र तो कर दो, उन्होंने कहा "अब वक़्त नहीं" तुम एक कोने में पड़े रहो, सुबह जब वह निकलेंगे तो ख़ुद सलाम कर लेना। अगर तुम सच्चे हो तो वह तुम्हें पहचान लेंगे वरना फिर हमारे हाथों तुम्हारी पूरी मरम्मत हो जायेगी।

इस मिस्कीन को यही करना पड़ा, जो कम्बल का कपड़ा जिस्म से लपेटे हुए था उसी को इसने अपना ओढ़ना बिछौना बनाया और एक कोने में दुबक कर पड़ गया। सुबह के वक़्त उसके रास्ते पर जा खड़ा हुआ। जब वह निकला और इस पर निगाह पड़ी तो ताज्जुब से पूछा कि "मियाँ अब क्या हालत है माल क्या हुआ?" इसने कहा कुछ न पूछो! इस वक़्त तो मेरा काम जो है उसे पूरा कर दो। यानी मुझे मौक़ा दो कि मैं तुम्हारी खेती-बाड़ी का काम दूसरे और नौकरों की तरह अन्जाम दूँ और आप मुझे सिर्फ़ खाना दे दिया कीजिये। और जब यह कम्बल बोसीदा होकर फट जाये तो एक कम्बल और ख़रीद कर दे देना। उसने कहा नहीं-नहीं! मैं इससे बेहतर सुलूक तुम्हारे साथ करने के लिये तैयार हूँ लेकिन पहले तुम यह बताओ कि उस रक़म को तुमने क्या किया? जवाब दिया कि "मैंने वह रक़म एक शख़्स को क़र्ज़ दी है" उसने सवाल किया किसे? कहा ऐसे को जो रक़म लेकर देने से इनकार न करे" उसने कहा वह कौन है? इसने जवाब

दिया वह अल्लाह तआ़ला है जो मेरा और तेरा रब है" यह सुनते ही उसने इस मुसलमान से हाथ छुड़ा लिया और कहा अहमक़ हुआ है, कहीं यह भी हो सकता है कि हम मरकर जब मिट्टी हो जायें तो फिर दोबारा ज़िन्दा हो सकें? और अल्लाह हमें बदले दे? जा! जब तू ऐसा ही बोदा और ऐसे अ़क़ीदों वाला है तो मुझे तुझसे कोई सरोकार नहीं"।

पस वह काफ़िर मज़े उड़ाता रहा और यह मोमिन सख़्ती से दिन गुज़ारता रहा। यहाँ तक कि दोनों को मौत आ गई। मुसलमान को जन्नत में जो-जो नेमतें और रहमतें मिलीं वे अन्दाज़ा व शुमारा से ज़्यादा थीं। उसने देखा कि जहाँ तक नज़र जाती है वहाँ तक बुलन्द, सारी दुनिया से ज़्यादा तो ज़मीन है और बेशुमार दरख़्त और बाग़ात हैं और जगह-जगह नहरें और चश्मे हैं। पूछा ये सब किसका है? जवाब मिला कि ये सब आपका है। कहा सुब्हानल्लाह! यह तो अल्लाह तआ़ला की बड़ी मेहरबानी है।

अब जो आगे बढ़ा तो इस क़द्र बाँदी और ग़ुलाम देखे कि गिनती नहीं हो सकती, पूछा ये किसके हैं? कहा गया कि सब आपके हैं। उसे और ज़्यादा ताज्जुब और ख़ुशी हुई। फिर जो आगे बढ़ता है तो सुर्ख़ याक़ूत के महल नज़र आते हैं। एक मोती का महल और हर-हर महल में कई-कई हूरें, साथ ही इत्तिला हुई कि ये सब कुछ भी आप ही का है। फिर तो उसकी बाँछें खिल गईं। कहने लगा कि ख़ुदा जाने वह काफ़िर कहाँ होगा? ख़ुदा उसे दिखायेगा कि वह जहन्नम में जल रहा है। अब उनमें दो बातें होंगी जिनका ज़िक्र यहाँ हुआ है। पस मोमिन पर दुनिया में जो बलायें (मुसीबतें और परेशानियाँ) आई थीं उन्हें वह याद करेगा तो मौत से ज़्यादा भारी बला उसे कोई नज़र न आयेगी।

أَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ○ إِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِينَ ○ إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ○ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيٰطِينِ ○ فَإِنَّهُمْ لَاٰكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ○ ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ○ ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ○ إِنَّهُمْ أَلْفَوْا اٰبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ○ فَهُمْ عَلٰى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُونَ ○	भला यह दावत बेहतर है या ज़क़्क़ूम का दरख़्त। (62) हमने उस दरख़्त को ज़ालिमों के लिए इम्तिहान का ज़रिया बनाया है। (63) वह एक दरख़्त है जो दोज़ख़ की गहराई में से निकलता है। (64) उसके फल ऐसे हैं जैसे साँप के फन। (65) तो वे लोग उसमें से खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे। (66) फिर उनको खौलता हुआ पानी (पीप में) मिलाकर दिया जाएगा। (67) फिर उनका आख़िरी ठिकाना दोज़ख़ ही की तरफ़ होगा। (68) (क्योंकि) उन्होंने बड़ों को गुमराही की हालत में पाया था। (69) फिर ये भी उन्हीं के क़दम-ब-क़दम "यानी उन्हीं के पीछे-पीछे" तेज़ी के साथ चलते थे। (70)

ज़क़्क़ूम का पेड़

जन्नत का ज़िक्र फ़रमाकर इरशाद फ़रमाता है कि अब लोग ख़ुद फ़ैसला कर लें कि वह जगह और वे

नेमतें बेहतर हैं? या ज़क़्क़ूम का पेड़ जो जहन्नमियों का खाना है। मुम्किन है कि इससे मुराद ख़ास एक ही पेड़ हो और वह तमाम जहन्नम में फैला हुआ हो, जैसे तूबा का एक दरख़्त है जो जन्नत के एक-एक महल में पहुँचा हुआ है। और मुम्किन है कि मुराद ज़क़्क़ूम के दरख़्त की जिन्स (पूरी एक प्रजाति और नस्ल) हो, इसकी ताईद इस आयत (सूरः वाक़िआ़ आयत 51) से भी होती है:

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ. الخ

यानी दोज़ख़ वालों का ज़क़्क़ूम के पेड़ से खाना होगा। (सूरः वाक़िआ़ आयत 51-52)

हमने उसे ज़ालिमों के लिये फ़ितना (एक आज़माईश) बनाया है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि ज़क़्क़ूम के पेड़ का ज़िक्र गुमराहों के लिये फ़ितना हो गया, वे कहने लगे लो और सुनो! आग में और दरख़्त? आग तो दरख़्त को जलाने वाली है, यह नबी कहते हैं कि जहन्नम में दरख़्त उगेगा। तो ख़ुदा ने फ़रमाया- हाँ यह दरख़्त आग ही से पैदा होगा और इसकी ग़िज़ा भी आग ही होगी। अबू जहल मलऊन इसी पर हंसी उड़ाता था और कहता था कि मैं तो ख़ूब मज़े से खजूर और मक्खन खाऊँगा, इसी का नाम ज़क़्क़ूम है। ग़र्ज़ यह भी एक इम्तिहान है नेक लोग तो इससे डर गये और बुरों ने इसका मज़ाक़ उड़ाया। जैसे फ़रमान है:

وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِىْٓ اَرَيْنٰكَ........ الخ

जो हमने तुझे दिखाया था वह सिर्फ़ इसलिये ही कि लोगों की आज़माईश हो जाये और इसलिये इस नामुबारक दरख़्त (पेड़) का ज़िक्र भी किया। हम तो इन्हें धमका रहे हैं मगर ये नाफ़रमानी में बढ़ते ही जा रहे हैं। उस दरख़्त की जड़ जहन्नम में है, उसके पत्ते ख़ोशे शाख़ें भयानक डरावनी, लम्बी चौड़ी, दूर-दूर तक शैतानों के सरों की तरह फैली हुई हैं। गोया शैतान को भी किसी ने देखा नहीं, लेकिन उसका नाम सुनते ही उसकी बदसूरती और बुराई का मन्ज़र सामने आ जाता है। यही हाल उस दरख़्त का है कि देखने और चखने में ज़ाहिर और बातिन में बुरी चीज़ है। यह भी कहा गया है कि साँपों की एक क़िस्म है जो बदतरीन भयानक और ख़ौफ़नाक शक्ल के होते हैं। और एक क़ौल यह भी है कि जिन्नात की एक क़िस्म है जो बहुत बुरी तरह फैल जाती है। लेकिन ये दोनों एहतिमाल (गुमान और रायें) दुरुस्त नहीं। ठीक बात वही है जिसे हमने पहले ज़िक्र किया। इसी बुरी शक्ल वाले, बदबूदार, बद-मज़ा, थोर को उन्हें जबरन खाना पड़ेगा और ठूँस-ठूँसकर उन्हें खिलाया जायेगा कि यह ख़ुद एक ज़बरदस्त अ़ज़ाब है। एक और आयत में है:

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ........ الخ

इनकी ख़ुराक वहाँ सिर्फ़ काँटोंदार थोर होगा जो इन्हें न मोटा करेगा न भूख दूर कर सकेगा।

हुज़ूर सल्ल. ने एक बार इस आयतः

اِتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهٖ.

'अल्लाह से डरो, उससे डरने का हक़' (सूरः आले इमरान आयत 102) की तिलावत करके फ़रमाया- अगर ज़क़्क़ूम का एक क़तरा दुनिया के समुद्र में पड़ जाये तो रू-ए-ज़मीन के तमाम लोगों की ख़ुराक ख़राब हो जाये। उसका क्या हाल होगा जिसकी ख़ुराक ही यही होगी। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

फिर इस ज़क़्क़ूम के खाने के साथ ही उन्हें जहन्नम का खौलता हुआ गर्म पानी पिलाया जायेगा। या यह मतलब है कि इस जहन्नमी दरख़्त को जहन्नमी पानी के साथ मिलाकर उन्हें पिलाया जायेगा। और यह

गर्म पानी वह होगा जो जहन्नमियों के ज़ख़्मों से लहू-पीप वग़ैरह की शक्ल में निकला होगा। और जो उनकी आँखों से और पाख़ाने के रास्ते से निकला होगा। हदीस में है कि जब यह पानी उनके सामने लाया जायेगा तो उन्हें सख़्त तकलीफ़ होगी और बड़ी कराहियत आयेगी। फिर जब वह उनके मुँह के पास लाया जायेगा तो उसकी भाप से उनके चेहरे की खाल झुलस कर रह जायेगी और जब उसका घूँट पेट में जायेगा तो उनकी आँतें कटकर पाख़ाने के रास्ते से बाहर आ जाएँगी (जैसे ज़हर आँतों को काटकर निकाल देता है)।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत सईद बिन जुबैर फ़रमाते हैं कि जब जहन्नमी भूख की शिकायत करेंगे तो ज़क़्क़ूम खिलाया जायेगा, जिससे उनके चेहरों की खालें बिल्कुल अलग होकर गिर पड़ेंगी। इस तरह उन्हें पहचानने वाला उसमें उनके मुँह की पूरी खाल देखकर पहचान सकता है कि यह फ़ुलाँ है। फिर प्यास की शिद्दत से बेताब होकर वे हाय-वाय पुकारेंगे तो उन्हें पिघले हुए ताँबे जैसा गर्म पानी दिया जायेगा जो चेहरे के सामने आते ही चेहरे के गोश्त को झुलसा देगा, तमाम गोश्त गिर पड़ेगा और पेट में जाकर आँतों को काट देगा, ऊपर से लोहे के हथोड़े मारे जायेंगे और बदन का एक-एक हिस्सा अलग-अलग झड़ जायेगा, बुरी तरह चीख़ते-चिल्लाते होंगे। फ़ैसला होते ही उनका ठिकाना जहन्नम हो जायेगा। जहाँ उन पर तरह-तरह के अज़ाब होते रहेंगे। जैसे एक दूसरी आयत में है:

يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ.

वे जहन्नम और आग जैसे पानी के दरमियान चक्कर खाते रहेंगे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. का फ़रमान है कि वल्लाह आधे दिन से पहले ही पहले दोनों गिरोह अपनी-अपनी जगह पर पहुँच जायेंगे और वहीं क़ैलूला यानी दोपहर का आराम करेंगे। क़ुरआन बताता है:

اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا.

कि जन्नती अपनी जगह और ठिकाने के एतिबार से बहुत बेहतर होंगे और आराम-गाह के एतिबार से भी बहुत अच्छे होंगे।

ग़र्ज़ यह कि क़ैलूले (दोपहर के आराम) का वक़्त दोनों का अपनी-अपनी जगह होगा। आधे दिन से पहले-पहले अपनी जगह पहुँच जायेंगे। इस बिना पर "सुम्म" का लफ़्ज़ ख़बर पर ख़बर के अ़त्फ़ के लिये होगा। यह इसका बदला है कि इन लोगों ने अपने बाप-दादों को गुमराह पाया लेकिन फिर भी उन्हीं के नक़्शे-क़दम (पद् चिन्हों) पर दौड़ते फिरते रहे, और मजबूरों व बेवक़ूफ़ों की तरह उनके पीछे हो लिये।

और उनसे पहले भी अगले लोगों में अक्सर गुमराह हो चुके हैं। (71) और हमने उनमें भी डराने वाले (पैग़म्बर) भेजे थे। (72) सो देख लीजिए उन लोगों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ, जिनको डराया गया था। (73) हाँ, मगर जो अल्लाह के ख़ास किए हुए बन्दे थे। (74)	وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ ع٣

गुमराही का इतिहास बहुत पुराना है

गुज़िश्ता (पहले गुज़री) उम्मतों में भी अक्सर लोग गुमराह और राह से भटके हुए थे। शिर्क करते थे,

उनमें भी ख़ुदा के रसूल आये थे, जिन्होंने उन्हें होशियार किया, डरा धमकाया और बतला दिया था कि उनके शिर्क व कुफ़्र और रसूलों को झुठलाने से ख़ुदा नाराज़ है और अगर वे बाज़ न आये तो उन्हें अज़ाब होगा। फिर भी जब उन्होंने नबियों की बात न मानी और बुरे आमाल से बाज़ न आये तो देख लो कि उनका क्या अन्जाम हुआ, तहस नहस कर दिये गये, तबाह व बरबाद कर दिये गये। उनमें के नेक काम करने वाले, ख़ुलूस वाले, ख़ुदा को एक मानने वाले बन्दे बचा लिये गये और इज़्ज़त के साथ रखे गये।

وَلَقَدْ نَادٰنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝

और हमको नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने पुकारा, सो हम ख़ूब फ़रियाद सुनने वाले हैं। (75) और हम ने उनको और उनके मानने वालों को बड़े भारी ग़म से निजात दी। (76) और हमने उन्हीं की औलाद को बाक़ी रहने दिया। (77) और हमने उनके लिए बाद आने वाले लोगों में यह बात रहने दी (78) कि नूह पर सलाम हो आ़लम वालों में। (79) हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (80) बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे। (81) फिर हमने दूसरे लोगों को (यानी काफ़िरों को) डूबो दिया। (82)

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की पुकार

ऊपर की आयतों में लोगों की गुमराही का संक्षिप्त रूप से ज़िक्र था, इन आयतों में तफ़सीली बयान है। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम में साढ़े नौ सौ साल तक रहे और हर वक़्त उन्हें समझाते बुझाते रहे, लेकिन फिर भी क़ौम गुमराही पर जमी रही, सिवाय चन्द पाकबाज़ लोगों के कोई ईमान न लाया, बल्कि सताते और तकलीफ़ें देते रहे। आख़िर ख़ुदा के रसूल ने तंग आकर दुआ़ की कि ख़ुदाया मैं आ़जिज़ आ गया, तू मेरी मदद कर। ग़ज़बे ख़ुदा उन पर नाज़िल हुआ और तमाम काफ़िरों को पानी में ग़र्क़ कर दिया गया। तो फ़रमाता है कि नूह अ़लैहिस्सलाम ने तंग आकर हमारी जनाब में दुआ़ की। हम तो हैं ही बेहतरीन तौर पर दुआ़ओं के क़बूल करने वाले। फ़ौरन उनकी दुआ़ क़बूल फ़रमा ली और उस झुठलाने व तकलीफ़ से जो उन्हें कुफ़्फ़ार से रोज़मर्रा पहुँच रही थी हमने बचा लिया। और उनही की औलाद से फिर दुनिया बसी। क्योंकि वही बचे थे।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि तमाम लोग नूह अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। तिर्मिज़ी की मरफ़ूअ़ हदीस में इस आयत की तफ़सीर में यह है कि साम हाम और याफ़िस की औलाद फिर फैली और बाक़ी रही। मुस्नद में यह भी है कि साम पूरे अ़रब के बाप हैं और हाम तमाम हब्श के और याफ़िस तमाम रोम के। इस हदीस में रोमियों से मुराद प्रथम रूम यानी यूनानी हैं, जो रोमी लीती बिन यूनान बिन याफ़िस बिन नूह की तरफ़ मन्सूब हैं। हज़रत सईद बिन मुसैयब रह. का इरशाद है कि हज़रत नूह के एक लड़के साम की औलाद अ़रब वाले, फ़ारसी और रोमी हैं और याफ़िस की औलाद तुर्क सक़ालिबा और याजूज व

Maktab E Ashraf

माजूज हैं। और हाम की औलाद क़िब्ती सूडानी और बरबरी हैं। वल्लाहु आलम।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की भलाई और उनका ज़िक्रे ख़ैर उनके बाद लोगों में ख़ुदा की तरफ़ से बाक़ी रहा। तमाम अम्बिया की हक़-गोई का नतीजा यही होता है। हमेशा उन पर लोग सलाम भेजते रहेंगे और उनकी तारीफ़ें करते रहेंगे। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम पर सलाम हुआ यह गोया अगले जुमले की तफ़सीर है। यानी उनका ज़िक्र भलाई से बाक़ी रहने के मायने यह हैं कि हर उम्मत उन पर सलाम भेजती रहती है। हमारी यह आ़दत है कि जो शख़्स ख़ुलूस के साथ हमारी इबादत व इताअ़त पर जम जाये हम भी उसका अच्छा ज़िक्र बाद वालों में हमेशा के लिये बाक़ी रखते हैं। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम यक़ीन व ईमान रखने वालों और तौहीद पर जम जाने वालों में थे।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम और उनकी दावत को क़बूल करने वालों का तो यह अच्छा अन्जाम हुआ लेकिन नूह के मुख़ालिफ़ और विरोधी ग़ारत और ग़र्क़ कर दिये गये। हाँ उनकी बदियाँ और बुराईयाँ रह गईं जिनकी वजह से मख़्लूक़ की ज़बान पर उनके ये बद-चलन अफ़साने चढ़ गये।

और नूह (अ़लैहिस्सलाम) के तरीक़े वालों में से इब्राहीम भी थे। (83) जबकि वह अपने रब की तरफ़ साफ़ दिल से मुतवज्जह हुए। (84) जबकि उन्होंने अपने बाप से और अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम किस (वाहियात) चीज़ की इबादत किया करते हो। (85) क्या झूठ-मूठ के माबूदों को अल्लाह के सिवा चाहते हो? (86) तो तुम्हारा रब्बुल-आ़लमीन के साथ क्या ख़्याल है? (87)	وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ○ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ○ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ○ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ○ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम

इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम भी हज़रत नूह के दीन पर थे। उन्हीं के तरीक़े और मस्लक पर थे। अपने रब के पास सलीम दिल लेकर आये यानी तौहीद वाला जो अल्लाह तआ़ला को हक़ जानता हो, क़ियामत को आने वाली मानता हो, मुर्दों के दोबारा ज़िन्दा होने वाला समझता हो, शिर्क व कुफ़्र से बेज़ार हो, दूसरों पर लान-तान करने वाला न हो। अल्लाह के ख़लील (यानी हज़रत इब्राहीम) ने अपनी तमाम क़ौम से और अपने बाप से साफ़ फ़रमाया कि यह तुम किसकी पूजा कर रहे हो? ख़ुदा के सिवा दूसरों की बन्दगी छोड़ दो और अपने इन बातिल (झूठे) माबूदों की बन्दगी और इनसे ताल्लुक़ छोड़ दो, वरना जान लो कि ख़ुदावन्दे आ़लम तुम्हारे साथ क्या कुछ करेगा और तुम्हें कैसी सख़्त सज़ायें देगा।

सो इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने सितारों को एक निगाह भरकर देखा (88) और कह दिया कि मैं बीमार होने को हूँ। (89) ग़र्ज़ वे लोग उनको छोड़कर चले गए। (90) तो यह उनके	فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى النُّجُوْمِ ○ فَقَالَ اِنِّىْ سَقِيْمٌ ○ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ○ فَرَاغَ اِلٰٓى

Maktab E Ashraf

اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۚ مَالَكُمْ لَا
تَنْطِقُوْنَ ○ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًاۢ بِالْيَمِيْنِ ○
فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ○ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا
تَنْحِتُوْنَ ۙ○ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ○
قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ○
فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ○

बुतों में जा घुसे और कहने लगे कि क्या तुम खाते नहीं हो? (91) तुमको क्या हुआ तुम बोलते भी नहीं हो? (92) फिर उन पर ताक़त के साथ जा पड़े और मारने लगे। (93) सो वे लोग उनके पास दौड़ते हुए आए। (94) इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया- क्या तुम उन चीज़ों को पूजते हो जिनको ख़ुद तराशते हो? (95) हालाँकि तुमको और तुम्हारी उन बनाई हुई चीज़ों को अल्लाह ही ने पैदा किया है। (96) वे लोग कहने लगे कि इब्राहीम के लिए एक आतिशख़ाना "यानी आग का घर" तामीर करो और उसको दहकती आग में डाल दो। (97) ग़र्ज़ कि उन लोगों ने इब्राहीम के साथ बुराई करना चाहा था, सो हमने उन्हीं को नीचा दिखाया। (98)

हक़ को तलाश करने वाली निगाह

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से यह इसलिये फ़रमाया कि वे जब अपने मेले में जायें तो यह उनके इबादत-ख़ाने (पूजा-स्थल) में अकेले रह जायें और उनके बुतों को तोड़ने का मौक़ा मिल जाये। इसलिये एक ऐसी बात कही जो दर हक़ीक़त सच्ची थी लेकिन उनकी समझ में जो मतलब इसका आया उससे आपने दीनी काम निकाल लिया। वे तो अपने एतिक़ाद के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को वास्तव में बीमार समझ बैठे और उन्हें छोड़कर चलते बने। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी मामले में ग़ौर व फ़िक्र करे तो अ़रब कहते हैं कि उसने सितारों पर नज़रें डालीं। मतलब यह है कि ग़ौर व फ़िक्र के साथ तारों की तरफ़ निगाह उठाई और सोचने लगे कि मैं इन्हें किस तरह टालूँ? सोच समझ कर फ़रमाया कि मैं सक़ीम हूँ यानी ज़ईफ़ (कमज़ोर) हूँ।

एक हदीस में आया है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने सिर्फ़ तीन ही झूठ बोले हैं जिनमें से दो मर्तबा तो अल्लाह के दीन के लिये, एक बार उनका फ़रमाना "इन्नी सक़ीम" (यानी मैं बीमार हूँ) और दूसरे उनका फ़रमाना "बल् फ़-अ़-लहू कबीरुहुम हाज़ा" (यानी बल्कि उनके बड़े ने यह किया है) और एक उनका हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को अपनी बहन कहना, तो याद रहे कि दर असल इनमें हक़ीक़ी और वास्तविक झूठ एक भी नहीं। इन्हें तो बस आ़म मुहावरे की वजह से झूठ कहा गया है। कलाम में ऐसी लचक दोहरे मायने के अलफ़ाज़ इस्तेमाल करना किसी शरई मक़सद के लिये झूठ में शामिल नहीं। जैसे कि हदीस में है कि बात को घुमाकर करना झूठ से अलग है और उससे बेनियाज़ कर देती है। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं, हज़रत ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम के तीनों कलिमात में से एक भी ऐसा नहीं है जिससे इल्मी हिक्मत के साथ अल्लाह के दीन की भलाई मक़सूद न हो।

हज़रत सुफ़ियान रज़ि. फ़रमाते हैं "मैं बीमार हूँ" इससे मतलब यह है कि मुझे ताऊन हो गया है। और वे लोग ऐसे मरीज़ से भागते थे। हज़रत सईद बिन मुसैयब रह. का बयान है कि ख़ुदा के दीन की तब्लीग़ उनके झूठे माबूदों की तरदीद के लिये ख़ुदा के ख़लील अ़लैहिस्सलाम की यह हिक्मते अ़मली (रणनीति) थी कि एक सितारे को निकलता देखकर फ़रमा दिया कि मैं बीमार हूँ। औरों ने भी यही लिखा है कि मैं बीमार होने वाला हूँ। यानी एक मर्तबा मौत की बीमारी आने वाली है। और यह भी कहा गया है कि मैं मरीज़ हूँ यानी मेरा दिल तुम्हारे इन बुतों की इबादत से बीमार है। हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि जब आपकी क़ौम मेले में जाने लगी तो आपको भी मजबूर करने लगी, आप हट गये और फ़रमा दिया कि मैं सक़ीम (बीमार) हूँ और आसमान की तरफ़ देखने लगे। जब वे उन्हें तन्हा छोड़कर चल दिये तो आपने फ़राग़त और आसानी से उनके माबूदों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। वे तो सब अपनी ईद में लगे और आप चुपके-चुपके और जल्दी-जल्दी उनके बुतों के पास आये। पहले तो फ़रमाया क्यों जी! तुम खाते क्यों नहीं? यहाँ आकर ख़ुदा के ख़लील ने देखा कि जो चढ़ावे उन लोगों ने इन बुतों पर चढ़ा रखे थे वे सब रखे हुए थे। उन लोगों ने तबर्रुक (प्रसाद) की ग़र्ज़ से जो क़ुरबानियाँ यहाँ की थीं वे सब यूँ ही पड़ी हुई थीं। यह बुतख़ाना बहुत बड़ा, लम्बा-चौड़ा और सजा हुआ था। दरवाज़े के बराबर में एक बहुत बड़ा बुत था और उसके इर्द-गिर्द उससे छोटे, फिर उनसे छोटे, यूँ ही तमाम बुतख़ाना भरा हुआ था। उनके पास मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने रखे हुए थे जो इस एतिक़ाद से रखे गये थे कि यहाँ रहने से पवित्र हो जायेंगे, फिर हम खा लेंगे। हज़रत इब्राहीम ने अपनी बात का जवाब न पाकर फिर फ़रमाया यह तुम्हें क्या हो गया? बोलते क्यों नहीं? अब तो पूरी क़ुव्वत से दायें हाथ से मार-मारकर उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिया। हाँ बड़े बुत को छोड़ दिया ताकि उस पर बदगुमानी की जा सकी, जैसा कि सूरः अम्बिया में गुज़र चुका है और वहीं इसकी पूरी तफ़सीर भी बयान हो चुकी है।

ये बुत-परस्त लोग जब अपने मेले से वापस आये और बुतख़ाने में दाख़िल हुए तो देखा कि उनके सब ख़ुदा टूटे-फूटे पड़े हुए हैं। किसी का हाथ नहीं, किसी का पाँव नहीं, किसी का सर नहीं, किसी का धड़ नहीं। हैरान हो गये कि यह क्या हुआ? आख़िर सोच-समझकर बहस-मुबाहसे के बाद मालूम कर लिया कि हो न हो यह काम इब्राहीम का है। अब सारे के सारे मिल-जुलकर ख़लीलुर्रहमान अ़लैहिस्सलाम के पास दौड़े भागे, दाँत पीसते, बनते बिगड़ते आये। हज़रत ख़लीलुल्लाह को तब्लीग़ का, उन्हें क़ायल-माक़ूल करने और समझाने का अच्छा मौक़ा मिला। फ़रमाने लगे क्यों उन चीज़ों की पूजा करते हो जिन्हें तुम ख़ुद बनाते हो? अपने हाथों से गढ़ते और तराशते हो, हालाँकि तुम्हारा और तुम्हारे आमाल का ख़ालिक़ अल्लाह ही है।

मुम्किन है कि इस आयत में "मा" मस्दरिया हो और मुम्किन है कि "अल्लज़ी" के मायने में हो। लेकिन दोनों मायने के एतिबार से बात एक ही है, अगरचे पहले मायने ज़्यादा वाज़ेह हैं। चुनाँचे इमाम बुख़ारी रह. की किताब 'अफ़आ़लुल-इबाद' में एक मरफ़ूअ़ हदीस है कि अल्लाह तआ़ला हर कारीगर और कारीगरी को पैदा करता है। फिर बाज़ों ने इसी आयत की तिलावत की। चूँकि इस पाक व साफ़ बात का कोई जवाब उनके पास न था तो तंग आकर दुश्मनी और कमीनेपन पर उतर आये और कहने लगे एक आग का घर बनाओ, उसमें आग जलाओ और इसको उस आग में डाल दो। चुनाँचे यही उन्होंने किया। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने अपने ख़लील अ़लैहिस्सलाम को उससे निजात दी। उनही को ग़लबा दिया और उन्हीं की मदद फ़रमाई, अगरचे उन्होंने उनको बुराई (यानी तकलीफ़) पहुँचानी चाही लेकिन ख़ुदा तआ़ला ने ख़ुद उन्हें ज़लील कर दिया। इसका पूरा बयान और कामिल तफ़सीर सूरः अम्बिया में गुज़र चुकी है, वहीं

Maktaba Ashraf

देख ली जाये।

وَقَالَ اِنِّیْ ذَاهِبٌ اِلٰی رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ ۝
رَبِّ هَبْ لِیْ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝ فَبَشَّرْنٰهُ
بِغُلٰمٍ حَلِیْمٍ ۝ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْیَ قَالَ
یٰبُنَیَّ اِنِّیْۤ اَرٰی فِی الْمَنَامِ اَنِّیْۤ اَذْبَحُكَ
فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰی ؕ قَالَ یٰۤاَبَتِ افْعَلْ
مَا تُؤْمَرُ ٘ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ
الصّٰبِرِیْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِیْنِ ۝ۚ
وَنَادَیْنٰهُ اَنْ یّٰۤاِبْرٰهِیْمُ ۝ لا قَدْ صَدَّقْتَ
الرُّءْیَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ۝
اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِیْنُ ۝ وَفَدَیْنٰهُ
بِذِبْحٍ عَظِیْمٍ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَیْهِ فِی
الْاٰخِرِیْنَ ۝ صلے سَلٰمٌ عَلٰۤی اِبْرٰهِیْمَ ۝ كَذٰلِكَ
نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ۝ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا
الْمُؤْمِنِیْنَ ۝ وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِیًّا مِّنَ

और इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) कहने लगे कि मैं तो अपने रब की तरफ़ चला जाता हूँ वह मुझको (अच्छी जगह) पहुँचा ही देगा। (99) ऐ मेरे रब! मुझको एक नेक फ़रज़न्द दे। (100) सो हमने उनको एक हलीमुल-मीज़ाज "यानी बुर्दबार और नर्म मिज़ाज वाले" फ़रज़न्द की ख़ुशख़बरी दी। (101) सो जब वह लड़का ऐसी उम्र को पहुँचा कि इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के साथ चलने-फिरने लगा, तो इब्राहीम (अ़लैहि.) ने फ़रमाया कि बेटा! मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुमको (अल्लाह के हुक्म से) ज़िबह कर रहा हूँ, सो तुम भी सोच लो कि तुम्हारी क्या राय है? वह बोले कि अब्बा जान! आपको जो हुक्म हुआ है आप (निःसंकोच) कीजिए, इन्शा-अल्लाह आप मुझको सहार करने वालों में से पाएँगे। (102) ग़र्ज़ जब दोनों ने (ख़ुदा के हुक्म को) तस्लीम कर लिया और बाप ने बेटे को (ज़िबह करने के लिए) करवट पर लिटा दिया (103) और (चाहते थे कि गला काट डालें, उस वक़्त) हमने उनको आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम! (शाबाश) (104) तुमने ख़्वाब को सच कर दिखाया। (वह वक़्त भी अ़जीब था), हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (105) हक़ीक़त में यह था भी बड़ा इम्तिहान। (106) और हमने एक बड़ा ज़बीहा "यानी क़ुरबानी का जानवर" उसके बदले में दे दिया। (107) और हमने पीछे आने वालों में यह बात उनके लिए रहने दी (108) कि इब्राहीम पर सलाम हो। (109) हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (110) बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे। (111) और हमने (एक इनाम उन पर यह किया कि) उनको इस्हाक़ (अ़लैहिस्सलाम) की

ख़ुशख़बरी दी कि नबी और नेक-बख़्तों में से होंगे। (112) और हमने इब्राहीम पर और इस्हाक़ पर बरकतें नाज़िल कीं और (फिर आगे) उन दोनों की नस्ल में बाज़े अच्छे भी हैं और बाज़े ऐसे भी जो (बुराईयाँ करके) खुले तौर पर अपना नुक़सान कर रहे हैं। (113)	الصّٰلِحِيْنَ ○ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ○

Maktaba Ashraf

एक ख़्वाब

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम जब अपनी क़ौम की हिदायत से मायूस हो गये, बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखकर भी जब उन्हें ईमान नसीब न हुआ तो आपने उनसे अलग हो जाना पसन्द फ़रमाया और ऐलान कर दिया कि मैं अब हिजरत कर जाऊँगा। मेरा रहनुमा मेरा रब है, साथ ही रब से औलाद होने की दुआ़ माँगी ताकि वही तौहीद में आपका साथ दे। उसी वक़्त दुआ़ क़बूल होती है और एक बुर्दबार बच्चे की ख़ुशख़बरी दी जाती है, यह हज़रत इस्माईल थे। यही आपके पहले साहिबज़ादे (सुपुत्र) थे और हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम से बड़े थे। इसे तो अहले किताब भी मानते हैं बल्कि उनकी किताब में मौजूद है कि हज़रत इस्माईल की पैदाईश के वक़्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की उम्र छियासी साल की थी और जिस वक़्त इस्हाक़ पैदा हुए हैं उस वक़्त आपकी उम्र निन्नानवे बरस की थी। बल्कि उनकी अपनी किताब में तो यह भी है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को अपने इकलौते बेटे के ज़िबह करने का हुक्म मिला था। लेकिन सिर्फ़ इसलिये कि ये अहले किताब अल्लाह के नबी हज़रत इस्हाक़ की औलाद में से हैं और अल्लाह के नबी व ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से अ़रब वाले हैं, इन्होंने वाक़िए की असलियत बदल दी और इस फ़ज़ीलत को हज़रत इस्माईल से हटाकर हज़रत इस्हाक़ को दे दिया और बेजा तावीलें करके ख़ुदा के कलाम को बदल डाला। कहा कि हमारी किताब में लफ़्ज़ "वहीद-क" है, इससे मुराद इकलौता नहीं बल्कि जो तेरे पास उस वक़्त अकेला है वह है, यह इसलिये कि हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम तो अपनी वालिदा के साथ मक्के में थे, यहाँ हज़रत इब्राहीम के साथ सिर्फ़ इस्हाक़ थे। लेकिन यह बिल्कुल ग़लत है। "वहीद-क" उसी को कहा जाता है जो इकलौता हो, उसका कोई और भाई न हो, फिर यहाँ एक बात और भी है कि इकलौते बच्चे के साथ जो मुहब्बत होती है और उसके जो लाड़-चाव होते हैं उमूमन दूसरी औलाद के होने पर वह बाक़ी नहीं रहते, इसलिये उसके ज़बीहे (क़ुरबानी) का हुक्म इम्तिहान और आज़माईश की ज़बरदस्त कड़ी है।

हम मानते हैं कि बाज़ पहले ज़माने के उलेमा और बुज़ुर्ग भी इसके क़ायल हुए हैं कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम थे, यहाँ तक कि बाज़ सहाबा से भी यह नक़ल किया गया है, लेकिन यह चीज़ किताब व सुन्नत से साबित नहीं होती, बल्कि ख़्याल यह है कि बनी इस्राईल की एक शोहरत दी हुई बात को इन हज़रात ने भी बिना दलील के अपने यहाँ ले लिया। दूर क्यों जायें किताबुल्लाह के अलफ़ाज़ ही पर ग़ौर कर लीजिये कि हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की बशारत 'ग़ुलामे हलीम' (बुर्दबारी वाला लड़का) कहकर ऐलान हुआ, फिर राहे ख़ुदा में ज़िबह के लिये तैयार होने का ज़िक्र हुआ। इस तमाम बयान को ख़त्म करके फिर हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम के पैदा होने की बशारत (ख़ुशख़बरी) का बयान हुआ और फ़रिश्तों

Maktab E Ashraf

ने हज़रत इस्हाक़ की बशारत के मौक़े पर 'गुलामे अ़लीम' फ़रमाया था। इसी तरह क़ुरआन में है और हज़रत इस्हाक़ की ख़ुशख़बरी के साथ इरशाद हुआ हैः

وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحَاقَ يَعْقُوْبَ.

यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दगी ही में हज़रत इस्हाक़ के यहाँ हज़रत याक़ूब पैदा होंगे। यानी उनकी तो नस्ल जारी रहने का पहले ही इल्म कराया जा चुका था, अब उन्हें ज़िबह करने का हुक्म कैसे दिया जाता, इसे हम पहले ही बयान कर चुके। अलबत्ता हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का वस्फ़ यहाँ पर बुर्दबारी बयान किया गया है जो ज़बीहे (क़ुरबान किये जाने) के लिये निहायत मुनासिब है। अब हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम बड़े हो गये, अपने वालिद के साथ चलने फिरने के क़ाबिल हो गये। आप उस वक़्त मय अपनी वालिदा मोहतरमा के फ़ारान (मक्का) में थे। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम उमूमन वहाँ आते-जाते रहते थे, यह भी मज़कूर है कि बुराक़ पर जाते थे और इस जुमले के यह मायने भी हैं कि जवानी के लगभग हो गये थे, लड़कपन का ज़माना निकल गया और बाप की तरह चलने फिरने और काम काज करने के क़ाबिल बन गये, तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने ख़्वाब देखा कि गोया आप अपने इस प्यारे बच्चे को ज़िबह कर रहे हैं। अम्बिया के ख़्वाब 'वही' होते हैं और इसकी दलील यही आयत है। एक मरफ़ूअ़ रिवायत में भी यह है।

पस ख़ुदा के रसूल ने अपने लख़्ते जिगर की आज़माईश के लिये और इसलिये भी कि अचानक ज़िबह करने से वह घबरा न जायें अपने ख़्वाब को सच्चा करने का अपना इरादा उन पर ज़ाहिर किया। वहाँ क्या था वह भी उसी दरख़्त के फल थे, नबी और नबी के पुत्र थे। जवाब देते हैं कि अब्बा फिर देर क्यों लगा रहे हो, ये बातें भी पूछने की होती हैं? जो हुक्म हुआ है उसे फ़ौरन कर डालिये और अगर मेरे बारे में कोई खटका और शंका हो तो ज़बानी इत्मीनान क्या कराऊँ छुरी रखिये, मालूम हो जायेगा कि मैं कितना साबिर हूँ। इन्शा-अल्लाह मेरा सब्र आपका जी ख़ुश कर देगा। सुब्हानल्लाह! जो कहा था वही करके दिखाया और 'वायदे का सच्चा' होने की सनद ख़ुदा की तरफ़ से हासिल कर ही ली।

आख़िर बाप बेटे दोनों हुक्मे ख़ुदा की इताअ़त (पालन) के लिये तैयार हो जाते हैं। बाप बच्चे को ज़िबह करने के लिये और बच्चा राहे ख़ुदा में अपने बाप के हाथों अपना गला कटवाने के लिये तैयार हो जाता है। बाप अपने नूरे-चश्म लख़्ते जिगर को मुँह के बल ज़मीन पर गिराते हैं ताकि ज़िबह के वक़्त मुँह देखकर मुहब्बत न आ जाये और हाथ सुस्त न पड़ जाये। मुस्नद अहमद में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि जब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपने नूरे नज़र को अल्लाह के हुक्म से ज़िबह करने के लिये ले चले तो सई के वक़्त शैतान सामने आया, लेकिन हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम उससे आगे बढ़ गये। फिर हज़रत जिब्राईल के साथ आप जमरा-ए-अ़क़बा पर पहुँचे तो फिर शैतान सामने आया, आपने उसको कंकरियाँ मारीं, फिर जमरा-ए-वुस्ता के पास आया, फिर वहाँ सात कंकरियाँ मारीं, फिर आगे बढ़कर अपने प्यारे बच्चे को ख़ुदा के नाम पर ज़िबह करने के लिये नीचे लिटाया और ज़बीहुल्लाह के जिस्म पर उस वक़्त सफ़ेद चादर थी। कहने लगे अब्बा जी! इसे उतार लीजिये ताकि इसमें आप मुझे कफ़ना सकें। आह! उस वक़्त ख़ुद अपने बेटे को नंगा करते हुए बाप का अ़जब हाल था कि आवाज़ आई- बस इब्राहीम! तुम ख़्वाब सच्चा कर चुके। मुड़कर देखा तो एक भेड़ा सफ़ेद रंग का बड़े-बड़े सींगों और साफ़ आँखों वाला नज़र पड़ा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इसी लिये हम इस क़िस्म के भेड़े चुन-चुनकर क़ुरबानी के लिये लेते थे।

Makta6 E Ashraf

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ही से दूसरी रिवायत में हज़रत इस्हाक़ का नाम मन्क़ूल है, तो अगरचे दोनों नाम आपसे रिवायत किये गये हैं लेकिन अव्वल ही औला है और इसकी दलीलें आगे आ रही हैं। इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

इसके बदले बड़ा ज़बीहा ख़ुदा ने अ़ता फ़रमाया, इसके बारे में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह जन्नती भेड़ा था जो वहाँ चालीस साल से खा-पी रहा था। उसे देखकर आप अपने बच्चे को छोड़कर उसके पीछे हो लिये। जमरा-ए-ऊला के पास आकर सात कंकरियाँ फेंकी। फिर वह भागकर जमरा-ए-वुस्ता पर गया, सात कंकरियाँ यहाँ मारीं, फिर जमरा-ए-अ़क़बा के पास सात कंकरियाँ मारीं और वहाँ से क़ुरबानी के मक़ाम पर लाकर ज़िबह किया। उसके सींग सर समेत इस्लाम के शुरू ज़माने तक काबा शरीफ़ के दरवाज़े पर ताले के पास लटक रहे थे, फिर सूख गये।

एक मर्तबा हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत कअ़ब रज़ि. बैठे हुए बातें कर रहे थे। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. तो हदीसें बयान कर रहे थे और हज़रत कअ़ब रज़ि. किताब के क़िस्से बयान कर रहे थे। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया- रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि हर नबी के लिये एक दुआ़ क़बूल शुदा है, और मैंने अपनी उस मक़बूल दुआ़ को पोशीदा (छुपा) करके रख छोड़ा है। अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त के लिये जो क़ियामत के दिन होगी, तो हज़रत कअ़ब रज़ि. ने फ़रमाया- तुमने ख़ुद इसे हुज़ूर सल्ल. से सुना है? फ़रमाया हाँ। हज़रत कअ़ब रज़ि. ख़ुश हुए और फ़रमाने लगे तुम पर मेरे माँ-बाप फ़िदा हों, या फ़रमाया हुज़ूर सल्ल. पर मेरे माँ-बाप फ़िदा हो जायें। फिर हज़रत कअ़ब रज़ि. ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा सुनाया कि जब आप अपने लड़के हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम को ज़िबह करने के लिये मुस्तैद हो गये तो शैतान ने आकर कहा कि अगर मैं इस वक़्त न बहका सका तो मुझे इनसे उम्र भर के लिये मायूस हो जाना चाहिये।

पहले तो यह हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास आया और पूछा कि इब्राहीम तुम्हारे लड़के को कहाँ ले गये हैं? उन्होंने जवाब दिया कि अपने किसी काम पर ले गये हैं। उसने कहा नहीं! बल्कि वह तो ज़िबह करने के लिये ले गये हैं। वह बोलीं वह उसे ज़िबह क्यों करने लगे? शैतान ने कहा वह कहते हैं कि उन्हें ख़ुदा का हुक्म है। जवाब मिला फिर तो यही बेहतर है कि वह जल्दी से ख़ुदा के हुक्म को पूरा करके फ़ारिग़ हो लें। यहाँ से नामुराद होकर बच्चे के पास आया और कहा तुम्हारे अब्बा तुम्हें कहाँ ले जाते हैं? उन्होंने फ़रमाया अपने काम के लिये। कहा नहीं! बल्कि वह तुम्हें ज़िबह करने के लिये लेजा रहे हैं। फ़रमाया यह क्यों? कहा इसलिये कि वह समझते हैं कि उन्हें ख़ुदा का यही हुक्म है। कहा फिर तो वल्लाह उन्हें इस काम में बहुत जल्दी करनी चाहिये। उनसे भी मायूस होकर यह मलऊन हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह के पास पहुँचा। उनसे कहा बच्चे को कहाँ लेजा रहे हो? जवाब दिया अपने काम के लिये। मलऊन ने कहा नहीं! बल्कि तुम इसे ज़िबह करने के लिये लेजा रहे हो। आपने फ़रमाया यह क्यों? बोला इसलिये कि तुम्हारा ख़्याल है कि ख़ुदा का हुक्म तुम्हें यूँ ही है। आपने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम फिर तो मैं ज़रूर ही इसे ज़िबह कर डालूँगा। अब इब्लीस मायूस हो गया।

दूसरी रिवायत में यह भी है कि इस तमाम वाक़िए के बाद अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इस्हाक़ से फ़रमाया कि एक दुआ़ तुम मुझसे माँगो, जो माँगोगे मिलेगा। हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम ने कहा फिर मेरी दुआ़ यह है कि जिसने तेरे साथ शिर्क न किया हो उसे तू ज़रूर जन्नत में ले जाना। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया है- अल्लाह तआ़ला ने मुझे इख़्तियार दिया कि मैं दो बातों में से एक को इख़्तियार कर लूँ। या तो

यह कि मेरी आधी उम्मत बख़्शी जाये या यह कि मैं शफ़ाअ़त करूँ और उसे अल्लाह तआ़ला क़बूल फ़रमा ले, तो मैंने शफ़ाअ़त करने को तरजीह दी, इस उम्मीद पर कि वह आ़म होगी। हाँ एक दुआ़ थी कि मैं वहीं करता लेकिन ख़ुदा का एक नेक बन्दा मुझसे पहले ही उस दुआ़ को माँग चुका था।

वाक़िआ़ यह है कि जब अल्लाह तआ़ला ने इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम से ज़िबह होने की तकलीफ़ दूर कर दी तो उनसे फ़रमाया कि "माँगो जो माँगोगे दिया जायेगा"। हज़रत इस्हाक़ ने फ़रमाया वल्लाह! शैतान के बहकाने से पहले ही मैं इसे माँग लूँगा। ख़ुदाया! जो शख़्स इस हालत में मरा हो कि उसने तेरे साथ किसी को शरीक न किया हो तू उसे बख़्श दे और जन्नत में पहुँचा दे। यह हदीस इब्ने अबी हातिम में है, लेकिन सनद से ग़रीब और मुन्कर है और इसके एक रावी अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन असलम ज़ईफ़ हैं। और मुझे तो यह डर भी है कि ये अलफ़ाज़ "कि जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इस्हाक़ से.........." अपने न हों। जिन्हें उन्होंने हदीस में दाख़िल कर दिये हैं। ज़बीहुल्लाह तो हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम हैं, ज़िबह का स्थान मिना है जो मक्का में है, और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम यहीं थे न कि इस्हाक़। वह तो शहरे किनआ़न में थे जो शाम (मुल्क सीरिया) में है।

जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपने प्यारे बच्चे को ज़िबह करने के लिये लिटाते हैं तो जनाबे बारी से निदा आती है कि ऐ इब्राहीम! बस तुम अपने ख़्वाब को पूरा कर चुके। सुद्दी रह. से रिवायत है कि जब ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने ज़बीहुल्लाह के हलक़ पर छुरी फेरी तो गर्दन ताँबे की हो गई, न कटी और यह आवाज़ आई- हम इसी तरह नेक काम करने वालों को बदला देते हैं। यानी सख़्तियों से बचा लेते हैं और छुटकारा कर देते हैं। जैसे फ़रमाया- अल्लाह से डरते रहने वालों के लिये अल्लाह तआ़ला निजात की सूरत निकाल ही देते हैं। और उसे इस तरह रिज़्क़ पहुँचता है कि उसके वहम व गुमान में भी न हो। अल्लाह पर भरोसा करने वालों के लिये अल्लाह ही काफ़ी है। अल्लाह अपने कामों को पूरा करके छोड़ता है। हर चीज़ का उसने अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है।

इस आयत से इस पर इस्तिदलाल किया गया है कि फ़ेल पर क़ुदरत पाने से पहले ही हुक्म मन्सूख़ (निरस्त) हो सकता है, हाँ मोतज़िला (यह एक फ़िर्क़ा है) इसको नहीं मानते। दलील पकड़ने की वजह बहुत ज़ाहिर है इसलिये कि ख़लीलुल्लाह को अपने बेटे के ज़िबह करने का हुक्म होता है और फिर ज़िबह करने से पहले ही फ़िदये के साथ मन्सूख़ कर दिया जाता है। मक़सूद इससे यह था कि इरादे और हुक्म के पालन पर आमादा होने का सवाब इनायत फ़रमा दिया जाये। इसी लिये इरशाद हुआ कि यह तो सिर्फ़ एक आज़माईश थी, खुला इम्तिहान था कि इधर हुक्म हुआ उधर तैयारी हुई। इसी लिये हज़रत ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम की तारीफ़ क़ुरआन में है कि "इब्राहीम बड़ा वफ़ादार था, बड़े ज़बीहे के साथ उनका फ़िदया हमने दिया। सफ़ेद रंग का बड़ी आँखों और बड़े सींगों वाला उम्दा ख़ुराक से पला हुआ भेड़ा फ़िदये में दिया गया। जो सबीर में मेवल के दरख़्त से बंधा हुआ मिला। जो जन्नत में चालीस साल तक चरता रहा। मिना में सबीर के पास जो चटान है उस पर यह जानवर ज़िबह किया गया। यह चीख़ता हुआ ऊपर से उतरा था। यही वह भेड़ा है जिसे हाबील ने राहे ख़ुदा में क़ुरबान किया था, इसकी ऊन किसी क़द्र सुर्ख़ी माईल थी। इसका नाम जरीर था।

बाज़ कहते हैं कि मक़ामे इब्राहीम पर इसे ज़िबह किया और कोई कहता है कि मिना में मन्हर पर एक शख़्स ने अपने आपको राहे ख़ुदा में ज़िबह करने की मन्नत मानी थी तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने उसे एक सौ ऊँट ज़िबह करने का फ़तवा दिया था। लेकिन फिर फ़रमाते थे कि अगर मैं उसे एक भेड़ा ज़िबह

करने को कहता तब भी काफ़ी होता। क्योंकि किताबुल्लाह में है कि हज़रत ज़बीहुल्लाह का फ़िदया इसी से दिया गया था। अक्सर लोगों का यही क़ौल है। बाज़ कहते हैं कि यह पहाड़ी बकरा था, कोई कहता है कि नर हिरण था। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत उस्मान को बुलाकर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मैंने भेड़ के सींग बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िले के वक़्त अन्दर देखे थे और मुझे याद न रहा कि मैं तुझे उनके ढाँक देने का हुक्म दूँ। जाओ उसे ढक दो। बैतुल्लाह में कोई ऐसी चीज़ न होनी चाहिये जो नमाज़ी को अपनी तरफ़ मुतवज्जह कर ले।

हज़रत सुफ़ियान रह. फ़रमाते हैं कि उस भेड़े के सींग बैतुल्लाह में ही रहे यहाँ तक कि एक मर्तबा बैतुल्लाह में आग लगी, उसमें वो जल गये। यह वाक़िआ भी इस बात की दलील है कि ज़बीह (क़ुरबान किये जाने वाले) हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम थे। इसी वजह से उनकी औलाद क़ुरैश तक ये सींग बराबर विरासत में चले आये, यहाँ तक कि हुज़ूर सल्ल. को ख़ुदा ने नबी बनाकर भेजा। वल्लाहु आलम।

उन आसार (अक़्वाल और रिवायात) का बयान जिनमें ज़बीहुल्लाह का नाम है अबू मैसरा रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम ने मिस्र के बादशाह से फ़रमाया- क्या तू मेरे साथ खाना चाहता है? "मैं युसूफ़ बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ ज़बीहुल्लाह बिन इब्राहीम ख़लीलुल्लाह हूँ"। (उबैद बिन उमैर रह.)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ की कि ख़ुदाया! क्या वजह है जो लोगों की ज़बानों पर यह चढ़ा हुआ है कि इब्राहीम, इस्हाक़ और इब्राहीम के ख़ुदा की क़सम। तो जवाब मिला- इसलिये कि इब्राहीम ने तो हर-हर चीज़ पर मुझ ही को तरजीह दी और इस्हाक़ ने अपने आपको मेरी राह में ज़िबह होने के लिये सुपुर्द कर दिया। फिर भला और चीज़ उसे पेश कर देना क्या मुश्किल था? और याक़ूब को जैसे-जैसे मैं बलाओं (परेशानियों और आज़माईशों) में डालता गया उसका मेरे साथ अच्छा गुमान बढ़ता ही रहा। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. के सामने एक मर्तबा किसी ने फ़ख़्र से अपने बाप-दादों का नाम लिया तो आपने फ़रमाया क़ाबिले फ़ख़्र बाप-दादा तो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के थे।

हज़रत इक्रिमा, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और ख़ुद हज़रत अ़ब्बास, हज़रत अ़ली, हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम, इमाम शअ़बी, उबैद बिन उमैर, अबू मैसरा, ज़ैद बिन असलम, अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़, ज़ोहरी, क़ासिम बिन अबू बरज़ा, मक्हूल, उस्मान बिन हाज़िर, सुद्दी, हसन, अबुल-हुज़ैल, इब्ने साबित, कअ़बे अहबार रह्मतुल्लाहि अ़लैहिम, इन सब का यही क़ौल है और इब्ने जरीर रह. भी इसी को इख़्तियार करते हैं कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम थे। सही इल्म तो ख़ुदा ही को है मगर बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि इन सब बुज़ुर्गों के उस्ताद कअ़बे अहबार हैं। यह ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में मुसलमान हुए थे और कभी-कभी हज़रत उमर रज़ि. को क़दीमी (पुरानी) किताबों की बातें सुनाते थे। लोगों ने इसे रुख़्सत समझ कर फिर उनसे हर एक बात बयान करनी शुरू कर दी और सही और ग़लत की तमीज़ (फ़र्क़) उठ गई। हक़ तो यह है कि इस उम्मत को अगली किताबों की एक बात की भी हाजत नहीं।

इमाम बग़वी रह. ने कुछ और नाम भी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और ताबिईन के बतलाये हैं। जिन्होंने कहा है कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्हाक़ हैं। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी यह आया है, अगर वह हदीस सही होती तो झगड़े का फ़ैसला था, मगर वह हदीस सही नहीं। उसमें दो रावी ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं, हसन बिन दीनार मतरूक हैं और अ़ली बिन ज़ैद बिन जदआ़न मुन्करुल-हदीस हैं। और ज़्यादा सही यह है कि है भी यह मौक़ूफ़। चुनाँचे एक सनद से यह मक़ूला हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है और यही ज़्यादा ठीक है। वल्लाहु आलम।

अब उन आसार (रिवायात और अक़्वाल) को सुनिये जिनसे मालूम होता है कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम ही थे और यही ठीक और बिल्कुल दुरुस्त भी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. यही फ़रमाते हैं, और फ़रमाते हैं कि यहूदी हज़रत इस्हाक़ का नाम ग़लत लेते हैं। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु, मुजाहिद, हसन बसरी, मुहम्मद बिन कअ़ब, क़रज़ा रह.। ख़लीफ़तुल-मुस्लिमीन हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रह. के सामने जब मुहम्मद बिन कअ़ब करज़ा ने यह फ़रमाया और साथ ही यह इसकी दलील भी दी कि ज़िबह का ज़िक्र करने के बाद क़ुरआन में हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह को हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम के पैदा होने की बशारत का ज़िक्र है और साथ ही यह बयान है कि उनके यहाँ भी लड़का होगा याक़ूब नाम का, जब उनकी और उनके यहाँ लड़का होने की बशारत दी गई थी फिर बावजूद उनके यहाँ लड़का न होने के उससे पहले ही उनके ज़िबह करने का हुक्म कैसे दिया जाता? तो हज़रत उमर रह. ने फ़रमाया यह बहुत साफ़ दलील है, मेरा ज़ेहन इस पर नहीं पहुँचा था। गोया मैं भी जानता था कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम ही हैं। फिर हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ ने मुल्क शाम के एक यहूदी आ़लिम से पूछा जो मुसलमान हो गये थे कि तुम इसके बारे में क्या इल्म रखते हो? उन्होंने कहा कि अमीरुल-मुस्लिमीन सच तो यह है कि "जिनके ज़िबह करने का हुक्म दिया गया वह हज़रत इस्माईल थे, लेकिन चूँकि अ़रब वाले उनकी औलाद में से हैं तो बुज़ुर्गी उनकी तरफ़ लौटती है। इस हसद (जलन और ईर्ष्या) के मारे यहूदियों ने इसे बदल दिया और हज़रत इस्हाक़ का नाम ले दिया। वास्तविक इल्म अल्लाह ही को है, हमारा ईमान है कि हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम और हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम दोनों ही ताहिर व तैयब और ख़ुदा के सच्चे फ़रमाँबरदार थे"।

'किताबुज़्ज़ोहद' में है कि हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह. के बेटे हज़रत अ़ब्दुल्लाह रह. ने अपने वालिद से यह मसला पूछा तो आपने जवाब दिया कि ज़िबह होने वाले हज़रत इस्माईल ही थे। हज़रत अ़ली, हज़रत इब्ने उमर, अबू तुफ़ैल, सईद बिन मुसैयब, सईद बिन जुबैर, हसन, मुजाहिद, शअ़बी, मुहम्मद बिन कअ़ब, अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अ़ली, अबू सालेह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से भी यही नक़ल किया गया है। इमाम बग़वी रह. ने और भी सहाबा और ताबिईन रह. के नाम गिनवाये हैं। एक ग़रीब हदीस भी इसकी ताईद में मौजूद है। उसमें है कि शाम में अमीरे मुआ़विया रज़ि. के सामने यह बहस छिड़ी कि ज़बीहुल्लाह कौन हैं? तो आपने फ़रमाया अच्छा हुआ जो यह मामला मुझ जैसे बा-ख़बर (जानकार) शख़्स के पास आया। सुनो! हम नबी करीम सल्ल. के पास थे कि एक शख़्स आपके पास आया और कहने लगा ऐ ख़ुदा की राह में ज़िबह होने वाले दो शख़्सों की नस्ल के रसूल! मुझे भी माले ग़नीमत में से कुछ दिलवाईये। इस पर आप मुस्कुराये। एक तो ज़बीहुल्लाह हुज़ूर सल्ल. के वालिद अ़ब्दुल्लाह थे, दूसरे हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम, जिनकी नस्ल में से आप हैं।

अ़ब्दुल्लाह के ज़बीहुल्लाह होने का वाक़िआ़ यह है कि आपके दादा अ़ब्दुल-मुत्तलिब ने जब ज़मज़म का कुआँ खोदा तो मन्नत मानी थी कि अगर यह काम आसानी से पूरा हो गया तो अपने एक लड़के को राहे ख़ुदा में ज़िबह करूँगा। जब काम हो गया और क़ुर्आ़-अन्दाज़ी की गई कि किस बेटे को नामे ख़ुदा पर ज़िबह करें तो हुज़ूर सल्ल. के वालिद अ़ब्दुल्लाह का नाम निकला। उनकी ननिहाल वालों ने कहा आप इनकी तरफ़ से एक सौ ऊँट राहे ख़ुदा में ज़िबह कर दें। चुनाँचे वे ज़िबह कर दिये गये और इस्माईल के ज़बीहुल्लाह होने का वाक़िआ़ तो मशहूर ही है।

Maktaba-E-Ashraf

इब्ने जरीर में यह रिवायत मौजूद है और मग़ाज़ी-ए-उमविया में भी है। इमाम इब्ने जरीर रह. ने हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम के ज़बीहुल्लाह होने की एक दलील तो यह पेश की है कि जिस 'हलीम' (बुर्दबार) बच्चे की बशारत का ज़िक्र है उससे मुराद हज़रत इस्हाक़ हैं। क़ुरआन में एक और जगह है:

وَبَشَّرُوْهُ بِغُلَامٍ عَلِيْمٍ.

और हमने उसको एक लड़के की ख़ुशख़बरी दी जो बड़ा आ़लिम होगा।

और हज़रत याक़ूब की बशारत का यह जवाब दिया है कि वह आपके साथ चलने फिरने की उम्र को पहुँच गये थे, और मुम्किन है कि याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के साथ ही कोई और औलाद भी हुई हो। और काबा शरीफ़ में सींगों की मौजूदगी के बारे में फ़रमाते हैं कि बहुत मुम्किन है कि यह किनआ़न शहर से लाकर यहाँ रखे गये हों। और बाज़ लोगों से हज़रत इस्हाक़ के नाम की सराहत (स्पष्टता) भी आई है, लेकिन ये सब बातें हक़ीक़त से बहुत दूर हैं। हाँ हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के ज़बीहुल्लाह होने पर मुहम्मद बिन कअ़ब क़ुरज़ी रह. का इस्तिदलाल बहुत साफ़ और मज़बूत है। वल्लाहु आलम।

पहले ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्माईल के पैदा होने की बशारत दी गई थी, यहाँ इसके बाद उनके भाई हज़रत इस्हाक़ की बशारत दी जा रही है। सूरः हूद और सूरः हिज्र में भी इसका ज़िक्र गुज़र चुका है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि ज़बीह इस्माईल थे और यहाँ हज़रत इस्हाक़ की नुबुव्वत की बशारत (ख़ुशख़बरी) है। जैसे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में फ़रमान है कि हमने उन्हें अपनी रहमत से उनके भाई हारून को नबी बनाकर दिया। हालाँकि हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से बड़े थे। तो यहाँ भी उनकी बशारत की ज़रूरत है। पस यह बशारत उस वक़्त दी गई जबकि ज़िबह के इम्तिहान में वह साबिर साबित हुए।

यह भी नक़ल किया गया है कि यह बशारत दो मर्तबा दी गई, पैदाईश से कुछ पहले और नुबुव्वत से कुछ पहले। हज़रत क़तादा रह. से भी यही मरवी है। उन पर और इस्हाक़ पर हमारी बरकतें नाज़िल हुईं। उनकी औलाद में हर क़िस्म के लोग हैं, नेक भी बद भी, जैसे हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम से फ़रमान हुआ था कि ऐ नूह! हमारे सलाम और बरकत के साथ तू उतर, तू भी और तेरे साथ वाले भी। और ऐसे भी लोग हैं जिन्हें हम फ़ायदा पहुँचायेंगे। फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दर्दनाक अ़ज़ाब पहुँचेगा।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ٥ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ٥ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ٥ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ٥ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ٥ وَتَرَكْنَا	और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और हारून पर भी एहसान किया। (114) और हमने उन दोनों को और उनकी क़ौम को बड़े ग़म से निजात दी। (115) और हमने उन सबकी (फ़िरऔ़न के मुक़ाबले में) मदद की, सो यही लोग ग़ालिब आए। (116) और हमने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी। (117) और हमने उन दोनों को सीधे रास्ते पर क़ायम रखा। (118) और हमने उन दोनों के लिए पीछे "यानी बाद

عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝	में" आने वाले लोगों में यह बात रहने दी (119) कि मूसा और हारून (अलैहिमस्सलाम) पर सलाम हो। (120) हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (121) बेशक वे दोनों हमारे (कामिल) ईमान वाले बन्दों में से थे। (122)

एक बड़े ग़म से निजात

अल्लाह तआला हज़रत मूसा और हारून अलैहिमस्सलाम पर अपनी नेमतें गिना रहा है कि उन्हें नुबुव्वत दी और उन्हें मय उनकी क़ौम के फ़िरऔन जैसे ताक़तवर दुश्मन से निजात दी। जिसने उन्हें बुरी तरह पस्त व ज़लील कर रखा था। उनके बच्चों को क़त्ल करा देता था और लड़कियों को रहने देता था। उनसे ज़लील (घटिया क़िस्म की) ख़िदमात लेता था और उनको बेहैसियत बना रखा था। ऐसे बदतरीन दुश्मन को उनके सामने हलाक किया। उन्हें उन पर ग़ालिब कर दिया। उनकी ज़मीन और माल के ये मालिक बन गये। फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को वाज़ेह और उजली, रोशन और स्पष्ट किताब इनायत फ़रमाई, जो हक़ व बातिल में फ़र्क़ व फ़ैसला करने वाली और हिदायत वाली थी। और उनके अक़वाल व अफ़आल (बातों और कामों) में उन्हें इस्तिक़ामत (जमाव) अता फ़रमाई। और उनके बाद वालों में भी उनका भला ज़िक्र और तारीफ़ व प्रशंसा बाक़ी रखी, कि हर ज़बान उन पर सलाम ही पढ़ती रहे। हम नेक काम करने वालों को यूँ ही और ऐसे ही बदले देते हैं। वे हमारे मोमिन बन्दे थे।

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ۝ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝	और इलियास (अलैहिस्सलाम) भी (बनी इस्राईल के) पैग़म्बरों में से थे। (123) जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि क्या तुम ख़ुदा से डरते नहीं? (124) क्या तुम बअ्ल को पूजते हो, और उसको छोड़े बैठे हो जो सबसे बढ़कर बनाने वाला है (125) (और वह) माबूदे बर्हक़ है। तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप-दादाओं का भी रब है। (126) तो उन लोगों ने उनको झुठलाया, सो वे लोग पकड़े जाएँगे। (127) मगर जो अल्लाह के ख़ालिस बन्दे थे। (128) और हमने इलियास के लिए पीछे आने वाले लोगों में यह बात रहने दी (129) कि इलियासीन पर सलाम हो। (130) हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (131) बेशक वह हमारे (कामिल) ईमान वाले बन्दों में से थे। (132)

Maktaba Ashraf

Maktaba E Ashraf

हज़रत इलियास अ़लैहिस्सलाम

बाज़ कहते हैं कि इलियास हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम का नाम था। वहब रह. कहते हैं कि उनका सिलसिला-ए-नसब यूँ है- इलियास बिन यासीन बिन फ़नहास बिन औ़ज़ार बिन हारून बिन इमरान अ़लैहिस्सलाम। हिज़्कील अ़लैहिस्सलाम के बाद यह बनी इस्राईल में भेजे गए थे। वे लोग बअ़ल नाम के बुत के पुजारी बन गये, इन्होंने इस्लाम की दावत दी। उनके बादशाह ने इनकी दावत को क़बूल भी कर लिया लेकिन फिर मुर्तद हो गया और लोग भी सरकशी पर तुले रहे और ईमान लाने से इनकार कर दिया। आपने उनके लिये बद्दुआ़ की। तीन साल तक बारिश न हुई। अब तो ये सब तंग आ गये और क़समें खा-खाकर इक़रार किया कि आप दुआ़ कीजिये, बारिश होते ही हम सब आपकी नुबुव्वत पर ईमान लायेंगे। चुनाँचे आपकी दुआ़ से पानी बरसा, लेकिन ये कुफ़्फ़ार अपने वायदे से फिर गये और अपने कुफ़्र पर अड़ गये। आपने यह हालत देखकर अल्लाह से दुआ़ की कि या अल्लाह! मुझको अपनी तरफ़ उठा लीजिये। हज़रत यसअ़ बिन अख़्तूब इनकी परवरिश और देखभाल में थे। हज़रत इलियास अ़लैहिस्सलाम की इस दुआ़ के बाद उन्हें हुक्म मिला कि वह एक जगह जायें और वहाँ उन्हें जो सवारी मिले उस पर सवार हो जायें। वहाँ आप गये, एक नूरी घोड़ा दिखाई दिया जिस पर सवार होते ही अल्लाह ने उन्हें भी नूरानी कर दिया और अपने परों से फ़रिश्तों के साथ उड़ने लगे। एक इनसान ज़मीनी और आसमानी फ़रिश्ता बन गया। इस वाक़िए के दुरुस्त होने का इल्म ख़ुदा ही को है। यह बात अहले किताब की रिवायत से है।

हज़रत इलियास अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि क्या तुम अल्लाह से डरते नहीं हो? कि उसके सिवा दूसरों की इबादत करते हो? यमन वालों और क़बीला-ए-अज़्द शनवा की भाषा में रब को 'बअ़ल' कहते थे। बअ़ल नाम के जिस बुत की ये पूजा करते थे वह एक औ़रत थी। उनके शहर का नाम भी "बअ़ल-बक्क" था। तो अल्लाह के नबी इलियास फ़रमाते हैं कि ताज्जुब है कि तुम अल्लाह को छोड़कर जो हर चीज़ का ख़ालिक़ है और बेहतरीन ख़ालिक़ है, एक बुत को पूज रहे हो और उसको पुकारते रहते हो। अल्लाह तआ़ला तुम सब का और तुमसे पहले तुम्हारे बाप-दादों का रब है, वही इबादत के लायक़ है, उसके सिवा किसी क़िस्म की इबादत किसी के लायक़ नहीं। लेकिन उन लोगों ने अल्लाह के प्यारे नबी की इस साफ़ और हमदर्दी भरी नसीहत को न माना तो अल्लाह ने भी उन्हें अ़ज़ाब पर हाज़िर कर दिया, कि क़ियामत के दिन उनसे ज़बरदस्त बाज़पुर्स (पूछगछ) और उन पर सख़्त अ़ज़ाब होगा। हाँ उनमें से जो तौहीद (ईमान और अल्लाह के एक मानने) पर क़ायम थे वे बचे रहेंगे।

हमने हज़रत इलियास की तारीफ़ व प्रशंसा और भलाई के साथ ज़िक्र पिछले लोगों में भी बाक़ी रखा कि हर मुस्लिम की ज़बान से उन पर दुरूद व सलाम भेजा जाता है। लफ़्ज़ 'इलियास' में दूसरी लुग़त 'इलियासीन' है जैसे इस्माईल में इस्माईन। बनू असद में इस तरह यह लुग़त है। एक तमीमी शे'र में भी यह लुग़त इस तरह लाया गया है। मीकाईल को मीकाल और मीकाईन भी कहा जाता है। इब्राहीम को अब्राहाम, इस्राईल को इस्राईन, तूरे सीना को तूरे सीनीन। ग़र्ज़ कि यह अ़रब की लुग़त (भाषाई प्रयोग और शब्द कोष) में मशहूर व राईज है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में 'सलामुन् अ़ला इल्यासीन' है। बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद नबी करीम सल्ल. हैं।

हम इसी तरह नेक काम करने वालों को नेक बदला देते हैं। यक़ीनन वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। इस जुमले की तफ़सीर गुज़र चुकी है। वल्लाहु तआ़ला आलम।

Maktab E Ashraf

और बेशक लूत (अ़लैहिस्सलाम) भी पैग़म्बरों में से थे। (133) जबकि हमने उनको और उनके मुताल्लिक़ीन को सबको निजात दी (134) सिवाय उस बुढ़िया (यानी उनकी बीवी) के, कि वह रह जाने वालों में रह गई। (135) फिर हमने और सबको हलाक कर दिया। (136) और तुम तो उन (के घरों और ठिकानों) पर सुबह होते और रात में गुज़रा करते हो (137) तो क्या फिर भी नहीं समझते हो? (138)	وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ۝ وَبِالَّيْلِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ ع ٢٥ ٨

हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम

अल्लाह तआ़ला के बन्दे और उसके रसूल हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम का बयान हो रहा है कि उन्हें भी उनकी क़ौम ने झुठलाया। जिस पर ख़ुदा तआ़ला का अ़ज़ाब बरस पड़ा और ख़ुदा ने अपने प्यारे नबी हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को मय उनके घर वालों के निजात दे दी। लेकिन उनकी बीवी ग़ारत हुई, क़ौम के साथ ही हलाक हुई और सारी क़ौम भी तबाह हुई। क़िस्म-क़िस्म के अ़ज़ाब उन पर आये और जिस जगह वे रहते थे वहाँ एक बदबूदार झील बन गई। जिसका पानी बदमज़ा और बदबूदार बदरंग है, जो आने-जाने के (यानी आ़म सड़क के) बिल्कुल क़रीब पड़ती है। तुम तो दिन रात वहाँ से आते रहते हो और उस ख़ौफ़नाक मन्ज़र और भयानक मक़ाम को सुबह व शाम देखते रहते हो। क्या इस आँखों से देखने के बाद भी इबरत (सबक़ और नसीहत) हासिल नहीं करते? सोचते समझते नहीं हो कि किस तरह ये बरबाद कर दिये गये? ऐसा न हो कि यही अ़ज़ाब तुम पर भी आ जायें।

और बेशक यूनुस (अ़लैहिस्सलाम) भी पैग़म्बरों में से थे। (139) जबकि भाग कर भरी हुई कश्ती के पास पहुँचे। (140) सो यूनुस क़ुर्आ़ में शरीक हुए तो यही मुल्ज़िम ठहरे। (141) फिर उनको मछली ने (पूरा-का-पूरा) निगल लिया और यह अपने को मलामत कर रहे थे। (142) सो अगर वह (उस वक़्त) तस्बीह करने वालों में से न होते (143) तो क़ियामत तक उसी "यानी मछली" के पेट में रहते। (144) सो हमने उनको एक मैदान में डाल दिया, और वह उस वक़्त कमज़ोर थे। (145) और हमने उन पर एक बेलदार पेड़ भी उगा दिया था। (146) और हमने उनको एक लाख या इससे भी ज़्यादा	وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ۝ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ۝ فَلَوْلَاۤ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ۝ لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ۝ النصف وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ۝

Maktab-E-Ashraf

आदमियों की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा था (147) फिर वे लोग ईमान ले आए थे, तो हमने उनको एक ज़माने तक ऐश दिया। (148)	وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْيَزِيْدُوْنَ ۝ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का क़िस्सा सूरः यूनुस में बयान हो चुका है। बुख़ारी व मुस्लिम में हदीस है कि किसी बन्दे को यह लायक़ नहीं कि वह मुझको यूनुस बिन मत्ता से अफ़ज़ल कहे। यह नाम मुम्किन है आपके वालिद का हो और यह भी हो सकता है कि वालिदा का हो। यह भाग कर माल व असबाब से लदी हुई कश्ती में सवार हो गये। वहाँ क़ुर्आ-अन्दाज़ी हुई और उसमें इनका नाम आ गया। कश्ती के चलते ही चारों तरफ़ से मौजों उठीं और सख़्त तूफ़ान आया। यहाँ तक कि सब को अपनी मौत का और कश्ती के डूब जाने का यक़ीन हो गया। सब आपस में कहने लगे कि क़ुर्आ डालो, जिसके नाम का क़ुर्आ निकले उसको समुद्र में डाल दो ताकि सब बच जायें और कश्ती इस तूफ़ान से निकल जाये। तीन दफ़ा क़ुर्आ अन्दाज़ी हुई और तीनों दफ़ा ख़ुदा के प्यारे पैग़म्बर हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का नाम ही निकला।

कश्ती वाले आपको पानी में बहाना नहीं चाहते थे लेकिन क्या करते बार-बार की क़ुर्आ-अन्दाज़ी पर भी आप ही का नाम निकलता रहा और फिर आप ख़ुद कपड़े उतारकर उन लोगों के रोकने के बावजूद समुद्र में कूद पड़े। उसी वक़्त अख़्ज़र समुद्र की एक बहुत बड़ी मछली को अल्लाह तआ़ला का फ़रमान सादिर हुआ कि वह दरियाओं को चीरती फाड़ती जाये और हज़रत यूनुस को निगल ले। लेकिन न तो उनका जिस्म ज़ख़्मी हो और न कोई हड्डी टूटे। चुनाँचे उस मछली ने पैग़म्बरे ख़ुदा को निगल लिया और समुद्रों में चलने फिरने लगी।

जब हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम पूरी तरह मछली के पेट में जा चुके तो आपको ख़्याल गुज़रा कि मैं मर चुका हूँ लेकिन जब हाथ पैरों को हरकत दी और वे हिले-जुले तो ज़िन्दगी का यक़ीन करके वहीं खड़े होकर नमाज़ शुरू कर दी और अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ की कि ऐ परवर्दिगार! मैंने तेरे लिये उस जगह को मस्जिद बनाई है जहाँ कोई नहीं पहुँचा होगा। तीन दिन या सात दिन या चालीस दिन या एक दिन से भी कुछ कम या एक रात तक मछली के पेट में रहे। अगर यह हमारी पाकीज़गी बयान करने वालों में से न होते यानी जबकि फ़राख़ी और कुशादगी और अमन व अमान की हालत में थे उस वक़्त की इनकी नेकियाँ अगर न होतीं तो क़ियामत के दिन तक उसी के पेट में रहते। एक हदीस भी इस क़िस्म की है जो अभी आगे बयान होगी इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की हदीस में है कि आराम व राहत के वक़्त अल्लाह तआ़ला की इबादत करो तो वह सख़्ती और परेशानी के वक़्त तुम्हारी मदद करेगा। यह भी कहा गया है कि अगर यह नमाज़ के पाबन्द न होते और यह भी कहा गया है कि अगर मछली के पेट में नमाज़ न पढ़ते, और यह भी कहा गया है कि अगर यह 'ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन' के साथ हमारी तस्बीह न करते। चुनाँचे क़ुरआने करीम की दूसरी आयतों में है कि उसने अन्धेरों में यही कलिमात कहे और हमने उसकी दुआ़ क़बूल फ़रमाकर उसे ग़म से निजात दी। और इसी तरह हम मोमिनों को निजात देते हैं।

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने जब मछली के पेट में इन कलिमात को कहा

तो यह दुआ अल्लाह के अर्श के आस-पास मंडराने लगी और फ़रिश्तों ने कहा ख़ुदाया! यह आवाज़ तो कहीं बहुत दूर की है, लेकिन इस आवाज़ से हमारे कान आशना ज़रूर हैं (यानी पहले से सुनी हुई मालूम होती है)। अल्लाह ने फ़रमाया अब भी नहीं पहचाना यह किसकी आवाज़ है? उन्होंने कहा नहीं पहचाना। फ़रमाया यह मेरे बन्दे यूनुस की आवाज़ है। फ़रिश्तों ने कहा वही यूनुस जिनके नेक आमाल और मक़बूल दुआयें हमेशा आसमान पर चढ़ती रहती हैं? ख़ुदाया! उन पर तो ज़रूर रहम फ़रमा, उनकी दुआ क़बूल फ़रमा ले। वह तो आसानियों में भी तेरा नाम लिया करते थे, उनको बला से निजात दे। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया हाँ मैं उसे निजात दूँगा। चुनाँचे मछली को हुक्म हुआ कि हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम को मैदान में उगल दे। उसने उगल दिया और वहीं अल्लाह तआला ने उन पर उनकी ज़ईफ़ी, कमज़ोरी और बीमारी की वजह से छाँव के लिये कद्दू की बेल उगा दी और एक जंगली बकरी को मुक़र्रर कर दिया जो सुबह व शाम उनके पास आ जाती थी और यह उसका दूध पी लिया करते थे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की रिवायत से ये वाक़िआत मरफ़ूअ़ हदीसों से सूरः अम्बिया की तफ़सीर में बयान हो चुके हैं। हमने उन्हें उस ज़मीन में डाल दिया जहाँ सब्ज़ा और कोई घास-फूँस उगी हुई कुछ न था। दजला के किनारे या यमन की सरज़मीन पर यह डाल दिये गये थे। यह उस वक़्त इतने कमज़ोर थे जैसे परिन्दों के बच्चे होते हैं, या बच्चा जिस वक़्त पैदा होता है। यानी सिर्फ़ साँस चल रहा था और ताक़त हिलने-जुलने की भी न थी। 'यक़्तीन' कद्दू की बेल को भी कहते हैं और उस दरख़्त को जिसका तना न हो यानी बेल हो, और उस दरख़्त को भी जिसकी उम्र एक साल से ज़्यादा नहीं होती। कद्दू में बहुत से फ़ायदे हैं, यह बहुत जल्द उगेगा और बढ़ता रहेगा। इसके पत्तों का साया सुकून बख़्श होता है क्योंकि वे बड़े-बड़े होते हैं और इसके पास मक्खियाँ नहीं आतीं और यह ग़िज़ा का काम दे जाता है और छिलके और गूदे समेत खाया जाता है। सही हदीस में है कि नबी करीम सल्ल. को कद्दू यानी लौकी बहुत पसन्द थी और बरतन में से चुन-चुनकर खाते थे।

फिर उन्हें एक लाख बल्कि ज़्यादा आदमियों की तरफ़ रिसालत के साथ भेजा गया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे पहले आप रसूल न थे। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं मछली के पेट में जाने से पहले ही आप उस क़ौम की तरफ़ भेजे गये थे, दोनों क़ौलों का टकराव इस तरह ख़त्म हो सकता है कि पहले भी उनकी तरफ़ भेजे गये थे अब दोबारा भी उनही की तरफ़ भेजे गये, और वे सब ईमान ले आये और आपकी तस्दीक़ की। अ़ल्लामा बग़वी रह. कहते हैं कि मछली के पेट से निजात पाने के बाद दूसरी क़ौम की तरफ़ भेजे गये थे, यहाँ "औ" 'बल्कि' के मायने में इस्तेमाल हुआ है और वे एक लाख तीस हज़ार या इससे भी कुछ ऊपर एक लाख चालीस हज़ार से भी ज़्यादा या सत्तर हज़ार से भी बढ़कर, या एक लाख दस हज़ार, और एक ग़रीब मरफ़ूअ़ हदीस की रू से एक लाख बीस हज़ार थे। यह मतलब भी बयान किया गया है कि इनसानी अन्दाज़ा एक लाख से ज़्यादा ही था। इब्ने जरीर रह. का यही मस्लक है और यही मस्लक उनका आयत 'औ अशद्-द ख़श्यतन्' और आयत 'औ अद्ना' में है। यानी इससे कम नहीं, इससे ज़्यादा ही।

पस हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम की क़ौम सब की सब मुसलमान हो गई। हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम की तस्दीक़ की और ख़ुदा पर ईमान ले आये। हमने भी उनके मुक़र्ररा वक़्त यानी मौत की घड़ी तक दुनियावी फ़ायदे दिये। एक और आयत में है कि किसी बस्ती के ईमान ने उन्हें (अ़ज़ाब आ चुकने के बाद) नफ़ा नहीं दिया सिवाय क़ौमे यूनुस के, वे जब ईमान लाये तो हमने उन पर से अ़ज़ाब हटा लिया और उन्हें

एक निर्धारित वक़्त तक लाभान्वित (फ़ायदा उठाने वाला) किया।

नोटः वाक़िआ तो पहले भी गुज़र चुका है। हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने अपनी नाफ़रमान क़ौम को अल्लाह के पैग़ाम की तरफ़ बुलाया, वे न माने तो उनको अ़ज़ाब की ख़बर सुनाई और फिर यह समझकर कि यक़ीनी तौर पर उन पर अ़ज़ाब आने वाला है आप शहर छोड़कर चले गये। उधर इनके जाते ही अ़ज़ाब के आसार ज़ाहिर होने शुरू हो गये। क़ौम को अपनी ग़लती का एहसास हुआ और वे फ़ौरन रोने और फ़रियाद करने लगे, अल्लाह के सामने सज्दे में गिर पड़े, अपनी ग़लती का इक़रार किया और सच्चे दिल से तौबा की। अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब टल गया। हज़रत यूनुस को इसकी ख़बर पहुँची तो आप शर्म की वजह से वापस न आ सके और एक कश्ती में बैठ गये। अल्लाह तआ़ला को आपका इस तरह उन तौबा करने वाले बन्दों से मुँह फेरकर चले जाना पसन्द न आया और आपके साथ मछली वाला हादसा पेश आया। बाद में उनके अल्लाह की तस्बीह बयान करने पर अल्लाह ने उन्हें इस ग़म से निजात बख़्शी।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ۝ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ۝ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ۝ وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ۝ مَا لَكُمْ ۟ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ۝ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝

सो उन लोगों से पूछिए कि क्या अल्लाह तआ़ला के लिए तो बेटियाँ और तुम्हारे लिए बेटे? (149) हाँ, क्या हमने फ़रिश्तों को औरत बनाया है? और वे (उनके बनाए जाने के वक़्त) देख रहे थे? (150) ख़ूब सुन लो कि वे लोग अपनी तरफ़ से बात बनाकर ऐसा कहते हैं (151) कि (नऊज़ु बिल्लाह) अल्लाह औलाद वाला है, और वे यक़ीनन (बिल्कुल) झूठे हैं। (152) क्या अल्लाह तआ़ला ने बेटों के मुक़ाबले में बेटियाँ ज़्यादा पसन्द कीं? (153) तुमको क्या हो गया, तुम कैसा (बेहूदा) हुक्म लगाते हो? (154) फिर क्या तुम (अ़क़्ल और) सोच से काम नहीं लेते हो? (155) हाँ, क्या तुम्हारे पास (इस पर) कोई वाज़ेह दलील मौजूद है? (156) सो तुम अगर (इसमें) सच्चे हो तो अपनी वह किताब पेश करो। (157) और उन लोगों ने अल्लाह में और जिन्नात में (भी) रिश्तेदारी क़रार दी है, और (जिस-जिसको ये लोग ख़ुदा का शरीक ठहरा रहे हैं उनकी तो यह कैफ़ियत है कि उनमें जो) जिन्नात हैं, ख़ुद उनका यह अ़क़ीदा है कि (उनमें जो काफ़िर हैं) वे (अ़ज़ाब में) गिरफ़्तार होंगे। (158) अल्लाह उन बातों से पाक है जो-जो ये बयान करते हैं (159) मगर जो अल्लाह तआ़ला के ख़ास (ईमान वाले) बन्दे हैं। (160)

Maktab E Ashraf

इनसे ज़रा पूछिये

अल्लाह तआला मुश्रिकों की बेवक़ूफ़ी बयान फ़रमा रहा है कि अपने लिये तो लड़के पसन्द करते हैं और ख़ुदा के लिये लड़कियाँ मुक़र्रर करते हैं। अगर लड़की होने की ख़बर ये पायें तो चेहरे काले पड़ जाते हैं और अल्लाह की लड़कियाँ साबित करते हैं। पस फ़रमाता है इनसे पूछो तो सही यह तक़सीम कैसी है? कि तुम्हारे लिये तो लड़के हों और ख़ुदा के लिये लड़कियाँ हों। फिर फ़रमाता है कि ये फ़रिश्तों को किस वजह से लड़कियाँ कहते हैं? क्या उनकी पैदाईश के वक़्त ये मौजूद थे? क़ुरआन की एक और आयतः

وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ........ الخ

(सूरः ज़ुख़रुफ़ आयत 19) में भी यही बयान है। दर असल यह क़ौल इनका बिल्कुल ग़लत है कि ख़ुदा के यहाँ औलाद है। वह औलाद से पाक है, पस इन लोगों के तीन झूठ और तीन कुफ़्र हुए। अव्वल तो यह कि फ़रिश्ते ख़ुदा की औलाद हैं, दूसरे यह कि औलाद भी लड़कियाँ, तीसरे यह कि ख़ुद फ़रिश्तों की इबादत शुरू कर दी। फिर फ़रमाता है कि आख़िर किस चीज़ ने ख़ुदा को मजबूर किया कि उसने लड़के तो लिये नहीं और लड़कियाँ अपनी ज़ात के लिये पसन्द फ़रमाईं? जैसे एक दूसरी आयत में है कि तुम तो लड़कों से नवाज़े जाओ और अल्लाह फ़रिश्तों को अपनी लड़कियाँ बनाये! यह तो तुम्हारी बहुत ही बुरी परले दर्जे की बकवास और बेहूदा बात है। यहाँ फ़रमाया क्या तुम्हें अक़्ल नहीं जो ऐसी नासमझी और जहालत की बातें बनाते हो? तुम समझते नहीं हो कि ख़ुदा पर झूठ बाँधना कैसा बड़ा गुनाह है। अच्छा अगर कोई दलील तुम्हारे पास हो तो लाओ उसी को पेश करो, या अगर आसमानी किताब से तुम्हारे पास क़ौल की सनद हो और तुम सच्चे हो तो लाओ, उसी को सामने ले आओ। यह तो ऐसी लचर और फ़ुज़ूल बात है जिसकी कोई अक़्ली या नक़्ली दलील हो ही नहीं सकती। और इतने ही पर बस न किया बल्कि जिन्नात में और ख़ुदा में भी रिश्तेदारी क़ायम की।

मुश्रिकों के इस क़ौल पर कि फ़रिश्ते अल्लाह की लड़कियाँ हैं, हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने सवाल किया कि "फिर उनकी माँयें कौन हैं?" तो इन्होंने कहा जिन्न सरदारों की लड़कियाँ, हालाँकि ख़ुद जिन्नात को इसका इल्म और यक़ीन है कि इस क़ौल के क़ायल क़ियामत के दिन अ़ज़ाब में मुब्तला किये जायेंगे। उनमें बाज़ अल्लाह के दुश्मन तो यहाँ तक हिमाक़त करते थे कि शैतान भी ख़ुदा का भाई है, नऊज़ू बिल्लाह। अल्लाह तआ़ला इससे बहुत पाक व बरी और बिल्कुल दूर है जो ये मुश्रिक उस ज़ात पर इल्ज़ाम लगाते और झूठे बोहतान बाँधते हैं। इसके बाद इनमें से उन लोगों को अलग कर लिया जो हक़ के ताबेदार हैं और तमाम नबियों और रसूलों पर ईमान रखते हैं। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि यह इस्तिसना (इनसे अलग करना) 'इन्नहुम ल-मुह्ज़रून' से है। यानी सब के सब अ़ज़ाब में फाँस लिये जायेंगे मगर अल्लाह के वे बन्दे जो इख़्लास वाले (यानी ख़ालिस अल्लाह के लिये अ़मल करने वाले) थे। यह क़ौल ज़रा ग़ौर-तलब है। वल्लाहु आलम।

सो तुम और तुम्हारे सारे माबूद, (161) अल्लाह से किसी को नहीं फेर सकते, (162) मगर उसी को जो कि (ख़ुदा तआ़ला के इल्म में) जहन्नम में जाने वाला है। (163) और हममें	فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ۝ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ۝ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ۝ وَمَا

مِنَّـآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ۝ وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ۝ وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ۝ وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ۝ لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝	से हर एक का एक तयशुदा दर्जा है। (164) और (ख़ुदा के हुज़ूर में हुक्म सुनने के वक़्त या इबादत के वक़्त) हम सफ़ बाँधे खड़े होते हैं। (165) और हम ख़ुदा की पाकी बयान करने में भी लगे रहते हैं। (166) और ये लोग कहा करते थे (167) कि अगर हमारे पास कोई नसीहत (की किताब) पहले लोगों की (किताबों के) तौर पर आती (168) तो हम अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दे होते। (169) फिर ये लोग उसका इनकार करने लगे, सो (ख़ैर) अब उनको (इसका अन्जाम) मालूम हुआ जाता है। (170)

Maktaba Ashraf

एक निर्धारित और तयशुदा मुक़ाम

अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों से फ़रमा रहा है कि तुम्हारी गुमराही और कुफ़्र व शिर्क की तालीम वही क़बूल करेंगे जो जहन्नम के लिये पैदा किये गये होंगे। जो अ़क़्ल से ख़ाली, कानों से बहरे और आँखों से अन्धे होंगे, जो जानवरों की तरह बल्कि उनसे भी बदतर होंगे। जैसे एक और जगह फ़रमाया कि इससे वही गुमराह हो सकते हैं जो अ़क़्ल से ख़ाली और बातिल के शैदाई हों। इसके बाद उनकी इस बकवास से फ़रिश्तों की बराअत (बेताल्लुक़ी) और उनकी तस्लीम व रज़ा, ईमान व इताअ़त का ज़िक्र फ़रमाया कि वे ख़ुद कहते हैं कि हम में से हर एक के लिये एक मुक़र्रर जगह और एक इबादत का ख़ास मक़ाम है, जिससे न हम हट सकते हैं न उसमें कमी-बेशी कर सकते हैं।

हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि आसमान चरचरा रहा है और वास्तव में चरचराना भी चाहिये। उसमें एक क़दम रखने की भी जगह बाक़ी नहीं जहाँ कोई न कोई फ़रिश्ता ऐसा नहीं जो रुकूअ़, सज्दे में मसरूफ़ न हो। फिर आपने इन तीनों आयतों की तिलावत की। एक रिवायत में दुनिया वाले आसमान का लफ़्ज़ है। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक बालिश्त भर जगह आसमानों में ऐसी नहीं जहाँ पर किसी न किसी फ़रिश्ते के क़दम या पेशानी न हो। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि पहले तो मर्द और औ़रत एक साथ नमाज़ पढ़ते थे लेकिन इस आयत के नाज़िल होने के बाद मर्दों को आगे बढ़ा दिया गया और औ़रतों को पीछे कर दिया गया। और हम सब फ़रिश्ते सफ़ बाँधकर ख़ुदा तआ़ला की इबादत किया करते हैं। आयत 'वस्सॉफ़्फ़ाति सफ़्फ़न्' (यानी इसी सूरत के शुरू में) की तफ़सीर में इसका बयान गुज़र चुका है।

वलीद बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस आयत के नाज़िल होने तक नमाज़ की सफ़ें नहीं थीं फिर सफ़ें मुक़र्रर हो गईं। हज़रत उमर रज़ि. तकबीर के बाद लोगों की तरफ़ मुँह करके फ़रमाते थे कि "सफ़ें सही तरीक़े पर दुरुस्त करो और सीधे खड़े हो जाओ! अल्लाह तआ़ला तुम से भी फ़रिश्तों की तरह सफ़बन्दी चाहता है" जैसे कि वे (यानी फ़रिश्ते) फ़रमाते हैं:

وَاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ.

कि हम सफ़ बाँधकर खड़े होते हैं।

ऐ फ़ुलाँ आगे बढ़ और ऐ फ़ुलाँ पीछे हट। फिर आगे बढ़कर नमाज़ शुरू करते। (इब्ने अबी हातिम)

सही मुस्लिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि हमको तीन फ़ज़ीलतें ऐसी दी गई हैं जिनमें और कोई हमारे साथ नहीं। हमारी सफ़ें फ़रिश्तों जैसी बनाई गई हैं, हमारे लिये सारी ज़मीन मस्जिद बनाई गई है और हमारे लिये ज़मीन की मिट्टी पाक करने वाली बनाई गई......। हम अल्लाह की तस्बीह और पाकी बयान करने वाले हैं। उसकी बुज़ुर्गी और बड़ाई बयान करते हैं। तमाम नुक़सानों (कमियों और ख़ामियों) से उसे पाक मानते हैं। हम सब फ़रिश्ते उसके गुलाम हैं। उसके मोहताज हैं। उसके सामने अपनी पस्ती और आजिज़ी का इज़हार करने वाले हैं (ये सारी बातें फ़रिश्तों की ज़बानी कही जा रही हैं)। पस ये तीनों सिफ़तें फ़रिश्तों की हैं। यह भी कहा गया है कि तस्बीह करने वालों से मुराद नमाज़ पढ़ने वाले हैं।

एक और आयत में हैः

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا....... الخ

यानी काफ़िरों ने कहा कि ख़ुदा की औलाद है। अल्लाह तआ़ला इससे पाक है। अलबत्ता फ़रिश्ते उसके मोहतरम (सम्मानित) बन्दे हैं। उसके फ़रमान से आगे नहीं बढ़ते, उसके अहकाम पर अ़मल करते हैं। वह उनका मक़ाम (स्थान और जगह) अच्छी तरह जानता है। वे किसी की शफ़ाअ़त का भी इख़्तियार नहीं रखते सिवाय उसके जिसके लिये रहमान राज़ी हो। वे तो अल्लाह के ख़ौफ़ से थरथराते रहते हैं। उनमें से अगर कोई ख़ुद को इबादत के लायक़ कहे तो हम उसे जहन्नम में झोंक दें, ज़ालिमों की सज़ा हमारे यहाँ यही है। नबी करीम सल्ल. के उनके पास आने से पहले तो ये कहते थे कि अगर हमारे पास कोई आता जो हमें राहे ख़ुदा की तालीम देता, हमारे सामने पहले गुज़रे लोगों के वाक़िआ़त बतौर नसीहत पेश करता और हमारे पास अल्लाह की किताब ले आता तो यक़ीनन हम पक्के सच्चे मुसलमान बन जाते। जैसे एक और आयत में हैः

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ....... الخ

यानी बड़ी पुख़्ता क़समें खा-खाकर कहते थे कि अगर कोई अल्लाह का नबी हमारी मौजूदगी में आ जाये तो हम इताअ़त (उसकी दावत) क़बूल कर लेंगे और हिदायत के रास्ते की तरफ़ सबसे पहले दौड़ेंगे। लेकिन जब अल्लाह के नबी आ गये तो भाग खड़े हुए। एक और आयत में फ़रमायाः

اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ......... الخ

(सूरः अन्आ़म आयत 156-157)

पस यहाँ फ़रमाया कि जब यह तमन्ना पूरी हुई तो कुफ़्र करने लगे। अब इन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा कि ख़ुदा से कुफ़्र करने और उसके नबी को झुठलाने का क्या नतीजा निकलता है।

और हमारे ख़ास बन्दों यानी पैग़म्बरों के लिए हमारा यह क़ौल पहले ही से मुक़र्रर हो चुका है (171) कि बेशक वही ग़ालिब किए जाएँगे। (172) और (हमारा तो क़ायदा आ़म है	وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ۝

Maktaba Ashraf

कि) हमारा ही लश्कर ग़ालिब रहता है। (173) तो आप (तसल्ली रखिए और) थोड़े ज़माने तक (सब्र कीजिए और उनकी मुख़ालफ़त और तकलीफ़ देने) का ख़्याल न कीजिए। (174) और (ज़रा) उनको देखते रहिए, सो जल्द ही ये भी देख लेंगे। (175) क्या हमारे अज़ाब का तक़ाज़ा कर रहे हैं? (176) सो वह (अज़ाब) जब उनके सामने आ नाज़िल होगा, सो वह दिन उन लोगों का जिनको डराया जा चुका था बहुत ही बुरा होगा (टल न सकेगा)। (177) और आप थोड़े ज़माने तक उनका ख़्याल न कीजिए। (178) और देखते रहिए। सो जल्दी ही ये लोग भी देख लेंगे। (179)	وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ۝ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ۝

एक फ़ैसला

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि हम तो पहली आसमानी किताबों में भी लिख आये हैं, पहले नबियों की ज़बानी भी दुनिया को सुना चुके हैं कि दुनिया और आख़िरत में हमारे रसूल और उनके ताबेदारों ही का अन्जाम बेहतर होता है। जैसे फ़रमायाः

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ.....الخ

(सूरः मुजादला आयत 21)
और फ़रमायाः

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا.......... الخ

यानी मेरे रसूल और ईमान वाले ही दोनों जहान में ग़ालिब रहेंगे।

यहाँ भी फ़रमाया कि रसूलों से हमारा वायदा हो चुका है कि वे कामयाब और मदद पाने वाले हैं। हम ख़ुद उनकी मदद करेंगे। देखते चले आओ कि उनके दुश्मन किस तरह ख़ाक में मिला दिये गये। याद रखो हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहेगा और ग़लबा व तसल्लुत (इख़्तियार वर्चस्व) उनही का रहेगा। तू एक निर्धारित वक़्त तक सब्र व सुकून से इनका मामला देखता रह। इनके तकलीफ़ पहुँचाने और सताने पर सब्र कर, हम तुझे इन सब पर ग़ालिब कर देंगे। दुनिया ने देख लिया कि यही हुआ। तथा तू इन्हें देखता रह कि किस तरह ख़ुदा की पकड़ इन पर नाज़िल होती है और किस तरह ये ज़िल्लत व अपमान के साथ पकड़ लिये जाते हैं। ये ख़ुद उन तमाम रुस्वाईयों को अभी-अभी (यानी जल्द ही) देख लेंगे। ताज्जुब है कि ये बावजूद तरह-तरह के अज़ाब उनके मैदानों में, महलों में, अंगनाईयों में देखते हैं लेकिन फिर भी समझ और नसीहत हासिल नहीं करते। वह दिन इन पर बड़ा भारी दिन होगा। हलाक और बरबाद कर दिये जायेंगे।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि ख़ैबर के मैदानों में हुज़ूर सल्ल. का लश्कर सुबह ही सुबह कुफ़्फ़ार की

बेख़बरी में पहुँच गया, वे लोग अपनी आदत के मुताबिक़ अपने खेतों के औज़ार व उपकरण (आलात) लेकर शहरों से निकले, इस ख़ुदाई फ़ौज को देखकर भागे और शहर वालों को ख़बर दी। उस वक़्त आपने यही फ़रमाया कि "अल्लाह बहुत बड़ा है, ख़ैबर ख़राब हुआ" हम जब किसी क़ौम के मैदानों में उतरते हैं तो उस वक़्त उनकी दुर्गत (बुरा हाल) होती है।

फिर दोबारा पहले हुक्म की ताकीद की कि तू उनसे एक निर्धारित मुद्दत तक के लिये बेपरवाह हो जा और उन्हें छोड़ दे। और देखता रह, ये भी देख लेंगे।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝	आपका परवर्दिगार जो बड़ी अज़मत वाला है, उन बातों से पाक है जो ये (काफ़िर) बयान करते हैं। (180) और सलाम हो पैग़म्बरों पर। (181) और तमाम की तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम आलम का परवर्दिगार है। (182)

बड़ी इज़्ज़त वाला

अल्लाह तआ़ला उन तमाम चीज़ों से अपनी बराअत (बरी होना) ज़ाहिर फ़रमाता है जो मुश्रिक लोग उसकी तरफ़ मन्सूब करते थे। जैसे औलाद वाला, शरीक वग़ैरह। वह बहुत बड़ी और कभी फ़ना न होने वाली इज़्ज़त वाला है। इन झूठे और बोहतान बाज़ लोगों के बोहतान और बकवास से पाक और दूर है। अल्लाह के रसूलों पर सलाम है और उनकी तमाम बातें उन ऐबों से पाक हैं जो मुश्रिक लोगों की बातों में मौजूद हैं। बल्कि नबियों की बातें और जो सिफ़तें वे अल्लाह की पाक ज़ात की बयान करते हैं सब सही और बर्हक़ हैं। उसी की ज़ात के लिये तमाम तारीफ़ व प्रशंसा लायक़ है। दुनिया और आख़िरत में इब्तिदा से और इन्तिहा तक वही तारीफ़ के लायक़ है। हर हाल में क़ाबिले तारीफ़ वही है। तस्बीह से हर तरह के नुक़सान (कमी और ख़ामी) की उस पाक ज़ात से दूरी साबित होती है, तो लाज़िम है कि हर तरह के कमालात उसकी अकेली ज़ात में हों। इसी को साफ़ लफ़्ज़ों में तारीफ़ से साबित किया है। ताकि नुक़सानात की नफ़ी और कमालात का सुबूत हो जाये। ऐसे ही क़ुरआने करीम की बहुत सी आयतों में तस्बीह और तारीफ़ का एक साथ बयान हुआ है।

हज़रत क़तादा रह. से मन्क़ूल है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जब तुम मुझ पर सलाम भेजो तो और नबियों पर भी सलाम भेजो, क्योंकि मैं भी उन नबियों में से एक नबी हूँ। (इब्ने अबी हातिम)

यह हदीस मुस्नद में भी मौजूद है। अबू यअ़ला की एक ज़ईफ़ हदीस में है कि जब हुज़ूर सल्ल. सलाम का इरादा करते तो इन तीनों आयतों को पढ़कर सलाम करते। इब्ने अबी हातिम में है कि जो शख़्स यह चाहे कि भरपूर पैमाने से नाप कर (यानी बहुत ज़्यादा सवाब और) अज्र पाये तो वह जिस किसी मज्लिस में हो वहाँ से उठते हुए ये तीनों आयतें (यानी इसी सूरत की आख़िरी तीन आयतें) पढ़ ले। मुस्नद में यह रिवायत हज़रत अ़ली रज़ि. से मौक़ूफ़न मौजूद है। तबरानी की हदीस में है कि जो शख़्स हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तीन मर्तबा इन तीनों आयतों की तिलावत करे उसे भरपूर अज्र पूरे पैमाने से नाप कर मिलेगा। मज्लिस

Maktab E Ashraf

के कफ़्फ़ारे के बारे में बहुत सी हदीसों में आया है कि यह पढ़ेः

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ.

सुब्हानकल्लाहुम्-म व बि-हम्दि-क ला इला-ह इल्ला अन्-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलैक।

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि सूरः सॉफ़्फ़ात की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः सॉद

सूरः सॉद मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 88 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ○ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ○ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ○	सॉद। क़सम है क़ुरआन की जो नसीहत से पुर है। (1) बल्कि (ख़ुद) ये कुफ़्फ़ार (ही) तास्सुब और (हक़ की) मुख़ालफ़त करते हैं। (2) उनसे पहले बहुत-सी उम्मतों को हम (अ़ज़ाब से) हलाक कर चुके हैं, सो उन्होंने (हलाकत के वक़्त) बड़ी हाय-पुकार की, और वह वक़्त छुटकारे और निजात का न था। (3)

यह क़ुरआन सरासर नसीहत है

हुरूफ़े मुक़त्तआ़त, जो सूरतों के शुरू में आते हैं उनकी पूरी तफ़सीर सूरः ब-क़रह के शुरू में गुज़र चुकी है। जहाँ क़ुरआन की क़सम खाई और उसे पन्द व नसीहत करने वाला फ़रमाया। क्योंकि इसकी बातों पर अ़मल करने वाले की दीन व दुनिया दोनों संवर जाती हैं। एक और आयत में हैः

فِيْهِ ذِكْرُكُمْ.

कि इस क़ुरआन में तुम्हारे लिये नसीहत है। और यह भी मतलब है कि क़ुरआन शराफ़त व बुज़ुर्गी, इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत वाला है। अब क़सम का जवाब बाज़ के नज़दीक तो-

اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ......... الخ

है (कि यही वे लोग हैं, इन सब ने रसूलों का झुठलाया था)। बाज़ कहते हैं कि यह आयत हैः

اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ......... الخ

(कि दोज़ख़ियों का आपस में लड़ना-झगड़ना बिल्कुल सच्ची बात है) लेकिन यह ज़्यादा मुनासिब मालूम

Maktab E Ashraf

नहीं होता। हज़रत कतादा रह. फ़रमाते हैं कि इसका जवाब इसके बाद की आयत है। इब्ने जरीर रह. इसी को मुख़्तार (पसन्दीदा और अच्छा) बताते हैं। बाज़ अ़रबी भाषा के माहिरीन कहते हैं कि इसका जवाब "सॉद" है और इस लफ़्ज़ के मायने सच्चाई और हक़्क़ानियत के हैं। एक क़ौल यह भी है कि पूरी सूरत का खुलासा इस क़सम का जवाब है। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाता है कि यह क़ुरआन तो सरासर इबरत व नसीहत है, मगर इससे फ़ायदा वही उठाते हैं जिनके दिल में ईमान है। काफ़िर लोग इसके फ़ायदे से यूँ मेहरूम हैं कि वे घमंडी, सरकश और विरोधी हैं। ये पहले लोगों के अन्जाम पर नज़र डालें और अपने अन्जाम से डरें। पहली उम्मतों को इसी जुर्म पर हमने तबाह व बरबाद कर दिया है। अ़ज़ाब आ पड़ने पर तो बड़े रोये बिलके, ख़ूब आह व फ़रियाद की लेकिन उस वक़्त की तमाम बातें बेसूद हैं। जैसे फ़रमायाः

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَأْسَنَا........ الخ

कि हमारे अ़ज़ाब को मालूम करके उनसे बचना और भागना चाहा। लेकिन यह कैसे हो सकता है? इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अब भागने का वक़्त नहीं न फ़रियाद का वक़्त है, उस वक़्त कोई फ़रियाद नहीं सुन सकता, चाहे कितना ही चीख़ो चिल्लाओ बिल्कुल बेसूद है। अब तौहीद की क़बूलियत, नफ़ा और तौबा बेकार है, यह बेवक़्त की पुकार है। यह भागने और निकल जाने का वक़्त नहीं। वल्लाहु आलम।

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝ وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ۝ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝ اَمْ

और उन (क़ुरैश के) काफ़िरों ने इस बात पर ताज्जुब किया कि उनके पास उन (ही) में से एक (पैग़म्बर) डराने वाला आ गया, और कहने लगे कि यह (मोजिज़ों में) जादू और (नुबुव्वत के दावे में) झूठा है। (4) (और) क्या (यह शख़्स सच्चा हो सकता है कि) उसने इतने माबूदों की जगह एक ही माबूद रहने दिया? वाक़ई यह बहुत अ़जीब बात है। (5) और (तौहीद का मज़मून सुनकर) उन कुफ़्फ़ार में के सरदार यह कहते हुए चले कि (यहाँ से) चलो और अपने माबूदों (की इबादत पर) क़ायम रहो, यह कोई मतलब की बात है। (6) हमने तो यह बात (अपने) पिछले मज़हब में नहीं सुनी, हो न हो यह (इस शख़्स की) गढ़त है। (7) क्या हम सबमें से इसी शख़्स पर अल्लाह का कलाम नाज़िल किया गया? बल्कि ये लोग (ख़ुद) मेरी 'वही' की तरफ़ से शक (यानी इनकार) में हैं। बल्कि (असल वजह यह है कि) उन्होंने अभी तक मेरे अ़ज़ाब का मज़ा नहीं चखा। (8) क्या

Maktaba Ashraf

عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۝ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا قف فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ۝ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ۝	उन लोगों के पास आपके परवर्दिगार ज़बरदस्त, फ़य्याज़ की रहमत के ख़ज़ाने हैं? (जिसमें नुबुव्वत भी दाख़िल है) (9) या क्या उनको आसमान व ज़मीन और जो चीज़ें उनके दरमियान हैं उनका इख़्तियार हासिल है? (अगर इख़्तियार है) तो उनको चाहिए कि सीढ़ियाँ लगाकर (आसमान पर) चढ़ जाएँ। (10) इस मक़ाम पर उन लोगों की यूँ ही एक भीड़ है, ये सब (रसूलों के मुख़ालिफ़) गिरोहों में से हैं जो शिकस्त दिए जाएँगे। (11)

काफ़िरों के कुछ बेहूदा ख़्यालात

हुज़ूर सल्ल. की रिसालत पर काफ़िरों के ताज्जुब का इज़हार हो रहा है। जैसे एक और आयत में है:

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا......... الخ

क्या लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ कि उनमें से एक इनसान की तरफ़ हमने 'वही' भेजी कि वह लोगों को होशियार कर दे और ईमान वालों को इस बात की ख़ुशख़बरी सुनाये कि उसके पास उनके लिये बेहतरीन तैयारी है। काफ़िर तो हमारे रसूल को खुला जादूगर कहने लगे।

यहाँ है कि उन्हीं में से उन्हीं जैसे एक इनसान के रसूल बनकर आने पर उन्हें ताज्जुब हुआ और कहने लगे कि यह तो जादूगर और झूठा है। रसूलुल्लाह सल्ल. की रिसालत पर ताज्जुब के साथ ख़ुदा के एक होने पर भी उनको ताज्जुब मालूम हुआ और कहने लगे कि लो और सुनो! इतने सारे ख़ुदाओं के बदले यह तो कहता है कि ख़ुदा एक ही है और उसका कोई किसी तरह का शरीक ही नहीं। उन बेवक़ूफ़ों को अपने बड़ों की देखा-देखी जिस शिर्क व कुफ़्र की आ़दत थी, उसके ख़िलाफ़ आवाज़ सुनकर उनके दिल दुखने और रुकने लगे और वे तौहीद को एक अनोखी और अन्जान चीज़ समझने लगे। उनके बड़ों और सरदारों ने तकब्बुर के साथ मुँह मोड़ते हुए ऐलान किया कि अपने पुराने मज़हब पर जमे रहो, इसकी बात न मानो और अपने माबूदों की इबादत करते रहो। यह तो सिर्फ़ अपने मतलब की बातें कहता है। यह इस बहाने अपना सिक्का जमा रहा है कि यह तुम्हारा सबसे बड़ा बन जाये और तुम इसके हुक्म के ताबे हो जाओ।

इन आयतों का शाने नुज़ूल (उतरने का मौक़ा और सबब) यह है कि क़ुरैशियों के सम्मानित और सरदार लोग एक मर्तबा जमा हुए। उनमें अबू जहल बिन हिशाम, आ़स बिन वाईल, अस्वद बिन मुत्तलिब, अस्वद बिन यग़ूस वग़ैरह भी थे। सब ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया कि चलकर आज अबू तालिब से आख़िरी फ़ैसला कर लें। वह इन्साफ़ के साथ एक बात हमारे ज़िम्मे डाल दे और एक अपने भतीजे के ज़िम्मे, क्योंकि यह अब अपनी उम्र के आख़िरी दौर में पहुँच चुके हैं। अगर मर गये और उनके बाद हमने मुहम्मद को कोई मुसीबत पहुँचाई तो अ़रब के लोग हमें ताना देंगे कि बूढ़े की मौजूदगी तक तो कुछ न चली और उनकी मौत के बाद बहादुरी आ गई। चुनाँचे ये चले एक आदमी भेजकर अबू तालिब से इजाज़त

माँगी। इजाज़त मिलने पर सब घर में आ गये और कहा सुनिये जनाब! आप हमारे सरदार हैं, बुज़ुर्ग हैं, बड़े हैं। हम आपके भतीजे से तंग आ गये हैं। आप इन्साफ़ के साथ हम में और उसमें फ़ैसला कर दीजिये, हम आपसे इन्साफ़ चाहते हैं, वह हमारे माबूदों को बुरा न कहें। अबू तालिब ने आदमी भेजकर रसूलुल्लाह सल्ल. को बुलवाया और कहा मेरी जान! आप देखते हैं कि आपकी क़ौम के सरदार और बुज़ुर्ग सब जमा हुए हैं और आप से सिर्फ़ यह चाहते हैं कि आप इनके माबूदों की तौहीन और बुराई न करें और ये आपके दीन में आज़ादी दे रहे हैं। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- "चचा जान! क्या मैं इन्हें बेहतरीन और बड़ी भलाई की तरफ़ न बुलाऊँ?" अबू तालिब ने कहा वह क्या है? फ़रमाया ये एक कलिमा कह दें, सिर्फ़ उसके कहने की वजह से सारा अ़रब इनके मातहत (क़ब्ज़े में) हो जायेगा और सारे अ़जम (अ़रब से बाहर इलाक़े) पर इनकी हुकूमत हो जायेगी। अबू जहल मलऊन ने सवाल किया कि अच्छा बतलाओ वह ऐसा कौनसा कलिमा है? एक नहीं हम दस मर्तबा कहने को तैयार हैं। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया कहो 'ला इला-ह इल्लल्लाहु'। पस यह सुनना था कि हंगामा बरपा कर दिया और कहने लगे- इसके अ़लावा जो तू माँगे हम देने को तैयार हैं। आप सल्ल. ने फ़रमाया अगर तुम सूरज को भी लाकर मेरे हाथ पर रख दोगे तो भी मैं तुमसे इस कलिमे के सिवा और कुछ नहीं माँगूँगा।

इस बात को सुनकर सब लोग ग़ुस्से और ग़ज़ब से नाराज़ होकर खड़े हो गये और कहने लगे वल्लाह! हम तुझे और तेरे ख़ुदा को गालियाँ देंगे। जिसने तुझे यह हुक्म दिया है। अब ये चले और इनके सरदार यह कहते रहे कि जाओ अपने दीन पर और अपने माबूदों की इबादत पर जमे रहो। मालूम हो गया कि इसका तो इरादा ही और है, यह तो बड़ा बनना चाहता है। (इब्ने अबी हातिम वग़ैरह)

एक रिवायत में यह भी है कि उनके चले जाने के बाद हुज़ूर सल्ल. ने अपने चचा से कहा कि आप ही इस कलिमे को पढ़ लीजिये। उसने कहा नहीं! मैं तो अपने बाप-दादों और क़ौम के बड़ों के दीन पर ही रहूँगा। इस पर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. को फ़रमाया कि जिसे तू चाहे हिदायत नहीं कर सकता। एक और रिवायत में है कि उस वक़्त अबू तालिब बीमार थे और उसी बीमारी में वह मरे भी। जिस वक़्त हुज़ूर सल्ल. तशरीफ़ लाये उस वक़्त अबू तालिब के पास एक आदमी के बैठने की जगह ख़ाली थी। बाक़ी तमाम घर आदमियों से भरा हुआ था। अबू जहल ख़बीस ने ख़्याल किया कि अगर आप आकर अपने चचा के पास बैठ गये तो ज़्यादा असर डाल सकेंगे इसलिये यह मलऊन कूदकर वहाँ जा बैठा और हुज़ूर सल्ल. को दरवाज़े के पास ही बैठना पड़ा। हुज़ूर सल्ल. ने जब एक कलिमा कहने को कहा तो सब ने जवाब दिया कि एक नहीं दस, हम सब मुन्तज़िर हैं, फ़रमाईये वह क्या कलिमा है? और जब कलिमा-ए-तौहीद आपकी ज़बान से सुना तो कपड़े झाड़ते हुए भाग खड़े हुए और कहने लगे लो और सुनो! यह तो सारे माबूदों का एक माबूद बना रहा है। इस पर ये आयतें (यानी आयत नम्बर 4 से 8 तक) उतरीं।

इमाम तिर्मिज़ी रह. इस रिवायत को हसन कहते हैं। हमने तो यह बात न अपने दीन में देखी न ईसाईयों के दीन में, यह बिल्कुल ग़लत, झूठ और बेसनद बात है। यह किस क़द्र ताज्जुब की बात है कि अल्लाह तआ़ला को कोई नज़र ही न आया और इस पर क़ुरआन उतार दिया! जैसे एक दूसरी आयत में उनका यह क़ौल नक़ल किया गया है:

لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ.

यानी इन दोनों शहरों (मक्का और ताईफ़) में के किसी बड़े आदमी पर यह क़ुरआन क्यों न उतारा

Maktab E Ashraf

गया? जिसके जवाब में अल्लाह तआ़ला का इरशाद हुआ कि "क्या ये लोग रब की रहमत की तक़सीम करने वाले हैं? ये तो इस क़द्र मोहताज हैं कि इनकी अपनी रोज़ियाँ और दर्जे भी हम तक़सीम करते हैं"।

ग़र्ज़ कि यह एतिराज़ भी उनकी हिमाक़त और घमंड का प्रतीक था। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, यह इनके शक का नतीजा है, और वजह यह है कि अब तक ये आराम और राहत ही में रहे हैं, हमारे अ़ज़ाब से साबक़ा नहीं पड़ा, कल क़ियामत के दिन जब धक्के देकर जहन्नम में गिराये जायेंगे उस वक़्त अपनी इस सरकशी का मज़ा पायेंगे।

फिर अल्लाह तआ़ला अपना क़ब्ज़ा और क़ुदरत ज़ाहिर फ़रमाता है कि वह जो चाहे करे, जिसे जो कुछ चाहे अ़ता फ़रमा दे। इज़्ज़त व ज़िल्लत उसके हाथ में है, हिदायत व गुमराही उसकी तरफ़ से है। वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे 'वही' नाज़िल फ़रमाये और जिसके दिल पर चाहे मोहर लगा दे। बन्दों के इख़्तियार में कुछ नहीं, वे बिल्कुल बेबस व लाचार और सरासर मजबूर हैं। इसी लिये फ़रमाया- "क्या इनके पास उस बुलन्द व ग़ालिब देने वाले ख़ुदा की रहमत के ख़ज़ाने हैं?" यानी नहीं हैं। जैसे फ़रमायाः

اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ......... الخ

अगर ख़ुदा की ख़ुदाई का कोई हिस्सा इनके हाथ में होता तो ये बख़ील तो किसी को टुकड़ा भी न खाने देते, या इन्हें लोगों के हाथों में ख़ुदा का फ़ज़्ल देखकर हसद (जलन) आ रहा है? हमने इब्राहीम की आल को किताब व हिक्मत और बहुत बड़ी सल्तनत दी थी, उनमें से बाज़ तो ईमान लाये और बाज़ ईमान से रुके रहे, जो भड़कती जहन्नम के लिये लुक़मा बनेंगे। वह आग ही उन्हें काफ़ी है। एक और आयत में इरशाद हैः

قُلْ لَّوْاَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّیْ اِذًالَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا.

यानी अगर मेरे रब की रहमतों के ख़ज़ाने तुम्हारी मिल्कियत में होते तो तुम कम हो जाने का ख़ौफ़ करके ख़र्च करने से रुक जाते। इनसान है ही नाशुक्रा। क़ौमे सालेह ने भी अपने नबी से यही कहा थाः

ءَ اُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ ۢ بَيْنِنَا....... الخ

क्या हम सब को छोड़कर इसी पर ज़िक्र (अल्लाह का पैग़ाम) उतारा गया? नहीं! बल्कि यह झूठा और शरीर है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि कल (यानी क़ियामत में) मालूम कर लेंगे कि ऐसा (यानी झूठा) कौन है? फिर फ़रमाया- क्या ज़मीन व आसमान और इसके दरमियान की चीज़ों पर इनका इख़्तियार है? अगर ऐसा है तो फिर आसमानों के रास्तों पर चढ़ जायें, सातवें आसमान पर पहुँच जायें। यह यहाँ का लश्कर भी जल्द ही शिकस्त उठायेगा और मग़लूब व ज़लील होगा, जैसे और बड़े-बड़े गिरोह हक़ से टकराये और बिखर कर रह गये। जैसे एक दूसरी आयत में हैः

اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ......... الخ

यानी क्या इनका क़ौल है कि हम बड़ी जमाअ़त हैं और हम ही फ़तह पाने वाले (विजयी) रहेंगे? सुनो! इन्हें अभी-अभी खुली शिकस्त होगी और पीठ दिखाते हुए बुज़दिली के साथ बदहवास होकर भाग खड़े होंगे। चुनाँचे बदर वाले दिन ख़ुदाई (यानी दुनिया) ने ख़ुदा की बातों की सच्चाई अपनी आँखों आज़माई।

Mahtab E Ashraf

और अभी इनके अ़ज़ाबों के वायदे का दिन तो आख़िरत का दिन है। वह सख़्त कठिन, निहायत घबराहट वाला और ख़ौफ़नाक है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ
ذُو الْأَوْتَادِ ٥ وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ
وَّأَصْحَٰبُ لْـَٔيْكَةِ ۚ أُولَٰٓئِكَ الْأَحْزَابُ ٥
إِن كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ
عِقَابِ ٥ وَمَا يَنظُرُ هَٰٓؤُلَآءِ إِلَّا صَيْحَةً ع 10
وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ ٥ وَقَالُوا رَبَّنَا
عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ٥

उनसे पहले भी नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम और आ़द और फ़िरऔ़न ने जिस (की हुकूमत) के खूँटे गड़ गए थे (12) और समूद ने और क़ौमे लूत और ऐका वालों ने झुठलाया था (और) वह गिरोह यही लोग हैं। (13) उन सबने सिर्फ़ रसूलों को झुठलाया था, सो मेरा अ़ज़ाब (उन पर) आ पड़ा। (14)

और ये लोग बस एक ज़ोर की चीख़ के मुन्तज़िर हैं, जिसमें दम लेने की गुन्जाईश न होगी (इससे क़ियामत मुराद है)। (15) और ये लोग कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हमारा हिस्सा हमको हिसाब के दिन से पहले दे दे। (16)

पहली उम्मतों की नाफ़रमानी और उन पर आफ़तों की बारिश

इन सब के वाक़िआ़त कई मर्तबा बयान हो चुके हैं कि किस तरह उन पर उनके गुनाहों की वजह से अ़ज़ाबे खुदा टूट पड़े। यही वे जमाअ़तें हैं जो माल व औलाद में, क़ुव्वत व ताक़त में, ज़ोर व ज़र में, तुम्हारे ज़माने के इन मामूली काफ़िरों से बहुत बढ़ी हुई थीं। लेकिन अल्लाह का हुक्म आने के बाद उन्हें कोई चीज़ काम न आ सकी। फिर उनकी तबाही की वजह बयान हुई कि ये रसूलों के दुश्मन थे, उन्हें झूठा कहते थे, उन्हें सिर्फ़ सूर का इन्तिज़ार है और उसमें भी कोई देर नहीं। बस वह एक आवाज़ होगी जिसके कान में पड़ी, बेहोश और बेजान हो गया, सिवाय उन लोगों के जिन्हें रब ने उससे अलग कर दिया है।

"क़ित्तुन" के मायने किताब और हिस्से के हैं। मुश्रिकों की बेवक़ूफ़ी और उनका अ़ज़ाब को मुहाल समझ कर और निडर होकर अ़ज़ाब के तलब करने का ज़िक्र हो रहा है। जैसे एक और आयत में है कि उन्होंने कहा ख़ुदाया! अगर यह सही है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा और कोई दर्दनाक आसमानी अ़ज़ाब हमें पहुँचा। और यह भी कहा गया है कि उन्होंने अपना जन्नत का हिस्सा यहाँ तलब किया और यह जो कुछ कहा यह सब उसे झूठा और मुहाल जानने की वजह से था।

इब्ने जरीर रह. का क़ौल है कि जिस ख़ैर व शर के वे दुनिया में मुस्तहिक़ थे उसे उन्होंने जल्द तलब किया। यही बात दुरुस्त है। इमाम ज़ह्हाक रह. और इस्माईल रह. की तफ़सीर का ख़ुलासा भी यही है। वल्लाहु आलम। पस अल्लाह तआ़ला ने उनके रसूलों को इस झुठलाने और मज़ाक़ उड़ाने के मुक़ाबले में अपने नबी सल्ल. को सब्र की तालीम दी और संयम व सहार की तलक़ीन की।

اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ○ اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ○ وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗٓ اَوَّابٌ ○ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ○	आप उन लोगों की बातों पर सब्र कीजिए और हमारे बन्दे दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) को याद कीजिए जो बड़ी क़ुव्वत (और हिम्मत) वाले थे। वह (ख़ुदा की तरफ़) बहुत रुजू होने वाले थे। (17) हमने पहाड़ों को हुक्म कर रखा था कि उनके साथ शाम और सुबह तस्बीह किया करें। (18) और (इसी तरह) परिन्दों को भी जो (तस्बीह के वक़्त उनके पास) जमा हो जाते थे, सब उनकी (तस्बीह की) वजह से ज़िक्र में मशग़ूल रहते। (19) और हमने उनकी हुकूमत को बड़ी क़ुव्वत दी थी, और हमने उनको हिक्मत और फ़ैसला करने वाली तक़रीर अ़ता फ़रमाई थी। (20)

दुनिया का एक बड़ा ताक़तवर इनसान

"ज़ुल-ऐदि" से मुराद इल्मी और अ़मली क़ुव्वत वाला है और सिर्फ़ क़ुव्वत वाले के मायने भी होते हैं जैसे फ़रमान है:

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ.

और हमने आसमानों को अपनी क़ुदरत से बनाया, और हम बड़ी क़ुदरत वाले हैं। (सूरः ज़ारियात- 47)

मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि मुराद इताअ़त की ताक़त है। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की इबादत की क़ुदरत और इस्लाम की समझ अ़ता फ़रमाई गई थी। यह ज़िक्र किया गया है कि आप हर रात तिहाई रात तक तहज्जुद में खड़े रहते थे, और एक दिन की नाग़ा के साथ रोज़े से रहते थे (यानी एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते)। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला को सबसे ज़्यादा पसन्द हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की रात की नमाज़ और दिन के रोज़े थे। आप आधी रात सोते और तिहाई रात क़ियाम करते और छठा हिस्सा रात का फिर सो जाते। एक दिन रोज़ा रखते एक दिन न रखते और दीन के दुश्मनों से जिहाद करने में पीठ न दिखाते। और अपने हर हाल में ख़ुदा की तरफ़ रग़बत व रुजू रखते। पहाड़ों को उनके ताबे कर दिया था, वे आपके साथ सूरज के चमकने के वक़्त और दिन के आख़िरी वक़्त तस्बीह बयान करते थे। जैसे फ़रमान है:

يَاجِبَالُ اَوِّبِىْ مَعَهٗ.

यानी ख़ुदा ने पहाड़ों को उनके साथ रुजू करने का हुक्म दिया था। इसी तरह परिन्दे भी आपकी आवाज़ सुनकर आपके साथ ख़ुदा की पाकी बयान करने लग जाते। उड़ते हुए परिन्दे पास से गुज़रते और आप तौरात पढ़ते होते तो आपके साथ ही वे भी तिलावत में मशग़ूल हो जाते और उड़ना छोड़कर बैठ जाते। हुज़ूर सल्ल. ने मक्का फ़तह होने के रोज़ ज़ुहा यानी इशराक़ के वक़्त हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु

अन्हा के घर में आठ रक्अत नमाज़ अदा की। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- मेरा ख़्याल यह है कि यह भी वक़्ते नमाज़ है। जैसे फ़रमान हैः

يُسَبِّحْنَ مَعَهُ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ.

कि हमने पहाड़ों को हुक्म कर रखा था कि वे उनके साथ सुबह-शाम तस्बीह किया करें।

अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस बिन नौफ़ल कहते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. ज़ुहा की नमाज़ नहीं पढ़ते थे तो एक दिन मैं उनको उम्मे हानी के यहाँ ले गया और कहा कि आप इनसे वह हदीस बयान कीजिये जो आपने मुझसे बयान फ़रमाई थी तो उन्होंने फ़रमाया- फ़त्हे मक्का वाले दिन मेरे घर में मेरे पास रसूलुल्लाह सल्ल. तशरीफ़ लाये और आने के बाद एक बरतन में पानी भरवाया और एक कपड़े का पर्दा तान कर नहाने बैठ गये। उसके बाद घर के एक कोने में पानी छिड़क कर आठ रक्अ़तें "सलातुज़्ज़ुहा" की अदा कीं। उनमें क़ियाम, रुकू, सज्दा और जलसा (बैठना) सब तक़रीबन बराबर थे"। हज़रत अ़ब्बास रज़ि. यह हदीस सुनकर जब वहाँ से निकले तो फ़रमाने लगे "पूरे क़ुरआन को मैंने पढ़ लिया लेकिन मैं नहीं जानता था कि ज़ुहा की नमाज़ क्या है? मुझे मालूम हुआ किः

يُسَبِّحْنَ مَعَهُ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ

वाली आयत में भी "इश्राक़" से मुराद यही ज़ुहा है। चुनाँचे इसके बाद उन्होंने अपने क़ौल से रुजू कर लिया।

परिन्दे भी हवा में रुक जाते थे और हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की पैरवी में उनकी तस्बीहों का साथ देते थे। और उनकी हुकूमत हमने मज़बूत कर दी। बादशाहों को जिन-जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है हमने उन्हें सब दे दीं। चार हज़ार तो उनकी मुहाफ़िज़ सिपाह (यानी सुरक्षा फ़ौज) थी। इस क़द्र फ़ौज थी कि हर रात तैंतीस हज़ार फ़ौजी पहरे पर रहे थे, लेकिन जो आज की रात आते फिर साल भर उनकी बारी न आती। चालीस हज़ार आदमी हर वक़्त उनकी ख़िदमत पर हथियार बन्द तैयार रहते।

एक रिवायत में है कि उनके ज़माने में दो बनी इस्राईली शख़्सों में झगड़ा वाक़े हुआ। एक ने दूसरे पर इल्ज़ाम लगाया कि इसने मेरी गाय छीन ली है। दूसरे ने इस जुर्म से इनकार किया। हज़रत दाऊद ने मुद्दई (दावेदार) से दलील तलब की, मगर वह सुबूत न ला सका। आपने फ़रमाया- अच्छा तुम्हें कल फ़ैसला सुनाया जायेगा। रात को हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम को ख़्वाब में हुक्म हुआ कि दावेदार को क़त्ल कर दो। सुबह को आपने दोनों को बुलवाया और हुक्म दिया कि "इस मुद्दई को क़त्ल कर दिया जाये" उसने कहा "ऐ अल्लाह के नबी! आप मेरे ही क़त्ल का हुक्म दे रहे हैं हालाँकि उसने मेरी गाय चुरा ली है?" आपने फ़रमाया "यह मेरा हुक्म नहीं बल्कि ख़ुदाई फ़ैसला है और नामुम्किन है कि यह टल जाये। लिहाज़ा तू तैयार हो जा" तब उसने कहा ऐ ख़ुदा के रसूल! मैं अपने दावे में तो सच्चा हूँ कि इसने मेरी गाय ग़सब कर ली है मगर ख़ुदा तआ़ला ने आपको मेरे क़त्ल का हुक्म इस मुक़द्दमे की वजह से नहीं दिया, इसकी वजह और ही है और उसे सिर्फ़ मैं ही जानता हूँ।

बात यह है कि आज रात मैंने उस शख़्स को फ़रेब से क़त्ल कर दिया है जिसका किसी को इल्म नहीं। पस उसके बदले में ख़ुदा ने आपको क़िसास का हुक्म दिया है। चुनाँचे वह क़त्ल कर दिया गया। अब तो हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की हैबत (रौब और दहशत) हर शख़्स के दिल में बैठ गई। हमने उसे हिक्मत दी थी, यानी समझ व अ़क़्ल, बात की गहराई तक पहुँचना और दानाई, इन्साफ़, किताबुल्लाह और उसकी

Maktab-E-Ashraf

इत्तिबा-ए-नुबुव्वत व रिसालत वगैरह और झगड़ों के फ़ैसला करने का तरीक़ा। यानी गवाह लाना, दावेदार के ज़िम्मे सुबूत का बोझ डालना, और जिसके ख़िलाफ़ दावा किया गया है अगर कोई सुबूत न मिले तो उससे क़सम लेना। यही तरीक़ा फ़ैसलों के लिये अम्बिया का और नेक लोगों का रहा और यही तरीक़ा उम्मत में राईज है।

ग़र्ज़ कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम मामले की तह तक पहुँच जाते थे और हक़ व बातिल, सही और ग़लत, खोटे और खरे में फ़र्क़ कर लेते थे। कलाम भी आपका साफ़ होता था और हुक्म भी इन्साफ़ के मुताबिक़ होता था। आप ही ने "अम्मा बअ़्दु" कहना ईजाद किया है। और 'फ़स्लुल-ख़िताब' से इसकी तरफ़ इशारा भी है।

وَهَلْ اَتٰـكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْـمِحْـرَابَ ۝ اِذْ دَخَـلُوْا عَـلٰى دَاوٗدَ فَـفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ۝ اِنَّ هٰـذَآ اَخِىْ قف لَـهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِىَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ قف فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِىْ فِى الْخِطَابِ ۝ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ ط وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَيَبْغِىْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ط وَظَنَّ	और भला आपको उन मुक़द्दमे वालों की ख़बर भी पहुँची है, जबकि वे लोग (दाऊद के) इबादत-ख़ाने की दीवार फाँदकर दाऊद (अ़लैहि.) के पास आए। (21) तो वह (उनके इस तरह आने से) घबरा गए। वे लोग कहने लगे कि आप डरें नहीं, हम दो अहले मामला (यानी वादी) हैं, कि एक ने दूसरे पर (कुछ) ज़्यादती की है, सो आप हममें इन्साफ़ से फ़ैसला कर दीजिए और बेइन्साफ़ी न कीजिए, और हमको (मामले की) सीधी राह बता दीजिए। (22) (फिर एक शख़्स बोला, मुक़द्दमे की शक्ल यह है कि) यह शख़्स मेरा भाई है इसके पास निन्नानवे दुंबियाँ हैं और मेरे पास (सिर्फ़) एक दुंबी है, सो यह कहता है कि वह भी मुझको दे डाल, और बातचीत में मुझको दबा देता है। (23) दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा, यह जो तेरी दुंबी अपनी दुंबियों में मिलाने की दरख़्वास्त करता है तो वाक़ई तुझ पर ज़ुल्म करता है, और अक्सर शरीकों (की आ़दत है कि) एक-दूसरे पर (यूँ ही) ज़्यादती किया करते हैं, मगर हाँ! जो लोग ईमान रखते हैं और नेक काम करते हैं, और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं। और दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) को ख़्याल आया कि हम ने उनका इम्तिहान किया है, सो उन्होंने अपने

सज्दा नम्बर- 10

دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۝ السجدة فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝

रब के सामने तौबा की और सज्दे में गिर पड़े और रुजू हुए। (24) ✽ (सज्दा)
सो हमने उनको वह (मामला) माफ़ कर दिया और हमारे यहाँ उनके लिए (ख़ास) निकटता और (आला दर्जे की) नेक अन्जामी है। (25)

السجدة ١٠

Maktab E Ashraf

दाऊद अ़लैहिस्सलाम की अ़दालत में एक मुक़द्दमा

मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) ने इस मौक़े पर एक क़िस्सा बयान किया है लेकिन इसका अक्सर हिस्सा बनू इस्राईल की रिवायतों से लिया गया है, हदीस से साबित नहीं, क्योंकि इसका एक रावी यज़ीद रक़ाशी है, अगरचे वह निहायत नेक शख़्स है लेकिन है ज़ईफ़। पस औला यह है कि क़ुरआन में जो कुछ है और जिस पर यह शामिल है वह हक़ है। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम का उन्हें देखकर घबराना इस वजह से था कि वह अपने तन्हाई के घर में थे और पहरेदारों को मना किया था कि कोई भी आज अन्दर न आये, अचानक उन दोनों को देखा तो घबरा गये।

'व अ़ज़्ज़नी' से मतलब बातचीत में ग़ालिब आ जाना, दूसरे पर छा जाना है। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम समझ गये कि यह ख़ुदा की आज़माईश है। पस वह रुकूअ़ और सज्दा करते हुए ख़ुदा की तरफ़ झुक पड़े। मज़कूर है कि चालीस दिन तक सज्दे से सर न उठाया। पस हमने उसे बख़्श दिया। यह याद रहे कि जो काम अ़वाम के लिये नेकियों के होते हैं वही काम ख़्वास से बाज़ मर्तबा अच्छे नहीं समझे जाते हैं। यह आयत सज्दे की है या नहीं, इसके बारे में इमाम शाफ़ई रह. का नया क़ौल तो यह है कि यहाँ सज्दा ज़रूरी नहीं, यह तो शुक्र का सज्दा है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि "सॉद" ज़रूरी सज्दों में से नहीं, हाँ मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को इसमें सज्दा करते हुए देखा है। (बुख़ारी वग़ैरह)

नसाई में है कि हुज़ूर सल्ल. ने यहाँ सज्दा करके फ़रमाया- यह सज्दा हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम का तो तौबा के लिये था और हमारे शुक्र के लिये है। तिर्मिज़ी में है कि एक शख़्स ने कहा या रसूलल्लाह! मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं एक दरख़्त के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूँ। नमाज़ में मैंने सज्दे की आयत तिलावत की और सज्दा किया तो मेरे साथ उस दरख़्त ने भी सज्दा किया और मैंने सुना कि वह यह दुआ़ माँग रहा था:

اَللّٰهُمَّ اكْتُبْ لِيْ بِهَا عِنْدَكَ اَجْرًا وَّاجْعَلْهُ لِيْ عِنْدَكَ ذُخْرًا وَّضَعْ بِهَا عَنِّيْ وِزْرًا وَّاقْبَلْهَا مِنِّيْ كَمَا قَبِلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوٗدَ.

यानी ऐ अल्लाह! मेरे इस सज्दे को तू मेरे लिये अपने पास अज्र का सबब बना और इसकी वजह से तू मेरा बोझ हल्का कर दे और इसे मुझसे क़बूल फ़रमा, जैसे कि तूने अपने बन्दे दाऊद के सज्दे को क़बूल फ़रमाया।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि फिर मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने खड़े होकर नमाज़ अदा की, सज्दे की आयत को पढ़कर सज्दा किया और उस सज्दे में वही दुआ़ पढ़ी जो उस शख़्स ने दरख़्त की दुआ़ नक़ल की थी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इस आयत के सज्दे पर यह दलील लाते हैं कि क़ुरआने हकीम ने (सूरः अन्आ़म आयत 84 में) बताया है कि उसकी (यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की) औलाद में

Mahtab E Ashraf

से दाऊद अ़लैहिस्सलाम व सुलैमान अ़लैहिस्सलाम हैं, जिनको हमने हिदायत की थी। पस तू ऐ नबी! उनकी हिदायत की पैरवी कर। पस हुज़ूर सल्ल. उनकी इक़्तिदा (पैरवी) के लिये मामूर थे और यह साफ़ साबित है कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने सज्दा किया और हुज़ूर सल्ल. ने भी सज्दा किया।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. का बयान है कि मैंने ख़्वाब में देखा कि गोया मैं सूरः सॉद लिख रहा हूँ जब आयते सज्दा तक पहुँचा तो मैंने देखा कि क़लम-दवात और मेरे आस-पास की तमाम चीज़ों ने सज्दा किया। उन्होंने अपना यह ख़्वाब हुज़ूर सल्ल. से बयान किया। फिर आप इस आयत की तिलावत के वक़्त बराबर सज्दा करते रहे। (अहमद)

अबू दाऊद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने मिम्बर पर सूरः सॉद पढ़ी और सज्दे की आयत पर पहुँचकर मिम्बर पर से उतरे और सज्दा किया और आपके साथ ही और सब ने भी सज्दा किया। एक और मर्तबा आपने इसी सूरत की तिलावत की, जब आयते सज्दा तक पहुँचे तो लोगों ने सज्दे की तैयारी की, आपने फ़रमाया यह तो एक नबी की तौबा का सज्दा था लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम सज्दा करने के लिये तैयार हो गये। चुनाँचे आप उतरे और सज्दा किया।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हमने उसे बख़्श दिया। क़ियामत के दिन उसकी बड़ी क़द्र व सम्मान होगा और नबियों और आ़दिलों का दर्जा पायेंगे। हदीस में है कि आ़दिल (इन्साफ़ करने वाले) लोग नूर के मिम्बरों पर रहमान के दाहिनी जानिब होंगे, ख़ुदा के दोनों हाथ दाहिने हैं। ये आ़दिल वे हैं जो अपनी अहल व अ़याल (घर वालों और बाल-बच्चों) में और जिनके वे मालिक हों अ़दल व इन्साफ़ करते हैं। एक और हदीस में है कि सबसे ज़्यादा ख़ुदा के दोस्त और सबसे ज़्यादा उसके मुक़र्रब वे बादशाह होंगे जो आ़दिल हों, और सबसे सख़्त अ़ज़ाब में वे होंगे जो ज़ालिम हुक्मराँ (शासक) हों। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

हज़रत मालिक बिन दीनार रह. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम को अ़र्श के पाये के पास खड़ा किया जायेगा और अल्लाह तआ़ला हुक्म देगा कि ऐ दाऊद! जिस प्यारी आकर्षक, मीठी और दिलकश आवाज़ से तुम मेरी तारीफ़ें दुनिया में करते थे, अब भी करो। आप फ़रमायेंगे- बारी तआ़ला! अब वह आवाज़ कहाँ रही? अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा मैंने वही आवाज़ तुम्हें फिर अ़ता फ़रमाई। अब दाऊद अ़लैहिस्सलाम अपनी दिलकश और आकर्षक आवाज़ निकाल कर बहुत ही बेख़ुदी की हालत में ख़ुदा की तारीफ़ व सना बयान करेंगे, जिसे सुनकर जन्नती और नेमतों को भी भूल जायेंगे और यह सुरीली आवाज़ और नूरानी नग़मा उनको सब नेमतों से हटाकर अपनी तरफ़ मुतवज्जह कर लेगा।

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ۝ع

ऐ दाऊद (अ़लैहिस्सलाम)! हमने तुमको ज़मीन पर हाकिम बनाया है, सो लोगों में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करते रहना, और आईन्दा भी नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी मत करना। (अगर ऐसा करोगे तो) वह ख़ुदा के रास्ते से तुमको भटका देगी। (और) जो लोग ख़ुदा के रास्ते से भटकते हैं उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब होगा, इस वजह से कि वे हिसाब के दिन को भूले रहे। (26)

ع ٢

Maktab E Ashraf

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की तब्लीग़

इस आयत में बादशाहों और बा-इख़्तियार लोगों को हुक्म हो रहा है कि वे अ़दल व इन्साफ़ के साथ क़ुरआन व हदीस के मुताबिक़ फ़ैसले किया करें वरना ख़ुदा के रास्ते से भटक जायेंगे, और जो भटक कर अपने हिसाब को भूल जाये वह सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला होगा। हज़रत अबू ज़ुरआ़ रह. से बादशाहे वक़्त वलीद बिन अ़ब्दुल-मलिक ने एक मर्तबा दरियाफ़्त किया कि क्या ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से भी अल्लाह तआ़ला के यहाँ हिसाब लिया जायेगा? आपने फ़रमाया कि सच बता दूँ? ख़लीफ़ा ने कहा ज़रूर सच ही बतलाओ और आपको हर तरह अमन है। फ़रमाया ऐ अमीरुल-मोमिनीन! ख़ुदा के नज़दीक आपसे बहुत बड़ा दर्जा हज़रत दाऊद का था, उन्हें ख़िलाफ़त के साथ ही साथ ख़ुदा तआ़ला ने नुबुव्वत भी दे रखी थी, लेकिन बावजूद इसके किताबे ख़ुदा उनसे कहती है:

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ........ الخ

यानी ऐ दाऊद हमने तुमको ज़मीन पर हाकिम बनाया है सो लोगों में इन्साफ़ के साथ फ़ैसले करते रहना.................।

हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि उनके लिये हिसाब के दिन में सख़्त अ़ज़ाब हैं, उनके भूल जाने के कारण। इमाम सुद्दी रह. कहते हैं कि उनके लिये सख़्त अ़ज़ाब हैं इस वजह से कि उन्होंने हिसाब के दिन के लिये आमाल जमा नहीं किये। आयत के लफ़्ज़ों से इसी क़ौल को ज़्यादा मुनासबत है। वल्लाहु आलम।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۭ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ۝ اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۡ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ۝ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

और हमने आसमान व ज़मीन को और जो चीज़ें उनके दरमियान मौजूद हैं उनको हिक्मत से ख़ाली पैदा नहीं किया। यह (यानी उनका हिक्मत से ख़ाली होना) उन लोगों का ख़्याल है जो काफ़िर हैं, सो काफ़िरों के लिए (आख़िरत में) बड़ी ख़राबी है, यानी दोज़ख़। (27) हाँ, तो क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उन्हें इनके बराबर कर देंगे जो (कुफ़्र वग़ैरह करके) दुनिया में फ़साद करते फिरते हैं, या हम परहेज़गारों को बदकारों के बराबर कर देंगे? (28) यह एक बरकत वाली किताब है जिसको हमने आप पर इस वास्ते नाज़िल किया है ताकि लोग इसकी आयतों में ग़ौर करें और ताकि समझदार लोग नसीहत हासिल करें। (29)

Maktab E Ashraf

यह सब कुछ खेल नहीं

इरशाद है कि मख़्लूक़ की पैदाईश बेकार और बेमक़सद नहीं, यह सब ख़ालिक़ की इबादत के लिये पैदा की गई है। फिर एक वक़्त आने वाला है कि मानने वालों की सर-बुलन्दी की जाये (यानी उनको कामयाबियों से नवाज़ा जाये) और न मानने वालों को सख़्त सज़ा दी जाये। काफ़िरों का ख़्याल है कि हमने उन्हें यूँ ही पैदा कर दिया है, आख़िरत का घर और दूसरी ज़िन्दगी कोई चीज़ नहीं, यह ग़लत है। इन काफ़िरों की क़ियामत के दिन बड़ी ख़राबी होगी। क्योंकि उस आग में इन्हें जलना पड़ेगा जो इनके लिये ख़ुदा के फ़रिश्तों ने धोंका रखी है। यह नामुम्किन और अनहोनी बात है कि मोमिन व मुफ़सिद को, और परहेज़गार व बदकार को हम एक जैसा कर देंगे। अगर क़ियामत आने वाली ही न हो तब तो ये दोनों अन्जाम के लिहाज़ से बराबर ही रहे। हालाँकि यह इन्साफ़ के ख़िलाफ़ है, क़ियामत ज़रूर आयेगी। नेक काम करने वाले जन्नत में और गुनाहगार जहन्नम में जायेंगे। पस अ़क़्ली तक़ाज़े से भी आख़िरत के घर का सुबूत होता है। हम देखते हैं कि एक ज़ालिम पापी ख़ुदा की बारगाह से मुँह फेरे हुए दुनिया में मगन और ऐश में है। माल, औलाद, फ़राग़त और तन्दुरुस्ती सब कुछ उसके पास है। और एक मोमिन, मुत्तक़ी, पाकदामन एक-एक पैसे से तंग और एक-एक राहत से दूर है, तो अ़लीम व हकीम और आ़दिल (यानी अल्लाह तआ़ला) की हिक्मत का तक़ाज़ा यह था कि कोई ऐसा वक़्त भी आये कि उस नमक-हराम से उसकी उस नाफ़रमानी और नमक-हरामी का बदला लिया जाये और इस साबिर व शाकिर फ़रमाँबरदार की नेकियों का इसे बदला दिया जाये। और यही आख़िरत के जहान में होना है। पस साबित हुआ कि इस जहान के बाद एक जहान और यक़ीनन (निश्चित तौर पर) है। चूँकि यह पाक तालीम क़ुरआन से ही हासिल हुई है और इस नेकी का रहबर यही है, इसलिये इसके बाद ही फ़रमाया कि यह मुबारक किताब हमने तेरी तरफ़ नाज़िल फ़रमाई है ताकि लोग इसे समझें और अ़क़्ल वाले लोग इससे नसीहत हासिल कर सकें।

हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि जिसने क़ुरआन के अलफ़ाज़ हिफ़्ज़ कर लिये और क़ुरआन पर अ़मल नहीं किया उसने क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र (यानी सोच-विचार) भी नहीं किया। लोग कहते हैं कि हमने पूरा क़ुरआन पढ़ लिया लेकिन क़ुरआन की एक नसीहत या क़ुरआन के एक हुक्म का नमूना उनमें नज़र नहीं आता। ऐसा नहीं होना चाहिये। असल चीज़ ग़ौर व ख़ोज़ करना, नसीहत व सबक़ हासिल करना और अ़मल है।

और हमने दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) को सुलैमान अ़ता किया, बहुत अच्छे बन्दे थे कि (ख़ुदा तआ़ला की तरफ़) बहुत रुजू होने वाले थे। (30) (चुनाँचे वह किस्सा उनका याद करने के क़ाबिल है) जबकि शाम के वक़्त उनके रू-ब-रू असील (और) उम्दा घोड़े पेश किए गए। (31) तो कहने लगे कि (अफ़सोस) मैं इस माल की मुहब्बत में (लगकर) अपने रब की याद	وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝ فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى

से ग़ाफ़िल हो गया, यहाँ तक कि सूरज (मग़रिब के) पर्दे में छुप गया। (32) (फिर ख़ादिमों और नौकरों को हुक्म दिया कि) उन घोड़ों को ज़रा फिर मेरे सामने लाओ, सो उन्होंने उनकी पिंडलियों और गर्दनों पर (तलवार से) हाथ साफ़ करना शुरू किया। (33)	تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ○ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ط فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ○

Maktab E Ashraf

सुलैमान अ़लैहिस्सलाम और घोड़ों का वाक़िआ़

अल्लाह ने जो एक बड़ी नेमत दाऊद अ़लैहिस्सलाम को अ़ता फ़रमाई थी उसका ज़िक्र फ़रमा रहा है कि उनकी नुबुव्वत का वारिस उनके लड़के हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को कर दिया। इसी लिये सिर्फ़ हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र किया, वरना उनकी दूसरी औलादें भी थीं। एक सौ औ़रतें आपकी बाँदियों के अ़लावा थीं। चुनाँचे एक और आयत में है:

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ............الخ

हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के वारिस हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम हुए यानी नुबुव्वत आपके बाद इन्हें मिली। यह भी बड़े अच्छे बन्दे थे। यानी ख़ूब इबादत-गुज़ार और ख़ुदा की तरफ़ झुकने वाले थे।

मक्हूल रह. कहते हैं कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने एक मर्तबा आप से चन्द सवालात किये और उनके माक़ूल जवाब पाकर फ़रमाया कि तुम अल्लाह के नबी हो। पूछा कि सबसे अच्छी चीज़ क्या है? जवाब दिया कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मिस्कीनियत (तवाज़ो और विनम्रता) और ईमान। फिर पूछा कि सबसे बुरी चीज़ क्या है? सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ किया कि ईमान के बाद कुफ़्र। फिर पूछा सबसे ज़्यादा मीठी चीज़ क्या है? अ़र्ज़ किया कि ख़ुदा की रहमत। फिर पूछा कि सबसे ज़्यादा ठण्डक वाली चीज़ क्या है? जवाब दिया ख़ुदा का लोगों से दरगुज़र करना और लोगों का आपस में एक दूसरे को माफ़ कर देना। (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के सामने उनकी बादशाहत के ज़माने में उनके घोड़े पेश किये गये जो बहुत तेज़-रफ़्तार थे। तीन पैरों पर खड़े रहते थे और एक पैर बस मामूली सा ही ज़मीन पर टिकता था। एक क़ौल यह भी है कि ये पंखदार घोड़े थे जो संख्या में बीस थे। इब्राहीम तैमी रह. ने घोड़ों की संख्या बीस हज़ार बताई है। वल्लाहु आलम।

अबू दाऊद में है कि हुज़ूर सल्ल. तबूक या ख़ैबर के सफ़र से वापस आये थे, घर में तशरीफ़ फ़रमा थे कि तेज़ हवा के झोंके से घर में एक कोने का पर्दा हट गया, वहाँ हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के खेलने की गुड़िया रखी हुई थीं। हुज़ूर सल्ल. की नज़र भी पड़ गई, पूछा कि यह क्या है? हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने जवाब दिया मेरी गुड़िया हैं। आपने देखा कि बीच में एक घोड़ा सा बना हुआ है, जिसके दो पर (पंख) भी कपड़े के लगे हुए हैं। पूछा यह क्या है? कहा घोड़ा है। फ़रमाया और यह इसके ऊपर दोनों तरफ़ चीथड़े के क्या बने हुए हैं? कहा ये दोनों इसके पंख हैं। फ़रमाया घोड़ा भी अच्छा है और इसके पंख भी। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अ़र्ज़ किया कि क्या आपने नहीं सुना हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के पंख रखने वाले घोड़े थे? यह सुनकर हुज़ूर सल्ल. हंस दिये, यहाँ तक कि आपके

Maktaba E Ashraf

आख़िरी दाँत दिखाई देने लगे।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम उनके देखने में इस क़द्र मशग़ूल हो गये कि अ़सर की नमाज़ का ख़्याल ही नहीं रहा, बिल्कुल भूल गये। जैसे कि हुज़ूर सल्ल. ग़ज़्वा-ए-ख़ुन्दक़ के मौक़े पर एक दिन लड़ाई की मशग़ूली की वजह से अ़सर की नमाज़ न पढ़ सके और मग़रिब के वक़्त अदा की। चुनाँचे सहीहैन में है कि सूरज डूबने के बाद हज़रत उमर रज़ि. क़ुरैश के काफ़िरों को बुरा कहते हुए हुज़ूर सल्ल. के पास आये और कहने लगे- हुज़ूर! मैं तो अ़सर की नमाज़ भी न पढ़ सका। आपने फ़रमाया मैं भी अभी तक अदा नहीं कर सका। चुनाँचे हम बुतहान में गये वहाँ वुज़ू किया और सूरज के ग़ुरूब होने के बाद अ़सर की नमाज़ अदा की और फिर मग़रिब की पढ़ी।

यह भी हो सकता है कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के दीन में जंगी मस्लेहतों की वजह से नमाज़ में देरी जायज़ हो, और ये जंगी घोड़े थे जिनको इसी मक़सद से रखा था। चुनाँचे बाज़ उलेमा ने यह भी कहा है कि 'सलाते ख़ौफ़' (ख़ौफ़ की नमाज़) के जारी होने से पहले यही हाल था। बाज़ कहते हैं कि जब तलवारें तनी हुई हों, लश्कर भिड़ गये हों और नमाज़ के लिये रुकूअ़ व सज्दों का इम्कान ही न हो तब यह हुक्म है, जैसा कि सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने तस्तुर की फ़तह के मौक़े पर किया था, लेकिन हमारा पहला क़ौल ही ठीक है, इसलिये कि उसके बाद ही हज़रत सुलैमान का उन घोड़ों को दोबारा तलब करना वग़ैरह बयान हुआ है। उन्हें काट डालने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि मेरे रब की इबादत से मुझे इस चीज़ ने ग़ाफ़िल कर दिया, मैं ऐसी चीज़ नहीं रखने का। चुनाँचे उनकी कोचें (पैरों की तरफ़ की एक रग जिससे जान चली जाती है) काट दी गईं और उनकी गर्दनें मारी गईं। लेकिन हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि आपने घोड़ों की पेशानी वग़ैरह पर हाथ फेरा। इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसी क़ौल को इख़्तियार करते हैं कि बिना वजह जानवरों को तकलीफ़ पहुँचाना मना है। उन जानवरों का कोई क़ुसूर नहीं था जो उन्हें कटवा देते। लेकिन मैं कहता हूँ कि मुम्किन है कि यह बात उनकी शरीअ़त में जायज़ हो, ख़ुसूसन ऐसे वक़्त जबकि वे यादे ख़ुदा में बाधा हुए और नमाज़ का वक़्त निकल गया तो दर असल यह ग़ुस्सा भी अल्लाह के लिये था। चुनाँचे इसी वजह से उन घोड़ों से भी तेज़ और हल्की चीज़ अल्लाह ने अपनी नबी को अ़ता फ़रमाई, यानी हवा उनके ताबे कर दी।

हज़रत अबू क़तादा और हज़रत अबू दर्दा रज़ि. अक्सर साथ हज किया करते थे। उनका बयान है कि एक मर्तबा एक गाँव में हमारी एक देहाती से मुलाक़ात हुई तो उसने कहा कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने मेरा हाथ थामकर मुझे बहुत कुछ तालीम दी। उसमें यह भी फ़रमाया कि अल्लाह से डरकर तू जिस चीज़ को छोड़ देगा अल्लाह तआ़ला तुझे उससे बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमायेगा।

और हमने सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) को (एक और तरह से भी) इम्तिहान में डाला, और हमने उनके तख़्त पर (एक अधूरा) धड़ डाला, फिर उन्होंने (अल्लाह तआ़ला की तरफ़) रुजू किया। (34) दुआ़ माँगी कि ऐ मेरे रब! मेरा (पिछला) क़ुसूर माफ़ फ़रमा और (आईन्दा के लिए) मुझको ऐसी हुकूमत दे कि (मेरे ज़माने	وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْ

Maktab E Ashraf

بَعْدِىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ○ فَسَخَّرْنَا
لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ
اَصَابَ ○ۙ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّ
غَوَّاصٍ ○ۙ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِى
الْاَصْفَادِ ○ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ○ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى
وَحُسْنَ مَاٰبٍ ○ ع ٣ ١٢

में) मेरे सिवा किसी को मयस्सर न हो, आप बड़े देने वाले हैं। (35) सो (हमने उनकी दुआ कुबूल की और साथ ही) हमने हवा को उनके ताबे कर दिया कि वह उनके हुक्म से जहाँ वह (जाना) चाहते नर्मी से चलती। (36) और जिन्नात को भी उनका ताबे कर दिया, यानी तामीर बनाने वालों को भी और गोता लगाने वालों को भी। (37) और दूसरे जिन्नात को भी जो जन्जीरों में जकड़े रहते थे। (38) (और हमने यह सामान देकर इरशाद फ़रमाया कि) यह हमारी देन है, सो चाहे (किसी को) दो या न दो, तुमसे कुछ पूछ-गछ नहीं। (39) और (इसके अलावा) उनके लिए हमारे यहाँ (ख़ास) नज़दीकी और नेक अन्जामी है। (40)

एक आज़माईश

हमने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का इम्तिहान लिया और उनकी कुर्सी पर एक जिस्म डाल दिया यानी शैतान। फिर वह अपने तख़्त व ताज की तरफ़ लौट आये। उस शैतान का नाम सख़्र था या आसिफ़ या आसरो या हबक़ीक़ था। यह वाक़िआ अक्सर मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है, किसी ने बहुत तफ़सील के साथ किसी ने संक्षिप्त रूप से। हज़रत क़तादा रह. इस वाक़िए को इस तरह बयान करते हैं कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को बैतुल-मुक़द्दस की तामीर का हुक्म हुआ कि इस तरह बनाओ कि लोहे की आवाज़ भी न सुनी जाये। आपने बहुत तदबीरें कीं लेकिन कारगर न हुईं। फिर आपने सुना कि समुद्र में एक शैतान है जिसका नाम सख़्र है, वह अलबत्ता ऐसी तरकीब बता सकता है। आपने हुक्म दिया कि उसको किसी तरह लाओ। यह एक समुद्र में मिलता था। हर सातवें दिन उसमें ऊपर तक पानी आ जाता था और यही पानी शैतान पीता था। उसका पानी निकाल दिया गया और बिल्कुल ख़ाली करके पानी को बन्द करके उसके आने वाले दिन उसे शराब से भर दिया गया। यह जब आया और यह हाल देखा तो कहने लगा है तो यह मज़े की चीज़ लेकिन अक़्ल की दुश्मन है। जहालत को तरक़्क़ी देने वाली चीज़ है। चुनाँचे वह प्यासा ही चला गया। जब प्यास की शिद्दत हुई तो मजबूरन यह सब कुछ कहते हुए पीना पड़ा। अब अक़्ल (यानी होश व समझ) जाती रही और उसे हज़रत सुलैमान की अंगूठी दिखाई गई या उसके मोंढों के दरमियान उससे मोहर लगा दी गई, यह बेबस हो गया।

हज़रत सुलैमान की हुकूमत उसी अंगूठी की वजह से थी। जब यह हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास पहुँचा तो आपने इसे इस काम के अन्जाम देने का हुक्म दिया। यह गया और हुद्हुद के अण्डे ले आया और उन्हें जमा करके रखकर उन पर शीशा रख दिया। हुद्हुद आया, उसने अपने अण्डे देखे, चारों तरफ़ घूमा लेकिन देखा कि हाथ नहीं आ सकते, उड़कर वापस चला गया, अलमास लाया और उसको उस शीशे

Mahtab E Ashraf

पर रखकर काटना शुरू किया, आख़िर वह कट गया, वह अपने अण्डे ले गया और फिर उसी से पत्थर काट-काटकर तामीर शुरू हुई।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम जब बैतुल-ख़ला (शौचालय) या हम्माम (बाथरूम) में जाते तो अंगूठी उतार जाते। एक दिन हम्माम में जाना था और यह शैतान आपके साथ था। आप उस वक़्त फ़र्ज़ ग़ुस्ल के लिये जा रहे थे, अंगूठी उसको सौंप दी और चले गये। उसने अंगूठी समुद्र में फेंक दी और शैतान पर हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की शक्ल डाल दी गई और आपसे तख़्त व ताज छिन गया। सब चीज़ों पर शैतान ने क़ब्ज़ा कर लिया सिवाय आपकी बीवियों के। अब उससे बहुत सी ग़ैर-मारूफ़ (असाधारण) बातें ज़हूर में आने लगीं तो उस ज़माने में एक साहिब थे जो ऐसे ही थे जैसे हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु। उन्होंने कहा भाई आज़माईश करनी चाहिये, मुझे तो यह शख़्स सुलैमान नहीं मालूम होता। चुनाँचे एक रोज़ उन्होंने सवाल किया- क्यों जनाब! अगर कोई शख़्स रात को नापाक हो जाये और सर्दी की वजह से वह सूरज के निकलने तक ग़ुस्ल न करे तो कोई हर्ज तो नहीं? उसने जवाब दिया हरगिज़ नहीं। चालीस दिन तक यह तख़्ते सुलैमानी पर रहा, फिर आपको मछली के पेट से अंगूठी मिल गई। हाथ में पहनते ही फिर तमाम चीज़ें आपकी फ़रमाँबरदार हो गईं। इसी का बयान इस आयत में है।

सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की एक सौ बीवियाँ थीं। आपको सबसे ज़्यादा एतिबार उनमें से एक बीवी पर था, जिनका नाम जरादा था। जब जुनुबी (यानी नापाकी की हालत में) होते या पाख़ाने के लिये जाते तो अपनी अंगूठी उनही को सौंप जाते। एक मर्तबा आप पाख़ाने के लिये गये, पीछे से एक शैतान आप ही की सूरत बनाकर आया और बीवी साहिबा से अंगूठी तलब की। आपने दे दी। यह उसको लेते ही तख़्त पर बैठ गया। अब जो हज़रत सुलैमान आये और अंगूठी तलब की तो बीवी साहिबा ने कहा आप अंगूठी तो ले गये। आप समझ गये कि यह ख़ुदा की आज़माईश है, बहुत परेशान हुए और महल से निकल गये। शैतान ने चालीस दिन तक हुकूमत की लेकिन अहकाम की तब्दीली को देखकर उलेमा ने समझ लिया कि यह सुलैमान नहीं। चुनाँचे उन उलेमा की जमाअ़त आपकी बीवियों के पास आई और उनसे कहा यह क्या मामला है? हमें सुलैमान की ज़ात पर शक पैदा हो गया है। अगर यह वाक़ई सुलैमान हैं तो इनकी अ़क्ल जाती रही है या फिर यह सुलैमान नहीं, वरना ऐसे ख़िलाफ़े शरीअ़त अहकाम न देते। औ़रतें यह सुनकर रोने लगीं और ये लोग वहाँ से वापस आ गये, तख़्त को आस-पास से घेरकर बैठ गये और तौरात खोलकर उसकी तिलावत शुरू कर दी। यह ख़बीस शैतान कलामे ख़ुदा से भागा और अंगूठी समुद्र में फेंक दी, जिसे एक मछली निगल गई।

हज़रत सुलैमान यूँ ही अपने दिन गुज़ारते थे। एक मर्तबा समुद्र के किनारे निकल गये, भूख बहुत लगी थी। माहीगीरों (मछुहारों) को मछलियाँ पकड़ते हुए देखकर उनके पास आकर उनसे एक मछली माँगी और अपना नाम बताया। इससे बाज़ लोगों को बड़ा ग़ुस्सा आया कि देखो भीखमंगा अपने को सुलैमान बता रहा है। उन्होंने आपको मारना पीटना शुरू किया। आप ज़ख़्मी हो गये और एक किनारे जाकर अपना ज़ख़्म धोने लगे। बाज़ माहीगीरों को रहम आ गया कि एक माँगने वाले को ख़्वाह-मख़्वाह मारा। जाओ भाई उसे दो मछलियाँ दे आओ। भूखा है भूनकर खा लेगा। चुनाँचे वे मछलियाँ आपको दे आये। भूख की वजह से आप अपने ज़ख़्मों और ख़ून को भूल गये और जल्दी से मछली का पेट चाक करने बैठ गये। ख़ुदा की क़ुदरत से मछली के पेट से वह अंगूठी निकली। आपने ख़ुदा की तारीफ़ बयान की और अंगूठी उंगली में डाल ली। उसी वक़्त परिन्दों ने आकर आप पर साया कर लिया और लोगों ने पहचान लिया और आप से

उज़्र व माज़िरत करने लगे (यानी अपनी ग़लती पर शर्मिन्दा होकर माफ़ी माँगने लगे)। आपने फ़रमाया यह सब अल्लाह की तरफ़ से था, ख़ुदा की तरफ़ से एक इम्तिहान था।

आप तशरीफ़ ले आये, अपने तख़्त पर बैठ गये और हुक्म दिया कि उस शैतान को जहाँ भी वह हो गिरफ़्तार करके लाओ। चुनाँचे उसको क़ैद कर लिया गया। आपने उसे एक लोहे के सन्दूक़ में बन्द किया और ताला लगाकर मोहर लगा दी और समुद्र में फिंकवा दिया। जो क़ियामत तक वहीं क़ैद रहेगा। उसका नाम हबक़ीक़ था। आपकी यह दुआ कि मुझे ऐसा मुल्क अ़ता फ़रमाया जाये जो मेरे बाद किसी के लायक़ न हो, यह भी पूरी हुई और हवायें आपके ताबे कर दी गईं।

मुजाहिद रह. से मन्क़ूल है कि एक शैतान से जिसका नाम आसिफ़ था, एक मर्तबा हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने पूछा कि तुम लोगों को किस तरह फ़ितने में डालते हो? उसने अ़र्ज़ किया ज़रा मुझे अपनी अंगूठी दिखाओ मैं अभी आपको दिखा देता हूँ। आपने अंगूठी दे दी, उसने उसे समुद्र में फेंक दिया और ख़ुद तख़्त व ताज का मालिक बन बैठा और आपके लिबास में लोगों को राहे ख़ुदा से हटाने लगा......।

याद रहे कि ये सब वाक़िआ़त बनी इस्राईल के बयान किये हुए हैं और इन सबसे मुन्कर वाक़िआ़ वह है जो इब्ने अबी हातिम में है और जो ऊपर बयान हुआ, जिसमें आपकी बीवी साहिबा हज़रत जरादा का ज़िक्र है। उसमें यह भी है कि आख़िर नौबत यहाँ तक पहुँची थी कि लड़कों (गली-मौहल्ले के बच्चों) को आप पत्थर मारते थे। आपकी बीवियों से उलेमा ने जब तफ़तीश की तो उन्होंने कहा हाँ हमें भी उसके सुलैमान होने से इनकार है। क्योंकि वह माहवारी की हालत में हमारे पास आता है। शैतान को जब मालूम हुआ कि राज़ खुल गया है तो उसने जादू और कुफ़्र की किताबें लिखवाकर कुर्सी के नीचे दफ़न कर दीं और फिर लोगों के सामने उन्हें निकलवा कर उनसे कहा देखो इन किताबों की बदौलत सुलैमान तुम पर हुकूमत कर रहा था, चुनाँचे लोगों ने आपको काफ़िर कहना शुरू कर दिया। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम समुद्र के किनारे मज़दूरी करते थे। एक मर्तबा एक शख़्स ने बहुत सी मछलियाँ ख़रीदीं, मज़दूर को बुलाया, आप पहुँचे उसने कहा यह उठा लो! पूछा क्या मज़दूरी दोगे? उसने कहा इसमें से एक मछली तुझे दे दूँगा। आपने टोकरा सर पर रखा और उसके यहाँ पहुँचा दिया। उसने एक मछली दे दी। आपने उसे लिया, पेट चाक करते ही वह अंगूठी निकल पड़ी। पहनते ही तमाम शयातीन, जिन्न, इनसान फिर ताबे हो गये और झुरमुट बाँधकर हाज़िर हो गये। आपने मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया और उस शैतान को सख़्त सज़ा दी।

पस "सुमू-म अनाब" से मुराद शैतान जो मुसल्लत किया गया था उसका लौटना है। इसकी सनद हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. तक है। यह सनद क़वी (मज़बूत) तो है लेकिन ज़ाहिर है कि इसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने अहले किताब से लिया है। यह भी उस वक़्त जब हम इसे इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल मान लें। अहले किताब की एक जमाअ़त हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को नबी नहीं मानती थी तो अ़जब नहीं कि यह बेहूदा क़िस्सा उसी ख़बीस जमाअ़त का गढ़ा हुआ हो। इसमें तो वे बातें भी हैं जो बिल्कुल मुन्कर (नाक़ाबिले क़बूल) हैं। ख़ुसूसन उस शैतान का आपकी औ़रतों के पास जाना। दूसरे इमामों ने भी ऐसे क़िस्से बयान तो किये हैं लेकिन इस बात का सब ने इनकार किया है और कहा है कि जिन्न सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की बीवियों के पास नहीं जा सका और नबी के घराने की औ़रतों की पाकदामनी व आबरू का तक़ाज़ा भी यही है। और भी बहुत से लोगों ने इन वाक़िआ़त को बहुत तफ़सील से बयान किया है लेकिन सबकी असल यही है कि वे बनी इस्राईल और अहले किताब से लिये गये हैं। वल्लाहु आलम।

शीबानी रह. फ़रमाते हैं कि आपने अपनी अंगूठी अ़स्क़लान में पाई थी और बैतुल-मुक़द्दस तक तवाज़ो

और विनम्रता के तौर पर आप पैदल चले थे। इमाम इब्ने अबी हातिम ने सिफ़ते सुलैमान में कअ़बे अहबार रज़ि. से एक अ़जीब ख़बर रिवायत की है। अबू इस्हाक़ मिस्री कहते हैं कि जब 'क़ौमे आ़द' यानी इरम वालों के क़िस्से से हज़रत कअ़ब रज़ि. ने फ़राग़त हासिल की तो हज़रत मुआ़विया रज़ि. ने कहा- अबू इस्हाक़! आप हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की कुर्सी का ज़िक्र भी कीजिये। तो फ़रमाया कि "वह हाथी दाँत की थी, क़ीमती मोतियों याक़ूत ज़बर्जद और लुअ्लुअ् से जड़ी हुई थी और चारों तरफ़ उसके सोने के खजूर के दरख़्त बने हुए थे, जिनके ख़ोशे भी मोतियों के थे, उनमें जो दाहिनी जानिब थे उनके सर पर दो मोर थे और बाँयीं तरफ़ वालों पर गिद्ध थे और वे भी सोने के थे। इसी कुर्सी के पहले दर्जे पर दाहिनी तरफ़ दो दरख़्त सनोबर के सोने के थे और बाईं तरफ़ दो शेर सोने के बने हुए थे। उनके सरों पर दो सुतून ज़बर्जद के थे और कुर्सी के दोनों ओर अंगूर की सुनेहरी बेलें थी जो कुर्सी को ढाँपे हुए थीं। उनके ख़ोशे भी सुर्ख़ मोती के थे। फिर कुर्सी के आला दर्जे पर (यानी ऊपर वाले हिस्से पर) दो शेर सोने के बहुत बड़े बने हुए थे, जिनके अन्दर ख़ोल था, उनमें मुश्क व अ़म्बर भरा रहता था। हज़रत सुलैमान जब कुर्सी पर आते थे तो ये शेर हरकत करते और उनके घूमने से उनके अन्दर से मुश्क व अ़म्बर चारों तरफ़ छिड़क जाता। फिर दो मिम्बर सोने के बिछा दिये जाते एक आपके वज़ीर का और एक उस वक़्त के सबसे बड़े आ़लिम का। फिर कुर्सी के सामने सत्तर मिम्बर सोने के और बिछा दिये जाते जिन पर बनी इस्राईल के क़ाज़ी, उनके उलेमा और उनके सरदार बैठते और उनके पीछे पैंतीस मिम्बर सोने के और होते थे जो ख़ाली रहा करते थे।

हज़रत सुलैमान जब तशरीफ़ लाते तो पहले ज़ीने पर क़दम रखते ही कुर्सी उन तमाम चीज़ों समेत घूम जाती, शेर अपना दाहिना क़दम आगे बढ़ा देता और गिद्ध अपना बायाँ पर फैला देता। जब दूसरे दर्जे पर क़दम रखते तो शेर अपना बायाँ हाथ फैला देते और गिद्ध अपना दाहिना पर। जब आप तीसरे दर्जे पर चढ़ जाते और कुर्सी पर बैठ जाते तो एक बड़ा गिद्ध आपका ताज लेकर आपके सर पर रख देता। फिर कुर्सी तेज़ी से घूमती। हज़रत मुआ़विया रज़ि. ने पूछा आख़िर इसकी क्या वजह है? फ़रमाया वह एक सोने की लाट पर थी जिसे सख़्र नाम के जिन्न ने बनाई थी। उसके घूमते ही नीचे वाले मोर, गिद्ध वग़ैरह सब ऊपर आ जाते और सर झुकाते, परों को फड़फड़ाते, जिससे आपके जिस्म पर सोने का छिड़काव हो जाता। फिर एक सोने का कबूतर तौरात उठाकर आपके हाथ में देता जिसे आप तिलावत फ़रमाते। लेकिन यह रिवायत बिल्कुल ग़रीब है।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ का मतलब यह है कि मुझे ऐसा मुल्क दे कि मुझसे कोई दूसरा उसको छीन न सके। जैसे कि उस जिस्म का वाक़िआ़ हुआ जो आपकी कुर्सी पर डाल दिया गया था। यह मतलब नहीं कि आप दूसरों के लिये ऐसा मुल्क न मिलने की दुआ़ करते हों। लेकिन बाज़ लोगों ने यह मायने लिये हैं, वह कुछ ठीक नज़र नहीं आते बल्कि सही यही है कि आपकी दुआ़ का यही मतलब था कि मुझे ऐसा मुल्क और हुकूमत दी जाये कि मेरे बाद फिर किसी और शख़्स को ऐसी हुकूमत न मिले। यही आयत के अलफ़ाज़ से मालूम होता है और यही अहादीस से भी साबित होता है।

सही बुख़ारी में है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक मर्तबा फ़रमाया कि "एक सरकश जिन्न ने पिछली रात शरारत की और मेरी नमाज़ बिगाड़नी चाही, लेकिन ख़ुदा ने मुझे उस पर क़ाबू दे दिया और मैंने चाहा कि मैं उसे मस्जिद के इस सुतून से बाँध दूँ ताकि सुबह तुम सब उसे देखो। लेकिन उसी वक़्त मुझे मेरे भाई सुलैमान की दुआ़ याद आ गई।"

Maktab E Ashraf

हदीस बयान करने वाले हज़रत रूह रज़ि. फ़रमाते हैं कि फिर हुज़ूर सल्ल. ने उसे ज़लील व ख़्वार करके छोड़ दिया। एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. नमाज़ में खड़े हुए तो हमने सुना कि आपने फ़रमायाः

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْكَ.

"मैं तुझसे अल्लाह की पनाह चाहता हूँ।" फिर आपने तीन बार फ़रमायाः

اَلْعَنُكَ بِلَعْنَةِ اللّٰهِ.

"मैं तुझ पर अल्लाह की लानत भेजता हूँ।" आपने इस तरह अपना हाथ बढ़ाया कि गोया आप किसी चीज़ को पकड़ना चाहते हैं। जब फ़ारिग़ हुए तो हमने आपसे इन दोनों बातों की वजह पूछी। आपने फ़रमाया खुदा का दुश्मन इब्लीस आग लेकर मेरे मुँह में डालने आया तो मैंने तीन मर्तबा 'अऊज़ु बिल्लाहि मिन्-क' पढ़ी। फिर तीन मर्तबा उस पर लानत भेजी, लेकिन वह फिर भी न हटा। फिर मैंने चाहा कि उसको पकड़ कर बाँध दूँ ताकि मदीने के लड़के उससे खेलें। अगर हमारे भाई हज़रत सुलैमान की दुआ न होती तो मैं यही करता।

हज़रत अता बिन यज़ीद लेसी रह. नमाज़ पढ़ रहे थे कि अबू उबैद ने उनके सामने से गुज़रना चाहा। उन्होंने उन्हें अपने हाथ से रोक दिया। फिर फ़रमाया मुझसे अबू सईद ख़ुदरी ने हदीस बयान की "हुज़ूर सल्ल. सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे और मैं भी हुज़ूर सल्ल. के पीछे था। क़िराअत आप पर ख़ल्त-मल्त हो गई तो फ़ारिग़ होकर फ़रमाया काश कि तुम देखते कि मैंने इब्लीस को पकड़ लिया था और इस क़द्र उसका गला घोंटा कि उसके मुँह से झाग मेरी शहादत और बीच की उंगली पर पड़े। अगर मेरे भाई हज़रत सुलैमान की दुआ न होती तो वह सुबह होते ही इस मस्जिद के सुतून से बंधा हुआ मिलता और मदीने के बच्चे उसको परेशान करते होते। तुमसे जहाँ तक हो सके इस बात का ख़्याल रखो कि नमाज़ की हालत में तुम्हारे सामने से कोई गुज़रने न पाये"। (मुस्नद अहमद)

एक और हदीस में है, रबीआ बिन यज़ीद बिन अब्दुल्लाह दैलमी रह. कहते हैं कि मैं हज़रत अमर बिन आस रज़ि. के पास ताईफ़ के एक बाग़ में गया, जिसका नाम वहत था। आप उस वक़्त एक क़ुरैशी को पकड़े हुए थे जो ज़ानी और शराबी था। मैंने उनसे कहा मुझे पता चला है कि आप यह हदीस बयान फ़रमाते हैं कि जो एक घूँट शराब पियेगा अल्लाह तआला चालीस दिन तक उसकी तौबा क़बूल न फ़रमायेगा। और बुरा आदमी वह है जो माँ के पेट में ही बुरा हो गया। जो शख़्स सिर्फ़ नमाज़ ही की नीयत से बैतुल-मुक़द्दस की मस्जिद में जाये तो वह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसे आज ही पैदा हुआ हो। वह शराबी शख़्स जिसको हज़रत अब्दुल्लाह पकड़े हुए थे वह तो शराब का ज़िक्र सुनते ही झटका देकर अपना हाथ छुड़ाकर भाग गया। अब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि. ने फ़रमाया किसी को इस बात का हक़ नहीं कि मेरे ज़िम्मे वह बात मन्सूब करे जो मैंने न कही हो। दर असल मैंने तो हुज़ूर सल्ल. से इस तरह सुना है कि "जो शख़्स शराब का एक घूँट पी ले उसकी चालीस दिन की नमाज़ मक़बूल नहीं। अगर वह तौबा करे तो अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल फ़रमाता है। फिर अगर दोबारा लौटे तो फिर चालीस दिन तक नमाज़ें नामक़बूल हैं, फिर अगर तौबा कर ले तो तौबा मक़बूल है। मुझे अच्छी तरह याद नहीं कि तीसरी या चौथी मर्तबा भी फ़रमाया कि अगर फिर लौटेगा तो यक़ीनन अल्लाह तआला उसको जहन्नमियों के बदन का ख़ून, पीप और पेशाब वग़ैरह क़ियामत के दिन पिलायेगा"। और हुज़ूर सल्ल. से मैंने सुना है कि अल्लाह

तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ को अंधेरे में पैदा किया, फिर उन पर अपना नूर डाला जिस पर वह नूर उस दिन पड़ गया वह तो हिदायत वाला हो गया और जिस तक वह नूर न पहुँचा वह भटक गया। इसी लिये मैं कहता हूँ कि अल्लाह तआ़ला के इल्म के मुताबिक़ क़लम चल चुका। और मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से तीन दुआयें कीं, जिनमें से दो तो उन्हें मिल गईं और हमें उम्मीद है कि तीसरी हमारे लिये हो।

1. मुझे ऐसा हुक्म दे जो तेरे हुक्म के मुवाफ़िक़ हो।

2. मुझे ऐसा मुल्क दे जो मेरे बाद किसी के लिये लायक़ न हो।

3. जो शख़्स अपने घर से इस मस्जिद की नमाज़ के इरादे ही से निकले तो जब वह लौटे तो ऐसा हो जाये गोया आज ही पैदा हुआ हो। पस हमें उम्मीद है कि यह हमारे लिये ख़ुदा ने दी हो।

तबरानी में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम को अपने लिये एक घर बनाने का हुक्म दिया। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने पहले अपना घर बना लिया, इस पर 'वही' आई कि तुमने अपना घर मेरे घर से पहले बनाया? आपने अ़र्ज़ किया परवर्दिगार! यही फ़ैसला किया गया था। फिर मस्जिद बनानी शुरू की, दीवारें पूरी हो गईं तो इत्तिफ़ाक़न तिहाई हिस्सा गिर गया। आपने अल्लाह से दुआ़ की तो जवाब मिला कि तू मेरा घर नहीं बना सकता। पूछा क्यों? फ़रमाया इसलिये कि तेरे हाथों से ख़ून बहा है। अ़र्ज़ किया ख़ुदाया! वह भी तो तेरी ही मुहब्बत में, फ़रमाया हाँ लेकिन वे मेरे बन्दे थे, मैं उन पर रहम करता हूँ। आप इस बात से बहुत रन्जीदा और दुखी हुए। फिर 'वही' आई कि तू ग़मगीन न हो, मैं इसे तेरे लड़के सुलैमान के हाथों पूरा कराऊँगा। चुनाँचे आपके इन्तिक़ाल के बाद हज़रत सुलैमान ने इसे बनाना शुरू किया। जब पूरा कर चुके तो बड़ी-बड़ी क़ुरबानियाँ कीं, जानवर ज़िबह किये और बनी इस्राईल को जमा करके ख़ूब खिलाया पिलाया। चुनाँचे 'वही' उतरी कि तूने ये सब कुछ मेरे हुक्म की तकमील (पूरा होने) की ख़ुशी में किया है लिहाज़ा तू मुझसे माँग, जो माँगेगा मिलेगा। अ़र्ज़ किया ख़ुदाया! मेरे तीन सवाल हैं, मुझे ऐसा फ़ैसला समझा जो तेरी मंशा के मुताबिक़ हो, और ऐसा मुल्क दे जो मेरे बाद किसी के लायक़ न हो और जो इस घर में सिर्फ़ नमाज़ के इरादे से आये तो वह अपने गुनाहों से ऐसा आज़ाद हो जाये जैसे आज ही पैदा हुआ हो। इनमें से दो चीज़ें तो अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमा दीं और उम्मीद है कि तीसरी भी दे दी गई हो। रसूलुल्लाह सल्ल. अपनी हर दुआ़ को इन लफ़्ज़ों से शुरू फ़रमाते थेः

سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَلِيِّ الْاَعْلَى الْوَهَّابِ.

सुब्हानल्लाहि रब्बिल-अ़लिय्यिल् अअ़्लल् वह्हाबि। (मुस्नद)

एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत दाऊद के इन्तिक़ाल के बाद अल्लाह तआ़ला ने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाया- मुझसे अपनी हाजत तलब करो। आपने अ़र्ज़ किया ख़ुदाया! मुझे ऐसा दिल दे जो तुझसे डरता रहे जैसे कि मेरे वालिद का दिल तुझसे ख़ौफ़ किया करता था। और मेरे दिल में अपनी मुहब्बत डाल दे जैसे मेरे वालिद के दिल में तेरी मुहब्बत थी। इस पर अल्लाह तआ़ला बहुत ख़ुश हुआ कि मेरा बन्दा ऐन मेरी अ़ता के वक़्त भी मुझसे डर और मेरी मुहब्बत तलब करता है। मुझे अपनी क़सम है मैं इसे इतनी बड़ी हुकूमत और बादशाही दूँगा जो इसके बाद किसी को न मिले। फिर अल्लाह तआ़ला ने उनकी मातहती में हवायें कर दीं और जिन्नात को भी उनका मातहत (ताबे) बना दिया और इस क़द्र मुल्क व माल पर भी उन्हें क़ियामत के हिसाब से आज़ाद कर दिया।

इब्ने अ़साकिर में है कि हज़रत दाऊद ने दुआ़ की कि बारी तआ़ला! सुलैमान के साथ भी उसी लुत्फ़

Muktab E Ashraf

व करम से पेश आ जो लुत्फ़ व करम तेरा मुझ पर रहा, तो 'वही' नाज़िल हुई कि सुलैमान से कह दो वह भी उसी तरह मेरा रहे जिस तरह तू मेरा था। तो मैं भी उस के साथ हो जाऊँगा जैसे कि तेरे साथ था।

आगे बयान हो रहा है कि जब हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदा की मुहब्बत में आकर उन ख़ूबसूरत प्यारे वफ़ादार तेज़-रफ़्तार घोड़ों को काट डाला तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उन्हें उनके बदले उनसे बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमाई। यानी हवा को उनके हुक्म के ताबे कर दिया जो एक महीने की राह को सुबह की एक घड़ी में तय कर देती थी और इसी तरह शाम को। जहाँ का इरादा करते वहीं ज़रा सी देर में पहुँचा देती। जिन्नात को भी हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के ताबे कर दिया। उनमें से बाज़ बड़ी ऊँची लम्बी और ठोस इमारत के बनाने का काम अन्जाम देते थे जो इनसानी ताक़त से बाहर था और बाज़ ग़ोताख़ोर (समुद्रों और दरियाओं में डुबकी लगाने वाले) थे जो समुद्र की तह में से लुअ्लुअ् और जवाहिर (यानी क़ीमती हीरे और मोती) और दीगर क़िस्म-क़िस्म की नफ़ीस व नादिर चीज़ें ला देते थे। फिर और कुछ थे जो भारी बेड़ियों में जकड़े रहते थे, ये तो वे थे जो हुकूमत से बग़ावत करते थे या काम-काज में शरारत और कमी करते थे, या लोगों को सताते और तकलीफ़ देते थे। यह है हमारी मेहरबानी और हमारी बख़्शिश और हमारा इनाम और हमारा अ़तीया। अब तुझे इख़्तियार है जिससे जो चाहे सुलूक कर। सब बेहिसाब है, किसी पर पकड़ नहीं। जो तेरी ज़बान से निकलेगा वह हक़ होगा।

सही हदीस में है कि जब रसूलुल्लाह सल्ल. को इख़्तियार दिया गया कि अगर चाहें तो अ़ब्द व रसूल रहें यानी जो हुक्म दिया जाये बजा लाते रहें। ख़ुदा के फ़रमान के मुताबिक़ तक़सीम करते रहें। और अगर चाहें तो नबी और बादशाह बना दिये जायें, जिसे चाहें दें और जिसे चाहें न दें और उसका कोई हिसाब ख़ुदा के यहाँ न लिया जाये, तो आपने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से मश्विरा लिया और आपके मश्विरे से पहली बात क़बूल फ़रमाई। क्योंकि फ़ज़ीलत के लिहाज़ से औला व आला वही है। अगरचे नुबुव्वत व बादशाहत बड़ी चीज़ है। इसी लिये हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की दुनियावी शान व शौकत बयान करते ही फ़रमाया कि वह आख़िरत के जहान में भी हमारे पास बड़े मर्तबे, बेहतरीन ज़िन्दगी और बहुत निकटता रखते हैं।

और हमारे बन्दे अय्यूब (अ़लैहिस्सलाम) को याद कीजिए, जबकि उन्होंने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझको रंज और दुख पहुँचाया है। (41) अपना पाँव मारो, यह नहाने का ठंडा पानी है और पीने का। (42) और हमने उनको उनका कुन्बा अ़ता फ़रमाया और उनके साथ (गिनती में) उनके बराबर और भी (दिए) अपनी ख़ास रहमत के सबब से, और अ़क्ल वालों के लिए यादगार रहने के सबब से। (43) और तुम अपने हाथ में एक मुट्ठा सींकों का लो और उससे मारो और क़सम न तोड़ो, बेशक हमने उनको साबिर पाया, अच्छे बन्दे थे कि बहुत रुजू होते थे। (44)	وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ○ اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّ شَرَابٌ ○ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ○ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ○

Maktaba Ashraf

हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम का सब्र

हज़रत अय्यूब का ज़िक्र हो रहा है और उनके सब्र की और इम्तिहान में पास होने की तारीफ़ बयान हो रही है कि माल बरबाद हो गया, औलाद मर गई, जिस्म मरीज़ हो गया, यहाँ तक कि सूई के नाके के बराबर सारे जिस्म में ऐसी जगह न थी जहाँ बीमारी न हो, सिर्फ़ दिल सलामत रह गया था और फिर फ़क़ीरी और मुफ़्लिसी का यह हाल था कि एक वक़्त का खाना पास न था, और इस हाल में कोई ऐसा न था जो ख़बरगीरी करता सिवाय एक बीवी साहिबा के जिनके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा और अपने शौहर की मुहब्बत थी। लोगों का काम-काज करके अपना और अपने शौहर का पेट पालती थीं। आठ साल तक यही रहा हालाँकि उससे पहले उनसे ज़्यादा मालदार कोई न था। औलाद भी बहुत ज़्यादा थी और दुनिया की हर राहत मौजूद थी। अब हर चीज़ छीन ली गई थी, और शहर का कूड़ा करकट जहाँ डाला जाता था वहाँ आपको ला बैठाया था। इस हाल में एक दो दिन नहीं, साल दो साल नहीं पूरे आठ साल गुज़ारे। अपने और ग़ैर हर एक ने मुँह फेर लिया था यहाँ तक कि ख़ैरियत पूछने वाला भी कोई न था। सिर्फ़ आपकी यही एक बीवी साहिबा थीं जो हर वक़्त दिन-रात आपकी ख़िदमत में लगी हुई थीं। अलबत्ता पेट पालने के लिये मेहनत मज़दूरी के वक़्त आपकी ख़िदमत से मजबूरी में अलग होना पड़ता था।

आख़िरकार आज़माईश और इम्तिहान के ख़त्म होने का वक़्त आया और अल्लाह के इस मक़बूल बन्दे ने अपने रब की बारगाहे करम में आह व फ़रियाद की और कपकपाते हुए होंठों, दिल की हुज़ूरी के साथ दुआ़ की कि "ऐ मेरे पालनहार ख़ुदा! मुझे दुख ने तड़पा दिया है और तू अर्हमुर्राहिमीन (तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला) है। यहाँ जो दुआ़ है उसमें जिस्मानी तकलीफ़ और माल व औलाद के दुख-दर्द का ज़िक्र किया" उसी वक़्त रहीम व करीम ख़ुदा ने उनकी दुआ़ को क़बूल फ़रमाया और हुक्म हुआ कि ज़मीन पर अपना पाँव मारो। पाँव लगते ही वहाँ एक चश्मा उबलने लगा। हुक्म हुआ कि इस पानी से ग़ुस्ल कर लो। ग़ुस्ल करते ही बदन की तमाम बीमारी इस तरह जाती रही गोया थी ही नहीं। फिर हुक्म हुआ कि एक और जगह ऐड़ी मारो, वहाँ भी पाँव मारते ही दूसरा चश्मा जारी हो गया। हुक्म हुआ कि इसका पानी पी लो। उसका पानी पीते ही अन्दुरूनी बीमारियाँ भी जाती रहीं और ज़ाहिर व बातिन की आ़फ़ियत और कामिल तन्दुरुस्ती हासिल हो गई।

इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- अट्ठारह साल तक अल्लाह के यह पैग़म्बर दुख-दर्द में मुब्तला रहे। अपने और ग़ैर सब ने छोड़ दिया, हाँ आपके दो मुख़्लिस दोस्त सुबह व शाम ख़ैरियत और मिज़ाज पूछने के लिये आ जाया करते थे। एक मर्तबा एक ने दूसरे से कहा- मेरा ख़्याल है कि अय्यूब ने ख़ुदा की बड़ी नाफ़रमानी की है कि अट्ठारह साल से इस बला में मुब्तला है और ख़ुदा इस पर रहम नहीं करता। उस दूसरे शख़्स ने शाम को हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम से उस शख़्स की यह बात ज़िक्र कर दी। आपको सख़्त रंज हुआ और फ़रमाया- मैं नहीं जानता वह ऐसा क्यों कहते हैं? ख़ुदा ख़ूब जानता है, मेरी तो यह हालत थी कि जब दो शख़्सों को आपस में झगड़ते देखता और दोनों अल्लाह को बीच में ले आते तो मुझसे यह देखा न जाता कि ख़ुदा तआ़ला के अ़ज़ीज़ नाम की इस तरह याद की जाये, क्योंकि दो में से एक तो ज़रूर मुजरिम होगा और दोनों अल्लाह का नाम ले रहे हैं तो मैं अपने पास से दे-दिलाकर उनके झगड़े को ख़त्म कर देता कि अल्लाह के नाम की बेअदबी न हो।

आपसे उस वक़्त चला फिरा बल्कि उठा बैठा भी नहीं जाता था। पाख़ाने के बाद आपकी बीवी साहिबा

Mahtab E Ashraf

आपको उठाकर लाती थीं। एक मर्तबा वह मौजूद न थीं, आपको बहुत तकलीफ़ हुई। आपने उस रोज़ बारगाहे इलाही में अपनी सेहत के लिये दुआ की। ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से 'वही' आई कि ज़मीन पर पाँव मारो बहुत देर के बाद जब आपकी बीवी साहिबा आईं तो क्या देखती हैं कि बीमार शौहर तो है नहीं और कोई दूसरा तन्दुरुस्त शख़्स नूरानी चेहरे वाला बैठा हुआ है। पहचान न सकीं और दरियाफ़्त करने लगीं- "ऐ अल्लाह के नेक बन्दे! यहाँ अल्लाह के एक नबी थे जो दुख-दर्द में मुब्तला थे, क्या आपने उन्हें देखा है? वल्लाह जब वह तन्दुरुस्त थे तो क़रीब-क़रीब तुम्हारे जैसे ही थे" आपने फ़रमाया वह मैं ही हूँ।

रिवायत बयान करने वाले का कहना है कि आपकी दो कोठियाँ थीं, एक गेहूँ के लिये और एक जौ के लिये। अल्लाह तआ़ला ने दो बादल भेजे, एक में से सोना बरसा और एक कोठी अनाज की उससे भर गई और दूसरे में से भी सोना बरसा और दूसरी भी भर गई। (इब्ने जरीर) सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम नंगे होकर (यानी खुली जगह में) नहा रहे थे कि आसमान से सोने की टिड्डियाँ बरसने लगीं, आपने जल्दी-जल्दी उनको अपने कपड़े में समेटना शुरू किया तो अल्लाह तआ़ला ने आवाज़ दी कि ऐ अय्यूब! क्या मैंने तुम्हें ग़नी और बेपरवाह नहीं कर रखा है। आपने जवाब दिया हाँ ख़ुदाया बेशक तूने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। मैं सबसे ग़नी और बेनियाज़ हूँ लेकिन तेरी रहमत से बेनियाज़ नहीं हूँ, बल्कि उसका तो मोहताज हूँ। पस अल्लाह तआ़ला ने अपने उस साबिर पैग़म्बर को नेक बदले और बेहतर जज़ायें अ़ता फ़रमाईं। औलाद भी दी और उसी के बराबर और भी दिया। बल्कि हज़रत हसन रह. और क़तादा रह. से तो मन्क़ूल है कि मुर्दा औलाद ख़ुदा ने ज़िन्दा कर दी और उतनी ही मज़ीद औलाद अ़ता की, यह था अल्लाह का रहम जो उनके सब्र व इस्तिक़लाल (अल्लाह की तक़दीर पर जमाव), अल्लाह की तरफ़ रुजू और तवाज़ो व इन्किसारी के बदले अल्लाह ने उनको अ़ता फ़रमाया, और अ़क़्लमन्दों के लिये नसीहत व इबरत है, वे जान लेते हैं कि सब्र का अन्जाम कुशादगी (हालात का आसान और मुवाफ़िक़ होना) और रहमत व राहत है।

बाज़ लोगों का बयान है कि हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम अपनी बीवी के किसी काम की वजह से उन पर नाराज़ हो गये थे। बाज़ कहते हैं कि वह अपने बालों की एक लट बेचकर उनके लिये खाना लाई थीं इस बात पर आप नाराज़ हुए और क़सम खा ली थी कि शिफ़ा हो जाने के बाद सौ कोड़े मारेंगे। दूसरों ने नाराज़गी की दूसरी वजह बयान की है। जब आप तन्दुरुस्त और सही सालिम हो गये तो इरादा किया कि अपनी क़सम को पूरा करें लेकिन ऐसी नेक-सिफ़्त ख़ातून ऐसी सज़ा के लायक़ न थीं जो हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम ने तय कर रखी थी। जिस औ़रत ने उस वक़्त ख़िदमत की जब कोई दर्दमन्द और साथी न था, इसलिये रब्बुल-आलमीन और अर्हमुर्राहिमीन ने उन पर रहम किया और अपने नबी को हुक्म दिया कि क़सम पूरी करने के लिये खजूर की एक टहनी ले लो जिसमें एक सौ सींकें हों और एक बार इन्हें मार दो। ऐसा कर देने से क़सम पूरी हो जायेगी और एक ऐसी नेक साबिरा शाकिरा नेक बीवी पर सज़ा भी न होगी। यही अल्लाह का दस्तूर है कि वह अपने नेक बन्दों को जो उससे डरते रहते हैं बुराईयों और बदियों से महफ़ूज़ रखता है।

फिर अल्लाह तआ़ला हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम की तारीफ़ व ख़ूबी बयान करता है कि हमने उनको सब्र व संयम करने वाला पाया, वह बड़ा नेक और अच्छा बन्दा साबित हुआ। उसके दिल में हमारी सच्ची मुहब्बत थी। वह हमारी तरफ़ झुकता रहा और हमीं से लौ लगाये रहा। इसी लिये फ़रमाने ख़ुदा है कि जो अल्लाह से डरता रहता है अल्लाह उसके लिये राहत व आराम की सूरत निकाल देता है। और उसको ऐसी

जगह से रोज़ी पहुँचाता है जो उसके ख़्याल में भी न हो। अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल रखने वालों को अल्लाह ही काफ़ी है। अल्लाह अपने काम में पूरा उतरता है। अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है, गहरी नज़र रखने वाले उलेमा-ए-किराम ने इस आयत से ईमान वग़ैरह से सम्बन्धित बहुत से मसाइल निकाले हैं। वल्लाहु आलम।

और हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब (अ़लैहिमुस्सलाम) को याद कीजिए जो हाथों वाले और आँखों वाले थे। (45) हमने उनको एक ख़ास बात के साथ मख़्सूस किया था कि वह आख़िरत की याद है। (46) और वे (हज़रात) हमारे यहाँ चुनिन्दा और सब से अच्छे लोगों में से हैं। (47) और इस्माईल और य-सअ़ और ज़ुलकिफ़्ल (अ़लैहिमुस्सलाम) को भी याद कीजिए, और ये सब भी सबसे अच्छे लोगों में से हैं। (48)	وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِى الْاَيْدِىْ وَالْاَبْصَارِ ۝ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۝ وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ۝ وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ۝

हज़राते अम्बिया-ए-किराम सभी मुन्तख़ब बन्दे थे

अल्लाह तआ़ला अपने आ़बिद बन्दों और रसूलों की फ़ज़ीलतों को बयान फ़रमा रहा है और उनके नाम गिनवा रहा है। हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़ और हज़रत याक़ूब अ़लैहिमुस्सलाम। और फ़रमाता है कि इनके आमाल बहुत अच्छे थे और सही इल्म भी रखते थे। साथ ही अल्लाह की इबादत में मुस्तैद थे और क़ुदरत की तरफ़ से इनको बसीरत (एक ख़ास समझ) अ़ता फ़रमाई गई थी। दीन में समझदार थे। इताअ़ते ख़ुदा में आला दर्जे की इस्तिक़ामत (जमाव) रखते थे। हक़ को देखने वाले थे। इनके नज़दीक दुनिया की कोई अहमियत नहीं थी। सिर्फ़ आख़िरत का ही हर वक़्त ख़्याल रहता था। हर अ़मल आख़िरत के लिये होता था। दुनिया की मुहब्बत से वे अलग थे और आख़िरत के ज़िक्र में हर वक़्त मशग़ूल रहते थे। वे आमाल इख़्तियार करते थे जो जन्नत का मुस्तहिक़ बना दें। लोगों को भी नेक आमाल की तरग़ीब देते (प्रेरणा देते और तवज्जोह दिलाते) थे। उन्हें अल्लाह तआ़ला भी क़ियामत के दिन बेहतरीन बदले और अफ़ज़ल मक़ामात अ़ता फ़रमायेगा। ये बुज़ुर्गान-ए-दीन अल्लाह के चन्द मुख़्लिस और बहुत ख़ास बन्दे हैं। हज़रत इस्माईल, हज़रत यसअ़ और हज़रत ज़ुल-किफ़्ल अ़लैहिमुस्सलाम भी चुनिन्दा और ख़ालिस बन्दों में थे। इनके हालात सूरः अम्बिया में गुज़र चुके हैं, इसलिये हमने यहाँ बयान नहीं किये।

एक नसीहत का मज़मून तो यह हो चुका, और परहेज़गारों के लिए (आख़िरत में) अच्छा ठिकाना है। (49) यानी हमेशा रहने के बाग़ात जिनके दरवाज़े उनके वास्ते खुले होंगे। (50) वे उन बाग़ों में तकिया लगाए बैठे होंगे, (और)	هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۝ مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ

Maktaba E Ashraf

वे वहाँ (जन्नत के ख़ादिमों से) बहुत-से मेवे और पीने की चीज़ें मँगवाएँगे। (51) और उनके पास नीची निगाह वालियाँ उन्हीं की उम्र वाली होंगी। (52) (ऐ मुसलमानो!) यह वह (नेमत) है जिसका तुमसे हिसाब का दिन आने पर वायदा किया जाता है। (53) बेशक यह हमारी अ़ता है, इसका कहीं अन्त ही नहीं। (54)	وَّشَرَابٍ ۝ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ۝ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَالَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ۝

राहत व आराम की जगह

इन फ़ज़ाईल के बयान में उनके लिये नसीहत है जो नसीहत व सबक़ हासिल करने और हक़ को क़बूल करने के आ़दी हैं। यह मतलब भी है कि यह क़ुरआने अ़ज़ीम 'ज़िक्र' यानी नसीहत है। नेक काम करने वालों, तक़्वे वालों के लिये आख़िरत की दुनिया में कितना पाक बदला और कैसी प्यारी जगह है, हमेशगी की जन्नतें हैं जिनके दरवाज़े उनके लिये बन्द नहीं बल्कि खुले हुए हैं। खुलवाने की भी ज़हमत नहीं। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक महल अ़दन है, जिसके आस-पास बुरुज (गुंबद) हैं। जिसके पाँच हज़ार दरवाज़े हैं और हर दरवाज़े पर पाँच हज़ार चादरें हैं। उसमें सिर्फ़ नबी या सिद्दीक़ या शहीद या आ़दिल बादशाह रहेंगे। (इब्ने अबी हातिम)

और यह तो बहुत सी बिल्कुल सही हदीसों से साबित है कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। अपने तख़्तों पर तकिये लगाये बेफ़िक्री से आलती-पालती मारकर आराम से बैठे हुए होंगे। और जिस मेवे को या जिस क़िस्म की शराब को जी चाहेगा हुक्म के साथ ख़ादिम सलीक़े से ज़रूर हाज़िर कर देंगे। उनके पास उनकी बीवियाँ होंगी जो आबरू वाली, पाकदामन, नीची निगाहों वाली और उनसे मुहब्बत रखने वाली होंगी, जिनकी निगाहें कभी दूसरे की तरफ़ न उठीं, न उठ सकेंगी। उनकी हम-उम्र और उनकी उम्र के लायक़ होंगी। इन सिफ़ात वाली जन्नत का वायदा ख़ुदा से डरते रहने वाले बन्दों से ख़ुदा तआ़ला ने फ़रमाया है। क़ियामत के दिन ये उसके वारिस व मालिक बनेंगे, जबकि क़ब्रों से उठकर आग से निजात पाकर हिसाब से फ़ारिग़ होकर यहाँ जाकर आराम से बसेंगे। यह है हमारा इनाम जिसमें न कभी कमी आयेगी और न यह ख़त्म होगा। जैसे फ़रमायाः

مَاعِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَاعِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ.

कि तुम्हारे पास जो है वह ख़त्म हो जाता है और अल्लाह के पास जो है वह बाक़ी रहने वाला है। एक और आयत में हैः

غَيْرَ مَجْذُوْذٍ.

एक और जगह हैः

غَيْرُ مَمْنُوْنٍ.

मतलब यह है कि न उसमें कभी कमी और घाटा आयेगा और न कभी वह ख़त्म और फ़ना होगा। जैसे इरशाद हैः

Maktab E Ashraf

اُكُلُهَادَآئِمٌ وَّظِلُّهَا....... الخ

कि उसके मेवे, खाने पीने और उसके साये हमेशा रहने वाले हैं। परहेज़गारों का अन्जाम यही है और काफ़िरों का अन्जाम जहन्नम है। इस मज़मून की और भी बहुत सी आयतें हैं।

هٰذَا ؕ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ۙ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ۙ وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ اَزْوَاجٌ ۝ هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًۢا بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ۝ قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۣ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝ قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِى النَّارِ ۝ وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ۙ اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ۝ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ۝ ع ٤٣ ١٣

यह बात तो हो चुकी, और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है (55) यानी दोज़ख़, उसमें वे दाख़िल होंगे, सो वह बहुत ही बुरी जगह है। (56) यह खौलता हुआ पानी और पीप है, सो ये लोग उसको चखेंगे। (57) और (इसके अ़लावा) और भी इसी क़िस्म की (नागवार) तरह-तरह की चीज़ें हैं। (58) यह एक जमाअ़त और आई जो तुम्हारे साथ (अ़ज़ाब में शरीक होने के लिए दोज़ख़ में) घुस रहे हैं, उन पर ख़ुदा की मार, यह भी दोज़ख़ ही में आ रहे हैं। (59) वे (पैरवी करने वाले उन मुक़्तदाओं से) कहेंगे, बल्कि तुम्हारे ही ऊपर ख़ुदा की मार, (क्योंकि) तुम ही तो यह (मुसीबत) हमारे आगे लाए, सो (जहन्नम) बहुत ही बुरा ठिकाना है। (60) दुआ़ करेंगे कि ऐ हमारे रब! जो शख़्स इस (मुसीबत) को हमारे आगे लाया हो उसको दोज़ख़ में दोगुना अ़ज़ाब दीजिए। (61) और वे लोग कहेंगे कि क्या बात है हम उन लोगों को (दोज़ख़ में) नहीं देखते जिनको हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। (62) क्या हमने उन लोगों की हंसी कर रखी थी, या उन (के देखने) से निगाहें चकरा रही हैं? (63) यह बात यानी दोज़ख़ियों का लड़ना-झगड़ना बिल्कुल सच्ची बात है। (64)

बुरा ठिकाना

ऊपर ज़िक्र हुई आयतों में नेकों का हाल बयान किया तो यहाँ बदकार लोगों का हाल बयान फ़रमा रहा है, जो ख़ुदा का हुक्म नहीं मानते थे। उनके लौटने की जगह बहुत बुरी है और वह जहन्नम है, जिसमें ये लोग दाख़िल होंगे और चारों तरफ़ से उन्हें दोज़ख़ की आग घेर लेगी। यह निहायत ही बुरा बिछौना है। 'हमीम' उस पानी को कहते हैं जिसकी हरारत और गर्मी इन्तिहा को पहुँच चुकी हो और 'ग़स्साक़' कहते हैं उस ठंड को जिसकी सर्दी इन्तिहा को पहुँची हुई हो। पस एक तरफ़ आग का गर्म अ़ज़ाब दूसरी जानिब ठंड

Maktaba E Ashraf

का सर्द अ़ज़ाब, और इसी तरह क़िस्म-क़िस्म के अ़ज़ाब जो एक दूसरे की ज़िद (यानी परस्पर विरोधी) होंगे। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं अगर एक डोल ग़स्साक़ का पूरी दुनिया में बहा दिया जाये तो तमाम दुनिया वाले बदबूदार हो जायें। हज़रत कअ़बे अहबार फ़रमाते हैं "ग़स्साक़" नाम की जहन्नम में एक नहर है जिसमें साँप-बिच्छू वग़ैरह का ज़हर जमा होता है। फिर वह गर्म होकर पिघलने लगता है। उसमें जहन्नमियों को ग़ोते दिये जायेंगे। जिससे उनका सारा गोश्त-पोस्त झड़ जायेगा और पिंडलियों में लटक जायेगा, जिसे वे इस तरह घसीटते फिरेंगे जैसे कोई शख़्स अपना कपड़ा घसीट रहा हो।
(इब्ने अबी हातिम)

ग़र्ज़ कि सर्दी का अ़ज़ाब अलग होगा गर्मी का अलग होगा। 'हमीम' पीने को 'ज़क़्क़ूम' खाने को। कभी आग के पहाड़ों पर चढ़ाया जाता है तो कभी आग के गड्ढों में धकेला जाता है। अल्लाह तआ़ला हम सब को इस अ़ज़ाब से बचाये।

आगे जहन्नमियों का झगड़ा, विवाद और एक दूसरे को बुरा-कहने का बयान हो रहा है। जैसे कि एक दूसरी आयत में है:

كُلَّمَا دَخَلَتْ............. الخ

कि हर गिरोह दूसरे पर बजाय सलाम के लानत भेजेगा, एक दूसरे को झुठलायेगा और एक दूसरे पर इल्ज़ाम लगायेगा। एक जमाअ़त जो पहले जहन्नम में जा चुकी है वह दूसरी जमाअ़त को जहन्नम के दारोग़ा के साथ आती हुई देखकर कहेगा कि यह गिरोह जो तुम्हारे साथ है इसे मर्हबा (यानी ख़ुशी की ख़बर) न हो, इसलिये कि यह भी जहन्नमी गिरोह है। वे आने वाले इनसे कहेंगे कि तुम्हारे लिये मर्हबा न हो, तुम ही तो थे कि हमें उन बुरे कामों की तरफ़ बुलाते रहे जिनका अन्जाम यह हुआ। पस बुरी मन्ज़िल है। फिर कहेंगे कि ऐ बारी तआ़ला! जिसने हमको इस अ़ज़ाब में मुब्तला किया तू उसको दोगुना अ़ज़ाब कर। जैसे एक दूसरी जगह इसका ज़िक्र इस तरह है:

قَالَتْ اُخْرٰهُمْ لِاُوْلٰهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا........ الخ

यानी बाद में बदकार होने वाले लोग पहले वाले बदकारों के बारे में अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! इन्होंने ही तो हमको भी गुमराह किया था, लिहाज़ा इनको दोगुना अ़ज़ाब कर। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा हर एक के लिये दोगुना अ़ज़ाब ही है, लेकिन तुम वाक़िफ़ नहीं। यानी हर एक के लिये ऐसा अ़ज़ाब है जो उसके लिये काफ़ी है। चूँकि काफ़िर लोग वहाँ मोमिनों को नहीं पायेंगे जिनको अपने ख़्याल में बहका हुआ जानते थे तो आपस में ज़िक्र करेंगे कि इसकी क्या वजह है कि हमें वे लोग जहन्नम में नज़र नहीं आते? हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि अबू जहल कहेगा कि बिलाल, अ़म्मार और सुहैब (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) वग़ैरह कहाँ हैं? वे तो नज़र ही नहीं आते। ग़र्ज़ हर काफ़िर यही कहेगा कि वे लोग जिनको हम दुनिया में शरीर गिनते थे वह आज यहाँ नज़र नहीं आते। क्या हमारी ही ग़लती थी कि हम उन्हें दुनिया में ख़ातिर में न लाते और उनका मज़ाक़ उड़ाते थे? लेकिन नहीं! हमारा यह मामला उनके साथ दुरुस्त था। वे होंगे तो जहन्नम में ही लेकिन किसी ऐसी दिशा में हैं कि हमारी निगाह उन पर नहीं पड़ती। उसी वक़्त जन्नत वालों की जानिब से आवाज़ आयेगी कि ऐ दोज़ख़ वालो! इधर देखो हमने तो अपने रब के वायदे को हक़ पाया। तुम अपनी कहो क्या ख़ुदा के वायदे सच्चे निकले? ये जवाब देंगे कि हाँ बिल्कुल सच निकले। उसी वक़्त एक मुनादी ऐलान करेगा कि ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत हो। इसी का बयान

Maktab E Ashraf

क़ुरआन की इन आयतों में हैः

وَنَادٰٓی اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ.............................تَحْزَنُوْنَ.

(सूरः आराफ़ आयत 44-49)

फिर फ़रमाता है ऐ नबी! जो ख़बर मैं तुमको दे रहा हूँ कि जहन्नमी इस बात में लड़े झगड़ेंगे और आपस में एक दूसरे पर लान-तान करेंगे, यह बिल्कुल सच्ची और वास्तविक ख़बर है। जिसमें कोई शक व शुब्हा नहीं।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ۝ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ۝ مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ۝ اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝	आप कह दीजिए कि मैं तो (तुमको अल्लाह के अ़ज़ाब से) डराने वाला हूँ और सिवाय एक अल्लाह ग़ालिब के कोई इबादत के लायक़ नहीं है। (65) वह परवर्दिगार है आसमानों और ज़मीन का और उन चीज़ों का जो उनके दरमियान में हैं। (और वह) ज़बरदस्त, बड़ा बख़्शने वाला है। (66) आप कह दीजिए कि यह एक अ़ज़ीमुश्शान मज़मून है (67) जिस से तुम (बिल्कुल ही) बेपरवाह हो रहे हो। (68) मुझको ऊपर की दुनिया (की बहस व गुफ़्तगू) की कुछ भी ख़बर न थी जबकि वे (आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाईश के बारे में) झगड़ रहे थे। (69) मेरे पास (जो) 'वही' (आती है तो) महज़ इस सबब से आती है कि मैं (अल्लाह तआ़ला की जानिब से) साफ़-साफ़ डराने वाला (भेजा गया) हूँ। (70)

एक अ़ज़ीमुश्शान ख़बर

अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. को हुक्म फ़रमाता है कि काफ़िरों से कह दो कि मेरे बारे में तुम्हारे ख़्यालात बिल्कुल ग़लत हैं। मैं तो तुम्हें डर की ख़बर पहुँचाने वाला हूँ। सिवाय अल्लाह तआ़ला के और कोई पूजा व इबादत के क़ाबिल नहीं। वह अकेला है, वह हर चीज़ पर ग़ालिब है, हर चीज़ उसकी मातहत है। वह ज़मीन व आसमान और हर-हर चीज़ का मालिक है और सब इख़्तियारात उसी के क़ब्ज़े में हैं। वह इज़्ज़तों वाला है और बावजूद इस अ़ज़मत व इज़्ज़त के बड़ा ही रहीम है। यह बहुत बड़ी चीज़ है। यानी मेरा अल्लाह के रसूल की हैसियत से तुम्हारे बीच आना। मगर तुम ऐ ग़ाफ़िलो! मेरी बयान की हुई हक़ीक़त से मुँह फेर रहे हो। यह भी कहा गया है कि यह बड़ी चीज़ है, यानी क़ुरआने करीम। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के बारे में फ़रिश्तों के दरमियान जो कुछ इख़्तिलाफ़ हुआ अगर रब की 'वही' मेरे पास न आई होती तो मुझे उसके बारे में क्या इल्म होता? इब्लीस का आपको सज्दा करने से इनकार करना, रब के सामने इसका विरोध करना और अपनी बड़ाई जताना वग़ैरह। इन सब बातों को मैं किस तरह जान सकता

Maktab E Ashraf

था?

मुस्नद अहमद में है कि एक दिन सुबह की नमाज़ में हुज़ूर सल्ल. ने बहुत देर कर दी, यहाँ तक कि सूरज निकलने का वक़्त आ गया। फिर बहुत जल्दी करते हुए आप तशरीफ़ लाये, तकबीर कही गई और आपने हल्की नमाज़ पढ़ाई। उसके बाद हमसे फ़रमाया थोड़ी देर ठहरे रहो। फिर हमारी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया- रात मैं तहज्जुद की नमाज़ पढ़ रहा था कि मुझे ऊँघ आने लगी यहाँ तक कि मैं जागा और मैंने देखा कि गोया अपने रब के पास हूँ। मैंने अपने परवर्दिगार को बेहतरीन उम्दा सूरत में देखा। मुझसे बारी तआ़ला ने दरियाफ़्त फ़रमाया- जानते हो आ़लमे बाला (आसमानी दुनिया) के फ़रिश्ते इस वक़्त किस बारे में गुफ़्तगू और सवाल जवाब कर रहे हैं? मैंने अ़र्ज़ किया मेरे रब मुझे क्या ख़बर? तीन मर्तबा सवाल के जवाब के बाद मैंने देखा कि मेरे दोनों मोंढों के बीच अल्लाह तआ़ला ने हाथ रखा, यहाँ तक कि उंगलियों की ठंडक मुझे मेरे सीने में महसूस हुई (अल्लाह के शायाने-शान, क्योंकि अल्लाह की ज़ात बदनी अंगों से पाक है) और मुझ पर हर एक चीज़ रोशन हो गई। फिर मुझसे सवाल किया- अब बताओ! आसमानी दुनिया में क्या बातचीत हो रही है? मैंने कहा गुनाहों के कफ़्फ़ारे की। फ़रमाया फिर तुम बताओ कफ़्फ़ारे क्या-क्या हैं? मैंने कहा जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ने के लिये क़दम उठाकर जाना, नमाज़ों के बाद मस्जिद में बैठे रहना और दिल के न चाहने पर कामिल (जैसे सख़्त सर्दी में) वुज़ू करना। फिर मुझसे मेरे ख़ुदा ने पूछा दर्जे क्या हैं? मैंने कहा खाना खिलाना, नर्मी से कलाम करने को इख़्तियार करना और रातों को जब लोग सोये हुए हों नमाज़ पढ़ना। अब मुझसे मेरे रब ने फ़रमाया- माँग क्या माँगता है? मैंने कहा मैं नेकियों का करना, बुराईयों का छोड़ना, मिस्कीनों से मुहब्बत रखना, तेरी बख़्शिश तेरा रहम और जब तेरा इरादा किसी क़ौम के साथ फ़ितने (आज़माईश) का हो तो उस फ़ितने में मुब्तला होने से पहले की मौत और तेरी मुहब्बत और तुझसे मुहब्बत रखने वालों की मुहब्बत और उन कामों की तौफ़ीक़ जो तेरी मुहब्बत से क़रीब करने वाले हों, माँगता हूँ। इसके बाद हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- यह सरासर हक़ है, इसे पढ़ो पढ़ाओ, सीखो सिखाओ।

यह हदीस ख़्वाब की है और मशहूर भी यही है। बाज़ ने कहा है कि यह बेदारी (जागने) की हालत का वाक़िआ़ है। लेकिन यह ग़लत है, बल्कि सही यह है कि यह वाक़िआ़ ख़्वाब का है। और यह भी ख़्याल रहे कि क़ुरआन में फ़रिश्तों की जिस बात का रद्दोबदल करना इस आयत में ज़िक्र हुआ है वह यह नहीं जो इस हदीस में है, बल्कि यह सवाल व जवाब वह है जिसका ज़िक्र इसके बाद ही है। मुलाहिज़ा हों अगली आयतें।

जबकि आपके परवर्दिगार ने फ़रिश्तों से इरशाद फ़रमाया कि मैं गारे से एक इनसान (यानी उसके पुतले) को बनाने वाला हूँ। (71) सो मैं जब उसको पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी (तरफ़ से) जान डाल दूँ तो तुम सब उसके रू-ब-रू सज्दे में गिर पड़ना। (72) सो (जब अल्लाह तआ़ला ने उसको बना लिया तो) सारे-के-सारे फ़रिश्तों ने (आदम को) सज्दा	اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِیْنٍ ○ فَاِذَا سَوَّیْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِیْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِیْنَ ○ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ○ اِلَّآ اِبْلِیْسَ ؕ

اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَامَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۭ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ۝ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۭ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝ وَّاِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۝ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ قَالَ فَالْحَقُّ ۡ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ۝ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝	किया (73) मगर शैतान ने, कि वह गुरूर में आ गया और काफ़िरों में से हो गया। (74) अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ इब्लीस! जिस चीज़ को मैंने अपने हाथों से बनाया, उसको सज्दा करने से तुझको कौन-सी चीज़ रुकावट हुई, क्या तू गुरूर में आ गया (और हक़ीक़त में बड़ा नहीं है), या यह कि तू (वाक़ई ऐसे) बड़े दर्जे वालों में है। (75) कहने लगा कि (दूसरी वाली बात ही है, यानी) मैं आदम से बेहतर हूँ। (क्योंकि) आपने मुझको आग से पैदा किया है और उस (आदम अ़लैहि.) को ख़ाक से पैदा किया है। (76) इरशाद हुआ कि (अच्छा फिर) तू आसमान से निकल, क्योंकि बेशक तू (इस हरकत से) मरदूद हो गया। (77) और बेशक तुझ पर मेरी लानत रहेगी क़ियामत के दिन तक। (78) कहने लगा, तो फिर मुझको मोहलत दीजिए क़ियामत के दिन तक। (79) इरशाद हुआ (कि जब तू मोहलत माँगता है) तो (जा) तुझको मोहलत दी गई (80) मुक़र्ररा वक़्त की तारीख़ तक। (81) कहने लगा, (जब मुझको मोहलत मिल गई) तो (मुझको भी) तेरी इज़्ज़त की क़सम कि मैं उन सबको गुमराह करूँगा (82) सिवाय आपके उन बन्दों के जो उनमें चुन लिए गए हैं। (83) इरशाद हुआ कि मैं सच कहता हूँ और मैं तो (हमेशा) सच ही कहा करता हूँ (84) कि मैं तुझसे और जो उनमें तेरा साथ दे उन सबसे दोज़ख़ को भर दूँगा। (85)

आदम अ़लैहिस्सलाम और इब्लीस का क़िस्सा

यह क़िस्सा सूरः ब-क़रह, सूरः आराफ़, सूरः हिज्र, सूरः बनी इस्राईल, सूरः कहफ़ और सूरः सॉद में भी बयान हुआ है। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा करने से पहले अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों को अपना इरादा बताया कि मैं मिट्टी से आदम को पैदा करने वाला हूँ। जब मैं उसको पैदा कर दूँ तो तुम सब उसे सज्दा करना ताकि मेरी फ़रमाँबरदारी के साथ ही आदम की शराफ़त व बुज़ुर्गी (मान-सम्मान) का भी इज़हार हो जाये। पस तमाम फ़रिश्तों ने अल्लाह के हुक्म की तामील की, हाँ इब्लीस इससे रुका। यह फ़रिश्तों की जिन्स में से था ही नहीं, बल्कि जिन्नात में से था। तबई ख़बासत और फ़ितरी सरकशी ज़ाहिर हो गई।

Maktab E Ashraf

सवाल हुआ कि इतनी मुअ़ज़्ज़ (सम्मानित) मख़्लूक़ जिसे मैंने अपने हाथों से बनाया, तूने मेरे फ़रमान के बावजूद उसको सज्दा क्यों न किया? यह तकब्बुर और नाफ़रमानी? कहने लगा कि मैं इससे अफ़ज़ल व आला हूँ। कहाँ आग और कहाँ मिट्टी? उस ख़ताकार ने इसके समझने में ग़लती की और ख़ुदा के हुक्म की मुख़ालफ़त की वजह से ग़ारत (बरबाद) हो गया। हुक्म हुआ कि मेरे सामने से अलग हो, मेरे दरबार में तुझ जैसे नाफ़रमानों की रसाई नहीं। अब तू मेरी रहमत से दूर हो गया और तुझ पर हमेशा की लानत नाज़िल हुई। अब तू ख़ैर व ख़ूबी से मायूस हो जा। उसने ख़ुदा से दुआ़ की कि क़ियामत तक उसको मोहलत दी जाये। उस हलीम ख़ुदा ने जो अपनी मख़्लूक़ को उनके गुनाहों पर फ़ौरन नहीं पकड़ता, उसकी यह इल्तिजा (प्रार्थना और अनुरोध) पूरी कर दी और क़ियामत तक की उसको मोहलत दे दी। अब कहने लगा मैं तो इसकी तमाम औलाद को बहका दूँगा सिर्फ़ मुख़्लिस लोग बच जायेंगे। अल्लाह को भी यही मन्ज़ूर था जैसा कि क़ुरआने करीम की दूसरी आयतों में भी है। फ़रमायाः

اَرَاَيْتَكَ هٰذَا الَّذِىْ........ الخ

(सूरः बनी इस्राईल आयत 62)
औरः

اِنَّ عِبَادِىْ لَيْسَ لَكَ......... الخ

(सूरः बनी इस्राईल आयत 65)

'फ़ल्हक़्क़ु' को हज़रत मुजाहिद रह. ने पेश पढ़ा है। मायने यह हैं कि मैं ख़ुद हक़ हूँ और मेरी बात भी हक़ ही होती है। और एक रिवायत में उनसे यूँ रिवायत किया गया है कि हक़ मेरी तरफ़ से है और मैं हक़ ही कहता हूँ। औरों ने दोनों लफ़्ज़ ज़बर से पढ़े हैं। सुद्दी रह. कहते हैं कि यह क़सम है। मैं कहता हूँ कि यह आयत इस आयत की तरह हैः

وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّىْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ.

यानी मेरा यह क़ौल अटल है कि मैं ज़रूर बिज़्ज़रूर जहन्नम को इस क़िस्म के इनसानों और जिन्नों से भर दूँगा। जैसे एक और जगह फ़रमान हैः

اِذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ......... الخ

कि यहाँ से निकल जा। जो शख़्स भी तेरी मानेगा उसकी और तेरी पूरी सज़ा जहन्नम है।

قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ○ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ○ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ○	आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस क़ुरआन (की तब्लीग़) पर न कुछ बदला चाहता हूँ और न मैं बनावट करने वालों मे से हूँ। (86) यह क़ुरआन तो (अल्लाह का कलाम और) दुनिया जहान वालों के लिए बस एक नसीहत है। (87) और थोड़े दिनों के बाद तुमको इसका हाल मालूम हो जाएगा। (यानी मरने के साथ ही हक़ीक़त खुल जाएगी कि यह हक़ और सच्चा था)। (88)

Mehtab E Ashraf

एक ऐलान

अल्लाह तआ़ला अपने नबी को हुक्म देता है कि लोगों में आप ऐलान कर दें कि मैं दीन की तब्लीग़ और क़ुरआन के अहकाम पर तुम से कोई उजरत व बदला नहीं माँगता। इससे मेरा मक़सूद कोई दुनियावी नफ़ा हासिल करना नहीं, और न मैं तकल्लुफ़ करने वाला हूँ कि ख़ुदा ने नाज़िल न फ़रमाया हो और मैं अपनी तरफ़ से बना लूँ, बल्कि मुझे तो जो कुछ पहुँचाया जाता है वही मैं तुम्हें पहुँचा देता हूँ। न तो कुछ कमी कर सकता हूँ न ज़्यादती। और मेरा मक़सूद इससे सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा और उसकी मर्ज़ी का हासिल करना है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं- लोगो! जिसे किसी मसले का इल्म हो वह उसे लोगों से बयान कर दे, और जो न जानता हो वह कह दे कि अल्लाह बेहतर जानने वाला है। देखो अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में अपने नबी सल्ल. से भी यही फ़रमाया कि मैं तकल्लुफ़ करने वाला नहीं हूँ। यह क़ुरआन तमाम इनसानों और जिन्नों के लिये नसीहत है। जैसे एक दूसरी आयत में है:

لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ.

ताकि मैं तुम्हें और जिन लोगों तक यह पहुँचे आगाह और होशियार कर दूँ। एक और आयत में है:

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ......... الخ

कि जो शख़्स भी इससे कुफ़्र करे वह जहन्नमी है। मेरी बातों की हक़ीक़त और मेरे कलाम की तस्दीक़, मेरे बयान की सच्चाई और मेरी ज़बान की हक़्क़ानियत तुम्हें अभी-अभी (यानी जल्द ही) मालूम हो जायेगी। यानी मरते ही और क़ियामत के क़ायम होते ही। मौत के वक़्त यक़ीन आ जायेगा और मेरी कही हुई ख़बरें अपनी आँखों से देख लोगे। वल्लाहु आलम।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र व एहसान है कि सूरः सॉद की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः ज़ुमर

सूरः ज़ुमर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 75 आयतें और 8 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रोज़े इस तरह लगातार रखते चले जाते थे, हम ख़्याल करते थे कि शायद अब आप छोड़ेंगे ही नहीं। और ऐसा भी होता कि आप रोज़े न रखते यहाँ तक कि हमको ख़्याल होता कि अब रखेंगे ही नहीं। और हर रात आप सूरः ब-क़रह और सूरः ज़ुमर की तिलावत कर लिया करते।

Maktab E Ashraf

تَنْزِيلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ○ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ○ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۀ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ○ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ○	यह नाज़िल की हुई किताब है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से। (1) हमने ठीक तौर पर इस किताब को आपकी तरफ़ नाज़िल किया है, सो आप (क़ुरआन की तालीम के मुवाफ़िक़) ख़ालिस एतिक़ाद करके अल्लाह की इबादत करते रहिए। (2) याद रखो, इबादत जो कि (शिर्क से) ख़ालिस हो, अल्लाह ही के लायक़ है। और जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा और शरीक तजवीज़ कर रखे हैं (और कहते हैं) कि हम तो उनकी पूजा सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि हमको ख़ुदा का मुक़र्रब बना दें, तो उनके (और उनके मुक़ाबिल ईमान वालों के) आपसी इख़्तिलाफ़ों का (क़ियामत के दिन) अल्लाह तआ़ला फ़ैसला कर देगा। अल्लाह तआ़ला ऐसे शख़्स को राह पर नहीं लाता जो (ज़बान का) झूठा और (एतिक़ाद के एतिबार से) काफ़िर हो। (3) अगर (मान लो) अल्लाह तआ़ला किसी को औलाद बनाने का इरादा करता तो ज़रूर अपनी मख़्लूक़ में से जिसको चाहता चुन लेता। वह पाक है, वह ऐसा अल्लाह है जो अकेला है, ज़बरदस्त है। (4)

बुतों के पुजारियों का भ्रम और ख़ाम-ख़्यालियाँ

अल्लाह तबारक व तआ़ला ख़बर देता है कि यह क़ुरआने अ़ज़ीम उसी का कलाम है और उसी का नाज़िल किया हुआ है। इसके हक़ होने में कोई शक और शुब्हा नहीं। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमाया है:

وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ...........الخ

यह रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से नाज़िल किया हुआ है जिसे 'रूहुल-अमीन'' लेकर आये हैं। तेरे दिल पर उतारा है ताकि तू आगाह करने वाला बन जाये। साफ़ फ़सीह अ़रबी भाषा में है।

और दूसरी आयतों में है कि यह इ़ज़्ज़त वाली किताब वह है जिसके आगे या पीछे से बातिल आ ही नहीं सकता। यह हिक्मतों वाले तारीफ़ों वाले ख़ुदा की तरफ़ से उतरी है। यहाँ फ़रमाया कि यह किताब बहुत बड़े इ़ज़्ज़त वाले और हिक्मत वाले ख़ुदा की तरफ़ से उतरी है, जो अपने अक़वाल व अफ़आ़ल (बातों और कामों), शरीअ़त व तक़दीर सब में हिक्मतों वाला है। हमने तेरी तरफ़ इस किताब को हक़ के साथ नाज़िल फ़रमाया है। तुझे चाहिये कि ख़ुद अल्लाह की इबादतों और उसकी तौहीद में मशग़ूल रहकर सारी दुनिया को इसी तरफ़ बुलाये। क्योंकि उस ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत ज़ेबा (मुनासिब) नहीं। वह

Maktab E Ashraf

बेमिसाल है, उसका कोई शरीक नहीं। दीने ख़ालिस यानी तौहीद की गवाही के लायक़ वही है। फिर मुश्रिकों का नापाक अक़ीदा बयान किया कि वे फ़रिश्तों को ख़ुदा का मुक़र्रब (क़रीबी और ख़ास) जानकर, उनकी ख़्याली तस्वीर बनाकर उनकी पूजा-पाठ करने लगे। यह समझ कर कि अल्लाह के लाडले हमें भी अल्लाह का मुक़र्रब (क़रीबी और ख़ास) बना देंगे। फिर तो हमारी रोज़ियों में और हर चीज़ में ख़ूब बरकत हो जायेगी। यह मतलब नहीं कि क़ियामत के रोज़ हमें वे नज़दीकी और मर्तबा दिलवायेंगे, इसलिये कि क़ियामत के तो वे क़ायल ही न थे। यह भी कहा गया है कि वे उन्हें अपना सिफ़ारिशी जानते थे। जाहिलीयत (इस्लाम से पहले) के ज़माने में हज को जाते तो वहाँ लब्बैक पुकारते हुए कहतेः

لَبَّيْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ اِلَّاشَرِيْكًاهُوَلَكَ تَمْلِكُهٗ وَمَامَلَكَ.

यानी ऐ अल्लाह! हम तेरे हुज़ूर हाज़िर होते हैं, तेरा कोई शरीक नहीं मगर ऐसे शरीक जिनका मालिक भी ख़ुद तू ही है और जो चीज़ें उनके मातहत (क़ब्ज़े और इख़्तियार में) हैं उनका मालिक भी तू ही है।

यही शुब्हा अगले और पिछले तमाम मुश्रिकों को रहा, और इसी को तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम रद्द करते रहे और सिर्फ़ ख़ुदा-ए-वाहिद की इबादत की तरफ़ बुलाते रहे। यह अ़क़ीदा मुश्रिकों ने बिना दलील गढ़ लिया था जिससे ख़ुदा बेज़ार था। फ़रमाता हैः

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ........ الخ

यानी हर उम्मत में हमने रसूल भेजे कि तुम अल्लाह ही की इबादत करो और उसके सिवा हर एक की इबादत से अलग रहो। एक और जगह फ़रमायाः

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ........ الخ

यानी तुझसे पहले जितने रसूल हमने भेजे सब की तरफ़ यही 'वही' की कि माबूदे बर्हक़ सिर्फ़ मैं ही हूँ। पस तुम सब मेरी ही इबादत करना।

साथ ही यह भी बयान फ़रमा दिया कि आसमान में जिस क़द्र फ़रिश्ते हैं चाहे वे कितने ही मर्तबे वाले क्यों न हों सब के सब उसके सामने लाचार व आ़जिज़ और ग़ुलाम हैं। इतना भी तो इख़्तियार नहीं कि किसी की सिफ़ारिश में लब हिला सकें। यह अ़क़ीदा बिल्कुल ग़लत है कि वे ख़ुदा के पास ऐसे हैं जैसे बादशाहों के पास सरदार और बड़े लोग हुआ करते हैं कि जिसकी वे सिफ़ारिश कर दें उसका काम बन जाता है। इस बातिल और ग़लत अ़क़ीदे से यह कहकर मना फ़रमायाः

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ.

कि अल्लाह के सामने तुम मिसालें न बयान किया करो। अल्लाह इससे बहुत बुलन्द व बाला है। क़ियामत के रोज़ अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ का सच्चा फ़ैसला कर देगा और हर एक को उसके आमाल का बदला देगा। उन सब को जमा करके फ़रिश्तों से सवाल करेगा कि क्या ये लोग तुम्हें पूजते थे? वे जवाब देंगे कि तू पाक है, हमारा वली और वाली तो तू ही है, ये नहीं। ये लोग तो जिन्नात की परस्तिश करते थे और इनमें से अक्सर का अ़क़ीदा व ईमान उन्हीं पर था। अल्लाह तआ़ला उन्हें सही रास्ता नहीं दिखाता जिनका मक़सूद ख़ुदा पर झूठ बोहतान बाँधना हो, और जिनके दिल में ख़ुदा की आयतों, उसकी निशानियों और उसकी दलीलों से कुफ़्र बैठ गया हो। फिर अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों के अ़क़ीदे की नफ़ी की जो ख़ुदा की औलाद ठहराते थे। जैसे मक्का के मुश्रिक लोग कहते थे कि फ़रिश्ते ख़ुदा की लड़कियाँ

Maktab E Ashraf

हैं। यहूद कहते थे कि उज़ैर ख़ुदा के लड़के हैं। ईसाई गुमान करते थे कि ईसा ख़ुदा के बेटे हैं। पस फ़रमाया कि जैसा इनका ख़्याल है अगर यही होता तो मामला इसके ख़िलाफ़ होता। पस यहाँ शर्त न तो वाक़े होने के लिये है न संभावना के लिये, बल्कि मुहाल के लिये है, और मक़सद सिर्फ़ उन लोगों की जहालत बयान करना है। जैसे फ़रमायाः

لَوْ اَرَدْنَـآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا......... الخ

अगर हम इन बेहूदा बातों का इरादा करते तो अपने पास ही बना लेते। अगर हम करने वाले ही होते। एक और आयत में हैः

قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ.

यानी कह दे कि अगर रहमान की औलाद होती तो मैं तो सबसे पहले इसका क़ायल होता।

पस ये सब आयतें शर्त को मुहाल के साथ मुताल्लिक़ करने वाली हैं, संभावना या वाक़े होने के लिये नहीं। बल्कि मतलब यह है कि न यह हो सकता है न वह हो सकता है। अल्लाह इन सब बातों से पाक है। वह अकेला और तन्हा है, हर चीज़ उसकी मातहत, फ़रमाँबरदार, आजिज़ व मोहताज, फ़क़ीर व बेकस और बेबस है। वह हर चीज़ से ग़नी (बेपरवाह) है, सबसे बेपरवाह है, सब पर उसकी हुकूमत और ग़लबा है। ज़ालिमों के इन अक़ीदों से और जाहिलों की इन बातों से उसकी ज़ात बरी और पाक है।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ○ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ ۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ○	उसने आसमान व ज़मीन को हिक्मत से पैदा किया। वह रात (की अंधेरी) को दिन (की रोशनी के महल यानी हवा) पर लपेटता है, और दिन (की रोशनी) को रात पर लपेटता है। और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है कि (उनमें से) हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक चलता रहेगा। याद रखो कि वह ज़बरदस्त है, बड़ा बख़्शने वाला (भी) है। (5) उसने तुम लोगों को वाहिद तन (यानी आदम अ़लैहिस्सलाम) से पैदा किया, फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया, और (उस पैदाईश और वजूद में आने के बाद) तुम्हारे (नफ़े के बाक़ी रहने के) लिए आठ नर व मादा चौपायों के पैदा किए, वह तुमको माँओं के पेट में एक कैफ़ियत के बाद दूसरी कैफ़ियत पर बनाता है, तीन अंधेरियों में। यह है अल्लाह तुम्हारा रब, उसी की सल्तनत है। उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, सो (इन दलीलों के बाद) तुम (हक़ से) कहाँ फिरे चले जा रहे हो? (6)

Maktab E Ashraf

क़ुदरत के दलाईल और निशानियाँ

हर चीज़ का ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाला), सब का मालिक, सब पर हाकिम और सब पर क़ाबिज़ अल्लाह ही है। दिन रात का उलट-फेर उसी के हाथ में है। उसी के हुक्म से इन्तिज़ाम के साथ दिन रात एक दूसरे के पीछे बराबर लगातार चलते आ रहे हैं। न यह आगे बढ़ सके न वह पीछे रह सके। सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र (हुक्म के ताबे) कर रखा है, वे अपने दौरे को पूरा कर रहे हैं। क़ियामत तक इस निज़ाम (व्यवस्था) में तुम कोई फ़र्क़ न पाओगे। वह इज़्ज़त व अ़ज़मत वाला, बड़ाई और बुलन्दी वाला है। गुनाहगारों को बख़्शने वाला और ख़ताकारों पर मेहरबान है। तुम सब को उसने एक ही शख़्स यानी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से पैदा किया है। फिर देखो कि तुम में आपस में किस क़द्र इख़्तिलाफ़ (भिन्नता) है। रंग व सूरत और आवाज़ व बोल-चाल और ज़बान व बयान हर एक अलग-अलग है।

हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से ही उनकी बीवी हज़रत हव्वा को पैदा किया। जैसे कि दूसरी जगह है कि लोगो! अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है। जिसने तुम्हें एक ही नफ़्स (जान) पैदा किया है। उसी से उसकी बीवी को पैदा किया, फिर बहुत से मर्द व औ़रत फैला दिये। उसने तुम्हारे लिये आठ नर व मादा चौपाये पैदा किये, जिनका बयान सूरः मायदा की इस आयत में है:

وَمِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ.......... الخ

यानी भेड़, बकरी, ऊँट, गाय। वह तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट में पैदा करता है जहाँ तुम्हारी पैदाईश (यानी विकास) होती रहती है। पहले नुत्फ़ा, फिर जमा हुआ ख़ून, फिर लोथड़ा, फिर गोश्त-पोस्त हड्डी, रग, पट्ठे, फिर रूह। ग़ौर करो कि वह कितना अच्छा ख़ालिक़ (बनाने वाला) है। तीन-तीन अंधेरियों में तुम्हारी यह तरह-तरह की तब्दीलियों की पैदाईश का हेर-फेर होता रहता है। रहम (पेट और गर्भ) का अंधेरा, उसके ऊपर की झिल्ली का अंधेरा और पेट का अंधेरा। यह जिसने आसमान व ज़मीन को और ख़ुद तुमको और तुम्हारे अगले पिछलों को पैदा किया है। वही रब है उसी का मुल्क है वही सब में क़ब्ज़ा व इख़्तियार का मालिक है। वही इबादत के लायक़ है, उसके सिवा और कोई नहीं। अफ़सोस न जाने तुम्हारी समझ और अ़क़्लें कहाँ गईं कि तुम उसके सिवा दूसरों की इबादत व बन्दगी करने लगे।

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۗ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ	अगर तुम कुफ़्र करोगे तो ख़ुदा तआ़ला को तुम्हारी ज़रूरत नहीं, और वह अपने बन्दों के लिए कुफ़्र को पसन्द नहीं करता। और अगर तुम शुक्र करोगे तो इसको तुम्हारे लिए पसन्द करता है। और कोई किसी (के गुनाह) का बोझ नहीं उठाता, फिर अपने परवर्दिगार के पास तुम को लौटकर जाना होगा, सो वह तुमको तुम्हारे सब आमाल जतला देगा, वह दिलों तक की बातों का जानने वाला है। (7) और (मुश्रिक) आदमी को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो

Maktab E Ashraf

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ○ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ○	अपने परवर्दिगार को उसी की तरफ़ रुजू होकर पुकारने लगता है, फिर जब अल्लाह तआला उसको अपने पास से (अमन व सुकून की) नेमत अ़ता फ़रमा देता है तो जिसके लिए पहले से (ख़ुदा को) पुकार रहा था उसको भूल जाता है, और ख़ुदा के शरीक बनाने लगता है। जिसका असर यह होता है कि अल्लाह की राह से (दूसरों को) गुमराह करता है। आप (ऐसे शख़्स से) कह दीजिए कि अपने कुफ़्र की बहार थोड़े दिनों और लूट ले, (फिर अंततः) तू दोज़ख़ियों में से होने वाला है। (8)

कुफ़्र सख़्त नापसन्दीदा है

फ़रमाता है कि सारी मख़्लूक़ ख़ुदा तआ़ला की मोहताज है और ख़ुदा सबसे बेनियाज़ है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का फ़रमान क़ुरआन में मन्क़ूल है कि अगर तुम और रू-ए-ज़मीन (यानी पूरी दुनिया) के सब जानदार ख़ुदा से कुफ़्र इख़्तियार कर लें (यानी उसको न मानें) तो अल्लाह का कोई नुक़सान नहीं। वह सारी मख़्लूक़ से बेपरवाह और तारीफ़ के लायक़ है।

सही मुस्लिम की हदीस में है कि "ऐ मेरे बन्दो! तुम्हारे शुरू से लेकर आख़िर तक के तमाम इनसान व जिन्न मिल-मिलाकर बदतरीन शख़्स के जैसा दिल बना लो तो मेरी बादशाहत में कोई कमी नहीं आयेगी। हाँ ख़ुदा तुम्हारी नाशुक्री से ख़ुश नहीं, न वह इसका तुम्हें हुक्म देता है। और अगर तुम उसकी शुक्रगुज़ारी करोगे तो वह उस पर तुमसे रज़ामन्द हो जायेगा और तुम्हें अपनी और नेमतें अ़ता फ़रमायेगा। हर शख़्स वही पायेगा जो उसने किया हो, एक के बदले दूसरा न पकड़ा जायेगा और ख़ुदा पर कोई चीज़ पोशीदा (छुपी) नहीं। इनसान को देखो कि अपनी हाजत के वक़्त तो बहुत ही आ़जिज़ी और इन्किसारी (विनम्रता) से ख़ुदा को पुकारता और उससे फ़रियाद करता रहता है। जैसे एक और आयत में है:

وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الْبَحْرِ......... الخ

यानी जब दरिया और समुद्र में होते हैं और वहाँ कोई आफ़त आई देखते हैं तो जिन-जिनको ख़ुदा के सिवा पुकारा करते थे सब को भूल जाते हैं और सिर्फ़ ख़ुदा को पुकारने लगते हैं। लेकिन निजात पाते ही मुँह फेर लेते हैं। इनसान है ही नाशुक्रा।

पस फ़रमाता है कि जहाँ दुख दर्द टल गया फिर तो ऐसा हो जाता है कि गोया मुसीबत के वक़्त उसने हमें पुकारा ही न था। उस दुआ़ और रोने व फ़रियाद करने को बिल्कुल भुला देता है। जैसे एक और आयत में फ़रमान है:

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا......... الخ

Mufti E Ashraf

यानी तकलीफ़ के वक़्त तो इनसान हमें उठते बैठते लेटते हर वक़्त दिल के बड़े ध्यान के साथ पुकारता रहता है, लेकिन उस तकलीफ़ के हटते ही वह भी हम से ग़ाफ़िल हो जाता है, गोया उसने दुख-दर्द के वक़्त हमें पुकारा ही न था। बल्कि आ़फ़ियत के वक़्त ख़ुदा के शरीक करने लगता है।

इसलिये अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐसे लोग अपने कुफ़्र से बस कुछ यूँ ही सा (यानी मामूली सा या कुछ दिनों) फ़ायदा उठा लें। इसमें डाँट और सख़्त धमकी है। जैसे फ़रमायाः

قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ.

आप कह दें कि फ़ायदा हासिल कर लो आख़िरी जगह तो तुम्हारी जहन्नम ही है। एक और फ़रमान हैः

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ.

कि हम उन्हें कुछ फ़ायदा देंगे फिर सख़्त अ़ज़ाबों की तरफ़ बेबस कर देंगे।

भला जो शख़्स रात के समय में सज्दा व क़ियाम (यानी नमाज़) की हालत में इबादत कर रहा हो, आख़िरत से डर रहा हो और अपने परवर्दिगार की रहमत की उम्मीद कर रहा हो, आप कहिए क्या इल्म वाले और जहल वाले (कहीं) बराबर होते हैं? वही लोग नसीहत पकड़ते हैं जो (सही) अक़्ल वाले हैं। (9)	اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ط قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ط اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ع ٥

ع ۹ ۱۵

भला ये लोग बराबर कैसे हो सकते हैं?

मतलब यह है कि जिसकी हालत यह हो, वह मुश्रिक के बराबर नहीं। जैसे एक जगह फ़रमान हैः

لَيْسُوْا سَوَآءً............ الخ

यानी सब के सब बराबर नहीं। अहले किताब में भी वे लोग भी हैं जो रातों के वक़्त खड़े होकर (यानी नमाज़ में) अल्लाह की आयतों की तिलावत करते हैं और सज्दों में पड़े रहते हैं।

'क़ुनूत' से मुराद यहाँ पर नमाज़ का ख़ुशू व ख़ुज़ू (यानी उसको उसके पूरे आदाब और दिल की तवज्जोह व आ़जिज़ी के साथ पढ़ना) है, सिर्फ़ क़ियाम (खड़ा होना) मुराद नहीं। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि 'क़ानित' के मायने फ़रमाँबरदार के हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह से नक़ल है कि 'आनाअल्लैलि' से मुराद आधी रात है। मन्सूर रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद मग़रिब और इशा के बीच का वक़्त है। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि रात का पहला, बीच का और आख़िरी हिस्सा मुराद है। ये आ़बिद लोग एक तरफ़ डरे-सहमे रहते हैं, दूसरी तरफ़ उम्मीदवार और आशावान हैं। नेक लोगों पर ज़िन्दगी में तो अल्लाह का ख़ौफ़ उम्मीद पर ग़ालिब रहता है, मौत के वक़्त अल्लाह के ख़ौफ़ पर उम्मीद का ग़लबा हो जाता है।

रसूलुल्लाह सल्ल. एक शख़्स के पास उसके इन्तिक़ाल के वक़्त जाते हैं और पूछते हैं कि तू अपने आपको किस हालत में पाता है? उसने अ़र्ज़ किया- ख़ौफ़ और उम्मीद की हालत में। आपने फ़रमाया जिस

शख़्स के दिल में ऐसे वक़्त ये दोनों चीज़ें जमा हो जायें उसकी उम्मीद अल्लाह तआ़ला पूरी करता है, और उसके ख़ौफ़ से उसे निजात अ़ता फ़रमाता है। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा वग़ैरह)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. ने इस आयत की तिलावत करके फ़रमाया- यह ख़ूबी तो हज़रत उस्मान में थी। वास्तव में आप रात के वक़्त बहुत ज़्यादा तहज्जुद पढ़ते रहते थे और उसमें क़ुरआने करीम की लम्बी क़िराअत किया करते थे, यहाँ तक कि कभी-कभी एक ही रक्अ़त में क़ुरआन ख़त्म कर देते थे। जैसे कि अबू उबैदा रह. से नक़ल किया गया है- शायर कहता है कि सुबह के वक़्त उनके चेहरे नूर के सबब चमकदार होते हैं, क्योंकि उन्होंने तस्बीह व तिलावते क़ुरआन में रात गुज़ारी है। नसाई वग़ैरह में हदीस है कि जिसने रात को सौ आयतें पढ़ लीं उसके नामा-ए-आमाल में सारी रात की क़नूत लिखी जाती है।

(मुस्नद वग़ैरह)

पस ऐसे लोग और मुश्रिक जो ख़ुदा के साथ दूसरों को शरीक ठहराते हैं, किसी तरह एक मर्तबे के नहीं हो सकते। आ़लिम और बेइल्म का दर्जा एक नहीं हो सकता। हर अ़क़्लमन्द पर इनका फ़र्क़ ज़ाहिर है।

आप (मोमिनों को मेरी तरफ़ से) कहिए कि ऐ मेरे ईमान वाले बन्दो! तुम अपने परवर्दिगार से डरते रहो। जो लोग इस दुनिया में नेकी करते हैं उनके लिए नेक सिला है और अल्लाह की ज़मीन फ़राख़ "लम्बी-चौड़ी" है, साबित-क़दम रहने वालों को उनका सिला बेशुमार ही मिलेगा। (10) आप कह दीजिए कि मुझको (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह तआ़ला की इस तरह इबादत करूँ कि इबादत को उसी के लिए ख़ास रखूँ। (11) और मुझको यह (भी) हुक्म हुआ है कि सब मुसलमानों में अव्वल मैं हूँ। (12)	قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِىْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ○ قُلْ اِنِّىْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ○ وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ○

अल्लाह की ज़मीन बहुत बड़ी और फैली हुई है

अल्लाह तआ़ला अपने ईमान वाले बन्दों को अपने रब की (यानी अपनी) इताअ़त पर क़ायम रहने और हर मामले में उसकी पाक ज़ात का ख़्याल रखने का हुक्म देता है कि जिसने इस दुनिया में नेकी की, उसको इस दुनिया में और आने वाले जहान यानी आख़िरत में नेकी ही नेकी मिलेगी। तुम अगर एक जगह ख़ुदा की इबादत इस्तिक़लाल (तबीयत के पूरे जमाव) से न कर सको तो दूसरी जगह चले जाओ, ख़ुदा की ज़मीन बहुत बड़ी है। नाफ़रमानी और गुनाह से भागते रहो, शिर्क को मन्ज़ूर न करो, साबिरों को बिना नाप-तौल और बिना हिसाब-किताब के अज्र (यानी बहुत ज़्यादा) मिलता है। जन्नत उन्हीं का ठिकाना है।

मुझे ख़ुदा की ख़ालिस इबादत करने का हुक्म हुआ है और मुझसे यह भी फ़रमा दिया गया है कि अपनी तमाम उम्मत से पहले मैं ख़ुद मुसलमान हो जाऊँ और ख़ुद को अपने रब का फ़रमाँबरदार और उसके अहकाम का पाबन्द बना लूँ।

Maktab-E-Ashraf

قُلْ اِنِّیْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ○ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِیْنِیْ ○ فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِیْنَ الَّذِیْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِیْنُ ○ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ یُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ یٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ○	आप (यह भी) कह दीजिए कि अगर (मान लो, जबकि ऐसा होना नामुम्किन है कि) मैं अपने रब का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा रखता हूँ। (13) आप कह दीजिए कि मैं तो अल्लाह ही की इबादत इस तरह करता हूँ कि अपनी इबादत को उसी के लिए ख़ालिस रखता हूँ। (14) सो ख़ुदा को छोड़कर तुम्हारा दिल जिस चीज़ को चाहे उसकी इबादत करो। आप (यह भी) कह दीजिए कि पूरे घाटे वाले वही लोग हैं जो अपनी जानों से और अपने मुताल्लिक़ीन से क़ियामत के दिन ख़सारे में पड़े। याद रखो कि यह खुला घाटा है। (15) उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के घेरने वाले शोले होंगे और उनके नीचे से भी आग के घेरने वाले शोले होंगे, यह वही (अ़ज़ाब) है जिससे ख़ुदा तआ़ला अपने बन्दों को डराता है। ऐ मेरे बन्दो! मुझसे (यानी मेरे अ़ज़ाब से) डरो। (16)

बड़ा दिन

हुक्म होता है कि लोगों में ऐलान कर दो कि इसके बावजूद कि मैं ख़ुदा का रसूल हूँ लेकिन मैं भी अल्लाह के अ़ज़ाब से बेख़ौफ़ नहीं हूँ। अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो क़ियामत के दिन अ़ज़ाब से मैं भी नहीं बच सकता, तो दूसरे लोगों को अल्लाह की नाफ़रमानी से बहुत ज़्यादा बचना चाहिये। तुम अपने दीन का भी ऐलान कर दो कि मैं पुख़्ता और यक्सूई वाला मोमिन (अल्लाह को एक मानने वाला) हूँ। तुम जिसकी चाहो इबादत करते रहो।

इसमें भी डाँट-डपट है, न कि इजाज़त। पूरे नुक़सान में वे हैं जिन्होंने ख़ुद अपने आपको और अपने मुताल्लिक़ीन (संबन्धियों और ताल्लुक़ रखने वालों) को नुक़सान में फंसा दिया। क़ियामत के दिन उनमें जुदाई हो जायेगी। अगर उनके मुताल्लिक़ीन जन्नत में गये तो ये दोज़ख़ में जल रहे हैं और उनसे अलग हैं और अगर सब जहन्नम में गये तो वहाँ बुराई के साथ एक दूसरे से दूर, परेशान और ग़मगीन हैं। यही खुला नुक़सान है। फिर जो जहन्नम में होगा उसका हाल बयान हो रहा है कि ऊपर तले से आग ही आग होगी। जैसे फ़रमायाः

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ. وَكَذَالِكَ نَجْزِى الظَّالِمِيْنَ.

यानी उनका ओढ़ना-बिछौना सब जहन्नम की आग से ही होगा। ज़ालिमों का यही बदला है। एक और आयत में है:

Maktab E Ashraf

يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ.......... الخ

कि क़ियामत वाले दिन उन्हें नीचे ऊपर से अ़ज़ाब हो रहा होगा और ऊपर से कहा जायेगा कि अपने आमाल का मज़ा चखो। यह इसलिये ज़ाहिर व स्पष्ट कर दिया गया और खोल-खोलकर इस वजह से बयान किया गया कि उस हक़ीक़ी अ़ज़ाब से जो यक़ीनन आने वाला है मेरे बन्दे ख़बरदार (सचेत) हो जायें। और गुनाहों व नाफ़रमानियों को छोड़ दें। मेरे बन्दो! मेरी गिरफ़्त, मेरे अ़ज़ाब व ग़ज़ब और मेरे इन्तिक़ाम व हिसाब से डरते रहो।

وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۙ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

और जो लोग शैतान की इबादत से बचते हैं (मुराद ग़ैरुल्लाह की इबादत है) और (पूरी तरह) ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जह होते हैं, वे ख़ुशख़बरी सुनाने के हक़दार हैं, सो आप मेरे उन बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए (17) जो इस (अल्लाह के) कलाम को कान लगाकर सुनते हैं, फिर उसकी अच्छी-अच्छी बातों पर चलते हैं। यही हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत की, और यही हैं जो अ़क़्ल रखते हैं। (18)

जो अपने आपको बचाकर रखे

मन्क़ूल है कि यह आयत ज़ैद बिन अ़मर बिन नुफ़ैल, हज़रत अबूज़र और सलमान फ़ारसी रज़ि. के बारे में उतरी है। लेकिन सही यह है कि यह आयत जिस तरह इन बुज़ुर्गों के बारे में है इसी तरह हर उस शख़्स को शामिल है जिसमें ये पाक सिफ़तें और ख़ूबियाँ हों। यानी ख़ुदा के सिवा सबसे बेज़ारी और ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी। ये हैं जिनके लिये दोनों जहान में ख़ुशियाँ हैं। बात समझ कर सुनकर जब वह अच्छी हो तो उस पर अ़मल करने वाले बधाई के मुस्तहिक़ हैं। अल्लाह तआ़ला ने अपने कलीम पैग़म्बर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से तौरात के अ़ता फ़रमाने के वक़्त फ़रमाया था कि इसे मज़बूती से थामो और अपनी क़ौम को हुक्म दो कि इसकी अच्छाई को मज़बूत थाम लें। अ़क़्लमन्द और नेक-चलन लोगों में भली बातों के क़बूल करने का सही जज़्बा ज़रूर होता है।

اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِى النَّارِ ۝ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا

भला जिस शख़्स पर अ़ज़ाब की (अज़ली तक़दीरी) बात साबित हो चुकी, तो क्या आप ऐसे शख़्स को जो कि (अल्लाह के इल्म में) दोज़ख़ में है, छुड़ा सकते हैं? (19) लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए (जन्नत के) बालाख़ाने हैं जिनके ऊपर और बालाख़ाने हैं, जो बने बनाए तैयार हैं। उनके नीचे नहरें चल रही हैं। यह अल्लाह तआ़ला ने वायदा

किया है (और) अल्लाह वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (20)	يُخۡلِفُ اللّٰهُ الۡمِيۡعَادَ ۝

Maktab E Ashraf

वे लोग बद-क़िस्मत हैं

फ़रमाता है कि जिसकी बदबख़्ती लिखी जा चुकी है तू उसे सही रास्ता नहीं दिखा सकता। कौन है जो ख़ुदा के गुमराह किये हुए को सही रास्ता दिखा सके। तुझसे यह नहीं हो सकता कि तू इनकी रहबरी करके इन्हें अज़ाबे ख़ुदा से बचा सके। हाँ नेक-बख़्त नेक-आमाल और सही अ़क़ीदे वाले लोग क़ियामत के दिन जन्नत के महलों में मज़े करेंगे। उन बालाख़ानों में जो कई कई मन्ज़िलों के हैं, राहत व आराम की हर चीज़ से सजे हैं, लम्बे-चौड़े, बुलन्द, ख़ूबसूरत और देखने के लायक़ हैं। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत में ऐसे महल हैं जिनका अन्दरूनी हिस्सा बाहर से और बाहरी हिस्सा अन्दर से साफ़ दिखाई देता है।

एक देहाती ने पूछा या रसूलल्लाह! ये किन लोगों के लिये हैं? फ़रमाया उनके लिये जो नर्म-कलामी करें, खाना खिलायें और रातों को जब लोग मीठी नींद में हों तो ये अल्लाह के सामने खड़े होकर गिड़गिड़ायें, नमाज़ पढ़ें। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

मुस्नद अहमद में फ़रमाने रसूल है कि जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिनका अन्दरूनी हिस्सा बाहर से और बाहरी हिस्सा अन्दर से नज़र आता है। उन्हें अल्लाह तआ़ला ने ऐसे लोगों के लिये बना रखा है जो खाना खिलायें, कलाम को नर्म रखें, लगातार नफ़्लि रोज़े ख़ूब ज़्यादा रखें और रात के पिछले हिस्से में तहज्जुद पढ़ें। मुस्नद की एक और हदीस में है कि जन्नती जन्नत के बालाख़ानों को इस तरह देखेंगे जैसे तुम आसमान के सितारों को देखते हो। एक और रिवायत में है कि पूरब व पश्चिम के किनारों के सितारे जिस तरह तुम्हें दिखाई देते हैं इसी तरह जन्नत के वे महल तुम्हें नज़र आयेंगे। एक और हदीस में है कि उन महलों की ये तारीफ़ें सुनकर लोगों ने कहा हुज़ूर! ये तो नबियों के लिये होंगे? आपने फ़रमाया हाँ! और उन लोगों के लिये जो अल्लाह पर ईमान लाये और रसूलों को सच्चा माना। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. से सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! जब तक हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर रहते हैं और आपके चेहरे को देखते रहते हैं उस वक़्त तक हमारे दिल नर्म रहते हैं और हम आख़िरत की तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जह हो जाते हैं, लेकिन जब आपकी मज्लिस में से उठकर दुनियावी कारोबार में लग जाते हैं और बाल-बच्चों में मशग़ूल हो जाते हैं तो उस वक़्त हमारी हालत वह नहीं रहती। आपने फ़रमाया अगर तुम हर वक़्त उसी हालत में रहते जो हालत तुम्हारी मेरे सामने होती है तो फ़रिश्ते अपने हाथों से तुमसे मुसाफ़ा करते और तुम्हारे घरों में आकर तुमसे मुलाक़ातें करते। सुनो! अगर तुम गुनाह ही न करते तो अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को लाता जो गुनाह करें ताकि ख़ुदा उनको बख़्शे। हमने कहा हुज़ूर! जन्नत की बिना किस चीज़ की है? फ़रमाया कि एक ईंट सोने की एक चाँदी की। उसका चूना ख़ालिस मुश्क है, उसकी कंकरियाँ लुअ्लुअ् और याक़ूत हैं। उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान है। उसमें जो दाख़िल हो गया वह मालामाल हो गया जिसके बाद बेमाल होने का ख़तरा ही नहीं, वह हमेशा उसमें रहेगा वहाँ से निकाले जाने की संभावना ही नहीं, न मौत का खटका है। उनके कपड़े गलते सड़ते नहीं, उनकी जवानी हमेशगी वाली है। सुनो! तीन शख़्सों की दुआ़ मरदूद नहीं होती (यानी रद्द नहीं की जाती)- इन्साफ़ करने वाला बादशाह, रोज़ेदार और मज़लूम। इनकी दुआ़ बादल (यानी आसमान) पर उठाई

Maktab E Ashraf

जाती है, उसके लिये आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं और अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त फ़रमाता है मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम! मैं तेरी ज़रूर मदद करूँगा अगरचे कुछ मुद्दत के बाद हो। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा वग़ैरह)

उन महलों के बीच चश्मे (झरने) बह रहे हैं और वे भी ऐसे कि जहाँ चाहें पानी पहुँचायें, जब और जितना चाहें बहाव रहे। यह है अल्लाह तआ़ला का वायदा अपने मोमिन बन्दों से, यक़ीनन ख़ुदा तआ़ला की ज़ात वायदा-ख़िलाफ़ी से पाक है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِى الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ۝ؑ اَفَمَنْ شَرَحَ
ع ٢ ١١ ١٢
اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

(ऐ मुख़ातब) क्या तूने इस (बात) पर नज़र नहीं की कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसको ज़मीन के सोतों में दाख़िल कर देता है। फिर (जब वह उबलता है तो) उसके ज़रिये से खेतियाँ पैदा करता है जिसकी मुख़्तलिफ़ क़िस्में हैं, फिर वह खेती बिल्कुल सूख जाती है, सो उसको तू ज़र्द देखता है। फिर (अल्लाह तआ़ला) उसको चूरा-चूरा कर देता है। इस (नमूने) में अ़क्ल वालों के लिए बड़ी इब्रत है। (21)

सो जिस शख़्स का सीना अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम (के क़बूल करने) के लिए खोल दिया और वह अपने परवर्दिगार के (अ़ता किए हुए) नूर पर है, (क्या वह शख़्स और संगदिल बराबर हैं?) सो जिन लोगों के दिल ख़ुदा के ज़िक्र से मुतास्सिर नहीं होते उनके लिए बड़ी ख़राबी है, ये लोग खुली गुमराही में हैं। (22)

आसमानी बारिश

ज़मीन में जो पानी है दर हक़ीक़त आसमान से उतरा हुआ है, जैसे फ़रमान है कि हम आसमान से पानी उतारते हैं। यह पानी ज़मीन पी लेती है और वह अन्दर ही अन्दर फैल जाता है। पस ज़रूरत के मुताबिक़ किसी सोत से अल्लाह तआ़ला उसे निकालता है और चश्मे जारी हो जाते हैं। जो पानी ज़मीन के मैल से खारा (बद-ज़ायक़ा और बद-रंग) हो जाता है, इसी तरह आसमानी पानी बर्फ़ की शक्ल में पहाड़ों पर जम जाता है, जिसे पहाड़ पी लेते हैं और फिर उनमें से सोतें बह निकलती हैं। उन चश्मों और झरनों का पानी खेतों में पहुँचता है जिससे खेतियाँ लहलहाने लगती हैं, जो विभिन्न रंग व बू की, तरह-तरह के मज़े और शक्ल व सूरत की होती हैं। फिर आख़िरी वक़्त में उनकी जवानी बुढ़ापे से और सब्ज़ी ज़र्दी (यानी हरियाली पीलेपन) से बदल जाती है। फिर ख़ुश्क हो जाती हैं और काट ली जाती हैं। क्या इसमें अ़क़्लमन्दों के लिये समझ व नसीहत नहीं? क्या वे इतना नहीं देखते कि इसी तरह दुनिया है कि आज जवान और ख़ूबसूरत नज़र आती है, कल बुढ़िया और बदूसरत हो जायेगी। आज एक शख़्स नौजवान ताक़तवर है, कल

Maktab E Ashraf

वही बूढ़ा बद-शक्ल और कमज़ोर नज़र आता है। फिर आख़िरकार मौत के पंजे में फंसता है। पस अ़क्लमन्द अन्जाम पर नज़र रखें। बेहतर वह है जिसका अन्जाम बेहतर हो। अक्सर जगह दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल बारिश से पैदा होने वाली खेती के साथ दी गई है। जैसे एक जगह फ़रमायाः

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ .... الخ

(सूरः कहफ़ आयत 45)

फिर फ़रमाता है कि जिसका सीना इस्लाम के लिये खुल गया और जिसने रब के पास का नूर पा लिया वह, और सख़्त सीने वाला, तंग दिल वाला क्या बराबर हो सकता है? हक़ पर क़ायम और हक़ से दूर क्या बराबर हो सकते हैं? जैसे एक जगह फ़रमायाः

اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا .... الخ

वह शख़्स जो मुर्दा था हमने उसे ज़िन्दा कर दिया और उसे नूर अ़ता फ़रमाया, जिसे वह अपने साथ लिये हुए लोगों में फिर रहा है, यह और वह जो अंधेरों में घिरा हुआ है जिनसे छुटकारा मुहाल है, क्या दोनों बराबर हो सकते हैं?

पस यहाँ भी नतीजा बयान फ़रमाया कि जिनके दिल ख़ुदा के ज़िक्र से नर्म नहीं पड़ते, अल्लाह के अहकाम को मानने के लिये नहीं खुलते, रब के सामने आ़जिज़ी नहीं करते बल्कि संगदिल और सख़्त-दिल हैं, उनके लिये ख़राबी, अफ़सोस और हसरत है, ये बिल्कुल गुमराह हैं।

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِىَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَ قُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ○	अल्लाह ने बड़ा उम्दा कलाम नाज़िल फ़रमाया है, जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती जुलती है। बार-बार दोहराई गई है, जिससे उन लोगों के जो कि अपने रब से डरते हैं, बदन काँप उठते हैं। फिर उनके बदन और दिल नर्म (और ताबेदार) होकर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते हैं। यह (क़ुरआन) अल्लाह की हिदायत है, जिसको वह चाहता है इसके ज़रिये से हिदायत करता है, और ख़ुदा जिसको गुमराह करता है उसका कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)

एक बहुत ही अच्छी बात

अल्लाह तआ़ला अपनी इस किताब क़ुरआने करीम की तारीफ़ में फ़रमाता है कि इस बेहतरीन किताब को उसने नाज़िल फ़रमाया है जो सब की सब मुतशाबा (एक जैसी मिली-जुली) है, और जिसकी आयतें बार-बार दोहराई गयी हैं ताकि समझ से ज़्यादा क़रीब हो जायें। एक आयत दूसरी आयत के जैसी और एक हर्फ़ दूसरे हर्फ़ से मिलता जुलता। इस सूरत की आयतें उस सूरत से और उसकी इससे मिली-जुली। एक ही बात और एक ही ज़िक्र कई जगह और फिर बिना किसी तब्दीली के बाज़ आयतें एक ही बयान में। बाज़ में

जो मज़कूर है उसकी ज़िद (विपरीत और उलट मज़मून) का ज़िक्र भी उन्हीं के साथ है। जैसे मोमिनों के ज़िक्र के साथ ही काफ़िरों का ज़िक्र, जन्नत के साथ दोज़ख़ का बयान वग़ैरह।

देखिये नेक लोगों के ज़िक्र के साथ ही बुरे और गुनाहगार लोगों का बयान है। सिज्जीन (काफ़िरों और गुनाहगारों की रूहों के ठिकाने) के साथ ही इल्लिय्यीन (अच्छे और मोमिन लोगों की रूहों के ठिकाने) का बयान है। मुत्तक़ीन (परहेज़गार लोगों) के साथ ही सरकश और नाफ़रमानों का बयान है। जन्नत के ज़िक्र के साथ ही जहन्नम का तज़किरा है। यही मायने हैं मिसाली के। और 'मुतशाबिहात' उन आयतों को कहते हैं जो एक ही क़िस्म के ज़िक्र में लगातार चली जाती हैं। यहाँ इस लफ़्ज़ के जो मायने हैं वे तो ये हैं और 'व आख़रु मुतशाबिहातुन' में दूसरे ही मायने हैं। उसकी पाक और असरदार आयतों का मोमिनों के दिलों पर नूर पड़ता है, वे इन्हें सुनते ही ख़ौफ़ज़दा हो जाते हैं, सज़ाओं और धमकियों को सुनकर उनका कलेजा कपकपाने लगता है, रौंगटे खड़े हो जाते हैं और आ़जिज़ी और बहुत ज़्यादा रोने व फ़रियाद करने से उनके दिल ख़ुदा की तरफ़ झुक जाते हैं। उसकी रहमत व लुत्फ़ पर नज़रें डालकर उम्मीदें बंध जाती हैं।

पस उनका हाल सियाह दिलों (यानी गुनाहों और कुफ़्र से सियाह हो चुके दिलों) से बिल्कुल अलग और भिन्न है। ये रब के कलाम को नेकों से सुनते हैं। वे गाने बजाने पर सर धुनते हैं। ये लोग क़ुरआनी आयतों के ज़रिये अपने ईमान को और ज़्यादा मज़बूत करते हैं, मगर जिनके दिलों में रोग है वे क़ुरआनी आयतों को सुनकर और ज़्यादा कुफ़्र के ज़ीने पर चढ़ते हैं। ये रोते हुए सज्दों में गिर पड़ते हैं, वे मज़ाक़ उड़ाते हुए अकड़ते हैं। क़ुरआन का फ़रमान है:

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ........ الخ

यानी अल्लाह की याद मोमिनों के दिलों को दहला देती है। वे ईमान व तवक्कुल में बढ़ जाते हैं, नमाज़ व ज़कात और ख़ैरात का ख़्याल रखते हैं, सच्चे ईमान वाले यही हैं। मग़फ़िरत के दर्जे और बेहतरीन रोज़ियाँ यही लोग पायेंगे। एक दूसरी आयत में है:

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا.

यानी भले लोग क़ुरआन की आयतों को बहरों अन्धों की तरह नहीं सुनते पढ़ते कि उनकी तरफ़ न तो सही तवज्जोह हो न अ़मल का इरादा हो, बल्कि ये कान लगाकर सुनते हैं और दिल लगाकर समझते हैं। ग़ौर व फ़िक्र से मआ़नी और मतलब तक रसाई हासिल करते हैं। अब तौफ़ीक़ हाथ आती है, सज्दे में गिर पड़ते हैं और तामील के लिये तैयार हो जाते हैं। ये ख़ुद अपनी समझ से काम करने वाले होते हैं, दूसरों की देखा-देखी जहालत के पीछे नहीं पड़े रहते। तीसरा वस्फ़ (ख़ूबी और कमाल) उनमें दूसरों के विपरीत यह है कि क़ुरआन के सुनने के वक़्त अदब के साथ रहते हैं। हुज़ूर सल्ल. की तिलावत सुनकर सहाबा किराम रज़ि. के जिस्म व रूह अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ झुक जाते थे, उनमें ख़ुशू व ख़ुज़ू (जिस्म व दिल का झुकाव यानी आ़जिज़ी) पैदा हो जाता था। लेकिन यह न था कि चीख़ने-चिल्लाने और हड़बोंग करने लगें और अपनी सूफ़ियत जतायें, बल्कि सुकून, जमाव, अदब और अल्लाह के डर के साथ कलामुल्लाह सुनते, दिल का इत्मीनान और सुकून हासिल करते। इसी वजह से तारीफ़ व प्रशंसा के पात्र और मुस्तहिक़ हुए। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम।

मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं- अल्लाह के औलिया की सिफ़त यह है कि क़ुरआन सुनकर दिल मोम हो जायें और वे अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ झुक जायें। उनके दिल डर जायें,

उनकी आँखें आँसू बहायें और तबीयत में सुकून पैदा हो जाये। यह नहीं कि अक़्ल जाती रहे, अ़जीब कैफ़ियत तारी हो जाये, नेक व बद का होश न रहे, यह बिदअ़त के काम और हरकतें हैं कि हा-हू करने लगते हैं और कूदते-उछलते हैं, कपड़े फाड़ते हैं, यह शैतानी हरकत है।

Maktab E Ashraf

अल्लाह के ज़िक्र से अल्लाह के वायदे मुराद होना भी बयान किया गया है। फिर फ़रमाता है कि ये सिफ़तें (निशानियाँ और विशेषतायें) हैं उन लोगों की जिन्हें ख़ुदा ने हिदायत दी है। इनके ख़िलाफ़ जिन्हें पाओ समझ लो कि उन्हें गुमराह कर दिया गया है, और यक़ीन रखो कि रब जिन लोगों को हिदायत न देना चाहे उन्हें कोई सही रास्ता नहीं दिखा सकता।

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ
تَكْسِبُوْنَ ۝ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَاَتٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝
فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ۝

भला जो शख़्स अपने मुँह को क़ियामत के दिन अ़ज़ाब की ढाल बना देगा, और ऐसे ज़ालिमों को हुक्म होगा कि जो कुछ तुम किया करते थे (अब) उसका मज़ा चखो। (24) तो क्या यह (अ़ज़ाब पाने वाले) और जो ऐसा न हो बराबर हो सकते हैं? जो लोग उनसे पहले हो चुके हैं उन्होंने भी (हक़ को) झुठलाया था, सो उन पर (ख़ुदा का) अ़ज़ाब ऐसे तौर पर आया कि उनको ख़्याल भी न था। (25) सो अल्लाह ने उनको इसी दुनियावी ज़िन्दगी में भी रुस्वाई का मज़ा चखाया और आख़िरत का अ़ज़ाब और भी बड़ा (और सख़्त) है, काश! ये लोग समझ जाते। (26)

अचानक आ पड़ने वाला अ़ज़ाब

एक वह जिसे इस अफ़रा-तफ़री और घबराहट के माहौल में अमन व अमान हासिल हो और एक वह जिसे अपने मुँह पर अ़ज़ाब के थपेड़े खाने पड़ते हों, क्या बराबर हो सकते हैं? जैसे एक जगह फ़रमायाः

اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖ.......... الخ

कि औंधे मुँह यानी मुँह के बल चलने वाला और सीधा खड़ा होकर अपने पैरों पर सीधी राह चलने वाला बराबर नहीं। इन काफ़िरों को तो क़ियामत के दिन औंधे मुँह घसीटा जायेगा और कहा जायेगा कि आग का मज़ा चखो। एक दूसरी आयत में हैः

اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ.

जहन्नम में दाख़िल किया जाने वाला बदनसीब अच्छा या अमन व अमान से क़ियामत का दिन गुज़ारने वाला अच्छा?

यहाँ इस आयत का भी मतलब यही है, लेकिन एक क़िस्म का ज़िक्र करके दूसरी क़िस्म के बयान को छोड़ दिया। क्योंकि इसी से वह भी समझ लिया जाता है। यह बात शायरों के कलाम में भी बराबर पाई

Maktab E Ashraf

जाती है (कि एक बात को ज़िक्र कर देते हैं और उसके ज़रिये जो बात ख़ुद ही समझ में आ जाये उसका ज़िक्र छोड़ देते हैं)। पहले लोगों ने भी ख़ुदा की बातों को न माना और रसूलों को झूठा कहा था, फिर देखो कि उन पर किस तरह उनकी बेख़बरी में अ़ज़ाब आया। ख़ुदा के अ़ज़ाब ने उनको दुनिया में भी ज़लील व रुस्वा किया और आख़िरत के सख़्त अ़ज़ाब भी उनके लिये बाक़ी हैं। पस तुम्हें डरते रहना चाहिये कि तमाम रसूलों से अफ़ज़ल रसूल के सताने और न मानने की वजह से तुम पर कहीं उनसे भी बदतर अ़ज़ाब न बरस पड़ें। तुम अगर इल्म व समझ वाले हो तो उनके हालात और तज़किरे तुम्हारी नसीहत के लिये काफ़ी हैं।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِىْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ۝ع	और हमने लोगों की (हिदायत) के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म के (ज़रूरी) उम्दा मज़ामीन बयान किए हैं, ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें। (27) जिसकी कैफ़ियत यह है कि वह अ़रबी क़ुरआन है जिसमें ज़रा भी टेढ़ नहीं (और) ताकि ये लोग डरें। (28) अल्लाह ने (मोमिन व मुश्रिक के बारे में) एक मिसाल बयान फ़रमाई कि एक शख़्स (ग़ुलाम) है, जिस में कई साझी हैं, जिनमें आपस में ज़िद्दा-ज़िद्दी (भी) है, और एक और शख़्स है कि पूरा एक ही शख़्स का (ग़ुलाम) है, (तो) क्या उन दोनों की हालत बराबर (हो सकती) है? अल्हम्दु लिल्लाह (क़बूल तो किया) बल्कि उनमें अक्सर समझते भी नहीं। (29) आपको भी मरना है और उनको भी मरना है। (30) फिर क़ियामत के दिन तुम मुक़द्दमात अपने रब के सामने पेश करोगे। (उस वक़्त अ़मली फ़ैसला हो जाएगा)। (31)

ع ۳ ۱۷

इन मज़ामीन में लोगों के लिये नसीहत है

चूँकि मिसालों से बातें ठीक तौर पर समझ में आती हैं इसलिये अल्लाह तआ़ला क़ुरआने करीम में हर क़िस्म की मिसालें भी बयान फ़रमाता है, ताकि लोग अच्छी तरह बात ज़ेहन में बैठा लें। चुनाँचे इरशाद है:

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ.

ख़ुदा ने तुम्हारे लिये वे मिसालें बयान फ़रमाई हैं जिन्हें तुम ख़ुद अपने आपस में बहुत अच्छी तरह जानते बूझते हो। एक और आयत में है:

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ.

इन मिसालों को हम लोगों के सामने बयान कर रहे हैं। उलेमा ही इन्हें अच्छी तरह समझ सकते हैं। यह क़ुरआन फ़सीह (उम्दा) अ़रबी भाषा में है जिसमें कोई टेढ़ और कमी नहीं। स्पष्ट दलीलें दर्ज की गई

हैं। यह इसलिये कि इसे पढ़कर सुनकर लोग अपना बचाव कर लें, इसके अ़ज़ाब की आयतों को सामने रखकर बुराईयाँ छोड़ दें और इसके सवाब की आयतों की तरफ़ नज़रें रखकर नेक आमाल में मेहनत करें।

इसके बाद अल्लाह तआ़ला एक ख़ुदा को मानने वाले (यानी ईमान वाले) और मुश्रिक की मिसाल बयान फ़रमाता है कि एक तो वह ग़ुलाम है जिसके बहुत सारे आक़ा हों और वे भी आपस में एक दूसरे के मुख़ालिफ़ हों, और दूसरा वह ग़ुलाम है जो ख़ालिस सिर्फ़ एक ही शख़्सियत की मिल्कियत में हो, उसके सिवा उस पर किसी दूसरे का इख़्तियार न हो। क्या ये दोनों तुम्हारे नज़दीक बराबर हैं? हरगिज़ नहीं।

इसी तरह एक अल्लाह को मानने वाला जो सिर्फ़ एक अल्लाह वह्दहू ला-शरीक लहू की ही इबादत करता है, और मुश्रिक जिसने अपने माबूद बहुत से बना रखे हैं, इन दोनों में भी कोई निस्बत (जोड़ और बराबरी) नहीं। कहाँ यह मुख़्लिस अल्लाह को एक मानने वाला? कहाँ यह दर-बदर की ठोकरें खाने वाला मुश्रिक? इस ज़ाहिर व स्पष्ट और रोशन व साफ़ मिसाल के बयान पर भी रब्बुल-आ़लमीन की तारीफ़ व सना बयान करनी चाहिये कि उसने अपने बन्दों को इस तरह समझा दिया कि हक़ीक़त (वास्तविकता और असलियत) बिल्कुल ज़ाहिर हो गई। शिर्क की बदी और तौहीद की ख़ूबी अच्छी तरह ज़ेहन में बैठ गई। अब रब के साथ वही लोग शिर्क करेंगे जो जाहिल होंगे, जिनमें समझ-बूझ बिल्कुल ही न हो।

इसके बाद की आयत को हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. की वफ़ात के बाद पढ़कर फिर दूसरी आयत 'व मा मुहम्मदुन् इल्ला रसूलुन्.......................आख़िर तक (सूरः आले इमरान आयत 144)' तिलावत करके लोगों को बतलाया था कि हुज़ूर सल्ल. की वफ़ात हो गई। आपका कलाम सुनकर सब को यक़ीन हो गया था। आयते शरीफ़ा का मतलब यह है कि सब इस दुनिया से जाने वाले और आख़िरत में अपने रब के पास जमा होने वाले हैं। वहाँ अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों और ईमान वालों में साफ़ फ़ैसला फ़रमा देगा और हक़ ज़ाहिर हो जायेगा। उससे अच्छे फ़ैसले वाला और उससे ज़्यादा इल्म वाला कौन है? ईमान, इख़्लास और तौहीद व सुन्नत वाले निजात पा जायेंगे, शिर्क व कुफ़्र, इनकार करने और झुठलाने वाले सख़्त सज़ायें उठायेंगे। इसी तरह जिन दो शख़्सों में जो झगड़ा और इख़्तिलाफ़ दुनिया में था वह क़ियामत के दिन ख़ुदा-ए-आ़दिल के सामने पेश होकर तय हो जायेगा। इस आयत के नाज़िल होने पर अ़ब्दुल्लाह रज़ि. ने कहा फिर तो सख़्त मुश्किल है। (इब्ने अबी हातिम)

मुस्नद अहमद की इस हदीस में यह भी है कि आयतः

ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ.

(सूरः तकासुर आख़िरी आयत) यानी "फिर उस दिन तुमसे ख़ुदाई नेमतों का सवाल किया जायेगा" के नाज़िल होने पर आप ही ने सवाल किया कि वे कौनसी नेमतें हैं जिनके बारे में हमसे हिसाब लिया जायेगा? हम तो खजूरें खाकर और पानी पीकर गुज़ारा कर रहे हैं। नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया- अब नहीं हैं तो क्या! जल्द ही बहुत सी नेमतें हासिल हो जायेंगी। यह हदीस तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में भी है और इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन बतलाते हैं। मुस्नद की इसी हदीस में यह भी है कि हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आयत "इन्न-क मय्यितुंव्-व इन्नहुम् मय्यितून" के नाज़िल होने पर पूछा कि या रसूलल्लाह! क्या वे सारे झगड़े जो दुनिया में थे वहाँ क़ियामत में दोबारा दोहराये जायेंगे? साथ ही गुनाहों की भी पूछगछ होगी? आपने फ़रमाया हाँ। वे ज़रूर दोहराये जायेंगे और हर शख़्स को उसका हक़ पूरा-पूरा दिलवाया जायेगा। यह सुनकर आपने अ़र्ज़ किया फिर तो सख़्त मुश्किल काम है।

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि सबसे पहले पड़ोसियों के आपस के झगड़े पेश होंगे। एक और हदीस में है कि उस ज़ाते पाक की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि सब झगड़ों का फ़ैसला क़ियामत के दिन होगा, यहाँ तक कि दो बकरियाँ जो लड़ी होंगी और एक ने दूसरी को सींग मारा होगा, उनका बदला भी दिलवाया जायेगा। (मुस्नद अहमद)

मुस्नद ही की एक और हदीस में है कि दो बकरियों को आपस में लड़ते हुए देखकर रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत अबूज़र रज़ि. से दरियाफ़्त फ़रमाया कि जानते हो ये क्यों लड़ रही हैं? हज़रत अबूज़र रज़ि. ने जवाब दिया कि हुज़ूर! मुझे क्या ख़बर। आपने फ़रमाया ठीक है, लेकिन अल्लाह तआ़ला को इसका इल्म है और वह क़ियामत के दिन इन दोनों में इन्साफ़ करेगा। बज़्ज़ार में है कि रसूले ख़ुदा सल्ल. फ़रमाते हैं- ज़ालिम और ख़ाईन (ख़ियानत करने वाले) बादशाह से उसकी प्रजा क़ियामत के दिन झगड़ा करेगी और उस पर वह ग़ालिब आ जायेगी और ख़ुदा तआ़ला का फ़रमान होगा कि जाओ इसे जहन्नम का एक हिस्सा बना दो। इस हदीस के एक रावी अग़्लब बिन तमीम का हाफ़िज़ा (याददाश्त) जैसा चाहिये वैसा नहीं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हर सच्चा झूठे से, हर मज़लूम ज़ालिम से, हर हिदायत-याफ़्ता गुमराही में मुब्तला होने वाले से, हर कमज़ोर ज़ोरावर से उस दिन झगड़ेगा। इब्ने मन्दा रह. अपनी किताब 'अर्रूह' में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत लाये हैं कि लोग क़ियामत के दिन झगड़ेंगे यहाँ तक कि रूह और जिस्म के बीच भी झगड़ा होगा। रूह तो जिस्म को इल्ज़ाम देगी कि इन्होंने ये सब बुराईयाँ कीं और जिस्म रूह से कहेगा कि सारी तमन्ना और शरारत तेरी ही थी। एक फ़रिश्ता उनमें फ़ैसला करेगा, वह कहेगा सुनो! एक आँखों वाला इनसान है लेकिन अपाहिज बिल्कुल लूला लंगड़ा, चलने फिरने से माज़ूर है। दूसरा आदमी अंधा है लेकिन उसके पैर सलामत हैं, चलता फिरता है, ये दोनों एक बाग़ में हैं, लंगड़ा अंधे से कहता है भाई यह बाग़ तो मेवों और फलों से लदा हुआ है लेकिन मेरे तो पाँव नहीं जो मैं जाकर ये फल तोड़ लूँ? अंधा जवाब देता है आओ मेरे पाँव हैं, मैं तुझे अपनी पीठ पर चढ़ा लेता हूँ और ले चलता हूँ। चुनाँचे ये दोनों इस तरह पहुँचे और ख़ूब मर्ज़ी के मुताबिक़ फल तोड़े। बतलाओ इन दोनों में मुजरिम कौन है? जिस्म और रूह दोनों जवाब देंगे कि जुर्म दोनों का है। फ़रिश्ता कहेगा बस अब तो तुमने अपना फ़ैसला ख़ुद ही कर दिया, यानी जिस्म गोया सवारी है और रूह उस पर सवार है।

इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस आयत के नाज़िल होने पर हम ताज्जुब में थे कि हम में और अहले किताब में तो झगड़ा है ही नहीं, फिर आख़िर क़ियामत के दिन किससे झगड़े होंगे? इसके बाद जब आपस में फ़ितने शुरू हो गये तो हमने समझ लिया कि यही आपस के झगड़े हैं जो ख़ुदा के यहाँ पेश होंगे। अबुल-आ़लिया रह. फ़रमाते हैं कि अहले क़िब्ला (यानी मुसलमान) और ग़ैर-अहले क़िब्ला झगड़ेंगे। इब्ने ज़ैद रह. से मन्क़ूल है कि इससे मुसलमान और काफ़िर लोगों का झगड़ा मुराद है। लेकिन हम पहले ही बयान कर चुके हैं कि वास्तव में यह आयत आ़म है (यानी यह हुक्म सब के लिये है हर तरह के झगड़े इससे मुराद हैं)। वल्लाहु आलम।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसकी मेहरबानी व इनायत से
तफ़सीर इब्ने क़सीर का तेईसवाँ पारा मुकम्मल हुआ।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर चौबीस

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَ كَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ۝ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝	सो उस शख़्स से ज़्यादा बेइन्साफ़ कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे और सच्ची बात (यानी क़ुरआन) को जबकि वह उसके पास (रसूल के ज़रिये से) पहुँची झुठलाये। क्या (क़ियामत के दिन) ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा? (32) और जो लोग सच्ची बात लेकर आए और (ख़ुद भी) उसको सच जाना तो ये लोग परहेज़गार हैं। (33) (उनका फ़ैसला यह होगा कि) वे जो कुछ चाहेंगे उनके लिए उनके परवर्दिगार के पास सब कुछ है, यह सिला है नेक काम करने वालों का। (34) ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे आमाल को दूर कर दे और उनके नेक कामों के बदले उनको उनका सवाब दे। (35)

इनसे बड़ा ज़ालिम कौन होगा

मुशिरक लोगों ने ख़ुदा पर बहुत झूठ बोला था और तरह-तरह के इल्ज़ाम लगाये थे। कभी उसके साथ दूसरे माबूद बतलाते थे, कभी फ़रिश्तों को ख़ुदा की लड़कियाँ शुमार करने लगते थे, कभी मख़्लूक़ में से किसी को उसका बेटा कह दिया करते थे हालाँकि तमाम ऐबों और कमियों से उसकी बुलन्द व बाला ज़ात पाक और बरतर थी। साथ ही उनमें दूसरी बुरी आदत यह भी थी कि जो हक़ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के ज़रिये ख़ुदा तआला नाज़िल फ़रमाता ये उसे भी झुठलाते थे। पस फ़रमाया कि ये सबसे बढ़कर ज़ालिम हैं। फिर जो सज़ा इन्हें होनी है उससे इन्हें आगाह कर दिया कि ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम ही है, जो मरते दम तक इनकार व झुठलाने पर ही रहें।

उनकी बुरी आदतों और सज़ा का ज़िक्र करके फिर मोमिनों की नेक आदत और उनकी जज़ा का ज़िक्र फ़रमाता है कि जो सच्चाई को लाया और उसे सच्चा माना, यानी नबी करीम सल्ल. और हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम, और हर वह शख़्स जो कलिमा-ए-तौहीद का इक़रार करने वाला हो और तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम और उनके मानने वाली मुसलमान उम्मत, ये क़ियामत के दिन यही कहेंगे कि जो तुमने हमें दिया और जो फ़रमाया हम उसी पर अमल करते रहे, ख़ुद रसूले ख़ुदा सल्ल. भी इस आयत में दाख़िल हैं। आप सल्ल. भी सच्चाई के लाने वाले और पहले रसूलों की तस्दीक़ करने वाले हैं, और आप सल्ल. पर जो कुछ नाज़िल हुआ था उसे मानने वाले थे। साथ ही यह वस्फ़ तमाम ईमान वालों का था कि वे ख़ुदा पर, फ़रिश्तों पर, किताबों पर और रसूलों पर ईमान रखते थे। रबीअ़ बिन अनस रज़ि. की क़िराअत में 'वल्लज़ी

जाऊ बिस्सिद्कि' है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन असलम रज़ि. फ़रमाते हैं कि सच्चाई को लाने वाले हुज़ूर सल्ल. हैं और उसे सच मानने वाले मुसलमान हैं, यही मुत्तक़ी परहेज़गार और पारसा हैं, जो ख़ुदा से डरते रहे और शिर्क व कुफ़्र से बचते रहे। इनके लिये जन्नत में जो वे चाहें सब कुछ है। जब तलब करेंगे पायेंगे। यही बदला है इन पाकबाज़ लोगों का। ख़ुदा तआ़ला इनकी बुराईयाँ (गुनाह और ख़तायें) तो माफ़ फ़रमा देता है और नेकियाँ क़बूल कर लेता है। जैसे एक दूसरी आयत में फ़रमायाः

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا......... الخ

कि ये वे लोग हैं जिनकी नेकियाँ हम क़बूल कर लेते हैं और जिनकी बुराईयों से हम दरगुज़र फ़रमा लेते हैं। ये लोग जन्नतों में रहेंगे, इन्हें बिल्कुल सच्चा और सही-सही वायदा दिया जाता है।

क्या अल्लाह तआ़ला अपने (ख़ास) बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त) के लिए काफ़ी नहीं, और ये लोग आपको उन (झूठे माबूदों) से डराते हैं जो ख़ुदा के सिवा (तजवीज़ कर रखे) हैं, और जिसको ख़ुदा गुमराह करे उसका कोई हिदायत देने वाला नहीं। (36) और जिसको वह हिदायत दे उसका कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या ख़ुदा तआ़ला ज़बरदस्त, इन्तिक़ाम लेने वाला नहीं? (37) और अगर (आप) उनसे पूछें कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया है? तो यही कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला ने, आप (उनसे) कहिए कि भला फिर यह तो बतलाओ कि ख़ुदा के सिवा तुम जिन माबूदों को पूजते हो अगर अल्लाह तआ़ला मुझको कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे, क्या ये माबूद उसकी दी हुई तकलीफ़ दूर कर सकते हैं? या अल्लाह तआ़ला मुझ पर अपनी इनायत करना चाहे, क्या ये माबूद उसकी इनायत को रोक सकते हैं? आप कह दीजिए कि (इससे साबित हो गया कि) मेरे लिए ख़ुदा काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। (38) आप कह दीजिए कि तुम अपनी हालत पर अ़मल क़िए जाओ, मैं भी अ़मल कर रहा हूँ, सो अब जल्दी ही तुमको मालूम हुआ	أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝ وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انتِقَامٍ ۝ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ قُلْ يَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ مَن يَأْتِيهِ

عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ○	जाता है (39) कि वह कौन शख़्स है जिस पर (दुनिया में) ऐसा अ़ज़ाब आया चाहता है जो उसको रुस्वा कर देगा, और (मौत के बाद) उस पर हमेशा रहने वाला अ़ज़ाब नाज़िल होगा। (40)

Maktab E Ashraf

अल्लाह तआ़ला ही सबके काम बनाने वाला है

एक क़िराअत में 'अलैसल्लाहु बिकाफ़िन् अ़िबादहू' है, यानी अल्लाह तआ़ला अपने हर बन्दे को काफ़ी है, उसी पर हर शख़्स को भरोसा रखना चाहिये। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि उसने निजात पा ली जो इस्लाम की हिदायत दिया गया और ज़रूरत के मुताबिक़ रोज़ी दिया गया और क़नाअ़त (जो मिला उस पर दिल से राज़ी रहना) भी नसीब हुई। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

ऐ नबी! ये लोग तुझे अल्लाह तआ़ला के सिवा औरों से डरा रहे हैं, ये इनकी जहालत व गुमराही है और ख़ुदा जिसे गुमराह कर दे उसे कोई राह नहीं दिखा सकता। जिस तरह ख़ुदा के राह दिखाये हुए शख़्स को कोई बहका नहीं सकता। अल्लाह तआ़ला बुलन्द जनाब वाला है, उस पर भरोसा करने वाले का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता और उसकी तरफ़ झुक जाने वाला कभी मेहरूम नहीं रहता। उससे बढ़कर इ़ज़्ज़त वाला कोई नहीं। इसी तरह उससे बढ़कर इन्तिक़ाम (बदला लेने) पर क़ादिर भी कोई नहीं, जो लोग उसके साथ कुफ़्र व शिर्क करते हैं, उसके रसूलों से लड़ते भिड़ते हैं, यक़ीनन वह उन्हें सख़्त सज़ायें देगा।

मुश्रिकों की एक और जहालत बयान हो रही है कि बावजूद अल्लाह तआ़ला को ख़ालिक़े कुल (हर चीज़ का बनाने और पैदा करने वाला) मानने के फिर भी ऐसे झूठे माबूदों की पूजा करते हैं जो किसी नफ़े नुक़सान के मालिक नहीं, जिन्हें किसी मामले का कोई इख़्तियार नहीं। हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला को याद रख वह तेरी हिफ़ाज़त करेगा, अल्लाह तआ़ला को याद रख तू उसे हर वक़्त अपने पास पायेगा, आसानी के वक़्त रब की नेमतों का शुक्रगुज़ार रह सख़्ती के वक़्त वह तुझे काम आयेगा, जब कुछ माँगे तो अल्लाह तआ़ला ही से माँग और जब मदद तलब करे तो उसी से मदद तलब कर, यक़ीन रख कि अगर तमाम दुनिया मिलकर तुझे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे और ख़ुदा का इरादा न हो तो वे सब तुझे ज़रा सा भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। और सब जमा होकर तुझे कोई नफ़ा पहुँचाना चाहें जो ख़ुदा ने मुक़द्दर में न लिखा हो तो हरगिज़ नहीं पहुँचा सकते। सहीफ़े (नविश्ते और रजिस्टर) बन्द हो चुके, क़लम उठा लिये गये (यानी तक़दीर में सब कुछ लिखा जा चुका) यक़ीन और शुक्र के साथ नेकियों में मशग़ूल रहा कर, तकलीफ़ों में सब्र करने पर बड़ी नेकियाँ मिलती हैं। मदद सब्र के साथ है, ग़म व रंज के साथ ही ख़ुशी और फ़राख़ी है। हर सख़्ती अपने अन्दर आसानी को लिये हुए है। (इब्ने अबी हातिम)

तू कह दे कि मुझे ख़ुदा काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी की पाक ज़ात पर भरोसा करते हैं। जैसे कि हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को जवाब दिया था जब उन्होंने कहा था कि ऐ हूद! हमारा यह ख़्याल है कि तुम्हें हमारे किसी माबूद ने किसी ख़राबी में मुब्तला कर दिया है, तो आपने फ़रमाया मैं ख़ुदा को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं तुम्हारे झूठे माबूदों से बेज़ार हूँ (यानी मेरा उनसे कोई ताल्लुक़ नहीं), तुम सब मिलकर मेरे साथ जो दाँव-घात तुमसे हो सकते हैं सब कर लो और मुझे बिल्कुल भी मोहलत न दो। सुनो! मेरा तवक्कुल मेरे रब पर है जो दर असल तुम सब का भी रब है। रू-ए-ज़मीन पर

Maktab E Ashraf

जितने चलने फिरने वाले हैं सब की चोटियाँ उसके हाथ में हैं (यानी सब पर उसको पूरा इख़्तियार है), मेरा रब सीधे और सही रास्ते पर है। रसूलुल्लाह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स सबसे ज़्यादा क़वी (ताक़तवर और प्रबल) होना चाहे वह अल्लाह पर भरोसा रखे और जो सबसे ज़्यादा ग़नी बनना चाहे वह उस चीज़ पर जो ख़ुदा के हाथ में है ज़्यादा एतिमाद रखे उस चीज़ के मुक़ाबले में जो ख़ुद उसके हाथ में है, और जो सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग (रुतबे और मक़ाम वाला) होना चाहे वह अल्लाह तआ़ला से डरता रहे। (इब्ने अबी हातिम)

फिर मुश्रिकों को डाँटते हुए फ़रमाता है कि अच्छा तुम अपने तरीक़े पर अ़मल करते चले जाओ मैं अपने तरीक़े पर आ़मिल हूँ। तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा कि दुनिया में ज़लील व ख़्वार कौन होता है और आख़िरत के हमेशा के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार कौन होता है। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से हमें महफ़ूज़ रखे। आमीन

إِنَّآ أَنزَلْنَا عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ لِلنَّاسِ بِٱلْحَقِّ ۖ
فَمَنِ ٱهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا
يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَآ أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ۝
ٱللَّهُ يَتَوَفَّى ٱلْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَٱلَّتِى
لَمْ تَمُتْ فِى مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ ٱلَّتِى
قَضَىٰ عَلَيْهَا ٱلْمَوْتَ وَيُرْسِلُ ٱلْأُخْرَىٰٓ
إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

हमने आप पर यह किताब लोगों के (नफ़े के) लिए उतारी जो हक़ को लिए हुए है। सो जो शख़्स सच्ची राह पर आएगा तो अपने नफ़े के वास्ते, और जो शख़्स बेराह रहेगा तो उसका बेराह होना (यानी उसका वबाल) उसी पर पड़ेगा। और आप उन पर (कुछ बतौर ज़िम्मेदारी के) मुसल्लत नहीं किए गए। (41)

अल्लाह ही क़ब्ज़ (यानी मुअ़त्तल व बेकार) करता है (उन) जानों को उनकी मौत के वक़्त, और उन जानों को भी जिनकी मौत नहीं आई उनके सोने के वक़्त, फिर उन जानों को तो रोक लेता है जिन पर मौत का हुक्म फ़रमा चुका है और बाक़ी जानों को एक मुक़र्ररा मियाद (निर्धारित वक़्त) तक के लिए रिहा कर देता है, इसमें उन लोगों के लिए जो कि सोचने के आ़दी हैं दलीलें हैं। (42)

यह किताब ख़ुदा की तरफ़ से उतरी हुई है

अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त अपने नबी सल्ल. को ख़िताब फ़रमा रहा है कि हमने तुझ पर इस क़ुरआन को सच्चाई और रास्ती के साथ तमाम जिन्नात व इनसानों की हिदायत के लिये नाज़िल फ़रमाया है। इसके फ़रमान को मानकर सही रास्ता हासिल करने वाले अपना ही नफ़ा करेंगे और इसके होते हुए भी दूसरी ग़लत राहों पर चलने वाले अपना ही बिगाड़ करेंगे। तू इस मामले का ज़िम्मेदार ही नहीं कि ख़्वाह-मख़्वाह हर शख़्स इसे मान ही ले, तेरे ज़िम्मे सिर्फ़ इसका पहुँचा देना है, हिसाब लेने वाले हम हैं। हम हर मौजूद में जो चाहें तसर्रुफ़ (अपने इख़्तियार का इस्तेमाल) करते रहते हैं। 'वफ़ाते कुबरा' (बड़ी मौत) जिसमें हमारे

भेजे हुए फ़रिश्ते इनसान की रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और 'वफ़ाते सुग़रा' (छोटी मौत) जो नींद के वक़्त होती है, हमारे ही क़ब्ज़े में है। जैसे एक दूसरी आयत में है:

هُوَالَّذِىْ يَتَوَفّٰكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَاجَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ...... الخ

यानी वह ख़ुदा जो तुम्हें रात को फ़ौत कर देता है और दिन में जो कुछ तुम करते हो जानता है। फिर तुम्हें दिन में उठा बिठाता है ताकि मुक़र्रर किया हुआ वक़्त पूरा कर दिया जाये। फिर तुम सब का लौटना उसी की तरफ़ है और वह तुम्हें तुम्हारे आमाल की ख़बर देगा। वही अपने सब बन्दों पर ग़ालिब है, वही तुम पर निगहबान फ़रिश्ते भेजता है, उस वक़्त तक जब तक कि तुममें से किसी की मौत आ न जाये। तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वे कोई कोताही और कमी नहीं करते।

पस इन दोनों आयतों में भी यही ज़िक्र हुआ है। पहले छोटी मौत को फिर बड़ी मौत को बयान फ़रमाया। यहाँ पहले बड़ी वफ़ात को फिर छोटी वफ़ात को ज़िक्र किया। इससे यह भी मालूम होता है कि 'मला-ए-आला' (ऊपर के जहान) में ये रूहें जमा होती हैं जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है।

फ़ायदाः रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब तुम में से कोई अपने बिस्तर पर सोने के ख़्याल से जाये तो अपने तहबन्द के अन्दर के हिस्से से उसे झाड़ ले, इसलिये कि न जाने उस पर क्या कुछ हो। फिर यह दुआ पढ़ेः

بِاسْمِكَ رَبِّىْ وَضَعْتُ جَنْبِىْ وَبِكَ اَرْفَعُهٗٓ اِنْ اَمْسَكْتَ نَفْسِىْ فَارْحَمْهَا وَاِنْ اَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادَكَ الصّٰلِحِيْنَ.

यानी ऐ मेरे पालने वाले रब! तेरे ही पाक नाम की बरकत से मैं लेटता हूँ और तेरी ही रहमत से मैं जागूँगा। अगर तू मेरी रूह को रोक ले तो उस पर रहम फ़रमा और अगर तू उसे भेज दे तो उसकी ऐसी ही हिफ़ाज़त करना जैसी तू अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त करता है।

बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है कि मुर्दों की रूहें जबकि वे मरें और ज़िन्दों की रूहें जबकि वे सोयें क़ब्ज़ कर ली जाती हैं और उनमें आपस में तआरुफ़ (परिचय और बातचीत) होता है, जब तक ख़ुदा चाहे। फिर मुर्दों की रूहें तो रोक ली जाती हैं और दूसरी रूहें मुक़र्रर (निर्धारित) वक़्त के लिये छोड़ दी जाती हैं। यानी मरने के वक़्त। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुर्दों की रूहें अल्लाह तआ़ला रोक लेता है और ज़िन्दों की रूहें वापस भेज देता है और इसमें कभी ग़लती नहीं होती, ग़ौर व फ़िक्र करने के जो आ़दी हैं वे इसी एक बात में अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत की बहुत सी दलीलें पा लेते हैं।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ۭ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ○ قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ ثُمَّ اِلَيْهِ

हाँ, क्या उन (मुश्रिक) लोगों ने ख़ुदा के सिवा दूसरों को (माबूद) क़रार दे रखा है, जो (उनकी) सिफ़ारिश करेंगे। आप कह दीजिए कि अगरचे ये कुछ भी क़ुदरत न रखते हों और कुछ भी इल्म न रखते हों? (43) आप कह दीजिए कि सिफ़ारिश तो मुकम्मल तौर पर ख़ुदा ही के इख़्तियार में है, तमाम आसमानों और ज़मीन

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

تُرْجَعُوْنَ ○ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ○	की बादशाही उसी की है, फिर उसी की तरफ़ लौटकर जाओगे। (44) और जब फ़क़त अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिलों को नागवार होता है जो कि आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते, और जब उसके सिवा औरों का ज़िक्र आता है तो उसी वक़्त वे लोग ख़ुश हो जाते हैं। (45)

अपनी तरफ़ से बनाये हुए ख़ुदा

अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों की मज़म्मत (बुराई और निंदा) बयान फ़रमाता है कि वे बुतों को और झूठे माबूदों को अपना सिफ़ारिशी समझे बैठे हैं, जिसकी न कोई दलील है न हुज्जत, और दर असल उन्हें न कुछ इख़्तियार है न अ़क्ल व शऊर है, न उनकी आँखें हैं न उनके कान, वे तो पत्थर और बेजान हैं, जो हैवानों (जानदार चीज़ों) से कहीं ज़्यादा बदतर हैं। इसलिये अपने नबी सल्ल. को हुक्म दिया कि उनसे कह दो कि कोई नहीं जो ख़ुदा के सामने लब हिला सके, आवाज़ उठा सके, जब तक उसकी मर्ज़ी न पा ले और इजाज़त हासिल न कर ले। सारी सिफ़ारिशों का मालिक वही है। ज़मीन व आसमान का बादशाह तन्हा वही है, क़ियामत के दिन तुम सब को उसी की तरफ़ लौटकर जाना है। उस दिन वह अ़दल (इन्साफ़) के साथ तुम सब में सच्चे फ़ैसले करेगा और हर एक को उसके आमाल का पूरा-पूरा बदला देगा।

इन काफ़िरों की हालत यह है कि तौहीद (अल्लाह के एक होने) का कलिमा सुनना इन्हें नापसन्द है। अल्लाह तआ़ला के एक होने का ज़िक्र सुनकर इनके दिल तंग हो जाते हैं, उसका सुनना भी इन्हें पसन्द नहीं, इनका दिल इसमें लगता नहीं, कुफ़्र और झुठलाना इन्हें रोक देता है। जैसे एक और आयत में है:

اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ.

यानी जब उनसे कहा जाता था कि एक ख़ुदा के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं तो ये तकब्बुर करते थे और मानने से जी चुराते थे।

चूँकि इनके दिल हक़ के मुन्किर हैं, इसलिये बातिल को बहुत जल्द क़बूल कर लेते हैं। जहाँ बुतों का और दूसरे ख़ुदाओं का ज़िक्र आया बस उनकी बाँछें खिल गईं (यानी ख़ुश हो गये)।

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ○ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا	आप कहिए कि ऐ अल्लाह आसमान और ज़मीन के पैदा करने वाले! बातिन और ज़ाहिर के जानने वाले! आप ही (क़ियामत के दिन) अपने बन्दों के दरमियान उन मामलों में फ़ैसला फ़रमा देंगे जिनमें वे आपस में इख़्तिलाफ़ करते थे। (46) और अगर ज़ुल्म (यानी शिर्क व कुफ़्र) करने वालों के पास दुनिया भर की तमाम चीज़ें हों और उन चीज़ों के साथ उतनी ही चीज़ें और

वَمِثْلَهُ مَعَهُ لَا فْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوْءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَالَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ○ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ○	भी हों, तो वे लोग क़ियामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब से छूट जाने के लिए (बिना सोचे) उन को देने लगें। और ख़ुदा की तरफ़ से उनको वह मामला पेश आएगा जिसका उनको गुमान भी न था। (47) और (उस वक़्त) उनको तमाम बुरे आमाल ज़ाहिर हो जाएँगे और जिस (अ़ज़ाब) के साथ वे हंसी-मज़ाक़ किया करते थे, वह उनको आ घेरेगा। (48)

Maktab E Ashraf

कायनात का पैदा करने वाला अल्लाह है

मुश्रिक लोगों को तौहीद (अल्लाह के अकेला माबूद मानने) से जो नफ़रत है और शिर्क से जो मुहब्बत है उसे बयान फ़रमाकर अपने नबी सल्ल. से अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि आप तो सिर्फ़ एक अल्लाह को ही पुकारिये, जो आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ है और उसने इन्हें पैदा किया है, जबकि ये बिल्कुल नापैद (यानी मौजूद न) थे, और इनका कोई नमूना भी न था। वह ज़ाहिर व बातिन खुले-छुपे का जानने वाला है। ये लोग जो-जो झगड़े और विवाद अपने आपस में करते थे सब का फ़ैसला उस दिन होगा जबकि ये क़ब्रों से निकलेंगे और मैदाने हश्र में आयेंगे। हज़रत अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान रह. ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से दरियाफ़्त फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्ल. तहज्जुद की नमाज़ को किस दुआ़ से शुरू करते थे? आपने फ़रमाया- इस दुआ़ से शुरू फ़रमाते थे:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرِيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ. اِهْدِنِيْ لِمَا اخْتُلِفَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِكَ تَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

यानी ऐ अल्लाह! ऐ जिब्राईल मीकाईल और इस्राफ़ील के रब! ऐ आसमानों व ज़मीन को बिना नमूने के पैदा करने वाले! ऐ हाज़िर व ग़ायब के जानने वाले! तू ही अपने बन्दों के इख़्तिलाफ़ात (झगड़ों और विवादों) का फ़ैसला करने वाला है, जिस-जिस चीज़ में इख़्तिलाफ़ किया गया है। तू मुझे उन सब में अपने फ़ज़्ल व करम से हक़ की राह दिखा, तू जिसे चाहे सीधी राह की रहनुमाई करता है। (मुस्लिम शरीफ़)

नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो बन्दा इस दुआ़ को पढ़े अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन अपने फ़रिश्तों से फ़रमायेगा कि मेरे इस बन्दे ने मुझसे अ़हद लिया है उस अ़हद को पूरा करो। चुनाँचे उसे जन्नत में पहुँचा दिया जायेगा। वह दुआ़ यह है:

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اِنِّيْ اَعْهَدُ اِلَيْكَ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا اِنِّيْ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ. فَاِنَّكَ اِنْ تَكِلْنِيْ اِلٰى تُقَرِّبْنِيْ

Maktab E Ashraf

مِنَ الشَّرِّ وَتُبَاعِدُنِىْ مِنَ الْخَيْرِ وَاِنِّىْ لَآ اَثِقُ اِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاجْعَلْ لِّىْ عِنْدَكَ عَهْدًا تُوَفِّيْنِيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ.

यानी ऐ अल्लाह! ऐ आसमान व ज़मीन को बिना नमूने के पैदा करने वाले! ऐ ग़ायब व हाज़िर के जानने वाले! मैं इस दुनिया में तुझसे अ़हद करता हूँ। मेरी गवाही है कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं। और मेरी यह भी शहादत है कि मुहम्मद (सल्ल.) तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं, तू अगर मुझे मेरी ही तरफ़ सौंप देगा तो मैं बुराई से क़रीब और भलाई से दूर हो जाऊँगा। ख़ुदाया! मुझे सिर्फ़ तेरी रहमत ही का सहारा और भरोसा है, पस तू मुझसे अ़हद कर, जिसे तू क़ियामत के दिन पूरा करे, यक़ीनन तू अ़हद को तोड़ने वाला नहीं।

इस हदीस के रावी सुहैल रह. फ़रमाते हैं कि मैंने क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रहमान से जब कहा कि औ़न इस तरह यह हदीस बयान करते हैं तो आपने फ़रमाया- सुब्हानल्लाह! हमारी तो पर्दा नशीन बच्चियों को भी यह हदीस याद है। (मुस्नद अहमद)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. ने एक काग़ज़ निकाला और फ़रमाया कि यह दुआ़ हमें रसूलुल्लाह सल्ल. ने सिखाई है:

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ وَّاِلٰهُ كُلِّ شَىْءٍ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ وَشِرْكِهٖ وَاَعُوْذُبِكَ اَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِىْ اِثْمًا اَوْاَجُرَّهٗ اِلٰى مُسْلِمٍ.

यानी ऐ अल्लाह! ऐ आसमान व ज़मीन को बिना किसी नमूने के पैदा करने वाले! छुपी-खुली के जानने वाले! तू हर चीज़ का माबूद है। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं, और मुहम्मद (सल्ल.) तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं, और फ़रिश्ते भी यही गवाही देते हैं। मैं शैतान और उसके शिर्क से तेरी पनाह में आता हूँ, मैं तुझसे पनाह तलब करता हूँ कि मैं अपनी जान पर कोई गुनाह करूँ या किसी और मुसलमान की तरफ़ किसी गुनाह को ले जाऊँ।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस दुआ़ को हुज़ूर सल्ल. ने लिखवाई है, मैंने देखा तो उसमें लिखा हुआ था कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! मैं सुबह व शाम क्या पढ़ूँ? आप सल्ल. ने फ़रमाया यह पढ़ोः

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ وَّمَلِيْكَهٗ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِىْ وَشَرِّ الشَّيْطٰنِ وَشِرْكِهٖ اَوْ اَقْتَرِفُ عَلٰى نَفْسِىْ سُوْٓءً اَوْاَجُرَّهٗ اِلٰى مُسْلِمٍ. (ترمذی وغیرہ)

यानी ऐ अल्लाह! ऐ आसमान व ज़मीन को बिना किसी नमूने के पैदा करने वाले! छुपी-खुली के जानने वाले! तू हर चीज़ का माबूद और मालिक है। मैं अपने नफ़्स और शैतान की बुराई और उसके शिर्क से तेरी पनाह में आता हूँ। मैं तुझसे पनाह तलब करता हूँ कि मैं अपनी जान पर कोई गुनाह करूँ या किसी और मुसलमान की तरफ़ किसी गुनाह को ले जाऊँ।

मुस्नद अहमद की हदीस में है, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुझे इस दुआ़ के पढ़ने

Maktab E Ashraf

का अल्लाह के रसूल सल्ल. ने सुबह व शाम और सोते वक़्त हुक्म दिया है।

दूसरी आयत में ज़ालिमों से मुराद मुश्रिक लोग हैं, फ़रमाता है कि अगर उनके पास रू-ए-ज़मीन के ख़ज़ाने और इतने ही और हों तो भी ये क़ियामत के दिन बदतरीन अ़ज़ाब के बदले उन्हें अपने फ़िदये में और अपनी जान के बदले में देने के लिये तैयार हो जायेंगे लेकिन उस दिन कोई फ़िदया और बदला क़बूल न किया जायेगा चाहे ज़मीन भर सोना दें। जैसा कि एक दूसरी आयत में बयान फ़रमा दिया है कि आज ख़ुदा के वे अ़ज़ाब उनके सामन आयेंगे कि कभी इन्हें उनका ख़्याल भी न गुज़रा था। जो-जो हराम कारियाँ बदकारियाँ गुनाह और बुराईयाँ इन्होंने दुनिया में की थीं उन सब की सज़ा अपने आगे मौजूद पायेंगे। दुनिया में जिस सज़ा का ज़िक्र सुनकर वे मज़ाक़ उड़ाया करते थे आज वह सज़ा उन्हें चारों तरफ़ से घेर लेगी।

فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۡ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ○ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ○ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ○ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ○ ع	फिर जिस वक़्त (उस मुश्रिक) आदमी को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमको पुकारता है। फिर जब हम उसको अपनी तरफ़ से कोई नेमत अ़ता फ़रमा देते हैं तो कहता है कि यह तो मुझको (मेरी) तदबीर से मिली है, बल्कि वह एक आज़माईश है, लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं। (49) यह बात (बाज़) उन लोगों ने भी कही थी जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं (जैसे क़ारून ने कहा था), सो उनकी कार्रवाई उनके कुछ काम न आई, (50) फिर उनके तमाम बुरे आमाल उन पर आ पड़े (और सज़ा पाने वाले हुए)। और उनमें भी जो ज़ालिम हैं उन पर भी उनके बुरे आमाल अभी पड़ने वाले हैं, और ये (ख़ुदा तआ़ला को) हरा नहीं सकते। (51) क्या उन लोगों को (हालात में ग़ौर करने से) यह मालूम नहीं हुआ कि अल्लाह ही जिसको चाहता है ज़्यादा रिज़्क़ देता है, और वही (जिसके लिए चाहता है) तंगी भी कर देता है, इस (ज़्यादती और तंगी करने) में ईमान वालों के वास्ते निशानियाँ हैं। (52)

ع ٥ ١١ ٢

अपने आपको पहचानो नफ़्स के धोखे में न आओ

अल्लाह तआ़ला इनसान की हालत बयान फ़रमाता है कि मुश्किल के वक़्त तो वह आह-व-ज़ारी (रोना व फ़रियाद करना) शुरू कर देता है, ख़ुदा की तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जह और राग़िब हो जाता है, लेकिन जहाँ मुश्किल दूर हो गई और जैसे ही राहत व नेमत हासिल हुई वैसे ही यह नाफ़रमान व घमंडी बना और अकड़ता हुआ कहने लगा कि यह तो अल्लाह के ज़िम्मे मेरा हक़ था, मैं ख़ुदा के नज़दीक इसका मुस्तहिक़

था ही, मेरी अपनी अक़्लमन्दी और बेहतरीन रणनीति की वजह से इस नेमत को मैंने हासिल की है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि बात यूँ नहीं, बल्कि दर असल यह हमारी आज़माईश है अगरचे हमें अज़ल (पहले दिन) से इल्म हासिल है लेकिन फिर भी हम इसे ज़हूर में लाना चाहते और दिखाना चाहते हैं कि इस नेमत का शुक्रिया अदा करता है या नाशुक्री? लेकिन ये लोग बेइल्म हैं। दावा करते हैं, मुँह से बात निकाल देते हैं लेकिन असलियत से बेख़बर हैं। यही दावा और यही क़ौल इनसे पहले लोगों ने भी कहा, लेकिन उनका क़ौल सही साबित न हुआ और उन नेमतों ने और किसी चीज़ ने और उनके आमाल ने उन्हें कोई नफ़ा नहीं दिया। जिस तरह उन पर वबाल टूट पड़ा उसी तरह इन पर भी एक दिन इनके बुरे आमाल का वबाल आ पड़ेगा, और ये ख़ुदा को आ़जिज़ नहीं कर सकते, न थका सकते हैं और न हरा सकते हैं।

क़ारून से उसकी क़ौम ने कहा था कि इस क़द्र अकड़ नहीं, अल्लाह तआ़ला ख़ुद-पसन्दों (घमंड करने वालों) को महबूब नहीं रखता। अल्लाह तआ़ला की दी हुई नेमतों को ख़र्च करके आख़िरत की तैयारी कर और वहाँ का सामान मुहैया कर। इस दुनिया में भी फ़ायदा उठाता रह और जैसे ख़ुदा तआ़ला ने तेरे साथ सुलूक किया है तू भी लोगों के साथ एहसान करता रह। ज़मीन में फ़सादी (ख़राबी और बिगाड़ पैदा करने वाला) मत बन, अल्लाह तआ़ला मुफ़सिदों से मुहब्बत नहीं करता। इस पर क़ारून ने जवाब दिया कि इन तमाम नेमतों और रुतबे व दौलत को मैंने अपनी दानाई (अक़्ल व समझ) और इल्म व हुनर से हासिल किया है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- क्या उसे यह नहीं मालूम कि उससे पहले उससे ज़्यादा क़ुव्वत और उससे ज़्यादा जमा-जत्थे (यानी लाव-लशकरों) वालों को मैंने हलाक व बरबाद कर दिया है। मुजरिम अपने गुनाहों के बारे में पूछे न जायेंगे। ग़र्ज़ यह कि माल व औलाद पर फूलकर ख़ुदा को भूल जाना यह कुफ़्र का चलन और तरीक़ा है, काफ़िरों का यह क़ौल था कि हम माल व औलाद में ज़्यादा हैं, हमें अ़ज़ाब होगा ही नहीं। क्या उन्हें अब तक यह मालूम नहीं कि रिज़्क़ का मालिक अल्लाह तआ़ला है, जिसके लिये चाहे कुशादगी करे और जिस पर चाहे तंगी करे। इसमें ईमान वालों के लिये तरह-तरह की इबरतें (सीख व नसीहत) और दलीलें (निशानियाँ) हैं।

आप कह दीजिए कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने (कुफ़्र व शिर्क करके) अपने ऊपर ज़्यादतियाँ की हैं, कि तुम ख़ुदा की रहमत से नाउम्मीद मत होओ, यक़ीनन ख़ुदा तआ़ला तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा। वाक़ई वह बड़ा बख़्शने वाला और बड़ी रहमत वाला है। (53) और तुम अपने रब की तरफ़ रुजू करो और (इस्लाम क़बूल करने में) उसकी फ़रमाँबरदारी करो, इससे पहले कि तुम पर (अल्लाह का) अ़ज़ाब आ जाये (और) उस वक़्त किसी की तरफ़ से तुम्हारी कोई मदद न की जाए (54) और तुम (को चाहिए कि) अपने रब के पास से आए हुए अच्छे-अच्छे हुक्मों पर चलो, इससे पहले कि तुमपर अचानक	قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ

الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

अ़ज़ाब आ पड़े और तुमको (उसका) ख़्याल भी न हो। (55) कभी (कल क़ियामत को) कोई शख़्स कहने लगे कि अफ़सोस मेरी उस कोताही पर जो मैंने ख़ुदा तआ़ला की जनाब में की, और मैं तो (ख़ुदा के अहकाम पर) हंसता ही रहा। (56) या कोई यह कहने लगे कि अगर अल्लाह तआ़ला (दुनिया में) मुझको हिदायत करता तो मैं भी परहेज़गारों में से होता। (57) या कोई अ़ज़ाब को देखकर यूँ कहने लगे कि काश! मेरा (दुनिया में) फिर जाना हो जाए, फिर मैं नेक बन्दों में हो जाऊँ। (58) हाँ! बेशक तेरे पास मेरी आयतें पहुँची थीं, सो तूने उनको झुठलाया और (झुठलाना किसी शुब्हे की वजह से न था, बल्कि) तूने तकब्बुर किया और काफ़िरों में (हमेशा) शामिल रहा। (59)

अल्लाह की रहमत व मग़फ़िरत के दरवाज़े खुले हैं

इस आयत में तमाम नाफ़रमानों को चाहे वे मुश्रिक व काफ़िर भी हों तौबा की दावत दी गई है और बतलाया गया है कि ख़ुदा की ज़ात ग़फ़ूर व रहीम (माफ़ करने वाली और रहम करने वाली) है, वह हर तौबा करने वाले की तौबा क़बूल करता है, हर झुकने वाले की तरफ़ मुतवज्जह होता है। तौबा करने वाले के पहले गुनाह भी माफ़ फ़रमा देता है चाहे वे कैसे ही हों, कितने ही हों, कभी के हों। इस आयत को बग़ैर तौबा के गुनाहों की बख़्शिश के मायने में लेना सही नहीं, इसलिये कि शिर्क बिना तौबा के बख़्शा नहीं जाता। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि मुश्रिकों में से कुछ लोग जो क़त्ल व ज़िना के भी मुजरिम थे, आप सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि आपकी बातें और आपका दीन हर लिहाज़ से हमें अच्छा और सच्चा मालूम होता है लेकिन ये बड़े-बड़े गुनाह जो हमसे सर्ज़द हो चुके हैं इनका कफ़्फ़ारा क्या होगा? इस पर यह आयत उतरी और साथ ही यह आयत भीः

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ......... الخ

और जो कि अल्लाह तआ़ला के साथ किसी और माबूद की पूजा और इबादत नहीं करते, और जिस शख़्स (के क़त्ल करने) को अल्लाह तआ़ला ने हराम फ़रमाया है उसको क़त्ल नहीं करते, हाँ मगर हक़ पर। और वे ज़िना नहीं करते। और जो शख़्स ऐसे काम करेगा तो उसको सज़ा से साबक़ा पड़ेगा। (सूरः फ़ुरक़ान -68)

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मुझे सारी दुनिया और इसकी हर चीज़ के मिलने से इतनी ख़ुशी न होती जितनी इस आयत के नाज़िल होने से हुई है। एक शख़्स ने सवाल किया कि जिसने शिर्क किया हो? आपने थोड़ी देर की ख़ामोशी के बाद फ़रमाया ख़बरदार हो! जिसने शिर्क भी किया

Maktaba E Ashraf

हो, तीन मर्तबा आप सल्ल. ने यही फ़रमाया। मुस्नद की एक और हदीस में है कि एक बूढ़ा शख़्स लकड़ी का सहारा लेते हुए नबी करीम सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मेरे छोटे-मोटे गुनाह बहुत सारे हैं, क्या मुझे भी बख़्शा जायेगा? आप सल्ल. ने फ़रमाया क्या तू ख़ुदा की तौहीद (अल्लाह के एक होने) की गवाही नहीं देता? उसने कहा हाँ और आपकी रिसालत की गवाही भी देता हूँ। आप सल्ल. ने फ़रमाया तेरे छोटे-मोटे गुनाह माफ़ हैं। अबू दाऊद तिर्मिज़ी वग़ैरह में है, हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना आप इस आयत की तिलावत इसी तरह फ़रमा रहे थे 'इन्नहू अ़मलुन् ग़ैरु सालिहिन' और इस आयत को इस तरह पढ़ते हुए सुनाः

يَاعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَاتَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُالذُّنُوْبَ جَمِيْعًاوَّ لَايُبَالِيْ اِنَّهٗ هُوَالْغَفُوْرُالرَّحِيْمُ.

पस इन सब हदीसों से साबित हो रहा है कि तौबा से गुनाह माफ़ हो जाते हैं। बन्दे को रहमते रब से मायूस न होना चाहिये चाहे गुनाह कितने ही बड़े और कितने ही ज़्यादा हों। तौबा और रहमत का दरवाज़ा हमेशा खुला रहता है और वह बहुत ही बड़ा और विस्तृत है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद हैः

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَيَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ.

क्या लोग नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल फ़रमाता है। और फ़रमायाः

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءً ااَوْيَظْلِمْ نَفْسَهٗ....... الخ

जो बुरा काम करे या अपनी जान पर ज़ुल्म कर बैठे, फिर अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़फ़ार करे (यानी अल्लाह से उसकी माफ़ी माँगे) वह अल्लाह को बख़्शने वाला और मेहरबान पायेगा। मुनाफ़िक़ों की सज़ा जो जहन्नम के सबसे नीचे तबक़े (दर्जे) में होगी उसे बयान फ़रमाकर भी फ़रमायाः

اِلَّاالَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا.......... الخ

यानी इससे वे लोग अलग हैं जो तौबा करें और इस्लाह (सुधार) कर लें।

ईसाईयों में के मुश्रिक लोगों के इस शिर्क का कि वे ख़ुदा को तीन में का तीसरा मानते हैं, ज़िक्र करके इन सज़ाओं के बयान से पहले फ़रमा दियाः

اِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّايَقُوْلُوْنَ.

कि अगर ये अपने क़ौल से बाज़ न आये।

फिर अ़ज़मत व शान वाले अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- ये क्यों ख़ुदा से तौबा नहीं करते? और क्यों उससे इस्तिग़फ़ार (माफ़ी तलब) नहीं करते? वह तो बड़ा ग़फ़ूरुर्रहीम है। उन लोगों का जिन्होंने ख़न्दक़ें खोदकर मुसलमानों को आग में डाला था ज़िक्र करते हुए यही फ़रमाया कि जो मुसलमान मर्दों औरतों को तकलीफ़ पहुँचाकर फिर भी तौबा न करें तो उनके लिये जहन्नम और आग का अ़ज़ाब है।

इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा के करम व एहसान को देखो कि अपने दोस्तों के क़ातिलों को भी तौबा और मग़फ़िरत की तरफ़ बुला रहा है। इस मज़मून की और भी बहुत सी आयतें हैं। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की हदीस में उस शख़्स का वाक़िआ भी मज़कूर है जिसने निन्नानवे आदमियों को क़त्ल किया था, फिर बनी इस्राईल के एक आ़बिद से पूछा कि क्या मेरे लिये भी तौबा है? उसने इनकार किया।

Maktab_E_Ashraf

इसने उसे भी क़त्ल कर दिया। फिर एक आ़लिम से पूछा, उसने जवाब दिया कि तुझमें और तौबा में कोई रोक नहीं और हुक्म दिया कि ईमान वालों की बस्ती में चला जाये। चुनाँचे उस गाँव की तरफ़ रवाना हुआ लेकिन रास्ते में ही मौत आ गई। रहमत और अ़ज़ाब के फ़रिश्तों के बीच आपस में झगड़ा हुआ, अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन के नापने का हुक्म दिया तो एक बालिश्त भर नेक लोगों की बस्ती, जिसकी तरफ़ वह हिजरत करके जा रहा था, क़रीब निकली और यह उन्हीं के साथ मिला दिया गया, और रहमत के फ़रिश्ते उसकी रूह को ले गये। यह भी मज़कूर है कि वह मौत के वक़्त सीने के बल उस तरफ़ अपने को घसीटता हुआ चला था, और यह भी कि अल्लाह ने नेक लोगों की बस्ती को क़रीब हो जाने का और बुरे लोगों की बस्ती को दूर हो जाने का हुक्म दिया था। यह है ख़ुलासा इस हदीस का और पूरी हदीस अपनी जगह बयान हो चुकी है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने तमाम बन्दों को अपनी मग़फ़िरत की तरफ़ बुलाया है, उन्हें भी जो हज़रत मसीह को ख़ुदा कहते थे, उन्हें भी जो आपको ख़ुदा का बेटा कहते थे, उन्हें भी जो हज़रत उज़ैर को ख़ुदा का बेटा बतलाते थे, उन्हें भी जो ख़ुदा को फ़क़ीर कहते थे, उन्हें भी जो ख़ुदा के हाथों को बन्द बतलाते थे और उन्हें भी जो अल्लाह तआ़ला को तीन में का तीसरा कहते थे। अल्लाह तआ़ला सब से फ़रमाता है कि ये क्यों ख़ुदा की तरफ़ नहीं झुकते और क्यों उससे अपने गुनाहों की माफ़ी नहीं चाहते? अल्लाह तआ़ला तो बड़ी बख़्शिश वाला और बहुत ही रहम व करम वाला है।

फिर तौबा की दावत अल्लाह तआ़ला ने उसे दी जिसका क़ौल इन सबसे बढ़-चढ़कर था, जिसने दावा किया था कि मैं तुम्हारा बुलन्द और आला रुतबे वाला रब हूँ। जो कहता था कि मैं नहीं जानता कि तुम्हारा कोई माबूद मेरे सिवा हो। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इसके बाद भी जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के बन्दों को तौबा से मायूस करे वह अल्लाह तआ़ला की किताब का मुन्किर है। लेकिन इससे समझ लो कि जब तक अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे पर अपनी मेहरबानी से रुजू न हो उसे तौबा नसीब नहीं होती।

फ़ायदाः तबरानी में हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है कि किताबुल्लाह क़ुरआने करीम में सबसे ज़्यादा अ़ज़मत वाली (सम्मानित) आयत आयतुल-कुर्सी है और ख़ैर व शर की सबसे ज़्यादा जामे आयत यह हैः

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ....... الخ

कि अल्लाह तआ़ला अ़दल व एहसान का हुक्म फ़रमाता है............ (सूरः नहल आयत 90)
और सारे क़ुरआन में सबसे ज़्यादा ख़ुशी की आयत सूरः ज़ुमर की यह आयत हैः

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا......... الخ

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) और सबसे ज़्यादा ढारस देने वाली यह आयत हैः

مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ.

यानी अल्लाह तआ़ला से डरते रहने वालों की निजात की शक्ल ख़ुद ख़ुदा कर देता है और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देता है जहाँ का उसे ख़्याल व गुमान भी न हो।

हज़रत मसरूक़ रह. ने यह सुनकर फ़रमाया कि बेशक आप सच्चे हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद

Maktab E Ashraf

रज़ि. जा रहे थे कि आपने एक वाईज़ (बयान करने वाले) को देखा जो लोगों को नसीहतें कर रहा था। आपने फ़रमाया तू क्यों लोगों को मायूस कर रहा है? फिर इसी आयत की तिलावत की। (इब्ने अबी हातिम)

उन हदीसों का बयान जिनमें नाउम्मीदी और मायूसी की मनाही है

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर तुम ख़तायें करते-करते ज़मीन व आसमान को भर दो फिर अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़फ़ार करो तो यक़ीनन वह तुम्हें बख़्श देगा। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की जान है, अगर तुम ख़तायें करो ही नहीं तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें फ़ना करके उन लोगों को लायेगा जो ख़ता करके इस्तिग़फ़ार करेंगे और फिर ख़ुदा तआ़ला उन्हें बख़्शेगा। (मुस्नद इमाम अहमद)

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि. ने अपने इन्तिक़ाल के वक़्त फ़रमाया कि एक हदीस मैंने तुमसे आज तक बयान नहीं की थी, अब बयान कर देता हूँ। मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है, आपने फ़रमाया कि अगर तुम गुनाह ही न करते तो अल्लाह तआ़ला ऐसी क़ौम को पैदा करता जो गुनाह करती फिर ख़ुदा तआ़ला उन्हें बख़्शता। (सही मुस्लिम वग़ैरह)

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि गुनाह का कफ़्फ़ारा नदामत व शर्मिन्दगी है। और आप सल्ल. ने फ़रमाया अगर तुम गुनाह न करते तो अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को लाता जो गुनाह करें फिर वह उन्हें बख़्शे। (मुस्नद अहमद)

नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला उस बन्दे को पसन्द फ़रमाता है जो कामिल यक़ीन रखने वाला और गुनाहों से तौबा करने वाला हो। (मुस्नद अहमद)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उबैदा बिन उमैर रह. फ़रमाते हैं कि इब्लीस मलऊन ने कहा- ऐ मेरे रब! तूने मुझे आदम की वजह से जन्नत से निकाला है और मैं उस पर इसके बग़ैर ग़ालिब नहीं आ सकता कि तू मुझे उस पर ग़लबा दे। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया तू उन पर मुसल्लत है। उसने कहा ख़ुदाया कुछ और भी मुझे ज़्यादती अ़ता फ़रमा। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया जा इनसानों में जितनी औलाद पैदा होगी उतनी तेरे यहाँ भी होगी। उसने फिर इल्तिजा की कि बारी तआ़ला कुछ और भी मुझे ज़्यादती अ़ता फ़रमा। परवर्दिगारे आ़लम ने फ़रमाया इनसान के सीने में तेरे लिये ठिकाना बना दूँगा, और तुम उनके जिस्म में ख़ून की जगह फिरोगे। उसने फिर कहा कुछ और भी मुझे ज़्यादती अ़ता फ़रमा, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया जा तू उन पर सवार और प्यादे दौड़ा और उनके माल व औलाद में अपना साझा कर और उन्हें उमंगें दिला, अगरचे वास्तव में तेरा उंमगें दिलाना और वायदे करना सरासर धोखा है।

उस वक़्त हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार! तूने उसे मुझ पर मुसल्लत कर दिया, अब मैं उससे तेरी मदद के बग़ैर बच नहीं सकता। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया सुनो तुम्हारे यहाँ जो औलाद होगी उसके साथ मैं एक मुहाफ़िज़ (हिफ़ाज़त करने वाला) मुक़र्रर कर दूँगा जो शैतान के पंजे से उसे महफ़ूज़ रखेगा। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने और ज़्यादती तलब की तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया एक नेकी को दस गुना करके दूँगा, बल्कि दस से भी ज़्यादा, और बुराई उसी के बराबर रहेगी या माफ़ कर दूँगा। आपने फिर भी दुआ़ जारी रखी रब्बुल-इ़ज़्ज़त ने फ़रमाया- तौबा का दरवाज़ा तुम्हारे लिये उस वक़्त

तक खुला रहेगा जब तक कि रूह जिस्म में है। हज़रत आदम ने दुआ की कि खुदाया मुझे और ज़्यादती अ़ता फ़रमा, अब अल्लाह तआ़ला ने यही आयत पढ़कर सुनाई कि मेरे गुनाहगार बन्दों से कह दो कि वे मेरी रहमत से मायूस न हों। (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हदीस में है कि जो लोग अपनी कमज़ोरी की वजह से काफ़िरों की तकलीफ़ें बरदाश्त न कर सकने की वजह से अपने दीन में फ़ितने (आज़माईश) में पड़ गये थे हम उनके बारे में आपस में कहते थे कि अल्लाह तआ़ला उनकी कोई नेकी और तौबा क़बूल न फ़रमायेगा। उन लोगों ने खुदा को पहचान कर फिर कुफ़्र को ले लिया और काफ़िरों की सख़्ती बरदाश्त न की। जब हुज़ूर सल्ल. मदीने में आ गये तो अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों के बारे में हमारे इस क़ौल की तरदीद कर दी और फ़रमायाः

يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ............لَا تَشْعُرُوْنَ.

(यानी इसी सूरत की आयत 53-55, जिनकी यह तफ़सीर बयान हो रही है)

हज़रत उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने अपने हाथ से इन आयतों को लिखा और हिशाम बिन आ़स के पास भेज दीं। हज़रत हिशाम रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं उस वक़्त 'ज़ी तुवा' (एक स्थान) में था, मैं इन्हें पढ़ रहा था और बार-बार पढ़ता जाता था और ख़ूब सोच-विचार कर रहा था लेकिन असली मतलब तक ज़ेहन नहीं पहुँच रहा था, आख़िर मैंने दुआ़ की कि परवर्दिगार! इन आयतों का सही मतलब और इनके मेरी तरफ़ भेजे जाने का सही मक़सद मुझ पर वाज़ेह कर (यानी खोल) दे। चुनाँचे मेरे दिल में खुदा की तरफ़ से डाला गया कि आयतों से मुराद हम ही हैं, यह हमारे बारे में है, और हमें जो ख़्याल था कि अब हमारी तौबा क़बूल नहीं हो सकती इसी बारे में नाज़िल हुई हैं। उसी वक़्त मैं वापस लौटा, अपना ऊँट लिया, उस पर सवार होकर सीधा मदीने में आकर रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हो गया। (सीरत इब्ने इस्हाक़)

बन्दों की मायूसी को तोड़कर उन्हें बख़्शिश की उम्मीद दिलाकर फिर हुक्म दिया और रग़बत दिलाई कि वे तौबा और नेक आमाल की तरफ़ बढ़ें और जल्दी करें। ऐसा न हो कि खुदा तआ़ला का अ़ज़ाब नाज़िल हो जाये। फिर उस वक़्त किसी की मदद कुछ काम नहीं आती। और उन्हें चाहिये कि अ़ज़मत वाले क़ुरआने करीम की ताबेदारी और मातहती में मशग़ूल हो जायें, इससे पहले कि अचानक अ़ज़ाब आ जायें और ये बेख़बरी में ही हों। उस वक़्त क़ियामत के दिन बिना तौबा के मरने वाले और खुदा की इबादत में कमी करने वाले बड़ी हसरत और अफ़सोस करेंगे और आरज़ू करेंगे कि काश हम ख़ुलूस के साथ अल्लाह के अहकाम की तामील करते कि हम तो बेयक़ीन रहे, खुदा की बातों की तस्दीक़ ही न की, बल्कि हंसी मज़ाक़ ही समझते रहे। और ये कहेंगे कि अगर हम भी हिदायत पा लेते तो यक़ीनन रब की नाफ़रमानियों से दुनिया में और खुदा के अ़ज़ाब से आख़िरत में बच जाते, और अ़ज़ाब को देखकर अफ़सोस करते हुए कहेंगे कि अगर अब दोबारा दुनिया की तरफ़ जाना हो जाये तो दिल खोलकर नेकियाँ कर लें।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि बन्दे क्या अ़मल करेंगे और क्या कुछ वे कहेंगे उनके अ़मल और उनके क़ौल से पहले ही अल्लाह तआ़ला ने इसकी ख़बर दे दी और वास्तव में उससे ज़्यादा कौन बाख़बर हो सकता है? न उससे ज़्यादा सच्ची ख़बर कोई दे सकता है। बदकारों के ये तीन क़ौल बयान फ़रमाये और दूसरी जगह यह ख़बर दे दी कि अगर ये वापस दुनिया में भेजे जायें तो भी हिदायत इख़्तियार न करेंगे, बल्कि जिन कामों से रोके गये हैं उन्हीं को करने लगेंगे और यहाँ जो कुछ कहते हैं वह सब झूठ

निकलेगा। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हर जहन्नमी को उसकी जन्नत की जगह दिखाई जाती है, उस वक़्त वह कहता है कि काश ख़ुदा मुझे हिदायत देता, यह इसलिये कि उसे हसरत व अफ़सोस हो। और इसी तरह हर जन्नती को उसकी जहन्नम की जगह दिखाई जाती है, उस वक़्त वह कहता है कि अगर मुझे अल्लाह तआ़ला हिदायत न देता तो मैं जन्नत में न आ सकता, यह इसलिये कि वह शुक्र और एहसान के मानने में और बढ़ जाये।

जब गुनाहगार लोग दुनिया की तरफ़ लौटने की आरज़ू करेंगे और ख़ुदा की आयतों की तस्दीक़ न करने की हसरत करेंगे और ख़ुदा के रसूलों को न मानने पर कुढ़ने लगेंगे तो अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला फ़रमायेगा कि अब नदामत (शर्मिन्दगी) बेफ़ायदा है, पछताना बेसूद है, दुनिया में ही मैं तो अपनी आयतें उतार चुका था, अपनी दलीलें क़ायम कर चुका था, लेकिन तू उन्हें झुठलाता रहा, उनके मानने से तकब्बुर करता रहा और उनका मुन्किर रहा, कुफ़्र इख़्तियार किया। अब कुछ नहीं हो सकता।

और आप क़ियामत के दिन उन लोगों के चेहरे स्याह देखेंगे जिन्होंने ख़ुदा पर झूठ बोला था, क्या उन तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम नहीं है? (60) और जो लोग (शिर्क और कुफ़्र से) बचते थे, अल्लाह तआ़ला उन लोगों को कामयाबी के साथ (जहन्नम से) निजात देगा। उनको (ज़रा भी) तकलीफ़ न पहुँचेगी और न वे ग़मगीन होंगे। (क्योंकि जन्नत में ग़म नहीं)। (61)	وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ٥ وَيُنَجِّى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۡ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْۗءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ٥

काले चेहरों वाले

क़ियामत के दिन दो तरह के लोग होंगे, काले मुँह वाले और नूरानी चेहरे वाले। फ़िर्क़ा बन्दी और इख़्तिलाफ़ वालों के चेहरे तो सियाह पड़ जायेंगे और अहले सुन्नत वल-जमाअ़त की ख़ूबसूरत शक्लें नूरानी हो जायेंगी। अल्लाह तआ़ला के शरीक ठहराने वालों को, उसकी औलाद मुक़र्रर करने वालों को तू देखेगा कि उनके झूठ और बोहतान की वजह से उनके चेहरे काले हो जायेंगे और हक़ को क़बूल न करने और तकब्बुर व ख़ुदनुमाई करने के वबाल में ये जहन्नम में झोंक दिये जायेंगे। जहाँ बड़ी ज़िल्लत के साथ बहुत सख़्त और बदतरीन सज़ायें भुगतेंगे। इब्ने अबी हातिम की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि तकब्बुर करने वालों का हश्र क़ियामत के दिन चींवटियों की सूरत में होगा। हर छोटी से छोटी मख़्लूक़ भी उन्हें रौंदती हुई जायेगी यहाँ तक कि जहन्नम के जेलख़ाने में बन्द कर दिये जायेंगे, जिसका नाम बोलिस है, जिसकी आग बहुत तेज़ और निहायत ही मुसीबत वाली है। जहन्नमियों के लहू, पीप और गन्दगी उन्हें पिलाई जायेगी। हाँ अल्लाह तआ़ला का डर रखने वाले अपनी कामयाबी और नेक-बख़्ती की वजह से इन अ़ज़ाबों और इस ज़िल्लत व मार-पीट से बिल्कुल बचे हुए होंगे, कोई बुराई उनके पास भी न पहुँचेगी। घबराहट और ग़म जो क़ियामत के दिन आ़म होगा वे उससे बेफ़िक्र होंगे। हर ग़म से बेग़म, हर डर से बेडर, हर सज़ा से बेसज़ा और हर दुख से बेदुख होंगे। किसी क़िस्म की डाँट झिड़की उन्हें न दी जायेगी। अमन व अमान के साथ राहत व

चैन के साथ ख़ुदा की तमाम नेमतें हासिल किये हुए होंगे।

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۙ وَّهُوَعَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ ع

अल्लाह ही पैदा करने वाला है हर चीज़ का, और वही हर चीज़ का निगहबान है। (62) (और) उसी के इख़्तियार में हैं आसमानों और ज़मीन की कुन्जियाँ। और जो लोग (इस पर भी) अल्लाह की आयतों को नहीं मानते वे बड़े घाटे में रहेंगे। (63)

आप (उनके जवाब में) कह दीजिए कि ऐ जाहिलो! क्या फिर भी तुम मुझसे अल्लाह के ग़ैर की इबादत करने की फ़रमाईश करते हो? (64) और आपकी तरफ़ भी और जो पैग़म्बर आपसे पहले हो गुज़रे हैं उनकी तरफ़ भी यह (बात) 'वही' में भेजी जा चुकी है कि ऐ आम मुख़ातब! अगर तू शिर्क करेगा तो तेरा किया कराया काम (सब) बरबाद हो जाएगा और तू घाटे में पड़ेगा। (तो ऐ मुख़ातब! कभी शिर्क मत करना) (65) बल्कि (हमेशा) अल्लाह ही की इबादत करना और (अल्लाह तआ़ला का) शुक्रगुज़ार रहना। (66)

एक बेवक़ूफ़ी भरी माँग

तमाम जानदार और बेजान चीज़ों का ख़ालिक़, मालिक, रब और तसर्रुफ़ करने वाला अल्लाह तआ़ला अकेला ही है। हर चीज़ उसकी मातहती और उसके क़ब्ज़े में और उसकी तदबीर (व्यवस्था) में है। सब का कारसाज़ और वकील वही है, तमाम कामों की बागडोर उसी के हाथ में है। ज़मीन व आसमान की कुन्जियाँ और इनके ख़ज़ानों का वही तन्हा मालिक है। तारीफ़ व प्रशंसा के क़ाबिल और हर चीज़ पर क़ादिर वही है। कुफ़्र व इनकार करने वाले बड़े ही घाटे और नुक़सान में हैं।

इमाम इब्ने अबी हातिम ने यहाँ एक हदीस ज़िक्र की है, अगरचे सनद के लिहाज़ से वह बहुत ही ग़रीब है, बल्कि उसके सही होने में भी कलाम है, लेकिन फिर भी हम उसे यहाँ ज़िक्र कर देते हैं। उसमें है कि हज़रत उस्मान रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्ल. से इस आयत का मतलब पूछा तो आपने फ़रमाया- ऐ उस्मान! तुमसे पहले किसी ने मुझसे इस आयत का मतलब मालूम नहीं किया। इसकी तफ़सीर में ये कलिमात हैं:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ. اَلْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَعَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही अस्तग़फ़िरुल्ला-ह व ला क़ुव्व-त इल्ला

Maktab E Ashraf

बिल्लाहि अल-अव्वलु वल-आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल-बातिनु बि-यदिहिल्-ख़ैरु युहयी व युमीतु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर।

ऐ उस्मान! जो शख़्स इसे सुबह को दस बार पढ़ ले तो अल्लाह तआ़ला उसे छह फ़ज़ाईल अ़ता फ़रमाता है- अव्वल तो वह शैतान और उसके लश्कर से बच जाता है। दूसरे उसे एक क़िन्तार (यह एक वज़न है) अज्र मिलता है। तीसरे उसका एक दर्जा जन्नत में बुलन्द होता है। चौथे उसका हूरे-ऐन से निकाह करा दिया जाता है। पाँचवे उसके पास बारह फ़रिश्ते आते हैं। छठे उसे इतना सवाब दिया जाता है जैसे किसी ने क़ुरआन, तौरात, इन्जील और ज़बूर पढ़ी। फिर साथ ही उसे एक क़बूल हुए हज और एक मक़बूल उमरे का सवाब मिलता है। और अगर उसी दिन उसका इन्तिक़ाल हो जाये तो शहादत का दर्जा मिलता है। यह हदीस बहुत ही ग़रीब है, इसमें बड़ी नकारत है। वल्लाहु आलम।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुश्रिकों ने आपसे कहा कि आओ तुम हमारे माबूदों की पूजा करो और हम तुम्हारे रब की पूजा करेंगे। इस पर यह आयत उतरी:

قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ.................... مِنَ الْخٰسِرِيْنَ.

(यानी यही आयतें जिनकी तफ़सीर बयान हो रही है) यही मज़मून इस आयत में भी है:

وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ.

ऊपर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का ज़िक्र है, फिर फ़रमाया कि अगर फ़र्ज़ करो ये अम्बिया भी शिर्क करेंगे तो इनके भी आमाल अकारत और ज़ाया हो जायेंगे। यहाँ भी फ़रमाया कि तेरी तरफ़ और तुझसे पहले तमाम अम्बिया की तरफ़ हमने यह 'वही' भेज दी है कि जो भी शिर्क करेगा उसके अ़मल ग़ारत और वह नुक़सान व घाटा उठाने वालों में होगा। पस तुझे चाहिये कि तू ख़ुलूस के साथ एक अल्लाह की इबादत में लगा रह जिसका कोई शरीक नहीं, और उसका शुक्रगुज़ार रह, तू भी और तेरे मानने वाले मुसलमान भी।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ۝	और (अफ़सोस है कि) उन लोगों ने ख़ुदा तआ़ला की कुछ अ़ज़मत न की जैसी अ़ज़्मत करनी चाहिए थी, हालाँकि (उसकी वह शान है कि) सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी क़ियामत के दिन, और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में, वह पाक और बरतर है उनके शिर्क से। (67)

यह सारी कायनात उसी की बनाई हुई है

मुश्रिकीन ने दर असल अल्लाह तआ़ला की क़द्र व बड़ाई जानी ही नहीं, इसी वजह से वे उसके साथ दूसरों को शरीक करने लगे। उससे बढ़कर इज़्ज़त वाला, उससे ज़्यादा बादशाहत वाला, उससे बढ़कर ग़लबे और क़ुदरत वाला कोई नहीं, न कोई उसका हमसर और बराबरी करने वाला है। यह आयत क़ुरैश के काफ़िरों के बारे में नाज़िल हुई है। उन्हें अगर क़द्र होती तो उसकी बातों को ग़लत न जानते। जो शख़्स ख़ुदा तआ़ला को हर चीज़ पर क़ादिर माने वह है जिसने ख़ुदा की अ़ज़्मत की, और जिसका अ़क़ीदा यह न

हो वह ख़ुदा तआ़ला की क़द्र करने वाला नहीं। इस आयत के बारे में बहुत सी हदीसें आई हैं।

फ़ायदाः इस जैसी आयतों के बारे में पहले उलेमा और बुज़ुर्गों का मस्लक (विचार और राय) यही रहा है कि जिस तरह और जिन लफ़्ज़ों में यह आई हैं उसी तरह उन्हीं लफ़्ज़ों के साथ इन्हें मान लेना और इन पर ईमान रखना चाहिये। इनकी कैफ़ियत टटोलना, इनमें ज़्यादा अ़क़्ली घोड़े दौड़ाना या मायने और मतलब में किसी तरह का हेर-फेर करना हरगिज़ न हो। सही बुख़ारी शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर में है कि यहूदियों का एक बड़ा आ़लिम रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आया और कहने लगा- हम यह लिखा हुआ पाते हैं कि अल्लाह तआ़ला सातों आसमानों को एक उंगली पर रख लेगा, और सब ज़मीनों को एक उंगली पर रख लेगा, और दरख़्तों को एक उंगली पर रख लेगा, और पानी और मिट्टी को एक उंगली पर और बाक़ी तमाम मख़्लूक़ात को एक उंगली पर रख लेगा। फिर फ़रमायेगा कि मैं ही सब का मालिक और सच्चा बादशाह हूँ। हुज़ूर सल्ल. इस बात के सच्चा होने पर हंस दिये यहाँ तक कि आपके मसूढ़े मुबारक ज़ाहिर हो गये। फिर आप सल्ल. ने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

मुस्नद की हदीस भी इसी के क़रीब है, उसमें है कि आप सल्ल. हंसे और अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी। एक और रिवायत में है कि वह अपनी उंगलियों पर बताता जाता था, पहले उसने कलिमे की उंगली दिखाई थी। इस रिवायत में चार उंगलियों का ज़िक्र है। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला ज़मीन को क़ब्ज़ कर लेगा और आसमान को अपनी दाहिनी मुट्ठी में ले लेगा, फिर फ़रमायेगा मैं हूँ बादशाह। कहाँ हैं ज़मीन के बादशाह? मुस्लिम शरीफ़ की इस हदीस में है कि ज़मीनें उसकी एक उंगली पर होंगी और आसमान उसके दाहिने हाथ में होंगे, फिर फ़रमायेगा कि मैं ही बादशाह हूँ। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक दिन मिम्बर पर इस आयत की तिलावत की और आप अपना हाथ हिलाते जाते थे, आगे पीछे ला रहे थे और फ़रमाते जाते थे कि अल्लाह तआ़ला अपनी बुज़ुर्गी (बड़ाई और क़ुदरत) ख़ुद बयान फ़रमायेगा कि मैं जब्बार (ख़राबी को दुरुस्त करने वाला) हूँ, मैं बड़ाई वाला हूँ, मैं मालिक हूँ, मैं इज़्ज़त वाला हूँ, मैं करीम हूँ। आप सल्ल. इसके बयान के वक़्त इतना हिल रहे थे, हमें डर लगने लगा कि कहीं मिम्बर आप समेत गिर न पड़े।

एक रिवायत में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि. ने इसकी पूरी कैफ़ियत दिखा दी कि किस तरह हुज़ूर सल्ल. ने इसे बयान फ़रमाया था, कि अल्लाह तबारक व तआ़ला आसमानों और ज़मीनों को अपने हाथ में लेगा और फ़रमायेगा- मैं बादशाह हूँ। अपनी उंगलियों को कभी खोलेगा कभी बन्द करेगा, और आप सल्ल. उस वक़्त इतना हिल रहे थे यहाँ तक कि हुज़ूर सल्ल. के हिलने से सारा मिम्बर हिलने लगा और मुझे यह ख़ौफ़ हुआ कि कहीं वह हुज़ूर सल्ल. को गिरा न दे।

बज़्ज़ार की रिवायत में है कि आप सल्ल. ने यह आयत पढ़ी और मिम्बर हिलने लगा। पस आप सल्ल. तीन मर्तबा आये गये। वल्लाहु आलम। मोजम कबीर तबरानी की एक ग़रीब हदीस है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपने सहाबा की एक जमाअ़त से फ़रमाया- मैं आज तुम्हें सूरः ज़ुमर की आख़िरी आयतें सुनाऊँगा, जिसे इससे रोना आ गया वह जन्नती हो गया, फिर आपने इस आयत से लेकर सूरत के आख़िर तक की आयतें तिलावत फ़रमाईं। बाज़ रोये और बाज़ को रोना न आया, उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमने बहुत रोना चाहा लेकिन रोना न आया, आप सल्ल. ने फ़रमाया अच्छा मैं पढ़ूँगा जिसे रोना न आये वह रोने की शक्ल बनाकर तकल्लुफ़ से रोये। एक इससे बढ़कर ग़रीब हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैंने तीन चीज़ें अपने बन्दों से छुपा ली हैं, अगर वे उन्हें देख लेते तो कोई शख़्स कभी कोई बुरा काम और

गुनाह न करता। अगर मैं पर्दा हटा देता और वे मुझे देखकर ख़ूब यक़ीन कर लेते और मालूम कर लेते कि मैं अपनी मख़्लूक़ से क्या कुछ करता हूँ जबकि उनके पास आऊँ और आसमानों को अपनी मुट्ठी में ले लूँ फिर ज़मीन को अपनी मुट्ठी में ले लूँ फिर कहूँ- मैं बादशाह हूँ मेरे सिवा मुल्क का मालिक कौन है? फिर मैं उन्हें जन्नत दिखा दूँ और उसमें जो भलाईयाँ (यानी अच्छी चीज़ें और ऐश व आराम) हैं सब उनके सामने कर दूँ और वे यक़ीन के साथ ख़ूब अच्छी तरह देख लें। और मैं उन्हें जहन्नम दिखा दूँ और उसके अ़ज़ाबों को सामने कर दूँ यहाँ तक कि उन्हें यक़ीन आ जाये। लेकिन मैंने ये चीज़ें जान-बूझकर उनसे पोशीदा कर रखी हैं ताकि मैं जान लूँ कि वे मुझे किस तरह जानते हैं। क्योंकि मैंने ये सब बातें बयान कर दी हैं। इसकी सनद मुतक़ारिब (मिली हुई) है और इस नुस्ख़े से बहुत सी हदीसें रिवायत की जाती हैं। वल्लाहु आलम

और (क़ियामत के दिन) सूर में फूँक मारी जाएगी, सो तमाम आसमान और ज़मीन वालों के होश उड़ जाएँगे मगर जिसको ख़ुदा चाहे, फिर उस (सूर) में दोबारा फूँक मारी जाएगी तो एक ही बार में सब-के-सब खड़े हो जाएँगे (और चारों तरफ़) देखने लगेंगे। (68) और ज़मीन अपने रब के नूर (जिसकी कैफ़ियत नाक़ाबिले बयान है) से रोशन हो जाएगी और (सबका) नामा-ए-आमाल (हर एक के सामने) रख दिया जाएगा, और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किए जाएँगे, और सब में ठीक-ठीक फ़ैसला किया जाएगा, और उन पर ज़रा ज़ुल्म न होगा। (69) और हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा, और वह सबके कामों को ख़ूब जानता है। (70)	وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ۭ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَاهُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ○ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِآئَ ءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ○ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ○ع

हज़रत इस्राफ़ील का सूर फूँकना

क़ियामत की हौलनाकी और दहशत व घबराहट का ज़िक्र हो रहा है कि सूर फूँका जायेगा। यह दूसरा सूर होगा जिससे हर ज़िन्दा मर जायेगा चाहे आसमान में हो चाहे ज़मीन में, मगर जिसे अल्लाह चाहे।

सूर की मशहूर हदीस में है कि फिर बाक़ी वालों की रूहें क़ब्ज़ कर ली जायेंगी यहाँ तक कि सबसे आख़िर में ख़ुद हज़रत मलकुल-मौत की रूह भी क़ब्ज़ की जायेगी और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही बाक़ी रह जायेगा जो हय्यु व क़य्यूम है, जो अव्वल से था और आख़िर में रह जायेगा। फिर फ़रमायेगा कि आज किसकी हुकूमत है? तीन मर्तबा यही फ़रमायेगा, फिर ख़ुद ही अपने आपको जवाब देगा कि अल्लाह वाहिद व क़ह्हार की, मैं ही अकेला हूँ जिसने हर चीज़ को अपनी मातहती (क़ब्ज़े) में कर रखा है। आज मैंने सब को फ़ना का हुक्म दे दिया है।

फिर अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ को दोबारा ज़िन्दा करेगा, सबसे पहले हज़रत इस्राफ़ील

Maktab E Ashraf

अ़लैहिस्सलाम को ज़िन्दा करेगा। उन्हें हुक्म देगा कि दोबारा सूर फूँकें। यह तीसरा सूर होगा जिससे सारी मख़्लूक़ जो मुर्दा थी ज़िन्दा हो जायेगी, जिसका बयान इस आयत में है कि सूर फूँका जायेगा और सब लोग उठ खड़े होंगे और नज़रें दौड़ाने लगेंगे। यानी क़ियामत के दिल हिला देने वाले हालत देखने लगेंगे। जैसे एक जगह फ़रमान है:

اِنَّمَاهِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ. فَاِذَاهُمْ بِالسَّاهِرَةِ.

यानी वह तो सिर्फ़ एक सख़्त आवाज़ होगी जिससे लोग फ़ौरन ही एक मैदान में जमा हो जायेंगे। एक और आयत में है:

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ........ الخ

यानी जिस तरह अल्लाह तआ़ला तुम्हें बुलायेगा तो तुम सब उसकी तारीफ़ करते हुए उसकी पुकार मान लोगे और दुनिया की ज़िन्दगी को कम समझने लगोगे। अल्लाह तआ़ला का एक और जगह इरशाद है:

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ......... الخ

उसकी निशानियों में से ज़मीन व आसमान का उसके हुक्म से क़ायम रहना है। फिर जब वह तुम्हें ज़मीन से पुकार कर बुलायेगा तो तुम सब एक ही बार में निकल पड़ोगे।

मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. से कहा- आप फ़रमाते हैं कि इतने-इतने वक़्त तक क़ियामत आ जायेगी। आपने नाराज़ होकर फ़रमाया जी तो चाहता है कि तुमसे कोई बात ही न करूँ, मैंने तो कहा था कि बहुत थोड़ी मुद्दत में तुम अहम मामला देखोगे। फिर फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है, आपने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में दज्जाल आयेगा और वह चालीस तक रहेगा, मैं नहीं जानता कि चालीस दिन, चालीस साल या चालीस रातें। फिर अल्लाह तआ़ला हज़रत ईसा इब्ने मरियम अ़लैहिस्सलाम को भेजेगा, वह बिल्कुल सूरत व शक्ल में हज़रत उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी जैसे होंगे। अल्लाह तआ़ला आपको ग़ालिब करेगा और दज्जाल आपके हाथों हलाक होगा। फिर सात साल तक लोग इस तरह मिले-जुले रहेंगे कि सारी दुनिया में दो शख़्सों में भी आपस में रन्जिश व दुश्मनी न होगी। फिर परवर्दिगारे आ़लम शाम (मुल्क सीरिया) की तरफ़ से एक हल्की ठंडी हवा चलायेगा जिससे तमाम ईमान वालों की रूह क़ब्ज़ कर ली जायेगी, यहाँ तक कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा वह फ़ौत हो जायेगा, चाहे वह कहीं भी हो, यहाँ तक कि अगर किसी पहाड़ की खोह में कोई मुसलमान होगा तो यह हवा वहाँ भी पहुँचेगी। मैंने इसे रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है। फिर तो बदतरीन लोग बाक़ी रह जायेंगे जो अपने कमीनेपन में परिन्दों की तरह के हल्के और बेवक़ूफ़ी में दरिन्दों के जैसे बेवक़ूफ़ होंगे, न अच्छाई को अच्छाई समझेंगे न बुराई को बुराई जानेंगे। उन पर शैतान ज़ाहिर होगा और कहेगा शरमाते नहीं कि तुमने बुत-परस्ती छोड़ रखी है, चुनाँचे वे उसके बहकाने में आकर बुत-परस्ती (बुतों की पूजा) शुरू कर देंगे। इस हालत में भी अल्लाह तआ़ला उनकी रोज़ी और उनकी मआ़श (रोज़गार) में कुशादगी अ़ता फ़रमाये हुए होगा। फिर सूर फूँक दिया जायेगा जिस कान में उसकी आवाज़ आयेगी वह इधर गिरेगा उधर खड़ा होगा फिर गिरेगा, सबसे पहले उसकी आवाज़ जिसके कान में पड़ेगी यह वह शख़्स होगा जो अपना हौज़ ठीक कर रहा होगा, फ़ौरन बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ेगा। फिर तो हर शख़्स बेहोश और बेख़ुद हो

Maktab-E-Ashraf

जायेगा। फिर अल्लाह तआला रहमत की बारिश बरसायेगा जो शबनम (ओस) की तरह होगी, उससे लोगों के जिस्म उग निकलेंगे। फिर दूसरा सूर फूँका जायेगा तो सब ज़िन्दा खड़े हो जायेंगे और देखने लगेंगे। फिर कहा जायेगा कि ऐ लोगो! अपने रब की तरफ़ चलो, उन्हें ठहरा लो, उनसे सवालात किये जायेंगे। फिर फ़रमाया जायेगा कि जहन्नम का हिस्सा निकल लो, पूछा जायेगा कि किस क़द्र? जवाब मिलेगा हर हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे। यह वह दिन होगा जिसमें बच्चे बूढ़े हो जायेंगे और यही वह दिन होगा जिसमें पिंडली खोली जायेगी। (सही मुस्लिम)

सही बुख़ारी में है कि दोनों सूर फूँके जाने के बीच चालीस होंगे। हदीस के रिवायत करने वाले अबू हुरैरह रज़ि. से सवाल हुआ कि क्या चालीस दिन? फ़रमाया मैं जवाब देने से आजिज़ हूँ। पूछा गया कि चालीस साल? फ़रमाया न मैं इसका जवाब दूँगा। कहा गया चालीस महीने? फ़रमाया मैं इसका भी इनकार करता हूँ। इनसान की सब चीज़ें सड़-गल जायेंगी मगर रीढ़ की हड्डी, इसी से मख़्लूक़ तरतीब दी जायेगी (यानी उसको दोबारा खड़ा किया जायेगा)।

अबू यअ्ला में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से दरियाफ़्त किया- इस आयत में जो इस्तिस्ना है, यानी जिसे ख़ुदा चाहे, इससे कौन लोग मुराद हैं? फ़रमाया शहीद लोग, ये अपनी तलवारें लटकाये हुए ख़ुदा के अ़र्श के आस-पास होंगे। फ़रिश्ते अपने झुरमुट में इन्हें मेहशर की तरफ़ ले जायेंगे। याक़ूत की ईंटों पर वे सवार होंगे, जिनकी गद्दियाँ रेशम से भी नर्म होंगी। इनसान की निगाह जहाँ तक काम करती है उसका एक क़दम होगा। ये जन्नत में ख़ुश और प्रसन्न होंगे, वहाँ ऐश व आराम में होंगे। फिर इनके दिल में ख़्याल आयेगा कि चलो देखें अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ के फ़ैसले कर रहा होगा। चुनाँचे इनकी तरफ़ देखकर रब्बुल-आ़लमीन हंस देगा और इस जगह जिसे देखकर रब हंस दे उस पर हिसाब किताब नहीं है। इस रिवायत के तमाम रावी सिक़ा (भरोसेमन्द और मोतबर) हैं मगर इस्माईल बिन अ़य्याश के उस्ताद ग़ैर-मारूफ़ (अपरिचित) हैं। वल्लाहु तआ़ला आलम।

क़ियामत के दिन जब अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी मख़्लूक़ के फ़ैसले के लिये तशरीफ़ लायेगा उस वक़्त उसके नूर से सारी ज़मीन जगमगा उठेगी। नामा-ए-आमाल लाये जायेंगे, नबियों को पेश किया जायेगा जो गवाही देंगे कि उन्होंने अपनी उम्मतों को तब्लीग़ कर दी थी। बन्दों के नेक व बद आमाल को मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते लायेंगे और अ़दल व इन्साफ़ के साथ मख़्लूक़ के फ़ैसले किये जायेंगे, किसी क़िस्म का ज़ुल्म व सितम न किया जायेगा। जैसा कि फ़रमायाः

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ.......... الخ

यानी क़ियामत के दिन हम इन्साफ़ का तराज़ू क़ायम करेंगे और किसी पर बिल्कुल ज़ुल्म न होगा अगरचे राई के दाने के बराबर अ़मल हो हम उसे भी मौजूद कर देंगे। और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।

एक और आयत में है कि अल्लाह तआ़ला ज़र्रे के बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता, वह नेकियों को बढ़ाता है और अपने पास से अज्रे-अ़ज़ीम (बड़ा बदला) इनायत फ़रमाता है। इसी लिये यहाँ भी इरशाद हो रहा है कि हर शख़्स को उसके भले-बुरे अ़मल का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा। वह हर शख़्स के आमाल से वाक़िफ़ है।

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝	और जो काफ़िर हैं वे जहन्नम की तरफ़ गिरोह-गिरोह बनाकर हाँके जाएँगे, यहाँ तक कि जब दोज़ख़ के पास पहुँचेंगे तो (उस वक़्त) उसके दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और उनसे दोज़ख़ के मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ते, मलामत के तौर पर) कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम ही लोगों में से पैग़म्बर नहीं आए थे? जो तुमको तुम्हारे रब की आयतें पढ़कर सुनाया करते थे और तुमको तुम्हारे इस दिन के पेश आने से डराया करते थे। काफ़िर कहेंगे कि हाँ! लेकिन अ़ज़ाब का वायदा काफ़िरों पर पूरा होकर रहा। (71) (फिर उनसे) कहा जाएगा (यानी फ़रिश्ते कहेंगे) कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल होओ (और) हमेशा उसमें रहा करो। ग़र्ज़ (ख़ुदा के अहकाम से) तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। (72)

घमंडी लोगों का बुरा ठिकाना है

हक़ का इनकार करने वाले बद-नसीब काफ़िरों का अन्जाम बयान हो रहा है कि वे जानवरों की तरह रुस्वाई और ज़िल्लत से डाँट-डपट और झिड़की के साथ जहन्नम की तरफ़ हंकाये जायेंगे। जैसे एक और आयत में 'युदअ़ऊ-न' का लफ़्ज़ है, यानी धक्के दिये जायेंगे और सख़्त प्यासे होंगे। जैसे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ.......... الخ

यानी जिस रोज़ हम परहेज़गारों को रहमान के मेहमान बनाकर जमा करेंगे और गुनाहगारों को दोज़ख़ की तरफ़ प्यासा हाँकेंगे। इसके अ़लावा बहरे गूँगे और अंधे होंगे और मुँह के बल घसीटे जा रहे होंगे। जैसे एक और जगह फ़रमायाः

وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ............ الخ

कि क़ियामत के दिन उन्हें हम उनके मुँह के बल घसीट कर लायेंगे। ये अंधे गूँगे और बहरे होंगे। इनका ठिकाना जहन्नम होगा। जब उसकी आग धीमी होने लगेगी हम उसे और तेज़ कर देंगे, ये क़रीब पहुँचेंगे कि दोज़ख़ के दरवाज़े खुल पड़ेंगे ताकि फ़ौरन ही अ़ज़ाब शुरू हो जाये। फिर इन्हें वहाँ के मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते शर्मिन्दा करने के लिये और इनका पछतावा बढ़ाने के लिये डाँटकर कहेंगे, क्योंकि उनमें तो रहम का माद्दा ही नहीं, सरासर सख़्ती करने वाले, सख़्त ग़ुस्से वाले और बड़ी बुरी तरह मारने वाले हैं, कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारी ही जिन्स के ख़ुदा तआ़ला के रसूल नहीं आये थे? जिनसे तुम सवाल कर सकते थे, अपना इत्मीनान और तसल्ली कर सकते थे, उनकी बातों को समझ सकते थे, उनकी सोहबत में बैठ सकते थे।

उन्होंने ख़ुदा तआ़ला की आयतें तुम्हें पढ़कर सुनाईं, अपने लाये हुए सच्चे दीन पर दलीलें क़ायम कर दीं, तुम्हें इस दिन की बुराईयों से आगाह कर दिया, आज के अ़ज़ाबों से डरा दिया। काफ़िर इक़रार करेंगे कि हाँ यह सच है, बेशक अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर हम में आये, उन्होंने दलीलें क़ायम कीं, हमें बहुत कुछ कहा सुनाया भी, डराया धमकाया भी, लेकिन हमने उनकी एक भी न मानी, बल्कि उनके ख़िलाफ़ किया। मुक़ाबला किया, क्योंकि हमारी क़िस्मत में ही बदबख़्ती थी, हम पहले दिन ही के बदनसीब थे। हक़ से हट गये और बातिल के तरफ़दार बन गये। जैसे सूरः मुल्क की आयत में है कि जहन्नम में कोई गिरोह डाला जायेगा, उससे वहाँ के मुहाफ़िज़ पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था? वे जवाब देंगे कि आया तो था लेकिन हमने उसको झुठलाया और कह दिया कि अल्लाह तआ़ला ने कुछ भी नाज़िल नहीं फ़रमाया, तुम बड़ी भारी ग़लती में हो। अगर हम सुनते या समझते तो आज जहन्नमियों में न होते। यानी अपने आपको मलामत करने लगेंगे, अपने गुनाहों का ख़ुद इक़रार करेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा दूरी और ख़ासारा हो, लानत व फटकार हो दोज़ख़ वालों पर।

कहा जायेगा, यानी हर वह शख़्स जो उन्हें देखेगा और उनकी हालत को मालूम करेगा वह साफ़ कह उठेगा कि बेशक ये इसी लायक़ हैं। इसी लिये कहने वाले का नाम नहीं लिया गया बल्कि उसे मुतलक़ छोड़ा गया ताकि उसका उमूम बाक़ी रहे, और ख़ुदा तआ़ला के अ़दल (इन्साफ़) की गवाही कामिल हो जाये। उनसे कह दिया जायेगा कि अब जाओ जहन्नम में वहीं हमेशा जलते झुलसते रहना, न वहाँ से किसी तरह किसी वक़्त छुटकारा मिलेगा न तुम्हें मौत आयेगी।

आह! यह क्या ही बुरा ठिकाना है, जिसमें दिन रात जलना है। यह है तुम्हारे तकब्बुर और हक़ को न मानने का बदला, जिसने तुम्हें ऐसी बुरी जगह पहुँचाया और यहीं का कर दिया। क्या ही बुरा हाल है! और क्या ही सबक़ लेने वाला अन्जाम है। अल्लाह हमें महफ़ूज़ रखे। आमीन

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝

और जो लोग अपने रब से डरते थे, वे गिरोह-गिरोह होकर जन्नत की तरफ़ रवाना किए जाएँगे। यहाँ तक कि जब उस (जन्नत) के पास पहुँचेंगे और उसके दरवाज़े (पहले से) खुले हुए होंगे (ताकि ज़रा भी देर न लगे) और वहाँ के मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ते) उनसे कहेंगे कि अस्सलामु अ़लैकुम! तुम मज़े में रहो, सो इस (जन्नत) में हमेशा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ। (73) और (दाख़िल होकर) कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला का (लाख-लाख) शुक्र है जिसने हमसे अपना वायदा सच्चा किया और हमको इस सरज़मीन का मालिक बना दिया कि हम जन्नत में जहाँ चाहें ठहरें। ग़र्ज़ (नेक) अ़मल करने का अच्छा बदला है। (74)

Maktab E Ashraf

जन्नत वालों के हालात का कुछ ज़िक्र

ऊपर बदबख़्तों का अन्जाम और उनका हाल बयान हुआ, यहाँ नेक-बख़्तों का नतीजा बयान हो रहा है कि ये बेहतरीन ख़ूबसूरत ऊँटनियों पर सवार होकर जन्नत की तरफ़ पहुँचाये जायेंगे। इनकी भी जमाअ़तें होंगी। अल्लाह के ख़ास और क़रीबी हज़रात की जमाअ़त, फिर नेक लोगों की जमाअ़त, फिर उनसे कम दर्जे वालों की जमाअ़त, फिर उनसे कम दर्जे वालों की। हर जमाअ़त अपने साथ वाले मुनासिब लोगों के साथ होगी। अम्बिया अम्बिया के साथ, सिद्दीक़ अपने जैसों के साथ, शहीद लोग शहीदों के साथ, उलेमा आ़लिमों के साथ, ग़र्ज़ कि हर हम-जिन्स अपने मेल के लोगों के साथ होंगे। जब ये जन्नत के पास पहुँचेंगे, पुलसिरात से पार हो चुके होंगे तो वहाँ एक पुलसिरात पर ठहराये जायेंगे और इनमें आपस में जो मज़ालिम (जुल्म व ज़्यादती और आपस में एक दूसरे के साथ ना-इन्साफ़ी व अत्याचार किये होंगे या मन मुटाव) होंगे उनका क़िसास और बदला हो जायेगा। जब पाक-साफ़ हो जायेंगे तब जन्नत में जाने की इजाज़त पायेंगे।

सूर से मुताल्लिक़ एक लम्बी हदीस में है कि जन्नत के दरवाज़ों पर पहुँचकर ये आपस में मश्विरा करेंगे कि देखो सबसे पहले किसे इजाज़त दी जाती है? फिर वे हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के पास पहुँचेंगे, फिर हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के पास, फिर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास, फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास, फिर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पास, फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास। जैसे हश्र के मैदान में शफ़ाअ़त के मौक़े पर भी किया था। इससे बड़ा मक़सद जनाब अहमदे मुज्तबा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. की फ़ज़ीलत का मौक़े मौक़े पर इज़्हार करना है। सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि मैं पहला सिफ़ारिशी हूँ जन्नत में। एक और रिवायत में है कि आप सल्ल. ने फ़रमाया- मैं वह शख़्स हूँ जो जन्नत का दरवाज़ा खटखटाऊँगा।

मुस्नद अहमद में है कि आप सल्ल. ने फ़रमाया- मैं क़ियामत के दिन जन्नत का दरवाज़ा खुलवाना चाहूँगा तो वहाँ का दारोग़ा मुझसे पूछेगा कि आप कौन हैं? मैं कहूँगा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) वह कहेगा मुझे यही हुक्म था कि आपके तशरीफ़ लाने से पहले जन्नत का दरवाज़ा किसी के लिये न खोलूँ। मुस्नद अहमद में है कि पहली जमाअ़त जो जन्नत में जायेगी उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद के जैसे होंगे। थूक, नाक की गंदगी, पेशाब, पाख़ाना वहाँ कुछ न होगा। उनके बरतन और इस्तेमाल का सामान सोने चाँदी का होगा। उनकी अंगीठियों में बेहतरीन अगर ख़ुशबू दे रहा होगा, उनका पसीना मुश्क होगा, उनमें से हर एक की दो बीवियाँ होंगी जिनका पिंडली का गूदा हुस्न व नज़ाकत और सफ़ाई व नफ़ासत की वजह से गोश्त के पीछे से नज़र आ रहा होगा। किसी दो में इख़्तिलाफ़ और हसद व बुग़्ज़ न होगा, सब दिल मिलाकर ऐसे होंगे जैसे एक शख़्स का दिल। सुबह शाम अल्लाह की तस्बीह में गुज़रेगी।

अबू यअ़्ला में है कि पहली जमाअ़त जो जन्नत में जायेगी उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह रोशन होंगे, उनके बाद वाली जमाअ़त के चेहरे ऐसे होंगे जैसे बेहतरीन चमकता हुआ सितारा, फिर क़रीब क़रीब ऊपर वाली हदीस के बयान के मुताबिक़ है। और यह भी है कि उनके क़द साठ हाथ के होंगे, जितना आदम अ़लैहिस्सलाम का क़द था। एक और हदीस में है कि मेरी उम्मत की एक जमाअ़त जो सत्तर हज़ार की तायदाद में होगी, पहले-पहल जन्नत में दाख़िल होगी, उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमक रहे होंगे। यह सुनकर हज़रत उक्काशा बिन मिहसन रज़ि. ने दरख़्वास्त की कि या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कीजिये कि वह मुझे भी उन्हीं में से कर दे। आप सल्ल. ने दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! इन्हें

उनही में से कर दे। फिर एक अन्सारी ने भी यही अ़र्ज़ किया, आप सल्ल. ने फ़रमाया उक्काशा तुझ पर सबक़त ले गये (यानी तुझसे आगे बढ़ गये)। इन सत्तर हज़ार का बेहिसाब जन्नत में दाख़िल होना बहुत सी किताबों में बहुत सी सनदों से बहुत से सहाबा से नक़ल किया गया है।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार या सात सौ जन्नत में एक साथ जायेंगे, एक दूसरे के हाथ थामे हुए होंगे, सब एक साथ ही जन्नत में क़दम रखेंगे, उनके चहरे चौदहवीं रात के चाँद जैसे होंगे। इब्ने अबी शैबा में है कि मुझसे मेरे रब का वायदा है कि मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार शख़्स जन्नत में जायेंगे, हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार और होंगे, उनसे न हिसाब होगा न उन्हें अ़ज़ाब होगा। उनके अ़लावा और तीन लपें भरकर, जो अल्लाह तआ़ला अपने हाथों से लप भरकर जन्नत में पहुँचायेगा। (तबरानी)

इस रिवायत में है कि फिर हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार होंगे। इस हदीस के बहुत से शवाहिद हैं। जब ये नेकबख़्त बुज़ुर्ग जन्नत के पास पहुँच जायेंगे तो इनके लिये दरवाज़े खुल जायेंगे। इनकी वहाँ इ़ज़्ज़त व सम्मान होगा, वहाँ के मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते इन्हें बशारत सुनायेंगे, इनकी तारीफ़ें करेंगे, इन्हें सलाम करेंगे। उसके बाद का जवाब क़ुरआन में अलफ़ाज़ में ज़ाहिर नहीं किया गया ताकि उमूमियत बाक़ी रहे। मतलब यह है कि उस वक़्त ये पूरे ख़ुश हो जायेंगे, बेहिसाब सुरूर व राहत और आराम व चैन इन्हें मिलेगा। हर तरह की और हर भलाई की उम्मीद बंध जायेगी। मगर यहाँ यह बयान कर देना ज़रूरी है कि बाज़ लोगों ने जो कहा है कि 'व फ़ुतिहत्' में वाव आठवीं है और इससे दलील पकड़ी है कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, उन्होंने बड़ा तकल्लुफ़ किया है, जन्नत के आठ दरवाज़ों का सुबूत तो सही हदीसों में साफ़ मौजूद है। मुस्नद अहमद में है कि जो शख़्स अपने माल में से ख़ुदा की राह में जोड़ा ख़र्च करे वह जन्नत के सब दरवाज़ों से बुलाया जायेगा। जन्नत के कई दरवाज़े हैं। नमाज़ी 'बाबे सलात' से सख़ी 'बाबे सदक़ा' से मुजाहिद 'बाबे जिहाद' से रोज़ेदार 'बाबे रय्यान' से बुलाये जायेंगे। यह सुनकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह! अगरचे इसकी ज़रूरत तो नहीं कि हर दरवाज़े से पुकारा जाये, जिससे भी पुकारा जाये मक़सद तो सिर्फ़ जन्नत में जाने से है। लेकिन क्या कोई ऐसा भी है जो जन्नत के सब दरवाज़ों से बुलाया जाये? आप सल्ल. ने फ़रमाया हाँ और मुझे उम्मीद है कि तुम उन्हीं में से होगे। यह हदीस बुख़ारी मुस्लिम वग़ैरह में भी है। बुख़ारी व मुस्लिम की एक और हदीस में है कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं जिनमें से एक का नाम बाबे रय्यान है, उसमें से सिर्फ़ रोज़ेदार ही दाख़िल होंगे। सही मुस्लिम में है कि तुममें से जो शख़्स कामिल मुकम्मल बहुत अच्छी वुज़ू करे फिर "अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू" पढ़े, उसके लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं, जिसमें से चाहे चला जाये। एक और हदीस में है कि जन्नत की कुन्जी "ला इला-ह इल्लल्लाहु" है। अल्लाह तआ़ला हमें भी जन्नत नसीब करे आमीन।

जन्नत के दरवाज़ों की कुशादगी का बयान

शफ़ाअ़त की एक लम्बी हदीस में है कि फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ मुहम्मद! अपनी उम्मत में से जिन पर हिसाब नहीं उन्हें दाहिनी तरफ़ के दरवाज़े से जन्नत में ले जाईये, लेकिन और दरवाज़ों में भी ये दूसरों के साथ शरीक हैं। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद जान है, जन्नत की चौखट इतनी बड़ी वुस्अ़त वाली है कि जितना फ़ासला मक्का और हिज्र (एक जगह का नाम है) में है। या फ़रमाया जितना

फ़ासला हिज्र और मक्का में है। एक रिवायत में है कि जितना फ़ासला मक्का और बसरा में है। (सहीहैन)

हज़रत उतबा बिन ग़ज़वान रज़ि. ने अपने ख़ुतबे में बयान फ़रमाया कि हमसे यह ज़िक्र किया गया है कि जन्नत के दरवाज़े की वुस्अत (लम्बाई) चालीस साल की दूरी है। एक ऐसा भी दिन आने वाला है जब कि जन्नत में जाने वालों की भीड़-भाड़ से ये लम्बे-चौड़े दरवाज़े खचाखच भरे हुए होंगे। (मुस्लिम)

मुस्नद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जन्नत की चौखट चालीस साल की मुसाफ़त (फ़ासले और दूरी की) है। ये जब जन्नत के पास पहुँचेंगे, इन्हें फ़रिश्ते सलाम करेंगे और मुबारकबाद देंगे कि तुम्हारे आमाल तुम्हारे अक़वाल (बातें) तुम्हारी कोशिश और तुम्हारा बदला हर चीज़ ख़ुश करने वाली और बेहतरीन है, जैसा कि हुज़ूर सल्ल. ने ग़ज़्वे के मौक़े पर मुनादी से फ़रमाया था कि जाओ ऐलान कर दो कि जन्नत में सिर्फ़ मुसलमान लोग ही जायेंगे, या फ़रमाया था कि सिर्फ़ मोमिन ही जन्नत में जायेंगे। फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि तुम अब यहाँ से निकाले न जाओगे बल्कि यहाँ तुम्हारे लिये हमेशगी है। अपना यह हाल देखकर ख़ुश होकर जन्नती ख़ुदा का शुक्र अदा करेंगे और कहेंगे कि अल्हम्दु लिल्लाह जो वायदा हमसे अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूलों की ज़बानी किया था उसे पूरा किया। यही दुआ़ उनकी दुनिया में थीः

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَاوَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ.

यानी ऐ परवर्दिगार! हमें वह दे जिसका वायदा तूने अपने रसूलों की ज़बानी हमसे किया है, और हमें क़ियामत के दिन रुस्वा न कर, यक़ीनन तेरी ज़ात वायदा-ख़िलाफ़ी से पाक है।

एक और आयत में है कि इस मौक़े पर जन्नत वाले यह भी कहेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है जिसने हमें इसकी हिदायत की, अगर वह हिदायत न करता तो हम हिदायत न पा सकते, यक़ीनन अल्लाह तआ़ला के रसूल हमारे पास हक़ लाये थे। वे यह भी कहेंगे कि अल्लाह ही के लिये सब तारीफ़ है जिसने हमसे ग़म दूर कर दिया, यक़ीनन हमारा रब बख़्शने वाला और क़द्र करने वाला है, जिसने अपने फ़ज़्ल व करम से यह पाक जगह हमें नसीब फ़रमाई, जहाँ न कोई दुख दर्द है न रंज व तकलीफ़। वे कहेंगे कि उसने हमें जन्नत की ज़मीन का वारिस बनाया। जैसे फ़रमान हैः

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ.......... الخ

यानी हमने ज़बूर में ज़िक्र के बाद लिख दिया था कि ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे। इसी तरह आज जन्नती कहेंगे कि इस जन्नत में हम जहाँ जगह बना लें कोई रोक-टोक नहीं, यह है बेहतरीन बदला हमारे आमाल का।

मेराज वाले वाक़िए में सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि जन्नत के डेरे ख़ेमे लुअ्लुअ् (क़ीमती मोती) के हैं और उसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क है। इब्ने साअ़िद से जब हुज़ूर सल्ल. ने जन्नत की मिट्टी का सवाल किया तो उसने कहा- सफ़ेद मेदे जैसी ख़ालिस मुश्क। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया यह सच्चा है। (मुस्लिम) मुस्लिम ही की एक और रिवायत में है कि इब्ने साइद ने हुज़ूर सल्ल. से पूछा था।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत अ़ली रज़ि. का क़ौल है कि जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचकर ये एक दरख़्त को देखेंगे जिसकी जड़ में से दो नहरें निकलती होंगी, एक में वे ग़ुस्ल करेंगे जिससे इस क़द्र पाक व साफ़ हो जायेंगे कि उनके जिस्म और चेहरे चमकने लगेंगे, उनके बाल कंघी किये हुए तेल वाले हो जायेंगे। फिर कभी सुलझाने की ज़रूरत ही न पड़ेगी, न चेहरे और जिस्म का रंग रूप हल्का पड़ेगा। फिर ये दूसरी नहर पर जायेंगे गोया इनसे कह दिया गया हो, उसमें से पानी पियेंगे जिससे तमाम घिन की चीज़ों से पाक साफ़

हो जायेंगे। जन्नत के फ़रिश्ते इन्हें सलाम करेंगे, मुबारकबाद पेश करेंगे और इन्हें जन्नत में जाने के लिये कहेंगे। हर एक के पास उसके ग़िलमान (जन्नती ख़ादिम) आयेंगे और ख़ुशी-ख़ुशी उन पर क़ुरबान होंगे। कहेंगे कि आप ख़ुश हो जाईये, अल्लाह तआ़ला ने आपके लिये तरह-तरह की नेमतें मुहैया (तैयार) कर रखी हैं। उनमें से कुछ भागे दौड़े जायेंगे और जो हूरें उस जन्नती के लिये मख़्सूस हैं उनसे कहेंगे लो मुबारक हो फ़ुलाँ साहिब आ गये, नाम सुनते ही ख़ुश होकर वे पूछेंगी कि क्या तुमने ख़ुद उन्हें देखा है? वे कहेंगे कि हाँ हम अपनी आँखों से उन्हें देखकर आ रहे हैं। ये मारे ख़ुशी के दरवाज़े पर आ खड़ी होंगी।

जन्नती जब अपने महल में आयेगा तो देखेगा कि गद्दे बराबर बराबर लगे हुए हैं और आबख़ूरे (पानी और शराब के बरतन) रखे हुए हैं और क़ालीन बिछे हुए हैं। इस फ़र्श को देखकर अब जो दीवारों की तरफ़ नज़र करेगा तो वे सुर्ख़ व सब्ज़ और ज़र्द व सफ़ेद और क़िस्म-क़िस्म के मोतियों की बनी हुई होंगी। फिर छत की तरफ़ नज़र उठाकर देखेगा तो वह इस क़द्र शफ़्फ़ाफ़ और उजली होगी कि नूर की तरह चमक रही होगी, जिसकी रोशनी आँखों की रोशनी को फीका कर देगी। अगर ख़ुदा उसे बरक़रार रखे तो। फिर अपनी बीवियों पर यानी जन्नती हूरों पर मुहब्बत भरी निगाह डालेगा, फिर अपने तख़्तों में से जिस पर उसका जी चाहेगा बैठेगा और कहेगा ख़ुदा का शुक्र है जिसने हमें इसकी हिदायत की, अगर अल्लाह हमें यह राह न दिखाता तो हम हरगिज़ इसे तलाश नहीं कर सकते थे.........।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जब ये अपनी क़ब्रों से निकलेंगे इनका स्वागत किया जायेगा, इनके लिये पर्दों वाली ऊँटनियाँ लाई जायेंगी जिन पर सोने के कजावे होंगे, इनके जूतियों के तस्मे तक नूर से चमक रहे होंगे। वे ऊँटनियाँ एक एक क़दम इस क़द्र दूर रखती हैं जहाँ तक इनसान की निगाह जा सकती है (आजकल जितनी तेज़ रफ़्तार के जहाज़ और रॉकिट बन रहे हैं उससे अन्दाज़ा लगाईये कि अल्लाह अपनी क़ुदरत से क्या कुछ नहीं कर सकता)। ये एक दरख़्त के पास पहुँचेंगे जसके नीचे से दो नहरें निकलती हैं, एक का पानी पियेंगे जिससे इनके पेट का तमाम फ़ुज़ला (गन्दगी और बेकार माद्दा) और मैल-कुचैल धुल जायेगा। दूसरी नहर से ये ग़ुस्ल करेंगे तो फिर कभी इनके बदन मैले न होंगे, इनके बाल न बिखरेंगे और इनके जिस्म और इनके चेहरे रौनक़ वाले और तरोताज़ा रहेंगे। ये जन्नत के दरवाज़ों पर आयेंगे देखेंगे कि एक कुंडा सुर्ख़ याक़ूत का है जो सोने की तख़्ती पर लटका हुआ है। ये उसे हिलायेंगे तो अ़जीब सुरीली और संगीत की आवाज़ पैदा होगी, उसे सुनते ही हर हूर जान लेगी कि उसके शौहर आ गये। वह दारोग़ा को हुक्म करेगी कि जाओ दरवाज़ा खोलो, वह दरवाज़ा खोल देगा, ये अन्दर क़दम रखते ही उस दारोग़ा की नूरानी शक्ल देखकर सज्दे में गिर पड़ेगा (यानी शुक्रिया अदा करने के लिये झुक जायेगा), लेकिन वह इसे रोक लेगा और कहेगा कि अपना सर उठाये मैं तो तेरा मातहत हूँ और उसे अपने साथ ले चलेगा। जब यह उस याक़ूत के ख़ेमे के दरवाज़े के पास पहुँचेगा जहाँ इसकी हूर है, वह बेताबी से दौड़कर ख़ेमे से बाहर आ जायेगी और इसको अपनी बाँहों में लेकर कहेगी कि तुम मेरे महबूब हो और मैं तुम्हारी चाहने वाली हूँ मैं हमेशा यहाँ रहने वाली हूँ, मरूँगी नहीं। मैं नेमतों वाली हूँ फ़क़ीर व मोहताजी से दूर हूँ। मैं आपसे हमेशा राज़ी रहूँगी कभी नाराज़ न हूँगी। मैं हमेशा आपकी ख़िदमत में हाज़िर रहने वाली हूँ कभी इधर-उधर हटूँगी नहीं।

फिर यह घर में जायेगा जिसकी छत फ़र्श से एक लाख हाथ बुलन्द होगी, उसकी तमाम दीवारें क़िस्म क़िस्म के और रंग-बिरंग के मोतियों की होंगी, उस घर में सत्तर तख़्त होंगे और हर तख़्त पर सत्तर सत्तर छोलदारियाँ (छोटे ख़ेमे) होंगी और उनमें से हर बिस्तर पर सत्तर हूरें होंगी, हर हूर पर सत्तर जोड़े होंगे और

Maktab E Ashraf

उन सब जोड़ों के नीचे से उनकी पिंडली का गूदा नज़र आता होगा, उनकी एक हमबिस्तरी का अन्दाज़ एक पूरी रात का होगा, उनके बाग़ों और मकानों के नीचे नहरें बह रही होंगी जिनका पानी कभी बदबूदार नहीं होता, साफ़ शफ़्फ़ाफ़ मोती जैसा पानी है। और दूध की नहरें होंगी जिनका मज़ा कभी नहीं बदलता, जो दूध किसी जानवर के थन से नहीं निकला। और शराब की नहरें होंगी जो निहायत लज़ीज़ होगी जो किसी इनसानी हाथों की बनायी हुई नहीं होगी, और ख़ालिस शहद की नहरें होंगी जो मक्खियों के पेट से हासिल शुदा नहीं, क़िस्म-क़िस्म के मेवों से लदे हुए दरख़्त उसके चारों तरफ़ होंगे जिनका फल इनकी तरफ़ झुका हुआ होगा, ये खड़े-खड़े फल लेना चाहेंगे तो ले सकेंगे, अगर ये बैठे-बैठे फल तोड़ना चाहेंगे तो शाख़ें इतनी झुक जायेंगी कि ये तोड़ सकेंगे, अगर ये लेटे-लेटे भी फल लेना चाहेंगे तो ले सकेंगे, शाख़ें और झुक आयेंगी। फिर आप सल्ल. ने यह आयत तिलावत फ़रमाई:

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا............ الخ

यानी उन दरख़्तों के साये उन पर झुके हुए होंगे और उसके मेवे बहुत क़रीब कर दिये जायेंगे। ये खाना खाने की ख़्वाहिश करेंगे तो सफ़ेद रंग या सब्ज़ रंग के परिन्दे इनके पास आकर अपना पर ऊँचा कर देंगे, ये जिस क़िस्म का गोश्त चाहें खायेंगे, फिर वह ज़िन्दा का ज़िन्दा जैसा था वैसा ही होकर उड़ जायेगा। फ़रिश्ते इनके पास आयेंगे, सलाम करेंगे और कहेंगे कि ये जन्नतें हैं जिनके तुम अपने आमाल की वजह से वारिस बनाये गये हो। अगर किसी हूर का एक बाल ज़मीन पर आ जाये तो वह अपनी चमक और अपनी सियाही से नूर को रोशन करे, और सियाही नुमायाँ रहे। यह हदीस ग़रीब है, गोया कि यह मुर्सल है। वल्लाहु आलम।

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ ع	और आप फ़रिश्तों को देखेंगे कि (हिसाब के इज्लास के वक़्त) अ़र्श के इर्द-गिर्द घेरा बनाए होंगे (और) अपने रब की पाकी और तारीफ़ बयान करते होंगे, और तमाम बन्दों में ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा कि सारी ख़ूबियाँ ख़ुदा ही को लायक़ हैं जो तमाम जहानों का परवर्दिगार है। (75)

الربع ٨ ع ٥

जन्नतियों का अल्लाह की तस्बीह बयान करना

जब अल्लाह तआ़ला ने जन्नत वालों और जहन्नम वालों का फ़ैसला सुना दिया और उन्हें उनके ठिकाने पर पहुँचाये जाने का हाल भी बयान कर दिया और उसमें अपने अ़दल वँ इन्साफ़ का सुबूत भी दे दिया तो इस आयत में फ़रमाया कि क़ियामत के रोज़ उस वक़्त तू देखेगा कि फ़रिश्ते ख़ुदा के अ़र्श के चारों तरफ़ खड़े हुए होंगे और अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ व तस्बीह, अ़ज़मत और बड़ाई बयान कर रहे होंगे। सारी मख़्लूक़ में अ़दल व हक़ के साथ फ़ैसले हो चुके होंगे, इस सरासर अ़दल और बिल्कुल रहम वाले फ़ैसलों पर कायनात का ज़र्रा उसकी तारीफ़ बयान करने लगेगा और जानदार व बेजान चीज़ से आवाज़ उठेगी "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमी" यानी तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जो तमाम जहानों का रब है। चूँकि उस वक़्त हर तर व ख़ुश्क चीज़ अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ व सना बयान करेगी इसलिये यहाँ

मजहूल का सीग़ा लाकर फ़ाअिल को आम कर दिया गया (यानी तारीफ़ करने वाले को ख़ास नहीं रखा गया बल्कि इसको आम और सबके लिये रहने दिया)। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि मख़्लूक़ की पैदाईश की शुरूआत भी तारीफ़ से है। फ़रमाता है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ.

तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिये हैं जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया।

और मख़्लूक़ की इन्तिहा भी तारीफ़ से है। फ़रमाता है:

وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

और तमाम बन्दों में ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जायेगा और कहा जायेगा कि तमाम तारीफ़ें और ख़ूबियाँ उस अल्लाह के लिये ज़ेबा (लायक़) हैं तो तमाम आ़लमों (जहानों) का परवर्दिगार है।

अल्लाह का शुक्र व एहसान है कि उसके फ़ज़्ल व करम से सूरः ज़ुमर की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः मोमिन

सूरः मोमिन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 85 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِO

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

बाज़ पहले उलेमा और बुज़ुर्गों का क़ौल है कि जिन सूरतों का आरम्भ और शुरूआ़त 'हा-मीम' से है, उन्हें ''हवामीम'' कहना मक्रूह (बुरा और नापसन्दीदा) है। 'आले हा-मीम' कहा जाये। हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रह. भी यही कहते हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि 'आले हा-मीम' क़ुरआन का दीबाचा (प्रस्तावना) हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हर चीज़ का दरवाज़ा होता है और क़ुरआने करीम का दरवाज़ा 'आले हा-मीम' है, या फ़रमाया 'हवामीम' हैं।

हज़रत मिस्अ़र बिन किदाम रह. फ़रमाते हैं कि इन सूरतों को 'अ़राइस' कहा जाता है, उरूस दुल्हन को कहते हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ुरआने करीम की मिसाल उस शख़्स जैसी है जो अपने घर वालों के लिये किसी अच्छी मन्ज़िल की तलाश में निकले तो एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ गोया अभी-अभी बारिश बरस चुकी हो, यह ज़रा ही कुछ आगे बढ़ा होगा जो देखेगा कि तरोताज़ा लहलहाते हुए चन्द चमन हैं। पहले तर ज़मीन को देखकर ही ताज्जुब में था अब तो उसका ताज्जुब और बढ़ गया। उससे कहा गया कि पहले की मिसाल तो क़ुरआने करीम की बड़ाई की मिसाल है और इन बाग़ीचों की मिसाल ऐसी है जैसे क़ुरआन में 'हा-मीम' वाली सूरतें हैं।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब मैं तिलावत करता हुआ हा-मीम वाली सूरतों पर पहुँचता हूँ तो मुझे ऐसा मालूम होता है कि गोया मैं हरे-भरे फले-फूले बाग़ीचों की सैर कर रहा हूँ। एक शख़्स ने

Maktaba E Ashraf

हज़रत अबू दर्दा रज़ि. को मस्जिद बनाते हुए देखकर पूछा कि यह क्या है? फ़रमाया कि मैं इसे हा-मीम वाली सूरतों के लिये बना रहा हूँ, मुम्किन है कि यह मस्जिद वह हो जो दमिश्क़ के क़िले के अन्दर है और आप ही के नाम से मन्सूब है। और यह भी हो सकता है कि उसकी हिफ़ाज़त हज़रत अबू दर्दा रज़ि. की नेक-नीयती की और जिस वजह से यह मस्जिद बनाई गई थी उसकी बरकत के कारण हो। इस कलाम में दुश्मनों पर फ़तह व विजय की दलील भी है। जैसे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने बाज़ जिहादों में अपने लश्कर से फ़रमा दिया था कि अगर रात को तुम अचानक हमला करो तो तुम्हारी पहचान के ख़ास अलफ़ाज़ 'हा-मीम, ला यन्सुरून' हैं। एक रिवायत में 'तन्सुरून' है।

मुस्नद बज़्ज़ार में है कि जिसने आयतुल-कुर्सी, सूरः हॉ-मीम और सूरः मोमिन का शुरू का हिस्सा पढ़ लिया वह सारे दिन की बुराई से महफ़ूज़ रहेगा। यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इसके एक रावी पर कुछ जिरह (उसकी कमज़ोरियों के बारे में कलाम) भी है।

हा-मीम्। (इसके मायने अल्लाह ही को मालूम हैं) (1) यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बरदस्त है, हर चीज़ का जानने वाला है। (2) गुनाह का बख़्शने वाला है और तौबा का क़बूल करने वाला है। सख़्त सज़ा देने वाला है, क़ुदरत वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, उसी के पास (सबको) जाना है। (3)	حٰمٓ ○ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ○ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ○

ये आला दर्जे की सिफ़ात

सूरतों के शुरू में हा-मीम वग़ैरह जैसे जो हुरूफ़ आये हैं इनकी पूरी बहस हम सूरः ब-क़रह की तफ़सीर के शुरू में कर चुके हैं, जिसको अब दोहराने की कोई ज़रूरत नहीं। बाज़ कहते हैं कि हा-मीम ख़ुदा का एक नाम है और इसके सुबूत व ताईद में वे यह शे'र पेश करते हैं:

يُذَكِّرُنِىْ حٰمٓ وَالرُّمْحُ شَاجِرٌ فَهَلَّا تَلَا حٰمٓ قَبْلَ التَّقَدُّمِ

यानी यह मुझे हा-मीम याद दिलाता है जबकि नेज़ा तन चुका, फिर चुका। इससे पहले ही उसने हा-मीम क्यों न कह दिया।

अबू दाऊद और तिर्मिज़ी की हदीस में आया है कि अगर तुम पर रात को धावा बोला जाये तो "हा-मीम ला युन्सरून" कहना। इसकी सनद सही है। अबू उबैदा रह. कहते हैं कि मुझे यह पसन्द है कि इस हदीस को यूँ रिवायत की जाये कि आप सल्ल. ने फ़रमाया तुम कहो "हा-मीम ला युन्सरू" यानी बग़ैर 'नून' के। तो गोया उनके नज़दीक "ला युन्सरू" जज़ा है 'फ़-क़ूलू' की। यानी जब तुम यह कहोगे तो तुम मग़लूब न होगे। तो क़ौल सिर्फ़ हा-मीम रहा।

यह किताब क़ुरआन मजीद अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नाज़िल शुदा है, जो इज़्ज़त व इल्म वाला है, जिसकी जनाब हर बेअदबी से पाक और जिस पर कोई ज़र्रा छुपा नहीं, चाहे वह कितने ही पर्दों में हो। वह

Maktab E Ashraf

गुनाहों की बख़्शिश करने वाला और जो उसकी तरफ़ झुके वह उसकी ओर माईल होने वाला है, और जो उससे बेपरवाही करे उसके सामने सरकशी और तकब्बुर करे और दुनिया को पसन्द करके आख़िरत से बेतवज्जोह हो जाये, ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी को छोड़ दे, उसे वह बहुत सख़्त अ़ज़ाब और सख़्त तरीन सज़ायें देने वाला है। जैसे फ़रमान है:

نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ. وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ.

यानी मेरे बन्दों को आगाह कर दो कि मैं बख़्शने वाला और मेहरबानियाँ करने वाला भी हूँ और मेरे अ़ज़ाब भी बड़े दर्दनाक अ़ज़ाब हैं।

और भी इस क़िस्म की आयतें क़ुरआने करीम में बहुत हैं जिनमें रहम व करम के साथ अ़ज़ाब व सज़ा का बयान भी है, ताकि बन्दा ख़ौफ़ व उम्मीद की हालत में रहे। वह वुस्अ़त व ग़िना वाला है, वह बहुत बेहतरी वाला है। बड़े एहसानों, ज़बरदस्त नेमतों और रहमतों वाला है। बन्दों पर उसके इनाम व एहसान इस क़द्र हैं कि कोई उन्हें शुमार भी नहीं कर सकता कहाँ यह कि उनका शुक्र अदा कर सके, बल्कि हक़ीक़त यह है कि किसी एक नेमत का भी पूरा शुक्र किसी से अदा नहीं हो सकता। उस जैसा कोई नहीं, उसकी एक सिफ़त भी किसी में नहीं, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, न उसके सिवा कोई किसी की परवरिश करने वाला है। उसी की तरफ़ सब को लौटकर जाना है। उस वक़्त वह हर अ़मल करने वाले को उसके अ़मल के मुताबिक़ जज़ा सज़ा देगा, और बहुत जल्द हिसाब से फ़ारिग़ हो जायेगा।

अमीरुल-मोमिनिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से एक शख़्स ने आकर मसला पूछा कि मैंने किसी को क़त्ल कर दिया है, क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है? आपने शुरू सूरत की दो आयतें तिलावत फ़रमाईं और फ़रमाया- नाउम्मीद न हो और नेक अ़मल किये जाओ। (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत उमर रज़ि. के पास मुल्क शाम का एक शख़्स कभी-कभी आया करता था और था ज़रा ऐसा ही आदमी। एक मर्तबा बड़ी मुद्दत तक वह आया ही नहीं तो अमीरुल-मोमिनीन ने लोगों से उसका हाल पूछा। उन्होंने कहा उसने बहुत ज़्यादा पीना (यानी शराब पीना) शुरू कर दिया है। हज़रत उमर रज़ि. ने अपने कातिब (मुन्शी) को बुलाकर कहा लिखो यह ख़त है उमर बिन ख़त्ताब की तरफ़ से फ़ुलाँ पुत्र फ़ुलाँ की तरफ़। अस्सलामु अ़लैकुम के बाद! मैं तुम्हारे सामने उस अल्लाह की तारीफ़ें बयान करता हूँ जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जो गुनाहों को बख़्शने वाला, तौबा को क़बूल करने वाला, सख़्त अ़ज़ाब वाला, बड़े एहसान वाला है। जिसके सिवा कोई अल्लाह नहीं, उसी की तरफ़ लौटना है। यह ख़त उसकी तरफ़ भिजवाकर आपने अपने साथियों से फ़रमाया कि अपने भाई के लिये दुआ़ करो कि अल्लाह तआ़ला उसके दिल को मुतवज्जह कर दे और उसकी तौबा क़बूल फ़रमाये।

जब उस शख़्स को हज़रत उमर रज़ि. का ख़त मिला तो उसने बार-बार पढ़ना और यह कहना शुरू किया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे अपनी सज़ा से डराया भी है और अपनी रहमत की उम्मीद दिलाकर गुनाहों की बख़्शिश का वायदा भी फ़रमाया है। कई-कई मर्तबा उसे पढ़कर रो दिया फिर तौबा की और सच्ची तौबा की। जब हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. को पता चला तो आप बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया इसी तरह किया करो। जब तुम देखो कि कोई मुसलमान भाई चूक गया और गुनाह में फंस गया तो उसे सीधा और मज़बूत करो, और उसके लिये अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करो, शैतान के मददगार न बनो।

हज़रत साबत बिनानी रह. फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत मुस्अ़ब बिन ज़ुबैर रज़ि. के साथ कूफ़े के इलाके में

Maktab E Ashraf

था, मैंने एक बाग़ में जाकर दो रक्अ़त नमाज़ शुरू की और इस सूरः मोमिन की तिलावत करने लगा। मैं अभी 'इलैहिल-मसीर'' (यानी शुरू की तीन आयतों) तक पहुँचा ही था कि एक शख़्स ने जो मेरे पीछे सफ़ेद ख़च्चर पर सवार था, जिस पर यमनी चादर थीं, मुझसे कहा जब ''ग़ाफ़िरुज़म्बि'' पढ़ो तो कहो:

يَاغَافِرَالذَّنْبِ اِغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ.

''या ग़ाफ़िरज़्ज़म्बि इग़फ़िर् ली'' (ऐ गुनाहों को बख़्शने वाले मेरे गुनाह बख़्श दे)

और जब ''क़ाबिलित्तौबि'' पढ़ो तो कहो:

يَاقَابِلَ التَّوْبِ اِقْبَلْ تَوْبَتِیْ.

''या क़ाबिलत्तौबि इक़्बिल तौबती'' (ऐ तौबा के क़बूल करने वाले मेरी तौबा क़बूल कर) और जब ''शदीदुल-अ़िक़ाबि'' पढ़ो तो कहो:

يَاشَدِيْدَ الْعِقَابِ لَاتُعَاقِبْنِیْ.

''या शदीदल-अ़िक़ाबि ला तुआ़क़िबनी'' (ऐ सख़्त सज़ा देने वाले मुझे सज़ा न दे)

हज़रत मुस्अ़ब रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने कन-अंखियों से देखा तो मुझे कोई नज़र न आया, नमाज़ से फ़ारिग़ होकर मैं दरवाज़े पर पहुँचा वहाँ लोग बैठे थे, मैंने उनसे पूछा कि क्या कोई शख़्स तुम्हारे पास से गुज़रा है जिस पर यमनी चादरें थीं? उन्होंने कहा नहीं! हमने तो किसी को आते-जाते नहीं देखा। अब लोग ख़्याल करने लगे कि यह हज़रत इलियास अ़लैहिस्सलाम थे। यह रिवायत दूसरी सनद से भी मरवी है और उसमें हज़रत इलियास अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र नहीं। वल्लाहु तआ़ला आलम।

مَا يُجَادِلُ فِیْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِی الْبِلَادِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۖ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۗ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝	अल्लाह तआ़ला की इन आयतों में (यानी क़ुरआन में) वही लोग (नाहक़ के) झगड़े निकालते हैं जो (इसके) इनकारी हैं, सो उन लोगों का शहरों में (अमन व अमान से) चलना-फिरना आपको शुब्हे में न डाले। (4) उनसे पहले नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम ने और दूसरे गिरोहों ने भी जो उनके बाद हुए (जैसे आ़द व समूद वग़ैरह ने सच्चे दीन को) झुठलाया था, और हर उम्मत (में से जो लोग ईमान न लाए थे उन्होंने) अपने पैग़म्बर के गिरफ़्तार करने का इरादा किया और नाहक़ के झगड़े निकाले, ताकि उस नाहक़ से हक़ को बातिल कर दें, सो मैंने (आख़िर) उन पर पकड़ की, सो (देखो) मेरी तरफ़ से (उनको) कैसी सज़ा हुई। (5) और इसी तरह तमाम काफ़िरों पर आपके रब का यह क़ौल साबित हो चुका है कि वे लोग (आख़िरत में) दोज़ख़ी होंगे। (6)

क़ुरआन पर एतिराज़ करने वाले बद-क़िस्मत

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हक़ के ज़ाहिर होने के बाद उसे न मानना और उसमें कमियाँ पैदा करने की कोशिश करना काफ़िरों का ही काम है। ये लोग अगर मालदार और इज़्ज़त वाले हों तो तू किसी धोखे में न पड़ जाना कि अगर ये ख़ुदा के नज़दीक बड़े न होते तो ख़ुदा इन्हें अपनी ये नेमतें क्यों अ़ता फ़रमाता। जैसे एक दूसरी जगह है कि काफ़िरों का शहरों में चलना फिरना तुझे धोखे में न डाले, यह तो कुछ मामूली सा फ़ायदा है, आख़िरी अन्जाम तो उनका जहन्नम है जो बहुत बुरी जगह है। एक और आयत में इरशाद है कि हम इन्हें बहुत कम फ़ायदा दे रहे हैं आख़िरकार इन्हें सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ बेबस कर देंगे। फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने नबी सल्ल. को तसल्ली देता है कि लोगों के झुठलाने की वजह से घबरायें नहीं, अपने से पहले अम्बिया के हालात को देखें कि उन्हें भी उनकी क़ौम ने झुठलाया और उन पर ईमान लाने वालों की भी बहुत कम तायदाद थी। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम जो इनसानों में सबसे पहले रसूल होकर आये, जब लोगों में पहले-पहल बुत-परस्ती शुरू हुई तो उन लोगों ने उन्हें भी झुठलाया और उनके बाद भी जितने अम्बिया आये उन्हें भी उनकी उम्मत झुठलाती रही, बल्कि सब ने अपने-अपने ज़माने के नबी को क़ैद करना और मार डालना चाहा, और बाज़-बाज़ इसमें कामयाब भी हो गये, और अपने शुब्हात और बातिल से हक़ को मग़लूब और कमज़ोर करना चाहा।

तबरानी में रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि जिसने बातिल की मदद ली ताकि हक़ को कमज़ोर करे उससे अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्ल. की ज़िम्मेदारी ख़त्म है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैंने उन बातिल वालों को पकड़ लिया और उनके इन ज़बरदस्त गुनाहों और बदतरीन सरकशियों की बिना पर उन्हें हलाक कर दिया, अब तुम ही बतलाओ कि मेरे अ़ज़ाब उन पर कैसे हुए। यानी बहुत सख़्त निहायत तकलीफ़देह और दुखदायी।

जिस तरह उन पर उनके इस नापाक अ़मल की वजह से मेरे अ़ज़ाब उतर पड़े इसी तरह अब इस उम्मत में से जो इस आख़िरी रसूल को झुठलते हैं इन पर भी मेरे ऐसे ही अ़ज़ाब नाज़िल होने वाले हैं। ये अगरचे दूसरे नबियों को सच्चा मानें लेकिन जब तक तेरी नुबुव्वत के क़ायल न हों इनकी सच्चाई मरदूद (नाक़ाबिले क़बूल) है। वल्लाहु आलम।

जो फ़रिश्ते कि (अल्लाह के) अ़र्श को उठाए हुए हैं और जो फ़रिश्ते उसके इर्द-गिर्द हैं वे अपने रब की तस्बीह व तारीफ़ करते रहते हैं और उस पर ईमान रखते हैं, और ईमान वालों के लिए (इस तरह) इस्तिग़फ़ार किया करते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपकी रहमत (जो कि आ़म है) और इल्म हर चीज़ को शामिल है, सो उन लोगों को बख़्श दीजिए (जिन्होंने शिर्क और कुफ़्र से) तौबा कर ली और आपके रास्ते पर चलते हैं, और उनको जहन्नम के अ़ज़ाब से	اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ

Maktab E Ashraf

الْجَحِيْمِ ۝ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ۣالَّتِىْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ ع ۱

बचा लीजिए। (7) ऐ हमारे परवर्दिगार! उनको हमेशा रहने की जन्नतों में जिनका आपने उनसे वायदा किया है, दाख़िल कर दीजिए, और उनके माँ-बाप और बीवियों और औलाद में जो (जन्नत के) लायक़ (यानी मोमिन) हों उनको भी दाख़िल कर दीजिए, बेशक आप ज़बरदस्त, हिक्मत वाले हैं। (8) और उनको (क़ियामत के दिन हर तरह की) तकलीफ़ों से बचाईए, और आप जिसको उस दिन की तकलीफ़ों से बचा लें तो उस पर आपने (बहुत) मेहरबानी फ़रमाई और यह बड़ी कामयाबी है। (9)

अ़र्श को उठाने वाले और ख़ास फ़रिश्ते

अ़र्श के उठाने वाले चारों फ़रिश्ते और उसके आस-पास के तमाम बेहतरीन बुज़ुर्ग फ़रिश्ते एक तरफ़ तो अल्लाह की पाकी बयान करते हैं, तमाम ऐबों, कमियों और बुराईयों से दूर बतलाते हैं, दूसरी तरफ़ उसे तारीफ़ों के क़ाबिल मानकर उसकी तारीफ़ बजा लाते हैं। ग़र्ज़ जो अल्लाह में नहीं उससे उसका इनकार करते हैं और जो सिफ़तें उसमें हैं उन्हें साबित करते हैं, उस पर ईमान व यक़ीन रखते हैं, उसी से पस्ती और आ़जिज़ी ज़ाहिर करते हैं और तमाम ईमान वाले मर्दों और औ़रतों के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं। चूँकि ज़मीन वालों का ईमान ख़ुदा तआ़ला पर उसे देखे बग़ैर था, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने अपने मुक़र्रब (क़रीबी और ख़ास) फ़रिश्तों को उनके गुनाहों की माफ़ी तलब करने के लिये मुक़र्रर कर दिये, जो उनके बग़ैर देखे हर वक़्त उनकी ख़ताओं की माफ़ी तलब किया करते हैं। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि जब मुसलमान अपने भाई के लिये उसकी ग़ैर-मौजूदगी में दुआ़ करता है तो फ़रिश्ता उसकी दुआ़ पर आमीन कहता है और उसके लिये दुआ़ करता है कि ख़ुदा तुझे भी यही दे जो तू उस मुसलमान के लिये ख़ुदा से माँग रहा है। मुस्नद अहमद में है कि उमैया बिन सुलत के बाज़ अश्आ़र की रसूलुल्लाह सल्ल. ने तस्दीक़ फ़रमाई जैसा कि यह शे'र है:

رَجُلٌ وَّثَوْرٌ تَحْتَ رِجْلِ يَمِيْنِهٖ وَالنَّسْرُ لِلْاُخْرٰى وَلَيْثٌ مُّرْصَدٌ

यानी अ़र्श को उठाने वाले चार फ़रिश्ते हैं, दो एक तरफ़ दो दूसरी तरफ़।

आप सल्ल. ने फ़रमाया सच है, फिर उसने कहा:

وَالشَّمْسُ تَطْلُعُ كُلَّ اٰخِرِ لَيْلَةٍ حَمْرَاءَ يُصْبِحُ لَوْنُهَا يَتَوَرَّدُ

تَاْبٰى فَمَا تَطْلُعُ لَنَا فِىْ رِسْلِهَا اِلَّا مُعَذَّبَةً وَّ اِلَّا تُجْلَدُ

यानी सूरज सुर्ख़ रंग का निकलता है फिर गुलाबी होता है। अपनी शक्ल व हालत में कभी साफ़ ज़ाहिर नहीं होता बल्कि रूखा फीका ही रहता है।

Maktab E Ashraf

आप सल्ल. ने फ़रमाया सच है। इस हदीस की सनद बहुत मज़बूत है और इससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि इस वक़्त अ़र्श को उठाने वाले चार फ़रिश्ते हैं। हाँ क़ियामत के दिन अ़र्श को आठ फ़रिश्ते उठायेंगे जैसा कि क़ुरआन मजीद में है:

وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَانِيَةٌ.

(सूरः हाक़्क़ा आयत 17)

हाँ इस आयत के मतलब और इस हदीस के इस्तिदलाल में एक सवाल रह जाता है कि अबू दाऊद की एक हदीस में है कि बतहा में रसूले करीम सल्ल. ने अपने सहाबा रज़ि. की एक जमाअ़त से एक बादल को गुज़रते हुए देखकर फ़रमाया- इसका क्या नाम है? उन्होंने कहा "सहाब" (बादल)। आप सल्ल. ने फ़रमाया और इसे 'मुज़न' भी कहते हैं? कहा हाँ! फ़रमाया 'अ़नान' भी? अ़र्ज़ किया हाँ! जानते हो आसमान व ज़मीन में किस क़द्र फ़ासला है? सहाबा रज़ि. ने कहा- नहीं। फ़रमाया इकहत्तर या बहत्तर या तिहत्तर साल का रास्ता। फिर उसके ऊपर का आसमान भी पहले आसमान से इतने ही फ़ासले पर है, इसी तरह सातों आसमान हैं। सातवें आसमान पर एक समुद्र है जिसकी इतनी गहराई है फिर उस पर आठ फ़रिश्ते पहाड़ी बकरों की सूरत के हैं जिनके खुर से घुटने तक का फ़ासला भी इतना ही है, उनकी पुश्त पर खुदा तआ़ला का अ़र्श है जिसकी ऊँचाई भी इसी क़द्र है। फिर उसके ऊपर अल्लाह तबारक व तआ़ला है। तिर्मिज़ी में भी यह हदीस है और इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे ग़रीब बतलाते हैं। इससे मालूम होता है कि अ़र्शे खुदावन्दी इस वक़्त आठ फ़रिश्तों के ऊपर है। हज़रत शहर बिन होशब का फ़रमान है कि अ़र्श को उठाने वाले आठ हैं जिनमें से चार की तस्बीह तो यह है:

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى حِلْمِكَ بَعْدَ عِلْمِكَ.

यानी ऐ बारी तआ़ला! तेरी पाक ज़ात ही के लिये हर तरह की तारीफ़ व सना है कि तू बावजूद इल्म के फिर बुर्दबारी और हिल्म (संयम व बरदाश्त) करता है। और दूसरे चार की तस्बीह यह है:

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى عَفْوِكَ بَعْدَ قُدْرَتِكَ.

यानी ऐ अल्लाह तू क़ुदरत के बावजूद जो माफ़ी और दरगुज़र करता रहता है इस पर हम तेरी पाकीज़गी और तेरी तारीफ़ बयान करते हैं।

इसी लिये मोमिनों के इस्तिग़फ़ार में वे यह भी कहते हैं कि खुदाया! तेरी रहमत व इल्म ने हर चीज़ को अपनी वुस्अ़त व कुशादगी में ले लिया है। इनसानों के तमाम गुनाह, उनकी तमाम ख़ताओं पर तेरी रहमत छायी हुई है। इसी तरह तेरा इल्म भी उनके तमाम अक़वाल व अफ़आ़ल को अपने अन्दर लिये हुए है। उनकी तमाम हरकतें और गतिविधियों से तू बख़ूबी वाक़िफ़ है। पस तू उनके बुरे लोगों को जब वे तौबा करें, तेरी तरफ़ झुकें, गुनाहों से बाज़ आ जायें, तेरे अहकाम की तकमील करें, नेकियाँ करें, बदियाँ छोड़ दें तो बख़्श दे, और उन्हें जहन्नम के दर्दनाक घबराहट वाले अ़ज़ाबों से निजात दे, और उन्हें मय उनके माँ-बाप, बीवियों और बच्चों के जन्नत में ले जा, ताकि उनकी आँखें ठंडी रहें, अगरचे उनके आमाल इन जितने न हों फिर भी तू उनके दर्जे बढ़ाकर ऊँचे दर्जों में पहुँचा दे। जैसा कि एक जगह बारी तआ़ला का मुबारक फ़रमान है:

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ...... الخ

MaktabE Ashraf

यानी जो लोग ईमान लायें और उनके ईमान की इत्तिबा उनकी औलाद भी करे, हम उनकी औलाद को भी उनसे मिला देंगे और उनका कोई अ़मल कम न करेंगे। दर्जे में सब को बराबर कर देंगे, ताकि दोनों जानिब की आँखें ठंडी रहें। फिर यह न करेंगे कि दर्जों में बढ़े हुओं को नीचा कर दें, नहीं! बल्कि नीचे वालों को सिर्फ़ अपनी रहमत व एहसान के साथ ऊँचा कर देंगे। हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि मोमिन जन्नत में जाकर पूछेगा कि मेरे बाप मेरे भाई मेरी औलाद कहाँ है? जवाब मिलेगा कि उनकी नेकियाँ इतनी न थीं कि वे इस दर्जे में पहुँचते। यह कहेगा कि मैंने तो अपने लिये और उन सब के लिये अ़मल किये थे। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला उन्हें भी उसके दर्जे में पहुँचा देगा। फिर आपने इसी आयत "रब्बना व अदख़िल्हुम जन्नाति..............." की तिलावत फ़रमाई।

हज़रत मुतर्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह रह. का फ़रमान है कि ईमान वालों की ख़ैरख़्वाही फ़रिश्ते भी करते हैं, फिर आपने यही आयत पढ़ी। और शयातीन उनकी बदख़्वाही करते (यानी बुरा चाहते) हैं। तू ऐसा ग़ालिब है जिस पर कोई ग़ालिब नहीं, और जिसे कोई रोक नहीं सकता। जो तू चाहता है होता है और जो नहीं चाहता नहीं हो सकता। तू अपने अक़वाल व अफ़आ़ल (यानी बातें और आमाल), और शरीअ़त व तक़दीर में हिक्मत वाला है। तू उन्हें बुराईयों के करने से दुनिया में और उनके वबाल से दोनों जहान में महफ़ूज़ रख। क़ियामत के दिन रहमत वाला वही शुमार हो सकता है जिसे तू अपनी सज़ा और अपने अ़ज़ाब से बचा ले। हक़ीक़त में बड़ी कामयाबी और मक़सद तक पहुँचना यही है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللَّهِ
أَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ
إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ○ قَالُوا رَبَّنَا
أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا
بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ مِّنْ سَبِيلٍ ○
ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ ج
وَإِنْ يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا ط فَالْحُكْمُ لِلَّهِ
الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ○ هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَ
يُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ط وَمَا يَتَذَكَّرُ

जो लोग काफ़िर हुए (उस वक़्त) उनको पुकारा जाएगा कि जैसी तुमको (इस वक़्त) अपने आप से नफ़रत है, इससे बढ़कर ख़ुदा को (तुमसे) नफ़रत थी, जबकि तुम (दुनिया में) ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे फिर तुम नहीं मानते थे। (10) वे लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपने हमको दो बार मुर्दा रखा और दो बार ज़िन्दगी दी, सो हम अपनी ख़ताओं का इक़रार करते हैं, तो क्या (यहाँ से) निकलने की कोई सूरत है? (11) वजह इसकी यह है कि जब सिर्फ़ अल्लाह का नाम लिया जाता था तो तुम इनकार करते थे, और अगर उसके साथ किसी को शरीक किया जाता था तो तुम मान लेते थे, सो (उस पर) यह फ़ैसला अल्लाह का है जो आ़लीशान (और) बड़े रुतबे वाला है। (12) वही है जो तुमको अपनी निशानियाँ दिखलाता है, और (वही है जो) आसमान से तुम्हारे लिए रिज़्क़ भेजता है। और सिर्फ़ वही शख़्स नसीहत क़बूल करता है जो

(ख़ुदा की तरफ़) रुजू (करने का इरादा) करता है। (13) सो तुम लोग ख़ुदा को ख़ालिस एतिक़ाद करके पुकारो, अगरचे काफ़िरों को नागवार (ही) क्यों न हो। (14)	اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ○ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ○

Maktab E Ashraf

क़ियामत के दिन काफ़िरों का हाल

क़ियामत के दिन जब काफ़िर आग के कुओं में होंगे, ख़ुदा के अ़ज़ाबों को चख चुके होंगे और तमाम होने वाले अ़ज़ाब निगाहों के सामने होंगे उस वक़्त ख़ुद इस नफ़्स के दुश्मन बन जायेंगे, क्योंकि अपने बुरे आमाल के कारण जहन्नम-रसीद होंगे। उस वक़्त फ़रिश्ते उनसे बुलन्द आवाज़ से कहेंगे कि आज जिस क़द्र तुम अपने आपसे नालाँ (दुखी और बेज़ार) हो और जितनी दुश्मनी तुम्हें ख़ुद अपनी ज़ात से है और जिस क़द्र बुरा तुम आज अपने आपको कह रहे हो इससे बहुत ज़्यादा बुरे तुम ख़ुदा के नज़दीक दुनिया में थे, जब तुम्हें इस्लाम व ईमान की दावत दी जाती थी और तुम उसे मानते न थे। इसके बाद की आयत इस आयत की तरह है:

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ.

भला क्योंकर नाशुक्री करते हो अल्लाह की हालाँकि तुम बिल्कुल बेजान थे (यानी तुम्हारा कोई वजूद न था) सो तुमको जानदार किया, फिर तुमको मौत देंगे, फिर ज़िन्दा करेंगे (यानी क़ियामत के दिन) फिर उनही के पास ले जाये जाओगे। (सूरः ब-क़रह आयत 28)

सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि ये दुनिया में मार डाले गये, फिर क़ब्रों में ज़िन्दा किये गये और सवाल जवाब के बाद मार डाले गये, फिर क़ियामत के दिन ज़िन्दा कर दिये गये। इब्ने ज़ैद रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पीठ से अ़हद के दिन को ज़िन्दा किये गये, फिर माँ के पेट में रूह फूँकी गई, फिर मौत आई, फिर क़ियामत के दिन जी उठे। लेकिन ये दोनों क़ौल ठीक नहीं, इसलिये कि इस तरह तीन मौतें और तीन ज़िन्दगियाँ लाज़िम आती हैं और आयत में दो मौत और दो ज़िन्दगी का ज़िक्र है। सही क़ौल हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा और उनके साथियों का है (यानी माँ के पेट से पैदा होने की एक ज़िन्दगी और क़ियामत के दिन की दूसरी ज़िन्दगी, दुनिया की पैदाईश से पहले की मौत और दुनिया से रुख़्सत होने की मौत, ये दो मौतें और दो ज़िन्दगियाँ मुराद हैं) मक़सूद यह है कि उस दिन काफ़िर लोग अल्लाह तआ़ला से क़ियामत के मैदान में आरज़ू करेंगे कि अब उन्हें दुनिया में एक मर्तबा और भेज दिया जाये। जैसे फ़रमान है:

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ......... الخ

तू देखेगा कि गुनाहगार लोग अपने रब के सामने सर झुकाये होंगे और कह रहे होंगे कि ख़ुदाया हमने देख सुन लिया अब तू हमें फिर दुनिया में भेज दे तो हम नेकियाँ करेंगे और ईमान लायेंगे। लेकिन उनकी यह दुआ़ क़बूल न फ़रमाई जायेगी। फिर अ़ज़ाब व सज़ा को, जहन्नम और उसकी आग को देखेंगे और जहन्नम के किनारे पहुँचा दिये जायेंगे तो दोबारा यही दरख़्वास्त करेंगे और पहली दफ़ा से ज़्यादा ज़ोर देकर कहेंगे। जैसे इरशाद है:

Maktab E Ashraf

وَلَوْ تَرٰىٓ اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ............الخ

यानी काश कि तू देखता जबकि वे जहन्नम के पास ठहरा दिये गये होंगे, कहेंगे काश कि हम दुनिया की तरफ़ लौटाये जाते और अपने रब की बातों को न झुठलाते और ईमान वाले होते, बल्कि इनके लिये वह ज़ाहिर हो गया जो ये अब से पहले छुपा रहे थे। और फ़र्ज़ करो ये वापस लौटाये भी जायें तो भी ये दोबारा वही करने लगेंगे जिससे मना किये गये हैं, ये हैं ही झूठे। इसके बाद जब उन्हें जहन्नम में डाल दिया जायेगा और अज़ाब शुरू हो जायेंगे उस वक़्त और ज़्यादा ज़ोरदार अलफ़ाज़ में यही आरज़ू करेंगे, वहाँ चीख़ते चिल्लाते हुए कहेंगेः

رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا......... الخ

ऐ हमारे परवर्दिगार! हमें यहाँ से निकाल दे, हम नेक आमाल करते रहेंगे, उनके विपरीत जो अब तक करते रहे। जवाब मिलेगा कि क्या हमने इन्हें इतनी उम्र और मोहलत न दी थी कि अगर ये नसीहत हासिल करने वाले होते तो यक़ीनन हासिल कर सकते थे। बल्कि तुम्हारे पास हमने आगाह करने वाले भी भेज दिये थे, अब अपने करतूत का मज़ा चखो, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। कहेंगे ख़ुदाया! हमें यहाँ से निकाल दे, अगर हम फिर वही करेंगे तो यक़ीनन ज़ालिम ठहरेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा दूर हो जाओ, इसी में पड़े रहो और मुझसे कलाम न करो।

इस आयत में उन लोगों ने अपने सवाल से पहले एक भूमिका क़ायम करके सवाल में एक क़िस्म की नर्मी और लचक पैदा कर दी है। अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते कामिला को बयान किया कि बारी तआ़ला हम मुर्दा थे तूने हमें ज़िन्दा कर दिया, फिर मार डाला, फिर ज़िन्दा कर दिया। पस तू हर उस चीज़ पर जिसे तू चाहे क़ादिर है, हमें अपने गुनाहों का इक़रार है, यक़ीनन हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म व ज़्यादती की, अब इस अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहने की कोई सूरत बना दे। यानी हमें दुनिया की तरफ़ लौटा दे जो यक़ीनन तेरी क़ुदरत में है। हम वहाँ जाकर अपने आमाल के ख़िलाफ़ (विपरीत) अच्छे अ़मल करेंगे, अब अगर हम वही काम करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं। उन्हें जवाब दिया जायेगा कि अब दोबारा दुनिया में जाने का कोई रास्ता नहीं, इसलिये कि अगर दोबारा भी चले जाओगे तो फिर भी वही करोगे जिससे मना किये जाओगे। तुमने अपने दिल टेढ़े कर लिये हैं, तुम अब भी हक़ क़बूल न करोगे बल्कि इसके ख़िलाफ़ ही करोगे, तुम्हारी तो यह हालत थी कि जहाँ ख़ुदा-ए-वाहिद का ज़िक्र आया और तुम्हारे दिल में कुफ़्र समाया, हाँ उसके साथ किसी को शरीक किया जाये तो तुम्हें यक़ीन व ईमान आ जाता था। यही हालत तुम्हारी फिर हो जायेगी। दुनिया में अगर दोबारा लौटाये गये तो दोबारा यही करोगे, पस हाकिमे हक़ीक़ी जिसके हुक्म में कोई ज़ुल्म न हो सरासर अ़दल व इन्साफ़ ही हो, वह अल्लाह तआ़ला ही है। जिसे चाहे हिदायत दे, जिसे चाहे न दे, जिस पर चाहे रहम करे, जिसे चाहे अ़ज़ाब करे, उसके हुक्म व अ़दल में कोई उसका शरीक नहीं। वह ख़ुदा अपनी क़ुदरतें लोगों पर ज़ाहिर करता है, ज़मीन व आसमान में उसकी तौहीद (अकेला और तन्हा माबूद होने) की बेशुमार निशानियाँ मौजूद हैं। जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि सब का ख़ालिक़ सब का मालिक सब का पालने वाला और हिफ़ाज़त करने वाला वही है। वह आसमान से रोज़ी उतारता यानी बारिश नाज़िल फ़रमाता है, जिससे हर क़िस्म के अनाज की खेतियाँ और तरह-तरह के अ़जीब-अ़जीब मज़े के मुख़्तलिफ़ रंग रूप और शक्ल व सूरत के मेवे और फल-फूल पैदा होते हैं, हालाँकि पानी एक, ज़मीन एक। पस इससे भी उसकी शान ज़ाहिर है।

Maktab-E-Ashraf

सच तो यह है कि इबरत व नसीहत और फ़िक्र व ग़ौर की तौफ़ीक़ उन्हीं को होती है जो ख़ुदा की तरफ़ रुचि लेने और रुजू करने वाले हों। अब तुम दुआ और इबादत ख़ुलूस के साथ सिर्फ़ एक अल्लाह की किया करो, मुश्रिकों के मज़हब व मस्लक से अलग हो जाओ।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि. हर फ़र्ज़ नमाज़ के सलाम के बाद यह पढ़ते थेः

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ. لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَآءُ الْحَسَنُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ.

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल-मुल्कु व लहुल-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर। ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि ला इला-ह इल्लल्लाहु व ला नअ़्बुदु इल्ला इय्याहु लहुन्निअ़्मतु व लहुल-फ़ज़्लु व लहुस्सनाउल-हसनु ला इला-ह इल्लल्लाहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न व लौ करिहल् काफ़िरून।

और फ़रमाते थे कि रसूलुल्लाह सल्ल. भी हर नमाज़ के बाद इन्हें पढ़ा करते थे। (मुस्नद अहमद)

यह हदीस मुस्लिम और अबू दाऊद वग़ैरह में भी है। इब्ने अबी हातिम में है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला से दुआ करो और मक़बूलियत का यक़ीन रखो कि अल्लाह तआ़ला बेपरवाह है (यानी उसे किसी की ज़रूरत नहीं) और दूसरी तरफ़ के मशग़ूल दिल की दुआ नहीं सुनता (यानी दुआ पूरी तवज्जोह से माँगो, दिल की हुज़ूरी के साथ)।

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِى الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ○ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَىْءٌ ۚ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۚ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ○ اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ○

वह बुलन्द और आला दर्जों वाला है, वह अ़र्श का मालिक है, वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है 'वही' यानी अपना हुक्म भेजता है, ताकि (वह 'वही' वाला लोगों को) जमा होने के दिन (यानी क़ियामत के दिन) से डराए। (15) जिस दिन सब लोग (ख़ुदा के) सामने आ मौजूद होंगे, (कि) उनकी बात ख़ुदा से छुपी न रहेगी। आज के दिन किसकी हुकूमत होगी? बस अल्लाह ही की होगी जो यक्ता (और) ग़ालिब है। (16) आज हर शख़्स को उसके किए का बदला दिया जाएगा, आज (किसी पर) ज़ुल्म न होगा, अल्लाह तआ़ला बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (17)

आज किसकी हुकूमत है?

अल्लाह तआ़ला अपनी बड़ाई व किब्रियाई और अपने अ़र्श की बड़ाई और वुस्अ़त बयान फ़रमाता है

Maktab E Ashraf

जो तमाम मख़्लूक़ पर एक छत की तरह छाया हुआ है। जैसे इरशाद है:

مِنَ اللّٰهِ ذِی الْمَعَارِجِ......... الخ

यानी वह अज़ाब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से होगा जो सीढ़ियों वाला है कि फ़रिश्ते और रूह उसके पास चढ़कर जाते हैं, ऐसे दिन में जिसकी मिक़्दार (मात्रा) पचास हज़ार साल की है और इस बात का बयान इन्शा-अल्लाह तआ़ला आगे आयेगा कि यह दूरी सातों ज़मीन से लेकर अ़र्श तक की है, जैसे कि पहले और बाद के उलेमा और बुज़ुर्गों की एक जमाअ़त का क़ौल है, और यही राजेह (वरीयता प्राप्त) भी है. इन्शा-अल्लाह तआ़ला। बहुत से मुफ़स्सिरीन से मन्क़ूल है कि अ़र्श सुर्ख़ रंग के याक़ूत का है जिसके दो किनारों की वुस्अ़त पचास हज़ार साल की है और जिसकी ऊँचाई सातों ज़मीन से पचास हज़ार साल की है। और इससे पहले उस हदीस में जिसमें फ़रिश्तों का अ़र्श को उठाना बयान हुआ है यह भी गुज़र चुका है कि सातों आसमानों से भी वह बुलन्द और बहुत ऊँचा है। वह जिस पर चाहे 'वही' भेजे। जैसे फ़रमायाः

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ.......... الخ

वह फ़रिश्तों को 'वही' देकर अपने हुक्म से जिसके पास चाहता है भेजता है कि तुम लोगों को आगाह कर दो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मुझसे डरते रहो। एक और जगह फ़रमान है:

اِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.......... الخ

यानी यह क़ुरआन तमाम आ़लम के रब का उतारा हुआ है, जिसे मोतबर फ़रिश्ते ने तेरे दिल पर उतारा है ताकि तू डराने वाला बन जाये।

यहाँ भी फ़रमाया कि वह मुलाक़ात के दिन से डरा दे, जिसमें हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ख़ुद और उनकी औलाद में से सबसे आख़िरी बच्चा एक दूसरे से मिल लेगा। इब्ने ज़ैद रह. फ़रमाते हैं कि बन्दे ख़ुदा से मिलेंगे। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि आसमानों वाले और ज़मीन वाले आपस में मुलाक़ात करेंगे, ख़ालिक़ व मख़्लूक़ ज़ालिम व मज़लूम मिलेंगे। मक़सद यह है कि हर एक दूसरे से मुलाक़ात करेगा। बल्कि आ़मिल (अ़मल करने वाला) और उसका अ़मल भी मिलेगा। आज सब ख़ुदा के सामने होंगे, बिल्कुल ज़ाहिर होंगे, छुपने की तो कहाँ साये की भी कोई जगह न होगी। सब उसके सामने हाज़िर होंगे। उस दिन ख़ुद ख़ुदा फ़रमायेगा कि आज बादशाहत किसकी है? कौन होगा जो जवाब तक दे? फिर ख़ुद ही जवाब देगा कि अल्लाह अकेले की जो हमेशा तन्हा और एक है, और सब पर ग़ालिब व हुक्मराँ है।

पहले हदीस गुज़र चुकी है कि अल्लाह तआ़ला आसमान व ज़मीन को लपेट कर अपने हाथ में ले लेगा और फ़रमायेगा मैं बादशाह हूँ, मैं बड़ाई वाला हूँ, ज़मीन के बादशाह और जब्बार और घमंडी लोग कहाँ हैं? सूर की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला जब तमाम मख़्लूक़ की रूह क़ब्ज़ कर लेगा और उस वह्दहू ला शरीक लहू के सिवा और कोई बाक़ी न रहेगा, उस वक़्त तीन मर्तबा फ़रमायेगा कि आज मुल्क किसका है? फिर ख़ुद ही जवाब देगा कि अल्लाह वाहिद ग़ालिब का है। यानी उसका जो वाहिद (अकेला) है, उसका जो हर चीज़ पर ग़ालिब है, जिसकी मिल्कियत में हर चीज़ है।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि क़ियामत के क़ायम होने के वक़्त एक मुनादी (ऐलान करने वाला) आवाज़ लगायेगा कि लोगो! क़ियामत आ गई जिसे सब मुर्दे सुनेंगे, अल्लाह तआ़ला दुनिया वाले आसमान पर नाज़िल होगा (यानी जैसी उसकी शान है उसके मुताबिक़ अपनी तजल्ली

और ख़ास तवज्जोह के साथ) और कहेगा आज मुल्क किसके लिये है? सिर्फ़ अल्लाह अकेले ग़लबे वाले के लिये है। फिर अल्लाह तआ़ला के अ़दल व इन्साफ़ का बयान हो रहा है कि ज़रा सा भी ज़ुल्म उस दिन न होगा, बल्कि नेकियाँ दस-दस गुनी करके मिलेंगी और बुराईयाँ उतनी ही रखी जायेंगी।

सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. अल्लाह तआ़ला का फ़रमान नक़ल करते हैं कि ऐ मेरे बन्दो! मैंने ज़ुल्म करना अपने ऊपर भी हराम कर लिया है और तुम पर भी हराम कर दिया है, पस तुममें से कोई किसी पर ज़ुल्म न करे। आख़िर में है कि ऐ मेरे बन्दो! यह तो तुम्हारे अपने आमाल हैं, जिन्हें मैं निगाह में रखता हूँ और जिनका पूरा बदला दूँगा। पस जो शख़्स भलाई पाये वह अल्लाह की तारीफ़ करे और जो बुराई पाये वह अपने आपको मलामत करे।

फिर अपने जल्द हिसाब लेने को बयान फ़रमाया कि सारी मख़्लूक़ से हिसाब लेना उस पर ऐसा है जैसे एक शख़्स का हिसाब लेना। जैसे इरशादे बारी है:

مَاخَلْقُكُمْ وَلَابَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ.

यानी तुम सब का पैदा करना और तुम सब को मरने के बाद ज़िन्दा कर देना मेरे नज़दीक एक शख़्स के पैदा करने और ज़िन्दा कर देने के जैसा है। एक और आयत में अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

وَمَآاَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ م بِالْبَصَرِ.

यानी हमारे हुक्म के साथ ही काम हो जाता है, इतनी देर में जैसे किसी ने आँख बन्द करके खोल ली।

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ؕ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ۝ وَاللّٰهُ يَقْضِىْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَىْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ ع	और आप उन लोगों को एक क़रीब आने वाले मुसीबत के दिन से (जो कि क़ियामत का दिन है) डराईए, जिस वक़्त कलेजे मुँह को आ जाएँगे (और ग़म से) घुट-घुट जाएँगे। (उस दिन) ज़ालिमों का न कोई दिली दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिशी होगा जिसका कहा माना जाए। (18) (वह ऐसा है कि) आँखों की चोरी को जानता है, और उन (बातों) को भी जो सीनों में छुपी हैं। (19) और अल्लाह तआ़ला ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा। और ख़ुदा के सिवा जिनको ये लोग पुकारा करते हैं, वे किसी तरह का भी फ़ैसला नहीं कर सकते, (क्योंकि) अल्लाह ही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। (20)

यह मुसीबत भरा दिन

'आज़िफ़तु' क़ियामत का एक नाम है। इसलिये कि वह बहुत ही क़रीब है। जैसे फ़रमान है:

اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ.......... الخ

Maktab E Ashraf

यानी क़रीब आने वाली क़रीब हो चुकी है, जिसका खोलने वाला सिवाय अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं। एक और जगह इरशाद है:

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ.......... الخ

क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद फट गया। एक दूसरी जगह फ़रमान है:

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ.

लोगों के हिसाब का वक़्त क़रीब आ गया। एक और जगह फ़रमान है:

اَتٰٓى اَمْرُاللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ.

अल्लाह का अम्र (हुक्म और मामला) आ चुका, तुम इसमें जल्दी न करो। एक दूसरी आयत में है:

فَلَمَّارَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا.

यानी जब उसे क़रीब से देख लेंगे तो काफ़िरों के चेहरे सियाह पड़ जायेंगे।

ग़र्ज़ कि इसी नज़दीकी की वजह से क़ियामत का नाम 'आज़िफ़तु' है। उस वक़्त कलेजे मुँह को आ जायेंगे। वह ख़ौफ़ व घबराहट होगी कि किसी का दिल ठिकाने न रहेगा। सब पर ग़ज़ब का सन्नाटा छाया हुआ होगा। किसी के मुँह से कोई बात न निकलेगी, क्या मजाल है कि बिना इजाज़त कोई लब हिला सके। सब रो रहे होंगे और हैरान व परेशान होंगे। जिन लोगों ने अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क करके अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है उनका आज कोई दोस्त और ग़मगुसार न होगा, जो उन्हें काम आये। न शफ़ी और सिफ़ारिशी होगा जो उनकी शफ़ाअ़त के लिये ज़बान हिलाये, बल्कि हर भलाई के असबाब (साधन) कट चुके होंगे, उस ख़ुदा का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है। तमाम छोटी-बड़ी छुपी-खुली बारीक बातें उस पर बराबर ज़ाहिर व रोशन हैं। इतने बड़े इल्म वाले से जिससे कोई चीज़ छुपी नहीं, हर शख़्स को डरना चाहिये और किसी वक़्त यह ख़्याल न करना चाहिये कि इस वक़्त वह मुझसे पोशीदा है और मेरे हाल की उसे इत्तिला नहीं, बल्कि हर वक़्त यह यक़ीन करके कि वह मुझे देख रहा है, उसका इल्म मेरे साथ है, उसका लिहाज़ करता रहे और उसके रोके हुए कामों से रुका रहे, आँख जो ख़ियानत के लिये उठती है अगरचे बज़ाहिर वह अमानत ज़ाहिर करे लेकिन रब्बे अ़लीम पर वह छुपी नहीं। सीने के जिस कोने में जो ख़्याल छुपा हुआ हो और दिल में जो बात चुपके से उठती हो उसका उसे इल्म है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस आयत में मुराद वह शख़्स है जो जैसे किसी घर में गया, वहाँ कोई ख़ूबसूरत औरत है, या वह आ-जा रही है तो यह कन-अँखियों से उसे देखता है, जहाँ किसी की नज़र पड़ी तो निगाह फेर ली और जब मौक़ा पाया आँख उठाकर देख लिया। पस ख़ियानत करने वाली आँख की ख़ियानत को और उसके दिल के राज़ को ख़ुदा-ए-अ़लीम तो ख़ूब जानता है कि उसके दिल में तो यह है कि अगर मुम्किन हो तो उसके अन्दर के छुपे अंगों को भी देख ले। हज़रत ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद आँख मारना, इशारे करना और बिन देखी चीज़ को देखी हुई या देखी हुई चीज़ को अनदेखी बताना है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि निगाह जिस नीयत से डाली जाये वह ख़ुदा पर रोशन है। फिर सीने में छुपा हुआ ख़्याल कि अगर मौक़ा मिले और बस चले तो आया यह बदकारी से बाज़ रहेगा या नहीं, यह भी वह जानता है।

सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि दिलों के वस्वसों (ख़्यालात) से वह आगाह है, वह अ़दल के साथ हुक्म करता है, क़ादिर है कि नेकी का अच्छा बदला दे और बुराई की सज़ा बुरी दे। वह सुनने देखने वाला है। जैसे एक जगह फ़रमान है कि वह बुरों को उनकी करनी की सज़ा और भलों को उनकी भलाई की जज़ा इनायत फ़रमायेगा। जो लोग उसके सिवा दूसरों को पुकारते हैं चाहे वे बुत और तस्वीरें हों चाहे और कुछ, वे चूँकि किसी चीज़ के मालिक नहीं, उनकी हुकूमत ही नहीं तो हुक्म और फ़ैसले करेंगे ही नहीं। अल्लाह अपनी मख़्लूक़ के अक़्वाल (बातों) को सुनता है। उनके अहवाल (हालात) को देख रहा है, जिसे चाहे राह दिखाता है, जिसे चाहे गुमराह करता है। उसका इसमें भी पूरी तरह अ़दल व इन्साफ़ है।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ط كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ط وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ٥ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ط اِنَّهٗ قَوِىٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ٥	क्या उन लोगों ने मुल्क में चल-फिरकर नहीं देखा कि जो (काफ़िर) लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उनका क्या अन्जाम हुआ, वे लोग ताक़त और उन निशानों में जो कि ज़मीन पर छोड़ गए हैं, उनसे बहुत ज़्यादा थे। सो उनके गुनाहों की वजह से ख़ुदा ने उन पर पकड़ फ़रमाई, और उनका कोई ख़ुदा (के अ़ज़ाब) से बचाने वाला न हुआ। (21) यह (पकड़) इस वजह से हुई कि उनके पास उनके रसूल रोशन दलीलें लेकर आते रहे, फिर उन्होंने न माना, तो अल्लाह ने उनपर पकड़ फ़रमाई, बेशक वह बड़ी क़ुव्वत वाला, सख़्त सज़ा देने वाला है। (22)

दुनिया में घूम-फिरकर उसकी निशानियाँ देखो

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ नबी! क्या तेरी रिसालत के झुठलाने वाले काफ़िरों ने अपने से पहले के रसूलों के झुठलाने वाले काफ़िरों की हालतों को इधर-उधर चल-फिरकर नहीं देखा? जो इनसे ज़्यादा क़वी, ताक़तवर और लम्बे-चौड़े थे। जिनके मकानात और आ़लीशान इमारतों के खंडरात अब भी मौजूद हैं। जो इनसे ज़्यादा शान व शौकत वाले थे, इनसे बड़ी उम्रों वाले थे। जब उनके कुफ़्र और गुनाहों की वजह से अ़ज़ाबे इलाही उन पर आया तो न तो कोई उसे हटा सका न किसी में मुक़ाबले की ताक़त पाई गई, न उससे बचने की कोई सूरत निकली, अल्लाह का ग़ज़ब उन पर बरस पड़ने की वजह यह हुई कि उनके पास भी उनके रसूल स्पष्ट दलीलें और साफ़ रोशन हुज्जतें लेकर आये, इसके बावजूद उन्होंने कुफ़्र किया जिस पर ख़ुदा ने उन्हें हलाक कर दिया, और काफ़िरों के लिये उन्हें इबरत और सबक़ का सामान बना दिया। ख़ुदा तआ़ला पूरी ताक़त वाला, सख़्त पकड़ वाला, शदीद अ़ज़ाब वाला है। हमारी दुआ़ है कि वह हमें अपने तमाम अ़ज़ाबों से निजात दे। आमीन

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ
مُّبِيْنٍ ○ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ
فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ○ فَلَمَّا جَآءَهُمْ
بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ط
وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ○ وَقَالَ
فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ
رَبَّهٗ ج اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ
اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ○ وَقَالَ
مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ
مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ○ ع ٣ ع ٧ ٨

और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को अपने अहकाम और खुली दलील के साथ (23) फ़िरऔन और हामान और क़ारून के पास भेजा, तो उन लोगों ने कहा कि यह जादूगर (और) झूठा है। (24) फिर (उसके बाद) जब वह (आ़म) लोगों के पास हक़ दीन जो कि हमारी तरफ़ से था, लेकर आए तो उन (ज़िक्र शुदा) लोगों ने (मश्विरे के तौर पर) कहा कि जो लोग उनके साथ ईमान ले आए हैं उनके बेटों को क़त्ल कर डालो और उनकी लड़कियों को ज़िन्दा रहने दो, और उन काफ़िरों की तदबीर बिल्कुल बेअसर रही। (25) और फ़िरऔन ने (दरबारियों से) कहा कि मुझको छोड़ दो मैं मूसा को क़त्ल कर डालूँ, और उसको चाहिए कि अपने परवर्दिगार को (मदद के लिए) पुकारे, मुझको अन्देशा है कि वह (कहीं) तुम्हारा दीन (न) बदल डाले, या मुल्क में कोई ख़राबी (न) फैला दे। (26) और मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने (जब यह बात सुनी तो) कहा कि मैं अपने और तुम्हारे (यानी सबके) परवर्दिगार की पनाह लेता हूँ हर तकब्बुर करने वाले शख़्स (की बुराई) से, जो हिसाब के दिन पर यक़ीन नहीं रखता। (27)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़

अल्लाह तआ़ला अपने आख़िरी रसूल को तसल्ली देने के लिये पहले रसूलों के क़िस्से बयान फ़रमाता है कि जिस तरह अन्जामकार फ़तह व कामयाबी उनके साथ रही इसी तरह आप भी इन काफ़िरों से कोई अन्देशा न कीजिये। मेरी मदद आपके साथ है। अन्जामकार (अंततः) आप ही की बेहतरी और बरतरी होगी। जैसा कि हज़रत मूसा बिन इमरान अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़ आपके सामने है कि हमने उन्हें दलाईल और हुज्जतों के साथ भेजा, क़िब्तियों के बादशाह फ़िरऔन की तरफ़ जो मिस्र का सुल्तान था, और हामान की तरफ़ जो उसका मुख्य मंत्री था, और क़ारून की तरफ़ जो उसके ज़माने में सबसे ज़्यादा दौलतमन्द था और ताजिरों का बादशाह समझा जाता था। इन बदनसीबों ने ख़ुदा के इस ज़बरदस्त रसूल को झुठलाया, उनकी तौहीन की और साफ़ कह दिया कि यह तो जादूगर और झूठा है। यही जवाब अगली उम्मतों के काफ़िरों का भी अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को मिलता रहा। जैसे इरशाद हैः

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ........ الخ

यानी इसी तरह इनसे पहले भी जितने रसूल आये सबसे उनकी क़ौम ने यही कहा कि यह जादूगर है या दीवाना है। क्या उन्होंने इस पर सर्वसम्मति से कोई प्रस्ताव तय कर रखा है? नहीं! बल्कि दर असल ये सब के सब सरकश और नाफ़रमान लोग हैं। जब हमारे रसूल मूसा उनके पास हक़ लाये और अपनी रिसालत पर ज़बरदस्त दलीलें क़ायम कर दीं तो उन लोगों ने रसूलों को सताना और दुख पहुँचाना शुरू किया और फ़िरऔन ने हुक्म जारी कर दिया कि इस रसूल पर जो ईमान लाये हैं उनके यहाँ जो लड़के हों उन्हें क़त्ल कर दो और जो लड़कियाँ हों उन्हें ज़िन्दा छोड़ दो। इससे पहले भी वह यह हुक्म जारी कर चुका था। इसलिये कि उसे ख़ौफ़ था कि कहीं हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पैदा न हो जायें, या इसलिये कि बनी इस्राईल की तायदाद कम करे, और उन्हें कमज़ोर व बेताक़त बना दे। और मुम्किन है कि दोनों मस्लेहतें सामने हों और अब दोबारा हुक्म की वजह तो यही थी कि यह जमाअत मग़लूब (दबी) रहे और इनकी गिनती न बढ़े, और यह पस्त व ज़लील रहे, या यह कि इन्हें ख़्याल हो कि हमारी इस मुसीबत का कारण हज़रत मूसा हैं। चुनाँचे बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि आपके आने से पहले भी हमें ईज़ा (तकलीफ़ें और यातनायें) दी गईं और आपके तशरीफ़ लाने के बाद भी हम सताये गये। आपने जवाब दिया कि तुम जल्दी न करो, बहुत मुम्किन है कि अल्लाह तआला दुश्मन को बरबाद कर दे और तुम्हें ज़मीन का ख़लीफ़ा (मालिक व वारिस) बनाये। फिर देखे कि तुम कैसे अमल करते हो।

हज़रत क़तादा रह. का क़ौल है कि फ़िरऔन का यह हुक्म दोबारा था। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि काफ़िरों का फ़रेब और उनकी यह पॉलीसी कि बनी इस्राईल फ़ना हो जायें, थी ही बेफ़ायदा और फ़ुज़ूल। फ़िरऔन का बुरा इरादा बयान हो रहा है कि उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल का इरादा किया और अपनी क़ौम से कहा कि मुझे छोड़ो मैं मूसा को क़त्ल कर डालूँगा, वह अपने ख़ुदा को भी अपनी मदद पर पुकारे, मुझे कोई परवाह नहीं। मुझे डर है कि अगर उसे ज़िन्दा छोड़ा गया तो वह तुम्हारे दीन को बदल देगा, तुम्हारी आदत और रस्मों को तुमसे छुड़ा देगा और ज़मीन में एक फ़साद (बिगाड़) फैला देगा। इसी लिये अरब में यह कहावत मशहूर हो गई थी:

صَارَفِرْعَوْنُ مُذَكِّرًا.

यानी फ़िरऔन भी नसीहत करने वाला बन गया।

हज़रत मूसा को जब यह इरादा मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया मैं उसकी और उस जैसों की बुराई से ख़ुदा की पनाह में आता हूँ। ऐ मेरे मुख़ातब लोगो! मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह में आता हूँ हर उस शख़्स के तलीफ़ पहुँचाने और सताने से जो हक़ से तकब्बुर (घमंड) करने वाला और क़ियामत के दिन पर ईमान न रखने वाला हो।

फ़ायदाः हदीस शरीफ़ में है कि जब जनाब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसी क़ौम से ख़ौफ़ होता तो आप यह दुआ पढ़तेः

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ وَنَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ.

अल्लाहुम्-म इन्ना नऊज़ु बि-क मिन् शुरूरिहिम व नज्अ़लु-क फ़ी नुहूरिहिम।

यानी ऐ अल्लाह! उनकी बुराई से हम तेरी पनाह में आते हैं और हम तुझे उनके मुक़ाबले में करते हैं।

Maktaba Ashraf

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۡ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ۭ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۝

और (उस मश्विरे की मज्लिस में) एक मोमिन शख़्स ने जो कि फ़िरऔन के ख़ानदान से थे, (और अब तक) अपना ईमान छुपाकर रखे हुए थे, कहा क्या तुम एक शख़्स को (सिर्फ़) इस बात पर क़त्ल करते हो कि वह कहता है कि मेरा परवर्दिगार अल्लाह है, हालाँकि वह तुम्हारे रब की तरफ़ से (इस दावे पर) दलीलें (भी) लेकर आया है। और अगर (मान लो) वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा, और अगर वह सच्चा हुआ तो वह जो कुछ पेशीनगोई "यानी भविष्यवाणी" कर रहा है उसमें से कुछ तो तुम पर (ज़रूर ही) पड़ेगा। अल्लाह तआला ऐसे शख़्स को मक़सूद तक नहीं पहुँचाता जो (अपनी) हद से गुज़र जाने वाला, बहुत झूठ बोलने वाला हो। (28) ऐ मेरे भाईयो! आज तो तुम्हारी हुकूमत है कि इस सरज़मीन में तुम हाकिम हो, सो ख़ुदा के अ़ज़ाब में हमारी कौन मदद करेगा अगर (उनके क़त्ल करने से) वह हम पर आ पड़ा? फ़िरऔन ने (यह तक़रीर सुनकर जवाब में) कहा कि मैं तुमको वही राय दूँगा जो ख़ुद समझ रहा हूँ (कि उनका क़त्ल ही मुनासिब है) और मैं तुमको बिल्कुल मस्लेहत का तरीक़ा बतलाता हूँ। (29)

एक मोमिन शख़्स की हक़-गोई

मशहूर तो यही है कि यह मोमिन क़िब्ती थे (अल्लाह तआला उन पर अपनी बेशुमार रहमतें नाज़िल फ़रमाये) और फ़िरऔन के ख़ानदान में से थे, बल्कि सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि यह फ़िरऔन के चचाज़ाद भाई थे। और यह भी कहा गया है कि इन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ निजात पाई थी। इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसी क़ौल को पसन्द फ़रमाते हैं, बल्कि जिन लोगों का क़ौल है कि यह मोमिन भी इस्राईली थे, आपने उनकी तरदीद की है और कहा है कि अगर यह इस्राईली होते तो न फ़िरऔन इस तरह सब्र से इनकी नसीहत सुनता, न हज़रत मूसा के क़त्ल के इरादे से बाज़ आता। बल्कि इन्हें तकलीफ़ पहुँचाता। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि आले फ़िरऔन में से एक तो यह मर्द ईमान वाला था और दूसरे फ़िरऔन की बीवी ईमान लाई थीं। तीसरा वह शख़्स जिसने हज़रत मूसा को ख़बर दी थी कि सरदारों का मश्विरा तुम्हें क़त्ल करने का हो रहा है। यह अपने ईमान को छुपाते रहे थे, लेकिन हज़रत मूसा

के क़त्ल की ख़बर सुनकर बरदाश्त न हो सका और यही दर हक़ीक़त सबसे बेहतर और अफ़ज़ल जिहाद है कि ज़ालिम बादशाह के सामने इनसान हक़ बात कह दे, जैसा कि हदीस शरीफ़ में है, और फ़िरऔन के सामने इससे ज़्यादा बड़ा कलिमा कोई न था।

पस यह शख़्स बहुत बड़े मर्तबे के मुजाहिद थे, जिनके मुक़ाबले का कोई नज़र नहीं पड़ता। अलबत्ता सही बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरह में एक वाक़िआ कई रिवायतों से मौजूद है, जिसका ख़ुलासा यह है कि हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर रज़ि. ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ि. से एक मर्तबा पूछा कि सबसे बड़ी तकलीफ़ (यातना) मुश्रिकों ने रसूलुल्लाह सल्ल. को क्या पहुँचाई है? आपने फ़रमाया सुनो! एक रोज़ हुज़ूर सल्ल. काबा शरीफ़ में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक़्बा बिन अबी मुईत आया और आप सल्ल. को पकड़ लिया, और अपनी चादर के बल घसीटने लगा, जिससे आप सल्ल. का गला मुबारक घुटने लगा। उसी वक़्त हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. दौड़े भागे आये, उसे धक्का देकर दूर फेंका और फ़रमाने लगे क्या तुम उस शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो जो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वह तुम्हारे पास दलीलें लेकर आया है?

एक और रिवायत में है कि क़ुरैशियों का मजमा जमा था, जब आप सल्ल. वहाँ से गुज़रे तो उन्होंने कहा क्या तू ही है जो हमें हमारे बाप-दादों के माबूदों की इबादत से मना करता है? आपने फ़रमाया हाँ मैं ही हूँ। इस पर वे सब आप सल्ल. को लिपट गये और कपड़े घसीटने लगे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने आकर आपको बचा लिया और आँसू बहाते हुए बुलन्द आवाज़ से उनसे यह फ़रमाया और पूरी आयत 'अ-तक़्तुलू-न रजुलन्.........' की तिलावत की (जिसका मतलब यही है कि क्या तुम ऐसे शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो जो यह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है....... यानी यह तो कोई क़सूर नहीं)।

पस उस मोमिन ने भी यही कहा कि उसका क़सूर तो सिर्फ़ इतना ही है कि वह अपना रब अल्लाह को बतलाता है, और जो कुछ कहता है उस पर सनद और दलील पेश करता है। अच्छा मान लो वह झूठा है तो उसके झूठ का वबाल उसी पर पड़ेगा। अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला उसे दुनिया और आख़िरत में सज़ा देगा। और अगर वह सच्चा है और तुमने उसे सताया, दुख पहुँचाया तो यक़ीनन तुम पर अ़ज़ाबे ख़ुदा बरस पड़ेगा। जैसे कि वह कह रहा है। पस अ़क़्ल के एतिबार से लाज़िम है कि तुम उसे छोड़ दो, जो लोग उसकी मान रहे हैं मानें, तुम क्यों उसको सताने के पीछे पड़े हो? हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने भी फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों से यही चाहा था। जैसे इन आयतों में है:

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ .... فَاعْتَزِلُوْنَ.

यानी हमने उनसे पहले क़ौमे फ़िरऔन को आज़माया, उनके पास रसूले करीम भेजा। उसने कहा कि अल्लाह के बन्दों को मुझे सौंप दो। मैं तुम्हारी तरफ़ रब का रसूले अमीन हूँ। तुम ख़ुदा से बग़ावत न करो देखो मैं तुम्हारे पास खुली दलीलें और ज़बरदस्त मोजिज़े लाया हूँ। तुम मुझे संगसार कर दोगे इससे मैं ख़ुदा की पनाह लेता हूँ अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझे छोड़ दो।

यही जनाब रसूले मक़बूल सल्ल. ने अपनी क़ौम से फ़रमाया था कि ख़ुदा के बन्दों को ख़ुदा की तरफ़ मुझे बुलाने दो, तुम मुझको सताने से बाज़ रहो और मेरी रिश्तेदारी और अपने साथ ख़ानदानी ताल्लुक़ का ख़्याल करते हुए मुझे दुख न पहुँचाओ। सुलह हुदैबिया भी दर असल यही चीज़ थी जो खुली फ़तह कहलाई।

वह मोमिन कहता है कि सुनो हद से निकलने वाले और झूठे आदमी हिदायत और सही रास्ता पाने वाले नहीं होते, उनके साथ ख़ुदाई मदद नहीं होती, उनके अक़वाल व अफ़आ़ल (बातें और काम) बहुत

जल्दी उनकी ख़बासत (बुराई) को ज़ाहिर कर देते हैं। इसके विपरीत यह अल्लाह के नबी इख़्तिलाफ़ व विवाद से पाक हैं, सही सच्ची और अच्छी राह पर हैं। ज़बान के सच्चे अ़मल के पक्के हैं। अगर यह हद से गुज़र जाने वाले और झूठे होते तो यह सच्चाई और यह ख़ूबी इनमें हरगिज़ न होती।

फिर क़ौम को नसीहत करते हैं और उन्हें ख़ुदाई अ़ज़ाबों से डराते हैं। भाईयो! तुम्हें अल्लाह ने इस मुल्क की सल्तनत (हुकूमत) अ़ता फ़रमाई है। बड़ी इज़्ज़त दी है। तुम्हारा हुक्म जारी कर रखा है। ख़ुदा की इस नेमत पर तुम्हें उसका शुक्र अदा करना चाहिये और उसके रसूलों को सच्चा मानना चाहिये। याद रखो अगर तुमने नाशुक्री की और रसूल की तरफ़ बुरी नज़रें डालीं तो यक़ीनन अल्लाह का अ़ज़ाब तुम पर आ जायेगा। बतलाओ उस वक़्त किसे पुकारोगे जो तुम्हारी मदद पर खड़ा हो और ख़ुदा के अ़ज़ाबों को रोके या टाले? यह लाव-लश्कर यह जान व माल कुछ काम न आयेंगे। फ़िरऔ़न से और तो कोई माक़ूल जवाब बन न पड़ा, खिसयाना बनकर क़ौम में अपनी ख़ैरख़्वाही जताने लगा कि मैं तुम्हें धोखा नहीं दे रहा, जो मेरा ख़्याल है और मेरे ज़ेहन में है वही तुम पर ज़ाहिर कर रहा हूँ। हालाँकि वास्तव में यह भी उसकी ख़ियानत (दिल की चोरी और झूठ) थी। वह अच्छी तरह जानता था कि हज़रत मूसा ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ.

यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- ऐ फ़िरऔ़न! तू ख़ूब जानता है कि आसमान व ज़मीन के यह अ़जायबात (निशानियाँ) परवर्दिगार ने भेजे हैं, जो कि समझ और अ़क़्ल का ज़रिया हैं। एक और आयत में इरशाद है:

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا............ الخ

यानी उन्होंने बावजूद दिली यक़ीन के ज़ुल्म व ज़्यादती के तौर पर इनकार कर दिया।

इसी तरह उसका यह कहना भी सरासर ग़लत था कि मैं तुम्हें हक़ की, सच्चाई की और भलाई की राह दिखाता हूँ। इसमें वह लोगों को धोखा दे रहा था और अपनी मातहत प्रजा की ख़ियानत कर रहा था। लेकिन उसकी क़ौम उसके धोखे में आ गई और फ़िरऔ़न की बात मान ली। फ़िरऔ़न ने उन्हें कोई भलाई की राह पर न डाला। उसका काम ठीक था ही नहीं। एक दूसरी जगह अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम को बहका दिया और उन्हें सही राह तक न पहुँचने दिया, न पहुँचाया। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो इमाम (मुक़्तदा और रहबर) अपनी रियाया (प्रजा और मानने वालों) से ख़ियानत खेल रहा हो वह मरकर जन्नत की ख़ुशबू भी नहीं पाता। हालाँकि वह ख़ुशबू पाँच सौ साल की दूरी से आती है। अल्लाह तआ़ला हमें ख़ैर व भलाई की तौफ़ीक़ से नवाज़े, आमीन।

और उस मोमिन ने कहा साथियो! मुझको तुम्हारे बारे में और उम्मतों के जैसे बुरे दिन का अन्देशा है। (30) जैसा कि क़ौमे नूह और आ़द और समूद और उनके बाद वालों (यानी क़ौमे लूत वग़ैरह) का हाल हुआ था, और अल्लाह तो बन्दों पर किसी तरह का ज़ुल्म करना नहीं	وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ۙ مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ

بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۝ وَ يٰقَوْمِ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِىْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۭ حَتّٰىٓ اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۝ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِىْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰهُمْ ۭ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝

चाहता। (31) और साहिबो! मुझको तुम्हारे बारे में उस दिन का अन्देशा है जिसमें कसरत से आवाज़ें दी जाएँगी। (32) जिस दिन (हिसाब की जगह से) पीठ फेरकर (दोज़ख़ की तरफ़) लौटोगे (और उस वक़्त) तुमको ख़ुदा तआ़ला से कोई बचाने वाला न होगा, और जिसको ख़ुदा ही गुमराह करे उसका कोई हिदायत करने वाला नहीं। (33) और इससे पहले तुम लोगों के पास यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम नुबुव्वत और तौहीद की) दलीलें लेकर आ चुके हैं। सो तुम उन उमूर में भी बराबर शक ही में रहे जो वह तुम्हारे पास लेकर आए थे, यहाँ तक कि जब उनकी वफ़ात हो गई तो तुम लोग कहने लगे कि बस अब अल्लाह किसी रसूल को न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह तआ़ला आपे से बाहर हो जाने वालों (और) शुब्हात में गिरफ़्तार रहने वालों को ग़लती में डाले रखता है। (34) जो अपने पास मौजूद बिना किसी सनद के ख़ुदा की आयतों में झगड़े निकाला करते हैं, उस (उल्टी बहस) से ख़ुदा तआ़ला को भी बड़ी नफ़रत है और मोमिनों को भी। (और) इसी तरह अल्लाह तआ़ला हर ग़ुरूर करने वाले ज़ालिम के पूरे दिल पर मोहर कर देता है। (35)

मोमिन का क़ियामत के दिन से डराना

उस मोमिन की नसीहत का आख़िरी हिस्सा बयान हो रहा है कि उसने फ़रमाया- देखो तुमने ख़ुदा के रसूल की न मानी और अपनी सरकशी पर अड़े रहे तो मुझे डर है कि कहीं पहली उम्मतों की तरह तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब न बरस पड़े। क़ौमे नूह, आ़द वालों और समूद वालों को देख लो कि पैग़म्बरों की न मानने के वबाल में उन पर कैसे अ़ज़ाब आये, और कोई न हुआ जो उस अ़ज़ाब को टालता या रोकता। उसमें ख़ुदा का ज़ुल्म न था, उसकी ज़ात बन्दों पर ज़ुल्म करने से पाक है। उनके अपने करतूत थे जो उनके लिये वबाले जान बन गये। मुझे तुम पर क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब का भी डर है जो हाँक पुकार का दिन है। सूर की हदीस में है कि जब ज़मीन में ज़लज़ला आयेगा और ज़मीन फट जायेगी तो लोग मारे घबराहट के इधर-उधर परेशान हवास भागने लगेंगे और एक दूसरे को आवाज़ देंगे। इमाम ज़स्हाक रह. वग़ैरह का क़ौल है कि यह उस वक़्त का ज़िक्र है जब जहन्नम लाई जायेगी और लोग उसे देखकर डरकर भागेंगे और

Maktab E Ashraf

फ़रिश्ते उन्हें मैदाने हश्र की तरफ़ वापस लायेंगे। जैसे फ़रमाने ख़ुदा है:

وَالْمَلَكُ عَلٰٓی اَرْجَآئِهَا.

यानी फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे। एक और जगह फ़रमायाः

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا........ الخ

यानी ऐ इनसानो और जिन्नो! अगर तुम ज़मीन व आसमान के किनारों पर भाग निकलने की ताक़त रखते हो तो निकल भागो, लेकिन यह तुम्हारे बस की बात नहीं।

कहा गया है कि जिस तराज़ू में अ़मल तौले जायेंगे वहाँ एक फ़रिश्ता होगा, जिसकी नेकियाँ बढ़ जायेंगी वह बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहेगा कि लोगो! फ़ुलाँ का लड़का फ़ुलाँ सआ़दत (भलाई और नेकबख़्ती) वाला हो गया और आज के बाद उस पर बदबख़्ती कभी नहीं आयेगी। और अगर उसकी नेकियाँ घट गईं तो फ़रिश्ता बुलन्द आवाज़ से कहेगा कि फ़ुलाँ पुत्र फ़ुलाँ बदनसीब और तबाह व बरबाद हो गया। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि क़ियामत को 'यौमुत्तनाद' इसलिये कहा गया है कि जन्नती जन्नतियों और जहन्नमी जहन्नमियों को पुकारेंगे और आमाल के साथ पुकारेंगे। और यह भी कहा गया है कि वजह यह है कि जन्नती जहन्नमियों को पुकारेंगे और कहेंगे कि हमारे रब ने हमसे जो वायदा किया था वह हमने सच्चा पाया। तुम बतलाओ कि तुमने भी अपने रब का वायदा सच्चा पाया? वे जवाब देंगे कि हाँ।

इसी तरह जहन्नमी जन्नतियों को पुकार कर कहेंगे कि हमें थोड़ा सा पानी ही छुआ दो, या वह कुछ दे दो जो ख़ुदा ने तुम्हें दे रखा है। जन्नती जवाब देंगे कि यहाँ के खाने पीने को ख़ुदा ने काफ़िरों पर हराम कर दिया है। इसी तरह सूरः आराफ़ में यह भी बयान है कि आराफ़ वाले जहन्नमियों और जन्नतियों को पुकारेंगे। इमाम बग़वी रह. फ़रमाते हैं कि ये तमाम बातें हैं और इन सब कारणों की बिना पर क़ियामत के दिन का नाम 'यौमुत्तनाद' है। यही क़ौल मुनासिब है। वल्लाहु आलम।

उस दिन लोग पीठ फेरकर भाग खड़े होंगे लेकिन भागने की कोई जगह न पायेंगे और कह दिया जायेगा कि आज ठहरने की जगह यही है। उस दिन कोई न होगा जो बचा सके और ख़ुदा के अ़ज़ाब से छुड़ा सके। बात यह है कि ख़ुदा के सिवा कोई हर चीज़ पर क़ादिर नहीं, वह जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता है।

फिर फ़रमाता है कि इससे पहले मिस्र वालों के पास युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के पैग़म्बर बनकर आये थे। आपकी बेसत हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से पहले हुई थी। अ़ज़ीज़े मिस्र भी आप ही थे और अपनी उम्मत को ख़ुदा की तरफ़ बुलाते थे। लेकिन क़ौम ने उनकी इताअ़त न की, हाँ दुनियावी ओ़हदे और मंत्री होने की वजह से उन्हें मातहती करनी (बात माननी) पड़ती थी। पस फ़रमाता है कि तुम उनकी नुबुव्वत की तरफ़ से भी शक में ही रहे। आख़िर जब इन्तिक़ाल हो गया तो तुम बिल्कुल मायूस हो गये और आरज़ू करते हुए कहने लगे कि अब तो अल्लाह तआ़ला किसी को नबी बनाकर भेजेगा ही नहीं। यह था उनका कुफ़्र और उनका झुठलाना। इसी तरह अल्लाह तआ़ला उन्हें गुमराह कर देता है जो बेजा काम करने वाले, हद से गुज़रने वाले और शक व शुब्हे में मुब्तला रहने वाले हों। यानी जो तुम्हारा हाल है यही हाल उन सब का होता है जिनके काम हद से आगे बढ़ने वाले (यानी अल्लाह व रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़) हों, और जिनका दिल शक व शुब्हे वाला हो। जो लोग हक़ को बातिल से हटाते हैं और बग़ैर दलील के दलीलों को टालते हैं, इस पर ख़ुदा उनसे नाख़ुश और सख़्त नाराज़ है। उनके ये अफ़आ़ल (काम) जहाँ ख़ुदा की

Maktab E Ashraf

नाराज़गी का सबब हैं वहीं ईमान वालों की भी नाख़ुशी का सबब हैं। जिन लोगों में ऐसी बुरी सिफ़तें होती हैं उनके दिल पर अल्लाह तआ़ला मोहर कर देता है जिसके बाद उन्हें न अच्छाई अच्छी मालूम होती है न बुराई बुरी लगती है। हर वह शख़्स जो हक़ से सरकशी और तकब्बुर करने वाला हो। हज़रत शअ़बी रह. फ़रमाते हैं कि जब्बार वह शख़्स है जो दो इनसानों को क़त्ल कर डाले। अबू इमरान जोनी और क़तादा रह. का फ़रमान है कि जो बग़ैर हक़ के किसी को क़त्ल कर दे वह जब्बार है। वल्लाहु तआ़ला आलम।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۙ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۭ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْۗءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ۧ ع ٩

और फ़िरऔ़न ने कहा- ऐ हामान! मेरे वास्ते एक ऊँची इमारत बनवाओ, शायद मैं आसमान पर जाने की राहों तक पहुँच जाऊँ। (36) फिर (वहाँ जाकर) मूसा के ख़ुदा को देखूँ-भालूँ और मैं तो मूसा को झूठा ही समझता हूँ। और इसी तरह फ़िरऔ़न के (और) बुरे काम भी उसको अच्छे मालूम हुए थे और (सीधे) रास्ते से रुक गया, और फ़िरऔ़न की (हर) तदबीर बेकार ही गई। (37)

फ़िरऔ़न की शरारत व घमंड

फ़िरऔ़न की सरकशी और तकब्बुर का बयान हो रहा है कि उसने अपने वज़ीर हामान से कहा कि मेरे लिये एक बहुत ऊँचा महल तामीर करा। ईंटों और चूने की पुख़्ता और बहुत ऊँची इमारत बना। जैसे एक दूसरी जगह है कि उसने कहा ऐ हामान! ईंटें पका कर मेरे लिये एक ऊँची इमारत बना।

फ़ायदाः हज़रत इब्राहीम नख़ई रह. का क़ौल है कि क़ब्र को पुख़्ता बनाना और उसे चूना-गच करना पहले उलेमा और बुज़ुर्ग मक्रूह जानते थे। (इब्ने अबी हातिम)

फ़िरऔ़न कहता है कि यह महल मैं इसलिये बनवा रहा हूँ कि आसमान के दरवाज़ों और आसमान के रास्तों तक पहुँच जाऊँ और मूसा के ख़ुदा को देख लूँ। अगरचे मैं जानता हूँ कि मूसा झूठा है। वह जो कह रहा है कि ख़ुदा ने उसे भेजा है यह बिल्कुल ग़लत है। दर असल फ़िरऔ़न का यह एक मक्र (फ़रेब) था और वह अपनी प्रजा पर यह ज़ाहिर करना चाहता था कि देखो मैं ऐसा काम करता हूँ जिससे मूसा का झूठ खुल जायेगा और मेरी तरह तुम्हें भी यक़ीन आ जायेगा कि मूसा ग़लत बयानी करने वाला और झूठा है। फ़िरऔ़न को अल्लाह की राह से रोक दिया गया, उसकी हर तदबीर उल्टी ही रही और जो काम उसने किया वह उसके लिये नुक़सानदेह हुआ, वह ख़सारे में बढ़ता ही चला गया।

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۚ يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ

और उस मोमिन ने कहा कि ऐ भाईयो! तुम मेरी राह पर चलो, मैं तुमको ठीक-ठीक रास्ता बतलाता हूँ। (38) ऐ भाईयो! यह

Maktab-E Ashraf

الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ○ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰۤئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ○

दुनियावी ज़िन्दगानी सिर्फ़ चन्द दिन का नफ़ा है और (असल) ठहरने का मक़ाम तो आख़िरत है। (39) (जहाँ बदले का यह क़ानून है कि) जो शख़्स गुनाह करता है उसको तो बराबर-सराबर ही बदला मिलता है, और जो नेक काम करता है, चाहे मर्द हो या औरत बशर्ते कि मोमिन हो, ऐसे लोग जन्नत में जाएँगे (और वहाँ) उनको बेहिसाब रिज़्क़ मिलेगा। (40)

सही रास्ते की तरफ़ रहनुमाई

फ़िरऔन की क़ौम का मोमिन मर्द जिसका ज़िक्र पहले गुज़र चुका है, अपनी क़ौम के सरकशों ख़ुद-पसन्दों और घमंडियों को नसीहत करते हुए कहता है कि तुम मेरी बात मानो, मेरी राह पर चलो, मैं तुम्हें सही रास्ते पर डाल दूँगा। यह अपने इस क़ौल में फ़िरऔन की तरह झूठा न था। वह तो अपनी क़ौम को धोखा दे रहा था और यह उनकी वास्तविक हमदर्दी कर रहा था। फिर उन्हें दुनिया से बेरग़बत करने और आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जह करने के लिये कहता है कि दुनिया एक ढल जाने वाला साया और ख़त्म हो जाने वाला फ़ायदा है। कभी फ़ना न होने वाली और क़रार व हमेशगी वाली जगह तो इसके बाद आने वाली आख़िरत है। जहाँ की रहमत व मुसीबत हमेशा रहने वाली और ग़ैर-फ़ानी है। जहाँ बुराई का बदला तो उसके बराबर ही दिया जाता है, वहाँ नेकी का बदला बेहिसाब दिया जाता है। नेकी करने वाला मर्द हो चाहे औरत हो, हाँ यह शर्त है कि हो ईमान वाला। उसे इस नेकी का सवाब इस क़द्र दिया जायेगा जो बेहद और बेहिसाब होगा। वल्लाहु आलम।

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْۤ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَى النَّارِ ○ تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ○ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ

और ऐ मेरे भाईयो! यह क्या बात है कि मैं तो तुमको निजात (के रास्ते) की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझको दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हो? (41) (यानी) तुम मुझको इस बात की तरफ़ बुलाते हो कि मैं ख़ुदा के साथ कुफ़्र करूँ और ऐसी चीज़ों को उसका साझी बनाऊँ जिस (के साझी होने) की मेरे पास कोई भी दलील नहीं, और मैं तुमको गुनाहों को माफ़ करने वाले, ज़बरदस्त ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हूँ। (42) यक़ीनी बात है कि तुम जिस चीज़ (की इबादत) की तरफ़ मुझको बुलाते हो वह न तो दुनिया ही में पुकारे जाने के लायक़ है और न

مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ○ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ؕ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ○ فَوَقٰهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ○ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ○	आख़िरत ही में, और (यक़ीनी बात है कि) हम सबको ख़ुदा तआ़ला के पास जाना है। और जो लोग (बन्दगी के) दायरे से निकल रहे हैं वे सब दोज़ख़ी होंगे। (43) सो आगे चलकर तुम मेरी बात को याद करोगे, और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। ख़ुदा तआ़ला सब बन्दों का निगराँ है। (44) फिर ख़ुदा तआ़ला ने उस (मोमिन) को उन लोगों की बुरी तदबीरों से महफ़ूज़ रखा, और फ़िरऔ़न वालों पर (मय फ़िरऔ़न के) तकलीफ़ वाला अ़ज़ाब नाज़िल हुआ (जिसका आगे बयान है कि) (45) वे लोग (बर्ज़ख़ में) सुबह व शाम आग के सामने लाए जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी (हुक्म होगा कि) फ़िरऔ़न वालों को (मय फ़िरऔ़न के) निहायत सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल करो। (46)

Maktab-e-Ashraf

दावत का फ़र्क़

क़ौमे फ़िरऔ़न का मर्दे मोमिन अपना वअ़ज़ (दीनी नसीहत) जारी रखते हुए कहता है कि यह क्या बात है कि मैं तुम्हें तौहीद (ईमान और अल्लाह के एक होने) की तरफ़ यानी एक अल्लाह की इबादत की तरफ़ बुला रहा हूँ। मैं तुम्हें ख़ुदा के रसूल की तस्दीक़ करने की दावत दे रहा हूँ और तुम मुझे कुफ़्र व शिर्क की तरफ़ बुला रहे हो? तुम चाहते हो कि मैं जाहिल बन जाऊँ और बिना दलील के ख़ुदा और उसके रसूल के ख़िलाफ़ करूँ? ग़ौर करो कि तुम्हारी और मेरी दावत में किस क़द्र फ़र्क़ है? मैं तुम्हें उस ख़ुदा की तरफ़ ले जाना चाहता हूँ जो बड़ी इ़ज़्ज़त और किब्रियाई वाला है। इसके बावजूद कि वह उस शख़्स की तौबा क़बूल करता है जो उसकी तरफ़ झुके और इस्तिग़फ़ार के।

'ला ज-र-म' के मायने हक़ व सच्चाई के हैं। यानी यह यक़ीनी सच और हक़ है कि जिसकी तरफ़ तुम मुझे बुला रहे हो यानी बुतों और अल्लाह के अ़लावा औरों की इबादत की तरफ़, वे हैं जिन्हें दीन व दुनिया का कोई इख़्तियार नहीं। जिन्हें नफ़े व नुक़सान पर कोई क़ाबू नहीं, जो अपने पुकारने वाले की पुकार को न सुन सकें, न क़बूल कर सकें, न यहाँ न वहाँ। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ.......... الخ

यानी उससे बढ़कर कोई गुमराह नहीं जो ख़ुदा के सिवा औरों को पुकारता है जो उसकी पुकार को क़ियामत तक नहीं सुन सकते। जिन्हें बिल्कुल ख़बर ही नहीं कि कौन हमें पुकार रहा है। जो क़ियामत के दिन अपने पुकारने वालों के दुश्मन हो जायेंगे और उनकी इबादत से बिल्कुल इनकार कर जायेंगे। चाहे तुम उन्हें पुकारा करो लेकिन वे नहीं सुनते। और फ़र्ज़ करो अगर सुन भी लें तो क़बूल नहीं कर सकते।

Maktab_E_Ashraf

मोमिन मर्द फ़िरऔन की आल (मानने वालों और क़ौम) से कहता है कि हम सब को लौटकर अल्लाह ही के पास जाना है, वहाँ हर एक को अपने आमाल का बदला भुगतना है। वहाँ हद से गुज़र जाने वाले, खुदा के साथ दूसरों को शरीक करने वाले हमेशा के लिये जहन्नम में भेज दिये जायेंगे। तुम इस वक़्त अगरचे मेरी बातों की क़द्र न करो लेकिन अभी-अभी (यानी जल्द ही) तुम्हें मालूम हो जायेगा कि मेरी बातों की सच्चाई और हक़्क़ानियत तुम पर वाज़ेह हो जायेगी। उस वक़्त शर्मिन्दगी, हसरत और अफ़सोस करोगे लेकिन वह बिल्कुल बेसूद होगा। मैं तो अपना काम अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। मेरा तवक्कुल (भरोसा) उसी की ज़ात पर है। मैं अपने हर काम में उसी से मदद तलब करता हूँ। मुझे तुमसे कोई वास्ता नहीं, मैं तुमसे अलग हूँ और तुम्हारे कामों से नफ़रत करता हूँ। मेरा तुम्हारा कोई ताल्लुक़ नहीं। खुदा अपने बन्दों के तमाम हालात को देखने और जानने वाला है। जो हिदायत के हक़दार हैं उनकी वह रहनुमाई करेगा और जो गुमराही के हक़दार हैं वे इस रहनुमाई से मेहरूम रहेंगे। उसके हर काम में हिक्मत और उसकी हर तदबीर में अच्छाई होती है।

उस मोमिन को खुदा तआ़ला ने फ़िरऔ़न के मक्र (फ़रेब और जाल) से बचा लिया। दुनिया में भी वह महफ़ूज़ रहा, यानी मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ उसने निजात पाई और आख़िरत के अ़ज़ाब से भी महफ़ूज़ रहा। बाक़ी तमाम फ़िरऔ़नी बदतरीन अ़ज़ाब का शिकार हुए। सब दरिया में डुबो दिये गये। फिर वहाँ से जहन्नम में भेज दिये गये। हर सुबह व शाम उनकी रूहें जहन्नम के सामने लाई जाती हैं, क़ियामत तक यह अ़ज़ाब उन्हें होता रहेगा और क़ियामत के दिन उनकी रूहें जिस्म समेत जहन्नम में डाल दी जायेंगी। उस दिन उनसे कहा जायेगा कि ऐ आले फ़िरऔ़न! सख़्त दर्दनाक और बहुत ज़्यादा तकलीफ़ देने वाले अ़ज़ाब में चले जाओ।

फ़ायदाः यह आयत अहले सुन्नत के उस मज़हब की कि आ़लमे बर्ज़ख़ में यानी क़ब्रों में अ़ज़ाब होता है, बहुत बड़ी दलील है। मगर यहाँ यह बात याद रखनी चाहिये कि बाज़ हदीसों में कुछ ऐसे मज़ामीन आये हैं जिनसे मालूम होता है कि बर्ज़ख़ के अ़ज़ाब का इल्म रसूलुल्लाह सल्ल. को मदीना शरीफ़ की हिजरत के बाद हुआ और यह आयत मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई है, तो इसका जवाब यह है कि आयत से सिर्फ़ इतना मालूम होता है कि मुश्रिकों की रूहें सुबह व शाम जहन्नम के सामने पेश की जाती हैं, बाक़ी रही यह बात कि यह अ़ज़ाब हर वक़्त जारी और बाक़ी रहता है या नहीं, और यह भी कि आया यह अ़ज़ाब सिर्फ़ रूह को ही होता है या जिस्म को भी, इसका इल्म आप सल्ल. को मदीने शरीफ़ में कराया गया और आपने इसे बयान फ़रमा दिया। पस हदीसों और क़ुरआन को मिलाकर मसला यह साबित हुआ कि क़ब्र का अ़ज़ाब व सवाब रूह और जिस्म दोनों को होता है और यही हक़ है। अब उन हदीसों को मुलाहिज़ा फ़रमाईये।

मुस्नद अहमद में है कि एक यहूदी औ़रत हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की ख़िदमत-गुज़ार थी। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ि. जब कभी उसके साथ कुछ सुलूक करतीं तो वह दुआ़ देती और कहती कि अल्लाह तआ़ला तुझे क़ब्र के अ़ज़ाब से बचाये। एक दिन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने नबी करीम सल्ल. से सवाल किया कि या रसूलल्लाह! क्या क़ियामत से पहले क़ब्र में भी अ़ज़ाब होता है? आप सल्ल. ने फ़रमाया नहीं तो, यह किसने कहा? हज़रत आ़यशा रज़ि. ने उस यहूदी औ़रत का वाक़िआ़ बयान किया। आप सल्ल. ने फ़रमाया यहूद झूठे हैं और वे तो इससे ज़्यादा झूठ अल्लाह पर बाँधा करते हैं। क़ियामत से पहले कोई अ़ज़ाब नहीं।

कुछ ही दिन गुज़रे थे कि एक मर्तबा ज़ोहर के वक़्त कपड़ा लपेटे हुए रसूलुल्लाह सल्ल. तशरीफ़ लाये,

आँखें सुर्ख़ हो रही थीं और बुलन्द आवाज़ से फ़रमा रहे थे कि क़ब्र काली रात के टुकड़ों की तरह है। लोगो! अगर तुम वह जानते जो मैं जानता हूँ तो बहुत ज़्यादा रोते और बहुत कम हंसते। लोगो! क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह तलब करो। यक़ीन मानो कि अज़ाबे क़ब्र हक़ है।

एक और रिवायत में है कि एक यहूदी औरत ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कुछ माँगा जो आपने दिया और उसने दुआ दी, उसके आख़िर में है कि उसके कुछ दिनों बाद हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मुझे 'वही' की गई है कि तुम्हारी आज़माईश क़ब्र में की जाती है।

पस इन हदीसों और आयत में एक मुवाफ़क़त और जोड़ तो वह है जो ऊपर बयान हुआ। दूसरा ताल-मेल और मुवाफ़क़त यह भी हो सकती है कि आयत 'युअ़रज़ू-न' (पेश किया जाता है) से सिर्फ़ इस क़द्र साबित होता है कि काफ़िरों को आलमे बर्ज़ख़ में अज़ाब होता है, लेकिन इससे यह लाज़िम नहीं आता कि मोमिन को भी उसके बाज़ गुनाहों की वजह से उसकी क़ब्र में अज़ाब होता है। यह सिर्फ़ हदीस शरीफ़ से साबित हुआ।

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत आयशा रज़ि. के पास एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल. तशरीफ़ लाये, उस वक़्त एक यहूदी औरत हज़रत आयशा रज़ि. के पास बैठी थी, कहने लगी कि क्या आपको मालूम है कि तुम लोग अपनी क़ब्रों में आज़माये जाओगे? इसे सुनकर हुज़ूर सल्ल. काँप गये और फ़रमाया- यहूदी आज़माये जाते हैं। फिर चन्द दिनों बाद आप सल्ल. ने फ़रमाया लोगो! तुम सब क़ब्रों के फ़ितने (आज़माईश) में डाले जाओगे। उसके बाद हुज़ूर सल्ल. क़ब्र के फ़ितने से पनाह माँगा करते थे। यह भी हो सकता है कि आयत से सिर्फ़ रूह के अज़ाब का सुबूत होता था, उससे जिस्म तक उस अज़ाब के पहुँचने का सुबूत नहीं था, बाद में 'वही' के ज़रिये हुज़ूर सल्ल. को मालूम कराया गया कि अज़ाबे क़ब्र जिस्म व रूह को होता है। चुनाँचे आपने फिर उससे महफ़ूज़ रहने की दुआ शुरू की। वल्लाहु तआ़ला आलम।

सही बुख़ारी में है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास एक यहूदी औरत आई और उसने कहा क़ब्र के अज़ाब से हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं। इस पर हज़रत आयशा रज़ि. ने हुज़ूरे पाक सल्ल. से सवाल किया कि क्या क़ब्र में अज़ाब होता है? आपने फ़रमाया हाँ अज़ाबे क़ब्र बरहक़ है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि उसके बाद मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल. हर नमाज़ के बाद अज़ाबे क़ब्र से पनाह माँगा करते थे। इस हदीस से तो साबित होता है कि आप सल्ल. ने इसे सुनते ही यहूदी औरत की तस्दीक़ की, और ऊपर वाली हदीसों से मालूम होता है कि आप सल्ल. ने उसकी बात को झुठलाया था, दोनों में मुवाफ़क़त यह है कि ये दो वाक़िए हैं, पहले वाक़िए के वक़्त चूँकि 'वही' से आप सल्ल. को मालूम नहीं हुआ था इसलिये आपने इनकार फ़रमा दिया। फिर मालूम हो गया तो आप सल्ल. ने इक़रार किया। क़ब्र के अज़ाब का ज़िक्र बहुत सी हदीसों में आ चुका है। वल्लाहु आलम।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि रहती दुनिया तक हर सुबह व शाम फ़िरऔ़नियों की रूहें जहन्नम के सामने लाई जाती हैं और उनसे कहा जाता है कि बदकारो! तुम्हारी असली जगह यही है, ताकि उनके रंज व ग़म बढ़ें, उनकी ज़िल्लत व तौहीन हो। पस आज भी वे अज़ाब में ही हैं और हमेशा उसमें रहेंगे।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. का क़ौल है कि शहीदों की रूहें सब्ज़ रंग के परिन्दों के क़ालिब (जिस्मों और ढाँचों) में हैं। वे जन्नत में जहाँ कहीं चाहें चुगती फिरती हैं और मोमिनों के बच्चों की रूहें चिड़ियों के क़ालिब में हैं और जहाँ वे चाहें जन्नत में चुगती रहती हैं। और अ़र्श के तले क़िन्दीलों में आराम हासिल करती हैं। और आले फ़िरऔ़न की रूहें सियाह रंग के परिन्दों के क़ालिब में हैं।

सुबह भी जहन्नम के पास जाती हैं और शाम को भी, यही उनका पेश होना है।

मेराज वाली एक लम्बी रिवायत में है कि फिर मुझे एक बहुत बड़ी मख़्लूक़ की तरफ़ ले चले, जिनमें से हर एक का पेट एक बहुत बड़े घर के जैसा था, जो आले फ़िरऔन के पास क़ैद थे। और आले फ़िरऔ़न सुबह व शाम आग पर लाये जाते हैं। और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा- इन फ़िरऔ़नियों को सख़्त तरीन अ़ज़ाब में ले जाओ और ये फ़िरऔ़नी लोग नकेल वाले ऊँटों की तरह मुँह नीचे किये हुए पत्थर और दरख़्त चर रहे हैं और बेअ़क़्ल व बेशऊर हैं।

इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जो एहसान करे चाहे मुस्लिम हो चाहे काफ़िर, अल्लाह तआ़ला उसे ज़रूर बदला देता है। हमने पूछा या रसूलल्लाह! काफ़िर को क्या बदला मिलता है? फ़रमाया- अगर उसने सिला-रहमी की (रिश्तों को जोड़ा हो), या सदक़ा दिया है या और कोई अच्छा काम किया है तो अल्लाह तआ़ला उसका बदला उसके माल में, उसकी औलाद में, उसकी सेहत में और ऐसी ही चीज़ों में अ़ता फ़रमाता है। हमने फिर पूछा और आख़िरत में क्या मिलता है? फ़रमाया बड़े दर्जे से कम दर्जे का अ़ज़ाब। फिर आप सल्ल. ने यह आयत पढ़ीः

اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ.......... الخ

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)

इब्ने जरीर में है कि हज़रत औज़ाई रह. से एक शख़्स ने पूछा कि ज़रा हमें बतलाओ, हम देखते हैं कि बहुत से सफ़ेद परिन्दों का झुंड का झुंड समुद्र से निकलता है और उसके पश्चिमी किनारे से उड़ता हुआ सुबह के वक़्त जाता है। उनकी तायदाद इतनी अधिक होती है कि कोई उनको गिन नहीं सकता। शाम के वक़्त ऐसा ही झुंड का झुंड वापस आता है, लेकिन उस वक़्त उनके रंग बिल्कुल सियाह होते हैं। आपने फ़रमाया तुमने इसे ख़ूब मालूम कर लिया। उन परिन्दों के क़ालिब (जिस्मों और शरीरों) में फ़िरऔ़नियों की रूहें हैं जो सुबह व शाम आग के सामने पेश की जाती हैं, फिर अपने घौंसलों की तरफ़ लौट जाती हैं। उनके पर जल गये होते हैं और ये सियाह हो जाते हैं। फिर रात को वे उग जाते हैं और सियाह झड़ जाते हैं, फिर वे अपने घौंसलों की तरफ़ लौट जाते हैं। यही हालत उनकी दुनिया में है और क़ियामत के दिन उनसे अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि इन फ़िरऔ़नियों को सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल कर दो। कहते हैं कि उनकी संख्या छह लाख है जो फ़िरऔ़न की फ़ौज की संख्या थी।

नोटः यह सिर्फ़ एक वाक़िआ़ है, क़ुरआन व हदीस का हिस्सा नहीं। इसलिये इसे कोई मज़बूत दलील नहीं बनाया जा सकता। यह बात यक़ीनी तौर पर नहीं कही जा सकती कि वे परिन्दे वाक़ई आले फ़िरऔ़न हैं। फिर इस दुनिया में ऐसे अ़ज़ाब का मुस्तक़िल तौर पर इस तरह होना, यह भी क़ाबिले ग़ौर है। फ़िरऔ़न की क़ौम पर अ़ज़ाब की यह हालत आ़लमे बर्ज़ख़ की ज़िक्र की गयी है, न कि इस दुनिया की। वल्लाहु आलम। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि तुम में से जब कभी कोई मरता है तो हर सुबह शाम उसकी जगह उसके सामने पेश की जाती है। अगर वह जन्नती है तो जन्नत, और अगर वह जहन्नमी है तो जहन्नम। और कहा जायेगा कि तेरी असली जगह यह है जहाँ तुझे अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन भेजेगा। यह हदीस सही बुख़ारी और सही मुस्लिम शरीफ़ में है।

Maktaba E Ashraf

وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِى النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ○ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ○ وَقَالَ الَّذِيْنَ فِى النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ○ قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ○ ع ٥	और जबकि कुफ़्फ़ार दोज़ख़ में एक-दूसरे से झगड़ेंगे तो कम दर्जे के लोग (यानी पैरवी करने वाले) बड़े दर्जे के लोगों से कहेंगे कि हम (दुनिया में) तुम्हारे ताबे थे, सो क्या तुम हमसे आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो? (47) वे बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही दोज़ख़ में हैं, अल्लाह तआ़ला बन्दों के दरमियान फ़ैसला कर चुका। (48) और (उसके बाद) जितने लोग दोज़ख़ में होंगे, जहन्नम के ज़िम्मेदार फ़रिश्तों से (दरख़्वास्त के तौर पर) कहेंगे कि तुम ही अपने परवर्दिगार से दुआ़ करो कि किसी दिन तो हमसे अ़ज़ाब हल्का कर दे। (49) फ़रिश्ते कहेंगे कि (यह बतलाओ) क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर मोजिज़े लेकर नहीं आते रहे थे? दोज़ख़ी कहेंगे कि हाँ, आते तो रहे थे। फ़रिश्ते कहेंगे कि फिर तुम ही दुआ़ करो और काफ़िरों की दुआ़ बिल्कुल बेअसर है। (50)

दोज़ख़ियों के ख़ुराफ़ाती झगड़े

जहन्नमी लोग जहन्नम के अ़ज़ाबों को बरदाश्त करते हुए एक और अ़ज़ाब के भी शिकार होंगे जिसका यहाँ बयान हो रहा है। यह अ़ज़ाब फ़िरऔ़नियों को भी होगा और दूसरे दोज़ख़ियों को भी। यानी आपस के लड़ाई-झगड़े। छोटे बड़ों से यानी ताबेदारी करने वाले, हुक्म अहकाम के मानने वाले जिनकी बड़ाई और बुज़ुर्गी के क़ायल थे, जिनकी बातें तस्लीम किया करते थे और जिनके कहने पर अ़मल करते थे उनसे कहेंगे कि दुनिया में हम तो तुम्हारे हुक्म के ताबे थे, जो तुमने कहा हम बजा लाये। कुफ़्र व गुमराही के अहकाम भी जो तुम्हारी जनाब से सादिर हुए तुम्हारी बुज़ुर्गी, इल्म व फ़ज़्ल, सरदारी और हुकूमत की बिना पर हम सब को मानते रहे, अब यहाँ आप हमें कुछ तो काम आईये, हमारे अ़ज़ाब का ही कोई हिस्सा अपने ऊपर उठा लीजिये। ये सरदार और बड़े लोग (यानी जिनकी पैरवी की जाती थी) जवाब देंगे कि हम भी तो तुम्हारे साथ जल-झुलस रहे हैं, हमें जो अ़ज़ाब हो रहे हैं वे क्या कम हैं जो तुम्हारे अ़ज़ाब उठायें? अल्लाह का हुक्म हो चुका है, रब फ़ैसले सादिर फ़रमा चुका है, हर एक को उसके बुरे आमाल के मुताबिक़ सज़ा दे चुका है। अब इसमें कमी नामुम्किन है। जैसे एक दूसरी आयत में है कि हर एक के लिये बढ़ा-चढ़ाकर अ़ज़ाब है अगरचे तुम न समझो।

जब दोज़ख़ वाले समझ लेंगे कि ख़ुदा उनकी दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमायेगा बल्कि उनकी तरफ़ तवज्जोह भी नहीं करता, बल्कि उन्हें डाँट दिया है और फ़रमा चुका है कि यहीं पड़े रहो और मुझसे कलाम न करो,

तो वे जहन्नम के दारोग़ा से कहेंगे जो वहाँ के ऐसे ही पासबान हैं जैसे दुनिया के जेलख़ानों के सुरक्षा कर्मी दारोग़ा और सिपाही होते हैं, उनसे कहेंगे कि तुम ही ज़रा अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करो कि किसी एक दिन ही वह हमारे अ़ज़ाब हल्के कर दे। वे उन्हें जवाब देंगे कि क्या रसूलों की ज़बानी ख़ुदाई अहकाम दुनिया में तुम्हें न पहुँचे थे? ये कहेंगे कि हाँ पहुँचे थे। फ़रिश्ते कहेंगे फिर अब तुम ख़ुद ही अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करो, हम तो तुम्हारी तरफ़ से कोई अ़र्ज़ उसकी बारगाह में नहीं कर सकते। बल्कि अब हम तुम्हारी हाय-वाय का भी ख़्याल नहीं करेंगे, हम ख़ुद तुमसे बेज़ार और तुम्हारे दुश्मन हैं। हम तुम्हें कह देते हैं कि चाहे तुम दुआ़ करो चाहे तुम्हारे लिये कोई और दुआ़ करे, नामुम्किन है कि तुम्हारे अ़ज़ाब में कमी हो। काफ़िरों की दुआ़ नामक़बूल और मरदूद (अस्वीकारीय) है (क्योंकि निजात और दुआ़ की क़बूलियत के लिये ईमान शर्त है)।

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ۝ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْءُ الدَّارِ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدٰى وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَاءِيلَ الْكِتٰبَ ۝ هُدًى وَّذِكْرٰى لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ أَتٰهُمْ إِنْ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيهِ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

हम अपने पैग़म्बरों की और ईमान वालों की दुनियावी ज़िन्दगानी में भी मदद करते हैं और उस दिन भी जिसमें गवाही देने वाले (यानी फ़रिश्ते जो कि आमाल नामे लिखते थे) "मदद करेंगे"। (51) जिस दिन कि ज़ालिमों (यानी काफ़िरों) को उनकी माज़िरत कुछ नफ़ा न देगी, और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए उस जहान में ख़राबी होगी। (52) और (आपसे पहले) हम मूसा को हिदायतनामा (यानी तौरात) दे चुके हैं, और (फिर) हमने वह किताब बनी इस्राईल को पहुँचाई थी। (53) कि वह हिदायत और नसीहत (की किताब) थी (सही) अ़क्ल रखने वालों के लिए। (54) सो आप सब्र कीजिए। बेशक अल्लाह तआ़ला का वायदा सच्चा है। और अपने (उस) गुनाह की (जिसको उसकी ज़ाहिरी शक्ल के एतिबार से गुनाह कह दिया गया) माफ़ी माँगिए। और शाम और सुबह अपने रब की पाकी और तारीफ़ बयान करते रहिए। (55) (और) जो लोग अपने पास मौजूद बिना किसी सनद के ख़ुदाई आयतों में झगड़े निकाला करते हैं, उनके दिलों में निरी बड़ाई (ही बड़ाई) है, कि वे उस तक कभी पहुँचने वाले नहीं। सो आप अल्लाह की पनाह माँगते रहिए, बेशक वही है सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला। (56)

अल्लाह की मदद ईमान वालों के साथ है

आयत में रसूलों की मदद करने का ख़ुदा का वायदा है। फिर हम देखते हैं कि बाज़ रसूलों को उनकी क़ौमों ने क़त्ल कर दिया, जैसे हज़रत यहया, हज़रत ज़करिया, हज़रत शुऐब अलैहिमुस्सलाम, और बाज़ अम्बिया को अपना वतन छोड़ना पड़ा, जैसे हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, कि उन्हें ख़ुदा तआला ने आसमान की तरफ़ हिजरत कराई। फिर क्या कोई नहीं कह सकता कि यह वायदा पूरा क्यों न हुआ? इसके दो जवाब हैं- एक तो यह कि यहाँ अगरचे आम ख़बर है लेकिन मुराद बाज़ से है (यानी कुछ हज़रात का ज़िक्र है) और यह लुग़त में उमूमन पाया जाता है कि किसी बात को बिना किसी क़ैद के ज़िक्र करते हैं और मुराद ख़ास अफ़राद होते हैं। दूसरे यह कि मदद करने से मुराद बदला लेना हो। पस कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसके सताने वालों से क़ुदरत ने ज़बरदस्त इन्तिक़ाम न लिया हो। चुनाँचे हज़रत यहया, हज़रत ज़करिया, हज़रत शुऐब अलैहिमुस्सलाम के क़ातिलों पर ख़ुदा ने उनके दुश्मनों को मुसल्लत कर दिया और उन्होंने उन्हें नेस्त व नाबूद कर डाला। उनके ख़ून की नदियाँ बहा दीं और उन्हें निहायत ज़िल्लत के साथ मौत के घाट उतारा। नमरूद मरदूद का मशहूर वाक़िआ दुनिया को मालूम है कि क़ुदरत ने उसे कैसी पकड़ में पकड़ा? हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जिन यहूदियों ने सूली देने की कोशिश की थी उन पर अल्लाह तआला ने रोमियों को ग़ालिब कर दिया और उनके हाथों उनकी सख़्त ज़िल्लत व रुस्वाई हुई। और अभी क़ियामत के क़रीब आप उतरेंगे तब दज्जाल के साथ उन यहूदियों को जो उसके लश्कर में होंगे क़त्ल करेंगे, और इमामे आदिल और इन्साफ़ वाले हाकिम बनकर तशरीफ़ लायेंगे। सलीब (ईसाईयों के क्रॉस के निशान) को तोड़ेंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे और जिज़या (टैक्स) बातिल कर देंगे, सिवाय इस्लाम के और कुछ क़बूल न फ़रमायेंगे। यह है ख़ुदा तआला की अज़ीमुश्शान मदद और यही दस्तूरे क़ुदरत है, जो पहले से है और अब तक जारी है, कि वह अपने मोमिन बन्दों की दुनियावी इमदाद फ़रमाता है और उनके दुश्मनों से ख़ुद इन्तिक़ाम लेकर उनकी आँखें ठंडी करता है।

सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि जो शख़्स मेरे दोस्तों से दुश्मनी करे उसने मुझे लड़ाई के लिये दावत दी। दूसरी हदीस में है कि मैं अपने दोस्तों की तरफ़ से बदला ज़रूर ले लिया करता हूँ जैसे कि शेर बदला लेता है। इसी बिना पर उस मालिकुल-मुल्क ने क़ौमे नूह से, आद वालों से, समूद वालों से, अस्हाबे रस्स से, क़ौमे लूत से और उन जैसे उन तमाम लोगों से जिन्होंने ख़ुदा के रसूलों को झुठलाया था और हक़ का ख़िलाफ़ किया था, बदला लिया। एक-एक को चुन-चुनकर तबाह व बरबाद किया और जितने मोमिन उनमें थे उन सब को बचा लिया।

इमाम सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि जिस क़ौम में ख़ुदा के रसूल आये या ईमान वाले बन्दे उन्हें पैग़ामे इलाही पहुँचाने के लिये खड़े हुए और उस क़ौम ने उन नबियों की या उन मोमिनों का अपमान व बेइज़्ज़ती की और उन्हें मारा पीटा, क़त्ल किया, ज़रूर बिज़्ज़रूर उसी ज़माने में अज़ाबे ख़ुदा उन पर बरस पड़े। नबियों के क़त्ल के बदले लेने वाले उठ खड़े हुए और पानी की तरह उनके ख़ून से प्यासी धरती को सैराब कर दिया। पस अगरचे अम्बिया और मोमिन हज़रात यहाँ क़त्ल किये गये लेकिन उनका ख़ून रंग लाया। नामुम्किन है कि अल्लाह के ऐसे ख़ास बन्दों की मदद व इआनत न हो, और उनके दुश्मनों से पूरा इन्तिक़ाम न लिया गया हो।

Maktab_E_Ashraf

तमाम अम्बिया के सरदार, हबीबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हालाते ज़िन्दगी दुनिया और दुनिया वालों के सामने हैं कि ख़ुदा ने आप सल्ल. को और आपके सहाबा को ग़लबा दिया, और दुश्मनों की तमाम कोशिशों को बेनतीजा (यानी विफल) रखा। उन तमाम पर आपको ग़लबा अ़ता फ़रमाया। आप सल्ल. के कलिमे को बुलन्द व बाला किया, आपका दीन दुनिया के तमाम दीनों पर ग़ालिब आया। क़ौम की ज़बरदस्त मुख़ालफ़त के वक़्त अपने नबी को मदीने में पहुँचा दिया और मदीने वालों को सच्चा जाँनिसार बनाकर फिर मुश्रिकों का सारा ज़ोर बदर की लड़ाई में तोड़ दिया। उनके कुफ़्र के तमाम वज़नी सुतून उस लड़ाई में उखेड़ दिये। मुश्रिकों के सरदार या तो टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये या मुसलमानों के हाथों में क़ैदी बनकर नामुरादी के साथ गर्दन झुकाये नज़र आने लगे। क़ैद व बन्दिश में जकड़े हुए ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ मदीने की गलियों में हाथ-पैर बंधे हुए हाज़िर हुए। अल्लाह की हिक्मत ने उन पर फिर एहसान किया और एक मर्तबा फिर मौक़ा दिया। फ़िदया लेकर आज़ाद कर दिये गये लेकिन फिर भी जब रसूल की मुख़ालफ़त से बाज़ न आये और अपने करतूत पर अड़े रहे तो वह वक़्त भी आया कि जहाँ से नबी को छुप-छुपाकर रात के अंधेरे में नंगे पाँव हिजरत करनी पड़ी थी, वहाँ फ़ातिहाना (विजयी) हैसियत से दाख़िल हुए और गर्दन पर हाथ बाँधे हुए रसूले पाक के दुश्मन सामने लाये गये और हरम के इलाक़े की इज़्ज़त व सम्मान रसूले मोहतरम की वजह से पूरा हुआ। और तमाम शिर्क व कुफ़्र और हर तरह की बेअदबियों से अल्लाह के घर (ख़ाना-ए-ख़ुदा) को पाक साफ़ कर दिया गया। आख़िरकार यमन भी फ़तह हुआ और अ़रब का पूरा इलाक़ा रसूल के क़ब्ज़े में आ गया। और गिरोह दर गिरोह लोग दीने ख़ुदा में दाख़िल हो गये। फिर रब्बुल-आ़लमीन ने अपने रसूल रहमुतल-लिलआ़लमीन को अपनी तरफ़ बुला लिया और वहाँ की सम्मान व इज़्ज़त से अपनी मेहमानदारी में रखकर नवाज़ा। सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।

फिर आप सल्ल. के बाद आपके नेक-फ़ितरत सहाबा को आपका जानशीन बनाया जो मुहम्मदी झंडा लिये खड़े हो गये और ख़ुदा की तौहीद की तरफ़ उसकी मख़्लूक़ को बुलाने लगे। जो राह में रोक और बाधा बना उसे अलग कर दिया। जो काँटा गुलशन में नज़र पड़ा उसे काट डाला। गाँव-गाँव शहर-शहर मुल्क-मुल्क इस्लाम की दावत पहुँचा दी, जो उनके इस मिशन में रुकावट बना उसको रुकावट बनने का मज़ा चखाया। इसी सिलसिले में पूरब व पश्चिम में इस्लाम की हुकूमत फैल गई। ज़मीन पर और ज़मीन वालों के जिस्मों पर ही सहाबा किराम रज़ि. ने फ़तह हासिल नहीं की बल्कि उनके दिलों पर भी फ़तह हासिल की। इस्लामी नुक़ूश दिलों में जमा दिये और सब को तौहीद के कलिमे के नीचे जमा कर दिया। दीने मुहम्मदी सल्ल. ने ज़मीन का चप्पा-चप्पा और कोना-कोना अपने क़ब्ज़े में कर लिया। दावते मुहम्मदिया बहरे कानों तक भी पहुँच चुकी। मुहम्मद सल्ल. का रास्ता अंधों ने भी देख लिया। ख़ुदा तआ़ला उस पाकबाज़ जमाअ़त को, उनकी हिम्मत व जवाँमर्दी का बेहतरीन बदला इनायत फ़रमाये, आमीन।

अल्लाह का शुक्र है कि आज तक ख़ुदा का दीन ग़ालिब व मन्सूर है। आज तक मुसलमानों में हुकूमत व सल्तनत मौजूद है। आज तक इनके हाथों में ख़ुदा और उसके रसूल सल्ल. का कलाम मौजूद है और आज तक इनके सरों पर रब का हाथ है। और क़ियामत तक यह दीन इसी तरह अल्लाह का मदद-याफ़्ता और कामयाब रहेगा। जो इससे भिड़ेगा मुँह की खायेगा और फिर कभी मुँह न दिखायेगा। यही मतलब है इस मुबारक आयत का। क़ियामत के दिन भी दीनदारों की मदद व नुसरत होगी, बहुत बड़ी और आला पैमाने तक। गवाहों से मुराद फ़रिश्ते हैं। ज़ालिमों से मुराद मुश्रिक हैं, उनका उज़्र और फ़िदया क़ियामत के दिन मक़बूल न होगा, वे अल्लाह की रहमत से उस दिन दूर धकेल दिये जायेंगे। उनके लिये बुरा घर यानी

Muftah E Ashraf

जहन्नम होगा। उनकी आक़िबत ख़राब होगी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हमने हिदायत व नूर बख़्शा। बनी इस्राईल का अन्जाम बेहतर किया, फ़िरऔन के माल व ज़मीन का उन्हें वारिस बनाया, क्योंकि ये इताअ़ते ख़ुदा और इत्तिबा-ए-रसूल में साबित क़दमी के साथ सख़्तियाँ बरदाश्त करते रहे थे। जिस किताब के ये वारिस हुए वह अ़क़्लमन्दों के लिये हिदायत व इबरत का ज़रिया थी। ऐ नबी! आप सब्र कीजिये, ख़ुदा का वायदा सच्चा है। आप ही का बोल-बाला होगा अन्जाम के लिहाज़ से, और आप वाले ही ग़ालिब रहेंगे। रब अपने वायदे के ख़िलाफ़ कभी नहीं करता, बिला शक व शुब्हा दीने ख़ुदा ऊँचा होकर ही रहेगा। तू अपने रब से इस्तिग़फ़ार करता रह। आपको हुक्म देकर दर असल आपकी उम्मत को इस्तिग़फ़ार पर आमादा करना है। दिन के आख़िरी और रात के शुरू के वक़्त और दिन के शुरू के हिस्से में और रात के आख़िरी वक़्त, ख़ुसूसियत के साथ रब की पाकीज़गी और तारीफ़ बयान किया कर। जो लोग बातिल (ग़ैर-हक़) पर जमकर हक़ को हटा देते हैं, दलाईल को कट-हुज्जती (फ़ालतू की बकवास और बहस) से टाल देते हैं, उनके दिलों में सिवाय तकब्बुर के और कुछ नहीं। उनमें हक़ की पैरवी से सरकशी है। ये रब की बातों की इज़्ज़त जानते ही नहीं, लेकिन जो तकब्बुर, ख़ुदी और अपनी ऊँचाई वे चाहते हैं वह उन्हें हरगिज़ हासिल नहीं होगी। उनके मक़सूद (इरादे) बातिल हैं, उनके मतलूब बेफ़ायदा हैं। अल्लाह तआ़ला की पनाह तलब कर कि उन जैसा हाल किसी भले आदमी का न हो, और उन घमंडी लोगों की शरारत से भी ख़ुदा की पनाह चाहा कर।

यह आयत यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई है। ये कहते थे कि दज्जाल उन्हीं में से होगा और उसके ज़माने में ये ज़माने के बादशाह हो जायेंगे। पस अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. से फ़रमाया कि दज्जाल के फ़ितने से ख़ुदा की पनाह तलब किया करो, वह सब कुछ सुनने और देखने वाला है। लेकिन आयत को यहूदियों के बारे में नाज़िल शुदा बतलाना और दज्जाल की बादशाही और उसके फ़ितने से पनाह का हुक्म, ये सब चीज़ें तकल्लुफ़ से भरी हुई हैं (यानी एक दूर का मतलब मुराद लेना है)। माना कि यह तफ़सीर इब्ने अबी हातिम में है मगर यह क़ौल नादिर होने से ख़ाली नहीं (यह सबसे अलग तफ़सीर है)। ठीक यही है कि आयत आ़म है। वल्लाहु तआ़ला आलम।

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ○ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ○ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○	यक़ीनन आसमानों और ज़मीन को (शुरू में) पैदा करना आदमियों के (दोबारा) पैदा करने के मुक़ाबले में बड़ा काम है, और लेकिन अक्सर आदमी (इतनी बात) नहीं समझते। (57) और देखने वाला और अन्धा, और (एक) वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए और (दूसरे) बदकार, आपस में बराबर नहीं होते, तुम लोग बहुत ही कम समझते हो। (58) क़ियामत तो ज़रूर ही आकर रहेगी, उस (के आने) में किसी तरह का शक है ही नहीं, मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (59)

Maktab E Ashraf

ज़मीन व आसमान का बनाना इनसान के बनाने से बड़ी बात है

अल्लाह तआ़ला क़ादिरे मुत्लक़ फ़रमाता है कि मख़्लूक़ को वह क़ियामत के दिन नये सिरे से ज़रूर ज़िन्दा करेगा। जब उसने आसमान व ज़मीन जैसी ज़बरदस्त मख़्लूक़ को पैदा कर दिया तो इनसानों का पैदा करना या उसे बिगाड़ कर बनाना उस पर क्या मुश्किल है? एक और आयत में इरशाद है कि क्या ऐसी बात और इतनी वाज़ेह हक़ीक़त भी झुठलाये जाने के क़ाबिल है कि जिस ख़ुदा ने ज़मीन व आसमान को पैदा कर दिया और उसमें इतनी बड़ी चीज़ की पैदाईश से वह न थका न आ़जिज़ हुआ, उस पर मुर्दों का ज़िन्दा करना क्या मुश्किल है? ऐसी साफ़ दलील भी जिसके सामने झुठलाने की चीज़ हो उसकी मालूमात यक़ीनन इस क़ाबिल हैं कि उन पर रोया जाये। उसकी जहालत में क्या शक है जो ऐसी मोटी बात भी न समझ सके? ताज्जुब है कि बड़ी से बड़ी चीज़ को तो तस्लीम की जाये और उससे बहुत छोटी चीज़ को बिल्कुल मुहाल और नामुम्किन माना जाये। अन्धे और देखते का फ़र्क़ ज़ाहिर है। ठीक इसी तरह मुस्लिम व मुजरिम का फ़र्क़ है, अक्सर लोग किस क़द्र कम नसीहत क़बूल करते हैं, यक़ीन मानो कि क़ियामत का आना निश्चित और यक़ीनी है, फिर भी उसको झुठलाने से अक्सर लोग बाज़ नहीं आते, न ही उसका यक़ीन करने को तैयार हैं। यमन के रहने वाले एक शैख़ अपनी सुनी हुई रिवायत बयान करते हैं कि क़ियामत के नज़दीक लोगों पर बलायें बरसेंगी और सूरज की गर्मी सख़्त तेज़ हो जायेगी। वल्लाहु आलम।

और तुम्हारे रब ने फ़रमा दिया है कि मुझ को पुकारो, मैं तुम्हारी दरख़्वास्त क़बूल करूँगा। जो लोग (सिर्फ़) मेरी इबादत से सरकशी करते हैं, वे जल्द ही (यानी मरते ही) ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे। (60)	وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ۝ ع ٦

ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है

अल्लाह तबारक व तआ़ला के इस एहसान पर क़ुरबान हो जायें कि वह हमें दुआ़ की हिदायत करता है और क़बूलियत का वायदा भी फ़रमाता है। इमाम सुफ़ियान सौरी रह. अपनी दुआ़ओं में फ़रमाया करते थे- "ऐ वह ख़ुदा! जिसे वह बन्दा बहुत ही प्यारा लगता है जो उससे बहुत ज़्यादा दुआ़ किया करे, और वह बन्दा उसे सख़्त बुरा मालूम होता है जो उससे दुआ़ न करे। ऐसे मेरे रब! यह सिफ़्त तो तेरी ही है।"

शायर कहता है:

اَللّٰهُ يَغْضَبُ اِنْ تَرَكْتَ سُؤَالَهٗ ۔۔۔ وَبُنَيُّ اٰدَمَ حِيْنَ يُسْاَلُ يَغْضَبُ

यानी अल्लाह तआ़ला की शान यह है कि जब तू उससे न माँगे तो वह नाख़ुश होता है और इनसान की यह हालत है कि उससे माँगो तो वह रूठ जाता है।

हज़रत कअ़बे अहबार फ़रमाते हैं कि इस उम्मत को तीन चीज़ें ऐसी दी गई हैं कि इससे पहले की किसी उम्मत को नहीं दी गईं सिवाय मुहम्मद सल्ल. के। देखो हर नबी को ख़ुदा का फ़रमान यह हुआ है कि

तू अपनी उम्मत पर गवाह है, लेकिन तमाम लोगों पर गवाह अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें किया है। पहले नबियों से कहा जाता था कि तुझ पर दीन में कुछ हर्ज नहीं, इस उम्मत से फ़रमाया गया कि तुम्हारे दीन में तुम पर कोई हर्ज नहीं। हर नबी से कहा जाता था कि मुझे पुकार मैं तेरी दुआ़ क़बूल करूँगा, लेकिन इस उम्मत से फ़रमाया गया कि तुम मुझे पुकारो मैं तुम्हारी पुकार क़बूल फ़रमाऊँगा। (इब्ने अबी हातिम)

अबू यअ़ला में है कि अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्ल. से फ़रमाया- चार ख़स्लतें हैं जिनमें से एक मेरे लिये है, एक तेरे लिये, एक तेरे और मेरे दरमियान और एक तेरे और मेरे दूसरे बन्दों के दरमियान। जो ख़ास मेरे लिये है वह तो यह कि तू सिर्फ़ मेरी ही इबादत कर और मेरे साथ किसी को शरीक न कर। जो तेरा हक़ मुझ पर है वह यह कि तेरे हर नेक अ़मल का पूरा-पूरा बदला मैं तुझे दूँगा। जो तेरे मेरे दरमियान है वह यह कि तू दुआ़ कर और मैं क़बूल किया करूँ और चौथी ख़स्लत जो तेरे और मेरे बन्दों के दरमियान है वह यह कि तू उनके लिये वह चाह जो अपने लिये पसन्द रखता हो।

मुस्नद अहमद में हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि दुआ़ ऐन इबादत है, फिर आप सल्ल. ने यही आयत तिलावत फ़रमाई। यह हदीस सुनन में भी है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही कहते हैं। इब्ने हिब्बान रह. और हाकिम रह. इसे अपनी सही में लाये हैं। मुस्नद में है कि जो शख़्स ख़ुदा से दुआ़ नहीं करता अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ज़बनाक (नाराज़) होता है। हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा अन्सारी रज़ि. की मौत के बाद उनकी तलवार की म्यान में से एक पर्चा निकला जिसमें लिखा था कि तुम अपने रब की रहमतों के मौक़ों को तलाश करते रहो, बहुत मुम्किन है कि किसी ऐसे वक़्त तुम दुआ़-ए-ख़ैर करो कि उस वक़्त रब की रहमत जोश में हो और तुम्हें वह सआ़दत मिल जाये जिसके बाद कभी भी हसरत व अफ़सोस न करना पड़े। आयत में इबादत से मुराद दुआ़ और तौहीद है।

मुस्नद अहमद में है कि क़ियामत के दिन मुतकब्बिर (तकब्बुर करने वाले) लोग चींवटियों की शक्ल में जमा किये जायेंगे। छोटी से छोटी मख़्लूक़ भी उनके ऊपर होगी, उन्हें बोलिस नाम के जहन्नमी जेलख़ाने में डाला जायेगा और भड़कती हुई सख़्त आग उनके सरों पर शोले मारेगी, उन्हें जहन्नमियों का लहू पीप और पाख़ाना पेशाब पिलाया जायेगा।

इब्ने अबी हातिम में है, एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं मुल्के रोम में काफ़िरों के हाथों गिरफ़्तार हो गया था, एक दिन मैंने सुना कि ग़ैब से आवाज़ देने वाला एक पहाड़ की चोटी से बुलन्द आवाज़ से कह रहा है- ख़ुदाया! उस पर ताज्जुब है जो तुझे पहचानते हुए तेरे सिवा दूसरे की ज़ात से उम्मीदें बाँधता है। ख़ुदाया! उस पर ताज्जुब है जो तुझे पहचानते हुए अपनी हाजतें दूसरे के पास ले जाता है। फिर ज़रा ठहरकर एक ज़ोरदार आवाज़ और लगाई और कहा पूरा ताज्जुब उस शख़्स पर है जो तुझे पहचानते हुए दूसरे की रज़ामन्दी (ख़ुशी और प्रसन्नता) हासिल करने के लिये वे काम करता है जिनसे तू नाराज़ हो जाये। यह सुनकर मैंने बुलन्द आवाज़ से पूछा कि तू कोई जिन्न है या इनसान? जवाब आया कि इनसान हूँ। तू उन कामों से अपना ध्यान हटा ले जो तुझे फ़ायदा न दें, और उन कामों में मशग़ूल हो जा जो तेरे लिये फ़ायदे के हैं।

Mahtab E Ashraf

Maktab E Ashraf

اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْفَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ○ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۡ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ○ كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ○ اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ښ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ○ هُوَ الْحَىُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे (नफ़े के) लिए रात बनाई, ताकि तुम उसमें आराम करो, और उसी ने दिन को (देखने के लिए) रोशन बनाया। बेशक अल्लाह तआ़ला का लोगों पर बड़ा ही फ़ज़्ल है, और लेकिन अक्सर आदमी (इन नेमतों का) शुक्र अदा नहीं करते। (61) यह अल्लाह है तुम्हारा रब, वह हर चीज़ का पैदा करने वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, सो (तौहीद के साबित होने के बाद) तुम लोग शिर्क करके कहाँ उल्टे जा रहे हो? (62) इसी तरह वे (पहले) लोग भी उल्टे चला करते थे जो अल्लाह की निशानियों का इनकार किया करते थे। (63) अल्लाह ही है जिसने ज़मीन को (मख़्लूक़ के) रहने का ठिकाना बनाया, और आसमान को छत (की तरह) बनाया, और तुम्हारा नक़्शा बनाया, सो उम्दा नक़्शा बनाया, और तुमको उम्दा-उम्दा चीज़ें खाने को दीं। (पस) यह अल्लाह है तुम्हारा रब, सो बड़ा आ़लीशान है अल्लाह, जो सारे जहान का परवर्दिगार है। (64) वही (हमेशा से और हमेशा तक) ज़िन्दा रहने वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, सो तुम (सब) ख़ालिस एतिक़ाद करके उसको पुकारा करो, तमाम ख़ूबियाँ उसी अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहान का परवर्दिगार है। (65)

अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल वाला है

अल्लाह तआ़ला अपना एहसान बयान फ़रमाता है कि उसने रात को सुकून व राहत की चीज़ बनाई और दिन को रोशन और चमकीला किया ताकि हर शख़्स को अपने काम-काज में, सफ़र में, रोज़ी कमाने में सहूलत हो और दिन की सुस्ती और थकान रात के सुकून व आराम से उतर जाये। मख़्लूक़ पर अल्लाह तआ़ला बड़ा ही फ़ज़्ल व करम करने वाला है लेकिन अक्सर लोग रब की नेमतों की नाशुक्री करते हैं। इन चीज़ों को पैदा करने वाला और यह राहत व आराम के सामान मुहैया कर देने वाला ही एक अल्लाह है, जो तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, न उसके सिवा और कोई मख़्लूक़ की परवरिश करने वाला है, फिर तुम क्यों उसके सिवा दूसरों की इबादत करते हो? जो ख़ुद मख़्लूक़ हैं, किसी

चीज़ को उन्होंने पैदा नहीं किया, बल्कि जिन बुतों की तुम पूजा कर रहे हो वे ख़ुद तुम्हारे हाथों के गढ़े हुए हैं। इनसे पहले मुश्रिक लोग भी इसी तरह बहके और बिना दलील व हुज्जत के ग़ैरे-ख़ुदा (यानी अल्लाह के अ़लावा दूसरों) की इबादत करने लगे। नफ़्सानी इच्छाओं को सामने रखकर अल्लाह की दलीलों और निशानियों को झुठलाया और जहालत को आगे रखकर बहकते भटकते रहे। अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को तुम्हारे लिये क़रारगाह (रहने और ठहरने की जगह) बनाई, यानी ठहरी हुई और फ़र्श की तरह बिछी हुई कि इस पर तुम अपनी ज़िन्दगी गुज़ारो। चलो फिरो। आओ जाओ, पहाड़ों को इसमें गाड़कर इसे ठहरा दिया कि अब हिल-जुल नहीं सकती। उसने आसमान को छत बनाया जो हर तरह महफ़ूज़ (सुरक्षित) है, उसी ने तुम्हें बेहतरीन सूरतों में पैदा किया, हर जोड़ ठीक-ठाक और देखने के लायक़ बनाया। मुनासिब क़द-काठी, बेहतरीन अन्दाज़ से बदन के अंग, सुडौल बदन, ख़ूबसूरत चेहरा अ़ता फ़रमाया। नफ़ीस और बेहतरीन चीज़ें खाने पीने को दीं, पैदा उसने किया, बसाया उसने, खिलाया पिलाया उसने, पहनाया उढ़ाया उसने, पस सही मायने में ख़ालिक़ व राज़िक़ वही रब्बुल-आ़लमीन है। जैसे सूरः ब-क़रह में फ़रमाया:

يَـٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ........... الخ

यानी लोगो! अपने उस रब की इबादत करो जिसने तुम्हें और तुम से पहलों को पैदा किया, ताकि तुम बचो। उसी ने तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत बनाया और आसमान से बारिश नाज़िल फ़रमाकर उसके ज़रिये से ज़मीन से फल निकाल कर तुम्हें रोज़ियाँ दीं, पस तुम इन बातों को जानने के बावजूद अल्लाह तआ़ला के शरीक औरों को न बनाओ। यहाँ भी अपनी ये सिफ़तें बयान फ़रमाकर इरशाद फ़रमाया कि यही अल्लाह तआ़ला तुम्हारा रब है और सारे जहान का रब भी वही है। वह बरकत वाला है, वह बुलन्दी व पाकीज़गी और बरतरी व बुज़ुर्गी वाला है। वह अज़ल (शुरू यानी हमेशा) से है और अबद तक (यानी हमेशा) रहेगा। वह ज़िन्दा है जिस पर कभी मौत नहीं, वही अव्वल व आख़िर और ज़ाहिर व बातिन है। उसका कोई वस्फ़ (ख़ूबी और सिफ़त) किसी दूसरे में नहीं, उसका नज़ीर और उस जैसा कोई नहीं। तुम्हें चाहिये कि उसकी तौहीद को मानते हुए उससे दुआ़यें करते रहो, और उसकी इबादत में मशग़ूल रहो। तमाम तारीफ़ों का मालिक अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन ही है।

इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि उलेमा की एक जमाअ़त से मन्क़ूल है कि "ला इला-ह इल्लल्लाहु" पढ़ने वाले को साथ ही "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" भी पढ़ना चाहिये, ताकि इस आयत पर अ़मल हो जाये। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी यह मरवी है। हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि जब तू "फ़द्उ़ल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न" पढ़े तो "ला इला-ह इल्लल्लाहु" कह लिया कर और इसके साथ ही "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आ़लमीन" पढ़ लिया कर। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि. नमाज़ के सलाम के बाद:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ. لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَآءُ الْحَسَنُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ.

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल-मुल्कु व लहुल-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन्

क़दीर। ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि। ला इला-ह इल्लल्लाहु व ला नअ्बुदु इल्ला इय्याहु लहुन्निअ्मतु व लहुल-फ़ज़्लु व लहुस्सनाउल् ह-सनु। ला इला-ह इल्लल्लाहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न व लौ करिहल् काफ़िरून।

पढ़ते थे और फ़रमाया करते थे कि रसूलुल्लाह सल्ल. भी इन कलिमात को हर नमाज़ के बाद पढ़ा करते थे। (मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई)

Maktub E Ashraf

قُلْ اِنِّىْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِىَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ
رَّبِّىْ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○
هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ
نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا
ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا
اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ○ هُوَ
الَّذِىْ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا
فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ○ ع ٨ ١٢

आप (उन मुश्रिकों को सुनाने के लिए) कह दीजिए कि मुझको इससे मनाही कर दी गई है कि मैं उन (शरीकों) की इबादत करूँ जिनको ख़ुदा के सिवा तुम पुकारते हो। जबकि मेरे पास मेरे रब की निशानियाँ आ चुकी हैं। और मुझ को यह हुक्म हुआ है कि मैं (सिर्फ़) रब्बुल आलमीन के सामने गर्दन झुका लूँ। (66) वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर तुमको बच्चा करके (माँ के पेट से) निकालता है, फिर (तुमको ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, फिर ताकि तुम बूढ़े हो जाओ। और कोई-कोई तुममें से पहले ही मर जाता है और ताकि तुम सब (अपने-अपने) वक़्ते मुक़र्ररा (जो तक़दीर में तय है) तक पहुँच जाओ, और (यह सब कुछ इसलिए किया गया) ताकि तुम लोग समझो। (67) वही है जो ज़िन्दा करता है और मारता है, फिर वह जब किसी काम को (फ़ौरन) पूरा करना चाहता है, सो बस उसके मुताल्लिक़ (इतना) फ़रमा देता है कि हो जा, सो वह हो जाता है। (68)

झूठे माबूदों से लौ लगाना एक बड़ा जुर्म है

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! तुम इन मुश्रिकों से कह दो कि अल्लाह तआ़ला अपने सिवा हर किसी की इबादत से अपनी मख़्लूक़ को मना फ़रमा चुका है। उसके सिवा कोई इबादत का मुस्तहिक़ नहीं। इसकी बहुत बड़ी दलील इसके बाद की आयत है, जिसमें फ़रमाया कि उसी एक अल्लाह की इबादत करो जिसका कोई शरीक नहीं, जिसने तुम्हें मिट्टी से फिर नुत्फ़े (वीर्य के क़तरे) से फिर ख़ून के लोथड़े से पैदा किया। उसी ने तुम्हें माँ के पेट से बच्चे की सूरत में निकाला। इन तमाम हालतों को वही बदलता रहा। फिर उसी ने बचपन से जवानी तक तुम्हें पहुँचाया, वही जवानी के बाद

बुढ़ापे तक ले जायेगा, ये सब काम उसी एक के हुक्म, तक़दीर और तदबीर से होते हैं। फिर किस क़द्र नामुरादी है कि उसके साथ दूसरे की इबादत की जाये? बाज़ इससे पहले ही फ़ौत हो जाते हैं यानी कच्चे-पने में गिर जाते हैं, गर्भपात हो जाता है। बाज़ बचपन में बाज़ जवानी में बाज़ अधेड़ उम्र में बुढ़ापे से पहले ही मर जाते हैं। चुनाँचे क़ुरआन पाक में एक और जगह है:

وَنُقِرُّ فِی الْاَرْحَامِ مَانَشَآءُ.

यानी हम माँ के पेट में ठहराते हैं जब तक चाहें।

यहाँ फ़रमान है कि ताकि तुम मुक़र्ररा वक़्त तक पहुँच जाओ और तुम सोचो-समझो। यानी अपनी हालतों के इस इन्क़िलाब (तब्दीली) से तुम ईमान ले आओ कि इस दुनिया के बाद भी तुम्हें नई ज़िन्दगी में एक रोज़ खड़ा होना है। वही जिलाने मारने वाला है, उसके सिवा कोई मौत व ज़िन्दगी पर क़ादिर नहीं, उसके किसी हुक्म को किसी फ़ैसले को किसी निर्धारण को किसी इरादे को कोई तोड़ने वाला नहीं, वह जो चाहता है होकर ही रहता है और जो वह न चाहे नामुम्किन है कि वह हो जाये।

اَلَمْ تَرَ اِلَی الَّذِیْنَ یُجَادِلُوْنَ فِیْٓ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰی یُصْرَفُوْنَ ۝ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ۝ اِذِ الْاَغْلٰلُ فِیْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ؕ یُسْحَبُوْنَ ۝ فِی الْحَمِیْمِ ۙ ثُمَّ فِی النَّارِ یُسْجَرُوْنَ ۝ ثُمَّ قِیْلَ لَهُمْ اَیْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَیْـًٔا ؕ كَذٰلِكَ یُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِیْنَ ۝ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ۝ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَی الْمُتَكَبِّرِیْنَ ۝

क्या आपने उन लोगों (की हालत) को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं, (हक़ से) कहाँ फिरे चले जा रहे हैं? (69) जिन लोगों ने इस किताब (यानी क़ुरआन) को झुठलाया और उस चीज़ को जो हमने अपने पैग़म्बरों को देकर भेजा था, सो उनको अभी (यानी क़ियामत में जो क़रीब है) मालूम हुआ जाता है। (70) जबकि तौक़ उनकी गर्दनों में होंगे और ज़न्जीरें उनको घसीटते हुए (71) खौलते पानी में ले जाए जाएँगे, फिर ये आग में झोंक दिए जाएँगे। (72) फिर उनसे पूछा जाएगा कि अल्लाह के अलावा (वे माबूद) कहाँ गए जिनको तुम (ख़ुदाई में) शरीक ठहराते थे। (73) वे कहेंगे कि वे सब तो हमसे ग़ायब हो गए, बल्कि हम इससे पहले किसी को भी नहीं पूजते थे। अल्लाह तआ़ला इसी तरह काफ़िरों को ग़लती में फंसाए रखता है। (74) यह (सज़ा) उसके बदले में है कि तुम दुनिया में नाहक़ ख़ुशियाँ मनाते थे, और उसके बदले में कि तुम इतराते थे। (75) जहन्नम के दरवाज़ों में घुसो (और) हमेशा-हमेशा उसमें रहो, सो तकब्बुर करने वालों का वह बुरा ठिकाना है। (76)

काफ़िरों के लिये तौक़ और ज़न्जीरें हैं

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! क्या तुम्हें उन लोगों से ताज्जुब मालूम नहीं होता जो अल्लाह तआ़ला की बातों को झुठलाते हैं और अपने बातिल के साथ हक़ से रुके रहते हैं? तुम नहीं देख रहे हो कि किस तरह उनकी अ़क़्लें मारी गई हैं? और भलाई को छोड़कर बुराई को किस तरह चिमट गये हैं?

फिर उन बद-किरदार काफ़िरों को डरा रहा है कि हिदायत और भलाई को झूठ जानने वाले कलामे खुदा और कलामे रसूल के मुन्किर अपना अन्जाम अभी-अभी देख लेंगे। जैसे फ़रमाया "झुठलाने वालों के लिये वैल (ख़राबी और तबाही) है, जबकि गर्दनों में तौक़ और ज़न्जीरें पड़ी हुई होंगी और जहन्नम के दारोग़ा उनको घसीटे-घसीटे फिर रहे होंगे। कभी 'हमीम' में और कभी 'जहीम' में। गर्म खोलते हुए पानी में घसीटे जायेंगे और जहन्नम की आग में झुलसाये जायेंगे। जैसे एक दूसरी जगह है- यह है वह जहन्नम जिसे गुनाहगार लोग झूठा जाना करते थे, अब ये उसके और आग जैसे गर्म पानी के दरमियान मारे-मारे परेशान फिरा करें। दूसरी आयतों में उनका ज़क़्क़ूम खाना और गर्म पानी पीना बयान फ़रमाकर फ़रमायाः

ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَا۟ اِلَى الْجَحِيْمِ.

यानी फिर उनका लौटना तो जहन्नम की तरफ़ ही है।

सूरः वाक़िआ़ में बायें वालों का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि बायें हाथ वाले किस क़द्र बुरे हैं! वे आग में हैं और गर्म पानी में और काले धुएँ के साये में, जो न ठंडा है न फ़ायदेमन्द। आगे चलकर फ़रमाया "ऐ बहके हुए झुठलाने वालो! अलबत्ता सेंड का दरख़्त खाओगे उसी से अपना पेट भरोगे, फिर उस पर जलता जलता पानी पियोगे और इस तरह जिस तरह तोंस वाला ऊँट पीता है। आज इन्साफ़ के दिन इनकी मेहमानी यही होगी। एक और जगह फ़रमाया हैः

اِنَّ شَجَرَةَ الزَّقُّوْمِ.......... الخ

यानी यक़ीनन गुनाहगारों का खाना ज़क़्क़ूम का पेड़ है, जो पिघले हुए ताँबे की तरह है। जो पेट के अन्दर खोलता रहता है जैसे तेज़ गर्म पानी। इसे पकड़ो और धकेलते हुए जहन्नम के बीच में पहुँचाओ। फिर इसके सर पर तेज़ गर्म जलते पानी का अ़ज़ाब बहाओ। ले चख तू बड़ा ही इज़्ज़त वाला और बड़ा ही सम्मानित शख़्स था। यही है जिससे तुम शक व शुब्हे में थे।

मक़सद यह है कि एक तरफ़ से तो वे यह देख-सह रहे होंगे जिनका बयान ऊपर हुआ और दूसरी जानिब से उन्हें ज़लील व ख़्वार व रुस्वा और शर्मिन्दा करने के लिये बतौर डाँट-डपट और अपमान व ज़िल्लत के उनसे यह कहा जायेगा जिसका ज़िक्र हुआ। इब्ने अबी हातिम की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि एक तरफ़ से काला बादल उठेगा जिसे जहन्नमी देखेंगे और उनसे कहा जायेगा कि तुम क्या चाहते हो? वे बादल को देखते हुए दुनिया के अन्दाज़ पर कहेंगे कि हम चाहते हैं कि यह बरसे, वहीं उसमें से तौक़, ज़न्जीरें और आग के अंगारे निकलेंगे जिसके शोले उन्हें जलायेंगे झुलसायेंगे और जो तौक़ व बेड़ियाँ हैं उनके तौक़ व ज़न्जीरों के साथ उनको भी बढ़ा दिया जायेगा। फिर उनसे कहा जायेगा कि क्यों जी! दुनिया में खुदा के सिवा जिन-जिनको पूजते रहे वे सब आज कहाँ हैं? क्यों वे तुम्हारी मदद के लिये नहीं आये? क्यों तुम्हें यूँ बेकसी और बेबसी की हालत में छोड़ दिया? तो वे जवाब देंगे कि हाँ वे तो सब आज नापैद हो

गये, वे थे ही बेफ़ायदा। फिर उन्हें कुछ ख़्याल आयेगा और कहेंगे नहीं नहीं! हमने तो उनकी इबादत कभी नहीं की। जैसे एक दूसरी आयत में है कि जब उनके बनाये कुछ न बनेगी तो साफ़ इनकार कर देंगे और झूठ बोल देंगे:

وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ.

Maktab E Ashraf

ख़ुदाया हमें तेरी क़सम हम मुश्रिक न थे।

ये कुफ़्फ़ार इसी तरह बेकारी में खोये रहते हैं, इनसे फ़रिश्ते कहेंगे यह बदला है उसका जो तुम दुनिया में बेवजह अकड़ते फिरते थे, तकब्बुर व ज़ोरावरी पर कमर बाँधे रहते थे, लो अब आ जाओ जहन्नम के इन दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ। अब हमेशा यहीं पड़े रहना, तुम जैसे घमंडियों की ही यह मन्ज़िल और बुरा ठिकाना है। जिस क़द्र तकब्बुर था उतने ही ज़लील व ख़्वार आज बनोगे, जितने चढ़े थे उतने ही गिरोगे। वल्लाहु आलम।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ○ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِىَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِىَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ○ ع ٨ / ١٣	(और जब उनसे इस तरह बदला लिया जाएगा) तो आप (थोड़ा-सा) सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह तआ़ला का वायदा सच्चा है। फिर जिस (अ़ज़ाब) का हम उनसे वायदा कर रहे हैं, उसमें से कुछ थोड़ा-सा (अ़ज़ाब) अगर हम आपको दिखला दें, या (उसके आने से पहले ही) हम आपको वफ़ात दे दें, सो हमारे ही पास उनको आना होगा। (77) और हमने आपसे पहले बहुत-से पैग़म्बर भेजे, जिनमें से बाज़े तो वे हैं कि उनका क़िस्सा हमने आपसे बयान किया है, और बाज़े वे हैं जिनका हमने आपसे क़िस्सा बयान नहीं किया, और (इतनी बात सब में मुश्तरक है कि) किसी रसूल से यह न हो सकेगा कि कोई मोजिज़ा अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ज़ाहिर कर सके, फिर जिस वक़्त (अ़ज़ाब के आने के लिए) अल्लाह का हुक्म आएगा, ठीक-ठीक फ़ैसला हो जाएगा, और उस वक़्त बातिल वाले घाटे में रह जाएँगे। (78)

अल्लाह का वायदा सच्चा है, आप ज़रा सब्र कीजिये

अल्लाह तआ़ला अपने रसूल सल्ल. को सब्र का हुक्म देता है कि जो तेरी नहीं मानते, तुझे झूठा कहते हैं तू उनके सताने और तकलीफ़ें देने पर सब्र और संयम से काम ले। तुझे उन सब पर फ़तह व नुसरत मिलेगी। आख़िरकार हर तरह तेरे ही हक़ में बेहतर रहेगा। तू और तेरे मानने वाले ही तमाम दुनिया पर

ग़ालिब रहेंगे और आख़िरत तो सिर्फ़ तुम्हारी ही है। पस या तो हम अपने वायदे की बाज़ चीज़ें तेरी ज़िन्दगी में दिखा देंगे और यही हुआ भी, बदर वाले दिन कुफ़्र का धड़ और सर तोड़ दिया गया, क़ुरैश वालों के बड़े-बड़े सरदार मारे गये, आख़िरकार मक्का फ़तह हुआ और आप सल्ल. दुनिया से रुख़्सत न हुए जब तक कि अ़रब का तमाम इलाक़ा आपके क़ब्ज़े में न आ गया, और आप सल्ल. के दुश्मन आपके सामने ज़लील व ख़्वार न हुए और आपकी आँखें रब ने ठंडी न कर दीं। या अगर हम तुझे अपने पास बुला ही लें तो भी उनका लौटना तो हमारी तरफ़ ही है, हम उन्हें आख़िरत के दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला करेंगे।

फिर और ज़्यादा तसल्ली के तौर पर फ़रमा रहा है कि हम तुझसे पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं, जिनमें से बाज़ के हालात हमने तेरे सामने बयान कर दिये हैं और बाज़ के क़िस्से हमने बयान भी नहीं किये। जैसा कि सूरः निसा में भी फ़रमाया गया है। पस जिनके क़िस्से मज़कूर हैं देख लो कि क़ौम से उनकी कैसी कुछ निपटी। और बाज़ के वाक़िआ़त हमने बयान नहीं किये वे उनके मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा हैं, जैसे कि हमने सूरः निसा की तफ़सीर के मौक़े पर बयान कर दिया है।

फिर फ़रमाया यह नामुम्किन है कि कोई रसूल अपनी मर्ज़ी से मोजिज़े और चमत्कार दिखाये, हाँ ख़ुदा के हुक्म के बाद। क्योंकि रसूल के क़ब्ज़े में कोई चीज़ नहीं। हाँ जब अ़ज़ाबे ख़ुदा आ जाता है तो फिर झुठलाने वाले और दावत को नकारने वाले (यानी काफ़िर) बच नहीं सकते। मोमिन निजात पा लेते हैं और बातिल-परस्त ग़लत राह पर चलने वाले तबाह हो जाते हैं।

اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا
مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ○ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ
وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَ
عَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ○ وَ
يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَىَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ
تُنْكِرُوْنَ ○

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए ताकि उनमें बाज़ से सवारी लो, और उनमें बाज़ (ऐसे हैं कि उन) को खाते भी हो। (79) और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत फ़ायदे हैं। और (इसलिए बनाए) ताकि तुम उन पर अपने मतलब तक पहुँचो जो तुम्हारे दिलों में है, और उन पर (भी) और कश्ती पर (भी) लदे-लदे फिरते हो। (80) और (उनके अ़लावा) तुम को अपनी और भी निशानियाँ दिखलाता रहता है, सो तुम अल्लाह तआ़ला की कौन-कौनसी निशानियों का इनकार करोगे? (81)

जानवर तुम्हारे फ़ायदे के लिये हैं

'अन्आ़म' यानी ऊँट गाय, बकरी ख़ुदा तआ़ला ने इनसान के तरह-तरह के नफ़ों के लिये पैदा किये हैं। सवारियों के काम आते हैं, ऊँट सवारी का काम भी देता है और खाया भी जाता है। दूध भी देता है, बोझ भी ढोता है और दूर-दराज़ के सफ़र आसानी से तय करा देता है। गाय गोश्त खाने के काम भी आती है, दूध भी देती है, हल में भी जुतती है (यानी उसी की नस्ल से बैल)। बकरी का गोश्त भी खाया जाता है और दूध भी पिया जाता है। फिर इन सब के बाल बीसियों कामों में आते हैं, जैसे कि सूरः अन्आ़म, सूरः नहल वग़ैरह में बयान हो चुका है। यहाँ भी ये नफ़े इनाम के तौर पर गिनवाये जा रहे हैं। दुनिया जहान

Maktab E Ashraf

और इसके चप्पे-चप्पे में और कायनात के ज़र्रे-ज़र्रे में और ख़ुद तुम्हारी जानों में उस ख़ुदा की निशानियाँ मौजूद हैं। सच तो यह है कि उसकी अनगिनत निशानियों में से एक का भी कोई शख़्स इनकारी नहीं हो सकता।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ۝ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِىْ قَدْ خَلَتْ فِىْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ ع ۹ ۱۴

क्या उन लोगों ने मुल्क में चल-फिरकर नहीं देखा कि जो (मुश्रिक) लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उनका क्या अन्जाम हुआ? (हालाँकि) वे लोग उनसे ज़्यादा थे, और क़ुव्वत में और निशानियों में (भी) जो कि ज़मीन पर छोड़ गए हैं बढ़े हुए थे, सो उनकी (यह पूरी की पूरी) कमाई उनके कुछ भी काम न आई। (82) ग़र्ज़ जब उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलें लेकर आए तो वे लोग अपने (उस रोज़गार और कमाने के) इल्म पर बड़े इतराए, जो उनको हासिल था, और उन पर वह अज़ाब आ पड़ा जिसके साथ मज़ाक़ करते थे। (83) फिर जब उन्होंने हमारा अज़ाब देखा तो कहने लगे (अब) हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और उन सब चीज़ों से हम इनकारी हुए जिनको हम उसके साथ शरीक ठहराते थे। (84) सो उनका यह ईमान लाना फ़ायदेमन्द न हुआ जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया। अल्लाह तआ़ला ने अपना यही मामूल "यानी आ़दत और नियम" मुक़र्रर किया है जो उसके बन्दों में पहले से होता चला आया है, और उस वक़्त काफ़िर घाटे में रह गए। (85)

दुनिया में घूम-फिरकर देख लो

अल्लाह तआ़ला उन पहले लोगों की ख़बर दे रहा है जो रसूलों को इससे पहले झुठला चुके हैं। साथ ही बतलाता है कि इसका नतीजा क्या कुछ उन्होंने भुगता, इसके बावजूद कि वे क़वी थे, ज़मीन में निशानात इमारतें वग़ैरह भी ज़्यादा रखने वाले थे और बड़े मालदार थे, लेकिन कोई चीज़ उनके काम न आई, किसी ने अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब को उनसे दूर न किया, न कम किया न टाला न हटाया। ये थे ही ग़ारत किये जाने के क़ाबिल। क्योंकि जब उनके पास अल्लाह तआ़ला के क़ासिद साफ़-साफ़ दलीलें, रोशन हुज्जतें, खुले मोजिज़े, पाकीज़ा तालीमात लेकर आये तो उन्होंने आँख भरकर देखा तक नहीं, अपने पास के उलूम (यानी अपनी मालूमात और मान्यताओं) पर मग़रूर हो गये और रसूलों की तालीम की तौहीन करने

Mahtab E Ashraf

लगे। कहने लगे कि हम ही ज़्यादा आलिम हैं, हिसाब किताब अ़ज़ाब सवाब कोई चीज़ नहीं। अपनी जहालत को इल्म समझ बैठे। फिर तो ख़ुदा का वह अ़ज़ाब आया कि उनके बनाये कुछ न बनी, और जिसे झुठलाते थे, जिस पर नाक-भौं चढ़ाते थे, जिसे मज़ाक़ में उड़ाते थे उसी ने उन्हें तहस-नहस कर दिया, तबाह व बरबाद कर दिया। रूई की तरह धुन दिया, भूसी की तरह उड़ा दिया।

अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाबों को आता हुआ बल्कि आया हुआ देखकर ईमान का इक़रार किया और तौहीद (अल्लाह के एक होने) को तस्लीम भी कर लिया और ग़ैरे-ख़ुदा से साफ़ इनकार भी किया, लेकिन उस वक़्त की न तौबा क़बूल न ईमान क़बूल न इस्लाम मान्य। फ़िरऔ़न ने भी ग़र्क़ होते हुए कहा था कि मेरा उस ख़ुदा पर ईमान है जिस पर बनी इस्राईल का ईमान है, मैं उसके सिवा किसी को इबादत के लायक़ नहीं मानता। मैं इस्लाम क़बूल करता हूँ। ख़ुदा की तरफ़ से जवाब मिला कि अब ईमान लाना बेसूद है, बहुत नाफ़रमानियाँ और सरकशी कर चुके हो।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने भी उस सरकश के लिये यही बददुआ़ की थी कि ख़ुदाया! फ़िरऔ़नियों के दिलों को इस क़द्र सख़्त कर दे कि दर्दनाक अ़ज़ाब देख लेने तक उन्हें ईमान नसीब न हो। पस यहाँ भी अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि अ़ज़ाबों के देख लेने पर ईमान के क़बूल करने ने उन्हें कोई फ़ायदा न पहुँचाया। अल्लाह का यह हुक्म आ़म है, जो शख़्स भी अ़ज़ाबों को देखकर तौबा करे उसकी तौबा नामक़बूल (अस्वीकारीय) है।

हदीस शरीफ़ में है कि ग़रग़रे (जान हलक़ में आने) से पहले तक की तौबा क़बूल है। जब दम सीने में अटका, रूह हलक़ूम तक पहुँच गई तो फ़रिश्तों को देख लिया, अब कोई तौबा नहीं।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः मोमिन की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः हा-मीम सज्दा

सूरः हा-मीम सज्दा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 54 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ
يَّعْلَمُوْنَ ۝ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ
اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا
قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ
اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ
فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝

हा-मीम् (1) यह कलाम रहमान रहीम की तरफ़ से नाज़िल किया जाता है। (2) यह एक किताब है जिसकी आयतें साफ़-साफ़ बयान की गई हैं। यानी ऐसा क़ुरआन है जो अ़रबी (भाषा में) है, ऐसे लोगों के लिए (नफ़ा देने वाला है) जो अ़क्लमन्द हैं। (3) ख़ुशख़बरी देने वाला है (और न मानने वालों के लिए) डराने वाला है, सो अक्सर लोगों ने (इससे) मुँह फेरा, फिर वे (मुँह फेरने की वजह से) सुनते ही नहीं। (4) और वे लोग कहते हैं कि जिस बात की तरफ़ आप हमको बुलाते हैं हमारे दिल उससे पर्दों में हैं, और हमारे कानों में डाट (लग रही) है, और हमारे और आपके दरमियान एक पर्दा है, सो आप अपना काम किए जाईए हम अपना काम कर रहे हैं। (5)

यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल-शुदा है

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि यह अ़रबी का क़ुरआन ख़ुदा तआ़ला रहमान का उतारा हुआ है। जैसे एक दूसरी आयत में फ़रमाया कि इसे तेरे रब के हुक्म से रूहुल-अमीन ने हक़ के साथ नाज़िल फ़रमाया है। एक और आयत में है कि रूहुल-अमीन ने इसे तेरे दिल पर इसलिये नाज़िल फ़रमाया है कि तू लोगों को आगाह करने वाला बन जाये, इसकी आयतें मुफ़स्सल (स्पष्ट और खुली हुई) हैं, इनके मायने ज़ाहिर हैं, अहकाम मज़बूत हैं, अलफ़ाज़ वाज़ेह और आसान हैं। जैसे एक दूसरी आयत में है:

كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ......... الخ

यह किताब है जिसकी आयतें मोहकम व मुफ़स्सल (तफ़सीली) हैं। यह कलाम है हकीम व ख़बीर ख़ुदा का, लफ़्ज़ के एतिबार से मोजिज़ (यानी दूसरों को आ़जिज़ कर देने वाला, कोई ऐसा कलाम पेश नहीं कर

सकता) और मायने के एतिबार से भी मोजिज़ (बेमिसाल और दूसरों को आजिज़ कर देने वाला)। बातिल न इसके आगे से आ सके न पीछे से, हकीम व हमीद रब की तरफ़ से उतारा हुआ है।

इस बयान व वज़ाहत को इल्म वाले समझ रहे हैं। यह एक तरफ़ मोमिनों को ख़ुशख़बरी देता है दूसरी तरफ़ मुजरिमों को धमकाता और काफ़िरों को डराता है। इन सब ख़ूबियों के बावजूद फिर भी अक्सर क़ुरैश वाले मुँह फेरे हुए हैं और कानों में डाट भरे हुए हैं। फिर इससे भी ज़्यादा ढिटाई देखो कि ख़ुद कहते हैं कि तेरी पुकार से तो हमारे दिल पर्दों में हैं और जो तू लाया है उससे तो हम बहरे हैं, तेरे और हमारे दरमियान आड़ है। तेरी बातें न हमारी समझ में आती हैं न अ़क्ल में समाती हैं। जा तू अपने तरीक़े पर अ़मल करता चला जा, हम अपना तरीक़ा और रास्ता हरगिज़ न छोड़ेंगे। नामुम्किन है कि हम तेरी मान लें।

मुस्नद अ़ब्द बिन हुमैद में हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से मन्क़ूल है कि एक दिन क़ुरैश वालों ने जमा होकर आपस में मश्विरा किया कि जादू कहानत और शे'र-शायरी में जो सबसे ज़्यादा हो उसे लेकर उस शख़्स के पास चलें (यानी आँ हज़रत सल्ल. के पास) जिसने हमारी जमाअ़त में तफ़रीक़ (फूट और बिखराव) डाल दी है। हमारे काम में फूट डाल दी है और हमारे दीन में कमियाँ निकालनी शुरू कर दी हैं। वह इससे मुनाज़रा करे, इसे हरा दे और लाजवाब कर दे। सब ने कहा कि ऐसा शख़्स तो हम में उतबा बिन रबीआ़ के अ़लावा और कोई नहीं। चुनाँचे ये सब मिलकर उतबा के पास आये और अपनी सामूहिक ख़्वाहिश ज़ाहिर की। उसने क़ौम की बात रख ली और तैयार होकर हुज़ूर सल्ल. के पास आकर कहने लगा कि ऐ मुहम्मद! यह तो बता तू अच्छा है या अ़ब्दुल्लाह (यानी आपके वालिद साहिब)? आप सल्ल. ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने दूसरा सवाल किया कि अच्छा जवाब दे तू अच्छा है या तेरा दादा (यानी अ़ब्दुल मुत्तलिब)? हुज़ूर सल्ल. इस पर भी ख़ामोश रहे। वह कहने लगा सुन! अगर तू अपने बाप-दादों को अच्छा समझता है तब तो तुझे मालूम है कि वे इन्हीं माबूदों को पूजते रहे जिन्हें हम पूजते हैं, और जिनको तू बुरा कहता रहता है। और अगर तू अपने आपको उनसे बेहतर समझता है तो कलाम कर हम भी तेरी बात सुनें। क़सम ख़ुदा की दुनिया में कोई इनसान अपनी क़ौम के लिये तुझसे ज़्यादा नुक़सान पहुँचाने वाला पैदा नहीं हुआ, तूने हमारे संगठन को तोड़ दिया, तूने हमारे इत्तिफ़ाक़ को फूट से बदल दिया, तूने हमारे दीन को ऐबदार (कमियों वाला) बताया और उसमें बुराई निकाली, तूने हमें सारे अ़रब में बदनाम और रुस्वा कर दिया। आज हर जगह यही ज़िक्र है कि क़ुरैश वालों में एक जादूगर है, क़ुरैश वालों में काहिन है, अब तो यही एक बात बाक़ी रह गई है कि हम में आपस में लड़ाई हो, एक दूसरे के सामने हथियार लगाकर आ जाये, और यूँ ही लड़ा-भिड़ाकर तू हम सब को फ़ना कर देना चाहता है।

सुन! अगर तुझे माल की ख़्वाहिश है तो ले हम सब मिलकर तुझे इस क़द्र मालदार बना देंगे कि सारे अ़रब में तेरे बराबर और कोई माल वाला न निकलेगा, और अगर तुझे औ़रतों की ख़्वाहिश है तो हम में से जिसकी बेटी तुझे पसन्द हो तू बता, हम तेरी एक छोड़ दस-दस शादियाँ करा देते हैं। ये सब कुछ कहकर उसने ज़रा साँस लिया तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- बस कह चुके? उसने कहा हाँ। आप सल्ल. ने फ़रमाया अब मेरी सुनो! चुनाँचे आप सल्ल. ने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर इसी सूरत की तिलावत की और तक़रीबन डेढ़ रुकूअ़ 'मिस्ल-ल साअि़क़ति आ़दिंव्-व समूद' तक पढ़ा। इतना सुनकर उतबा बोल पड़ा बस कीजिये, बस कीजिये, तुम्हारे पास इसके सिवा कुछ नहीं? आप सल्ल. ने फ़रमाया नहीं।

अब यहाँ से उठकर चल दिया, क़ुरैश का मजमा उसके इन्तिज़ार में था। उसने देखते ही पूछा कहो क्या बात रही? उतबा ने कहा सुनो! तुम सब मिलकर जो कुछ कह सकते थे मैंने अकेले ही वह सब कुछ

कह डाला। उन्होंने कहा फिर उसने कुछ जवाब भी दिया? कहा हाँ जवाब तो दिया लेकिन ख़ुदा की क़सम! मैं तो एक हर्फ़ भी उसका समझ नहीं सका। अलबत्ता इतना समझा हूँ कि उन्होंने हम सब को आसमानी अ़ज़ाब से डराया है जो अ़ज़ाब आ़द वालों और समूद वालों पर आया था। उन्होंने कहा तुझे ख़ुदा की मार! एक शख़्स अ़रबी ज़बान में जो तेरी अपनी ज़बान (भाषा) है तुझसे कलाम कर रहा है और तू कहता है कि मैं समझा ही नहीं कि उसने क्या कहा? उतबा ने जवाब दिया- मैं सच कहता हूँ कि सिवाय अ़ज़ाब के ज़िक्र के मैं कुछ नहीं समझा।

अ़ल्लामा बग़वी रह. भी इस रिवायत को लाये हैं। उसमें यह भी है कि जब हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तिलावत की तो उतबा ने आप सल्ल. के मुँह मुबारक पर हाथ रख दिया, आपको क़समें देने लगा और रिश्तेदारी याद दिलाने लगा। फिर यहाँ से उल्टे-पावँ वापस जाकर घर में बैठ गया और क़ुरैश वालों की बैठक में आना-जाना बन्द कर दिया। इस पर अबू जहल ने कहा कि ऐ क़ुरैश वालो! मेरा ख़्याल तो यह है कि उतबा भी मुहम्मद की तरफ़ झुक गया, और वहाँ के खाने पीने में ललचा गया। वह था भी ज़रूरतमन्द। अच्छा तुम मेरे साथ हो लो, मैं उसके पास चलता हूँ, उसे ठीक कर लूँगा। वहाँ जाकर उसने कहा उतबा! तुमने जो हमारे पास आना-जाना छोड़ा उसकी वजह एक और सिर्फ़ एक ही मालूम होती है कि तुमको उसका (मुहम्मद सल्ल. का) दस्तरख़्वान पसन्द आ गया और तुम भी उसी की तरफ़ झुक गये हो? ज़रूरत और ग़रीबी बुरी चीज़ है। मेरा ख़्याल है कि हम आपस में चन्दा करके तेरी हालत ठीक कर दें ताकि इस मुसीबत और ज़िल्लत से तू छूट जाये। इस नये दरवाज़े की और नये मज़हब की तुझे ज़रूरत न रहे। इस पर उतबा बहुत बिगड़ा और कहने लगा कि मुझे मुहम्मद से क्या ग़र्ज़ है? क़सम ख़ुदा की अब उससे कभी बात न करूँगा, और तुम मेरे बारे में ऐसे ज़लील और घटिया ख़्यालात ज़ाहिर करते हो? हालाँकि तुम्हें मालूम है कि क़ुरैश में मुझसे बढ़कर कोई मालदार नहीं। बात सिर्फ़ यह है कि मैं तुम सब के कहने से उनके पास गया, सारा क़िस्सा सुनाया, बहुत बातें कीं, मेरे जवाब में फिर जो कलाम उन्होंने पढ़ा वल्लाह न तो वह शे'र था न कहानत का कलाम था, न जादू वग़ैरह था।

जब वह (यानी हुज़ूर सल्ल.) इस सूरत को पढ़ते हुए आयत "फ़-इन अअ्रज़ू..............." तक पहुँचे तो मैंने उनके मुँह पर हाथ रख दिया और उन्हें रिश्ते-नाते याद दिलाने लगा कि अल्लाह के लिये रुक जाओ मुझे तो ख़ौफ़ हो रहा था कि कहीं इसी वक़्त हम पर वह अ़ज़ाब न आ जाये, जो आ़द वालों और समूद वालों पर नाज़िल हुआ था। और यह तो तुम सब को मालूम है कि मुहम्मद झूठे नहीं।

सीरत इब्ने इस्हाक़ में यह वाक़िआ दूसरे अन्दाज़ से है। उसमें है कि क़ुरैश वालों की मज्लिस एक मर्तबा जमा थी, और नबी करीम सल्ल. ख़ाना-ए-काबा के एक गोशे (कोने) में बैठे हुए थे। उतबा क़ुरैश से कहने लगा कि अगर तुम सब का मश्विरा हो तो मैं मुहम्मद के पास जाऊँ, उन्हें समझाऊँ और कुछ लालच दिखाऊँ? अगर वह किसी बात को क़बूल कर लें तो हम उन्हें दे दें और उन्हें उनके काम से रोक दें। यह वाक़िआ उस वक़्त का है कि हज़रत हमज़ा रज़ि. मुसलमान हो चुके थे, मुसलमानों की संख्या माक़ूल हो गई थी और दिन-ब-दिन उसमें इज़ाफ़ा होता जा रहा था। सब क़ुरैशी इस बात पर रज़ामन्द हुए। यह हुज़ूर सल्ल. के पास आया और कहने लगा भतीजे! तुम आ़ला नसब वाले हो, तुम हम में से हो, हमारी आँखों के तारे और हमारे कलेजे के टुकड़े हो, अफ़सोस कि आप अपनी क़ौम के पास इतनी अ़जीब व ग़रीब चीज़ लाये, आपने उनमें फूट डलवा दी, आपने उनके अ़क़्लमन्दों को बेवक़ूफ़ क़रार दिया, आपने उनके माबूदों की ऐब-जोई की (यानी उनको बुरा कहा और उनमें ऐब निकाले)। आपने उनके दीन को बुरा कहना शुरू किया,

Maktaba Ashraf

आपने उनके बड़े-बूढ़ों को काफ़िर बनाया। अब सुन लो! आज मैं आपके पास एक आख़िरी और इन्तिहाई फ़ैसले के लिये आया हूँ। मैं बहुत सी सूरतें पेश करता हूँ उनमें से जो आपको पसन्द हो क़बूल कीजिये। ख़ुदा के लिये इस फ़ितने को ख़त्म कर दीजिये।

आपने फ़रमाया जो कुछ तुम्हें कहना हो कहो, मैं सुन रहा हूँ। उसने कहा सुनो! अगर आपका इरादा इससे माल जमा करने का है तो हम सब मिलकर आपके लिये इतना माल जमा कर देते हैं कि आपसे बढ़कर कोई मालदार सारे क़ुरैश में न हो। और अगर आपका इरादा इससे अपनी सरदारी का है तो हम सब मिलकर आपको सरदार तस्लीम कर लेते हैं। और अगर आप बादशाह बनना चाहते हैं तो हम मुल्क आपको सौंपकर आपकी प्रजा बनने के लिये भी तैयार हैं। और अगर आपको कोई जिन्न वग़ैरह का असर है तो हम अपना माल ख़र्च करके बेहतर से बेहतर तबीब और झाड़-फूँक करने वाले मुहैया करके आपका इलाज कराते हैं। ऐसा हो जाता है कि बाज़ मर्तबा ताबे (अधीन) जिन्न अपने आ़मिल पर ग़ालिब आ जाता है तो इसी तरह उससे छुटकारा हासिल किया जाता है। जब उतबा ख़ामोश हुआ तो आपने फ़रमाया- अपनी सब कह चुके? कहा हाँ। फ़रमाया अब मेरी सुनो! वह मुतवज्जह हो गया। आप सल्ल. ने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर इस सूरत की तिलावत शुरू की। उतबा अदब से सुनता रहा, यहाँ तक कि आपने सज्दे की आयत पढ़ी और सज्दा किया। फिर फ़रमाया- अबू वलीद! मैं कह चुका अब तुझे इख़्तियार है।

उतबा यहाँ से उठा और अपने साथियों की तरफ़ चला, उसका चेहरा देखते ही हर कोई कहने लगा कि उतबा का हाल बदल गया। उससे पूछा कहो क्या बात रही? उसने कहा मैंने तो ऐसा कलाम सुना है जो वल्लाह इससे पहले कभी नहीं सुना। बख़ुदा न तो वह जादू है न शे'र-गोई है, न काहिनों का कलाम है। सुनो क़ुरैश वालो! मेरी मान लो और मेरी इस जची-तुली बात को क़बूल कर लो। उसे उसके ख़्यालात पर छोड़ दो, न मुवाफ़क़त करो न मुख़ालफ़त। जो दावा उसका है और जो वह कहते हैं उसमें तमाम अ़रब उनका मुख़ालिफ़ है, वह अपनी तमाम ताक़त उसके मुक़ाबले में ख़र्च कर रहा है। या तो वे (अ़रब के लोग) इन पर ग़ालिब आ जायेंगे तो तुम सस्ते छूटे, या यह उन पर ग़ालिब आ जायेंगे तो उनका मुल्क तुम्हारा मुल्क कहा जायेगा और उनकी इज़्ज़त तुम्हारी इज़्ज़त होगी। और सब से ज़्यादा उनके नज़दीक मक़बूल तुम ही हो जाओगे। यह सुनकर क़ुरैश वालों ने कहा कि ऐ अबू वलीद! क़सम ख़ुदा की मुहम्मद ने तुझ पर भी जादू कर दिया। उसने जवाब दिया सुनो! जो मेरी राय थी मैं आज़ादी से कह चुका, अब तुम्हें अपने फ़ेल का इख़्तियार है।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰـهُكُمْ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۭ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ

आप फ़रमा दीजिए कि मैं भी तुम ही जैसा बशर हूँ। मुझ पर यह 'वही' नाज़िल होती है कि तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है, सो उस (माबूदे बरहक़) की तरफ़ सीध बाँध लो और उससे माफ़ी माँगो, और ऐसे मुश्रिकों के लिए बड़ी ख़राबी है (6) जो ज़कात नहीं देते, और वे आख़िरत के इनकारी ही रहते हैं। (7) (और उनके उलट) जो लोग ईमान ले आए और

Maktab E Ashraf

هُمْ كٰفِرُوْنَ ○ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ○ ع ۸ ۱۵	उन्होंने नेक काम किए उनके लिए (आख़िरत में) ऐसा अज्र है जो (कभी) मौकूफ़ होने वाला नहीं। (8)

मैं भी एक इनसान हूँ

अल्लाह तआला का हुक्म हो रहा है कि इन झुठलाने वाले मुश्रिकों के सामने ऐलान कर दीजिये कि मैं तुम ही जैसा इनसान हूँ। मुझे अल्लाह की 'वही' के ज़रिये हुक्म दिया गया है कि तुम सब का माबूद एक अकेला अल्लाह तआला ही है। तुम जो अलग-अलग और कई माबूद बनाये बैठे हो यह तरीक़ा सरासर गुमराही वाला है। तुम सारी इबादतें उसी एक ख़ुदा के लिये बजा लाओ और ठीक उस तरह जिस तरह तुम्हें उसके रसूल से मालूम हो, और अपने पहले गुनाहों से तौबा करो, उनकी माफ़ी तलब करो, यक़ीन मानो कि ख़ुदा के साथ शिर्क करने वाले हलाक होने वाले हैं, जो ज़कात नहीं देते। यानी बक़ौल इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' की शहादत नहीं देते। इक्रिमा रह. भी यही फ़रमाते हैं। क़ुरआने करीम में एक जगह है:

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا. وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا.

यानी उसने फ़लाह पाई जिसने अपने नफ़्स को पाक कर लिया और वह हलाक हुआ जिसने उसे (बुराईयों में) दबा दिया। एक दूसरी आयत में फ़रमायाः

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى. وَذَكَرَاسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى.

यानी उसने निजात हासिल कर ली जिसने पाकीज़गी की और अपने रब का नाम ज़िक्र किया, फिर नमाज़ अदा की। एक और जगह इरशाद है:

هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى.

क्या तुझे पाक होने का ख़्याल है?

इन आयतों में ज़कात यानी पाकी से मतलब नफ़्स को बुरे और ख़राब अख़्लाक़ से दूर करना है, और सबसे बड़ी और पहली क़िस्म उसके शिर्क से पाक होना है। इसी तरह ऊपर दर्ज हुई आयत में ज़कात न देने से तौहीद (अल्लाह के एक होने) का न मानना मुराद है। माल की ज़कात इसलिये कहा जाता है कि यह हुर्मत (उसके हराम होने) से पाक कर देती है और ज़्यादती व बरकत और माल की अधिकता का सबब बनती है, और ख़ुदा की राह में उसे ख़र्च करने की तौफ़ीक़ होती है। लेकिन इमाम सुद्दी रह., मुआ़विया बिन क़ुर्रा, क़तादा रह. और दूसरे मुफ़स्सिरीन ने इसके मायने यह किये हैं कि माल की ज़कात अदा नहीं करते और बज़ाहिर यही मालूम होता है। इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसी को मुख़्तार (पसन्दीदा) कहते हैं। लेकिन यह क़ौल ग़ौर-तलब है, इसलिये कि ज़कात फ़र्ज़ हुई है मदीने में जाकर, हिजरत करने के दूसरे साल, और यह आयत उतरी है मक्का शरीफ़ में, ज़्यादा से ज़्यादा इस तफ़सीर को मानकर हम यह कह सकते हैं कि सदक़े और ज़कात की असल का हुक्म तो नुबुव्वत के शुरूआ़ती दौर में ही था। जैसे अल्लाह तबारक व तआ़ला का फ़रमान है:

Mustafa Ashraf

وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ.

जिस दिन खेत काटो तो उसका हक़ दे दिया करो।

वहाँ वह ज़कात जिसका निसाब और जिसकी मिक़्दार (मात्रा) अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर है वह मदीने में मुक़र्रर हुई। यह क़ौल ऐसा है जिससे दोनों में ततबीक़ (मुवाफ़क़त) भी हो जाती है। ख़ुद नमाज़ को देखिये कि सूरज निकलने और सूरज छुपने से पहले नुबुव्वत के शुरू ही में ही फ़र्ज़ हो चुकी थी लेकिन मेराज वाली रात हिजरत से डेढ़ साल पहले पाँचों नमाज़ें बाक़ायदा शर्तों और अरकान के साथ मुक़र्रर हो गईं और धीरे-धीरे इसके तमाम अहकाम पूरे कर दिये गये। वल्लाहु आलम।

इसके बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ख़ुदा के मानने वालों और नबी सल्ल. के इताअ़त-गुज़ारों (फ़रमाँबरदारों) के लिये वह अज्र व सवाब है जो हमेशगी वाला और कभी ख़त्म न होने वाला है। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमाया है:

مَاكِثِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا.

वे उसमें हमेशा-हमेशा रहने वाले हैं। एक और जगह फ़रमाता है:

عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ.

उन्हें जो इनाम दिया जायेगा वह न टूटने वाला और लगातार है। सुद्दी रह. कहते हैं कि गोया वह उनका हक़ है जो उन्हें दिया गया, न बतौर एहसान के। लेकिन बाज़ इमामों ने इसकी तरदीद की है क्योंकि जन्नत वालों पर भी यक़ीनन अल्लाह तआ़ला का एहसान है। ख़ुद क़ुरआन में है:

بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰكُمْ لِلْاِيْمَانِ.

यानी बल्कि ख़ुदा का तुम पर एहसान है कि वह तुम्हें ईमान की हिदायत करता है। जन्नतियों का क़ौल है:

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ.

पस ख़ुदा ने हम पर एहसान किया और आग के अ़ज़ाब से बचा लिया। रसूले करीम सल्ल. फ़रमाते हैं- "मगर यह कि ख़ुदा मुझे अपनी रहमत और अपने फ़ज़्ल व एहसान में ले ले"।

आप फ़रमाईए कि क्या तुम लोग ऐसे ख़ुदा (की तौहीद) का इनकार करते हो जिसने ज़मीन को (इतनी बड़ा होने के बावजूद) दो दिन में पैदा कर दिया, और तुम उसके शरीक ठहराते हो। यही सारे जहान का रब है। (9) और उसी ने ज़मीन में उसके ऊपर पहाड़ बना दिए, और इस (ज़मीन) में फ़ायदे की चीज़ें रख दीं, और इसमें इस (के रहने वालों) की गिज़ाएँ तजवीज़ कर दीं, चार दिन में (हुआ। जो गिनती में)	قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ؕ سَوَآءً

Maktab E Ashraf

لِّلسَّآئِلِيْنَ ٥ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ٥ فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَ اَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ٥	पूरे हैं पूछने वालों के लिए। (10) फिर आसमान (के बनाने) की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और वह (उस वक़्त) धुआँ-सा था, सो उससे और ज़मीन से फ़रमाया कि तुम दोनों ख़ुशी से आओ या ज़बरदस्ती से। दोनों ने अ़र्ज़ किया कि हम ख़ुशी से हाज़िर हैं। (11) सो दो दिन में उसके सात आसमान बना दिए और हर आसमान में उसके मुनासिब (फ़रिश्तों को) अपना हुक्म भेज दिया। और हमने इस क़रीब वाले आसमान को सितारों से सजाया और (शैतानों के वहाँ जाकर चोरी-छुपे ख़बर सुनने से) उसकी हिफ़ाज़त की, यह तजवीज़ है (ख़ुदा-ए-) ज़बरदस्त, हर चीज़ के जानने वाले की। (12)

अल्लाह के बनाये हुए ज़मीन व आसमान को देखो

हर चीज़ का ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाला), हर चीज़ का मालिक, हर चीज़ पर हाकिम, हर चीज़ पर क़ादिर सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला है। पस इबादत भी सिर्फ़ उसी की करनी चाहिये। उसने ज़मीन जैसी लम्बी-चौड़ी मख़्लूक़ को अपनी कमाले क़ुदरत से सिर्फ़ दो दिन में पैदा कर दिया है। तुम्हें उसके साथ कुफ़्र न करना चाहिये न शिर्क, जिस तरह सब का पैदा करने वाला वही एक है, ठीक इसी तरह सब का पालने वाला भी वही एक है।

यह तफ़सील याद रहे कि दूसरी आयतों में ज़मीन व आसमान का छह दिन में पैदा करना बयान हुआ है और यहाँ इनकी पैदाईश का वक़्त अलग बयान हो रहा है। पस मालूम हुआ कि पहले ज़मीन बनाई गई। इमारत का क़ायदा यही है कि पहले बुनियादें और नीचे का हिस्सा तैयार किया जाता है फिर ऊपर का हिस्सा और छत बनाई जाती है। चुनाँचे कलामुल्लाह शरीफ़ की एक और आयत में है कि अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन में जो कुछ है पैदा करके फिर आसमानों की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और ठीक सात आसमान बना दिये। हाँ सूरः नाज़िआ़त में है:

وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰهَا.

कि पहले आसमान को पैदा किया गया फिर फ़रमाया कि ज़मीन को उसके बाद बिछाया....।

इससे मुराद ज़मीन में से पानी चारा निकालना और पहाड़ों का गाड़ना है, जैसे कि उसके बाद ही बयान है, यानी पैदा पहले ज़मीन की गई फिर आसमान फिर ज़मीन को ठीक-ठाक किया। लिहाज़ा दोनों आयतों में कोई फ़र्क़ (टकराव) नहीं।

फ़ायदाः सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि एक शख़्स ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से पूछा कि क़ुरआन की बाज़ आयतों में मुझे इख़्तिलाफ़ (मज़मून में आपस में टकराव) सा नज़र आता है चुनाँचे एक

Maktab E Ashraf

आयत में है:

فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَ لُوْنَ.

यानी क़ियामत के दिन आपस के नसब (नस्ल और ख़ानदान) न होंगे और न एक दूसरे से सवाल करेगा। दूसरी आयत में है:

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَ لُوْنَ.

यानी आपस में एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर पूछ-पाछ करेंगे।

एक आयत में है:

وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا.

यानी ख़ुदा से कोई बात छुपायेंगे नहीं। दूसरी आयत में है कि मुश्रिक लोग कहेंगे:

وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ.

क़सम ख़ुदा की हमने शिर्क नहीं किया।

एक आयत में है कि ज़मीन को आसमान के बाद बिछाया:

وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰهَا.

दूसरी आयत:

قُلْ اَئِنَّكُمْ.......... الخ

में पहले ज़मीन की पैदाईश फिर आसमान की पैदाईश का ज़िक्र है। एक तो इन आयतों का सही मतलब बताईये जिससे इख़्तिलाफ़ (इनका एक दूसरे के ख़िलाफ़ होना) उठ जाये। दूसरे यह जो फ़रमाया:

كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا. عَزِيْزًا حَكِيْمًا. سَمِيْعًا بَصِيْرًا.

तो क्या मतलब है कि अल्लाह तआ़ला ऐसा-ऐसा था?

इसके जवाब में आपने फ़रमाया कि जिन दो आयतों में एक में आपस में सवाल व जवाब है और एक में इसका इनकार है। ये दो वक़्त हैं। सूर में दो बार फूँक मारी जायेगी, एक के बाद आपस की पूछ-गछ न होगी, एक के बाद आपस में एक दूसरे से सवालात होंगे। जिन दो दूसरी आयतों में एक में बात के न छुपाने का और एक में छुपाने का ज़िक्र है, यह भी दो मौक़े की हैं। जब मुश्रिक लोग देखेंगे कि ईमान वालों के गुनाह बख़्श दिये गये तो कहने लगेंगे कि हम मुश्रिक न थे, लेकिन जब उनके मुँह पर मोहर लग जायेगी और बदन के हिस्से (अंग) गवाही देने लगेंगे तो अब कुछ भी न छुपेगा और ख़ुद अपने करतूत के इक़रारी हो जायेंगे। कहने लगेंगे कि काश हम ज़मीन के बराबर कर दिये जाते।

आसमान व ज़मीन की पैदाईश की तरतीब के बयान में भी दर असल कुछ इख़्तिलाफ़ नहीं। पहले दो दिन में ज़मीन बनाई गई, फिर आसमान को दो दिन में बनाया गया। फिर ज़मीन की चीज़ें पानी चारा पहाड़ कंकर रेत जमादात टीले वग़ैरह दो दिन में पैदा किये, यही मायने लफ़्ज़ 'दहाहा' के हैं। पस ज़मीन की पूरी पैदाईश चार दिन में हुई और दो दिन में आसमान। और जो नाम अल्लाह तआ़ला ने अपने मुक़र्रर किये हुए हैं उनका बयान फ़रमाया है। वह हमेशा ऐसा ही रहेगा, ख़ुदा का कोई इरादा पूरा हुए बग़ैर नहीं रहता। पस क़ुरआन में हरगिज़ इख़्तिलाफ़ (भिन्नता) नहीं। उसका एक-एक लफ़्ज़ ख़ुदा की तरफ़ से है। ज़मीन को

Maktab-E-Ashraf

अल्लाह तआ़ला ने दो दिन में पैदा किया है, यानी इतवार और पीर के दिन, और ज़मीन में ज़मीन के ऊपर ही पहाड़ बना दिये, और ज़मीन को उसने बरकत वाली बनाई। तुम इसमें बीज बोते हो, दरख़्त और फल वग़ैरह इससे पैदा होते हैं, और ज़मीन वालों को जिन चीज़ों की ज़रूरत है वे इसी से पैदा होती हैं। खेतों और बाग़ात की जगहें इसमें उसने बना दी हैं, ज़मीन की यह दुरुस्ती (यानी ठीक-ठाक करना) मंगल और बुध के दिन हुई। चार दिन में ज़मीन की पैदाईश ख़त्म हुई। जो लोग इसकी मालूमात हासिल करना चाहते थे उन्हें पूरा जवाब मिल गया। ज़मीन के हर हिस्से में उसने वह चीज़ मुहैया (उपलब्ध) कर दी जो वहाँ के लायक़ थी। जैसे अ़सल यमन में, साबूरी साबूर में, तयालिसा रै में। यही मतलब आयत के आख़िरी जुमले का है। यह भी कहा गया है कि जिसकी जो हाजत थी अल्लाह तआ़ला ने उसके लिये मुहैया कर दी। इस मायने की ताईद अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान से भी होती है:

وَاٰتٰكُمْ مِّنْ كُلِّ مَاسَاَلْتُمُوْهُ.

कि तुमने जो कुछ माँगा अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें दिया। वल्लाहु आलम।

फिर अल्लाह तआ़ला ने आसमान की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई। वह धुएँ की शक्ल में था। ज़मीन के पैदा किये जाने के वक़्त पानी जो बुख़ारात (भाप) उठे थे, अब दोनों से फ़रमाया कि या तो मेरे हुक्म को मानो और जो मैं कहता हूँ हो जाओ, ख़ुशी से या नाख़ुशी से। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जैसे आसमानों को हुक्म हुआ कि सूरज चाँद सितारे अपने अन्दर निकालें, ज़मीन से फ़रमाया कि अपनी नहरें जारी कर, अपने फल उगा, वग़ैरह। दोनों फ़रमाँबरदारी के लिये राज़ी ख़ुशी तैयार हो गये और अ़र्ज़ किया कि हम मय उस तमाम मख़्लूक़ के जिसे तू बनाने और पैदा करने वाला है तेरे फ़रमान के ताबे हैं। और कहा गया कि इन्हें क़ायम-मक़ाम कलाम करने वालों के किया गया और यह भी कहा गया है कि ज़मीन के उस हिस्से ने कलाम किया जहाँ काबा बनाया गया है और आसमान के उस हिस्से ने कलाम किया जो ठीक उसके ऊपर है। वल्लाहु आलम।

इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि अगर आसमान व ज़मीन इताअ़त-गुज़ारी (हुक्म मानने) का इक़रार न करते तो उन्हें सज़ा होती, जिसका एहसास भी उन्हें होता। पस दो दिन में सातों आसमान उसने बना दिये, यानी जुमेरात और जुमा के दिन। और हर आसमान में उसने जो-जो चीज़ें और जैसे-जैसे फ़रिश्ते मुक़र्रर करने चाहे मुक़र्रर फ़रमा दिये, और दुनिया वाले आसमान को उसने सितारों से सजाया जो ज़मीन पर चमकते रहते हैं, और जो उन शयातीन की निगरानी करते हैं जो मला-ए-आला (ऊपर की दुनिया) की बातें सुनने के लिये ऊपर चढ़ना चाहते हैं। यह तदबीर व अन्दाज़ा उस ख़ुदा का है जो सब पर ग़ालिब है, जो कायनात के एक-एक चप्पे की हर छुपी-खुली हरकत को जानता है।

इब्ने जरीर की रिवायत में है कि यहूदियों ने हुज़ूर सल्ल. से आसमान व ज़मीन की पैदाईश के बारे में सवाल किया तो आपने फ़रमाया कि इतवार और पीर के दिन अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को पैदा किया और पहाड़ों को और जितने लाभ उनमें हैं उनको मंगल के दिन पैदा किया। बुध के दिन दरख़्तों को, पानी को, शहरों को, आबादी और वीराने को पैदा किया। तो चार दिन हुए। इसे बयान फ़रमाकर फिर आप सल्ल. ने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया कि जुमेरात के दिन आसमान को पैदा किया और जुमे के दिन सितारों और सूरज चाँद को और फ़रिश्तों को पैदा किया, तीन घड़ी के रहने तक। फिर पहली घड़ी में मुद्दत पैदा की जिसमें मरने वाले का मुक़र्ररा वक़्त है, फिर दूसरी घड़ी में हर चीज़ में आफ़त डाली जिससे

लोग फ़ायदा उठाते हैं और तीसरी घड़ी में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा किया, उन्हें जन्नत में बसाया, शैतान को उन्हें सज्दा करने का हुक्म दिया और आख़िरी घड़ी में उन्हें वहाँ से निकाल दिया।

यहूदियों ने कहा अच्छा हुज़ूर! उसके बाद क्या हुआ? फ़रमाया फिर वह अ़र्श पर क़ायम (ब्राजमान) हो गया। उन्होंने कहा आपने सब ठीक फ़रमाया लेकिन आख़िरी बात न कही, कि फिर आराम हासिल किया। इस पर हुज़ूर सल्ल. सख़्त नाराज़ हुए और यह आयत उतरी:

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ. فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ.

यानी हमने आसमान व ज़मीन और जो इनके दरमियान है सब को छह दिन में पैदा किया और हमें कोई थकान नहीं हुई, तू इनकी बातों पर सब्र कर। यह हदीस ग़रीब है।

एक और रिवायत में है, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि मेरा हाथ पकड़कर रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने मिट्टी को शनिवार के रोज़ पैदा की, इसमें पहाड़ों को इतवार के दिन रखे, दरख़्त पीर वाले दिन पैदा किये, नापसन्दीदा और बुरी चीज़ों को मंगल के दिन, नूर बुध के दिन पैदा किया और जानवरों को ज़मीन में जुमेरात के दिन फैला दिये। और जुमे के दिन अ़सर के बाद जुमे की आख़िरी घड़ी में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा किया और पैदाईश का काम पूरा हुआ। मुस्लिम शरीफ़ और नसाई शरीफ़ में भी यह हदीस है, लेकिन यह भी ग़राइबे सही (हदीस की एक क़िस्म) में से है। और इमाम बुख़ारी रह. ने तारीख़ में इसे मुअ़ल्लल (इल्लत व कमज़ोरी वाला) बतलाया है, और फ़रमाया है कि इसे बाज़ रावियों ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने इसे कअ़बे अहबार रज़ि. से रिवायत किया है, और यही ज़्यादा सही है।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ
صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ۞ اِذْ جَآءَتْهُمُ
الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا
تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا
لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ
كٰفِرُوْنَ ۞ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا
قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَهُمْ
هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا

फिर अगर (तौहीद की दलीलें सुनकर भी) ये लोग (तौहीद से) मुँह मोड़ें तो आप कह दीजिए कि मैं तुमको ऐसी आफ़त से डराता हूँ जैसी आ़द व समूद पर (शिर्क व कुफ़्र की बदौलत) आफ़त आई थी। (13) जबकि उनके पास उनके आगे से भी और उनके पीछे से भी पैग़म्बर आए, कि अल्लाह के सिवा और किसी को मत पूजो। उन्होंने जवाब दिया कि अगर हमारे रब को (यह) मन्ज़ूर होता (कि किसी को पैग़म्बर बनाकर भेजे) तो फ़रिश्तों को भेजता, सो हम इस (तौहीद) से भी इनकारी हैं, जिसको देकर (तुम अपने गुमान के मुताबिक़) भेजे गए हो। (14) फिर वे जो आ़द के लोग थे, वे दुनिया में नाहक़ का तकब्बुर करने लगे और कहने लगे, वह कौन है जो क़ुव्वत में हमसे ज़्यादा है? (आगे जवाब है कि) क्या उनको यह नज़र न आया कि जिस ख़ुदा ने उनको पैदा किया वह

Maktab E Ashraf

उनसे क़ुव्वत में बहुत ज़्यादा है, और हमारी आयतों का इनकार करते रहे। (15) तो हमने उन पर एक तेज़ हवा ऐसे दिनों में भेजी जो मन्हूस थे, ताकि हम उनको इस दुनियावी ज़िन्दगी में रुस्वाई के अ़ज़ाब का मज़ा चखाएँ, और आख़िरत का अ़ज़ाब और ज़्यादा रुस्वाई का सबब है, और उनको मदद न पहुँचेगी। (16) और वे जो समूद थे, तो हमने उनको (पैग़म्बर के ज़रिये से) रास्ता बतलाया था, सो उन्होंने हिदायत के मुक़ाबले में गुमराही को पसन्द किया, पस उनको उनके बुरे आमाल की वजह से ज़िल्लत भरे अ़ज़ाब की आफ़त ने पकड़ लिया। (17) और हमने (उस अ़ज़ाब से) उन लोगों को निजात दी जो ईमान लाए और (हमसे) डरते थे। (18)	يَجْحَدُوْنَ ۞ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ۞ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۞ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۞ ع ٢ ١٦

क़ौमे आ़द व समूद की आश्चर्य जनक दास्तान के कुछ हिस्से

हुक्म होता है कि जो आपको झुठला रहे हैं, और ख़ुदा के साथ कुफ़्र कर रहे हैं आप उनसे फ़रमा दीजिये कि मेरी तालीम से मुँह मोड़ना (यानी उसको न मानना) तुम्हें किसी अच्छे नतीजे पर नहीं पहुँचायेगा। याद रखो कि जिस तरह अम्बिया की मुख़ालिफ़ उम्मतें तुमसे पहले तबाह व बरबाद कर दी गईं कहीं तुम्हारी बदबख़्ती (जो तुम्हारे आमाल की वजह से है) भी तुम्हें उन्हीं में से न कर दे। क़ौमे आ़द और समूद वालों के और उन जैसे औरों के हालात तुम्हारे सामने हैं। उनके पास लगातार अल्लाह के रसूल आये, इस गाँव में उस गाँव में, इस बस्ती में उस बस्ती में ख़ुदा तआ़ला के पैग़म्बर, ख़ुदा की मुनादी करते फिरते लेकिन उनकी आँखों पर पर्दा पड़ा हुआ था और दिमाग़ इस तरह तकब्बुर और ज़ुल्म व ज़्यादती की जकड़ में थे कि किसी एक को भी मानकर न दी। अपने सामने अल्लाह वालों की बेहतरी और रसूलों के दुश्मनों की अबतरी (गिरावट) देखते थे लेकिन फिर भी उनको झुठलाने से बाज़ न आये। हुज्जत बाज़ी और बेकार की बहस से न हटे और कहने लगे कि अगर ख़ुदा को रसूल भेजना होता तो किसी अपने फ़रिश्ते को भेजता, तुम इनसान होकर रसूल कैसे बन बैठे? हम तो इसका हरगिज़ यक़ीन न करेंगे। उन आ़द वालों ने ज़मीन में फ़साद फैला दिया, उनकी सरकशी उनका ग़ुरूर हद को पहुँच गया, उनकी हरकतें और बेपरवाहियाँ यहाँ तक पहुँच गईं कि पुकार उठे- हमसे ज़्यादा ज़ोरावर कोई नहीं, हम ताक़तवर मज़बूत और ठोस हैं। अल्लाह के अ़ज़ाब हमारा क्या बिगाड़ लेंगे? इस क़द्र फूले कि ख़ुदा को भी भूले। यह भी ख़्याल न रहा कि हमारा पैदा करने वाला तो इतना क़वी (ताक़तवर और क़ुव्वत वाला) है कि उसकी ज़ोरावरी का अन्दाज़ा भी हम नहीं कर सकते। जैसे एक जगह फ़रमान है:

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ.

यानी हमने अपने हाथों से आसमान को पैदा किया और हम बहुत ही ताक़तवर और ज़ोरावर हैं।

पस उनके इस तकब्बुर, ख़ुदा के रसूलों को झुठलाने, ख़ुदा की नाफ़रमानी करने और रब की आयतों के इनकार पर उन पर अ़ज़ाबे ख़ुदा आ पड़ा। तेज़ व तुन्द, ठंडी व दहशत से भरी सरसराती हुई सख़्त आँधी आई, ताकि उनका ग़ुरूर ढह जाये और हवा से वे तबाह कर दिये जायें।

"सरसरन्" कहने में हवा का आवाज़ वाली होना पाया जाता है। पूरब की तरफ़ एक नहर है जो बहुत ज़ोर से आवाज़ के साथ बहती रहती है, इसलिये उसे भी अ़रब के लोग 'सरसर' कहते हैं। 'नहिसात' से मुराद है लगातार। एक दम लगातार सात रातें आठ दिन तक यही हवायें रहीं, वह मुसीबत जो उन पर मुसीबत वाले दिन आई वह फिर आठ दिन तक न हटी, न टली, जब तक कि उनमें से एक-एक को फ़ना के घाट न उतार दिया और उनका ख़ात्मा न कर दिया। साथ ही आख़िरत के अ़ज़ाबों का लुक़मा बने जिनसे ज़्यादा ज़िल्लत व तौहीन की कोई सज़ा नहीं, न दुनिया में कोई उनकी इमदाद को पहुँचा न आख़िरत में कोई मदद के लिये उठेगा। बेसहारा और बे-मददगार रह गये।

क़ौमे समूद वालों की भी हमने रहनुमाई की। हिदायत की उन पर वज़ाहत कर दी, उन्हें भलाई की दावत दी, अल्लाह के नबी सालेह अ़लैहिस्सलाम ने उन पर हक़ ज़ाहिर कर दिया, लेकिन उन्होंने मुख़ालफ़त की और झुठलाया और अल्लाह के नबी की सच्चाई पर जिस ऊँटनी को ख़ुदा तआ़ला ने अ़लामत बनाई थी उसकी कोचें काट दीं। पस उन पर भी अल्लाह का अ़ज़ाब बरस पड़ा, एक ज़बरदस्त कलेजे फाड़ देने वाली चिंघाड़ और दिल को टुकड़े-टुकड़े कर देने वाले ज़लज़ले ने ज़िल्लत व तौहीन के साथ उनके करतूतों का बदला लिया। उनमें जितने वे लोग थे जिन्हें अल्लाह की ज़ात पर ईमान था, नबियों की तस्दीक़ करते थे, दिलों में ख़ुदा तआ़ला का ख़ौफ़ रखते थे, उन्हें हमने बचा लिया, उन्हें ज़रा सा भी ज़रर (तकलीफ़ और नुक़सान) न पहुँचा, उन्होंने ज़िल्लत व तौहीन और अल्लाह के अ़ज़ाब से अपने नबी के साथ निजात पा ली।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ○ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ط قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ○ وَمَا كُنْتُمْ

और (उनको वह दिन भी याद दिलाईये) जिस दिन अल्लाह तआ़ला के दुश्मन (यानी कुफ़्फ़ार) दोज़ख़ की तरफ़ जमा कर- (ने) के (लिए एक जगह) लाए जाएँगे, फिर वे रोके जाएँगे (ताकि बक़िया भी आ जाएँ)। (19) यहाँ तक कि जब वे उसके क़रीब आ जाएँगे तो उनके कान और आँखें और उनकी खालें उन पर उनके आमाल की गवाही देंगे। (20) और (उस वक़्त) वे लोग (ताज्जुब से) अपने जिस्म के अंगों से कहेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी? वे (जिस्म के अंग) जवाब देंगे कि हमको उस अल्लाह ने बोलने की ताक़त दी जिसने हर (बोलने वाली) चीज़ को बोलने की

Maktaba Ashraf

تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ○ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِىْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ○ فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ○	ताक़त दी, और उसी ने तुमको पहली बार पैदा किया था, और उसी के पास फिर लाए गए हो। (21) और तुम (दुनिया में) इस बात से तो अपने आपको छुपा ही न सकते थे कि तुम्हारे कान और आँखें और खालें तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दें, और लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे बहुत-से आमाल की ख़बर भी नहीं। (22) और तुम्हारे इसी गुमान ने जो कि तुमने अपने रब के साथ किया था तुमको बरबाद किया, फिर तुम (हमेशा के) घाटे में पड़ गए। (23) सो (उस हालत में) अगर ये लोग सब्र करें तब भी दोज़ख़ ही उनका ठिकाना है, और अगर वे उज़्र करना चाहेंगे तो भी मक़बूल (स्वीकार) न होगा। (24)

मुजरिमों के ख़िलाफ़ ख़ुद उनके बदन के हिस्से गवाही देंगे

यानी इन मुश्रिकों से कहो कि क़ियामत के दिन का हश्र जहन्नम की तरफ़ होगा और जहन्नम के दारोग़ा इन सब को जमा करेंगे जैसा कि क़ुरआन में फ़रमान है:

وَنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا.

यानी गुनाहगारों को सख़्त प्यास की हालत में हम जहन्नम की तरफ़ हाँक ले जायेंगे, उन्हें जहन्नम के किनारे खड़ा कर दिया जायेगा और उनके बदन के हिस्से और कान और आँखें और खालें उनके आमाल की गवाहियाँ देंगे, तमाम अगले पिछले ऐब खुल जायेंगे। बदन का हर हिस्सा पुकार उठेगा कि मुझसे इसने यह यह गुनाह किया। उस वक़्त ये अपने बदनी अंगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर उन्हें मलामत करेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी? वे कहेंगे कि ख़ुदा तआ़ला के हुक्म का पालन करते हुए हमने ऐसा किया उसने हमें बोलने की ताक़त दी और हमने सच-सच कह सुनाया। वही तो तुम्हारा शुरू में पैदा करने वाला है उसी ने हर चीज़ को ज़बान अ़ता फ़रमाई है। ख़ालिक़ की मुख़ालफ़त और उसके हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी कौन कर सकता है?

बज़्ज़ार में है कि हुज़ूर सल्ल. एक मर्तबा मुस्कुराये या हंस दिये, फिर फ़रमाया तुम मेरी हंसी की वजह मालूम नहीं करते? सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने कहा फ़रमाईये क्या वजह है? आप सल्ल. ने फ़रमाया क़ियामत के दिन बन्दा अपने रब से झगड़ेगा, कहेगा कि ख़ुदाया क्या तेरा वायदा नहीं कि तू ज़ुल्म न करेगा? अल्लाह तआ़ला इक़रार करेगा तो बन्दा कहेगा कि मैं तो अपने बुरे आमाल पर किसी की शहादत (गवाही) को क़बूल नहीं करता। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या मेरी और मेरे सम्मानित फ़रिश्तों की शहादत नाकाफ़ी है? लेकिन फिर वह बार-बार अपनी ही कहता चला जायेगा, पस हुज्जत पूरी करने के लिये

उसकी ज़बान बन्द कर दी जायेगी और उसके बदन के हिस्सों से कहा जायेगा कि इसने जो-जो किया था उसकी गवाही तुम ही दो। जब वे साफ़-साफ़ और सच्ची गवाही दे देंगे तो यह उन्हें मलामत करेगा और कहेगा कि मैं तो तुम्हारी ही हिफ़ाज़त के लिये लड़-झगड़ रहा था। (मुस्लिम व नसाई वग़ैरह)

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि काफ़िर व मुनाफ़िक़ को हिसाब के लिये बुलाया जायेगा, उसके आमाल उसके सामने पेश किये जायेंगे, वह क़समें खा-खाकर इनकार करेगा और कहेगा खुदाया! तेरे फ़रिश्तों ने वह लिख लिया है जो मैंने हरगिज़ नहीं किया। फ़रिश्ते कहेंगे कि क्या फ़ुलाँ दिन फ़ुलाँ जगह तूने फ़ुलाँ अ़मल नहीं किया? यह कहेगा खुदाया तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम मैंने हरगिज़ नहीं किया। अब उसके मुँह पर मोहर लगा दी जायेगी और बदन के हिस्से गवाही देंगे। सबसे पहले उसकी दाहिनी रान बोलेगी। (इब्ने अबी हातिम)

अबू यअ़ला में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन काफ़िर के सामने उसके बुरे आमाल लाये जायेंगे तो वह इनकार करेगा और झगड़ने लगेगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ये हैं तेरे पड़ोसी जो शाहिद (गवाह) हैं। यह कहेगा सब झूठे हैं। फ़रमायेगा ये तेरे कुनबे क़बीले वाले जो गवाह हैं, यह कहेगा ये भी सब झूठे हैं। अल्लाह तआ़ला उनसे क़सम दिलवायेगा वे क़सम खायेंगे, लेकिन यह इनकार ही करेगा। खुदा तआ़ला सब को चुप करा देगा और खुद उनकी ज़बानें उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगी, फिर उन्हें जहन्नम में भेज दिया जायेगा। इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन एक वक़्त तो वह होगा कि न किसी को बोलने की इजाज़त होगी न उज़्र-माज़िरत करने की। फिर इजाज़त दी जायेगी तो बोलने लगेंगे, झगड़ने लगेंगे, इनकार करेंगे और झूठी कसमें खायेंगे। फिर गवाहों को लाया जायेगा, आख़िर ज़बानें बन्द हो जायेंगी और खुद बदन के हिस्से हाथ पावँ वग़ैरह गवाही देंगे। फिर ज़बानें खोल दी जायेंगी तो अपने बदन के हिस्सों को मलामत करेंगे। वे जवाब देंगे कि हमें खुदा तआ़ला ने बोलने की क़ुव्वत दी और हमने सही-सही कहा। पस ज़बानी इक़रार भी हो जायेगा।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत राफ़ेअ़ अबुल-हसन रह. से मन्क़ूल है कि अपने करतूत के इनकार पर ज़बान इतनी मोटी हो जायेगी कि बोला न जायेगा, फिर जिस्म के हिस्सों को हुक्म होगा कि तुम बोलो, हर एक अपना-अपना अ़मल बता देगा। कान आँख खाल शर्मगाह हाथ पाँव वग़ैरह। और भी इसी तरह की बहुत सी रिवायतें सूरः यासीन की आयत नम्बर 65 की तफ़सीर में गुज़र चुकी हैं। जिन्हें दोबारा ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं।

इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब हम समुद्र की हिजरत से वापस आये तो अल्लाह तआ़ला के रसूल सल्ल. ने एक दिन हमसे पूछा कि तुमने हब्शा की सरज़मीन पर कोई ताज्जुब में डालने वाली बात देखी हो तो सुनाओ। इस पर एक नौजवान ने कहा एक मर्तबा हम वहाँ बैठे हुए थे, उनके उलेमा की एक बुढ़िया औ़रत एक पानी का घड़ा सर पर लिये हुए आ रही थीं। उन्हीं में से एक नौजवान ने उसे धक्का दिया, जिससे वह गिर पड़ी और घड़ा टूट गया। वह उठी और उस शख़्स की तरफ़ देखकर कहने लगी- मक्कार! तुझे इसका हाल उस वक़्त मालूम हो जायेगा जबकि अल्लाह तआ़ला अपनी कुर्सी बिछायेगा, सब अगले पिछलों को जमा करेगा और हाथ-पाँव गवाहियाँ देंगे और एक-एक अ़मल खुल जायेगा। उस वक़्त तेरा और मेरा भी फ़ैसला हो जायेगा।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल. फ़रमाने लगे उसने सच कहा, उसने सच कहा। उस क़ौम को खुदा तआ़ला किस तरह पाक करे जिसमें ज़ोरावर से कमज़ोर का बदला न लिया जाये? यह हदीस इस सनद से ग़रीब है।

Maktab_E_Ashraf

इब्ने अबिद्दुन्या में यही रिवायत दूसरी सनद से मौजूद है। जब ये अपने बदनी अंगों को मलामत करेंगे तो बदन के अंग जवाब देते हुए यह भी कहेंगे कि तुम्हारे आमाल दर असल कुछ पोशीदा न थे, ख़ुदा के देखते हुए उसके सामने तुम कुफ़्र व नाफ़रमानी में डूबे रहते थे और कुछ परवाह नहीं करते थे, क्योंकि तुम समझे हुए थे कि हमारे बहुत से आमाल उससे छुपे हैं, इसी फ़ासिद ख़्याल ने तुम्हें बरबाद कर दिया और आज के दिन तुम बरबाद हो गये।

मुस्लिम, तिर्मिज़ी वग़ैरह में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि मैं काबा शरीफ़ के पर्दे में छुपा हुआ था कि तीन शख़्स आये बड़े पेट वाले, कम अ़क्ल वाले, एक ने कहा क्यों जी! हम जो बोलते चालते हैं इसे अल्लाह तआ़ला सुनता है? दूसरे ने जवाब दिया अगर ऊँची आवाज़ से बोलें तो सुनता है और अगर आहिस्ता आवाज़ से बातें करें तो नहीं सुनता। तीसरे ने कहा अगर कुछ सुनता है तो सब सुनता होगा। मैंने आकर हुज़ूर सल्ल. से यह वाक़िआ़ बयान किया, इस पर यह आयतः

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ............ الخ

नाज़िल हुई (यानी यही आयत 22-23 जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि मुँह बन्द होने के बाद सबसे पहले पाँव और हाथ बोलेंगे। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि मेरे साथ मेरा बन्दा जो गुमान करता है मैं उसके साथ वही मामला करता हूँ और जब वह मुझे पुकारता है तो में उसके साथ होता हूँ। हज़रत हसन रह. इतना फ़रमाकर कुछ सोचकर फ़रमाने लगे कि जिसका जैसा गुमान अल्लाह तआ़ला के साथ होता है वैसा ही उसका अ़मल भी होता है। मोमिन चूँकि ख़ुदा के साथ नेक गुमान रखता है वह आमाल भी अच्छे करता है। और काफ़िर व मुनाफ़िक़ चूँकि ख़ुदा तआ़ला के साथ बदगुमान होते हैं, वे आमाल भी बुरे करते हैं। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई।

मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि तुम में से कोई शख़्स न मरे मगर इस हालत में कि वह अल्लाह के साथ नेक गुमान रखने वाला हो, जिन लोगों ने ख़ुदा के साथ बुरे ख़्यालात रखे ख़ुदा तआ़ला ने उन्हें तबाह व बरबाद कर दिया। फिर यही आयत आप सल्ल. ने पढ़ी।

जहन्नम की आग में सब्र से पड़े रहना और बेसब्री करना उनके लिये बराबर है। न उनकी उ़ज़्र व माज़िरत क़बूल होगी न उनके गुनाह माफ़ किये जायेंगे, ये दुनिया की तरफ़ अगर लौटना चाहें तो वह राह भी बन्द, जैसे एक जगह इरशाद है कि जहन्नमी कहेंगे- ख़ुदाया! हम पर हमारी बदबख़्ती छा गई, यक़ीनन हम बेराह थे, ख़ुदाया अब तू यहाँ से निजात दे, अब अगर ऐसा करें तो फिर हमें हमारे ज़ुल्म की सज़ा देना। लेकिन अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जवाब आयेगा कि अब ये मन्सूबे बेसूद हैं, धुतकारे हुए यहीं पड़े रहो, ख़बरदार जो मुझसे बात की।

और हमने (दुनिया में) उनके लिए कुछ साथ रहने वाले शैतान मुक़र्रर कर रखे थे। सो उन्होंने उनके अगले-पिछले आमाल उनकी नज़र में अच्छे बना रखे थे, और उनके हक़ में भी उन लोगों के साथ अल्लाह का क़ौल (यानी अ़ज़ाब का वायदा) पूरा होकर रहा, जो उनसे	وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ

Maktab-E-Ashraf

وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ وَقَالَ ع ۳ ۱۷
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ
وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝ فَلَنُذِيْقَنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّ
لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا
دَارُ الْخُلْدِ ۭ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا
يَجْحَدُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ
اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ
نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ
الْاَسْفَلِيْنَ ۝

पहले (कुफ़्फ़ार में से) जिन्नात व इनसान गुज़र चुके हैं। बेशक वे (सब) भी घाटे में रहे। (25) और ये काफ़िर (आपस में) यह कहते हैं कि इस क़ुरआन को सुनो ही मत, और (अगर पैग़म्बर सुनाने लगें तो) उसके बीच में शोर मचा दिया करो, शायद (इस तदबीर से) तुम ही ग़ालिब रहो। (26) सो हम उन काफ़िरों को सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखा देंगे, और उनको उनके (ऐसे) बुरे-बुरे कामों की सज़ा देंगे। (27) यही सज़ा है अल्लाह के दुश्मनों की, यानी दोज़ख़ उनके लिए वहाँ हमेशा रहने की जगह होगी, इस बात के बदले में कि वे हमारी आयतों का इनकार किया करते थे। (28) और (जब अ़ज़ाब में मुब्तला होंगे तो) वे काफ़िर लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको वे दोनों शैतान और इनसान दिखा दीजिए जिन्होंने हमको गुमराह किया था, हम उनको अपने पैरों तले मसल डालें, ताकि वे ख़ूब ज़लील हों। (29)

कुछ फ़रेब कुछ धोखे

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि मुश्रिक लोगों को उसने गुमराह कर दिया है और यह उसकी मशीयत और क़ुदरत से है। वह अपने तमाम कामों में हिक्मत वाला है। उसने कुछ ऐसे जिन्नात व इनसान उनके साथ कर दिये हैं जिन्होंने उनके बुरे आमाल उन्हें अच्छी सूरत में दिखाये। उन्होंने समझ लिया कि गुज़रे हुए दौर और आने वाले ज़माने के लिहाज़ से भी उनके आमाल अच्छे ही हैं। जैसा कि एक और आयत में है:

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ......... الخ

और जो शख़्स अल्लाह की नसीहत (यानी क़ुरआन) से अन्धा बन जाये हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं सो वह (हर वक़्त) उसके साथ रहता है। और वे उनको हक़ रास्ते से रोकते रहते हैं और ये लोग यह ख़्याल करते हैं कि वे (सीधे) रास्ते पर हैं। (सूरः जुख़रुफ़ आयत 36-37)

इन पर अ़ज़ाब की बात सादिक़ आ गयी, जैसे उन लोगों पर जो इनसे पहले इन जैसे थे। नुक़सान और घाटे में ये और वे बराबर हो गये। काफ़िरों ने आपस में मश्विरा करके इस पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया है कि वे कलामुल्लाह को मानेंगे नहीं, उसके अहकाम की पैरवी नहीं करेंगे, बल्कि एक दूसरे से कह रखा है कि

Maktaba E Ashraf

जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो शोर व गुल करो और उसे न सुनो। तालियाँ बजाओ, सीटियाँ बजाओ, आवाज़ें निकालो। चुनाँचे क़ुरैश के लोग यही करते थे। ऐब निकालते थे, इनकार करते थे, दुश्मनी करते थे। इसे अपने ग़लबे का सबब और ज़रिया जानते थे। यही हाल हर जाहिल व काफ़िर का है कि उसे क़ुरआन का सुनना अच्छा नहीं लगता। इसी लिये इसके विपरीत अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों को हुक्म फ़रमाया है:

وَاِذَاقُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْالَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ.

कि जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो तुम सुनो और चुप रहो, ताकि तुम पर रहम किया जाये।

उन काफ़िरों को धमकाया जा रहा है कि क़ुरआने करीम से मुख़ालफ़त की बिना पर उन्हें सख़्त सज़ा दी जायेगी और उनके बुरे आमाल का मज़ा उन्हें ज़रूर चखाया जायेगा। अल्लाह के उन दुश्मनों का बदला दोज़ख़ की आग है, जिसमें उनके लिये हमेशगी का घर है। यह उसका बदला है जो वे अल्लाह तआ़ला की आयतों का इनकार करते थे।

इसके बाद की आयत का मतलब हज़रत अ़ली रज़ि. से मरवी है कि जिन्न से मुराद इब्लीस और इनसान से मुराद हज़रत आदम का वह लड़का है जिसने अपने भाई को मार डाला था। एक और रिवायत में है कि इब्लीस तो हर मुश्रिक को पुकारेगा और हज़रत आदम का यह लड़का हर कबीरा गुनाह करने वाले को पुकारेगा। पस इब्लीस शिर्क की तरफ़, और तमाम गुनाहों की तरफ़ लोगों को दावत देने वाला पहले नबी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का यह लड़का है जो अपने भाई का क़ातिल है। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि रू-ए-ज़मीन पर जो क़त्ल नाहक़ होता है उसका गुनाह हज़रत आदम के इस पहले बेटे को भी होता है, क्योंकि नाहक़ और बेजा क़त्ल का शुरू करने वाला यही है। पस काफ़िर लोग क़ियामत के दिन जिन्नात व इनसानों में से जो उन्हें गुमराह करने वाले थे उन्हें नीचे के तबक़े में दाख़िल कराना चाहेंगे ताकि उन्हें सख़्त अ़ज़ाब हों। वे चाहेंगे कि ये दोज़ख़ के सबसे निचले दर्जे में चले जायें और उनसे ज़्यादा सज़ा भुगतें। सूरः आराफ़ में भी यह बयान गुज़र चुका है कि ये मानने वाले जिनकी मानते थे उनके लिये क़ियामत के दिन दोगुने अ़ज़ाब की दरख़्वास्त करेंगे, जिस पर कहा जायेगा कि हर एक दोगुने अ़ज़ाब में ही है लेकिन तुमको उसका एहसास नहीं। यानी हर एक को उसके आमाल के मुताबिक़ सज़ा हो रही है। जैसे एक और आयत में है:

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ.

यानी जिन लोगों ने कुफ़्र किया और ख़ुदा की राह से रोका, उन्हें हम उनके फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) की वजह से अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब करेंगे।

जिन लोगों ने (दिल से) इक़रार कर लिया कि हमारा रब अल्लाह है, फिर (उस पर) जमे रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे कि तुम न अन्देशा करो और न ग़म करो, और तुम जन्नत (के मिलने) पर ख़ुश रहो, जिसका तुमसे (पैग़म्बरों की मारिफ़त) वायदा किया जाया करता था। (30) और हम दुनियावी ज़िन्दगी में भी तुम्हारे	اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ

साथी थे और आख़िरत में भी रहेंगे, और तुम्हारे लिए उस (जन्नत) में जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहेगा मौजूद है, और तुम्हारे लिए उसमें जो माँगोगे मौजूद है। (31) यह मेहमानी के तौर पर होगा माफ़ करने वाले, रहम करने वाले की तरफ़ से। (32)	الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ۝

ع ۱۸

Maktab E Ashraf

अल्लाह पर ईमान, उस पर जमाव और रहमत के फ़रिश्ते

जिन लोगों ने ज़ुबान से अल्लाह तआ़ला के रब होने का यानी उसकी तौहीद का इक़रार किया, फिर उस पर जमे रहे, यानी फ़रमाने ख़ुदावन्दी के ताबे होकर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तिलावत फ़रमाकर फ़रमाया कि बहुत से लोगों ने अल्लाह तआ़ला के रब होने का इक़रार करके फिर कुफ़्र कर लिया। जो मरते दम तक इसे कहता है वह है जिसने इस पर इस्तिक़ामत की (यानी जमाव इख़्तियार किया)। (नसाई वग़ैरह)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के सामने जब इस आयत की तिलावत होती तो आप फ़रमाते थे कि इससे मुराद कलिमा पढ़कर फिर कभी भी शिर्क न करने वाले हैं। एक रिवायत में है कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने एक मर्तबा लोगों से इस आयत की तफ़सीर पूछी तो उन्होंने कहा कि इस्तिक़ामत (जमाव) से मुराद गुनाह न करना है, आपने फ़रमाया तुमने इसे ग़लत समझा, इससे मुराद ख़ुदा की ख़ुदाई का इक़रार करके फिर दूसरे की तरफ़ कभी भी तवज्जोह न करना है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से सवाल किया गया कि क़ुरआन में हुक्म और जज़ा के लिहाज़ से सबसे ज़्यादा आसान आयत कौनसी है? आपने इस आयत की तिलावत करके फ़रमाया कि अल्लाह की तौहीद पर पूरी उम्र क़ायम रहना। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. ने मिम्बर पर इस आयत की तिलावत करके फ़रमाया कि वल्लाह ये वे लोग हैं जो ख़ुदा की इताअ़त पर जम जाते हैं और लोमड़ी की चाल नहीं चलते कि कभी इधर कभी उधर। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह के फ़राईज़ की अदायगी करते हैं। हज़रत क़तादा रह. यह दुआ़ माँगा करते थे:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبُّنَا فَارْزُقْنَا الْاِسْتِقَامَةَ.

ख़ुदाया तू हमारा रब है, हमें इस्तिक़ामत और पुख़्तगी अ़ता फ़रमा।

इस्तिक़ामत (जमे रहने) से मुराद दीन और अ़मल का ख़ुलूस हैं। हज़रत अबुल-आ़लिया रह. ने कहा है एक शख़्स ने हज़रत रसूले मक़बूल सल्ल. से अ़र्ज़ किया कि मुझे इस्लाम की कोई ऐसी बात बतलाईये कि फिर किसी से दरियाफ़्त करने की ज़रूरत न रहे। आप सल्ल. ने फ़रमाया ज़बान से इक़रार कर कि मैं अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाया, फिर इस पर जम जा। उसने फिर पूछा कि अच्छा यह तो अ़मल हुआ अब बचूँ किस चीज़ से? आप सल्ल. ने ज़बान की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया। (मुस्लिम वग़ैरह) इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही बतलाते हैं।

उनके पास उनकी मौत के वक़्त फ़रिश्ते आते हैं और बशारतें (ख़ुशख़बरियाँ) सुनाते हैं कि तुम अब

आख़िरी मन्ज़िल की तरफ़ जा रहे हो, बेख़ौफ़ रहो, तुम पर वहाँ कोई खटका नहीं। तुम अपने पीछे जो दुनिया छोड़े जा रहे हो इस पर कोई रंज व ग़म न करो। तुम्हारे अहल व अ़याल (बाल-बच्चों घर वालों) की माल व मता की, दीन व दियानत की हिफ़ाज़त हमारे ज़िम्मे है। हम तुम्हारे ख़लीफ़ा (यानी तुम्हारे बाद देखभाल करने वाले) हैं। तुम्हें हम ख़ुशख़बरी सुनाते हैं कि तुम जन्नती हो, तुम्हें जो सच्चा और सही वायदा दिया वह पूरा होकर रहेगा।

पस वे अपने इन्तिक़ाल के वक़्त ख़ुश हो जाते हैं कि तमाम बुराईयों से बचे और तमाम भलाईयाँ हासिल हुईं। हदीस शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मोमिन की रूह से फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ पाक रूह! जो पाक जिस्म में थी, चल ख़ुदा की बख़्शिश, इनाम और उसकी नेमत की तरफ़। चल उस ख़ुदा के पास जो तुझ पर नाराज़ नहीं। यह भी मन्क़ूल है कि जब मुसलमान अपनी क़ब्रों से उठेंगे उसी वक़्त फ़रिश्ते उनके पास आयेंगे और बशारतें सुनायेंगे। हज़रत साबित रह. जब इस सूरत को पढ़ते हुए इस आयत तक पहुँचे तो ठहर गये और फ़रमाया- हमें ख़बर मिली है कि मोमिन बन्दा जब क़ब्र से उठेगा तो वे दो फ़रिश्ते जो दुनिया में उसके साथ थे उसके पास आयेंगे और उससे कहेंगे कि डर नहीं, घबरा नहीं, ग़मगीन न हो, तू जन्नती है, ख़ुश हो जा तुझसे ख़ुदा तआ़ला के जो वायदे थे वे पूरे होंगे। ग़र्ज़ कि ख़ौफ़ अमन से बदल जायेगा, आँखें ठंडी होंगी, दिल मुत्मईन हो जायेगा। क़ियामत के तमाम ख़ौफ़, दहशत और घबराहट दूर हो जायेगी। नेक आमाल का बदला अपनी आँखों से देखेगा और ख़ुश होगा।

हासिल यह कि मौत के वक़्त क़ब्र में और क़ब्र से उठते हुए हर वक़्त रहमत के फ़रिश्ते उसके साथ रहेंगे और हर वक़्त बशारतें सुनाते रहेंगे। उनसे फ़रिश्ते यह भी कहेंगे कि दुनिया की ज़िन्दगी में भी हम तुम्हारे साथी व दोस्त थे, तुम्हें नेकी की राह सुझाते थे, ख़ैर की रहनुमाई करते थे, तुम्हारी हिफ़ाज़त करते रहते थे। ठीक इसी तरह आख़िरत में भी हम तुम्हारे दोस्त और साथी हैं। नेमतों वाली जन्नतों में पहुँचा देने तक तुम से अलग न होंगे। वहाँ जो कुछ तुम चाहोगे तुम्हें मिलेगा, जो ख़्वाहिश होगी पूरी होगी। यह इकराम, यह अ़तीया, यह इनाम और यह मेहमान नवाज़ी उस ख़ुदा की तरफ़ से है जो बख़्शने वाला और मेहरबानी करने वाला है। उसका लुत्फ़ व करम, उसकी बख़्शिश और करम बहुत बड़ा है।

हज़रत सईद बिन मुसैयब रह. और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की मुलाक़ात हुई तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला हम दोनों को जन्नत के बाज़ार में मिलाये। इस पर हज़रत सईद ने पूछा क्या जन्नत में भी बाज़ार होंगे? फ़रमाया हाँ! मुझे रसूलुल्लाह सल्ल. ने ख़बर दी है कि जन्नती जब जन्नत में जायेंगे और अपने-अपने मर्तबों के मुताबिक़ दर्जे पायेंगे तो दुनिया के अन्दाज़े से जुमे वाले दिन उन्हें एक जगह जमा होने की इजाज़त मिलेगी। जब सब जमा हो जायेंगे तो अल्लाह तआ़ला उन पर तजल्ली (यानी अपने नूर की तवज्जोह) फ़रमायेगा। उसका अ़र्श ज़ाहिर होगा। वे सब जन्नत के बाग़ीचे में नूर, लुअ्लुअ, याक़ूत और सोने चाँदी के मिम्बरों पर बैठेंगे। कुछ और लोग जो नेकियों के एतिबार से कम दर्जे के हैं लेकिन जन्नती होने के एतिबार से कोई किसी से कमतर नहीं होगा, वे मुश्क और काफ़ूर के टीलों पर होंगे। लेकिन अपनी जगह इतने ख़ुश होंगे कि कुर्सी वालों को अपने से बेहतर जगह में नहीं जानते होंगे। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल. से सवाल किया कि हम अपने रब को देखेंगे? आप सल्ल. ने फ़रमाया हाँ-हाँ! देखोगे, आधे दिन के सूरज और चौदहवीं रात के चाँद को जिस तरह साफ़ देखते हो इसी तरह ख़ुदा तआ़ला को देखोगे। उस मज्लिस में एक-एक से अल्लाह तबारक व तआ़ला बातें करेगा, यहाँ तक कि किसी से फ़रमायेगा याद है फ़ुलाँ दिन तुमने मेरा फ़ुलाँ ख़िलाफ़ (यानी मेरे हुक्म के ख़िलाफ़) किया

था? वह कहेगा क्यों जनाबे बारी! तू तो वह ख़ता माफ़ फ़रमा चुका था फिर उसका क्या ज़िक्र? अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा हाँ ठीक है, मेरी उसी मग़फ़िरत की वुस्अ़त की वजह से तो तू इस दर्जे पर पहुँचा है।

ये इस हालत में होंगे कि इन्हें एक बादल ढाँप लेगा और उससे ऐसी ख़ुशबू बरसेगी कि कभी किसी ने नहीं सूँघी होगी। फिर रब्बुल-आ़लमीन फ़रमायेगा कि उठो और मैंने जो इनाम व इकराम तुम्हारे लिये तैयार कर रखे हैं उन्हें लो। फिर ये सब एक बाज़ार में पहुँचेंगे जिसे चारों तरफ़ से फ़रिश्ते घेरे हुए होंगे, वहाँ वे चीज़ें देखेंगे जो न कभी देखी थीं न सुनी थीं, न कभी ख़्याल में गुज़री थीं। जो शख़्स जो चीज़ चाहेगा ले लेगा। ख़रीद व फ़रोख़्त वहाँ न होगी, बल्कि इनाम होगा। वहाँ तमाम जन्नत वाले एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे, एक कम दर्जे का जन्नती आला दर्जे के जन्नती से मुलाक़ात करेगा तो उसके लिबास वग़ैरह को देखकर जी में ख़्याल करेगा, वहीं अपने जिस्म की तरफ़ देखेगा कि उससे भी अच्छे कपड़े इसके हैं। क्योंकि वहाँ किसी को कोई रंज व ग़म न होगा। अब हम सब लौटकर अपनी-अपनी मन्ज़िलों (ठिकानों) में जायेंगे वहाँ हमारी बीवियाँ हमें मर्हबा कहेंगी और कहेंगी कि जिस वक़्त आप यहाँ से गये तब यह तरोताज़गी और यह नूरानियत आप में न थी जो इस वक़्त ख़ूबसूरती व जमाल और ख़ुशबू व ताज़गी बढ़ी हुई है। ये जवाब देंगे कि हाँ ठीक है, हम आज ख़ुदा तआ़ला की मज्लिस में थे और यक़ीनन हम बहुत ही बढ़-चढ़ गये।

(तिर्मिज़ी वग़ैरह)

मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात पसन्द करे अल्लाह तआ़ला भी उससे मिलना चाहता है, और जो शख़्स ख़ुदा की मुलाक़ात को बुरा जाने अल्लाह तआ़ला भी उसकी मुलाक़ात को नापसन्द करता है। सहाबा रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! हम तो मौत को मक्रूह (नापसन्द) जानते हैं। आप सल्ल. ने फ़रमाया इससे मुराद मौत की कराहियत नहीं, बल्कि यह है कि मोमिन की सकरात (जान निकलने) के वक़्त उसके पास ख़ुदा की तरफ़ से ख़ुशख़बरी आती है, जिसे सुनकर उसके नज़दीक ख़ुदा तआ़ला की मुलाक़ात से ज़्यादा महबूब चीज़ कोई नहीं रहती। पस अल्लाह तआ़ला भी उसकी मुलाक़ात को पसन्द फ़रमाता है। और बदकार या काफ़िर की सकरात (जान निकलने) के वक़्त जब उसे उसकी बुराई (यानी बुरे अन्जाम) की ख़बर दी जाती है जो उसे अब पहुँचने वाली है तो वह अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात को मक्रूह (बुरा और नापसन्द) रखता है। पस अल्लाह तआ़ला भी उसकी मुलाक़ात को मक्रूह रखता है। यह हदीस बिल्कुल सही है और इसकी बहुत सी सनदें हैं।

और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है जो (लोगों को) ख़ुदा की तरफ़ बुलाए और (ख़ुद भी) नेक अ़मल करे, और कहे कि मैं फ़रमाँबरदारों में से हूँ। (33) और नेकी और बुराई बराबर नहीं होती, (बल्कि हर एक का असर अलग है), तो अब आप (मय अपने मानने वालों के) नेक बर्ताव से (बुराई को) टाल दिया कीजिए। फिर यकायक आप में और जिस शख़्स में दुश्मनी थी वह ऐसा हो जाएगा जैसा कि कोई दिली दोस्त होता है। (34) और यह बात	وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ○ وَلَا تَسْتَوِی الْحَسَنَةُ وَلَا السَّیِّئَةُ ؕ اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ

Maktab_e_Ashraf

حٰمٓ ○ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْحَظٍّ عَظِيْمٍ ○ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۗ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○	उन्हीं लोगों को नसीब होती है जो बड़े मुस्तकिल (-मिज़ाज) हैं। और यह बात उसी को नसीब होती है जो बड़ा नसीब वाला है। (35) और अगर (ऐसे वक़्त में) आपको शैतान की तरफ़ से कुछ वस्वसा आने लगे तो (फ़ौरन) अल्लाह की पनाह माँग लिया कीजिए, बेशक वह ख़ूब सुनने वाला है, ख़ूब जानने वाला है। (36)

अल्लाह की तरफ़ बुलाना और नेक आमाल

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जो ख़ुदा के बन्दों को ख़ुदा की तरफ़ बुलाये और नेकी करे, इस्लाम क़बूल करे, उससे ज़्यादा अच्छी बात और किसकी होगी? यह है जिसने अपने आपको नफ़ा पहुँचाया और अल्लाह की मख़्लूक़ को भी अपनी ज़ात से नफ़ा पहुँचाया। यह उनमें नहीं जो सिर्फ़ बाते करते हैं, दूसरों कहते हैं मगर ख़ुद नहीं करते। यह तो ख़ुद भी करता है और दूसरों से भी कहता है। यह आयत आ़म है। रसूलुल्लाह सल्ल. सबसे पहले और बेहतरीन इसके मिस्दाक़ हैं। बाज़ों ने कहा है कि इसके मिस्दाक़ अज़ान देने वाले हैं जो नेक काम करने वाले भी हों। चुनाँचे सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि क़ियामत के दिन मुअज़्ज़िन सब लोगों से ज़्यादा लम्बी गर्दनों वाले होंगे। सुनन में है कि इमाम ज़ामिन (ज़िम्मेदार) है और मुअज़्ज़िन अमानतदार। अल्लाह तआ़ला इमामों को सही रास्ता दिखाये और मुअज़्ज़िनों को बख़्शे।

इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अज़ान देने वालों का हिस्सा क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला के नज़दीक जिहाद करने वालों के हिस्से के जैसा है। अज़ान व तकबीर के बीच उसकी हालत वह है जैसे कोई जिहाद में राहे ख़ुदा में अपने ख़ून में लौट-पोट हो रहा हो। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि अगर मैं मुअज़्ज़िन होता तो फिर मुझे हज व उमरे और जिहाद की इतनी ज़्यादा परवाह न रहती।

फ़ायदाः हज़रत उमर रज़ि. से मन्क़ूल है कि अगर मैं मुअज़्ज़िन होता तो मेरी आरज़ू पूरी हो जाती और मैं रात के नफ़्ली क़ियाम (यानी रात को नफ़्ली नमाज़ें पढ़ने) की और दिन के नफ़्ली रोज़ों की इस क़द्र कोशिश न करता। मैंने सुना है कि अल्लाह तआ़ला से रसूल सल्ल. ने तीन बार मुअज़्ज़िनों की बख़्शिश की दुआ़ माँगी। इस पर मैंने कहा हुज़ूर! आपने अपनी दुआ़ में हमें याद न फ़रमाया हालाँकि हम अज़ान कहने पर तलवारें तान लेते हैं। आप सल्ल. ने फ़रमाया हाँ लेकिन ऐ उमर! ऐसा ज़माना भी आने वाला है कि मुअज़्ज़िनी ग़रीब मिस्कीन लोगों तक रह जायेगी। सुनो ऐ उमर! जिन लोगों का गोश्त-पोस्त जहन्नम पर हराम है उनमें मुअज़्ज़िन भी शामिल हैं। हज़रत आ़यशा रज़ि. फ़रमाती हैं कि इस आयत में भी मुअज़्ज़िनों की तारीफ़ है। उसका "हय्-य अ़लस्सलाह्" कहना ख़ुदा की तरफ़ बुलाना है। हज़रत इब्ने उमर और हज़रत इक्रिमा रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह आयत मुअज़्ज़िनों के बारे में उतरी है। और यह जो फ़रमाया कि वह नेक अ़मल करता है, इससे मुराद अज़ान व तकबीर के बीच दो रक्अ़त पढ़ना है। जैसे कि हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि दो अज़ानों के बीच नमाज़ है, दो अज़ानों के बीच नमाज़ है, दो अज़ानों के बीच नमाज़ है जो

चाहे। एक हदीस में है कि अज़ान व तकबीर के दरमियान की दुआ़ रद्द नहीं होती। सही बात यह है कि आयत अपने उमूम के लिहाज़ से मुअज़्ज़िन और ग़ैर-मुअज़्ज़िन हर उस शख़्स को शामिल है जो ख़ुदा की तरफ़ दावत दे। यह याद रहे कि आयत के नाज़िल होने के वक़्त तो सिरे से अज़ान ही शुरू न हुई थी, क्योंकि यह आयत मक्का शरीफ़ में उतरी है और अज़ान मदीने में पहुँच जाने के बाद मुक़र्रर हुई है जबकि अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन अ़ब्दि रब्बिही रज़ि. ने अपने ख़्वाब में अज़ान देते देखा और सुना और हुज़ूर सल्ल. से इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़रमाया कि बिलाल को सिखाओ उनकी आवाज़ बुलन्द है। पस सही बात यही है कि आयत आ़म है, इसमें मुअज़्ज़िन भी शामिल हैं।

हज़रत हसन बसरी रह. इस आयत को पढ़कर फ़रमाते हैं कि यही लोग हबीबुल्लाह (अल्लाह के प्यारे) हैं, यही अल्लाह के औलिया हैं, यही सबसे ज़्यादा ख़ुदा के पसन्दीदा हैं, यही सबसे ज़्यादा ख़ुदा के महबूब हैं कि इन्होंने ख़ुदा की बातें मान लीं, फिर दूसरों से मनवाने लगे और अपने मानने में नेकियाँ करते रहे और अपने मुसलमान होने का ऐलान करते रहे। यही ख़ुदा के ख़लीफ़ा हैं, भलाई और बुराई नेकी और बदी बराबर-बराबर नहीं बल्कि इनमें बेहद फ़र्क़ है। जो तुझसे बुराई करे तू उससे भलाई कर और उसकी बुराई को इस तरह दूर कर। हज़रत उमर रज़ि. का फ़रमान है कि तेरे बारे में जो शख़्स ख़ुदा की नाफ़रमानी करे तो तू उसके बारे में ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी कर, इससे बढ़कर कोई चीज़ नहीं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐसा करने से तेरा जानी दुश्मन हमदर्द और दोस्त बन जायेगा। इस वसीयत पर अ़मल उसी से होगा जो साबिर हो, नफ़्स पर इख़्तियार रखता हो, और हो भी अच्छी क़िस्मत वाला, कि दीन व दुनिया की बेहतरी उसकी तक़दीर में हो। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि ईमान वालों को हुक्म है कि वे ग़ुस्से के वक़्त सब्र करें, दूसरे की जहालत पर अपनी बुर्दबारी का सुबूत दें और दूसरे की बुराई से दरगुज़र कर लें। ऐसे लोग शैतानी दाव से महफ़ूज़ रहते हैं और उनके दुश्मन भी फिर तो उनके दोस्त बन जाते हैं। यह तो हुआ इनसानी शर (बुराई) से बचने का तरीक़ा, अब शैतानी शर से बचने का तरीक़ा बयान हो रहा है कि ख़ुदा की तरफ़ झुक जाया करो, उसी ने उसे यह ताक़त दे रखी है कि वह दिल में वस्वसे (बुरे ख़्यालात) पैदा करे और उसी के इख़्तियार में है कि वह उसके शर से महफ़ूज़ रखे। नबी करीम सल्ल. अपनी नमाज़ में फ़रमाते थेः

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ مِنْ هَمْزِهٖ وَنَفْخِهٖ وَنَفْثِهٖ.

मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ शैतान मरदूद से, उसके दिल में वस्वसा डालने से, फूँक मारने से और दिल में बुरी बात डालने से।

पहले हम बयान कर चुके हैं कि इस मक़ाम जैसा ही मक़ाम सूरः आराफ़ में है, जहाँ इरशाद हैः

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ.

यानी सरसरी बर्ताव को क़बूल कर लिया कीजिये और नेक काम की तालीम किया कीजिये और जाहिलों से एक किनारे हो जाया कीजिये.................। (सूरः आराफ़ आयत 199-200)

और सूरः मोमिनून की आयत 96-98 में हुक्म हुआ है कि दरगुज़र करने की आ़दत डालो और ख़ुदा की पनाह में आ जाया करो, बुराई का बदला भलाई से दिया करो, वग़ैरह।

Maktab_E_Ashraf

Maktab E Ashraf

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ یُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا یَسْئَمُوْنَ ۝ السجدة وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِیْۤ اَحْیَاهَا لَمُحْیِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝

और उसकी (क़ुदरत और तौहीद की) निशानियों में से रात और दिन है, और सूरज है और चाँद है। (पस) तुम लोग न सूरज को सज्दा करो और न चाँद को, और (सिर्फ़) उस ख़ुदा तआ़ला को सज्दा करो जिसने इन (सब) निशानियों को पैदा किया, अगर तुमको अल्लाह की इबादत करना है। (37) फिर अगर ये लोग तकब्बुर करें तो जो फ़रिश्ते आपके रब के क़रीबी हैं वे रात और दिन उसकी पाकी बयान करते हैं, और वे (उससे ज़रा) नहीं उकताते। (38) ✿ (सज्दा)

और उसकी (क़ुदरत और तौहीद की) निशानियों में से एक यह है कि (ऐ मुख़ातब!) तू ज़मीन को देखता है कि दबी-दबाई पड़ी है, फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूलती है। (इससे साबित हुआ कि) जिसने इस ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया वही मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा, बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (39)

✿ सज्दा नम्बर- 11

السجدة ۱۱

यह सितारे और चाँद-सूरज अल्लाह की निशानियाँ हैं

अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ को अपनी अ़ज़ीम क़ुदरत और बेमिसाल ताक़त दिखाता है कि वह जो करना चाहे कर डालता है। सूरज-चाँद दिन-रात उसकी क़ुदरते कामिला के निशानात हैं। रात को उसके अंधेरों समेत, दिन को उसके उजालों समेत उसने बनाया है। कैसे एक के बाद एक आते जाते हैं। सूरज, उसकी रोशनी और चमक को, चाँद और उसकी नूरानियत को देख लो, इनकी भी मन्ज़िलें और आसमान मुक़र्रर हैं। इनके निकलने और छुपने से दिन रात का फ़र्क़ हो जाता है। महीने और बरसों की गिनती मालूम हो जाती है। जिससे इबादतें, मामलात और हुक़ूक़ नियमित तौर पर अदा होते हैं। चूँकि आसमान व ज़मीन में ज़्यादा ख़ूबसूरत और रोशन सूरज और चाँद था इसलिये इन्हें ख़ुसूसियत से अपनी मख़्लूक़ होना बतलाया और फ़रमाया कि अगर ख़ुदा के बन्दे हो तो सूरज चाँद के सामने माथा न टेकना, क्योंकि वे मख़्लूक़ (पैदा शुदा) हैं, मख़्लूक़ सज्दे करने के क़ाबिल नहीं होती, सज्दा किये जाने के लायक़ वह है जो सब का ख़ालिक़ है। पस तुम ख़ुदा की इबादत किये चले जाओ। लेकिन अगर तुमने ख़ुदा तआ़ला के सिवा उसकी मख़्लूक़ की भी इबादत कर ली तो तुम उसकी नज़रों से गिर जाओगे और फिर तो वह तुम्हें कभी न बख़्शेगा।

जो लोग सिर्फ़ उसकी इबादत नहीं करते बल्कि किसी और की भी इबादत कर लेते हैं, वे यह न समझें कि ख़ुदा के आ़बिद (पुजारी) वही हैं। वे अगर उसकी इबादत छोड़ देंगे तो और कोई उसका आ़बिद ही नहीं रहेगा। नहीं-नहीं! ख़ुदा उनकी इबादतों से बिल्कुल बेपरवाह है, उसके फ़रिश्ते दिन-रात उसकी पाकीज़गी के

Maktab-E-Ashraf

बयान और उसकी इबादत में हर वक़्त मशग़ूल रहते हैं। जैसे एक और आयत में है कि अगर ये कुफ़्र करें तो हमने एक क़ौम ऐसी भी मुक़र्रर कर रखी है जो कुफ़्र न करेगी। हुज़ूर सल्ल. इस क़ुदरत की निशानी कि वह मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता है, अगर देखनी चाहते तो मुर्दा ज़मीन का बारिश से ज़िन्दा होना देख लो कि वह ख़ुश्क चटियल और बिना घास के होती है, बारिश बरसते ही खेतियाँ फल सब्ज़ा घास और फूल वग़ैरह उग आते हैं, और वह एक अजीब अन्दाज़ से सब्ज़े (हरियाली) से लहलहाने लगती है। उसे ज़िन्दा करने वाला ही तुम्हें भी ज़िन्दा करेगा। यक़ीन मानो कि वह जो चाहे उसकी क़ुदरत में है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِى النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ۝ لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْ ۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ۝ مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ۝

बेशक जो लोग हमारी आयतों में ग़लत रास्ता इख़्तियार करते हैं, वे लोग हम पर छुपे नहीं हैं। सो भला जो शख़्स दोज़ख़ में डाला जाए वह अच्छा है या वह शख़्स जो क़ियामत के दिन अमन व अमान के साथ (जन्नत में) आए? जो जी चाहे कर लो वह तुम्हारा सब किया हुआ देख रहा है। (40) जो लोग इस क़ुरआन का इनकार करते हैं, जबकि वह उनके पास पहुँचता है, (उनमें ख़ुद सोचने-समझने की कमी है) और यह (क़ुरआन मजीद) बड़ी वक़्अत वाली किताब है (41) जिसमें ख़िलाफ़े हक़ीक़त बात न उसके आगे की तरफ़ से आ सकती है और न उसके पीछे की तरफ़ से, यह हिक्मत वाले और तारीफ़ वाले ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से नाज़िल किया गया है। (42) आपको वही बातें (झुठलाने और तकलीफ़ देने की) कही जाती हैं जो आपसे पहले रसूलों को कही गई हैं, आपका रब बड़ी मग़फ़िरत वाला और दर्दनाक सज़ा देने वाला है। (43)

टेढ़ी चाल चलने वाले हमसे छुपे नहीं

'इलहाद' के मायने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह नक़ल किये गये हैं कि कलाम को उसकी जगह से हटाकर दूसरी जगह रखने के हैं। और क़तादा रह. वग़ैरह से कुफ़्र व दुश्मनी के मायने मन्क़ूल हैं। फ़रमाता है कि मुल्हिद (बेदीन और टेढ़ी राह अपनाने वाले) लोग हमसे छुपे नहीं हैं। हमारे नामों और सिफ़तों को इधर से उधर कर देने वाले हमारी निगाहों में हैं। उन्हें हम बदतरीन सज़ायें देंगे। समझ लो कि क्या जहन्नम में जाने वाला और तमाम ख़तरों से बचे रहने वाला बराबर हैं? हरगिज़ नहीं। बदकार काफ़िरो! जो चाहे अ़मल करते रहो मुझसे तुम्हारा कोई अ़मल छुपा नहीं, बारीक से बारीक चीज़ भी मेरी निगाहों से ओझल नहीं।

Mahtab E Ashraf

'ज़िक्र' से मुराद बक़ौल इमाम ज़ह्हाक, इमाम सुद्दी और क़तादा रह. के क़ुरआन है। वह इज़्ज़त व सम्मान वाला है, उसके जैसा किसी का कलाम नहीं। उसके आगे पीछे से यानी किसी तरफ़ से उससे बातिल मिल नहीं सकता, यह रब्बुल-आलमीन की तरफ़ से नाज़िल शुदा है, जो अपने अक़वाल व अफ़आ़ल में हकीम (हिक्मत वाला) है। उसके तमाम अहकाम बेहतरीन अन्जाम वाले हैं। तुझसे जो कुछ तेरे ज़माने के काफ़िर कहते हैं यही तुझसे पहले नबियों को उनकी काफ़िर उम्मतों ने कहा था, पस जैसे उन पैग़म्बरों ने सब्र किया तुम भी सब्र करो, जो भी तेरे रब की तरफ़ रुजू करे वह उसके लिये बड़ी बख़्शिशों वाला है, और जो अपने कुफ़्र व ज़िद पर अड़ा रहे, हक़ की मुख़ालफ़त और रसूलों को झुठलाने से बाज़ न आये उस पर वह सख़्त दर्दनाक सज़ायें नाज़िल फ़रमायेगा। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अगर ख़ुदा तआ़ला की बख़्शिश और माफ़ी न होती तो दुनिया में एक भी साँस लेने वाला ज़िन्दा नहीं रह सकता था। और अगर उसकी पकड़, अ़ज़ाब और सज़ा न होती तो हर शख़्स मुत्मईन (बेफ़िक्र) होकर टेक लगाकर बेख़ौफ़ हो जाता।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا
فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ
هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ
عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ۝ ٥ ع ١٢ ١٩
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝

और अगर हम इसको अ़जमी "यानी अ़रबी भाषा के अ़लावा किसी और" (भाषा का) क़ुरआन बनाते तो यूँ कहते कि इसकी आयतें साफ़-साफ़ क्यों नहीं बयान की गईं? यह क्या बात कि अ़जमी किताब और अ़रबी रसूल? आप कह दीजिए कि यह क़ुरआन ईमान वालों के लिए रास्ता दिखाने वाला और शिफ़ा है। और जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में डाट है। और वह क़ुरआन उनके हक़ में अंधापन है, ये लोग (फ़ायदा न उठाने की वजह से ऐसे हैं कि गोया) किसी बड़ी दूर जगह से पुकारे जा रहे हैं (कि आवाज़ सुनते हों मगर समझते न हों)। (44) और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को भी किताब दी थी, सो उसमें भी इख़्तिलाफ़ हुआ। और अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से पहले ठहर चुकी है (कि पूरा अ़ज़ाब आख़िरत में मिलेगा) तो उनका फ़ैसला (दुनिया ही में) हो चुका होता, और ये लोग उसकी तरफ़ से ऐसे शक में हैं जिसने उनको तरद्दुद "यानी असमंजस" में डाल रखा है। (45)

क़ुरआन पाक और उसके न मानने वालों का ज़िक्र

क़ुरआने करीम की फ़साहत व बलाग़त (यानी भाषायिक और मानवी ख़ूबियों), उसके हुक्म व अहकाम

Maktab E Ashraf

के लफ़्ज़ी व मायने के फ़ायदे का बयान करके उस पर ईमान न लाने वालों की सरकशी और दुश्मनी बयान फ़रमा रहा है। जैसे एक और आयत में इरशाद है:

وَلَوْنَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ. فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ.

मतलब यह है कि न मानने के बीसियों हीले (बहाने) हैं। न ऐसे चैन न वैसे चैन। अगर क़ुरआन किसी अ़जमी (ग़ैर-अ़रबी) भाषा में उतरता तो बहाना करते कि हम तो इसे साफ़-साफ़ समझ नहीं सकते। मुख़ातब अ़रबी भाषा वाले हैं तो उन पर जो किताब उतरती है वह ग़ैर-अ़रबी भाषा में क्यों उतर रही है? और अगर कुछ अ़रबी में होती और कुछ दूसरी भाषा में तो भी इनका यही एतिराज़ होता कि इसकी क्या वजह है?

हज़रत हसन बसरी रह. की क़िराअत 'अअ्जमिय्युन' है। सईद बिन जुबैर रह. भी यही मतलब बयान करते हैं। इससे उनकी सरकशी मालूम होती है। फिर फ़रमान है कि यह क़ुरआन ईमान वालों के दिल की हिदायत और उनके सीनों की शिफ़ा है। उनके तमाम शक इससे दूर और ख़त्म हो जाते हैं। और जिन्हें इस पर ईमान नहीं वे तो इसे समझ ही नहीं सकते। जैसे कोई बहरा हो, न इसके बयान की तरफ़ उन्हें हिदायत हो, जैसे कोई अन्धा हो। एक दूसरी आयत में है:

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَاهُوَشِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّاخَسَارًا.

हमारा नाज़िल किया हुआ यह क़ुरआन ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रहमत है। हाँ ज़ालिमों को तो उनका नुक़सान ही बढ़ाता है। उनकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई दूर से किसी से कुछ कह रहा हो कि न उसके कानों तक सही अलफ़ाज़ पहुँचते हैं, न वह ठीक तरह मतलब समझता हो। जैसे एक और आयत में बयान किया गया है:

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِىْ يَنْعِقُ............ الخ.

यानी काफ़िरों की मिसाल उसकी तरह है जो पुकारता है मगर आवाज़ और पुकार के सिवा और कुछ उनके कान में नहीं पड़ता बहरे गूँगे अन्धे हैं। फिर कैसे समझ लेंगे?

हज़रत ज़ह्हाक रह. ने यह मतलब बयान फ़रमाया है कि क़ियामत के दिन इन्हें इनके बदतरीन नामों से पुकारा जायेगा। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. एक मुसलमान के पास बैठे हुए थे जिसका आख़िरी वक़्त था, उसने अचानक लब्बैक पुकारी, आपने फ़रमाया क्या तुझे कोई दिख रहा है, या कोई पुकार रहा है? उसने कहा हाँ समुद्र के उस किनारे से कोई बुला रहा है तो आपने यही जुमला पढ़ाः

اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ ۢبَعِيْدٍ.

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर चल रही है) (इब्ने अबी हातिम)

फिर फ़रमाता है कि हमने मूसा अ़लैहिस्सलाम को किताब दी लेकिन उसमें भी इख़्तिलाफ़ (विवाद व मतभेद) किया गया। उन्हें भी झुठलाया और सताया गया। पस जैसे उन्होंने सब्र किया आपको भी सब्र करना चाहिये। चूँकि पहले ही से तेरे रब ने इस बात का फ़ैसला कर लिया है कि एक निर्धारित वक़्त यानी क़ियामत तक अ़ज़ाब हटे रहेंगे, इसलिये ये मोहलत में हैं वरना इनके करतूत ऐसे न थे कि ये छोड़ दिये जायें और खाते-पीते रहें, अभी हलाक कर दिये जाते। ये अपने झुठलाने में भी किसी यक़ीन पर नहीं, बल्कि शक में ही पड़े हुए हैं। बहक रहे हैं, इधर-उधर डाँवाँ-डोल हो रहे हैं। वल्लाहु आलम।

जो शख़्स नेक अ़मल करता है वह अपने नफ़े के लिए और जो शख़्स बुरा अ़मल करता है उसका वबाल उसी पर पड़ेगा, और आप का रब बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (46)	مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

Maktab E Ashraf

जो जैसा करेगा वैसा पायेगा

इस आयत का मतलब बहुत साफ़ है। भलाई करने वाले के आमाल का नफ़ा उसी को होता है और बुराई करने वाले की बुराई का वबाल भी उसी की तरफ़ लौटता है। परवर्दिगार की ज़ात ज़ुल्म से पाक है। वह एक के गुनाह पर दूसरे को नहीं पकड़ता। वह बिना किये किसी गुनाह की सज़ा नहीं देता। पहले अपने रसूल को भेजता है, अपनी किताब उतारता है, अपनी हुज्जत पूरी करता है, अपनी बातें पहुँचा देता है। अब भी जो न माने वह अ़ज़ाब व सज़ा का हक़्दार हो जाता है।

अल्लाह करीम का शुक्र व एहसान है कि चौबीसवें पारे की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर पच्चीस

क़ियामत के इल्म का हवाला ख़ुदा ही की तरफ़ दिया जा सकता है। और कोई फल अपने ख़ोल में से नहीं निकलता और न किसी औरत को हमल "यानी गर्भ" रहता है, और न वह बच्चे को जन्म देती है, मगर यह सब उसकी इत्तिला से होता है। और जिस दिन अल्लाह तआला उन (मुश्रिकों) को पुकारेगा (और कहेगा) कि मेरे शरीक (अब) कहाँ हैं? वे कहेंगे कि (अब तो) हम आपसे यही अ़र्ज़ करते हैं कि हममें (इस अ़क़ीदे का) कोई दावेदार नहीं। (47) और जिन-जिनको ये लोग पहले से (यानी दुनिया में) पूजा करते थे, वे सब ग़ायब हो जाएँगे। और ये लोग समझ लेंगे कि उनके लिए कहीं बचाव की सूरत नहीं। (48)	اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ قَالُوْٓا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ۝ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ۝

क़ियामत का इल्म

अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि क़ियामत कब आयेगी इसका इल्म उसके सिवा और किसी को नहीं। तमाम इनसानों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्ल. से जब फ़रिश्तों के सरदारों में से एक सरदार हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने क़ियामत के आने का वक़्त पूछा तो आपने फ़रमाया- जिससे पूछा जाता है वह भी पूछने वालो से ज़्यादा जानने वाला नहीं।

क़ुरआने करीम की एक और आयत में है:

اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰهَا.

यानी क़ियामत कब क़ायम होगी, इसके इल्म का मदार तेरे रब की तरफ़ ही है। इसी तरह अल्लाह तआ़ला जल्ल शानुहू ने एक और जगह फ़रमाया है:

لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ.

मतलब यही है कि क़ियामत के वक़्त को अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई नहीं जानता।

फिर फ़रमाता है कि हर चीज़ को उस ख़ुदा का इल्म घेरे हुए है यहाँ तक कि जो फूल शगूफ़ा खिला कर निकले, जिस औ़रत को हमल (गर्भ) है, जो बच्चा उसे हो, यह सब उसके इल्म में है। ज़मीन व आसमान का एक ज़र्रा उसके विस्तृत इल्म से बाहर नहीं। जैसा कि एक जगह अल्लाह का इरशाद है कि ज़मीन व आसमान का कोई ज़र्रा उसके इल्म से बाहर नहीं।

एक और आयत में है:

Maktab E Ashraf

وَمَاتَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا.

यानी जो पत्ता झड़ जाता है उसे भी वह जानता है। हर मादा को जो हमल (गर्भ) रहता है और रहम (पेट और गर्भ) जो कुछ घटाते बढ़ाते रहते हैं ख़ुदा ख़ूब जानता है। उसके पास हर चीज़ का अन्दाज़ा है, उम्रें जो घटें-बढ़ें वह भी किताब में लिखी हुई हैं, ऐसा कोई काम नहीं जो ख़ुदा के लिये मुश्किल हो। क़ियामत वाले दिन मुश्रिकों से तमाम मख़्लूक़ के सामने अल्लाह तआ़ला सवाल करेगा कि जिन्हें तुम मेरे साथ शरीक करते थे वे आज कहाँ हैं? वे जवाब देंगे कि हम तो तुझे मालूम करा चुके कि आज तो हममें से कोई भी इसका इक़रार न करेगा कि तेरा कोई शरीक भी है। आज उनके बातिल और झूठे माबूद सब गुम हो जायेंगे, कोई नज़र न आयेगा जो उन्हें नफ़ा पहुँचा सके। और ये ख़ुद जान लेंगे कि आज ख़ुदा के अ़ज़ाब से छुटकारे की कोई सूरत नहीं। यहाँ 'ज़न' (गुमान) यक़ीन के मायने में है। क़ुरआने करीम की एक और आयत में इस मज़मून को इस तरह बयान किया गया है:

وَرَاَى الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَفَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا.

यानी गुनाहगार लोग जहन्नम को देख लेंगे और उन्हें यक़ीन हो जायेगा कि वे उसमें गिरने वाले हैं और उससे बचने की कोई राह न पायेंगे।

لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ز وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوْسٌ قَنُوْطٌ ○ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ لا وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً لا وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ج فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ز وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ○ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ج وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ○

आदमी, तरक़्क़ी की ख़्वाहिश से उसका जी नहीं भरता, और अगर उसको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो नाउम्मीद परेशान हो जाता है। (49) और अगर हम उसको किसी तकलीफ़ के बाद जो कि उस पर आ पड़ी थी, अपनी मेहरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो कहता है कि यह तो मेरे लिए होना ही चाहिए था, और मैं क़ियामत को आने वाला नहीं ख़्याल करता, और अगर मैं अपने रब के पास पहुँचाया भी गया तो मेरे लिए उसके पास भी बेहतरी ही है। सो हम उन इनकार करने वालों को उनके (यह) सब किरदार ज़रूर बतला देंगे, और उनको सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखा देंगे। (50) और जब हम आदमी को नेमत अ़ता करते हैं तो (हमसे और हमारे अहकाम से) मुँह मोड़ लेता है और करवट फेर लेता है, और जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो ख़ूब लम्बी-चौड़ी दुआ़एँ करता है। (51)

Maktab E Ashraf

इनसानी फ़ितरत एक जगह नहीं ठहरती

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि माल, सेहत वग़ैरह भलाईयों की दुआ़ओं से तो इनसान थकता ही नहीं. अगर उस पर कोई बला आ पड़े या तंगदस्ती व ग़ुर्बत का मौक़ा आ जाये तो इस क़द्र परेशान और मायूस हो जाता है कि गोया अब किसी भलाई का मुँह नहीं देखने का। और अगर किसी बुराई या सख़्ती के बाद उसको कोई भलाई या राहत मिल जाये तो कहने बैठ जाता है कि ख़ुदा पर यह तो मेरा हक़ था, मैं इसी के लायक़ था। अब उस नेमत पर फूलता है, ख़ुदा को भूलता है और साफ़ मुन्किर बन जाता है। क़ियामत के आने का साफ़ इनकार कर जाता है। माल व दौलत, राहत व आराम उसके कुफ़्र का सबब बन जाता है। जैसे एक और आयत में है:

كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰى. اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى.

यानी इनसान ने जहाँ राहत व आराम पाया वहीं उसने सर उठाया और सरकशी की।

फिर फ़रमाता है कि इतना ही नहीं बल्कि इस बद-आमाली (ग़लत और बुरे काम करने) पर भली उम्मीदें भी करता है और कहता है कि मान लो अगर क़ियामत आयी भी और मैं वहाँ खड़ा भी किया गया तो जिस तरह यहाँ सुख-चैन में हूँ वहाँ भी होऊँगा। ग़र्ज़ कि क़ियामत का इनकार भी करता है, मरने के बाद जीने को मानता भी नहीं और फिर उम्मीदें भी लम्बी बाँधता है। कहता है कि जैसे मैं यहाँ हूँ वैसे ही वहाँ भी रहूँगा।

फिर अल्लाह तआ़ला उन लोगों को डराता है जिनके ऐसे आमाल व अ़क़ीदे हों। फ़रमाता है कि उन्हें हम सख़्त सज़ा देंगे। फिर फ़रमाता है कि जब इनसान ख़ुदा की नेमतें पा लेता है तो इताअ़त से फिर जाता है और मानने से जी चुराता है। जैसे फ़रमायाः

فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ.

सो उसने मय अपने हुकूमत के अहल कारों के नाफ़रमानी की......। (सूरः ज़ारियात आयत 39)

और जब उसे नुक़सान पहुँचता है तो बड़ी लम्बी चौड़ी दुआ़यें करने लगता है।

'अ़रीज़ कलाम' उसे कहते हैं जिसके अलफ़ाज़ बहुत ज़्यादा हों और मायने बहुत कम, और जो कलाम इसके विपरीत हो यानी अलफ़ाज़ थोड़े हों और मायने ज़्यादा उसे 'वजीज़ कलाम' कहते हैं, वह बहुत कम और बहुत काफ़ी होता है। इसी मज़मून को एक दूसरी जगह इस तरह बयान किया गया हैः

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖ........ الخ.

जब इनसान को मुसीबत पहुँचती है तो अपने पहलू (करवट) पर लेटकर और बैठकर और खड़े होकर (यानी हर हाल में) ग़र्ज़ कि हर वक़्त हमसे मुनाजात (दुआ़ व फ़रियाद) करता रहता है, और जब वह तकलीफ़ हम दूर कर देते हैं तो इस बेपरवाही से चला जाता है कि गोया उस मुसीबत के वक़्त उसने हमें पुकारा ही न था।

Maktab E Ashraf

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ۝ سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ۭ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝ اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَاۗءِ رَبِّهِمْ ۭ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ۝	आप कहिए कि भला यह तो बतलाओ कि अगर यह क़ुरआन ख़ुदा तआ़ला के यहाँ से आया हो (और) फिर तुम इसका इनकार करो तो ऐसे शख़्स से ज़्यादा कौन गलती में होगा जो (हक़ से) ऐसी दूर-दराज़ मुख़ालफ़त में पड़ा हो? (52) हम जल्द ही उनको अपनी (क़ुदरत की) निशानियाँ उनके इर्द-गिर्द में भी दिखा देंगे और ख़ुद उनकी ज़ात में भी, यहाँ तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि वह क़ुरआन हक़ है। (तो) क्या आपके रब की यह बात (आपके हक़ पर होने की शहादत के लिए) काफ़ी नहीं कि वह हर चीज़ का शाहिद है। (53) याद रखो कि वे लोग अपने रब के सामने जाने की तरफ़ से शक में पड़े हैं। याद रखो कि वह हर चीज़ को (अपने इल्म के) घेरे में लिए हुए है। (54)

ع

यह दुनिया इबरत की जगह है

अल्लाह तआ़ला अपने नबी हुज़ूर सल्ल. से फ़रमाता है कि क़ुरआन के झुठलाने वाले मुश्रिकों से कह दो कि मान लो यह क़ुरआन सच-मुच ख़ुदा ही की तरफ़ से हो और तुम इसे झुठला रहे हो तो ख़ुदा के यहाँ तुम्हारा क्या हाल होगा? उससे बढ़कर गुमराह और कौन होगा जो अपने कुफ़्र और अपनी मुख़ालफ़त की वजह से हक़ रास्ते और हिदायत की राह से बहुत दूर जा पड़ा हो।

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि क़ुरआने करीम की हक़्क़ानियत की निशानियाँ और हुज्जतें उन्हें उनके आस-पास और दुनिया में हर तरफ़ दिखा देंगे। मुसलमानों को फ़ुतूहात और कामयाबियाँ हासिल होंगी। वे हुकूमतों के हाकिम बनेंगे, दूसरे तमाम दीनों पर इस दीन को ग़लबा होगा, बदर और मक्का की फ़तह की निशानियाँ ख़ुद उनकी अपनी जानों में होंगी, कि ये लोग तायदाद में और शान व शौकत में बहुत ज़्यादा होंगे फिर भी मुट्ठी भर अहले हक़ इन्हें उलट-पुलट कर रख देंगे। और मुम्किन है यह मुराद हो कि अल्लाह की हिक्मत की हज़ारों निशानियाँ ख़ुद इनसान के अपने वजूद में मौजूद हैं। उसकी बनावट, उसकी तरकीब व फ़ितरत, उसके विभिन्न प्रकार के अख़्लाक़ और मुख़्तलिफ़ सूरतें और रंग व रूप वग़ैरह उसके ख़ालिक़ और बनाने वाले की बेहतरीन याद हर वक़्त उसके सामने है, बल्कि उसकी अपनी ज़ात में मौजूद है। उसका हेर-फेर, कभी कोई हालत बचपन जवानी बुढ़ापा बीमारी तन्दुरुस्ती तंगी फ़राख़ी रंज व राहत वग़ैरह सिफ़तें और दूसरे हालात जो उस पर तारी होते हैं।

शैख़ अबू जाफ़र क़रशी ने अपने शे'रों में भी इसी मज़मून को अदा किया है। ग़र्ज़ कि ये बाहरी और अन्दरूनी क़ुदरत की निशानियाँ इस क़द्र हैं कि इनसान ख़ुदा की बातों की हक़्क़ानियत (सही और हक़ होने) के मानने पर मजबूर हो जाता है। अल्लाह तआ़ला की गवाही बस है और बिल्कुल काफ़ी है, वह अपने

Maktab E Ashraf

बन्दों के अक़वाल व अफ़आ़ल (बातों और कामों) से बख़ूबी वाक़िफ़ है। वह जब फ़रमा रहा है कि पैग़म्बर सच्चे हैं फिर तुम्हारे लिये क्या उज़्र रह गया? जैसे इरशाद है:

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ........ الخ.

लेकिन अल्लाह तआ़ला इस किताब के ज़रिये जिसको तुम्हारे पास भेजी है और अपने इल्म के साथ नाज़िल फ़रमाई है, ख़ुद गवाही दे रहा है और फ़रिश्ते इसकी तस्दीक़ कर रहे हैं। और ख़ुदा तआ़ला की गवाही काफ़ी है।

फिर फ़रमाता है कि दर असल उन लोगों को क़ियामत के क़ायम होने का यक़ीन ही नहीं, इसलिये बेफ़िक्र हैं। नेकियों से ग़ाफ़िल हैं, बुराईयों से बचते नहीं, हालाँकि उसका आना यक़ीनी है। इब्ने अबिद्दुन्या में है कि मुसलमानों के ख़लीफ़ा हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. मिम्बर पर चढ़े और अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ व सना के बाद फ़रमाया- लोगो! मैंने तुम्हें किसी नई बात के लिये जमा नहीं किया बल्कि तुम्हें सिर्फ़ इसलिये जमा (इकट्ठा) किया जैसे कि तुम्हें यह सुना दूँ कि क़ियामत के दिन के बारे में मैंने ख़ूब ग़ौर किया। मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि उसे सच्चा जानने वाला अहमक़ है और उसे झूठा जानने वाला हलाक होने वाला है। मतलब यह है कि सच जानता है फिर तैयारी नहीं करता और उसकी दिल दहला देने वाली दहशत भरी हालतों से ग़ाफ़िल है, उससे डरकर वो आमाल नहीं करता जो उसे उस रोज़ के डर से अमन दे सकें। ख़ुद को उसका सच्चा जानने वाला भी कहता है और बेकार की लायानी चीज़ों, ग़फ़लत व शहवत गुनाह और हिमाक़त में मुब्तला है और क़ियामत के क़रीब हो रहा है। अहमक़ के एक मायने अ़क़्ल की कमी और नादानी के भी हैं। वल्लाहु आलम।

फिर रब्बुल-आ़लमीन अपनी कामिल क़ुदरत को बयान फ़रमा रहा है कि हर चीज़ पर उसका इहाता (घेरा) है, क़ियामत का क़ायम करना उस पर आसान है, सारी मख़्लूक़ उसके क़ब्ज़े में है जो चाहे करे, कोई उसका हाथ नहीं रोक सकता। जो उसने चाहा हो गया जो चाहेगा होकर रहेगा, उसके सिवा हक़ीक़ी (वास्तविक) हाकिम कोई नहीं, न उसके सिवा किसी और की ज़ात किसी क़िस्म की इबादत के क़ाबिल है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः हा-मीम सज्दा की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः शूरा

सूरः शूरा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 53 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

حٰمٓ○ عٓسٓقٓ○ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ○ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ○ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ○ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ○	हा-मीम् (1) अ़ैन-सीन-क़ाफ़ (2) इसी तरह आप पर और जो (पैग़म्बर) आपसे पहले हो चुके हैं उन पर अल्लाह जो ज़बरदस्त हिक्मत वाला है (दूसरी सूरतों और किताबों की) 'वही' भेजता रहा है। (3) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वही सबसे बरतर और बड़ी शान वाला है। (4) कुछ बईद नहीं कि आसमान अपने ऊपर से (कि उधर ही से बोझ पड़ता है) फट पड़ें, और (वे) फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह और तारीफ़ करते हैं और ज़मीन वालों के लिए माफ़ी माँगते हैं, ख़ूब समझ लो कि अल्लाह ही माफ़ करने वाला, रहमत करने वाला है। (5) और जिन लोगों ने अल्लाह के अ़लावा दूसरे कारसाज़ "यानी काम बनाने वाले" क़रार दे रखे हैं अल्लाह तआ़ला उनको भी देख-भाल रहा है। और आपको उन पर कोई इख़्तियार नहीं दिया गया। (6)

आप सल्ल. पैग़म्बर हैं, किसी पर वकील नहीं

हुरूफ़े मुक़त्तआ़त की बहस पहले गुज़र चुकी है। इब्ने जरीर ने यहाँ पर एक अ़जीब व ग़रीब असर (वाक़िआ़) ज़िक्र किया है जो बिल्कुल मुन्कर है। उसमें है कि एक शख़्स इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के पास आया, उस वक़्त आपके पास हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि. भी थे। उसने इन हुरूफ़ की तफ़सीर आपसे पूछी, आपने ज़रा सी देर सर नीचे कर लिया फिर मुँह फेर लिया। उस शख़्स ने दोबारा यही सवाल किया, आपने फिर भी मुँह फेर लिया और आपको उसके सवाल से तकलीफ़ हुई। उसने फिर तीसरी मर्तबा पूछा। आपने फिर भी कोई जवाब न दिया। इस पर हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. ने कहा मैं तुझे बताता हूँ और मुझे यह भी मालूम है कि इब्ने अ़ब्बास इसे क्यों नापसन्द कर रहे हैं। उनके अहले बैत में से एक शख़्स के बारे में यह

Maktab E Ashraf

नाज़िल हुई है जिसे अ़ब्दुल-इलाह और अ़ब्दुल्लाह कहा जाता होगा। वह पूरब की नहरों में से एक नहर के पास उतरेगा और वहाँ दो शहर बसायेगा। नहर को काटकर दोनों शहरों में ले जायेगा। जब अल्लाह तआ़ला उनके मुल्क के ज़वाल (ख़ात्मे और पतन) का और उनकी दौलत के ख़ात्मे का इरादा करेगा और उनका वक़्त ख़त्म होने को होगा तो उन दोनों शहरों में से एक पर रात के वक़्त आग आयेगी जो उसे जलाकर भस्म कर देगी। वहाँ के लोग सुबह को देखकर ताज्जुब करेंगे, यह मालूम होगा कि गोया यहाँ कुछ था ही नहीं। सुबह ही सुबह वहाँ तमाम बड़े-बड़े नाफ़रमान, घमंडी और हक़ के मुख़ालिफ़ लोग जमा होंगे। उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला उन सबको उस शहर समेत ग़ारत कर देगा। यही मायने हैं 'हा-मीम ऐन सीन क़ाफ़' के। यानी ख़ुदा की तरफ़ से यह एक तयशुदा और निर्णायक बात है।

'ऐन' से मुराद अ़दल, 'मीम' से मुराद 'सयकू-न' यानी यह बहुत जल्द होकर रहेगा, 'क़ाफ़' से मुराद वाक़े होने वाला उन दोनों शहरों में। इससे भी ज़्यादा नाक़ाबिले क़बूल एक और रिवायत मुस्नद हाफ़िज़ अबू यअ़ला की दूसरी जिल्द में मुस्नद इब्ने अ़ब्बास में है जो मरफ़ूअ़ भी है, लेकिन उसकी सनद बिल्कुल ज़ईफ़ (कमज़ोर) है और मुन्क़ता (यानी सनद लगातार नहीं, बीच में कटी हुई) भी है। उसमें है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. मिम्बर पर चढ़े और लोगों से मालूम किया कि तुममें से किसी ने इन हुरूफ़ की तफ़सीर हुज़ूर पाक सल्ल. से सुनी है? हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. जल्दी से खड़े हुए और फ़रमाया हाँ मैंने सुनी है। "हा-मीम" अल्लाह तआ़ला के नामों में से एक नाम है। "ऐन" से मुरादः

عَايَنَ الْمُوْتُوا عَذَابَ يَوْمِ بَدْرٍ.

"बदर के दिन पीठ मोड़कर भागने वाले काफ़िरों ने अ़ज़ाब का मज़ा चख लिया" है, "सीन" से मुरादः

سَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَیَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ.

"उन ज़ालिमों को जल्द ही मालूम हो जायेगा कि उनका कितना बुरा अन्जाम हुआ"। 'क़ाफ़' से क्या मुराद है इसे आप बतला न सके तो हज़रत अबू ज़र खड़े हुए और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की तफ़सीर के मुताबिक़ तफ़सीर की और फ़रमाया 'क़ाफ़" से मुराद आसमानी खड़खड़ाने वाली चीज़ है, जो तमाम लोगों को ढाँप लेगी। तर्जुमा यह हुआ कि बदर के दिन पीठ मोड़कर भागने वाले काफ़िरों ने अ़ज़ाब का मज़ा चख लिया। उन ज़ालिमों को जल्द ही मालूम हो जायेगा कि उनका कितना बुरा अन्जाम हुआ। उन पर आसमानी अ़ज़ाब आयेगा जो उन्हें तबाह व बरबाद कर देगा।

नोटः हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. ने लिखा है कि ऊपर ज़िक्र किये हुए वाकिआ़त के बारे में नक़ल हुए अक़वाल मोतबर नहीं, और इस सिलसिले में अबू हय्यान का क़ौल भी नक़ल किया है। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी।

फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! जिस तरह तुम पर इस क़ुरआन की 'वही' नाज़िल हुई है, इसी तरह तुम से पहले पैग़म्बरों पर किताबें और सहीफ़े नाज़िल हुए हैं। यह सब उस अल्लाह की तरफ़ से उतरे हैं जो अपना इन्तिक़ाम लेने में ग़ालिब और ज़बरदस्त है। जो अपने अक़वाल व अफ़आ़ल (बातों और कामों) में हिक्मत वाला है।

हज़रत हारिस बिन हिशाम रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्ल. से सवाल किया कि आप पर 'वही' किस तरह नाज़िल होती है? आपने फ़रमाया कभी तो घन्टी की लगातार आवाज़ की तरह जो मुझ पर बहुत भारी पड़ती है। जब वह ख़त्म हो जाती है तो मुझे जो कुछ कहा गया वह सब याद होता है। और कभी फ़रिश्ता इनसानी सूरत में मेरे पास आता है, मुझसे बातें कर जाता है और जो वह कहता है मैं उसे याद रख लेता

Maktaba-E-Ashraf

हूँ। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि सख़्त जाड़ों के दिनों में भी जब आप पर 'वही' उतरती थी तो 'वही' की शिद्दत से आप पसीने में शराबोर हो जाते थे। यहाँ तक कि पेशानी से पसीने की बूँदें टपकने लगती थीं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. से 'वही' की कैफ़ियत पूछी तो आपने फ़रमाया- मैं एक ज़न्जीर की सी गड़गड़ाहट सुनता हूँ। फिर कान लगा लेता हूँ ऐसी 'वही' में मुझे इतनी शिद्दत (सख़्ती) होती है कि हर मर्तबा अपनी रूह निकल जाने का गुमान होता है। शरह सही बुख़ारी के शुरू में हम 'वही' की कैफ़ियत पर तफ़सीली कलाम कर चुके हैं।

फिर फ़रमाता है कि ज़मीन व आसमान की तमाम मख़्लूक़ उसकी गुलाम है, उसकी मिल्कियत है, उसके क़ब्ज़े में और उसके सामने आ़जिज़ व मजबूर हैं। वह बुलन्दियों वाला और बड़ाईयों वाला है, वह बहुत बड़ा और बहुत बुलन्द है। वह ऊँचाई वाला और किब्रियाई वाला है। उसकी अ़ज़मत (बड़ाइ) और जलालत (बुलन्द शान) का यह हाल है कि क़रीब है कि आसमान फट पड़े, फ़रिश्ते उसकी अ़ज़मत से कपकपाये हुए उसकी पाकी और तारीफ़ बयान करते रहते हैं, और ज़मीन वालों के लिये मग़फ़िरत तलाश करते रहते हैं। जैसे एक दूसरी जगह इरशाद है:

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ........ الخ.

यानी अ़र्श को उठाने वाले और उसके आस-पास के फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह और हम्द (पाकी और तारीफ़) बयान करते रहते हैं, उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिये इस्तिग़फ़ार (मग़फ़िरत की दुआ़) करते रहते हैं।

कि ऐ हमारे रब! तूने अपनी रहमत व इल्म से हर चीज़ को घेर रखा है, पस तू उन्हें बख़्श दे जिन्होंने तौबा की है और तेरे रास्ते के ताबे हैं। उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से भी बचा ले। फिर फ़रमाया कि जान लो अल्लाह ग़फ़ूर व रहीम है। फिर फ़रमाता है कि मुश्रिकों के आमाल की देखभाल मैं ख़ुद कर रहा हूँ उन्हें ख़ुद ही पूरा-पूरा बदला दूँगा, तेरा काम सिर्फ़ उन्हें आगाह कर देना है, तू कुछ उन पर दारोग़ा नहीं।

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝	और हमने इसी तरह आप पर (यह) क़ुरआन अ़रबी 'वही' के ज़रिए से नाज़िल किया है, ताकि आप (सबसे पहले) मक्का में रहने वालों को और जो लोग उसके आस-पास हैं उनको डराएँ और जमा होने के दिन से डराएँ, जिस (के आने) में ज़रा शक नहीं। एक गिरोह जन्नत में (दाख़िल) होगा और एक दोज़ख़ में होगा। (7) और अगर अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो उन सबको एक ही तरीक़े का बना देता, लेकिन वह जिसको चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है, और (उन) ज़ालिमों का (क़ियामत के दिन) कोई हिमायती और मददगार नहीं। (8)

Maktab E Ashraf

कायनात के सरदार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

यानी जिस तरह ऐ नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ तुमसे पहले अम्बिया पर अल्लाह की 'वही' आती रही, तुम पर भी यह क़ुरआन 'वही' के ज़रिये नाज़िल किया गया है। यह अ़रबी ज़बान में बहुत वाज़ेह, बिल्कुल खुला हुआ और सुलझे हुए बयान वाला है, ताकि तू मक्का शहर के रहने वालों को ख़ुदा के अहकाम और ख़ुदा के अ़ज़ाब से आगाह कर दे, तथा दुनिया के तमाम कोनों के आस-पास से मुराद पूरब व पश्चिम की हर दिशा मुराद है। मक्का शरीफ़ को 'उम्मुल-क़ुरा' (तमाम बस्तियों और आबादियों की मुखिया) इसलिये कहा गया है कि यह तमाम शहरों से अफ़ज़ल व बेहतर है, इसके दलाईल बहुत सारे हैं जो अपनी-अपनी जगह मज़कूर हैं। हाँ यहाँ पर एक दलील जो मुख़्तसर भी है और साफ़ भी सुन लीजिए। तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, मुस्नद अहमद वग़ैरह में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़दी हमरा ज़ोहरी रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़बाने मुबारक से सुना, आप मक्का शरीफ़ के बाज़ार हज़्वरा में खड़े हुए फ़रमा रहे थे कि ऐ मक्का क़सम है अल्लाह की, तू ख़ुदा की सारी ज़मीन से ख़ुदा के नज़दीक ज़्यादा महबूब और अफ़ज़ल है। अगर मैं तुझसे न निकाला जाता तो क़सम है ख़ुदा की हरगिज़ तुझे न छोड़ता। इमाम तिर्मिज़ी रह. इस हदीस को हसन सही फ़रमाते हैं। और इसलिये कि तू क़ियामत के दिन से सबको डरा दे जिस दिन तमाम अव्वल व आख़िर के लोग एक मैदान में जमा होंगे, जिस दिन के आने में कोई शक व शुब्हा नहीं, जिस दिन कुछ लोग जन्नती होंगे और कुछ जहन्नमी, यह वह दिन होगा कि जन्नती नफ़े में रहेंगे और जहन्नमी घाटे में। एक दूसरी आयत में फ़रमाया गया है:

ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ لَّهُ النَّاسُ........ الخ.

यानी इन वाक़िआ़त में उस शख़्स के लिये बड़ी इबरत (सबक़) है जो आख़िरत के अ़ज़ाब से डरता हो। आख़िरत का वह दिन है जिसमें तमाम लोग जमा किये जायेंगे और वह सब की हाज़िरी का दिन है, हम तो उसे एक मुक़र्ररा थोड़ी सी मुद्दत के लिये टाले हुए हैं, उस दिन कोई शख़्स बग़ैर ख़ुदा तआ़ला की इजाज़त के बात तक न कर सकेगा। फिर उनमें से बाज़ तो बद-क़िस्मत होंगे और बाज़ ख़ुश-नसीब।

मुस्नद अहमद में है कि रसूले ख़ुदा सल्ल. अपने सहाबा के पास एक मर्तबा दो किताबें दोनों हाथों में लेकर आये और हमसे पूछा जानते हो यह क्या है? हमने कहा हमें तो ख़बर नहीं, आप फ़रमाईये। आपने अपने दाहिने हाथ की किताब की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया- यह रब्बुल-आ़लमीन की किताब है, जिसमें जन्नतियों के नाम हैं, उनके वालिद और उनके क़बीले के नाम के साथ, और आख़िर में हिसाब करके मीज़ान (टोटल) लगा दी गयी है। अब उनमें न एक बढ़ेगा न एक घटेगा। फिर अपने बायें हाथ की किताब की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया- यह जहन्नमियों के नामों का रजिस्टर है, उनके नाम उनके पिता का नाम और उनकी क़ौम सब इसमें लिखी हुई है, फिर आख़िर में मीज़ान (टोटल) लगा दी गयी है। इनमें भी कमी-बेशी नामुम्किन है। सहाबा रज़ि. ने पूछा फिर हमें अ़मल की क्या ज़रूरत? जबकि सब लिखा जा चुका है? आपने फ़रमाया- ठीक-ठाक रहो, भलाई की नज़दीकी के लिये रहो, जन्नत वालों का ख़ात्मा नेकियों और भले आमाल पर ही होगा चाहे वह कैसे ही आमाल करता हो। और दोज़ख़ वालों का ख़ात्मा जहन्नमी आमाल पर ही होगा चाहे वह कैसे ही कामों का करने वाला रहा हो। फिर आपने अपनी दोनों मुट्ठियाँ बन्द कर लीं और फ़रमाया- तुम्हारा रब बन्दों के फ़ैसलों से फ़राग़त हासिल कर चुका है। एक फ़िर्क़ा जन्नत में है

और एक जहन्नम में। इसके साथ ही आपने अपने दायें बायें हाथों से इशारा किया जैसे कि कोई चीज़ फेंक रहे हैं। यह हदीस तिर्मिज़ी और नसाई में है। बक़ौल हज़रत इमाम तिर्मिज़ी रह. यह हदीस हसन सही ग़रीब है। यही हदीस और किताबों में भी है, किसी में यह भी है कि तमाम अ़दल ही अ़दल है।

नोटः आजके जदीद दौर में यह चीज़ समझनी कोई मुश्किल नहीं, ज़रा-ज़रा सी चिप में लाखों पेजों का डाटा आ जाना अब लोग अपनी आँखों से देख रहे हैं, और अभी यह दायरा कितना सिमटता है देखते जाईये। रिवायत का अगला हिस्सा तक़दीर से मुताल्लिक़ है जिसकी तफ़सील तक़दीर के बयान में अनेक जगह गुज़र चुकी है। इस बारे में ज़्यादा ज़ेहन चलाना ख़तरनाक है। इनसान का काम अपने अ़मल किये जाना और अल्लाह से अच्छी उम्मीद रखना है, जब उसके हुक्म की तामील करने की तौफ़ीक़ मिल रही है तो समझना चाहिये कि वह अपने रहम व करम से अन्जाम भी अच्छा करेगा। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी।**

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने जब आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा किया और उनकी तमाम औलाद उनसे निकाली और चींवटियों की तरह वह मैदान में फैल गयी तो उसे अपनी दोनों मुट्ठियों में ले लिया और फ़रमाया- एक हिस्सा नेकों का, दूसरा हिस्सा बदों का। फिर उन्हें फैला दिया, दोबारा उन्हें समेट लिया और उसी तरह अपनी मुट्ठियों में लेकर फ़रमाया- एक हिस्सा जन्नती और दूसरा हिस्सा जहन्नमी। यह रिवायत मौक़ूफ़ ही ठीक है। वल्लाहु आलम।

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह नाम के सहाबी बीमार थे, हम लोग उनकी बीमारी का हाल पूछने के लिये गये, देखा कि वह रो रहे हैं। कहा आप क्यों रोते हैं? आपसे रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमा दिया है कि अपनी मूँछें कम रखा करो, यहाँ तक कि मुझसे मिलो (यानी एक तरह से नबी पाक सल्ल. ने आख़िरत में अपने साथ की ख़ुशख़बरी दे दी है, फिर रो क्यों रहे हैं)।

इस पर उन सहाबी ने फ़रमाया- यह तो ठीक है लेकिन मुझे तो यह हदीस रुला रही है कि मैंने हुज़ूर सल्ल. से सुना है कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी दायीं मुट्ठी में मख़्लूक़ ली और इसी तरह दूसरे हाथ की मुट्ठी में भी, और फ़रमाया- ये लोग इसके लिये हैं यानी जन्नत के लिये, और ये इसके लिये हैं यानी जहन्नम के लिये, और मुझे कुछ परवाह नहीं (यानी कोई कहीं जाये अल्लाह की ज़ात इससे बेपरवाह है)।

पस मुझे ख़बर नहीं कि मैं ख़ुदा तआ़ला की किस मुट्ठी में था। इस तरह की और भी बहुत सी हदीसें हैं। फिर फ़रमाता है कि अगर ख़ुदा को मन्ज़ूर होता तो सबको एक ही तरीक़े पर कर देता, यानी या तो हिदायत पर या गुमराही पर, लेकिन रब ने उनमें फ़र्क़ रखा, बाज़ को हक़ की हिदायत की और बाज़ को उससे भुला दिया। अपनी हिक्मत को वही जानता है, वह जिसे चाहे अपनी रहमत में ले। ज़ालिमों का हिमायती और मददगार कोई नहीं।

इब्ने जरीर में है कि अल्लाह से हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ की- ऐ मेरे ख़ुदा! तूने अपनी मख़्लूक़ को पैदा किया, फिर उनमें से कुछ को तू जन्नत में ले जायेगा और कुछ को जहन्नम में, क्या अच्छा होता कि सब ही जन्नत में जाते। अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया- ऐ मूसा! अपना कुर्ता ऊँचा करो, आपने ऊँचा किया। फिर फ़रमाया और ऊँचा करो, आपने और ऊँचा किया। फ़रमाया और ऊपर को उठाओ, जवाब दिया ख़ुदाया! अब तो सारे जिस्म से ऊँचा कर लिया सिवाय इस जगह के जिसके ऊपर से हटाने में ख़ैर नहीं। फ़रमाया बस मूसा इसी तरह मैं भी अपनी तमाम मख़्लूक़ को जन्नत में दाख़िल करूँगा सिवाय उनके जो बिल्कुल ही ख़ैर से ख़ाली हैं।

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ
الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ ع ٩ ٢
فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ ۖۗ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝ فَاطِرُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ
اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ
يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ
السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ
وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

क्या उन लोगों ने ख़ुदा के सिवा दूसरे कारसाज़ "काम बनाने वाले" क़रार दे रखें हैं? सो अल्लाह ही कारसाज़ है और वही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (9)

और जिस-जिस बात में तुम (हक़ वालों के साथ) इख़्तिलाफ़ करते हो उसका फ़ैसला अल्लाह तआ़ला ही के सुपुर्द है। यह अल्लाह मेरा रब है, मैं उसी पर भरोसा करता हूँ और उसी की तरफ़ रुजू करता हूँ। (10) वह आसमानों का और ज़मीन का पैदा करने वाला है, उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स के जोड़े बनाए और (इसी तरह) मवेशियों के जोड़े बनाए। (और) इस (जोड़े मिलाने) के ज़रिए से तुम्हारी नस्ल चलाता रहता है। कोई चीज़ उसके जैसी नहीं और वही हर बात का सुनने वाला (और) देखने वाला है। (11) उसी के इख़्तियार में हैं आसमानों की और ज़मीन की कुन्जियाँ, जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और (जिसको चाहे) कम देता है, बेशक वह हर चीज़ का पूरा जानने वाला है। (12)

अल्लाह तआ़ला ही हाकिम है

अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों के उस मुश्रिकाना फ़ेल की बुराई बयान फ़रमाता है जो वह ख़ुदा के साथ शरीक किया करते थे और दूसरों की परस्तिश (पूजा और इबादत) करते थे। बयान फ़रमाता है कि सच्चा वली और हक़ीक़ी कारसाज़ तो मैं हूँ। मुर्दों को जिलाना मेरी सिफ़त है, हर चीज़ पर क़ाबू और क़ुदरत रखना मेरा वस्फ़ (कमाल और सिफ़त) है, फिर मेरे सिवा और की इबादत कैसी?

फिर फ़रमाता है जिस किसी मामले में तुम में इख़्तिलाफ़ (विवाद और मतभेद) हो जाये उसका फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ ले जाओ। यानी तमाम दीनी और दुनियावी विवादों और मतभेदों के फ़ैसले की चीज़ क़ुरआन और हदीस को मानो, जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ.

अगर तुम में कोई झगड़ा हो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ ले जाओ।

फिर फ़रमाता है कि वह अल्लाह जो हर चीज़ पर हाकिम है, वही मेरा रब है। मेरा तवक्कुल (भरोसा) उसी पर है, और अपने तमाम काम उसी पर सौंपता हूँ और हर वक़्त उसी की जानिब रुजू करता हूँ। वह

आसमान व ज़मीन और उसके बीच की तमाम मख़्लूक़ का ख़ालिक़ है। उसका एहसान देखो कि उसने तुम्हारी ही जिन्स और तुम्हारी ही शक्ल के तुम्हारे जोड़े बना दिये, यानी मर्द व औरत, और चौपायों के भी जोड़े पैदा किये जो आठ हैं। वह इसी पैदाईश में तुम्हें पैदा करता है। यानी इस सिफ़त पर, जोड़ जोड़ पैदा करता जा रहा है, नस्लें की नस्लें फैला दीं। ज़माने के ज़माने गुज़र गये और सिलसिला इसी तरह चला आ रहा है। इधर इनसानों का उधर जानवरों का।

अ़ल्लामा बग़वी फ़रमाते हैं कि मुराद 'रहम' (गर्भ) में पैदा करना है। बाज़ कहते हैं, पेट में, बाज़ कहते हैं इसी तरीक़े पर फैलाना है। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि नस्लें फैलानी मुराद है। बाज़ कहते हैं कि यहाँ "फ़ीही" मायने में "बिही" के है, यानी मर्द और औरत के जोड़े से इनसानी नस्ल को फैला और पैदा कर रहा है। हक़ तो यह है कि ख़ालिक़ जैसा कोई और नहीं। वह अकेला, बेनियाज़ और बेनज़ीर है। वह सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ देखने वाला है। आसमान व ज़मीन की कुन्जियाँ उसी के हाथों में हैं। सूरः ज़ुमर में इसकी तफ़सीर गुज़र चुकी है। मक़सद यह है कि सारे आ़लम का मालिक व क़ाबिज़ और हर तरह का इख़्तियार रखने वाला हाकिम वही यक्ता ला-शरीक है। जिसे चाहे कुशादा रोज़ी दे, जिस पर चाहे तंगी कर दे, उसका कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं। किसी हालत में वह किसी पर ज़ुल्म करने वाला नहीं, उसका बेपनाह इल्म सारी मख़्लूक़ को घेरे हुए है।

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ۝ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى	अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के वास्ते वही दीन मुक़र्रर किया जिसका उसने नूह (अ़लैहिस्सलाम) को हुक्म दिया था, और जिसको हमने आपके पास 'वही' के ज़रिए से भेजा है, और जिसका हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा (अ़लैहि.) को (मय उनके सब पैरोकारों के) हुक्म दिया था, (और उनकी उम्मतों को यह कहा था) कि इसी दीन को क़ायम रखना और इसमें फूट न डालना। मुश्रिकों को वह बात बड़ी नागवार गुज़रती है जिसकी तरफ़ आप उनको बुला रहे हैं। अल्लाह अपनी तरफ़ जिसको चाहता है खींच लेता है, और जो शख़्स (ख़ुदा की तरफ़) रुजू करे उसको अपने तक पहुँचना नसीब फ़रमाता है। (13) और वे लोग इसके बाद कि उनके पास इल्म पहुँच चुका था, आपस की ज़िद्दा-ज़िद्दी से आपस में अलग-अलग हो गए। और अगर आपके परवर्दिगार की तरफ़ से एक मुक़र्ररा वक़्त तक (के लिए मोहलत देने की) एक बात पहले क़रार न पा चुकती तो (दुनिया ही में) उनका फ़ैसला हो चुका होता। और जिन

لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ۚ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِىْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝	लोगों को उनके बाद किताब दी गई है (मुराद इससे हुज़ूरे पाक के ज़माने के मुशरिक हैं) वे उसकी तरफ़ से ऐसे (मज़बूत) शक में पड़े हैं जिसने (उनको) दुविधा और शक में डाल रखा है। (14)

Maktab E Ashraf

एक ही तरीक़ा

अल्लाह तआ़ला ने जो इनाम इस उम्मत पर किया है उसका ज़िक्र यहाँ फ़रमाता है, कि तुम्हारे लिये जो शरीअ़त (ख़ुदाई क़ानून) मुक़र्रर की है वह वह है जो हज़रत आदम के बाद दुनिया के सबसे पहले पैग़म्बर और दुनिया के सबसे आख़िरी पैग़म्बर और उनके बीच के तमाम बुलन्द-रुतबा पैग़म्बरों की थी। पस यहाँ जिन पाँच पैग़म्बरों का ज़िक्र हुआ है उन्हीं पाँच का ज़िक्र सूरः अहज़ाब में भी किया गया है। फ़रमायाः

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ......... الخ.

वह दीन जो तमाम अम्बिया का मुश्तरक तौर पर है, वह एक ख़ुदा की इबादत है। जैसे अल्लाह जल्ल शानुहू का फ़रमान हैः

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِىْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ.

यानी तुझसे पहले जितने भी रसूल आये हैं उन सबकी तरफ़ हमने यही 'वही' की है कि माबूद मेरे सिवा कोई नहीं, पस तुम सब मेरी ही इबादत करते रहो।

हदीस में है कि अम्बिया की जमाअ़त आपस में अ़ल्लाती (बाप शरीक) भाईयों की तरह हैं। हम सबका दीन एक ही है। जैसे अ़ल्लाती भाईयों का बाप एक होता है। ग़र्ज़ कि शरीअ़त के अहकाम में अगरचे आंशिक भिन्नता हो लेकिन उसूली तौर पर (मूल रूप से) दीन एक ही है।

नोटः यहाँ यह नहीं कहा जा सकता कि जब सब अम्बिया का दीन बुनियादी तौर पर एक ही है तो निजात सिर्फ़ इस्लाम में क्यों मुन्हसिर है? ईसाई और यहूदी लोग क्यों हक़ पर नहीं? इसलिये कि अल्लाह के आख़िरी नबी के ज़रिये जो दीन आया वह अपने से पहले तमाम दीनों को निरस्त (कंडम) करने वाला है, और अल्लाह ने अपने पाक कलाम में ख़बर दी है कि पहले नबियों की तालीमात और आसमानी किताबें अब अपनी असली हालत पर नहीं, उनमें रद्दोबदल कर दी गयी है। इसलिये अब दुनिया में सिर्फ़ इस्लाम ही ऐसा दीन बचता है जो अल्लाह का पसन्दीदा और आसमानी दीन है, बाक़ी सब दीन अपनी असली सूरत और हैसियत खो चुके, लिहाज़ा इस्लाम के अ़लावा किसी और रास्ते में निजात नहीं हो सकती। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी।**

और वह तौहीद की सदायें (आवाज़ें) उन मुश्रिकों को नागवार गुज़रती हैं। हक़ यह है कि हिदायत ख़ुदा के हाथ है, जो हिदायत का मुस्तहिक़ होता है वह रब की तरफ़ रुजू करता है और ख़ुदा उसका हाथ थाम कर हिदायत के रास्ते पर ला खड़ा करता है। और जो ख़ुद ही बुरे रास्ते को इख़्तियार कर लेता है और सही व सीधी राह को छोड़ देता है ख़ुदा भी उसके हक़ में गुमराही लिख देता है। जब उनके पास हक़ आ गया, हुज्जत उन पर क़ायम हो चुकी, उस वक़्त आपस की ज़िद बहस की बिना पर आपस में विवाद खड़ा

Maktab E Ashraf

किया। अगर क़ियामत का दिन हिसाब किताब, जज़ा व सज़ा के लिये मुक़र्रर शुदा न होता तो उनके हर बुरे अ़मल की सज़ा उन्हें यहीं इसी वक़्त मिल जाया करती।

फिर फ़रमाता है कि यह पिछले (बाद वाले) जो पहलों से किताबें पाये हुए हैं, ये सिर्फ़ तक़लीदी तौर पर मानते हैं, और ज़ाहिर है कि मुक़ल्लिद (आँख बन्द करके किसी की पैरवी करने वाले) का ईमान शक शुब्हे से ख़ाली नहीं होता। उन्हें ख़ुद यक़ीन नहीं, दलील व हुज्जत की बिना पर उनका ईमान नहीं, बल्कि ये अगलों के पैरोकार हैं जो हक़ के झुठलाने वाले थे।

सो आप उसी तरफ़ (उनको बराबर) बुलाते रहिए, और जिस तरह आपको हुक्म हुआ है (उस पर) अटल और क़ायम रहिए, और उनकी (बुरी) ख़्वाहिशों पर न चलिए। और आप कह दीजिए कि अल्लाह ने जितनी किताबें नाज़िल फ़रमाई हैं मैं सब पर ईमान लाता हूँ। और मुझको यह (भी) हुक्म हुआ है कि (अपने और) तुम्हारे दरमियान में इन्साफ़ रखूँ। अल्लाह हमारा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है। हमारे आमाल हमारे लिए और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए, हमारी-तुम्हारी कुछ बहस नहीं। अल्लाह हम सबको जमा करेगा और (इसमें शक ही नहीं कि) उसी के पास जाना है। (15)	فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۗ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۗ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۗ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۗ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝

हर एक अपने अ़मल का ख़ुद जवाबदेह है

इस आयत में एक लतीफ़ा (यानी एक बहुत बारीक नुक्ता) है जो क़ुरआने करीम की सिर्फ़ एक और आयत में पाया जाता है बाक़ी किसी और आयत में नहीं। वह यह कि इसमें दस कलिमे हैं जो सब मुस्तक़िल हैं। हर एक कलिमा अपनी जगह एक मुस्तक़िल हुक्म है। यही बात दूसरी आयत यानी आयतुल-कुर्सी में भी है।

1. पस पहला हुक्म तो यह होता है कि वही 'वही' तुझ पर नाज़िल की गयी है और वही 'वही' तुझसे पहले के तमाम अम्बिया पर आती रही है। और जो शरीअ़त तेरे लिये मुक़र्रर की गयी है वही तुझसे पहले तमाम अम्बिया-ए-किराम के लिये भी मुक़र्रर की गयी थी। तू तमाम लोगों को इसकी दावत दे। हर एक को इसी की तरफ़ बुला। और इसी के मनवाने और फैलाने की कोशिश में लगा रह।

2. ख़ुदा तआ़ला की इबादत व वह्दानियत (एक होने) पर तू ख़ुद भी जमा रह और अपने मानने वालों को भी उस पर जमा कर रख।

3. मुश्रिकों ने जो कुछ इख़्तिलाफ़ (विवाद) कर रखे हैं, जो झुठलाने और झूठ बोहतान बाँधने का उनका शेवा है, जो ग़ैरे-ख़ुदा की इबादत करना उनकी आ़दत है, ख़बरदार! तू हरगिज़ हरगिज़ उनकी ख़्वाहिशों में न आ जाना, उनकी एक भी न मानना।

4. खुले तौर पर बिना किसी लाग-लपेट के अपने इस अ़क़ीदे की तब्लीग़ कर कि ख़ुदा की नाज़िल की

हुई तमाम किताबों पर मेरा ईमान है। मेरा यह काम नहीं कि एक को मानूँ और दूसरी से इनकार करूँ। एक को लूँ और एक को न पकड़ूँ।

5. मैं तुम में वही अहकाम जारी करना चाहता हूँ जो ख़ुदा की तरफ़ से मेरे पास पहुँचाये गये हैं, और जो पूरी तरह अ़दल और इन्साफ़ पर आधारित हैं।

6. माबूदे बर्हक़ सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है। हमारा तुम्हारा माबूदे बर्हक़ वही है और वही सबका पालनहार है। अगरचे कोई अपनी ख़ुशी से उसके सामने न झुके लेकिन दर असल हर शख़्स बल्कि हर चीज़ उसके आगे झुकी हुई और सज्दे में पड़ी हुई है।

7. हमारे अ़मल हमारे साथ तुम्हारी करनी तुम्हें भरनी, हममें और तुममें कोई ताल्लुक़ नहीं। जैसे एक और आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है- अगर तुझे झुठलायें तो तू कह दे कि मेरे लिये मेरे आमाल हैं और तुम्हारे लिये तुम्हारे आमाल हैं, तुम मेरे आमाल से बरी और मैं तुम्हारे आमाल से बेज़ार।

8. हममें तुममें कोई लड़ाई और झगड़ा नहीं, किसी बहस-मुबाहसे की ज़रूरत नहीं।

हज़रत सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि यह हुक्म तो मक्का में था लेकिन मदीने में जिहाद के अहकाम उतरे, मुम्किन है ऐसा ही हो, क्योंकि यह आयत मक्की है और जिहाद की आयतें हिजरत के बाद की हैं।

9. क़ियामत के दिन अल्लाह हम सबको जमा करेगा। जैसे एक और आयत में है:

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا....... الخ.

यानी तू कह दे कि हमें हमारा रब जमा करेगा और वही फ़ैसले करने वाला और इल्म वाला है।

10. फिर फ़रमाता है कि लौटना ख़ुदा ही की तरफ़ है।

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِى اللّٰهِ مِنْ ۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ○ اَللّٰهُ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ○ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِى السَّاعَةِ لَفِىْ ضَلٰلٍ ۢ بَعِيْدٍ ○

और जो लोग अल्लाह तआ़ला (के दीन) के बारे में (मुसलमानों से) झगड़े निकालते हैं, इसके बाद कि वह मान लिया गया, उन लोगों की हुज्जत उनके रब के नज़दीक बातिल है, और उन पर ग़ज़ब (पड़ने वाला) है, और उनके लिए (क़ियामत में) सख़्त अ़ज़ाब (होने वाला) है। (16) अल्लाह ही है जिसने (इस) किताब (यानी क़ुरआन) को और इन्साफ़ को नाज़िल फ़रमाया। और आपको (इसकी) क्या ख़बर, अ़जब नहीं कि क़ियामत क़रीब हो। (17) (मगर) जो लोग उसका यक़ीन नहीं रखते उसका तक़ाज़ा करते हैं, और जो लोग यक़ीन रखने वाले हैं वे उससे डरते हैं और एतिक़ाद रखते हैं कि वह बर्हक़ है। याद रखो कि जो लोग क़ियामत के बारे में झगड़ते हैं, बड़ी दूर की गुमराही में (मुब्तला) हैं। (18)

Maktab E Ashraf

बेकार की और बिना दलील की बहसें

अल्लाह तबारक व तआला उन लोगों को डराता है जो मुसलमानों से फ़ुज़ूल की हुज्जतें किया करते हैं, उन्हें हिदायत के रास्ते से बहकाना चाहते हैं और दीने ख़ुदा में झगड़े निकालते हैं। उनकी हुज्जत बातिल है, उन पर रब ग़ज़बनाक है और उन्हें क़ियामत के रोज़ सख़्त नाक़ाबिले बरदाश्त सज़ा दी जायेगी। उनकी उम्मीद और तमन्ना पूरी न होगी यानी मुसलमानों में फिर दोबारा जाहिलीयत की आ़दतें और तरीक़े आने मुहाल हैं। ठीक इसी तरह यहूद व ईसाई भी हैं। अल्लाह तआ़ला यह जादू नहीं चलने देगा, नामुम्किन है कि मुसलमान उनके मौजूदा दीन को अपने सच्चे अच्छे असली दीन पर तरजीह दें, और उस दीन को लें जिसमें झूठ मिला हुआ है, रद्दोबदल किया हुआ है। फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला ने हक़ के साथ किताब नाज़िल फ़रमाई और अ़दल व इन्साफ़ उतारा, जैसे फ़रमाने बारी है:

لَقَدْ اَرْسَلْنَا بِالْبَيِّنٰتِ..................الخ

यानी हमने अपने रसूलों को ज़ाहिर (खुली और स्पष्ट) दलीलों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और मीज़ान उतारी, ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम हो जायें। एक और आयत में है:

وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا.......... الخ.

यानी आसमान को उसी ने ऊँचा किया और तराज़ू को उसी ने रखा, ताकि तुम तौलने में कमी-बेशी न करो और इन्साफ़ के साथ वज़न को ठीक रखो और तौल को मत घटाओ।

फिर फ़रमाता है कि तू नहीं जान सकता कि क़ियामत बिल्कुल क़रीब है, इसमें ख़ौफ़ और लालच दोनों ही हैं, और इसमें दुनिया से बे-रग़बत करना भी मक़सूद है।

फिर फ़रमाया कि उसके मुन्किर (यानी क़ियामत का इनकार करने वाले) तो जल्दी मचा रहे हैं कि क़ियामत क्यों नहीं आती? और कहते हैं कि अगर सच्चे हो तो क़ियामत क़ायम कर दो। क्योंकि उनके नज़दीक क़ियामत का होना मुहाल है, लेकिन उनके विपरीत ईमान वाले उससे काँप रहे हैं, क्योंकि उनका अ़क़ीदा है कि बदले के दिन का आना निश्चित और ज़रूरी है। ये उससे डरकर वे आमाल बजा ला रहे हैं जो उन्हें उस रोज़ काम दें।

एक बिल्कुल सही हदीस में है जो तक़रीबन तवातुर के दर्जे को पहुँची हुई है कि एक शख़्स ने बुलन्द आवाज़ से रसूले ख़ुदा सल्ल. से मालूम किया- या रसूलल्लाह! क़ियामत कब होगी? यह वाक़िआ़ सफ़र का है, वह हज़रत से कुछ दूर थे। आपने फ़रमाया हाँ वह यक़ीनन आने वाली है, तू बता कि तूने उसके लिये क्या तैयारी कर रखी है? उसने कहा ख़ुदा और उसके रसूल की मुहब्बत। आपने फ़रमाया तू उनके साथ होगा जिनसे तू मुहब्बत रखता है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि हर शख़्स उसके साथ होगा जिससे वह मुहब्बत रखता था। यह हदीस यक़ीनन मुतवातिर है (यानी इसकी सनद निरंतर है)। ग़र्ज़ कि हुज़ूर सल्ल. ने इस सवाल के जवाब में क़ियामत के वक़्त को मुक़र्रर नहीं किया बल्कि साईल (पूछने वाले) को उस दिन की तैयारी करने को फ़रमाया। पस क़ियामत के आने के वक़्त का इल्म सिवाय ख़ुदा के किसी और को नहीं।

फिर फ़रमाता है कि क़ियामत के आने में जो लोग झगड़ रहे हैं और उसके मुन्किर हैं, उसे मुहाल

Maktab e Ashraf

जानते हैं, वह कोरे जाहिल हैं। सच्ची समझ सही अ़क़्ल से दूर पड़े हुए हैं, सीधे रास्ते से भटक कर बहुत दूर निकल गये हैं। ताज्जुब है कि ज़मीन व आसमान का पहली बार में बनाने और पैदा करने वाला ख़ुदा को मानें और इनसान को मार डालने के बाद दोबारा ज़िन्दा कर देने पर उसको क़ादिर न जानें, जिसने बग़ैर किसी नमूने के और बग़ैर किसी जुज़ (अंश और हिस्से) के पहली बार में उसे पैदा कर दिया तो दोबारा जब कि उसके अजज़ा (अंग और हिस्से) भी किसी न किसी सूरत में कुछ न कुछ मौजूद हैं, उसे पैदा करना उस पर क्या मुश्किल है? बल्कि अ़क़्ले सलीम भी तस्लीम करती है कि अब तो और भी आसान है।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ
وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ع ٢
حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ
كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا
لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝ اَمْ لَهُمْ
شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ
يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ
لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ
مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۗ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ
الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ
ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝

अल्लाह तआ़ला (दुनिया में) अपने बन्दों पर मेहरबान है, जिसको (जिस क़द्र) चाहता है रोज़ी देता है। और वह क़ुव्वत वाला (और) ज़बरदस्त है। (19) जो शख़्स आख़िरत की खेती का तालिब हो, हम उसको उसकी खेती में तरक़्क़ी देंगे, और जो दुनिया की खेती का तालिब हो तो हम उसको कुछ दुनिया (अगर चाहें) दे देंगे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं। (20) क्या (ख़ुदाई में) उनके कुछ शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुक़र्रर कर दिया है जिसकी ख़ुदा ने इजाज़त नहीं दी, और अगर (ख़ुदा की तरफ़ से) एक फ़ैसले वाली बात (ठहरी हुई) न होती तो (दुनिया ही में) उनका फ़ैसला हो चुका होता, और (आख़िरत में) उन ज़ालिमों को ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। (21) (उस दिन) आप उन ज़ालिमों को देखेंगे कि अपने आमाल (के वबाल) से डर रहे होंगे, और वह (वबाल) उन पर (ज़रूर) पड़कर रहेगा। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए वे जन्नतों के बाग़ों में (दाख़िल) होंगे। वे जिस चीज़ को चाहेंगे उनके रब के पास उनको मिलेगी, यही बड़ा इनाम है। (22)

दुनिया और आख़िरत

अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि वह अपने बन्दों पर बड़ा मेहरबान है, एक को दूसरे के हाथ से रोज़ी पहुँचा रहा है। एक भी नहीं जिसे अल्लाह भूल जाये, नेक बद हर एक उसके यहाँ से रोज़ी पाने वाला है। जैसे एक जगह फ़रमाया:

Maktaba E Ashraf

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا....... الخ.

ज़मीन पर चलने वाले तमाम जानदारों की रोज़ियों का ज़िम्मेदार अल्लाह तआ़ला है, वह हर एक की रहने सहने की जगह को अच्छी तरह जानता है और सब कुछ लौहे-महफ़ूज़ में लिखा हुआ है। वह जिसके लिये चाहता है कुशादा (यानी ख़ूब ज़्यादा) रोज़ी मुक़र्रर करता है। वह ताक़तवर ग़ालिब है, जिसे कोई चीज़ मग़लूब नहीं कर सकती।

फिर फ़रमाता है कि जो आख़िरत के आमाल की तरफ़ तवज्जोह करता है हम ख़ुद उसकी मदद करते हैं, उसे क़ुव्वत व ताक़त देते हैं, उसकी नेकियाँ बढ़ाते रहते हैं, किसी नेकी को दस गुनी कर देते हैं, किसी को सात सौ गुनी, किसी को इससे भी ज़्यादा। ग़र्ज़ कि आख़िरत की तमन्ना जिस दिल में होती है उस शख़्स को नेक आमाल की तौफ़ीक़ ख़ुदा की तरफ़ से अ़ता फ़रमाई जाती है। और जिसकी तमाम कोशिश दुनिया हासिल करने की होती है आख़िरत की तरफ़ उसकी तवज्जोह नहीं होती तो वह दोनों जहान में मेहरूम रहता है। दुनिया का मिलना ख़ुदा के इरादे पर मौक़ूफ़ है, मुम्किन है वह हज़ारों जतन करे और दुनिया से मेहरूम रह जाये, और नीयत सही न होने के कारण आख़िरत तो बरबाद कर ही चुका था दुनिया भी न मिली तो दोनों जहान से गया गुज़रा। और अगर थोड़ी सी दुनिया मिल भी गयी तो क्या। चुनाँचे दूसरी आयत में इस मज़मून को एक क़ैद के साथ बयान किया गया है। फ़रमान है:

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ......... الخ.

यानी जो शख़्स दुनिया का तालिब होगा ऐसों में से हम जिसे चाहें और जितना चाहें दे देंगे, फिर उसके लिये जहन्नम तजवीज़ करेंगे, जिसमें वह बदहाल और धुतकारा हुआ होकर दाख़िल होगा। और जो आख़िरत तलब करेगा और उसके लिये जो कोशिश करनी चाहिये करेगा, और होगा भी वह ईमान वाला तो नामुम्किन है कि ऐसों की कोशिश की क़द्रदानी न की जाये। दुनियावी बख़्शिश व अ़ता तो आ़म है, इससे इनकी उनकी सबकी इमदाद हम किया करते हैं और तेरे रब की यह दुनियावी अ़ता किसी पर बन्द नहीं, ख़ुद देख लो कि हमने एक को दूसरे पर किस तरह फ़ौक़ियत (बरतरी) दे रखी है, यक़ीन मान लो कि दर्जों के एतिबार से भी और फ़ज़ीलत के लिहाज़ से भी आख़िरत बहुत बड़ी है।

हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि इस उम्मत को बरतरी और बुलन्दी की मदद और सल्तनत की ख़ुशख़बरी हो। इनमें से जो शख़्स दीनी अ़मल दुनिया के लिये करेगा उसे आख़िरत में कोई हिस्सा न मिलेगा। फिर फ़रमाता है कि ये मुश्रिक लोग दीने ख़ुदा की तो पैरवी करते नहीं बल्कि जिन्न, शैतानों और इनसानों को इन्होंने अपना बड़ा समझ रखा है। ये जो अहकाम उन्हें बताते हैं ये उन्हीं अहकाम के मजमूए को दीन समझते हैं। हलाल व हराम अपने इन बड़ों के कहने पर समझते हैं, इबादतों के तरीक़े उन्हीं के अपने गढ़े हुए हैं, जो ये बरत रहे हैं।

इसी तरह माल के अहकाम भी अपनी तरफ़ से गढ़ लिये और तैयार कर लिये हैं, जिन्हें शरई (यानी मज़हबी क़ानून के मुताबिक़) समझ बैठे हैं। चुनाँचे जाहिलीयत (इस्लाम आने से पहले के ज़माने) में बाज़ जानवरों को उन्होंने अपनी तरफ़ से हराम कर लिया था, जैसे वह जानवर जिसका कान चीरकर अपने झूठे और बातिल माबूदों के नाम पर छोड़ देते थे, और दाग़ देकर सांड छोड़ देते थे, और मादा बच्चे को हमल

की सूरत में ही उनके नाम कर देते थे, जिस ऊँट से दस बच्चे हासिल कर लें उसे उनके नाम पर छोड़ देते थे। फिर उन्हें उनकी ताज़ीम (सम्मान व आस्था) के ख़्याल से अपने ऊपर हराम समझते थे।

इसी तरह बाज़ चीज़ों को हलाल कर लिया था जैसे मुर्दार और ख़ून और जुआ। सही हदीस में है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि मैंने अ़मर बिन लुहई बिन क़मआ़ को देखा कि वह जहन्नम में अपनी आँते घसीट रहा था। यही वह शख़्स है जिसने सबसे पहले ग़ैरुल्लाह के नाम पर जानवरों को छोड़ना बतलाया। यह शख़्स ख़ुज़ाआ़ के बादशाहों में से था। इसलिये सबसे पहले इन कामों की ईजाद की थी, जो जाहिलीयत के अ़रबों में राईज थे। इसी ने क़ुरैश वालों को बुत-परस्ती में डाल दिया। ख़ुदा इस पर अपनी लानत नाज़िल फ़रमाये।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अगर मेरी यह बात पहले ही से मेरे यहाँ तयशुदा न होती कि मैं गुनाहगारों को क़ियामत के आने तक ढील दूँगा तो मैं आज ही काफ़िरों को अपने अ़ज़ाब में धर घसीटता। अब इन्हें क़ियामत के दिन जहन्नम के दुखदायी और बड़े सख़्त अ़ज़ाब होंगे। मैदाने क़ियामत में तुम देखोगे कि ये ज़ालिम लोग अपने करतूतों से डरते और कपकपाते होंगे, मारे ख़ौफ़ के थर्रा रहे होंगे लेकिन आज कोई चीज़ न होगी जो उन्हें बचा सके। आज तो ये अपने आमाल का मज़ा चखकर ही रहेंगे।

उधर ईमान वाले नेकोकार लोगों का हाल यह होगा कि वे अमन चैन से जन्नतों के बाग़ों में मज़े कर रहे होंगे। इनकी (यानी दोज़ख़ वालों की) ज़िल्लत व रुस्वाई, डर ख़ौफ़, उनकी (यानी जन्नत वालों की) इज़्ज़त बड़ाई, अमन चैन को ख़्याल कर लो। ये तरह-तरह की मुसीबतों तकलीफ़ों में होंगे और वे तरह-तरह की राहतों और लज़्ज़तों में होंगे, उम्दा बेहतरीन ग़िज़ायें (खाने की चीज़ें), बेहतरीन लिबास, बेहतरीन मकानात, बेहतरीन बीवियाँ और बेहतरीन चीज़ें व सामान उन्हें मिले हुए होंगे। जिनका देखना सुनना तो कहाँ किसी इनसान के ज़ेहन और तसव्वुर (कल्पना) में कभी ये चीज़ें नहीं आ सकतीं।

हज़रत अबू तैबा फ़रमाते हैं कि जन्नतियों के सरों पर बादल आयेगा और उन्हें आवाज़ होगी कि बतलाओ किस चीज़ का बरसना चाहते हो? पस जो लोग जिस चीज़ का बरसना चाहेंगे वही चीज़ उन पर उस बादल से बरसेगी, यहाँ तक कि कहेंगे कि हम पर भरे हुए सीने वाली हम-उम्र औरतें बरसाई जायें, चुनाँचे वही बरसेंगी। इसी लिये फ़रमाया कि फ़ज़्ले कबीर यानी ज़बरदस्त कामयाबी और पूरी नेमत यही है।

यही है जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह तआ़ला अपने उन बन्दों को दे रहा है जो ईमान लाए और अच्छे अ़मल किए, आप (उनसे) यूँ कहिए कि मैं तुमसे कुछ मतलब नहीं चाहता सिवाय रिश्तेदारी की मुहब्बत के। और जो शख़्स कोई नेकी करेगा हम उसमें और ज़्यादा ख़ूबी कर देंगे। बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला, बड़ा क़द्रदान है। (23) क्या ये लोग यूँ कहते हैं	ذٰلِكَ الَّذِىْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۗ قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ۗ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝ اَمْ

Maktab E Ashraf

يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ فَإِن يَشَإِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۗ وَيَمْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ○	कि उन्होंने ख़ुदा पर झूठ बोहतान बाँध रखा है? सो ख़ुदा अगर चाहे तो आपके दिल पर बन्द लगा दे, और अल्लाह तआला बातिल को मिटाया करता है और हक़ को अपने अहकाम से साबित किया करता है। वह दिलों की बातें जानता है। (24)

हक़ व बातिल का अन्जाम

ऊपर की आयतों में जन्नत की नेमतों का ज़िक्र करके बयान फ़रमा रहा है कि ईमान वाले नेकोकार बन्दों को उसकी बशारत (ख़ुशख़बरी) हो। फिर अपने नबी से फ़रमाता है कि क़ुरैश के इन मुश्रिकों से कह दो कि इस तब्लीग़ पर और इस तुम्हारी ख़ैरख़्वाही (भलाई चाहने) पर मैं तुमसे कुछ तलब तो नहीं कर रहा। तुम्हारी भलाई तो एक तरफ़ रही तुम अगर अपनी बुराई छोड़ दो और मुझे रब की रिसालत पहुँचाने दो और रिश्तेदारी के रिश्ते को सामने रखकर मुझको सताने और तकलीफ़ पहुँचाने से रुक जाओ तो यही बहुत है।

सही बुख़ारी में है कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इस आयत की तफ़सीर मालूम की गयी तो हज़रत सईद बिन जुबैर ने कहा- इससे मुराद आले मुहम्मद की क़राबत (रिश्तेदारी और ख़ानदानी ताल्लुक़) है। यह सुनकर आपने फ़रमाया तुमने बहुत जल्दी से काम लिया। सुनो क़ुरैश के जिस क़द्र क़बीले थे सब के साथ हुज़ूर सल्ल. की रिश्तेदारी थी, तो मतलब यह है कि तुम उस रिश्तेदारी का लिहाज़ रखो जो मुझमें और तुममें है। हज़रत मुजाहिद रह., हज़रत इक्रिमा रह., हज़रत क़तादा रह., हज़रत सुद्दी रह., हज़रत अबू मालिक रह. और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान रह. वग़ैरह भी इस आयते करीमा की यही तफ़सीर करते हैं।

तबरानी में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने क़ुरैश से कहा कि मैं तुमसे इसकी कोई उजरत (मुआवज़ा और मेहनताना) तलब नहीं करता, मगर यह कि तुम उस रिश्तेदारी का ख़्याल रखो जो मुझमें और तुममें है। इस मेरी क़राबत (रिश्तेदारी और ताल्लुक़) का हक़ जो तुम पर है वह अदा करो। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मैंने तुम्हें दलीलें दी हैं, जिस हिदायत का रास्ता बतलाया है उस पर कोई अज्र (बदला) तुमसे नहीं चाहता, सिवाय इसके कि तुम अल्लाह को चाहने लगो और उसकी इताअ़त की वजह से उससे क़ुर्ब और नज़दीकी हासिल कर लो।

हज़रत हसन बसरी रह. से भी तफ़सीर मन्क़ूल है, तो यह दूसरा क़ौल हुआ। पहला क़ौल हुज़ूर सल्ल. का अपनी रिश्तेदारी को याद दिलाना। दूसरा क़ौल आपकी यह तलब कि लोग ख़ुदा की नज़दीकी हासिल कर लें। तीसरा क़ौल जो हज़रत सईद बिन जुबैर रह. की रिवायत से गुज़रा कि तुम मेरी क़राबत के साथ एहसान और नेकी करो। अबुद्दैलम का बयान है कि जब हज़रत अ़ली बिन हुसैन रज़ि. को क़ैद कर लिया गया और दमिश्क़ के बालाख़ाने में रखा गया तो एक शामी ने कहा- ख़ुदा का शुक्र है कि उसने तुम्हें क़त्ल कराया, तुम्हारा नास करा दिया और फ़ितने की तरक़्क़ी को रोक दिया। यह सुनकर आपने फ़रमाया- क्या तूने क़ुरआन भी पढ़ा है? उसने कहा क्यों नहीं! फ़रमाया उसमें "हा-मीम" वाली सूरतें भी पढ़ी हैं? उसने कहा वाह सारा क़ुरआन पढ़ लिया और "हा-मीम" वाली सूरतें नहीं पढ़ीं? आपने फ़रमाया फिर क्या तूने

Maktaba E Ashraf

उनमें इस आयत की तिलावत नहीं कीः

قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى.

यानी मैं तुमसे कोई अज्र तलब नहीं करता मगर क़राबत (रिश्तेदारी) की मुहब्बत।

उसने कहा फिर क्या तुम वह हो? आपने फ़रमाया हाँ! हज़रत अ़मर बिन शुऐब रज़ि. से जब इस आयत की तफ़सीर पूछी गयी तो आपने फ़रमाया- इससे रसूलुल्लाह सल्ल. की रिश्तेदारी मुराद है। इब्ने जरीर में है कि अन्सार सहाबा ने अपनी इस्लामी ख़िदमतें गिनवायीं, गोया फ़ख़्र के तौर पर, इस पर इब्ने अ़ब्बास रज़ि. या हज़रत अ़ब्बास रज़ि. ने फ़रमाया- हम तुमसे अफ़ज़ल हैं। जब यह ख़बर हुज़ूरे पाक सल्ल. को मिली तो आप उनकी मज्लिस में आये और फ़रमाया- अन्सारियो! क्या तुम ज़िल्लत (पस्ती) की हालत में न थे? फिर अल्लाह ने तुम्हें मेरी वजह से इज़्ज़त बख़्शी। उन्होंने कहा हाँ बेशक आपने सच फ़रमाया। फिर फ़रमाया- अब तुम मुझे क्यों नहीं कहते? उन्होंने कहा क्या कहें? फ़रमाया क्यों नहीं कहते कि क्या तेरी क़ौम ने तुझे निकाल नहीं दिया था? उस वक़्त हमने तुझे पनाह दी। क्या उन्होंने तुझे झुठलाया न था? उस वक़्त हमने तेरी तस्दीक़ की? क्या उन्होंने तुझे पस्त करना नहीं चाहा था उस वक़्त हमने तेरी मदद की? इस तरह की आपने और भी बहुत सी बातें कहीं, यहाँ तक कि अन्सार अपने घुटनों पर झुक पड़े (यानी अपनी ग़लती महसूस करते हुए शर्मिन्दगी से सर झुका लिया) और उन्होंने कहा हुज़ूर! हमारी औलाद और जो कुछ हमारे पास है सब उसका और उसके रसूल के लिये है। फिर यह आयतः

قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا.........الخ.

नाज़िल हुई (यानी जिस आयत की तफ़सीर बयान हो रही है)।

इब्ने अबी हातिम में भी यह रिवायत इसी के क़रीब ज़ईफ़ सनद से मौजूद है। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में यह हदीस है। उसमें है कि यह वाक़िआ़ हुनैन की ग़नीमत (जंग में हाथ आये माल) की तक़सीम के वक़्त पेश आया था और उसमें आयत के उतरने का भी ज़िक्र नहीं, और इस आयत को मदीने में नाज़िल हुई मानने में भी किसी क़द्र ताम्मुल (विचार का विषय) है। इसलिये कि यह सूरत मक्की है। फिर जो वाक़िआ़ हदीस में मज़कूर है इस वाक़िए में और इस आयत में कुछ ऐसी ज़्यादा मुनासबत (जोड़ और ताल्लुक़) भी नहीं। एक रिवायत में है कि लोगों ने पूछा कि इस आयत से कौन लोग मुराद हैं जिनकी मुहब्बत रखने का हमें हुक्म हुआ है? आपने फ़रमाया फ़ातिमा और उनकी औलाद। लेकिन इसकी सनद ज़ईफ़ (कमज़ोर) है और इसका रावी मुब्हम (अपरिचित) है जो मारूफ़ नहीं। फिर उसका उस्ताद एक शिया है जो मोतबर होने के दर्जे से बिल्कुल गिरा हुआ है। उसका नाम हुसैन अश्क़र है। इस जैसी हदीस भला उनकी रिवायत से कैसे मान ली जायेगी? (यानी शियाओं से अहले बैत की फ़ज़ीलत में जबकि उसकी कोई और शहादत न हो, इसलिये एतिबार नहीं रखती क्योंकि इन लोगों ने अहले-बैत के फ़ज़ाईल में बहुत सी रिवायतें ख़ुद गढ़ ली हैं)।

फिर मदीने में आयत का नाज़िल होना ही दूर की बात है। हक़ यह है कि यह आयत मक्की है और मक्का शरीफ़ में हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का निकाह ही नहीं हुआ था, औलाद कैसी? आपका निकाह तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ जंगे बदर के बाद सन् 2 हिजरी में हुआ। पस सही तफ़सीर इसकी वही है जो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने की है, जो बुख़ारी शरीफ़ के हवाले से पहले गुज़र चुकी है।

Muftah E Asraf

हम अहले-बैत के साथ ख़ैरख़्वाही करने के मुन्किर नहीं, हम मानते हैं कि उनके साथ एहसान व सुलूक और उनका इकराम व एहतिराम ज़रूरी चीज़ है। इस दुनिया में उनसे ज़्यादा पाक और साफ़ सुथरा घराना और कोई नहीं। हसब व नसब (ख़ानदान व नस्ल) में और फ़ख़्र व सम्मान में बिला-शक ये सबसे आला हैं। ख़ासकर उनमें से वे जो हुज़ूरे पाक की सुन्नत की इत्तिबा करने वाले हों, जैसा कि पहले बुज़ुर्गों की रविश और चलन था। यानी हज़रत अ़ब्बास और आले अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम, और हज़रत अ़ली और आले अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुम।

रसूले ख़ुदा सल्ल. ने अपने ख़ुतबे में फ़रमाया है- मैं तुममें दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ 'अल्लाह की किताब' और 'मेरी औलाद' और ये दोनों अलग न होंगे जब तक कि हौज़ पर मेरे पास न आ जायें। मुस्नद अहमद में है कि एक मर्तबा हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्ल. से शिकायत की कि क़ुरैशी जब आपस में मिलते हैं तो बड़ी अच्छी तरह और हंसी-ख़ुशी से मिलते हैं, लेकिन हमसे हंसी ख़ुशी के साथ नहीं मिलते। यह सुनकर आप बहुत रन्जीदा हुए और फ़रमाने लगे- ख़ुदा की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, किसी के दिल में ईमान दाख़िल नहीं हो सकता जब तक वह ख़ुदा के लिये और उसके रसूल की वजह से तुमसे मुहब्बत न रखे।

एक और रिवायत में है कि हज़रत अ़ब्बास रज़ि. ने कहा- क़ुरैश बातें करते होते हैं तो हमें देखकर चुप हो जाते हैं। इसे सुनकर गुस्से की वजह से आपकी पेशानी पर बल पड़ गये और फ़रमाया- ख़ुदा की क़सम! किसी मुसलमान के दिल में ईमान जगह नहीं पकड़ सकेगा जब तक कि वह अल्लाह के लिये और मेरी क़राबतदारी (रिश्तेदारी और नस्ली ताल्लुक़) की वजह से मुहब्बत न रखे। सही बुख़ारी में है कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने फ़रमाया- लोगो! हुज़ूर का लिहाज़ हुज़ूर के अहले-बैत में रखो। एक और सही रिवायत में है कि आपने हज़रत अ़ली रज़ि. से फ़रमाया- ख़ुदा की क़सम! रसूलुल्लाह सल्ल. के क़राबतदारों (रिश्तेदारों) से सुलूक करना मुझे अपने क़राबतदारों के सुलूक से भी प्यारा है। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने हज़रत अ़ब्बास रज़ि. से फ़रमाया- वल्लाह तुम्हारा इस्लाम लाना मुझे अपने वालिद ख़त्ताब के इस्लाम लाने से भी ज़्यादा अच्छा लगा, इसलिये कि तुम्हारा इस्लाम हुज़ूर को ख़त्ताब के इस्लाम से ज़्यादा महबूब था।

पस इस्लाम के इन दो चमकते सितारों का मुसलमानों के इन दोनों सय्यिदों का जो मामला आले रसूल और पैग़म्बर सल्ल. के रिश्तेदारों के साथ था वही इ़ज़्ज़त व मुहब्बत का मामला मुसलमानों को आपके अहले-बैत और क़राबतदारों से रखना चाहिये, क्योंकि नबियों और रसूलों के बाद तमाम दुनिया से अफ़ज़ल यही दोनों बुज़ुर्ग ख़लीफ़ा-ए-रसूल थे। पस मुसलमानों को उनकी पैरवी करके हुज़ूर सल्ल. के अहले-बैत और कुनबे-क़बीले के साथ अच्छे सुलूक से पेश आना चाहिये। अल्लाह तआ़ला उन दोनों ख़लीफ़ाओं से और अहले-बैत से और हुज़ूर के तमाम सहाबा से ख़ुश हो जाये और सबको अपनी रज़ामन्दी में ले ले।

सही मुस्लिम वग़ैरह की हदीस में है कि बरीद बिन हय्यान, हुसैन बिन मैसरा और उमर बिन मुस्लिम हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ि. के पास गये। हज़रत हुसैन ने कहा- हज़रत! आपको तो बड़ी-बड़ी ख़ैर व बरकत मिल गयी। आपने अल्लाह के नबी को अपनी आँखों से देखा, आपने अल्लाह के पैग़म्बर की बातें अपने कानों से सुनीं, आपके साथ जिहाद किये, आपके साथ नमाज़ें पढ़ीं, तो यह है कि बड़ी-बड़ी फ़ज़ीलतें आपने समेट लीं। अच्छा अब कोई हदीस हमें तो सुनाईये। इस पर हज़रत ज़ैद रज़ि. ने फ़रमाया- मेरे भतीजे! सुनो मेरी अब उम्र बड़ी हो गयी, हुज़ूर सल्ल. के इन्तिक़ाल को अ़रसा (यानी लम्बा समय) गुज़र चुका। बाज़ चीज़ें ज़ेहन में महफ़ूज़ भी नहीं रहीं। अब तो यही रखो कि जो कुछ ख़ुद अपनी तरफ़ से सुना

दूँ उसे मान लिया करो, वरना मुझे तकलीफ़ न दो कि तकल्लुफ़ से बयान करना पड़े। फिर आपने फ़रमाया- मक्के और मदीने के बीच पानी की जगह के पास जिसे खुम कहा जाता था, खड़े होकर अल्लाह के रसूल ने हमें एक खुतबा सुनाया। अल्लाह की तारीफ़ व सना की, वअ़ज़ व नसीहत की, फिर फ़रमाया- लोगो! मैं एक इनसान हूँ, क्या अ़जब कि अभी-अभी मेरे पास अल्लाह का क़ासिद पहुँच जाये और मैं उसकी मान लूँ। (यानी हो सकता है कि अल्लाह की तरफ़ से अपने दरबार में हाज़िरी का पैग़ाम आ जाये और मैं उसको मन्ज़ूर कर लूँ)।

सुनो! मैं तुममें दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ- एक तो अल्लाह की किताब जिसमें हिदायत का नूर है। तुम खुदा की किताब को मज़बूत पकड़ लो और इसे मज़बूती से थामे रहो। पस इसकी बड़ी रग़बत (तवज्जोह) दिलाई और बहुत कुछ ताकीदें कीं। फिर फ़रमाया मेरे अहले-बैत (घर वाले), मैं तुम्हें अपने अहले-बैत के बारे में खुदा को याद दिलाता हूँ। यह सुनकर हुसैन रह. ने हज़रत ज़ैद रज़ि. से पूछा- ऐ ज़ैद! आपके अहले बैत कौन हैं? क्या आपकी बीवियाँ अहले-बैत में दाख़िल नहीं? फ़रमाया बेशक आपकी बीवियाँ भी आपके अहले-बैत में हैं, लेकिन आपके अहले-बैत वे हैं जिन पर आपके बाद सदक़ा हराम है। पूछा वे कौन हैं? फ़रमाया- आले अ़ली, आले अ़क़ील, आले जाफ़र, आले अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम। पूछा क्या इन सब पर सदक़ा हराम है? फ़रमाया हाँ।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है, हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मैं तुममें ऐसी चीज़ छोड़े जा रहा हूँ कि अगर तुम उसे मज़बूत थामे रहे तो बहकोगे नहीं। एक दूसरी से ज़्यादा अ़ज़मत वाली है। अल्लाह की किताब जो खुदा की तरफ़ से एक लटकाई हुई रस्सी है, जो आसमान से ज़मीन तक आयी है। और दूसरी चीज़ मेरे अहले-बैत हैं। और ये दोनों अलग न होंगे यहाँ तक कि दोनों मेरे पास हौज़े कौसर पर आयें। पस देख लो कि मेरे बाद किस तरह उनमें मेरी जानशीनी (बाद में मामला) करते हो। इमाम साहिब फ़रमाते हैं कि यह हदीस हसन ग़रीब है और सिर्फ़ तिर्मिज़ी ही में यह रिवायत है।

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. की रिवायत से तिर्मिज़ी में है कि अ़रफ़े वाले दिन रसूले खुदा सल्ल. ने अपनी ऊँटनी पर सवार होकर जिसे क़ुसवा कहा जाता था, खुतबा दिया, जिसमें फ़रमाया- लोगों मैं तुममें ऐसी चीज़ छोड़े जा रहा हूँ कि अगर तुम उसे लिये रहे तो हरगिज़ गुमराह नहीं होओगे। किताबुल्लाह और मेरी आल अहले-बैत। तिर्मिज़ी की एक और रिवायत में है कि खुदा की नेमतों को मद्देनज़र रखकर तुम लोग अल्लाह से मुहब्बत रखो और अल्लाह की मुहब्बत की वजह से मुझसे मुहब्बत रखो, और मेरी मुहब्बत की वजह से मेरे अहले-बैत से मुहब्बत रखो। यह हदीस और ऊपर की हदीस हसन ग़रीब है। इस मज़मून की और भी हदीसें हमने इस आयत के तहत (यानी तफ़सीर में) बयान की हैं:

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ........ الخ.

(सूरः अहज़ाब आयत 33) यहाँ उनके दोहराने की ज़रूरत नहीं।

एक ज़ईफ़ (कमज़ोर) हदीस मुस्नद अबू यअ़ला में है कि हज़रत अबूज़र रज़ि. ने बैतुल्लाह के दरवाज़े का कुंडा थामे हुए फ़रमाया- लोगो! जो मुझे जानते हैं वे तो जानते ही हैं, जो नहीं पहचानते हैं अब पहचान लें कि मेरा नाम अबूज़र है। सुनो मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि तुममें मेरे अहले-बैत की मिसाल हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कश्ती की तरह है। उसमें जो चला गया उसने निजात पा ली, और जो उसमें दाख़िल न हुआ हलाक हुआ।

Maktab-E-Ashraf

फिर फ़रमाता है कि जो नेक अ़मल करे हम उसका सवाब और बढ़ा देते हैं। जैसे एक दूसरी आयत में फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला एक ज़र्रे के बराबर ज़ुल्म नहीं करता, अगर नेकी हो तो और बढ़ा देता है और अपने पास से अज्रे अ़ज़ीम इनायत फ़रमाता है। बाज़ पुराने बुज़ुर्गों का क़ौल है कि नेकी का सवाब उसके बाद नेकी है और बुराई का बदला उसके बाद बुराई है। फिर फ़रमान हुआ कि ख़ुदा गुनाहों का बख़्शने वाला और नेकियों की क़द्रदानी करने वाला है। उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर देता है।

फिर फ़रमाता है कि ये जाहिल काफ़िर जो कहते हैं कि क़ुरआन तूने गढ़ लिया है और अल्लाह के नाम इल्ज़ाम लगा दिया है। अगर ऐसा होता (जैसा कि ये काफ़िर कहते हैं) तो अल्लाह तेरे दिल पर मोहर लगा देता और तुझे कुछ भी याद न रहता। जैसे एक जगह फ़रमान है:

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا......... الخ.

यानी अगर रसूल हमारे ज़िम्मे कुछ बातें लगा देते तो हम उनका दाहिना हाथ पकड़ कर उनके दिल की रग काट डालते और तुममें से कोई उन्हें इस सज़ा से न बचा सकता।

यानी यह अगर हमारे कलाम में कुछ भी ज़्यादती करते तो हम उनसे ऐसा इन्तिक़ाम लेते कि दुनिया की कोई हस्ती इन्हें न बचा सकती। अल्लाह तआ़ला हक़ को वाज़ेह और स्पष्ट कर देता है। अपने कलिमात से यानी दलाईल बयान फ़रमाकर हुज्जत पेश करके वह ख़ुद दाना-बीना है। दिलों के राज़, सीनों के भेद उस पर खुले हुए हैं।

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُوا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ط وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ط اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌ ۢ بَصِيْرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ط وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ۝

और वह ऐसा (रहम करने वाला) है कि अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है, और वह तमाम (गुज़रे हुए) गुनाह माफ़ फ़रमा देता है। और जो कुछ तुम करते हो वह उस (सब) को जानता है। (25) और उन लोगों की इबादत क़बूल करता है जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अ़मल किए, और उनको अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा (सवाब) देता है। और जो लोग कुफ़्र कर रहे हैं उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है। (26) और अगर अल्लाह तआ़ला अपने सब बन्दों के लिए रोज़ी कुशादा कर देता तो वे दुनिया में शरारत करने लगते, लेकिन जितना रिज़्क़ चाहता है (मुनासिब) अन्दाज से (हर एक के लिए) उतारता है, वह अपने बन्दों (की मस्लेहतों) को जानने वाला (और उनका हाल) देखने वाला है। (27) और वह ऐसा है जो लोगों के नाउम्मीद हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैलाता है, और वह (सब का) काम बनाने वाला, तारीफ़ के क़ाबिल है। (28)

रिज़्क़ की अधिकता और इनसान की बग़ावत

अल्लाह तआला अपना एहसान और अपना करम बयान फ़रमाता है कि वह अपने गुलामों पर इस क़द्र मेहरबान है कि बड़े से बड़ा गुनाहगार भी जब अपनी बद-किरदारी से बाज़ आये, ख़ुलूस के साथ उसके सामने झुके और सच्चे दिल से तौबा करे तो वह अपने करम व रहम से उसकी पर्दा-पोशी करता है, उसके गुनाह माफ़ फ़रमा देता है और अपना फ़ज़्ल उसके हाल पर शामिल कर देता है। जैसे एक और आयत में इरशाद है:

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْيَظْلِمْ نَفْسَهٗ........ الخ.

जो शख़्स बद-अ़मली (यानी कोई गुनाह और बुरा काम) करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह तआ़ला से बख़्शिश तलब करे तो वह ख़ुदा को ग़फ़ूरुर्रहीम (माफ़ करने वाला और रहम करने वाला) पायेगा।

सही मुस्लिम में है कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे की तौबा से उससे ज़्यादा ख़ुश होता है जिसकी ऊँटनी जंगल बयाबान में गुम हो गयी हो, जिस पर उसका खाना-पीना भी हो। यह उसकी जुस्तजू करके आ़जिज़ आकर किसी पेड़ के नीचे पड़ गया हो और अपनी जान से भी हाथ धो बैठने का ख़्याल कर चुका हो, ऊँटनी से बिल्कुल मायूस हो गया हो कि अचानक वह देखता है कि ऊँटनी उसके पास ही खड़ी है। यह फ़ौरन उठ बैठता है, उसकी नकेल थाम लेता है और इस क़द्र ख़ुश होता है कि बेतहाशा उसकी ज़बान से निकल जाता है "या अल्लाह! बेशक तू मेरा गुलाम है और मैं तेरा रब हूँ" (यानी बेहिसाब ख़ुशी में यह भी होश न रहे कि तू क्या कह रहा है, कहना तो यह चाह रहा था कि इलाही! मैं तेरा अदना गुलाम और बन्दा हूँ और तू मेरा रब है, लेकिन ख़ुशी की मदहोशी में अलफ़ाज़ उलट-सुलट ज़बान से निकल गये)। वह अपनी ख़ुशी की वजह से ख़ता (ग़लती) कर जाता है।

एक मुख़्तसर हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे की तौबा से इस क़द्र ख़ुश होता है कि इतनी ख़ुशी उस शख़्स को भी नहीं होती जो ऐसी जगह में हो जहाँ प्यास के मारे हलाक हो रहा हो और वहीं उसकी सवारी का जानवर गुम हो गया हो, जो उसे एक दम से अचानक मिल जाये।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से जब यह मसला पूछा गया कि एक शख़्स एक औ़रत से बुरा काम करता है, क्या फिर उससे निकाह कर सकता है? आपने फ़रमाया निकाह में कोई हर्ज नहीं। फिर आपने यही आयत पढ़ी। तौबा तो मुस्तक़बिल (भविष्य) के लिये क़बूल हुई है और बुराईयाँ पीछे की माफ़ कर दी जाती हैं। तुम्हारे हर क़ौल व फ़ेल और हर काम का उसे इल्म है इसके बावजूद झुकने वाले की तरफ़ माईल होता है और तौबा क़बूल फ़रमा लेता है। वह ईमान वालों और नेक काम करने वालों की दुआ़ क़बूल फ़रमाता है, वह चाहे अपने लिये दुआ़ करें चाहे दूसरों के लिये।

हज़रत मुआ़ज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु मुल्क शाम में ख़ुतबा पढ़ते हुए अपने मुजाहिद साथियों से फ़रमाते हैं- तुम ईमान वाले हो, तुम जन्नती हो और मुझे उम्मीद है कि यह रोमी और फ़ारसी जिन्हें तुम कैद कर लाये हो, क्या अ़जब कि यह भी जन्नत में पहुँच जायें। क्योंकि उनमें से जब तुम्हारा कोई काम कर देता है तो तुम उसे कहते हो, अल्लाह तुझ पर रहम करे तूने बहुत अच्छा काम किया, अल्लाह तुझे बरकत दे, तूने बहुत अच्छा किया वग़ैरह। और क़ुरआन का वायदा है कि अल्लाह तआ़ला ईमान लाने और नेक अ़मल

Maktab E Ashraf

करने वालों की दुआ क़बूल फ़रमाता है। फिर आपने इसी आयत का यह तर्जुमा तिलावत फ़रमाया। मायने इसके यह हैं कि अल्लाह उनकी सुनता है।

اَلَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ.

"जो इस अल्लाह के कलाम को कान लगाकर सुनते हैं................" (सूरः जुमर आयत 18) की यह तफ़सीर की गयी है कि जो बात को मान लेते हैं और उसकी पैरवी करते हैं। और जैसे फ़रमायाः

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ......... الخ.

"वही लोग क़बूल करते हैं जो सुनते हैं................" (सूरः अन्आम आयत 36)

इब्ने अबी हातिम में है कि अपने फ़ज़्ल से ज़्यादती देना यह है कि उनके हक़ में ऐसे लोगों की सिफ़ारिश क़बूल फ़रमायेगा जिनके साथ उन्होंने कुछ सुलूक किया हो। हज़रत इब्राहीम नख़ई रह. ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया है कि वह अपने भाईयों की सिफ़ारिश करेंगे और उन्हें ज़्यादा फ़ज़्ल मिलेगा, यानी भाईयों के भाईयों की भी शफ़ाअ़त की इजाज़त हो जायेगी। मोमिनों की इस इ़ज़्ज़त व शान को बयान फ़रमाकर काफ़िरों की बदहाली बयान फ़रमाई कि उन्हें सख़्त दर्दनाक और घबराहट वाले अ़ज़ाब होंगे।

फिर फ़रमाया कि अगर उन बन्दों को उनकी रोज़ियों में वुस्अ़त (अधिकता और फैलाव) मिल जाती उनकी ज़रूरत से ज़्यादा उनके पल्ले पड़ जाता तो यह मस्ती में आकर दुनिया में हुल्लड़ मचा देते और दुनिया के अमन को आग लगा देते। एक दूसरे को नुक़सान पहुँचाना, तकलीफ़ देना, सरकशी व तकब्बुर और बेपरवाही हद से बढ़ जाती है, इसी लिये हज़रत क़तादा का दानिशमन्दाना (बुद्धिमानी) मक़ूला है कि ज़िन्दगी का सामान इतना ही अच्छा है जितने में सरकशी और नादानी व बेपरवाही न आये।

इस मज़मून की पूरी हदीस कि मुझे तुम्हारे बारे में सबसे ज़्यादा ख़तरा और डर दुनिया की नुमाईश का है, पहले बयान हो चुकी है। फिर फ़रमाता है कि वह एक अन्दाज़े से रोज़ियाँ पहुँचा रहा है, बन्दे की सलाहियत का उसे इल्म है, मालदारी और फ़क़ीरी के मुस्तहिक़ को वह ख़ूब जानता है। एक हदीसे क़ुदसी में है कि मेरे बन्दे ऐसे भी हैं जिनकी बेहतराई मालदारी में ही है, अगर मैं उन्हें फ़क़ीर बना दूँ तो वे दीनदारी से भी जाते रहेंगे। और बाज़ मेरे बन्दे ऐसे भी हैं कि उनके लायक़ फ़क़ीरी ही है, अगर वे माल हासिल कर लें और मालदार बन जायें तो उसी हालत में मैं गोया उनका दीन फ़ासिद कर दूँ। फिर इरशाद होता है कि लोग रहमत की बारिश का इन्तिज़ार करते-करते मायूस हो जाते हैं। ऐसी पूरी हाजत और सख़्त मुसीबत के वक़्त मैं बारिश बरसाता हूँ उनकी ना-उम्मीदी और ख़ुश्क-साली (सूखे की हालत) कट जाती है और आ़म तौर पर मेरी रहमत फैल जाती है।

अमीरुल-मोमिनीन ख़लीफ़तुल-मुस्लिमीन फ़ारूक़े आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से एक शख़्स कहता है- अमीरुल-मोमिनीन! क़हत-साली (सूखा और अकाल) हो गयी और अब तो लोग बारिश से बिल्कुल मायूस हो गये, तो आपने फ़रमाया- जाओ बारिश इन्शा-अल्लाह ज़रूर होगी। फिर इसी आयत की तिलावत की। वह वली व हमीद है, यानी मख़्लूक़ात के तमाम मामलात उसके क़ब्ज़े में हैं, उसके काम क़ाबिले तारीफ़ हैं, मख़्लूक़ के भले को वह जानता है और उनके नफ़े का उसे इल्म है। उसके काम नफ़े से ख़ाली नहीं।

وَمِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِیْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰی جَمْعِهِمْ اِذَا یَشَآءُ قَدِیْرٌ ۝ وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَیَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ ۝ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ فِی الْاَرْضِ ۚۖ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ۝	और उस (की क़ुदरत) की निशानियों में से आसमानों और ज़मीन का पैदा करना है, और उन जानदारों का जो उसने आसमान और ज़मीन में फैला रखे हैं और वह उन (मख़्लूक़ात) के जमा कर लेने पर भी जब वह (जमा करना) चाहे क़ादिर है। (29) और तुमको (ऐ गुनाहगारो!) जो कुछ मुसीबत पहुँचती है तो वह तुम्हारे ही हाथों के किए हुए कामों से (पहुँचती है) और बहुत-से तो दरगुज़र ही कर देता है। (30) और तुम ज़मीन में (पनाह लेकर उसको) हरा नहीं सकते, और ख़ुदा तआ़ला के सिवा तुम्हारा कोई भी हामी और मददगार नहीं। (31)

रुकूअ़ 3

अल्लाह तआ़ला की बड़ाई

अल्लाह तआ़ला की अज़्मत (बड़ाई), क़ुदरत और हुकूमत का बयान हो रहा है कि आसमान व ज़मीन उसी का पैदा किया हुआ है और इनमें की सारी मख़्लूक़ भी उसी की रचाई हुई है। फ़रिश्ते, इनसान, जिन्नात और मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के हैवानात जो कोने-कोने में फैले हुए हैं। क़ियामत के दिन वह उन सबको एक ही मैदान में जमा करेगा जबकि उनके हवास उड़े हुए होंगे, और उनमें अ़दल व इन्साफ़ किया जायेगा।

फिर फ़रमाता है कि ऐ लोगो! तुम्हें जो कुछ मुसीबतें पहुँचती हैं वो सब दर असल तुम्हारे अपने गुनाहों का बदला हैं। और अभी तो वह ग़फ़ूरुर्रहीम ख़ुदा तुम्हारी बहुत सी नाफ़रमानियों से चश्म-पोशी फ़रमाता (यानी उनको छुपाता और उनको नज़र-अन्दाज़ कर देता) है, और उन्हें माफ़ फ़रमा देता है। अगर हर जगह पर पकड़े तो तुम ज़मीन पर चल-फिर भी न सको। (यानी अगर अल्लाह तआ़ला अपने रहम व हिल्म से काम न ले और हर गुनाह पर पकड़ करने लगे तो दुनिया में कौन बाक़ी बचे, क्योंकि नबियों के अ़लावा कोई भी मासूम और गुनाहों से पाक नहीं)।

सही हदीस में है कि मोमिन को जो तकलीफ़, सख़्ती, ग़म और परेशानी होती है उसकी वजह से अल्लाह तआ़ला उसकी ख़तायें माफ़ फ़रमाता है, यहाँ तक कि एक काँटा लगने के बदले भी। जब आयतः

فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَیْرًا............ الخ.

(सूरः ज़िलज़ाल आयत 7-8) उतरी, उस वक़्त हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु खाना खा रहे थे, आपने इसे सुनकर खाने से हाथ हटा लिया और कहा या रसूलल्लाह! क्या हर बुराई भलाई का बदला दिया जायेगा? आपने फ़रमाया सुनो! तबीयत के ख़िलाफ़ जो चीज़ें होती हैं ये सब बुराईयों के बदले हैं, और सारी नेकियाँ ख़ुदा के पास जमा शुदा हैं। हज़रत अबू इदरीस रह. फ़रमाते हैं कि यही मज़मून इस आयत में बयान हुआ है। अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं कि क्या मैं तुम्हें किताबुल्लाह

Maktab E Ashraf

शरीफ़ की एक बहुत अफ़ज़ल आयत सुनाऊँ और साथ ही हदीस भी? हुज़ूर सल्ल. ने हमारे सामने यह आयत तिलावत की और मेरा नाम लेकर फ़रमाया- सुन मैं इसकी तफ़सीर भी तुझे बता दूँ तुझे जो बीमारियाँ सख़्तियाँ और बलायें आफ़तें दुनिया में पहुँचती हैं, सब बदला है तुम्हारे अपने आमाल का, अल्लाह तआ़ला का हुक्म इससे बहुत ज़्यादा है, फिर उन्हीं पर आख़िरत में भी सज़ा करे और अक्सर बुराईयाँ माफ़ फ़रमा देता है, तो उसके करम से यह बिल्कुल नामुम्किन है कि दुनिया में माफ़ की हुई ख़ताओं पर आख़िरत में पकड़े। (मुस्नद अहमद)

हज़रत इब्ने अबी हातिम में यही रिवायत हज़रत अ़ली रज़ि. ही के क़ौल से मौजूद है, उसमें है कि अबू हुज़ैफ़ा रह. जब हज़रत अ़ली रज़ि. के पास गये तो आपने फ़रमाया- मैं तुम्हें एक ऐसी हदीस सुनाता हूँ जिसे याद रखना हर मोमिन का फ़र्ज़ है। फिर यह तफ़सीर अपनी तरफ़ से इस आयत की करके सुनाई। मुस्नद अहमद में है कि मुसलमान के जिस्म में जो तकलीफ़ होती है उसकी वजह से अल्लाह तआ़ला उसके गुनाह माफ़ फ़रमाता है। मुस्नद ही की एक और हदीस में है कि जब ईमान वाले बन्दे के गुनाह बढ़ जाते हैं और उसके कफ़्फ़ारे (बदले और तलाफ़ी) की कोई चीज़ उसके पास नहीं होती तो ख़ुदा उसे किसी रंज व ग़म में मुब्तला कर देता है और वही उसके उन गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है। इब्ने अबी हातिम में हज़रत हसन बसरी से नक़ल है कि इस आयत के उतरने पर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- उस ख़ुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है कि इस लकड़ी की ज़रा सी खरोंच, हड्डी की ज़रा सी तकलीफ़ यहाँ तक कि क़दम का फिसलना भी किसी न किसी गुनाह पर है, जबकि बहुत से गुनाह तो अल्लाह तआ़ला यूँ ही माफ़ फ़रमा देते हैं। इब्ने अबी हातिम ही में है कि जब हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ि. के जिस्म में तकलीफ़ हुई और लोग उनकी इयादत (बीमारी का हाल पूछने) को गये तो हज़रत हसन ने कहा- आपकी यह हालत तो देखी नहीं जाती, हमें बड़ा सदमा हो रहा है। आपने फ़रमाया- यह न कहो, जो तुम देख रहे हो यह सब गुनाहों का कफ़्फ़ारा है, और बहुत से गुनाह तो ख़ुदा तआ़ला माफ़ कर चुका है। फिर इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

अबुल-बिलाद कहते हैं कि मैंने हज़रत उला बिन बदर रह. से कहा कि क़ुरआन में तो यह आयत है और मैं अभी नाबालिग़ बच्चा हूँ और अंधा हो गया हूँ। आपने फ़रमाया यह तेरे माँ-बाप के गुनाहों का बदला है। इमाम ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि क़ुरआन पढ़कर भूल जाने वाला यक़ीनन अपने गुनाह में पकड़ा गया है, उसकी और कोई वजह नहीं। फिर आपने इस आयत की तिलावत करके फ़रमाया- बतलाओ तो इससे बड़ी मुसीबत और क्या होगी कि इनसान याद करके ख़ुदा के कलाम को भूल जाये।

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا

और उसकी निशानियों में से जहाज़ हैं समुद्र में (ऐसे ऊँचे) जैसे पहाड़। (32) अगर वह चाहे हवा को ठहरा दे, तो वह (समुद्री जहाज़) समुद्र की सतह पर खड़े-के-खड़े रह जाएँ। बेशक इसमें निशानियाँ हैं हर साबिर-शाकिर (यानी मोमिन) के लिए। (33) या उन जहाज़ों को उनके (बुरे) आमाल (कुफ़्र वग़ैरह) के सबब तबाह कर दे, और (उनमें) बहुत-से

وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ٥ وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ٥	आदमियों से दरगुज़र कर जाए। (34) और (उस तबाही के वक़्त) उन लोगों को जो कि हमारी आयतों में झगड़े निकालते हैं मालूम हो जाए कि (अब) उनके लिए कहीं बचाव नहीं। (35)

Maktab-E-Ashraf

समुद्र की सतह पर लाखों टन के वज़नी जहाज़

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी क़ुदरत के निशान अपनी मख़्लूक़ के सामने रखता है कि उसने समुद्रों को मुसख़्ख़र (ताबे) कर रखा है, ताकि कश्तियाँ उनमें बराबर आयें-जायें। बड़ी-बड़ी कश्तियाँ समुद्रों में ऐसी ही मालूम होती हैं जैसे ज़मीन में ऊँचे पहाड़। उन कश्तियों को इधर से उधर ले जाने वाली हवायें उसके क़ब्ज़े में हैं, अगर वह चाहे तो उन हवाओं को रोक ले, फिर तो बादबान बेकार हो जायें और कश्ती रुककर खड़ी हो जाये। उसकी असीमित सल्तनत को इन निशानियों से समझ सकता है। और जिस तरह हवायें बन्द करके कश्तियों को खड़ा कर लेना और रोक लेना उसके बस में है इसी तरह इन पहाड़ों जैसी कश्तियों को दम भर में डुबो देना भी उसी के हाथ में है। अगर वह चाहे तो कश्ती वालों के गुनाहों के सबब उन्हें ग़र्क़ कर दे। अभी तो वह बहुत से गुनाहों से दरगुज़र फ़रमा लेता है। अगर सब गुनाहों पर पकड़े तो जो भी कश्ती में बैठे सीधा समुद्र में डूबे, लेकिन उसकी बेहिसाब रहमत उनको इस पार से उस पार कर देती है। उलेमा-ए-तफ़सीर (क़ुरआन के व्याख्यापकों) ने यह भी फ़रमाया कि अगर वह चाहे और उसी हवा को नामुवाफ़िक़ कर दे तथा तेज़ व सख़्त आँधी चला दे जो कश्ती को सीधी राह चलने ही न दे, इधर से उधर कर दे, संभाले न संभल सके। जहाँ जाना है उस तरफ़ जा ही न सके और यूँही हैरान व परेशान हो-होकर कश्ती वाले तबाह हो जायें।

ग़र्ज़ कि अगर हवा बन्द कर दे तो खड़े-खड़े नाकाम रहें, अगर हवा तेज़ कर दे तो नाकामी। लेकिन यह उसका लुत्फ़ व करम है कि ख़ुशगवार मुवाफ़िक़ हवायें चलाता है, इनसान लम्बे-लम्बे सफ़र जहाज़ों और कश्तियों के ज़रिये तय करता है और अपनी मन्ज़िले मक़सूद पर पहुँच जाता है। यही हाल पानी का है कि अगर बिल्कुल न बरसाये, सूखा पड़ जाये और दुनिया तबाह हो जाये। और अगर बहुत ज़्यादा बरसा दे तो सैलाब कोई चीज़ पैदा न होने दे और दुनिया हलाक हो जाये। साथ ही बारिश की अधिकता, पानी का उफ़ान मकानों के गिरने और पूरी बरबादी का सबब बन जाये। यहाँ तक कि रब की मेहरबानी से जिन शहरों में और जिन इलाक़ों में ज़्यादा बारिश की ज़रूरत है वहाँ कसरत से बारिश बरसती है, और जहाँ कम की ज़रूरत है वहाँ कमी है। फिर फ़रमाता है कि हमारी निशानियों में झगड़ने वाले ऐसे मौक़ों पर तो मान लेते हैं कि वह हमारी क़ुदरत से बाहर नहीं। हम अगर इन्तिक़ाम (बदला) लेना चाहें, हम अगर अ़ज़ाब करना चाहें तो वे छूट नहीं सकते। सब हमारी क़ुदरत और मर्ज़ी के ताबे हैं।

Maktab E Ashraf

सो जो कुछ तुमको दिया-दिलाया गया है वह सिर्फ़ (चन्द दिन की) दुनियावी ज़िन्दगी के बरतने के लिए है, और जो (अज्र और सवाब आख़िरत में) अल्लाह तआ़ला के यहाँ है वह इससे कहीं बढ़ा हुआ और बेहतर है, और ज़्यादा पायदार। वह उन लोगों के लिए है जो ईमान ले आए और अपने परवर्दिगार पर भरोसा करते हैं। (36) और जो कि बड़े गुनाहों से और (उनमें) बेहयाई की बातों से बचते हैं, और जब उनको ग़ुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं। (37) और जिन लोगों ने कि अपने रब का हुक्म माना और वे नमाज़ के पाबन्द हैं। और उनका हर काम (जिसमें शरीअ़त का कोई वाज़ेह हुक्म मौजूद न हो) आपस के मश्विरे से होता है, और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। (38) और जो ऐसे हैं कि जब उन पर ज़ुल्म वाक़े होता है तो वे बराबर का बदला लेते हैं। (39)	فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۚ○ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ۚ○ وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ص وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ص وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۚ○ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْیُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ○

फ़रमाँबरदार बन्दे

अल्लाह तआ़ला ने दुनिया का बेहैसियत होना और इसकी हिक़ारत बयान फ़रमाई कि इसे जमा करके किसी को न भूलना चाहिये, क्योंकि यह फ़ानी चीज़ है, बल्कि आख़िरत की तरफ़ रग़बत (दिलचस्पी और तवज्जोह) करना चाहिये। नेक आमाल करके सवाब जमा करना चाहिये जो हमेशा की और बाक़ी रहने वाली चीज़ है। पस फ़ानी को बाक़ी पर, कम को ज़्यादा पर तरजीह देना अ़क़्लमन्दी नहीं। अब इस सवाब के हासिल करने के तरीक़े बतलाये जाते हैं कि ईमान मज़बूत हो ताकि दुनियावी लज़्ज़तों के छोड़ने पर सब्र हो सके, ख़ुदा पर कामिल भरोसा हो ताकि सब्र पर उसकी इमदाद मिले और अहकामे ख़ुदा की तामील करना और नाफ़रमानियों से बचना और परहेज़ करना आसान हो जाये। कबीरा (बड़े) गुनाहों और गन्दे व अश्लील कामों से परहेज़ करना चाहिये। इस जुमले की तफ़सीर सूरः आराफ़ में गुज़र चुकी है। ग़ुस्से पर क़ाबू चाहिये कि ऐन ग़ुस्से और ग़ज़ब की हालत में भी अच्छा मामला करने और माफ़ करने की आ़दत न छूटे। चुनाँचे सही हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने कभी भी अपने नफ़्स का बदला किसी से नहीं लिया। हाँ अगर ख़ुदा के अहकाम की बेइज़्ज़ती और नाक़द्री होती हो तो और बात है। एक और हदीस में है कि बहुत ज़्यादा ग़ुस्से की हालत में भी आपकी ज़बाने मुबारक से इसके सिवा और कुछ अलफ़ाज़ न निकलते, फ़रमाते- इसे क्या हो गया है? इसके हाथ मिट्टी से भर जायें।

हज़रत इब्राहीम रह. फ़रमाते हैं कि मुसलमान पस्त व ज़लील होना तो पसन्द नहीं करते थे लेकिन

Maktaba E Ashraf

ग़ालिब आकर इन्तिक़ाम (बदला) भी नहीं लेते थे। अक्सर दरगुज़र कर जाते और माफ़ फ़रमा देते। उनकी एक और सिफ़त यह है कि ये ख़ुदा का कहा करते हैं, रसूल की पैरवी करते हैं, जिसका वह हुक्म करे बजा लाते हैं, जिससे वह रोके रुक जाते हैं। नमाज़ के पाबन्द होते हैं जो सबसे आला इबादत है। बड़े-बड़े मामलात में बग़ैर सलाह-मश्विरे के हाथ नहीं डालते।

ख़ुद रसूले ख़ुदा को यह हुकम होता है:

وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ.

यानी मामलात में उनसे मश्विरा कर लिया करो।

इसी लिये हुज़ूर सल्ल. की आ़दत थी कि जिहाद वग़ैरह के मौक़े पर लोगों से मश्विरा कर लिया करते ताकि वे ख़ुश हो जायें और इसी बिना पर अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि. ने जबकि आपको ज़ख़्मी कर दिया गया और वफ़ात का वक़्त आ गया, छह आदमी मुक़र्रर कर दिये कि ये अपने मश्विरे से मेरे बाद किसी को मेरा जानशीन (उत्तराधिकारी) मुक़र्रर करें। उन छह बुज़ुर्गों के नाम ये हैं- हज़रत उस्मान, हज़रत अ़ली, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत सअ़द और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हुम। पस सबने सर्वसम्मति से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अपना अमीर मुक़र्रर किया।

फिर उनका जिनके लिये आख़िरत की तैयारी और वहाँ के सवाब हैं, एक और वस्फ़ (विशेषता) बयान फ़रमाया कि जहाँ ये अल्लाह के हुक़ूक़ अदा करते हैं वहाँ लोगों के हुक़ूक़ की अदायेगी में भी कमी नहीं करते। अपने माल में मोहताजों का भी हिस्सा रखते हैं और दर्जा-ब-दर्जा अपनी ताक़त के मुताबिक़ हर एक के साथ सुलूक व एहसान करते रहते हैं। और ये ऐसे ज़लील, पस्त और बेहिम्मत नहीं होते कि ज़ालिम के ज़ुल्म की कोई रोकथाम न कर सकें। बल्कि इतनी क़ुव्वत अपने अन्दर रखते हैं कि ज़ालिमों से इन्तिक़ाम (बदला) लें और मज़लूम को उसके पंजे से निजात दिलवायें। लेकिन हाँ! अपनी ताक़त की वजह से ग़ालिब आकर फिर छोड़ देते हैं। जैसे कि अल्लाह के नबी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपने भाईयों पर क़ाबू पाकर फ़रमा दिया कि जाओ तुम्हें मैं कोई डाँट-डपट नहीं करता, बल्कि मेरी ख़्वाहिश और दुआ़ है कि ख़ुदा भी तुम्हें माफ़ फ़रमा दे। और जैसे कि सरदारे अम्बिया रसूले ख़ुदा अहमदे मुज्तबा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. ने हुदैबिया में किया, जबकि कितने काफ़िर ग़फ़लत का मौक़ा ढूँढकर चुप-चाप इस्लामी लश्कर में घुस आये। जब ये पकड़ लिये गये और गिरफ़्तार होकर हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में पेश कर दिये गये तो आपने उन सबको माफ़ी दे दी और छोड़ दिया। और जैसे कि आपने ग़ौरस बिन हारिस को माफ़ फ़रमा दिया, यह वह शख़्स है कि हुज़ूर सल्ल. के सोते हुए उसने आपकी तलवार पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब आप जागे और उसे डाँटा, तलवार उसके हाथ से छूट गयी, आपने तलवार ले ली और वह मुजरिम गर्दन झुकाये आपके सामने खड़ा हो गया। आपने सहाबा को बुलाकर यह मन्ज़र भी दिखाया और यह क़िस्सा भी सुनाया। फिर उसे माफ़ फ़रमा दिया और जाने दिया।

इसी तरह लबीद बिन आसम ने जब आप पर जादू किया तो मालूम हो जाने और क़ुदरत के बावजूद आपने उसको भी माफ़ फ़रमा दिया। और इसी तरह जिस यहूदी औ़रत ने आपको ज़हर दिया था आपने उससे भी बदला न लिया और बावजूद क़ाबू पाने और मालूम हो जाने के भी आपने इतने बड़े वाक़िए से नज़र फेर ली। उस औ़रत का नाम ज़ैनब था। यह मरहब यहूदी की बहन थी जो जंगे ख़ैबर में हज़रत महमूद बिन सलमा रज़ि. के हाथों मारा गया था। उसने बकरी के शाने के गोश्त में ज़हर मिलाकर ख़ुद हुज़ूर

के सामने पेश किया था। ख़ुद शाने ने ही हुज़ूरे पाक को अपने ज़हर से भरा होने की ख़बर दी थी।

जब आपने उसे बुलाकर दरियाफ़्त फ़रमाया तो उसने इक़रार किया था और वजह यह बयान की थी कि अगर आप सच्चे नबी हैं तो यह आपको कुछ नुक़सान न पहुँचा सकेगा, और अगर आप अपने दावे में झूठे हैं तो हमें आपसे राहत हासिल हो जायेगी। यह मालूम हो जाने पर और उसके इक़रार कर लेने पर भी ख़ुदा के रसूल ने उसे छोड़ दिया और माफ़ फ़रमा दिया, अगरचे बाद में वह क़त्ल कर दी गयी। इसलिये कि उसी ज़हर से और उसी ज़हरीले खाने से हज़रत बशर बिन बरा रज़ि. फ़ौत हो गये, तब उनके क़िसास के तौर पर यह यहूदी औरत भी क़त्ल कराई गयी। हुज़ूर सल्ल. के और भी बहुत से ऐसे वाक़िआत हैं।

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ○ وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ○ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ○	और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है, फिर (बदला लेने की इजाज़त के बाद) जो शख़्स माफ़ करे और इस्लाह करे तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे है, वाक़ई अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। (40) और जो अपने ऊपर ज़ुल्म हो चुकने के बाद बराबर का बदला ले ले, सो ऐसे लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं। (41) इल्ज़ाम सिर्फ़ उन लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और नाहक़ दुनिया में सरकशी (और तकब्बुर) करते हैं, ऐसों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब (मुक़र्रर) है। (42) और जो शख़्स सब्र करे और माफ़ कर दे, यह ज़रूर बड़े हिम्मत के कामों में से है। (43)

बुराई का बदला बुराई

इरशाद होता है कि बुराई का बदला लेना जायज़ है, जैसे फ़रमायाः

فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ.

सो जो तुम पर ज़्यादती करे ता तुम भी उस पर ज़्यादती करो........। (सूरः ब-क़रह आयत 194)

एक और आयत में है:

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ......... الخ.

और अगर तुम बदला लेने लगो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ बर्ताव किया गया है............। (सूरः नहल आयत 126)

इन सब आयतों का मतलब यही है, लेकिन अच्छा और अफ़ज़ल यही है कि माफ़ी व दरगुज़र का मामला किया जाये। जैसे फ़रमायाः

وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ. فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ.

यानी ख़ास ज़ख़्मों का भी बदला है। फिर जो शख़्स उसे माफ़ कर दे तो वह उसके लिये कफ़्फ़ारा हो जायेगा।

यहाँ भी फ़रमाया कि जो शख़्स माफ़ कर दे और सुलह व सफ़ाई करे उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है। हदीस में है कि माफ़ करने की वजह से अल्लाह तआ़ला बन्दे की इज़्ज़त और बढ़ा देता है। लेकिन जो बदले में असल जुर्म से बढ़ जाये वह ख़ुदा का दुश्मन है। फिर बुराई की शुरूआ़त उसी की तरफ़ से समझी जायेगी। फिर फ़रमाता है कि जिस पर ज़ुल्म हुआ उसे बदला लेने में कोई गुनाह नहीं।

इब्ने औ़न रह. फ़रमाते हैं कि मैं इस लफ़्ज़ "इन्त-स-र" की तफ़सीर की तलाश में था तो मुझसे अ़ली बिन ज़ैद बिन जदआ़न ने अपनी वालिदा उम्मे मुहम्मद के हवाले से जो हज़रत आ़यशा के पास जाया आया करती थीं, बयान किया कि हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के यहाँ हुज़ूर सल्ल. गये। उस वक़्त हज़रत ज़ैनब वहाँ मौजूद थीं। आपको मालूम न था, हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ि. को बुरा भला कहना शुरू किया। हुज़ूर सल्ल. के मना करने पर भी ख़ामोश न हुई तो आपने हज़रत आ़यशा रज़ि. को इजाज़त दी कि जवाब दें। अब जो जवाब हुआ तो हज़रत ज़ैनब आ़जिज़ आ गयीं और सीधी हज़रत अ़ली रज़ि. के पास गयीं और कहा आ़यशा तुम्हें यूँ-यूँ कहती है और ऐसा-ऐसा करती हैं। यह सुनकर हज़रत फ़ातिमा रज़ि. हाज़िर हुईं आपने उनसे फ़रमाया- क़सम रब्बे काबा की आ़यशा से मैं मुहब्बत रखता हूँ यह तो उसी वक़्त वापस चली गयीं और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। फिर हज़रत अ़ली रज़ि. आये और आपसे बातें कीं। यह रिवायत इब्ने जरीर में इसी तरह है, लेकिन इसके रावी अपनी रिवायतों में उमूमन मुन्कर हदीसें लाया करते हैं और यह रिवायत भी मुन्कर है।

नसाई और इब्ने माजा में इस तरह है कि हज़रत ज़ैनब ग़ुस्से में भरी हुई बिना इत्तिला किये हज़रत आ़यशा रज़ि. के घर चली आयीं और हुज़ूर सल्ल. से हज़रत सिद्दीक़ा के बारे में कुछ कहा। फिर हज़रत आ़यशा रज़ि. से लड़ने लगीं लेकिन हज़रत आ़यशा रज़ि. ने ख़ामोशी इख़्तियार की। जब वह कह चुकीं तो आपने आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया- तू अपना बदला ले ले, फिर जो सिद्दीक़ा रज़ि. ने जवाब देने शुरू किये तो हज़रत ज़ैनब परेशान हो गयीं और कोई जवाब न दे सकीं। और हुज़ूर सल्ल. के चेहरे से वह सदमा हट गया।

ग़र्ज़ कि 'इन्तिसार' (यानी बदला लेना) यह है कि मज़लूम ज़ालिम को जवाब दे और अपना बदला ले ले। बज़्ज़ार में है कि ज़ालिम के लिये जिसने दुआ़ की उसने बदला ले लिया। यही हदीस तिर्मिज़ी में है लेकिन इसके एक रावी में कुछ कलाम है। फिर फ़रमाता है कि हर्ज व गुनाह उन पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करें, ज़मीन में बिना वजह बुराई और ख़राबी फैलायें। चुनाँचे सही हदीस में है कि वे बुरा कहने वाले जो कुछ कहें सबका बोझ शुरू करने वाले पर है, जब तक कि मज़लूम बदले की हद से आगे न निकल जाये। ऐसे फ़सादी क़ियामत के दिन दर्दनाक अ़ज़ाबों में मुब्तला किये जायेंगे।

हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ़ रह. फ़रमाते हैं कि मैं मक्का में जाने लगा तो देखा कि ख़न्दक़ पर पुल बना हुआ है। मैं अभी वहीं था कि गिरफ़्तार कर लिया गया और बसरा के हाकिम मरवान बिन मह्लब के पास पहुँचा दिया गया। उसने मुझसे कहा अबू अ़ब्दुल्लाह! तुम क्या चाहते हो? मैंने कहा यही कि अगर तुमसे हो सके तो बनू अ़दी के भाई जैसे बन जाओ। पूछा वह कौन है? कहा उला बिन ज़ियाद, कि अपने एक दोस्त को एक मर्तबा एक विभाग पर आ़मिल (हाकिम) बनाया तो उन्होंने उसे लिखा कि अल्लाह की तारीफ़ और नबी करीम सल्ल. पर दुरूद व सलाम के बाद! अगर तुझसे हो सके तो यह करना कि तेरी

कमर बोझ से ख़ाली रहे, तेरा पेट हराम से बच जाये, तेरे हाथ मुसलमानों के ख़ून व माल से न भरें। तू जब यह करेगा तो तुझ पर कोई गुनाह की राह बाक़ी न रहेगी। यह राह तो उन पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करें और बेवजह नाहक़ ज़मीन में फ़साद (बिगाड़ और ख़राबी) फैलायें।

मरवान ने कहा ख़ुदा जानता है कि उसने सच कहा और ख़ैरख़्वाही (हमदर्दी) कीं बात कही। अच्छा अब क्या आरज़ू है? फ़रमाया यही कि तुम मुझे मेरे घर पहुँचा दो। मरवान ने कहा बहुत अच्छा। (इब्ने अबी हातिम) पस ज़ुल्म व ज़ालिमों की मज़म्मत (निंदा और बुराई) बयान करके बदले की इजाज़त देकर अब फ़ज़ीलत की तरफ़ रग़बत (प्रेरणा और तवज्जोह) दिलाते हुए फ़रमाता है कि जो ईज़ा (तकलीफ़) सह ले और बुराई से दरगुज़र कर ले (यानी तकलीफ़ देने वाले को माफ़ फ़रमा दे) उसने बड़ी बहादुरी का काम किया। जिस पर वह बड़े सवाब और पूरे बदले का मुस्तहिक़ है।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ रह. का फ़रमान है कि जब तुमसे आकर कोई शख़्स किसी और की शिकायत करे तो उसे तलक़ीन (हिदायत) करो कि भाई माफ़ कर दो, माफ़ी में ही बेहतरी है, और यही परहेज़गारी का सुबूत है। अगर वह न माने और अपने दिल की कमज़ोरी का इज़हार करे तो ख़ैर! कह दो कि जाओ बदला ले लो, लेकिन इस सूरत में कि फिर कहीं तुम बढ़ न जाओ, वरना हम तो अब भी यही कहेंगे कि माफ़ कर दो, यह दरवाज़ा बहुत वुस्अ़त वाला (यानी बड़ा) है, और बदले की राह बहुत तंग है। सुनो! माफ़ कर देने वाला तो आराम से मीठी नींद सो जाता है और बदले की धुन वाला दिन-रात परेशान व चिंतित रहता है और तोड़-जोड़ सोचता है।

मुस्नद इमाम अहमद में है कि एक शख़्स ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. को बुरा-भला कहना शुरू किया। हुज़ूर सल्ल. भी वहीं तशरीफ़ फ़रमा थे। आप ताज्जुब के साथ मुस्कुराने लगे। हज़रत सिद्दीक़ रज़ि. ख़ामोश थे, लेकिन जब उसने बहुत गालियाँ दीं तो आपने भी बाज़ का जवाब दिया। इस पर हुज़ूर नाराज़ होकर वहाँ से चल दिये। हज़रत अबू बक्र रज़ि. से न रहा गया, आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! वह मुझे बुरा-भला कहता रहा तो आप बैठे सुनते रहे और जब मैंने उसकी दो एक बातों का जवाब दिया तो आप नाराज़गी से उठकर चल दिये? आपने फ़रमाया सुनो! जब तक तुम ख़ामोश थे फ़रिश्ता तुम्हारी तरफ़ से जवाब देता था, जब तुम बोले तो फ़रिश्ता हट गया और शैतान बीच में आ गया, फिर भला मैं शैतान की मौजूदगी में कैसे बैठा रहता?

फिर फ़रमाया सुनो! अबू बक्र तीन चीज़ें बिल्कुल बर्हक़ हैं:

1. जिस पर कोई ज़ुल्म किया जाये और वह उससे चश्म-पोशी करे (यानी उसे नज़र-अन्दाज़ कर दे, बदला न ले) तो ज़रूर अल्लाह उसे इज़्ज़त देगा और उसकी मदद करेगा।

2. जो शख़्स सुलूक और एहसान का दरवाज़ा खोलेगा और सिला-रहमी के इरादे से लोगों को देता रहेगा अल्लाह उसे बरकत देगा और ज़्यादती अ़ता फ़रमायेगा।

3. और जो शख़्स माल बढ़ाने के लिये सवाल का दरवाज़ा खोल लेगा इससे उससे माँगता फिरेगा अल्लाह उसके यहाँ बेबरकती कर देगा और कमी में ही मुब्तला रखेगा। यह रिवायत अबू दाऊद में भी है और मज़मून के एतिबार से यह बड़ी प्यारी हदीस है।

Maktaba E Ashraf

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَالَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۚ﴿﴾ وَتَرٰهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَالَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ﴿﴾

और जिसको अल्लाह तआ़ला गुमराह कर दे तो उसके बाद उस शख़्स का (दुनिया में भी) कोई मददगार नहीं, और आप (उन) ज़ालिमों को देखेंगे जिस वक़्त कि उनको अ़ज़ाब का मुआ़यना होगा, कहते होंगे कि क्या (दुनिया में) वापस जाने की कोई सूरत है? (44) और (साथ ही) आप उनको इस हालत में देखेंगे कि वे दोज़ख़ के सामने लाए जाएँगे ज़िल्लत के मारे झुके हुए होंगे, सुस्त निगाह से देखते होंगे और (उस वक़्त) ईमान वाले कहेंगे कि पूरे घाटे वाले वे लोग हैं जो अपनी जानों से और अपने मुताल्लिक़ीन से (आज) क़ियामत के दिन घाटे में पड़े। याद रखो कि ज़ालिम (यानी मुश्रिक और काफ़िर) लोग हमेशा के अ़ज़ाब में रहेंगे। (45) और (वहाँ) उनके कोई मददगार न होंगे जो ख़ुदा से अलग (होकर) उनकी मदद करें। और जिसको ख़ुदा गुमराह कर दे उस (की निजात) के लिए कोई रास्ता ही नहीं। (46)

फ़रार होने और बचने का रास्ता

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि वह जो चाहता है होता है, उसे कोई रोक नहीं सकता। और जो नहीं चाहता नहीं होता, और न उसे कोई कर सकता है। वह जिसे सही रास्ता दिखा दे उसे कोई बहका नहीं सकता, और जिससे वह राह गुम कर दे उसे कोई उस राह को नहीं दिखा सकता। एक और जगह अल्लाह का फ़रमान है:

وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا.

जिसे वह गुमराह कर दे उसका कोई चारा-साज़ (काम बनाने वाला) और रहबर नहीं।

फिर फ़रमाता है कि ये मुश्रिक लोग क़ियामत के अ़ज़ाब को देखकर दोबारा दुनिया में आने की तमन्ना करेंगे। जैसे एक और जगह है:

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ...... الخ.

काश कि तू उन्हें देखता जब ये दोज़ख़ के पास खड़े किये जायेंगे और कहेंगे- हाय क्या अच्छी बात हो कि हम दोबारा वापस भेज दिये जायें तो हम हरगिज़ अपने रब की आयतों को झूठ न बतलायें, बल्कि ईमान ले आयें। सच तो यह है कि ये लोग जिस चीज़ को इससे पहले पोशीदा किये हुए थे वह उनके

सामने आ गयी। बात यह है कि अगर ये दोबारा भेज भी दिये जायें तब भी वही करेंगे जिससे उनको रोका जाता है। यक़ीनन ये झूठे हैं।

फिर फ़रमाया- ये जहन्नम के पास लाये जायेंगे और ख़ुदा की नाफ़रमानियों की वजह से उन पर ज़िल्लत बरस रही है। आजिज़ी से झुके हुए होंगे और नज़रें बचाकर जहन्नम को तक रहे होंगे। लेकिन जिससे डर रहे हैं उससे बच न सकेंगे। न सिर्फ़ इतना ही बल्कि उनके वहम व गुमान से भी ज़्यादा अ़ज़ाब उन्हें होगा। अल्लाह हमें महफ़ूज़ रखे। उस वक़्त ईमान वाले लोग कहेंगे कि असली नुक़सान उठाने वाले वे लोग हैं जिन्होंने अपने पैरोकारों को भी जहन्नम में पहुँचा दिया, यहाँ की हमेशा रहने वाली नेमतों से मेहरूम रहे और उन्हें भी मेहरूम रखा। आज वे सब अलग-अलग अ़ज़ाब में मुब्तला हैं। दायमी और हमेशा की सज़ायें भुगत रहे हैं और ये ना-उम्मीद हो जायें, आज कोई ऐसा नहीं जो उनको अ़ज़ाब से छुड़ा सके या उसको हल्का करा सके। इन गुमराहों को ख़लासी (छुटकारा) देने वाला कोई नहीं।

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ۝

तुम अपने रब का हुक्म मान लो, इससे पहले कि ऐसा दिन आ पहुँचे जिसके लिए ख़ुदा की तरफ़ से हटना न होगा, न तुमको उस दिन कोई पनाह मिलेगी और न तुम्हारे बारे में कोई (ख़ुदा से) रोक-टोक करने वाला है। (47) फिर अगर ये लोग (यह सुनकर भी) मुँह मोड़ें तो हमने आपको उन पर निगराँ करके नहीं भेजा, (जिस से कि आपको अपने से पूछताछ का अन्देशा हो), आपके ज़िम्मे तो सिर्फ़ (हुक्म का) पहुँचा देना है। और हम जब (इस क़िस्म के) आदमी को अपनी इनायत का मज़ा चखा देते हैं तो वह उस पर ख़ुश हो जाता है, और अगर (ऐसे) लोगों पर उनके आमाल के बदले में जो पहले अपने हाथों कर चुके हैं, कोई मुसीबत आ पड़ती है तो आदमी नाशुक्री करने लगता है। (48)

एक न टलने वाली घड़ी

चूँकि ऊपर यह ज़िक्र था कि क़ियामत के दिन बड़े हैबतनाक वाक़िआत होंगे, वह सख़्त मुसीबतों का दिन होगा, तो अब यहाँ उससे डराया है और उस दिन के लिये तैयार रहने को फ़रमाया है कि उस अचानक आ जाने वाले दिन से पहले ही पहले फ़रमाने ख़ुदा पर पूरी तरह अ़मल कर लो। जब वह दिन आ जायेगा तो तुम्हें न तो कोई पनाह मिलेगी न ऐसी जगह कि वहाँ अन्जान बनकर ऐसे छुप जाओ कि पहचाने न जाओ और किसी को दिखाई न पड़ो। फिर फ़रमाता है कि अगर ये मुश्रिक न मानें तो आप उन पर निगहबान (निगरानी करने वाले) बनाकर नहीं भेजे गये। उन्हें हिदायत पर ला खड़ा कर देना आपके ज़िम्मे नहीं। यह काम ख़ुदा का है। आप पर सिर्फ़ तब्लीग़ (पैग़ाम का पहुँचा देना) है, हिसाब हम ख़ुद ले लेंगे।

इनसान की हालत यह है कि राह में मस्त हो जाता है और तकलीफ़ में नाशुक्री करता है। उस वक़्त अगली नेमतों का भी मुन्किर हो जाता है। हदीस में है कि हुज़ूर ने औरतों से फ़रमाया- सदक़ा करो। मैंने तुम्हें ज़्यादा तायदाद में जहन्नम में देखा है। किसी औरत ने पूछा यह किस वजह से? आपने फ़रमाया तुम्हारी शिकवा शिकायत की आदत और अपने शौहरों की नाशुक्री की वजह से। अगर तू उनमें से किसी के साथ एक ज़माने तक एहसान करता रहे, फिर एक दिन छोड़ दे तो कह देगी कि मैंने तो तुझसे कभी कोई राहत (यानी आराम) पाई ही नहीं, वास्तव में अक्सर औरतों का यही हाल है, लेकिन जिस पर ख़ुदा रहम करे और नेकी की तौफ़ीक़ दे दे। और हक़ीक़ी ईमान नसीब फ़रमाये। फिर तो उसका यह हाल होता है कि हर राहत पर शुक्र, हर रंज पर सब्र, पस हर हाल में नेकी हासिल होती है और यह वस्फ़ सिवाय मोमिन के किसी और में नहीं होता।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝	अल्लाह तआला ही की बादशाहत है आसमानों की और ज़मीन की, वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसको चाहता है बेटियाँ अता फ़रमाता है और जिसको चाहता है बेटे अता फ़रमाता है। (49) या उनको जमा कर देता है, बेटे भी और बेटियाँ भी, और जिसको चाहता है बेऔलाद रखता है। बेशक वह बड़ा जानने वाला, बड़ी क़ुदरत वाला है। (50)

कायनात का मालिक

फ़रमाता है कि ख़ालिक़, मालिक और ज़मीन व आसमान का मुख़्तार सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है। वह जो चाहता है होता है, जो नहीं चाहता नहीं होता। जिसे चाहे दे जिसे चाहे न दे, जो चाहे पैदा करे और बनाये, जिसे चाहे सिर्फ़ लड़कियाँ दे, जैसे हज़रत लूत अलैहिस्सलाम, और जिसे चाहे सिर्फ़ लड़के ही अता फ़रमाता है जैसे इब्राहीम अलैहिस्सलाम, और जिसे चाहे लड़के लड़कियाँ सब कुछ देता है, जैसे हज़रत मुहम्मद सल्ल.। और जिसे चाहे ला-वलद (बे औलाद) रखता है जैसे हज़रत यहया और हज़रत ईसा अलैहिमस्सलाम।

पस ये चार क़िस्में हुईं- लड़कियों वाले, लड़कों वाले, दोनों वाले और दोनों से ख़ाली हाथ। वह अलीम है, हर मुस्तहिक़ को जानता है। क़ादिर है जिस तरह का चाहे फ़र्क़ रखता है। पस यह मक़ाम भी अल्लाह तआला के उस पाक फ़रमान की तरह है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में है- "ताकि हम इसे लोगों के लिये निशान बनायें, यानी क़ुदरत की दलील बनायें" और दिखा दें कि हमने मख़्लूक़ को चार तौर पर पैदा किया। हज़रत आदम सिर्फ़ मिट्टी से पैदा हुए, न माँ न बाप। हज़रत हव्वा सिर्फ़ मर्द से पैदा हुईं, बाक़ी तमाम इनसान मर्द औरत दोनों से सिवाय हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के, कि वह सिर्फ़ औरत से, बग़ैर मर्द के पैदा किये गये। पस आपकी पैदाईश से ये चारों क़िस्में पूरी हो गयीं। तो यह मक़ाम माँ-बाप के बारे में था और वह मक़ाम औलाद के बारे में, इसकी भी चार क़िस्में और उसकी भी चार क़िस्में। सुब्हानल्लाह!

Maktab E Ashraf

यह है उस ख़ुदा के इल्म व क़ुदरत की निशानी।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا
اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا
فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ
حَكِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا
مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا
الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ
مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ صِرَاطِ اللّٰهِ
الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ۝ ع ٥ ٦

और किसी बशर "यानी आदमी और इनसान" की (मौजूदा हालत में) यह शान नहीं कि अल्लाह उससे कलाम फ़रमाए मगर (तीन तरह से), या तो इल्हाम से, या आड़ और पर्दे के बाहर से, या किसी फ़रिश्ते को भेज दे कि वह ख़ुदा के हुक्म से जो ख़ुदा को मन्ज़ूर होता है, पैग़ाम पहुँचा देता है। वह बड़ी बुलन्द शान वाला है और बड़ी हिक्मत वाला (भी) है। (51) और इसी तरह हमने आपके पास भी 'वही' यानी अपना हुक्म भेजा है, आपको न यह ख़बर थी कि (अल्लाह की) किताब क्या चीज़ है, और न यह ख़बर थी कि ईमान (के कमाल की इन्तिहा) क्या है, और लेकिन हमने इस क़ुरआन को एक नूर बनाया, जिसके ज़रिये हम अपने बन्दों में से जिसको चाहते हैं हिदायत करते हैं। और इसमें कोई शुब्हा नहीं कि आप एक सीधे रास्ते की हिदायत कर रहे हैं। (52) यानी उस ख़ुदा के रास्ते की कि उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। याद रखो सब मामलात उसी की तरफ़ लौटेंगे। (53)

क़ुदरत का एक आम क़ानून

'वही' के मक़ामात व मरातिब और कैफ़ियात का बयान हो रहा है कि कभी तो हुज़ूर सल्ल. के दिल में 'वही' डाली जाती है जिसके ख़ुदा की 'वही' होने में आपको कोई शक नहीं रहता। जैसे सही इब्ने हिब्बान की हदीस है कि रूहुल-क़ुदुस ने मेरे दिल में यह बात डाल दी है कि कोई शख़्स भी जब तक अपनी रोज़ी और अपना वक़्त पूरा न करे हरगिज़ नहीं मरता। पस अल्लाह से डरो और रोज़ी की तलब में अच्छाई इख़्तियार करो, या पर्दे की ओट से, जैसे हज़रत मूसा से कलाम हुआ क्योंकि उन्होंने कलाम सुनकर जमाल देखना चाहा, लेकिन वह पर्दे में था। रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया था कि अल्लाह तआ़ला ने किसी से कलाम नहीं किया मगर पर्दे के पीछे से, लेकिन तेरे बाप से आमने सामने कलाम किया। यह जंगे उहुद में काफ़िरों के हाथों शहीद किये गये थे। लेकिन यह याद रहे कि यह कलाम आ़लमे बर्ज़ख़ का है, और आयत में जिस कलाम का ज़िक्र है उससे मुराद दुनिया का कलाम है, या अपने क़ासिद को भेजकर अपनी बात उस तक पहुँचाये। जैसे हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम वग़ैरह फ़रिश्ते अल्लाह के अम्बिया के पास आते रहे। वह बुलन्दी और बुज़ुर्गी वाला है। साथ ही हकीम और

Maktab E Ashraf

हिक्मत वाला है। रूह से मुराद क़ुरआन है, फ़रमाता है कि इस क़ुरआन को 'वही' के ज़रिये हमने तेरी तरफ़ उतारा है। किताब और ईमान को इस तफ़सील के साथ जो हमने अपनी किताब में की है तू इससे पहले जानता भी न था लेकिन हमने इस क़ुरआन को नूर बनाया है ताकि इसके ज़रिये से हम अपने ईमान वाले बन्दों को सही रास्ता दिखलायें। जैसे एक और आयत में है:

قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا........ الخ.

कह दे कि यह ईमान वालों के वास्ते हिदायत व शिफ़ा और बेईमानों के कान बहरे और आँखें अन्धी हैं। फिर फ़रमाया कि ऐ नबी! तुम स्पष्ट और मज़बूत हक़ की रहनुमाई कर रहे हो। फिर सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) की तशरीह (व्याख्या) की और फ़रमाया इसे शरअ़ (यानी शरई क़ानून) मुक़र्रर करने वाला ख़ुद ख़ुदा है, जिसकी शान यह है कि आसमानों ज़मीनों का मालिक और रब वही है। उनमें तसर्रुफ़ करने (यानी अपने इख़्तियार चलाने) वाला और हुक्म चलाने वाला भी वही है। कोई उसके किसी हुक्म को टाल नहीं सकता। तमाम बातें और मामलात उससे मुताल्लिक़ हैं। वही सब कामों के फ़ैसले करता है और हुक्म करता है। वह पाक और बरतर है, हर उस चीज़ से जो उसके बारे में ज़ालिम और मुन्किर लोग कहते हैं। वह बुलन्दियों और बड़ाईयों वाला है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः शूरा की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः ज़ुख़रुफ़

सूरः ज़ुख़रुफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 89 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

हा-मीम् (1) क़सम है इस वाज़ेह किताब की (2) कि हमने इसको अ़रबी ज़बान का क़ुरआन बनाया ताकि (ऐ अ़रब वालो!) तुम (आसानी से) समझ लो। (3) और वह हमारे पास लौहे-महफ़ूज़ में बड़े रुतबे की और हिक्मत से भरी हुई किताब है। (4) क्या हम तुमसे इस नसीहत (की किताब) को इस बात पर हटा लेंगे कि तुम (फ़रमाँबरदारी की) हद से गुज़रने वाले हो। (5) और हम पहले लोगों में बहुत-से नबी भेजते रहे हैं। (6) और उन लोगों के पास कोई	حٰمٓ○ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ○ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ○ وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ○ اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ○ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي

नबी ऐसा नहीं आया जिसके साथ उन्होंने मज़ाक़ उड़ाने का काम न किया हो। (7) फिर हमने उन लोगों को जो कि उनसे ज़्यादा ताक़तवर थे ग़ारत कर डाला, और पहले लोगों की (हलाक व ग़ारत करने की) यह हालत हो चुकी है। (8)	الْاَوَّلِيْنَ ٥ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ٥ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ٥

क़ुरआन हिक्मत से भरी किताब है

क़ुरआन की क़सम खाई जो वाज़ेह (स्पष्ट) है, जिसके मआनी रोशन हैं, जिसके अलफ़ाज़ नूरानी हैं, जो सबसे ज़्यादा फ़सीह व बलीग़ अ़रबी ज़बान में नाज़िल हुआ है। यह इसलिये कि लोग सोचें समझें, वअ़ज़ व नसीहत और इबरत (सबक़) हासिल करें। हमने इस क़ुरआन को अ़रबी भाषा में नाज़िल फ़रमाया है। जैसे एक और जगह है 'अ़रबी वाज़ेह ज़बान में इसे नाज़िल फ़रमाया है, इसका मर्तबा व सम्मान जो आ़लमे बाला (ऊपर की दुनिया) में है, इसे बयान फ़रमाया ताकि ज़मीन वाले इसकी क़द्र व क़ीमत और रुतबे व सम्मान को मालूम कर लें। फ़रमाया कि यह लौहे-महफ़ूज़ में लिखा हुआ है। "लदैना" से मुराद हमारे पास, "ल-अ़लिय्युन्" से मुराद मर्तबे वाला, इज़्ज़त वाला, शराफ़त और फ़ज़ीलत वाला है। "हकीम" से मुराद मोहकम व मज़बूत, जो बातिल के मिलने और नाहक़ से ख़ल्त-मल्त हो जाने से पाक है। ऊपर आयत में इस पाक कलाम की बुज़ुर्गी का बयान इन अलफ़ाज़ में है:

اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ.

एक और जगह है:

كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ........ الخ.

यानी यह क़ुरआने करीम लौहे-महफ़ूज़ में दर्ज है, इसे सिवाय पाक फ़रिश्तों के और कोई हाथ लगाने नहीं पाता। यह रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से उतरा हुआ है।

और फ़रमाया कि क़ुरआन नसीहत की चीज़ है जिसका जी चाहे इसे क़ुबूल करे। वह ऐसे सहीफ़ों में है जो इज़्ज़त व सम्मान वाले हैं, बुलन्द रुतबे वाले और मुक़द्दस हैं, जो ऐसे लिखने वालों के हाथों में हैं जो इज़्ज़त व सम्मान वाले और पाक हैं।

इन दोनों आयतों से उलेमा ने यह मसला निकाला है कि बिना वुज़ू के क़ुरआने करीम को हाथ में नहीं लेना चाहिये जैसा कि एक हदीस में भी आया है बशर्ते कि वह सही साबित हो जाये। इसलिये कि आ़लमे बाला (ऊपर की दुनिया) में फ़रिश्ते इस किताब की इज़्ज़त व ताज़ीम करते हैं जिसमें यह क़ुरआन लिखा हुआ है, पस इस आ़लम (यानी इनसानी दुनिया) में तो और भी ज़्यादा इसकी बहुत ज़्यादा तकरीम व ताज़ीम (इज़्ज़त व सम्मान) करनी चाहिये। क्योंकि यह ज़मीन वालों की तरफ़ ही भेजा गया है और इसका ख़िताब इन ही से है, तो इन्हें इसकी बहुत ज़्यादा ताज़ीम और अदब करना चाहिये। और साथ ही इसके अहकाम को तस्लीम करके उन पर आ़मिल बन जाना चाहिये। क्योंकि रब का फ़रमान है कि यह हमारे यहाँ उम्मुल-किताब में है और बुलन्द रुतबे वाला और हिक्मत वाला है। इसके बाद की आयत के एक मायने तो

Maktab_E_Ashraf

यह किये गये हैं कि क्या तुमने यह समझ रखा है कि बावजूद इताअ़त-गुज़ारी और फ़रमाँबरदारी न करने के हम तुमको छोड़ देंगे और तुम्हें अ़ज़ाब न करेंगे? दूसरे मायने यह हैं कि इस उम्मत के अगलों (पहले गुज़रे लोगों) ने जब इस क़ुरआन को झुठलाया, उसी वक़्त अगर यह उठा लिया जाता तो तमाम दुनिया हलाक कर दी जाती, लेकिन अल्लाह की बेहिसाब रहमत ने इसे पसन्द न फ़रमाया और बराबर बीस साल से ज़्यादा तक यह क़ुरआन उतरता रहा।

इसका मतलब यह है कि यह ख़ुदा का लुत्फ़ और उसकी रहमत है कि वह न मानने वालों के इनकार और नाफ़रमान लोगों की शरारत की वजह से उन्हें नसीहत और भलाई की बात कहनी नहीं छोड़ता, ताकि जो उनमें नेकी वाले हैं वे दुरुस्त हो जायें (यानी सही रास्ते पर आ जायें) और जो दुरुस्त नहीं होते उन पर हुज्जत पूरी हो जाये।

फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने पाक नबी हुज़ूरे पाक सल्ल. को तसल्ली देता है और फ़रमाता है कि आप अपनी क़ौम के झुठलाने पर न घबरायें, सब्र व बरदाश्त कीजिए। उनसे पहले की जो क़ौमें थीं उनके पास भी हमने अपने रसूल व नबी भेजे थे। और सबने ही अपने अपने नबियों का मज़ाक़ उड़ाया। फिर हमने उन्हें हलाक कर दिया। वे आपके ज़माने के लोगों से ज़्यादा ज़ोरावर (दबंग), हिम्मत वाले और क़वी थे। जैसे एक और आयत में है कि उन्होंने ज़मीन में चल-फिरकर नहीं देखा? कि उनसे अगले लोगों का क्या अन्जाम हुआ? जो उनसे तायदाद और क़ुव्वत में बहुत थे। और भी आयतें इस मज़मून की बहुत-सी हैं। फिर फ़रमाता है कि अगलों की मिसालें गुज़र चुकीं, यानी आ़दतें सज़ायें इबरतें, जैसे इस सूरत के आख़िर में फ़रमाया कि हमने उन्हीं गुज़रे हुए और बाद वालों के लिये इबरतें (सबक़ का ज़रिया) बना दिये। और जैसे फ़रमान है:

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِیْ.......... الخ.

यानी अल्लाह का तरीक़ा जो अपने बन्दों में पहले से चला आया है और तू उसे बदलता हुआ न पायेगा।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۙ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۚ وَالَّذِیْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝ وَالَّذِیْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ	और अगर आप उनसे पूछें कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया है, तो वे ज़रूर यही कहेंगे कि उनको ज़बरदस्त, जानने वाले (ख़ुदा तआ़ला) ने पैदा किया है। (9) जिसने तुम्हारे (आराम के) लिए ज़मीन को फ़र्श (के जैसा) बनाया (कि उसपर आराम करते रहो) और उसमें उसने तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँच सको। (10) और जिसने आसमान से पानी एक अन्दाज़ से बरसाया, फिर हमने उससे सूखी ज़मीन को (उसके मुनासिब) ज़िन्दा किया। इसी तरह तुम (भी अपनी क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (11)

Maktaba E Ashraf

كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ○ لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ○ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ○	और जिसने तमाम क़िस्में बनाईं और तुम्हारी वे कश्तियाँ और चौपाए बनाए जिन पर तुम सवार होते हो। (12) ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो, फिर जब उस पर बैठ चुको तो अपने रब की नेमत को दिल से याद करो, और (ज़बान से पसन्दीदगी के इज़हार के तौर पर) यूँ कहो कि उसकी ज़ात पाक है जिसने इन चीज़ों को हमारे बस में कर दिया, और हम तो ऐसे न थे जो इनको क़ाबू में कर लेते। (13) और हमको अपने रब की तरफ़ लौटकर जाना है। (14)

एक सवाल और उसका वास्तविक जवाब

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- ऐ नबी! अगर तुम इन मुश्रिक लोगों से पूछो तो ये इस बात का इक़रार करेंगे कि ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाला) अल्लाह तआ़ला है, फिर भी उसकी वह्दानियत (तन्हा और अकेला माबूद होने) को जानते और मानते हैं लेकिन उसकी इबादत में दूसरों को शरीक ठहरा रहे हैं। जिसने ज़मीन को फ़र्श और ठहरी हुई, साबित व मज़बूत बनाई, जिस पर तुम चलो-फिरो, रहो-सहो, उठो-बैठो, सोओ-जागो। हालाँकि यह ज़मीन ख़ुद पानी पर है। लेकिन मज़बूत पहाड़ों के साथ इसे हिलने-जुलने से रोक दी है और इसमें रास्ते बना दिये हैं ताकि तुम एक से दूसरे शहर को एक मुल्क से दूसरे मुल्क को पहुँच सको। उसी ने आसमान से ऐसे अन्दाज़े से बारिश बरसाई जो काफ़ी हो जाये, खेतियाँ और बाग़ात हरे-भरे रहें, फैलें फूलें। और पानी तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के पीने में भी आये, फिर उस बारिश से मुर्दा ज़मीन ज़िन्दा कर दी, ख़ुश्की तरी से तब्दील हो गयी, जंगल लहलहा उठे, फल-फूल उगने लगे और तरह-तरह के ख़ुशगवार मेवे पैदा हो गये।

फिर इसे दलील बनाई मुर्दा इनसानों के जी उठने की और फ़रमाया इसी तरह तुम क़ब्रों से निकाले जाओगे। उसने हर क़िस्म के जोड़े पैदा किये, खेतियाँ फल-फूल तरकारियाँ और मेवे वग़ैरह तरह-तरह की चीज़ें उसने पैदा कर दीं। विभिन्न और अनेक क़िस्म के हैवानात तुम्हारे नफ़े के लिये पैदा किये। कश्तियाँ समुद्रों के सफ़र के लिये और चौपाये (पशु) जानवर ख़ुश्की के सफ़र को मुहैया कर दिये। उनमें से बहुत से जानवरों के गोश्त तुम खाते हो, बहुत से तुम्हें दूध देते हैं, बहुत से तुम्हारी सवारियों में काम आते हैं। तुम्हारे बोझ ढोते हैं। तुम उन पर सवारियाँ लेते हो और ख़ूब मज़े से उन पर सवार होते हो। अब तुम्हें चाहिये कि उन पर सवार होने के बाद अपने रब की नेमत याद करो, उसने कैसे-कैसे ताक़तवर वजूद तुम्हारे क़ाबू में कर दिये और यूँ कहो कि वह ख़ुदा पाक ज़ात वाला है जिसने उसे हमारे क़ाबू में कर दिया, अगर वह इसे हमारा ताबे और क़ब्ज़े में न करता तो हम इस क़ाबिल न थे, न हममें इतनी ताक़त थी। और हम अपनी मौत के बाद उसी की तरफ़ जाने वाले हैं। इस आने जाने से और इस मुख़्तसर सफ़र से आख़िरत के सफ़र को याद करो जैसे कि दुनिया के तोशे का ज़िक्र करके ख़ुदा तआ़ला ने आख़िरत की जानिब तवज्जोह

दिलाई और फ़रमाया तोशा (सफ़र का सामान) ले लिया करो। लेकिन बेहतरीन तोशा आख़िरत का तोशा है। और दुनियावी लिबास के ज़िक्र के मौक़े पर आख़िरत के लिबास की तरफ़ मुतवज्जह किया और फ़रमाया तक़्वे और परहेज़गारी का लिबास बेहतर है। अब हम वे हदीसें लिखते हैं जिनमें सवार होने के वक़्त की दुआओं का ज़िक्र किया गया है।

Maktab E Ashraf

हज़रत अ़ली बिन रबीआ़ फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु जब अपनी सवारी पर सवार होने लगे तो रकाब में पैर रखते ही फ़रमायाः

"बिस्मिल्लाहि" जब जमकर बैठ गये तो फ़रमायाः

"अल्हम्दु लिल्लाहि सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन। व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून"।

फिर तीन मर्तबा "अल्हम्दु लिल्लाहि" कहा और तीन मर्तबा "अल्लाहु अक्बर" कहा फिर फ़रमायाः

"सुब्हान-क ला इला-ह इल्ला अन्-त क़द् ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर् ली"।

फिर हंस दिये। मैंने पूछा अमीरुल-मोमिनीन! आप हंसे क्यों? फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से यही सवाल किया, आपने जवाब दिया कि जब बन्दे के मुँह से अल्लाह तआ़ला सुनता है कि वह कहता है "रब्बिग़्फ़िर् ली" (मेरे रब मुझे बख़्श दे) तो वह बहुत ही ख़ुश होता है और फ़रमाता है मेरा बन्दा जानता है कि मेरे सिवा गुनाहों को कोई बख़्श नहीं सकता। यह हदीस अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई और मुस्नद अहमद में भी है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही बतलाते हैं।

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. को अपनी सवारी पर अपने पीछे बैठाया, जब वह ठीक तरह बैठ गये तो आपने तीन मर्तबा "अल्लाहु अक्बर" कहा, तीन मर्तबा "अल्हम्दु लिल्लाह" कहा और तीन मर्तबा "सुब्हानल्लाह" कहा और एक मर्तबा "ला इला-ह इल्लल्लाहु" कहा। फिर उस पर चित लैटने की तरह होकर हंस दिये और हज़रत अ़ब्दुल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाने लगे, जो शख़्स किसी जानवर पर सवार होकर इस तरह करे जिस तरह मैंने किया तो अल्लाह तआ़ला उसकी तरफ़ मुतवज्जह होकर इसी तरह हंस देता है जिस तरह मैं तेरी तरफ़ देखकर हंसा। (मुस्नद अहमद)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल. जब कभी अपनी सवारी पर सवार होते तो तीन मर्तबा तकबीर कहकर क़ुरआन की इन दोनों आयतों की तिलावत करते (यानी "सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन। व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून" की) फिर यह दुआ माँगतेः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیٓ اَسْاَلُكَ فِی سَفَرِیْ هٰذَاالْبِرَّ وَالتَّقْوٰی وَمِنَ الْعَمَلِ مَاتَرْضٰی. اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا السَّفَرَ وَاطْوِ لَنَا الْبُعْدَ. اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِی الْاَهْلِ. اَللّٰهُمَّ اصْحَبْنَا فِیْ سَفَرِنَا وَاخْلُفْنَا فِیٓ اَهْلِنَا.

या अल्लाह! मैं तुझसे अपने इस सफ़र में नेकी और परहेज़गारी का तालिब हूँ और उन आमाल का जिनसे तू ख़ुश हो जाये। ख़ुदाया! हम पर हमारा सफ़र आसान कर दे और हमारे लिये दूरी को लपेट दे, परवर्दिगार तू ही सफ़र का साथी और अहल-व-अ़याल (घर वालों और बाल-बच्चों) का निगहबान है, मेरे

Maktab E Ashraf

माबूद हमारे सफ़र में हमारा साथ दे और हमारे घरों में हमारी जानशीनी फ़रमा।

और जब आप सफ़र से वापस घर की तरफ़ लौटते तो फ़रमातेः

اٰيِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ.

'आइबू-न ताइबू-न इन्शा-अल्लाहु आ़बिदू-न लि-रब्बिना हामिदून'

यानी वापस लौटने वाले तौबा करने वाले, इन्शा-अल्लाह इबादतें करने वाले अपने रब की तारीफ़ें करने वाले। (मुस्लिम, अबू दाऊद व नसाई वग़ैरह)

अबू लास ख़ुज़ाई रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि सदक़े के ऊँटों में से एक ऊँट रसूलुल्लाह सल्ल. ने हमारी सवारी के लिये हमें अ़ता फ़रमाया कि हम उस पर सवार होकर हज को जायें, हमने कहा या रसूलल्लाह! हम नहीं देखते कि आप हमें इस पर सवार करायें। आपने फ़रमाया सुनो! हर ऊँट की कोहान (कमर पर उभरे हुए हिस्से) में शैतान होता है, तुम जब उस पर सवार होओ तो जिस तरह मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ अल्लाह तआ़ला का नाम याद करो (यानी तुम अल्लाह की हिफ़ाज़त में आने और शैतान की दुश्मनी व मक्कारी से बचने के लिये अल्लाह को याद कर लो, दुआ़यें पढ़ लो)। फिर उसे अपने लिये ख़ादिम बना लो। याद रखो कि अल्लाह तआ़ला ही सवार कराता है। (मुस्नद अहमद)

हज़रत अबू लास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का नाम मुहम्मद बिन अस्वद बिन ख़लफ़ है। मुस्नद की एक और हदीस में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर ऊँट की पीठ पर शैतान है, तो तुम जब उस पर सवारी करो तो अल्लाह का नाम ले लिया करो, फिर अपनी हाजतों में कमी न करो।

وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ؕ اِنَّ
الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ؕ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا ع ١٥ ٧
يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصْفٰكُمْ بِالْبَنِيْنَ ۝ وَاِذَا
بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا
ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ۝ اَوَمَنْ
يُّنَشَّؤُا فِى الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِى الْخِصَامِ
غَيْرُ مُبِيْنٍ ۝ وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ
عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ

और उन लोगों ने ख़ुदा के बन्दों में से (जो मख़्लूक़ होते हैं) ख़ुदा का हिस्सा ठहरा दिया, वाक़ई इनसान खुला नाशुक्रा है। (15)

क्या अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ात में से बेटियाँ पसन्द कीं और तुमको बेटों के साथ मख़्सूस किया (16) हालाँकि जब उनमें से किसी को उस चीज़ के होने की ख़बर दी जाती है जिस को ख़ुदा रहमान का नमूना (यानी औलाद) बना रखा है, (मुराद बेटी है) तो (इस क़द्र नाराज़ हो कि) सारे दिन उसका चेहरा बेरौनक़ रहे और वह दिल ही दिल में घुटता रहे। (17) क्या जो कि (आ़दतन) बनाव-सिंघार में पले-बढ़े और वह बहस करने में बयान की क़ुव्वत (भी) न रखे। (18) और उन्होंने फ़रिश्तों को जो कि ख़ुदा के बन्दे हैं औरत क़रार दे रखा है। क्या ये उनकी पैदाईश के वक़्त मौजूद थे? उनका यह दावा लिख लिया जाता है और

(क़ियामत में) उनसे पूछताछ होगी। (19) और वे लोग यूँ कहते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला चाहता तो हम उनकी इबादत न करते। उनको इसकी कुछ तहक़ीक़ नहीं, बिल्कुल बिना तहक़ीक़ के बात कर रहे हैं। (20)	سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْئَلُوْنَ ٥ وَقَالُوْا لَوْشَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰـهُمْ ط مَالَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ق اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ٥

Maktab E Ashraf

एक कितना बड़ा बोहतान

अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों के उस बोहतान और झुठलाने को बयान फ़रमाता है जो उन्होंने ख़ुदा पर बाँध रखा है। जिसका सूरः अन्आ़म की इस आयत में ज़िक्र है:

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ.........الخ.

(सूरः अन्आ़म आयत 136)

यानी अल्लाह तआ़ला ने जो खेती और मवेशी (पशु और जानवर) पैदा किये हैं उन पर मुश्रिकों ने उनमें से कुछ हिस्सा तो ख़ुदा का मुक़र्रर किया और फिर ख़ुद ही कह दिया कि यह तो अल्लाह का है और यह हमारे माबूदों का। अब जो उनके माबूदों के नाम का है वह तो अल्लाह की तरफ़ नहीं पहुँचता, और जो चीज़ अल्लाह की तरफ़ होती है वह उनके माबूदों को पहुँच जाती है। कैसी बुरी उनकी यह तजवीज़ है? इसी तरह मुश्रिकों ने लड़के लड़कियों की तक़सीम करके लड़कियाँ तो अल्लाह के लिये साबित कीं जो उनके ख़्याल में ज़लील व ख़्वार (यानी समाजी एतिबार से कम दर्जे की) थीं और लड़के अपने लिये पसन्द किये जैसा कि बारी तआ़ला का फ़रमान है:

اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى. تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى.

क्या तुम्हारे लिये तो बेटे हों और ख़ुदा के लिये बेटियाँ? यह तो बड़ी बेढंगी तक़सीम है।

पस यहाँ भी फ़रमाता है कि उन मुश्रिकों ने ख़ुदा के बन्दों को ख़ुदा का हिस्सा क़रार दे लिया है। फिर फ़रमाता है कि उनकी इस बदतमीज़ी को देखो कि जब ये लड़कियों को ख़ुद अपने लिये नापसन्द करते हैं फिर ख़ुदा के लिये पसन्द करते हैं? उनकी यह हालत है कि जब उनमें से किसी को यह ख़बर पहुँचती है कि तेरे यहाँ लड़की हुई तो मुँह बसोर लेता है, गोया एक शर्मनाक ग़म देने वाली ख़बर सुन ली। किसी से ज़िक्र तक नहीं करता, अन्दर ही अन्दर घुटता रहता है, ज़रा सा मुँह निकल आता है। फिर अपनी पूरी बेवक़ूफ़ी का मुज़ाहरा (प्रदर्शन) करने बैठता है और कहता है कि अल्लाह की लड़कियाँ हैं। यह ख़ूब मज़े की बात है कि ख़ुद जिस चीज़ से घबरायें ख़ुदा के लिये वह साबित करें।

फिर फ़रमाता है कि औरतें जो नाक़िस समझी जाती हैं जिनके नुक़सान की तलाफ़ी ज़ेवरात और सजावट व सिंगार से की जाती है और बचपन से मरते दम तक वह बनाव-सिंगार की मोहताज समझी जाती हैं। फिर बहस-मुबाहसे और लड़ाई-झगड़े के वक़्त उनकी ज़बान नहीं चलती, दलील नहीं दे सकतीं, आ़जिज़ रह जाती हैं, मग़लूब हो जाती हैं, ऐसी चीज़ को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मन्सूब करते हैं जो ज़ाहिरी और बातिनी नुक़सान अपने अन्दर रखती हैं, जिनके ज़ाहिरी नुक़सान को सिंगार और ज़ेवरात से दूर करने की कोशिश की जाती है, जैसा कि अ़रब शायरों के शे'रों में है:

Maktab E Ashraf

وَمَا الْحُلِيُّ اِلَّا زِيْنَةٌ مِّنْ نَقِيْصَةٍ ☆ يُتَمِّمُ مِنْ حُسْنٍ اِذَا الْحُسْنُ قَصَّرَا

وَاَمَّا اِذَا كَانَ الْجَمَالُ مُوَفَّرًا ☆ كَحُسْنِكِ لَنْ يَّحْتَجْ اِلٰى اَنْ يُّزَوَّرَا

यानी ज़ेवरात हुस्न की कमी को पूरा करने के लिये होते हैं, जमाल को ज़ेवरात की क्या ज़रूरत? और बातिनी नुक़सान भी हैं जैसे बदला न मिल सकना न ज़बान से न हिम्मत से, इस मज़मून को भी अ़रब वालों ने अपने श'रों में अदा किया है कि यह सिर्फ़ रोने धोने से ही मदद कर सकती है और चोरी-छुपे कोई भलाई कर सकती है।

फिर फ़रमाता है कि उन्होंने फ़रिश्तों को औ़रतें समझ रखा है, उनसे पूछो कि क्या जब वे पैदा हुए तो तुम वहाँ मौजूद थे? तुम यह न समझो कि हम तुम्हारी इन बातों से बेख़बर हैं। सब हमारे पास लिखी हुई हैं और क़ियामत के दिन तुमसे इनका सवाल भी होगा, जिससे तुम्हें डरना और होशियार रहना चाहिये। फिर उनकी मज़ीद हिमाक़त (नादानी और बेवक़ूफ़ी) बयान फ़रमाता है कि कहते हैं कि हमने फ़रिश्तों को औ़रतें समझा, फिर उनकी मूर्तियाँ बनायीं और फिर उन्हें पूज रहे हैं। अगर ख़ुदा चाहता तो हममें उनमें रोक और बाधा हो जाता और हम उन्हें पूज रहे हैं और ख़ुदा हममें और उनमें रोक और बाधा नहीं होता, तो ज़ाहिर है कि हमारी यह पूजा ग़लती नहीं बल्कि सही है।

पस पहली ख़ता तो उनकी यह है कि ख़ुदा के लिये औलाद साबित की, दूसरी ख़ता यह है कि फ़रिश्तों को ख़ुदा की लड़कियाँ क़रार दीं, तीसरी ख़ता यह है कि उन्हीं की पूजा-पाठ शुरू कर दी, जिस पर कोई दलील व हुज्जत नहीं, सिर्फ़ अपने बड़ों, अगलों और बाप-दादाओं की कोरी तक़लीद (पैरवी) है। चौथी ख़ता यह की कि उसे ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर माना और इससे यह नतीजा निकाला कि अगर रब इससे नाख़ुश होता तो हमें इतनी ताक़त ही न देता कि हम इनकी पूजा और इबादत करें, और यह उनकी खुली जहालत व नादानी है। अल्लाह तआ़ला इससे सरासर नाख़ुश है। एक-एक पैग़म्बर इसकी तरदीद करता रहा, एक-एक किताब इसकी बुराई बयान करती रही। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ........ الخ.

हर उम्मत में हमने रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और उसके सिवा दूसरे की इबादत से बचो। फिर बाज़ तो ऐसे निकले जिन्हें ख़ुदा हिदायत की और बाज़ ऐसे भी निकले जिन पर गुमराही की बात साबित हो चुकी, तुम ज़मीन पर चल-फिरकर देखो कि झुठलाने वालों का कैसा बुरा हश्र हुआ।

एक और आयत में है:

وَاسْئَلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَا.......... الخ.

यानी उन रसूलों से पूछ ले जिन्हें हमने तुझसे पहले भेजा था कि क्या हमने अपने सिवा दूसरों की इबादत और पूजा की इजाज़त दी थी?

फिर फ़रमाता है यह दलील तो उनकी बड़ी बुरी है और बोदी यूँ है कि यह बेइल्म हैं, बातें बना लेते हैं और झूठ बोल लेते हैं। यानी ये अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत को नहीं जानते।

أَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ
مُسْتَمْسِكُوْنَ ○ بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ
اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ
مُّهْتَدُوْنَ ○ وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ
فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا
وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى
اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ○ قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ
بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ۭ
قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ○
فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِيْنَ ○ ع ٢ ٨

क्या हमने उनको इस (क़ुरआन) से पहले कोई किताब दे रखी है कि ये उससे दलील पकड़ते हैं। (21) बल्कि वे कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादाओं को एक तरीक़े पर पाया है और हम भी उनके पीछे-पीछे रास्ता चल रहे हैं। (22) और इसी तरह हमने आप से पहले किसी बस्ती में कोई पैग़म्बर नहीं भेजा मगर वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हमने अपने बाप-दादाओं को एक तरीक़े पर पाया है और हम भी उन्हीं के पीछे-पीछे चले जा रहे हैं। (23) (इस पर) उनके पैग़म्बर ने कहा कि क्या (बाप-दादा के तरीक़े ही की पैरवी किए जाओगे) अगरचे मैं उससे अच्छा मक़सूद पर पहुँचा देने वाला तरीक़ा तुम्हारे पास लाया हूँ कि जिस पर तुमने अपने बाप-दादाओं को पाया है। वे (बैर और दुश्मनी के तौर पर) कहने लगे कि हम तो इस दीन को मानते ही नहीं जिसको देकर तुमको भेजा गया है। (24) सो हमने उनसे इन्तिक़ाम लिया, सो देखिए झुठलाने वालों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ। (25)

Maktab E Ashraf

बाप-दादा के मज़हब की पैरवी

जो लोग अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत करते हैं उनका बेदलील होना बयान फ़रमाया जा रहा है, कि क्या हमने उनको इस शिर्क से पहले कोई किताब दे रखी है जिससे वे सनद लाते हों। यानी हक़ीक़त में ऐसा नहीं, जैसा कि फ़रमायाः

اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا........ الخ.

क्या हमने उन पर ऐसी दलील उतारी है जो उनसे शिर्क को कहे? यानी ऐसा नहीं है।

फिर फ़रमाता है कि यह तो नहीं बल्कि शिर्क की सनद उनके पास एक और सिर्फ़ एक है और वह अपने बाप-दादों की तक़लीद (पैरवी और अनुसरण), कि वे जिस दीन पर थे हम उसी पर हैं और रहेंगे। उम्मत से मुराद यहाँ दीन है। एक और आयत में भी इससे मुराद दीन है, आयत यह हैः

اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً........ الخ.

(सूरः अम्बिया आयत 92) साथ ही कहा कि हम उनकी राहों पर चल रहे हैं।

पस उनके बेदलील दावे को सुनाकर अब अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यही रविश और चलन उनसे

Maktab E Ashraf

अगलों का भी रहा, उनका जवाब भी नबियों की तालीम के मुक़ाबले में यही तक़लीद (पैरवी) को पेश करना था। एक और जगह है:

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ.

यानी इनसे पहलों के पास भी जो रसूल आये उनकी उम्मतों ने उन्हें भी जादूगर और दीवाना बतलाया। पस गोया कि अगले पिछलों के मुँह में यह अलफ़ाज़ भर गये हैं, हक़ीक़त यह है कि सरकशी में ये सब एक जैसे हैं। फिर इरशाद है कि गोया मालूम कर लें और जान लें कि नबियों की तालीम बाप-दादों की तक़लीद (पैरवी) से ज़्यादा बेहतर है। फिर भी उनका बुरा इरादा, ज़िद और हठधर्मी उन्हें हक़ के क़बूल करने की तरफ़ नहीं आने देती। पस ऐसे ज़िद्दी लोगों से हम भी उनकी बातिल-परस्ती का इन्तिक़ाम नहीं छोड़ते, विभिन्न सूरतों से उन्हें तबाह व बरबाद कर दिया करते हैं। उनके क़िस्से मज़कूर व मशहूर हैं, ध्यान व ग़ौर के साथ देख-पढ़ लो और सोच-समझ लो कि किस तरह काफ़िर बरबाद किये जाते हैं और किस तरह मोमिन निजात पाते हैं।

और (वह वक़्त भी क़ाबिले ज़िक्र है) जब कि इब्राहीम ने अपने बाप से और अपनी क़ौम से फ़रमाया, मैं उन चीज़ों (की इबादत) से बेज़ार हूँ जिनकी तुम इबादत करते हो। (26) मगर हाँ, जिसने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझको रास्ता दिखाता है। (27) और वह इस (अ़क़ीदे) को अपनी औलाद में (भी) एक क़ायम रहने वाली बात कर गये। ताकि (हर ज़माने में मुश्रिक) लोग (शिर्क से) बाज़ आते रहें। (28) बल्कि मैंने उनको और उनके बाप-दादाओं को (दुनिया का) ख़ूब सारा सामान दिया, यहाँ तक कि उनके पास सच्चा क़ुरआन और साफ़-साफ़ बतलाने वाला रसूल आया। (29) और जब उनके पास यह सच्चा क़ुरआन पहुँचा तो कहने लगे कि यह तो जादू है और हम इसको नहीं मानते। (30) और कहने लगे कि यह क़ुरआन (अगर अल्लाह का कलाम है तो) इन दोनों बस्तियों (मक्का और ताईफ़ के रहने वालों) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नाज़िल नहीं किया गया? (31) क्या ये लोग आपके रब की (ख़ास) रहमत (यानी नुबुव्वत) को तक़सीम करना चाहते हैं। दुनियावी ज़िन्दगी में (तो)

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ○ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ○ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ○ بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ○ وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ○ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ○ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ

Miftah E Ashraf

بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ
بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا
يَجْمَعُوْنَ ○ وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً
وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ
لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّ مَعَارِجَ
عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ○ۙ وَلِبُيُوْتِهِمْ
اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ○ۙ وَزُخْرُفًا ؕ
وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ
وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ○ع ٣ ع١٠ ٩

उनकी रोज़ी हम (ही) ने तक़सीम कर रखी है, और हमने एक को दूसरे पर बरतरी दे रखी है, ताकि एक-दूसरे से काम लेता रहे (और दुनिया का इन्तिज़ाम क़ायम रहे), और आपके रब की रहमत इस (दुनियावी माल व असबाब) से कहीं बेहतर है, जिसको ये लोग समेटते फिरते हैं। (32) और अगर यह बात (अपेक्षित) न होती कि तमाम आदमी एक ही तरीक़े के हो जाएँगे तो जो लोग अल्लाह तआ़ला के साथ कुफ़्र करते हैं उनके लिए उनके घरों की छतें हम चाँदी की कर देते, और (यह भी कि) ज़ीने भी जिन पर वे चढ़ा (उतरा) करते हैं। (33) और उनके घरों के किवाड़ भी और तख़्त भी जिन पर तकिया लगाकर बैठते हैं। (34) और (यही चीज़ें) सोने की भी हैं, और यह सब (साज़ व सामान) कुछ भी नहीं सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी की चन्द दिन की कामयाबी है, (फिर फ़ना आख़िर फ़ना,) और आख़िरत आपके रब के यहाँ ख़ुदा तआ़ला से डरने वालों के लिए है। (35)

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का नारा-ए-हक़

क़ुरैश के काफ़िर नसब और दीन के एतिबार से चूँकि ख़लीले ख़ुदा हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ मन्सूब थे इसलिये अल्लाह तआ़ला ने सुन्नते इब्राहीमी उनके सामने रखी जो अपने बाद आने वाले तमाम नबियों के बाप, ख़ुदा के रसूल, तौहीद वालों के इमाम थे (यानी अगर तुम बाप-दादा के दीन पर ही चलते हो तो तुम लोग हज़रत इब्राहीम की नस्ल से हो, वह तुम्हारे पुर्खों में हैं तो उनकी पैरवी करो, उनके दीन और उनकी तालीमात पर चलो)। उन्होंने खुले लफ़्ज़ों में न सिर्फ़ अपनी क़ौम से बल्कि अपने बाप से भी कह दिया कि मुझमें और तुममें कोई ताल्लुक़ नहीं। मैं सिवाय अपने सच्चे ख़ुदा के जो मेरा ख़ालिक़ और मेरा हादी (हिदायत देने वाला) है, तुम्हारे इन माबूदों से बेज़ार हूँ, सबसे बेताल्लुक़ हूँ।

अल्लाह तआ़ला ने भी उनकी इस जुर्रत, हक़-गोई और तौहीद के जोश का बदला यह दिया कि कलिमा-ए-तौहीद को उनकी औलाद में हमेशा के लिये बाक़ी रख दिया। नामुम्किन है कि आपकी औलाद इस पाक कलिमा के क़ायल न हों, उन्हीं की औलाद इस तौहीदी कलिमे की इशाअ़त करेगी और सईद (नेक) रूहें और नेक-नसीब लोग इसी घराने से तौहीद सीखेंगे। ग़र्ज़ कि इस्लाम और तौहीद का मुअ़ल्लिम (सिखाने और फैलाने वाला) यह घराना क़रार पाया।

फिर फ़रमाता है, बात यह है कि ये काफ़िर कुफ़्र करते रहे और मैं इन्हें दुनिया का माल व दौलत देता

Maktab E Ashraf

रहा, ये और बहकते गये और इस क़द्र मस्त बन गये कि जब इनके पास सच्चा दीन और हक़ कहने वाला रसूल आये तो वे बोले कि अल्लाह का कलाम और नबियों के मोजिज़े जादू हैं और हम इनके मुन्किर (इनकार करते) हैं। नाफ़रमानी व तकब्बुर और ज़िद में आकर कुफ़्र कर बैठे, दुश्मनी और बुग़्ज़ से हक़ के मुक़ाबले पर उतर आये और बातें बनाने लगे कि क्यों साहिब! अगर यह क़ुरआन सच-मुच ख़ुदा ही का कलाम है तो फिर मक्का और ताईफ़ (मक्का के क़रीब एक शहर, जहाँ बड़े-बड़े मालदार और ख़ुशहाल लोग रहते थे) के किसी रईस (सरदार), किसी बड़े आदमी, किसी दुनियावी शान व शौकत वाले पर क्यों न उतरा? (गोया कि वे लोग समझते थे कि नुबुव्वत भी किसी मालदार को मिलनी चाहिये) और बड़े आदमी से उनकी मुराद वलीद बिन मुग़ीरा, उरवा बिन मसऊद, उमैर बिन अ़मर, उतबा बिन रबीआ़, हबीब बिन अ़मर, इब्ने अ़ब्दे यालैल, किनाना बिन अ़मर वग़ैरह से थी।

ग़र्ज़ यह थी कि इन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े मर्तबे के आदमी पर क़ुरआन नाज़िल होना चाहिये था। इस एतिराज़ के जवाब में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि क्या रहमते ख़ुदावन्दी के ये मालिक हैं? जो ये उसे तक़सीम करने बैठे हैं। अल्लाह की चीज़ अल्लाह की मिल्कियत, वह जिसे चाहे दे, फिर कहाँ उसका इल्म और कहाँ तुम्हारा इल्म? उसे बख़ूबी (अच्छी तरह) मालूम है कि अल्लाह की रिसालत का हक़दार सही मायने में कौन है। यह नेमत उसी को दी जाती है जो तमाम मख़्लूक़ से ज़्यादा पाक-दिल हो, सबसे ज़्यादा पाक-नफ़्स हो, सबसे बढ़कर अशरफ़ (सम्मानित) घर का हो और सबसे ज़्यादा पाक असल (यानी ख़ानदान) का हो। फिर फ़रमाता है कि ये रहमते ख़ुदा के तक़सीम करने वाले कहाँ से हो गये? अपनी रोज़ियाँ भी उनके अपने क़ब्ज़े की नहीं। वह भी उनमें हम ही बाँटते हैं। और फ़र्क़ व तफ़ावुत के साथ जिसे जब जितना चाहें दें, जिससे जब जो चाहें छीन लें। अ़क़्ल व समझ, क़ुव्वत व ताक़त वग़ैरह भी हमारी ही दी हुई है और इसमें भी अलग-अलग दर्जे हैं। इसमें एक हिक्मत यह भी है कि एक दूसरे से काम ले, क्योंकि इसकी उसे और उसकी इसे ज़रूरत और हाजत रहती है। एक दूसरे के मातहत रहे।

फिर इरशाद हुआ कि तुम जो कुछ दुनिया में जमा कर रहे हो इससे रब की रहमत बहुत ही बेहतर और अफ़ज़ल है। फिर फ़रमाता है कि अगर यह बात न होती कि लोग माल को मेरा फ़ज़्ल और मेरी रज़ामन्दी की दलील जानकर मालदारों की तरह बन जायें तो मैं तो काफ़िरों को यह ख़सीस दुनिया इतनी देता कि उनके घर की छतें बल्कि उनके कोठों की सीढ़ियाँ भी चाँदी की होतीं, जिनके ज़रिये ये बालाख़ानों पर पहुँचते और उनके घरों के दरवाज़े उनके बैठने के तख़्त भी चाँदी के होते और सोने के भी। मेरे नज़दीक दुनिया कोई क़द्र की चीज़ नहीं, यह फ़ानी है, ख़त्म होने वाली है। अगर यह सारी मिल जाये जब भी आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत ही कम है। उन लोगों की अच्छाईयों के बदले उन्हें यहीं मिल जाते हैं। खाने पीने रहने सहने बरतने बरताने में कुछ सहूलियतें उनको पहुँच जाती हैं, आख़िरत में तो वे बिल्कुल ख़ाली हाथ होंगे। एक नेकी बाक़ी न होगी जो ख़ुदा से कुछ हासिल कर सकें, जैसा कि सही हदीस में है।

एक और हदीस में है कि अगर दुनिया की क़द्र ख़ुदा के नज़दीक एक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो किसी काफ़िर को यहाँ पानी का एक घूँट भी न पिलाता। फिर फ़रमाया कि आख़िरत की भलाईयाँ सिर्फ़ उनके लिये हैं जो दुनिया में फूँक-फूँककर क़दम रखते रहे, डर-डरकर ज़िन्दगी गुज़ारते रहे। वहाँ रब की ख़ास नेमतें और मख़्सूस रहमतें जो उन्हें मिलेंगी उनमें कोई और उनका शरीक न होगा। चुनाँचे जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आपके बालाख़ाने (ऊपर के कमरे) में गये और आपने उस वक़्त अपनी पाक बीवियों से 'ईला' कर रखा था (यह क़सम की एक क़िस्म है) कि

Muftah E Ashraf

आप एक चटाई के टुकड़े पर लेटे हुए हैं, जिसके निशान आपके जिस्म मुबारक पर ज़ाहिर हैं। हज़रत उमर रज़ि. रो दिये और कहा या रसूलल्लाह! ये हैं क़ैसर व किसरा (ईरान व रोम के बादशाह, यानी दुनिया के बड़े लोग) किस आन-बान से और किस शान व शौकत से ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और आप ख़ुदा के बरगुज़ीदा (मक़बूल, चुने हुए) प्यारे रसूल होकर किस हाल में हैं। हुज़ूर या तो तकिया लगाये हुए बैठे थे या फ़ौरन तकिया छोड़ दिया और फ़रमाने लगे ऐ इब्ने ख़त्ताब! क्या तू शक में है? ये तो वे लोग हैं जिनकी नेकियाँ जल्दी से उन्हें यहीं मिल गयीं। एक और रिवायत में है कि क्या तू इससे ख़ुश नहीं कि उन्हें दुनिया मिले और हमें आख़िरत?

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) वग़ैरह में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि सोने चाँदी के बरतनों में मत खाओ पियो, ये दुनिया में उनके लिये हैं और आख़िरत में हमारे लिये हैं। दुनिया में ये उनके लिये यूँ हैं कि रब की नज़रों में दुनिया ज़लील व ख़्वार है। तिर्मिज़ी वग़ैरह की एक हसन सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अगर दुनिया अल्लाह तआ़ला के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी वक़्अ़त रखती तो किसी काफ़िर को अल्लाह तआ़ला एक घूँट पानी न पिलाता। (इससे पता चलता है कि माल की मुहब्बत को दिल से बिल्कुल निकाल देना चाहिये)।

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ○ وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ○ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ○ وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ○ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ○ اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ○ فَاسْتَمْسِكْ

और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की नसीहत (यानी क़ुरआन) से अंधा बन जाए हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, सो वह (हर वक़्त) उसके साथ रहता है। (36) और वे उनको (हक़) रास्ते से रोकते रहते हैं। और ये लोग ख़्याल करते हैं कि वे (सही) रास्ते पर हैं। (37) यहाँ तक कि जब ऐसा शख़्स हमारे पास आएगा तो (उस शैतान से) कहेगा कि काश! मेरे और तेरे दरमियान में (दुनिया में) पूरब और पश्चिम के बराबर फ़ासला होता कि (तू तो) बुरा साथी था। (38) और (उनसे कहा जाएगा कि) जबकि तुम (दुनिया में) कुफ़्र कर चुके थे, तो आज यह बात तुम्हारे काम न आएगी कि तुम (और शयातीन) सब अ़ज़ाब में शरीक हो। (39) सो क्या आप (ऐसे) बहरों को सुना सकते हैं या (ऐसे) अन्धों को और उन लोगों को जो खुली गुमराही में हैं, राह पर ला सकते हैं? (40) पस अगर हम (दुनिया से) आपको उठा लें तो भी हम उनसे बदला लेने वाले हैं। (41) या अगर उनसे जो हमने अ़ज़ाब का वायदा कर रखा है वह आपको (भी) दिखला दें तब भी (कुछ बईद नहीं, क्योंकि) हमको उन पर हर

Maktab E Ashraf

بِالَّذِیْٓ اُوْحِیَ اِلَیْکَ ۚ اِنَّکَ عَلٰی صِرَاطٍ
مُّسْتَقِیْمٍ ○ وَاِنَّهٗ لَذِکْرٌ لَّکَ وَلِقَوْمِکَ ۚ
وَسَوْفَ تُسْئَلُوْنَ ○ وَسْئَلْ مَنْ اَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِکَ مِنْ رُّسُلِنَآ ۫ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ
الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً یُّعْبَدُوْنَ ○ ع ٣ ١٠

तरह की क़ुदरत है। (42) तो आप इस क़ुरआन पर क़ायम रहिए जो आप पर 'वही' के ज़रिये से नाज़िल किया गया है, आप बेशक सीधे रास्ते पर हैं। (43) और यह क़ुरआन आपके लिए और आपकी क़ौम के लिए बेशक बड़े शर्फ़ "यानी इज़्ज़त व सम्मान" की चीज़ है, और जल्दी ही तुम सब पूछे जाओगे। (44) और आप उन सब पैग़म्बरों से जिनको हमने आपसे पहले भेजा है, पूछ लीजिए, क्या हमने ख़ुदा-ए-रहमान के सिवा दूसरे माबूद ठहरा दिए थे कि उनकी इबादत की जाए। (45)

अल्लाह के ज़िक्र से ग़फ़लत

इरशाद होता है कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला रहीम व करीम के ज़िक्र से ग़फ़लत व बेरग़बती करे उस पर शैतान क़ाबू पा लेता है (यानी अल्लाह का ज़िक्र इनसान और शैतान के बीच एक आड़ है, अगर इनसान अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हो जाये तो यह पर्दा हट जाता है और शैतान उस पर क़ाबू पा लेता है) और उसका साथी बन जाता है। आँख की रोशनी की कमी को अ़रबी ज़बान में 'अ़शिय्युन फ़िल-ऐन' कहते हैं। यही मज़मून क़ुरआने करीम की और भी बहुत सी आयतों में है। जैसे फ़रमायाः

وَمَنْ یُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ........ الخ.

यानी जो शख़्स हिदायत ज़ाहिर हो चुकने के बाद अल्लाह के रसूल की मुख़ालफ़त करके मोमिनों की राह (यानी दीन इस्लाम) के सिवा किसी और राह की पैरवी करे हम उसे नहीं छोड़ेंगे और जहन्नम में पहुँचा देंगे, जो बड़ी बुरी जगह है। एक और आयत में इरशाद हैः

فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ.

यानी जब वे टेढ़े हो गये तो ख़ुदा ने उनके दिल भी टेढ़े कर दिये।

एक और आयत में फ़रमायाः

وَقَیَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ............ الخ.

यानी उनके जो हमनशीं (साथी और पास बैठने वाले) हमने मुक़र्रर कर दिये हैं वे उनके आगे पीछे की चीज़ों को अच्छा और सजा हुआ बनाकर उन्हें दिखाते हैं।

यहाँ इरशाद होता है कि ऐसे ग़ाफ़िल लोगों पर शैतान अपना क़ाबू कर लेता है, उन्हें राहे ख़ुदा से रोकता है और उनके दिल में यह ख़्याल जमा देता है कि उनकी रविश (चलन और दीन) बहुत अच्छी है। वह बिल्कुल सही दीन पर क़ायम हैं। क़ियामत के दिन जब अल्लाह के सामने हाज़िर होगा और मामला खुल जायेगा तो अपने उस शैतान से जो उसका साथी था बराअत (यानी बेताल्लुक़ी) ज़ाहिर करेगा कि काश मेरे और तेरे बीच इतना फ़ासला होता जितना पूरब व पश्चिम में है। यहाँ एक मुहावरे के तौर पर मश्रिक़ैन

यानी दो मश्रिक़ों (दो पूरबों) का लफ़्ज़ कह दिया गया है जैसे सूरज चाँद को 'क़मरैन' यानी दो चाँद कह दिया जाता है, और माँ बाप को 'अबवैन' यानी दो बाप कह दिया जाता है।

एक क़िराअत में "इज़ा जा-आना" भी है। यानी शैतान और यह ग़ाफ़िल इनसान दोनों जब हमारे पास आयेंगे। हज़रत सईद जुरैरी रह. फ़रमाते हैं कि काफ़िर के अपनी क़ब्र से उठते ही शैतान आकर उसके हाथ से हाथ मिला लेता है, फिर अलग नहीं होता यहाँ तक कि जहन्नम में भी दोनों को साथ डाला जाता है।

फिर फ़रमाता है कि जहन्नम में तुम सबका जमा होना और वहाँ के अ़ज़ाबों में सब का शरीक होना तुम्हारे लिये नफ़ा देने वाला नहीं। उसके बाद अपने नबी से फ़रमाता है कि तू अज़ल से (यानी तक़दीरी तौर पर) बहरों के कान में हिदायत की आवाज़ डाल नहीं सकता। माँ के पेट के अन्धों को तू राह नहीं दिखा सकता, खुली गुमराही में पड़े हुए तेरी हिदायत क़बूल नहीं कर सकते। यानी तुझ पर हमारी जानिब से यह फ़र्ज़ नहीं कि ख़्वाह-मख़्वाह हर-हर शख़्स मुसलमान हो ही जाये। हिदायत तेरे क़ब्ज़े की चीज़ नहीं। जो हक़ की तरफ़ कान ही न लगाये, जो सीधी राह की तरफ़ आँख ही न उठाये, जो बहके और उसी में ख़ुश रहे तो तुझे उनके बारे में इतना क्या ख़्याल है? तुझ पर ज़रूरी काम सिर्फ़ तब्लीग़ करना है। हिदायत व गुमराही हमारे हाथ की चीज़ें हैं, हम आ़दिल (इन्साफ़ करने वाले) हैं, हम हकीम हैं, हम जो चाहेंगे करेंगे। तुम तंग-दिल (रन्जीदा) न हो जाया करो। फिर फ़रमाता है कि अगरचे हम तुझे यहाँ से ले जायें फिर भी हम इन ज़ालिमों से बदला लिये बग़ैर तो रहेंगे नहीं। या अगर हम तुझे तेरी आँखों से वह दिखा दें जिसका वायदा हमने उनसे किया है तो हम इससे आ़जिज़ नहीं।

ग़र्ज़ कि इस तरह और उस तरह दोनों सूरतों में काफ़िरों पर अ़ज़ाब तो आयेगा ही, लेकिन फिर वह सूरत पसन्द की गयी जिसमें पैग़म्बर की इज़्ज़त ज़्यादा थी, यानी अल्लाह तआ़ला ने आपको अपने पास उस वक़्त तक न बुलाया जब तक कि आपके दुश्मनों को मग़लूब न कर दिया, आपकी आँखें ठण्डी न कर दीं। आप उनकी जानों, मालों और मिल्कियतों के मालिक न बन गये। यह तो है तफ़सीर हज़रत सुद्दी रह. वग़ैरह की, लेकिन हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह के नबी सल्ल. दुनिया से उठा लिये गये और इन्तिक़ाम बाक़ी रह गया। अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को आपकी उम्मत में ज़िन्दगी में वह मामलात न दिखाये जो आपको नापसन्दीदा थे। हुज़ूर सल्ल. के अ़लावा बाक़ी तमाम अम्बिया के सामने उनकी उम्मतों पर अ़ज़ाब आये।

हमसे यह भी कहा गया है कि जब से हुज़ूर सल्ल. को यह मालूम करा दिया गया कि आपकी उम्मत पर क्या-क्या वबाल आयेंगे उस वक़्त से लेकर इन्तिक़ाल के वक़्त तक कभी हुज़ूर सल्ल. खिलखिलाकर हंसते हुए नहीं देखे गये। हज़रत हसन से भी इसी तरह की रिवायत है। एक हदीस में है सितारे आसमान के बचाव का सबब हैं, जब सितारे झड़ जायेंगे तो आसमान पर मुसीबत आ जायेगी, मैं अपने सहाबा के लिये अमन का ज़रिया हूँ। मेरे जाने के बाद मेरे सहाबा पर वह आ जायेगा जिसका उनसे वायदा किया जाता है।

फिर इरशाद होता है कि जो क़ुरआन तुझ पर नाज़िल किया गया है, जो कि सरासर हक़ व सच्चाई है, जो हक़्क़ानियत की सीधी और साफ़ राह की रहनुमाई करता है, तू उसे मज़बूती के साथ लिये रह, यही जन्नते नईम और सीधी राह का रहबर है। इस पर चलने वाला, इसके अहकाम को थामने वाला बहक और भटक नहीं सकता। यह तेरे लिये और तेरी क़ौम के लिये ज़िक्र है। यानी शर्फ़ और बुज़ुर्गी (बड़ाई और सम्मान का प्रतीक) है। बुख़ारी शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- यह मामला (यानी ख़िलाफ़त व अमानत) क़ुरैश में ही रहेगा, जो उनसे झगड़ेगा और छीनेगा उसे अल्लाह तआ़ला औंधे मुँह गिरायेगा जब

Maktaba Ashraf

तक कि वे (यानी क़ुरैश वाले) दीन को क़ायम रखें।

इसलिये भी आपके लिये इसमें एक ख़ास सम्मान व शर्फ़ है कि क़ुरआन आप ही की ज़बान में उतरा है, क़ुरैश की लुग़त (ज़बान) में ही नाज़िल हुआ है। ज़ाहिर है कि सबसे ज़्यादा इसे यही समझेंगे। इन्हीं को लायक़ है कि सबसे ज़्यादा मज़बूती के साथ अ़मल भी इन्हीं का इस पर रहे। ख़ासकर इसमें बड़ी अ़ज़मत (सम्मान व गौरव) है उन मुहाजिरीन सहाबा के लिये जिन्होंने शुरू-शुरू में पहल करके इस्लाम क़बूल किया और हिजरत में भी आगे-आगे रहे, और जो उनके क़दम से क़दम मिलाकर चले।

'ज़िक्र' के मायने नसीहत के भी लिये गये हैं। इस सूरत में यह याद रहे कि आपकी क़ौम के लिये इसका नसीहत होना, दूसरों के लिये नसीहत न होने के मायने में नहीं। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ.

यानी यक़ीनन हमने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल फ़रमाई है जिसमें तुम्हारे लिये नसीहत है, क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते? एक और आयत में है:

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ.

यानी अपने ख़ानदानी क़राबतदारों (क़रीबी और रिश्तेदारों) को होशियार कर दो।

ग़र्ज़ कि क़ुरआन की नसीहत रिसालते नबवी का नाम है, कुनबे वालों को क़ौम को और दुनिया के तमाम लोगों को शामिल है। फिर फ़रमाता है कि तुमसे जल्द ही सवाल होगा कि कहाँ तक कलामुल्लाह शरीफ़ पर अ़मल किया और कहाँ तक उसे माना? तमाम रसूलों ने अपनी-अपनी क़ौम को वही दावत दी जो ऐ आख़िरुज़्ज़माँ रसूल! आप अपनी उम्मत को दे रहे हैं। तमाम अम्बिया के दावत-नामों का ख़ुलासा सिर्फ़ इस क़द्र है कि उन्होंने तौहीद (अल्लाह को एक मानने की दावत) फैलाई और शिर्क को मिटाया। जैसे ख़ुद क़ुरआन में है कि हमने हर उम्मत में रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और उसके सिवा औरों की इबादत न करो।

मतलब यह हुआ कि उनसे दरियाफ़्त कर ले जिनमें तुझसे पहले हम अपने और रसूलों को भेज चुके हैं। अ़ब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि नबियों से पूछ ले (यानी उनकी तालीमात में देख ले) यानी मेराज वाली रात को जबकि अम्बिया आपके सामने जमा थे, कि हर नबी तौहीद सिखाने और शिर्क मिटाने की ही तालीम लेकर हमारी जानिब से मबऊस होता (भेजा जाता) रहा।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّىْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ○ وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِىَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ز وَاَخَذْنٰهُمْ

और हमने मूसा को अपनी दलीलें देकर फ़िरऔ़न और उसके सरदारों के पास भेजा था, सो उन्होंने (उन लोगों के पास आकर) फ़रमाया कि मैं रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से (पैग़म्बर होकर आया) हूँ। (46) फिर जब मूसा उनके पास हमारी निशानियाँ लेकर आए तो वे यकायक उन पर हंसने लगे। (47) और हम उनको जो निशानी दिखलाते थे वह दूसरी निशानी से बढ़कर होती थी, और हमने उन

Maktab E Ashraf

بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ٥ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ٥ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ٥	लोगों को अ़ज़ाब में पकड़ा था ताकि वे (अपने कुफ़्र से) बाज़ आ जाएँ। (48) और उन्होंने कहा कि ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब से उस बात की दुआ़ कर दीजिए जिसका उसने आपसे अ़हद कर रखा है, हम ज़रूर राह पर आ जाएँगे। (49) फिर जब हमने वह अ़ज़ाब उनसे हटा दिया तब ही उन्होंने (अपना) अ़हद तोड़ दिया। (50)

फ़िरऔ़न मलऊन की सरकशी और घमंड

हज़रत मूसा को अल्लाह तआ़ला ने अपना रसूल व नबी बनाकर फ़िरऔ़न, उसके सरदारों और उसकी रिआ़या (प्रजा) क़िब्तियों और बनी इस्राईल की तरफ़ भेजा ताकि आप उन्हें तौहीद सिखायें और शिर्क से बचायें। आपको बड़े-बड़े मोजिज़े भी अ़ता फ़रमाये। जैसे हाथ का रोशन हो जाना, लकड़ी का अज़्दहा बन जाना, वग़ैरह। लेकिन फ़िरऔ़नियों ने अपने नबी की कोई क़द्र न की बल्कि उनको झुठलाया और उनका मज़ाक़ उड़ाया। इस पर अल्लाह का अ़ज़ाब आया ताकि उन्हें इबरत हो और हज़रत मूसा के सच्चा नबी होने पर दलील भी हो। पस तूफ़ान आया, टिड्डियाँ आयीं, जुएँ आयीं, मेंढक आये और खेत माल-जान फल वग़ैरह की कमी में मुब्तला हुए। जब कोई अ़ज़ाब आता तो तिलमिला उठते। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की ख़ुशामद करते, उन्हें रज़ामन्द करते, उनसे अ़हद व पैमान करते, आप दुआ़ माँगते, अ़ज़ाब हट जाता। फिर सरकशी (नाफ़रमानी और घमंड) पर उतर आते। फिर अ़ज़ाब आता फिर यही होता।

'जादूगर' से वे बड़ा आ़लिम मुराद लेते थे। उनके ज़माने के उलेमा का यही लक़ब था और उन्हीं लोगों में इल्म था, और उनके ज़माने यह इल्म बुरा और नापसन्दीदा नहीं समझा जाता था बल्कि क़द्र की निगाह से देखा जाता था। पस उनका हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को जादूगर कहकर ख़िताब करना बतौर इज़्ज़त के था, एतिराज़ के तौर पर न था, क्योंकि उन्हें तो अपना काम निकालना था। हर बार इक़रार करते थे कि हम मुसलमान हो जायेंगे और बनी इस्राईल को भी तुम्हारे साथ कर देंगे। फिर अ़ज़ाब हट जाता तो वायदा तोड़ देते और क़ौल व क़रार तोड़ देते। जैसे एक और आयत में इस पूरे वाक़िए को बयान किया गया है:

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ.

फिर हमने उन पर तूफ़ान भेजा और टिड्डियाँ और घुन का कीड़ा और मेंढक और ख़ून, कि ये सब खुले-खुले मोजिज़े थे.........। (सूरः आराफ़ आयत 133)

وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِىْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِىْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِىْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ٥ اَمْ	और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम में यह मुनादी कराई, यह बात कही कि ऐ मेरी क़ौम! क्या मिस्र की बादशाही मेरी नहीं है? और ये नहरें मेरे (महल के) नीचे बह रही हैं, क्या तुम देखते नहीं हो? (51) बल्कि मैं (ही) अफ़ज़ल हूँ उस

Maktaba E Ashraf

اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِیْ هُوَ مَهِیْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ۝ فَلَوْلَآ اُلْقِیَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ۝ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ۝ ع	शख़्स से जो कि कम-क़द्र है, और बयान की क़ुव्वत भी नहीं रखता। (52) तो उसके सोने के कंगन क्यों नहीं डाले गए, या फ़रिश्ते उसके साथ में पर बाँधकर आए होते। (53) ग़र्ज़ उसने (ऐसी बातें करके) अपनी क़ौम को मग़लूब कर दिया और वे उसके कहने में आ गए। वे लोग (कुछ पहले से भी) शरारत के भरे थे। (54) फिर जब उन लोगों ने हमको ग़ुस्सा दिलाया तो हमने उनसे बदला लिया और उन सबको डुबो दिया। (55) और हमने उनको आईन्दा आने वालों के लिए ख़ास तौर के पहले गुज़रे हुए और (इबरत का) नमूना बना दिया। (56)

चन्द बेतुकी बातें

फ़िरऔन की सरकशी और घमंड व तकब्बुर बयान हो रहा है कि उसने अपनी क़ौम को जमा करके कहा- क्या मैं अकेला मुल्के मिस्र का बादशाह नहीं हूँ? क्या मेरे बाग़ों और महलों में नहरें जारी नहीं? क्या तुम मेरी अज़मत (बड़ाई) व सल्तनत को देख नहीं रहे? फिर मूसा और उसके साथियों को देखो जो ग़रीब, तंगदस्त और कमज़ोर हैं। कलामे पाक में एक और जगह है कि उसने इकट्ठे करके सबसे कहा- मैं तुम्हारा बुलन्द व बाला (ऊँचा) रब हूँ। जिस पर अल्लाह ने उसे यहाँ और वहाँ के अ़ज़ाबों में गिरफ़्तार किया। "अम" मायने में "बल" के है। बाज़ क़ारियों की क़िराअत "अम्मा अ-न" भी है। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि अगर यह क़िराअत सही हो जाये तो मायने बिल्कुल वाज़ेह और साफ़ हो जाते हैं, लेकिन यह क़िराअत तमाम शहरों की क़िराअत के ख़िलाफ़ है। सबकी क़िराअत "अम" सवाल के लिये है। हासिल यह है कि फ़िरऔन मलऊन ख़ुद को हज़रत मूसा कलीमुल्लाह से बेहतर व बरतर बना रहा है और यह दर असल उस मलऊन का झूठ है। "महीनुन्" के मायने हक़ीर ज़ईफ़ बे-माल बे-शान के हैं।

फिर कहता है कि मूसा तो साफ़ बोलना भी नहीं जानता। उसका कलाम फ़सीह (साफ़ और स्पष्ट) नहीं। वह अपने दिल की बात अच्छी तरह अदा नहीं कर सकता। बाज़ कहते हैं कि बचपन में आपने अपने मुँह में आग का अंगारा रख लिया था जिसका असर ज़बान पर बाक़ी रह गया था। यह भी फ़िरऔन का मक्र, झूठ और फ़रेब है। हज़रत मूसा साफ़-गो, सही कलाम करने वाले, इ़ज़्ज़तदार और रौब व वक़ार के मालिक थे। लेकिन चूँकि यह मलऊन अपनी कुफ़्र की आँख से अल्लाह के नबी को देखता था। आपकी ज़बान में कुछ लुक्नत थी लेकिन आपने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ माँगी और आपकी ज़बान की गिरह खुल गयी, ताकि आप लोगों को आसानी से अपना मुद्दआ़ व मक़सद समझा सकें। और अगर मान भी लिया जाये कि कुछ बाक़ी रह गयी थी क्योंकि हज़रत मूसा की दुआ़ में इतना ही था कि मेरी ज़बान की इस क़द्र गिरह खुल जाये कि लोग मेरी बात समझ लें, तो यह भी कोई ऐब की बात नहीं। अल्लाह तआ़ला ने जिस किसी को जैसा बना दिया वह वैसा ही है। इसमें ऐब की कौनसी बात है?

दर असल फ़िरऔन एक बात बनाकर, एक मन्सूबा गढ़कर (योजना तैयार करके) अपनी जाहिल रिआया (प्रजा) को भड़काना और बहकाना चाहता था। देखिये वह आगे चलकर कहता कि क्यों जी! इस पर इस आसमान से धन क्यों नहीं बरसता? मालदारी तो इसे इतनी होनी चाहिये कि हाथ सोने से भरे हों, लेकिन यह तो बिल्कुल मुफ़लिस (तंगदस्त और ग़रीब) है।

अच्छा यह भी नहीं तो ख़ुदा उसके साथ फ़रिश्ते ही कर देता जो कम से कम हमें यक़ीन दिला देते कि यह ख़ुदा के नबी हैं। ग़र्ज़ कि हज़ार जतन करके लोगों को बेवक़ूफ़ बना लिया और उन्हें अपना हम-ख़्याल और अपनी आवाज़ में आवाज़ मिलाने वाला बना लिया। ये ख़ुद फ़ासिक़ व फ़ाजिर थे, बुराईयों और गुनाहों की पुकार पर फ़ौरन रीझ गये। पस जब उनका पैमाना झलक गया और उन्होंने दिल खोलकर रब की नाफ़रमानी कर ली और रब को ख़ूब नाराज़ कर दिया। तो फिर ख़ुदाई कोड़ा उनकी पीठ पर बरसा और अगले पिछले सारे करतूत पर पकड़ लिये गये। यहाँ तक कि एक साथ पानी में ग़र्क़ कर दिये गये, वहाँ जहन्नम में जलते झुलसते रहेंगे। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब किसी इनसान को ख़ुदा दुनिया देता चला जाये और वह अल्लाह की नाफ़रमानियों पर जमा हुआ हो तो समझ लो कि ख़ुदा ने उसे ढील दे रखी है। फिर हुज़ूर सल्ल. ने यही आयत तिलावत फ़रमाई। (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. के सामने जब अचानक आने वाली मौत का ज़िक्र आया तो आपने फ़रमाया ईमान वाले पर तो यह आसानी है और काफ़िर पर हसरत (अफ़सोस) है। फिर आपने इसी आयत को पढ़कर सुनाया। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. फ़रमाते हैं कि इन्तिक़ाम ग़फ़लत के साथ है। फिर अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला फ़रमाता है कि हमने उन्हें नमूना बना दिया कि उनके जैसे काम करने वाले उनके अन्जाम को देख लें और यह मिसाल यानी इबरत (सबक़ और सीख) का सबब बन गये कि बाद में आने वाले उनके वाक़िआ़त में ग़ौर करें और अपना बचाव ढूँढें।

और जब ईसा इब्ने मरियम के मुताल्लिक़ एक अ़जीब मज़मून बयान किया गया तो यकायक आपकी क़ौम के लोग उससे (ख़ुशी के मारे) चिल्लाने लगे। (57) और (उस एतिराज़ करने वाले के साथ होकर) कहने लगे कि हमारे माबूद ज़्यादा बेहतर हैं या ईसा (अ़लैहिस्सलाम)? उन लोगों ने जो यह (अ़जीब मज़मून) आपसे बयान किया है तो सिर्फ़ झगड़ने की ग़र्ज़ से, बल्कि ये लोग हैं ही झगड़ालू। (58) ईसा (अ़लैहिस्सलाम) तो सिर्फ़ एक ऐसे बन्दे हैं जिन पर हमने फ़ज़्ल किया था और उनको बनी इस्राईल के लिए हमने (अपनी क़ुदरत का) नमूना बनाया था। (59) और अगर हम चाहते तो हम तुमसे फ़रिश्तों को पैदा कर देते कि वे ज़मीन पर एक के बाद एक रहा करते। (60)	وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ۝ وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ۭ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ۝ وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ

Maktab E Ashraf

فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ○ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ○ وَلَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ○ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ○ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ○

और वह (यानी ईसा अलैहिस्सलाम) क़ियामत के यक़ीन का ज़रिया हैं, तो तुम लोग उस (के सही होने) में शक मत करो, और तुम लोग मेरी पैरवी करो, यह सीधा रास्ता है। (61) और तुमको शैतान (इस राह पर आने से) रोकने न पाये, वह बेशक तुम्हारा खुला दुश्मन है। (62) और जब ईसा (अलैहिस्सलाम) मोजिज़े लेकर आए तो उन्होंने (लोगों से) कहा कि मैं तुम्हारे पास समझ की बातें लेकर आया हूँ और ताकि बाज़ बातें जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे हो तुमसे बयान कर दूँ, तो तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। (63) बेशक अल्लाह ही मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, सो उसी की इबादत करो, यही (अल्लाह तआ़ला को एक मानना) सीधा रास्ता है। (64) सो मुख़्तलिफ़ गिरोहों ने (इस बारे में) आपस में इख़्तिलाफ़ डाल लिया, सो उन ज़ालिमों के लिए एक दर्दनाक अज़ाब के दिन से बड़ी ख़राबी है। (65)

हज़रत ईसा इब्ने मरियम अलैहिस्सलाम

"यसिद्दून" के मायने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि., मुजाहिद रह., इक्रिमा रह. और इमाम ज़ह्हाक रह. ने यह किये हैं कि वे हंसने लगे। यानी इससे उन्हें ताज्जुब मालूम हुआ। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि घबराकर बोल पड़े। इब्राहीम नख़ई रह. का क़ौल है कि मुँह फेरने लगे। इसकी वजह जो इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. ने अपनी सीरत में बयान की है वह यह है कि रसूलुल्लाह सल्ल. वलीद बिन मुग़ीरा वग़ैरह क़ुरैशियों के पास तशरीफ़ फ़रमा थे कि नज़र बिन हारिस भी आ गया और आपसे कुछ बातें करने लगा, जिसमें वह लाजवाब हो गया। फिर हुज़ूर सल्ल. ने क़ुरआने करीम की ये आयतें पढ़कर सुनाई:

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ........ الخ.

यानी तुम और तुम्हारे माबूद सब जहन्नम में झोंक दिये जायेंगे.......................।

फिर हुज़ूर वहाँ से चले गये। थोड़ी ही देर में अ़ब्दुल्लाह बिन ज़बअ़री तमीमी आया तो वलीद बिन मुग़ीरा ने उससे कहा कि नज़र बिन हारिस तो अ़ब्दुल-मुत्तलिब के बेटे से हार गया और आख़िरकार अ़ब्दुल-मुत्तलिब का बेटा हमें और हमारे माबूदों को जहन्नम का ईंधन कहते हुए चले गये। उसने कहा अगर मैं होता तो उन्हें लाजवाब कर देता। जाओ ज़रा उनसे पूछो तो कि जब हम और हमारे सारे माबूद

दोज़ख़ी हैं तो फिर ज़रूरी है कि सारे फ़रिश्ते और हज़रत उज़ैर और हज़रत मसीह भी जहन्नम में जायें। क्योंकि हम फ़रिश्तों को पूजते हैं, यहूद हज़रत उज़ैर की परस्तिश करते हैं, ईसाई हज़रत ईसा की इबादत करते हैं। इस पर मज्लिस के काफ़िर बहुत ख़ुश हुए और कहा हाँ यह जवाब बहुत ठीक है। लेकिन जब हुज़ूर सल्ल. तक यह बात पहुँची तो आपने फ़रमाया- हर वह शख़्स जो ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के अ़लावा किसी और) की इबादत करे और हर वह शख़्स जो अपनी इबादत अपनी ख़ुशी से कराये ये दोनों आ़बिद व माबूद जहन्नमी हैं। फ़रिश्तों या नबियों ने न अपनी इबादत का हुक्म दिया न वे इससे ख़ुश हैं। उनके नाम से दर असल ये शैतान की इबादत करते हैं। वही उन्हें शिर्क का हुक्म देता है और ये उसके हुक्म का पालन करते हैं। इस पर 'इन्नल्लज़ी-न स-बक़त्......' वाली आयत नाज़िल हुई। यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम, हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम और उनके अ़लावा जिन 'अहबार व रुहबान' (यानी नेक लोगों) की पूजा ये लोग करते हैं, वे ख़ुद अल्लाह की इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) पर थे। शिर्क से बेज़ार और इससे रोकने वाले थे और उनके बाद उन गुमराहों जाहिलों ने उन्हें माबूद बना लिया तो वे बिल्कुल बेक़सूर हैं। और फ़रिश्तों को जो मुश्रिक लोग ख़ुदा की बेटियाँ कहकर पूजते थे, उनकी तरदीद में सूरः अम्बिया की ये आयतें नाज़िल हुईः

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا.........................الخ

और ये (मुश्रिक लोग) यूँ कहते हैं कि (ख़ुदा-ए-) रहमान ने (फ़रिश्तों को) औलाद बना रखा है, वह (अल्लाह तआ़ला इससे पाक है) बल्कि फ़रिश्ते उसके बन्दे हैं, हाँ सम्मानित..........................। (यानी सूरः अम्बिया की आयत 26 से आगे की कई आयतें)।

और उनके इस बातिल अ़क़ीदे की पूरी तरदीद कर दी। और हज़रत ईसा के बारे में उसने जवाब दिया था जिस पर मुश्रिक लोग ख़ुश हुए थे, ये आयतें उतरीं कि तेरे इस क़ौल को सुनते ही कि बातिल और झूठे माबूद भी अपने आ़बिदों (इबादत करने वालों) के साथ जहन्नम में जायेंगे, उन्होंने झट से हज़रत ईसा की मोहतरम और आदरनीय ज़ात को पेश कर दी और यह सुनते ही मारे ख़ुशी के आपकी क़ौम के मुश्रिक उछल पड़े और बढ़-बढ़कर बातें बनाने लगे कि हमने दबा दिया। उनसे कहो कि हज़रत ईसा ने किसी से अपनी या किसी और की परस्तिश नहीं कराई। वे तो ख़ुद बराबर हमारी ग़ुलामी में लगे रहे और हमने भी उन्हें अपनी बहुत सी नेमतें अ़ता फ़रमायीं। उनके हाथों जो मोजिज़े दुनिया को दिखाये वह क़ियामत की दलील थी।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इब्ने जरीर में है कि मुश्रिक लोगों ने अपने माबूदों का जहन्नमी होना हुज़ूर सल्ल. की ज़बानी सुनकर कहा कि फिर आप ईसा इब्ने मरियम के बारे में क्या कहते हैं? आपने फ़रमाया वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। अब कोई जवाब उनके पास न रहा तो कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम ये तो चाहते हैं कि जिस तरह ईसाईयों ने हज़रत ईसा को ख़ुदा मान लिया है हम भी इन्हें रब मान लें। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि यह तो ख़ालिस बकवास है। खिसयाने होकर बेतुकी बातें कहने लगे हैं।

मुस्नद अहमद में है कि एक मर्तबा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने फ़रमाया कि क़ुरआन में एक आयत है। मुझसे किसी ने उसकी तफ़सीर नहीं पूछी। मैं नहीं जानता कि क्या हर एक उसे जानता है या न जान कर फिर भी जानने की कोशिश नहीं करते? फिर और बातें बयान फ़रमाते रहे यहाँ तक कि मज्लिस ख़त्म हुई और आप चले गये। अब हमें बड़ा अफ़सोस होने लगा कि वह आयत तो फिर भी रह गयी और हम में

Maktaba E Ashraf

से किसी ने मालूम ही न किया। इस पर इब्ने अ़क़ील अन्सारी के मौला अबू यहया ने कहा कि अच्छा कल सुबह जब तशरीफ़ लायेंगे तो मैं पूछ लूँगा। दूसरे दिन जो आये तो मैंने उनकी कल की बात दोहराई और उनसे मालूम किया कि वह कौनसी आयत है? आपने फ़रमाया हाँ सुनो! हुज़ूर सल्ल. ने एक मर्तबा क़ुरैश से फ़रमाया- कोई ऐसा नहीं जिसकी इबादत ख़ुदा के अ़लावा की जाती हो और उसमें ख़ैर हो। इस पर क़ुरैश ने कहा- क्या ईसाई लोग हज़रत ईसा की इबादत नहीं करते? और क्या आप हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को ख़ुदा का नबी और उसका मक़बूल और चुनिन्दा नेक बन्दा नहीं मानते? फिर इस कहने का क्या मतलब हुआ कि ख़ुदा के सिवा जिसकी इबादत की जाती है वह ख़ैर से ख़ाली है? इस पर ये आयतें उतरीं- कि जब ईसा बिन मरियम का ज़िक्र आया तो ये लोग हंसने लगे और क़ियामत के इल्म में यानी ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम का क़ियामत के दिन से पहले निकलना। इब्ने अबी हातिम में भी यह रिवायत पिछले जुमले के अ़लावा है।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि उनके इस क़ौल का कि 'क्या हमारे माबूद बेहतर हैं या ये' मतलब यह है कि हमारे माबूद मुहम्मद से बेहतर हैं। यह तो ख़ुद की पूजा कराना चाहते हैं। इब्ने मसऊद की क़िराअत में "अम हाज़ा" है, अल्लाह फ़रमाता है कि यह उनका मनाज़रा (गुफ़्तगू और बहस) नहीं, बल्कि बिना दलील का झगड़ा और बिना वजह की हुज्जत-बाज़ी है। ख़ुद यह जनते हैं कि न यह मतलब है न हमारा एतिराज़ इस पर, यह इसलिये कि अव्वल तो आयत में लफ़्ज़ "मा" है जो 'ग़ैर-ज़विल् उक़ूल' (यानी ग़ैर-अ़क़्ल वालों) के लिये हैं। दूसरे यह कि आयत में ख़िताब क़ुरैश के काफ़िरों से है जो बुतों और पत्थरों को पूजते थे। वे मसीह के पुजारी न थे जो एतिराज़ सही माना जाये। पस यह सिर्फ़ बिना वजह का झगड़ा है, यानी वह बात कहते हैं जिसके ग़ैर-सही (यानी ग़लत) होने को उनका अपना दिल भी जानता है।

तिर्मिज़ी वग़ैरह में अल्लाह के रसूल का फ़रमान है कि कोई क़ौम उस वक़्त तक हलाक नहीं होती जब तक बिना दलील की हुज्जत-बाज़ी उनमें न आ जाये। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की।

इब्ने अबी हातिम में इस हदीस के शुरू में यह भी है कि हर उम्मत की गुमराही की पहली बात अपने नबी के बाद तक़दीर का इनकार करना है........। इब्ने जरीर में है कि एक बार हुज़ूर सल्ल. सहाबा के मजमे में आये। उस वक़्त वे क़ुरआन की आयतों में झगड़ रहे थे। आप सख़्त नाराज़ और ग़ुस्सा हुए और फ़रमाया- इस तरह अल्लाह की किताब की आयतों को एक दूसरे के साथ मत टकराओ। याद रखो! बिना वजह की हुज्जत-बाज़ी और झगड़े की इसी आ़दत ने अगले लोगों को गुमराह कर दिया। फिर आपने इस आयत की तिलावत फ़रमाईः

مَاضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ.

फिर इरशाद होता है कि हज़रत ईसा अल्लाह तआ़ला के बन्दों में से एक बन्दे थे, जिन पर नुबुव्वत व रिसालत का इनाम हुआ था और उन्हें अल्लाह की क़ुदरत की एक निशानी बनाकर बनी इस्राईल की तरफ़ भेजा गया ताकि वे जान लें कि ख़ुदा जो चाहे उस पर क़ादिर है। फिर इरशाद होता है कि अगर हम चाहते तो तुम्हारे जानशीन बनाकर फ़रिश्तों को इस ज़मीन में आबाद कर देते। या यह कि जिस तरह तुम एक दूसरे के जानशीन (जगह लेने वाले) होते हो यही बात उनमें कर देते। मतलब दोनों सूरतों में एक ही है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं- यानी बजाय तुम्हारे ज़मीन की आबादी उनसे होती।

उसके बाद फ़रमाता है कि वह क़ियामत की निशानी है। इसका मतलब जो इब्ने इस्हाक़ रह. ने बयान

किया है कि वह कुछ नहीं और उससे भी ज़्यादा दूर की बात यह है कि बक़ौल क़तादा हज़रत हसन बसरी और हज़रत सईद बिन जुबैर कहते हैं कि "उस" का इशारा क़ुरआन की तरफ़ लौट रहा है, ये दोनों क़ौल ग़लत हैं। बल्कि सही बात यह है कि इस ज़मीर 'उस' से हज़रत ईसा मुराद हैं, यानी हज़रत ईसा क़ियामत की एक निशानी हैं। इसलिये कि ऊपर से ही आपका बयान चला आ रहा है। और यह वाज़ेह रहे कि यहाँ हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का क़ियामत से पहले नाज़िल होना मुराद है जैसा कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमायाः

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتَابِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ.

यानी उनकी मौत से पहले एक-एक अहले किताब उन पर ईमान लगायेगा।

यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की मौत से पहले फिर क़ियामत के दिन यह उन पर गवाह होंगे। इस मतलब की पूरी वज़ाहत इसी आयत की दूसरी क़िराअत से होती है, जिसमें हैः

اِنَّهٗ لَعَلَمٌ لِّلسَّاعَةِ.

यानी जनाब हज़रत ईसा रूहुल्लाह निशान और अ़लामत हैं क़ियामत के क़ायम होने पर।

मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यह निशान हैं क़ियामत के, यानी हज़रत ईसा बिन मरियम का क़ियामत से पहले आना। इसी तरह रिवायत की गयी है हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से, और यही मन्क़ूल है अबुल-आ़लिया, अबू मालिक, इक्रिमा, हसन, क़तादा, ज़ह्हाक वग़ैरह से। अल्लाह तआ़ला इन सब पर रहम फ़रमाये। और मुतवातिर हदीसों में रसूले ख़ुदा सल्ल. ने ख़बर दी है कि क़ियामत के दिन से पहले हज़रत ईसा इमामे आ़दिल और इन्साफ़ वाले हाकिम होकर नाज़िल होंगे, पस तुम क़ियामत का होना यक़ीनी जानो, इसमें शक व शुब्हा न करो। और जो ख़बरें तुम्हें दे रहा हूँ उसमें मेरी इताअ़त करो, यही 'सिराते मुस्तक़ीम' है। कहीं ऐसा न हो कि शैतान जो तुम्हारा खुला दुश्मन है वह तुम्हें सही राह और मेरी इत्तिबा से रोक दे।

हज़रत ईसा ने अपनी क़ौम से कहा था कि मैं हिक्मत यानी नुबुव्वत लेकर तुम्हारे पास आया हूँ और दीनी मामलात में जो इख़्तिलाफ़ात (आपसी विवाद) तुमने डाल रखे हैं, मैं उसमें जो हक़ है उसे ज़ाहिर करने के लिये भेजा गया हूँ। इब्ने जरीर रह. यही फ़रमाते हैं और यही क़ौल सही है। फिर इमाम साहिब ने उन लोगों के क़ौल की तरदीद की है जो कहते हैं कि 'बाज़' (कुछ) का लफ़्ज़ यहाँ पर कुल (समस्त) के मायने में है, और इसकी दलील में लबीद शायर का एक शे'र पेश करते हैं। लेकिन वहाँ भी बाज़ से मुराद क़ायल का ख़ुद अपना नफ़्स है न कि सब।

इमाम साहिब ने शे'र का जो मतलब बयान किया है यह भी मुम्किन है। फिर फ़रमाया जो मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ उसमें अल्लाह का लिहाज़ रखो, उससे डरते रहो और मेरी इताअ़त-गुज़ारी (हुक्म का पालन) करो। जो लाया हूँ उसे मानो। यक़ीन मानो कि तुम सब और ख़ुद मैं उसके गुलाम हैं, उसके मोहताज हैं, उसके दर के फ़क़ीर हैं, उसकी इबादत हम सब पर फ़र्ज़ है। वह वाहिद है लाशरीक है, बस यही तौहीद की राह सीधी राह है। अब लोग आपस में अलग-अलग हो. (बिखर) गये, बाज़ तो हज़रत ईसा को ख़ुदा का बन्दा और रसूल ही कहते थे और यही हक़ वाली जमाअ़त थी, और बाज़ ने उनके बारे में दावा किया कि ख़ुदा के फ़रज़न्द (बेटे) हैं। और बाज़ ने कहा आप ही अल्लाह हैं। अल्लाह तआ़ला उनके इन दोनों दावों से पाक, बुलन्द और बरतर है। इसी लिये इरशाद फ़रमाता है कि उन ज़ालिमों के लिये ख़राबी है। क़ियामत

वाले दिन उन्हें दर्दनाक अज़ाब और दर्दनाक सज़ायें होंगी।

هَلْ يَنظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً
وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ○ اَلْاَخِلَّاۤءُ يَوْمَئِذٍۢ
بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ○ يٰعِبَادِ ع ١٢
لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ
تَحْزَنُوْنَ ○ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا
مُسْلِمِيْنَ ○ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ
وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ○ يُطَافُ عَلَيْهِمْ
بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا
مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ○ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ
اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ لَكُمْ
فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ○

ये लोग बस क़ियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वह इन पर अचानक आ पड़े और इनको ख़बर भी न हो। (66) तमाम (दुनियावी) दोस्त उस दिन एक-दूसरे के दुश्मन हो जाएँगे सिवाय ख़ुदा तआ़ला से डरने वालों के। (67)

(और मोमिनों को अल्लाह की तरफ़ से निदा होगी कि) ऐ मेरे बन्दो! तुम पर आज कोई ख़ौफ़ नहीं और न तुम ग़मगीन होगे। (68) (यानी वे बन्दे) जो हमारी आयतों पर ईमान लाए थे और (हमारे) फ़रमाँबरदार थे। (69) तुम और तुम्हारी (ईमान वाली) बीवियाँ ख़ुशी-ख़ुशी जन्नत में दाख़िल हो जाओ। (70) उनके पास सोने की रकाबियाँ और गिलास लाए जाएँगे (यानी जन्नत के नौउम्र लड़के-लड़कियाँ लाएँगे) और वहाँ वे चीज़ें मिलेंगी जिनको जी चाहेगा और जिनसे आँखों को लज़्ज़त मिलेगी, और तुम यहाँ हमेशा रहोगे। (71) और (उनसे कहा जाएगा कि) यह वह जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिए गए हो अपने (नेक) आमाल के बदले में। (72) (और) तुम्हारे लिए इसमें बहुत-से मेवे हैं जिनमें से खा रहे हो। (73)

एक ग़ैर-अपेक्षित आ़दत

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि देखो तो ये मुश्रिक लोग क़ियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो बिल्कुल बेसूद है। इसलिये कि उसके आने का किसी को सही वक़्त तो मालूम नहीं, वह अचानक यूँ ही बेख़बरी की हालत में आ जायेगी। उस वक़्त चाहे शर्मिन्दा हों लेकिन उससे क्या फ़ायदा? यह अगरचे उसे नामुम्किन समझे हुए हैं लेकिन वह न सिर्फ़ मुम्किन बल्कि यक़ीनन आने वाली ही है। और उस वक़्त का या उसके बाद का कोई अ़मल किसी को कुछ नफ़ा न देगा। उस दिन तो जिनकी दोस्तियाँ ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के अ़लावा किसी और) के लिये थीं वे सब दुश्मनियों से बदल जायेंगी। हाँ जो दोस्ती सिर्फ़ अल्लाह के वास्ते थी वह बाक़ी रहेगी। जैसा कि हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया था कि तुमने बुतों से जो दिलचस्पी क़ायम कर रखी है यह सिर्फ़ दुनिया तक ही है, क़ियामत के दिन तो एक दूसरे का न सिर्फ़ इनकार करेंगे बल्कि एक दूसरे पर लानत भेजेंगे और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम होगा। कोई न होगा जो तुम्हारी इमदाद पर आये।

Mahtab E Ashraf

Maktaba E Ashraf

इब्ने अबी हातिम में है, अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं कि दो ईमान वाले जो आपस में दोस्त होते हैं, जब उनमें से एक का इन्तिक़ाल हो जाता है और ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी मिलती है तो वह अपने दोस्त को याद करता है और कहता है कि ख़ुदाया! फ़ुलाँ शख़्स मेरा वली (दोस्त) था जो मुझे तेरी और तेरे रसूल की इताअ़त का हुक्म देता था, भलाई की हिदायत करता था, बुराई से रोकता था और मुझे यक़ीन दिलाया करता था कि एक रोज़ ख़ुदा से मिलना है। पस ऐ बारी तआ़ला! तू उसे हक़ की राह पर साबित-क़दम रख, यहाँ तक कि उसे भी तू वह दिखा दे जो तूने मुझे दिखाया है, और उससे भी तू इसी तरह राज़ी हो जा जिस तरह मुझसे राज़ी हुआ है। अल्लाह की तरफ़ से जवाब मिलता है कि तू ठण्डे कलेजे के साथ चला जा, उसके लिये जो कुछ मैंने तैयार किया है अगर तू उसे देख लेता तो तू बहुत हंसता (यानी ख़ुश होता) और बिल्कुल चिंतित व परेशान न होता।

फिर जब दूसरा दोस्त मरता है और उनकी रूहें मिलती हैं तो कहा जाता है कि तुम आपस में एक दूसरे का ताल्लुक़ बयान करो। पस हर एक दूसरे से कहता है कि यह मेरा बड़ा अच्छा भाई और बहुत ही नेक साथी था, और बहुत बेहतर दोस्त था।

ऐसे ही दो काफ़िर जो आपस में एक दूसरे के दोस्त थे जब उनमें से एक मरता है और उसको जहन्नम की ख़बर दी जाती है तो उसे भी अपना दोस्त याद आता है। वह कहता है बारी तआ़ला! मेरा फ़ुलाँ शख़्स दोस्त था, तेरी और तेरे नबी की नाफ़रमानी की मुझे तालीम देता था, बुराईयों की रग़बत (दिलचस्पी) दिलाता था, भलाईयों से रोकता था और तेरी मुलाक़ात न होने का मुझे यक़ीन दिलाता था। पस तू उसे मेरे बाद हिदायत न करना कि वह भी वही देखे जो मैंने देखा, और उस पर तू इसी तरह नाराज़ हो जिस तरह मुझ पर गुस्सा और नाराज़ हुआ।

फिर जब दूसरा दोस्त मरता है और उनकी रूहें जमा होती हैं तो कहा जाता है कि तुम दोनों एक दूसरे की सिफ़तें और हालात बयान करो, तो हर एक कहता है कि तू बड़ा बुरा भाई और बुरा साथी था, और सबसे बुरा दोस्त था।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि हर दोस्ती क़ियामत के दिन दुश्मनी से बदल जायेगी, मगर परहेज़गारों की दोस्ती। इब्ने अ़साकिर में है कि जिन दो शख़्सों ने अल्लाह के लिये आपस में ताल्लुक़ कर रखा है चाहे एक पूरब में हो और दूसरा पश्चिम में लेकिन क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उन्हें जमा करके फ़रमायेगा- यह है जिसे तू मेरी वजह से चाहता था। फिर फ़रमाया कि उन मुतक़्क़ी (परहेज़गारों) से क़ियामत के दिन कहा जायेगा कि तुम ग़म व चिंता से दूर हो जाओ, हर तरह अमन चैन से रहो। यह है तुम्हारे दीन व इस्लाम का बदला। यानी बातिन में (दिल से) यक़ीन और कामिल एतिक़ाद और ज़ाहिर में शरीअ़त पर अ़मल का।

हज़रत मोतमर बिन सुलैमान रह. अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि क़ियामत के दिन जब लोग अपनी-अपनी क़ब्रों से खड़े किये जायेंगे तो सब के सब घबराहट और बेचैनी में होंगे। उस वक़्त एक मुनादी (आवाज़ देने वाला) निदा (ऐलान) करेगा कि ऐ मेरे बन्दो! आज के दिन न तुम पर ख़ौफ़ है न घबराहट, तो सारे के सारे इसे आ़म (सार्वजनिक) ख़ुशख़बरी समझकर ख़ुश हो जायेंगे। वही मुनादी कहेगा कि वे लोग जो दिल से ईमान लाये थे और जिस्म से नेक काम किये थे। उस वक़्त सिवाय सच्चे पक्के मुसलमानों के बाक़ी सब मायूस हो जायेंगे। फिर उनसे कहा जायेगा कि तुम और तुम जैसे नेमत व सआ़दत (नेकबख़्ती) के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओ। सूरः रूम में इसकी तफ़सीर गुज़र चुकी है।

हर तरफ़ से उनके सामने तरह-तरह के मज़ेदार, रोग़न युक्त, लज़ीज़, पसन्दीदा खानों की कश्तियाँ रकाबियाँ और क़ाबें पेश होंगी और छलकते हुए जाम हाथों में लिये ग़िलमान (जन्नत के ख़ादिम) इधर-उधर घूम रहे होंगे। उन्हें मज़ीद (और ज़्यादा) ख़ुशबू वाले, अच्छी रंगत वाले, दिल चाहे खाने पीने मिलेंगे। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि सबसे नीचे के दर्जे का जन्नती जो सबसे आख़िर में जन्नत में जायेगा उसकी निगाह सौ साल के रास्ते तक जाती होगी, लेकिन बराबर वहाँ तक उसे अपने ही डेरे ख़ेमे और महल सोने के और ज़ुमुर्रुद के नज़र आयेंगे जो तमाम के तमाम क़िस्म-क़िस्म और रंग-बिरंग के साज़ व सामान से भरे होंगे। सुबह शाम सत्तर-सत्तर हज़ार रकाबियाँ प्याले अलग-अलग बनावट के खाने से पुर उसके सामने रखे जायेंगे, जिनमें से हर एक उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ होगा और शुरू से आख़िर तक उसकी इच्छा व भूख बराबर और एक सी रहेगी, और अगर वह दुनिया वालों की दावत कर दे तो सबको काफ़ी हो जाये और कुछ न घटे। (मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़)

इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जन्नत का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि जन्नती एक लुक़्मा उठायेगा और उसके दिल में ख़्याल आयेगा कि फ़ुलाँ क़िस्म का खाना होता तो अच्छा होता, चुनाँचे वह निवाला उसके मुँह में वही चीज़ बन जायेगा जिसकी उसने ख़्वाहिश (इच्छा) की थी। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की।

मुस्नद अहमद में है, अल्लाह के रसूल सल्ल. फ़रमाते हैं कि सबसे अदना मर्तबे के जन्नती के लिये बालाख़ाने (चौबारे) की सात मन्ज़िलें होंगी, यह छठी मन्ज़िल में होगा और उसके ऊपर सातवीं होगी। उसके तीस ख़ादिम होंगे जो सुबह शाम तीन सौ सोने के बरतनों में उसके लिये खाना व शराब पेश करेंगे। हर एक में अलग-अलग क़िस्म का अ़जीब व ग़रीब और बहुत ही लज़ीज़ (मज़ेदार) खाना होगा। अव्वल से आख़िर तक उसे खाने की इच्छा वैसी ही रहेगी। इसी तरह तीन सौ सोने के प्यालों, कटोरों और गिलासों में उसे पीने की चीज़ें दी जायेंगी। वह भी एक से एक बढ़कर होगी। यह कहेगा कि ख़ुदाया! अगर तू मुझे इजाज़त दे तो मैं तमाम जन्नतियों की दावत करूँ। सब भी अगर मेरे यहाँ खायें तो खाने में कमी नहीं आ सकती। उसकी बहत्तर (72) बीवियाँ हूरे-ऐन में से होंगी और दुनिया की बीवियाँ अलग होंगी। उनमें से एक-एक मील-मील भर की जगह में बैठेगी। फिर साथ ही उनसे कहा जायेगा कि ये नेमतें भी हमेशा रहने वाली हैं और तुम भी हमेशा ही रहोगे, न मौत आयेगी न घाटा आयेगा। न जगह बदलेगी न तकलीफ़ पहुँचेगी।

फिर उन पर अपना फ़ज़्ल व एहसान बतलाया जाता है कि तुम्हारे आमाल का बदला मैंने अपनी वसीअ़ (विस्तृत) रहमत से तुम्हें यह दिया है। क्योंकि कोई शख़्स बग़ैर अल्लाह की रहमत के सिर्फ़ अपने आमाल की बिना पर जन्नत में नहीं जा सकता। हाँ अलबत्ता जन्नत के दर्जों में जो फ़र्क़ होगा वह नेक आमाल के फ़र्क़ की वजह से होगा। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूले मक़बूल सल्ल. फ़रमाते हैं- जहन्नमी अपनी जन्नत की जगह जहन्नम में से देखेंगे और हसरत व अफ़सोस से कहेंगे- अगर अल्लाह तआ़ला मुझे भी हिदायत करता तो मैं भी मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) में हो जाता। और हर एक जन्नती भी अपनी-अपनी जहन्नम की जगह जन्नत में से देखेगा और अल्लाह का शुक्र करते हुए कहेगा कि हम ख़ुद अपने तौर पर सही रास्ता हासिल करने पर क़ादिर न थे, अगर अल्लाह तआ़ला ख़ुद हमारी रहनुमाई न करता।

आप फ़रमाते हैं कि हर-हर शख़्स की एक जगह जन्नत में है और एक जगह जहन्नम में। पस काफ़िर मोमिन की जहन्नम की जगह का वारिस होगा और मोमिन काफ़िर की जन्नत की जगह का वारिस होगा।

यही फ़रमान है कि इस जन्नत के वारिस तुम अपने आमाल की वजह से बनाये गये हो। खाने पीने के ज़िक्र के बाद अब मेवों और तरकारियों का बयान हो रहा है कि ये भी ख़ूब ज़्यादा तबीयत की चाहत के मुताबिक़ उन्हें मिलेंगी। जिस क़िस्म की ये चाहें और इनकी ख़्वाहिश हो। ग़र्ज़ कि भरपूर नेमतों के साथ रब की रज़ामन्दी के घर में हमेशा रहेंगे। अल्लाह हमें भी नसीब फ़रमाये। आमीन

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَٰلِدُونَ ۝ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۝ وَمَا ظَلَمْنَٰهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا هُمُ الظَّٰلِمِينَ ۝ وَنَادَوْا يَٰمَٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُم مَّٰكِثُونَ ۝ لَقَدْ جِئْنَٰكُم بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَٰرِهُونَ ۝ أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ۝ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَىٰهُم ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ۝	इसमें कोई शक नहीं कि नाफ़रमान (यानी काफ़िर) लोग दोज़ख़ के अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे। (74) वह (अ़ज़ाब) उनसे हल्का न किया जाएगा, और वे उसी में मायूस पड़े रहेंगे। (75) और हमने उनपर (ज़रा भी) ज़ुल्म नहीं किया, लेकिन ये ख़ुद ही ज़ालिम थे। (76) और पुकारेंगे कि ऐ मालिक! "यह दोज़ख़ के दारोग़ा का नाम है" तुम्हारा परवर्दिगार (हमको मौत देकर) हमारा काम ही तमाम कर दे, वह (फ़रिश्ता) जवाब देगा कि तुम हमेशा इसी हाल में रहोगे। (77) हमने सच्चा दीन तुम्हारे पास पहुँचाया लेकिन तुममें अक्सर आदमी सच्चे दीन से नफ़रत रखते हैं। (78) हाँ! क्या उन्होंने कोई इन्तिज़ाम दुरुस्त किया है, सो हमने भी एक इन्तिज़ाम दुरुस्त किया है। (79) हाँ! क्या उन लोगों का यह ख़्याल है कि हम उनकी चुपके- चुपके (की जाने वाली) बातों को और उनके मश्विरों को नहीं सुनते? हम ज़रूर सुनते हैं। और हमारे फ़रिश्ते उनके पास हैं वे भी लिखते हैं। (80)

बदबख़्तों और बुरे लोगों के हालात

ऊपर चूँकि नेक लोगों का हाल बयान हुआ था इसलिये यहाँ बदबख़्तों का हाल बयान हो रहा है कि ये गुनाहगार लोग जहन्नम के अ़ज़ाबों में हमेशा रहेंगे। एक लम्हे के लिये भी उन्हें सहूलत न होगी, और उसमें वे बिल्कुल नाउम्मीद होकर पड़े रहेंगे। हर भलाई से वे मायूस हो जायेंगे। हम ज़ुल्म करने वाले नहीं बल्कि उन्होंने ख़ुद अपनी बद-आमालियों (बुरे कामों) की वजह से अपनी जान पर ख़ुद ही ज़ुल्म किया। हमने रसूल भेजे, किताबें नाज़िल फ़रमायीं, हुज्जत क़ायम कर दी लेकिन ये अपनी नाफ़रमानी और घमंड से बाज़ न आये, इस पर यह बदला पाया। इसमें ख़ुदा का कोई ज़ुल्म नहीं और न ख़ुदा अपने बन्दों पर ज़ुल्म करता है। यह जहन्नम के दारोग़ा 'मालिक' को पुकारेंगे।

सही बुख़ारी में है कि हुज़ूर सल्ल. ने मिम्बर पर इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया- ये मौत की आरज़ू करेंगे ताकि अ़ज़ाब से छूट जायें, लेकिन ख़ुदा का यह फ़ैसला हो चुका है कि:

Maktab E Ashraf

لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا.

यानी न तो उन्हें मौत आयेगी और न अ़ज़ाब की कमी होगी। एक और जगह इरशाद है:

وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى. الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى. ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى.

यानी वह बदबख़्त इस नसीहत से किनारा करने वाला हो जायेगा जो बड़ी सख़्त आग में पड़ेगा। फिर वहाँ न मरेगा और न जियेगा।

पस जब ये जहन्नम के दारोग़ा से बहुत ही ख़ुशामद व आ़जिज़ी से कहेंगे कि आप हमारी मौत की दुआ़ ख़ुदा से कीजिए तो वह जवाब देंगे कि तुम इसी में पड़े रहने वाले हो, मरोगे नहीं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि 'मकस' एक हज़ार साल है, यानी न मरोगे न छुटकारा पाओगे न भाग सकोगे। फिर उनकी सियाकारी का बयान हो रहा है कि जब हमने उनके सामने हक़ को पेश कर दिया, वाज़ेह कर दिया तो उन्होंने उसे मानना तो एक तरफ़ उससे नफ़रत की, उनकी तबीयत ही इस तरफ़ माईल न हुई तो हक़ और हक़ वालों से नफ़रत करते रहे, उससे रुकते रहे, हाँ नाहक़ की तरफ़ माईल रहे, नाहक़ वालों से उनकी ख़ूब बनती रही। पस तुम अपने नफ़्स को ही मलामत करो और अपने ऊपर ही अफ़सोस करो। लेकिन आज का अफ़सोस करना भी बेफ़ायदा है।

फिर फ़रमाता है कि उन्होंने बहुत बुरा मक्र और ज़बरदस्त दाव खेलाना चाहा तो हमने भी उनके साथ यही किया। हज़रत मुजाहिद रह. की यही तफ़सीर है और इसकी गवाही और ताईद इस आयत में है:

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ.

यानी उन्होंने मक्र (फ़रेब) किया और हमने भी इस तरह मक्र (तदबीर) किया कि उन्हें पता भी न चला।

मुश्रिक लोग हक़ को टालने के लिये तरह-तरह की बहाने-बाज़ियाँ करते रहते थे। अल्लाह तआ़ला ने भी उन्हें धोखे में ही रखा और बुरे आमाल का वबाल जब उनके सरों पर आ गया तब भी उनकी आँखें न खुलीं। इसी लिये इसके बाद ही फ़रमाया कि क्या उनका गुमान है कि हम उनकी पोशीदा (छुपी) बातें, ख़ुफ़िया प्लानिंग और चुपके-चुपके की जाने वाली बातें सुन नहीं रहे? उनका यह गुमान बिल्कुल ग़लत है, हम तो उनकी फ़ितरत तक से वाक़िफ़ हैं। हमारे मुक़र्रर किये हुए फ़रिश्ते उनके पास बल्कि उनके साथ हैं जो न सिर्फ़ देख रहे हैं बल्कि लिख भी रहे हैं।

आप कहिए अगर ख़ुदा-ए-रहमान के औलाद हो तो सबसे पहले उसकी इबादत करने वाला मैं हूँ। (81) आसमानों और ज़मीन का मालिक जो कि अ़र्श का भी मालिक है, उन बातों से पाक है जो ये (मुश्रिक) लोग बयान कर रहे हैं। (82) तो आप उनको इसी धंधे और तफ़रीह में रहने दीजिए यहाँ तक कि उनको अपने उस दिन से साबक़ा पड़े जिसका	قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ○ سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ○ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا

يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝ وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝ وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ ع ٢٢ / ١٣

उनसे वायदा किया जाता है। (83) और वही ज़ात है जो आसमान में भी इबादत के क़ाबिल है और ज़मीन में भी क़ाबिले इबादत है। और वही बड़ी हिक्मत वाला और बड़े इल्म वाला है। (84) और वह ज़ात बड़ी आलीशान है जिसके लिए आसमान और ज़मीन की और जो मख़्लूक़ उसके दरमियान में है उसकी बादशाही साबित है, और उसको क़ियामत की (भी) ख़बर है। और तुम सब उसी के पास लौटकर जाओगे। (85) और ख़ुदा के सिवा जिन माबूदों को ये लोग पुकारा करते हैं वे सिफ़ारिश (तक) का इख़्तियार न रखेंगे, हाँ! जिन लोगों ने हक़ बात (यानी ईमान के कलिमे) का इक़रार किया था और वे तस्दीक़ भी किया करते थे। (86) और अगर आप उनसे पूछें कि उनको किसने पैदा किया है तो यही कहेंगे कि अल्लाह ने, सो ये लोग किधर उल्टे जा रहे हैं? (87) और उसको रसूल के इस कहने की भी ख़बर है कि ऐ मेरे रब! ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते। (88) तो आप उनसे बेरुख़ रहिए और यूँ कह दीजिए कि तुमको सलाम करता हूँ, सो उनको अभी मालूम हो जाएगा। (89)

खुले लफ़्ज़ों में एक ऐलान

ऐ नबी! आप ऐलान कर दीजिए कि अगर मान लो अल्लाह तआ़ला की औलाद हो तो मुझे सर झुकाने में क्या संकोच है? न मैं उसके फ़रमान से मुँह मोड़ूँ न उसके किसी हुक्म को टालूँ। अगर ऐसा होता तो सबसे पहले मैं इसे मानता और इसका इक़रार करता, लेकिन ख़ुदा की ज़ात ऐसी नहीं, जिसका कोई हमसर (बराबर का) और जिसका कोई (जोड़ का) हो।

याद रहे कि बतौर शर्त जो कलाम होता है उसका वाक़े होना ज़रूरी नहीं, बल्कि संभावना भी ज़रूरी नहीं। जैसे एक जगह फ़रमान है:

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ...... الخ.

अगर हक़ तआ़ला औलाद की ख़्वाहिश करता तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता, लेकिन वह इससे पाक है। उसकी शाने वह्दानियत (एक होने की शान) इसके ख़िलाफ़ है, उसका तन्हा ग़लबा और

हर चीज़ का मालिक होना इसके ख़िलाफ़ है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने "आ़बिदीन" के मायने इनकारी के भी किये हैं, जैसे हज़रत सुफ़ियान सौरी रह.। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि "आ़बिदीन" से मुराद यहाँ "अव्वलुल् जाहिदीन" है, यानी पहला इनकार करने वाला। और यह "अ़बि-द यअ़बुदु" के बाब से है, और जो इबादत के मायने में होता है वह "अ़-ब-द यअ़बुदु" से होता है। इसकी ताईद में यह वाक़िआ़ भी है कि एक औ़रत को निकाह के छह माह बाद बच्चा हुआ, हज़रत उस्मान रज़ि. ने उसे रजम करने (यानी संगसार करके मारने) का हुक्म दिया लेकिन हज़रत अ़ली रज़ि. ने इसकी मुख़ालफ़त की और फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला की किताब में है:

وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا.

यानी हमल (गर्भ) की और दूध छुड़ाने की मुद्दत ढाई साल की है। एक और जगह अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः

وَفِصَالُهُ فِيْ عَامَيْنِ.

कि दो साल के अन्दर-अन्दर दूध छुड़ाने की मुद्दत है।

हज़रत उस्मान रज़ि. इसका इनकार न कर सके और फ़ौरन आदमी भेजा कि उस औ़रत को वापस करो। यहाँ भी लफ़्ज़ "अ़बि-द" है, यानी इनकार न कर सके। इब्ने वहब कहते हैं कि "अ़बि-द" के मायने न मानना, इनकार करना है। शायर के शे'र में भी "अ़बि-द" इनकार के और न मानने के मायने में है। लेकिन यह ज़्यादा सही नहीं है, इसलिये कि शर्त के जवाब में यह कुछ ठीक तौर पर लगता नहीं, इसे मानने के बाद मतलब यह हो जायेगा कि अगर रहमान की औलाद है तो मैं सबसे पहले इनकारी हूँ और इसमें कलाम की ख़ूबसूरती क़ायम नहीं रहती। हाँ सिर्फ़ यह कह सकते हैं कि लफ़्ज़ "इन" शर्त के लिये नहीं है बल्कि नफ़ी (मना करने) के लिये है। जैसे कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल भी है। तो अब कलाम का मज़मून यह होगा कि चूँकि रहमान की औलाद नहीं, पस मैं इसका पहला गवाह हूँ।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं यह कलाम अ़रब के मुहावरे के मुताबिक़ है। यानी न रहमान की औलाद, न मैं इसका क़ायल व आ़बिद। अबू सख़र रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि मैं तो पहले ही इसका आ़बिद हूँ कि उसकी औलाद है ही नहीं, और मैं उसकी तौहीद को मानने में भी आगे-आगे हूँ। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि मैं उसका पहला इबादत-गुज़ार हूँ और उसकी तौहीद का क़ायल हूँ और तुमको झुठलाने वाला हूँ।

इमाम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं कि 'मैं पहला इनकारी हूँ' यह दोनों लुग़त में "आ़बिद" और "अ़बि-द" पहला क़ौल ही ज़्यादा क़रीब है, इस वजह से कि यह जज़ा की शर्त है, लेकिन है यह नामुम्किन और मुहाल। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि अगर उसकी औलाद होती तो मैं इसे पहले ही मान लेता कि उसकी औलाद है, लेकिन वह इससे पाक है। इब्ने जरीर रह. इसी को पसन्द फ़रमाते हैं। और जो लोग लफ़्ज़ "इन" को नाफ़िया (नफ़ी करने वाला) बतलाते हैं उनके क़ौल की तरदीद करते हैं, इसी लिये बारी तआ़ला फ़रमाता है कि आसमान व ज़मीन और तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ इससे पाक, बहुत दूर और बिल्कुल अलग है कि उसकी औलाद हो। वह अकेला, तन्हा और सबसे बेनियाज़ है, उसकी नज़ीर, बराबर वाला, औलाद कोई नहीं। इरशाद होता है कि ऐ नबी! उन्हें अपनी जहालत में ग़ोते खाता हुआ छोड़ दो और दुनिया के खेल

Maktab E Ashraf

तमाशों में मशग़ूल रहने दो। इसी ग़फ़लत में उन पर क़ियामत टूट पड़ेगी। उस वक़्त अपना अन्जाम मालूम कर लेंगे।

फिर अल्लाह की ज़ात की बुज़ुर्गी, बड़ाई और शान व जलाल का मज़ीद बयान होता है कि ज़मीन व आसमान की तमाम मख़्लूक़ात उसकी आ़बिद (पूजा करने वाली) हैं, उसके सामने पस्त (झुकी हुई) और आ़जिज़ (बेबस) हैं, वह हकीम व अ़लीम है। जैसे एक और रिवायत में है कि ज़मीन व आसमान में अल्लाह (माबूद और इबादत के लायक़) वही है। हर छुपे और खुले को और तुम्हारे हर-हर अ़मल को जानता है। वह सबका ख़ालिक़ व मालिक, सबका रचाने और बनाने वाला, सब पर हुकूमत और सल्तनत रखने वाला, बड़ी बरकतों वाला है। वह तमाम ऐबों से, हर तरह के नुक़सान (कमी और नुक़्स) से पाक है। वह सब का मालिक है, बुलन्दियों और बड़ाईयों वाला है, कोई नहीं जो उसका हुक्म टाल सके, कोई नहीं जो उसकी मर्ज़ी बदल सके, हर एक पर वही क़ाबिज़ है, हर एक काम उसकी क़ुदरत के मातहत है। क़ियामत के आने के वक़्त को वही जानता है उसके सिवा किसी को उसके आने का ठीक वक़्त मालूम नहीं, सारी मख़्लूक़ उसी की तरफ़ लौटाई जायेगी, वह हर एक को उसके आमाल का बदला देगा।

फिर इरशाद होता है कि इन काफ़िरों के बातिल (झूठे) माबूद जिन्हें ये अपना सिफ़ारिशी ख़्याल किये बैठे हैं, उनमें से कोई भी सिफ़ारिश के लिये आगे नहीं बढ़ सकता। किसी की शफ़ाअ़त उन्हें काम न आयेगी। हाँ मगर जो शख़्स हक़ का इक़रार करता है और शाहिद (गवाह) हो और वह ख़ुद भी बसीरत व बसारत पर यानी इल्म व मारिफ़त वाला (अल्लाह को पहचानने वाला और उसको मानने वाला) हो, उसे ख़ुदा के हुक्म से नेक लोगों की शफ़ाअ़त कारामद होगी। उनसे अगर तू पूछेगा कि उनका ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाला) कौन है? तो ये इक़रार करेंगे कि अल्लाह ही है। अफ़सोस कि ख़ालिक़ उसी एक को मानकर फिर इबादत दूसरों की भी करते हैं जो बिल्कुल मजबूर और बेक़ुदरत हैं। ये कभी अपनी अ़क़्ल को काम में नहीं लाते कि जब पैदा उसी एक ने किया तो हम दूसरे की इबादत क्यों करें? जहालत, नासमझी और बेवक़ूफ़ी इतनी बढ़ गयी है कि ऐसी सीधी सी बात मरते दम तक समझ में न आयी, बल्कि समझाने से भी न समझा, इसलिये ताज्जुब के साथ इरशाद हुआ कि इतना मानते हुए फिर क्यों औंधे हुए जाते हो?

फिर इरशाद है कि मुहम्मद सल्ल. ने अपना यह कहना कहा यानी अपने रब की तरफ़ शिकायत की और अपनी क़ौम के झुठलाने का बयान किया, कि ये ईमान क़बूल नहीं करते। जैसे एक और आयत में इरशाद फ़रमाया गया है:

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا.

यानी रसूल की यह शिकायत ख़ुदा के सामने होगी कि मेरी उम्मत ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था।

इमाम इब्ने जरीर भी यही तफ़सीर करते हैं। इमाम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं कि इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में 'हा-उला-इ' का लफ़्ज़ भी है, यानी ये लोग। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला अपने नबी का क़ौल नक़ल फ़रमा रहा है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि यह तुम्हारे नबी का क़ौल है, अपने रब के सामने अपनी क़ौम की शिकायत पेश करते हुए।

सूरत के ख़त्म (समापन) पर इरशाद होता है कि मुश्रिक लोगों से मुँह मोड़ लो और उनकी बद-ज़ुबानी (बुरा-भला कहने) का बद-कलामी से जवाब न दो, बल्कि उनके दिल पर जाने की ख़ातिर क़ौल और फ़ेल में

दोनों में नर्मी बरतो (यानी इस तरह उनसे एक ताल्लुक़ तो रहेगा, क़ौल व फ़ेल की नर्मी उनके दिलों को झंझोड़ेगी) कह दो कि सलाम है (यानी भाई तुम्हारी बात तुम्हारे साथ है, मेरा तुम्हारा कोई ताल्लुक़ नहीं)। उन्हें अभी हक़ीक़त का हाल मालूम हो जायेगा।

इसमें ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से मुश्रिक लोगों को बड़ी धमकी है, और यही होकर भी रहा कि उन पर वह अ़ज़ाब आया जो उनसे टल न सका। अल्लाह तआ़ला ने अपने दीन को बुलन्द व बाला किया, अपने कलिमे को हर तरफ़ फैला दिया, अपने मोमिन और मुस्लिम बन्दों को ख़ूब-ख़ूब मज़बूत और ताक़तवर कर दिया और फिर उन्हें जिहाद के और जिला-वतन (देस निकाला) करने के अहकाम देकर इस तरह दुनिया में ग़ालिब कर दिया कि ख़ुदा के दीन में बेशुमार आदमी दाख़िल हुए और पूरब से लेकर पश्चिम तक इस्लाम फैल गया। वाक़ई अल्लाह की ज़ात बड़ी तारीफ़ों वाली और अ़ज़मत व बड़ाई की मालिक है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः ज़ुख़रुफ़ की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः दुख़ान

सूरः दुख़ान मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 59 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۝

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स रात को सूरः 'हा-मीम दुख़ान' पढ़े उसके लिये सुबह तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं। यह हदीस ग़रीब है और इसके एक रावी उमर बिन ख़सुअ़म ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं। इमाम तिर्मिज़ी रह. इन्हें मुन्करुल-हदीस कहते हैं। तिर्मिज़ी की एक और हदीस में है कि जिसने इस सूरत को जुमे की रात पढ़ा उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं। यह हदीस भी ग़रीब है और इसके एक रावी अबुल-मिक़दाद हिशाम ज़ईफ़ हैं और दूसरे रावी हज़रत हसन का हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से सुनना साबित नहीं। मुस्नदे बज़्ज़ार में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने इब्ने सय्याद के सामने अपने दिल में सूरः दुख़ान को पोशीदा करके उससे पूछा कि बता मेरे दिल में क्या है? उसने कहा "दुख़" आपने फ़रमाया बस परे हट जा, मुराद यह है कि वह गया। जो अल्लाह चाहता है होता है, फिर आप लौट गये।

حٰمٓ۝ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ۝ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ۝ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا	हा-मीम् (1) क़सम है इस वाज़ेह किताब की (2) कि हमने इसको (लौहे-महफ़ूज़ से दुनिया के आसमान पर) एक बरकत वाली रात (यानी शबे-क़द्र) में उतारा है, हम आगाह करने वाले थे। (3) उस रात में हर हिक्मत वाला मामला तय किया जाता है। (4) हमारी पेशी से

Maktab E Ashraf

مُرْسِلِيْنَ ۝ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝	हुक्म होकर, हम आपको पैग़म्बर बनाने वाले थे (5) रहमत की वजह से, जो आपके रब की तरफ़ से होती है। बेशक वह बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला है। (6) जो कि मालिक है आसमानों और ज़मीन का और जो (मख़्लूक़) उन दोनों के दरमियान है उसका भी। अगर तुम यक़ीन लाना चाहो। (7) उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही जान डालता है और वही जान निकालता है, वह तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप-दादाओं का भी रब है। (8)

एक बरकत वाली रात में क़ुरआन का नुज़ूल

अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि इस अ़ज़ीमुश्शान क़ुरआने करीम को बरकत वाली रात यानी लैलतुल-क़द्र (शबे-क़द्र) में नाज़िल फ़रमाया है। जैसे इरशाद है:

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ.

हमने इसे शबे-क़द्र में नाज़िल फ़रमाया है। और यह रात रमज़ान मुबारक में है। जैसे एक और आयत में है:

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ.

रमज़ान का महीना वह महीना है जिसमें क़ुरआने करीम उतारा गया।

हा-मीम, हुरूफ़े मुक़त्तआ़त में से है, सूरः ब-क़रह में इसकी पूरी तफ़सीर गुज़र चुकी है, इसलिये हम दोबारा नहीं लिखते। बाज़ लागों ने यह भी कहा है कि मुबारक रात जिसमें क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल हुआ वह शाबान की पन्द्रहवीं रात है, लेकिन यह क़ौल सरासर तकल्लुफ़ वाला (यानी एक दूर की बात) है। इसलिये कि क़ुरआन की दलील से क़ुरआन का रमज़ान में नाज़िल होना साबित है। और जिस हदीस में है कि शाबान में अगले शाबान तक के तमाम काम मुक़र्रर कर दिये जाते हैं, यहाँ तक कि निकाह का और औलाद का होना, मौत होना भी, वह हदीस मुर्सल है और ऐसी हदीसों से क़ुरआनी दलील का मुक़ाबला नहीं किया जा सकता।

हम लोगों को आगाह कर देने वाले हैं, यानी उन्हें ख़ैर व शर, नेकी व बदी मालूम करा देने वाले हैं ताकि तुमको हक़ पर हुज्जत साबित हो जाये और लोग शरीअ़त का इल्म हासिल कर लें। इसी रात हर मोहकम काम तय किया जाता है, यानी लौहे-महफ़ूज़ से कातिब फ़रिश्तों के हवाले किया जाता है, पूरे साल के तमाम अहम काम उम्र, रोज़ी वग़ैरह सब तय कर लिये जाते हैं।

हकीम के मायने मोहकम और मज़बूत के हैं, जो न बदले। वह सब हमारे हुक्म से होता है, हम रसूलों के भेजने वाले हैं ताकि वे ख़ुदा की आयतें ख़ुदा के बन्दों को पढ़कर सुनायें जिसकी उन्हें सख़्त ज़रूरत और पूरी हाजत है। यह तेरे रब की रहमत है, इस रहमत का करने वाला, क़ुरआन को उतारने वाला और रसूलों

Maktab E Ashraf

को भेजने वाला वह ख़ुदा है जो आसमान व ज़मीन और तमाम चीज़ों का मालिक और सब का ख़ालिक़ है। तुम अगर यक़ीन करने वाले हो तो इसके यक़ीन करने के काफ़ी कारण मौजूद हैं।

फिर इरशाद हुआ कि माबूदे बर्हक़ भी वही है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। हर एक की मौत ज़िन्दगी उसी के हाथ में है। तुम्हारा और तुम से अगलों का सबका पालने वाला वही है। इस आयत का मज़मून इस आयत के जैसा है:

قُلْ يٰاَيُّهَاالنَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا....... الخ.

यानी तू ऐलान कर दे कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ वह अल्लाह जिसकी बादशाहत है आसमान व ज़मीन में, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जो जिलाता और मारता है।

بَلْ هُمْ فِىْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِى السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۝ يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ۝ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۝ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ۝ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ۝

बल्कि वे शक में हैं, खेल में लगे हुए हैं। (9) सो आप (उनके लिए) उस दिन का इन्तिज़ार कीजिए कि आसमान की तरफ़ एक नज़र आने वाला धुआँ पैदा हो (10) जो उन सब लोगों पर आ़म हो "यानी फैल" जाए, यह (भी) एक दर्दनाक सज़ा है। (11) ऐ हमारे रब! हमसे इस मुसीबत को दूर कर दीजिए हम ज़रूर ईमान ले आएँगे। (12) उनको (इससे) कब नसीहत होती है, हालाँकि (इससे पहले) उनके पास ज़ाहिर शान का पैग़म्बर आया। (13) फिर भी ये लोग उससे सरकशी करते रहे और यही कहते रहे कि (किसी दूसरे बशर का) सिखाया हुआ है, दीवाना है। (14) हम किसी क़द्र अ़ज़ाब को हटा देंगे तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे। (15) जिस दिन हम बड़ी सख़्त पकड़ पकड़ेंगे (उस दिन) हम (पूरा) बदला ले लेंगे। (16)

एक अंधेरा धुआँ

फ़रमाता है कि हक़ आ चुका और ये शक व शुब्हे में और दुनिया के खेल-तमाशों में मशग़ूल व मसरूफ़ हैं। इन्हें उस दिन से आगाह कर दे जिस दिन आसमान से सख़्त धुआँ आयेगा। हज़रत मसरूक़ रह. फ़रमाते हैं कि हम एक मर्तबा कूफ़ा की मस्जिद में गये जो कन्दा के दरवाज़ों के पास है, तो देखा कि एक हज़रत अपने साथियों में क़िस्सा और कहानी बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि इस आयत में जिस धुएँ का ज़िक्र है उससे मुराद वह धुआँ है जो क़ियामत के दिन मुनाफ़िक़ों के कानों और आँखों में भर जायेगा और मोमिनों को ज़ुकाम की तरह की हालत पेश आयेगी। हम वहाँ से जब वापस लौटे और हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से इसका ज़िक्र किया तो आप लेटे-लेटे बेताबी के साथ बैठ गये और फ़रमाने लगे- अल्लाह तआ़ला ने

अपने नबी सल्ल. से फ़रमाया है- मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं चाहता और मैं तकल्लुफ़ करने वालों में नहीं हूँ। यह भी इल्म है कि इनसान जिस चीज़ को न जानता हो कह दे कि अल्लाह जाने। सुनो! मैं तुम्हें इस आयत का सही मतलब सुनाऊँ? क़ुरैश वालों ने इस्लाम क़बूल करने में ताख़ीर (देरी) की और हुज़ूर सल्ल. को सताने लगे तो आपने उनके हक़ में बद्दुआ की। यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ज़माने जैसा क़हत (अकाल और सूखा) उन पर आया। चुनाँचे वह दुआ़ क़बूल हुई और ऐसी ख़ुश्क-साली (अकाल) आयी कि उन्होंने हड्डियाँ और मुर्दार चबाना शुरू किया और आसमान की तरफ़ निगाहें डालते थे तो धुएँ के सिवा कुछ दिखाई न देता था।

एक रिवायत में है कि भूख की वजह से उनकी आँखों में चक्कर आने लगा, जब आसमान की तरफ़ नज़र उठाते तो बीच में एक धुआँ नज़र आता। उसी का बयान इन दो आयतों में है। लेकिन फिर इसके बाद लोग हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी हलाकत की शिकायत की। आपको रहम आ गया और आपने अल्लाह तआ़ला से फ़रियाद की, चुनाँचे बारिश बरसी। इसी का बयान इसके बाद वाली आयत में है कि अ़ज़ाब के हटते ही ये फिर कुफ़्र करने लगेंगे। इससे साफ़ साबित है कि यह दुनिया का अ़ज़ाब है, क्योंकि आख़िरत के अ़ज़ाब तो हटते खुलते और दूर होते नहीं। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. का क़ौल है कि पाँच चीज़ें गुज़र चुकीं। दुख़ान, रोम, चाँद, बतशा, और लिज़ाम। (बुख़ारी व मुस्लिम)

यानी आसमान से धुएँ का आना, रोमियों का अपनी शिकस्त के बाद ग़लबा पाना, चाँद के दो टुकड़े होना, बदर की लड़ाई में काफ़िरों का पकड़ा जाना व हारना और छट जाने वाला अ़ज़ाब।

बड़ी सख़्त पकड़ से मुराद बदर के दिन की लड़ाई है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. जो मुराद धुएँ से लेते हैं यही क़ौल मुजाहिद, अबुल-आ़लिया, इब्राहीम नख़ई, ज़ह्हाक, अ़तीया औ़फ़ी रह. वग़ैरह का है। और इसी को इब्ने जरीर रह. भी तरजीह देते हैं। अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ से मन्क़ूल है कि यह फ़तह-मक्का के दिन हुआ। यह क़ौल बिल्कुल ग़रीब बल्कि मुन्कर है। और बाज़ हज़रात फ़रमाते हैं कि यह गुज़र नहीं गया बल्कि क़ियामत के क़रीब आयेगा। पहले हदीस गुज़र चुकी है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम जब क़ियामत का ज़िक्र कर रहे थे और हुज़ूर सल्ल. आ गये तो आपने फ़रमाया- जब तक दस निशानात तुम न देख लो क़ियामत नहीं आयेगी- सूरज का पश्चिम से निकलना, धुआँ, याजूज माजूज का आना, हज़रत ईसा बिन मरियम का आना, दज्जाल का आना, पूरब पश्चिम और अ़रब के इलाक़े में ज़मीन का धंसाया जाना, आग भी क़ैलूला (यानी दोपहर को आराम) करेगी। (मुस्लिम)

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने इब्ने सय्याद के लिये दिल में यह आयतः

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ.

छुपाकर पूछा कि बता मैंने अपने दिल में क्या छुपा रखा है। उसने कहा "दुख़"। आपने फ़रमाया बस बरबाद हो, इससे आगे तेरी नहीं चलने की। इसमें भी एक क़िस्म का इशारा है कि अभी उसका इन्तिज़ार बाक़ी है और यह कोई आने वली चीज़ है। चूँकि इब्ने सय्याद बतौर काहिनों के बाज़ बातें दिल की ज़बान से बताने का दावेदार था। उसके झूठ को ज़ाहिर करने के लिये आपने यह किया और जब वह पूरा न बता सका तो आपने लोगों को उसकी हालत से वाक़िफ़ करा दिया कि उसके साथ शैतान है, कलाम सिर्फ़ चुरा लेता है और यह इससे ज़्यादा पर क़ुदरत नहीं पायेगा।

इब्ने जरीर में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ियामत की सबसे पहली निशानियाँ ये हैं- दज्जाल का

Mahtab E Ashraf

आना, ईसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम का नाज़िल होना, आग का अ़दन के बीच से निकलना जो लोगों को मेहशर की तरफ़ ले जायेगी, कैलूले (दोपहर के आराम) के वक़्त और रात की नींद के वक़्त भी उनके साथ रहेगी, और धुएँ का आना।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. ने सवाल किया कि हुज़ूर! धुआँ कैसा? आपने इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया- यह धुआँ चालीस दिन तक घटा (छाया) रहेगा जिससे मुसलमानों को तो नज़्ले की तरह की बीमारी हो जायेगी और काफ़िर बेहोश बदमस्त हो जायेंगे। उनके नथुनों से कानों से और दूसरी जगह से धुआँ निकलता रहेगा। यह हदीस अगर सही होती फिर तो दुख़ान के मायने मुक़र्रर हो जाते हैं, कोई बात बाक़ी नहीं रहती, लेकिन इसकी सेहत (सही होने) की गवाही नहीं दी जा सकती। इसके एक रावी रव्वाद से मुहम्मद बिन ख़लफ़ अस्क़लानी रह. ने सवाल किया कि क्या सुफ़ियान सौरी से तूने ख़ुद यह हदीस सुनी है? उसने इनकार किया। पूछा क्या तूने पढ़ी और उसने सुनी है? कहा नहीं। पूछा अच्छा तुम्हारी मौजूदगी में उनके सामने यह हदीस पढ़ी गयी? कहा नहीं। कहा कि फिर इस हदीस को कैसे बयान करते हो? कहा मैंने तो बयान नहीं की, मेरे पास कुछ लोग आये, इस रिवायत को पेश की, फिर जाकर मेरे नाम से इसे बयान करनी शुरू कर दी। बात भी यही है। यह हदीस बिल्कुल बेबुनियाद और गढ़ी हुई है।

इब्ने जरीर रह. इसे कई जगह लाये हैं और इसमें बहुत सी मुन्करात (यानी क़ाबिले रद्द बातें) हैं, ख़ुसूसन मस्जिदे अक़्सा (बैतुल-मुक़द्दस) के बयान में जो सूरः बनी इस्राईल के शुरू में है। वल्लाहु आलम।

एक और हदीस में है कि तुम्हारे रब ने तुम्हें तीन चीज़ों से डराया है- धुआँ जो मोमिन को ज़ुकाम कर देगा और काफ़िर का तो सारा जिस्म फैला देगा। रुयें-रुयें से धुआँ उठेगा, दाब्बतुल-अर्ज़ (ज़मीन से निकलने वाला जानवर) और दज्जाल। इसकी सनद बहुत उम्दा है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि धुआँ फैल जायेगा, मोमिन को तो ज़ुकाम की तरह लगेगा और काफ़िर का जोड़-जोड़ से निकलेगा। यह हदीस हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. के क़ौल से भी नक़ल की गयी है और हज़रत हसन रह. के अपने क़ौल से भी मरवी है।

हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं कि दुख़ान (धुआँ) गुज़र नहीं गया, बल्कि अब आयेगा। हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से धुएँ के बारे में ऊपर की हदीस की तरह रिवायत है। इब्ने अबी मुलैका रह. फ़रमाते हैं कि एक दिन सुबह के वक़्त मैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के पास गया तो आप फ़रमाने लगे- रात को मैं बिल्कुल नहीं सोया, मैंने पूछा क्यों? फ़रमाया इसलिये कि लोगों से सुना कि दुमदार सितारा निकला है, तो मुझे अन्देशा (डर और आशंका) हुआ कि कहीं यही दुख़ान न हो। पस सुबह तक मैंने आँख से आँख नहीं मिलाई। इसकी सनद सही है।

तर्जुमानुल-क़ुरआन हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के साथ सहाबा और ताबिईन भी हैं और मरफ़ूअ़ हदीसें भी हैं। जिनमें सही हसन और हर तरह की हैं, और उनसे साबित होता है कि दुख़ान क़ियामत की एक निशानी है जो आने वाली है। क़ुरआन के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ भी इसी की ताईद करते हैं। क्योंकि क़ुरआन ने इसे वाज़ेह और ज़ाहिर धुआँ कहा है, जिसे हर शख़्स देख सके और भूख के धुएँ से उसे ताबीर करना ठीक नहीं। क्योंकि वह तो एक ख़्याली चीज़ है। भूख-प्यास की सख़्ती की वजह से धुआँ सा आँखों के आगे ज़ाहिर हो जाता है जो दर असल धुआँ नहीं और क़ुरआन के अलफ़ाज़ में "दुख़ानिम् मुबीन" कहकर फ़रमाया कि वह लोगों को ढाँक लेगा। यह भी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की तफ़सीर की ताईद करता है। क्योंकि भूख के इस धुएँ ने सिर्फ़ मक्का वालों को ढाँका था न कि तमाम लोगों को।

फिर फ़रमाता है कि यह है दर्दनाक अ़ज़ाब। यानी उनसे यूँ कहा जायेगा, जैसे कि एक दूसरी आयत में

Maktab E Ashraf

भी इसको बयान किया गया है:

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا.........الخ

जिस दिन उन्हें जहन्नम की तरफ़ ढकेला जायेगा कि यह वह आग है जिसे तुम झुठला रहे थे।

या यह मतलब है कि वे ख़ुद एक दूसरे से यूँ कहेंगे। काफ़िर जब इस अ़ज़ाब को देखेंगे तो अल्लाह से इसके दूर होने की दुआ़ करेंगे। जैसा कि इस आयत में है:

وَلَوْ تَرٰىٓ اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ......... الخ.

यानी काश कि तू इन्हें देखता जब ये आग के पास खड़े किये जायेंगे और कहेंगे- काश कि हम लौटाये जाते तो हम अपने रब की आयतों को न झुठलाते और ईमान वाले बनकर रहते।

एक और आयत में है कि उस दिन गुनाहगार लोग दूसरे लोगों से कहेंगे कि परवर्दिगार हमें थोड़े से वक़्त तक और ढील दे दे तो हम तेरी पुकार पर लब्बैक कह लें और तेरे रसूलों की फ़रमाँबरदारी कर लें।

पस यहाँ यही कहा जाता है कि उनके लिये नसीहत कहाँ? उनके पास मेरे पैग़म्बर आ चुके, उन्होंने उनके सामने मेरे अहकाम वाज़ेह तौर पर रख दिये, लेकिन मानना तो कहाँ! उन्होंने परवाह तक न की। बल्कि उन्हें झूठा कहा, उनकी तालीम को ग़लत कहा और साफ़ कह दिया कि ये तो सिखाये पढ़ाए हुए हैं, इन्हें जुनून हो गया है। जैसे एक और आयत में है कि उस दिन इनसान नसीहत हासिल करेगा लेकिन अब उसके लिये नसीहत कहाँ है। एक और जगह फ़रमाया है:

وَقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ...... الخ.

यानी उस दिन अ़ज़ाबों को देखकर ईमान लाना बिल्कुल बेसूद है। फिर इरशाद होता है। इसके दो मायने हो सकते हैं, एक तो यह कि अगर मान लो हम अ़ज़ाब हटा लें और तुम्हें दोबारा दुनिया में भेज दें तो भी तुम वहाँ जाकर यही करोगे, जो इससे पहले करके आये हो। जैसे एक जगह फ़रमायाः

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ........ الخ.

यानी अगर हम उन पर रहम करें और बुराई उनसे हटा लें तो फिर ये अपनी सरकशी में आँखें बन्द करके व्यस्त हो जायेंगे। और जैसे फ़रमायाः

وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ....... الخ.

यानी अगर ये लौटाये जायें तो निश्चित तौर पर दोबारा फिर हमारी नाफ़रमानियाँ करने लगेंगे, और पूरी तरह झूठे साबित होंगे।

दूसरे मायने यह भी हो सकते हैं कि अ़ज़ाब के असबाब क़ायम हो चुकने और अ़ज़ाब आ जाने के बाद भी अगर हम इसे थोड़ी देर के लिये ठहरा लें, फिर भी ये अपने बुरे आमालों और ख़बासत (गन्दगी यानी नाफ़रमानी) से बाज़ नहीं आयेंगे।

इससे यह लाज़िम नहीं आता कि अ़ज़ाब उन्हें लग गया और फिर हट गया, जैसे यूनुस अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के बारे में अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि क़ौमे यूनुस जब ईमान लाई हमने उनसे अ़ज़ाब हटा लिया, पस अ़ज़ाब उन्हें होना शुरू नहीं हुआ था, हाँ उसके असबाब मौजूद व मुहैया हो चुके थे। उन तक अ़ज़ाबे ख़ुदा पहुँच चुका था। और इससे यह लाज़िम नहीं आता कि वे अपने कुफ़्र से हट गये, फिर उसकी

Maktab E Ashraf

तरफ़ लौट गये। चुनाँचे हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम और उन पर ईमान लाने वालों से जब क़ौम ने कहा कि या तो तुम हमारी बस्ती छोड़ दो या हमारे मज़हब में लौट आओ, तो जवाब में अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया कि चाहे हम उसे बुरा जानते हों? जबकि ख़ुदा तआ़ला ने हमें उससे निजात दे रखी है। फिर भी अगर हम तुम्हारी मिल्लत (रास्ते और मज़हब) में लौट आयें तो हमसे बढ़कर झूठा और ख़ुदा के ज़िम्मे बोहतान बाँधने वाला और कौन होगा? ज़ाहिर है कि हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने इससे पहले भी कभी कुफ़्र में क़दम नहीं रखा था। और हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि तुम लौटने वाले हो। इससे मतलब अ़ज़ाबे ख़ुदा की तरफ़ लौटना है। बड़ी और सख़्त पकड़ से मुराद जंगे-बदर है।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. और आपके साथ की वह जमाअ़त जो दुख़ान को हो चुका हुआ मानती है, वह तो बतशा के मायने यही करती है। बल्कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. से और एक जमाअ़त से यही मन्क़ूल है। अगरचे यह मतलब भी हो सकता है लेकिन बज़ाहिर तो यह मालूम होता है कि इससे मुराद क़ियामत के दिन की पकड़ है, अगरचे बदर का दिन भी पकड़ का और काफ़िरों पर सख़्त दिन था। इब्ने जरीर में है, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अगरचे हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. इसे बदर का दिन बतलाते हैं लेकिन मेरे नज़दीक तो इससे मुराद क़ियामत का दिन है। इसकी सनद सही है। हज़रत हसन बसरी और हज़रत इक्रिमा रह. से भी दोनों रिवायतों में से ज़्यादा सही रिवायत यही है। वल्लाहु आलम।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ
رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ۝ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ
اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا
عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَ
اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ۝
وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ۝ فَدَعَا
رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ۝ فَاَسْرِ
بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝ وَاتْرُكِ
الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ۝ كَمْ
تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّزُرُوْعٍ

और हमने उनसे पहले फ़िरऔ़न की क़ौम को आज़माया था और (वह आज़माईश यह थी कि) उनके पास एक मुअ़ज़्ज़ज़ "यानी सम्मानित" पैग़म्बर आए थे। (17) कि उन अल्लाह के बन्दों (यानी बनी इस्राईल) को मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ुदा का रसूल (होकर आया) हूँ, दियानतदार हूँ। (18) और यह (भी फ़रमाया) कि तुम ख़ुदा से सरकशी मत करो, मैं तुम्हारे सामने (अपनी नुबुव्वत की) एक स्पष्ट दलील पेश करता हूँ। (19) और मैं अपने परवर्दिगार और तुम्हारे रब की पनाह लेता हूँ इससे कि तुम लोग मुझको पत्थर (या पत्थर के अ़लावा किसी चीज़) से क़त्ल करो। (20) और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझसे अलग ही रहो। (21) तब मूसा ने अपने रब से दुआ़ की कि ये बड़े सख़्त मुजरिम लोग हैं। (22) तो अब मेरे बन्दों को तुम रात-ही-रात में लेकर चले जाओ, तुम लोगों का पीछा होगा। (23) और तुम उस दरिया को सुकून की हालत में छोड़ देना, उनका सारा लश्कर डुबो दिया

وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ٥لا وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا
فٰكِهِيْنَ ٥لا كَذٰلِكَ قف وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا
اٰخَرِيْنَ ٥ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَ
الْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ٥ع وَلَقَدْ ع ٢٩ ١٤
نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ
الْمُهِيْنِ ٥لا مِنْ فِرْعَوْنَ ط اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا
مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ٥ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى
عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ٥ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ
الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ٥

जाएगा। (24) वे लोग कितने ही बाग़ और चश्मे (यानी नहरें) (25) और खेतियाँ और उम्दा मकानात (26) और आराम के सामान जिसमें वे ख़ुश रहा करते थे, छोड़ गए। (27) (यह क़िस्सा) इसी तरह हुआ और हमने एक दूसरी क़ौम को उनका मालिक बना दिया। (28) सो न तो उन पर आसमान और ज़मीन को रोना आया और न उनको मोहलत दी गई। (29)

और हमने बनी इस्राईल को सख़्त ज़िल्लत के अ़ज़ाब यानी फ़िरऔ़न (के ज़ुल्म व सितम) से निजात दी। (30) वाक़ई वह बड़ा सरकश (और बन्दगी की) हद से निकल जाने वालों में से था। (31) और (इसके अ़लावा) हमने बनी इस्राईल को अपने इल्म की रू से (बाज़ बातों में) तमाम दुनिया-जहान वालों पर बरतरी दी। (32) और हमने उनको ऐसी निशानियाँ दीं जिनमें खुला इनाम था। (33)

Maktab E Ashraf

फ़िरऔ़न की क़ौम आज़माईश के शिकन्जे में

इरशाद होता है कि इन मुश्रिकों से पहले मिस्र के क़िब्तियों को हमने जाँचा। उनकी तरफ़ अपने सम्मानित रसूल हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को भेजा। उन्होंने मेरा पैग़ाम पहुँचाया कि बनी इस्राईल को मेरे साथ कर दो और उन्हें दुख न दो। मैं अपनी नुबुव्वत पर गवाही देने वाले मोजिज़े अपने साथ लाया हूँ और हिदायत के मानने वाले सलामती से रहेंगे। मुझे अल्लाह तआ़ला ने अपनी 'वही' का अमानतदार बनाकर तुम्हारी तरफ़ भेजा है। मैं तुम्हें उसका पैग़ाम पहुँचा रहा हूँ तुम्हें रब की बातों के मानने से सरकशी न करनी चाहिये। इसमें बयान किये हुए दलाईल व अहकाम के सामने मानने के लिये सर झुका देना चाहिये। उसकी इबादतों से जी चुराने वाले ज़लील व ख़्वार होकर जहन्नम में जाते हैं। मैं तो तुम्हारे सामने खुली दलील और स्पष्ट आयत रखता हूँ। मैं तुम्हारी बदगोई (बुरा कहने) और तोहमत लगाने से अल्लाह की पनाह लेता हूँ।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और अबू सालेह तो यही कहते हैं, और क़तादा रह. कहते हैं कि मुराद पथराव करना और पत्थरों से मार डालना है। यानी ज़बानी तकलीफ़ देने और हाथ से सताने से मैं अपने रब की जो तुम्हारा भी मालिक है, पनाह चाहता हूँ। अच्छा अगर तुम मेरी नहीं मानते, मुझ पर भरोसा नहीं करते, ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते तो कम से कम मुझको सताने और तकलीफ़ देने से तो बाज़ रहो, और उस वक़्त का इन्तिज़ार करो जबकि ख़ुदा हममें और तुममें फ़ैसला कर देगा।

फिर जब अल्लाह के नबी कलीमे ख़ुदा हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने एक लम्बी मुद्दत उनमें गुज़ारी और ख़ूब तब्लीग़ कर ली। हर तरह ख़ैरख़्वाही (हमदर्दी) की, उनकी हिदायत के लिये तमाम कोशिशें कर लीं

और देखा कि वे दिन-ब-दिन अपने कुफ़्र में बढ़ते जा रहे हैं तो ख़ुदा तआ़ला से उनके लिये बद्दुआ़ की। जैसे एक दूसरी आयत में है कि हज़रत मूसा ने कहा- ऐ हमारे रब! तूने फ़िरऔ़न और उसके सरदारों को दुनियावी चमक-दमक और माल व मता दे रखी है। ख़ुदाया ये उससे दूसरों को भी तेरी राह से भटका रहे हैं, तू इनका माल ग़ारत कर और इनके दिल और सख़्त कर दे, ताकि दर्दनाक अ़ज़ाब के अपनी आँखों से देख लेने तक इन्हीं ईमान नसीब ही न हो। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जवाब मिला कि ऐ मूसा! और ऐ हारून! मैंने तुम्हारी दुआ़ क़बूल कर ली। अब तुम अपनी ज़िम्मेदारी पर जम जाओ।

यहाँ फ़रमाता है कि हमने मूसा से कहा कि मेरे बन्दों यानी बनी इस्राईल को रातों-रात फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़न की क़ौम (यानी उसके मानने वालों) की बेख़बरी में यहाँ से लेकर चले जाओ। ये काफ़िर तुम्हारा पीछा करेंगे लेकिन तुम बिना किसी डर और घबराहट के चले जाओ, मैं तुम्हारे लिये दरिया को ख़ुश्क कर दूँगा। उसके बाद जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम बनी इस्राईल को लेकर चल पड़े, फ़िरऔ़नी लश्कर मय फ़िरऔ़न के उनके पकड़ने को चला, बीच में दरिया आड़े आ गया। आप बनी इस्राईल को लेकर उसमें उतर गये, दरिया का पानी सूख गया और आप अपने साथियों समेत पार हो गये, तो चाहा कि दरिया पर लकड़ी मारकर उससे कह दें कि अब तू अपनी रवानी (चाल और बहने) पर आ जा, ताकि फ़िरऔ़न उस पर न आ सके। वहीं ख़ुदा ने 'वही' भेजी कि इसे इसी हाल में ठहरा हुआ रहने दो, साथ ही इसकी वजह भी बतला दी कि ये सब इसी में डूब मरेंगे। फिर तुम सब बिल्कुल ही मुत्मईन और बेख़ौफ़ हो जाओगे।

ग़र्ज़ कि हुक्म हुआ था कि दरिया को ख़ुश्क छोड़कर चल दें। "रह्वन्" के मायने हैं सूखा रास्ता जो अपनी असली हालत पर हो। मक़सद यह है कि पार होकर दरिया को रवानी का हुक्म न देना, यहाँ तक कि दुश्मनों में से एक-एक उसमें न आ जाये। अब उसे जारी होने का हुक्म मिलते ही सबको ग़र्क़ कर देगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- देखो कैसे ग़ारत हुए? बाग़ात खेतियाँ नहरें मकानात और बैठकें सब छोड़कर फ़ना हो गये। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मिस्र का दरिया-ए-नील पूरब व पश्चिम के दरियाओं का सरदार है और सब नहरें उसके मातहत हैं। जब उसकी रवानी (चलना और बहना) ख़ुदा को मन्ज़ूर होती है तो तमाम नहरों को उसमें से पानी पहुँचाने का हुक्म होता है। जहाँ तक रब को मन्ज़ूर हो उसमें पानी आ जाता है। फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला और नहरों को रोक देता है और हुक्म देता है कि अब अपनी-अपनी जगह चली जाओ। उन फ़िरऔ़नियों के ये बाग़ात, दरिया-ए-नील के दोनों किनारों पर लगातार (यानी क़तार में) चले गये थे। अस्वान से लेकर रशीद तक इसका सिलसिला था और नौ ख़लीजें (खाड़ियाँ) थीं। ख़लीजे इस्कन्दरिया, ख़लीजे दमियात, ख़लीजे सरदूस, ख़लीजे मुनफ़, ख़लीजे फ़यूम, ख़लीजे मन्ही और ये सब आपस में जुड़ी और मिली हुई थीं और पहाड़ों के दामन में उनकी खेतियाँ थीं जो मिस्र से लेकर दरिया तक बराबर चली आती थीं। इन तमाम को भी दरिया सैराब करता था। बड़े अमन-चैन की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, लेकिन मग़रूर (घमंडी) हो गये और आख़िर सारी नेमतें यूँही छोड़कर तबाह कर दिये गये। माल व औलाद, शान व शौकत, सल्तनत व इज़्ज़त एक ही रात में छूट गये और भुस की तरह उड़ा दिये गये। एक गुज़रे हुए कल की तरह बेनिशान कर दिये गये। ऐसे डुबोये गये कि उभर न सके, जहन्नम में पहुँच गये और बहुत बुरी जगह पहुँच गये। उनकी तमाम चीज़ें ख़ुदा तआ़ला ने बनी इस्राईल को दे दीं। जैसे एक और आयत में फ़रमाया है कि हमने इन कमज़ोरों को इनके सब्र के बदले उस सरकश क़ौम की तमाम नेमतें अ़ता फ़रमा दीं और बेईमानों को तबाह कर डाला। यहाँ भी दूसरी क़ौम जिसे वारिस बनाया उससे मुराद भी बनी इस्राईल हैं।

फिर इरशाद होता है कि उन पर ज़मीन व आसमान न रोये, क्योंकि उन पापियों के नेक आमाल थे ही नहीं जो आसमानों पर चढ़ते हों, और अब उनके न चढ़ने की वजह से वे अफ़सोस करें। न ज़मीन में उनकी ऐसी जगहें थीं कि जहाँ बैठकर ये ख़ुदा की इबादत करते हों और आज उन्हें न पाकर ज़मीन की वह जगह उनका मातम करे। उन्हें मोहलत ही न दी गयी।

मुस्नद अबू यअ़ला मूसली में है कि हर बन्दे के लिये आसमान के दो दरवाज़े हैं, एक से उसकी रोज़ी उतरती है, दूसरे से उसके आमाल और उसके कलाम चढ़ते हैं। जब यह मर जाता है और वह अ़मल व रिज़्क़ को गुमशुदा (यानी बन्द) पाते हैं तो रोते हैं। फिर इसी आयत की हुज़ूर सल्ल. ने तिलावत की। इब्ने अबी हातिम में रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि इस्लाम ग़ुर्बत (तंगहाली) से शुरू हुआ और फिर ग़ुर्बत पर आ जायेगा। याद रखो! मोमिन कहीं अन्जान मुसाफ़िर की तरह नहीं, मोमिन जहाँ कहीं सफ़र में मरता है, जहाँ उसका कोई रोने वाला न हो वहाँ भी उसके रोने वाले आसमान व ज़मीन मौजूद हैं। फिर हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तिलावत करके फ़रमाया- ये दोनों काफ़िर पर नहीं रोते।

हज़रत अ़ली रज़ि. से किसी ने पूछा कि आसमान व ज़मीन कभी किसी पर रोये भी हैं? आपने फ़रमाया- आज तूने वह बात मालूम की है कि तुझसे पहले मुझसे इसका सवाल किसी ने नहीं किया। सुनो! हर बन्दे के लिये ज़मीन में एक नमाज़ की जगह होती है और एक जगह आसमान में उसके अ़मल के चढ़ने की होती है। और आले फ़िरऔ़न के नेक आमाल ही न थे, इस वजह से न ज़मीन उन पर रोई न आसमान को उन पर रोना आया, और न उन्हें ढील दी गयी कि कोई नेकी बजा ला सकें।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह सवाल हुआ तो आपने क़रीब-क़रीब यही जवाब दिया, बल्कि आपसे यह नक़ल किया गया है कि चालीस दिन तक ज़मीन मोमिन पर रोती रहती है। हज़रत मुजाहिद रह. ने जब यह बयान फ़रमाया तो किसी ने इस पर ताज्जुब का इज़हार किया। आपने फ़रमाया सुब्हानल्लाह! इसमें ताज्जुब की कौनसी बात है? जो बन्दा ज़मीन को अपने रुकूअ़ व सज्दों से आबाद रखता था, जिस बन्दे की तकबीर व तस्बीह की आवाज़ें आसमान बराबर सुनता रहता था, भला ये दोनों उस अल्लाह के इबादत गुज़ार बन्दे पर रोयेंगे नहीं? हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि फ़िरऔ़नियों जैसे ज़लील व ख़्वार लोगों पर ये क्यों रोते?

फ़ायदाः हज़रत इब्राहीम रह. फ़रमाते हैं कि दुनिया जब से रचाई (यानी बनाई) गयी है तब से आसमान सिर्फ़ दो शख़्सों पर रोया है। उनके शागिर्द से सवाल हुआ कि क्या आसमान व ज़मीन हर ईमान वाले पर रोते नहीं? फ़रमाया- सिर्फ़ उतना हिस्सा जिस हिस्से से उसका नेक अ़मल चढ़ता था। सुन! आसमान का रोना, उसका सुर्ख़ होना और नरी के गुलाबी रंग की तरह हो जाना है। सो यह हाल सिर्फ़ दो शख़्सों की शहादत पर हुआ है, हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल के मौक़े पर तो आसमान सुर्ख़ हो गया और ख़ून बरसाने लगा। और दूसरे हज़रत हुसैन रज़ि. के क़त्ल पर भी आसमान का रंग सुर्ख़ हो गया था।

(इब्ने अबी हातिम)

यज़ीद बिन अबू ज़ियाद का क़ौल है कि इमाम हुसैन के क़त्ल की वजह से चार माह तक आसमान के किनारे सुर्ख़ रहे और यही सुर्ख़ी उसका रोना है। हज़रत अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि उसके किनारों का सुर्ख़ हो जाना उसका रोना है। यह भी ज़िक्र किया गया है कि क़त्ले हुसैन के दिन जिस पत्थर को उल्टा जाता था उसके नीचे जमा हुआ ख़ून निकलता था। उस दिन सूरज को भी ग्रहण लगा हुआ था। आसमान के किनारे भी सुर्ख़ थे और पत्थर गिरे थे। लेकिन ये सब बातें बेबुनियाद और शियाओं के गढ़े हुए अफ़साने हैं। इसमें

Maktaba Ashraf

Maktab E Ashraf

कोई शक नहीं कि नवासा-ए-रसूल की शहादत का वाक़िआ बहुत ही दर्द-अंगेज़ और हसरत व अफ़सोस वाला है, लेकिन इस पर शियाओं ने जो हाशिया चढ़ाया है और गढ़-गढ़कर जो बातें फैला दी हैं वे बिल्कुल झूठ और पूरी तरह ग़लत हैं। ख़्याल तो फ़रमाईये कि इससे बहुत ज़्यादा अहम वाक़िआत हुए और क़त्ले हुसैन से बहुत बड़ी वारदातें हुईं, लेकिन उनके होने पर भी आसमान व ज़मीन वग़ैरह में यह इन्क़िलाब (परिवर्तन) न हुआ, आप ही के वालिद माजिद हज़रत अ़ली रज़ि. भी क़त्ल किये गये जो सब के नज़दीक आपसे अफ़ज़ल थे। लेकिन न तो पत्थरों के नीचे से ख़ून निकला न और कुछ हुआ। हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. को घेर लिया जाता है और निहायत बेदर्दी से बिना वजह ज़ुल्म व सितम के साथ उन्हें क़त्ल किया जाता है। फ़ारूक़े आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. को सुबह की नमाज़ पढ़ते हुए नमाज़ की जगह ही क़त्ल किया जाता है। यह वह ज़बरदस्त मुसीबत थी कि इससे पहले मुसलमान कभी ऐसी मुसीबत में मुब्तला नहीं हुए थे। लेकिन इन वाक़िआत में से किसी वाक़िए के वक़्त इनमें से एक भी बात नहीं हुई जो शियाओं ने हज़रत हुसैन रज़ि. की क़त्ल होने की जगह के बारे में मशहूर कर रखी हैं।

इन सब को भी जाने दीजिए। तमाम इनसानों के दीनी और दुनियावी सरदार सैयदुल-बशर रसूलुल्लाह सल्ल. को लीजिए। जिस रोज़ आप इन्तिक़ाल फ़रमाते हैं, इनमें से कुछ भी नहीं होता। और सुनिये! जिस रोज़ हुज़ूर सल्ल. के साहिबज़ादे हज़रत इब्राहीम रज़ि. का इन्तिक़ाल होता है, इत्तिफ़ाक़ से उसी रोज़ सूरज ग्रहण होता है और कोई कह देता है कि इब्राहीम के इन्तिक़ाल की वजह से सूरज को ग्रहण लगा है, तो रसूलुल्लाह सल्ल. ग्रहण की नमाज़ अदा करके फ़ौरन ख़ुतबे पर खड़े हो जाते हैं और फ़रमाते हैं कि सूरज चाँद अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं, किसी की मौत ज़िन्दगी की वजह से उन्हें ग्रहण नहीं लगता।

इसके बाद की आयत में अल्लाह तआ़ला बनी इस्राईल पर अपना एहसान जताता है कि हमने उन्हें फ़िरऔ़न जैसे घमंडी, ताक़तवर और हद से बढ़ने वाले के ज़लील अ़ज़ाब से निजात दी। उसने बनी इस्राईल को पस्त व ख़्वार कर रखा था। ज़लील ख़िदमतें (यानी घटिया काम) उनसे लेता था और सख़्त बेगारी के काम बग़ैर मुआ़वज़े के उनसे कराता था। अपने नफ़्स को तौलता रहता था, घमंड और तकब्बुर में मस्त था, बेवक़ूफ़ी से किसी चीज़ की हद-बन्दी (सीमा और हद) का ख़्याल न करता था, ख़ुदा की ज़मीन में सरकशी किये हुए था, और इन बदकारियों में उसकी क़ौम भी उसके साथ थी।

फिर बनी इस्राईल पर एक और मेहरबानी का ज़िक्र फ़रमा रहा है कि उस ज़माने के तमाम लोगों पर उन्हें फ़ज़ीलत (सम्मान और बड़ाई) अ़ता फ़रमाई। हर ज़माने को 'आ़लम' कहा जाता है, यह मुराद नहीं कि तमाम अगलों पिछलों पर उन्हें बुज़ुर्गी दी। यह आयत भी उस आयत की तरह है जिसमें फ़रमान है:

يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ.

ऐ मूसा! मैंने तुम्हें लोगों पर बुज़ुर्गी (रुतबा और बड़ाई) अ़ता फ़रमाई। यानी इस ज़माने के लोगों पर। जैसे हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम के लिये फ़रमायाः

وَاصْطَفٰكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ.

इससे भी यही मतलब है कि उस ज़माने की तमाम औ़रतों पर आपकी फ़ज़ीलत है। इसलिये कि उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा उनसे यक़ीनन अफ़ज़ल हैं, या कम से कम बराबर। इसी

तरह हज़रत आसिया बिन्ते मुज़ाहिम रज़ि. जो फ़िरऔन की बीवी थीं, और उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की फ़ज़ीलत तमाम औरतों पर ऐसी ही है जैसी फ़ज़ीलत शोरबे में भिगोई हुई रोटी की और खानों पर (यह अरब का एक ख़ास खाना था जिसको 'सरीद' कहते थे)।

फिर बनी इस्राईल पर एक और एहसान बयान हो रहा है कि हमने उन्हें वह हुज्जत व बुरहान, दलील व निशानी और मोजिज़े व करामात अता फ़रमाये जिनमें हिदायत की तलाश करने वालों के लिये साफ़-साफ़ इम्तिहान था।

ये लोग कहते हैं कि (34) अख़ीर हालत बस यही हमारा दुनिया का मरना है, और हम दोबारा ज़िन्दा न होंगे। (35) सो ऐ मुसलमानो! अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादाओं को (ज़िन्दा करके) सामने लाओ। (36) ये लोग (कुव्वत और शौकत में) ज़्यादा बढ़े हुए हैं या तुब्बअ़ (यमन के बादशाह) की क़ौम? और जो क़ौमें उनसे पहले गुज़र चुकी हैं, सो हमने उन को भी हलाक कर डाला, वे नाफ़रमान थे। (37)	اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ۝ اِنْ هِىَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ۝ فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ اَهْلَكْنٰهُمْ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝

एक बेवक़ूफ़ी वाली बात

यहाँ मुश्रिकों का क़ियामत का इनकार और उसकी दलील बयान फ़रमाकर ख़ुदा तआ़ला इसकी तरदीद करता है। उनका ख़्याल था कि क़ियामत नहीं आयेगी, मरने के बाद फिर ज़िन्दा होना नहीं है, और हश्र व नश्र (दोबारा ज़िन्दा होना और हिसाब व किताब) सब ग़लत है। दलील यह पेश करते थे कि हमारे बाप दादा जो मर गये वे क्यों दोबारा ज़िन्दा होकर नहीं आये? ख़्याल कीजिए कि यह किस क़द्र बोदी और बेहूदा दलील है। दोबारा उठ खड़ा होना, मरने के बाद का जीना क़ियामत में होगा न कि दुनिया में। फिर लौटकर आयेंगे। उस दिन ये ज़ालिम जहन्नम का ईंधन बनेंगे। उस वक़्त यह उम्मत अगली उम्मतों पर गवाही देगी और उन पर उनके नबी गवाही देंगे।

फिर अल्लाह तआ़ला उन्हें डरा रहा है कि कहीं ऐसा न हो कि हमारे जो अ़ज़ाब इसी जुर्म की वजह से अगली (पहले गुज़री) क़ौमों पर आये वे तुम पर भी आ जायें और उनकी तरह बेनाम व निशान कर दिये जाओ। उनके वाक़िआ़त सूरः सबा में गुज़र चुके हैं। वे लोग भी क़हतान के अ़रब थे, जैसे यह अ़दनान के अ़रब हैं। हमीर जो सबा के थे वे अपने बादशाह को तुब्बअ़ कहते थे, जैसे फ़ारस (ईरान) के हर बादशाह को किसरा और रोम के हर बादशाह को क़ैसर और मिस्र के हर बादशाह को फ़िरऔन और हब्शा के हर बादशाह को नजाशी कहा जाता है। उनमें से एक तुब्बअ़ यमन से निकला और ज़मीन में फिरता रहा, समरक़न्द पहुँच गया, हर जगह के बादशाहों को शिकस्त देता रहा और अपने मुल्क का दायरा बहुत फैला लिया। ज़बरदस्त लश्कर और बेशुमार रिआ़या (प्रजा) उसके मातहत थी। उसने हैरा नाम की बस्ती बसाई, यह अपने ज़माने में मदीना भी आया था और यहाँ के बाशिन्दों से भी लड़ा, लेकिन उसे लोगों ने इससे रोका, ख़ुद मदीना वालों का भी उससे यह सुलूक रहा कि दिन को तो लड़ते थे और रात को उसकी

Maktab E Ashraf

मेहमानदारी करते थे, आख़िर उसको भी लिहाज़ आ गया और लड़ाई बन्द कर दी। उसके साथ यहाँ के दो यहूदी आलिम हो गये थे जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सच्चे दीन के आलिम भी थे। वे उसे हर वक़्त भलाई बुराई समझाते रहते थे। उन्होंने कहा कि आप मदीना को तबाह व बरबाद नहीं कर सकते क्योंकि यह आख़िरी ज़माने के पैग़म्बर की हिजरत का स्थान है, पस यह यहाँ से लौट गया और उन दोनों आलिमों को अपने साथ लेता चला।

जब यह मक्का पहुँचा तो इसने बैतुल्लाह को गिराना चाहा लेकिन इन दोनों ने उसे रोका और इस पाक घर की अज़्मत व सम्मान उसके सामने बयान किया और कहा कि इसके बानी (संस्थापक) ख़लीले खुदा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं और उसी नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ के हाथों फिर इसकी असली अज़्मत ज़ाहिर हो जायेगी। चुनाँचे यह अपने इरादे से बाज़ आया, बल्कि बैतुल्लाह की बड़ी ताज़ीम व तकरीम (इज़्ज़त व सम्मान) की, तवाफ़ किया, ग़िलाफ़ चढ़ाया और यहाँ से वापस यमन चला गया। खुद हज़रत मूसा के दीन में दाख़िल हुआ और तमाम यमन में यही दीन फैलाया। उ : वक़्त तक हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का भी ज़हूर नहीं हुआ था और उस ज़माने वालों के लिये यही सच्चा दीन था।

इस तुब्बअ़ के वाक़िआत बहुत तफ़सील से सीरत इब्ने इस्हाक़ में मौजूद हैं और हाफ़िज़ इब्ने असाकिर ने भी अपनी किताब में बहुत तफ़सील के साथ ज़िक्र किये हैं। उसमें है कि उसकी राजधानी दमिश्क़ में थी। उसके लश्करों की सफ़ें दमिश्क़ से लेकर यमन तक पहुँचती थीं।

एक हदीस में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैं नहीं जान सका कि हद लगने (सज़ा पाने) से गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाता है या नहीं। और न मुझे यह मालूम है कि तुब्बअ़ मलऊन था या नहीं। और न मुझे यह ख़बर है कि ज़ुल्क़रनैन नबी थे या बादशाह। एक और रिवायत में है कि यह भी फ़रमाया कि हज़रत उज़ैर पैग़म्बर थे या नहीं। (इब्ने अबी हातिम)

इमाम दारे क़ुतनी रह. फ़रमाते हैं कि इस हदीस की रिवायत सिर्फ़ अ़ब्दुर्रज़ाक़ से ही है। एक और सनद से रिवायत की गयी है कि हज़रत उज़ैर का नबी होना न होना मुझे मालूम नहीं, न मैं यह जानता हूँ कि तुब्बअ़ पर लानत करूँ या नहीं? इसे ज़िक्र करने के बाद हाफ़िज़ इब्ने असाकिर रह. ने दो रिवायतें दर्ज की हैं जिनमें तुब्बअ़ को गाली देने और लानत करने से मनाही आयी है, जैसा कि हम भी अभी ज़िक्र करेंगे इन्शा-अल्लाह।

मालूम होता है कि यह पहले काफ़िर थे फिर मुसलमान हो गये। यानी जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दीन में दाख़िल हुए और उस ज़माने के उलेमा के हाथ पर ईमान क़बूल किया। यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आने से पहले का वाक़िआ है। जुर्हुम लोगों के ज़माने में बैतुल्लाह का हज भी किया, ग़िलाफ़ भी चढ़ाया और बड़ी ताज़ीम व तकरीम की, छह हज़ार ऊँट अल्लाह के नाम पर क़ुरबान किये और भी बहुत बड़ा लम्बा वाक़िआ है जो हज़रत उबई बिन कअ़ब, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से रिवायत किया गया है और असल वाक़िए का दारोमदार कअ़बे अहबार और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम पर है।

वहब बिन मुनब्बेह ने भी इस क़िस्से को ज़िक्र किया है। हाफ़िज़ इब्ने असाकिर ने तुब्बअ़ के क़िस्से के साथ दूसरे तुब्बअ़ के क़िस्से को भी मिला दिया है जो उनके बहुत बाद था। उसकी क़ौम तो उसके हाथ पर मुसलमान हो गयी थी, फिर उसके इन्तिक़ाल के बाद वह कुफ़्र की तरफ़ लौट गयी और दोबारा आग और बुतों की पूजा शुरू कर दी। जैसा कि सूरः सबा में मज़कूर है। उसी की तफ़सीर में हमने वहाँ उसकी पूरी

तफ़सील बयान कर दी है। अल्हम्दु लिल्लाह

हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि इस तुब्बअ़ ने काबा पर गिलाफ़ चढ़ाया था। आप लोगों को मना करते थे कि इस तुब्बअ़ को बुरा न कहो। यह बीच वाला तुब्बअ़ है, इसका नाम अस्अ़द अबू कुरैब बिन मलकी-करब यमानी है। इसकी हुकूमत तीन सौ छब्बीस साल तक रही, इससे ज़्यादा लम्बी मुद्दत उन बादशाहों में से किसी ने नहीं पाई। हुज़ूर सल्ल. से तक़रीबन सात सौ साल पहले इसका इन्तिक़ाल हुआ है।

इतिहासकारों ने यह भी बयान किया है कि वे दोनों मूसवी आ़लिम जो मदीना के थे, उन्होंने जब तुब्बअ़ बादशाह को यक़ीन दिलाया कि यह शहर आख़िरी नबी हज़रत अहमद सल्ल. की हिजरत का स्थान है तो उसने एक क़सीदा (शे'री कलाम) कहा था और मदीना वालों को बतौर अमानत दे गया था, जो उनके पास ही रहा और बतौर मीरास के एक दूसरे के हाथ लगता रहा। और इसकी रिवायत सनद के साथ बराबर चली आती रही, यहाँ तक कि हुज़ूर सल्ल. की हिजरत के वक़्त उसके हाफ़िज़ हज़रत अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैद रज़ि. थे और इत्तिफ़ाक़ से बल्कि अल्लाह के हुक्म से हुज़ूर सल्ल. का नुज़ूल (मदीना में उतरना) भी यहीं हुआ था। उस क़सीदे के ये अश्आ़र मुलाहिज़ा हों:

شَهِدْتُ عَلَى اَحْمَدَ اَنَّهُ ☆ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ بَارِى النَّسَمِ.

فَلَوْمُدَّ عُمْرِىْ اِلٰى عُمْرِهٖ ☆ لَكُنْتُ وَزِيْراً لَّهُ وَابْنَ عَمٍّ.

وَجَاهَدْتُ بِالسَّيْفِ اَعْدَآءَهٗ ☆ وَفَرَّجْتُ عَنْ صَدْرِهٖ كُلَّ غَمٍّ.

यानी मेरी दिल से गवाही है कि हज़रत अहमदे मुज्तबा सल्ल. उस ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं जो तमाम जानदारों का पैदा करने वाला है। अगर मैं आपके ज़माने तक ज़िन्दा रहा तो क़सम ख़ुदा की आपका साथी और आपका मददगार बनकर रहूँगा और आपके दुश्मनों से तलवार के साथ जिहाद करूँगा। और किसी खटके और ग़म को आपके पास भटकने न दूँगा।

इब्ने अबिद्दुन्या में है कि इस्लाम के दौर में सनआ़ शहर में इत्तिफ़ाक़ से क़ब्र खुद गयी तो देखा गया कि दो औ़रतें मदफ़ून हैं, जिनके ज़िस्म बिल्कुल सही सालिम हैं और सिरहाने पर चाँदी की एक तख़्ती लगी हुई है, जिसमें सोने के हुरूफ़ से यह लिखा हुआ है कि यह क़ब्र हब्बी और लमीस की है। और एक रिवायत में उनके नाम हब्बी और तमाज़ुर हैं। ये दोनों तुब्बअ़ की बहनें हैं, ये दोनों मरते वक़्त तक इस बात की शहादत पर रहीं कि लायक़े इबादत सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है। ये दोनों ख़ुदा के साथ किसी को शरीक नहीं करती थीं। उनसे पहले के तमाम नेक सालेह लोग भी इसकी शहादत अदा करते (यानी गवाही देते) हुए इन्तिक़ाल फ़रमाते रहे हैं।

सूरः सबा में हमने इस वाक़िए के मुताल्लिक़ सबा के अश्आ़र भी नक़ल कर दिये हैं। हज़रत कअ़ब रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाया करते थे कि तुब्बअ़ की तारीफ़ क़ुरआन से इस तरह मालूम होती है कि अल्लाह तआ़ला ने उनकी क़ौम की मज़म्मत (निंदा) की, उनकी नहीं की। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मन्क़ूल है कि तुब्बअ़ को बुरा न कहो वह नेक शख़्स था।

इब्ने अबी हातिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया कि तुब्बअ़ को गाली न दो वह मुसलमान हो चुका था। तबरानी और मुस्नद अहमद में भी यह रिवायत है। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि मुझे मालूम नहीं कि तुब्बअ़ नबी था या न था। एक और रिवायत इससे पहले गुज़र चुकी कि मैं नहीं

Maktab E Ashraf

जानता कि तुब्बअ़ मलऊन (यानी लानत का हक़दार) था या नहीं। बस अल्लाह ही को ख़ूब इल्म है।

यही रिवायत हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी मन्क़ूल है। हज़रत अ़ता बिन अबी रबाह फ़रमाते हैं कि तुब्बअ़ को गाली न दो, रसूलुल्लाह सल्लसल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन्हें बुरा कहने से मना फ़रमाया है। वल्लाहु तआ़ला आलम।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ٥ مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ٥ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ٥ يَوْمَ لَا يُغْنِىْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْئًا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ٥ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ٥ ع ٢ ١٣ ١٥	और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान में है उसको इस तौर पर नहीं बनाया कि हम बेकार काम करने वाले हों। (38) (बल्कि) हमने उन दोनों के किसी हिक्मत ही से बनाया है, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते। (39) बेशक फ़ैसले का दिन (यानी क़ियामत का दिन) उन सबका मुक़र्ररा वक़्त है (40) जिस दिन कोई ताल्लुक़ और रिश्ते वाला किसी ताल्लुक़ वाले के ज़रा काम न आएगा, और न उनकी कुछ हिमायत की जाएगी। (41) हाँ, मगर जिस पर अल्लाह तआ़ला रहम फ़रमाए, वह (अल्लाह) ज़बरदस्त है, मेहरबान है।(42)

एक ऐसा दिन

यहाँ अल्लाह तआ़ला अपने अ़दल (इन्साफ़) का बयान फ़रमा रहा है और बेफ़ायदा कामों से अपनी पाकी का इज़हार फ़रमाता है। जैसे एक दूसरी आयत में इरशाद है कि हमने अपनी मख़्लूक़ को बातिल (यानी यूँही बेकार) पैदा नहीं किया, ऐसा गुमान हमारे बारे में सिर्फ़ उनका है जो काफ़िर हैं और जिनका ठिकाना जहन्नम है। एक जगह इरशाद है:

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ........ الخ.

यानी क्या तुमने यह समझ रखा है कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया है और तुम लौटकर हमारी तरफ़ आने ही की नहीं? अल्लाह हक़ मालिक बुलन्दियों और बुज़ुर्गियों वाला है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह बुज़ुर्ग अ़र्श का रब है। फ़ैसले का दिन यानी क़ियामत का दिन, जिस दिन बारी तआ़ला अपने बन्दों के दरमियान हक़ फ़ैसले करेगा। काफ़िरों को सज़ा और मोमिनों को जज़ा मिलेगी, उस दिन तमाम अगले पिछले लोग (यानी सब के सब) ख़ुदा के सामने जमा होंगे। यह वह वक़्त होगा कि एक दूसरे से अलग हो जायेगा। रिश्तेदार रिश्तेदार को कोई नफ़ा नहीं पहुँचा सकेगा। जैसे अल्लाह तआ़ला का एक और फ़रमान है:

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ........ الخ.

यानी जब सूर फूँक दिया जायेगा तो न तो कोई नसब (नस्ल व ख़ानदान का ताल्लुक़) बाक़ी रहेगा, न पूछगछ। एक और आयत में है कि कोई अपने दोस्त को परेशानी में देखते हुए भी कुछ न पूछेगा, और न

कोई उस दिन किसी की किसी तरह की मदद करेगा, न और कोई बाहरी मदद आयेगी। मगर हाँ रहमते ख़ुदा जो मख़्लूक़ पर शामिल है। वह बड़ा ग़ालिब और बड़ी रहमत वाला है।

बेशक ज़क्क़ूम का पेड़ (43) बड़े मुजरिम (यानी काफ़िर) का खाना होगा। (44) जो (बुरी सूरत होने में) तेल की तलछट जैसा होगा (और) वह पेट में ऐसा खौलेगा (45) जैसा तेज़ गर्म पानी खौलता है। (46) (और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) उसको पकड़ो, फिर घसीटते हुए दोज़ख़ के बीचों-बीच तक ले जाओ। (47) फिर उसके सर के ऊपर तकलीफ़ देने वाला गर्म पानी छोड़ दो। (48) ले चख तू बड़ा इज़्ज़त वाला और रुतबे वाला है। (49) यह वही चीज़ है जिसमें तुम शक किया करते थे। (50)	إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۝ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝ ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝ إِنَّ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝

ज़क़्क़ूम का पेड़

क़ियामत का इनकार करने वाले को जो सज़ा वहाँ दी जायेगी उसी का बयान हो रहा है, कि इन मुजरिमों को जो अपने क़ौल और फ़ेल को गुनाहगारी में मुलव्वस (लिप्त) किये हुए थे आज ज़क़्क़ूम का दरख़्त खिलाया जायेगा। बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद अबू जहल है। अगरचे वह भी इस आयत की वईद में दाख़िल है लेकिन यह न समझा जाये कि आयत सिर्फ़ उसी के हक़ में नाज़िल हुई है। हज़रत अबू दर्दा रज़ि. एक शख़्स को यह आयत पढ़ा रहे थे मगर उसकी ज़बान से लफ़्ज़ "असीम" अदा नहीं होता था और वह बजाय इसके 'यतीम' कह दिया करता था तो आपने उसे 'तआ़मुल-फ़ाजिर' पढ़वाया, यानी इसके सिवा खाने को और कुछ न दिया जायेगा।

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि अगर उस ज़क़्क़ूम का एक क़तरा भी ज़मीन पर टपक जाये तो तमाम ज़मीन वालों की रोज़ी ख़राब कर दे। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी आया है जो पहले बयान हो चुकी है। यह तलछट की तरह का होगा। अपनी गर्मी, बद-ज़ायक़ा होने और नुक़सान के कारण पेट में जोश मारता रहेगा। अल्लाह तआ़ला जहन्नम के दारोग़ाओं से फ़रमायेगा कि इस काफ़िर को पकड़ लो। वहीं सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दौड़ेंगे। इसे औंधा करके मुँह के बल घसीटते हुए ले जाओ और जहन्नम के बीच में डाल दो। फिर इसके सर पर जोश मारता (खौलता हुआ) गर्म पानी डालो। जैसा कि एक दूसरी जगह फ़रमायाः

يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ.......الخ.

यानी उनके सरों पर जहन्नम का जोश मारता हुआ गर्म पानी बहाया जायेगा, जिससे उनकी खालें और पेट के अन्दर की तमाम चीज़ें जल जायेंगी।

और यह भी हम पहले बयान कर आये हैं कि फ़रिश्ते उन्हें लोहे के हथोड़ों से मारेंगे। जिनसे उनके दिमाग़ पाश-पाश हो (यानी भेजे के पुर्ज़े पुर्ज़े हो) जायेंगे। फिर ऊपर से हमीम उन पर डाला जायेगा। यह

Maktab E Ashraf

जहाँ-जहाँ पहुँचेगा हड्डी को खाल से अलग कर देगा, यहाँ तक कि उसकी आँतें काटता हुआ पिंडलियों तक पहुँच जायेगा। अल्लाह हमें महफ़ूज़ रखे।

फिर उन्हें शर्मसार करने के लिये और ज़्यादा पछताने वाला बनाने के लिये कहा जायेगा कि लो मज़ा चखो, न तुम हमारी निगाहों में इज़्ज़त वाले हो न सम्मान व रुतबे वाले। मग़ाज़ी-ए-उमविया में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने अबू जहल मलऊन से कहा- मुझे ख़ुदा का हुक्म हुआ है कि तुझसे कह दूँ कि तेरे लिये वैल है, तुझ पर अफ़सोस है। फिर दोबारा कहता हूँ कि तेरे लिये ख़राबी और अफ़सोस है। उस पाजी ने अपना कपड़ा आपके हाथ से घसीटते हुए कहा- जा तू और तेरा रब मेरा क्या बिगाड़ सकते हो? इस तमाम वादी में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त व सम्मान वाला मैं हूँ। पस अल्लाह तआ़ला ने उसे बदर वाले दिन क़त्ल कराया, उसे ज़लील किया। और उससे कहा जायेगा कि ले अब अपनी इज़्ज़त और अपनी बड़ाई व सम्मान का लुत्फ़ उठा, और इन काफ़िरों से कहा जायेगा कि यह है जिसमें तुम हमेशा शक व शुब्हा करते रहे। जैसे कुछ दूसरी आयतों में है कि जिस दिन उन्हें धक्के देकर जहन्नम में पहुँचाया जायेगा और कहा जायेगा कि यह वह दोज़ख़ है जिसे तुम झुठलाते रहे, क्या यह जादू है या तुम देख नहीं रहे? इसी को यहाँ भी फ़रमाया है कि यह है जिसमें तुम शक कर रहे थे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۝ فِي جَنَّٰتٍ
وَعُيُونٍ ۝ يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَ
إِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَٰبِلِينَ ۝ كَذَٰلِكَ وَ
زَوَّجْنَٰهُم بِحُورٍ عِينٍ ۝ يَدْعُونَ فِيهَا
بِكُلِّ فَٰكِهَةٍ ءَامِنِينَ ۝ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا
الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَقَىٰهُمْ
عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ
ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَٰهُ
بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ فَارْتَقِبْ
إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ۝ ع ٣ ١٤

बेशक ख़ुदा से डरने वाले अमन (चैन) की जगह में होंगे। (51) यानी बाग़ों में और नहरों में। (52) (और) वे लिबास पहनेंगे बारीक और मोटा रेशम का, आमने-सामने बैठे होंगे। (53) (और) यह बात इसी तरह है, और हम उनका गोरी-गोरी, बड़ी-बड़ी आँखों वालियों से निकाह करेंगे। (54) (और) वहाँ इत्मीनान से हर क़िस्म के मेवे मँगाते होंगे। (55) (और) वहाँ वे सिवाय उस मौत के जो दुनिया में आ चुकी थी और मौत का ज़ायक़ा भी न चखेंगे, (यानी मरेंगे नहीं) और अल्लाह उनको दोज़ख़ से बचा लेगा। (56) यह सब कुछ आपके रब के फ़ज़्ल से होगा, बड़ी कामयाबी यही है। (57) सो हमने इस क़ुरआन को आपकी ज़बान (अ़रबी भाषा) में आसान कर दिया है ताकि ये लोग नसीहत क़बूल करें। (58) तो (अगर ये लोग न मानें तो) आप मुन्तज़िर "यानी इन्तिज़ार करने वाले" रहिए ये लोग भी मुन्तज़िर हैं। (59)

जन्नत वह जगह है जहाँ कोई तकलीफ़ व परेशानी नहीं

बद-बख़्तों (बुरे अन्जाम वालों) का ज़िक्र करके अब नेक-बख़्तों का हाल बयान हो रहा है। इसी लिये

क़ुरआने करीम को मिसाल कहा गया है। दुनिया की इस ज़िन्दगी में जो अल्लाह तआ़ला मालिक व ख़ालिक़ व क़ादिर से डरते दबते रहे वे क़ियामत के दिन जन्नत में बहुत ही अमन व अमान से होंगे। मौत से, वहाँ से निकलने से, ग़म व रंज से, घबराहट से, मुश्किलों से, दुख दर्द से, तकलीफ़ और मशक़्क़त से, शैतान और उसके फ़रेब से, रब की नाराज़गी से, ग़र्ज़ कि तमाम आफ़तों और मुसीबतों से निडर बेफ़िक्र मुत्मईन और बे-अन्देशा होंगे। उन्हें तो ज़क़्क़ूम का दरख़्त और आग जैसा गर्म पानी मिलेगा और इन्हें जन्नतें और नहरें मिलेंगी। विभिन्न क़िस्म के रेशमी लिबास इन्हें पहनने को मिलेंगे, जिनमें नर्म बारीक भी होंगे और मोटे चमकीले भी होंगे। ये तख़्तों पर बड़ी शान-बान से तकिये लगाये बैठे होंगे और किसी की किसी की तरफ़ पीठ न होगी बल्कि सब एक दूसरे के सामने बैठे हुए होंगे।

इस अ़ता (अल्लाह की इनायत) के साथ ही इन्हें हूरें दी जायेंगे जो गोरी चिट्टी पिण्डली की, बड़ी-बड़ी रसीली आँखों वाली होंगी, जिनके पाक जिस्म को इनसे पहले किसी ने छुआ भी न होगा। वे याक़ूत व मरजान के जैसी होंगी, और क्यों न हों जब इन्होंने ख़ुदा का डर दिल में रखा और दुनिया की ख़्वाहिशों की चीज़ों से सिर्फ़ अल्लाह के फ़रमान को मद्देनज़र रखकर बचे रहे तो अल्लाह तआ़ला इनके साथ यह बेहतरीन सुलूक क्यों न करता?

एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि अगर उन हूरों में से कोई खारी (नमकीले) समुद्र में थूक दे तो उसका सारा पानी मीठा हो जाये। फिर वहाँ ये जिस मेवे की तलब करेंगे वह मौजूद होगा। जो माँगेंगे मिलेगा। इधर इरादा किया उधर मौजूद हुआ। ख़्वाहिश हुई और हाज़िर हुआ। फिर निहायत बेफ़िक्री से, कमी का ख़ौफ़ नहीं, ख़त्म हो जाने का खटका नहीं।

फिर फ़रमाया कि वहाँ इन्हें कभी मौत नहीं आयेगी, फिर और ताकीद के साथ इस बात को बयान कर दिया कि इनके लिये बस वही एक मौत थी जो आ चुकी, यानी मौत से बेफ़िक्र, हमेशा की ज़िन्दगी है।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि मौत को भेड़िये की सूरत में लाकर जन्नत दोज़ख़ के बीच ज़िबह कर दिया जायेगा और ऐलान कर दिया जायेगा कि जन्नतियो! अब हमेशगी है, कभी मौत नहीं। और ऐ जहन्नमियो! तुम्हारे लिये भी हमेशगी है, कभी मौत नहीं आयेगी। सूरः मरियम की तफ़सीर में भी यह हदीस गुज़र चुकी है। सही मुस्लिम वग़ैरह में है कि जन्नतियों से कह दिया जायेगा कि तुम हमेशा तन्दुरुस्त रहोगे, कभी बीमार न पड़ोगे, और हमेशा ज़िन्दा रहोगे कभी मरोगे नहीं, और हमेशा ऐश व आराम में रहोगे कभी कमी न होगी, और हमेशा जवान बने रहोगे कभी बूढ़े न होओगे।

एक और हदीस में है कि जो अल्लाह से डरता रहेगा वह जन्नत में जायेगा, जहाँ नेमतें पायेगा कभी मोहताज न होगा, जहाँ जियेगा कभी मरेगा नहीं, जहाँ कपड़े मैले न होंगे और जवानी फ़ना न होगी। हुज़ूरे पाक सल्ल. से सवाल हुआ कि जन्नती सोयेंगे नहीं? फ़रमाया कि नींद मौत की बहन है, जन्नती नहीं सोयेंगे। हर वक़्त राहत व लज़्ज़त में मशग़ूल रहेंगे। यह हदीस और भी सनदों से रिवायत है, और इससे पहली सनदों का इख़्तिलाफ़ गुज़र चुका है। वल्लाहु आलम।

इस राहत व नेमत के साथ यह भी बड़ी नेमत है कि उन्हें परवर्दिगारे आ़लम ने अ़ज़ाबे जहन्नम से निजात दे दी, तो मतलूब (यानी मक़सद व तमन्ना) हासिल है और ख़ौफ़ दूर हो गया। इसी लिये साथ ही फ़रमाया कि यह सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला का एहसान व फ़ज़्ल है। सही हदीस में है कि तुम ठीक-ठाक रहो, क़रीब-क़रीब रहो और यक़ीन मानो कि किसी के आमाल उसे जन्नत में नहीं ले जा सकते। लोगों ने कहा क्या आपके आमाल भी? फ़रमाया हाँ मेरे आमाल भी, मगर यह कि अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और उसकी

Maktab E Ashraf

रहमत मेरे शामिले हाल हो।

हमने अपने नाज़िल किये हुए इस क़ुरआने करीम को बहुत सहल, बिल्कुल आसान, साफ़, ज़ाहिर, बहुत स्पष्ट, दलील से पुर और रोशन करके तुझ पर तेरी ज़बान (भाषा) में नाज़िल फ़रमाया है। जो बहुत फ़सीह व बलीग़ (यानी भाषा के एतिबार से उच्च दर्जे का), बड़ा मीठा और पुख़्ता है। ताकि लोग आसानी से समझ लें और ख़ुशी से इस पर अ़मल करें। इसके बावजूद भी जो लोग इसे झुठलायें, न मानें तो तू उन्हें होशियार कर दे और कह दे कि अच्छा अब तुम भी इन्तिज़ार करो मैं भी मुन्तज़िर हूँ। तुम देख लोगे कि ख़ुदा की तरफ़ से किसकी ताईद होती है? किसका कलिमा बुलन्द होता है? किसे दुनिया और आख़िरत मिलती है?

मतलब यह है कि ऐ नबी! तुम तसल्ली रखो, फ़तह व कामयाबी तुम्हें होगी। मेरी आ़दत है कि अपने नबियों और उनके मानने वालों को ऊँचा करूँ। जैसे इरशाद है:

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَاوَرُسُلِی....... الخ.

यानी अल्लाह तआ़ला ने यह लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। एक और आयत में इरशाद फ़रमाया है:

اِنَّالَنَنْصُرُرُسُلَنَا........ الخ.

यानी यक़ीनन हम अपने पैग़म्बरों और ईमान वालों की दुनिया में भी मदद करेंगे और क़ियामत में भी, जिस दिन गवाह क़ायम होंगे और ज़ालिमों को उनके उज़्र (बहाने और बातें बनाना) नफ़ा न देंगे। उन पर लानत होगी और उनके लिये बुरा घर होगा।

अल्लाह का शुक्र है कि उसके फ़ज़्ल व करम से सूरः दुख़ान की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः जासिया

सूरः जासिया मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 37 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

हा-मीम् (1) यह नाज़िल की हुई किताब है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से। (2) आसमानों और ज़मीन में ईमान वालों के (दलील पकड़ने के) लिए बहुत-सी दलीलें हैं। (3) और (इसी तरह) ख़ुद तुम्हारे और उन जानवरों के पैदा करने में जिनको ज़मीन में	حٰمٓ○ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ○ اِنَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ○ وَفِىْ خَلْقِكُمْ وَمَا

Maktab_e_Ashraf

يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ ايٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ ايٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝	फैला रखा है, दलीलें हैं उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं। (4) और (इसी तरह) एक के बाद एक रात और दिन के आने जाने में, और इस रिज़्क़ (के माद्दे) में जिसको अल्लाह तआ़ला ने आसमान से उतारा, फिर उस (बारिश) से ज़मीन को तरोताज़ा किया उसके सूख जाने के बाद। और (इसी तरह) हवाओं के बदलने में दलीलें हैं उन लोगों के लिए जो (सही-सालिम) अ़क्ल रखते हैं। (5)

दलीलों और निशानियों का दफ़्तर

अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ को हिदायत फ़रमाता है कि वे क़ुदरत की निशानियों में ग़ौर व फ़िक्र (चिंतन-मंथन) करें, ख़ुदा की नेमतों को जानें और पहचानें, फिर उसका शुक्र बजा लायें। देखें कि ख़ुदा तआ़ला कितनी बड़ी क़ुदरतों वाला है जिसने आसमान व ज़मीन और मुख़्तलिफ़ (विभिन्न व अनेक) क़िस्म की तमाम मख़्लूक़ को पैदा किया है। फ़रिश्ते जिन्नात इनसान चौपाये (मवेशी) परिन्द जंगली जानवर दरिन्दे कीड़े पतंगे सब उसी के पैदा किये हुए हैं। समुद्र की बेशुमार मख़्लूक़ का ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाला) भी तन्हा वही है। दिन को रात के बाद और रात को दिन के बाद वही ला रहा है। रात का अन्धेरा दिन का उजाला उसी के क़ब्ज़े की चीज़ें हैं। ज़रूरत के वक़्त अन्दाज़े के मुताबिक़ बादलों से पानी वही बरसाता है। रिज़्क़ से मुराद बारिश है, इसलिये कि उसी से खाने की चीज़ें उगती हैं। ख़ुश्क बंजर ज़मीन हरी-भरी और तरोताज़ा हो जाती है और तरह-तरह की पैदावार उगाती है। उत्तरी दक्षिणी पूर्वी पश्चिमी, तर व ख़ुश्क, कम व ज़्यादा, रात और दिन की हवायें वही चलाता है। बाज़ हवायें बारिश को लाती हैं, बाज़ बादलों को पानी वाला कर देती हैं। बाज़ रूह की ग़िज़ा बनती हैं और इनके अ़लावा और कामों के लिये चलती हैं।

पहले फ़रमाया कि इसमें ईमान वालों के लिये निशानियाँ हैं, फिर यक़ीन वालों के लिये फ़रमाया, फिर अ़क्ल वालों के लिये फ़रमाया। यह एक इज़्ज़त वाले दर्जे और हालत से दूसरी इज़्ज़त वाली हालत की तरफ़ तरक़्क़ी करना है। इसी के जैसी सूरः ब-क़रह की यह आयत है:

اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ......... الخ.

बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में और एक के पीछे एक दिन रात के आने में, और जहाज़ों में जो कि समुद्र में चलते हैं आदमियों के नफ़े की चीज़ें (और सामान) लेकर और (बारिश के) पानी में जिसको अल्लाह तआ़ला ने आसमान से बरसाया फिर उससे ज़मीन को तरोताज़ा किया उसके ख़ुश्क होने के बाद और हर तरह के जानवर उसमें फैला दिये, और हवाओं के बदलने में और बादल में जो ज़मीन व आसमान के बीच मुक़ैयद (रुका और ठहरा) रहता है (तौहीद की) दलीलें मौजूद हैं उन लोगों के लिये जो सही अ़क्ल रखते हैं। (सूरः ब-क़रह आयत)

Maktab E Ashraf

इमाम इब्ने अबी हातिम ने यहाँ एक लम्बा क़ौल ज़िक्र किया है लेकिन वह ग़रीब है। उसमें इनसान को चार किस्म के अख़्लात से पैदा करने का बयान भी है। वल्लाहु आलम।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ
فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ ۢ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ○
وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ○ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ
تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ
يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ○ وَاِذَا
عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْئَا ۨ اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۭ
اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ○ مِنْ وَّرَاۗىِٕهِمْ
جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا
وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَاۗءَ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ○ هٰذَا هُدًى ۚ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ
مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ○ ع 1 17

ये अल्लाह तआ़ला की आयतें हैं जो सही-सही तौर पर हम आपको पढ़कर सुनाते हैं, तो फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद और कौनसी बात पर ये लोग ईमान लाएँगे? (6) बड़ी ख़राबी होगी हर ऐसे शख़्स के लिए जो झूठा हो, नाफ़रमान हो। (7) जो ख़ुदा की आयतों को सुनता है जबकि उसके रू-ब-रू पढ़ी जाती हैं (और) फिर भी वह तकब्बुर करता हुआ (अपने कुफ़्र पर) इस तरह अड़ा रहता है जैसे उसने उनको सुना ही नहीं, सो ऐसे शख़्स को एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दीजिए। (8) और जब वह हमारी आयतों में से किसी आयत की ख़बर पाता है तो उसकी हँसी उड़ाता है, ऐसे लोगों के लिए (आख़िरत में) ज़िल्लत का अ़ज़ाब है। (9) उनके आगे जहन्नम (आ रही) है, और (उस वक़्त) न तो उनके वे चीज़ें ज़रा काम आएँगी जो (दुनिया में) कमा गए थे और न वे जिनको अल्लाह के सिवा कारसाज़ (और माबूद) बना रखा था, और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब होगा। (10) यह क़ुरआन पूरा-का-पूरा हिदायत है। और जो लोग अपने रब की (इन) आयतों को नहीं मानते उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। (11)

घमंडियों और हक़ से मुँह फेरने वालों का अन्जाम बुरा है

मतलब यह है कि क़ुरआन जो हक़ की तरफ़ से निहायत सफ़ाई और वज़ाहत से नाज़िल हुआ है उसकी आयतें तुझ पर तिलावत की जा रही हैं, जिसे ये सुन रहे हैं और फिर भी ईमान नहीं लाते हैं, न अ़मल करते हैं, तो फिर आख़िर ईमान किस चीज़ पर लायेंगे? इनके लिये वैल (बड़ी ख़राबी) है, और इन पर अफ़सोस है जो ज़बान के झूठे, काम के गुनाहगार और दिल के काफ़िर हैं। अल्लाह की बातें सुनते हुए अपने कुफ़्र का इनकार और दिल की बुराई पर अड़े हुए हैं। गोया सुना ही नहीं। इन्हें सुना दो कि इनके लिये ख़ुदा के यहाँ बहुत सख़्त अ़ज़ाब है। क़ुरआन की आयतें इनके मज़ाक़ की चीज़ रह गयी हैं तो जिस तरह ये मेरे कलाम का आज अपमान करते हैं कल मैं इन्हें ज़िल्लत की सज़ा दूँगा।

Maktab E Ashraf

हदीस शरीफ़ में है कि क़ुरआन लेकर दुश्मनों के मुल्क में न जाओ, ऐसा न हो कि वे उसका अपमान और बेक़द्री करें (जिहाद के मौक़े पर जब शिकस्त की आशंका ज़्यादा हो तो क़ुरआन मजीद और औरतों को साथ लेजाने की ख़ास मनाही है)।

फिर उस ज़लील करने वाले अ़ज़ाब का बयान फ़रमाया कि इन ख़स्लतों वाले लोग जहन्नम में डाले जायेंगे। उनके माल व औलाद और उनके वे झूठे माबूद जिन्हें ये ज़िन्दगी भर पूजते रहे, इन्हें कुछ काम न आये। इन्हें ज़बरदस्त और बहुत बड़े अ़ज़ाब भुगतने पड़ेंगे। फिर इरशाद हुआ कि यह क़ुरआन सरासर (पूरी तरह) हिदायत है और इसकी आयतों से जो मुन्किर हैं उनके लिये सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब हैं। वल्लाहु सुब्हानहू व तआ़ला आलम।

اَللّٰهُ الَّذِىْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِىَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِىَ قَوْمًا ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۫ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝	अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए दरिया को ताबे बनाया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियाँ चलें और ताकि तुम उसकी रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो। (12) और (इसी तरह) जितनी चीज़ें आसमानों में हैं और जितनी चीज़ें ज़मीन में हैं उन सबको अपनी तरफ़ से ताबे बनाया, बेशक इन बातों में उन लोगों के लिए दलीलें हैं जो ग़ौर करते रहते हैं। (13) आप ईमान वालों से फ़रमा दीजिए कि उन लोगों से दरगुज़र करें जो ख़ुदा के मामलात का यक़ीन नहीं रखते, ताकि अल्लाह तआ़ला एक क़ौम को (यानी मुसलमानों को) उनके अ़मल का सिला दे। (14) जो शख़्स नेक काम करता है सो अपने ज़ाती नफ़े के लिए, और जो शख़्स बुरा काम करता है उसका वबाल उसी पर पड़ता है, फिर तुमको अपने परवर्दिगार के पास लौटकर जाना है। (15)

ये जोश मारते दरिया और समुद्र

अल्लाह तआ़ला अपनी नेमतें बयान फ़रमा रहा है कि उसी के हुक्म से समुद्र में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ सफ़र तय करते हो, बड़ी-बड़ी कश्तियाँ माल और सवारी से लदी हुई इधर-उधर ले जाते हो। तिजारतें और कमाई करते हो। यह इसलिये भी है कि तुम अल्लाह का शुक्र बजा लाओ, नफ़ा हासिल करके रब का एहसान मानो। फिर इसलिये आसमान की चीज़ें जैसे सूरज चाँद सितारे और ज़मीन की चीज़ें जैसे पहाड़ नहरें और तुम्हारे फ़ायदे की बेशुमार चीज़ें तुम्हारे लिये मुसख़्ख़र (यानी तुम्हारे ताबे) कर दीं। यह सब उसका फ़ज़्ल व एहसान और इनाम व इकराम है, और उसी एक की तरफ़ से है। जैसा कि इरशाद होता है:

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ .... الخ.

Maktab-E-Ashraf

यानी तुम्हारे पास जो नेमतें हैं सब अल्लाह तआ़ला की दी हुई हैं, और अब भी तुम सख़्ती के वक़्त उसकी तरफ़ गिड़गिड़ाते हो।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हर चीज़ अल्लाह ही की तरफ़ से है और यह नाम उसके नामों में से। पस यह सब उसी की ओर से है। कोई नहीं जो उससे छीना-झपटी या झगड़ा कर सके। हर एक इस यक़ीन पर है कि वह इसी तरह है। एक शख़्स ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से सवाल किया कि मख़्लूक़ किस चीज़ से बनाई गयी है? आपने फ़रमाया नूर से, आग से, अन्धेरे से और मिट्टी से। फिर कहा जाओ इब्ने अ़ब्बास को अगर देखो तो उनसे भी मालूम कर लो। उसने आप से भी पूछा तो यही जवाब पाया। फिर फ़रमाया- वापस उनके पास जाओ और पूछो कि यह सब किस चीज़ से पैदा किये गये। वह लौटा और सवाल किया तो आपने यही आयत पढ़कर सुनाई। यह असर (यानी बयान हुआ वाक़िआ़) ग़रीब है और साथ ही मुन्कर भी। ग़ौर व फ़िक्र वालों के लिये इसमें भी बहुत सी निशानियाँ हैं।

फिर फ़रमाता है कि सब्र व बरदाश्त की आ़दत डालो, क़ियामत के इनकारियो की कड़वी-कसीली सुन लिया करो, मुश्रिक और अहले किताब के सताने को बरदाश्त कर लिया करो। यह हुक्म शुरू इस्लाम में था, लेकिन बाद में जिहाद और देस-निकाला दिये जाने के अहकाम नाज़िल हुए।

अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते, यानी अल्लाह तआ़ला की नेमतों के हासिल करने की कोशिश नहीं करते। फिर फ़रमाया कि तुम उनसे दरगुज़र करो, उनके आमाल की सज़ा ख़ुद हम उन्हें देंगे। इसी लिये इसके बाद ही फ़रमाया कि तुम सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे और हर नेकी व बदी की जज़ा व सज़ा पाओगे। वल्लाहु आलम।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَ
اٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا
اِلَّا مِنْ ۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًا ۢ
بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ ثُمَّ
جَعَلْنٰكَ عَلٰي شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

और हमने बनी इस्राईल को (आसमानी) किताब और हिक्मत (यानी अहकाम का इल्म) और नुबुव्वत दी थी, और हमने उनको अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को दी थीं, और हमने उनको दुनिया जहान वालों पर बरतरी दी। (16) और हमने उनको दीन के बारे में खुली-खुली दलीलें दीं, सो उन्होंने इल्म ही के आने के बाद आपस में इख़्तिलाफ़ किया, आपस की ज़िद्दा-ज़िद्दी की वजह से। आपका रब उनके दरमियान क़ियामत के दिन उन मामलों में (अ़मली) फ़ैसला करेगा जिनमें ये आपस में इख़्तिलाफ़ किया करते थे। (17) फिर हमने आपको दीन के एक ख़ास तरीक़े पर कर दिया, सो आप उसी तरीक़े पर चले जाईये और इन जाहिलों की ख़्वाहिशों पर न चलिए। (18) ये लोग ख़ुदा के मुक़ाबले में आपके ज़रा भी काम नहीं आ सकते, और

Maktab E Ashraf

إِنَّهُمْ لَن يُغْنُوا عَنكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ۝ هَٰذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝	ज़ालिम लोग एक-दूसरे के दोस्त होते हैं, और अल्लाह परहेज़गार लोगों का दोस्त है। (19) यह क़ुरआन आम लोगों के लिए समझदारियों का सबब और हिदायत का ज़रिया है, और यक़ीन (यानी ईमान) लाने वालों के लिए बड़ी रहमत (का सबब) है। (20)

बनी इस्राईल और अल्लाह तआ़ला के इनामात

बनी इस्राईल पर जो नेमतें रहीम व करीम ख़ुदा ने इनाम फ़रमाई थीं उनका ज़िक्र फ़रमा रहा है कि किताबें उन पर उतारीं, रसूल उनमें भेजे, हुकूमत उन्हें दी, बेहतरीन ग़िज़ायें और साफ़-सुथरी चीज़ें उन्हें अ़ता फ़रमायीं। उस ज़माने के दूसरे लोगों पर उन्हें बरतरी दी और उन्हें दीन के मामले की उम्दा और खुली हुई दलीलें पहुँचा दीं, और उन पर अल्लाह की हुज्जत क़ायम हो गयी। फिर उन लोगों ने आपस में फूट डाल ली और अनेक गिरोह बन गये, और इसका कारण इसके अ़लावा कुछ न था कि वे नफ़्सानियत और घमंड पर उतर आये थे। ऐ नबी! तेरा रब उनके उन झगड़ों का फ़ैसला क़ियामत के दिन ख़ुद ही कर देगा।

इसमें इस उम्मत को सचेत किया गया है कि ख़बरदार तुम उन जैसे न होना, उनकी चाल न चलना। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तू अपने रब की 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से आये पैग़ाम) का ताबेदार बना रह, मुश्रिकों से कोई मतलब न रख, जाहिलों की हिर्स न कर, ये तुझे ख़ुदा के यहाँ क्या काम आयेंगे? उनकी दोस्तियाँ तो उनमें आपस में ही हैं, ये तो अपने मिलने वालों को नुक़सान ही पहुँचाया करते हैं। परहेज़गारों का वली व मददगार और रफ़ीक़ व कारसाज़ (काम बनाने वाला) ख़ुद अल्लाह तआ़ला है, जो उन्हें अन्धेरियों से हटाकर नूर की तरफ़ ले जाता है। और काफ़िरों के दोस्त शयातीन हैं जो उन्हें रोशनी से हटाकर अन्धेरियों में झौंकते हैं। यह क़ुरआन उन लोगों के लिये जो यक़ीन रखते हैं दलीलों के साथ ही हिदायत व रहमत भी है।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَن نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝ ع ٢ ١٨ وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ	ये लोग जो बुरे-बुरे काम करते हैं, क्या ये ख़्याल करते हैं कि हम उनको उन लोगों के बराबर रखेंगे जिन्होंने ईमान और नेक अ़मल इख़्तियार किया? कि उन सबका जीना और मरना यक्साँ (बराबर और एक जैसा) हो जाए? ये बुरा हुक्म लगाते हैं। (21) और अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया, और ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला दिया जाए, और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म न किया

Muhtaq E Ashraf

لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ۭ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْ ۢ بَعْدِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝

जाएगा। (22) सो क्या आपने उस शख़्स की हालत भी देखी जिसने अपना ख़ुदा अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को बना रखा है, और ख़ुदा तआ़ला ने उसको बावजूद समझ-बूझ के गुमराह कर दिया है। और ख़ुदा तआ़ला ने उसके कान और दिल पर मोहर लगा दी है और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया है, सो ऐसे शख़्स को ख़ुदा के (गुमराह कर देने के) बाद कौन हिदायत करे? क्या तुम फिर भी नहीं समझते? (23)

ये ग़लत-फ़हमियाँ

अल्लाह तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि मोमिन व काफ़िर बराबर नहीं। जैसे एक दूसरी आयत में है कि दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं, जन्नती कामयाब हैं। यहाँ भी फ़रमाता है कि ऐसा नहीं हो सकता कि कुफ़्र व बुराई वाले और ईमान और अच्छाई वाले मौत व ज़िन्दगी में, दुनिया व आख़िरत में बराबर हो जायें। यह तो हमारी ज़ात और हमारी अ़दल की सिफ़त के साथ बदगुमानी है।

मुस्नद अबू यअ़ला में है, हज़रत अबूज़र रज़ि. फ़रमाते हैं कि चार चीज़ों पर अल्लाह तआ़ला ने अपने दीन की बिना (बुनियाद) रखी है। जो उनसे हट जाये और उन पर आ़मिल न बने वह ख़ुदा से फ़ासिक़ होकर (यानी गुनाहगार होने की हालत में) मुलाक़ात करेगा। पूछा गया कि वे चारों क्या हैं? फ़रमाया- यह कामिल अ़क़ीदा रखे कि 'हलाल' व 'हराम' और 'हुक्म' व 'मनाही' ये चारों सिर्फ़ ख़ुदा के इख़्तियार में हैं। उसके हलाल बताये हुए को हलाल, उसके हराम बताये हुए को हराम मानना। उसके हुक्मों को क़ाबिले तामील और स्वीकारीय जानना। उसके मना किये हुए कामों से बाज़ आ जाना। हलाल व हराम और अम्र व नही का मालिक सिर्फ़ उसी को जानना। बस यह दीन की असल है।

हज़रत अबुल-क़ासिम का फ़रमान है कि जिस तरह बबूल के दरख़्त से अंगूर पैदा नहीं हो सकते इसी तरह बदकार लोग नेक काम करने वालों का दर्जा हासिल नहीं कर सकते। यह हदीस ग़रीब है। सीरत मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि काबा शरीफ़ की बुनियाद में से एक पत्थर निकला जिस पर लिखा हुआ था कि तुम बुराईयाँ करते हुए नेकियों की उम्मीद रखते हो? यह बिल्कुल ऐसा ही है जैसे कोई काँटेदार पेड़ में से अंगूर चुनना चाहता हो।

तबरानी में है कि हज़रत तमीम दारी रह. रात भर तहज्जुद में इसी आयत को बार-बार पढ़ते रहे, यहाँ तक कि सुबह हो गयी। फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन को अ़दल के साथ पैदा किया, वह हर एक शख़्स को उसके किये का बदला देगा और किसी पर उसकी तरफ़ से ज़रा सा भी ज़ुल्म न किया जायेगा। फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तुमने उन्हें भी देखा जो अपनी ख़्वाहिशों (इच्छाओं) को अपना ख़ुदा बनाये हुए हैं, जिस काम की तरफ़ तबीयत माईल हुई बस कर डाला, जिससे दिल रुका छोड़ दिया। यह आयत मोतज़िला (यह एक फ़िर्क़ा है) के इस उसूल को रद्द करती है कि अच्छाई बुराई अ़क़्ली है। हज़रत इमाम मालिक रह. इसकी तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि जिसकी इबादत का उसके जी

में ख़्याल गुज़रता है उसी को पूजने लगता है।

इसके बाद के जुमले (वाक्य) के दो मायने हैं- एक तो यह है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने इल्म की बिना पर उसे गुमराही का हक़दार जानकर गुमराह कर दिया। दूसरे मायने यह हैं कि उसके पास इल्म, हुज्जत व दलील और सनद आ गयी, फिर उसे गुमराह किया। इस दूसरी बात में पहली बात भी आ गयी और पहली में दूसरी दाख़िल नहीं। उसके कानों पर मोहर है, नफ़ा देने वाली शरई बात सुनता ही नहीं। उसके दिल पर मोहर है, हिदायत की बात दिल में उतरती ही नहीं, उसकी आँखों पर पर्दा है कोई दलील उसे दिखती ही नहीं। भला अब अल्लाह के बाद उसे कौन राह दिखाये? क्या तुम इबरत (सबक़ और नसीहत) हासिल नहीं करते? जैसे एक और जगह फ़रमायाः

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ. وَيَذَرُهُمْ فِیْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ.

कि जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसका हादी (सही राह दिखाने वाला) कोई नहीं। वह उन्हें छोड़ देता है कि अपनी सरकशी (नाफ़रमानी) में बहकते रहें।

وَقَالُوْا مَا هِیَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ
وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ
بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ○
وَاِذَا تُتْلٰی عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ
حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ
يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰی يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا
رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ○ ع ٣ ع ٥ ١٩

और ये (मरने के बाद ज़िन्दा होने के इनकारी) लोग यूँ कहते हैं कि सिवाय इस दुनिया की ज़िन्दगी के और कोई हमारी ज़िन्दगी नहीं है, हम मरते हैं और जीते हैं, और हमको सिर्फ़ ज़माने (की गर्दिश) से मौत आ जाती है। और उन लोगों के पास इस पर कोई दलील नहीं, सिर्फ़ अटकल से हाँक रहे हैं। (24) और (इस बारे में) जिस वक़्त उनके सामने हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनका (इस पर) इसके अ़लावा और कोई जवाब नहीं होता, कहते हैं कि हमारे बाप-दादाओं को (ज़िन्दा करके) सामने ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (25) आप यूँ कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला तुमको ज़िन्दा रखता है, फिर (जब चाहेगा) तुमको मौत देगा, फिर क़ियामत के दिन जिस (के आने) में ज़रा शक नहीं तुमको जमा करेगा, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते। (26)

कितना बेकार और बेहूदा दावा

दहरिया काफ़िरों और उनके जैसा अ़क़ीदा रखने वाले अ़रब के मुश्रिकों का बयान हो रहा है कि क़ियामत के मुन्किर हैं और कहते हैं कि दुनिया ही इब्तिदा और इन्तिहा है। कुछ जीते हैं कुछ मरते हैं। क़ियामत कोई चीज़ नहीं। फ़ल्सफ़ी लोग और इल्मे कलाम के क़ायल भी यही कहते थे। ये लोग आरम्भ व समापन के क़ायल न थे, और फ़ल्सफ़ियों में से जो लोग 'दहरिया' और 'दौरिया' थे वह ख़ालिक़ (किसी पैदा

Maktab E Ashraf

करने वाले) के भी मुन्किर थे। उनका ख़्याल था कि हर छत्तीस हज़ार साल के बाद ज़माने का एक दौर (चक्कर) ख़त्म होता है और हर चीज़ अपनी असली हालत पर आ जाती है, और ऐसे कई दौर के वे क़ायल थे। दर असल यह माक़ूल (अक़्ल में आने वाली बातों) से भी बेकार झगड़ते थे और मन्क़ूल (मज़हब के बयान किये हुए उसूलों) से भी मुँह फेरते थे। कहते हैं कि ज़माने का उलट-फेर ही हलाक करने वाली है, न कि ख़ुदा। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- इसकी कोई दलील उनके पास नहीं और सिवाय वहम व ख़्याल के वे इसकी कोई सनद पेश नहीं कर सकते।

अबू दाऊद वग़ैरह की सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मुझे इब्ने आदम (यानी इनसान) तकलीफ़ देता और सताता है। वह दहर (यानी ज़माने) को गालियाँ देता है दर असल दहर मैं हूँ, तमाम काम मेरे क़ब्ज़े और इख़्तियार में हैं, दिन रात का हेर-फेर मैं करता हूँ।

एक रिवायत में है कि दहर (ज़माने और वक़्त) को गाली न दो, अल्लाह तआ़ला ही दहर है। इब्ने जरीर ने इसे एक बिल्कुल ग़रीब सनद से ज़िक्र किया है। उसमें है कि जाहिलीयत के ज़माने के लोगों का ख़्याल था कि हमें दिन-रात ही हलाक करते हैं। वही हमें मारते जिलाते हैं। पस अल्लाह तआ़ला ने अपनी पाक किताब में नक़ल फ़रमाया। वे ज़माने को बुरा कहते थे। पस अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- मुझे इब्ने आदम तकलीफ़ पहुँचाता है, वह ज़माने को बुरा कहता है और ज़माना मैं हूँ। मेरे हाथों में सब काम हैं। मैं दिन रात का लाने वाला और ले जाने वाला हूँ।

इब्ने अबी हातिम में है कि इब्ने आदम (इनसान) ज़माने को गालियाँ देता है, मैं ज़माना हूँ। दिन रात मेरे हाथ में हैं। एक और हदीस में है कि मैंने अपने बन्दे से क़र्ज़ तलब किया, उसने मुझे न दिया। मुझे मेरे बन्दे ने गालियाँ दीं। वह कहता है कि हाय-हाय ज़माना, हालाँकि ज़माना मैं हूँ। इमाम शाफ़ई और अबू उबैदा वग़ैरह, लुग़त व तफ़सीर के इमाम इस हदीस की शरह (व्याख्या) में फ़रमाते हैं कि जाहिलीयत के ज़माने के अ़रब वालों को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती तो वे उसे ज़माने की तरफ़ मन्सूब करते और ज़माने को बुरा कहते, दर असल ज़माना ख़ुद तो कुछ करता नहीं, हर काम का कर्ता-धर्ता अल्लाह तआ़ला ही है। इसलिये उनका ज़माने को गाली देना वास्तव में उसे बुरा कहना था जिसके हाथ में और जिसके बस में ज़माना है। जो राहत व रंज का मालिक है, और वह ज़ात अल्लाह तआ़ला की है। पस वह गाली असल मुख़्तार व मालिक यानी अल्लाह तआ़ला को पड़ती है। इसलिये हदीस में अल्लाह के नबी सल्ल. ने यह फ़रमाया और लोगों को इससे रोक दिया। यही शरह (मतलब और व्याख्या) बहुत ठीक और बिल्कुल दुरुस्त है। इमाम इब्ने हज़्म वग़ैरह ने इस हदीस से जो यह समझ लिया है कि वह (यानी ज़माना) ख़ुदा के पाक नामों में से एक नाम है, यह बिल्कुल ग़लत है। वल्लाहु आलम।

नोटः दहरिया एक फ़िर्क़ा है। यह अल्लाह तआ़ला के वजूद को नहीं मानता। इसका कहना है कि दुनिया का यह सारा निज़ाम अपने आप चल रहा है, इसे चलाने वाला कोई नहीं। न इसकी कोई शुरूआ़त है और न समापन। बस यह ज़माने का उलट-फेर है। ज़माना गर्दिश कर रहा है, इसका दौर जारी है जो इसी तरह चलता रहेगा। अब ज़ाहिर है कि वे सब कुछ जब ज़माने को मानते हैं तो बुरा-भला भी ज़माने ही को कहेंगे। इसकी कुछ थोड़ी सी झलक इनके अ़लावा दूसरे लोगों में भी पाई जाती है। आपने सुना होगा कि वक़्त बड़ा बलवान है। वक़्त के आगे किसी की नहीं चलती। हमारे ज़माने में 'जैनी' लोग एक तरह से दहरिया मज़हब के लोगों के उत्तराधिकारी हैं। ये भी दुनिया के इस निज़ाम और व्यवस्था के चलाने वाले के वजूद के क़ायल नहीं। ये भी ज़माने और काल को ही सब कुछ मानते हैं। मेरी बाज़ जैनियों से बात हुई है तो उन्होंने बताया कि ख़ुदा का कोई वजूद नहीं, ख़ुदा एक दर्जा

है जो किसी भी इनसान को उसकी तपस्सयाओं से हासिल हो जाता है। इस सिलसिले में हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यिब रह. की किताब 'फ़ल्सफ़ा-ए-नेमत व मुसीबत' एक बेहतरीन किताब है, जिसमें उन्होंने जैनियों के इसी तरह के दस अहम सवालों के जवाबात तफ़सील से दिये हैं। बहरहाल जैनी लोग एक तरह से दहरियों के अक़ीदे के वारिस हैं। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी।**

फिर उन बेइल्मों की फ़ालतू की बहस और बिना दलील का झगड़ना बयान हो रहा है कि क़ियामत के क़ायम होने की और दोबारा ज़िन्दा किये जाने की बिल्कुल साफ़ दलीलें जब उन्हें दी जाती हैं और क़ायल माक़ूल कर दिया जाता है, तो चूँकि कोई जवाब नहीं बन पड़ता, झट से कह देते हैं कि अच्छा फिर हमारे मुर्दा बाप-दादाओं को ज़िन्दा करके हमें दिखा दो तो हम मान लेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तुम अपना पैदा किया जाना और मर जाना तो अपनी आँखों से देख रहे हो कि तुम कुछ न थे और उसने तुम्हें मौजूद कर दिया। फिर वह तुम्हें मार डालता है। तो जो पहली बार में पैदा करने पर क़ादिर है वह दोबारा जी उठाने पर क़ादिर कैसे न होगा? बल्कि अ़क़्ली तौर पर आसानी के साथ यह बात साबित है कि जो शुरू शुरू (यानी बिल्कुल पहली बार बिना किसी नमूने के) किसी चीज़ को बना दे उस पर दोबारा उसका बनाना पहली बार के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा आसान होता है।

पस यहाँ फ़रमाया कि फिर वह तुम्हें क़ियामत के दिन जिसके आने में कोई शक नहीं, जमा करेगा। वह दुनिया में तुम्हें दोबारा नहीं लायेगा, जो तुम कह रहे हो कि हमारे बाप-दादाओं को ज़िन्दा कर लाओ। यह अ़मल की जगह है, बदले और जज़ा की जगह क़ियामत का दिन है। यहाँ तो हर एक को थोड़ी बहुत ताख़ीर (ढील और मोहलत) मिल जाती है जिसमें वह अगर चाहे तो उस दूसरे घर (यानी आख़िरत) के लिये तैयारियाँ कर सकता है। पस अपनी जहालत (अज्ञानता) की बिना पर तुम्हें उसका इनकार न करना चाहिये। तुम अगरचे उसे दूर जान रहे हो लेकिन दर असल वह क़रीब ही है। तुम अगरचे उसका आना मुहाल समझ रहे हो लेकिन वास्तव में उसका आना यक़ीनी है। मोमिन इल्म और अ़क़्ल वाले हैं कि वे उस पर पूरा यक़ीन रखकर अ़मल में लगे हुए हैं।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ○ وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۣ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ۭ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○	और अल्लाह ही की बादशाहत है आसमानों में और ज़मीन में, और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी उस दिन अहले बातिल घाटे में पड़ेंगे। (27) और (उस दिन) आप हर फ़िर्क़े को देखेंगे कि (डर के मारे) घुटनों के बल पड़ेंगे। हर गिरोह अपने नामा-ए-आमाल (के हिसाब) की तरफ़ बुलाया जाएगा। आज तुमको तुम्हारे किए का बदला मिलेगा। (28) (और कहा जाएगा कि) यह (नामा-ए-आमाल) हमारा दफ़्तर है जो तुम्हारे मुक़ाबले में ठीक-ठीक बोल रहा है, और हम (दुनिया में) तुम्हारे आमाल को (फ़रिश्तों से) लिखवाते जाते थे। (29)

Maktab-e-Ashraf

Maktab E Ashraf

दुनिया की तमाम उम्मतें और क़ौमें

अब से लेकर हमेशा तक और आज से पहले भी तमाम आसमानों का तमाम ज़मीनों का मालिक बादशाह सुल्तान अल्लाह तआ़ला ही है। अल्लाह के और उसकी किताबों के और उसके रसूलों के मुन्किर (इनकार करने वाले और न मानने वाले) क़ियामत के रोज़ बड़े घाटे में रहेंगे। हज़रत सुफ़ियान सौरी रह. जब मदीना शरीफ़ में तशरीफ़ लाये तो आपने सुना कि मुआ़फ़री एक ज़रीफ़ (हंसाने वाले) शख़्स हैं। लोगों को अपने कलाम से हंसाया करते हैं। आपने उन्हें नसीहत की और फ़रमाया क्यों जनाब क्या आपको मालूम नहीं कि एक दिन आयेगा जिसमें बातिल वाले ख़सारे में पड़ेंगे। इसका बहुत अच्छा असर हुआ और हज़रत मुआ़फ़री रह. मरते दम तक इस नसीहत को न भूले। (इब्ने अबी हातिम)

वह दिन ऐसा हौलनाक (घबराहट वाला) और सख़्त होगा कि हर शख़्स घुटनों पर गिरा हुआ होगा। यह उस वक़्त होगा जबकि जहन्नम सामने लाई जायेगी और वह एक झुरझुरी लेगी, जिससे हर शख़्स काँप उठेगा और अपने घुटनों पर गिर जायेगा, यहाँ तक कि ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और रूहुल्लाह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम भी। उनकी ज़बान से भी उस वक़्त नफ़्सी-नफ़्सी निकलेगा। साफ़ कह देंगे कि ख़ुदा आज हम तुझसे और कुछ नहीं माँगते सिर्फ़ अपनी सलामती चाहते हैं। हज़रत ईसा फ़रमायेंगे कि आज मैं अपनी वालिदा (माँ) के लिये भी तुझसे कुछ अ़र्ज़ नहीं करता, बस मुझे बचा ले। अगरचे बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि मुराद यह है कि हर गिरोह एक दूसरे से अलग-अलग होगा, लेकिन इससे बेहतर वही तफ़सीर है जो हमने की, यानी हर एक अपने ज़ानू (घुटनों) पर गिरा हुआ होगा।

इब्ने अबी हातिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि गोया मैं तुम्हें जहन्नम के पास ज़ानू (घुटनों) पर झुके हुए देख रहा हूँ। एक और मरफ़ूअ़ हदीस में जिसमें सूर वग़ैरह का बयान है, यह भी है कि फिर लोग जुदा-जुदा (अलग-अलग) कर दिये जायेंगे और तमाम उम्मतें ज़ानू (घुटनों) पर झुक पड़ेंगे। यही अल्लाह का फ़रमान है:

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً........ الخ.

कि उस दिन आप हर फ़िर्क़े को देखेंगे कि मारे ख़ौफ़ के घुटनों के बल गिर पड़ेंगे।

इसमें दोनों हालतें जमा कर दी हैं। पस हक़ीक़त में दोनों तफ़सीरों में से कोई एक दूसरे के ख़िलाफ़ नहीं। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाया कि हर गिरोह अपने आमाल नामे की तरफ़ बुलाया जायेगा, जैसा कि इरशाद है:

وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِيْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ........ الخ.

नामा-ए-आमाल रखा जायेगा और नबियों और गवाहों को लाया जायेगा। आज तुम्हें तुम्हारे हर-हर अ़मल का बदला दिया जायेगा। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमान है:

يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ ۢبِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ.

कि इनसान को हर उस चीज़ से बाख़बर कर दिया जायेगा जो उसने आगे भेजी और पीछे छोड़ी। उसके अगले पिछले तमाम भेजे हुए आमाल सामने ला डाले। यह आमाल नामा जो हमारे हुक्म से हमारे अमीन और सच्चे फ़रिश्तों ने लिखा है वह तुम्हारे आमाल को तुम्हारे सामने पेश कर देने के लिये काफ़ी

Maktab E Ashraf

और पूरा है। जैसे एक दूसरी आयत में इरशाद है:

وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّافِيْهِ.......... الخ.

यानी आमाल नामा सामने रख दिया जायेगा तो तू देखेगा कि गुनाहगार उससे ख़ौफ़ज़दा (भयभीत और डरे हुए) हो जायेंगे और कहेंगे- हाय हमारी कम-बख़्ती! इस आमाल नामे की तो सिफ़त यह है कि किसी छोटे बड़े अ़मल को लिखे बग़ैर छोड़ा ही नहीं है। जो कुछ उन्होंने किया था सब सामने हाज़िर पा लेंगे। तेरा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करता।

फिर फ़रमाता है कि हमने मुहाफ़िज़ (निगरानी करने वाले) फ़रिश्तों को हुक्म दे दिया था कि वे तुम्हारे आमाल लिखते रहा करें।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि फ़रिश्ते बन्दों के आमाल लिखते हैं। फिर उन्हें लेकर आसमान पर चढ़ते हैं। आसमान पर जो फ़रिश्ते अ़मल के दफ़्तरों पर मुक़र्रर हैं वे इस नामा-ए-आमाल को लौहे-महफ़ूज़ में लिखे हुए आमाल से मिलाते हैं, जो हर रात उसकी मिक़्दार के मुताबिक़ उन पर ज़ाहिर होता है, जिसे ख़ुदा ने अपनी मख़्लूक़ की पैदाईश से पहले ही लिखा है, तो एक हर्फ़ की भी कमी ज़्यादती नहीं पाते। फिर आपने इसी आख़िरी जुमले की तिलावत फ़रमाई।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِىْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۣ
اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝ وَ
اِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا
رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِىْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ
نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ۝ وَ
بَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا
كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ وَقِيْلَ الْيَوْمَ
نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَ

सो जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने अच्छे काम किए थे तो उनको उनका रब अपनी रहमत में दाख़िल करेगा और यह खुली कामयाबी है। (30) और जो लोग काफ़िर थे (उनसे कहा जाएगा कि) क्या मेरी आयतें तुमको पढ़-पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं, सो तुमने (उनको क़ुबूल करने से) तकब्बुर किया था और तुम (इस वजह से) बड़े मुजरिम थे। (31) और जब (तुमसे) कहा जाता था कि अल्लाह का वायदा हक़ है और क़ियामत में कोई शक नहीं है, तो तुम कहा करते थे कि हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या चीज़ है, सिर्फ़ एक ख़्याल-सा तो हमको भी होता है और हमको यक़ीन नहीं। (32) और (उस वक़्त) उनको अपने तमाम बुरे आमाल ज़ाहिर हो जाएँगे और जिस (अ़ज़ाब) के साथ वे मज़ाक़ किया करते थे वह उनको आ घेरेगा। (33) और (उनसे) कहा जाएगा कि आज हम तुमको भुलाए देते हैं जैसा कि तुमने अपने इस दिन के आने को भुला रखा था, और

(आज) तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं। (34) यह (सज़ा) इस वजह से है कि तुमने अल्लाह की आयतों की हंसी उड़ाई थी और तुमको दुनियावी ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा था। सो आज न तो ये लोग दोज़ख़ से निकाले जाएँगे और न उनसे ख़ुदा (की नाराज़गी) की तलाफ़ी चाही जाएगी। (35) सो तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह ही के लिए हैं जो परवर्दिगार है आसमानों का और परवर्दिगार है ज़मीन का, परवर्दिगार तमाम आ़लम का। (36) और उसी को बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में, और वही ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (37)	مَاْوٰكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَاهُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝ فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ ع

खुली और स्पष्ट कामयाबी

इन आयतों में अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने उस फ़ैसले की ख़बर देता है जो वह आख़िरत के दिन अपने बन्दों के दरमियान करेगा। जो लोग अपने दिल से ईमान लाये और अपने हाथ-पाँव से शरीअ़त के मुताबिक़ नेक-नीयती के साथ अच्छे अ़मल किये, उन्हें अपने करम व रहम से जन्नत अ़ता फ़रमायेगा। रहमत से मुराद जन्नत है। जैसे सही हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने जन्नत से फ़रमाया- तू मेरी रहमत है, जिसे मैं चाहूँगा तुझे अ़ता फ़रमाऊँगा। खुली कामयाबी और असली मुराद को हासिल कर लेना यही है।

और जो लोग ईमान से रुक गये बल्कि कुफ़्र किया, उनसे क़ियामत के दिन बतौर डाँट-डपट के कहा जायेगा कि क्या अल्लाह तआ़ला की आयतें तुम्हारे सामने नहीं पढ़ी जाती थीं? यानी यक़ीनन पढ़ी जाती थीं और तुम्हें सुनाई जाती थीं, फिर भी तुमने ग़ुरूर व अकड़ में आकर उनकी इत्तिबा न की (यानी पैरवी न की, न उनको अपनाया) बल्कि उनसे मुँह फेरे रहे। अपने दिलों में अल्लाह तआ़ला के फ़रमान को झुठलाते रहे और तुमने ज़ाहिर में भी अपने अफ़आ़ल (अ़मल और तरीक़ों) में उसकी नाफ़रमानी की? गुनाहों पर गुनाह दिलेरी से करते चले गये। और जब ईमान वाले तुमसे कहते कि ख़ुदा का वायदा क़तई तौर पर सच्चा है और क़ियामत ज़रूर क़ायम होगी, उसके आने में कोई शक नहीं, तो तुम पलट कर जवाब दे दिया करते थे कि हम नहीं जानते क़ियामत किसे कहते हैं? हमें अगरचे कुछ मामूली सा यूँ ही वहम होता है लेकिन हमें हरगिज़ यक़ीन नहीं कि क़ियामत ज़रूर आयेगी।

अब उनके बुरे आमाल की सज़ा उनके सामने आ गयी, अपनी आँखों से अपने करतूत का बदला देख चुके और जिस अ़ज़ाब के मुन्किर थे, जिसे मज़ाक़ में उड़ाते रहे थे, जिसका होना नामुम्किन समझ रहे थे उन अ़ज़ाबों ने उन्हें हर तरफ़ से घेर लिया और उन्हें हर क़िस्म की भलाई से मायूस करने के लिये कह दिया गया कि हम तुम्हारे साथ वही मामला करेंगे जैसे कोई किसी को भूल जाता है, यानी जहन्नम में झौंक कर। फिर तुम्हें कभी अच्छाई से याद भी न करेंगे। यह बदला है इसका कि तुम इस दिन की मुलाक़ात को

Maktab E Ashraf

भुलाये हुए थे, इसके लिये तुमने कोई अ़मल न किया, क्योंकि तुम इसके आने की सच्चाई के क़ायल न थे। अब तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है और कोई नहीं जो तुम्हारी किसी क़िस्म की मदद कर सके।

सही हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों से क़ियामत के दिन फ़रमायेगा- क्या मैंने तुझे बाल बच्चे नहीं दिये थे? क्या मैंने तुझ पर दुनिया में इनाम व इकराम नहीं फ़रमाये थे? क्या मैंने तेरे लिये ऊँटों और घोड़ों को ताबेदार और फ़रमाँबरदार नहीं बनाया था? और तुझे छोड़ दिया था कि सुरूर व ख़ुशी के साथ अपने मकानात और हवेलियों में आज़ादी की ज़िन्दगी बसर करे? यह जवाब देगा कि मेरे परवर्दिगार यह सब सच है, बेशक तेरे ये तमाम एहसानात मुझ पर थे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा पस आज मैं तुझे इसी तरह भुला दूँगा जिस तरह तू मुझे भूल गया था।

फिर फ़रमाता है कि ये सज़ायें तुम्हें इसलिये दी गयी हैं कि तुमने अल्लाह की आयतों का ख़ूब मज़ाक़ उड़ाया था और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम्हें धोखे में डाल रखा था। तुम उसी पर मुत्मईन थे और इस क़द्र तुमने बेफ़िक्री बरती कि आख़िर आज नुक़सान और ख़सारे में पड़ गये। अब तुम दोज़ख़ से निकाले न जाओगे और न तुमसे हमारी नाराज़गी के दूर करने की कोई वजह तलब की जायेगी। यानी इस अ़ज़ाब से तुम्हारा छुटकारा भी मुहाल और अब मेरी रज़ामन्दी का तुम्हें हासिल होना भी नामुम्किन। जैसे कि मोमिन बग़ैर अ़ज़ाब व हिसाब के जन्नत में जायेंगे ऐसे ही तुम बिना हिसाब के अ़ज़ाब किये जाओगे और तुम्हारी तौबा बेसूद (बेफ़ायदा और व्यर्थ) रहेगी।

अपने इस फ़ैसले को जो मोमिनों और काफ़िरों में होगा बयान फ़रमाकर अब इरशाद फ़रमाता है कि तमाम ज़मीन व आसमान और हर चीज़ का मालिक अल्लाह तआ़ला है। जो तमाम जहानों का पालनहार है। उसी की किब्रियाई यानी सल्तनत और बड़ाई आसमानों और ज़मीनों पर है। वह बड़ी अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाला है। हर चीज़ उसके सामने पस्त (यानी झुकी हुई और बेहैसियत) है, हर एक उसका मोहताज है। सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीसे क़ुदसी में है, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अ़ज़मत (शान व बुज़ुर्गी) मेरा तहबंद है और किब्रियाई (बड़ाई) मेरी चादर है, जो शख़्स इनमें से किसी को भी मुझसे लेना चाहेगा मैं उसे जहन्नम-रसीद कर दूँगा। यानी बड़ाई और तकब्बुर करने वाला दोज़ख़ी है। वह अ़ज़ीज़ यानी ग़ालिब है जो कभी किसी से मग़लूब नहीं होगा। कोई नहीं जो उस पर रोक-टोक कर सके, उसके सामने पड़ सके। वह हकीम (हिक्मत वाला) है। उसका कोई क़ौल कोई फ़ेल, उसकी शरीअ़त का कोई मसला, उसकी लिखी हुई तक़दीर का कोई हर्फ़ हिक्मत से ख़ाली नहीं। वह बुलन्दी और बरतरी वाला है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, न उसके सिवा कोई मस्जूद (यानी सज्दा किये जाने के क़ाबिल) है।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र व एहसान है कि तफ़सीर इब्ने कसीर का पच्चीसवाँ पारा ख़त्म हुआ।

Maktab E Ashraf

इस तफ़सीर में इस्तेमाल किये गये कुछ अलफ़ाज़ के मायने

इस्लामी महीनों के नामः- मुहर्रम, सफ़र, रबीउल-अव्वल, रबीउस्सानी, जमादियुल-अव्वल, जमादियुस्सानी, रजब, शाबान, रमज़ान, शव्वाल, ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा।

चार मश्हूर आसमानी किताबें

तौरातः- वह आसामानी किताब जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर उतरी।

ज़बूरः- वह आसमानी किताब जो हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर उतरी।

इन्जीलः- वह आसमानी किताब जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर उतरी।

क़ुरआन मजीदः- वह आसामानी किताब जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर नाज़िल हुई। यह आख़िरी आसमानी किताब है।

चार बड़े फ़रिश्ते

हज़रत जिब्राईलः- अल्लाह तआ़ला का एक ख़ास फ़रिश्ता जो अल्लाह का पैग़ाम (वही) उसके रसूलों के पास लाता था।

हज़रत इस्राफ़ीलः- अल्लाह का एक ख़ास फ़रिश्ता जो इस दुनिया को तबाह करने के लिये सूर फूँकेगा।

हज़रत मीकाईलः- अल्लाह का एक ख़ास फ़रिश्ता जो बारिश का इन्तिज़ाम करने और मख़्लूक़ को रोज़ी पहुँचाने पर मुक़र्रर है।

हज़रत इज़्राईलः- अल्लाह का एक ख़ास फ़रिश्ता जो जानदारों की जान निकालने पर लगाया गया है।

रिश्ते और निस्बतें

अबूः- बाप (जैसे अबू हुज़ैफ़ा)।

उम्मः- माँ (जैसे उम्मे कुलसूम)।

इब्नः- बेटा, पुत्र (जैसे इब्ने उमर)।

बिन्तः- बेटी, पुत्री (जैसे बिन्ते उमर)।

और ज़्यादा अलफ़ाज़ और मायने के लिये देखें इसी तफ़सीर की पहली जिल्द के आख़िरी पृष्ठ।